वर्ष ११ अंक २ रविवार ९ नवम्बर, १९८६ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ कार्तिक २०४३ दयानन्दाब्द—६१

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २० रुपये आजीवन २०० रुपये विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

महर्षि दयानन्द निर्वाण-दिवस सोल्लास सम्पन्न

सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध, साउदी अरब का घृणित कार्य

—स्वामी आनन्द बोध

महर्षि दयानन्द निर्वाण-दिवस एवं दीपावली में प्रकाश पर्व पर राम लीला मैदान, नई दिल्ली में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया। आयोजन का प्रारम्भ बृहद् यज्ञ से हुआ। इस यज्ञ के ब्रह्मा प० यशपाल सुधांशु थे। यज्ञ में सैकडों श्रद्धालुओं ने बढचढ कर भाग लिया। यज्ञ में वैद्य रामकिशोर जो महोपदेशक ने महात्मा अमर स्वामी से वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली। स्वामी जी ने उन्हें पीत वस्त्र देकर महात्मा रामकिशोर के नाम से सम्बोधित किया। वानप्रस्थ के समय तपस्वी जीवन व्यतीत करने तथा महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए समग्रता से कार्य करने का उन्होंने संकल्प लिया। महात्मा अमर स्वामी ने कहा-आज आर्यसमाज के लिए ऐसे गृह त्यागी तपस्वी कर्मठ योद्धाओं की आवश्यकता है जो पूर्णतया निष्ठा से आर्यसमाज के प्रति समर्पित हों।

ध्वजारोहण करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा–मान प्रतिष्ठा के लालच में या किसी अन्य स्वार्थ से आर्यसमाज का सदस्य बनने वाला महर्षि दयानन्द के संकल्प को पूरा न कर सकेगा और न ही आर्यसमाज की सेवा कर सकेगा। आर्यसमाज रूपी वृक्ष को सींचने के लिए त्यागी तपस्वी कर्मठ व्यक्तियों की आवश्यकता आज समय की मांग है। संस्था में पद के लिए नहीं सेवा के लिए प्रवेश करना चाहिए।

महात्मा अमर स्वामी सम्मानित

प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने अपने पूज्य पिता स्व० श्री केदारनाथ दीक्षित की स्मृति में दस हजार रुपये की राशि केदारनाथ दीक्षित स्थिरनिधि के रूप में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल जी को भेंट की। इस राशि के वार्षिक व्याज से प्रति वर्ष एक वैदिक विद्वान् को सम्मानित किया जायेगा। इस वर्ष ११०० रुपये की राशि से महात्मा अमर स्वामी जी को सम्मानित किया गया।

श्रद्धाञ्जलि सभा

सभा की अध्यक्षता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की।

मुख्य वक्ता थे स्वामी अमर स्वामी जी महाराज, पं० सच्चिदानन्द जी, श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी, महात्मा रामकिशोर जी, डा० वाचस्पति उपाध्याय, श्री हरदयाल देवगुण आदि महानुभाव।

श्रद्धांजलि सभा में अध्यक्षीय भाषण करते हुए-स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा—सार्वदेशिक सभा को एक पत्र मिला है सऊदी अरब से। एक व्यक्ति रामकुमार भारद्वाज सऊदी अरब में नौकरी के लिए गया, अपने स्वाध्याय के लिए उसने एक सत्यार्थप्रकाश की प्रति अपने साथ रखी थी। किसी गुप्त रिपोर्ट के आधार पर सऊदी अरब सरकार ने श्री भारद्वाज को गिरफ्तार कर सत्यार्थ प्रकाश रखने के जुर्म में जेल में डाल दिया। उस व्यक्ति ने किसी प्रकार जेल से बाहर सार्वदेशिक सभा के नाम यह पत्र पोस्ट किया। स्वामी जी ने कहा—हमने भारत के विदेश मन्त्री के नाम पत्र लिखा है कि इस घृणित कार्य पर सऊदी अरब की सरकार पर जोर डाले तथा श्री रामकुमार भारद्वाज को तुरन्त रिहा किया जाए। किसी भी धार्मिक पुस्तक पर या किसी व्यक्ति को अपनी धर्म पुस्तक साथ रखने पर उसे अपराधी समझ जेल में डालना अमानवीयता है। भारत सरकार को चाहिए इस सम्बन्ध में सऊदी अरब के विदेश मन्त्री को तुरन्त बुलाकर अपना विरोध प्रकट करे तथा सऊदी अरब सरकार पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के आधार पर प्रभाव डाले तथा जाच की जाये कि यह अप्रिय घटना क्यों और कैसे हुई?

स्वामी जी ने चेतावनी दी—यदि इस सम्बन्ध में शीघ्र कार्यवाई नहीं हुई। आर्यसमाज सऊदी अरब दूतावास पर जबरदस्त विरोध प्रदर्शन करेगा। जनसमूह ने करतल ध्वनि से इसका समर्थन किया।

प्रस्ताव—इस अवसर पर श्री सूर्यदेव जी ने एक प्रस्ताव रखा जिस का आशय था—भारत सरकार ने शिक्षा में त्रिभाषा फार्मूले में संस्कृत भाषा की उपेक्षा की है। आर्यसमाज इसका पूर्ण विरोध करता है। और मांग करता है कि इस सम्बन्ध में सरकार को चेतना चाहिए अन्य राष्ट्रीय भाषाओं की तरह संस्कृत को भी उचित सम्मान मिलना चाहिए। संस्कृत में भारत की आत्मा और सांस्कृतिक गौरव छिपा है। भारतीय परम्परा और संस्कृति से प्रेम रखने वाला कोई भारतीय संस्कृत के अपमान को सहन नहीं कर पायेगा। □

तेरे उपकार न भूले हैं न भूलेंगे

दयानन्द हम तेरे उपकार भूले हैं न भूलेंगे।
हुए तुम धर्म पर बलिदान भूले हैं न भूलेंगे॥
मिटाया ज्ञान दिनकर से यह अज्ञान तम सारा।
दिया हम सब को जीवनदान, भूले हैं न भूलेंगे॥
न ईश्वर जन्म लेता है न कुछ आकार है उसका।
कराया ज्ञान यह सच्चा न भूले हैं न भूलेंगे॥
सभी मतवादियों का तर्क की तलवार ले कर में।
किया था तुमने मर्दन मान भूले हैं न भूलेंगे॥
थी जीवन भर करी तुमने धर्म और देश की सेवा।
किया हंसते हुए विषपान न भूले हैं न भूलेंगे॥
यही प्रण है करें हम आपके उस काम को पूरा।
जो ठानी आपने थी ठाने हम भी, भूले हैं न भूलेंगे॥

प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल सम्पादक—पं० यशपाल सुधांशु एम० ए०

वेदोद्धारक-शिरोमणि

महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक—ब्रह्मनिष्ठ स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

यह ठीक है कि श्री शङ्कराचार्य, रामानुजाचार्य आदि सभी प्रसिद्ध आचार्यों ने वेदों को परम प्रमाण माना है, किन्तु अपने सिद्धांतों के समर्थन के लिए उन्होंने अधिकतर उपनिषद्, वेदान्तसूत्र और भगवद्-गीता का आश्रय लिया है न कि मूल वेद संहिताओं का। यह उनके ग्रन्थों के पढ़ने वाले जानते हैं। श्रुति के नाम से भी इन आचार्यों ने प्रायः सर्वत्र उपनिषदों के वचन दिये हैं। हां, द्वैतमत के प्रबल प्रचारक श्री मध्वाचार्य (स्वा० आनन्दतीर्थ) ने वेदमन्त्रों के कई प्रमाण जीवेश्वर भेद आदि के समर्थन में दिये तथा ऋग्वेद के प्रथम ४० सूक्तों का श्लोक-बद्ध संक्षिप्त भाष्य भी किया, तथापि पौराणिक संस्कार-विषयक इस भाष्य में भी विशुद्ध एकेश्वरवाद के स्थान में विष्णु, लक्ष्मी आदि देवी-देवताओं की पूजा का अनेक स्थलों में विधान पाया जाता है। वेदाधिकार भी प्रायः इन आचार्यों ने ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य कुलोत्पन्न पुरुषों तक ही सीमित कर दिया और शूद्रकुलोत्पन्न पुरुषों और समस्त स्त्रियों को उस अधिकार से न केवल वञ्चित ही कर दिया, अपितु यहां तक लिखा—

इतश्च न शूद्रस्याधिकारः। यदस्य स्मृतेः श्रवणाध्ययनप्रतिषेधो भवति। वेदश्रवणप्रतिषेधो वेदाध्ययनार्थप्रतिषेधस्तदर्थज्ञानानुष्ठानयोश्च प्रतिषेधः शूद्रस्य स्मर्यते। श्रवणप्रतिषेधस्तावत् अथास्य (शूद्रस्य) वेदमुपश्रृण्वतस्त्रपुजतुभ्या श्रोत्रप्रतिपूरणमिति। भवति च वेदोच्चारणे जिह्वाच्छेदः। धारणे शरीरभेदः।

(ब्रह्मसूत्र० शाङ्करभाष्ये १।३।३८)

सारांश यह कि शूद्र को वेद का अधिकार नहीं, क्योंकि स्मृति में उसके लिए वेद के सुनने, पढ़ने और अर्थज्ञान सम्पादन करने का सर्वथा निषेध है और यह कहा है कि यदि कोई शूद्र वेद को समीपता से श्रवण कर ले, तो उसके कानों को सीसे और लाख से भर देना चाहिए, वेदमन्त्र का यदि वह उच्चारण कर ले, तो उसकी जिह्वा काट देनी चाहिए और यदि धारण वा याद कर ले, तो उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डालने चाहिए।

विशिष्टाद्वैत सम्प्रदाय के आचार्य श्री रामानुज स्वामी ने भी इसी बात को लिखा है कि—

शूद्रस्य वेदश्रवण-तदध्ययन-तदर्थानुष्ठानानि प्रतिषिध्यन्ते। पद्युह वा एतत् श्मशानं यच्छूद्रः तस्मात् शूद्रसमीपे नाध्येतव्यम्।

ब्रह्मसूत्रस्य श्रीभाष्ये रामानुजाचार्यकृते पृ० ३२२)

अर्थात् शूद्र को वेद के सुनने, अध्ययन करने और उसके अर्थ को जानकर अनुष्ठान करने का निषेध है। शूद्र चलता फिरता श्मशान है। अतः उसके समीप वेद का अध्ययन न करना चाहिए।

ऐसा ही श्री मध्वाचार्य, श्री वल्लभाचार्य, श्री निम्बार्काचार्य सायणाचार्य तथा अन्य मध्यकाल के प्रायः सभी सुप्रसिद्ध आचार्यों ने लिखा है। स्त्रियों के अधिकार के विषय में श्री शङ्कराचार्य जी ने लिखा है कि—

'दुहितुः पाण्डित्यं गृहतन्त्रविषयमेव वेदाऽनधिकारात्।

(बृहदारण्यकोपनिषच्छांकरभाष्ये ६, ४, १६)

'अथ य इच्छेत् दुहिता मे पण्डिता जायेत" यहां कन्या के पाण्डित्य का अर्थ केवल गृहकार्य विषयक पाण्डित्य है, क्योंकि उसका वेद में अधिकार नहीं। ऐसा ही श्री रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, सायणाचार्य तथा अन्य प्रायः सभी मध्यकालीन प्रख्यात आचार्यों ने लिखा है—

श्री मध्वाचार्य ने इस विषय में कुछ उदारता दिखाते हुए लिखा है—

आहुरप्युत्तमस्त्रीणाम्
अधिकारन्तु वैदिके।
यथोर्वशी यमी चैव
शच्याद्याश्च तथाऽपराः॥

(ब्रह्मसूत्राणुव्याख्याने पृ० ८७)

अर्थात् उत्तम स्त्रियों का वैदिक शास्त्र के पढ़ने में अधिकार विद्वान् लोग बतलाते हैं। जैसे उर्वशी, यमी, शची इत्यादि प्राचीन काल की ऋषिकाएं हुई हैं। एक अन्य स्थल पर भी श्री मध्वाचार्य ने लिखा है—

वेदा अप्युत्तमस्त्रीभिः
कृष्णाद्याभिरिहाखिलाः।
उत्तमस्त्रीणां तु न शूद्रवत्॥

—(ब्रह्मसूत्राणुभाष्य)

अर्थात् उत्तम स्त्रियों को द्रौपदी आदि की तरह सब वेदों का अध्ययन करना चाहिए। उत्तम स्त्रियों को शूद्रों की तरह वेदाध्ययन का निषेध नहीं। इस प्रकार स्त्रियों के वेदाधिकार को उत्तम स्त्रियों के लिए स्वीकार करने की उदारता श्री मध्वाचार्य (स्वा० आनन्दतीर्थ) ने दिखाई; किन्तु शूद्रों के वेदाधिकार का उन्होंने भी अन्य आचार्यों की तरह निषेध किया।

वैदिक यज्ञों में पशुहिंसा का भी इन सभी आचार्यों ने विधान 'अशुद्धमिति चेन्न शब्दात्' इस वेदान्तसूत्र के भाष्य में तथा अन्यत्र माना। ऐसे ही इन आचार्यों की वेदविषयक कई अशुद्ध और संकुचित धारणाएं हैं, जिनके कारण इन्हें आदर्श वेदोद्धारक नहीं माना जा सकता। मूल वेदों को इनमें से बहुतों ने केवल यज्ञ यागादिकर्मकाण्डपरक ही समझा। आध्यात्मविद्या तथा ब्रह्मविद्या के लिए उन्होंने उपनिषदों का आश्रय लिया। इसलिए मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती को वेदोद्धारक-शिरोमणि मानता हूं। ऐसे समय में जन्म लेकर जब देश-विदेश में सर्वत्र वेदविषयक अज्ञान फैला हुआ था, जब भारत के बड़े-बड़े विद्वान् भी वेदों के वास्तविक अर्थों से अनभिज्ञ होकर उनकी क्रियात्मक उपेक्षा कर रहे थे, जब वेदों को सहस्रों देवी-देवताओं की पूजा का प्रतिपादक तथा जाति-भेद, अस्पृश्यता, बाल-विवाह और यज्ञों में पशुहिंसा आदि का समर्थक मानते थे, जब पवित्र वेदों का स्थान अधिकतर रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, पुराणादि ने ले लिया था, महर्षि दयानन्द ने फिर 'वेदों की ओर चलो, वेद सब सत्यविद्याओं के पुस्तक हैं, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।' का सिंहनाद करके जनता में जो अद्भुत जागृति पैदा कर दी, पवित्र वेदमन्दिर के द्वार को—

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। (यजु० २६।२)

इस वैदिक आदेशानुसार सब नर-नारियों के लिए खोलने की जो उदारता दिखाई, वेदों की सार्वभौमिक, युक्ति-युक्त और वैज्ञानिक शिक्षाओं को जिस उत्तम रूप से जगत् के सम्मुख रखकर उस वेद-भानु की ज्ञान-किरणों से समस्त अज्ञानान्धकार को छिन्न-भिन्न करने का अत्यन्त अभिनन्दनीय कार्य किया; उसका किन शब्दों में वर्णन किया जाए। वैदिक ज्ञानप्रचार-विषयक महर्षि दयानन्द के उपकार अत्यन्त महान् और अनुपम हैं, यदि ऐसा कहा जाए तो इसमें अणुमात्र भी अत्युक्ति न होगी। वेदों को केवल कर्मकाण्ड-परक और यज्ञों में पशु-हिंसा-प्रतिपादक समझ कर अच्छे विचारक उनसे विमुख हो रहे थे। महर्षि ने वेदों के सर्वशास्त्रसम्मत महत्त्व को बता कर उन्हें वेदाध्ययन में पुनः प्रवृत्त किया।

महर्षि दयानन्द के वेदविषयक मन्तव्य

(१) महर्षि दयानन्द ने अत्यन्त प्रबल युक्तियों और प्रमाणों से मानवसृष्टि के आरम्भ में ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता को सिद्ध करते हुए अनेक कसौटियों से प्रमाणित किया कि ईश्वरीय ज्ञान वेद ही है, जिसकी शिक्षाएं सर्वथा पवित्र सार्वभौम युक्ति तथा तत्त्वज्ञानसम्मत हैं।

(२) वेद ईश्वरीय ज्ञान है और मानवसृष्टि के प्रारम्भ में प्रकाशित होने के कारण नित्य है। अतः उनमें अनित्य इतिहास नहीं हो सकता। वेदों में पाये जाने वाले वशिष्ठ जमदग्नि, विश्वामित्र, अत्रि, कवि इत्यादि शब्द व्यक्तिविशेष-वाचक नहीं, किंतु गुणविशिष्ट व्यक्ति तथा पदार्थसूचक हैं। जैसे कि 'प्राणो वै वशिष्ठ ऋषिः। (शत० ८।१।१।६) प्रजापतिर्वै वसिष्ठः (कौषीतकी ब्रा० २५।२६।१६), प्रजापतिर्वै जमदग्निः (शत० १३।२।२।१४), श्रोत्रं वै विश्वामित्र ऋषिः (शत० ८।१०।२।६) मनो वै भारद्वाज ऋषिः। (शत० ८।१।१।६), प्राणो वा अङ्गिराः (शत० ६।१।२।२८), कविः इति मेधाविनाम (निघ० ३।१५) इत्यादि आर्ष वचनों से सिद्ध होता है।

(३) वेदों के शब्द यौगिक वा योगरूढ़ हैं, केवल रूढ़ नहीं जैसे कि—

सर्वाणि नामान्याख्यातजानि इति नैरुक्तसमयः (निरुक्त १।४।१२)

नाम च धातुजमाह निरुक्ते,
व्याकरणे शकटस्य च तोकम्।

(महाभाष्य ३।३।१) इत्यादि में बताया गया है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

जीवन में त्यौहारों का महत्त्व

इस आप्त पुरुष का जन्म दिवस प्रति वर्ष रामनवमी के रूप में भारत में ही नहीं, अपितु बहुत से विदेशों में भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। उनकी इस जन्म तिथि का प्रमाण वाल्मीकि के ये शब्द हैं--

ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतूनां च षट्समत्ययुः। ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ कौसल्याऽजनयद्राम सर्वलक्षणसयुतम।

दूसरा त्यौहार इस महाराज राम के जीवन से जुड़ा विजयादशमी (दशहरा) का महान् प्रेरणादायक पर्व है या यू कहिए यह राम की लंकेश रावण पर विजय सत्य की असत्य, न्याय की अन्याय और सदाचार, भलाई की दुराचार, बुराई पर विजय के रूप में देश विदेश सभी जगह बड़े समारोहपूर्वक आश्विन मास की शुक्ला दशमी को विधिपूर्वक सम्पन्न होता है। इस सम्बन्ध में रामलीला आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से आरम्भ होती है। प्रचलित मान्यता के अनुसार इस दिन राम ने दुष्ट रावण को पराजित करके माता सीता को उसकी कैद से मुक्त कराया था। परन्तु कोई भी प्रमाण राम की विजय की इस तिथि (आश्विन शुक्ला दशमी) का किसी भी वाल्मीकि तथा तुलसी की रामचरित मानस आदि रामायण से नहीं मिलता। रामलीला के विशेषज्ञों ने तो रावण का वध आश्विन मास में कर दिया, परन्तु वाल्मीकि के शब्दों मे चौमासा बीत जाने पर कार्तिक मास में लक्ष्मण को सीता के विरह मे अपनी मानसिक व्यथा इस प्रकार बता रहे हैं—

चत्वारो वार्षिका
मासा वर्षशतोपमाः।
मम शोकाभिभूतस्य
सौम्य सीतामपश्यतः॥
प्रिया विहीने दुखार्ते
हृतराज्ये विवासिते।
कृपा न कुरुते राजा
सुग्रीवो मयि लक्ष्मण!॥

अर्थात् सीता को न देखने के कारण शोक सतप्त मेरे वर्षा के चार मास (आषाढ, सावन, भादों और आश्विन) सैकड़ों वर्षों के समान बीते हैं। हे लक्ष्मण! प्रिया से रहित दुखी तथा राज्य से निर्वासित मुझ पर राजा सुग्रीव कृपा नहीं करता। पूर्व समझौते के अनुसार वर्षा ऋतु के चार मास बीत जाने पर राजा सुग्रीव ने सीता की खोज अभी तक नहीं की, इसलिये राम दुखी हृदय से लक्ष्मण को अपना रोष प्रकट करने हेतु सुग्रीव को उस के वचनों की याद दिलाने निमित्त उसके पास भेजते हैं--

"पूर्वोऽयं वार्षिको मास: श्रावण: सलिलागम:। प्रवृत्ता: सौम्य चत्वारो मासा वार्षिकसंज्ञका। नायमुद्योगसमय: गच्छ त्वं पुरि शुभाम् कार्तिके समनु प्राप्ते त्व रावणवधे यत॥

तदर्थमयमारम्भ: कृत पम्पुरञ्जय। समयं नाभिजानाति कृतार्थ: प्लवगेश्वर:॥

उच्यता गच्छ सुग्रीवस्त्वया वत्स महाबल:। मम रोषस्य यद्रूप ब्रूयाश्चैनमिद वच:॥

न च संकुचित: पन्था येन बाली हतो गत:। समये तिष्ठ सुग्रीव मा च बालिपथा गम:॥

एक एव रणे बाली शरेण निहतो मया। त्वां तु सत्यादतिक्रान्तं हनिष्यामि सबान्धवम्॥

सन्त तुलसीदास ने भी इसी बात को अपने प्रसिद्ध मानस में इन शब्दों में कहा है—

वर्षा विगत सरद ऋतु आई।
फूले कांस सकल महि छाई॥
वर्षा गत निर्मल ऋतु आई।
सुधि न तात सीता की पाई॥
एक बार कैसेहुँ सुधि पावौं।
कालहु जीति निमिष महु ल्यावौं॥
कहहुं रही जो जीवित होई।
तात जतन करि आनौं सोई॥
सुग्रीवहुं सुधि मोरि बिसारी।
पावा राज कोश पुर नारी॥

इधर जब रावण सीता को हरकर लाया और उसको अशोक वाटिका मे रखकर, उसको राम की प्रतीक्षा के लिए १२ मास का समय दिया। और जब हनुमान् सीता की खोज करते-करते लङ्का पहुंचे तो इस बारह मास की अवधि मे से केवल दो मास शेष रह गये थे—

शृणु मैथिलि मद्वाक्य मासान् द्वादश भामिनि। उवाच वाक्यं वैदेही हनुमन्त द्रुमाश्रितम्। सीता च नाम नाम्नाहं भार्या रामस्य धीमत:।

रक्षसापहृता भार्या रावणेन दुरात्मना। द्वौ मासौ तेन मे कालो जीवितानुग्रह: कृत:॥

इसके पश्चात् रामचन्द्र जी ने उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में चढ़ाई की थी—

उत्तराफाल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते। अभिप्रयाम सुग्रीव सर्वानीकसमावृता॥

ततो वानरराजेन लक्ष्मणेन च पूजित:। जगाम रामो धर्मात्मा ससैन्यो दक्षिणां दिशम्॥

इस प्रकार लङ्का पर विजय प्राप्त करके रामचन्द्र जी ने उसी दिन अयोध्या लौटने का अनुरोध किया क्योंकि चौदह वर्ष समाप्त हो रहे थे और महात्मा भरत उसकी वापसी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पञ्चम्या लक्ष्मणाग्रज: भारद्वाजाश्रम प्राप्य ववन्दे नियतो मुनिम्।

इस प्रकार वाल्मीकि के अनुसार रामचन्द्र जी पुष्पक विमान में पञ्चमी तिथि को पुण्य नक्षत्र में अयोध्या पहुंचे और यह वही दिन था जब चौदह वर्ष पूर्व रामचन्द्र जी का अभिषेक होना था।

चैत्र: श्रीमानयं मास:
पुण्य: पुष्पितकानन:।
यौवराज्याय रामस्य॥

अत: इन सब प्रमाणों से सिद्ध है कि विजयादशमी तथा दीपावली का पर्व राम जीवन से कदाचित् जुड़ा नहीं है। ये पर्व त्यौहार कहीं चैत्र मास मे पड़ता है।

यह तो इतिहास शास्त्रियों तथा रामलीला विशेषज्ञों की खोज का विषय है कि कौन सी तिथि सही है। कुछ भी हो यह दीपावली का त्यौहार बड़े आमोद प्रमोद का राष्ट्रीय त्यौहार है। लोग इस दिन दीपावली इसलिए करते हैं कि कहीं लक्ष्मी अन्धेरा समझ कर वापस चली जावे। लक्ष्मी पूजा के इस अवसर पर कुछ लोग जुआ खेलना भी धर्म समझते हैं क्योंकि उनकी मान्यता है कि जो इस दिन जुआ नहीं खेलता, वह नरकगामी होता है। वेद में जुआ खेलने का निषेध है–

"अक्षैर्मा दीव्य:"

कुछ भी हो इस दीपावली त्यौहार का महत्त्व और तीन कारणों से कुछ अधिक हो गया है। आज के दिन कार्तिक अमावस्या को लगभग अढ़ाई सहस्र वर्ष पूर्व जैनियों के अन्तिम तीर्थङ्कर महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था। एक सौ तीन वर्ष पूर्व जगद् उद्धारक, आर्यसमाज के संस्थापक युग प्रवर्तक प्रात: स्मरणीय महर्षि दयानन्द का बलिदान हुआ था और इसी दिन लगभग पचासी वर्ष पूर्व रामकृष्ण परमहंस ने गंगा मे जीवित समाधि भी ली थी। वैसे यह त्यौहार शरद् ऋतु की नवसस्येष्टि को मनाना चाहिए। उन्हीं दिनों मे खरीफ-सरदी की फसल के अन्न तेल, गुड़-शक्कर, चावल आदि आते हैं। इसीलिए इस दिन धान से बनी खील और चीनी से बने खाण्ड के खेल पताशों से पूजा की जाती है और समृद्धि तथा सुख शान्ति के लिए इन वस्तुओं द्वारा लक्ष्मी की पूजा की जाती है।

इस अवसर पर आर्य बन्धुओं का विशेष रूप से कर्तव्य है कि अपने आचरण, देशभक्ति, ईश्वरविश्वास एव सदाचार की भावना का प्रचार करने का व्रत ले। जीवन में विशेषकर आजकल इनकी नितान्त आवश्यकता है, जिनके अभाव मे आज देश अधोगति की ओर अग्रसर हो रहा है। महर्षि ने देशोत्थान के लिए विषपान किये और जीवन की बलि दी। अत: हमें उचित है कि वही करें जो देशहित मे हो।

□

वार्षिक निर्वाचन

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन आचार्य श्री हरिदेव जी सिद्धान्त भूषण की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। विवरण निम्न प्रकार है—

प्रधान–पं० प्रेमपाल शास्त्री, उपप्रधान–पं० यशपाल सुधांशु, मन्त्री–पं० मेघश्याम वेदालंकार, कोषाध्यक्ष–पं० विद्याप्रसाद मिश्र।

मन्त्री
पं० मेघश्याम वेदालंकार

खोये हुए व्यक्ति की सूचना

श्रीमती इन्द्रा मित्तल जो आपके अचानक घर से चले जाने पर हम परिवार के सभी सदस्य बहुत दुखी और चिन्तित हैं। कृपया आप जहां भी हों-शीघ्र घर लौट आयें। हम आपकी तमाम बात मानने को तैयार हैं। आशा है कि अवश्य ही ध्यान देंगी। धन्यवाद

भवदीय
जगदीश शरण मित्तल
बी–२७७, विवेकविहार
दिल्ली-११००३२

स्वाधीनता में पराधीनता

लेखक : भीमसेन दीवान

चालीस वर्ष से हम स्वतंत्र तो कर दिए गए हैं पर अभी तक हमारे ऊपर पराधीन युग की व्यवस्था लादी जाती है। यह बात किसी से छिपी नही कि ब्रिटिश सरकार ने हमारे दाम गिराने की खातिर, विदेशियों के सामने हमे हीन, दीन बताने के हेतु, १८५० से ही जाहिल, अनपढ, असभ्य बताने के प्रपंच घड लिये थे। यहा तक कि बगाल मे एक नियोजित दल द्वारा, हमारे साहित्य, कला तथा वातावरण को कलुषित सिद्ध करने का प्रचार जारी कर दिया था, एव सचाई को छिपाने, हमे अयोग्य कहने के षड्यत्र रचकर, दासता की बेडियों मे जकडे रहने के साधन अपनाए थे। जब कि हमारी प्राचीन सभ्यता, वैदिक इतिहास, आध्यात्मिक धार्मिक रूपरेखा न तो विदेशियों को ज्ञात थी, न ही पहचान थी, न ही समझने की योग्यता थी। इसीलिए ही तो, ईस्ट इण्डिया कपनी के निर्माता स्वयम् अपने शब्दो मे, हमारे पाठ्यक्रम, प्रणाली, सूझ-बूझ को सर्वोत्तम बताकर कोई तबदीली नही लाना चाहते थे, जो तथ्य आज प्रकाश मे आ रहे हैं। हमारे कृषि कार्य, कौशल, सामाजिकता, राज्य कार्य मे सक्रियता अब पर्दा पर लाकर वस्तु-स्थिति को मान्यता दी जा रही है। दासता बड़ा शाप थी और है। असत्य की ओट मे हमे पंगु प्रकार कर हमारे ऊपर विदेशीय रीति नीति को लादा गया था। एक एक मुसलिम साम्राज्य के समय के गलत उदाहरण, इतिहास नामी विषय के गर्भ में, हमे तुच्छ प्रमाणित करने, केवल मारकाट, लडाई झगडे के वर्णन बता बता कर हमारे उगते बाल गोपालों के मस्तिष्क गदले किए गए। केवल विजय, तानाशाही की घटनाए, वैमनस्य के फदे फेंलाकर, हमारी वास्तविकता, कर्मठता, शालीनता, भक्तिभाव, त्याग, तपस्या का कही जिक्र न करके, पाठशालाओं मे एक विषय जारी कर रट लगवाई गई। सुनहरी पहलू को पेश न करके, सरासर हम भारतीयों से अन्याय किया गया।

खैर यह तो जो हुआ—हो गया, मगर स्वतंत्र सरकार भी वही पुस्तकें, वही चालू इतिहास, पूर्ववत् कार्यक्रम को चालू रखे आ रही है तो कैसे स्वाधीनता मे पराधीनता के यह कलक सहे जा सकते है। यह अवस्था विचारणीय है। उदाहरणार्थ हाउस आफ कामन्स मे लदन मे उस समय के मुख्य निदेशक ने १६०३ मे बयान दिए थे (जो श्री जान मिल्ज ने उद्धृत किए हैं) कि भारतीय वर्ष भर में कई फसलें उगाते थे जब कि योरुप वाले केवल एक पैदावार उठा पा सकते थे। क्या यह सच्चाइयां सामने न ले आकर, पुरानी गंदगी को अब भी सिर मढा रहने दिया जा सकता है। यह विषय गहराई से जांच मांगता है। सत्य का प्रकाश, हमारी प्रगति हमारी नारी जाति की अनुपम पवित्रता, हमारे सतों का समागम, हमारे विद्वानो का तेजस्, हमारी योग विद्या, हमारे चमत्कार, हमारी कला, पुकार पुकार कर कह रही हैं भारतवासियो जागो तथा अपने अतीत को समझो। मान्यवर कवि वर्ग, विदेशी यात्री गए, बचा-खुचा साहित्य हमारी महिमा के गुण गा रहा है। शोक तो यह है कि इन पुण्य आत्माओं के अनुभव हमने जानने का प्रयास नहीं किया और न सही, श्री मैथिली शरण गुप्त की भारत भारती की कविता गूंज रही है—

हम कौन थे क्या हो गए हैं,
क्या होंगे अभी ।
आओ विचारे ध्यान से,
यह समस्याएं सभी।
यद्यपि हमें इतिहास आप,
प्राप्त पूरा है नही।
हम कौन थे इस ज्ञान को,
फिर भी अधूरा है नही।
आदर्श जन ससार में,
इतने कहां पर हैं हुए।
सत्कार्य भूषण आर्यगण,
जितने यहा पर है हुए।
हैं रह गए यद्यपि हमारे,
गीत आज रहे सहे।
पर दूसरे के वचन भी,
साक्षी हमारी हो रहे ।

क्या यह स्वाधीनता का तकाजा नही कि अपने वास्तविक समाचार प्रकाश में लाकर हम एक तूफान खडा करें कि पुरानी इतिहास की पुस्तकों को हटाकर हमारे देश का नया इतिहास लिखा जाए। ताकि हमारे छात्र वर्ग के खून में नया वर्ण आए जागृति हो, हमारा मुह उज्ज्वल हो, हम औरो को मुह दिखाने के योग्य हों, तथा तल्ला दुनिया पर अपना राष्ट्रीय ध्वज ऊचा करके प्राचीन सभ्यता का बोलबाला कर सकें। अब हमें इस बात से क्या गर्ज है कि मीर जाफिर ने मीर कासिम को मारा, फलां ने फलां को पछाड़ा। हमें तो अब चाहिए यह जानना कि हम वस्तुत: कितने शूरवीर थे। कितने दूरदर्शी थे, कितने नैतिक थे। कितने सहिष्णु ! यदि ससार आजतक भगवान् राम, भगवान् कृष्ण, महाराणा प्रताप, महर्षि दयानन्द, योगीराज अरविन्द, सुभाषचन्द्र बोस तथा महात्मा गाधी नही पैदा कर सका है, तो ससार को उन महान् आत्माओ की जानकारी से क्यो वचित रखा जा रहा है। हम से तो छिपछिपाव हुआ। दूसरो को ज्ञातव्य न बताकर इतिहास का मजाक किया जा रहा है।

कितना अन्याय है कि कालीदास को, भारत भूमि का सुपुत्र न कहकर भारत का शेक्सपीयर कह डाला गया है। यद्यपि कालीदास शेक्सपीयर के काल मे अन्तर, चिन्तन के स्तरमे अन्तर, भावोत्पादन व प्रकाशन मे अन्तर, कहा कालिदास की मार्मिक अदाएगी, कहा शेक्सपियर की शैली—सात्त्विकता तथा राजसिकता का मुकाबला नही बनता। पर यह सूरत बताई इसलिए कि कालीदास गुलाम देश की महान् आत्मा थी तथा शेक्सपीयर राज-काज का प्रतिनिधि ! सुभाष बाबू को जब सोने से तोला गया (उस दृश्य की कहानी क्रमश. बताऊगा।) या उस समय वहां खडी एक जापानी देवी से यह कहते न रुका गया कि उनके यहां भी राजा का तुलादान होता है और वह सोना राजमहल मे ले जाया जाता है, पर कैसा भारत माता का सुपूत, सोने में तोला गया, वह सारा सोना अपने महान् देश के समर्पित किया गया। यह अचम्भा उस मा को अचम्भे मे डाल रहा था। यह दिव्यता थी हमारे भाग्य विधाता का। इन चित्रो को, तथ्यों को, अब सामने क्यो नही लाया जाता। वो सीदा इतिहास की कथाओं के मुकाबले—अब हमारा अधिकार है अपने पुरखाओं के गौरवमयी कथाओं को जानने का, उनकी जांच से हमारा सरोकार है। यह अन्याय अधिक सहा नही जाता। समय है जब हमारा युवा वर्ग इन रहस्यों को समझे तथा साहस भरे सही प्रगति की। जिस दिन पहला स्वतंत्रता दिवस मनाया जा। २९। था। देश भर खुशी से फूला नही समा रहा था। महफिलें थीं, जशन थे। उत्सव थे पर देश पिता उस दिन भी उपवास ले बैठे। जब पोती ने क्यो का प्रश्न किया तो उत्तर यह दिया कि मैं आज के दिन परमपिता के चरणों में दीन दुखियों के लिए भिक्षा लूगा।

कोई भी तो ससार मे ऐसे उदाहरण निकाले, यह गर्व लेने की दिव्यता की भी तो कोई पराकाष्ठा होती है। पर यह होता है न दरिद्र नारायण को, न साधारण व्यक्ति, न जिज्ञासु को, न किसी छात्र को इस दृष्टान्त की जानकारी है। शोक यहा समाप्त होता है, धन्य है हमारे राज्याधिकारियों को कि राजे जिन्दगी को भी छिपा एक पाप किया जाता है। वही पुरानी एक रट हार जीत की, कहीं ऊचे चरित्र का दृष्टान्त नही तो हमारे खून को उबाल दे। क्या हम उसे इतिहास कह देना चाहते हैं जो सरासर झूठ तथा भ्रष्टाचार है। लार्ड एटनबरीह को ससार भर में से गाधी नाम की फिल्म सूझी, करोडो रुपये उसके द्वारा कमाने की अक्ल मिली। इतना बडा ससार किसी और के यहां के नेता को भी चुना होता। परन्तु हम हैं जो अभी तक अपने महामानवों को प्रस्तुत करने का प्रयास नही कर पा रहे। यह थोड़े भाव-भीने उद्गार ही सेवा मे पेश हैं। इस लेखमाला में जीते जागते उदाहरण देकर अपने लक्ष्य को पूरा करना चाहता हूं केवल इसलिए कि भगवान् के नाम पर नई शिक्षा-प्रणाली में नयापन लाया जाए ताकि स्वतन्त्रता के प्रमाण में भारत माता की गूज बने। सत्य का बोलबाला हो, देशवासियों की आंखे खुलें कि हम कौन थे। पुरानी बेमतलब की गपोडबाजी से मुक्ति मिले। हमें क्या मतलब कि बाबर कैसे आया, क्या लाया। तैमूर क्यों आया। लुटेरा था लूटने आया था। यह तो कह दिया गया कि तैमूर लाखों की सेना लेकर भारत पर टूटा था, पर यह नही बताया गया कि लाया ?॥ २॥ लाख की सेना, जिसमें से हमारे वीरों ने १६०००० का सफाया कर दिया था। चुनांचे यह भी नहीं लिखा गया जो तैमूर अपनी पुस्तक में स्वयं बता रहे हैं कि हरिद्वार के युद्ध में वह स्वयं मरते मरते बचा था। लुटेरे के समाचार, आक्रमण, क्रूरता भरे व्यापार, वातावरण को सामने लाकर हमें लडाई झगड़े के ही विचार बनाकर, जीने का ढग सिखाया गया है। इतिहास की यह सेवा नहीं कि वह केवल इधर-उधर की घटनाएं बताए। परन्तु अतीत जिसे शीघ्र प्रकाश देना अत्यन्त आवश्यक है। ४० वर्ष में यह पृष्ठ बदलना मांगता है। बदलने का विचार न आना अभी दासता की जंजीरों में बधा होने का प्रमाण है।

(क्रमश:)

(पृष्ठ २ से आगे)

वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

उन्हें लौकिक संस्कृत के अनुसार रूढ मानकर उनकी व्याख्या करना ठीक नहीं। यौगिक होने के कारण अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण, यम, मातरिश्वा, रुद्र, देव आदि शब्द आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक दृष्टि से अनेकार्थक हैं।

(४) वेद विशुद्ध रूप से एकेश्वरवाद का प्रतिपादन करने वाले हैं। अग्नि, मित्र, इन्द्र, वरुण आदि शब्द। जैसे कि—

इन्द्र मित्रं वरुणमग्निमाहु.।
एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति ॥
(ऋ० १।१६४।४६)

इत्यादि मन्त्रों को उद्धृत करते हुए बताया गया है, प्रधानतया परमेश्वरवाचक हैं। आधिभौतिक क्षेत्र मे वे ज्ञानी ब्राह्मण, ऐश्वर्यसम्पन्न राजा, जीव, पुरोहित, अज्ञानान्धकार निवारक श्रेष्ठपुरुष इत्यादि के वाचक भी हैं। ८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य (मास), इन्द्र (विद्युत्) और प्रजापति (यज्ञ) ये ३३ तत्त्व प्रकाशदायक तथा लाभकारी होने के कारण वेदादिशास्त्रो मे देव कहे गये हैं, किन्तु उपास्य परम देव एक परमेश्वर ही है।

(५) यज्ञ शब्द जिस यज् धातु से बनता है उसके देवपूजा, सगतिकरण और दान ये तीन अर्थ है जो अपने से बड़ो, बराबर स्थिति वालो और हीनो (छोटों) के प्रति कर्तव्य के सूचक हैं। अत: अपने तथा जगत् के कल्याण के लिए किया गया प्रत्येक शुभकार्य यज्ञ कहलाता है। यज्ञो में पशुहिंसा सर्वथा वदविरुद्ध है, यज्ञ के लिए वेदों में सैकड़ों स्थानो पर 'अध्वर' शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ ही "अध्वर इति यज्ञनाम ध्वरति।हसाकर्मा तत्प्रतिषेध:।" (नि० १।८) इत्यादियास्काचार्यकृत निरुक्तानुसार हिंसारहित शुभ कर्म है।

(६) वेदो मे अध्यात्मविद्या के अतिरिक्त भौतिक विद्याओं का भी बीजरूप से उपदेश है। ज्योतिष, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, समाजशास्त्र, राजनीतिविद्या, विज्ञानादि का मूल वेदों में विद्यमान है। महर्षि दयानन्द द्वारा अभिमत ये मन्तव्य प्राचीन ऋषि मुनियों द्वारा सम्मत हैं और उनके समर्थन में सैकडों प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। पर लेखविस्तारभय से ऐसा करना यहां सम्भव नहीं।

महर्षि दयानन्द की वेदार्थविषयक शास्त्र तथा तर्क सम्मत इस क्रांति का देश-विदेश के निष्पक्षपात विद्वानों पर क्या प्रभाव पडा, यह मैंने 'ऋषि वेदभाष्यकार के रूप में' इस नाम के निबन्ध में विस्तार से बताया है। दयानन्द संस्थान करोलबाग, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया है। यहां तो इतना ही लिखना पर्याप्त है कि सुप्रसिद्ध जर्मन विद्वान् प्रो० मैक्समूलर तथा नोबल पुरस्कार-विजेता और Great Secret (महान् रहस्य) नामक उत्तम ग्रन्थ के लेखक मेटलिक दोनों ने वेदो को ज्ञान का विशाल भण्डार बताया है, जिसे मानवसृष्टि के प्रारम्भ मे ऋषियों पर प्रकट किया गया।

Vast reservoir of the Wisdom that some where took shape simultaneosly with the origin of man (Materink in the 'Grest Secret')

रूस के ऋषि तालस्ताय, अमेरिका के सुप्रसिद्ध विचारक थोरियो, आयर के जेम्स कजिन्स इत्यादि पाश्चात्य विद्वानो, जगद्विख्यातयोगी श्री अरविन्द जी, महाविद्वान् और योगी श्री कपाली शास्त्री जी, श्री माधव पुण्डलीक पण्डित जी आदि भारतीय विद्वान् योगियों, पारसी विद्वान् श्री दादाचान जी बी. एल एल बी. तथा सर सैय्यद अहमद खां, सर यामिनखान आदि मुसलमान विद्वानों पर महर्षि दयानन्द के वेदादिविषयक विचारों तथा उनके वेदभाष्यादि का अद्भुत प्रभाव पडा।

पण्डितराज, सारस्वतसार्वभौम, सामवेद तथा यजुर्वेद भाष्यकार स्वामी भगवदाचार्य जी, कनखल हरिद्वार के महामण्डलेश्वर चातुर्वर्ण्य भारतसमीक्षा, ऋग्-यजु-साम अथर्वसंहितोपनिषच्छतकों के लेखक परमहंस परिव्राजक स्वामी महेश्वरानन्द जी गिरि, सनातनधर्म कालेज मुलतान के भू० पू० आचार्य विद्वच्चूडामणि श्रद्धेय पडित चूडामणि जी शास्त्री (स्व० विज्ञानभिक्षु जी) सनातनधर्म मडल देहली के प्रधान पं० गङ्गाप्रसाद जी शास्त्री इत्यादि पर महर्षि दयानन्द के वेदविषयक इन मन्तव्यों का यह प्रभाव पडा कि उन्होंने स्त्रीशूद्रादि सबके वेदाधिकार के सिद्धान्त का अपने ग्रन्थों में खुले तौर पर समर्थन किया। गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था के सिद्धान्त का प्रबल समर्थन अनेक शास्त्रीय प्रमाणों से किया और महर्षि दयानन्द जी को कलियुग में 'आस्तिक शिरोमणि' बताया (स्वा० भगवदाचार्य जी सामसंस्कारभाष्य की भूमिका मे)। महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्द जी गिरि ने—

बहूनामनुग्रहो न्याय्य:,
समाजराष्ट्ररक्षक ।
महर्षि-दयानन्दो
दम्भपाखण्डमर्दक: ॥
वेदधर्मप्रचाराय,
मर्दनाय विधर्मिणाम्।
आर्याणा सघशक्त्यर्थं,
प्रयासो येन वै कृत. ॥
तस्य महानुभावस्य,
सम्मतिश्चास्ति कृष्णवत्।
गुणकर्मानुसारेण,
चातुर्वर्ण्यव्यवस्थिति: ॥

(चातुर्वर्ण्य भारतसमीक्षा, महामण्डलेश्वर स्वा० महेश्वरानन्द जी गिरिकृत द्वितीय खण्ड, पृ० १५)।

इन श्लोकों में स्वामी दयानन्द जी को महर्षि समाज राष्ट्र-रक्षक दम्भपाखण्ड-मर्दक, वेदधर्म-प्रचारक और आर्यों की सघशक्ति का वर्धक कहा है और यह कहा है कि वर्ण-व्यवस्था के विषय मे उनकी श्रीकृष्ण जी महाराज जैसी सम्मति है कि वर्णव्यवस्था गुण कर्मानुसार होती है।

स्व० श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति तथा अन्य आर्य विद्वानों से जीवनभर शास्त्रार्थ करने वाले महामहोपाध्याय प० गिरधर शर्मा चतुर्वेदी को भी लिखना पडा कि—

'वेद के वैज्ञानिक युग के व्याख्याकार श्री स्वामी दयानन्द जी हैं। उन्होंने वेद के गौरव की और आर्यजाति की दृष्टि बहुत कुछ आकृष्ट की है।"

(वैदिक विज्ञान और भारतीय-संस्कृति प० गिरधर शर्मा जी कृत पृ० १०)। □

कर्मक्षेत्र के शूर सैनिको
जीवन में विश्राम न समझो!

लगता है, उत्तर मे हिमगिरि अग्नि ज्वाला से दहक उठा है,
केशर क्यारी का यह माली जानबूझकर बहक उठा है।
मानसरोवर पर गोधों का मटमैला मन लहक उठा है,
विद्रोही विषवल्लरियों को रेशम की तुम दामन समझो ॥१॥

भगतसिंह का आंगन सब ही बाधाए झेल चुका है,
रक्षक, तक्षक, भक्षक बनकर खूनी होली खेल चुका है।
उग्रवाद अमृत के सर में जहर हलाहल मेल चुका है,
बिखरे आतंकी पृष्ठों को लिपि का पूर्ण विश्राम न समझो। २॥

अच्छा है, अभिनय करने को कुछ नूतन हैं पात्र सजाये,
तालमेल से तान मिलाकर सुर जीते हैं वाद्य बजाये।
मन जीतेंगे, जो श्वासों में विश्वासों के गीत गुंजाये,
सूत्रधार की अभी भूमिका नाटक का परिणाम न समझो ॥३॥

जग को जीत जताने कुछ तो बामी से भी निकल गये हैं,
प्रतिवेशी की जहरी बोली बडे चाव से निगल गये हैं।
फण फैला फुङ्कार मारकर विषधर विष को उगल गये है,
नीम वृक्ष पर चढ़े करेले को तुम मीठा आम न समझो ॥४॥

सावधान हो अभी समस्याओ के फैले जाल बहुत है,
खण्डन खड्ग हाथ मे लेकर नाच रहे वैताल बहुत है।
राष्ट्रिय निष्ठा उस ने आस्तीन मे व्याल बहुत हैं,
वैर विरोधी बवण्डरो का सचमुच काम तमाम न समझो ॥५॥

कुछ देवों के पहिन मुखौटे दैत्यों ने भी यज्ञ रचाया,
स्वर्ण शाल को ओढ यहां पर मारीचो का दल है बनाया।
स्वतन्त्रता सीता को हरने रची जा रही यह सब माया
ये रावण के प्रबल पक्षधर राम, इन्हें अभिराम न समझो ॥६॥

—कविवर "प्रणव" शास्त्री महोपदेशक
शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा (उ प्र)

जीवन में त्यौहारों का महत्त्व

—चमनलाल

किसी देश राष्ट्र तथा समाज का साहित्य और उसके द्वारा मनाए जा रहे त्यौहार (पर्व) उस देश, राष्ट्र व समाज के उत्थान-पतन की कहानी होती है। इन दोनों साधनों के माध्यम से उस इकाई की सभ्यता, संस्कृति, जीवन यापन की पद्धति तथा उसके परम्परागत रस्मो-रिवाज का भलीभांति पता चल जाता है। यही नहीं, ये दोनों ही साधन उस राष्ट्र देश व समाज के धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था, विचारधारा के पूर्णरूपेण द्योतक होते हैं, यही इनके विश्वासों और आपसी मेल-मिलाप, सदभावना वा इसके विपरीत तथ्यों की पूरी जानकारी देने में योग देने वाले होते हैं—उसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है। इन में से साहित्य तो जनसाधारण की पहुंच से बाहिर की बात है। दूसरे इस में समय-समय पर स्वार्थी तथा राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा अष्ट सष्ट बेतुकी मिलावट करके इसके स्वरूप को विकृत भी किया जा सका है और इस को नष्ट भी करने में उन को जरा भी संकोच नहीं होता। इतिहास इस बात का प्रमाण है कि कुछ धर्मान्ध, स्वार्थी, धर्म विरोधी और कट्टरपंथी राजसत्ताओं ने हमारे स्वर्णिम एवं सुसमृद्ध इतिहास को विकृत करने के दुष्प्रयास ही नहीं किये अपितु इसको सर्वथा नष्ट करने की कुछ कम कुचेष्टा नहीं की। कौन नहीं जानता कि हमारे साहित्य से मुगल शासकों ने अपने हमाम गर्म किये और इस प्रकार हमारे साहित्य को नष्ट भ्रष्ट किया। जो कुछ और शेष रहा उसको अंग्रेजों ने अपने स्वार्थ के कारण विकृत रूप में हमारे सामने उपस्थित करने का भरसक प्रयत्न किया। परन्तु दूसरा साधन-त्यौहार-पर्व एक ऐसा वस्तु है जो जनसाधारण के दिलों पर अपनी अमिट छाप लगाए हुए रहता है। प्रतिवर्ष इनका मनाना-अनुष्ठान इनके महत्त्व की याद ताजा करता रहता है। यही कारण है कि हमारे प्राचीन साहित्य के अधिकतर नष्ट होने पर भी हमारी प्राचीन सभ्यता संस्कृति आज भी उसी रूप में हम को उपलब्ध है जिस रूप में वह सहस्रों वर्ष पूर्व थी। जब कि अन्य सभी चीन, मिस्र, रोम जैसी सभ्यताएं आज लुप्त प्राय सी हो चुकी हैं। कवि शिरोमणि इकबाल ने इसीलिये तो ठीक ही कहा था—

"कुछ बात है कि,
हस्ती मिटी नहीं हमारी।
चीन, मिस्रो रोमां,
जबकि मिट गये जहाँ से।"

वह कुछ बात वास्तव में हमारे पवित्र त्यौहारों की एक शृङ्खला ही तो है।

हमारे देश में जितने अधिक त्यौहार-पर्व मनाये जाते हैं यह नितान्त सत्य ही है कि इतने अधिक त्यौहार किसी देश में नहीं मनाए जाते। त्यौहार सामाजिक धार्मिक आदर्शों तथा राजनीतिक व्यवस्था और विचारधारा के पूर्णतया द्योतक हैं। इन हमारे त्यौहारों की एक मुख्य विशेषता यह है कि ये त्यौहार किसी न किसी रूप में आनन्द, आमोद, प्रमोद के प्रतीक हैं। इनका प्रतिवर्ष मनाना जीवन में उत्साह, चेतना तथा स्फूर्ति के स्रोत तो हैं ही, ये बड़े प्रेरणादायक शिक्षाप्रद, भी हैं। हमारे जीवन यापन की शैली के इतने सुन्दर और प्रभावशाली प्रतीक हैं कि सभी आबाल वृद्ध स्त्री पुरुष जहां हर्षोल्लास में मग्न हो इन त्यौहारों को मनाते हैं, वहां महीनों से रुग्ण शय्या पर पड़े व्यक्ति भी इनके आगमन की प्रतीक्षा करके अपने को कुछ न कुछ स्वस्थ अवश्य अनुभव करते हैं। और यह भी सत्य है कि भौतिकता से प्रभावित इस युग से, जहाँ कञ्चन और कामना के दिलदादा लोगों ने ईश्वर विश्वास और धर्म की पवित्र भावना को अपने जीवनों से इसे तुच्छ और व्यर्थ समझ कर ऐसे निकाल कर फेंक दिया है जैसे कि कोई गृहिणी दूध में पड़ी मक्खी को बाहिर निकाल कर फेंक देती है ऐसा व्यक्ति भी त्यौहार की महत्ता को समझ कर कुछ ही देर के लिए ही सही, धार्मिक भावनाओं से अपने को कुछ कम भरपूर नहीं पाता और तदनुरूप व्यवहार करने लगता है। ऐसा विचित्र है प्रभाव हमारे त्यौहारों का मानव समाज के जीवन पर।

सचमुच हमारे ऋषि मुनियों ने त्यौहारों की इस पवित्र परम्परा को स्थापित करके जहाँ जन साधारण के धार्मिक विचारों को जीवित रखा वहां देश, राष्ट्र और समाज की जीवन झांकी प्रस्तुत करने में ऐसे सफल हुए कि इससे प्रभावित होकर संसार के अन्य देशों के लोग इस देश को अपना गुरु मानने पर बाधित हुए और वहां से शिक्षा ग्रहण करने के लिए यहां आते थे। इनके द्वारा ही भूमण्डल के मानव समाज को आचार और सदाचरण एवं सद्व्यवहार की शिक्षा दी थी। राजा लोग भी इससे कुछ कम प्रभावित नहीं थे। हमारा इतिहास इस प्रकार के उदाहरणों से भरा पड़ा है। एक समय राजाओं के भोजन को दूषित समझ कर जब ऋषियों ने अश्वपति महाराज के भोजन ग्रहण करने से इन्कार कर दिया तो महाराज अश्वपति ने अपनी शासन-व्यवस्था के सम्बन्ध में जो बात कही वह समस्त संसार के इतिहास में बेजोड़ है और कहीं स्वप्न में भी देखने को न मिलेगी। उसने कहा—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न च मद्यप.। नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

अर्थात् मेरे सारे राज्य में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस-अदानी नहीं है, कोई शराबी नहीं है, न ही कोई यज्ञ न करने वाला ही नहीं है और नहीं कोई मूर्ख है। कोई दुराचारी पुरुष भी तो नहीं है। जब पुरुष ही चरित्रहीन नहीं हैं तो स्त्री के तो दुराचारिणी होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। आज का बड़ा से बड़ा विकसित देश भी इस आचार शुचिता का कोई दावा नहीं कर सकता। ऐसे हमारे पवित्र और महान् आदर्शों के कारण ही लाखों वर्ष पूर्व महर्षि मनु ने यह गौरवपूर्ण उद्घोष कह सुनाया—

एतद्देशप्रसूतस्य
सकाशादग्रजन्मन.।
स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन्
पृथिव्यां सर्वमानवा.॥

इन्हीं आदर्शों के कारण हम संसार में छाये हुए थे। पाश्चात्य विद्वान् रिचर्ड पाल ने ठीक ही तो कहा है कि किसी व्यक्ति अथवा राष्ट्र को महत्ता की कसौटी और कुछ न होकर केवल उसको विचारसरणी ही है—

The greatner of a man or a nation ıa measured not by the brutal victories attained by him but it is known by the graetner of an ideal (he follows).

हां तो त्यौहारों का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है। होली, श्रावणी, विजयादशमी, शिवरात्रि, दीपावली, कृष्णजन्माष्टमी और रामनवमी जैसे अनेकों प्रेरणादायक त्यौहार और पर्व हैं, कुछ वर्षों से स्वतन्त्रता तथा गणतन्त्र दिवस त्यौहारों की लड़ी के अङ्ग बन गये हैं। सब का अपना अपना महत्त्व है। परन्तु इनमें से तीन बड़े महत्त्वपूर्ण त्यौहार एक ही महान् व्यक्तित्व से सम्बन्ध रखते हैं। वे हैं—रामनवमी, विजयादशमी और दीपावली। इनमें से पहला तो राम के जन्म दिवस के रूप में चैत्र शुक्ला नवमी को मनाया जाता है, परन्तु शेष दो विजयादशमी और दीपावली के इन तिथियों में राम जीवन से जुड़ने में आशका है। जिन की चर्चा प्रमाणों सहित आगे की जा रही है। कुछ भी हो, राम का जीवन हमारे लिए प्रकाश-स्तम्भ का काम देता है। उनके उदात्त जीवन को छाप-अमिट छाप लाखों वर्ष बीतने पर भी उसी रूप में लगी चली आ रही है।

वह स्थिर बुद्धि, स्थित प्रज्ञ, सच्चे आर्य, महात्मा, मनुष्यों के अद्भुत पारखी, महाबली, धर्म धुरन्धर, माता पिता के आज्ञाकारी, प्रजापालक, भ्रातृभाव से भरपूर, योगी, मित्रों एवं भाइयों के लिए अपनी प्यारी पत्नी सीता और अपने जीवन को भी परवाह न करने वाले, निम्नवर्गों के हितैषी, धर्म के नाम पर सब कुछ निछावर कर देने वाले महान् आत्मा और सब से बढ़कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एवं व्यवहार में मर्यादा स्थापित करने वाले त्रेता युग के मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने वाले व्यक्ति थे, जिनके इन असंख्य गुणों के कारण वह सब के हृदय सम्राट् बने हुए हैं और इन्हीं उदात्त गुणों के कारण भारत के ही नहीं अपितु अन्य देश के लोगों ने उनको परमात्मा का अवतार ही नहीं माना, वरन् वे साक्षात् ईश्वर मानकर, उनकी मन्दिरों में सुन्दर-सुन्दर प्रतिमा मूर्ति स्थापित करके बड़ी श्रद्धा से पूजा करके कृत-कृत्य होते हैं। ऐसे ही महान् व्यक्तित्व के कारण इन विपरीत परिस्थितियों में भी समाज स्थिरता से चलता है और विपत्ति के समय उनको याद करके धर्म पथ से च्युत होने से बच जाते हैं। ऐसे राम को शत-शत प्रणाम।

ऐसे उदात्त चरित्र पुरुष, मर्यादा पुरुषोत्तम महात्मा राम का जन्म अयोध्या नरेश महाराजा दशरथ के घर माता कौसल्या के गर्भ से चैत्र शुक्ला नवमी को हुआ था।

समाचार

आर्यवीर दल हरियाणा के प्रान्तीय महासम्मेलन रोहतक में स्वीकृत प्रस्ताव

प्रस्ताव संख्या : १

आर्यवीर दल हरियाणा का यह प्रान्तीय महासम्मेलन देश की समस्त आर्यसमाजों से प्रार्थना करता है कि वे अपनी समाज मे हर मूल्य पर आर्यवीर दल की स्थापना करें। आर्यवीरदल आर्यसमाज का भविष्य है। हमारे नवयुवक इस माध्यम से आर्यसमाज के पवित्र मिशन को सफल बनाने के लिए अग्रसर हो सकते हैं।

प्रस्ताव न० संख्या : २

आज हमारा युवा पीढी पश्चिमी सभ्यता के रंग मे रंगने की गलत नीतियों पर चलती हुई मादक द्रव्यों का प्रयोग बाहुल्यता से करने लगी है। इस प्रकार नशीले पदार्थ हमारी युवा पीढी को जो कि दल के राष्ट्र का भविष्य है खोखला कर रहे हैं।

आर्यवीर दल हरियाणा का यह प्रान्तीय महासम्मेलन केन्द्र एव प्रांतीय सरकारों से अनुरोध करता है कि पूरे भारत में नशाबन्दी अविलम्ब लागू को जाये।

प्रस्ताव संख्या : ३

आर्यवीर दल हरियाणा का यह प्रान्तीय महासम्मेलन महर्षि दयानन्द के मिशन को चालू रखने तथा गभीरता से गहन अध्ययन करने के लिए महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में तत्काल दयानन्दपीठ स्थापित करने का अनुरोध करता है। हरियाणा भी इस पवित्र कार्य मे पूरा सहयोग प्रदान करे।

वेद प्रचार समिति

आर्यसमाज नजफगढ क्षेत्र, दिल्ली का निर्वाचन

दिनाक २४।६।८६ को डॉ० मदनपाल वर्मा, अधिष्ठाता-अन्तर्जातीय विवाह विभाग की अध्यक्षता में उक्त समिति का निर्वाचन सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न लिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए:—

१—श्री प० बृजमोहन शर्मा, प्रधान, २—श्री पं० नानक चन्द शर्मा उप प्रधान, ३—श्री रमेश चौहान, मंत्री, ४—श्री महेन्द्र कुमार शर्मा, कोषाध्यक्ष।

दीप जलाओ

दीप जलाओ पुन: कि सारा अन्धकार मिट जाए।
जीवन ज्योति जगे जगमग हो, मन-प्रसून खिल जाए॥

नव प्रकाश को पाकर मानव, दिव्य भाव अपनाए,
पा चैतन्य सुप्त हृदयों को नव उमग मिल जाए।
दीप जलाओ मानवता का दानवता थर्राए,
नई क्रान्ति का श्रीगणेश हो अपने बने पराये॥

वर्षों पहले दयानन्द ने बढकर दीप जलाया।
कण कण को आलोकित कर अनुपम प्रकाश दिखलाया॥

आर्य जाति की सुप्त चेतना को था पुन जगाया,
अपने तप: पुंज से युग युग का था तिमिर मिटाया।
दीप न बुझने देना उस ऋषिवर को जलती बाती,
थामे रहना विपदाओं में भी उसको वह थाती॥

उठो आर्यो ! पुन: ध्वस का दावानल छाया है।
खड खंड करने स्वदेश को अरि ने उकसाया है॥

उजड जाएगा यह नन्दन वन जन जन भरमाया है,
झझावात चली ऐसी जन मानस अकुलाया है।
ऐसी घोर निराशा में भी आशा दीप जलाओ,
"शान्त" दयानन्द के प्रहरी बन जग को आर्य बनाओ॥

—ले० सत्यभूषण शान्त
वेदालकार एम० ए०
एफ–२६, नई दिल्ली

आवश्यकता है

आर्यसमाज राणा प्रतापबाग में एक योग्य ईमानदार सेवक की तुरन्त आवश्यकता है। मन्त्री से सम्पर्क करें।

आर्यसमाज राणा प्रताप बाग
A६/६ दयानन्द मार्ग दिल्ली-७

झडौदा कलां सी. आर. पी. एफ. कैम्प में आर्यसमाज की स्थापना

दिनाक २।१०।८६ को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली दिल्ली के तत्वावधान में श्री प० आशानन्द जी महोपदेशक द्वारा सी आर पी एफ. कैम्प, झडौदा कलां, नई दिल्ली मे आर्यसमाज की स्थापना की गई। जिसमें निम्न लिखित अधिकारी चुने गये—

श्री आर० के० माथुर,-प्रधान, श्री अचल सिंह, -उप प्रधान, श्री विमल यश-मत्री, श्री यशपाल शर्मा कोषाध्यक्ष, श्री भूदत्त कौशिक-पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री रत्नलाल-लेखानिरीक्षक। —धीरेन्द्र शास्त्री

शुभ-विवाह-पत्रिका

सुन्दर ढग से छपी हुई आर्य विवाह एव लग्न-पत्रिका एक रुपये के डाक टिकट भेजकर प्राप्त कर सकते हैं और स्वय सीखकर भर सकते हैं।

साथ हो विवाह का दिन निश्चित करने मे अन्य धर्मावलम्बियों के अनुसार लगाए गए दोषों का वैदिक प्रमाणानुसार निराकरण नि.शुल्क प्राप्त करें।

डा० धर्मदेव शर्मा शास्त्री
एम० ए० पी-एच० डी०
बी. ६ पुराना क्वाटर
रमेश नगर, नई दिल्ली–१५
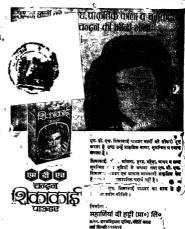
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन : ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस; गली नं० १७; कैलाशनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक ३ | रविवार १६ नवम्बर, १९८६ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | कार्तिक २०४३ | दयानन्दाब्द—१६२

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

अयोध्या में भगदड़ से ४० मरे अनेक घायल

फैजाबाद, ६ नवम्बर। अयोध्या में आज शाम राम जी की पैडी के निकट हुई दुर्घटना में सौ लोगों की मृत्यु की आशंका है।

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार- दुर्घटना मे बडी सख्या में परिक्रमा यात्री घायल हुए हैं। दुर्घटना उस भगदड का परिणाम है जिसमें नियन्त्रण के लिए लगाई गई रस्सियां खुल गई।

अब तक २८ लोगों के शव बरामद हो चुके हैं, जिनमें से २१ महिलाएं हैं।

जिलाधीश वरिष्ठ नागरिक व पुलिस अधिकारियों के साथ घटना-स्थल पर पहुंच कर राहत व बचाव कार्यों की देखरेख कर रहे हैं।

सरकारी सूत्रों ने अब तक ३२ व्यक्तियों की मृत्यु की पुष्टि की है। घायलों को अयोध्या व फैजाबाद के अस्पतालों में भर्ती करवा दिया गया है।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक दुर्घटना तब हुई जब अयोध्या की १४ कोस की परिक्रमा में ज्यादा भीड में भगदड मच गई। तीर्थयात्रियों को लेकर आने वाली बसों के १४ कोसकी परिक्रमा के मार्ग में खड़े हो जाने से रास्ता काफी तंग हो गया था।

मृतकों के शव पहचान व शिनाख्त के लिए फैजाबाद अस्पताल में रखे गये हैं। अधिकांशत. मृतक बस्ती, सुलतानपुर व आसपास के इलाके के बताये जाते हैं।

इसी बीच अधिकारियों ने अयोध्या आने वाले व यहा से जाने वाले सभी रास्ते सील कर दिये हैं। दुर्घटना के कारणों की जाच की जा रही है।

१४ कोस की परिक्रमा में भगदड मच जाने का कारण बसों के खडे होने से रास्ता तंग होने के अतिरिक्त यह भी रहा कि नियन्त्रण हेतु लगी रस्सिया खुल गई थी।

प्रे.ट्र. ने खबर दी है कि मृतकों की संख्या ४० हो गई है। दुर्घटना आज शाम देर से हुई।

एकता अखण्डता के लिए हर कुर्बानी का संकल्प

श्री रामचन्द्र विकल अभिनन्दन समिति द्वारा राष्ट्रीय एकता समारोह में देश को एकता व अखण्डता पर आंच न आने देने के लिए हर कुर्बानी देने का सकल्प किया गया। समारोह सांसद श्री रामचन्द्र विकल के जन्म दिन के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। श्री विकल महर्षि दयानन्द को अपना धार्मिक गुरु मानते हैं।

कृषि मन्त्री श्री गुरुदयाल सिंह ढिल्लों ने कहा कि देश को एकता और अखण्डता को नुकसान पहुंचाने वाली किसी भी ताकत के साथ सख्ती से मुकाबला किया जाएगा। जो ताकतें भारत को कमजोर करना चाहती हैं उनके नापाक इरादे निश्चित रूप से विफल होंगे।

संसदीय कार्य मंत्री श्री एच० के० एल० भगत ने कहा : किसी भी समाज को पिछडेपन से उबारने के लिए बडी कीमत चुकानी पडती है। हमने देश को अखण्ड रखने के लिए बड़ी कीमत चुकाई है।

खान एवम् इस्पात मंत्री श्री के० सी० पंत ने कहा : लोकतन्त्र में विभिन्न विचार धाराओं के लोगों की आकांक्षाओं को पूरा कर पाना कभी-कभी संभव नहीं हो पाता। सम्पूर्ण विश्व में भारत ही ऐसा देश है जहां विभिन्न विचार धाराओं के लोग प्यार और मुहब्बत से रहते हैं। हमें बाहरी और अन्दरूनी ताकतों से सदैव सतर्क रहने की जरूरत है।

श्री विकल ने कहा : देश की एकता को मजबूत करने के लिए कई बार हमें कडवे घूट पीने पडे हैं, लेकिन हमारे नेताओं की दूरदर्शिता और त्याग की भावना से हमारा देश लगातार प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है। □

हरिजन परिवार का बलात् धर्म-परिवर्तन किया गया।

जिलाधिकरी द्वारा जांच का आदेश

कानपुर। आर्यसमाजी नेता तथा केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने जिलाधिकारी तथा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के समक्ष एक ऐसे हरिजन परिवार को पेश किया। जिसको मस्जिद में ले जाकर बलात् धर्म-परिवर्तन किया गया था। अब वह आर्यसमाज गोविन्द नगर में शुद्ध होकर पुन: हिन्दू धर्म में शामिल हो गया है।

उक्त अधिकारियों को ६५/६५ निवासी परेड निवासी श्री छेल बिहारी ने लिखित रूप में शिकायत की है कि मोहम्मद रफीक, जहूर मोहम्मद, शाकिरअली नेता आदि ने पहले मेरी पत्नी नीलम को पतित किया। तत्पश्चात् उसके मस्तिष्क मे यह बिठा दिया कि वह अब हिन्दू नहीं रही। मुझे भी धमकाया कि धर्म परिवर्तन कर लो वरना पत्नी को छीन लिया जायेगा। धर्म परिवर्तन करने पर धन का प्रलोभन भी दिया। मुझे तथा मेरी पत्नी व बच्चे को मस्जिद में ले जाया गया और धर्म परिवर्तन किया गया। मेरा मोहम्मद अली तथा पत्नी का नाम खलिमा रखा गया।

छेलबिहारी ने यह भी शिकायत की कि उक्त गिरोह पाकिस्तान समर्थक है और धर्म-परिवर्तन का कार्य करता है। इस गिरोह को जब मालूम हुआ कि मैं आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य द्वारा पुनः हिन्दू धर्म में शामिल हो गया हूं तब वे सभी मेरी पत्नी का अपहरण करने तथा मकान मालिक से मिलकर मकान खाली कराने की धमकी दे रहे हैं। मैं भयभीत होकर पत्नी को दिल्ली छोड आया हूं। परन्तु वह गिरोह पुन: हिन्दू होने से चिढ़कर अब जान लेना चाहता है।

जिलाधिकारी ने थाना नैकनगज को इस मामले की जांच करने तथा हरिजन परिवार की रक्षा करने का आदेश दिया है।

द्वारा मंत्री—केन्द्रीय आर्यसभा, कानपुर

प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल | व्यवस्थापक—डा० सच्चिदानन्द | सम्पादक—पं० यशपाल सुधांशु एम० ए०

मुझे शास्त्रार्थ करने की प्रेरणा कैसे मिली ?

और उनका आरम्भ कैसे हुआ ?

—अमर स्वामी परिव्राजक

मुझको कुछ ऐसा भान होता है कि मेरे भीतर कुछ ऐसे सस्कार पूर्व जन्म के थे जिनसे मुझको वाद (शास्त्रार्थ) अच्छा लगता था। बाल्यकाल से सगीत मे भी और साहित्य में बहुत रुचि थी।

मेरा सारा परिवार आर्यसमाजी था। मेरे पिता जी विद्वान् नहीं थे पर ऋषि दयानन्द जी के भक्त और थोडे-थोडे आर्यसमाजी थे।

मेरे पिता जी ने ऋषि दयानन्द का एक बारही दर्शन किया था और एक ही व्याख्यान सुना था। उसी से वह दयानन्द जी के भक्त बन गये थे। मुझ को वह सत्यार्थप्रकाश पढने की प्रेरणा दिया करते थे।

मैं यह समझ गया था कि—युद्ध विद्या सीखने के लिए झूठा युद्ध अवश्य करना पडता है। मेरी रुचि शास्त्रार्थों में हो रही थी, इसके लिए मैं अपने परिवार के आर्यसमाजियो से सनातनधर्मी सा बनकर नित्य वाद विवाद किया करता था।

मेरे चचेरे भाई कुवर रामशरण सिंह जी बडे स्वाध्यायशील आर्य-समाजो थे वह मेरे साथ नित्य उसी प्रकार निर्वैर रूप से वाद विवाद करते थे, जैसे एक ही गुरु और एक ही अखाडे के दो युवक कुश्ती लडने के शौकीन अभ्यास के लिए अखाडे मे लडते है। न उनको हारने का दुख होना है और न जीतने का हर्ष।

हमारे पितृव्य (पूज्य चाचा जी) श्री मुशी मावलसिंह जी अपने पुत्र कुंवर रामशरण सिंह जी का तथा मेरा वाद विवाद नित्य ही रात्रि को अपनी उपस्थिति मे कराया करते थे।

हमारी बहस मे और भी कई आर्यसमाजी भाग लेने लगे और ऐसा भी प्राय नित्य हो होने लग गया। ग्राम निवासी २०-३० और कभी-कभी अधिक व्यक्ति भी हमारे वाद को सुनने के लिए आने और बैठने लग गये।

जो और लोग वाद मे भाग लेते थे वे सब भाई रामशरण सिंह जी के पक्ष में ही बोलते थे। मेरे पक्ष मे कोई नहीं बोलता था।

हमारे इन वादो मे कटुता कभी नही आती थी, सदा प्रेमसे ही वार्तालाप होता था। मेरे विरुद्ध कई-कई व्यक्ति बोलजाते मैं धैर्य और शान्ति के साथ सब के प्रश्नों और आक्षेपो को ध्यान पूर्वक सुनता और चटाक पटाक सब के उत्तर दे डालता। परमेश्वर की अपार कृपा से स्मरण शक्ति और उत्तरों की तात्कालिक सूझ बूझ मुझ को इतनी थी कि मैं उस समय के प्रश्नों के प्रभावशाली उत्तर तत्काल दे देता था।

मेरे पितामह श्री ठाकुर कुवर सिंह जी प्राय: कहा करते कि यह कौओ में हंस उत्पन्न हो गया है। मेरे एक चाचा श्री ठाकुर हेतराम सिंह जी मुझ को अभिमन्यु बताया करते थे। कहते थे कि यह गर्भ मे ही पढकर आया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के प्यारेलाल शर्मा हमारे ग्राम में आये तो मुझ को मेरे परिवार के लोगो ने उनसे प्रश्न करने को बिठा दिया और उनको कहा कि आप इस के संदेहो का निवारण कर दीजिये, यह अच्छा आर्यसमाजी बन जाय।

मेरे प्रश्नो को सुनकर वह क्रोध मे आ गये और मुझ को धमकाने लगे। इस पर मेरे मुझ से बडे भाई श्री ठाकुर सरदारसिंह जी जो पीछे अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के महोपदेशक बने, उन्होंने पण्डित जी से कहा कि पण्डित जी आप इसकी शकाओ का समाधान कर सकते हैं तो करिये। धमकाने का काम तो हम भी कर सकते हैं। वह पण्डित जी मेरे प्रश्नों के उत्तर न दे सके।

एक बार गुरुकुल सिकन्दराबाद के कर्ता-धर्ता श्री प० मुरारीलाल जी शर्मा के पास मुझ को शकाएं करने को बिठाया गया, मेरी शकाएं सुनकर उन्होंने मुझ को प्रेम पूर्वक केवल इतना ही कहा कि बेटा अभी और पढो ! और स्वाध्याय किया करो।

बहस करने मे मेरा उत्साह बढता गया। मेरे परिवार में लोगों ने बाल्यकाल मे भी मेरा कभी अपमान नही किया न कभी मेरा उत्साह घटाया !

बाहर के पौराणिको से मैं आर्य-समाज के पक्ष में बोलता था और उनकी बातों का खडन करता। उनके प्रश्नों के उत्तर देता था। सत्यार्थ-प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋषि दयानन्द जी का जीवन चरित्र स्वामी दर्शनानन्द जी के ट्रेक्ट, रामायण, महाभारत तथा बहुत सिद्धान्त सम्बन्धी पुस्तके मैंने बाल्य-काल में ही पढ ली थीं।

हमारे भाई कुंवर सुखलाल जी मुझ को बहुत प्यार करते थे और मेरा उनके साथ बहुत ही प्रेम था।

"वह मुसाफिर विद्यालय" आगरा की ओर से प्रचार करते थे और श्री प० भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर उनको अपना तीसरा पुत्र मानते थे। दो पुत्र उनके श्री डा० लक्ष्मीदत्त जी आर्य मुसाफिर और प० नारादत्त जी वकील थे।

कुवर सुखलाल जी मुझ को अपने साथ आगरा ले गये। उनका लक्ष्य यह था कि यह मुसाफिर विद्यालय में प्रविष्ट न होगा तो भी सब के सम्पर्क में रहता-रहता बहुत कुछ सीख जायेगा।

मेरा विवाह १४ वर्ष की आयु में ही हो गया था। मुसाफिर विद्यालय में विवाहित युवक प्रविष्ट नहीं किये जाते थे।

मैं कुंवर सुखलाल जी के साथ आगरा चला गया, वहां मुसाफिर विद्यालय में नित्य ही रात्रि को विद्यार्थियों के आपस मे शास्त्रार्थ हुआ करते थे और श्री प० भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर, डा० लक्ष्मीदत्त जी आर्य मुसाफिर, प० नारादत्त जी आर्य मुसाफिर ये तीनों उस बहस को नित्य सुना करते और उस बहस के गुण दोष बताया करते थे।

एक दिन विद्यार्थी लोग—मांस भक्षण पर वाद कर रहे थे। मैं भी बोलना चाहता था। मैंने पास बैठे हुए एक विद्यार्थी को कुछ बताने का यत्न किया कि आप ऐसा इस विषय मे कहो।

श्री डा० लक्ष्मीदत्त जी ने भांप लिया कि यह लडका बोलना चाहता है। उन्होंने मुझ से पूछा कि तुम इस बहस मे बोलना चाहते हो ? मैंने कुछ संकोच के साथ कहा कि हाँ जी बोलना चाहता हूं। उन्होंने कहा अच्छा बोलो !

मैं उस दिन मांस खाने के पक्ष में बोला क्योंकि मैं उस ओर बैठा था जिस ओर मांस के पक्ष मे बोलने वाले बैठे थे।

दूसरे दिन अवतार वाद पर भी इसी प्रकार शास्त्रार्थ हुआ। उस दिन उधर बैठा था जिधर अवतार सिद्ध करने वाले बैठे थे। उस दिन में अवतार के पक्ष में बोला।

श्री डाक्टर जी ने यह देखा कि और विद्यार्थी नित्य तैयारी करके किसी पक्ष में बोलते हैं और यह बिना तैयारी किये ही अपनी ओर बैठे हुओं के पक्ष में बोलता है और अच्छा बोलता है। आगे वह पूछने लगे कि—तुम किस ओर बोलोगे तो मैं कहता कि जिस पक्ष को आप कमजोर समझें, उधर ही मुझ को मिला दें। परीक्षार्थ डाक्टर जी ने यह भी किया कि सारे विद्यार्थी एक ओर हो जायें क्या तुम अकेले एक-पक्ष में बोल सकते हो ! मैंने कहा कि बोलूंगा। ऐसा हुआ भी कि सारे विद्यार्थी एक पक्ष में रहे और मैं अकेला दूसरे पक्ष में, साथ ही मैंने यह भी कह दिया कि जो पक्ष कमजोर समझा जाय, वह मुझ को दे दीजिये और जो पक्ष प्रबल समझा जाय वह इन सब को दे दीजिये।

इस प्रकार मेरी युक्तियां और मेरी शैली, वाक्चातुरी आदि देखकर श्री डाक्टर जी ने कहा कि-तुम इस विद्यालय मे प्रविष्ट हो जाओ। मैंने कहा कि-आप के यहां तो विवाहित विद्यार्थी प्रविष्ट नहीं किये जाते हैं, मैं विवाहित हूं।

उन्होंने आपस मे विचार करके कहा कि तुमको इस नियम की छूट दी जाती है। मैं सहर्ष प्रविष्ट हो गया।

आगरा में कई मेले होते थे उनमें हम विद्यार्थी लोग आपस में शास्त्रार्थ करते थे। हमारा शास्त्रार्थ सुनने के लिए मेले में भीड इकट्ठी हो जाती थी। इस प्रकार अभ्यास भी बढता गया उत्साह और शौक बढता गया।

पौराणिकों, ईसाइयों और मुसलमानों से छोटे-छोटे मुबाहिसे विद्यार्थी अवस्था में भी होते रहते थे। मैं अपने विद्यालय में रहता हुआ ही इस कार्य के लिए अपने साथियों में उत्तम माना जाने लगा था। इस पर रुष्ट होकर एक पुराना विद्यार्थी तो विद्यालय को ही छोडकर चला गया था।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

हिन्दुस्थान में ईसाई मिशनरियों के काले कारनामों का भण्डाफोड़

—बिशनस्वरूप गोयल

हमारे देश मे आज अंग्रेजों के शासनकाल की समाप्त हो जाने के ४० साल बाद भी अग्रेजी शासनकाल से भी अधिक ईसाई मिशनरीज सक्रिय रूप से हमारे हिन्दू समाज के धर्मान्तरण के कार्य मे सक्रियता से जुटे हुए हैं। ये मिशनरीज दूरस्थ स्थानो पर बसे हमारे हिन्दू समाज के अभिन्न अग गिरिवासी, वनवासी, आदिवासी, अनुसूचित जाति तथा हरिजन बन्धुओ का गरीबी, पिछड़ेपन और उनके अनपढ़ होने के नाते उन्हें प्रलोभन के बल पर उनका धर्मान्तरण कर उन्हें ईसाईमत मे मिला लेते हैं। इस काम के लिए इन मिशनरीज को प्रति वर्ष लगभग ४० करोड रुपये ईसाई देशो से आते हैं जिनका हमारी सरकार को पूरी जानकारी है और वह यह भी जानती है कि यह सारा धन हिंदुओं को ईसाई बनाने पर ही व्यय किया जा रहा है। हमारी सरकार इस प्रकार के विदेशी धन के आने और उसे इस प्रकार किसी एक मत का प्रचार कर अन्य मतो मे परिवतन कर ईसाई बनाने पर प्रतिबन्ध लगाने के स्थान पर उन्हें और सहयोग प्रदान कर रही है।

इसका एक स्पष्ट उदाहरण इस बार पहली बार ही देखने को मिला है। आज तक ससार के किसी भी देश की सरकार ने किसी मजहब, मत या सम्प्रदाय के मजहबी आचार्य को सरकारी निमन्त्रण पर नहीं बुलाया है और न ही कभी उसका राजकीय तौर पर सम्मान किया गया है। किन्तु इस बार पहली बार हमारे प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी ने वेटिकन सिटी के ईसाईमत के मजहबी आचार्य जॉन पोप पाल को सरकारी निमन्त्रण पर बुला कर उसका राजकीय सम्मान कर शायद पहली बार इतिहास मे ये नये पन्ने जोडे हैं। इसमे ऐसा रहस्य लगता है कि क्योंकि उनकी पत्नी एक ईसाई परिवार की लडकी है शायद उनके आग्रह पर ही श्री राजीव को ऐसा करने पर विवश होना पडा हो। यदि यह बात सत्य है तो इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ईसाईमत भी कट्टरता में मुसलमानों से कम नही है। वे भी शायद यहाँ ईसाई मत के प्रचार व प्रसार मे अप्रत्यक्ष रूप से अपना योगदान कर रहे है।

इसी प्रकार हमारी सरकार ने जिस प्रकार मदर टरेसा को यहां मानवता की सेवा का प्रतीक मान कर उन्हें हर प्रकार की सुविधाएं, अनुदान तथा उपाधियों से विभूषित किया है वह भी यहा एक प्रकार से ईसाई मत के प्रचार और प्रसार मे सहयोग देना ही कहा जा सकता है। क्या कभी हमारे राजनेताओ ने मदर टेरेसा द्वारा चलाये जा रहे यहां के अनाथ आश्रमों को इस दृष्टि से देखने का प्रयास किया है कि इन आश्रमों मे कही ईसाईमत का प्रचार तो नही हो रहा है? ये लोग तो वहां जाते हैं स्वागत कराया और हार पहने और चले आये। इन्होंने कभी भी इस ओर ध्यान नहीं दिया है। मुझे मदर टैरेसा द्वारा संचालित कई अनाथ आश्रमों को देखने का अवसर मिला है और मैंने उन्हें उसी दृष्टि से देखा है कि इन आश्रमों में कोई देश विरोधी गतिविधिया तो नही चलायी जा रही। इन्हें देखने के बाद मैं पूर्ण विश्वास के साथ यह कह सकता हू कि इन आश्रमों में पलने वाले और रहने वाले लोगों को पूरी तरह ईसाईयत की ही शिक्षा दी जा रही है और बडे हो कर जब ये यहा से निकलेगे तो न केवल ईसाई होगे अपितु वे ईसाई मत के कट्टरपन्थी प्रचारक बनेंगे।

जहां तक ईसाई पादरियो और मिशनो की बात है वैसे तो उन्हें "फादर" कहा जाता है और वे भी हमारे यहां मानवीय सेवा के प्रतीक माने जाते हैं। किन्तु इन दिनों इन के कुछ काले और शर्मनाक कारनामे सामने आये हैं जो आखे चौका देने वाले हैं। अब ये ईसाई मिशनरियाँ यह भी समझ गयी हैं कि हमारी सरकार डण्डे की भाषा ही समझती है। सिखों ने डण्डा उठाया उन से डर गयी और उनकी बातें मान ली। मुसलमानो ने डण्डा उठाया उनकी बातें मान ली गयीं। हिन्दू डण्डा नही उठाता उसकी बात नहीं मानी जाती। इस कारण अब ईसाई मिशनरीज ने भी मुसलमानो की तरह ही आक्रान्ता व्यवहार अपनाना आरम्भ कर दिया है।

ये ईसाई भी अब सभी प्रकार के छल, साम, दाम, दण्ड, भेदादि से हिन्दू संस्कृति, सभ्यता एव राष्ट्रीय भावना को जनता के मनों से मिटाने को पूरे दम खम से जुटे हैं।

कन्याकुमारी के निकट स्वामी विवेकानन्द शिक्षा स्मारक पर ईसाइयो की गृध्रदृष्टि

कन्याकुमारी जहां हमारा स्वामी विवेकानन्द शिला-स्मारक नामक तीर्थ स्थल है और जहा स्वामी विवेकानन्द को ज्ञान प्राप्त हुआ था वहाँ ईसाई मिशनरीज ने बडी तेजी से धर्मान्तरण का कार्य सक्रिय रूप से चलाया हुआ है। वहाँ के रहने वाले सभी मछेरो को धन का प्रलोभन तथा अन्य सुविधाएं प्रदान कर ईसाई बना लिया गया है। इन मछेरो से यहा तक भी कहा गया है कि 'जो तीर्थ यात्री शिला-स्मारक देखने के लिए आते है उन्हें जो मल्लाह नाव मे बंठाकर ले जाते है उन्हे मारो, धमकाओ और इस बात के लिए मजबूर कर दो कि वे उन नावो को चलाना छोडकर ईसाई बन जाये।' वहा पर ऐसा हो किया जा रहा है जो एक प्रकार से हमारे इस महान् तीर्थस्थल पर एक भयकर आक्रमण ही है। यही नही वहा के मन्दिर का पुजारी जो एक अनुष्ठान करने की योजना बना रहा था उसका तथा उसके अन्य दो साथियो का ईसाइयों ने अपहरण करा लिया और आज तक उनका पता नही है। ऐसी आशा है कि उनकी हत्या कर उनके शवो को समुन्दर मे फेंक दिया गया है। अब यह खोज तमिलनाडु सरकार को करनी चाहिए कि इन तीनो लोगों को कहा ले जाया गया।

श्री रामेश्वरम् टापू को ईसाई होमलैण्ड बनाने की योजना

श्री रामेश्वरम टापू वह स्थान है जहां भगवान् राम ने लका विजय से पूर्व शिव लिंग की स्थापना कर वहा शिव की पूजा की थी। यह श्री रामेश्वरम् टापू दक्षिण मे मुख्य भूमि से दूर सागर में तैरता हुआ १२ मील लम्बा और पाच मील चौडा एक टापू है। यह स्थान भगवान् राम द्वारा यहा शिवलिंग की पूजा किये जाने के कारण हिन्दू समाज का एक पवित्र तीर्थस्थल माना जाता है और हिन्दुओ की श्रद्धा का केन्द्र बन गया है। यहाँ रामेश्वरम् का मंदिर भी बना हुआ है जिस के दर्शन करने प्रति दिन लगभग पाच हजार लोग यहा आते हैं। किन्तु ईसाई मिशनरिया इस स्थान को पूरी तरह ईसाई होम लैण्ड बनाने के लिए जी जान से जुटी हुई हैं और अब इसके अस्तित्व को ही समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। श्री रामेश्वरम् टापू के ३७ गांव हैं जिनकी कुल जनसख्या एक लाख के लगभग है। इन ३७ गावों में से १० गांव पूरी तरह से ईसाई बना लिये गये हैं जिनकी आबादी १६००० है। ये सभी ईसाई हैं। श्री रामेश्वरम् टापू पर इस समय ईसाइयों की सख्या लगभग ३५००० है जो वहा की कुल आबादी का ३५ प्रतिशत है। मुस्लिम आबादी तो वहां केवल एक हजार के लगभग ही है। यहां की शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था पर ईसाई मिशनरियो का पूरा आधिपत्य है। क्योंकि यहाँ के सभी मछेरे ईसाई बन चुके हैं। इसलिए वे अधिकाश ईसाई मिशनो द्वारा प्राप्त की की गयी सहायता और धन से सम्पन्न हैं। अब वे तस्करी जैसे अवैध धन्धो में भी सलग्न होते जा रहे है। ईसाई मिशनरियो की सहायता से ही अब इन मछेरो के पास ८०० नौकाएं तो यान्त्रिक भी मौजूद हैं जिनका उपयोग वे तस्करी के काम के लिए ही करते है। इन मछेरो ने समुन्दर के किनारे को वहा पर नावें खडी करके इस प्रकार जान बूझ कर घेर लिया है ताकि श्री रामेश्वरम् मन्दिर के दर्शन करने जाने वाले लोगों को कठिनाई हो और उन्हे वहा स्नान आदि करने में काफी परेशानी पैदा हो जाए। तमिलनाडु सरकार को हमारे इस तीर्थस्थल को ईसाई होम लैण्ड बनने से रोकने तथा हमारे तीर्थ यात्रियो को सभी सुविधाए उपलब्ध हों इसके लिए इन मछेरे के विरुद्ध कार्यवाही करनी चाहिए इसके लिए हिन्दू समाज के वरिष्ठ लोगों को भी तमिलनाडु सरकार को लिखना चाहिए।

कान्वेण्ट स्कूलो से सावधान रहें

अमेरिका के केलिफोर्निया एक स्कूल के अभागे ४५० बालक

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महर्षि दयानन्द का दिव्य संदेश विश्व में फैलाना है

—डा० आनन्द प्रकाश

महर्षि दयानन्द के उपदेशों का मूलमत्र विश्वप्रेम और मानव एकता है। उन्होने धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रों की बुराइयों का खण्डन इसी दृष्टि से किया क्योंकि मनुष्यों की एकता में ये बाधक हैं। महर्षि ने अपने जोवन में इस बात का भी प्रयास किया कि विभिन्न सम्प्रदायों के लोग सर्वमान्य सिद्धान्तो और मान्यताओ पर एकमत होकर आपस में समीपता लायें परन्तु निहित स्वार्थों के कारण यह प्रयास सफल न हो सका। विश्व ने व्याप्त सभी विभेदक दर्शनो, चाहे वह नस्ल के आधार पर हो अथवा रग अथवा अमीरी-गरीबी के कारण, को जड से समाप्त करने का सीधा रास्ता समस्त भूमि को माता और ईश्वर को पिता अर्थात् सारे जगत् का रचयिता स्वीकार करना है। वेद का यही आदेश है और महर्षि ने इसी सदेश के द्वारा समस्त मानवता को एक करने का कार्यक्रम आर्यसमाज को दिया। आर्यसमाज ने अपने नियमों में एक नियम-संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है—बताया। वास्तव मे ससार का उपकार करने की भावना से ही अनेक देशों में आर्यसमाज को स्थापना हुई थी परन्तु कालान्तर में वह भारतीय मूल के निवासियों में ही सीमित हो गया और उसने अपना कार्यक्षेत्र विद्यालय चलाना और विवाह सस्कार कराना ही मुख्य रूप मे बना लिया। इस प्रकार साधन को साध्य बना दिया गया। महर्षि दयानन्द के द्वारा दर्शाया गया मानव एकता का सच्चा म गं, जिसे हम ऋग्वेद के सगठनसूक्तके उच्चारण द्वारा प्रनि सप्ताह अपने साप्ताहिक सत्सगो मे दोहराते हैं, आज प्रसन्नता की बान है कि विश्व मच पर स्थान पा चुका है। परन्तु अभो इसके भाव को समझने में देर है, जिसमें वैदिक सस्कृति के मार्ग का अवलम्बन कर मन, विचार और कर्म की एकना का आह्वान किया गया है। यह उत्तरदायित्व आर्यसमाज का है कि वह विश्व समुदाय के समक्ष महर्षि दयानन्द प्रतिपादित इस उदात्त विचार को रखे, जो विश्वजनीन एव सर्वहितकारी है। महाभारत के पूर्व तक समस्त भूमडल पर आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य था, धर्म का शासन स्थापित था, वेद-विरुद्ध कोई मत-सम्प्रदाय नहीं था और समस्त मानव समुदाय वैदिक सस्कृति का ही अनुयायी था—यही महर्षि का दिव्य सदेश, सपूर्ण विश्व को मैत्री, एकता और शाति के मार्ग पर ला सकता है।

देशान्तर में कार्यरत आर्यसमाज के संगठन को अपने इस लक्ष्य को सामने रखते हुए अपनी शक्ति को समायोजित करने की आवश्यकता है। देशान्तर की आर्यसमाजों का सार्वदेशिक सभा से निकट का सबध होना चाहिए। इस दृष्टि मे सार्वदेशिक सभा को अपने कार्यों का और भावी योजनाओं का परिचय निरन्तर देते रहना चाहिए। जिन देशों में कार्य करने में बाधाएँ सामने आई हैं, उनसे भी सार्वदेशिक सभा को अवगत कराते रहना चाहिए। जो आर्य बन्धु भारत यात्रा पर आते हैं, वे अपने साथ यथासम्भव जानकारियां ला सकते हैं और सार्वदेशिक सभा में आकर अधिकारियों को अवगत करा सकते हैं। सभा के पास प्रचार साहित्य भी पर्याप्त मात्रा में है, जिसे प्राप्त किया जा सकता है। देशान्तर के कार्य में सगठन की दृष्टि से काम होने की विशेष आवश्यकता है। सगठन की दृष्टि से कार्य से तात्पर्य है—साप्ताहिक सत्संगो की व्यवस्था, संस्कारो का ज्ञान, आर्य साहित्य का परिचय, मूल सिद्धान्तों का परिचय आदि। भारत के बाहर जहां पर आर्यसमाज का कार्य प्रारम्भिक अवस्था में है, अथवा अभी उसका प्रसार कम हुआ है, सगठन सम्बन्धी बातों का ज्ञान परम आवश्यक है। अतएव प्रचारक भी इस दृष्टि से जाने चाहिए कि वे संगठन को ठीक दिशा दे सकें। महर्षि दयानन्द का पावन मिशन सही दिशा में चलता रहे और इसका विकास होना रहे, इस दृष्टि से सगठन में मूलभूत सुधार अनिवार्य है।

महर्षि दयानन्द का सन्देश ही विश्व को विनाश से बचा सकता

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्यसमाज मन्दिर चूना मण्डी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली का

५०वां वार्षिकोत्सव

(अर्द्धशताब्दी)

दिनांक २४।११।८६ से ३०।११।८६ तक

*** प्रभात फेरी ***

२०।११।८६ वीरवार से २३।११।८६ रविवार तक
प्रात: ५ बजे से ६-३० तक नित्य प्रति आर्यसमाज मन्दिर से आरम्भ हुआ करेगी। आप से प्रार्थना है कि समय पर पधार कर शोभा बढाये।

*** चतुर्वेदशतकम् यज्ञ तथा उपदेश ***

२४।११।८६ से २९।११।८६ तक प्रात: ६ बजे से ८ बजे तक हुआ करेगे।

*** वेद कथा ***

२४।११।८६ से २९।११।८६ तक रात्रि ८-१५ से १० बजे तक

*** आर्य महिला सम्मेलन ***

२८।११।८६ शुक्रवार प्रात: ११ बजे से साय ५ बजे तक

*** शोभा यात्रा ***

२९।११।८६ शनिवार प्रात: ११ बजे से साय २ बजे तक

*** आर्य वीर सम्मेलन ***

२९।११।८६ शनिवार, रात्रि ७-३० बजे से १०-३० बजे तक

*** रविवार ३०।११।८६ ***

यज्ञ की पूर्ण आहुति प्रात: ८ बजे से १० बजे तक

*** राष्ट्र रक्षा सम्मेलन ***

प्रात: १० बजे से १ बजे तक

*** ऋषि लगर ***

२९।११।८६ शनिवार, रात्रि ६ बजे से ७ बजे तक
तथा ३०।११।८६ रविवार. मध्याह्न १ बजे से २ बजे तक

नोट : २९।११।८६ को शोभा यात्रा, २९।११।८६ रात्रि तथा ३०।११।८६ का कार्यक्रम डी० ए० वी० स्कूल, चित्रगुप्त रोड. पहाड गज, नई दिल्ली में होगा।

सब भाई बहिनों से प्रार्थना है कि समस्त कार्यक्रम में सपरिवार अवश्य पधारें तथा दिल खोलकर दान देवे। यजमान बनने के लिए भी अपना नाम लिखवा दें।

पधारने वाले महानुभाव :—

पं० राजगुरु शर्मा विद्यावाचस्पति, पं० प्रेमचन्द श्रीधर एम० ए०, प० क्षितीश वेदालकार सम्पादक आर्यजगत्, डा० वाचस्पति शास्त्री, प० यशपाल शास्त्री, प० यशपाल सुधांशु, पं० सत्यपाल 'पथिक' (अमृतसर वाले)

प्रियतम दास रसवन्त — प्रधान
पुष्पा पाहूजा — प्रधाना
शामदास सचदेव — मन्त्री
कृष्णा रसवन्त — मन्त्राणि

सुरेन्द्र पाहूजा, प्रेमप्रकाश चोपडा, बन्सीलाल पाहूजा, शकुन्तला पाहूजा — संयोजक
मा० गणेशदास, हरबन्स राजपाल

देवराज राजपाल, ब्रह्मप्रकाश कपूर — प्रचार मंत्री
सतीश कुमार, राकेश आर्य चावला — अधिष्ठाता आर्य वीर दल
किरोडीमल गोयल, हरबन्स राजपाल — कोषाध्यक्ष

'भारत को तोड़ने वाले और जोड़ने वाले

—ब्रह्मदत्त स्नातक
भारतीय सूचना सेवा (रिटायर)

पिछले दिनो अंग्रेजी के एक राष्ट्रीय दैनिक में मथुरा में कृष्ण जन्म-स्थान पर मुस्लिम शासकों द्वारा बनाई गई ईदगाह का चित्र मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित हुआ था। सवाददाता रवि भाटिया ने ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर विस्तार से लिखा कि मुस्लिम शासकों और विदेशियों ने एकाधिक बार कृष्ण जन्म-स्थान का विध्वस किया और उन विजेताओं के चले जाने के बाद भारतवासियों विशेषतः हिंदुओं ने उसी स्थान पर मदिर का पुनर्निर्माण किया। इस प्रकार भारतीय आत्मा ने भौतिक पराजय का जुआ बारम्बार गले से उतार कर फेंका। मथुरा, अयोध्या, वाराणसी, सोमनाथ और अन्य अनेक स्थानों पर भारतीय आत्मा को पराजित करने के लिए सातवीं शताब्दी से प्रयत्न किये जाते रहे। भारत की जनता ने उसका प्रबल प्रतिरोध किया। यह एक तर्क संगत बात है और इसीलिए पुनर्जागरण के साथ इन महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थानों को प्रारम्भिक स्वरूप मे पुनः प्रतिष्ठापित करने के लिए आवाज उठ रही है। कृष्ण जन्म-स्थान सम्बन्धी उस लेख पर अनेक व्यक्तियों ने अपनी सम्मति उक्त समाचार पत्र मे भेजीं और प्रकाशित हुई हैं। इन में से कुछ तथाकथित धर्मनिरपेक्षता वादो हिंदुओं ने इस प्रकार की माग को साम्प्रदायिक विद्वेष का ही परिणाम बताया है। कुछेक ने इस मांग को बेहूदा कहकर बखाना। इनमें मुसलमान और हिन्दु दोनों ही हैं। सागर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष, डा०कृष्णदत्त वाजपेयी, दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री एम० एम० शंखधर, सदश हैं।

इतिहास वेत्ताओं ने इस माग को प्रामाणिक और उचित बताया है। कुछ मुसलमानों ने इसे इतिहास का एक दुखद अध्याय बताकर इस प्रश्न को उठाना अनुचित बताया है।

हमारे एक ससत् सदस्य सैय्यद शहाबुद्दीन, भारतीय विदेश सेवा से मुक्त होकर बचे हुए भारत में से एक और मुस्लिम भारत 'पाकिस्तान के प्रतिरिक्त' बनाने के प्रयत्नों में लगातार लगे रहते हैं। उन्होंने भारत मे विभाजन की उत्तरदायी और उसके कर्णधार स्वर्गीय मुहम्मद अली जिन्ना का मिशन पकडा हुआ है। कहने को वे जनता पार्टी के नेता–और भूतपूर्व महासचिव हैं, परन्तु पिछले दिनों उन्होंने भारत के विरुद्ध जिस प्रकार के द्वेषपूर्ण वक्तव्य विदेशी रेडियो एव समाचार पत्रों में दिये हैं, उनसे उनका वास्तविक साम्प्रदायिक रूप प्रकट हो जाता है। वे विदेशी आर्थिक सहायता के बल पर प्रकाशित हो रहे मुस्लिम इडिया के प्रधानसम्पादक हैं। उस पत्रिका के अंशों को पढकर हमे सहसा विभाजन पूर्व की मुस्लिम लीग की उस पीरपुरी कमेटी की रिपोर्ट का स्मरण हो जाता है, जिसे आधार बनाकर जिन्ना ने पाकिस्तान बनाया। हाल ही में मथुरा कृष्ण जन्म-स्थान सम्बन्धी ऐतिहासिक प्रमाणों से क्षुब्ध होकर उन्होंने प्रो० शखधर के विचारो का खण्डन इस आधार पर किया है कि यदि विदेशी विजेताओं के विजय-सूचक चिह्नों को भारत से मिटाया जाना है, तो सबसे प्रथम आर्यो और उनको सांस्कृतिक धरोहर को इस देश से हटा दिया जाना चाहिए, क्योंकि भारत में वे भी उसी प्रकार विदेशी हैं, जिस प्रकार मुसलमान। इस प्रकार की शरारतपूर्ण तुलना यूरोपियन लेखकों के मन्तव्यों पर आधारित है। जब कि स्वय मुस्लिम शासकों ने शुरू से इस देश को हिन्दुस्तान नाम से याद किया है। इस सब से अधिक आपत्तिजनक बात यह है कि सैय्यद शहाबुद्दीन आज भी अपने आपको विदेशी विजेता शासक का वंशधर मानते हैं, जबकि इतिहास से यह प्रमाणित हो चुका है कि भारत उपमहाद्वीप में रहने वाले नब्बे प्रतिशत मुसलमान विदेश से नहीं आये, अपितु मुस्लिम शासकों द्वारा धर्मान्तरित किये गये हैं।

हाल ही में प्रकाशित कश्मीर के स्व० शेख अब्दुल्ला ने आतिश-ए-चिनार शीर्षक अपनी आत्मकथा में बताया है कि उनकी पिछली चौथी पीढी में राघोराम दत्तात्रेय कौल ने इस्लाम स्वीकार किया था। मुस्लिम शासन काल में शहाबुद्दीन सदृश मुसलमानों की इसी दूषित विदेशी एवं विजातीय मनोवृत्ति के कारण पाकिस्तान बना और अब फिर नये सिरे से भारत के मजहबी विभाजन की तैयारी की जा रही है।

टाइम्स आफ इडिया के (आठ अक्तूबर) के अक में मथुरा के कृष्ण-जन्म स्थान के सम्बन्ध में जहां अनर्गल प्रश्न उठाये गए हैं वहां सर्वाधिक आपत्तिजनक अंश वह है, जिसमें देश की स्वाधीनता के लिए जीवन होम देने वाले बरिस्टर विनायक दामोदर सावरकर को हिन्दू साम्प्रदायिकता और बैरिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना को मुस्लिम साम्प्रदायिकता का प्रतीक लिखा गया है। सावरकर देश की अखंडता के प्रतीक थे और जिन्ना व उनके प्रशंसक भारत का विभाजन करने वालो में अग्रणी रहे। और भारतीय राष्ट्रीयता को पीठ मे छुरा भोंका। जिन्ना राष्ट्र सेवा के मामले में देश को अखडता के प्रसग मे, सावरकर के चरणो की धूल भी नहीं हैं। शहाबुद्दीन ने ऐसा लिखकर भारत को राष्ट्रीय अस्मिता का निश्चित रूप से अपमान किया है। इसका तुरन्त उचित प्रतीकार राष्ट्रवादी ताकतों द्वारा किया जाना आवश्यक है। □

श्री केदारनाथ दीक्षित पुरस्कार

स्वामी विद्यानन्द जो द्वारा स्थापित श्री केदारनाथ दीक्षित पुरस्कार स्वामी अमर-स्वामी जी को भेट करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामो आनन्द बोध जी

'महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस' आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे दिल्ली की सभी आर्यसमाजो, शिक्षण सस्थाओं की ओर से दीपावली के दिन १ नवम्बर १९८६ को रामलीला मैदान, नई दिल्ली मे बडे समारोह मे आयोजित किया गया

इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने अपने पूज्य पिता स्व०केदारनाथ दीक्षित की स्मृति मे १०, ००/- रुपये स्थिर-निधि रूप में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल जी को भेट की। इस राशि के वार्षिक व्याज से प्रतिवर्ष एक वैदिक विद्वान् को सम्मानित किया जायेगा।

केदारनाथ दीक्षित पुरस्कार की स्थापना-परिकल्पना विद्यानन्द सरस्वती ने निम्न शब्दो मे प्रस्तुत की—

चारों वेदो ने एक स्वर से कहा है—"ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्"—समाज का नेतृत्व करने का अधिकार ब्राह्मण को है। अथर्ववेद ने इस पर और अधिक बल देते हुए कहा—"ब्राह्मण एव न राजन्यो न वैश्य।"–यह अधिकार ब्राह्मण को को ही है, न क्षत्रिय को है और न वैश्य को। यहा ब्राह्मण का अर्थ विद्वान् है। यदि आर्यसमाज को जीवित रहना है और वेद का प्रचार करना है तो उसे अपने विद्वानों का सम्मान करना होगा। दिल्ली में यह परम्परा डालने की दृष्टि से ही ऋषि निर्वाणोत्सव पर प्रतिवर्ष एक वैदिक विद्वान् को सम्मानित करने के लिये ही 'श्री केदारनाथ दीक्षित पुरस्कार' की स्थापना की गई है।

भारत सरकार ने मेरे एक ग्रन्थ 'तत्त्वमसि' पर पुरस्कार दिया। वही ग्यारह हजार रुपये विद्वानों के सम्मानार्थ आर्य केन्द्रीय सभा को दिये हैं। इस के व्याज से इसी दिन प्रतिवर्ष एक वैदिक विद्वान् को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

आर्य केन्द्रीय सभा के सस्थापक के नाते अन्य समारोहों की तरह मैंने यह काम भी इस सभा को सौंपा है। प्रथम बार इस पुरस्कार से समानित किये जाने के लिए श्रद्धेय महात्मा अमर स्वामी जी के नाम पर मेरा आग्रह था। भविष्य मे सम्मानित किये जाने वाले विद्वान् के नाम का निश्चय ५ विद्वानों को समिति किया करेगी। श्री प० शिवकुमार शास्त्री काव्यतीर्थ, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित शास्त्री काव्यतीर्थ, श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, श्री डा० कृष्णलाल तथा श्री मनोहर विद्यालंकार इस समिति के सदस्य होंगे।

समाचार

हिन्दुओं पर अत्याचार कब तक होता रहेगा

श्रीमान् जी,

सेवा में निवेदन है कि यह मानना पड़ेगा कि मुसलमानों के समय में मुसलमान शासकों द्वारा हिन्दुओं पर जुल्मो सितम होता रहा है। जिसकी मिसाल हमें अंग्रेजी राज्य में भी मुसलमानों द्वारा अपनाये गये व्यवहार से प्रगट होती है। यह सब इसलिए हुआ कि हिन्दुओं में सगठन नहीं था। जिसका नाजायज लाभ उठाकर मुसलमान लोग हिन्दुओं पर जुल्मोसितम किया करते थे। ताजिये निकालने के समय वे लोग चाहते थे कि उन्हें हिन्दुओं की आबादी से निकालकर जाने की छूट होनी चाहिये यदि ऐसा न होता तो वे लोग कत्ले गारत पर उतर आते थे। असंगठित हिन्दुओं के घर में लूटमार करते थे। ये ही हाल हिंदुओं के जलूस का होता था। वे लोग कहते थे कि मस्जिद के सामने बाजा नहीं बजेगा। यदि बाजा बजता तो कत्लो गारत व लूट पाट होती थी। इस प्रकार से मुसलमानों के दोनों हाथों में लड्डू हुआ करते थे। एक तो यह कि उनको हिन्दुओं की आबादी में जाने का अवसर हो, दूसरे यह कि मस्जिद के सामने कोई बाजा न बजे। जब अंग्रेजों के समय में उन लोगों का यह रवैया था तो मुस्लिम बादशाहों के जमाने में यह रवैया न हो तो यह बात जचती नहीं। जबकी बडे-बडे मुसलमान बादशाह इस जमीन पर आये और उन लोगो ने हिन्दुओं पर मनमाने जुल्म किये। यह सब कार्रवाई वहां पर होती जहाँ मुसलमान बडी सख्या में होते थे।

—जयदेव गोयल
पत्रकार, जीन्द

केन्द्र हिन्दी पर दृढ़ रहे

संपादक महोदय

साप्ताहिक आर्य सन्देश १९ अक्तूबर अक में डा० प्रा० विद्यासागर का 'राष्ट्रीय सगठन की कडी हिन्दी भाषा' शीर्षक ओजस्वी, तर्कपूर्ण तथा तथ्यपरक लेख पढा। हिंदी को पीछे धकेलने मे स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधान मंत्री का अग्रेजी प्रेम बहुत हद तक जिम्मेदार है। स्वाधीन भारत मे हिन्दी के विकास हेतु औपचारिक घोषणाए तो होती रही किन्तु किसी भी राजनेता ने प्राणपण से जुटकर हिन्दी की सेवा नही की। नवम्बर १९८३ मे दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम मे आयोजित तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन मे तत्कालीन प्रधान मत्री के हिन्दी विरोधी वक्तव्य के विरुद्ध परम श्रद्धेया महादेवी वर्मा ने जो कुछ कहा था वह पठनीय तथा चितनीय है।

गत वर्ष काग्रेस शताब्दी समारोह के अवसर पर युवा प्रधान मत्री ने अवसर के महत्त्व को पहचान कर अपना वक्तव्य हिन्दी मे प्रस्तुत किया होता तो वह हिंदी की सेवा होती। अफसोस-उनके किसी भी सलाहकार ने उन्हें यह नेक सलाह नही दी। स्वाधीन भारत के लडके और लडकिया गुलामी की प्रतीक टाइयां बांधने को विवश किये जा रहे हैं? बडे अधिकारी सरकारी कार्यालयो मे हिन्दी का काम अग्रेजी के माध्यम से करा रहे हैं? हमारे केन्द्रीय मत्री समारोहों मे अग्रेजी बोल रहे हैं। केवल दस्तूर निभाने के लिए 'हिंदी दिवस' समारोहों का आयोजन हो रहा है और उनकी खबर बढा-चढा कर प्रकाशित की जा रही हैं। केन्द्रीय सरकार को अपने कार्यालयो मे हिन्दी का कार्य आगे बढाने का पूरा अधिकार है और ऐसा करना किसी पर हिन्दी थोपना नही है। यह बात डके की चोट कही जानी चाहिए और केन्द्रीय सरकार को मजबूती से हिन्दी विरोधियों का मुँह बद करना चाहिए।

—भूषण "द्विवेदी",
कलकत्ता-७०००१४

आर्यसमाज अशोकविहार फेज-१ वार्षिकोत्सव

इस आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव १७ नवम्बर से २३ नवम्बर तक होना निश्चित हुआ है जिसमें आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् वक्ता तथा प्रसिद्ध गायक सगीतज्ञ पधार रहे हैं।

विजयभूषण आर्य

माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, जनकपुरी, नई दिल्ली में राष्ट्ररक्षा महायज्ञ का सफल आयोजन

"राष्ट्र का उत्थान, समाज की सेवा, दलितों का उद्धार, स्त्री जाति का कल्याण और सम्पूर्ण विश्व को एकता के सूत्र में बांधना ही आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य रहा है।" माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, जनकपुरी, नई दिल्ली में महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से आयोजित राष्ट्र रक्षा महायज्ञ का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय सचार मन्त्री श्री अर्जुन सिंह ने यह उद्गार प्रकट किए। उन्होंने इस अवसर पर राष्ट्रमाता इन्दिरा गांधी जी का स्मरण करते हुए कहा कि उनका विश्व में भारत को ऊचा स्थान दिलाने में उल्लेखनीय योगदान रहा है। वे राष्ट्र की एकता और अखण्डता की रक्षा जीवन भर करती रहीं तथा इसी के लिए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी। यह उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज स्वामी आनन्द बोधसरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री महाशय धर्मपाल, प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, श्री सूर्यदेव, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री हरदयाल देवगुण के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा से राष्ट्र रक्षा महायज्ञ का आयोजन कर रहा है। मेरी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि सब को सद्बुद्धि मिले और सब मिलकर राष्ट्र की एकता के लिए कार्य करे।

अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी महाराज ने राष्ट्र की एकता के लिए आर्यसमाज द्वारा किए गये कार्यों का उल्लेख करते हुए इस सकल्प को दोहराया कि सभी आर्यसमाजें राष्ट्ररक्षा कार्य प्राणपण से करेंगी। इस अवसर पर स्थानीय आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का संयोजन श्री ओमप्रकाश आर्य, ट्रस्ट, मन्त्री ने किया। उपस्थित नेताओं तथा कार्यकर्ताओं का धन्यवाद ट्रस्ट के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल ने किया। राष्ट्ररक्षा महायज्ञ ३० अक्तूबर से १६ नवम्बर १९८६ तक चलेगा। इसके ब्रह्मा प० वीरसेन वेदश्रमी इन्दौर होंगे। इस अवसर पर सुयोग्य वैदिक विद्वानों के प्रवचन भी आयोजित किए गए हैं। राष्ट्ररक्षा महायज्ञ में अपनी आहुति डालने के लिए महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी भी ११ नवम्बर १९८६ को पधार रहे हैं।

इस कार्यक्रम के आयोजन तथा ५ विशाल यज्ञशालाओं के निर्माण, दूर-दूर तक ओ३म् पताकाओं के लगवाने तथा प्रचार आदि मे ट्रस्ट के मन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य की भूमिका उल्लेखनीय है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य ने एक विज्ञप्ति द्वारा दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, स्त्री समाजों, शिक्षण सस्थाओं के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया है कि वे तन, मन, धन से इस आयोजन में अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होकर इसे सफल बनाये। यह सारा कार्यक्रम राष्ट्रमाता इन्दिरा गांधी जी के ७०वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया है। १७, १८, १९ नवम्बर जनता के लिए ऋषि लगर का आयोजन रखा गया है। □

आर्यसमाज सिलीगुड़ी (दार्जिलिंग) का उत्सव सम्पन्न

भारत और नेपाल की सीमा रेखा पर स्थित जोगवनी शहर के मध्य अग्रसेन भवन के प्रांगण में आर्यसमाज जोगवनी का २४ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १८।१०।८६ से दिनांक २१।१०।८६ तक भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य जगत् के वर्तमान समय के बहुचर्चित विद्वान् प० जयप्रकाश आर्य, ब० अखिलेश्वर जी, ब० व्यासनन्दन जी एव पण्डित पुष्प प्रसाद उत्प्रेती ने समारोह को साफल्य मण्डित किया। समारोह के सभी सम्मेलनों की अध्यक्षता श्री सर्वेश्वर झा-सरक्षक आर्यसमाज जोगवनी एव मन्त्री आर्यसमाज सिलीगुड़ी ने की। सम्मेलनों के मुख्य अतिथि नेपाल सरकार के भूतपूर्व प्रधान मत्री श्री नगेन्द्र प्रसाद रिजाल थे। आर्यसमाज जोगवनी के प्रधान श्री सीताराम अग्रवाल एवं मन्त्री श्री विश्वम्भर सिंह के अथक प्रयास से उत्सव के प्रासंगिक कार्यक्रम सराहनीय एवं प्रशंसनीय रहे। ●

(पृष्ठ ३ का शेष)

ईसाई मिशनरियों का भण्डाफोड़

के साथ किये जा रहे अप्राकृतिक यौनाचार की न्यायालय में गूंज के बाद केरल के मिशन विद्यालयों में अध्ययन कार्य करने वाले दो ईसाई पादरियों को न्यायालय द्वारा छात्र/छात्राओं के साथ यौनाचार करने के अपराध में दण्डित करने के समाचार के साथ ही अब बिहार के रांची तथा राजस्थान की उद्योगनगरी ब्यावर से मिश्र न्यूज ब्यूरो द्वारा प्रेषित स्थानीय सैण्ट पाल स्कूल में नन्हे-नन्हे बालक बालिकाओं के साथ स्कूल के पादरी अध्यापकों द्वारा किये जा रहे न केवल अप्राकृतिक यौनाचार अपितु मुख मैथुन जैसे जघन्य कुकृत्य किये जाने के समाचार भी प्राप्त हुए हैं।

सिटी थाने में इस सन्दर्भ में प्रथम सूचना रिपोर्ट एफ० आई० आर० ४८/८६ धारा ३५४ तथा ३७७ भारतीय दण्ड संहिता के अनुसार सैण्ट पॉल स्कूल के दो पादरी अध्यापकों, लियो वाल्स और वंजल स्याल के विरुद्ध दर्ज हुई हैं। जिन मे कहा गया है कि ये दोनो पादरी अध्यापक बालक तथा बालिकाओं को अपने घर ट्यूशन के बहाने से बुला कर उन्हें फेल करने का भय दिखा विगत दो साल से मुख मैथुन तथा अन्य बीभत्स तथा अप्राकृतिक तरीकों से यौनाचार करते आ रहे हैं।

इन नराधमो के बीभत्स कुकर्मों की शिकार ४०-४५ अबोध बालिकाओं ने जो आप बीती सुनायी है उसे लिखते हुए लेखनी को भी लाज आती है। ये दुष्ट प्रतिदिन एक-एक बालिका से मुख मैथुन कराते थे। स्खलित वीर्य के मुख में जाने से जी मिचलने जैसी हालत हो जाती थी। इससे परेशान हो कर जब बालिकाओं ने अपने अभिभावकों से स्कूल पढने जाने से इन्कार कर दिया तो उन्होंने अपने इनकार का यही कारण बताया। इससे सारे नगर मे सनसनी फैल गई।

विधायक श्री सोहनसिंह ने इस सारे मामले को राज्य विधान सभा में उठाकर ब्यावर के सैण्ट पॉल स्कूल को बन्द करने और तत्सम्बन्धी पादरी शिक्षकों को गिरफ्तार करने की मांग की। इससे पुलिस सक्रिय हुई और दोनों अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया गया है। दोनों ही पुलिस रिमाण्ड पर हैं और सैण्ट पॉल स्कूल बन्द कर दिया गया है। पाश्चात्य शिक्षा-केन्द्रों की अंग्रेजियत के नाम पर भारी फीस दे कर अपने बच्चों को पढाने में गौरव का अनुभव करने वाले अभिभावकों को क्या इन स्कूलो मे शिक्षा दिला कर अपनी भावी पीढी को चरित्रहीन बनाने का मोह अब छोडने के लिए नहीं सोचना चाहिए। जहां वे भारी फीस और भारी दान राशियां देते हैं जो उनके बच्चो के चरित्र हनन के उपयोग में लगाई जाती हैं।

केरल के ईसाई मत के गुरु को आजीवन कारावास

कोट्टयम के सत्र न्यायाधीश श्री ए० आर० विजयन ने स्थानीय महाविद्यालय की एक छात्रा की हत्या के अभियोग में जॉनचेरियन ईसाई मत के गुरु को आजीवन कारावास का दण्ड दिया। महा विद्यालय की छात्रा जॉली मैथ्यू के साथ बलात्कार के प्रयत्न में चेरियन ने यह हत्या की थी।

ईसाई पादरियों का भ्रष्टाचारी व्यवहार

......जिन ईसाई पादरियों को हम ईमानदार और मानव सेवा का ठेकेदार के प्रतीक के रूप में मानते हैं। उनकी भ्रष्टाचारी गतिविधियों के मामले भी अब सामने आने लगे हैं। तमिलनाडु के सैण्ट एन्थोनी गिल्ड से सम्बन्धित पादरी इग्नेशियन के खिलाफ केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने "भारतीय राज्य व्यापार निगम" से करोडों की धोखाधडी करने का मामला दर्ज किया है। गत कुछ साल से पादरी इग्नेशियन तथा अन्य पादरियो के इतने धोखा धडी के मामले दर्ज हुए हैं कि अब लोगों को इन ईमानदार पादरियों पर भी नजर डालनी चाहिए।

(पृष्ठ २ का शेष)

मुझे शास्त्रार्थ की प्रेरणा···

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में उपदेशक नियुक्त होने पर पहला शास्त्रार्थ पिण्डीघेप, जिला अटक, सीमाप्रान्त में हुआ था। उसमे विजय पाकर शास्त्रार्थ केहरी बन गया।

फिर श्री महात्मा हंसराज जी ने मुझ को यह सुविधा दे दी कि-उत्सवों पर शुक्रवार को जाना और सोमवार को वापस लाहौर आ जाना। चार दिन स्वाध्याय करना।

डी. ए. वी. कालिज का विशाल पुस्तकालय प्रयोग करने की मुझ को पूरी सुविधा थी। परमेश्वर की कृपा।

(पृष्ठ ४ का शेष)

महर्षि दयानन्द का दिव्य···

है। हमने पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्यौलोक, वनस्पतियों, औषधियों, जल, विश्वदेव अर्थात् सर्वत्र शान्ति की कामना की है। विश्व में जहा-जहा भी अन्याय, अभाव और अत्याचार है, वहा वहां आर्यसमाज की आवश्यकता है। धार्मिक उन्माद के कारण कई देशों में युद्ध छिडे हुए हैं, महिलाओ के ऊपर अमानुषिक अत्याचार किये जाते हैं और मनुष्यो के बीच असमानता का व्यवहार है। भारत की सामाजिक व्यवस्था के अनेक दोष प्रवासी भारतीयों मे भी स्थान बनाते जा रहे हैं। ऐसे सभी स्थानों पर आर्यसमाज के प्रचार की और दयानन्द के दिव्य सन्देश की आवश्यकता है। विश्व मच पर जब महर्षि दयानन्द का सदेश पहुचाया जायेगा, तभी वास्तविक मानव शान्ति प्राप्त होगी। आर्यसमाज मानवता का आन्दोलन है, रास्ता लम्बा है, पर मानवता की लडाई में पराजय कभी नही होती।

पण्डित रामकिशोर वैद्य का वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश

निज कर्तव्य कर्म के पालन करने के ही कारण।
पण्डित रामकिशोर वैद्य ने किया तृतीय आश्रम धारण॥
पूज्य अमर स्वामी जी से लई वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा।
अब संन्यास आश्रम हेतु देनी होगी सफल परीक्षा॥

गृहस्थ आश्रम पण्डित जी ने सदा नियम अनुकूल निभाया।
सन्त अमर स्वामी गुरुवर से नाम महात्मा का पद पाया॥
तृतीय आश्रम मे प्रचार का इससे अधिक मिलेगा अवसर।
श्रवण मनन चिन्तनादि से भी उन्नति होगी उत्तरोत्तर॥

यम नियमों के पालन से कचन सम निखार आयेगा।
होंगे दूर क्लेश सब जीवन मे आनन्द अपार आयेगा॥
तुम हो धन्य धन्य वैद्य जी विरक्त पथ तुमने स्वीकारा।
होगा जन कल्याण तुम्हारे श्रुति सम्मत कृतित्व के द्वारा॥

शुभ कामना "स्वरूपानन्द" उन्नति आर्यसमाज करो तुम।
निज सद्गुण गुण से सदैव सबके हृदय पर राज करो तुम॥
निरखो जीवन के शत बसन्त दिग्दिगन्त होवे यश उज्ज्वल।
अभिलाषा है हे ऋषि भक्त तुम मानव जीवन करो सफल॥

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता, वेद प्रचार विभाग

आर्यसमाज सुजानगढ़ चैरिटेबल ट्रस्ट की एक और महान् उपलब्धि

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर चैत सुदी १, सं० २०४३ ता० १०।४।८६ को ट्रस्ट द्वारा ग्राम भासीना, तहसील सुजानगढ, जिला चुरू (राजस्थान) मे होम्योपैथिक औषधालय आरम्भ किया गया है। होम्योपैथिक औषधालय का उद्घाटन श्री सत्यनारायण लाहोरी मैनेजिंग ट्रस्टी द्वारा सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री गणपतराम शर्मा सरपच कसूमी, अध्यक्ष श्री शन्नो देवी शर्मा एव प० विद्याप्रकाश देव शर्मा के आचार्यत्व में यज्ञ, सत्संग भजन व उपदेश द्वारा उद्घाटन सम्पन्न हुआ। भासीना ग्राम के आसपास के ग्रामों के ग्रामीण एवं सुजानगढ शहर के कई गण्यमान्य व्यक्ति समारोह में सम्मिलित हुए। भासीना औषधालय के व्यवस्थापक श्री मानाराम चौधरी भूतपूर्व सरपच भासीना नियुक्त किये गये हैं। आर्यसमाज सुजानगढ चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा एक होम्योपैथिक औषधालय आर्यसमाज भवन सुजानगढ मे पहले से ही चालू है।

अखिल भारतीय आर्य-युवक सम्मेलन

२३ नवम्बर को आर्यसमाज अनारकली के वार्षिकोत्सव पर एक विराट आर्य युवक सम्मेलन आयोजित किया गया है। इस अवसर पर श्री कृष्णानन्द भारतीय, श्री रामचन्द्र विकल, प्र० आर्य नरेश, श्री अनिल आर्य, श्री डा० धर्मपाल, श्री यशपाल सुधांशु, श्रीमती सरला मेहता, श्री क्षितीश वेदालंकार आदि विद्वान् नेता पधार रहे हैं। कार्यक्रम मध्याह्न २ बजे से आर्यसमाज मन्दिर मार्ग में प्रारम्भ हो जायेगा।

—धर्मपाल आर्य
कार्यालय मन्त्री

आर्य जगत्

स्वामी श्रद्धानन्द विशेषांक

अमर बलिदानी वीर संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसन्देश

स्वामी श्रद्धानन्द विशेषांक

इस अंक का मूल्य १० रुपये वार्षिक २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

पौष २०४४ वर्ष ११ अंक ९, १० रविवार ४ जनवरी १९८७ दयानन्दाब्द १६१
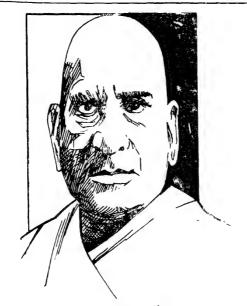
संग्रहकर्ता स्व० लब्भूराम नैयड

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम०ए० प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

प्रकाशक :

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

सूची-पत्र

आर्य सद्गृहस्थों के लिए वेदोक्त रचनात्मक कार्य	...	...	३
बलिदान के देवता स्वामी श्रद्धानन्द	...	...	५
लाइलाज नहीं है मधुमेह (डाइबिटीज)	...	...	७
ओ ! मानवता के उच्चतम शिखर ! तुम्हें शत शत नमन	.	...	९
स्वामी श्रद्धानन्द प्रेरक जीवन	..	...	११
श्रद्धानन्द की पाठ-विधि	..	...	१४
क्या हम हुतात्मा अमर शहीद श्रद्धानन्द के अनुयायी हैं	...	...	१७
देश, धर्म व हिन्दू समाज को आर्यसमाज की देन	..	...	२०
न्यायमूर्ति अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द	...	...	२४
महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द को एक जैसी वीरगति प्राप्त हुई	..	..	२७
भारत की महानता भारतीय संस्कृति	..	...	३१
वैदिक वाङ्मय की व्यापकता तथा महत्ता	...	...	३४
आर्यसमाज के प्रथम नियम पर हमारा दृष्टिकोण	...	...	३९
बिन्दु बिन्दु विचार	...	...	४४

आर्य सद्गृहस्थों के लिए वेदोक्त रचनात्मक कार्य

—ले० शिवकुमार शास्त्री, काव्य व्याकरणतीर्थ पूर्वसदस्य लोकसभा

अमाजुरश्चिद्भवथो युव भगोऽ-
नशोश्चिदवितारापमस्य चित्।
अन्धस्य चिन्नासत्या कृशस्य
चिद्युवामिदाहु भिषजातरुध्यचित् ॥
१०।३९।२१

अन्वित शब्दार्थ—

(नासत्या) कभी असत्य और कठोर भाषण तथा आचरण न करने वाले स्त्री पुरुषो (युवम्) तुम दोनो (अमाजुरः) वृद्धावस्था तक (भग) सुऐश्वर्य युक्त (भवथ) रहो, होओ। तुम दोनो (अनशो चित्) भूखो के (अपमस्यचित्) निकृष्ट दीनजनों के (अन्धस्यचित्) नेत्रहीनों के (कृशस्यचित्) शरीर से दुर्बलो (अवितारा) रक्षक (भवथः) बनो। (युवाम्) तुम दोनो को (रुतस्य चित्) रोगी और विपन्न मनुष्य का (भिषजा) औषधादि द्वारा कष्ट निवारण करने वाला (आहु) कहते हैं।

इस मन्त्र मे गृहस्थियों को परामर्श दिया गया है कि स्त्री पुरुष वृद्धावस्था तक सानन्द कल्याणप्रद पथ मे एक दूसरे के सहायक बनकर रहें। वह चिरसम्बन्ध टिकाऊ और ठीक तभी रह सकता है कि वाणी मे माधुर्य रहे और व्यवहार मे ऋजुता और सरलता हो चिरस्थायी और सरस सम्बन्ध इन दो सद्गुणो के बिना नहीं हो सकता।

यू तो कोई भी स्त्री पुरुष पूर्ण नही है। अनेक कारणो से साथ-साथ रहने वालों मे कभी क्रोध और आवेश के झटके लगने स्वाभाविक हैं। किन्तु स्थिति ऐसी रहनी चाहिए कि आवेश के कारण हटते ही सहजस्नेहासक्त व्यवहार और वचन पुनः स्फुरित होने लगे। यदि मिथ्या भाषण और कुटिल व्यवहार बीच मे आ जाते हैं तो फिर सौहार्दपूर्ण व्यवहार बन पाना कठिन होता है। इसीलिए मन्त्र मे 'नासत्या' विशेषण से दोनों का मार्ग दर्शन किया गया है।

आप अपनी रुचि के अनुसार घर में मर्यादित सम्पूर्ण जीवन बिताना चाहें तो वेद की दृष्टि मे कोई बाधा नहीं है। हाँ स्मार्त धर्म मे नियत अवधि पर आश्रम परिवर्तन को वरीयता दी गई है। वह निःसन्देह आदर्श पग है किन्तु वह हो स्वय स्फूर्त। वाह वाही के लिए प्रदशन मात्र न हो। वह तैयारी भी पति पत्नी, पुत्र और पुत्रवधू की पात्रता के बिना पत्नी को असहाय अवस्था मे छोडना अमानवीय व्यवहार है। 'पुत्रेषु भार्यान्निक्षिप्य' पत्नी को पुत्रों को सौंपकर, यह मनु की व्यवस्था लाखो वर्ष पुरानी है। तब से अब की पारिवारिक परिस्थिति कितनी परिवर्तित हो गई है? यह सभी के अनुभवगम्य है। सम्भवत. पाच प्रतिशत परिवार भी वैसे न मिले। स्मार्त धर्म सामाजिक परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। बदलते रहने चाहिए तभी उनमे मर्यादित व्यावहारिकता रहनी सम्भव है। अन्यथा वह दम्भ और प्रदर्शन का नाटक मात्र रहेगा।

वर्तमान परिस्थिति के अनुसार मन्त्रोक्त परामर्श पर चलकर हम पारिवारिक और सामाजिक ढाचे और शान्ति का धाम बना सकते हैं।

ऐसे सद्गृहस्थों को मन्त्र मे पाँच कर्त्तव्यो का

उपदेश दिया हैं-

१ जो परिस्थिति वश अन्न के अभाव से विपन्न हैं, उन्हें यथाशक्ति अन्न दो।

२ जो कर्मणा निकृष्ट हैं, घृणा उनसे भी मत करो। उनकी भी उचित प्रकार से रक्षा करो।

३ नेत्रों के बिना जो पराश्रित हैं उनके सहायक बनो।

४ जो शरीर से कृश और असमर्थ है ये भी तुम्हारी सहायता के पात्र है।

५ जो अभाव ग्रस्त रोग का औषधोपचार करने मे असमर्थ हैं, ऐसों के रोग निवारण के लिए औषध की व्यवस्था करो।

इन पवित्र कर्त्तव्यों की व्याख्या के लिए यहां उपयुक्त स्थान नहीं है। मानव करेगे तो भाव स्पष्ट हो जायेगा। इन पर आचरण, जीवन को उन्नति करने के लिए और आर्य विचार धारा की ओर जनता को आकृष्ट करने के लिए चमत्कारिक प्रभाव रखता हैं।

केवल अन्तिम बात पर दिल्ली के एक आर्य-पुरुष और आर्यसमाज के व्यवहार का उल्लेख करता हू।

श्री जीवनदास चोपडा नयी दिल्ली के आर्य-समाज जोरबाग के प्रधान थे। अतिवार्धक्य मे गत वर्ष उनका शरीरान्त हो गया।

श्री जीवनदास जी ने एक रवि को साप्ताहिक सत्सग की समाप्ति पर अपने सदस्य पुरुषो और देवियों को कहा कि आज साय चार बजे जिन भाई और बहनो को प्रभु ने शक्ति दी है एक थैले मे फल खरीदकर लावे और एक चाकू भी साथ लेते आवे। फिर क्या करना है यह तभी बताऊँगा।

श्री चोपडा का सदस्यो के हृदय मे बडा आदर था। २०-२५ के लगभग स्त्री पुरुष थैलो मे फल भरकर चार बजे आयसमाज मन्दिर मे आ गए। श्री प्रधान जी ने सब को कहा। हम सब सफदरजग अस्पताल चलेगे।

सभी चलकर अस्पताल पहुंच गए। श्री प्रधान ने वार्डो के हिसाब से दो-दो व्यक्ति बाट दिए और उन्हें कहा कि आप थोडी देर घूमकर ऐसे असहाय रोगियो को देखो जिन्हें कोई मिलने न आया हो और वैसे भी अभावग्रस्त से लगते हो। उनके पास जाकर अपना परिचय दो और कहो कि हम आप की सेवा के लिए आए हैं और फिर थैले मे से उनके अनुकूल फल छील और काटकर दो। और भी औषधि आदि को कोई कठिनाई हो तो नोट कर लाओ, वह व्यवस्था मैं करूँगा।

इस अस्पताल मे गए सभी भाई बहनो का कहना था कि वे रोगी और आस पास के रोगी भी हमे देखकर चकित रह गए और कहने लगे ऐसी सस्थाए भी है जो दुःखियों को इस प्रकार सेवा का ध्यान रखती है। अनेक रोगियो की आखों से प्रेम के आसू बरसने लगे। इस प्रकार का आपका स्नेह-पूर्ण आत्मीय व्यवहार आपके सौ भाषणों से भी अधिक प्रभावोत्पादक होगा। किसी उर्दू के शायर ने ठीक ही कहा है-

बहुत अजीब हैं ये दर्दोगम के रिश्ते भी।
कि जिसे देखिये अपना दिखायी देता है॥

सच्चे आर्यों को वेद के इन आदेशो को अपने व्यावहारिक जीवन मे लाना चाहिए।

सम्पादकीय

बलिदान के देवता स्वामी श्रद्धानन्द

श्रद्धा और आनन्द की एक खान श्रद्धानन्द थे। धर्म पं जो हो गए बलिदान श्रद्धानन्द थे॥
हिन्दुओ के रक्त से सीचो थी वंदिक वाटिका। महर्षि जो राम थे, हनुमान् श्रद्धानन्द थे॥

पराधीन देश की अन्धकारपूर्ण घडियो मे सम्पूर्ण राष्ट्र की बीमार काया में नई स्फूर्ति और कर्म का स्पन्दन देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द उन अमर विभूतियो मे से थे जिन्हें कृतज्ञ राष्ट्र युगो तक अपनी श्रद्धाञ्जलि देता रहेगा।

उनका जन्म १८५६ मे पजाब के जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में हुआ था। बचपन मे नाम रखा गया था बृहस्पति, पर पिता श्री नानकचन्द जी उन्हे मुन्शीराम पुकारने लगे और यही नाम प्रसिद्ध हो गया। उनकी शिक्षा का प्रारम्भ वाराणसी से हुआ और उसका समापन उनके वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर हुआ। वे शुरू से ही तेजस्वी एव प्रतिभाशाली थे, किन्तु बुरे साथियो की सगत से उन का जीवन कुविचारो के अन्धकार मे भटकने लगा था। बरेली मे जब महर्षि दयानन्द के प्रवचन को सुना तो मुन्शीराम के जीवन का रूप ही बदल गया। उन्ही के शब्दो मे –'ऋषिवर! तुम्हारे सहवास ने मुझे अत्यन्त गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया।

सन् १८८६ मे आर्यसमाज के नियमित सदस्य बने और कुछ ही वर्षो मे आर्यसमाज की सम्पूर्ण गतिविधियो पर छा गए। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने। महर्षि दयानन्द के वैचारिक आन्दोलन को उन्होने सच्चे शिष्य बनकर दिग्दिगन्तरो मे आदोलित कर दिया। २६।११।१८६८ को उन्होने गुरुकुल कागडी (हरिद्वार) मे वैदिक ऋषियो के आदर्शो के अनुरूप एक बेजोड विद्या-केन्द्र गुरुकुल की स्थापना की। इसके पीछे यह भावना काम कर रही थी कि समाज मे ऐसे अच्छे नागरिको का निर्माण किया जाये, जिनका जीवन प्राचीन वैदिक आदर्शो और राष्ट्रीय दृष्टिकोण से पूर्णत. अनुप्राणित हो। यह वही सस्थान था, जिसे देखने के लिए ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री रेम्जे मेकडानल्ड गये। मुन्शीराम की तुलना उन्होने बाइबिल मे वर्णित गेलिलो के तट पर भ्रमण करने वाले पैगम्बर से की थी। उन्होने श्रद्धानत होकर कहा था– वतमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई सजीव माडल चाहे तो मै भव्य मूर्ति महात्मा मुन्शीराम की ओर इशारा करूँगा। यदि कोई मध्य कालीन चित्रकार सैण्टपोटर के चित्र के लिए नमूना मागेगा तो मैं उसे इस जीवित भव्य मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा दूगा।"

महात्मा गाधी दक्षिण अफरीका से लौटने के बाद सर्वप्रथम गुरुकुल कागडी मे आकर रहे, यही पर मिस्टर गाधी को मुन्शीराम ने "महात्मा" की उपाधि देकर सम्मानित किया।

उन्होंने १९१७ मे सन्यासी बनकर श्रद्धानन्द नाम रखा। इसके बाद वे गुरुकुल से आकर दिल्ली रहने लगे। यहा उन्होने सामाजिक, नैतिक तथा सास्कृतिक सुधार और जनसाधारण विशेषकर तथा-

कथित ग्रछूतों को भराई के लिए कई संस्थाओं को स्थापना को तथा दैनिक पत्र अर्जुन (हिन्दी), तेज (उर्दू) भी प्रारम्भ किये।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान १९१९ में महात्मा गाधी के सहयोग मे पूरी तरह लग गए। उन्होने जनता को उत्प्रेरित करने और ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाये गये रौलेट ऐक्ट के विरुद्ध हडताल और सगठित विरोध करने का आह्वान किया। ३० मार्च १९१९ को रोलेट ऐक्ट के प्रति विरोध को तीव्र करते हुए ४० हजार व्यक्तियो का एक जलूस निकाला गया।

सरदार पटेल के शब्दो मे–"स्वामी श्रद्धानन्द की याद आते ही १९१९ का दृश्य मेरी आंखो के सामने खडा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी मे हैं, स्वामी जी छाती खोलकर सामने आते हैं और कहते है कि 'लो चलाओ गोलिया' उन की वीरता पर कौन मुग्ध नही हो जाता ? मैं चाहता हू कि वीर सन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।"

राष्ट्र को काया मे चेतना का प्राण फूकते हुए २३ दिसम्बर १९२६ को वे बलिदान हो गये। (टी० एल० वास्वानी से कडी जोडते हुए)

वे लक्ष्य पर पहुचे ? उन्होने सब कुछ पाया ?

वह अपना नाम इतिहास मे बहुत गहरा अङ्कित कर गये ?

प्रत्येक जीवन का कोई चिह्न होता है, उनके जीवन का चिह्न था सेवा। महात्मा गाधी ने उन के बलिदान से प्रभावित होकर लिखा था—स्वामी श्रद्धानन्द जी एक सुधारक थे। कर्मवीर थे, वाक्शूर नही। उनका जीवित-जागृत विश्वास था। इसके लिए उन्होने अनेक कष्ट उठाये थे। वे सकट आने पर कभी घबराये नही थे। वे एक वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग-शैया पर नही, किन्तु रणागन मे मरना पसन्द करता है।

ईश्वर उनके लिए धर्मवीर हुतात्मा की मृत्यु चाहते थे और इसलिए यद्यपि वे उस समय भी रोग-शय्या पर थे, एक घातक के हाथों से उनके देह का अन्त हुआ। गीता के शब्दों मे 'सुखिन क्षत्रिया: पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम।' धन्य और सौभाग्यशाली हैं वे वीर जिनको ऐसी मृत्यु प्राप्त होती है।

मृत्यु किसी समय सुखदायी होती है। किन्तु वह उस वीर के लिए दुगुनी सुखदायक होती है जो अपने ध्येय या सत्य के लिए मरता है। इसलिए मैं उनकी मृत्यु पर शोक नही मना सकता। उनसे तथा उनके अनुयायियो से मुझे एक प्रकार की ईर्ष्या होती है। क्योंकि यद्यपि स्वामी जी मर गए हैं तथापि वे जीवित हैं, जबकि वे अपने विशाल देह के साथ हमारे मध्य विचरण करते थे। जिस कुल मे उन का जन्म हुआ और जिस देश के साथ उनका सम्बन्ध था वे उनकी इस प्रकार की शानदार मृत्यु पर बधाई के पात्र हैं। वे वीर के समान जिये और वीर के समान ही मरे।

आर्यसमाज के एक शती से अधिक के इतिहास मे यदि किसी उद्दाम व्यक्तित्व के स्वामी को ऋषि दयानन्द के बाद महापुरुष कहा जा सकता है तो वह स्वामी श्रद्धानन्द ही है। महर्षि के पुनीत विचारो को कार्यो मे परिणत करने का महानतम काय इसी व्यक्ति ने किया। वे युग की आवाज थे। उठती चुनौतियो के जवाब थे। उन्होंने अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त किया और ससार को ससार के लिए जीने-मरने का सन्देश दे गए। अन्त मे कहूँगा—

वीरों की गति–

वीरों की गति जीना और सिखाया मरना, वीरों की गति सिखा गये सकट से लडना।
दोनों के हित सबल बाहू सत्वर फैलाना, सेवा के हित तन, मन, धन बलिदान चढाना॥

लाइलाज नहीं है मधुमेह (डाइबिटीज)

शशि भूषण शलभ

मधुमेह आज तेजी से फैल रहा है। दो तीन दशक पहले मधुमेह की चपेट मे ४०-४५ साल से ज्यादा उम्र के स्त्री पुरुष आते थे, लेकिन अब छोटी उम्र में भी इसे देखा जा सकता है। ६-७ साल के बच्चों को भी मधुमेह रोग हो सकता है। चिकि-त्सा विशेषज्ञो के अनुसार छोटे बच्चो मे आनुवंशिकता के चलते मधुमेह होता है। ज्यादातर स्त्री पुरुषो मे स्थूलता के कारण मधुमेह होता है। महिलाओं मे मधुमेह प्रसव की विकृति से होता है।

ग्रामीण लोगो की बजाए शहरी लोग इस रोग से ज्यादा पीडित है। एक सर्वेक्षण के अनुसार यदि दिल्ली मे मधुमेह रोगियो की संख्या ६०,००० हो तो उनमे ऐसे भी आठ दस हजार रोगी हो सकते है जिन्हे खुद मधुमेह रोगी होने का पता नही होता। आमतौर पर मधुमेह के निदान के लिए मूत्र किए गए स्थान पर चीटिंया देखी जाती हैं। लेकिन जब तक ऐसी जाच तक पहुंचा जाता है तब तक रोग इतना बढ चुकता है कि इसका इलाज मुश्किल हो जाता है।

मधुमेह प्राचीन रोग है। जब इंसुलिन का आविष्कार नही हुआ था तब आयुर्वेद से मधुमेह की चिकित्सा की जाती थी। जडी बूटियो से इसका इलाज किया जाता था। मधुमेह रोग में शर्करा पच नही पाती। शर्करा मूत्र द्वारा निष्का-सित होने लगती है या ऊर्जा शक्ति के रूप मे न बदल कर खून में मिलने लगती है। इससे शरीर मे रोग प्रतिरोधक शक्ति नष्ट होने लगती है और रोगी शारीरिक रूप से दुबला हो जाता है और उसे ज्यादा प्यास लगती है। होठ मुह और गला शुष्क रहता है। त्वचा रूखी होने लगती है। दुर्बलता के कारण रोगी हल्के से परिश्रम से बुरी तरह थक जाता है। उसे नीद ज्यादा आती है। हर समय बिस्तर पर पडे रहना चाहता है।

रोग के बढने के साथ नजर कमजोर होने लगती है और समय पर इलाज न करने पर और खाने पीने मे लापरवाही से मोतियाबिंद हो सकता है। मधुमेह रोग में जख्म न भरने से परेशानी होती है। शर्करा के निष्कासन से फोडे फुसिया बहुत दिनो तक ठीक नही होते है। इस रोग के बढने के बाद रोगी की हालत बहुत खराब हो जाती है। मानसिक सतुलन खराब हो जाता है। रोगी सीढियो से नही उतर पाता। उसे एक दो कदम चलने के बाद ही गिर पडने की आशंका रहती है। जाघो के बीच बहुत पीडा होती है। प्रारभ में छोटी-छोटी फुसियों के रूप मे गर्दन के आसपास कधे, नितब, कमर और होठों पर भी कार्बंकल पैदा होते है। रोगी को तेज बुखार होता है। हथेलियो ओर तलवे मे जलन होती है। गर्मी और सरदी ज्यादा लगती है।

इंसुलिन की मदद से लंबे समय से इस रोग पर काबू पाया जा सकता है। पर इसे नष्ट कर पाना मुश्किल है। चिकित्सा विशेषज्ञ इस रोग के लिए अनुसधान कर रहे हैं। विशेषज्ञ अग्न्याशय को सक्रिय कर पाने मे सफल नही हो पाए है लेकिन अब विशे-षज्ञो ने अग्न्याशय के प्रतिरोपण मे सफलता पा ली

है। इस प्रतिरोपण से मधुमेह को कुछ हद तक खत्म किया जा सकता है।

मूत्र मे अधिक मात्रा मे शर्करा आने पर इंसुलिन की सहायता से शीघ्र नियत्रण पा लिया जाता है, लेकिन कभी-कभी इससे रोगी को भारी नुकसान हो सकता है। क्योंकि इससे शर्करा की मात्रा घट कर शून्य हो जाती है और रक्त मे मिलने लगती है। फिर वृक्क का मूत्र निष्कासन पर नियन्त्रण नही रह पाता, इसलिए बार-बार मूत्रत्याग के लिए जाना पडता है। शरीर मे ग्लूकोज की मदद से ऊर्जा पैदा होती है। शर्करा के बिना वसा का परिवर्तन नही हो पाता है। शर्करा के निष्कासन होने से प्रोटीन और वसा की पाचन क्रिया भी नही हो पाती। ऐसी स्थिति मे एसिटोन डायासिटो एसेटिक पदा होते हैं। इससे रोगी को बहुत नुकसान हो सकता है। उसकी मृत्यु भी हो सकती है। एसिटोन के निष्कासन से रोगी बेहोश होने लगता है। इसके साथ सिर में दर्द, बेचैनी होती है।

रक्त में शर्करा की कमी होने से रोगी के पेट में तीव्र शूल होता है। रोगी को अधिक भूख लगती है। शारीरिक निर्बलता अनुभव होती है। हाथ पाव मे कपन महसूस होता है।

१९५४ में जर्मन के चिकित्सा विशेषज्ञों ने बार्ब्यूटामाइड और बी जैड-५५ गोलिया बनाई। इसुलिन का उपयोग इजेक्शन द्वारा किया जा सकता है, लेकिन उक्त गोलिया मुह से खाई जाती हैं। इनके अलावा १९५६ मे टालब्यूटामाइट रस्टोनन गेलर प्रोपेमाइड, एसिटो हैक्सामाइड दवाए बनाई गई। चिकित्सा विशेषज्ञों ने बेल की पत्तियों को मधुमेह रोग मे बेहद उपयोगी बताया है। बेल पत्र का मधुमेह में पहले से खूब उपयोग किया जाता रहा है। बेल पत्र का रस पीने से शर्करा का निष्कासन बन्द होता है। सदाबहार वृक्ष (विकोरोजिया) के पत्ते साफ करके प्रतिदिन चबाकर खाने से शर्करा की मात्रा बहुत कम होती है। जामुन के कोमल पत्ते चबा कर खाने या रस निकाल कर पीने से बहुत लाभ होता है। विजय सार की लकडी को जल में डाल कर रखने और उस जल को पीने से मधुमेह मे बहुत फायदा होता है।

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में इनके अलावा बहुत सी गुणकारी औषधिया हैं। यदि इन औषधियों पर अनुसधान किया जाए तो मधुमेह की सफल चिकित्सा हो सकती है। एलोपैथी और होमियोपैथी मे बहेद उपयोगी औषधिया आयुर्वेद से आई हैं। एलोपैथी मे जामुन को गुठलियों से बने जम्बोलिन और होमियोपैथी मे साइजीजियम जाम्बोलिनम का बहुत सफल उपयोग किया जाता है। जाम्बोलिनम का उपयोग शारीरिक दुर्बलता और स्नायविक विकृति में स्मरण शक्ति के नष्ट हो जाने, मूत्र मे अधिक मात्रा में शर्करा निकलने, त्वचा मे खुजली और व्रण पैदा होने पर किया जाता है।

मधुमेह रोग मे चिकित्सा में औषधियों के उपयोग से अधिक आहार का महत्त्व है। आहार में प्रोटीन और कार्बोहाइडेट ज्यादा होने के कारण रोग पर नियत्रण नही रहता है। ऐसे आहार में शर्करा अधिक पैदा होती है। रोगी को कुशल चिकित्सक के परामर्श पर शारीरिक शक्ति के अनुसार विभिन्न खाद्य पदार्थों को मात्रा तय कर लेनी चाहिए। हर रोगी को निश्चित कैलोरी शक्ति आहार में लेनी चाहिए। स्थूल रोगी १२००, वयस्क पुरुष १८००, गर्भवती २२० तथा प्रौढ व्यक्ति को १५०० कैलोरी शक्ति का आहार लेना चाहिए। रोगी को दही, फल और हरी सब्जियो का उपयोग अधिक करना चाहिए। इससे शर्करा भी नही बनती और शरीर को शक्ति मिलती है। जौ, बेसन, चने की दाल, मसूर, अरहर, मूग, छाछ, धनिया, पत्ते वाली गोभी, अदरक, प्याज, गाजर, टमाटर, मूली, लौकी, घीया, पालक, प्रोटीन, बथुआ खीरा, ककडी आदि सब्जियों का खूब उपयोग मधुमेह मे बहुत लाभदायक होता है। मधुमेह रोगी को शराब, सिगरेट, जैम, शर्बत, मीठे फल और मैदा चावल आदि नही खाने चाहिए।

ओ ! मानव के उच्चतम शिखर ! तुम्हें शत शत नमन

—यशपाल सुधांशु

हिमालय की ऊंचाई, सागर की गहराई, अनन्त आकाश का पार और धरती का प्रांगण नापना
कितना कठिन है। उस से कठिन है श्रद्धेय ! स्वामिन्, तुम्हारी गरिमा महत्ता को जांचना और
लिखना। मानव मात्र के उन्नायक, धीर, गम्भीर तत्त्ववेत्ता, संकल्प के धनी तप. पूतः किन शब्दों
में तुम्हे श्रद्धा सुमन अर्पित करूं। तुम नही हो, तुम्हारा भौतिक शरीर हमारे दृगों से ओझल
हो चुका है, पर तुम्हारे शब्द, तुम्हारी प्रेरणाएं, हमारे पथो को आलोकित कर रही हैं।
तुम्हारी-सी श्रद्धा, तुम्हारा सा संकल्प, तुम्हारा-सा दृढ़ निश्चय, तुम्हारी हुंकार, अन्याय
के सामने सीना तान के खड़े हो जाना, हम नही अपना सके हैं। तुम्हारी कीर्ति
दिग्-दिगन्त मे व्याप्त हो चुकी है, तुम्हारा सेवा भाव, अनाथो को गले लगाना,
अछूतों, असहायों को ऊंचे सिंहासन पर बैठाना स्मृति पटल पर कौंध रहा है।
हे महा मानव ! तुमने ही तो राष्ट्रीय धारा से कटे बन्धुओं को भारतीय
करण (शुद्धि) का अमृत पिलाया था, ऐसा प्याला कि जिसे पीकर हर
मुख से अपनी मिट्टी अपनी धरती की महक आने लगी। तुम्हारा
जीवन तपस्या और संयम के सौन्दर्य से ही तो खिला था, जैसे कि
वसन्त में फूल खिलते है। मेरे देश की माटी मे तुम्हारे बलि-
दान के अमर छींटे है जिन से सदा क्रान्ति के फूल खिलते रहेंगे
हे शिक्षा शास्त्री ! शिवालिक की शृङ्खलाए, गंगा की
रेती, सघन वन की हरियाली, तुम्हें खोज रही हैं।
प्रतीक्षा कर रही है, तुम्हारे जैसे व्यक्तित्व को जो देश की
भावी पीढी को वैदिक संस्कृति की लोरी सुना सके। हम तुम्हारी
लोरी को भूले नहीं हैं, वह जागने वाला लोरी ही तो तुम्हारे अनुयायियो
को जगाए हुए है। आज फिर एकता का पाठ तुम से सीखना होगा।

॥ ओ३म् ॥

आर्यसन्देश साप्ताहिक

हर सप्ताह पढ़िए

- क्या आप ऋषि, मुनि, तपस्वी, योगियों की अमृत वाणी पढ़ना चाहते हैं ?
- क्या आप वेद के पवित्र ज्ञान को सरल एवं मधुर शब्दों में जानना चाहते हैं?
- क्या आप उपनिषद्, गीता, रामायण, ब्राह्मणग्रन्थ का आध्यात्मिक सन्देश स्वयं सुनना और अपने परिवार को सुनाना चाहते हैं ?
- क्या आप अपने शूरवीर एवं महापुरुषों की शौर्य गाथायें जानना चाहेंगे ?
- क्या आप महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति से आत्मचेतना जागृत करना चाहते हैं ?

यदि हां तो आइये आर्यसन्देश परिवार में शामिल हो जाइए।

केवल २५ रुपये मे एक वर्ष तक हर सप्ताह पढते रहिए। साथ ही वर्ष मे अनुपम भव्य विशेषाक प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २५ रुपये, आजीवन २५० रुपये।

प्राप्ति स्थान :

आर्यसन्देश साप्ताहिक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

स्वामी श्रद्धानन्द – प्रेरक जीवन

प्रस्तोता—सत्यानन्द आर्य

आज हमारा राष्ट्र जिन सकटों से घिरा है तो स्वामी श्रद्धानन्द सरीखे निर्भीक व बहादुर महापुरुष की स्मृति सहसा जग जाना अनिवार्य है। उस वीर सन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव अपूर्व वीरता और बलिदान के भावो को भर देता है।

उनके बहुमुखी व्यक्तित्व से जन साधारण को जितनी प्रेरणा मिलती है वह अतुलनीय है। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन युवा पीढी के लिए प्रेरणा व स्फूर्ति का स्रोत रहा है। उनके जीवन की एक एक घटना प्रेरक है।

बालक मुन्शीराम को उसके साथी अपनी मोटर कारो मे राग रग नृत्य आदि मे ले जाते। उसके साथी सब बिगडे हुए रईस थे। उनके सग से वह भी भ्रष्टाचारी हो गया। एक दिन मुन्शीराम अपने साथियो के साथ खूब मद्यपान करके, मद मे चूर होकर वेश्या के घर जा पहुंचे।

न जाने भीतर प्रभु प्रेरणा से क्या भाव पैदा हुए कि मुख से ध्वनि निकलने लगी—अपवित्र ! अपवित्र !

डगमगाते हुए वेश्या के कोठे से सहसा नीचे उतर आए। घर पहुंचे बडा नशा था। घर आते ही वमन होने लगा। उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी ने आकर सभाला। जूते उतारे, मुख धोया, मैले वस्त्र उतारे, बिस्तर पर लिटाकर सिर और मस्तक दबाना आरम्भ किया। मुन्शीराम की पथराई आँखे गढ निद्रा मे बन्द हो गई। रात के एक बजे निद्रा खुली तो शिवदेवी बैठी हुई पाँव दबा रही थी। जल मांगने पर देवी ने गर्म दूध का गिलास मुह से लगा दिया। नशा दूर हो गया। उस समय तक बराबर जागते रहने और भोजन न करने का कारण पूछने पर देवी ने कहा—"आपके भोजन किये बिना मैं कैसे खाती ?"

मुन्शीराम ने अपने पतन की सब कथा सुनाकर क्षमा माँगी तो देवी ने कहा—"आप मेरे स्वामी हैं, यह सब सुनाकर मेरे सिर पर पाप क्यो चढ़ाते हैं ? मुझे तो माता पिता का उपदेश यही है कि आपकी नित्य सेवा करू" दूसरे दिन से मुन्शीराम का जीवन ही नितान्त बदल गया।

मुन्शीराम प्राय. रोज भ्रमण पर जाया करते थे। भ्रमण करते करते लाहौर के अनारकली आर्यसमाज पहुंचे। जहाँ एक ओर स्वच्छ वायु का सेवन करते हुए वाटिकाओ के सुन्दर दृश्य देखे वहां अनारकली के सामने से सिर पर मास का टोकरा उठाये बोझ के दबाव से बचने के लिए एक आदमी भागा जा रहा था। टोकरे मे भेड बकरियो और बकरों की खाल उधडी हुई टाग बाहर लटकती हुई एक भयानक दृश्य उपस्थित कर रही थी। श्रद्धानन्द जी का दिल दहला गया। वे बाल्यावस्था से मासाहारी थे तथा उनके पिता मास-भक्षण स्वाभाविक समझते थे।

नित्य कर्मो से निवृत्त होकर सत्यार्थ प्रकाश का दशम समुल्लास भक्ष्याभक्ष्य के विषय मे मास-भक्षण के दोष पढते गये तथा प्रात.-काल का दृश्य मूर्तिमान् होकर उनके समक्ष खडा होता गया। एक एक शब्द ध्यानपूर्वक पढते

गये। भोजन का समय आ पहुंचा। अपने विचार में निमग्न मुन्शीराम भोजनालय मे आ बैठे। अन्य खाद्य वस्तुओं के साथ ही मास भी कटोरे मे आया ही था उसे देखकर ऐसी घृणा हुई कि कासी के कटोरे को उठा दीवार पर फेंक मारा। कटोरा टुकडे टुकडे हो गया।

मेरे साथी सब घबराये। मुन्शीराम जी ने कहा कि मैंने आज पुराने सस्कारो की बेडियो को कासी के बर्तन की तरह टुकडे टुकडे कर दिया है। मांस-भक्षण आर्य मत में महापापो मे से एक है। उस दिन के पश्चात् माम भक्षण तो दूर मास खाने वालों की पक्ति मे बैठना उनके लिए असह्य हो गया। जीवन परिवर्तित हो गया।

पजाब में ऋषि दयानन्द जी की स्मृति मे दयानन्द एग्लो वैदिक कालेज बनाये गये। महात्मा मुन्शीराम जी को इस बात की बडी चिन्ता थी कि वेद प्रचार का काम खूब चले। सस्कृत-शिक्षण का कार्य वैदिक पद्धति पर हो। महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे पढा कि विद्या पढने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए तो आपने गुरुकुल स्थापना का दृढ सकल्प कर लिया। स्वामी जी के अनथक प्रयत्नो से ही सन् १९०२ में हरिद्वार के निकट कागडी मे गुरुकुल की स्थापना का काम पूर्ण हुआ।

अब सवाल यह था कि पढने वाले कहा से आये। कौन माता पिता अपने बच्चो को नये परीक्षण में एक लम्बे समय के लिए जगलो में भेजने का साहस कर सकता है। इसके लिए भी सबसे पहले लाला मुन्शीराम जी आगे बढे। आपने अपने दोनों पुत्रो हरिश्चन्द्र और इन्द्र को गुरुकुल मे प्रविष्ट किया शीघ्र ही कुछ अन्य मित्रों ने भी अनुकरण किया और अपने पुत्र दिये।

आज गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की ख्याति चारों दिशाओ मे व्याप्त है।

गुरुकुल को स्थापना करने के बाद महात्मा मुन्शीराम को गुरुकुल को सुचारु रूप से चलाने के लिए धन की आवश्यकता महसूस हुई। आप घर से निकले और प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक तीस हजार रुपया एकत्रित न कर लूंगा घर न लौटूगा। आपने समस्त देश का भ्रमण किया। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली पर स्थान स्थान पर व्याख्यान दिये। रुपया प्राप्त हुआ। परन्तु गुरुकुल चलाने के लिए कार्यकर्त्ताओ की चिन्ता थी। कहा से त्यागी और विद्वान् सदाचारी कार्यकर्त्ता प्राप्त किये जाये जो व्यवस्था संभाल सके। सबसे पहले मुन्शीराम जी ने वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवेश किया और वे सेवा कार्य के लिए स्वतन्त्र हो गए। अब तो सहयोगी व्यक्तियो का ताता लग गया। लाला शालिग्राम (जालन्धर) आजन्म अविवाहित रहने का व्रत लेकर गुरुकुल के काम मे लग गए। लाला मुन्शी-राम जी के दो मित्र पं० गंगादत्त और विष्णु मित्र थे उन्होंने भी अपना पूरा समय गुरुकुल को समर्पित कर दिया। इन तीनो व्यक्तियों के साथ प्रारम्भिक काम शुरू हो गया।

गुरुकुल कागडी का उत्सव चल रहा था गुरुकुल के लिए अपील के सम्बन्ध मे महात्मा मुन्शीराम जी का उस दिन का व्याख्यान महत्त्वपूर्ण था। जिसका मुख्य आशय इस प्रकार था—

"कुछ समय हुआ, गुरुकुल के लिए धन सग्रह करने के निमित्त मैं दिल्ली गया। वहा और प्रमुख जनो के साथ मैं सदर के सब से बडे रईस के घर चन्दा मागने पहुंचा। उस रईस को जब गुरुकुल की शिक्षा मण्डली के आने का समाचार मिला तो वह घर के अन्दर चला गया और कहला भेजा कि रायसाहब थोडी देर मे मिलेगे। हम बहुत देर तक वहा बैठे रहे पर राय साहब घर से बाहर न आए। यह बात उस समय मुझे बहुत बुरी लगी और मैं असन्तुष्ट होकर मण्डली को लेकर वहा से चला आया। डेरे पर आकर मैंने अपनी अन्तरात्मा से पूछा कि ऐसा क्यों हुआ। मेरे अन्दर क्या कमी है, जिसके कारण वह धनी आदमी मुझ से बचने की चेष्टा कर रहा था। उसके बाहर न आने को

मैंने बुरा माना ? मेरी आत्मा ने उत्तर दिया कि इसका कारण यह है कि तूने अभी अपने आप को सर्वतोभाव से धर्म की सेवा मे अर्पण नही किया और तेरे मन मे बची हुई सम्पत्ति के कारण अहकार है। उसी समय मैंने निश्चय किया कि मैं अहकार की जड अपनी पुस्तनी कोठी जो मेरी अन्तिम भौतिक सम्पत्ति शेष है को भी गुरुकुल के अर्पण कर दूगा तभी वस्तुत धर्म की सेवा के योग्य हो सकूगा।

महात्मा मुन्शीराम जी अपनी और समस्त सम्पत्ति प्रेस आदि पहले ही गुरुकुल कागडी के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को समर्पित कर चुके थे। उस दिन उनकी इस असाधारण घोषणा से सभा में आए नर-नारियो के भाव विह्वल होकर आखो मे आसू आ गए।

सन् १९२२-२३ मे मालाबार के मुसलमानो ने अग्रेजो की शह पर हिन्दुओ का अपार क्षति पहुंचाई। वहा हजारो हिन्दुओ की सामूहिक जघन्य हत्याए की गई। उनकी सम्पत्ति नष्ट कर दी गई और उन्हें बलात् मुसलमान बना लिया गया। स्वामी श्रद्धानन्द ने महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदत्त शुद्धि के सुदर्शन चक्र को उठाया और चहु दिशाओ मे अत्यन्त वेग से चलाया। पजाब के मेघ, राजस्थान हरयाणा के मेव और मालाबार के नव मुस्लिम हिन्दू धर्म मे आ गये। स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हसराज जी के कुशल नेतृत्व में लगभग आठ लाख लोग हिन्दू धर्म मे शुद्ध हुए। १९२५ के साम्प्रदायिक एकता सम्मेलन मे मोहम्मद अली को जवाब देते हुए कहा कि "अगर मुसलमानो को तबलीग का हक है तो हिन्दुओ को क्यो नही, विशेषत: जब चोपला राजपूत स्वय को हिन्दू कहते हैं व हिन्दू रीतिरिवाजों का पालन करते है।"

मोहम्मद अली ने जोश और तैश मे आकर कहा कि --"तबलीग इस्लाम का पैदायशी हक है। मैं काग्रेस छोड सकता हूँ पर तबलीग नही।"

स्वामी जी ने गर्जना की--"हिन्दू धर्म विश्व धर्म है। मैं काग्रेस के लिए विश्व का अधिकार छोडने को कदापि तैयार नही हू।" देशहित के लिए उन्होंने दगाइयो की कड़े शब्दो मे भर्त्सना करने तथा काग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण नीति की आलोचना करने के लिए उस समय दृढता दिखाई पजाब के इतिहास मे मार्शललो के कारण सारे पजाब मे ब्रिटिश सरकार का आतक छाया हुआ था। देहली मे इसके विरुद्ध आन्दोलन के नेता स्वामी श्रद्धानन्द थे। जिस समय दिल्ली के टाउन हाल के मैदान मे ब्रिटिश सरकार की पुलिस की सगीने, बन्दूके मशीन गन तैनात थी वीर सन्यासी श्रद्धानन्द ने ४० हजार व्यक्तियो की भारी भीड जिसमे हिन्दू मुसलमान शामिल थे जुलूस का नेतृत्व किया और छाती तानकर वे गर्जकर बोले--"निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती मे सगीन भोंक दो।" इस गर्जना को सुनकर ब्रिटिश सिपाही पीछे हट गये।

पुलिस और फौज की गोलियो ने जिन लोगो को घायल अथवा शहीद किया उनमे हिन्दू भी थे और मुसलमान भी आन्दोलन के दूसरे दिन हिन्दू मुसलमानों का भेद मिटाकर शहीदो का जनाजा निकाला गया। जिसमे स्वामी श्रद्धानन्द और हकीम अजमल खा भी साथ-साथ जा रहे थे। दोपहर बाद नमाज के पीछे जामा मस्जिद में मुसलमानो का एक विशाल जलसा हो रहा था और उसमें मुस्लिम नेताओं ने आवाज देकर कहा -'स्वामी श्रद्धानन्द जो की तकरीर भी होनी चाहिए।" पूरे जन समूह ने इसका समर्थन किया। दो तीन जोशीले मुसलमान नौजवान नये बाजार से स्वामी जी को लिवा लाए।

"अल्ला हो अकबर" के नारो के साथ स्वामी जी मस्जिद की वेदी पर आरूढ हुए। स्वामी जी ने ऋग्वेद के एक मन्त्र से अपना व्याख्यान आरम्भ किया और ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति: के साथ समाप्त किया। शायद यह भारत के ही नही, इस्लाम के इतिहास मे पहला अवसर था कि एक हिन्दू ने जामा मस्जिद की वेदी पर से भाषण किया तथा वेद की ऋचा गूजी।

ऋषि दयानन्द की पाठ-विधि

(लेखक स्व० श्री आचार्य रामदेव जी, गुरुकुल कांगडी)

आर्यसमाज और वेद

यह तो स्पष्ट ही है कि ऋषि दयानन्द वेद पर लट्टू थे। वेद के द्वारा ही वह ससार का उद्धार मानते थे। आर्यसमाज के नियमो मे भी वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना हर आर्य पुरुष का परम धर्म बतलाया गया है। ऋषि दयानन्द खूब जानते थे कि बिना वेद, वेदागो के और उपागों के और विशेष कर अष्टाध्यायी और महाभाष्य के वेद का समझना असम्भव है। इसलिए उन्होंने बम्बई आर्यसमाज के नियम १६ मे यह रखा कि हर पुरुष आर्यसमाज के साथ वेदादि सत्य शास्त्रो के पढाने के लिए एक विद्यालय हो। शोक! कि आर्यसमाज ने ऋषि के इस उद्देश्य की पूर्ति की ओर पर्याप्त ध्यान न दिया। इस उद्देश्य को पूर्ति को सामने रख कर डी० ए० वी० कालिज की स्थापना की गई किन्तु पीछे से इसका उद्देश्य बदल गया।

फिर गुरुकुल खोला गया, जिसने बहुत अच्छी तरह से इस काम को पूरा किया किन्तु शोक कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अनुयायियो मे से भी कई ऋषि की स्पिरिट को समझ न सके। एक पार्टी ऐसी पैदा हो गई, जो अष्टाध्यायी और महाभाष्य पर ही कुल्हाडा चलाने पर उद्यत हो गई। जिस कौमुदी को जूते लगा कर ही दयानन्द विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के योग्य हो सके उसी कौमुदी को अष्टाध्यायी के स्थान मे पढाने के पक्षपाती दयानन्द के कुछ अनुयायी हो गए। वह यह भूल गए कि ऋषि बनने पर भी कौमुदी के सम्बन्ध में दयानन्द की वही सम्मति थी, जो उन्होंने गुरु विरजानन्द से ग्रहण की थी। इसलिए सत्यार्थ-प्रकाश मे ऋषि लिखते है और जितनी बुद्धि इनके (अर्थात् अष्टाध्यायी और महाभाष्य के) पढने से तीन वर्षों मे होती है उतनी बुद्धि सारस्वत-चन्द्रिका, कौमुदी, मनोरमा आदि के पढने मे ५० वर्षों मे भी नही हो सकती। क्योंकि जो विषय महर्षि लोगो ने सहज से अपने ग्रन्थो में प्रकाशित किया है, वैसा इन लोगो के कल्पित ग्रन्थो मे किस तरह हो सकता है?

महर्षि लोगो का आशय जहा तक हो सके वहा तक सुगम और जिस के ग्रहण करने मे समय थोडा लगे इस प्रकार का होता है और क्षुद्राशय लोगो की कामना ऐसी होती है कि जहा तक बने वहा तक कठिन रचना करनी। जिसको बडे परिश्रम से पढ कर अल्प लाभ उठा सके जैसे पहाड का खोदना, और कौडी का लाभ होना और आर्ष ग्रन्थो का पढना ऐसा है, जैसा एक गोता लगाना और बहुमूल्य मोतियो का पाना।' ऋषि की यह सम्मति बहुत स्पष्ट शब्दो मे लिखी हुई है। इसके और अर्थ नही हो सकते।

ऋषि ने अपना जीवन ही वेद के अवलोकन और भाष्य मे लगाया। किसी साधारण सस्कृत के पडित या कालिदास भवभूति के ग्रन्थों को पढ कर किसी डिग्री हासिल कर लेने वाले पडिताभास की सम्मति के सामने कुछ भी सत्ता नही रखती।

अष्टाध्यायी का स्थान कौमुदी को देने के अर्थ जान बूझ कर वेद की पढाई को कठिन और नियमो से रहित कर देना है। ऋषि दयानन्द वेद के विषय मे इस समय सब से बढकर प्रमाण हैं तो मानना ही पडेगा कि जिस विद्यालय मे अष्टाध्यायी और महाभाष्य को हटाकर कौमुदी पढाई जावेगी वह विद्यालय वेदार्थ वृद्धि मे बाधक और ऋषि दयानन्द के मिशन की जड खोखली करने वाला समझा जायेगा। ऋषि दयानन्द की तो यह सम्मति थी किन्तु ऋषि के पीछे आर्यसमाज मे जिस किसी ने वेद का स्वाध्याय ऋषि के चरणों मे बैठ कर करने का प्रण किया उसने भी उनकी पुष्टि ही की। कौन नही जानता कि प० गुरुदत्त विद्यार्थी अष्टाध्यायी के लिए पागल थे और यदि वर्तमान गुरुकुल पार्टी की नीव गुरुदत्त ने रखी तो इस पार्टी का नाम यदि घास पार्टी (वेजीटेरियन पार्टी) रखा जा सकता है तो अष्टाध्यायी पार्टी भी हो सकता है क्योकि हसराज पार्टी और गुरुदत्त पार्टी के बीच में विवादास्पद विषय यही थे। एक मास भक्षण और दूसरा दयानन्द कालिज मे अष्टाध्यायी की पढाई। प० शिवशकर काव्यतीर्थ और प० तुलसी राम सामवेद भाष्यकार की भी यही सम्मति थी। इस समय आर्यसमाज में वेद का स्वाध्याय करने वाले दो ही पडित हैं– एक प० क्षेमकरणदास त्रिवेदी और दूसरे पडित सातवलेकर जी। इन दोनो पडितों की सम्मति भी यही है कि व्याकरण के बिना वेदार्थ नही हो सकते और व्याकरण मे भी वह अष्टाध्यायी और महाभाष्य को ही अधिक पसन्द करते है।

कई ऐसे लोग है जो यह समझते है कि व्याकरण विद्यार्थियो के मस्तिष्क पर असहनीय बोझ है और उसको पढाना ही नही चाहिए। ऐसे लोगों को अपनी सम्मति पर यह विचार करना चाहिए कि यदि विद्यार्थी को वेद पढने के लिए योग्य बनाना है तो उसको व्याकरण अवश्य आना चाहिए। यूरोप में सैकडों विद्वान् ऐसे हैं जिनका मत है कि लातीनी और यूनानी विद्यार्थियों को अवश्य पढानी चाहिए क्योकि इनका व्याकरण दिमागी शासन के लिए आवश्यक है। यह सिद्धान्त तो निश्चित समझना चाहिए कि दिमागी शासन के लिए उच्चतम साधन जैसी अष्टाध्यायी है वैसी ससार की कोई भी और व्याकरण की पुस्तक नही। अस्तु, इस पार्टी को तो अधिक सफलता नही हुई क्योकि गुरुकुलो मे अष्टाध्यायी और महाभाष्य ही पढाए जाते हैं और इसकी स्कीम मे से व्याकरण को हटा सकने की शक्ति रखने वाले महापुरुष ने अभी पैदा होना है। किन्तु एक दूसरी पार्टी पैदा हुई है जिनको श्रद्धा के आधिक्य ने ही ऋषि की स्पिरिट को समझने नही दिया। सत्यार्थप्रकाश मे ऋषि ने कुछ नियम बतलाए है जिनके आचरण करने से ही किसी ग्रन्थ के आशय को ठीक समझा जा सकता है, जो लोग इन नियमो को ताक मे रख ऋषि के भाव को समझने का यत्न न करके केवल उनके अक्षरों पर मर मिटना सीखे है, वे भी उनके साथ अन्याय करते है। ऐसी श्रेणी मे उन सारे महानुभावो को रखता हू, जिनका यह मत है कि चूकि ऋषि ने इतिहास, भूगोल, पदार्थ विद्या, गणित की पूरी कोई स्कीम नही दी इस लिए गरुकुलो मे यह विषय पढाने ही नही दिए जाए।

इन लोगों से पहला प्रश्न यह है कि सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका और सस्कारविधि इत्यादि आर्षग्रन्थ गुरुकुलो की पाठविधि मे होने चाहिए या नही ? यदि होने चाहिए, तो क्यो ? इनका सिद्धान्त तो यह है कि स्वामीजी ने सत्यार्थप्रकाश मे जिन ग्रन्थों की सूची दी है, उनके अतिरिक्त और कुछ न पढाना चाहिए। क्या ऋषि दयानन्द का अभिप्राय यह कभी हो सकता था कि ब्रह्मचारी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और सत्यार्थप्रकाश से लाभ न उठाये ? क्यों ब्रह्मचारियो को

सन्ध्या सिखलानेके लिए 'पचमहायज्ञ-विधि' पढानी होगी या नही ? और शान्ति पाठ और स्वस्तिवाचन सिखलानेके लिए सस्कार-विधि पढानी होगी अथवा नही ? स्वामी जी की स्कीम मे तो इन दोनो पुस्तको का भी नाम नही।

आर्यसमाज के उपनियमो में ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि हर एक आर्यपुरुष को आर्यभाषा और सस्कृत अवश्य जाननी चाहिए। क्या गुरुकुल के आर्य विद्यार्थियों पर यह नियम नही लगता ? यदि लगता है तो ऋषि की प्रारम्भिक स्कीम मे तो आर्य भाषा की कोई पुस्तक नही लिखी। सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास मे ऋषि लिखते हैं कि 'जब पांच-पाच वर्ष के लडका-लडकी हों तब देवनागरी अक्षरो का अभ्यास करावे। इन्हें देशीय भाषाओं के अक्षरो का भी।' इस का मतलब साफ है कि बगाली तमिल, गुजराती, लडके लडकियो को आर्यभाषा के अतिरिक्त अपनी भाषा भी अवश्य सीखनी चाहिए केवल अक्षर ज्ञान सिखलाना व्यर्थ है, यदि उनको इस भाषा के साथ पढ सकने के योग्य न बनाता हो।

हम पूछते है कि इन भाषाओं की पाठ्यपुस्तक के नाम तो ऋषि ने अपनी पाठविधि मे दिए ही नहीं। फिर क्या प्रकथित ऋषि वाक्य को निरर्थक समझे और इस परिणाम पर पहुचे कि सयुक्त प्रान्त, पजाब, बिहार और मध्य प्रदेश के भाग के अतिरिक्त शेष सब प्रान्तो के ब्रह्मचारियो को अपनी मातृभाषा भूल जानी चाहिए। अपनी पाठ-विधि मे ऋषि लिखते हैं—

"...दो वर्ष में ज्योतिष शास्त्र, सूर्यसिद्धान्त इत्यादि जिन में बीजगणित, भूगोल, खगोल और भूगर्भ विद्या है, उनको सीखे। यह विषय १६ वर्ष का पढाई के बाद पढना लिखा है। कौन नही जानता कि सूर्यसिद्धान्त के समझने के लिए ऊँचे गणित को जानने की आवश्यकता है। क्या ऋषि का यह मतलब कभी हो सकता है कि २७ वर्ष का नवयुवक १०० तक गिनती शुरू करके दो वर्ष मे यह सारी विद्याए सीख लेगा और सूर्यसिद्धान्त को समझ लेगा ?

इन सब बातो पर विचार करके यही परिणाम निकालना पडेगा कि ऋषि ने ऋषिकृत ग्रन्थों को पढाने की विधि बतला दी। शेष-विषयों की स्कीम बनाने का कार्य उन विषयों के विशेषज्ञों पर ही छोड दिया। हमारे लिए इतना ही पर्याप्त है। कि ऋषि ने इन विषयों की पढाई का खण्डन नही किया। केवल यही नही किन्तु जो पाठविधि उन्होने सामने रक्खी उसकी पूर्ति के लिए भी यह जरूरी है कि विद्यार्थी गणित, साइस इत्यादि विषयो के पडित हो। एक और बात भी है वह यह कि ऋषि ने जो पाठविधि सामने रक्खी वह सारी सब के लिए नही है, किन्तु केवल आदित्य ब्रह्मचारियो के लिए है देखो समय का विभाग कैसे किया गया है ?

व्याकरण	३ वर्ष
निरुक्त और छन्द	१ वर्ष
मनुस्मृति, रामायण, महाभारत	१ वर्ष
दर्शन और उपनिषद्	२ वर्ष
वेद और ब्राह्मण	६ वर्ष
सर्वयोग	१३ वर्ष
आयुर्वेद	४ वर्ष
धनुर्वेद	४ वर्ष
गन्धर्व वेद	——
अथर्व वेद	——
ज्योतिष	२ वर्ष
हस्तक्रिया	......
नेत्रक्रिया	——
सर्वयोग	२३ वर्ष

क्या हम हुतात्मा अमर शहीद श्रद्धानन्द के अनुयायी हैं

चमनलाल पूर्व प्रधान आर्यसमाज अशोक विहार

ससार के इतिहास के अवलोकन से पता चलता है कि समय-समय पर इस भूमण्डल पर कुछ ऐसे सस्कारी प्राणियो का प्रादुर्भाव होता रहा है जिनके जीवन हमारे लिए प्रकाश-स्तम्भ का काम देते है। उनके जीवन की छोटी से छोटी घटना भी हमारे लिए प्रेरणादायक तथा मार्ग-प्रदर्शक का काम देती है। उनके मुख के शब्द उन की अन्तरात्मा की आवाज होती है जो कालान्तर में जाकर उनके जीवन का अङ्ग बन जाती है और दूसरो के लिए आदर्श उपस्थित कर देती है। ऐसे ही महानात्माओ में से गत शताब्दी मे ला० मुन्शीराम (महात्मा मुन्शीराम और बाद मे स्वामी श्रद्धानन्द नाम से प्रसिद्ध हुए) का पजाब के जालन्धर जिले मे तलवाना नाम के ग्राम मे जन्म हुआ था। जिनका बलिदान २३ दिसम्बर १९२६ को दिल्ली मे एक धर्मान्ध सिर फिरे अब्दुल रशीद नामी मुसलमान की गोली से हुआ था। जिनका ६० वॉ बलिदान दिवस २५ दिसम्बर को मनाया जा रहा है। ऐसे महान् हुतात्मा के जीवन की एक छोटी सी घटना की यहा चर्चा कर रहा हूँ। जिससे पता चलता है कि स्वामी जी कितने दृढ निश्चयी थे और जिस एक दृढ निश्चय के गुण ने उनको देश, राष्ट्र और समाज का मूर्धन्य नेता बना दिया। स्वामी जी जिस काम को चाहें वह काम छोटा हो या बडा, आसान हो अथवा मुश्किल। उसके करने मे कितनी भी कठिनाइयो का आना सम्भव क्यों न हो, जब तक उसको पूरा न कर लें, उन को चैन न आता था, भूख प्यास की भी कुछ चिन्ता न होती थी।

ऐसे ही लगन और दृढ निश्चय वाले व्यक्ति ही राष्ट्र की नाव को मझधार मे से निकालकर किनारे पर लाने मे सफल होते हैं। सन् १८८४ में जब ला० मुन्शीराम वकालत की परीक्षा देने के लिए लाहौर गये तो तीसरे दिन रविवार था, वह अपनी आदत के अनुसार सायकाल ब्रह्मसमाज मे गये और वहाँ किसी ब्रह्मसमाजी, शिवनाथ शास्त्री नामक विद्वान् के भाषण ने उनको बडा प्रभावित किया। ब्रह्मसमाज सम्बन्धी कुछ पुस्तको के अध्ययन करने के पश्चात् पुनर्जन्म के सिद्धान्त के सम्बन्ध मे स्वामी जी के मन मे कुछ शङ्काएँ उत्पन्न हुई। वे उनका समाधान पाने के लिए ब्रह्मसमाज के प्रधान ला० काशीराम के घर गये, परन्तु वह घर नही मिले। दूसरे दिन प्रात पुन उनको घर पर जा घेरा। बातचीत से कुछ सन्तोष न हुआ। अपितु पुनर्जन्म तथा कर्म-फल के सिद्धान्त के सम्बन्ध में मन में सन्देह और भी अधिक दृढ हो गया। इस सन्देह के निराकरणार्थ उन्होने सत्यार्थ-प्रकाश को देखना चाहा। ब्रह्मसमाज के प्रधान के घर से सीधे बच्छोवाली आर्यसमाज मन्दिर में 'सत्यार्थ-प्रकाश' की पुस्तक खरीदने गए। पुस्तक भण्डार बन्द पाया। सेवक से पूछने पर मालूम हुआ कि पुस्तकाध्यक्ष ला० केशवराम के आने पर ही पुस्तक मिल सकेगी। उनके घर का पता लेकर दो घण्टे भटकने के बाद जब उनके घर पहुचे तो पता चला कि वह अपनी नौकरी पर बडे तार घर चले गये। स्वामी जी ने हिम्मत न हारी। वह उनकी तलाश मे तार घर भी गये, वहाँ जाकर पता चला कि

केशवराम जी दोपहर की छुट्टी में जलपान के लिए वापस घर चले गये। परन्तु फिर दुबारा घर आने पर पता चला कि वे तारघर लौट गए हैं। डेढ दो घण्टा वहीं मकान के बाहर इन्तजार करने के बाद शाम को जब केशवराम से मुलाकात हुई और उनसे अपनी प्रात:काल से सायकाल तक की कथा सुनाई तो जैसे तैसे समाज मन्दिर से जाकर केशवराम जी ने स्वामी जी की कीमत लेकर 'सत्यार्थप्रकाश' की पुस्तक दी, जिस को लेकर स्वामी जी गद्‌गद हो उठे और बडे सन्तोष के साथ घर पहुचे। सारे दिन के भूखे मुन्शीराम ने भोजन किया और बैठ गये सत्यार्थप्रकाश को पढने। इस ग्रन्थ ने न जाने कितनों को नास्तिक से आस्तिक बना दिया। मुन्शीराम भी इससे प्रभावित हुए विना न रहे, और पुनर्जन्म के सिद्धान्त सम्बन्धी विचार पढकर मुन्शीराम की बुद्धि ने भी पलटा खाया और आर्यसमाज का सदस्य बनने का निश्चय कर ही लिया। वे १८८४ के फरवरी मास के किसी रविवार को अपने मित्र भाई सुन्दरदास के साथ बच्छोवाली आर्यसमाज मन्दिर में जा पहुंचे। वहा कुछ पुराने साथियो से मेल हुआ जो उनको समाज का सदस्य बनने को कहा करते थे। सब ने मुन्शीराम के समाज मे प्रविष्ट होने पर प्रसन्नता प्रकट की और मुन्शीराम को सब ने अपने कुछ विचार प्रकट करने को कहा। मुन्शीराम जी कुछ सकोच से हिचकते हुए खडे हुए और लगभग २०-२५ मिनट बोल गये। यह केवल साधारण भाषण नही था, यह तो आगे चलकर होने वाले महान् व्यक्ति की अन्तरात्मा के सात्त्विक भावों का प्रकाश न था। भाषण का साराश कुछ इस प्रकार लिखा गया है—

"हम सब के कर्तव्य और मन्तव्य एक होने चाहिए। जो वैदिक धम के एक-एक सिद्धान्त के अनुकूल अपना जीवन नही ढाल लेगा, उसको उपदेशक बनने का साहस नही करना चाहिए। भाडे के टट्टुओं से धर्म का प्रचार नही हो सकता। इस पवित्र कार्य के लिए स्वार्थ त्यागी पुरुषो की आवश्यकता है। मुन्शीराम जी इसी दिन से अपने जीवन को आर्यसमाज के एक-एक सिद्धान्त के अनुकूल ढालने में लग गये। सर्वप्रथम उन्होने सत्यार्थप्रकाश के दशवे समुल्लास मे भक्ष्याभक्ष्य के विषय मे पढकर तुरन्त मास-भक्षण छोड दिया और लगे जीवन को आर्य बनाने मे। उन के जीवन के अध्ययन से भली भाति पता चलता है कि उन्होंने एक प्रकार से सर्वमेध यज्ञ ही मानो कर दिया हो। समाज मे प्रवेश के दिन जो भाव मुन्शीराम जी ने प्रकट किये थे, मानो वे उनको अपने जीवन का उदाहरण देकर दूसरों को ऐसा करने की प्रेरणा कर रहे थे। सचमुच अपने जन्म नाम 'बृहस्पति' को उन्होंने सार्थक कर दिखाया। यद्यपि यह नाम व्यवहार मे कभी नही आया, किन्तु यह नाम चरित्र नायक की जीवनी के बिलकुल अनुरूप था। कौन जानता था कि स्वच्छन्द जीवन बिताने वाला, आचार-विचार तथा आहार-व्यवहार मे भी बे लगाम दौडने वाला मुन्शीराम किसी दिन 'महात्मा' पद को प्राप्त करेगे और जीवन के अतिम भाग मे सन्यास आश्रम में प्रवेश करके न केवल हिन्दु समाज प्रत्युत मानव मात्र की दृष्टि में 'गुरु पद' पर प्रतिष्ठित होगे और इस प्रकार अपने जन्म नाम 'बृहस्पति' को सार्थक करेगे। आज ऐसे ही महान् नेता की आवश्यकता है भारत को। हिन्दु जाति को, विशेषकर अपने को आर्यसमाजी कहलाने वालो को और उन मे भी उन व्यक्तियो को, जो स्वामी जी को गुरु, पिता, आचार्य आदि कहने मे गौरव अनुभव करते है, विचार करना चाहिए कि कहा तक वे उनके अनुयायी है। आर्यसमाज मे वास्तव मे आज सच्चे निष्ठावान् प्रचारकों का अभाव है और जो कुछ थोडे बहुत प्रचारक हैं भी, वे केवल नाम के है, काम के नही। इसीलिए प्रचार कार्य शिथिल पड गया है, और जिसके फलस्वरूप

राष्ट्रविरोधी तत्त्व फिर से उभर कर आ रहे हैं और मीनाक्षीपुरम जैसी घटनाएँ होने लगी हैं। अरब देशों से आई विपुल धनराशि के प्रसार से हिन्दु जाति के संगठन को एक भारी खतरे का सामना करना पड रहा है ! अत. ऐ स्वामी के भक्तो अपनी गाढ निद्रा, आलस्य त्यागो और जागरूक होकर शुद्धि के प्रचार में प्रगति लाओ और राष्ट्र के एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग तथाकथित हरिजनो को अपने से अलग न होने देने के कार्य पर बल दो। स्वामी श्रद्धानन्द जी को इसी काम (शुद्धि के) काम तथा अछूतों-हरिजनों को विधर्मी बनने से बचाने के कार्य करने के कारण ही जीवन की बलि देनी पडी। राष्ट्र इस समय भयङ्कर परिस्थितियो से गुजर रहा है। विघटन की आग पहले तो केवल मुसलमानो की ओर से थी, परन्तु दुर्भाग्य से यह तो अब अकाली सिखो की तरफ से भी भडक उठी है। ये अराष्ट्रीय तत्त्व हिन्दू जाति को एक भारी चुनौती है। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन भी चुनौतियों से भरा था। परन्तु वे उन परिस्थितियो और चुनौतियों के आगे झुकते नही थे। अपितु उनका डट कर सामना करते थे। गुरुकुल खोलने, शुद्धि, दलितोद्धार कार्य करने मे उनको बडे विरोधियो का सामना करना पडा था। वे कांग्रेस के मूर्धन्य नेता होते परन्तु हिन्दू जाति के हितो के विपरीत और मुसलमानो के पक्ष में जब उन्होने कांग्रेस की नीति को देखा, तो जीवन की एक भारी कुर्बानी करके वह इस दल से अलग हो गये और लगे डटकर शुद्धि का कार्य करने। स्वामी जी महान् निर्भीक नेता, आदर्श समाजसुधारक महान क्रान्तिकारी और दिव्यगुण आगार राष्ट्र-पुरुष तथा निर्भीक सन्यासी थे। इन महान् गुणो के धनी यह दिव्य पुरुष जिस क्षेत्र मे भी गये जनता ने उन्हे अग्र पंक्ति मे ला खडा किया। अपनो को तो सभी महान् कहते है। परन्तु वास्तव मे महान तो वह ही है जिस को विरोधी भी प्रशंसा करे। मुसलमानो ने तो उन्हें दिल्ली की जामा मस्जिद मे मिम्बरपर लेक्चरदेने का जो मान दिया, जो आज तक किसी और को न दिया गया। विचारो की भिन्नता होते हुए भी राष्ट्र पिता महात्मा गान्धी उन को अपना बडा भाई कहने मे गौरव अनुभव करते थे, और उनकी मृत्यु का समाचार पाकर इसी प्रकार की मृत्यु की कामना भी की थी, चूंकि वह कामना सच्चे हृदय से थी, अत. गाधी जी को भी वैसी ही मृत्यु (किसी हत्यारे द्वारा गोली का शिकार) प्राप्त हुई थी। महामना स्वर्गीय पण्डित मदन मोहन जी मालवीय जैसे कट्टर सनातन धर्मी और उनके एक मात्र महान् नेता भी स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा चलाये जा रहे शुद्धि आंदोलन कार्य मे कन्धा से कन्धा मिलाकर सहयोग देते थे। ऐसे महान् नेता के सम्बन्ध में इग्लैण्ड के महान् नेता मिस्टर रैम्जे मैक्डानल्ड भी स्वामी जी के महान् व्यक्तित्व के विषय मे कुछ कहे बिना रह न सके। उनका कहना था कि वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान् ईसा की मूर्त्ति घडने के लिए कोई जीवित माडल सम्मुख रखना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्त्ति (स्वामी श्रद्धानन्द जी) की ओर इशारा करूँगा। और यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सेंट पीटर के चित्र के लिए कोई नमूना चाहेगा, तो मैं उसे इस जीवित मूर्त्ति के दर्शन करने की प्रेरणा करूँगा। विचारिये तो सही कि स्वामी श्रद्धानन्द जी को इससे बडी श्रद्धाञ्जलि विदेशी नेता और क्या दे सकते हैं।

स्पष्ट है कि स्वामी जी अनेकों गुणों के धनी थे। राष्ट्र, समाज और देशोद्धार के क्षेत्रों मे तथा उनकी धर्मनिष्ठा, साहित्य शिक्षा, राजनीति के सभी क्षेत्रों मे उनकी निष्ठा लगन, विद्वत्ता, चरित्र तथा दृढता को आदर्श बनाया जा सकता है। निर्भीकता की आकृति साहस के अवतार, सच्चाई के धनी, संयम के उपासक, ब्रह्मचर्य के आकार, स्वाभिमान की मूर्त्ति, स्वदेश अभिमान की प्रतिमा, राष्ट्रीयता की ज्योति, भारतीय संस्कृति के पुञ्ज की आज की परिस्थितियो मे नितान्त आवश्यकता

(शेष पृष्ठ २३ पर)

॥ ओ३म् ॥

देश, धर्म व हिन्दू समाज को आर्यसमाज की देन

लेखक : दत्तात्रेय वाब्ले

७ अप्रैल, १८७५ को बम्बई मे ऋषि दयानन्द ने पहली आर्यसमाज स्थापित की थी। उसे आज १०० वर्ष से अधिक समय हो गया है। यद्यपि धार्मिक और सामाजिक आन्दोलनों के इतिहास में १०० वर्ष अधिक नही हैं, किन्तु इन वर्षो में आर्यसमाज ने जो सफलताए और उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, वे कई दृष्टियो से आश्चर्यजनक कही जा सकती हैं। इन सब का परिचय इस पुस्तिका मे दिया जा रहा है।

विचार क्रान्ति : ससार की क्रान्तियों का मुख्य आधार विचारों की क्रान्ति रहा है। प्राय सब इतिहासवेत्ता आर्यसमाज के सस्थापक ऋषि दयानन्द को उन्नीसवी सदी का महान् क्रान्तिकारी विचारक मानते हैं। उनकी प्रेरणा से आर्यसमाज ने गत सौ वर्षों में धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राष्ट्रीय और राजनैतिक आदि प्राय. सब क्षेत्रो में नयी आकांक्षाएँ, नयी दिशाएँ, नयी आशाएँ और नयी सम्भावनाएँ उत्पन्न की हैं।

धार्मिक क्रान्ति : आज के वैज्ञानिक युग मे ईश्वर और धर्म के प्रति अविश्वास का कारण उनके नाम पर प्रतिपादित अन्धविश्वास और प्रचलित निरर्थक रीति-रिवाज हैं। आर्यसमाज के रूप मे ऋषि दयानन्द ने हमे ऐसा जीवन-दर्शन दिया है जो हमारी आध्यात्मिक जिज्ञासा, मनोवैज्ञानिक आकाक्षा तथा जीवन की व्यावहारिक आवश्यकता को सन्तुष्ट करता है और साथ ही शाश्वत सत्यो के आधार पर प्रगति का मार्ग भी खुला रखता है। उनके द्वारा प्रतिपादित यह जीवन दर्शन या धर्म, सरल और सीधा सादा, सब के लिए समान रूप से साध्य और तर्कविहीन विश्वासों और कर्मकाण्डो से मुक्त है। उसकी छ विशेषताएँ निम्न प्रकार है—

१. ईश्वर कोई व्यक्ति नही बल्कि एक निराकार शक्ति है।

२ आत्मा अनादि और अमर है किन्तु कर्म करने मे वह सर्वथा स्वतन्त्र है, स्वस्थ तथा सम्पन्न शरीर उसका आवश्यक साधन है।

३ स्थूल जगत् या प्रकृति का भी अस्तित्व पृथक् और अनादि है।

४ कर्म और उसका परिणाम पुनर्जन्म है किन्तु उनका आधार भाग्य या केवल ईश्वर इच्छा न होकर पुरुषार्थ और कर्म की स्वतन्त्रता है।

५ सब प्रकार की समानता पर आधारित व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण एक दूसरे के पूरक हैं।

६. ईश्वर और मनुष्य के बीच मे किसी पैगम्बर

गुरु या मसीहा अथवा दूत की मध्यस्थता की आवश्यकता नहीं है

सामाजिक क्रान्ति आज का सुधरा हुआ हिन्दू समाज आर्यसमाज की ही देन है। जन्मगत जात-पात, छूआछूत, बाल-विवाह, पर्दा, दहेज आदि का विरोध तथा खान-पान और चौके-चूल्हे के साधनों के विरुद्ध सैद्धान्तिक प्रचार और व्यावहारिक आन्दोलन आर्यसमाज का ही कार्य है। अन्तर्जातीय विवाह, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, विदेश यात्रा आदि पर लगे प्रतिबन्धों की जड़ आर्यसमाज ने ही खोखली की हैं।

हिन्दू तब और अब आर्यसमाज की एक बड़ी सेवा यह है कि उसने हिन्दू धर्म और हिन्दु समाज को उसकी अनेक कमजोरियों से मुक्त करके न केवल सगठित और सुरक्षित करने का ही प्रयत्न किया अपितु उसके दरवाजे ईसाई, मुसलमान आदि अहिन्दुओं के लिए भी खोलकर उसे वास्तविक अर्थो मे व्यापक और उदार बनाने का यत्न किया। अपने स्वधर्मी भाइयों को साँप और बिच्छू के समान अछूत समझने वाला और ईसाई, मुसलमान आदि परधर्मियों को म्लेच्छ कहकर उनका छुआ पानी तक पीने से घबराने वाला हिन्दू अपने धर्म, सस्कृति और स्वाधीनता की रक्षा करने मे असमर्थ था।

Docile and submissive Hindu अर्थात् 'गाय जैसा गरीब और सब से शरण माँगने वाला हिन्दू' कहकर उसका जो लोग उपहास करते थे, आर्यसमाज के कारण वह Militant and aggressive Hindu अर्थात् साहसी आक्रामक हिन्दू समझा जाने लगा। 'दी पीपुल्स आफ इण्डिया" के प्रसिद्ध लेखक सर जान सोली को इसीलिए यह स्वीकार करना पडा कि "जो हिन्दू धर्म अपनी दार्शनिक समझौते तथा स्वरूपविहीन अनिश्चितता की ठण्डी राख के कारण राष्ट्रीय एकता की आग उत्पन्न करने मे असमर्थ था उसे दयानन्द ने एक निश्चित स्वरूप देकर उसमे साहस और पौरुष उत्पन्न करने का प्रयत्न किया।"

स्वराज्य और स्वदेशी भारत मे राजनैतिक चेतना और राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने मे अग्रेजी शिक्षा के साथ, सामाजिक और धार्मिक आन्दोलनों का प्रमुख योगदान रहा है, किन्तु राजा राममोहन राय और ब्रह्मसमाज के विपरीत आर्यसमाज का यह सुधार आन्दोलन सर्वथा भारतीय और राष्ट्रीय था। १८८५ मे काग्रेस के जन्म से दस वर्ष पूर्व १८७५ मे स्वराज्य का पहला उद्घोष करने वाले स्वामी दयानन्द थे। अपने 'सत्यार्थ-प्रकाश' में उन्होंने निर्भयता पूर्वक यहा तक लिखा है कि माता पिता के समान होने पर भी विदेशी राज्य स्वदेशी राज्य की बराबरी नहीं कर सकता। पाश्चात्य विचारकों का Good government is no substitute for self government' अर्थात् "सुराज्य, स्वराज्य का विकल्प नहीं है।" इस आधुनिक सिद्धान्त की स्वामी जी ने इतने पहले घोषणा कर दी थी। इसी प्रकार बग-भग से बहुत पूर्व स्वामी जी ने सदा स्वदेशी वस्तुओं का स्वय व्यवहार करके तथा दूसरों को भी ऐसा ही आग्रह करके स्वदेशी आन्दोलन को जन्म दिया। अग्रेजी सरकार आर्यसमाज को एक राजद्रोही आन्दोलन समझती थी जसा सर वेलेण्टाईन शिरोल ने 'इडियन अनरेस्ट' मे स्वीकार किया है। स्वाधीनता के आन्दोलन और गाधी जी के सत्याग्रह आन्दोलनो मे लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे आर्य नेता और हजारों आर्यसमाजी जेल गये। क्रान्तिकारियों मे परमानन्द भगतसिंह और रामप्रसाद बिस्मिल आदि फासी की सजा पाने वाले अनेक शहीद आर्यसमाज से सम्बन्धित थे। Everyman के विश्व कोश के पृष्ठ ४५१ पर तो आर्यसमाज को स्पष्ट रूप से एक ऐसा

राजद्रोही संगठन कहा है जिसका उद्देश्य देश की आजादी था।

नमस्ते आर्यसमाज द्वारा देश की भावनात्मक एकता के प्रयत्न का एक छोटा प्रतीक 'नमस्ते' है। पहले यही आर्यसमाजियो की पहचान थी। दूसरे लोग यहाँ तक कि हिन्दू भी इससे चिढते थे। आज यह सर्वसम्मत भारतीय सम्बोधन बन गया है।

शिक्षा प्रसार शिक्षा के क्षेत्र मे आर्यसमाज का योगदान सर्व परिचित और प्रसिद्ध है। सरकार के बाद सब से अधिक शिक्षण सस्थाएँ आर्यसमाज की है। उसके डी ए वी. कालेज, सस्कृत कन्या पाठशालाएँ और गुरुकुल सारे उत्तरी हिन्दुस्तान मे तथा हैदराबाद और महाराष्ट्र के अतिरिक्त मारीशस पूर्वी व दक्षिणी अफ्रीका और फिजी आदि विदेशो मे फैले हुए है। इनकी सख्या एक हजार से अधिक है जिनमे दस लाख के करीब विद्यार्थी हैं। जिन पर वार्षिक तीन करोड से अधिक रुपया व्यय होता है। शिक्षा प्रसार के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा तथा राष्ट्रीय वातावरण इन सस्थाओ की विशेषता है।

अछूतोद्धार : छुआछूत हिन्दू समाज का कलक है। आर्यसमाज ने इसे मिटाने के लिए सबसे अधिक सघर्ष किया और बलिदान तक दिये हैं, आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाओं मे उन्हे सवर्णों से अधिक सुविधाए दी जाती रही हैं, वेद और सस्कृत पढने का ही नही, पढाने का भी अधिकार उन्हें आर्यसमाज ने ही दिया। कई आर्य सस्थाओं और आर्यसमाजो मे हरिजन कुलोत्पन्न पण्डित, पुरोहित आज भी विवाह, यज्ञोपवीत और हवन आदि सस्कार कराते हैं। मेरा विवाह भी जाट कुल मे उत्पन्न पण्डित जी ने कराया था।

विदेशो मे प्रचार एक सर्वेक्षण के अनुसार जहाँ सारे भारत मे चार हजार (४०००) आर्यसमाज है, जिन मे से एक हजार ग्रामीण क्षेत्रो में है वहाँ मारीशस, फिजी, अफ्रीका आदि में भी २०० से अधिक आर्यसमाजें तथा आर्य स्कूल, कालेज व पाठशालायें हैं। लाखों प्रवासी भारतीयों मे आज हिन्दू धर्म, सस्कृति और हिन्दी भाषा का प्रचार इन्ही आर्य सस्थाओ के कारण है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी स्वय गुजराती होते हुए भी हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित करने की सब से पहले स्वामी दयानन्द ने ही दूरदर्शिता दिखायी। अहिन्दी प्रान्तो मे भी आर्यसमाज का सारा कार्य और प्रकाशन हिन्दी मे किया जाता है। आर्य शिक्षण सस्थाओ में सर्वत्र हिन्दी अनिवार्य है। हिन्दी साहित्य के विकास मे भी आर्य विद्वानो का प्रमुख स्थान रहा है।

वेद और संस्कृत वेदो के हिन्दी मे सरल भाष्य और उनके प्रचार का कार्य आर्यसमाज का प्रमुख उद्देश्य रहा है। इसी प्रकार संस्कृत के अध्ययन और यहाँ तक कि उसे शिक्षा का मुख्य विषय और माध्यम बनाने के लिए आर्यसमाज ने प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को पुनः प्रचलित किया। इससे भी अधिक महत्त्व की बात यह है कि वेद, शास्त्र और सस्कृत के नाम पर हमारी धार्मिक और सामाजिक कुरीतियो का समर्थन किये जाने के कारण जहाँ सस्कृत को कभी प्रतिक्रियावाद का गढ समझा जाता था, वहा आर्यसमाज ने वेद और सस्कृत शास्त्रो के प्रमाण देकर और उनका आधुनिक अर्थ करके आज उन्हें ही धार्मिक और सामाजिक क्रान्ति का साधन बना दिया है।

महिला समानता स्वामी जी केवल स्त्रियो की समानता के ही समर्थक नही थे अपितु मातृ-शक्ति कहकर उन्हें कई क्षेत्रो मे पुरुषो से श्रेष्ठ मानते थे। स्त्रियो को न पढाने की पुरानी हिन्दू मान्यता के विपरीत आर्यसमाज ने उनकी शिक्षा के लिए जितने स्कूल पाठशालाएँ और गुरुकुल तक खोले उतने स्वाधीनता से पूर्व सरकार द्वारा भी नही खोले गये थे। वेद और सस्कृत के अध्ययन का

महिलाओं को भी अधिकार है, यह आर्यसमाज की मान्यता रही है। स्त्रियो को यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार केवल आर्यसमाज ही देता है। पर्दा, दहेज, बहुविवाह, बाल-विवाह के विरुद्ध आन्दोलन और अन्तर्जातीय विवाह तथा विधवा विवाह का समर्थन सब से पहले और सब से अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से आर्यसमाज ने ही किया।

विश्वव्यापी लक्ष्य यद्यपि आर्यसमाज का कार्य-क्षेत्र मुख्य रूप से भारत और हिन्दू समाज रहा है किन्तु उसने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का लक्ष्य अपने सामने रखा है। उसके छठे नियम मे ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।' यह घोषणा की गई है। प्रथम तीन नियमो मे ईश्वर और वेद के सम्बन्ध मे ऋषि दयानन्द के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का उल्लेख है, किन्तु बाकी के सात नियम इतने व्यापक और उदार है कि उन्हें आसानी से विश्वव्यापी मान्यता ि ि सकती है। और कोई धर्म उनसे असहमति व्यक्त नही कर सकता। दसो नियम केवल २२ पक्तियों में आ जाते हैं। नवे नियम में 'सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझने' तथा दसवें नियम मे "व्यक्तिगत मामलो में स्वतन्त्रता और सर्वहितकारी सामाजिक मामलों मे परतन्त्रता" के सिद्धान्त व्यक्ति और समाज के समन्वय और एक आदर्श समाजवाद की आधार शिला बन सकते है, स्वय स्वामी जी ने बार बार लिखा है कि 'सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग-के लिए मैं सदा तत्पर हूं' चौथे नियम मे यही आदेश उनके अनुयायियों को दिया गया है। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ का नाम उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' रखा और 'सत्यमेव जयते' ये उनका सर्वप्रिय जयघोष था, इसे अब हमारे सविधान मे भारत का आदर्श स्वीकार कर लिया गया है।

(पृष्ठ १६ का शेष)

है। ऐसे निष्ठावान् राष्ट्रवादी नेता के अभाव मे ही देश की नाव विघटन के समुद्र में गोते खा रही है। उसे सही सलामत किनारे पर लाने के लिए ऐसे दिव्य गुणो वाले साहसी नेता की आवश्यकता है।

अत: जो देश, राष्ट्र-प्रेमी आर्य हिन्दू जहा और जिस स्थान पर कार्यरत हो, अपनी योग्यता और स्वभाव के अनुसार उनके किसी गुण को धारण करके देश, राष्ट्र, समाजविरोधी तत्त्वों का सामना करने के लिए बडे उत्साह और निर्भीकता से काय क्षत्र मे विरोधियों, आतकवादियो और अराष्ट्रीयता वादियो की लज्जाजनक तथा घृणित दूषित वृत्तियो और कामनाओ को विफल करने मे योग देकर अपने कर्त्तव्य का पालन करे, यही उस महान् नेता के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। आज देश की स्थिति बडी गम्भीर है। बाहरी आक्रमणों का तो सदा से ही डर रहा और सरकार इसके लिए सतर्क है ही। परन्तु अब तो तथाकथित अपने ही रक्षक, न होकर भक्षक बनते जा रहे हैं और यह डर बाहरी आक्रमणों से कही अधिक भयकर है। अत. डट कर उत्साह के साथ काम करने की आवश्यकता है। यह समय सोने और व्यर्थ की बातो का नहीं है। अब तो देश, जाति और समाज एव प्राचीन हिन्दू सस्कृति के गौरव के सम्मान का प्रश्न है। हमारी याद मे ऐसा भयानक समय देश की अखण्डता को क्षति पहुंचाने का पहले कभी नही आया था।

अत' चेतो और समय की नाजुकता को पहचानो और समाज, देश, राष्ट्र हित के कार्यो मे जुट जाओ। यही समाज की माग है। प्रभु हम सब को इस पवित्र कार्य मे साहस प्रदान करे।

□

॥ ओ३म् ॥

त्यागमूर्ति अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द

प्रेमशील महिन्द्र

यह सर्वविदित तथ्य है कि भारत ऋषियों, मुनियों, योगियो, त्यागियो, तपस्वियों, वीरो व बलिदानियों की पुण्य भूमि है। आदि काल से इतिहास के पन्ने इस देश की गौरव गाथा का स्वर्ण अक्षरो मे गान करते है। समय-समय पर अपनी महान् विभूतियों की स्मृति के लिए निर्वाण-दिवस, जन्म-दिवस अथवा बलिदान दिवस के रूप मे समारोह आयोजित करना हमारी परपरा रही है। इस का परोक्ष मे मुख्यत यही उद्देश्य होता है कि उन सच्चरित्र पथ-प्रदर्शको की जीवनचर्या को अपने जीवन मे चित्रित कर सके एव साथ ही इस परपरा को स्थिर रखने के लिए भविष्य मे आने वाली पीढियो के लिए भी मार्ग प्रशस्त कर सके।

यद्यपि वैदिक धर्मानुसार जीवन धारण करने उसका प्रचार तथा प्रसार करने वाले अनेको विद्वान्, सन्यासी, लोकोपकारक एव समाज सुधारक श्रद्धा के पात्र हैं।

उन के तप व त्याग की कथाए विश्वव्यापी हैं, सभी से हमें कुछ न कुछ प्रकाश व प्रेरणा मिलती है, तथापि हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन विशेष महत्त्व रखता है।

प्रेरणा स्रोत : महान् व्यक्ति अपने जीवन काल में तो जनता का पथ-प्रदर्शन करते ही हैं, किन्तु शरीर छूट जाने के पश्चात् भी वह जन-जन की प्रेरणा के स्रोत बन जाते है। उन की गौरव गाथा भावी पीढियो को उत्साह, साहस व आत्मविश्वास से भरपूर कर देती हैं। ऐसे महान् व्यक्तियो की प्रथम पक्ति मे स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम स्वर्णाक्षरो मे अङ्कित है। महर्षि दयानन्द को दिव्य सङ्गति का श्रद्धानन्द जो पर गहरा प्रभाव पडा था। वस्तुत: उन्होने महर्षि दयानन्द के मिशन की पूर्ति के लिए ही अपने जीवन की बाजी लगा दी।

गुरुकुल कागड़ी

देश की अवस्था उस समय अत्यन्त शोचनीय थी, दासता की बेडिया उसे जकडे हुए थी। चारित्रिक पतन पराकाष्ठा पर था एव भिन्न-भिन्न सप्रदायो से अज्ञानाधकार का कुहरा छाया हुआ था। जन-साधारण के मन से आत्म गौरव व आत्म-सम्मान विलुप्त प्राय हो चुका था। इसी परिस्थिति का लाभ उठाते हुए ईसाई प्रचारको की गतिविधिया प्रचण्ड रूप से और भी क्रियाशील हो उठी, यह सब देखकर स्वामी जी इसी निष्कर्ष पर पहुचे कि इस देश को अग्रेजों के बन्धन से मुक्त कराने व इस की सभ्यता व सस्कृति को जीवित रखने के लिए सर्वप्रथम शिक्षा के क्षेत्र में क्रातिकारी आमूल चूल परिवर्तन करना होगा। गुरुकुल कांगडी इसी भावना का परिणाम है। स्वामी जी एक सफल

वकील थे, किन्तु अपने देश व धर्म के हित अपने व्यवसाय को तिलाञ्जली देकर उन्होंने अपने सकल्प को मूर्त्त रूप दिया। अन्त में त्याग और तपस्या की मूर्ति व निश्चय के धनी का सपना २ मार्च १६०२ को साकार हुआ, जब हिमालय की वनस्थली मे गंगा के किनारे गुरुकुल कागडी की स्थापना हुई। अन्य ३४ छात्रो के साथ सर्वप्रथम अपने दोनो पुत्रो इन्द्र व हरीश को उसमे प्रवेश दिलाया। यह गुरुकुल कांगडी उस समय में एक करिश्मा ही था। सच तो यह है इस बीसवी शती मे गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली स्वामी जी की सर्वोत्तम देन है।

गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली

इस गुरुकुल मे सर्वांगीण विषयो की शिक्षा के साथ छात्रों के चरित्र-निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। यहा शिक्षा पाने वाला प्रत्येक छात्र चाहे वह धनो घर का है अथवा निर्धन का सब को एक समान खान-पान व व्यवहार मिलता है। प्रारम्भ से ही यहा के छात्रों मे देश, धर्म व राष्ट्र के प्रति प्रेम व बलिदान के भाव भरे जाते हैं। जब-जब भी देश को किसी भी प्रकार की विपत्ति का सामना करना पडा है, श्रद्धानन्द के गुरुकुल के छात्रों ने अपना दूध, घी तक त्याग कर उस से बचे हुए धन से ही नहीं अपितु मजदूरी करके भी अपने खून पसीने की कमाई से धन एकत्रित करके सहयोग दिया है। महात्मा गांधी के अफरीका के आन्दोलन मे भी यहां के छात्रो ने इसी प्रकार एकत्रित धन भेजा था। जब महात्मा गाधी अफ्रीका से भारत लौटे तो दीनबन्धु एन्ड्रूज की प्रेरणा पर वह गुरुकुल कागडी मे स्वामी जी को मिलने गए। स्वामी जी ने उन के कार्यों व व्यक्तित्व को देख कर उन्हें महात्मा गाधी के नाम से सबोधित किया। तभी से उनके नाम से पूर्व महात्मा विशेषण लग गया। उन्होंने गुरुकुल को मुक्त हृदय से सराहना की। लैफ्टीनैंट गवर्नर लार्ड जेम्स मेस्टन ने उद्गार प्रकट करते हुए कहा था—"यह गुरुकुल एक कौतूहल पूर्ण परीक्षण है, यहा के कर्मचारियों का त्याग व सेवा भावना भरा प्रबन्ध, शिक्षा प्रणाली एव छात्रों का स्वास्थ्य देखते हुए कहना पडता है कि यह एक आदर्श सस्था है।" महान् आत्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी पक्षपात रहित सभी संप्रदायों के प्रति स्नेह भाव रखते थे। सन् १६१६ मे खिलाफत के आदोलन मे मुसलमानों को सहयोग दे कर पवित्र हृदय की विशालता का परिचय उन्होंने दिया। जामा मस्जिद के सर्वोच्च आसन जिस पर कि कोई भी गैर मुस्लिम व्याख्यान देने का अधिकार नही रखता था, उसी मिम्बर पर बैठकर उन्होंने हजारो की उपस्थिति में "त्व हि नः पिता वसो त्व माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे॥" के वेद मत्र से अपना भाषण प्रारम्भ किया। इस भाषण के लिए उन्हें विशेष सम्मान से आमन्त्रित किया गया था। यह घटना उन के महान् व्यक्तित्व का साक्षात् दिग्दर्शन है।

देश-प्रेम

देश के दीवाने ने राष्ट्र-रक्षा आन्दोलन में जो क्रांतिकारी भूमिका निभाई है, इसका परिचय तो ३० मार्च सन् १६१६ के दिन की उस महत्त्वपूर्ण घटना से मिल जाता है जबकि आपने ब्रिटिश सरकार के "रौलेट एक्ट" के विरुद्ध दिल्ली के चादनी चौक में २५००० की भीड के समक्ष भाषण दिया, जिस पर कि गुरखे फौजियो ने सगीनें तान ली। पर वीरता व साहस की मूर्ति ने एक ओर तो सगीनो के सामने छाती तान कर कहा कि "मारो गोली मेरा सीना हाजिर है" और दूसरी ओर उत्तेजित भीड को चेतावनी दी कि कोई भी व्यक्ति शान्ति भग न करे। महान् व्यक्तित्व के सामने गुरखों की बन्दूकें स्वय नीची हो गई। यह दृश्य कितना रोमाचकारी होगा, इस का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

नारी जाति और स्त्री-शिक्षा

देश के पुनर्जागरण व उन्नति के लिए स्वामी

जी ने स्त्री शिक्षा को अत्यन्त आवश्यक समझा। शताब्दियो से पददलित व पीडित नारी को जागरूक करके उन्होने उसे नई दिशा दी। निजी महत्त्व जानने व अधिकार पहचानने की प्रेरणा दी। साथ ही उसे देश, राष्ट्र, समाज धर्म व अपने परिवार के प्रति निष्ठा पूर्वक कर्त्तव्य परायणता का पाठ भी पढाया। उन्होंने अनुभव किया कि जब तक देश की नारी शिक्षित न हो, उसे अपने धर्म, सस्कृति सभ्यता व इतिहास का परिचय और ज्ञान न हो तो देश कभी उन्नत अवस्था को नही पहुंच सकता। इन्हीं की प्रेरणा से कन्या महाविद्यालय जालन्धर की स्थापना हुई, जो कि आज की स्त्री-शिक्षा की प्रमुख संस्थाओं मे विशिष्ट स्थान प्राप्त किए हुए है। उसके पश्चात् तो आर्यसमाज ने कन्या पाठशालाओ का तो जाल ही बिछा दिया है। नारी जाति स्वामी जी की अत्यन्त ऋणी है। आज भारतीय नारी ने फिर से अपनी प्रतिभा व शक्ति को पहचानने का साहस बटोरा है। वह अपने कर्त्तव्य व अधिकार को समझने मे सक्षम हो गई हैं। इस का श्रेय स्वामी श्रद्धानन्दजी को ही है। आज नारी के समक्ष अनेको प्रश्न चिह्न व समस्याएँ एव समय पुकार-पुकार कर उस का आह्वान कर रहा है। नारी को इस चुनौती को स्वीकार करना है। नि:-सन्देह जिस देश की नारी राष्ट्र-निर्माण मे नीव के पत्थर का काम करती है, वह देश अबाध गति से उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता जाता है।

अनाथ बालको की दुर्गति से पीड़ित श्रद्धानन्द

ससार मे प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग-अलग प्रकृति व प्रवृत्ति होती है। कुछ लोग केवल अपने ही लिए जीते है तो कुछ ऐसे भी होते है जो निजी स्वार्थ को प्रमुखता तो देते हैं किन्तु आशिक रूप से थोडा दूसरो के हित मे भी सहयोग दे लेते है। तीसरे कोई-कोई लोग ऐसे होते है जो अपने स्वार्थ को उपेक्षा करते हुए जन-जन की पीडा को अपने हृदय मे समेट लेते हैं, सजो लेते हैं। ऐसे महान् व्यक्ति तो बिरले ही होते हैं। वह दूसरो के कष्टो को स्वय झेलते हुए इन पर न्यौछावर हो जाने में ही परम कर्त्तव्य व सौभाग्य समझते हैं। दूसरे के दुःख दूर करने मे ही उन्हें सुख की अनुभूति होती है। वह लोग महान् होते हैं, ऐसे ही महानो में अग्रणी हैं स्वनाम धन्य स्वामी श्रद्धानन्द जी। मातृ-पितृ-विहीन अनाथ बालकों को तड़पते बिलखते देखकर स्वामी जी का हृदय रो दिया, वह विह्वल हो उठे। ऐसे बालकों को आश्रय व सरक्षण देने के लिए उन्होंने सन् १९१८ मे सर्वप्रथम १६ बालको को लेकर दिल्ली में एक अनाथालय की स्थापना की। आज इस अनाथालय मे सैकडों अनाथ बालक व कन्याए सरक्षण व शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

दलितोद्धार व शुद्धि-आन्दोलन

आर्य हिन्दु-जनता के दलित वग के अन्दर आत्म-गौरव के प्रति हीनता देखकर उस मे फिर से आत्माभिमान जगाने हेतु स्वामी जी ने सन् १९२३ मे शुद्धि सभा की स्थापना की, सहस्रों जातिच्युत अपने भाइयों को फिर से सम्मान पूर्वक गले लगाया। इसके लिए अनेक भीषण कष्टों व बाधाओं का उन्हें सामना करना पडा। इस पुण्य कार्य मे उन्हें अनेकों राष्ट्रभक्त महापुरुषों का सहयोग प्राप्त हुआ, जिन मे महात्मा हसराज जी, आचार्य रामदेव जी, अमर बलिदानी वीर लेखराम जी के नाम उल्लेखनीय है।

इस सभा का उद्देश्य इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत सन् १९२६ में कराची की एक मुस्लिम महिला असगरी बाई अपने बच्चों व एक भतीजे को लेकर फिर से अपने हिन्दु धर्म मे प्रवेश पाने हेतु दिल्ली मे स्वामी जी के पास आई। उन्होने उसे सम्मान पूर्वक हिन्दू धर्म में सम्मिलित किया। इसी के फलस्वरूप कुछ मतान्ध मुस्लिम भडक उठे और २३

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द को एक जैसी वीरगति प्राप्त हुई –

डा० कमल किशोर गोयनका, ए-६८, अशोक विहार, फेज प्रथम, दिल्ली

भारत के आधुनिक काल के इतिहास मे उन्नीसवी शताब्दी अनेक कारणो से महत्त्वपूर्ण है। एक प्रमुख कारण यह है कि इस शताब्दी में अनेक युग पुरुषो, दार्शनिको, सुधारकों, विद्वानो, जन नेताओ आदि ने जन्म लिया और देश की सोयी और दासता में जकडी जनता को जागृत किया ऐसे महापुरुषों में महात्मा गाधी और स्वामी श्रद्धानद का नाम इतिहास के पृष्ठो पर स्वर्णाक्षिरों मे अकित है। महात्मा गाधी और स्वामी श्रद्धानद, दो ऐसे महापुरुष हुए जिन्होंने अपने अपने क्षेत्रो मे क्रान्ति उत्पन्न कर दी।

स्वामी श्रद्धानद का जन्म २२ फरवरी, १८५८ तथा महात्मा गाधी का जन्म २ अक्तूबर १८६९ को हुआ। इस प्रकार स्वामी श्रद्धानद गाधी से लगभग १२ वर्ष बडे थे। स्वामी श्रद्धानद जब सन् १८७९ मे बरेलो में आये श्रो स्वामो दयानन्द से अपनी जिज्ञासाओ को शात कर रहे थे, तब गाधी प्रारम्भिक पाठशाला मे शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। स्वामी श्रद्धानद अर्थात् मुन्शीराम सन् १८८६ मे आर्यसमाज के विधिवत् सदस्य बने तब गाधी नवी कक्षा के छात्र थे।

गांधी मई, १८९३ मे एक बैरिस्टर की हैसियत से भारतीयो का मुकदमा लडने के लिए दक्षिण अफरीका गये, तो उस समय तक मुन्शीराम आर्यसमाज की सपूर्ण गतिविधियो पर छा गए और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान बने।

गाधी दक्षिण अफरीका मे कई भारतीय आर्यसमाज के प्रचारकों के सपर्क मे आये और उनके आत्म-त्याग एव देशभक्ति को देखकर वे इतने प्रभावित हुए कि जुलाई, १९०५ में जब आर्यसमाज प्रचार के लिए भाई परमानद दक्षिण अफरीका पहुचे तो गाधी ने उन्हे जोहानिसबर्ग मे मानपत्र समर्पित किया।

इधर भारत में स्वामी श्रद्धानद ने २६ नवम्बर १८ ८ मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के माध्यम से गुरुकुल स्थापना का प्रस्ताव स्वीकार करा लिया था और अनथक प्रयत्नो से सन् १९०२ मे गुरुकुल कागडी की स्थापना कर दी थी।

महात्मा गाधी ने दक्षिण अफरीका मे भारतीय कुलियों के सम्मान एवम् अधिकार रक्षा के लिए सन् १९०८ मे सत्याग्रह आरम्भ किया। यह जन-आदोलन धरना देना, बिना परवाना माल लगाना और व्यापार करना, मागने पर पजीकृत प्रमाण-पत्र न दिखाना, अगूठो की छाप देने से इन्कार करना और नेटाल की सोमा पार करके ट्रॉसवाल में प्रवेश-निषेध का उल्लघन करना आदि अनेक रूपो मे चल रहा था।

स्वामी श्रद्धानद को इस आदोलन की जानकारी मिली और उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि गाधी के नेतृत्व मे लडे जाने वाले इस सत्याग्रह आदोलन को धन की आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानद ने

तुरंत गुरुकुल के छात्रों को कुली के रूप में कार्य करके धन-सग्रह करने की प्रेरणा दी। इस प्रकार सगृहीत धन, 'मेरे प्रिय भाई" सबोधन से पत्र के साथ गाधी को भेजा।

स्वामी श्रद्धानद और गाधी के प्रथम परिचय की यह कहानी, स्वयं महात्मा गाधी ने "यग इडिया" के ६ जनवरी, १९२७ के अक मे 'स्वामी जी के सस्मरण" शीर्षक से प्रकाशित की।

गाधी ने अपने सस्मरण मे लिखा, "स्वामी जी ने मुझे जो पत्र भेजा था; वह हिंदी मे था। उन्होंने मुझे "मेरे प्रिय भाई" कहकर सबोधित किया था। इस बात ने मुझे मुन्शीराम का प्रेमी बना दिया।" इस प्रकार इस छोटे से सपर्क से जो सबंध बना वह स्वामी श्रद्धानद के शहीद होने तक घनिष्ठ एवम् आत्मीय सबधों के रूप मे चलता रहा।

महात्मा गाधी के दक्षिण अफरीका से भारत आने पर स्वामी श्रद्धानद से उनकी पहली भेंट गुरुकुल कांगडी मे ८ अप्रैल १९१५ को हुई। गाधी ९ जनवरी, १९१५ को दक्षिण अफरीका से बबई बंदरगाह पहुंचे और शाति निकेतन मे महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर से मिलते हुए उन्होंने ५ अप्रैल को हरिद्वार में प्रवेश किया। गाधी जी को स्वामी श्रद्धानद से इतने शीघ्र मिलाने का श्रेय सी० एफ० ऐंड्रयूज को है, जिन्होंने गाधी को यह सलाह दी थी कि भारत जाने पर भारत के तीन महान सुपुत्रों के दर्शन अवश्य ही करने चाहिए। इन तीन महान् सुपुत्रों में एक स्वामी श्रद्धानंद भी थे।

गाधी ने भारत आने से कई मास पूर्व २७ मार्च, १९१४ को नेटाल (दक्षिण अफरीका) से स्वामी श्रद्धानद को पत्र मे ऐंड्रयूज के सुझाव और उनके दर्शन की अपनी उत्सुकता को व्यक्त किया। महात्मा गाधी ने 'प्रिय महात्मा जी" सबोधन के बाद पत्र में लिखा, "श्री ऐंड्रयूज मुझे आपके नाम और काम के बारे में बतला चुके हैं।' इसलिए ऐसा नही लगता कि मैं किसी अजनबी को लिख रहा हू। आशा है, इस सबोधन के लिए आप मुझे क्षमा करेंगे, क्योंकि मैं और श्री ऐंड्रयूज दोनो ही आपके काम के बारे में चर्चा करते समय यही सबोधन करते रहे हैं। श्री ऐंड्रयूज ने मुझे यह भी बतलाया था कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर और श्री सुशील कुमार रुद्र पर आपका कितना अधिक प्रभाव पडा है। उनसे मुझे पता चला कि आपके शिष्यो ने सत्याग्रहियो के लिए कितना काम किया था। उन्होंने गुरुकुल के जीवन के इतने शब्द चित्र खीचे थे, कि यह पत्र लिखते समय लगता है, जैसे मैं गुरुकुल में ही पहुंच गया हूँ। श्री ऐंड्रयूज ने मेरे मन में उक्त तीनों स्थानों को देखने और इन सस्थाओं के प्रधान, भारत के तीन महान् सुपुत्रो के प्रति सम्मान प्रकट करने की उत्कट अभिलाषा जगा दी है।"

महात्मा गाधी के गुरुकुल कागडी पहुंचने पहले से मगनलाल गाधी फोनिक्स पाठशाला के २५ छात्रों के साथ वहां पहुंच चुके थे। गाधी ने ८ फरवरी, १९१५ को पत्र लिखकर स्वामी श्रद्धानद को बच्चों को प्रेम देने तथा उनके साथ परिश्रम करने के लिए धन्यवाद दिया और लिखा, "बिना आमत्रण ही आपके निकट पहुंचकर आपके चरणों मे सिर झुकाना मेरा कर्तव्य है।"

गाधी ८ अप्रैल, १९१५ को गुरुकुल कागडी पहुंचे, जहा स्वामी श्रद्धानद की उपस्थिति मे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने उनका स्वागत करते हुए मानपत्र भेंट किया।

गाधी ने अपने उत्तर में अन्य बातों के साथ स्वामी श्रद्धानद द्वारा उन्हें "भाई" कहने की बात का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए कहा, "महात्मा जी ने मुझे अपने एक पत्र मे "भाई" कहा

है, उसका मुझे गर्व है। कृपया आप लोग यही प्रार्थना करे कि मैं उनका भाई बनने के योग्य हो सकू। मैं २८ वर्ष बाद अपने देश मे आया हू, मैं कोई सलाह नही दे सकता। मैं तो मार्ग दर्शन प्राप्त करने आया हूँ और जो भी मातृभूमि की सेवा मे लगा है ऐसे प्रत्येक प्राणी के सम्मुख झुकने के लिए तैयार हू। मैं अपने देश की सेवा मे प्राण देने के लिए तैयार हू। अब मैं विदेश नही जाऊँगा। मेरे एक भाई (लक्ष्मीदास गाधी) चल बसे हैं। मुझे आशा है कि महात्मा जी उनका स्थान ले लेंगे और मुझे भाई मानेंगे।

स्वामी श्रद्धानद ने भाई के नाते मानो आशीर्वाद देते हुए कहा, 'मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि आप अब भारत मे रहेंगे और अन्य लोगो की भाँति बाहर रहकर भारत की सेवा करने के लिए विदेश नही जाएगे। मुझे आशा है, कि भारत के लिए ज्योति स्तभ बन जाएगे।" स्वामी श्रद्धानद की यह भविष्य-वाणी कितनी सच हुई, यह हम भारतवासी ही नही सारा ससार जानता है।

महात्मा गाँधी स्वामी श्रद्धानद के जीवनकाल मे दो बार ८ अप्रैल १९१५ तथा २० मार्च, १९१६ को गुरुकुल कागडी गये तथा उनके शहीद होने के लगभग चार मास उपरान्त १९ मार्च १९२७ को दीक्षांत भाषण देने गये थे।

इसके पूर्व गाधी २० मार्च, १९१६ को गुरुकुल के वार्षिक उत्सव पर जब आये, तो उन्होने गुरुकुल कागडी को "स्वशासित, प्रजातत्रीय और राष्ट्रीय सस्था" मानते हुए स्वामी श्रद्धानद की प्रशसा करते हुए कहा था, "आर्यसमाज की गतिविधि का सर्वश्रेष्ठ परिणाम कदाचित् गुरुकुल की स्थापना और उसके परिचालन मे दिखायी पडता है। यह ठीक है कि महात्मा मुशीराम की प्रेरणादायक उपस्थिति ही उसकी शक्ति का अधिष्ठान है, किन्तु यह सस्था सच्चे अर्थो मे एक स्वशासित प्रजातन्त्रीय और राष्ट्रीय सस्था है, किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता या आश्रय से वह बिलकुल मुक्त है।" इस भाषण मे गाधी ने निर्धन व्यक्तियो द्वारा दान देने तथा सस्था के प्रबन्धको की जबरदस्त सगठन शक्ति की मुक्तकठ से प्रशसा की।

महात्मा गाधी ने अपनी "आत्मकथा" मे पहली यात्रा के अनुभव के सबन्ध में लिखा, 'जब मैं पहाड से दीखने वाले महात्मा जी के दर्शन करने और उनका गुरुकुल देखने गया तो मुझे बडी शाति मिली। हरिद्वार के कोलाहल और गुरुकुल की शाति के बीच का भेद स्पष्ट दिखायी देता था। महात्मा जी ने मुझे अपने प्रेम से नहला दिया। ब्रह्मचारी मेरे पास से हटते ही न थे।"

यात्रा के बाद महात्मा गाधी और स्वामी श्रद्धानन्द मे सहयोग निरतर बढता गया और स्वाधीनता सग्राम में कई बार मिलकर कार्य किया। जब अग्रजो ने रोलट अधिनियम लागू किया तो तो स्वामी श्रद्धानन्द ने ३० मार्च १९१९ को दिल्ली मे ४० हजार व्यक्तियो के जुलूस का नेतृत्व करते हुए उसका विरोध किया। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा गाधी जी को भेजे गये तार के अनुसार इस दिन हुए गोलीकाड मे ४ हिन्दू, ५ मुसलमान मारे गये तथा १३ घायल एव २० लापता हुए।

गाधी जी ने ३ अप्रैल, १९१९ को इस बलिदान एव धैर्य के लिए स्वामी श्रद्धानन्द को तार दिया और लिखा, "रोलट कानून का विरोध करने में आपने तथा दिल्ली के लोगो ने जिस अनुकरणीय धैर्य से काम लिया है, उसके लिए मैं आपको तथा दिल्ली के लोगो को साधुवाद देता हू। हम उसके पीछे निहित दमन की भावना का विरोध कर रहे है। यह कोई आसान काम नही है।

लेकिन वीरनगाम और अमृतसर मे हुए दुःखदायी काडो के बाद जब गाधी ने सत्याग्रह स्थगित कर दिया, तो स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली समिति

भंग करके आंदोलन से अपना हाथ खींच लिया। स्वामी श्रद्धानन्द गांधी की ओर से निराश हो गये और उन्होंने गांधी के दृष्टिकोण का जोरदार विरोध किया। यह दोनों की महानता थी कि प्रेम-भाव फिर भी बना रहा गांधी ने 'स्वामी जी के संस्मरण" में लिखा है कि जितना जोरदार उनका विरोध होता था उतना ही जोरदार उनका प्रेम भी होता था।

स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या से गांधी को बड़ा आघात लगा। गांधी कांग्रेस कमेटी की बैठक में भाग लेने के लिए गोहाटी जा रहे थे। उन्हें सोरभोग नामक छोटे से रेलवे स्टेशन पर लाला लाजपतराय का तार मिला। गांधी इस हत्या से स्तब्ध थे किन्तु उनके विचार में यह हत्या नहीं "वीरगति" थी। गांधी ने गोहाटी की २४ दिसम्बर १९२६ की बैठक में इसे "अपूर्व मरण" एवं "धन्य मृत्यु" कहा और कामना की कि ऐसी मृत्यु हम सबको मिले।

२६ दिसम्बर, १९२६ के अधिवेशन में गांधी ने स्वयं शोक प्रस्ताव रखा। उसमें स्वामी श्रद्धानन्द के देशप्रेम, निष्ठा निर्भयता एवम् अन्य गुणों की प्रशंसा की।

"यंग इंडिया" (३०।१२।१९२६) में शहीद श्रद्धानन्द जी" शीर्षक से लिखी अपनी श्रद्धांजलि में गांधी ने उन्हें "वीरता का अवतार" "कर्मवीर" एवं "योद्धा" कहा तथा लिखा, "धर्म और सत्य" के लिए प्राण देने के कारण मृत्यु भी धन्य हो गयी।" गांधी ने ९ जनवरी, १९२७ को बनारस में उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए गंगा-स्नान किया और उस महान् आत्मा" के कार्यों को पूरा करने की ईश्वर से प्रार्थना की।

महात्मा गांधी ने स्वामी श्रद्धानन्द के हत्यारे अब्दुल रशीद को दोषी न मानकर उन अखबारों एवं लोगों को उत्तरदायी ठहराया, जो स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय और मदनमोहन मालवीय को "इस्लाम का शत्रु" घोषित कर रहे थे। गांधी ने अनेक बार स्पष्ट शब्दों में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द "इसलाम के शत्रु" नहीं हैं। गांधी ने कहा कि हिन्दू-मुसलमानों को इस हत्या से शिक्षा लेनी चाहिए और उनके रक्त से अपने अपने "हृदय का पाप" धो देना चाहिए। गांधी ने प्रति-शोध और बदले को भी धर्म विरोधी कहा और निर्देश दिया कि हिंदुओं को आत्म-संयम रखना चाहिए।

महात्मा गांधी स्वामी श्रद्धानन्द को कुछ मामलों में असहमति के बावजूद अपना भाई, आदरणीय सहयोगी मानते हुए उनके गुणों के प्रशंसक बने रहे। अस्पृश्यता निवारण के लिए उन्होंने जो कार्य किये, उनकी गांधी ने सदैव मुक्त कंठ से प्रशंसा की। यद्यपि दोनों देशभक्तों के क्षेत्रों एवं कार्यप्रणाली में अन्तर था, लेकिन क्या यह संयोग ही था कि दोनों को एक जैसी वीरगति प्राप्त हुई।

□

भारत की महानता : भारतीय संस्कृति

लेखक : आचार्य शिवराज शास्त्री, एम० ए०, मौलवी फाजिल

संसार में जहां अनेक शक्तिशाली देश संसार को अपने अधीन करने की विजय आकांक्षा पूरी करने के लिए घोर घातक, मानवता को समाप्त करने वाले अणु अस्त्रशस्त्रों के निर्माण में रात दिन लगे हुए हैं। वहाँ मानवता को बचाने के लिए एक समय के अनीश्वरवादी कहे जाने वाले महान् देश रूस के कर्णधार श्री मिखाइल गोर्बाचोव ने मानवसहार को रोकने के लिए भारतवर्ष की ओर न केवल मित्रता का हाथ बढाया है, अपितु भारत से बडी-बडी विश्व शान्ति की आशाएँ लेकर वे रूस लौट गए हैं।

वास्तव में संसार में भारत ही वह देश है जिसने करोडों वर्ष पहले जब मनुष्य सर्वप्रथम इसी भूमि पर पैदा हुआ था तो उसे प्यारे प्रभु ने साथ-साथ जीने सुख शान्ति की समानता का साम्राज्य स्थापित करने का सुखद सन्देश दिया था। वेद भगवान् विश्व की पहली पुस्तक थी जिसने मनुष्य को जीवन के महत्त्वपूर्ण रहस्य समझाए थे। भारत से ही सारे ससार में ज्ञान की पावन ज्योति फैली थी। मनु भगवान् ने यह बात अपनी स्मृति में कही है—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन ।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा ॥

भारतवर्ष के ज्ञानी ऋषियो से हो ससार के देशवासी अपने-अपने जीवन की महानता के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करे। यही कारण था कि कोई देश दूसरे देश पर हमला नही करता था, कोई समाज दूसरे समाज को नष्ट करने का प्रयत्न नही करता था।

वेद माता के शब्दो में—
"यत्र विश्व भवत्यैकनीडम्।"

ससार प्रभु की आज्ञा इच्छा से ही दिव्य सस्कृति के आधार पर ही उसकी छत्र छाया में सुरक्षित रह सकता है।

शायद इसीलिए ससार में चारों ओर फैले राष्ट्रो के झगडों व धर्म सम्प्रदायों के नाम पर फैले लडाई झगडों को देखकर पाकिस्तान मे ही जन्मे मुसलमान महा कवि सर, डाक्टर मुहम्मद इकबाल एम० ए० पी०एच० डी० बार-एट-ला० ने एक कविता लिखी थी—

ऐ हिमालय ऐ फसीले किशवरे हिन्दोस्ता,
ऐ हिमालय दास्ता उस वक्त की कोई सुना,
मस्कने इब्नाए आदम जब बना दामन तेरा,
कुछ सुना उस सोधी-साधी जिन्दगी का माजरा,
जग जिस पर गाजाए रगे तकल्लुफ का न था।

डाक्टर इकबाल का विश्वास था कि ससार की पहली मानव नसल हिमालय पहाड पर पैदा हुई जसा कि भारतीय इतिहास मे लिखा है। और ससार का पहला ज्ञान वेद भी उसी पवित्र संतान को दिया। उनका रहन-सहन बहुत पवित्र, शुद्ध व अहिंसक था। यह मजहबी झगडे तो हाल के ही जमाने की देन हैं। कुरान शरीफ भी इसकी साक्षी देता है। लिखा है—

मा कानन्नास इल्ला उम्मतन वाहितन्
फरवत लिफूफीहा

प्रभु की प्रथम नसल के लोग एक हो धर्म सस्कृति के मानने वाले थे। धार्मिक व राष्ट्रीय झगडे तो बहुत बाद में पैदा हुए है। १४ सौ वर्ष पहले ससार के इतिहास मे इस्लाम की कही कोई चर्चा भो नही। २ हजार वर्ष पहले ईसाइयत की कोई चर्चा कही नही है। आज की दुनिया में फैली हुई धार्मिक व राष्ट्रवादी लडाइया साम्यवाद व पूजीवाद के सघर्ष तो बिल्कुल नये हैं। जिसके कारण ईरान व इराक मे युद्ध हो रहा है। पाकिस्तान द्वारा हिन्दुस्तान पर घात-प्रतिघात चल रहे हैं। अमरीका रूस दो खेमों मे बट गए हैं। आज की इन लडाइयों का अन्त कैसे होगा, इसका नक्शा आने वाले विश्व युद्ध की कल्पना से ही किया जा सकता है। कितनी बडी सख्या मे अणु अस्त्र तैयार हो रहे हैं। कितनी जल्दी मानव जाति को निवास भूमि श्मशान का रूप धारण कर लेगी इसकी चिन्ता सब से अधिक भारत को हो रही है। भारतीय राष्ट्रीयता का स्वतन्त्रता सग्राम ही राष्ट्र पिता महात्मा गाधी ने योगदर्शन के महान् सिद्धान्त सत्य और अहिसा के आधार पर ही लडा था। आज भी इसी महान सस्कृति की शाश्वत विचार धारा के आधार पर विश्व मानव को नष्ट होने से बचाया जा सकता है। सत्य-अहिसा के ही दिव्य सन्देश को अपना कर ससार विनाशकारी युद्धों से बच सकता है। अन्य कोई मार्ग मानव-सहार को नही रोक सकता है।

स्वतत्रता प्राप्ति के १५ वर्ष पहले राष्ट्र पिता महात्मा गाधी ने १९३२ मे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन के सभापति पद से भाषण देते हुए कहा था; जब कि विदेशी पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित भारतीय, अपनी सस्कृति व सभ्यता को छोडकर विदेशी सभ्यता के दीवाने बनते जा रहे थे। वे बोले—

"मैं आप लोगों से यह कहने आया हूं कि आप अपनी सभ्यता (जीवन पद्धति) पर विश्वास करे और उस पर दृढता से जमे रहें। ऐसा करने से हिन्दुस्तान सारे ससार पर साम्राज्य करेगा। हम ऐसे देश के रहने वाले है। जो अभी तक अपनी प्राचीन सभ्यता पर निर्भर रह सका है। यूरोप की सभ्यता तो आसुरी है। अगर हम योरोप की सभ्यता का अनुसरण करेगे तो हमारा नाश हो जाएगा। मैं इन सूर्य नारायण से जो उदय हो रहे हैं प्रार्थना करता हू कि भारत अपनी सभ्यता न छोड।"

भारतीय सस्कृति को आधार मानकर ही स्वतत्र भारत के प्रथम प्रधानमत्री प० जवाहरलाल नेहरू ने विश्वशान्ति की स्थापना के लिए पचशील का उद्-घोष किया जिसमें सभी राष्ट्रों को स्वय जिओ और जीने दो का महान् संदेश था।

भारतीय सस्कृति का ही यह उद्घोष है—
"उदारचरितानाा तु वसुधैव कुटुम्बकम्।"

छोटे छोटे वर्ग व समाज के लोग छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए लडते झगडते हैं। परन्तु जो मानवता में उदार आशय के सज्जन पुरुष होते है। उनका दृष्टिकोण तो यह होता है कि यह सारा ससार ही एक सम्मिलित परिवार की तरह है। इसका बनाने वाला एक ही परम पिता परमात्मा है। अमेरिकन लोगो को बनाने वाला एशिया के रहने वालों से अलग नही है। हिन्दू का परमात्मा मुसलमान के परमात्मा से जुदा नही हैं। हिन्दू और सिख का परमात्मा एक ओंकार ही है। पाकिस्तान का खुदा हिन्दुस्तान के लोगो के प्रभु से अलहदा नही है। सारे ससार की मानव जाति के शरीरो का रचना इस बात का पक्का सबूत है कि इन शरीरो की रचनाकार एक ही महान् कलाकार है जो सारी सृष्टि को अपने निश्चित नियमित व सुदृढ हाथों से बना रहा हैं, असख्य हाथो से असख्य अरबो वर्षो से ससार को सुव्यवस्थित रूप मे वही चला रहा है। सूर्य भग-

वान् उसी की आज्ञा से सारे ससार के प्राणी मात्र को एक सा प्रकाश दे रहे हैं। प्रभु की नदिया जल-दान मे किसी के प्रति पक्षपात नही करती हैं। वृक्ष प्रभु की आज्ञा से सभी को फलदान कर रहे है। भूमि माता अपने ऊपर बसने वाले किसी मनुष्य के प्रति पक्षपाती नही। प्रभु अपनी सन्तान व अपनी सृष्टि की स्वय रक्षा कर रहे हैं। इस भूमि पर बडे-बडे अत्याचारी शासक पैदा हुए जिन्होने भूमि माता को रक्त-स्नान कराया परन्तु आज उनका कही नामो निशान तक ढूढने पर नही मिलता।

इसको मिटाने वाले सब मिट गए जहा से।
बाकी मगर है अब तक नामो निशान इसका ।।

भूमि माता सब को निगल गई।

आज ससार एक बार फिर भीषण अस्त्र रूपी ज्वालामुखी के मुँह पर बैठा है। न जाने कब कोई छोटी सी चिन्गारी इस को भड़का दे। परिणाम-स्वरूप–

"यह डूबेगी नौका और डूबेगे सारे।
न हम ही बचेगे न साथी हमारे।।"

हम हृदय से प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह स्वय मानव प्रजा का सरक्षक बन भारत की दिव्य पवित्र सस्कृति की रक्षा करे। जिससे विश्व प्रजा महाविनाश के भयकर कोप से बच सके।

(पृष्ठ २६ का शेष)

दिसम्बर १९२६ को जबकि स्वामी जी रुग्णावस्था मे थे एक सिरफिरा युवक अब्दुलरशीद उनके पास सलाह मशवरा के बहाने आया एव एकान्त देखकर उन्हें पिस्तौल की गोलियो से बीध दिया। देखते ही देखते आर्य जगत् का देदीप्यमान सितारा धरती से उठ कर आकाश मे जा चमका जो अप्रत्यक्ष रूप से हमारा निरन्तर पथ-प्रदर्शन कर रहा है। स्वामी जी की गौरव गाथा को शब्दो मे नही बाधा जा सकता। आज उनकी इस ६०वी पुण्य तिथि पर हम सब को जो कि उच्च स्वर में उन का जय घोष करते हुए अमर रहे की ध्वनि गुजाते हैं—के सामने एक उभरता हुआ प्रश्न चिह्न है, कि क्या हम गत ६० वर्षो मे उस ज्योति पुञ्ज द्वारा प्रज्वलित ज्योति से अपने मे कुछ प्रकाश भर पाए हैं। प्रभु का अनन्य भक्त अपने देश की सभ्यता, सस्कृति, राष्ट्रीयता व धर्म पर बलिदान हो जाने वाला नर पुगव सदा-सदा के लिए अमर हो गया। हमे स्मरण रखना है कि अमरत्व को प्राप्त करना मानव के लिए महान् उपलब्धि है, इसी मे मानव जीवन की सार्थकता है किन्तु यह उपलब्धि अनायास ही नही होती, अपितु श्रद्धानन्द जैसा त्याग तपस्या व निष्ठा का पथ पकडना होगा। प्रभु करे हम उस अमर बलिदानी के चरण-चिह्नो पर चलते हुए उसके अधूरे सपनो को साकार करने में जीवन अर्पण कर दे। यही उसके प्रति सच्ची श्रद्धाजली है। क्या हम सच्ची श्रद्धाजली अर्पण कर सकने मे सक्षम हो सकेगे ?

बी-२४५, अशोक विहार-I
दिल्ली-११००५२

वैदिक वाङ्मय की व्यापकता तथा महत्ता

लेखक—डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, एम० ए० पी-एच० डी०, प्राध्या० संस्कृत विभाग
रणवीर रणञ्जय स्नातको० महा० अमेठी, पिन—२२७४०५, (उ०प्र०)

भारतीय और यूरोपीय लोगो की जातीय समानताओं के बारे मे चाहे सत्यता कुछ भी हो, पर इसमे सन्देह नही है कि हिन्द यूरोपीय भाषाएँ एक समान स्रोत से निकली हैं और मानसिक सजातीयता को प्रकाशित करती हैं। 'सस्कृत' अपनी शब्दावली और विभक्तिमय रूपो मे ग्रीक और लैटिन भाषाओं से अद्भुत समानता रखती है। सर विलियम जेन्स ने इसका समाधान इन सब भाषाओ का एक समान स्रोत बताकर किया है। १७८६ मे 'एशियाटिक सोसायटी आफ बगाल' के सम्मुख भाषण देते हुए उन्होने कहा था—"सस्कृत चाहे कितनी ही पुरानी हो, पर इसका गठन शानदार है। यह ग्रीक से अधिक निर्दोष, लैटिन से अधिक सम्पूर्ण और दोनों से कहीं अधिक परिष्कृत है। पुनरपि उन दोनो के साथ इसकी धातुओं और व्याकरण के रूपों मे इतनी समानता है कि वह आकस्मिक नही हो सकती। यह समानता वस्तुत इतनी अधिक है कि इन भाषाओ की छानबीन करने वाला कोई भी भाषा शास्त्री यह माने बिना नही रह सकता कि ये सब एक समान स्रोत से निकली हैं, जिसका सभवत अब अस्तित्व नही रहा है। इसी तरह का एक कारण, यद्यपि वह उतना जोरदार नही है, यह मानने के लिए भी है कि गाथिक और कौल्टिक दोनों भाषाएं एक विभिन्न वाग्भगी से मिश्रित होते हुए भी उसी स्रोत से निकली हैं जिससे कि सस्कृत निकली है और प्राचीन फारसी को भी उसी परिवार मे जोडा जा सकता है।"

हिन्द-यूरोपीय साहित्य का सब से प्राचीन स्मारक ऋग्वेद है। ऋग्वेद या वेदो मे जो इतनी रुचि ली जाती है। इसके दो कारण हैं—"इसका सम्बन्ध विश्व इतिहास से है और भारतीय इतिहास से भी। वेद विश्व-इतिहास की एक ऐसी खाई को पूरा करता है जिसे किसी अन्य भाषा का कोई साहित्यिक ग्रन्थ पूरा नहीं कर पाया था। यह हमे पीछे के उस काल मे ले जाता है, जिसका हमारे पास कोई रिकार्ड नही है और मनुष्यो की एक ऐसी पीढी के स्वयम् अपने शब्दो को हमारे सामने रखता है, जिसके विषय मे हम अन्यथा कल्पनाओ और अनुमानो के सहारे बस बहुत ही धुधला अन्दाजा लगा पाते। जब तक मनुष्य अपनी जातीय (नस्ली) इतिहास में रुचि लेता रहेगा और जब तक हम पुस्तकालयो और सग्रहालयो मे प्राचीन युगो के अवशेषो का सग्रह करते रहेगे, तब तक मानव-जाति की आर्य शाखा का लेखा-जोखा रखने वाली पुस्तकों की लम्बी पक्ति मे प्रथम स्थान ऋग्वेद को ही मिलेगा।" (मैक्समूलर-एशियेण्ट हिस्ट्री आफ सस्कृत लिटरेचर (१८६५) पृ० ६३) रैगोजिन के अनुसार, "ऋग्वेद नि सन्देह आर्यजाति-परिवार का सब से प्राचीन ग्रथ है।" ('वैदिक इण्डिया' १८६५, पृ० ११४)

प्रो० विण्टरनिट्ज लिखते हैं—"यदि हम अपनी निजी सस्कृति के आरम्भ को जानना और समझना चाहते हैं, यदि हम प्राचीनतम हिन्द-यूरोपीय सस्कृति को समझना चाहते हैं तो हमे भारत जाना चाहिए, जहाँ एक हिन्द-यूरोपीय जाति का सब से

प्राचीन साहित्य सुरक्षित है। क्योंकि भारतीय साहित्य की प्राचीनता के प्रश्न पर चाहे हमारा कुछ भी मत हो, यह बात निर्विवाद कही जा सकती है कि भारतीयों के साहित्य का जो प्राचीनतम स्मारक है वह हिन्द-यूरोपीय साहित्य का भी अभी तक उपलब्ध प्राचीनतम स्मारक है।" (ए हिस्ट्री आफ इण्डियन लिटरेचर अंग्रेजी अनुवाद, खण्ड १, (१९२७), पृ० ६) ब्लूमफील्ड के अनुसार भी "ऋग्वेद न केवल भारत का सब से प्राचीन साहित्यिक स्मारक है, बल्कि हिन्द-यूरोपीय जातियों की सब से प्राचीन साहित्यिक दस्तावेज भी है।" (द रिलीजन आफ द वेद, (१९०८), पृ० १७)

डाक्टर निकोल मेक्निकोल के अनुसार, "यह साहित्य यूनान और इजरायल दोनों के साहित्य से पुराना है, जिन्होंने इसमें अपनी उपासना को अभिव्यक्ति दी थी उनकी सभ्यता के ऊँचे स्तर को प्रकट करता है।"(हिन्दू स्क्रिप्चर्स' (१९३८), पृ० १४)

वेद शब्द का अर्थ ज्ञान है। यह विद् ज्ञाने धातु से बनता है। वेद सर्वोच्च ज्ञान है, पवित्र ज्ञान है। वेद भगवद्गीता की तरह एक साहित्यिक कृति नहीं है, और न बौद्धों की 'त्रिपिटक' या ईसाइयों के 'बाइबिल की तरह किसी विशिष्ट समय पर सकलित किया गया अनेक ग्रन्थों का सग्रह ही है। अपितु ऐसा माना जाता है कि ये ब्रह्म के निःश्वास-भूत हैं। ऋषियों ने इनका साक्षात् दर्शन किया है। यास्क के शब्दों मे वे ऋषि 'साक्षात्कृतधर्माण' है, और वे साक्षात्कृतधर्मा ऋषि यह घोषणा करते हैं। जिस ज्ञान को वे प्रदान कर रहे हैं उसका उन्होंने स्वयम् आविष्कार नहीं किया है, वह उनके आगे बिना प्रयत्न के (पुरुष-प्रयत्न विना प्रकटीभूतम्–शकराचार्य) प्रकट हुआ है। मीमासा दर्शन के अनुसार वेदों का विषय प्रत्यक्ष ज्ञान और अनुमान से जाना नहीं जा सकता--'अप्राप्ते शास्त्र-मर्थवत्' (जैमिनि सूत्र १।१।५)। सायणाचार्य के अनुसार–'वेद वह ग्रन्थ है जो इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट को रोकने का अलौकिक उपाय बताता है, (इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपाय यो ग्रन्थो वेदयति स वेद)।

उन्नीसवी शती मे प्रादुर्भूत, आर्यसमाज के संस्थापक, वेदों के भाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती (१८२४-१८८३ ई०) ने वेदो के ईश्वरीय ज्ञान के समर्थन मे निम्न वचन लिखे हैं--"परम-कारुणिको हि परमेश्वरोऽस्ति पितृवत्। यथा पिता स्वसन्तति प्रति सदैव करुणा दधाति, तथेश्वरोऽपि परमकृपया सर्वमनुष्यार्थं वेदोपदेशमुपचक्रे। अन्यथा-न्धपरम्परया मनुष्याणा धर्मार्थकाममोक्षसिद्धया विना परमानन्द एव न स्यात्। कृपायमाणेनेश्वरेण प्रजासुखार्थं कन्दमूलफलतृणादिक रचित, स कथ न सर्वसुखप्रकाशिका सर्वविद्यामयी वेदविद्यामुप-दिशेत्? किञ्च ब्रह्माण्डस्थोत्कृष्टसर्वपदार्थप्राप्त्या यावत् सुख न भवति तावत् विद्याप्राप्तसुखस्य सह-स्रतमेनाशेनापि तुल्य न भवति। अतो वेदोपदेश ईश्वरेण कृत एवास्तीति निश्चय। (ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका–वेदोत्पत्तिविषय)

अर्थात्–परमकारुणिक परमेश्वर पिता के समान है जिस प्रकार पिता अपने सन्तानो के प्रति सदैव करुणा करता है, उसी प्रकार ईश्वर ने भी परमकृपा से सभी मनुष्यों के लिए वेदों का उपदेश दिया। जैसे कृपालु ईश्वर ने अपनी प्रजाओं के सुख के लिए कन्द, मूल, फल, तृणादि की रचना की है, उसी प्रकार सर्वसुखप्रकाशिका सर्वविद्यामयी वेद-विद्या का उपदेश भला वह क्यो न करता। क्योकि ब्रह्माण्ड मे वर्त्तमान सभी उत्कृष्ट पदार्थों से उतना सुख प्राप्त नहीं हो सकता जितना कि विद्या से प्राप्त सुख का होता है। विद्याप्राप्ति से होने वाले सुख के हजारवे हिस्से के बराबर भी अन्य सुख नहीं हैं। अत वेदोपदेश ईश्वर ने ही किया है, यह निश्चय है।

भारतीय सभी मत मतान्तरो तथा सम्प्रदायो

का इतिहास पाश्चात्य सम्प्रदायों के समान ही बहुत प्राचीन नही है। ईस्वी पूर्व २०० वष कोई सम्प्रदाय नही था। सब से प्राचीन सम्प्रदाय ईरानी पारसी मत है तो भारत का बौद्ध जैन। इससे पूर्व सर्वत्र वेदों का धर्म ही प्रचलित था। वेदो की अप-व्याख्या मध्यकाल मे स्वार्थी पण्डितो द्वारा की गई। वैदिक ज्ञान की परम्परा का ह्रास तथा आर्य पठन-पाठन का व्यवच्छेद होने से भी वेदविद्या का लोक-कल्याणकारी रूप तथागत गौतम बुद्ध के समय नही रह सका। अत प्रतिक्रिया मे वेद विरुद्ध सम्प्रदाय भारत मे प्रचलित हुए। आर्यों के चक्रवर्ती राज्य तथा ऋषियों, मुनियो तथा वेदोपदेशको की शृंखला की टूट से भी भारत से बाहर अनेक सम्प्रदाय स्थापित हुए। पुनरपि उन सम्प्रदायो का कथ्य तथा सन्देश वेद की भाषा तथा उसके विचारो से प्रभावित नही रह सका। इस सदर्भ मे कुछ विचार करना असमी-चीन न होगा।

पारसी अपने देश को ईरान कहते हैं, जो 'अवेस्ता' का 'ऐरिया' है, जिसका अर्थ है-आर्यो का देश। शताब्दियों तक इस्लाम का बोलबाला रहने पर भी आर्य विचार-धारा के प्रभाव आज तक वहा से पूरी तरह मिटे नही हैं। फारस के मुसल-मानों में कुरान के उन अशो पर जोर देने की प्रवृत्ति है, जिनकी रहस्यवादी व्याख्या हो सकती है। प्रोफे-सर ई० जी ब्राडवे लिखते हैं-"अरबी पैगम्बर के युद्धप्रिय अनुयायी जब सातवी शताब्दी मे ईरान पर चढ आए और अपने प्रचण्ड आक्रमण से उन्होने एक प्राचीन राज के वश और एक सम्मानित धर्म को नष्ट कर दिया, तो कुछ ही वर्षो मे ऐसा परि-वर्तन आ गया जिसकी इतिहास मे शायद ही कोई और मिसाल मिलती हो। जहा सदियो से 'अवेस्ता' की प्राचीन स्तुतिया गाई जाती थी और पवित्र अग्नि जलती रहती थी, वहा 'अहुरमज्द' के मदिरों के खंडहरो पर बनी मीनारो से मुअज्जिनों की अजाने गूजने लगी और दीनदारो को नमाज के लिए बुलाने लगी। जोरोस्थ्र के पुजारी तलवार के घाट उतार दिये गए, प्राचीन ग्रन्थ आग की लपटों मे स्वाहा हो गए और जो धर्म इतना शक्तिशाली था, शीघ्र ही उसका कोई प्रतिनिधि न बचा-- सिवाय उन थोडे से निर्वासितो के जो भारत के समुद्री तट की ओर भाग गये तथा उन बचे-खुचे लोगो के जो अकेले येज्द मे और सुदूर विरमान मे अपमानित और उत्पीडित होते रहे—फिर भी यह परिवर्तन केवल सतही था और शीघ्र ही फारस की धरती पर शिया, सूफी इस्माइली जैसे बहुत सारे विपथगामी सम्प्रदाय खडे हो गए और ऐसे दार्श-निक पैदा हो गये जो आर्य विचार-धारा से मुक्ति का समर्थन तो करने लगे लेकिन राष्ट्र पर जो धर्म अरब तलवार द्वारा थोपा गया था उसे एक ऐसी चीज मे परिवर्तित करने लगे जो देखने में इस्लाम जैसी लगती हुई भी अपने भावार्थ में अरबी पैगम्बर के अभीष्ट से बहुत भिन्न थी।" (ए ईयर एमगस्ट द पर्शियन्स (१९२७) पृ० १३४)

इस्लाम, ईसाई, यहूदी और पारसी मजहब परस्पर भिन्न होते हुए भी एक दूसरे के तद्भव या अपभ्रंश रूप है। सेमेटिक सम्प्रदायों का स्रोत 'पारसी' मत का मूल वेद का साहित्य है, इसे स्वय प्रो० मार्टिन हाग ने भलीभाति सोदाहरण प्रति-पादित किया है। सक्षेप में 'जेन्दावेस्ता' की देव-माला की वैदिक देवताओं से समानता उल्लेखनीय है-ऋग्वेद का 'वरुण' जिस प्रकार 'ऋत' का स्वामी है, 'अहुर' उसी प्रकार 'अष' का स्वामी है। 'वरुण का जिस प्रकार 'मित्र से निकट-सम्बन्ध है उसी प्रकार 'अहुर' का 'मिथ्र' (सूर्यदेवता) से निकट-सम्बन्ध है। ऋग्वेद मे 'मित्र' का अर्थ सूर्य होता भी है। 'अवेस्ता' का 'अहुर' शब्द ऋग्वेद के 'असुर' का अपभ्रंश है और ऋग्वेदीय 'असुर' शब्द परवर्ती पौराणिक (तथा ब्राह्मण ग्रथो के भी) साहित्य मे बहुधा उल्लिखित 'असुर' शब्द के अर्थ मे नही है। ऋग्वेदीय 'असुर' प्राणदाता है न कि पौराणिक

निन्द्य राक्षस। इसी प्रकार अवेस्ता मे भी 'अहुर' देवता है। 'अवेस्ता' मे 'वेरेथ्रग्न'– 'वृत्र' को मारने वाले 'वृत्रहन्' 'द्यौ' 'अपाम्नपात्' (जियम अपा नपात्) गन्धर्व' (गन्दरेव), 'कृशानु' (केरेसानी), 'वायु' (वयु), 'विवस्वत' के पुत्र 'यम' (विवड् ह्वन्त के पुत्र यिम) तथा यज्ञ' (यस्न), 'होतृ' (ज़ओतर) 'अथर्वन्' (अथ्रवन) पुरोहित का उल्लेख है। यह सब इस बात का निर्देश है कि अविभाजित भारतीय आर्यों का और ईरानियो का एक ही धर्म था।

वैदिक साहित्य मे उपनिषदों का गौरवपूर्ण स्थान है। आरम्भ में उपनिषदो को 'वेदान्त' नाम से भी स्मरण किया जाता था। यद्यपि अब इस शब्द का प्रयोग उस विशेष दर्शन के लिए होता है जो उपनिषदो पर आधारित है। वेदान्त का शाब्दिक अर्थ 'वेदस्य अन्त' अर्थात् वेदो का उपसहार तथा सिद्धान्त है। उपनिषद वैदिक वाङ्मय के अन्तिम अश हैं। कालक्रम के अनुसार ये वैदिक काल के अन्त मे आती है। उपनिषदो मे क्योकि दर्शन की मौलिक समस्याओ पर गूढ और कठिन विचार विमर्श होता है, इसलिए वे शिष्यो को अनेक पाठ्यक्रम के प्राय अन्त मे पढाई जाती थी। धार्मिक अनुष्ठान के रूप मे जब हम वेदपाठ करते है तो उस पाठ को समाप्ति आम तौर पर उपनिषदो के पाठ से होती है।

'वेदान्त' का तात्पर्य आत्मविद्या या अध्यात्मविद्या रहा है और वह वेदो मे तिल मे तेल के समान सुप्रतिष्ठित है—"तिलेषु तेलवद् वेदे वेदान्त सुप्रतिष्ठित" (मुक्ति उपनिषद् १ ६) तथा 'आत्मैकत्वविद्याप्रतिपत्तये सर्वे वेदान्ता आरभ्यन्ते।" (ब्रह्मसूत्र पर शकरभाष्य की भूमिका)। वेदान्तसार मे भी 'वेदान्तो नाम उपनिषत प्रमाणम्।' लिखा है, जिससे यह सिद्ध है कि 'उपनिषत्' को वेदान्त कहा जाता था।

उपनिषद् या वेदान्त दर्शन के अद्भुत प्रभाव का पता श्री आर० गार्डन मिल्बर्न द्वारा 'इडियन इटरप्रेटर' (१९१३ ई०)में 'क्रिश्चियन वेदान्तिज्म' शीर्षक लेख से चलता है। उक्त लेख के कुछ प्रासङ्गिक वाक्य इस प्रकार हैं– 'भारत मे ईसाई धर्म को वेदान्त की आवश्यकता है। हम धर्म प्रचारको ने इस चीज को जितनी स्पष्टता से समझ लेना चाहिए थी, अभी नही समझा है। हम अपने निजी धर्म मे स्वतन्त्रता और उल्लास के साथ आगे नही पाते है, क्योकि ईसाई धर्म के उन पहलुओं को व्यक्त करने के लिए जिनका सम्बन्ध ईश्वर की सर्वव्यापकता से अधिक है, हमारे पास अभिव्यक्ति के पर्याप्त शब्द और प्रकार नही हैं। एक बहुत ही उपयोगी कदम यह होगा कि वेदान्त साहित्य के कुछ ग्रथो या अशो को मान्यता दी जाए।"

उपनिषदो के सम्बन्ध मे सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन् का कहना था—"उपनिषद, समय की दृष्टि से हम मे सुदूर होते हुए भी, अपने चिन्तन मे सुदूर नही हैं। व जाति और भौगोलिक स्थिति के भेदो से ऊपर उठने वाली मानव आत्मा की प्रारम्भिक अन्त प्रेरणाओ की क्रिया को उजागर करती है।"

इनकी विचारधारा ने प्राचीन काल मे प्रत्यक्ष रूप से और बौद्ध धर्म द्वारा भी परोक्ष रूप से भारत से बाहर के अनेक राष्ट्रों–बृहत्तर भारत, तिब्बत, चीन, जापान और कोरिया, दक्षिण मे श्रीलका, मलय प्रायद्वीप तथा हिन्दमहासागर और प्रशान्तमहासागर के सुदूर द्वीपो के सास्कृतिक जीवन को प्रभावित किया था। पश्चिम मे भारतीय विचारधारा के चिह्न सुदूर मध्य-एशिया तक खोजे जा सकते है, जहा भारतीय ग्रन्थ मरुभूमि मे दबे मिले है।" (दि प्रिंसिपल उपनिषत्म' की भूमिका) प्रो० विण्टरनिट्ज ने लिखा है–"मानव विचारधारा के इतिहास मे रुचि रखने वाले इतिहासकार के लिए तो उपनिषदे बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। उपनिषदो के रहस्यवादी सिद्धान्तों की एक विचारधारा के चिह्न फारसी सूफी धर्म के रहस्यवाद मे, नव प्लेटोवादियो और सिकन्दरिया के

ईसाई रहस्यवादियों, एकहार्ट और टालर के गुह्य ब्रह्मविद्या सम्बन्धी 'लोगस' सिद्धान्त मे और अन्त मे उन्नीसवी शताब्दी के महान् जर्मन रहस्यवादी शोपेनहावर के दर्शन में खोजे जा सकते है।" (विण्टरनिट्ज—'ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर' अंग्रेजी अनुवाद, खड १, (१९२७, पृष्ठ २६६) तथा ('ईस्टर्न रिलीजन्स एण्ड वेस्टर्न थॉट, 'द्वितीय संस्करण' (१९४०), अध्याय ४, ५, ६, ७।

ब्लूमफील्ड ने लिखा है कि "कहते है कि शोपेनहावर की मेज पर उपनिषदों की एक लैटिन प्रति रहती थी और 'वे सोने से पहले' उसमे से ही प्रार्थनाएँ किया करते थे।"

ब्लूमफील्ड—'रिलीजन ऑन द वेद' (१९०८), पृ० ५५।

शोपेनहॉवर के इस कथन का पौरस्त्य तथा पाश्चात्य विद्वानों ने बहुधा आदर और गौरव के साथ उल्लेख किया है—"उपनिषदो के प्रत्येक वाक्य में से गहन मौलिक और उदात्त विचार फूटते हैं और सभी कुछ एक उच्च, पवित्र और एकाग्र भावना से व्याप्त हो जाता है। समस्त ससार मे उपनिषदों जैसा कल्याणकारी और आत्मा को उन्नत करने वाला कोई और ग्रन्थ नही है। ये सर्वोच्च प्रतिभा के प्रसून हैं। देर-सबेर ये लोगो की आस्था का आधार बनकर रहेगे। इसने मुझे जीवन मे सुख तथा शान्ति प्रदान की है और मेरी मृत्यु के बाद भी मुझे इस से शान्ति मिलेगी।"—शोपेनहॉवर।

डब्ल्यू० बी० यीट्स के अनुसार—"सम्प्रदायों को शास्त्रार्थ के लिए बेचैन करने वाली कोई भी चीज ऐसी नही है जिस पर उपनिषदो का ध्यान न गया हो।" ('टेन प्रिंसिपल उपनिषत्स' (१९३७), पृ० ११)।

उपनिषदे हमे अदृश्य सत्य का एक पूर्ण रेखाचित्र प्रदान करती है, मानव अस्तित्व के रहस्यों पर बहुत ही सीधे, गहरे और विश्वस्त ढग से प्रकाश डालती है। ड्यूसेन के शब्दो मे—"ये एक ऐसी धार्मिक धारणाओं की स्थापना करती हैं जो भारत मे या शायद विश्व मे भी अद्वितीय हैं।

वैदिक वाङ्मय विशाल है। चार वेदों की ही ११२७ शाखाएँ हैं—'एकशतमध्वर्युशाखा, एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्, सहस्रवर्त्मा सामवेद., नवधाऽथर्वण।' (पातञ्जलमहाभाष्यम्)जिनमे ८-९ ही उपलब्ध हैं। प्रत्येक शाखा को ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदे पृथक्-पृथक् थी। जिसमे क्रमश ९-१०, ४-५ और १३ ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदे ही उपलब्ध हैं। वैदिक वाङ्मय में से जो कुछ आज बचा है वह लुप्त हो गए का शायद एक लघुभाग है। मैक्समूलर के शब्दो मे—"वैदिक युग मे विद्यमान धार्मिक और लौकिक काव्य का सौवा भाग भी आज हमें उपलब्ध है, यह हम दावे के साथ नही कह सकते।" (मैक्समूलर, 'सिक्स सिस्टम ऑन इण्डियन फिलॉसफो' (१८९९) पृ० ४१)। इस लघु लेख मे मैंने वेदो तथा उपनिषदो के महत्त्व पर सक्षेप मे दृष्टि निक्षेप किया है।

॥ ओ३म् ॥

सिद्धान्त-चर्चा-

आर्यसमाज के प्रथम नियम पर हमारा दृष्टिकोण

लेखक—यशपाल आर्यबंधु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद-२४४०३२

विश्व में शान्ति के सन्देशवाहक एव वैदिक धर्म के एकमात्र प्रतिनिधि, आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक ने उसके उद्देश्य एव सिद्धान्त उसके दश नियमो मे वर्णित कर गागर मे सागर भर दिया है। जैसा कि स्वामी जगदीश्वरानन्द जी का कथन है कि---"ये नियम आर्यसमाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द की विद्वत्ता, अगाध पाण्डित्य और ऋषित्व के परिचायक हैं। इन नियमो मे महर्षि के हृदय का प्रतिबिम्ब स्पष्ट रूप से झलक रहा है।" (द्रष्टव्य—जन-ज्ञान मासिक, आर्यसमाज शताब्दी विशेषाक, अप्रैल, १९७५, पृष्ठ ९१।) दु ख इस बात का है कि ऋषि के मन्तव्यों को उसके अनुयायी भी ठीक तरह से नही समझ पाये। तभी आयसमाज के प्रथम नियम की मनमाने ढग से तोड-मरोड कर दोषपूर्ण व्याख्याएँ प्रस्तुत की जाती रही है, और अब भी ऐसा ही हो रहा है। नियम की भाषा सर्वथा निर्दोष एव परिपूर्ण है तथापि ऋषि के अनुयायियों को उस मे भी दोष दिखाई दे रहे है। पर क्या वस्तुत प्रथम नियम की भाषा दोषपूर्ण अथवा अपूर्ण है। हमारी भली प्रकार से सोची, समझी और सुविचारी सुदृढ मान्यता है कि आर्यसमाज के इन नियमो की भाषा न तो दोषपूर्ण ही है और न ही अपूर्ण। हमारे अपने दृष्टि-दोष अथवा समझ की भूल के कारण हमे ऐसा प्रतीत होता है कि या तो इसकी भाषा दोषपूर्ण है या फिर अपूर्ण।

प्रथम नियम की भाषा सुस्पष्ट है कि-"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।" इस नियम मे परमेश्वर को दो वस्तुओ का आदि मूल बताया गया है। प्रथम-सत्य विद्या का और द्वितीय-उन पदार्थों का जो विद्या से जाने जाते हैं। इस साधारण सी सीधी-सच्ची बात को न समझ कर कतिपय व्याख्याकार इसमे दो विद्याओं की चर्चा करते हैं। एक सत्य विद्या और दूसरी पदार्थ विद्या। ऐसा करने से जहा अर्थ का अनर्थ होता है, वहा वाक्य भी अधूरा और अपूर्ण लगने लगता है। यदि "पदार्थ" शब्द को 'विद्या" के साथ जोड दिया जाये तो "जो" शब्द किस के लिए प्रयुक्त हुआ है और वह किस ओर सकेत कर रहा है। यह समस्या खडी हो जाती है और वाक्य अटपटा एवम् अपूर्ण लगने लगता है। जबकि वह ऐसा है नहीं। हम ही उसे बिगाड कर प्रस्तुत कर देते है। अत. हमारी समझ मे उक्त नियम जिस प्रकार से आया है, वह नम्रता-पूर्वक प्रस्तुत कर रहे है। पर हम उसे बिना तोड-मरोडे ज्यों का त्यो प्रस्तुत कर रहे है।

इस नियम मे तीन बाते मुख्य रूप से विचारणीय हैं। प्रथम-सत्य विद्या, द्वितीय-वे पदार्थ जो विद्या से जाने जाते हैं, तृतीय-ईश्वर किस का आदि मूल है। हमारा विश्वास है यदि हम तीनो को भली भाति समझ लेगे तो फिर नियम की भाषा बदलने

अथवा उसे दोषपूर्ण या अपूर्ण बताने की आवश्यकता ही नही रहेगी और न ही महर्षि का आशय ही इसमें कुण्ठित होगा। आइये ! प्रथम सत्य विद्या पर विचार करे।

सत्य विद्या कौन-सी है ?

प्रश्न उठता है कि नियम में वर्णित यह सत्य विद्या कौन सी विद्या है ? यद्यपि महर्षि ने आर्यसमाज के तृतीय नियम मे इसको स्पष्ट कर दिया है कि—'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।" तथापि आर्य विद्वान् इसे अपने ही ढग मे प्रस्तुत करने मे गौरव अनुभव कर रहे हैं। महर्षि के शिष्यों में श्रीयुत मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या का नाम प्रसिद्ध है। उन्होंने आर्यसमाज के दश नियमो की व्याख्या की है। अपनी इस व्याख्या मे वे सत्य विद्या से क्या तात्पर्य लेते हैं, हम उन्ही की भाषा मे उसे प्रस्तुत कर रहे हैं। श्री पण्ड्या जो लिखते हैं कि—"यह शब्द यहा बहुत ध्यान देकर समझने के योग्य है। कितनेक लोग इसका अर्थ "सच्ची विद्या" का करते हैं परन्तु उनको ध्यान देना चाहिए कि उसके आगे "पदार्थ विद्या" शब्द भी है। सो क्या वह फिर असत्यविद्या वा अविद्या मे ग्रहण होगा। 'यहा पदार्थविद्या' शब्द का प्रयोग हम को सचेत करता है कि इस नियम के रचने वाले ने यहा विद्या को दो भेद से माना है, जैसे सत्यविद्या और पदार्थ विद्या। इन दोनो विद्याओ की सज्ञाओ के बीच मे "और" शब्द भी प्रयोग किया गया है। यदि यहा "पदार्थ विद्या" शब्द न होता और केवल सत्य विद्या ही शब्द होता तो हम यावत् सत्य विद्याओं के अर्थ का समावेश उसमें ही किया हुआ अथवा माना हुआ समझ सकते थे। यह शब्द आर्यसमाजों के माननीय ग्रन्थादि मे कही तो यहा के सदृश और कही अकेला ही प्रयोग हुआ दृष्टि आता है। देखो, तीसरे नियम में वह अकेला ही प्रयोग हुआ है। विद्या अथवा सत्य विद्या से ही इस लोक और परलोक की विद्याओं का समुच्चय अर्थ समझ लिया जा सकता है परन्तु नियम के रचने वाले ने यहां इन दोनों शब्दों को पृथक्-पृथक् प्रयोग करके "सत्य विद्या" से तो 'ब्रह्मविद्या" और "पदार्थ विद्या" से सृष्टि विद्या सम्बन्धी अपना अभिप्राय स्पष्ट प्रकाशित किया है। यहा सत्यविद्या शब्द का अर्थ करने के समय हमे उसके समास पर भी ध्यान देना चाहिए और वैसे ही पदार्थ विद्या शब्द पर भी। जैसे पदार्थ विद्या शब्द पदार्थ+विद्या=पदार्थ अथवा पदार्थों की विद्या का वाचक सिद्ध होता है, वैसे ही सत्य+विद्या भी सत्य=ब्रह्म की विद्या का वाचक होता है। सत्य ब्रह्म को कहते हैं, यथा- 'सत्य ज्ञानमानन्द ब्रह्मेति"। (देखे—जनज्ञान, मई १९७१, पृष्ठ १३-१४)।

उपरोक्त व्याख्या में श्री पण्ड्या जी ने "सत्य विद्या" को ब्रह्मविद्या के रूप मे प्रस्तुत किया है जबकि महर्षि आर्यसमाज के तृतीय नियम में वेद को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बताते हैं और वेद मे ब्रह्म विद्या ही नही, पदार्थ विद्या भी है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे महर्षि ने उन का सुस्पष्ट उल्लेख भी किया है। अत मानना होगा कि वेदविद्या ही सत्य विद्या है जैसा कि तृतीय नियम में भी कहा गया है। वेद चूकि ईश्वरीय ज्ञान है अत उसमे प्रत्येक ज्ञान-विज्ञान का मूल होना आवश्यक है। यदि वेद मे केवल ब्रह्म विद्या होती अन्य विद्याए न होती तो उन्हे ईश्वरकृत मानने मे भी शका हो सकती थी क्योकि जैसा कि महर्षि का कथन है कि "मनुष्य के किए हुए पुस्तको मे एक ही विषय का प्रतिपादन रहता है। जैमिनि जी के सारे मत का प्रवाह एक धर्म और धर्मी इस विषय में विचार करते-करते पूर्ण हुआ। भगवान् कणाद के मन का ओघ घट पदार्थों के विवेचन के विचार ही मे समाप्त हुआ। इसी तरह वैद्यक ग्रथ, व्याकरण, महाभाष्य व योगशास्त्र की व्यवस्था लगाने मे भगवान् पतजलि जी की सारी आयु बीती, परन्तु वेद ये अनन्त विद्या के अधिकरण हैं। इस लिए वेद मनुष्यकृत नही हैं,

किन्तु ईश्वर-प्रणीत ही हैं। अब सारी विद्याओं के अधिकरण वेद हैं अर्थात् वेद में सारी विद्याओं के मूलतत्त्वों का दिग्दर्शन मात्र है। उदाहरणार्थ देखें— वाराह्योपानहोपनह्यामि, सहस्रारित्रां शंतारित्रां नावमित्यादि, एका च मे तिस्रश्च मे पच च मे॥ प्रथम उदाहरण में रचना विशेष का निरूपण किया हुआ है, दूसरे में नौका शास्त्र का निरुपण किया है और तीसरे में गणित शास्त्र का निरुपण बतलाया है। (पूना प्रवचन, पांचवां व्याख्यान—वेद विषयक) स्पष्ट है कि सत्य विद्या से केवल ब्रह्म विद्या का ग्रहण नही होता। वेद-विद्या ही वस्तुत सत्य-विद्या है।

वेद-विद्या ही सत्य विद्या क्यों है—यह भी समझ लेना चाहिए। वेद में परा और अपरा दोनों विद्याए होते हुए भी वेद सत्य-विद्या की पुस्तक कैसे है? यह विचारणीय है। यदि थोडी गम्भीरता से से विचार करे तो प्रतीत होगा कि विद्या दो प्रकार की होती है। एक सत्य विद्या दूसरी लौकिक विद्या। सत्य विद्या में लौकिक विद्या नही होती। वेद मे भी लौकिक विद्या का लेश भी नही है। वेद में न लौकिक इतिहास है, न लौकिक भूगोल और न ही लौकिक पदार्थ विज्ञान। वेद मे राजा का वर्णन तो है, पर राजा विशेष का नही। जहा राजा विशेष का वर्णन हो, वह सत्य विद्या नही लौकिक विद्या होती है। वेद मे सेनापति का वर्णन है, पर सेनापति विशेष का नही। वहा राज्य का वर्णन है, पर राज्य विशेष का नही। वहा नदी, पहाड, नगर आदि का वर्णन तो है, पर हिमालय या विन्ध्याचल आदि किसी पर्वत विशेष का वर्णन नही। वेद में नदी का वर्णन अवश्य है पर गगा, गोदावरी आदि किसी नदी विशेष का वर्णन नही। उसमें नगर का वर्णन है, देश का वर्णन है पर दिल्ली या कराची आदि किसी नगर विशेष या भारत, पाकिस्तान आदि देश विशेष का वर्णन नही। वेद में विमान आदि का वर्णन तो है पर मिग या जैट विमान विशेष का नहीं। स्पष्ट है कि जिसमे किसी परिवर्तनशील विषय या वस्तु का वर्णन हो, वह सत्य विद्या नही लौकिक विद्या या नियम की भाषा के अनुमार केवल "विद्या" ही हो सकती है। इसी विद्या से सांसारिक पदार्थों का ज्ञान होता है। कौन से पदार्थों का? आइये! थोडा इस पर भी विचार करें।

लौकिक विद्या से लौकिक पदार्थों का ही बोध होता है, अलौकिक पदार्थों का नहीं। यही कारण है कि भौतिक शास्त्र के द्वारा कोई आत्मा और परमात्मा के दर्शन नहीं कर सका और न कर सकता है। न ही सत्य विद्या से कोई लौकिक पदार्थों को ही जान सकता है। क्योंकि सत्य विद्या में विद्या का विस्तार है ही नहीं, मूल है। लौकिक विद्या के ग्रन्थों में उसका विस्तार किया जाता है तब जाकर पदार्थों का ज्ञान हो पाता है। केवल वेद से कोई विमान नहीं बना सकता। वेद से प्रेरणा पाकर विमान शास्त्र की रचना होती है और विमान आदि का निर्माण भी। इससे क्या आया? यह कि लौकिक पदार्थों का ज्ञान हमें लौकिक विद्या से ही होता है। ईश्वर इन्हीं लौकिक अर्थात् रचे हुए पदार्थों का ही आदि मूल है। प्रकृति तो अनादि है। फिर अनादि का आदि मूल कैसा। अत. आदिमूल सृष्टि का ही होता है जिसका आदि भी है और अन्त भी।

डा० पुरुषोत्तम लाल चौधरी, (मुजफ्फरपुर निवासी) अपने एक लेख में आर्यसमाज के प्रथम नियम की व्याख्या करते हुए कुछ ऐसी बातें भी लिख गये हैं, जिनसे सहमत हो पाना कठिन हो रहा है। अत: बडी विनम्रता एव शालीनता के साथ इस विषय मे उनसे अपनी असहमति प्रकट करने की धृष्टता कर रहा हू। उक्त लेखक महोदय अपने लेख में लिखते हैं कि—"यहां यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि ज्ञेय पदार्थों में एक पदार्थ परमात्मा भी है, तो क्या परमात्मा अपना

भी आदि मूल है ? अर्थात् प्रारम्भिक कारण है ? तो उत्तर है हां । वह अपना भी आदि मूल है। विषय स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण लें—एक लेखक अपने लेख द्वारा अपने लेखकीय व्यक्तित्व को व्यक्त करता है या प्रकाशित करता है तो क्या वह लेखक अपने लेखकीय व्यक्तित्व का निर्माता, प्रारम्भ करने वाला या प्रकाशक नहीं है ? उसी प्रकार अव्यक्त परमात्मा ने अपने सर्वज्ञता गुण द्वारा ज्ञान देकर, रचनाकार के गुण द्वारा सृष्टि रचना कर अपने को व्यक्त किया या प्रकाशित किया तो क्या वह अपने ज्ञान-दाता और रचनाकार के व्यक्ति का प्रकाशक या निर्माता या या प्रारम्भ करने वाला कारण या आदि मूल नहीं है ?" (द्रष्टव्य—स्वाध्याय निर्णय—ऋषि निर्वाण अंक, वर्ष ११, अंक १, पृष्ठ ६)

यह ठीक है कि वेद-विद्या और सृष्टि-रचना दोनों ही ईश्वर को प्रकाशित कर रही हैं तथापि हमारी सोची-विचारी सुनिश्चित मान्यता है कि कारण का कारण नहीं हुआ करता। ईश्वर स्वयं आदिकारण है तो फिर उसका कारण कैसा। फिर अनादि पदार्थ का आदि कारण होता ही नहीं। इसलिए यह कहना कि ईश्वर अपना आदि कारण है, यथार्थ नहीं। फिर ईश्वर आदि कारण है किस का स उत्तर स्पष्ट है कि उन दो वस्तुओं का जिनका प्रथम नियम मे उल्लेख है अर्थात् एक सत्य विद्या का और दूसरे उन पदार्थों का जो विद्या से जाने जाते हैं। यहां यह भी समझ लेने की आवश्यकता है कि सांसारिक पदार्थों के जानने के लिए लौकिक विद्या है पर अनादि पदार्थ ईश्वर, जीव और प्रकृति सत्य विद्या से ही जाने जा सकते हैं, विद्या से नहीं।

ईश्वर सृष्टि की रचना प्रकृति के परमाणुओं से करता, है फिर कालान्तर में प्रलय भी करता है। अतः सृष्टि कार्य है जिसका निमित्त कारण आदि मूल ईश्वर है और उपादान कारण प्रकृति है। वेद-ज्ञान का आदि मूल भी परमेश्वर ही है, वही सृष्टि के आदि में वेद ज्ञान को प्रकाशित करता है और फिर प्रलय में पुनः अपने में समेट लेता है। स्पष्ट कि वेद का उपदेश करने वाला और सृष्टि की रचना करने वाला परमेश्वर ही वह आदि मूल है जिसका नियम में उल्लेख किया गया है। और वे पदार्थ जिनका आदि मूल परमेश्वर है, वेदज्ञान और रची हुई सृष्टि ही हैं। इस प्रकार बिना किसी प्रकार की भाषा की उलट-फेर किये, स्वाभाविक रूप से उसका अर्थ निकल आता है और वह इस प्रकार है कि सकल वेद ज्ञान और रची हुई इस सृष्टि के उन सभी पदार्थों का, जिनका बोध विद्या से होता है, आदि मूल परमेश्वर है। तात्पर्य यह कि वेद ज्ञान और सृष्टि के वे सूक्ष्म पदार्थ जो विद्या की आंख द्वारा ही देखे जा सकते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आर्यसमाज के प्रथम नियम की भाषा मे न कोई दोष है न अपूर्णता। वह अपने आप में पूर्ण एवं निर्दोष है। अतः इसके मनमाने अर्थ न लगाये जावें अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जायेगा।

नोट—यह लेख केवल सत्यासत्य के निर्णय के लिए लिखा गया है न कि किसी को अवमानना करने की दृष्टि से।

(पृष्ठ १६ का शेष)

नोट :—(इसका स्पष्ट अभिप्राय पुस्तकों की पढ़ाई है। विषय के लिए समय पृथक् है। धनुर्वेद में भी २ वर्ष क्रियात्मक के हैं।)

यह बात वर्णन करने योग्य है कि ऋषि ने गन्धर्व वेद (गान-विद्या) अथर्ववेद, शिल्पविद्या, क्रिया कौशल और नाना-पदार्थो का निर्माण अर्थात् हस्तक्रिया और नेत्र क्रिया के लिए समय नही बतलाया। यह १२ वर्ष से कम नही हो सकता इस प्रकार ३५ वर्ष की पढाई यह हो गई। ५ वर्ष आरम्भ में गणित, भूगोल, देशीय भाषा, इतिहास इत्यादि के सीखने मे लगेंगे। इस प्रकार यदि ८ वर्ष का ब्रह्मचारी भी पढाई आरम्भ करे, तो ४८ की आयु मे वह सभी विद्याएँ समाप्त करेगा। ऋषि ने जो लिखा है कि २१ वर्ष मे सारी पढाई समाप्त हो सकती हैं किन्तु जिन्होने २४ वर्ष को आयु तक ही ब्रह्मचारी रहना हो उनके लिए यह ४८ वर्ष की की पढाई का कोर्स कैसे लागू हो सकता है ? इन लोगो के विषय मे ऋषि लिखते है कि पुरुषो को व्याकरण और अपने व्यापार की विद्या वेज्ञानिको को अवश्य पढनी चाहिए और ब्रह्मचरियो को पढाई निम्न प्रकार होगी—

व्याकरण	३ वर्ष
निरुक्त और छन्द	१ वर्ष
मनुस्मृति, रामायण, महाभारत	१ वर्ष
दर्शन, उपनिषद्	२ वर्ष
वेद और ब्राह्मण	डेढ वर्ष
अन्य विषय	साढ़े ४ वर्ष
व्यवहार की विद्या	४ वर्ष
सर्वयोग	१७ वर्ष

इस प्रकार ८ वर्ष की आयु में पढाई आरम्भ करने वाला विद्यार्थी २५ वर्ष की आयु मे स्नातक हो जायेगा। मनु महाराज ने लिखा है कि स्नातक को कम से कम एक वेद अवश्य आना चाहिए। चार वेदो (ब्राह्मणों सहित) के लिए ऋषि ने ६ वर्ष रक्खे है इसलिए १ वेद के लिए डेढ वर्ष होना चाहिए। व्यवहार की विद्या ब्राह्मण के लिए या तो आयुर्वेद, अध्यापन या पुरोहिताई और उपदेश की हो सकती है। आयुर्वेद के लिए ऋषि ही ने ४ वर्ष बतलाए हैं। अध्यापक को ज्योतिष और नेत्र विद्या अवश्य आनी चाहिए। जिसमें ४ वर्ष लगेंगे। यदि धनुर्वेद का अध्यापक बनना हो तो उसको सीखने मे ४ वर्ष लगेंगे। यदि विद्यार्थियों को कोई दस्तकारी सिखलानी होगी तो अथर्ववेद के सीखने में ४ वर्ष लगेंगे जिसने पुरोहित और उपदेशक बनना होगा, उसको भी गृह्यसूत्रों के पढने में और ऋचादि की क्रियाओं को जानने मे ४ वर्ष लगेंगे और क्षत्रियो के लिए व्यवहार विद्या धनुर्वेद ही है। उसके सीखने के लिए ४ वर्ष लगते हैं और वैश्य को भी अर्थ और विशेष दस्तकारी सीखने में ४ वर्ष और लगेंगे। यदि इस प्रकार से हम ऋषि की पाठविधि को समझे तो इसका महत्त्व हमारे हृदय मे जम जाएगा।

नोट—यह लेख सम्वत् १९८१ में लिखा गया।

बिन्दु बिन्दु

स्व० श्री लालमनजी के भजनों पर आधारित उनके

शरीर : "यह तन माटी का स्थूल, बुर्ज कब ढह जाए पता नही।"

मन : "मन कंगाली, मन धनी, मन कायर, मन शेर।
मन दुखिया और मन सुखी, मन प्यारा मन बैर॥"

माँ : "माता का ऋण संसार में, उतारा न उतर न सके है।"

व्यापार : "धन खूब कमा आनन्द मना, पर कोई ऐसा अपराध न कर।
अपना घर-बार बसाने को औरो के घर बरबाद न कर॥'

दहेज : "होकर सेठ साहूकार, लड़का बेचे सरे बाजार,
अपने जायों की कीमत लगाओ नही,
कहा मान जाओ विनाश कराओ नही।"

विचार

कुछ विचार बिन्दु

मूर्ति-पूजा : "कोई पत्थर से सर फोड़ रहा,
जड मूरत को कर जोड़ रहा,
बालू से तेल निचोड़ रहा,

हिन्दी : 'पन्द्रह साल निकलने पर भी, हिन्दो को दुत्कार रहे,
अंग्रेजी को रखने को है, देश का मान उनार रहे,
प्रान्त-प्रान्त मे फूट डालकर, आपस में तकरार रहे,
हिन्दी भक्तो जाग उठो अब मौन व्रत क्यो धार रहे ।"

सत्यार्थप्रकाश : "ऐसी दवा एक है आती, अन्दर चौदह भाग दिखाती,
उन भागो में अनन्त समानो, अमृतधारा तैयार की,
सब उसका सेवन करना ।"

गौ : "गौ मरती विदेशो राज मे, अब क्यों मरती स्वराज में,
गो-हत्या विरोधी विधान, हे भगवान् पूरा कब होगा ।"

श्रीकृष्ण : "हमने महापुरुष बताया था, बस इतना भेद है,
गृहस्थ आश्रम में रहकर, जो योगेश्वर कहलाते थे,
तुम कहते रास रचाया था, बस इतना भेद है ।"

विधवा विवाह : "तर्क, प्रमाण, आत्मा कोई, इसके विरुद्ध नहो जाती,
फिर सकोच शर्म कैसी है, मेरी समझ में ना आती,
किसको क्या आपत्ति है, यह लालमन टोहने वाले,
विधवा-व्याह का बिगुल बज गया, जाग उठो सोने वाले ।"

शराब : "शराब की बोतल भर रहो है, जो नाश देश का कर रही है,
नाश नशा-सामान, हे भगवान् पूरा कब होगा ।"

प्रस्तोता : लालमन आर्य जनसेवा सस्थान
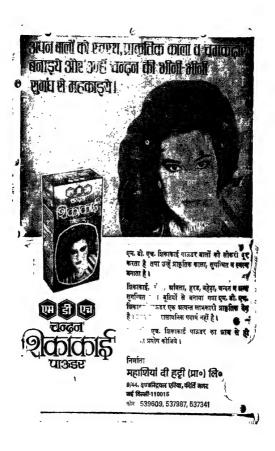
उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ, चावडी बाजार, दिल्ली-११०००६, फोन : २६६८३८

॥ ओ३म् ॥

दान देने का सुअवसर

आर्य जगत् की शान

माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय

सी-१, जनक पुरी, नई दिल्ली-११००५८

के भवन निर्माण के लिए

निम्न भवन निर्माण सामग्री की आवश्यकता है—

दिल खोलकर दान दीजिए-

लोहा	—	६०००/-	प्रतिटन
ईंटे	—	१२००/-	प्रति ट्रक
रोडी	—	७००/-	प्रति ट्रक
स्टोन डस्ट	—	७५०/-	प्रति ट्रक
सीमेंट	—	६५/-	प्रति बोरी

जो सज्जन भवन-निर्माण सामग्री देना चाहें तो उनका नाम दान दाता सूची पर लिखा जायेगा। भवन निर्माण के लिए भेजी गयी राशि नकद/मनिआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजिये

माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय
सी-१, मेन बस स्टाप, जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८ के
पते पर भेजी जाये।

दान दी गयी राशि आयकर अधिनियम जी-८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

निवेदक :

ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री

ला० गुरमुखदास ग्रोवर
कार्यकारी अध्यक्ष

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक ११ | रविवार ११ जनवरी, १९८६ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | पौष २०४३ | दयानन्दाब्द—१६२

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपये | विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विराट् शोभा यात्रा सम्पन्न

युग की चुनौतियों का जवाब थे श्रद्धानन्द

—स्वामी आनन्द बोध

देश की स्वाधीनता के लिए अमर बलिदान करने वाले, वीर संन्यासी, तपोनिष्ठ महात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे २५ दिसम्बर को विराट् शोभा यात्रा आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में आयोजित की गई। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन मे प्रातः ८ बजे यज्ञ से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। शोभा यात्रा का नेतृत्व करते हुए आगे आर्यसमाज के नेता गण स्वामी आनन्द बोध, श्री सोमनाथ मरवाह, प० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री सूर्यदेव, श्री डा० धर्मपाल, महाशय धर्मपाल, श्री सत्यानन्द आदि महानुभाव चल रहे थे। मार्ग मे आर्य जन पुष्पमालाओं से अपने नेतागणों का स्वागत कर रहे थे। आर्यसमाज नया बास ने आर्यजनों का बादाम, किशमिश, इलायची एव पुष्पों से जी भरकर स्वागत किया। आर्यसमाज सीताराम बाजार द्वारा शोभा यात्रा का स्वागत भी सराहनीय था। जलूस मे हजारों नर नारी जय ऋषि की श्रद्धानन्द अमर रहे के नारे गुंजा रहे थे।

इस वर्ष का उत्साह भी देखने योग्य था। जलूस का आकर्षण जहा आर्य वीर दल एव केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के युवकों का शस्त्र प्रदर्शन रहा, साथ ही विशेष ध्यान खींचा है वीरांगनाओं के शस्त्र प्रदर्शन ने। यह प्रदर्शन केन्द्रीय आर्य युवती परिषद की वीरांगनाओं ने किया। जनसमूह रोमांचकारी प्रदर्शन को देखने के लिए टूटा पड़ रहा था। यह शोभा यात्रा जब घण्टाघर के ऐतिहासिक स्थल पर आया आर्यसमाज दीवान हाल के विशाल मंच से जलूस का पुष्प पंखुड़ियों की बौछार से स्वागत किया। इस स्थन पर सत्यपाल पथिक अमृतसर के जोशीले गीतों तथा गुलाब सिंह राघव की कविता गानों से समां बंध गया। मच का संचालन दीवान हाल आर्यसमाज के मन्त्री मूलचन्द गुप्त कर रहे थे। शोभा यात्रा इस मंच के सामने रुक गयी। स्वामी आनन्द बोध ने इस अवसर पर सम्बोधन दिया। उन्होंने कहा—यह बलिदानो का रगमच है जहां आज हम लोग खडे हैं। इतिहास के पन्नों से आज भी अमर बलिदानी वीरों की हुंकार सुनायी पड रही है। भाई मतिदास चौक, जहां बलिदानियों ने अपने खून से धरती रगी। भाई मतिदास, भाई सतीश, भाई दयाला का बलिदान, बन्दा वीर वैरागी का दिल दहला देने वाला बलिदान इसी स्थल पर हुआ। इसी चादनी चौक मे ही स्वामी श्रद्धानन्द ने गोरी की सगीनों के सामने सीना ताना था। स्वामी आनन्द बोध ने कहा—मैं सरकार से माग करूगा इतिहास पुरुष की स्मृति में जहा उनकी मूर्ति लगी है इस पार्क का नाम स्वामी श्रद्धानन्द पार्क रखा जाये। स्वामी जी ने आह्वान किया—आर्यो! अपने बच्चो को अपनी कौम को, अपने वीरों का, अपने बलिदानियों का इतिहास सुनाओ। आजादी हमें आसानी से नही मिली। कुर्बानियों की राह से आजादी मिली है। इसे सुरक्षित रखने के लिए तथा राष्ट्र की एकता के लिए हरसभव कुर्बानी देने के लिए तैयार रहना चाहिए। ३ बजे शोभायात्रा लालकिला मैदान जाकर एक विराट् सभा में बदल गयी। इस अवसर पर अनेक आर्य नेताओं ने सम्बोधन दिया। सचालन श्री राजेन्द्र दुर्गा ने किया।

जगदीश टाइटलर

राज्यमन्त्री
नागर विमानन
भारत
नई दिल्ली-११०००१

दिसम्बर २५, १९८६

संदेश

स्वामी श्रद्धानन्द को पंजाब और भारत के प्रकाशमान सुपुत्र के रूप में स्मरण किया जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्यसमाज आन्दोलन को नई चेतना प्रदान की। उन्होने विदेशी राज्य का जमकर विरोध किया तथा अस्पृश्यता एव सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए प्राणपण से सफल प्रयास किया। उन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता को सवर्धित किया। आज से साठ वर्ष पूर्व अपने आदर्शों के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

उनके बलिदान के अवसर पर आओ हम प्रण करे कि स्वामी जी द्वारा दिखाये गये आध्यात्मिक, सामाजिक, धर्मनिरपेक्ष एव भ्रातृत्व के लिए आदर्श मार्ग पर चलने के लिए हम अपने को समर्पित करे।

ह०
जगदीश टाइटलर

धार्मिक भावनाओं को छेड़ना अमानवीय

स्वामी आनन्द बोध ने कड़ा पत्र प्रधानमन्त्री को भेजा

मान्यवर श्री राजीव गांधी जी!

पश्चिम बंगाल की ज्योतिबसु सरकार अपनी अकर्मण्यता के कारण अनेक समस्याओं को जन्म दे रही है। मैं इसी प्रकार की एक घटना की ओर आप का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं।

आर्यसमाज कलकत्ता का वार्षिकोत्सव २४।१२।८६ को मुहम्मद अली पार्क में हो रहा था। दोपहर के समय महिला सभा का सम्मेलन चल रहा था, उस समय पुलिस के कुछ वरिष्ठ अधिकारी मुहम्मद अली पार्क में आए और वहां से समस्त पुस्तक विक्रेताओं से सत्यार्थप्रकाश की प्रतियाँ उठा ले गए। उन की इस कार्रवाई का महिला सभा ने बडा विरोध किया, लेकिन पुलिस ने सभी प्रतियां थाने में भिजवा दी।

इस घटना पर कलकत्ता के आर्य नेता व अन्य हिन्दू नेताओ को दुःख हुआ। उन्होंने भी इसका विरोध किया। आर्यसमाज के वरिष्ठ

(शेष पृष्ठ ४ पर)

प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल | व्यवस्थापक—डा० [illegible] | सम्पादक—प० यशपाल सुधांशु एम० ए०

आरोग्य पथ

वात रोग, जोड़ों में दर्द : फल न खाएं, दूध न पिएं

— डा० एस० पाल

प्राकृतिक चिकित्सा में मेरा अटूट विश्वास है। फल प्राकृतिक चिकित्सा में उपचार का एक मुख्य साधन हैं। लेकिन मेरा अनुभव है कि फल हानिकारक भी हैं। सर्दी-जुकाम, पेट रोगियों को फलों से नुकसान हो सकता है। फलों से सब से अधिक कष्ट वात-रोगों में हो सकता है।

पहले यह जान लें कि वात रोग है क्या ? आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में इसे रूमेटिज्म या आर्थ-राइटस कहा जाता है। इसकी १०० से ज्यादा किस्में हैं। वात में शरीर के किसी भी हिस्से में दर्द रहता है खासकर जोड़ों में। दर्द या तो किसी अंग में जम सा जाता है या फिर ऊपर नीचे होता रहता है। कभी-कभी जोड़ों में सूजन भी रहती है। रोगी उठते-बैठते कराहता है, उस अंग से पूरी तरह काम नहीं ले पाता। रोग पुराना हो जाए तो वह अंग बेकार हो जाता है।

वात रोग बुखार से भी शुरू हो सकता है। दर्द और सूजन कहीं भी हो सकते हैं—हाथ, पैरों की अंगुलियों में, रीढ़ में, पीठ में, टांगों में, टखनों में, घुटनों में, बाहों में। सूजन, नीम चढ़े करेले का काम करती है। दर्द लगातार रहता है। दबाने से, और आमतौर पर रात को दर्द बढ़ जाता है। दिन में पीड़ा कुछ कम हो जाती है। कुछ रोगियों को उठते-बैठते बड़ी परेशानी होती है, लेकिन एक बार वे चलने-फिरने लग या काम में लग जायें तो दर्द महसूस नहीं करते।

इस रोग में कुछ व्यक्तियों की त्वचा गर्म रहती है, उनके पसीने से बदबू आती है। ऐसे रोगियों को पेशाब कम आता है, जब आता है, गहरे पीले रंग का या मटमैला। उनकी नब्ज तेज रहती है। कुछ रोगियों को बेहद प्यास लगती है और भूख मर जाती है। रोग बहुत बढ़ जाए तो दिल पर असर कर सकता है, जान ले सकता है।

अमेरिका की करीब २५ करोड़ की आबादी में पाँच करोड़ व्यक्ति वात रोगों के शिकार हैं। इन में बच्चे भी हैं। भारत में कभी किसी ने इस रोग के बारे में कोई सर्वेक्षण नहीं किया, लेकिन अस्पतालों और प्राइवेट डाक्टरों के पास आने वाले रोगियों की संख्या को देखकर यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि इस देश में करोड़ों लोग इस रोग से पीड़ित हैं। हमारी भौतिक उन्नति के साथ-साथ यह रोग बढ़ता ही जा रहा है।

भारत में वात रोग अधिक व्यापक है। धोबी, मछेरे आदि लोग अपना अधिक समय पानी में गुजारते हैं। लगातार ठण्डे पानी या गीले कपड़े पहनने से जोड़ों में दर्द शुरू हो जाता है। सर्दी से ज्यादा नुकसान अचानक बदलते मौसम से होता है। गरीब लोगों के पास तन ढापने के लिए कपड़े नहीं है, वे एक बार बीमार पड़ जायें तो न शरीर में रोग से लड़ने की शक्ति इतनी होती है कि रोग का मुकाबला किया जा सके और न ही गर्म कपड़े।

वात रोगों के कुछ अन्य कारण भी हैं। दूषित भोजन भी एक वजह है। दूषित से अभिप्राय कीटनाशक और अन्य रसायनों से सुरक्षित अनाज, सब्जी, फल और अन्य खाद्य पदार्थ। भोजन शुद्ध भी हो तो पैसे वाले लोग जरूरत से ज्यादा खाते हैं, समय-असमय खाते हैं, सुबह भारी भरकम नाश्ता, इसके बाद दोपहर का भोजन। भूख देखकर नहीं, घड़ी देखकर। रात को भी यही आलम। तीन भोजनों के बीच चाय, बिस्कुट, मिठाई, पकौड़ी और समोसा भी। जो कुछ खाते हैं, उसे पचाने के लिए व्यायाम नहीं करते। इसके अलावा छोटी-सी बीमारी में एण्टीबायटिक्स जैसी तेज दवाइयां, जिनके लगातार सेवन से वात रोग की शुरुआत हो सकती है।

एलोपैथी के पास वात रोग का कोई इलाज नहीं है। हां, दर्द कम करने के लिए एस्प्रीन जैसी दवाएं हैं जिनको लगातार लेने में बहुत नुकसान हो सकता है। आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा-पद्धति का मुझे कोई अनुभव नहीं है, लेकिन हां जहां तक मैं जानता हूं, उनमें भी स्थायी उपचार नहीं है। होम्योपैथी में रस टाक्स, ब्रायनिया, पाल्साटिला, नेट्रम सल्फ आदि दवाएं हैं जिनके सेवन से कई रोगी ठीक हो सकते हैं।

तो आखिर इलाज क्या है? इलाज है सही खान-पान और परहेज।

एक बात बहुत जरूरी है। लक्षणों को सुन-पढ़कर न तो यह समझो कि आपको या आपके परिवार में किसी सदस्य को वात रोग है और न हो अपना इलाज खुद करें। अस्पताल में या किसी विशेषज्ञ के पास जाइए निदान के लिए। इसके बाद एलोपैथी को छोड़कर किसी भी चिकित्सा पद्धति की शरण लीजिए।

आप कोई भी इलाज करायें, कुछ बातें गांठ बांध लीजिए। वात रोगी के लिए, जीवन भर, कुछ खाद्य-पदार्थ वर्जित हैं। वह दूध और दूध से बना कोई भी पदार्थ नहीं ले, चाहे दही हो या पनीर हो या दूध-खोये की मिठाई। न किसी फल और फलों के जूस की इजाजत है। जो लोग गरिष्ठ पदार्थ खाते हैं, उन्हें छोड़कर वे सुपाच्य पदार्थ खा सकते हैं। बाजार की गन्दी चीजें न खायें, तली हुई दालें आदि भी न खायें।

वात रोगी रोटी, चावल, दाल, सोयाबीन, चना, सभी सब्जियां (टमाटर नहीं) खा सकते हैं। सब्जियों का सूप और सलाद ले सकते हैं। मोटे आटे की रोटी और दलिया सबसे अच्छा। लेकिन आप को पता होना चाहिए कि किस खाद्य पदार्थ से आपका कष्ट बढ़ता है। न पता हो तो एक चीज कुछ दिन के लिए छोड़ कर देखें। हो सकता है कि गेहूं की बनी रोटी की बजाय चावल खाकर देखिये। यदि किसी खाद्य-पदार्थ से पेट में गैस बनती हो तो उसे मत खाइये। यदि हो सके तो भोजन में अदरक और लहसुन की मात्रा बढ़ा दें। सुबह खाली पेट लहसुन का एक जवा चबाकर पानी पी लें। कुछ लोगों को इस प्रकार लहसुन खाने से बहुत लाभ हुआ है, लेकिन लहसुन से पाचन-क्रिया बिगड़ भी सकती है। इसलिए कुछ दिन खाकर देख लें।

वात रोगी अंकुरित अनाज खायें। वे सूखे मेवे भी खा सकते हैं, लेकिन तली हुई मूंगफली बिल्कुल नहीं। शुद्ध घी भी नहीं। मक्खन बहुत कम मात्रा में। वे भोजन में मसालों का प्रयोग कम से कम करें, लेकिन काली मिर्च हरगिज न लें। यदि रोग से शीघ्र मुक्ति पाना चाहते हैं तो धूम्रपान, शराब, शीतल पेय, चाय-काफी और चीनी भी बिल्कुल छोड़ दें।

चीनी न छोड़ सकें तो कम कर दें। सूजन और दर्द कम हो जाए तो आहिस्ता-आहिस्ता पैदल चलना चाहिए।

गुरुकुल प्रभात आश्रम

भोलाझाल (टीकरी) मेरठ

का वार्षिकोत्सव

मकर सौर सक्रान्ति के अवसर पर १४ जनवरी १९८७ बुधवार गुरुकुल भूमि में १५वां वार्षिकोत्सव स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में समारोहपूर्वक मनाया जायेगा।

अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्म लाभ उठायें।

इन्द्रराज
मन्त्री
गुरुकुल प्रभात आश्रम
(टीकरी)

देश की वर्तमान दुरवस्था और हमारी युवा शक्ति

—बिशन स्वरूप गोयल

★

(गताङ्क से आगे)

वैसे ता यदि हमारी सरकार चाहती तो स्वतन्त्रता के इन ३९ सालो के इतिहास मे प्रचार माध्यमों द्वारा हमारे देश और समाज के चरित्र को ऊंचा उठा सकती थी किन्तु उसने ऐसा जान बूझ कर नही किया। वह तो चाहती है कि इस देश के लोग चुपचाप जो सरकार कर रही है उसे करने दे और जब चुनाव आये तो पुन. उसी को झोला में अपने मत डालकर उसे सत्ता सौंप दे। दूसरी ओर इस देश का राष्ट्रवादी बहु-सख्यक हिन्दू समाज बलहीन व चरित्रहीन और भ्रष्ट कर उसका मनोबल तोड़ा जा रहा है। उसे विभिन्न समुदायो दलो, जातियो उपजातियो और सगठनों मे बाटा जा रहा है ताकि वह अपने देश की अखण्डता और एकता क लिए सग-ठित होकर प्रयास ही न कर सके। क्योकि सरकार यह जानती है कि इस देश का हिन्दू समाज हा इस देश को अपनी पुण्यभूमि, जन्मभूमि तथा पितृ-भूमि मानता है। वह ही इसकी अखण्डता और शान्ति के लिए चिन्तनशील रहता है। इसलिए उसे धर्मनिरपेक्षता की आड लकर बहुमत बजाये अल्पमत मे बदलने का सुनि-योजित षड्यन्त्र चल रहा है। आज हमारे पास प्रचार के इतने सुलभ और अच्छे साधन हैं कि यदि सर-कार चाहे तो समस्त देश के घरो मे रहने वाले लोगो मे देश प्रेम की भावना जगाना और चरित्र-निर्माण का कार्य बडी सरलता से हो सकता है। उसके लिए हमारे पास रेडियो जसा प्रचार माध्यम सब से उत्तम है क्योकि इस समय रेडियो हमारे देश के दुर्लभ और दूरस्थ स्थानो तक पहुच चुका है। वैसे तो टेलीविजन भी है किन्तु वह अभी सारे देश मे नही पहुंच पाया है।

रेडियो-आकाशवाणी

आज हमारे देश मे रेडियो गाव गाव मे पहुच गया है यहा नही देश के दुर्लभ और दूरस्थ स्थानो तक भी उसे वृद्ध तथा युवा, बालक एव स्त्रिया सभी सुनते हैं। हम सभी जानते हैं कि जब कभी देश पर युद्ध थोपा जाता है या अन्य इसी प्रकार का कोई संकट आता है तो हमारे आकाशवाणी केन्द्रों से विशुद्ध राष्ट्र-भक्ति से ओत-प्रोत गानों, नाटकों, कहानियों अथवा वार्ताओं का प्रसा-रण होता है। जैसे ही यह स्थिति समाप्त होती है और देश साधारण अवस्था में आ जाता है तो पुन: वही अश्लीलतापूर्ण कार्यक्रम आरम्भ कर दिये जाते है, जैसे "दिल तेरा दीवाना है सनम" आदि। यदि इस प्रकार के अश्लील गानो का बहि-ष्कार कर देशभक्ति और चरित्र-निर्माण सम्बन्धी गाने, नाटक, कहानी तथा हमारे प्राचीन इतिहास की गौरव गाथा तथा आजादी के लिए शहीद होने वाले अनेको लोगों के जीवन की झलक प्रस्तुत की जाये तो हमारे देश के लोगो विशेष कर हमारी युवा पीढी मे एक नये राष्ट्रीय जीवन का सचार हो जिस से राष्ट्र की एकता और अखण्डता की रक्षा करने के लिए प्रेरणा मिले। किन्तु ऐसा नही किया जा रहा। आज हमारे नवयुवको को जिन्होंने इति-हास नही पढा उन्हे देश के प्राचीन गौरवमय जीवन को जानकारी नही है। वह नही जानते कि आखिर चित्तौड मे ऐसी क्या बात थी जिस की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप को वहा के जगलों मे भटकना पडा और घास तक की रोटी खाने के लिए विवश होना पडा। जबकि वहा पर कोई बहुत सुन्दर नगर या सभी आराम की वस्तुएँ नही वहा तो केवल रेत के टीले ही देखने को मिलते है। किन्तु वहा उत्तम स्थान का प्रश्न नही था वहा केवल अपनी मातृभूमि की रक्षा और उसे आक्रां-ताओ की दासता से बचाने का था। यदि रेडियो के माध्यम से हमारे प्राचीन इतिहास की झलक या और देश तथा समाज-भक्ति के कार्यक्रमो का नियमित और अधिकतर प्रसा-रण हो तो कोई कारण नही कि देश की युवा पीढी मे जागृति न आये और वह एक जुट हो कर देश की अखण्डता और एकता के लिए सघर्ष करने को तैयार न हो। ऐसी स्थिति मे हमारे देश के चरित्र को बदलने मे बिलकुल समय नही लगेगा और सभी विघटनकारी, अलगाववादी, मतवादी तथा आतकवादी तत्त्व पूरी तरह से समाप्त हो जायेगे। किन्तु हमारा शासक वर्ग और राजनेता जानबूझ कर ऐसा नही करना चाहते। क्योकि ऐसा करने से उनकी कुर्सी खतरे मे पड जायेगी। जो लोग सत्ता या राजनीति में सक्रिय हैं उन्हें समाज या देश हित की चिन्ता नही अपितु इसके विपरीत वे अपनी कुर्सी के लिए देश के हितो को बलिदान करने से भी पीछे नही रहते। इस समय देश की राजनीति में जो सघर्ष है वह सत्ता का है न कि देश या समाज हित का। वास्तव मे देश की सत्ता जिस कांग्रेस के हाथ मे आई उसका गठन अंग्रेजो द्वारा अपने ही एक व्यक्ति लार्ड ह्यू म द्वारा कराया था। इसी कारण कांग्रेस पर आज तक अंग्रेजियत की छाप विद्यमान है और यही कारण है कि आज ३९ साल के बाद भी हमारे देश की अपनी भाषा हिन्दी को सविधान मे प्रावधान होते हुए भी राष्ट्रभाषा का स्थान नही मिल पाया है और देश मे आज भी अंग्रेजों के युग से भी अधिक अंग्रेजी का ही बोलबाला है। जहा तक महात्मा गान्धी और पण्डित नेहरू का प्रश्न है वह तो अब पूरी तरह स्पष्ट हो चुका है कि ये दोनो तो अंग्रेजों के एजेण्ट होने की ही भूमिका निभाते रहे। अंग्रेजो के के कहने पर ही देश का दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन हुआ जिसके कारण एक ही पूर्वजो की सन्तान होते हुए आज एक दूसरे के जानी शत्रु बन गये है। और दोनो ही दुखी हैं तथा दूसरे बडे राष्ट्रो के मुह देखने और उन पर निर्भर रहने के लिए विवश होते चले जा रहे हैं।

टेलीविजन-दूरदर्शन

वैसे तो अभी दूरदर्शन देश के सभी भागो या स्थानो पर नही पहुच पाया है किन्तु बुद्धि-जीवी वर्ग इसका प्रदर्शन अवश्य प्राप्त कर रहे हैं। यदि इसके माध्यम से भी देशभक्ति तथा एकता, अख-ण्डता आदि के विषय मे एव प्राचीन इतिहास और सस्कृति का प्रदर्शन हो तो उसका भी देश की एकता और अखण्डता के लिए बहुत बडा लाभ और योगदान प्राप्त हो सकता है। किन्तु इसके माध्यम से भी बड़े ही ऊलजलूल प्रोग्राम प्रस्तुत किये जाते हैं जिनके कारण देशप्रेम और देश भक्ति तो दूर रही और अन्य प्रकार की विषमताओं को जन्म दिया जाता है जिसके कारण युवा पीढी का चरित्र और अपराधी मनोवृत्ति बढ रही है। इसे भी समाप्त करने के लिए दूरदर्शन से देशभक्ति के गानो और फिल्मो का प्रदर्शन हो तथा हमारे प्राचीन इतिहास और सस्कृति का बोध कराया जाए तो कोई कारण नही कि देश की युवा शक्ति मे प्रेम की भावना न जागे। किन्तु सरकार तो इसकी बजाये देश की युवा शक्ति के चरित्र को गिराने के लिए इसके माध्यम से इसके विपरीत कार्यक्रम प्रस्तुत कराती है। वैसे जनता को गुमराह करने के लिए वह ढोल अवश्य ही एकता और अखण्डता की सुरक्षा का पीटती है। और नीति इसके विपरीत एकता और अखण्डता को तोड़ने की ही अपनाती रहती है। क्योकि हमारे जो देश के कर्णधार है उनमे स्वय देश एव समाज प्रेम का लेशमात्र भी अश नही है। वे तो केवल इस देश की सत्ता पर बने रहना चाहते है भले ही उसके लिए देश के हितो का ही बलिदान क्यो न करना पड।

सिनेमा और फिल्मो की भूमिका

आज जो हमे सिनेमाघरो मे फिल्मे दिखाई जाती है उनसे जहा युवाशक्ति मे सक्स के प्रति आकर्षण बढ रहा है वही दूसरी ओर इनसे अपराधी मनोवृत्ति भी, जैसे डाका डालने, बैंक लूटने, रेल लूटने, हत्याएँ करने, हवाई जहाजो का अपहरण करने तथा तस्करी जैसे अपराधो मे उनकी रुचि बढ रही है जो देश के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। ये सभी अपराध फिल्मो मे देख कर ही युवा-शक्ति करती है और इसमे निरन्तर वृद्धि हो रही है। इसके अतिरिक्त हमारी युवा पीढी में नशीले पदार्थों जैसे तम्बाकू खाना, चरस अफीम गाजा, स्मैक मदक आदि की बुरी आदतो को भी प्रोत्साहन मिल रहा है। इन सब के कारण अपराध भी बढ रहे हैं। यदि हमारे देश का फिल्मे चरित्र-निर्माण और हमारे प्राचीन इतिहास तथा सस्कृति के आधार पर बनायी जाय तो कोई कारण नही कि इन अपराधो को समाप्त न किया जा सके। इस प्रकार की सभी फिल्मो प्रतिबन्ध होना चाहिए जिनके कारण हमारी युवा पीढी का चरित्र हनन हो रहा है तथा अपराधी और नशा करने की मनोवृत्ति बढती जा रही है।

हमारे फिल्म निर्माताओ का भी देश और समाज के प्रति इस ओर एक बहुत बडा दायित्व है और उन्हे इसे निभाना चाहिए। उन्हें उसी

(शेष पृष्ठ ५ पर)

दूरदर्शन पर ईसाइयत का प्रचार स्वाधीनता के बलिदानी श्रद्धानन्द की उपेक्षा

जनता में रोष, स्वामी आनन्द बोध ने क्षुब्ध होकर पत्र लिखा

विषय : गत २५ दिसम्बर १६८६ को दूरदर्शन एव रेडियो पर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के विशाल जलूस की उपेक्षा किन्तु क्रिसमस के अवसर पर हुए विदेशो और देश भर के समारोहों का विस्तृत प्रचार।
इस अन्यायपूर्ण विभेद की जांच की मांग।

महोदय,

२५ दिसम्बर, १६८६ को दिल्ली मे लगभग ८ किलोमीटर लम्बे मार्ग में राष्ट्रीय स्वाधीनता के अग्रणी नेता स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस समारोह का विशाल जलूस निकाला गया था। यह जलूस पुरानी दिल्ली के प्रमुख बाजारों से होता हुआ लालकिले पर विशाल सार्वजनिक सभा मे परिवर्तित हुआ था।

दिल्ली को महात्मा गाधी श्रद्धानन्द की दिल्ली कहा करते थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने ही दिल्ली की ऐतिहासिक जामा मस्जिद से हिन्दू-मुस्लिम इत्तहाद का नारा लगाया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने ही चादनी चौक में गोरों की सगीनों के आगे छाती खोलकर गोली चलाने के लिए ललकारा था। स्वामी श्रद्धानन्द जो मोतीलाल नेहरू के सहपाठी थे, ने ही, जलियांवाला बाग के हत्याकाण्ड के बाद अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक बुलाई थी, जिसके अध्यक्ष श्री मोतीलाल और स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे। श्रद्धानन्द एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने इस देश की जनता को आजादी के लिए प्रेरित किया और जनमानस में राष्ट्रीय संस्कृति व सभ्यता का दृढतापूर्वक प्रचार किया था। वह किसी धर्म, सप्रदाय विशेष के न होकर सारे भारत के एक माननीय नेता और सन्त थे।

मुझे अत्यधिक खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि २५ दिसबर को दिल्ली मे निकाले गए उक्त विशाल जलूस का कोई समाचार दिल्ली दूरदर्शन के राष्ट्रीय कार्यक्रम ८-४० बजे के अन्तर्गत प्रसारित नही हुआ, जबकि ईसाइयों के देश-विदेश के अनेक चर्चों में प्रार्थना सभाओं के विस्तृत दृश्य और समाचार दिए गए थे। क्रिसमस के ग्रीटिंग कार्डों की दुकानें, बाजारों की सजावट के दृश्य लगभग एक सप्ताह तक प्रसारित होते रहे। ईसा मसीह के जीवन पर वृत्तचित्र भी दिखाया गया था।

दिल्ली के निजामुद्दीन चिश्ती के उर्स का कार्यक्रम, भाषण व कव्वालियों का भी प्रसारण विस्तार से किया गया था।

मुझे दुःख है कि राष्ट्रीय स्वाधीनता के अग्रिम पंक्ति के नेता स्वामी श्रद्धानन्द का २५ दिसम्बर के समाचार बुलेटिनों में कही नाम तक नहीं लिया गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि दूरदर्शन और आकाशवाणी में कुछ ऐसे कर्मचारी कार्यरत हैं, जो किसी सम्प्रदाय विशेष के साथ अधिक सहानुभूति रखते हैं और उन्हें भारतीय संस्कृति, दर्शन और इसके महापुरुषों के विषय में कोई ज्ञान ही नही है अथवा वे जानबूझकर इस की अवहेलना करते हैं।

देश भर से मेरे पास शिकायतें आ रही हैं। मेरा निवेदन है कि सरकार इसकी खुली जांच कराकर वस्तुस्थिति से देश के बहुमत में फैल रहे असन्तोष को दूर करे।

कृपया उत्तर देकर अनुगृहीत करें।

शुभचिन्तक
स्वामी आनन्द बोध सरस्वती
प्रधान

सेवा मे,
श्री अजीत पजा
सूचना एव प्रसारण मत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

धार्मिक भावनाओं...

(पृष्ठ १ का शेष)

विद्वान् और नेता थाने गये और पुलिस अधिकारी से मिले और उन्हें कहा कि सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को उठाने का उनको किसने आदेश दिया था? बिना सरकारी अनुमति के इस प्रकार से उन का यह कार्य धार्मिक भावनाओं को चोट पहुचाता है। अन्त मे रात को १० बजे पुलिस ने सब पुस्तकें जहा से ले गए थे, वहीं रख दी। यह सब काण्ड इसलिए हुआ कि उस दिन मस्जिद से एक मुल्ला ने उत्तेजक भाषण दिया था, किन्तु मुझे अफसोस है कि पुलिस अधिकारी उसके भडकाने में आ गये और उन्होंने सरकारी मान-मर्यादा तथा अनुशासन को तो उल्लघन किया ही किन्तु धार्मिक पवित्रता को भी भग किया है।

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द ने आज से १०६ वर्ष पूव यह ग्रन्थ लिखा था। यह ग्रथ संसार की लगभग २०-२२ भाषाओं में छप कर करोड़ों की संख्या में जनता तक पहुच चुका है। १६४६ में जब सिन्ध में मुस्लिम लीगी सरकार स्थापित हुई तो प्रधानमन्त्री सर गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला ने ११ अगस्त, १६४६ में यह घोषणा कर दी कि सत्यार्थ प्रकाश के १४वें समुल्लास का अरबी, सिन्धी, उर्दू, अग्रेजी और फारसी में वहां वितरण व प्रकाशन अपराध माना जायेगा।

इस प्रतिबन्ध की घोषणा के समाचार से सारे आर्य जगत् में व्यापक रोष पैदा हो गया और सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री नारायण स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश पर पाबन्दी के विरोध में सिन्ध में सत्याग्रह का ऐलान कर दिया। इस सत्याग्रह में आर्यसमाजी नेताओं के अतिरिक्त राष्ट्रवादी हिन्दू संगठनों ने भी पूरा समर्थन दिया और अन्तत: सिन्ध सरकार ने सत्यार्थप्रकाश पर पाबन्दी का आदेश वापस लिया था।

इस सम्बन्ध में मेरा निवेदन है कि—

१. पश्चिम बगाल के मुख्यमत्री ज्योतिबसु इस घटना पर खेद प्रकट करें कि उनको पुलिस ने गलती की है।

१. जिन पुलिस कर्मचारियों और अधिकारियों ने मुल्ला के भाषण से उत्तेजित होकर सरकारी अनुशासन और अपने कर्त्तव्य का पालन नही किया उन्हें कठोर दण्ड दिया जाए।

३. इस मामले की जांच कराई जाए और जो तत्व बंगाल में सांप्रदायिक मुस्लिम कठमुल्लावाद का विद्वेष फैलाने की चेष्टा कर रहे हैं, उनके विरुद्ध कडी कारवाई की जाए। इसी प्रकार का जहर हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) में भी पैदा किया जा रहा है।

यदि समय रहते इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और साम्प्रदायिक सद्भाव को गहरा आघात लगेगा।

कृपया यथोचित कार्रवाई कर अनुगृहीत करें।

भवदीय
स्वामी आनन्द बोध सरस्वती
प्रधान

मेरठ में शताब्दी समारोह कैसा ?

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० से निष्कासित कुछ तत्त्वों ने स्वयंभू पदाधिकारी बनकर मेरठ में २७ व २८ दिसम्बर, १६८६ को आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम से एक शताब्दी समारोह करने का ढोंग रचाया। बडे जोर-शोर से प्रचार किया, हजारों व्यक्तियों के बैठने के लिए पण्डाल बनाया, लाउड स्पीकर एवं बिजुली आदि की भरपूर व्यवस्था की, हजारों रुपया अपव्यय किया परन्तु उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यजनों ने इन तत्त्वों को पूरी तरह ठुकरा दिया। इस तथाकथित प्रदेशीय सम्मेलन में मात्र ३०-४० व्यक्ति रजाई व कम्बलों में बैठे ठिठुरते रहे। विशाल मंच बनाया गया परन्तु उस पर बैठने वाला कोई नहीं था। मात्र १-२ भजनोपदेशक खाली पड़ी कुर्सियों को अपना अन्तर्नाद सुनाते रहे। इन तत्त्वों से

(शेष पृष्ठ ५ पर)

देश की वर्तमान दुरवस्था और हमारी युवा शक्ति

(पृष्ठ ३ का शेष)

प्रकार की फिल्मों का निर्माण करना चाहिए जो देशभक्तिपूर्ण हों तथा सामाजिक हों। यह एक अलग बात है कि प्रारम्भ में उन्हें इस व्यवसाय में अधिक सफलता न मिले किन्तु अन्त में लोगों की रुचि इस ओर स्वतः ही बढ़ जायेगी। जिस प्रकार आजकल लोग नयी फिल्मों के स्थान पर पुरानी फिल्में देखना भी पसंद करने लगे हैं। हमारे फिल्म-निर्माता अधिक व्यावसायिक न होकर देश और समाज के प्रति अपना दायित्व समझते हुए इस प्रकार की अश्लील तथा अपराध पूर्ण फिल्मों का निर्माण न करते तो लोगों की रुचि इस ओर बढ़ती ही नहीं और देश की युवाशक्ति पथभ्रष्ट न होती। फिल्म निर्माताओं को भी देश की एकता, अखण्डता और युवा शक्ति के चरित्र निर्माण के लिए उपयोगी फिल्में बनाकर पूरी तरह योगदान देना चाहिये। किन्तु वे भी अपने व्यवसाय के लिए ऐसा नहीं कर रहे हैं जो उन्हें करना चाहिये।

अश्लील साहित्य की बिक्री तथा प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगाया जाये—

आज देश में अश्लील साहित्य और जासूसी उपन्यासों की इतनी भरमार है कि जिसे हमारी युवा पीढ़ी बड़े शौक और लगन से पढ़ती है। इस साहित्य द्वारा और जासूसी उपन्यासों द्वारा जहा सैक्सुअल वृत्ति बढ़ती है, वही जासूसी उपन्यासों द्वारा भी अपराध वृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। आज स्थान-स्थान पर पटरियो पर हम सभी को अश्लील साहित्य और जासूसी उपन्यासो के ढेर के ढेर दिखाई पड़ते हैं। कई बार सरकार को इस संबंध में कई सासदों और राजनेताओं ने भी लिखा है और आये दिन समाचारपत्रों में इसके विरुद्ध छपता है किन्तु सरकार के कानों पर जूं तक नही रेंगती। इस अश्लील साहित्य में महिलाओं के नग्न चित्र तथा विभिन्न प्रकार से भोग करने की विधियों के नग्न चित्रों का वर्णन होता है। इसके लिए कई बार नारी कल्याण समितियों ने आन्दोलन करने तक की धमकी भी दी है किंतु परिणाम वही "ढाक के तीन पात" रहा है। जितना भी अश्लील साहित्य और जासूसी उपन्यास हैं, उन्हें हमारी युवा शक्ति ही अधिक पढ़ती है। जिसके कारण उनके चरित्र का ह्रास हो रहा है और सरकार का ध्यान आकृष्ट करने पर वही कहावत चरितार्थ होती है—"पंचों की बात सिर माथे मगर परनाला वही गिरेगा।" इसलिए देश में अश्लील साहित्य और अपराधी वृत्ति को बढ़ावा देने वाले जासूसी उपन्यासों के प्रकाशन और बिक्री पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। जो साहित्य प्रकाशित हो चुका है उसे सरकार जब्त कर उसमें आग लगा दे किन्तु सरकार जैसा कि ऊपर कई बार कहा जा चुका है, यह सब कुछ करना ही नही चाहती। वह तो युवा शक्ति को भ्रष्ट करने पर तुली हुई है।

समाचारपत्रों की भूमिका

हमारे देश में बहुत बड़ी सख्या में मासिक से लगाकर दैनिक तक बहुत समाचार पत्र निकलते हैं, जिन में से बहुत से इतनी अश्लीलता से परिपूर्ण होते हैं कि उन पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। शेष सभी समाचारपत्रों को अपने लेखो व समाचारों द्वारा प्रकाशन की सामग्री पर विशेष ध्यान रखकर ही जिससे देश के चरित्र का हनन न हो या अपराधी वृत्ति को बढ़ावा न मिले प्रकाशित करने चाहिए। किन्तु सरकार उन पर भी अपना शिकजा कसती जा रही है और उन्हें इसके लिए बाध्य किया जाता है कि वे जो सरकार चाहती है या उस की नीतिया हैं उनका ही प्रचार किया जाये। जो कुछ गिने चुने पत्र ऐसे हैं कि निष्पक्ष हैं उन पर सरकार मुकद्दमे तो चलाती ही है साथ ही उनका कोटा बन्द कर देती है। विज्ञापन बन्द कर देती है और तरह तरह की कठिनाइया पैदा करती है। शायद ही कोई समाचार ऐसा हो जिस पर केस न चल रहा हो अन्यथा सभी पर केस चलाये जाते हैं। सरकार को चाहिए कि समाचारपत्रों तथा अन्य सभी प्रचार माध्यमों को स्वतन्त्र रूप से पक्ष प्रस्तुत करने दे ताकि जनता और सरकार के सामने देश का सही चित्र प्रस्तुत हो सके। किन्तु क्योंकि सरकार स्वयम् इस मामले में ईमानदार नहीं है इस कारण ऐसा नहो हो पा रहा है।

हमारे देश की सरकार की कथनी और करनी में पृथ्वी और आकाश का अन्तर है। वह कहती कुछ है और करती कुछ है। राजनेता बड़े-बड़े भाषण देकर देश की एकता की बात करते हैं किन्तु करनी में जो नीतिया अपनायी जाती हैं वे सभी देश की एकता को तोड़ने की बनाई जाती हैं। अंग्रेजों ने तो हमें केवल दो वर्गों हिन्दू और मुसलमान में ही बांटा था किन्तु इन अपनों ने तो हिन्दू को हिन्दू से, मुसलमान को मुसलमान से, ईसाई को ईसाई से, और हिन्दुओं से बोद्ध, जैन, हरिजन, अनुसूचित, जनजाति आदि सभी को कुछ न कुछ अलग सुविधाएँ देकर हिन्दुओं से अलग कर उन्हें अल्पमत में बदलने का एक घिनौना षड्यन्त्र चलाया जा रहा है जिससे इस देश का हिन्दू जो सदा ही इस की रक्षा के लिए सघर्षरत रहा है वह इस योग्य न रह पाये और उसे बलहीन कर दिया जाये। इसका परिणाम यह होगा कि शीघ्र ही यह देश विश्व के मानचित्र से सदा के लिए लुप्त हो जाएगा और टुकड़ों में बट कर रह जाएगा।

यहा एक बात बड़ी हास्यास्पद है कि हमारे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी अपने देश को तो सभाल नही पा रहे हैं किन्तु वे गुटनिरपेक्ष आन्दोलन, गोरे-काले के फैसले के लिए विदेशों में भागे फिर रहे हैं। भला जो व्यक्ति अपने देश की समस्या हल नही कर सकता वह दूसरे देशों की समस्या का हल क्या करेगा। यही स्थिति इन के नाना पण्डित नेहरू जी की थी जो एक ओर चीन के साथ पचशील का नारा लगा रहे थे और दूसरी ओर चीन हम पर आक्रमण कर हमारी भूमि पर कब्जा कर रहा था।

मैं अन्त में अपने देश की युवा शक्ति का आह्वान करता हू कि अभी भी समय है जब हमारी युवा शक्ति इस देश को अखण्डता, एकता और शान्ति को बनाये रखने के लिए बहुत कुछ कर सकती है। हमें यह आजादी ऐसे ही गांधी जैसे अंग्रेजों के एजेण्ट के प्रयास से नही मिली। हमारी इस आजादी के पीछे हमारे देश के शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर, ऊधमसिंह, अशफाक उल्लाह जैसे अनेकों नवयुवकों के बलिदान की कहानी है। जिन में हजारों के नाम तो आज हम जानते भी नहीं हैं, जिनको आज कोई नही जानता और उन्होंने देश की आजादी के लिए गुप्त बलिदान दिया है। आज पुन. समय आ गया है, आज हमारा देश गुलामी की लानत से भी बुरी अवस्था में स्वतन्त्र होते हुए पहुंच गया है। इसलिए स्वतन्त्रता के नाम पर जो यह गुलामी है इस से देश को छुटकारा दिलाने के लिए हमारी युवा शक्ति अब सभी बातों को छोड़कर अपने पहले शहीदों की भांति इस देश के लिए बलिदान देने और देश में एक नयी हिन्दुस्तानी क्रान्ति लाने के लिए आगे आये, ताकि देश की एकता, अखण्डता, हमारी प्राचीन संस्कृति, मानबिन्दु आदि सभी की रक्षा हो सके और देश पुनः अपने गौरवशाली अतीत की ओर अग्रसर हो सके। हमारी सरकार का भी दायित्व है कि वह भी अपने प्रचार माध्यमो द्वारा देश की युवा पीढ़ी के चरित्र-निर्माण और देशभक्ति के लिए कार्यक्रम अपनाये ताकि देश अपने पुराने अस्तित्व को पुन प्राप्त कर विश्व-गुरु की पदवी प्राप्त कर सके।

मेरठ में समारोह

(पृष्ठ ४ का शेष)

आर्यसमाज के अन्दर आन्तरिक कलह की चीख पुकार की परन्तु इनको सुनने वाला कोई नहीं था। लेकिन इनकी गतिविधियों से आर्यसमाज की छवि अवश्य धूमिल हुई।

नगर की जनता इन ढोंगियों के आयोजन पर हसती-मुस्कुराती और टीका-टिप्पणी करती हुई अवश्य उस ओर से गुजर रही थी।

नगर में शोभा-यात्रा का भी ढोंग रचाया गया जिस में २ बैंड, १ बग्घी, ४-५ संन्यासी एवम् १०-१२ ग्रामीण नागरिक थे।

इस कार्यक्रम से आर्यसमाज को कोई लाभ हुआ हो या नहीं परन्तु इन तत्त्वों की जेबें अवश्य भर गई।

आर्यजनों के मस्तिष्क में कुछ चिन्ता के बादल भी उभरे हैं कि क्या हमारा सगठन इतना कमजोर हो गया है कि हम अपने संगठन के नाम पर किन्हीं भी असामाजिक तत्त्वों को मनमानी करने से नहीं रोक सकते।

कुछ स्थानीय समाचार पत्रों ने इनको वास्तविकता के विपरीत इस प्रकार से अपने समाचारों का पात्र बनाया जैसे इन्होंने कोई बहुत बड़ा कारनामा किया हो। इसके पीछे आर्यसमाज के सगठन को बदनाम करना अथवा पैसा भी कारण हो सकता है। आर्य जनता को इस भ्रामक प्रचार से सतर्क रहना चाहिए।

स्वराज्य चन्द्र
संपादक
मासिक सुमेधा
आर्यसमाज, मेरठ शहर

राष्ट्र-पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द

लेखक—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

भारत भूमि ऋषि मुनियों, विद्वानों और महापुरुषों की जन्म भूमि रही है। इसी भारत में बड़े-बड़े धर्माचार्य, सन्त और महात्मा पैदा हुए जिन्होंने समय-समय पर मानव जाति को आध्यात्मिक ज्ञान सरोवर में स्नान कराया। जो लोग सत्य व्रत के ग्रहण करने के अधिकारी हैं और प्राण देकर भी उसके पालन करने की शक्ति रखते हैं, यदि ऐसे महापुरुष समय-समय पर अवतरित होते रहें तो किसी भी देश अथवा जाति की दुर्गति नहीं हो सकती है। ऐसे ही महापुरुषों में स्वामी श्रद्धानन्द भी अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म आज से १३० वर्ष पूर्व सवत् १९१३ में जालन्धर में हुआ था। इनका बचपन का नाम मुंशीराम था। जीवन के अनगिनत उतार-चढ़ावों को पार करते हुए मुंशीराम जी सन् १८७९ में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द के एक सत्संग में बरेली में सम्मिलित हुए तो उसके बाद वह जीवन पर्यन्त उनके शिष्य हो गए और उन की शिक्षाओं के अनुसार मानव जाति के कल्याण में जुट गए।

जिन्होंने अपना सब कुछ देकर कल्याण व्रत ग्रहण किया है, अपमान और अपमृत्यु ने उनके ललाट पर जय तिलक की तरह अपना स्थान जमाया है। महापुरुष आते हैं और प्राण को मृत्यु के ऊपर जय करने के लिए सत्य का जीवन का सामग्री बनाते हैं और अपने प्राणों की आहुति देकर भी उस सत्य को सब मनुष्यों के लिए उपयोगी बना देते हैं। इस शक्ति का सम्पदा को जो समाज को अर्पित करते हैं, उन्हीं के दान का महामूल्य है। सत्य के प्रति उसी निष्ठा का आदर्श स्वामी श्रद्धानन्द देश और समाज को दे गए हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द एक वीर युग-पुरुष थे। उनका पूरा जीवन एक खुली पुस्तक है। उनके जीवन के घटनाक्रम पढ़कर किसी के लिए यह कहना बड़ा कठिन हो जाता है कि मुंशीराम जी स्वामी श्रद्धानन्द कैसे बन गए? स्वामी श्रद्धानन्द का आगमन ऐसे समय में हुआ था जब देश स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर रहा था। जगह-जगह भारतवासियों को विदेशी सरकार द्वारा अपमान और विपत्तियों का सामना करना पड़ रहा था। स्वामी श्रद्धानन्द ने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और आजादी के लिए भारतीयों में जन-जागृति पैदा की। अपनी संस्कृति और सांस्कृतिक परम्पराओं को जीवित रखने के लिए उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का प्रचार ही नहीं किया अपितु उत्तर भारत में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की जो आज शैक्षणिक जगत् में अपना विशिष्ट स्थान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के रूप में बना चुका है।

गुरु का बाग में जब सिखों ने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध आंदोलन किया था तो स्वामी श्रद्धानन्द पहले जत्थे में सम्मिलित होकर जेल गए। इस से आज भी यह सिद्ध होता है कि हिन्दू-सिख एकता और भाईचारे की नींव बहुत गहरी थी। स्वामी जी राष्ट्रीय एकता के पुजारी थे। उनकी दृष्टि में हिन्दू, सिख, मुसलमान और ईसाई सब एक ही परमात्मा की सन्तान थे, इसलिए मजहब और सम्प्रदाय के नाम पर नफरत पैदा करने वाले उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सके और इसी राष्ट्रीय एकता विरोधी भावना की नफरत ने स्वामी श्रद्धानन्द को अमर हुतात्मा बना दिया।

जलियांवाला बाग में जनरल डायर ने जब गोली काण्ड से निहत्थे लोगों की निर्मम हत्याएँ कीं तो इस के विरुद्ध सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द ने ही आवाज उठाई और अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में बुलाया जिसके अध्यक्ष प० मोतीलाल नेहरू और स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे। स्वामी जी ने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में देकर अंग्रेजी राज्य में हिन्दी को राष्ट्र भाषा का सम्मान दिया।

दिल्ली की ऐतिहासिक जामा मस्जिद के मेम्बर पर खड़े होकर देशवासियों को साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता और अखंडता का सन्देश देने वाले वह पहले गैर-मुस्लिम व्यक्ति थे। इससे उनकी इस भावना का पता चलता है कि वह सम्प्रदाय और धर्म की दलदल से बाहर निकालकर सभी सम्प्रदायों के लोगों में भारतीयता की भावना को बल देना चाहते थे।

अंग्रेजी सरकार ने जब चांदनी चौक में कांग्रेस के जलूस पर संगीनें तान ली और सैनिकों को गोली चलाने का आदेश हो गया तो स्वामी श्रद्धानन्द जैसा बहादुर देशभक्त आगे आकर खड़ा हो गया और सैनिकों को अपनी छाती के बटन खोलते हुए ललकारा—चलाओ, पहले गोली मेरी छाती पर। अंग्रेज सैनिकों की संगीनें झुक गईं और उन्हें एक सन्यासी के वेश में अलौकिक शक्तिमान भारत के दर्शन हुए।

कांग्रेस के अधिवेशन में जब मौलाना मुहम्मद अली ने भारत के ७५० करोड़ हरिजनों को हिन्दू-मुसलमानों में आधा-आधा बांटने का प्रस्ताव किया तो देश के हिन्दू समाज में बड़ी हलचल पैदा हो गई। कांग्रेस की तुष्टीकरण की नीति के विरोध में स्वामी श्रद्धानन्द, महामना मदनमोहन मालवीय और लाला लाजपतराय ने कांग्रेस छोड़ दी और स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि का कार्य हाथ में लेकर लाखों मलकाने राजपूतों को वैदिक धर्म में प्रवेश कराया। उनके इस कार्य से अप्रसन्न होकर एक धर्मान्ध मुस्लिम अब्दुल रशीद ने २३ दिसम्बर १९२६ को दिल्ली के श्रद्धानन्द भवन में

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आवश्यकता है

आर्यसमाज शालीमार बाग, बी० एन० पूर्वी, दिल्ली-५२ के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। वानप्रस्थी को प्राथमिकता दी जायेगी। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। रविवार १८।१।१९८७ को आर्यसमाज मन्दिर में २ बजे से ५ बजे के बीच सम्पर्क करें।

स्वामी श्रद्धानन्द…

(पृष्ठ ६ का शेष)

उन्हें गोली मार कर शहीद बना दिया। किन्तु वह अमर पुरुष अपनी साधना को सजीव कर गया। राष्ट्र को आज ऐसे ही महापुरुषों की आवश्यकता है जो भारत की आत्मा मे नई जागृति पैदा कर सके। उन के बलिदान दिवस पर सारा राष्ट्र उन्हें भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करता है।

उठो आर्य वीरो, सुबह हो गई है !

नव स्फूर्ति की रत्न निधि को लुटाते
सदेशा प्रभातागमन का सुनाते,
विहग गा रहे हैं तुम्हें ही जगाते
सजग सर्वत गन्धवह हो गई है।

सुनो क्या मधुप मन्त्र-सा गा रहा है
कमल क्यों तुहिन-बिन्दु बरसा रहा है
जगो, जागने का समय आ रहा है
कहानी कपट की अ-कह हो गई है।

अनाचार मन में मनुज के बसा है
विषय-पक मे कठ तक वह फसा है
उडा व्योम मे या धरा मे धसा है
प्रगति की प्रलय से सुलह हो गई है।

छिपा स्वार्थ-दानव लिये तीर भाले
चले बम अगर देश को तोड डाले
वतन आर्य वीरो, तुम्हारे हवाले
विचारो घुटन किस वजह हो गई है।

दयानन्द के साहसी तुम सिपाही
कहा जी सकोगे पिये विष बिना ही
है इतिहास देना यही तो गवाही
संभालो, दशा अब असह हो गई है।

जिये सौ बरस संगठन यह तुम्हारा
मिले राष्ट्र के पोत को फिर किनारा
चले साथ मिल कर मिले भाव-धारा
मिटे मून न यदि कलह हो गई है।

अतुल आत्म-बल से भरे तुम युवा हो
दवा दर्द की, दुःख-नाशक दुआ हो
करो कुछ अजब जो न अब तक हुआ हो
मिलोगे तो समझो, फतह हो गई है।

अनृक्षरा ऋजव. सन्तु पन्थ.।
दीर्घं न आयुः सविता कृणोतु॥

धुआं धुआ सा आसमा, बुझी बुझी सी है जमी
अभी तो आदमी को आदमी भी दीखता नही
उषा की लालिमा कहाँ ? निशा का अन्धकार है
छिपा हुआ है सूर्य बादलो की ओट मे कही,
प्रकाश को बचाए मृत्यु से कोई, पुकार है
अभी तो अन्धकार है…

नही हैं वे जो रक्त से हर एक गुल निखार दे
बहुत हैं वह विलास में जो हर कली उजाड दे
दिया था रक्त जिसको श्रद्धानन्द लेखराम ने
कहाँ है वह ? जो इस चमन पे जान अपनी वार दे
है किस मे वेद-भक्ति महर्षि से किस को प्यार है ?
अभी तो अन्धकार है…

मचल उठे यदि प्रकाश, तो तिमिर समाप्त हो
कहाँ यह बदलियाँ रहें, कहाँ ये काली रात हो ?
कठिन तो कुछ नही है मित्र बात धारणा की है
कोई किरण मचल उठे, तो आज ही प्रभात हो
अभी तो अन्धकार है…

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ अंक १२ | रविवार १८ जनवरी, १९८७ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०८८ | पौष २०४३ | दयानन्दाब्द १६२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

बरनाला सरकार नकारा साबित

केन्द्र के हस्तक्षेप का समय आ गया है

सम्पूर्ण भारत समस्याओं की आग मे सुलग रहा है पजाब से लेकर त्रिपुरा तक, कश्मीर मे तमिलनाडु तक तथा बगाल से गोआ तक। सीमाप्रान्त पजाब से आती चीख पुकार और खून के छीटे हर देशवासी को झकझोर जाते हैं। सरकार कह रही है हम कठोर कदम उठायेगे। (पता नही कब ?) विरोधी पक्ष के खण्डहरो मे आवाज आ रही है बन्दूक का जवाब बन्दूक से दिया जाये। पंजाब मे गत पाच वर्षो से निर्दोष लोगो की हत्याएं हो रही हैं। सरकार और आतकवादियों के बीच लगातार सघर्ष चल रहा है। निर्दोष बेगुनाह आतकवाद की बलि चढ़ रहे हैं। श्री राजीव गांधी और सन्त लौंगोवाल के बीच जो समझौता हुआ था उसका लक्ष्य यही था कि पजाब में शान्ति स्थापित हो, निर्दोषों की हत्याएँ रुकें और आतकवाद पर नियन्त्रण किया जा सके। पंजाब मे चुनाव हुए और सुरजीतसिह बरनाला के हाथ पजाब का भाग्य सौप दिया गया। मगर केन्द्रीय सरकार की भरपूर सहायता के बाद भी बरनाला सरकार आतकवाद पर काबू तो क्या पाती, स्थिति दिनोंदिन बिगडती ही जा रही है। आज प्रश्न उठ रहा है कि पजाब की राजनीति में कोई परिवर्तन किया जावे। लोग स्पष्ट रूप से एक दूसरे से सवाल करते हैं, कब तक प्रधानमन्त्री नकारा सरकार को टिकाये रखकर आशा करते रहेंगे स्थिति सुधरने की। अखबारमे मरने वालो की संख्या को क्रिकेट के स्कोर की तरह से देखने की प्रवृत्ति कब तक चलेगी ? केन्द्र के हस्तक्षप की स्थिति कब आयेगी ? जब पानी बिलकुल सिर से ऊपर गुजर जायेगा ? जब आतकवाद का तूफान देश की एकता की सुदृढ दीवार में दरार डाल चुका होगा ? आखिर कब ?

पजाब समस्या में दो पक्ष उभरे हैं–खालिस्तान समर्थक उन्हें आतकवादी कह लीजिये और दूसरे केन्द्र सरकार। जहां तक अकाली दल के दोनो धडो का प्रश्न है, वे सभी किसी भी रूप में पहला, दूसरा या तीसरा पक्ष नही हैं। वे वास्तव मे अप्रासगिक हैं क्योंकि उनमे से कोई भी धडा खालिस्तान समर्थकों का प्रतिनिधित्व नही करता है। न ही उग्र पन्थियो की ओर से केन्द्र से बात करने का दावा करता है। जो पजाब मे हिंसात्मक गतिविधियों मे सलग्न है और यह दृढ विश्वास रखते हैं कि मारधाड से ही खालिस्तान का सपना पूरा हो सकता है। बस समस्या की जड ये उग्रवादी लोग हैं। जो हर समझौते और हर व्यवस्था की सदा से धज्जियां उडाते रहे हैं। दोनो ही अकालो धडे माग करते है—राजीव गाधी और लौगोवाल समझौते को तुरन्त लागू किया जाये। इधर श्री बरनाला ने कहा है अगर पजाब समझौता लागू न किया गया तो उन्होंने आन्दोलन जैसे सख्त कदम उठाने की केन्द्र को चेतावनी दी है। परन्तु यह दावा कोई भी करने को तैयार नहीं है और न विश्वास ही दिलाने को तैयार है कि समझौता लागू करने पर हिसा मारकाट रुक जायेगी और उग्रवादियो की बन्दूकें बम जायेगी।

जाहिर है ऐसी स्थिति मे ये दोनो अकाली धडे पजाब समस्या मे कोई पक्ष नही है। यह अलग बात है कि कुछ नेताओं की सहानुभूति उग्रवादियों के साथ है और कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जिनको गुपचुप उन से साठ गाठ हो। अब स्पष्ट हो गया कि समस्या के अखाडे में दो पक्ष रह गये केन्द्र और उग्रपन्थी। इन उग्रपन्थियो मे कैसे निपटा जाये इस पर कई तरह के विचार है लोगो के। कुछ का कहना है कि उग्रपन्थियो से केन्द्र को बात करने मे कोई हर्ज नही है। हो सकता है कोई हल भी निकल आये। कुछ सम्भावनाएं शान्ति की निकल सकती है। वार्ता की मेज तक उन्हे बुलाना उचित है ऐसा कुछ विचारको का मानना है। इस मान्यता के मानने वालो का कहना है वे बागी विद्रोही भले को भारत का नागरिक कहने को भले ही तैयार न हो पर है तो इसी भारत की मिट्टी के पुतले ही। उन्हे समझा बुझाकर साम दाम आदि येन केन प्रकारेण शान्त किया जाना चाहिए और इस प्रकार मुख्य धारा मे ही शामिल किया जाना चाहिए।

कुछ चिन्तक मानते हैं कि उग्रपन्थियो के सूत्रधारो से सख्ती से पेश आना चाहिए। विदेशो मे बैठे उनके तार हिलाने वालो को कब्जे में करना चाहिए। कुछ सुझाव ये भी है कि पाकिस्तान से लगी हुई भारत सीमा पर सुरक्षा पट्टियो का निर्माण शीघ्र कर आतकवादियो की घुसपैठ पर नियन्त्रण कर सख्ती से आतङ्कवादियो के दात तोडने का काम शुरू कर देना चाहिए। पजाब की आतकवादी समस्या मे पजाब पुलिस का भारी कमजोरी भी अहम कारण है। खूखार आतक वादी रोशन लाल वैरागी और मनजीत सिह भिण्डो का पुलिस हिरासत से भाग जाना इस बात का भारी सबूत है कि पजाब का पुलिस तन्त्र बिल्कुल लुञ्ज पुञ्ज हो गया है। सी० आर० पी० की भूमिका फिर भी कुछ न कुछ विश्वास जगाती है। ऐसी स्थिति मे पर्यवेक्षकों का कहना है कि पजाब पुलिस को आस पास के प्रदेशों मे स्थानान्तरित कर देना चाहिए तथा आ... को कम महत्व के ड्यूटियां आदि के कार्यों मे लगा देना चाहिए। उनके स्थान पर बाहर की पुलिस तथा सीमा सुरक्षा बलों का प्रयोग करना आवश्यक हो गया है। उग्रवादियो के हौसलो को तोडने के लिए भारी कदम सरकार को उठाना पडेगा ही।

कुछ राजनतिक और गैर राजनैतिक सस्थाओ ने पजाब सरकार को बरखास्त करने की माग भी की है परन्तु नक्कारखाने मे तूती की आवाज की तरह उनकी आवाज पर ध्यान नही दिया जा रहा। धार्मिक स्थलों पर उग्रवादी सगठन फिर जुडने लगे है। गुरुद्वारे के माइक से पुलिस को ललकारना तथा मुखबिरो और गवाहो को चुनचुन कर मारना उग्रवादियो के बढ़ते हौसले का परिचायक है।

ऐसी स्थिति मे केन्द्र को और स्थिति बिगड़ने फिर हस्तक्षेप करें की बाट न जोह कर बरनाला को और मौका नही देना चाहिए। अब हस्तक्षेप करना ही होगा। केन्द्र सरकार को सचेत हो जाना चाहिए।

—सुधांशु

इस अक मे

सत्सग वाटिका	२
अंग्रेजी की दासता से मुक्त हों	३
मनीषी का अभिनन्दन	३
ईसाइयो के काले कारनामे	४
समाचार	६

तथा अन्य रोचक, ज्ञानवर्धक पठनीय सामग्री।

प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल   व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल   सम्पादक—प० यशपाल सुधांशु एम०...

वेद मनन

— महात्मा दयानन्द —

ओं वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम ।
स नो विश्वानि हवनानि जोषद् विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ॥
२।१७।२३

वाजे ऊतये अद्या हुवेम, वाचः पतिं, मनः जुवं, साधु कर्मा विश्वकर्माणं सः विश्वशम्भू नः विश्वानि हवनानि जोषत् ।

★

संग्राम में, कष्टों क्लेशों में फंसा साधक अपनी रक्षा के लिए आज पुकारता है। कष्ट कई प्रकार के होते हैं, प्रसंगवश मुख्यतः आधि-भौतिक, आध्यात्मिक होते हैं। साधक उत्साही बनकर संघर्षों से टक्कर लेता है, मुकाबला करता है। शत्रु शक्ति अधिक और कष्टों की मात्रा, बहुत बडी अपनी शक्ति अल्प न्यून अनुभव करते सहायता चाहता है।

वेद मंत्र प्रस्ताव करता है, पुकारो (प्रभु देव को) एक महान् शक्ति को, और अभी पुकारो! रक्षा के लिए, समृद्धियों के लिए, शक्तियों के लिए।

पुकारने से पूर्व दो बातों का ध्यान करना (क) कि हे पुकारने वाले! तू पात्र भी है? (ख) जिससे मांग रहे हो, उसमें वह मांग पूरी करने की सामर्थ्य भी है या नहीं। दाता की सामर्थ्य को मंत्र में बताया गया है।

वह वाचः पति है, वाणी का, वक्तृत्व शक्ति, सुभाषण शैली का, बोले जाने वाले ज्ञान व भाषा का एकमात्र स्वामी है। यह केवल वैखरी वाणी से नहीं कहता परन्तु दृढ विश्वास मान कर कह रहा है।

वाच पति की वाणी, वेद की कल्याणी वाणी, ज्योति व शक्ति का सचार करने वाली, प्रेरणाप्रद, उत्साह जनक, कायरों को कर्मनिष्ठ बनाने की क्षमता वाली हो और विजय भावना को भरकर कहे— 'चिड़िया बाजूं बाज मरावां तदे गोविन्द सिंह नाम कहावां।"

ऐसी शुभ्र शक्तिशाली ओजस्वी व्यवहार में लाई जा सकने वाली वाणी का स्वामी दाता परमेश्वर है, उसी से ही मांगते हैं प्रभावशाली वाणी।

वही मनः जुव है। मन जो कि ज्योतिषा ज्योति है, सकल्प का स्रोत है। वह मन में विचारों की गुप्त प्रेरणा, पवित्रता और परिपक्वता प्रदान करता है। निराशा जनक स्थिति में विजय की आशा भरता है। भयंकर संग्राम स्थिति का पासा पलटता है, मन में मजबूती लाता है, उसी सामर्थ्यवान स्वामी को सहायतार्थ पुकारता हू कि दृढ सहनशील उदात्त मन प्रदान करो।

वह ईश्वर साधुकर्मा है, जिसका कर्म न्याय, स्वभाव दयालुता है। जो किसी भी परिस्थिति में अपने न्याय व दयालुता को त्यागता नहीं है। विचित्र ढंग से इन दोनों विरोधी गुणों का सम्मिश्रण करके ज्ञानियों को चकित करता है, मोहित कर देता है।

विश्व शम्भु—विश्व में सुख शान्ति, स्वस्ति की स्थापना करने वाला एक मात्र युवा सखा है। विषम परिस्थितियों में जब संसारी सखा साथ छोड जाते हैं वही अपने आश्रितों की सुध लेता है। संयम व सम्मान का संरक्षण स्वयं करता है योग क्षेम की रक्षा करता है। इन सब सुचारु कार्यों में किसी अन्य पीर पैगम्बर की सहायता पर सिफारिशों पर निर्भर नहीं स्वयम् अपनी स्वः शक्ति से सुधार संवार और विस्तार करता है, ऐसे कल्याणकारी प्रभु को पुकारते हैं। कारण कि वही निर्माण और समृद्धिकरण के जौहर पूर्ण संग्राम में रक्षा करता तथा मार्ग-प्रदर्शन करता है।

प्रसंग को जारी रखते हुए अगले मंत्र यजु १७।२४ में कहा कि -

विश्वकर्मन् इन्द्र त्रातार हविषा वर्धनम् अवध्यम् अकृणोः।

(क) यह विश्वकर्मा प्रभु राष्ट्र को तारने के लिए हवियों को बढाता है और राष्ट्र को अवेध्य करता है। जिस से राष्ट्र छिदता नहीं। कोई छेडने की हिम्मत तक नहीं करता, किसी भी परिस्थिति में राष्ट्र का बाल बांका नहीं हो सकता।

तस्मै विशः समनमन्त पूर्वी अय उग्र विहव्यो यथासत् ॥

दूसरा उपकार प्रभुदेव का कि राष्ट्र में राजा प्रजा एक दूसरे का सम्मान करते हैं, सहयोग देते हैं। प्रजा राजा को पितावत् और राजा प्रजा को पुत्रवत् मान कर एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास करते है और कुर्बान होते हैं। प्रचण्ड विविध प्रकार की हवि-शस्त्रों से सम्पन्न कर देते हैं। नये नये शस्त्र बनाने की सूझ आविष्कार दोनों रक्षा व आक्रमण हेतु प्रभु देव प्रदान करते हैं। हथियारों के बनाने के लिए खनिज पदार्थ पैट्रोल इत्यादि भी प्रदान करते है। उनकी खोज कैसे कहां करनी होगी यह रहस्य प्रभुदेव सुझाते हैं। राष्ट्र में कुशाग्र बुद्धि वाले विद्वान् जिन की बुद्धि में इन प्राकृतिक रहस्यों को समझने की योग्यता हो और राष्ट्र के लिए अर्पित होकर दिन रात एक करके एकनिष्ठ होकर कार्य करने वाले साहसी मेधावी व्यक्ति पैदा होते हैं। परमेश्वर की महान् अनुग्रह से यही मेधावी राष्ट्र भक्त ही राष्ट्र को अवेध्य बनाते व उसके ध्वज को ऊंचा करते हैं।

(ग) राष्ट्र की रक्षा के लिए राष्ट्र में युग वीर, कृष्ण, शिवा, सावरकर, सुभाष, बिस्मिल, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसी विभूतियां परमेश्वर पैदा करते हैं, जो केवल अपना बलिदान ही नहीं वरन् अपने जैसे सैकडों अन्य वीर भी रण क्षेत्र में ला खडे करते हैं। अन्याय अत्याचार, अधर्म को समूलतः नाश करते हैं।

आज हमारी आर्त पुकार है कि आर्यावर्त राष्ट्र और आर्य जाति की रक्षा के लिए निज दया से ऐसे साधन व ऐसे वीर उपजाइये कि महर्षि के स्वप्न सार्थक हों, शत्रुओं की चढी कमानें धरी की धरी रह जायें। □

गीत राग जै-जैवन्ती

लो मैं, ललित ललाम हो गया

काम रूप को धूप देखकर, सकल काम निष्काम हो गया।
एक पग तो बढ सका नहीं, तन जर-जर हुआ नित्य चल चलकर।
जल-जलकर हो गया राख, पर किसी विपाक पाक ने फलकर।
विफल कर दिया यत्न मृत्यु का, अमर प्रेम का नाम हो गया॥

पाकर प्रेम पुलिन अवलम्बन, खिले सुमन मन धन उपवन बन।
भजन सजन सज्जित दृग अञ्जन, नयन, नयन के अयन प्रेम घन।
मन भावन के भव्य भवन में, इक क्षण को विश्राम हो गया॥

बाधाएं अपवाद, साधना साध-साध कर साध बन गई।
आराधन आधार धरा का, सर-सुर सरित अगाध बन गई।
कहाँ विवाद, स्वाद जीवन का, बेतादाद बदाम हो गया॥

प्रातः सांय का पता कहां है कोई पूछता बता कहा है।
खता खताओं का ही खाता, खता कोई बिन खता कहाँ है।
कथा सुनाई "व्याकुल" मन की, मन हो बिना लगाम हो गया॥

—प्रकाशवीर 'व्याकुल'
आर्यसमाज नया बांस दिल्ली-६

अंग्रेजी की दासता से मुक्त हों

—डा० कृष्णलाल आचार्य

क्या हम थोडा रुक कर यह सोचे कि ३९ वर्ष की लम्बी स्वतन्त्र यात्रा के पश्चात् हम कहां पहुंचे हैं ? जिस बिन्दु से हमे यह यात्रा करने का अवसर मिला, वहां तक हमें पहुंचाने वाले योद्धाओं ने उससे पहले के कठिन बाधाओं वाले मार्ग में सघर्ष करते हुए हमारे सुखद मार्ग के लिए अपने प्राणो की आहुति दे दी। क्या हम उन्हे भूल गये हैं ? अथवा औपचारिकतावश उन्हें कभी कभी स्मरण कर लेते हैं ? क्या हमें वे आदर्श स्मरण हैं जिनके लिए उन्होने त्याग किया।

क्या हम ससार मे भारत की पुरानी प्रतिष्ठा बना पाये है ? हमारे ऋषियों ने जो "वसुधैव कुटुम्बकम्" का आदर्श रखा क्या हम उसे पहले अपने जीवन में, अपने समाज मे उतार सके हैं या अन्दर से खोखले हम ससार को पाठ पढाने चले हैं ? क्या कारण है कि इतना समय बीतने पर भी हमारे दुर्बल वर्गों को अभी तक आरक्षण की बैसाखी का आश्रय लेना पड रहा है।

क्या न्यायालयो मे सबको समान न्याय मिल पाता है ? क्या वहां व्यक्ति अपनी भाषा के प्रयोग के अभाव मे सारी कार्यवाही समझ पाता है ? क्या उसे पता रहता है कि उसका वकील क्या बोल रहा है और न्यायाधीश क्या निर्णय दे रहा है ? क्या लोकतन्त्रीय स्वतन्त्र देश मे यह स्थिति सह्य है ? क्या यह सह्य है कि चाहे बच्चा कितना ही मेधावी क्यों न हो अग्रेजी (दासता की भाषा) का रट्टा लगाये बिना वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर ही नही सकता ? कुछ सम्पन्न-वर्ग के गिने चुने पब्लिक स्कूलों में विदेशी विचार-धारा में पले-पढ़े, अपने देश और भाषा से घृणा करने वाले लोगों का आज भी शासन-तन्त्र और अर्थतन्त्र मे दबदबा है। क्यों ऐसा लगता है कि मैकाले मर कर भी जीवित है ? अनेक-भाषा भाषी चीन और रूस मे यदि एक राष्ट्र-भाषा हो सकती है तो भारत मे क्यो नही हो सकती ? है कोई ऐसा स्वतन्त्र राष्ट्र जहां अपनी ही भाषा का अपमान किया जाता हो ?

संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा और उसके अद्वितीय साहित्य पर भारत को गर्व होना चाहिये, परन्तु नई शिक्षा-नीति मे उसकी आवश्यकता ही नही समझी जा रही ? यह बात बहुत स्पष्ट है कि सस्कृत सभी भारतीय भाषाओ को जोडने वाली ही नही, विदेशी भाषाओं को जोडने वाली भी एक महत्वपूर्ण कडी है। उसके उदात्त साहित्य पर भारत को गर्व है परन्तु उसकी उपेक्षा क्यों हो रही है। आगे आगे अच्छे सुयोग्य पुरोहितों तथा उपदेशकों का अभाव होता चला जा रहा है। क्या स्वत्व को छोडकर परार्थ बैसाखियो पर चलने से हम उन्नति के शिखर तक पहुचेगे ? एक मात्र सस्कृत हमारी सभी भाषाओ को अपरिमित आवश्यक शब्दावली देकर सब में एकता स्थापित करती है। उसे ही निष्कासित करके दासता की विदेशी भाषा का आकाशवाणी-दूरदर्शन द्वारा दिन प्रतिदिन प्रचार बढाया जा रहा है। हमारे नेता देश-विदेश मे अपने देश के लोगो तथा विदेशियों के आगे अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं यह दिखाने के लिये कि हम दरिद्र हैं हमारी अपनी कोई भाषा नही, हम मानसिक रूप से दास हैं। क्या कम्प्यूटर अपनी भाषा मे काम नही कर सकता ? परन्तु वह तभी होगा जब लोकभाषा और लोककल्याण की बलवती भावना हो। भाषा हृदय की वस्तु है और हृदय मे अपनी ही भाषा प्रस्फुटित होती है जिसे पदे-पदे ठुकराया जाता है। अपनी भाषा का अपमान मा के अपमान जैसा होता है। वस्तुत हम इतने गिर गये है कि हमे अपनी मा भी घृणा की वस्तु लगती है।

इस स्थिति को समाप्त करना होगा। मैं अपने युवकों को आह्वान करता हू कि वे अन्य सुख सुविधाओ की माग को छोडकर इस राष्ट्रीय प्रश्न के लिये क्रान्ति का आह्वान करें। स्वतन्त्रता-दिवस पर अपनी भाषा मे कार्य करने का सकल्प लें और उच्च-शिक्षा तथा परीक्षाओ मे सभी विषयो मे-बैंको मे, रेलों मे, कृषि मे, इजीनियरी मे, चिकित्सा मे, वाणिज्य मे, व्यापार-प्रबध, उद्योगो मे सर्वत्र हिन्दी माध्यम के लिए आन्दोलन करें। हिन्दी मे कार्य करने को बाध्य करें। अग्रेजी की अनिवार्यता इन उच्च परीक्षाओ से समाप्त होनी ही चाहिये। हिन्दी मे साहित्य की कमी का बहाना थोथा है। यू तो साहित्य प्रचुर मात्रा मे है और फिर जिस भाषा के पीछे सस्कृत जैसी सशक्त भाषा हो उसमे रातों-रात साहित्य निर्माण हो सकता है। मानसिक दासता से मुक्ति आवश्यक है।

प्रो० सारस्वत मोहन 'मनीषी' का अभिनन्दन

कवि सभा के तत्वावधान मे विश्वास नगर मे स्थित श्री विश्वकर्मा मदिर मे हिन्दी-जगत् के सुविख्यात साहित्यकार पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र "सुमन" की अध्यक्षता और जनकवि बिहारीलाल हरित के सान्निध्य में पजाब से पधारे हिन्दी के सशक्त कवि प्रो०सारस्वत मोहन मनीषी का राजधानी की अनेक सस्थाओं द्वारा उन्मुक्त हृदय से अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर कवि सभा दिल्ली के सयोजक डा० इन्द्र सेंगर ने मनीषी जी की साहित्य साधना का परिचय देते हुए बताया कि अब तक मनीषी जी के तीन काव्य सकलन प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें से "आग के अक्षर" और बूंद-बूंद वेदना" क्रमश हिन्दी साहित्य सम्मेलन हरियाणा और हिन्दी अकादमी हरियाणा द्वारा पुरस्कृत की जा चुकी हैं। मनीषी जी नई पीढी के एकमात्र ऐसे कवि है जिनके काव्य मे भोगे हुए यथार्थ के क्षणो का चित्रण बडी मार्मिकता के साथ मिलता है। प्रसन्नता की बात है कि मनीषी जी का चतुर्थ काव्य सकलन "कलम नही बेचेगे" जल्दी ही प्रकाश मे आने वाला है। इसमे लगभग २५० कवित्त सकलित हैं। ध्यातव्य है कि आपके कवित्तो मे यदि एक और रत्नाकर-जैसा काव्य-चातुर्य विद्यमान है तो दूसरी ओर उनमे कबीर का विद्रोही स्वर भी आन्दोलित दीख पडता है। आपकी रचनाए राष्ट्रीय सचेतना से ओत प्रोत है। उनमे सर्वत्र राष्ट्रभक्ति का स्वर अनुगुजित दीखता है।

इस अवसर पर एक मधुर कवि गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इसका शुभारभ सुकवि भोज की सरस्वती वन्दना से किया गया। इस कविगोष्ठी मे श्री विमल विभाकर, श्री गुलाब सिह राघव, हरिश्चन्द्र सौभाग्य, बिहारीलाल हरित, डा० सन्त हास्यरसी, डा० इन्द्र सेंगर और पद्मसिह 'पद्म' ने काव्य पाठ किया।

अन्त मे सुमन जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि मनीषी जी का अभिनन्दन करके कवि सभा ने प्रशसनीय कार्य किया है। आज राष्ट्र को मनीषी जैसे कवियो की आवश्यकता है। वर्तमान परिवेश मे कवियो को चाहिए कि वे राष्ट्रीय सचेतना से समाविष्ट रचनाए जनता जनार्दन तक पहुचाकर ऐसा वातावरण तयार करें जो राष्ट्र मे एकता, अखण्डता और राष्ट्र प्रेम की त्रिवेणी का सचार कर सके। मुझे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि मनीषी जी की कलम इस दिशा मे निरन्तर आगे बढती रहेगी। इस आयोजन का सचालन डा०इन्द्र सेंगर ने किया।

—गुलाब सिह राघव

शुभ नव वर्ष

हे विभु दया आनन्द युत नव वर्ष यह अघमर्ष हो।
सद्भावना सवृद्धि हो दारिद्रय का अपकर्ष हो ।।
विकसित समस्त स्वदेश हो, सब भांति का उत्कर्ष हो।
विद्या तथा वीरत्व का फिर केन्द्र भारतवर्ष हो।।

—राजर्षि रणञ्जय सिंह

ईसाई मिशनरियों के काले कारनामे

—बिशन स्वरूप गोयल

हमारे देश में आज अंग्रेजो के शासनकाल को समाप्त हो जाने के ४० साल बाद भी अंग्रेजी शासन-काल से भी अधिक ईसाई मिशनरीज सक्रिय रूप से हमारे हिन्दू समाज के धर्मान्तरण के कार्य मे सक्रियता से जुटे हुए हैं। ये मिशनरीज दूरस्थ स्थानो पर बसे हमारे हिन्दू समाज के अभिन्न अंग गिरिवासी, बनवासी, आदिवासी, अनुसूचित जाति तथा हरिजन बन्धुओ की गरीबी, पिछड़ेपन और उनके अनपढ होने के नाते उन्हें प्रलोभन के बल पर उनका धर्मान्तरण कर उन्हें ईसाई मत मे मिला लेते हैं। इस काम के लिए इन मिशनरीज को प्रति वर्ष लगभग ४० करोड रुपये ईसाई देशो से आते है जिनकी हमारी सरकार को पूरी जानकारी है और वह यह भी जानती है कि यह सारा धन हिन्दुओं को ईसाई बनाने पर ही व्यय किया जा रहा है। हमारी सरकार इस प्रकार के विदेशी धन के आने और उसे इस प्रकार किसी एक मत का प्रचार अन्य मतो के परिवर्तन कर ईसाई बनाने पर प्रतिबन्ध लगाने के स्थान पर उन्हे और सहयोग प्रदान कर रही है।

इसका एक स्पष्ट उदाहरण इस बार पहली बार ही देखने को मिला है। आज तक ससार के किसी भी देश की सरकार ने किसी मजहब मत या सम्प्रदाय के मजहबी आचार्य को सरकारी निमन्त्रण पर नही बुलाया है और न ही कभी उसका राजकीय तौर पर सम्मान किया किया गया है। किन्तु इस बार पहली बार हमारे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने वटिकन सिटी के ईसाई मत के मजहबी आचार्य जॉन पोप पाल को सरकारी निमन्त्रण पर बुलाकर उसका राजकीय सम्मान कर शायद पहली बार इतिहास मे ये नये पन्ने जोडे है। इसमे ऐसा रहस्य लगता है कि क्योकि उन की पत्नी एक ईसाई परिवार की लडकी है शायद उनके आग्रह पर ही श्री राजीव को ऐसा करने पर विवश होना पडा हो। यदि यह बात सत्य है तो इस से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ईसाई मत भी कट्टरता मे मुसलमानो से कम नही है। वे भी शायद यहा ईसाई मत के प्रचार मे अप्रत्यक्ष रूप से अपना योगदान कर रही हैं।

इसी प्रकार हमारी सरकार ने जिस प्रकार मदर टेरेसा को यहाँ मानवता की सेवा का प्रतीक मानकर उन्हें हर प्रकार की सुविधाएँ, अनुदान तथा उपाधियों से विभूषित किया है वह भी यहां एक प्रकार से ईसाई मत के प्रचार और प्रसार मे सहयोग देना ही कहा जा सकता है क्या कभी हमारे राजनेताओं ने मदर टेरेसा द्वारा चलाए जा रहे यहा के अनाथ आश्रमों को इस दृष्टि से देखने का प्रयास किया है कि इन आश्रमों में कही ईसाइयत का प्रचार तो नही हो रहा है। ये लोग तो वहा जाते है स्वागत कराया और हार पहने और चले आये। इन्होने कभी भी इस ओर ध्यान नही दिया है। मुझे मदर टेरेसा द्वारा संचालित कई अनाथ आश्रमो को देखने का अवसर मिला है और मैंने उन्हें उसी दृष्टि से देखा है कि इन आश्रमो में कोई देशविरोधी गतिविधियां तो नही चलायी जा रही। इन्हें देखने के बाद मैं पूर्ण विश्वास के साथ यह कह सकता हूँ कि इन आश्रमों में पलने वाले रहने वाले लोगों को पूरी तरह ईसाइयत की ही शिक्षा दी जा रही है और बड़े होकर जब ये यहा से निकलेगे तो न केवल ईसाई होगे अपितु वे ईसाई मत के कट्टरपन्थी प्रचारक बनेगे।

जहा तक ईसाई पादरियो और मिशनो की बात है वैसे तो उन्हें "फादर" कहा जाता है और वे भी हमारे यहा मानवीय सेवा के प्रतीक माने जाते है। किन्तु इन दिनों इन के कुछ काले और शर्मनाक कारनामे सामने आये हैं जो आखे चौंका देने वाले हैं। अब ये ईसाई मिशनरियां यह भी समझ गयी हैं कि हमारी सरकार डण्डे की भाषा ही समझती है। सिखों ने डण्डा उठाया उन से डर गयी और उन की बाते मान लीं। मुसलमानो ने डण्डा उठाया उनकी बाते मान ली गयी। हिन्दू डण्डा नही उठाता उसकी बात नही मानी जाती। इस कारण अब ईसाई मिशनरीज ने भी मुसलमानों की तरह ही आक्रान्ता व्यवहार अपनाना आरम्भ कर दिया है।

विवेकानन्द शिला स्मारक पर ईसाईयों की गिद्ध दृष्टि

कन्याकुमारी जहा हमारा स्वामी विवेकानन्द शिला स्मारक नामक तीर्थ स्थल है और जहा स्वामी विवेकानन्द को ज्ञान प्राप्त हुआ था वहां ईसाई मिशनरीज ने बड़ी तेजी से धर्मान्तरण का कार्य सक्रिय रूप से चलाया हुआ है। वहा के रहने वाले सभी मछेरो को धन का प्रलोभन तथा अन्य सुविधाये प्रदान कर ईसाई बना लिया गया है। इन मछेरों से यहा तक भी कहा गया है कि जो तीर्थयात्री शिला स्मारक देखने के लिए जाते हैं उन्हे जो मल्लाह नाव मे बैठा कर ले जाते हैं उन्हें मारो, धमकाओ और इस बात के लिए मजबूर कर दो कि वे उन नावों को चलाना छोड़कर ईसाई बन जाये। वहा पर ऐसा ही किया जा रहा है और एक प्रकार से हमारे इस महान तीर्थ स्थान पर एक भयकर आक्रमण हो है। यही नही वहा के मन्दिर का पुजारी जो एक अनुष्ठान करने की योजना बना रहा था उसका तथा उसके अन्य दो साथियो का ईसाइयो ने अपहरण करा लिया और आज तक उनका पता नहीं है। ऐसी आशा है कि उन की हत्या कर उनके शवों को समुद्र में फेक दिया गया है। अब यह खोज तमिलनाडु सरकार को करनी चाहिए कि इन तीनों लोगों को कहा ले जाया गया?

श्री रामेश्वरम् टापू को ईसाई होमलैण्ड बनाने की योजना

श्री रामेश्वरम् टापू वह स्थान है जहा भगवान् राम ने लका विजय से पूर्व शिवलिंग की स्थापना कर वहा शिव की पूजा की थी। यह श्री रामेश्वरम् टापू दक्षिण में मुख्य भूमि से दूर सागर में तैरता हुआ १२ मील लम्बा और पांच मील चौडा एक टापू है। यह स्थान भगवान राम द्वारा यहां शिवलिंग की पूजा किये जाने के कारण हिन्दू समाज का एक पवित्र तीर्थस्थल माना जाता है और हिन्दुओं की श्रद्धा का केन्द्र बन गया है। यहां रामेश्वरम् का मन्दिर भी बना हुआ है जिसके दर्शन करने प्रतिदिन लगभग पाच हजार लोग यहा आते हैं। किन्तु ईसाई मिशनरियां इस स्थान को पूरी तरह ईसाई होमलैण्ड बनाने के लिए जी-जान से जुटी हुई हैं और अब इसके अस्तित्व को ही समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। श्री रामेश्वरम् टापू के ३७ गाव हैं जिनकी कुल जनसख्या एक लाख के लगभग है। इन ३७ गावो मे से १० गाव पूरी तरह से ईसाई बना लिये गये हैं जिनकी आबादी १६००० है। ये सभी ईसाई हैं। श्री रामेश्वरम् टापू पर इस समय ईसाइयो की सख्या लगभग ३५००० है, जो वहां की कुल आबादी का ३५ प्रतिशत है। मुस्लिम आबादी तो वहां केवल एक हजार के लगभग ही है। यहा की शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था पर ईसाई मिशनरियों का पूरा आधिपत्य है।

क्योकि यहा के सभी मछेरे ईसाई बन चुके हैं इसलिए वे अधिकाश ईसाई मिशनो द्वारा प्राप्त की गयी सहायता और धन से सम्पन्न हैं। अब वे तस्करी जैसे अवैध धन्धों मे भी सलग्न होते जा रहे है। ईसाई मिशनरियो की सहायता मे ही अब इन मछेरो के पास ८०० नौकाये तो यान्त्रिक भी मौजूद हैं जिनका उपयोग वे तस्करी के काम के लिए ही करते हैं। इन मछेरो ने समुन्दर के किनारे को वहा पर नाव खडी करके इस प्रकार जान बूझकर घेर लिया है ताकि श्री रामेश्वर मन्दिर के दर्शन करने जाने वाले लोगो को कठिनायी हो और उन्हे वहा स्नान आदि करने मे काफी परेशानी पैदा हो जाए। तमिलनाडु सरकार को हमारे इस तीर्थस्थल को ईसाई होमलैण्ड बनने से रोकने तथा हमारे तीर्थयात्रियो को सभी सुविधाय उपलब्ध हो। इसके लिए इन मछेरो के विरुद्ध कार्यवाही करनी चाहिए इस के लिए हिन्दु समाज के वरिष्ठ लोगों को भी तमिलनाडु सरकार को लिखना चाहिए।

कान्वेण्ट स्कूलो से सावधान रहो

अमेरिका के केलिफोर्निया के एक स्कूल के अभागे ४५० बालकों के साथ किये जा रहे अप्राकृतिक

ईसाई मिशनरियों के काले कारनामे

यौनाचार की न्यायालय में गूंज के बाद केरल के मिशन विद्यालयों में अध्यापन कार्य करने वाले दो ईसाई पादरियों को न्यायालय द्वारा छात्र-छात्राओं के साथ यौनाचार करने के अपराध मे दण्डित करने के समाचार के साथ ही अब बिहार के राची तथा राजस्थान की उद्योग नगरी ब्यावर से मिश्र न्यूज ब्यूरो द्वारा प्रेषित स्थानीय सेंण्ट पाल स्कूल मे नन्हे-नन्हे बालक-बालिकाओ के साथ स्कूल के पादरी अध्यापकों द्वारा किये जा रहे न केवल अप्राकृतिक यौनाचार अपितु मुख मैथुन जैसे जघन्य कुकृत्य किये जाने के समाचार भी प्राप्त हुए हैं।

सिटी थाने मे इस सन्दर्भ मे प्रथम सूचना रिपोर्ट एफ० आई० आर० ४८/८६ धारा ३५४ तथा ३७७ तथा दूसरी एफ० आई० आर० २०/८६ धारा ३५४, ५०७ तथा ३७७ भारतीय दण्ड संहिता के अनुसार सैंण्ट पाल स्कूल के दो पादरी अध्यापकों, लियो वाल्स और वेंजल दयाल के विरुद्ध दर्ज हुई है। जिन मे कहा गया है कि ये दोनो पादरी अध्यापक बालक तथा बालिकाओ को अपने घर ट्यूशन के बहाने से बुला कर उन्हे फल करने का भय दिखा विगत दो साल से मुख मैथुन तथा अन्य बीभत्स तथा अप्राकृतिक तरीकों मे यौनाचार करते आ रहे हैं।

इन नराधमो के बीभत्स कुकर्मो की शिकार ४०-४५ अबोध बालिकाओ ने जो आपबीती सुनायी है उसे लिखते हुए लेखनी को भी लाज आती है। ये दुष्ट प्रतिदिन एक-एक बालिका से मुख मथुन कराते थे स्खलित वीर्य के मुख मे जाने से जो मचलने जसी हालत हो जाती थी। इस से परेशान होकर जब बालिकाओ ने अपने अभिभावकों से स्कूल पढ़ने जाने से इन्कार कर दिया तो उन्होंने अपने इन्कार का यही कारण बताया। इससे सारे नगर मे सनसनी फल गयी।

विधायक श्री सोहन सिह ने इस सारे मामले को राज्य विधान सभा में उठा कर ब्यावर के सैंण्ट पाल स्कूल को बन्द करने और तत्सबघी पादरी शिक्षकों को गिरफ्तार करने की मांग की। इससे पुलिस सक्रिय हुई और दोनों अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया गया है। दोनों ही पुलिस रिमाण्ड पर हैं और सैण्ट पाल स्कूल बन्द कर दिया गया है। पाश्चात्य शिक्षा केन्द्रो की अंग्रेजियत के नाम पर भारी फीस देकर अपने को पढाने मे गौरव का अनुभव करने वाले अभिभावको को क्या इन स्कूलों मे शिक्षा दिला कर अपनी भावी पीढी को चरित्रहीन बनाने का मोह अब छोडने के लिए नही सोचना चाहिए जहा वे भारी फीस और भारी दान राशियां देते हैं जो उनके बच्चों के चरित्र हनन के उपयोग मे लगायी जाती है।

केरल के ईसाई मत के गुरु को आजीवन कारावास

कोटचम के सत्र न्यायाधीश श्री ए० आर० विजयन ने स्थानीय महाविद्यालय की एक छात्रा की हत्या के अभियोग मे जॉन चेरियन ईसाई मत के गुरु को आजीवन कारावास का दण्ड दिया। महाविद्यालय की छात्रा जॉली मैथ्यू के साथ बलात्कार के प्रयत्न मे चेरियन ने यह हत्या की थी।

ईसाई पादरियो का भ्रष्टाचारी व्यवहार

जिन ईसाई पादरियो को हम ईमानदार और मानव सेवा का ठेकेदार के प्रतीक के रूप मे मानते है उनको भ्रष्टाचार गतिविधियो के मामले भी अब सामने आने लगे है। तमिलनाडु के संण्ट एन्थोनी गिल्ड से सम्बन्धित पादरी इग्नेशियन के खिलाफ केन्द्रीय जाच ब्यूरो ने 'भारतीय राज्य व्यापार निगम" से करोडों की धोखाधडी करने का मामला दर्ज किया है। गत कुछ सालो मे पादरी इग्नेशियन तथा अन्य पादरियो के इतने धोखाधडी के मामले दर्ज हुए है कि अब लोगो को इन ईमानदार पादरियो पर भी अविश्वास हो गया है। हर दो तीन मास बाद एक न एक ऐसा मामला सामने आ ही जाता है। पादरी इग्नेशियन के बारे मे कहा जाता है कि उसने १९७६ मे 'फासिसियन आर्डर' के अन्तर्गत जो कार्य किया उससे वह मुअत्तल हो चुका है। उस पर अब ताजा आरोप है कि उस ने अब्दुल कादिर और उस के बारह साथियों से साजिश कर २५,००० मीट्रिक टन आयातित सीमेण्ट केरल के विभिन्न भागों में काला बाजार में बेच दी है। ये हैं इन मानव सेवा के ठेकेदारो के काले कारनामे जिन्हें हम मानव सेवा के लिए पुरस्कृत करते हैं।

तमिलनाडु सरकार द्वारा धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध

सन् १९८२ मे कन्याकुमारी के पास ईसाई बहुल मण्डई काडु मे हुए साम्प्रदायिक दगे की जाच के लिए नियुक्त श्री पी० वेणु गोपाल आयोग की रिपोर्ट जिसे राज्य विधानसभा में प्रस्तुत किया गया था उसे स्वीकार कर लिया गया है। श्री वेणु गोपाल आयोग ने अपनी रिपोर्ट मध्यप्रदेश तथा अरुणाचल जैसे धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाने वाला कानून बनाने, धार्मिक जलूसो पर पाबन्दी लगाने धार्मिक स्थलो पर लाउड स्पीकरो पर नियन्त्रण करने और ईसाई मिशनरियो को विदेशी धन की आपूर्ति पर नियन्त्रण करने को सिफारिश को है। अब शीघ्र ही वहा धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध का कानून बनने जा रहा है।

१२ अप्रैल, १९८५ को कांग्रेस आई० के सासद श्री बी०बी० देसाई ने धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी एक गैर सरकारी विधेयक विचार के लिए पेश किया था जिस पर कांग्रेस आई० के ही ए० चार्ल्स ने इसे विधान की धारा २५ का उल्लघन बताते हुए विरोध किया। इस पर विधि मन्त्री श्री अशोक सेन ने समर्थन करते हुए कहा कि विधेयक मे विधान का उल्लघन नही होता। इस पर मुस्लिम लीग के बनातवाला ने श्री अशोक सेन के हस्तक्षेप को अनुचित बताते हुए विरोध किया। इस विधेयक मे श्री देसाई ने जबरदस्ती, प्रलोभन तथा छल-छद्म से धर्म परिवर्तन करने वाले पर पाच हजार रुपये जुर्माना और एक मास का कठोर कारावास तथा सामूहिक धर्म परिवर्तन करने वालों के लिए भी इसी दण्ड की माग की गयी थी। जिन दोनो सदस्यों ने इसका विरोध किया वे दोनो ही ऐसे मजहबों के है जो यहा धर्म परिवर्तन के काम मे सलग्न है जिन मे एक मुसलमान और दूसरे ईसाई।

नेपाल सरकार से शिक्षा ले

नेपाल विश्व मे एक हिन्दू राज्य है। वहा ईसाइयत का प्रचार करने वाले को ६ साल के कारावास का दण्ड दिया जाता है और हिन्दू को ईसाई मत ग्रहण करने पर एक साल का कारावास। काठमाण्डू न्यायालय ने अभी हाल मे एक भारत की राष्ट्रीयता प्राप्त श्री सुमन शर्मा को ईसाई मत स्वीकार करने पर एक साल कारावास का दण्ड दिया है। हमारे प्रधानमन्त्री को इससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

संस्कृति को नष्ट करने का षड्यन्त्र

यहा यूरोपीय देशों से आने वाले पादरियो की सख्या गोरे व काले कुल मिला कर लगभग ६ प्रतिशत ईसाई पादरी कार्यरत हैं। यहा ईसाई जनसख्या किस तेजी से बढ रही है उसे भी देखा जाये। सन् १९१८ मे सारे देश मे १०,५६,०००, १९५१ मे ८३,६२,०००, १९६१ में १,०७,२८,००० और १९७१ मे १,०४,२०,००० थी। कुछ प्रदेशों मे इन का प्रतिशत इस प्रकार है—नागालैण्ड ६७.८, तमिलनाडु २०, मेघालय ४७, गोवा, दमन, दीव ३१.८, आसाम २८.५५, मणिपुर २६ तथा केरल मे २१ प्रतिशत है। इन आकडो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ये सभी राज्य सीमावर्ती हैं, इस कारण यह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का ही खेल खेला जा रहा है जिस से यह देश पुन गुलाम हो जाए। ❑

— विशन स्वरूप गोयल
३३१४ बंक स्ट्रीट, करोलबाग,
नई दिल्ली

डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री पुरस्कृत

उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज के प्रसिद्ध युवा महोपदेशक, लेखक और विद्वान् डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री एम ए पी-एच० डी० को 'दयानन्द दर्शन शोध पत्र' प्रतियोगिता मे प्रथम आने के कारण १५०० - रुपये का सर्वोच्च पुरस्कार देकर सम्मानित किया है। श्री शास्त्री को १५०० - के अतिरिक्त प्रशस्ति पत्र तथा रेशमी उत्तरीय भी माननीय श्री कृष्ण चन्द्र पन्त इस्पात एव खान मन्त्री भारत सरकार के कर कमलो द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा के समापन समारोह मे २० अक्टूबर को लखनऊ मे प्रदान किया गया। ज्ञातव्य है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने अपने शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य मे 'दयानन्ददर्शन एव राष्ट्रीय एकता और अखण्डता मे उसकी उपादेयता' विषय पर अन्तरविश्वविद्यालयीय प्रतियोगिता आयोजित की थी। श्री शास्त्री अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद से सम्बद्ध रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी में संस्कृत विभाग मे प्राध्यापक हैं।

समाचार

प्रचार वाहन द्वारा ग्राम प्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा ग्राम-प्रचार धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। ८ जनवरी को दिल्ली से बाहर ग्राम हमिदपुर मे श्री ओमप्रकाश शास्त्री जी द्वारा ग्राम-प्रचार रखा गया जिसमे स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल, संगीत कलाकार महाशय जर्नादन रेडियो सिगर एव प० ज्योतिप्रसाद आर्य ग्राम हमिदपुर पहुंचे। रात्री को ६ बजे से १ बजे तक प० चुन्नीलाल एव जर्नादन जी के भजनोपदेश रहे। जिसमे ग्राम की अच्छी उपस्थिति रही तथा सभी श्रोतागणो ने उत्साह पूर्वक प्रचार से लाभ उठाया। प्रात ८ जनवरी को श्री ओमवीर शास्त्री जी के सुपुत्र का नामकरण सस्कार रहा। जिसमे प चुन्नीलाल जी ने सस्कार कराया। शिशु का नाम देवव्रत रखा गया। यज्ञादि के पश्चात् पुष्प-वर्षा द्वारा सभी ने देवव्रत को आशीर्वाद दिया। डा० धर्मपाल जी आर्य ने शिशु को आशीर्वाद के साथ सभा के कार्यक्रमो पर भी प्रकाश डाला। महाशय जनार्दन का सगीत द्वारा कायक्रम रखा गया। स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने शिशु को आशीर्वाद कविता में सुनाया और हास्य कविताओं द्वारा मनोरजन किया। श्री ओमवीर जी शास्त्री ने सभी आगुन्तक मेहमानो का स्वागत सत्कार किया और भोजन आवास की सुन्दर व्यवस्था की। साथ ही ग्रामवासियो ने अधिक प्रचार कराने की इच्छा प्रकट कर प्रचार करने का आग्रह किया।

श्री ओमवीर शास्त्री ने ग्राम हमिदपुर मे एक आर्यसमाज की स्थापना कराने का निश्चय किया जिसमे डा० धर्मपाल जी आर्य सभा मन्त्री ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। शान्तिपाठ के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दोपहर बाद हमीदपुर से देहली के लिये प्रस्थान रहा।

इस ग्राम-प्रचार मे ग्रामवासियों का जो उत्साह था वह अति सराहनीय रहा और ग्रामवासियो ने कहा हमे पूर्ण आशा है कि समय समय पर हमारे गाव मे आकर मार्ग-दर्शन करते रहगे। अति धन्यवाद के साथ विदाई समारोह मे भी दूर तक साथ साथ आये।

सिख युवकों ने स्वेच्छा से बाल कटाए

नई दिल्ली के करौल बाग इलाके के एक सिख परिवार के दो लडके एक नाई की दुकान पर गए। बोले–हमारे बाल काट दो। नाई पहले तो डरा, फिर सम्भला और कुछ सोचकर मैं आप लोगो को जानता नही कि आप कौन है। मैं आपके बाल काट दू और आप कुछ कर बैठे तो क्या होगा ? आप दोनो अपने बाल क्यों कटाना चाहते हैं। आप तो अमृतधारी सिख हैं ?

हम सिख है और रहेंगे भी, वे बोले– ये बाल हमारे हिन्दु होने मे सदेह पैदा करते हैं। लोग हमे शका की नजर से देखते है, कुछ हत्याओ ने हमारी पहचान और केशो को कलंकित कर दिया है। हम हत्यारों की जमात मे शामिल होने के कलक पूर्ण आरोप से मुक्ति चाहते हैं। सिख बने रहने के लिए केश रखना जरूरी नही है।

नाई फिर भी नहीं माना। बोला मैं कैसे विश्वास करूं। आप अपने मां बाप को साथ लेकर आइए। अगर वे कहेंगे तो मै आप का मुडन कर दूगा।

थोडी देर मे दोनों लडके अपनी मां को लेकर आए। मा ने नाई से कहा—काट दो मेरे बेटों के केश। ये केश सिखो के नही अब हत्यारों की पहचान बन गए हैं, हमारे ईमान-धर्म पर शका पैदा करते हैं।

नाई ने दोनो लडको के केश काट दिए। इसे मा ने मुडन सस्कार कह कर नाई को दोनों बेटों का मुडन कर देने के लिए इक्यावन-इक्यावन रुपये दिये, और बोली—यदि केशधारी हो कर हिन्दू नही रहा जा सकता तो ऐसे केश किस काम के ? गुरु महाराज ने पक्का हिन्दु बने रहने के लिए केश और कृपाण दिया था, हत्यारा होने और काटने के लिए नहीं।

भवदीय
ओमप्रकाश

(१४ दिसम्बर पांचजन्य से साभार)

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के बढ़ते कदम

आर्यसमाज राजौरी गार्डन, नई दिल्ली की अपनी अलग पहचान है। अपनी स्थापना के काल से ही धार्मिक जागरण का कार्य तो उसके द्वारा चल ही रहा है। कुछ रचनात्मक कार्य इस समाज के यश को बढ़ाने में काफी सहायक हुए हैं। इस आर्य समाज के दो भवन हैं जो दो स्थानो पर अपने विशाल आकार के साथ अपने कार्यों और गतिविधियो के केन्द्र बने हुए हैं। एक भवन मे आर्य समाज का हस्पताल चल रहा है जिसमें लेडी डाक्टर तथा एम० बी० बी० एस, एम० डी० डाक्टर कार्य करते हैं। दन्त सर्जन, नेत्र विशेषज्ञ, क्लिनिकल लेब्रोटरी और प्रसूतिगृह, एक्सरे प्लाण्ट आदि विभाग सुचारु रूप से चल रहे हैं। इस आर्यसमाज ने अपने युवको के आकर्षण के लिए एक आर्यन क्लब की भी स्थापना की है। जिसमे बुद्धिजीवी, वकील, डाक्टर, चेयरमैन, प्रबुद्ध व्यापारी, उच्चस्तरीय लोग सदस्य हैं। इस क्लब का उद्घाटन स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने किया था। इस क्लब की ओर से एक रक्तदान शिविर अभी कुछ दिन पूर्व सम्पन्न हुआ। जिसमें अनेक महानुभावों ने अपना रक्तदान किया। आर्यसमाज ने वेद-प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत एक अन्य ग्राम-प्रचार योजना पर भी काम करना प्रारम्भ किया है। योजना के अनुसार यह आर्यसमाज दो वर्ष तक एक गांव में निरन्तर धर्म-प्रचार जन-सुधार आदि के काम करेगी। तथा अगले दो वर्ष बाद अन्य ग्राम में अपना कार्य प्रारम्भ करेगी। आर्यसमाज भवन में एक महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल भी स्थापित किया है, जो दिल्ली प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित है। इस का स्तर भी श्लाघनीय है। इस स्कूल के कार्यकर्ता प्रधान श्री जगदीश आर्य ने बच्चो मे धार्मिक सस्कार तथा उत्तम शिक्षा-पद्धति पर सराहनीय प्रयास किया है। दैनिक सत्सग और साप्ताहिक सत्सग में उच्चकोटि के विद्वानो के उपदेश इस क्षेत्र के धार्मिक जनो के आकर्षण का विषय बने हुए है। इस समाज के प्रधान श्री देशराज सेठी तथा मन्त्री श्री नन्द किशोर भाटिया एव कार्यकर्ता गण बधाई के पात्र हैं।

सवाददाता आर्यसन्देश

आर्य विद्वानों का अभिनन्दन

आर्यसमाज लाजपत नगर के वार्षिकोत्सव पर आर्य विद्वानों के सम्मान एवम् अभिनन्दन का कार्यक्रम रखा गया। इसके अन्तर्गत श्री स्वामी अमर स्वामी, प० शिवकुमार शास्त्री, प० इन्द्रसेन शर्मा, श्री प० मेघश्याम पुरोहित आदि विद्वानों को सम्मानित किया गया। इन विद्वानो को पाच-पांच सौ रुपये तथा एक गर्म शाल भेट किया गया।

निवेदक
सोमनाथ कपूर, मन्त्री

आर्यसमाज घोंडा में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज घोंडा, दिल्ली-५३ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एव वार्षिक उत्सव दिनाक १९।१२।८६ से २१।१२।८६ तक क्षेत्रीय उपसभा यमुनापार प्रधाना श्री ईश्वर देवी धवन की अध्यक्षता में मनाया गया और २०-१२-८६ को भव्य शोभा यात्रा पूरे घोंडा क्षेत्र मौजपुर, ब्रह्मपुरी यमुना विहार दिन के १ बजे से सांयकाल ५ बजे तक निकाली गई।

भवदीय
मंत्री
ओमप्रकाश गुप्ता

सत्संग से लाभ उठायें

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि महिला आश्रम तथा आर्यसमाज न्यू राजेन्द्र नगर जो कि आर्य समाज राजेन्द्र नगर का ही अंग है, वहा प्रतिदिन सोमवार को सायं ४ बजे से ५-३० बजे तक सत्संग होता है। सर्व साधारण से निवेदन है कि सत्संग में पहुंच कर धर्म लाभ उठाये और हमारा सहयोग करे। आश्रम की गतिविधियो को सुचारु रूप से चलाने में आश्रम की प्रधाना श्रीमती पूर्ण देवी एव श्रीमती विद्यावती महाजन का प्रयास सराहनीय है।

निवेदक
द्वारिकानाथ जी सहगल
प्रधान आर्यसमाज राजेन्द्र नगर

शोभा यात्रा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आर्यसमाज सदर बाजार ने अपने सम्पूर्ण क्षेत्र में २१, २२, २३, २४, चार दिन तक प्रातः ५-३० बजे से ७ बजे तक प्रभात फेरी का आयोजन किया। जिसमें बाल, युवा, वृद्ध आर्य नर नारियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

मन्त्री
वब इन्द्रदेव
आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली-६

महर्षि दयानन्द की वसीयत और........?

आदि शंकराचार्य के शिष्यों ने उन्हें भगवान शकर का अवतार बना डाला और सारे ससार को वेदान्ती या अद्वैतवादी बना दिया। कैसे? शंकराचार्य के शिष्य प्रशिष्य उनके ग्रन्थों के भाष्य के भाष्य लिखते गये और इस प्रकार उनके विचार फैलते चले गये। परन्तु १०३ वर्ष बीत जाने पर भी महर्षि दयानन्द के एक भी ग्रन्थ पर भाष्य नही लिखा गया। महर्षि ने अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के नाम की गई वसीयत में यह काम उसे सौंपा था। किन्तु इस ओर तनिक भी ध्यान नही दिया गया। सन् १९८३ में अजमेर में महर्षि को निर्वाण शताब्दी मनायी गई। सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् स्वामी विद्यानन्द सरस्वती अजमेर नही गये। परन्तु महर्षि की वसीयत के अनुसार उनकी इच्छा पूर्ति करने का सकल्प करके उसी दिन से महर्षि कृत ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पर भाष्य लिखने मे जुट गये।

आचार्य उदयवीर शास्त्री, प० युधिष्ठिर मीमासक, डा० रामप्रसाद वेदालकार आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री आदि आर्य जगत् के १५ विद्वानों के सहयोग से निरन्तर तीन वर्ष की साधना के फल स्वरूप स्वामी जी अपना सकल्प पूरा करने मे सफल हो गये हैं। बडे आकार (२०×३०) के लगभग १४०० पृष्ठो का दो जिल्दो मे प्रकाशित होने वाला "भूमिका भास्कर" नामक यह ग्रन्थ अभूतपूर्व प्रकाशन होगा। प्रत्येक आर्यसमाज, सभा, गुरुकुल, कालेज, पुस्तकालय तथा आर्य पुरुष के पास यह ग्रन्थ अवश्य होना चाहिए। महर्षि दयानन्द के प्रति यह वास्तविक श्रद्धाजलि होगी, क्योंकि ऐसा करके ही हम उनकी हार्दिक इच्छा की पूर्ति करेगे। यह ग्रन्थ 'इण्टर नेशनल आर्यन फाउण्डेशन' बम्बई की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन पर लगभग एक लाख रुपये व्यय होगे। छपने पर इसका मूल्य ३०० रुपये से कम नहीं होगा। परन्तु छपने से पूर्व मूल्य भेज कर आर्डर देने वालो को यह केवल २०० रुपये में मिलेगा। इस प्रकार पहले आडर देने वाले सज्जन न केवल कम मूल्य मे पुस्तक ले सकेगे, वरन् वे ग्रन्थ के प्रकाशन मे आर्थिक सहयोग देकर यश के भागी भी होगे।

"साथ ही निवेदन है कि जो दानी आर्य पुरुष इस सन्दर्भ मे आर्थिक सहयोग करना चाहे या प्रकाशन से पूर्व अग्रिम प्रति सुरक्षित कराना चाहें वे अपने ड्राफ्ट इण्टर नेशनल आर्यन फाउडेशन बम्बई (International Aryan Foundation Bombay) के नाम से निम्न किसी भी पते पर भेजे या सम्पर्क करे—

१. श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, डी-१४/१६, माडल टाउन दिल्ली-११०००९

२. श्री देवेन्द्रकुमार कपूर, ३०२ कैप्टिन विला माउण्ट मेरी रोड, बान्द्रा, बम्बई-४०००५०

३. कैप्टिन देवरत्न आर्य, ६०३ मिल्टन अपार्टमेण्ट्स आजाद रोड, जुहूनारा, बम्बई- ०००४९

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का चुनाव

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का वार्षिक साधारण अधिवेशन व चुनाव रविवार १८।१।१९८७ को साय ३-०० बजे आर्यसमाज मदिर १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली में रखा गया है। सब प्रतिनिधियों व जिन आर्यसमाजो का सदस्यता शुल्क व दो प्रतिनिधियों के नाम सभा कार्यालय को नही पहुंचे, उन आर्यसमाजो के प्रधान और मन्त्री के नाम सूचना भेजी जा चुकी है। सभी समाजो के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अधिवेशन के दिन अपने प्रतिनिधियो को भेजकर अपना सहयोग प्रदान करे।

मन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक १३ | रविवार २५ जनवरी, १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८ | माघ २०४३ | दयानन्दाब्द—१६२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

पुण्य स्मृति पर

बाल-विवाह निरोधक कानून के जन्मदाता : हरबिलास शारदा

सन् १९२१ की जनगणना के अनुसार देश मे ६१२ ऐसी हिन्दू विधवा बच्चियां थी, जिनकी आयु १२ माह से भी कम थी। ४९८ विधवाओ की आयु १ से दो वर्ष, १२८० की आयु २ से तीन वर्ष तथा पांच वर्ष से कम आयु की विधवाए १२०१६ थी। १० वर्ष से कम आयु की विधवाओ की सख्या ९७५९६ और १५ वर्ष से कम आयु की कुल विधवाएं ३,३१,७९३ थी। सन् १९३१ की जनगणना के अनुसार १५ वर्ष से कम आयु की विधवाओं की सख्या २,५४,४३८ थी। सन् १९२१ से १९३१ में बाल विधवाओं में जो कमी आई उसका कारण बाल-विवाह निरोधक कानून का लागू होना माना जा सकता है।

यद्यपि अब भी बडो सख्या में बाल विवाह होते हैं, किन्तु बाल विवाह निरोधक कानून बनवाकर पारित करवाने और इस कुप्रथा के खिलाफ जनमानस तैयार करने मे हरबिलास शारदा (सन् १८६७-१९५५) का योगदान सदा स्मरणीय रहेगा।

हरबिलास शारदा सन् १९२४, १९२७ और १९३० मे तीन बार केन्द्र शासित क्षेत्र अजमेर मेरवाडा राजस्थान से केन्द्रीय विधानसभा के लिए निर्वाचित हुए। १५ सितम्बर १९२७ को केन्द्रीय विधानसभा मे बाल विवाह निरोधक कानून प्रस्तुत करते हुए श्री शारदा ने कहा कि कई प्रकार के सामाजिक रीति रिवाजों के कारण विधवा विवाह नहीं होते। ऐसी स्थिति में विधवाओ को जीवनभर कितनी यातनाए सहनी पडती है, इसकी कल्पना भी

(शेष पृष्ठ ५ पर)

कर्तव्य की पुकार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ने पजाब के विस्थापितों के लिए सहायता अभियान चलाया है जिसमे नये वस्त्र तथा आर्थिक सहयोग के अतिरिक्त आवास की व्यवस्था भी की जा रही है। उन्हे स्वावलम्बी भी बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

आर्यजनों से इस पुनीत कार्य में सहयोग की प्रार्थना है। कृपया सम्पर्क करे—

डा० धर्मपाल
महामन्त्री

ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का निर्वाचन

श्री महाशय धर्मपाल निर्वाचित प्रधान एवं महामन्त्री श्री राजेन्द्र दुर्गा

श्री महाशय धर्मपाल

दानवीर, धर्मप्रिय, सत्यनिष्ठ, निश्छल सरल प्रकृति के स्वामी, एम० डी० एच० प्रा० लि० के स्वत्वाधिकारी, सुप्रसिद्ध उद्योगपति महाशय धर्मपाल आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान सर्वसम्मति से हर्ष और उल्लास के वातावरण में निर्वाचित हुए।

श्री महाशय धर्मपाल अपने पूज्य पिता श्री स्व० महाशय चुन्नीलाल के सत्यनिष्ठ ईमानदार, परोपकारी, दानी स्वभाव को आदर्श मानकर समाज सेवा में सलग्न हैं। उन्होने अपनी पूज्या माता चन्ननदेवी की मधुर स्मृति को जीवन्त रूप देने के लिए माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय सुभाष नगर में बनवाया जो हजारों रोगियों को नेत्र ज्योति प्रदान कर रहा है। जनक

(शेष पृष्ठ ५ पर)

कर्मठ कार्यकर्ता, मिलनसार स्पष्ट वक्ता, जनसेवा के व्रती श्री राजेन्द्र दुर्गा सहायक निदेशक (इजीनियरिंग) इडियन ब्राडकस्ट इजीनियरिंग सर्विस (I B E. S) के अन्तर्गत दिल्ली दूरदर्शन मे कार्यरत हैं। ४४ वर्षीय श्री राजेन्द्र जी बचपन से ही सन्ध्या, उपासना और स्वाध्याय करते है। परिवार मे यज्ञ याग को दैनिक परम्परा को चलाये रखने का श्रेय उनके माता पिता को जाता है। डी० ए० वी० कालेज मे पढते समय ही वे समाज सेवा मे जुड गये थे। १९६९ मे जब वे गोहाटी मे आल इण्डिया रेडियो मे सेवारत थे, वहा भी आर्यसमाज के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा की। उनका

(शेष पृष्ठ २ पर)

प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल | व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल | सम्पादक—पं० यशपाल सुधांशु एम० ए०

आरोग्य पथ

मेथी के रोग निवारक गुण

-- डा० अजीत मेहता

मेथी के बीज में अद्भुत रोग-निवारण क्षमता के कारण स्वदेशी चिकित्सा मे उसका एक विशिष्ट स्थान है। स्वाद मे कडवी और तेज होने पर भी यह स्वास्थ्यप्रदायक गुणों की दृष्टि से अमृत के सामान है। यह उष्ण (गर्म) रूक्ष (शरीर की चर्बी और चिकनाई घटाने वाली) लघु (पाचन मे हल्की और शरीर को हल्का करने वाली) गुणो से युक्त होने के कारण आव नाशक, कफ नाशक और वातनाशक है। मेथी वातवाहिनी नाडियो को जडता, मदता और जकडन को ल्युब्रिकेटिंग तेल की भांति दूर शरीर के भीतरी अगो की गतिशीलता को बनाये रखते हुए शरीर को दीर्घायु बनाती है।

मेथी अपने उष्ण-लघु-रूक्ष गुणों के कारण आंत्र का सम्यक् पाचन करके आंतो रक्तवाहिनियो और अन्य अवयवो मे से एकत्र चिकनाई और विषों को बाहर निकाल देती है, जिससे आतो की सूजन (कोलाइटिस), अगो की शोथ और पौष्टिक एवं गैस्ट्रिक अल्सर आदि बीमारियां दूर होती है। पोषक तत्व चूसने वाले छिद्र पुन. कार्यक्षम बनने से पाचन क्रिया सुधरती है इसके सेवन से रसादि का निर्माण ठीक से होने लगता है। मल बधकर आने लगता है। रक्त मे कोलोस्ट्रोल (खून की चर्बी) का उच्च स्तर सतुलित होता है। मोटापा घटता है। मधुमेह (डायबिटीज)एवम् उच्च रक्तचाप मे लाभ होता है। मेथी लकवा एव हृदय-रोगों मे शरीर को बचाता है।

मेथी स्त्रियों के लिए विशेष हितकारी है। मेथी गर्भाशय की शुद्धि भी करती है तथा उसे बल प्रदान भी करती है। माहवारी की गडबडिया भी दूर करती है। प्रसूतावस्था मे शिथिल बने हुए अगो को दृढ करने तथा गर्भावस्था मे सचित गदगी को दूर करने के लिए मेथी का सेवन विशेष रूप से लाभप्रद है। मेथी मा के स्तनो मे दूध के प्रवाह की रुकावटो को हटाकर शिशु के के लिए पर्याप्त दूध उपलब्ध कराने मे सहायक होती है।

मेथी के पोषक तत्वो से भरपूर होने के कारण इसे सामान्य शक्तिवर्धक (टानिक) के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। कैलशियम, फास्फोरस लौह, सोडियम, पोटाशियम के अतिरिक्त मेथी में वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेटस होते हैं। विटामिन 'ए' और 'बी' समूह के कुछ विटामिनो की दृष्टि से मेथी धनी है। मस्तिष्क के लिए उपयोगी तत्त्व लेसीथीन भी मेथी मे प्रचुर मात्रा में मिलता है। मस्तिष्क के ज्ञानतन्तुओं को बल देने वाला तत्त्व 'ट्रस्मेथाईलेमिन' जो कि मछली के तेल मे मिलता है, मेथी के बीजों मे भी पाया जाता है। शाकाहारियों के लिए यह मछली के तेल का अच्छा विकल्प है, क्योंकि इस का रासायनिक सघटन मछली के तेल से मिलता-जुलता है।

विविध रोग निवारण के लिए स्वदेशी चिकित्सा में मेथीदाना का प्रयोग कई प्रकार से किया जाता है। परन्तु सामान्य और निरापद सेवन-विधि है उसका काढा या चाय बनाकर पीना।

पाच ग्राम मेथीदाना (दरदरा कुटा हुआ) २०० ग्राम पानी में डाल कर धीमी आंच पर उबाले। लगभग दस मिनट उबलने के पश्चात् जब पानी १५० ग्राम रह जाए तब बर्तन आग पर से नीचे उतार लें। पीने लायक गर्म रहने पर इसे स्वच्छ कपडे से छानकर चाय की भांति इस काढे को पीये। जो व्यक्ति मेथी का काढा पीने में दिक्कत महसूस करे वे इसमे थोडा दूध और गुड या शहद मिलाकर ले सकते हैं। मेथी का काढा या चाय दिन मे दो बार, प्रथम सवेरे खाली पेट नाश्ते से कम से कम आधा घटे पहले और रात्रि में सोने से पहले अवश्य पीना चाहिए। यदि पांच-सात दिन मे कुछ आराम महसूस हो और अनुकूल प्रतीत हो तो रोग आराम हो जाने तक या चार-छः सप्ताह विशेषकर सर्दियों मे इसे सेवन करना उपयुक्त रहता है।

जो रोगी अत्यन्त दुर्बल व कृशकाय हो चक्कर आने की बीमारी से पीडित हो तथा लगातार धातु-क्षय के कारण जिनका शरीर सूखकर मात्र हड्डियो का ढाचा रह गया हो, उन्हें मेथी का सेवन करना चाहिए।

जिन व्यक्तियों को गर्म वस्तुए अनुकूल नही पडतीं तथा जिनके शरीर मे रूखापन व खुश्की अधिक रहती हो, या जिनके शरीर में आग की लपटों जैसी जलन महसूस होती हो, उन्हें मेथी का प्रयोग करना उचित नही। तेज गर्मी के मौसम में भी मेथी का सेवन वर्जित है।

पित्त प्रकृति वालो को या जिन्हें रक्त पित्त, रक्त प्रदर, खूनी बवासीर, नकसीर मूत्र मे रक्त आना या शरीर में कही से भी खून गिरने की शिकायत हो उन्हे मेथी का प्रयोग खूब सावधानी पूर्वक करना करना चाहिए।

सम्पादक के नाम पत्र

भारत को खण्डित करने के तीन भयंकर षड्यन्त्र

पाकिस्तान की शह पर पजाब में आतकवादियों के हिंसक काण्ड से तो हर राष्ट्रवादी विचलित है ही। अब बिहार मे मिनी पाकिस्तान बनाने की साजिश चल रही है। ११ दिसम्बर १९८६ के दैनिक जनसत्ता ने पूरे पृष्ठ पर घुसपैठ की गतिविधियो का लेखा जोखा दिया है। एक गैर सरकारी आकलन के मुताबिक पूरे बिहार मे लगभग १० लाख से भी अधिक बगला देशी रस-बस चुके हैं, बिहार में घुसपैठ अब कोई दबी-छुपी बात नही है। विधान सभा मे खुद सरकार मान चुकी है कि घुसपैठ हो रही है। पर राजनीतिक स्वार्थों के कारण इसे रोकने का दायित्व कोई नही लेना चाहता। स्थिति इस कदर विस्फोटक हो गई है कि इन बंगलादेशी घुसपैठियों ने अब लूटमार कर अपहरण, बलात्कार और तस्करी भी शुरू कर दी है और ये विदेशी घुसपैठिए मजे कर रहे हैं। पूर्वाञ्चल में ईसाई मिशनरियों के बढते प्रभाव के कारण राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को गम्भीर खतरा पैदा हो गया है। नागालैण्ड तथा मिजोरम मे भारी धर्म-परिवर्तन करा देने वाले ईसाई मिशनरियों ने अब पूर्वाचल मे अपना अधिक प्रभाव कर लिया है। वर्षों भूमिगत रहकर राष्ट्रविरोधी कार्य करने वाले लालडेगा को मिजोरम का मुख्यमत्री बना दिया गया अब वह ग्रेटर मिजोरम की माग कर रहा है, उसकी इच्छा है कि असम, मणिपुर आदि क्षेत्र भी ग्रेटर मिजोरम मे शामिल किए जाए।

विचारणीय विषय तो यह है कि कही धर्म के साथ राष्ट्रीयता तो नही बदली जा रही। दैनिक 'प्रभात' मेरठ के सम्पादक श्री वि० स० विनोद ने १५।१२।८३ के अग्रलेख में गोरखालैण्ड आन्दोलन को ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रेरित षड्यन्त्र बताया है। उनका मत है कि ईसाई मिशनरियां गोरखालैण्ड को नागालैंड, मिजोरम आदि ईसाई राज्यों से मिलाकर भारत के उत्तर पूर्व में एक ऐसी पट्टी बनाना चाहते हैं जो नागालैंड से चलकर गोरखालैण्ड होती हुई बिहार खण्ड तक पहुंचे जो ईसाई पादरियों द्वारा प्रभावित हो। इन षडयन्त्रों के खिलाफ राष्ट्रवादी सगठन कब चेतेंगे।

नरेन्द्र अवस्थी पत्रकार
आर्यसमाज श्रीनिवास पुरी

(पृष्ठ १ का शेष)

राजेन्द्र दुर्गा

कहना है कि सस्था मे किसी पद पर निर्वाचित हो जाने का मतलब पदाधिकारी नही होता बल्कि इसके लिए उपयुक्त शब्द सेवाधिकारी है। मतलब और अधिक सेवा कार्य करने का कर्तव्य निभाने का व्रती। ऐसा अधिकारी उसे ही बनाना चाहिए जो अपने समय का और धन का कम से कम शतांश भाग तो वैदिक धर्म के लिए दे सकता हो। श्री राजेन्द्र दुर्गा के महामन्त्री निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई।

राष्ट्रीय एकता के हामी : काकोरी के शहीद

—ब्रजभूषण दूबे

★

यदि देशहित मरना पड़े
मुझको सहस्रों बार भी ।
तो भी न मैं इस कष्ट को
निज ध्यान लाऊं कभी ॥
हे ईश भारतवर्ष में
शत बार मेरा जन्म हो ।
कारण सदा ही मृत्यु का
देशोपकारक कर्म हो ॥

उपर्युक्त प्रतिज्ञा शाहजहांपुर उत्तर प्रदेश के महान् बलिदानी प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' की थी जिन्होंने उत्तर प्रदेश में 'हिन्दुस्थान रिपब्लिकन एसोसिएशन' का सगठन करके अंग्रेजी शासन के विरुद्ध स्वाधीनता की लड़ाई क्रांतिकारी ढग से तेज की थी। वर्तमान शताब्दी के तीसरे दशक में देश की आजादी के लिए सिर पर कफन बांध कर निकले नौजवानों की फांकाकशी जब प० बिस्मिल से न देखी गई तो उन्होंने चन्द्रशेखर 'आजाद' अशफाक उल्ला खां आदि के साथ रेलगाडी से जा रहे सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई और उस योजनानुसार ६ अगस्त १९२५ की रात में आलम नगर तथा काकोरी स्टेशनों के बीच ८ डाउन पेसिंजर ट्रेन को रोककर सरकारी खजाने को उ. प्र. के क्रातिकारियों ने लूट लिया था। इतिहास में इसे 'काकोरी ट्रेन डकैती कांड' नाम से लिखा गया है।

क्रांतिकारियों के पुराने रिकार्ड तथा कुछ नये क्रांतिकारियों की गलतियों से क्रातिकारी दल के कुछ सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये तो कुछ कमजोर साथियों ने अन्य सदस्यों के नाम बता दिये और इस प्रकार एक वर्ष के भीतर प० 'बिस्मिल' सहित अनेक क्रांतिकारी जेल पहुच गये। उन दिनों साधन हीन देश भक्तों का मनोबल ऊंचा करने के लिए 'कविता' और 'गीत' प्रमुख रूप से अपनाये गये। काकोरी-केस के क्रांतिकारी जेल की कोठरियों में 'सरफरोशी की तमन्ना' वाला गीत गाते थे, कचहरी जाते समय सरफरोशी का मंत्र जपते थे और एक दूसरे से मिलने या बिछुड़ने पर भी इसी मंत्र का सम्मिलित गान करते थे। काकोरी-केस के साथ सरफरोशी की तमन्ना वाला यह गीत केवल डेढ़ वर्ष में 'वंदे मातरम्' के समान समस्त देश में लोकप्रिय हो गया।

सरफरोशी की तमन्ना
अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना
बाजुए कातिल में है।
रहबरे राहे मुहब्बत
रह न जाना राह में,
लज्जते सहरान वर्दी
दूरी-ए मंजिल में है।
अब न अगले वलवले हैं और
न अरमानों की भीड़,
अब तो मिट जाने की हसरत
इक दिले 'बिस्मिल' में है।
आज मकतल में यह कातिल
कह रहा है बार-बार,
क्या भला शौके शहादत भी
किसी के दिल में है।
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ-आसमा,
हम अभी से क्या बतायें
क्या हमारे दिल में है।
ऐ शहीदे, मुल्को-मिल्लत
मैं तेरे ऊपर निसार,
अब तेरी हिम्मत का चर्चा
गैर की महफिल में है।

काकोरी-केस लखनऊ की एक विशेष अदालत में जनाब एनुद्दीन के अधीन लगभग डेढ़ वर्ष तक चलता रहा। उस केस में 'रिवाल्वर' नाम से भाग लेने वाले चन्द्रशेखर 'आजाद' को पुलिस गिरफ्तार न कर सकी और आजाद ने भूमिगत अवस्था में रहकर अपने साथियों को छुड़ाने की योजना बनाई, किन्तु अन्तत वह कार्यरूप में परिणत न हो सकी। आशा और निराशा की ऊहापोह में डूबे बन्दी जीवन के उन्हीं संवेदनशील क्षणों में पं० बिस्मिल ने अपनी मनोव्यथा को एक गीत के माध्यम से प्रकट किया था। जनाब ऐनुद्दीन की आज्ञा से यह गीत 'अवध अखबार' में छापा गया—

मिट गया जब मिटने वाला
फिर सलाम आया तो क्या ?
दिल की बरबादी के बाद
उनका पयाम आया तो क्या ?
काश अपनी जिन्दगी में
हम ये मंजर देखते,
यूं सरे तुरबत कोई महशर
खरान आया तो क्या ?
मिट गई जुलमा उम्मीदें,
जाता रहा सारा ख्याल,
उस घड़ी फिर नामावर
लेकर पयाम आया तो क्या ?
ये दिले नाकाम मिट जा
अब तो कूचे यार में,
फिर मेरी नाकामियों के बाद
काम आया तो क्या ?
आखिरी शब दीद के काबिल
थी बिस्मिल की तड़प,
सुबह दम गर कोई भी
बाला-ए-बाम आया तो क्या ?

काकोरी केस के फैसले में अंग्रेज सरकार के सुविधा भोगी स्पेशल जज हैमिल्टन ने अपने अन्नदाताओं के राज्य की सुरक्षा को मद्देनजर रखते हुए ६ अप्रैल १९२७ को अपने फैसले में प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' को उत्तर भारत का 'सब से खतरनाक क्रांतिकारी' घोषित करते हुए फांसी की सजा सुना दी। पंडित जी के सहायक के रूप में अशफाक उल्ला खा को भी फांसी का हुक्म हुआ ठाकुर रोशनसिंह तथा राजेन्द्र लहरी को भी फांसी की घोषणा की गई। १४ अन्य क्रांतिकारियों को देशभक्ति के अपराध में लंबी लंबी सजाएं दी गयी।

फांसी की सजा प्रिवी कौंसिल से भी बहाल रही। प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने जेल में अस्थिरता तथा मानसिक अशांति के शोक-समन्वित उन तूफानी क्षणों में भी अपूर्व मानसिक सुतुलन, धैर्य तथा वैचारिक स्थिरता का परिचय देते हुए अपनी 'आत्मकथा' लिखकर जेल से बाहर गोरखपुर के पत्रकार श्री दशरथ प्रसाद द्विवेदी के पास भिजवा दी। उसे कानपुर के अमर शहीद गणेश शकर 'विद्यार्थी' ने सर्वप्रथम प्रकाशित किया और प्रकाशन के बाद वह पुस्तक जब्त कर ली गई। 'बिस्मिल' की आत्मकथा की तुलना नाजी जर्मनी के गेस्टापो के अत्याचारों के शहीद वीर जूलियस फूचिक की अमर कृति "नोट्स फ्राम दि गैलोज" से की जाती है।

एक ही केस में सजा पाये राजेन्द्र लाहिड़ी को अपने तीन साथियों से आगे १७ दिसम्बर १९२७ को गोंडा जेल में फांसी लगी और वह अंग्रेजी अन्याय के विरुद्ध पंडित 'बिस्मिल' के शब्दों में यह कहते शहीद हो गये।

मरते बिस्मिल, रोशन, लाहरी,
अशफाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैकड़ों
उनके रुधिर की धार से॥

क्रांतिकारी ठाकुर रोशनसिंह एक धनी परिवार के जिन्दादिल आदमी थे और पुनीत भगवद् गीता को हाथों में लेकर १९ दिसम्बर १९२७ को वह इलाहाबाद जेल में यह कहते हुए फांसी के तख्ते की ओर बढ़े और शहीद हो गये।

जिन्दगी जिन्दादिली को
जान ऐ 'रोशन'।
वरना कितने मरे
और पैदा होते जाते हैं॥

कुरान शरीफ को लेकर उसी सुबह फैजाबाद जेल में शहीद होने से पहले हिन्दू मुस्लिम एकता के महान् समर्थक अशफाक उल्ला खा वारसी 'हसरत' ने यह शेर कहा था—

तग आकर हम भी
उनके जुल्म के बेदाद से।
चल दिये सू-ए अदम
जिन्दाने फैजाबाद से॥

ठाकुर रोशन सिंह तथा पठान खानदान के गर्वीले-गठीले युवक अशफाक उल्ला खा को अपने समर्पित जीवन, देशभक्ति तथा प्रभावशील व्यक्तित्व की महान् चुम्बकीय शक्ति से क्रांतिकारी बनाने वाले 'हिंदुस्तान-रिपब्लिकन-एसोसिएशन' के वरिष्ठ सगठनकर्ता प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने गोरखपुर जेल में प्रातःकालीन सध्या से निवृत्त होकर १९ दिसम्बर १९२७ को फांसी का फंदा चूमने से पहले अपनी अंतिम इच्छा निम्न शब्दों में व्यक्त की थी—

मालिक तेरी रजा रहे
और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूं न आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान
रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र तेरी ही जुस्तजू रहे'।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

यातनाएं भुगत रहीं ब्रह्माकुमारियां

सुभाष ओझा

प्रजापति ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय की सदस्याएं पुष्पा श्रीवास्तव निवासी इंदौर एवं पद्मा गोयल मह द्वारा हलफिया बयान के साथ संस्था के इंदौर केन्द्र के कार्य-कलापों व केन्द्र निर्देशक के विरुद्ध लगाये गंभीर आरोपों के साथ पिछले कुछ समय मे इस संस्था मे चल रहे षड्यंत्र उजागर हुए हैं। इन दोनों शिष्याओं ने हलफिया बयान देकर प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी से जांच की मांग की है।

इन दोनों शिष्याओं के अलावा एक शिष्य सुरेन्द्र जैन ने प्रधानमंत्री से शिकायत करते हुए कहा है कि इंदौर के केन्द्र निर्देशक के इशारे पर उन्हें जान से मारने के प्रयास भी किये गये। यह सारा विवाद ब्रह्माकुमारी संस्था मे कार्यरत लोगों के बीच ही चल रहा है जिसे सुलझाने में संस्था की सर्वेसर्वा प्रकाशमणि दादी भी असहाय हो चली हैं।

सन् १९६८ मे ब्रह्माकुमारियों का इंदौर केन्द्र स्थापित हुआ जिसके निर्देशक बनकर पंजाब से ओमप्रकाश आये। इंदौर क्षेत्र के अंतर्गत कुल ३० केन्द्र संचालित हैं जिनके सर्वेसर्वा ओमप्रकाश ही हैं। लगभग २० वर्षों के अपने कार्यकाल मे उन्होंने अपनी शक्ति इतनी बढ़ा ली है कि इन केन्द्रों में कार्यरत ब्रह्माकुमारों व ब्रह्माकुमारियों के पास सिवा इसके कोई विकल्प नहीं है कि वे उनकी हां मे हां मिलाकर काम करते रहें। यही कारण है कि इन केन्द्रों के पनप रहे असंतोष का सार्वजनिक इजहार अभी तक नहीं हो पाया।

दो ब्रह्माकुमारियों ने ओमप्रकाश के आचरण पर आपत्तियां की व इसकी शिकायतें माउण्ट आबू करने लगी और यहीं से इनकी यातना की दास्तान शुरू होती हैं। अपनी शिकायत मे पुष्पा श्रीवास्तव उर्फ ब्रह्माकुमारी पुष्पा उम्र ४२ वर्ष ने लिखा है कि १६ वर्ष पूर्व वे संस्था में आई तथा विगत १३ वर्षों से ओमप्रकाश शर्मा के अधीनस्थ विभिन्न केन्द्रों मे काम कर रही हूं। उनका आरोप है कि ओमप्रकाश ने संस्था के नियमों व सिद्धांतों को ताक मे रखकर अपने अधीन समर्पित अनेक ब्रह्माकुमारी बहनों का जीवन बर्बादी के कगार तक पहुंचा दिया है। जो भी इनके गलत कार्यों का विरोध करता है उसे अपनी विशेष बहनों व अन्य समर्थकों के माध्यम से मारपीट करवाकर, उन पर गुंडे छोडकर आतंकित किया जाता है तथा उन पर अश्लील आरोप लगाकर संस्था से निकालने का प्रयास किया जाता है। ब्रह्माकुमारी बहनों का जेवर व नकद राशि घर से लाकर समर्पित करने को बाध्य किया जाता हैं। पुष्पा ने कहा कि संस्था में समर्पण के समय मैंने १० तोला सोना, २५ हजार नकद व ८ हजार का सामान दिया था जिसका कोई हिसाब किताब नहीं दिया गया और न ही उसकी वापसी ही की जाती। नीमच सेवा केन्द्र में १९८३ मे नियुक्त होने के बाद मे इंदौर मे भवन निर्माण हेतु ओमप्रकाश के दबाव में ७५ हजार रु० की सामग्री भिजवाई। उसके बाद जब नीमच से राशि बाहर नहीं भेजने का तय किया गया तबसे यातनाओं का दौर चल पडा। नीमच केन्द्र के सहयोगी सुरेन्द्र जैन पर गुंडों द्वारा प्राणघातक हमला करवाया गया तथा उनका तबादला १५० किलोमीटर दूर करवा दिया गया जबकि वे प्राथमिक शाला मे मामूली शिक्षक हैं। इसी दौर मे मुझे इंदौर बुलाकर तरह तरह की अमानवीय यातनायें दी गई। अपने भाई के हस्तक्षेप के बाद मैं वहां से मुक्त हो सकी। वहां से सीधे माउण्ट आबू जाकर संस्था की प्रमुख प्रशासिका दादी प्रकाशमणि को सारा हाल सुनाया। उन्होंने समझा बुझाकर मुझे नीमच केन्द्र प्रभारी बनाकर वापस भेजा। वहां आने पर ओमप्रकाश ने ६ ब्रह्माकुमारी नीमच भेजीं जिन्होंने मुझे कैद कर यातनाए दी। यहां तक कि गुंडों से हमला भी करवाया गया। बाद में मुख्य प्रशासिका ने नीमच केन्द्र को इंदौर से हटाकर सीधे माउण्ट आबू के अधीनस्थ कर लिया लेकिन ओमप्रकाश की आतंकवादी कार्रवाइयां जारी हैं।

उल्लेखनीय है कि पुष्पा श्रीवास्तव व सुरेन्द्र जैन पर हुए हमले की बाकायदा पुलिस रिपोर्ट दर्ज है तथा पुलिस ने एक हमलावर को भी पकडा है लेकिन ओमप्रकाश से इस पूरे मामले में पूछताछ भी नहीं की गई है।

दूसरी ब्रम्हाकुमारी पद्मा गोयल ने अपनी शिकायत में कहा कि १० वर्ष पूर्व संस्था में जब आई तो जीवन निर्वाह के नाम पर मेरे माता पिता द्वारा ११ तोला सोना, १० हजार नकद, एक स्वेटर बुनने की मशीन, दो गैस चूल्हे सिलेंडर सहित अन्य सामान अमानत के रूप मे दिये गये थे जिन्हें मांगने पर वापस देने का वादा किया गया था।

२ अक्टूबर १९८५ को मुझे एक पुडिया देकर कहा गया कि इसे रोटी में मिलाकर पुष्पा को खिला दो। मुझे शक हुआ क्योंकि यह सुन चुकी थी कि इसके पूर्व ब्रह्माकुमारी प्रकाश को जहर देने का प्रयास किया गया था। इसी कारण ऐसा करने से मैंने मना कर दिया। बस इसके साथ ही मुझे भी यातनाओं का शिकार बनाया जाने लगा। १९६८ में जब मैं बुरी तरह बीमार हो गई थी तब मुझे तडप कर मरने के लिए अकेला छोड दिया गया। तब मजबूर होकर मुझे घर लौटना पडा, तब मेरा इलाज हुआ और मैं बच पाई।

नीमच केन्द्र के ही भ्राता सुरेन्द्र जैन पर हमला करवाने का उल्लेख ऊपर की शिकायतों में है ही। इन शिकायत व विवाद के मूल में जहां ब्रह्माकुमारी संस्था की कार्यप्रणाली है वहीं इंदौर क्षेत्र के निर्देशक ओमप्रकाश शर्मा की महत्वाकांक्षा।

ब्रह्माकुमारी केन्द्रों के संचालन के लिये तथा निर्माण आदि के लिये राशि मुख्यालय से प्राप्त नहीं होती वरन् इसकी उगाही स्थानीय स्तर पर ही की जाती है। म० प्र० दो क्षेत्रों-इंदौर भोपाल में बटा हुआ है। इंदौर केन्द्र के अन्तर्गत ३० सेवा केन्द्र संचालित हैं। क्षेत्र के निर्देशक द्वारा इन सेवा केन्द्रों पर अधिकाधिक राशि भेजने के लिये दबाव डाला जाता है। विवाद व यातनाओं की शुरूआत तभी होती है जब सेवा केन्द्रों के प्रभारी यह राशि भेजने में कोताही बरतते हैं या हिसाब पूछने की जुर्रत करते हैं। यह हिमाकत अभी तक केवल नीमच सेवा केन्द्र के प्रभारियों ने की जिसका परिणाम वे भोग रहे हैं।

इंदौर क्षेत्र के अंतर्गत संचालित ३० सेवा केन्द्रों में कुल ६० बहनें कार्यरत हैं। इनमें से पिछले कुछ वर्षों में ८७ बहनें संस्था छोडकर अपने अपने घरों में वापस चली गई जिनमें से ५ फिर वापस संस्था में लौट आई। संस्था से वापस जाने वाली ब्रह्माकुमारियों की यह संख्या ही निर्देशक ओमप्रकाश पर लगे आरोपों की सत्यता को उजागर करती है।

ओमप्रकाश शर्मा पर यह भी आरोप है कि उन्होंने पंजाब से ही बुलाकर अपनी एक विश्वस्त सहयोगिन ब्रह्माकुमारी आरती भारद्वाज को क्षेत्र प्रभारी बना लिया है तथा दोनों मिलकर पूरे म० प्र० मे अपना साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। इन्हीं प्रयासों के तहत भोपाल क्षेत्र के अधीन संचालित सेवा केन्द्रों को बंद कराने के लिए वहां कार्यरत प्रभारियों को डराने धमकाने का क्रम जारी है। यदि ये सेवा केन्द्र बंद हो जाते हैं तो इंदौर के केन्द्र खोल दिये जायेंगे तथा ओमप्रकाश का साम्राज्य फैलता जायेगा।

इस पूरे प्रकरण मे सवाल यही उठता है कि सारे विवाद से वाकिफ होने के बाद संस्था की प्रमुख प्रशासिका प्रकाशमणि जी भी खामोश असहाय क्यों हैं? यह शायद बहुत कम लोगों को पता होगा कि ब्रम्हाकुमारी संस्था पंजीकृत संस्था नहीं हैं। यानी ब्रह्माकुमारी प्रजापिता विश्वविद्यालय के नाम से संस्था संचालित करने के लिये मुख्यालय की अनुमति आवश्यक नहीं यही वजह है कि मुख्य प्रशासिका यदि ओमप्रकाश शर्मा को संस्था से निष्कासित करती हैं तो वे स्वयं का संस्था इसी नाम से ही चला लेंगे। इस विवाद मे मुख्य प्रशासिका का धर्मसंकट यही है कि चंद ब्रह्माकुमारियों का पक्ष लेकर वे ओमप्रकाश शर्मा के अधीन बसे साम्राज्य को अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहती, भले ही ब्रह्माकुमारियों की शिकायत कितनी भी सही हो।

वर्तमान में स्थिति यह है कि ब्रह्माकुमारी संस्था पर जिसका जोर चलेगा, वहां काबिज रहेगा। जिसे यह सब गवारा नहीं वे अपनी राह बदल सकते हैं। कुल मिलाकर प्रजापति ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय में ईश्वरीय साधना नहीं बल्कि धन सम्पत्ति व साम्राज्य विस्तार का संघर्ष चल रहा है जिसे बचाये रखने की विवशता ने मुख्य प्रशासनिका तक को खामोश कर दिया है।

मादक पदार्थ धीमा जहर हैं

मेहर चन्द कम्बोज

मनुष्य अनेक प्रकार के नशीले पदार्थों का सेवन करता है। ये सभी नशीली वस्तुए शरीर पर बहुत बुरा प्रभाव डालती हैं कई बार तो ये मनुष्य को मौत के घाट भी उतार देती हैं। प्रयोग की दृष्टि से नशीले पदार्थों को तीन वर्गों में बाँटा गया है—

१. गैसीय मादक पदार्थ—ये पदार्थ तम्बाकू के रूप में प्रयोग किये जाते है। तम्बाकू कई प्रकार से प्रयोग किया जाता है। जैसे बीडी, सिगरेट, चुरुट, हुक्का अथवा वैसे ही चबाकर। तम्बाकू अन्दर निगला जाए अथवा खाया जाए या इसका धूए के रूप मे सेवन किया जाए यह हर दशा मे खतरनाक साबित होता है। तम्बाकू में 'निकोटिन' नाम का पदार्थ होता है। जो गले तथा फेफडों को प्रभावित करता है। यही नही इसके कुप्रभाव के कारण खासी, तपेदिक तथा दमे जैसी बिमारिया भी हो जाती हैं। तम्बाकू के सेवन से हृदय की धडकन बढ जाती है। दम फूलने लगता है और पाचन क्रिया मे बाधा पडती है। मुह, होठ तथा जीभ पर कैंसर अधिकतर धूम्रपान करने वालो को ही होता है। कई बार तो धूम्रपान करने वालों की लापरवाही से भयकर आगजनी की दुर्घटना हो जाती है जो बहुत ही खतरनाक साबित होती हैं अत तम्बाकू बहुत ही हानिकारक है और हमें इसके सेवन को त्याग देना चाहिए।

२ मादक पेय पदार्थ—इस वर्ग में ह्विस्की, ब्राडी, बीयर, ताडी, दारु इत्यादि आती हैं। इनमे से कुछ तो इतनी महगी होती हैं कि उनके सेवन से मध्यम वर्ग के व्यक्ति की आर्थिक दशा कुछ समय बाद नाजुक हो जाती है। विभिन्न प्रकार की मदिराओ मे विभिन्न अनुपात मे अल्कोहल होती है और इसकी मात्रा के अनुरूप ही मदिरा की श्रेष्ठ माना जाता है। अल्कोहल से कुछ समय तो शक्ति, सन्तोष तथा सुख का अनुभव होता है जो शीघ्र ही मानसिक तनाव, उदासीनता तथा शिथिलता में बदल जाता है। मदिरा का सेवन करने से मानसिक थकान, उदासीनता, अनियमित जीवन, कुपोषण एव मानसिक असन्तुलन जैसे विकार हो जाते हैं। अल्कोहल छोटी आत मे जाने के बाद सीधी खून में मिलती है जिसके कारण रक्तचाप सामान्य से तेज हो जाता है और उत्तेजना से शरीर सामान्य रूप से सवेदनाए ग्रहण नही कर सकता क्योंकि मस्तिष्क एव समस्त तन्त्रिका तन्त्र की कार्य क्षमता घट जाती है। आंखों की नन्ही-नन्हीं पेशियों का खिचाव बढ जाता है जिसके कारण दृष्टि कमजोर हो जाती है। अधिक मद्यपान से जिगर गुर्दे, फेफडों, आमाशय तथा रक्त वाहिनियों पर बुरा असर पडता है और शरीर निर्बल हो जाता है तथा आयु घट जाती है। अधिक मद्यपान से पाचन क्रिया बिगड जाती है। तथा आतो मे फोड हो जाते है। अत कई प्रकार के भयानक रोग जैसे कैंसर, तपेदिक, हैजा, निमोनिया इत्यादि आदमी को घेर लेते हैं। मदिरा पान करने वाले के घर मे हर समय झगडा मचा रहता है। इस प्रकार का आदमी सामान्यता बहुत से बुरे कार्य भी करने लगता है। जैसे चोरी करना, जुआ खेलना, वेश्यागमन, पत्नी तथा बच्चो को पीटना एव हिंसात्मक कार्य करना। इसके सेवन के कारण तो सम्मान प्राप्त एव धनी परिवार भी नष्ट हो गए हैं। अत मदिरापान हमे पूरी तरह से नष्ट कर देता है। इसलिए हमें इसका त्याग कर देना चाहिए और भूल कर भी इसके पास नही जाना चाहिए।

३ अन्य मादक पदार्थ—ये खाये जाते हैं जैसे अफीम, कोकीन, एव भाग इत्यादि। इनके सेवन पर वैधानिक निषेध होने पर भी इनका कुछ लोग छुपकर प्रयोग करते हैं। इस प्रकार के लोगो का रग पीला, श्रवण शक्ति कमजोर एव शरीर दुर्बल होता है ये लोग भी नतिक, मानसिक एव सामाजिक दृष्टि से गिरे हुए होते हैं।

आजकल चेतना को सुन्न करने के लिये रासायनिक गोलिया भी लोग प्रयोग करते हैं। इनको चिन्ता से बचने एव नीद लाने के लिये प्रयोग किया जाता है इनका प्रयोग भी अधिकतर घातक होता है जो धीरे धीरे शरीर को खोखला करता रहता है। 'कोकीन' कोका नामक पौधे की पत्तियो से बनता है। इसका प्रयोग करने वाला व्यक्ति अपनी विचार शक्ति खो बैठता है। वह हिंसात्मक कार्य भी कर देता है और उसे वास्तविक तथा भ्रमात्मक स्थितियों का ज्ञान नही रहता।

अन्त में यह निष्कर्ष निकलता है कि मादक पदार्थ एक धीमे जहर का कार्य करता है जिसके कारण इसका सेवन करने वाला आदमी अप्रत्यक्ष रूप मे केवल अपनी ही आत्महत्या नही करता बल्कि दूसरो की हत्याओ का भी जिम्मेदार होता है। अत हमे स्वास्थ्य की रक्षा, व्यक्तिगत, पारिवारिक एव सामाजिक विकास के लिए इनका प्रयोग नही करना चाहिए।

आओ हम सब प्रतिज्ञा करे कि इन मादक पदार्थों का सेवन नही करेंगे।

□

(पृष्ठ १ का शेष)

हरबिलास शारदा

नही की जा सकती। इससे लडके लडकियों के स्वाभाविक विकास मे बाधा उत्पन्न होती है। इस प्रकार के विवाह से उत्पन्न सतान भी स्वस्थ नही होती। यदि हमे पश्चिम के व अन्य देशो के साथ तरक्की करनी है और राष्ट्र को मजबूत बनाना है तथा स्वतत्रता प्राप्त करनी है तो बाल विवाह जसी कुरीति को परित्याग करना होगा। ब्रिटिश सरकार व धर्मगुरुओ का पर्याप्त सहयोग न मिलने के बावजूद सितम्बर १९२९ में यह कानून पास कर दिया गया और अप्रैल १९३० मे लागू हुआ। इसे शारदा एक्ट भी कहते हैं।

३ जून १८६७ को अजमेर के राजकीय महाविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष हरनारायण शारदा के घर मे हरबिलास शारदा का जन्म हुआ। बचपन से ही उन्हें किताबे पढने में रुचि थी। एक विधि विशेषज्ञ और समाज सुधारक के अलावा हरबिलास शारदा ने अनेक पुस्तके भी लिखीं। इनमे अजमेर—हिस्टोरिकल एण्ड डेस्क्रेप्टिव, हिन्दू सुपीरियर्टी, महाराणा कुभा, महाराणा सांगा और स्वामी दयानद सरस्वती आदि मुख्य हैं। २० जनवरी, १९५५ को दीवान बहादुर हरबिलास शारदा का अजमेर मे निधन हो गया, किन्तु उनके सत्कार्यों से नई पीढी को सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी।

(पृष्ठ १ का शेष)

महाशय धर्मपाल

पुरी मे एक विशाल नेत्र अस्पताल कार्यरत है जिसमे हजारो दुखियो के दु:खहरण का कार्य महाशय जी के शुभ सकल्पों के कारण हो रहा है। श्री महाशय चुन्नीलाल चेरिटेबल ट्रस्ट के अन्तर्गत एक चलता फिरता चिकित्सालय दिल्ली के ग्रामीण तथा पिछडी बस्तियो मे नि:शुल्क चिकित्सा सेवा का कार्य कर रहा है। श्री महाशय जी ने कई एक शिक्षण सस्थाए भी स्थापित की हैं। पिछले ६ वर्षो से उनको अध्यक्षता में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली दिनों दिन उन्नत होती हुई प्रशस्ति प्राप्त कर रही है। हम मान्य महाशय जी की शतायु होने की मगल कामना करते हैं।

(पृष्ठ ३ का शेष)

काकोरी के शहीद

गीत गाते हुए शहीद होने वाले काकोरी-केस के उन वीर क्रांतिकारियो के बलिदान की मिसाल नही मिलती। उनके बलिदान को ५९ वर्ष बीत गये किन्तु उनका वह अमर बलिदान आज भी बेमिसाल बना हुआ जातीय एकता, साम्प्रदायिक-सद्भाव तथा उत्कट देश प्रेम की महान् प्रेरणा दे रहा है। काश देशवासी काकोरी के शहीदो के बलिदान से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय-एकता को मजबूत करने का संकल्प लेते।

कविता

जश्न मनाते आजादी का,
फिर भी कायम रोना है,
हिन्दी की मट्टी पलीत और
अंग्रेजी का सोना है।

गाधी जी के चेलों मे कुछ
अग्रेजी के पोषक थे,
यही रहा दुर्भाग्य देश का,
और यही एक रोना है॥

बहुत खो चुके नादानी मे
और नही अब खोना है,
तारीफो मे नेताओं की
समय नही अब खोना है।

नेताओं के वादे 'भूषण'
वादे ही रह जाते हैं,
करो हिन्दी की सेवा मिलकर
समय नही अब खोना है॥

—ब्रजभूषण दुबे—

समाचार

दूरदर्शन द्वारा देशभक्तों की अवहेलना

दिनाक २५।१२।८६ को महान् देश-भक्त व समता की त्याग-मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर आर्यसमाज द्वारा विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जो दिल्ली के प्रमुख बाजारों से होती हुई लाल-किले के सामने पार्क मे समाप्त हुई व एक विशाल जन सभा में बदल गई। जिसमे सभी मतावलम्बियों ने बड़े उत्साह से सहयोग दिया। श्री स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस के उस समय अध्यक्ष रहे जब अंग्रेजी शासन के जुल्म की सीमा न थी। यही युग पुरुष अंग्रेजी सेना की संगीनों के सामने चादनी चौक मे अपना सीना खोल कर सामने आया। जामा मस्जिद से एकता का पाठ पढाने वाला यही सन्यासी था। मोहनदास गांधी को महात्मा की उपाधि देने वाला यही वीर था।

दूरदर्शन द्वारा ऐसे महान् बलिदानी, सेनानी व तपस्वी के बलिदान दिवस का दिनाक २५।१२।८३ को रात्रि ८ ४० बजे से समाचारों में इसका प्रमाण न करना बडा ही खेद का विषय है और भारत जैसे धर्म निरपेक्ष राज्य में दूरदर्शन की पक्षपात पूर्ण नीति का द्योतक है।

अत आज रविवार दिनाक ४।१।८७ को यह सभा इस पक्षपात पूर्ण नीति की आलोचना व निन्दा करती है। सूचना एव प्रसारण मन्त्री से अनुरोध करती है कि वे इस मामले में छान-बीन कराये व दोषी अधिकारियो को दण्डित करे।

भारत के प्रधानमंत्री से भी आग्रह है कि वे स्वयम् इसमे हस्तक्षेप करें और भारत की छवि को खराब न होने दे।

मन्त्री
आर्यसमाज कालका जी

राजौरी गार्डन में रक्तदान शिविर

आर्यन क्लब राजौरी गार्डन नई दिल्ली की ओर से २१।२२।८६ को आर्यसमाज मन्दिर में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध जी ने किया। शिविर मे आर्य क्लब के ८० के लगभग सदस्यो ने अपने रक्त का दान दिया। इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस भी मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी आनन्द बोध जी, स्वामी आनन्द वेश जी, आचार्य विक्रम जी ने स्वामी जी के प्रति श्रद्धाञ्जली अर्पित की। आर्यन क्लब के सभासद जन कल्याण के कार्यों में बढ चढ कर भाग ले रहे हैं। क्लब आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली का युवक युवती विंग है। शिविर का का समाचार उसी रात टी०वी० पर भी प्रसारित किया गया था।

नन्दकिशोर भाटिया
मन्त्री
आर्यसमाज राजौरी गार्डन,
नई दिल्ली

आर्यसमाज पंखा रोड का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज का वार्षिक चुनाव दिनाक २१.१२.१९८६ को हुआ। सर्वसम्मति से चुने हुए पदाधिकारी इस प्रकार हैं:—

प्रधान—श्री रामकृष्ण सतीजा

उप प्रधान—सर्वश्री विद्यासागर मदान, गुरमुखराय दुग्गल एव सोमदत्त महाजन

मन्त्री—श्री केशव देव सूद

उप मन्त्री - सर्वश्री शिवकुमार मदान, नरेशचन्द्र पुरी, कृष्ण कात बत्रा

प्रचार मन्त्री—श्री प्रतापसिंह गुप्त

कोषाध्यक्ष—श्री हरिकिशनलाल गुलाटी

पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री जीवनदास वधवा

लेखा निरीक्षक—श्री प्रेमचन्द भण्डारी

भवदीय,
केशव देव सूद
मन्त्री

शुभ सूचना

स्वर्गीय पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर रोहतक (हरयाणा) के तत्वावधान में १०१ कुण्डों पर यजुर्वेद ब्रह्म पारायण यज्ञ अथवा राष्ट्रभृत यज्ञ १५ फरवरी १९८७ से २२ फरवरी १९८७ तक महात्मा दयानन्द जी सचालक तपोवन आश्रम देहरादून व रोहतक के ब्रह्मत्व मे कराया जावेगा।

१९ २०.२१ फरवरी को क्रमशः वेद सम्मेलन, यज्ञ सम्मेलन व राष्ट्र रक्षा सम्मेलन भी होगे, जिन मे आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान् अपने विचार देगें।

२१ फरवरी ८७ को प्रातः यज्ञ के उपरान्त इच्छुक महानुभावों को वानप्रस्थ आश्रम दीक्षा दी जावेगी। इच्छुक महात्मा दयानन्द जी से संपर्क करें।

२२ फरवरी ८७ को ९-३० बजे पूर्णाहुति के उपरान्त श्रद्धांजलियां और अन्त में ऋषि लंगर की सेवा भी होगी।

यज्ञ प्रेमी नर नारी भाग लेकर धर्म लाभ उठावें।

भोजन व निवास की व्यवस्था आश्रम द्वारा निःशुल्क होगी। अपने लिए ऋतु अनुकूल वस्त्र व बिस्तर अवश्य लावें।

यज्ञ मे भाग लेने वालों के लिए यज्ञ समय पीत वस्त्र धोती कुर्ता ब्लोज पहनने होंगे।

मन्त्री
प्रशान्त मुनि
वैदिक भक्ति साधन आश्रम
रोहतक

अपने गणतंत्र के महान आदर्शों

लोकतंत्र
समाजवाद
धर्म-निरपेक्षता
न्याय
स्वतंत्रता
समानता
भ्रातृत्व
सद्भावना
एकता
अखंडता
शांति
उन्नति
के प्रति समर्पित हैं

हम इनके प्रति सदा ही
वचनबद्ध रहेंगे

ओइम्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
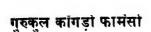
वर्ष ११ अंक १४ | रविवार १ फरवरी, १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | माघ २०४३ | दयानन्दाब्द—१६२
मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

३८वां गणतन्त्र दिवस सोल्लास सम्पन्न

शहीद जवानों को भावभोनी श्रद्धाञ्जलि

नई दिल्ली, २६ जनवरी। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने आज 'अमर जवान ज्योति' पर पुष्पाजलि अर्पित करके उन शहीद सनिको को भावभोनी श्रद्धाजलि अर्पित की, जिन्होंने देश के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर परेड शुरू होने से पूर्व प्रधानमन्त्री आज सुबह पहले इण्डिया गेट स्थित 'अमर जवान ज्योति' पर गए। रक्षामन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिह ने वहा उनकी अगवानी की। इस अवसर पर थलसेनाध्यक्ष जनरल कृष्णस्वामी सुन्दर जी, नौसेनाध्यक्ष एडमिरल आर० एच० ताहिलियानी और वायुसेनाध्यक्ष एयर चीफ मार्शल डेनिस ए० लाफोते के अलावा रक्षा राज्यमन्त्री श्री अरुण सिह और श्री शिवराज पाटिल भी उपस्थित थे। प्रधानमन्त्री ने जैसे ही शहीदो को श्रद्धाजलि अर्पित की, वहा खडे सेना के तीनो अगो की टुकडियो ने शहीदो के सम्मान मे अपने शस्त्र उल्टे कर दिये और बिगुलवादको ने अन्तिम सलामी धुन बजाई। अलकरण समारोह मे राष्ट्रपति महोदय ने कराची मे पॅन एम विमान अपहरण काड के दौरान यात्रियो को बचाते हुए जान देने वाली श्रीमती नीरजा मिश्र को मरणोपरान्त अशोक चक्र दिया। उन की मा श्रीमती रमा भनोट ने जब अपनी बहादुर बेटी के लिए यह पुरस्कार लिया तो राजपथ पर मौजूद हजारो लोगो की आखे नम हो गई।

गणतन्त्र दिवस पर भी पजाब धधकता रहा

प्रे० ट्र० के अनुसार पजाब मे एक रोडवेज की बस को आग लगा दी गई। एक शराब की दुकान को लूटा गया तथा उग्रवादियो ने आज गणतन्त्र दिवस के अवसर पर राज्यो के कई स्थानो पर खालिस्तानी झडे फहराये। इसके साथ ही उग्रवादियों ने गुरु रामदास सराय, स्वर्ण मदिर परिसर के घण्टाघर पर आधे जले राष्ट्रीय ध्वज तिरगा फहराये। स्वर्ण मन्दिर परिसर मे उग्रवादियो ने काला दिवस का आह्वान किया था। राष्ट्रीय ध्वज के अपमान के सिलसिले मे पुलिस ने देशद्रोह का मामला दर्ज किया है। स्वर्ण मदिर परिसर मे दर्जनो स्थानो पर खालिस्तानी झण्डे फहराये गये और भिडरावाले के समर्थन मे नारे लगाये गये। इसी प्रकार जालन्धर जिले मे ४ स्थानो पर खालिस्तानी झण्डे टगे मिले।

अग्रिम मोर्चे पर सेना भेजने का काम जारी

नई दिल्ली, २६ जनवरी। हाल मे रक्षा मत्रालय द्वारा पश्चिम सोमा पर पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था किये जाने के फंसले के सदर्भ मे भारतीय सैनिको को अग्रिम मोर्चे पर भेजे जाने का काम जारी है। इसके लिए देश के विभिन्न भागो से पजाब जाने वाली अनेक रेलगाडिया रद्द कर दी गई हैं।

आज रात यहा सरकारी सूत्रों से पता चला है कि सनिक पाक के साथ पजाब सीमा पर सुरक्षात्मक व्यवस्था की दृष्टि से भेजे जा रहे हैं किन्तु इसका युद्ध के खतरे में वृद्धि की आशका का कारण नही है। इस के लिए अनेक विशेष सैनिक रेलगाडियां विभिन्न इलाकों से सैनिको को लेकर पंजाब की सीमा पर जा रही हैं।

किन्तु यह स्पष्ट किया गया है कि तनाव खत्म करने के लिए पाकिस्तान से वार्ता के फैसले पर कोई फर्क नही पडा है।

सीमा पर पाकिस्तान की सेना द्वारा अग्रिम पक्ति पर आकर जमा हो जाने तथा आक्रामक रुख अपनाए जाने की जानकारी मिलने पर रक्षा मन्त्रालय ने पिछले सप्ताह पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था किये जाने की घोषणा की थी। साथ ही तत्काल उपलब्ध सेना को सीमा पर ले जाया गया था।

बताया जाता है कि सेना मेरठ आदि इलाकों से पजाब सीमा पर पूर्व नियत कार्यक्रम के अनुसार भेजी जा रही है। अबोहर-फाजिल्का इलाके मे पाक सेना का काफी जमाव है। भारत ने वहा सुरक्षात्मक प्रबध मजबूत किए हैं।

अधिकृत सूत्रो से पता चला है कि सैनिको को पजाब की सीमा पर भेजे जाने का प्रबन्ध पाकिस्तान के

(शेष पृष्ठ ७ पर)

राष्ट्रपति शासन लागू कर देना चाहिए

—स्वामी आनन्द बोध

दिल्ली, २४ जनवरी। पजाब की सीमा पर फौजी कार्यवाही एव पाकिस्तानी आक्रमण से भारत सरकार द्वारा किये जा रहे सुरक्षा प्रबन्धो की सराहना करते हुए सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने राजीव गाधी को बधाई पत्र भेजकर प्रधानमन्त्री से अनुरोध किया है कि देश पर बाहरी हमले से सुरक्षा की स्थिति में आतरिक खतरे से निपटने के लिए पजाब मे बरनाला सरकार को बर्खास्त करके राष्ट्रपति शासन द्वारा सारे सीमा क्षेत्र को फौज के हवाले करने का समय आ गया है। स्वामी जी ने अपने पत्र मे प्रधानमन्त्री से जोरदार अनुरोध किया है कि देश मे सच्ची राष्ट्रीय एकता के बिना बाहरी हमले का मामना करना कठिन होगा।

अत: पिछले अनुभव से शिक्षा लेते हुए बरनाला और उनके साथियो की उग्रवादी गतिविधियों से सहानुभूति तथा सुरक्षा पट्टी का खुले रूप में विरोध करने से स्थिति स्पष्ट हो चुकी है। अत आपके इस सुदृढ कदम का देश की राष्ट्रवादी जनता खुला समर्थन करेगी। इस राष्ट्रीय सुरक्षा के काम मे देरी करना भविष्य के लिए खतरनाक अवस्था बना सकता है। मुझे आशा है ईश्वर कृपा से आपको पूरी सफलता मिलेगी।

प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल | व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल | सम्पादक—पं० यशपाल सुधांशु एम० ए०

आरोग्य पथ

हृदय रोग की अनुभूत वैदिक चिकित्सा

--रमेश मुनि वानप्रस्थी

हृदय रोग एक प्राचीन रोग है जिसका वर्णन हम को अथर्ववेद मे मिलता है। अथर्ववेद मे चार मन्त्रो का एक पूरा सूक्त है। (काण्ड १, सूक्त २२) जिसमे इस रोग को दूर करने के निम्नलिखित मुख्य उपाय है--

१. प्रात काल उदय होते हुए सूर्य के दर्शन

(नोट सूर्य-दर्शन चाहे जगल मे हो, चाहे घर की छत पर हो जहा हो सके वही करे। सूर्योदय से ५-६ मिनट पहले उसकी सिंदूरी लालिमा को देखते हुए सूर्योदय का इन्तजार करे एव सूर्य का सब प्रकाश सीधे आप पर हो पडे। सूर्य को कुछ सैकण्ड देखकर फिर आखे बन्द कर ले और ऐसा बार-बार करे। अगर सन्ध्या, प्राणायाम, गायत्री जाप या सूर्य नमस्कार करे तो और भी उत्तम है। सूर्योदय के क्षण के बाद कम से कम १० मिनट तक सूर्य रश्मियो मे हृदय रोग को दूर करने की विलक्षण क्षमता रहती है।

२ लाल गाय का दूध पीवे

(नोट हृदय रोगी के लिए लाल गाय का दूध अति उत्तम बताया है। उसको औषधि माना है। कृपया भाव प्रकाश निघटु या राज निघटु मे देखे भिन्न-भिन्न रग की गायों के दूध मे भिन्न-भिन्न गुण हैं अगर किसी कारणवश लाल गाय का दूध नही मिल सके तो सफेद गाय का दूध प्रयोग करे और लाल गाय का दूध प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहें। यह भी ध्यान रहे कि हृदय रोगी को गाय की ही छाछ, गाय का ही दही, गाय का ही घी खाना चाहिए।

३. प्रात: काल दूध मे एक चाय का चम्मच हल्दी घोलकर ले

(नोट मसाले की हल्दी जो बिलकुल पीली व सिंदूरी रग लिये हुए हो, नयी हो एव घुन लगी न हो काली न हो। उसे पीसकर कपडछन करके रख ले और रोजाना प्रात: काल २ टक मात्रा मे जो लगभग ८ माशा या दस आने भर होती है एक गिलास लाल गाय के दूध मे घोलकर लेवे। दूध इच्छानुसार एक-दो गिलास ज्यादा भी ले सकते है। हल्दी गाठदार ले। जिन सज्जनो को कच्ची हल्दी मिल सके वे उसका साग खाय एव अचार भी बनवा ले।

४ रोजाना रात को सोते समय एक चाय का चम्मच हरड का चूर्ण फाककर दूध पीवे

(नोट हरड सात प्रकार की होती है—१. रोहिणी, २ विजया, ३. पूतना, ४. अमृता, ५ अभया, ६. जीवन्ती, ७ चेतकी।

उपरोक्त हरडो मे से हमारा ध्येय सिर्फ रोहिणी नामक हरड से है। रोहिणी हरड बडी होती है एवं आकार मे कुछ गोल होती हैं और इसमे तीन धारिया होती है। हरड के चूर्ण को २ टक, ८ माशा या दस आना भर रोजाना रात को सोते समय लाल गाय के दूध के साथ ले। हरड का मुरब्बा भी प्रयोग करते रहें।

५ तोता पाले

(नोट वेदो का भाष्य करने वाले कई आचार्यो ने यह भी लिखा है कि जिस मकान मे तोता होता है उस मे हृदय रोग का दौरा नही होता। तोता पालने से हृदय रोग दूर होने के साथ-साथ रक्तचाप भी ठीक रहता है।

उपरोक्त चिकित्सा से सिर्फ १५ दिन में ही आशातीत लाभ होता है। और उपरोक्त चिकित्सा करने वाले व्यक्ति को हृदय रोग का दौरा फिर कभी नहीं होता। जिन सज्जनो को उपरोक्त इलाज से लाभ हो वे कृपया मुझे पत्र द्वारा सूचित करे। उपरोक्त चिकित्सा से ८ व्यक्ति लाभ उठा चुके हैं।

स्थायी पता गोयल बिल्डिग्स,
कुम्हेर गेट, भरतपुर (राज०)
अस्थायी पता आर्यसमाज,
आदर्शनगर, जयपुर (राज०)
फोन : ४६१४६

भाग्य भी बंटा-बंटा

लेखक : भीमसेन दीवान

दडी विरजानन्द, दयानन्द सामर्थ्यवान शिष्य प्राप्त करके गदगद हुए। परिणामत अपनी शुभाकाक्षा योग्य शिष्य को आशीर्वाद रूप से भेंट करके ऋषिऋण से मुक्त हुए। यह भी भाग्य की बात होती है। सचित प्रतिभा सम्भाल देना। काश महात्मा मुशीराम महर्षि दयानन्द से पढे होते, शिष्य बने होते। महर्षि अपनी आखो अपने गुरु की भाति पुण्य को समर्पित कर सकते। महर्षि, स्वामी की आभा अलौकिकता प्रताप देख पाते, तब प्रसाद देने वाले को, तथा लेने वाले को, एक ससार का कौतूहल बना होता। ऋषिवर का स्वामी श्रद्धानन्द मे भविष्य अवलोकन, भावी भारत की आभा लेता। स्वामी महर्षि से सम्मानित होते जन्मजन्मान्तर की झोली भरते, ऋषि सतुष्ट हो परलोक गमन करते तथा स्वामी पुण्य सम्पदा का भागीदार विभूषित होते। कैसा सुन्दर समागम बनता। महर्षि भी प्रसन्न होते कि किसी के कर गुजरने की भी क्या सीमा बनती है। स्वामी भी सौभाग्य मनाते कि किसी दिव्य शक्ति का एक धारा में शुभ प्रवचन कितनी विशालता लेते है। पर भाग्य के बटे बटे खेल भगवान के, कि दोनों को आमोद प्रमोद का सुअवसर न मिल पाया। इसे केवल दैवी अनुकूलता न होने से सतोष लेना पडता है। यह भी तो सत्य है कि एकलव्य ने परोक्ष मे द्रोणाचार्य को गुरु धारण किया। अभ्यास से अपने कल्पना के स्रोत को इतना उन्नत किया कि बिना साक्षात् शिक्षा के वह धनुर्धारी बन पाया, ठीक उसी तरह श्रद्धानन्द एकलव्य थे, दयानन्द द्रोणाचार्य थे। परोक्ष मे जो महर्षि का आदेश था वह श्रद्धानन्द का सदेश था। बिना किसी मतभेद के के गुरु के प्रवाह मे श्रद्धानन्द ने बह कर के दिखा दिया। ऐसा लगता था जैसे दयानन्द बोल रहे हो और श्रद्धानन्द तोल रहे हो। ऋषि के स्वप्नो को साकार करना श्रद्धानन्द का ही काम था। एक दूसरे के प्रश्न परोक्ष में हल हुए। यह भी तो ससार का चमत्कार था। दयानन्द ने योग से साधना की। श्रद्धानन्द ने कर्म से आराधना की। पुण्य आत्मा स्वर्गीय आत्मा को प्रणाम किया। हाथों हाथ सुरम्य उद्यान खडा कर दिया। वाटिका चमकी ऐसी दयानन्द का नाम चढा श्रद्धानन्द का दाम बढा। किसी कमान चढी, किसी की नाव बढी। सत्य के अर्थ की शान बनी, आर्य जगत की जान बनी। फिर व्यक्तित्व भी ऐसा, क्या था क्या हो गया, खोटा लोहा कुन्दन हो गया। यह खेल था सुसज्जित ऐसा कि अजूबा बन पडा। देखते देखते आर्यत्व उभरा, देश का सुहाग सुधरा पुरातन वेद विद्या का उपहार निखरा। दयानन्द ने नाव जल सागर मे डाली थी। श्रद्धानन्द ने पतवार बनने को ठानी थी। लक्ष्य दोनों का एक था, पक्ष एक था, निशाना बना जहान का, दिव्यता पूर्व सुरतान का, सच्चे भगवान का, देश के अभिमान का, समय आने पर हस्टात दिया बलिदान का, गुरु की भाति गारिमा घडी सच्चे शिष्य के प्रमाण का, साक्षी दे दी दया मे श्रद्धा के अभिमान की। कोटिश धन्यवाद के पात्र हैं वो जो सोच सकते हैं, कि सौभाग्य भी कैसे कैसे बटता है। दिशा एक है, प्रगति जिसकी टेक है। एक बार तो देश को खडा करके दिखा दिया था, आर्यसमाज ने। चाहे अब आर्य पुरातन विधि निधि से हाथ खीचते जाए पुरनूर राहे स्मरण जरूर रहेगी। हर वर्ष बलिदान की कथा कुछ न कर पाने वालो को शर्मिन्दा जरूर करेगी। भाग्य की बाट का समर्थन जरूर करेंगी। सत्य का दामन जरूर भरेगी,

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वेद में उग्रवाद को समाप्त करने के उपाय

—रमेश मुनि वानप्रस्थी

अथर्ववेद में दूसरे काण्ड का २४वां सूक्त उग्रवाद को समाप्त करने के सम्बन्ध में है। लाखों वर्ष पहले वेदों में उग्रवाद का अनुमान लगा लिया गया था और आज इस उग्रवाद को समाप्त करने के लिए हमें वेद द्वारा बताये गये उपायों का ही अनुसरण करना होगा। इस सूक्त में आठ मन्त्र हैं जिन में से चार में उग्रवादी पुरुषों का वर्णन है और पांच से आठ तक चार मन्त्रों में उग्रवादी स्त्रियों का वर्णन है। उदाहरणस्वरूप प्रथम मन्त्र (२।२४।१) को प्रस्तुत करते हैं—

शेरभक शेरभ पुनर्वो यन्तु
यातव पुनर्हेति. किमीदिन ।
यस्य स्थ तमत्त यो
व प्राहैत तमत्त स्वा मांसान्यत्त ॥

भावार्थ—हे (शेरभक) उग्रवादी, आतंककारी, दूसरों का अन्त करने वाले, अकस्मात् मारने वाले, सर्पस्वभाव, नृशंस, घातक पुरुष, (शेरभ) हे हत्यारे पुरुष, और हे (किमीदिन) किंकर्तव्यविमूढ 'यह क्या यह क्या' इस प्रकार राज्य व जनता के धनों पर चोर की सी दृष्टि रखने वाले दुष्ट पुरुषो (यातव) सब पीडाजनक कार्य (व) तुम्हारे पास ही (यन्तु) जायें अर्थात् दुष्ट कार्यों का दण्ड पुन तुम को ही प्राप्त हो। (पुन हेति) और हथियार की पीडा तुम्हारे पास ही जावे। क्योंकि (यस्य स्थ) जिस के तुम सगी होते हो (तम् अत्त) उस को तुम खा जाते हो और (य) जो (व) तुमको (प्राहैत्) प्रेरणा, उपदेश या सीधा मार्ग बतलाता है (तम् अत्त) तुम उस को भी खा जाते हो और फिर जब तुम्हारे साथ कोई नहीं रहता, तब तुम (स्वामांसानि) अपने ही सम्बन्धियों के शरीरों का घात करके उन्हें (अत्त) खाते हो। दुर्जन पुरुष का स्वभाव आगे के तीन मन्त्रों में भी इसी प्रकार बताया है। (२।२४।२-४)

इसी प्रकार पांच से लेकर आठ मन्त्रों में दुर्जन स्त्रियों का वर्णन किया है। उनको उग्रवादी, नागिनीवत्, दूसरों का नाश करने वाली, बदला लेने वाली, प्रजा को सताने वाली, कपटकारिणी, अपने सम्बन्धियों, पुत्रों और भाइयों तक के प्राणों का हरने वाली, अनेक पुरुषों से सग करने हारी बताया है।

राजनीति और राष्ट्रपालन करने वाले, गृह सचिव, गृह मन्त्री, पुलिस विभाग एवं गुप्तचर विभाग वेदों के इन आठों मन्त्रों को विस्तृत रूप से देखें तो उनको ज्ञात होगा कि वेद में उग्रवाद को समाप्त करने के कितने सफल उपाय दिये हुए हैं, जिन का पालन करने से उग्रवाद समूल नष्ट हो सकता है।

इसी उग्रवाद को समाप्त करने में अथर्ववेद के अन्य मन्त्र भी स्पष्ट निर्देश कर रहे हैं। यथा (अ० ४। १६।६, ७), (अ० ४।१६।९), (अ० ४।१७, ४।१८ ४।१९), (५।३१।१-१२) निष्कर्ष यह है कि उग्रवाद को समाप्त करने के लिए तीन उपाय मुख्य हैं।

प्रथम उपाय—

वेद मन्त्रों में निर्देश है कि उग्रवादी, आतंककारी या हिंसाकारी पुरुषों व स्त्रियों को वैसी ही पीडायें दी जायें जैसी उन्होंने दूसरों को दी, वैसे ही शस्त्रों से उनको मारा जाये जैसे शस्त्रों से उन्होंने निरपराध व्यक्तियों को मारा है और यह कार्य तुरन्त किया जाये।

दूसरा उपाय

जिन उग्रवादियों को दण्ड दिया जाये उनके मा-बाप, वंश, रिश्तेदार और सम्बन्धियों के नाम सारी जनता में (अखबारों के द्वारा) प्रचारित किये जायें और उनके उपरोक्त सभी रिश्तेदारों को या उनको मदद करने वालों को जेल में डाल दिया जाये। उग्रवादियों को मदद करने वाले व्यक्तियों को उग्रवादी ही बताया गया है और उनको प्रथम उपाय के अनुसार ही दण्ड दिया जाये।

तीसरा उपाय

वेद में 'अपामार्ग विधान' विस्तृत रूप से दिया हुआ है। इस को 'कण्टकशोधन प्रकरण' से भी जाना जाता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में "कण्टकशोधन" विस्तृत रूप में वर्णित किया गया है। उग्रवादियों पर गुप्तचरों द्वारा नजर रखी जाये और उनका पता जैसे ही लगे वैसे ही उन को गुप्त हिंसाकारी प्रयोगों से मार दिया जाये। पुलिस से कृत्रिम मुठभेड दिखाकर ऐसे दुष्टों का नाश कर दिया जाये। उपरोक्त उपायों को अपनाने पर पंजाब को व अन्य सभी जगह की समस्या हल हो जायेगी। □

स्वाधीनता में पराधीनता

—भीमसेन दीवान

"शैशव दशा में देश प्राय जिस समय सब व्याप्त थे, विशेष विषयों में तभी हम प्रौढता को प्राप्त थे। ससार का पहले हमीं ने ज्ञान शिक्षा दान की, आचार की व्यापार की व्यवहार की विज्ञान की। (भारत भारती) १९४३ में भारत स्वतन्त्रता सग्राम गम्भीर दिशा ले रहा था। विख्यात चोटी के नेताओं ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सभा बुलाई। जिसमें महात्मा गांधी इत्यादि प्रस्ताव करने हेतु एकत्रित थे। सभा आरम्भ होने से पूर्व जो ड्राफ्ट तैयार किया गया था। अन्तरग में प्रस्तुत करने को उसकी प्रति नहीं मिल रही थी। प० जवाहर लाल, राजेन्द्र प्रसाद बड़े चिन्तित हो रहे थे। गांधी जी के कटाक्ष के भयातुर डा० राजेन्द्र प्रसाद ने तुरन्त दोबारा ड्राफ्ट लिखवाना प्रारम्भ कर दिया। अभी १०।५० पत्र लिखे गए थे, कि ड्राफ्ट गुम शुदा मिल गया। मौलिक लिपि तथा नई लिपि को जब चैक किया तो ऐन वही के वही शब्द व भाव दूसरी बार लिखे गए थे, इस पर प०जवाहर लाल बोले डा० साहब ऐसा मस्तिष्क कहां से लिया। डा० साहब तुरन्त बोले "पंडित जी यह मस्तिष्क अण्ड मास का थोडा ही बना है। सात्विक जीवन इस क्षमता का कारण है। यह हैं वास्तविकताएं जो दिशा देती है इतिहास बनाती है। यह तो अब दिनों दिन प्रकाश में आ रहा है कि अंग्रेज ने हमें लांछित करने हेतु, हिन्दु मुसलमानों को लडाने हेतु, निज नीति का मसाला लिखवा डाला। श्री वी. एन पांडे गवर्नर उडीसा ने इस्लाम व भारतीय सभ्यता की एक पुस्तक लिखी है जिसमें प्रमाणित किया है कि टीपू सुल्तान व औरगजेब ने हिन्दु मन्दिरों व मूर्तियों को नष्ट किया तथा उनके रीति रिवाज पर प्रहार किया सरासर गलत था। तभी तो निवेदन किया है कि अपनी सरकार तथ्य सामने लाए, अपने महान् महिमा वालों के उदाहरण प्रस्तुत करे, ताकि देशवासियों को ठीक उचित प्रकाश व उत्साह मिले। हमारे यहां महासन्तों का क्या कहना उनके वृतान्त पढ पढ कर दांतों तले उगली दबानी पडती है, एक बार सन्त एकनाथ वाराणसी से दक्षिण को गंगा जल की लुटियाए कधों पर लादे पैदल जा रहे थे। रास्ते में काशी के समीप एक गधा प्यास से सडक पर तडप रहा था। सन्त महोदय ने गगा जल उस गधे को पिला दिया। साथियों ने कहा यह क्या आप तो यात्रा पर जा रहे थे। सन्त जी ने उत्तर दिया कि यही तीर्थ यात्रा हो गई। एक प्यासे को जान बची मेरा जन्म सफल हुआ। ऐसे प्रेरणात्मक दृष्टान्त विपुल मात्रा में मानवता का वरदान सभाले बैठे हैं जो प्रकाश में नहीं लाए जा रहे। इसी तरह एक रात्रि देर से १०।१५ यात्री सन्त एकनाथ के यहां पधारे, भूखे थे तथा भोजन की माग की, सन्त वर ने धर्मपत्नी को जगाया। (वह भी तो सन्त जी की नियमावली थी। भोजन बनाने का आदेश दिया, पर जब ईन्धन न होने की शिकायत की, तो सन्त महात्मा ने लड़के को आदेश दिया कि बाहर की ताजा कोठडी के छप्पर काट दे तथा वही लकडी भोजन हेतु ला दे। चुनाचे ऐसा ही हुआ। अतिथि भी विस्मय पूर्ण तथा इतिहास भी सम्मानित। भले दूसरे देश भी उभरे पर भारत मा का दृष्टान्त अपूर्व ही रहा है, जिसे प्रस्तुत करने की होड होनी आवश्यक है। हमारे यहां तो चरित्र का बोलबाला रहा। पिछली भेंटों में शौर्य के उदाहरण दिए थे। अब चरित्र की महानता के दर्शन होने जा रहे हैं। चरित्र दिव्यता है महर्षि दयानन्द जीवन भर में एक ही बार रोये थे, वह भी जब एक माता मृतक बच्चे को गगा प्रवाह करते हुए अपनी साडी के टुकडों में लपेट कर नदी समर्पित कर रही थी और वह देवी बची खुची साडी से निज तन की, निज सभ्यता की लाज बचा

(शेष पृष्ठ ५ पर)

धार्मिक उन्माद : राजनैतिक आतंकवाद एक ऐतिहासिक विवेचन

लेखक : आचार्य शिवराज शास्त्री, एम० ए०, मौलवी फाजिल

विगत ५ वर्ष से भारत का अत्यन्त संवेदनशील प्रान्त पंजाब घोर आतंकवाद का शिकार होकर भारतीय राजनीतिज्ञों के विवेक व सूझबूझ की परीक्षा स्थली बनकर रह गया है। पंजाब की यह दशा है कि—

गली मुहल्ले सहमे-सहमे,
सडके हैं सुनसान।
बस्ती को मुह चिढा रहे हैं,
मरघट और श्मसान॥
कदम-कदम पर पीछा करते,
वहा मौत के साए।
जहा सांस ले सकना तक,
भी नही रहा आसान॥
बूचडखानों मे भी बदतर,
बना आज पंजाब।
जहा सुरक्षित नही रही,
अब बच्चो की भी जान॥

दिन रात देश के गम में घुलने वाले देश के महान् राजनीतिज्ञ भी किंकर्तव्यविमूढ बनकर रह गए हैं—

हकीमों के चेहरे भी उतरे हुए हैं।
मर्ज इस कदर ला दवा बन चुका है॥

कहीं-कहीं से एक ही स्वर सुनाई दे जाता है कि यह सब इस्लामी देश पाकिस्तान की ही कारस्तानियां हैं। आज के अवसरवादी राजनीतिज्ञ इतिहास से सर्वथा अपरिचित केवल वोट की क्षणिक राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं के आधार पर ही जीवित है। इतिहास की कठोर सच्चाइयों से उन्हें क्या लेना देना। परन्तु वास्तविकता से मुह मोडकर कैसे समस्या का समाधान सम्भव है। आइए हम धार्मिक आतंकवाद के प्रारम्भ की कहानी सुनाये—

संसार भर का धार्मिक आन्दोलनों का इतिहास दो भागो में विभक्त है। एक आर्यन सभ्यता, जिसका करोडो वर्ष का अहिंसक आध्यात्मिक इतिहास आज तक संसार में शान्ति सद्भावना व पंचशील का संदेश दे रहा है। दूसरा सैमेटिक सभ्यता का लगभग ४ हजार वर्ष का इतिहास, जिसका प्रारम्भ हजरत मूसा के यहूदी धर्म से प्रारंभ होता है। सारा यूरोप व अरब संसार इसी आन्दोलन से प्रभावित रहा है। हजरत ईसा ने इसी विचारधारा को थोडे फेरफार के साथ प्रचारित किया। ईसा के बाद अरब के महान् क्रान्तिकारी मुहम्मद साहब ने मूर्तिपूजा के विरुद्ध प्रसिद्ध जिहाद आंदोलन प्रारम्भ किया। उनके प्रचारकाल मे उन्हें अच्छे विद्वान् व वीर योद्धा भी मिले जिन्हे असहाब कहा जाता रहा। वे प्रचार पद्धति मे कुछ नियम मर्यादाओं का पालन करना भी चाहते थे परन्तु युद्धनीति को सफल बनाने मे उन्होने मृत्यु पश्चात् एक स्वर्ग की प्राप्ति का प्रलोभन भी दिया, जो कुरानी भाषा मे बहिश्त कहा जाता है। सारे अरब देशो को उन्होने इस्लाम के नाम पर संगठित किया और अनेक छोटे बडे राज्यो का निर्माण हुआ जो शान्तिपूर्वक शासन चलाने लगे। विद्वान् लोग अपनी विद्या से जनता का मार्गदर्शन करने लगे। उस काल में आचार शास्त्र, न्यायशास्त्र व साहित्य का प्रचुर निर्माण हुआ।

परन्तु हिजरी सन् ४८४ तदनुसार सन् १०८८ ईस्वी में फारस व असीरिया के राजनीतिक क्षितिज पर एक ऐसे चमत्कारी ग्रह का उदय हुआ जिसने इस्लाम की काया ही पलट दी। वह राजनीति मे आतंकवाद भीषण अत्याचार व नैतिक मूल्यो को पावों तले कुचलने वाला एक अत्यन्त चतुर प्रतिभाशाली क्रूर धार्मिक शासक था जिसने इस्लाम की भी सारी परम्पराओ को तोड कर आतंकवाद का एक नया युग प्रारम्भ किया।

उसने अपना शासनकेन्द्र फारस व असीरिया के मध्य दो प्रसिद्ध किलो को बनाया जो इतिहास में अलमूत व मुसइअत के नाम से जाने जाते है। उसका यह धार्मिक सम्प्रदाय कैसे पनपा ? इसकी कहानी यूरोप के प्रसिद्ध महान् यात्री 'मारकोपोलो के शब्दों में सुनिए। मारकोपोलो पहला यात्री है जिसने इस अत्यन्त गुप्त व आश्चर्यजनक आंदोलन के सम्बन्ध में यूरोप को बताकर लोगो को हैरान कर दिया; उस के बाद तो अरब इतिहासकारों के इतिहास के ग्रन्थो का यूरोपीय भाषाओं मे जब अनुवाद प्रकाशित हुए तो सारा संसार इस घोर अमानवीय ऐतिहासिक घटना से परिचित हो गया। मारकोपोलो लिखता है—

फारस और असीरिया दोनों के केन्द्रीय भागों मे (अर्थात् किला अलमूल व किला मुसय्यत मे) बडी ऊची दीवारों और घोर घने बागों से घिरे हुए स्थान थे जो सचमुच बहिश्त (स्वर्ग) के नमूने थे। उनमे फूलो की क्यारियों और फलदार वृक्षों के झुण्ड थे जिनमें नहरे बह रही थी। साएदार वृक्षो से ढकी हुई सडकों और हरित उद्यानों में बीच फव्वारों के पग-पग पर पानी की फुहारे उड रही थी। गुलाब व अगूरों के कुंज भोग विलास के असीम सामानों से सुसज्जित कमरे जिनमे चीनी गुलदस्ते थे। फारस के बहुमूल्य कालीनों पर यूनान के सुन्दर वस्त्र बिछे हुए थे। वहा सोने, चांदी व कांच की तश्तरियों पर इन्ही धातुओं के बने मदिरा के प्याले रखे हुए थे। काली आखो वाली अविवाहित रूपवती नवयौवनाएँ व सुन्दर युवक जिनके शरीर वैसे ही मुलायम थे जैसे नरम गदेलों व तकियों पर वह आराम कर रहे थे। मीठी बोली बोलते सुन्दर पक्षी चहचहा रहे थे, सुरीले वाद्य यन्त्रों पर अप्सराएँ संगीत की लहरिया बिखेर रही थीं। नहरों व फव्वारो के सुरो के साथ सुमधुर संगीत स्वर्णिम दृश्य उपस्थित कर रहे थे। विलास गृहो के हर दरो-दीवार से वासना व विलासिता के स्वर लहरा रहे थे। जो जवान आदमी अपनी शारीरिक शक्ति व दृढ महत्त्वाकाक्षा के कारण योग्य समझा जाता था उसे इस सम्प्रदाय के भक्त जिन्हें "हशासीन" कहा जाता, वे अपने सम्प्रदाय की सेवा के लिए चुनकर लाते थे। उसे सर्वप्रथम सम्प्रदाय के नेता के साथ भोजन करने के लिए उसके दस्तरखान पर वार्तालाप करने के लिए विशेषतया सम्मिलित किया जाता था फिर उसे हशीश (भांग से तैयार किया गया एक अत्यन्त मादक द्रव्य) का प्याला पिला कर बेहोश कर दिया जाता और उपरोक्त बागे-बहिश्त में पहुचा दिया जाता था। होश आने पर वह समझता था कि मैं वास्तव मे बहिश्त में पहुंच गया हूं। बहिश्त के सभी आनन्द जिनके मुहम्मद साब ने मौमिनो से वचन दिया है वह उठा लेता औ चमकीले शराब के प्यालो और हूरो की आखों का शिकार होकर जब वह अशक्त होकर फिर बेहोशी की अवस्था में पुन सम्प्रदाय के सरदार के सामने लाया जाता जहा वह कुछ घण्टों मे होश मे आकर अपने आप को शेख (हसन-बिन-सब्बाह) के कदमो मे पडा हुआ पाता तो शेख उसको विश्वास दिलाता कि उसका शरीर तो यही पडा रहा था केवल उसकी आत्मा ने ही बहिश्त की सैर की है जहा उसे उस आनन्द का केवल अनुभव ही हुआ है जो शेख की स्वामीभक्ति व श्रद्धास्पद सेवा के पुरस्कारस्वरूप उसे बाद मे प्राप्त होगा। इस प्रयोग का उस नौजवान पर ऐसा असर होता कि शेख उस नौजवान से जिस प्रकार के भी घृणित से घृणित खून खच्चर का काम करने का आदेश दे तो वह पूरे दिलो जान से उस की आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार हो जाता। हजरत मुहम्मद साहब ने तो जो वचन मौमिनों को दिए हैं वह अधिकाश मौमिनों की दृष्टि मे केवल निरर्थक हैं। अपेक्षाकृत उस नौजवान के उस अनुभव के, जो वास्तव मे उसने प्रत्यक्ष देखे हैं—

हसन बिन सब्बाह के इन बहिश्ती जज्जारियो ने इतिहास मे जो घोर घृणित रक्तपात व विनाशकारी कार्य किये हैं आज के बडे से बडे मुसलमान भी उस से इन्कार नही करते। स्वर्गीय श्री हसन निजामी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "फातमी दावते इस्लाम" के पृष्ठ १९४, १९५ पर इस सम्बन्ध मे लिखा—

मुसलमान फिरकों (मतवादियों) मे कोई ऐसा सम्प्रदाय नहीं मिल सकता जो जोशे जाबाजी और सरफरोशाना गर्मी मे नजारियों की बराबरी कर सके। बल्कि दुनिया के किसी मजहब वाले ने अपने खयालात की इशरयत (प्रचार) में इतनी अमीक सई (गहरी कोशिश) न की होगी। इस गिरोह में ऐसे-ऐसे अजीबो-गरीब दिमाग के आदमी पैदा हुए जिन्होंने जुनून (पागलपन) की हद से भी गुजरकर दावत (इस्लामी प्रचार) का काम किया। हसन बिन-सब्बाह के फिदाइयों(अध

(शेष पृष्ठ ५ पर)

(पृष्ठ ४ का शेष)

धार्मिक उन्माद : राजनैतिक आतंकवाद

श्रद्धालुओं) की खूंखारियां को कैसा ही मजमूम (निन्दनीय) समझा जाए लेकिन इससे इन्कार नहीं हो सकता कि उसकी सफ्फाकी (घोर घृणित अत्याचार) मे भी दावत (इस्लामी प्रचार) का एक बलबला (महाजोश) पाया जाता है। ऐसा ही अगर उन्होंने (सकेत है सर आगा खां के उन प्रचार के तरीकों की ओर जिस में उन्होंने अन्ध श्रद्धालु हिन्दुओं की मान्यताओं में अपनी मान्यताएं मिला कर सारे गुजरात कच्छ काठियावाड मे लाखों हिन्दुओं को मुसलमान बनाया, आगा खा भी नजारी सम्प्रदाय के ही वशज हैं) हर सम्प्रदाय के, हर विश्वास को खलतमल्त (मिला जुला) करके दिखाने और उनको इस्लामी अकायद (विश्वासो) से मानूस (परिचित) करने की तदबीरे की तो गो (यद्यपि) उन मे एक प्रकार का मुगालता (इस्लाम के दृष्टिकोण से भ्रान्ति) पाया जाता है ताहम (तो भी) दावत (इस्लामी प्रचार) की हिकमते अमली (व्यावहारिक लाभ) पर उससे रोशनी पडती है।

हशाशीन सम्प्रदाय के अनेक उप-सम्प्रदाय संसार भर मे फैले हुए हैं वे विभिन्न नामों से पहचाने जाते हैं। अग्रेजी भाषा मे धोखे व छल-कपट से हत्या करने वाले को Assasin कहते हैं। यूरोप की सभी भाषाओ मे यह शब्द इन्ही अर्थों में प्रयुक्त होता है। योरोपियन भाषाविद् एकमत से स्वीकार करते हैं कि यह शब्द हशाशिन का ही अपभ्रश है। इसका प्रमाण यह है कि जोजफ वान हैमर ने अरबी फारसी वेतु की भाषा के अनेक ग्रन्थो की खोज कर जो पुस्तक History of Assasin तैयार की थी उसी का अग्रेजी भाषा में अनुवाद ओल्ड चार्ल्स वुड एम० डी० ने कर १८३५ में प्रकाशित किया था।

इन्साइकिलोपेडिया ब्रिटेनिका की दूसरी जिल्द मे भी लिखा है कि हशाशिन व असैसिन एक ही शब्द है। ससार भर मे यह सम्प्रदाय आज भी फैला हुआ है और अनेक गुप्त रहस्यमय उपायों से काम करता है। इस की विशेष रिपोर्ट आगामी लेख में प्रस्तुत की जाएगी।

आर्यसमाजों एवं आर्यसंस्थाओं से नम्रनिवेदन

१ २७ दिसम्बर, १९८६ को सभाप्रधान श्री सूर्यदेव जी को विज्ञप्ति आपको भिजवाई गई थी। इसमें आप से अनुरोध किया गया था कि आप स्वय अपनी ओर से, अपनी आर्यसमाज की ओर से तथा अपने साथियो से, सूचना एव प्रसारण मन्त्री भारत सरकार को पत्र लिखे कि उन्होने आकाशवाणी और दूरदर्शन पर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित जुलूस को अच्छी प्रकार प्रसारित नही किया तथा उसकी एक प्रति सभा कार्यालय मे भी भेजे। सभा मे अभी तक केवल २० पत्र प्राप्त हुए हैं। आप ने यदि अभी तक पत्र न भेजे हो तो अब लिख दे। सगठन मे ही बल है। जितने अधिक पत्र पहुचेगे, उतनी हमारी बात सुनी जायेगी।

२ वर्ष १९८५-८६ की सभा की गतिविधियो की रिपोर्ट प्रकाशित की जा रही है। इस रिपोर्ट मे हम सम्बन्धित आर्यसमाजो, आर्य-संस्थाओ की रिपोर्ट प्रकाशित करते हैं। आप ने यदि अभी तक अपनी समाज/सस्था की वार्षिक रिपोर्ट न भेजी हो, तो कृपया शीघ्रता करे। वार्षिक रिपोर्ट के साथ सदस्यता शुल्क का दशाश वेदप्रचार की राशि तथा आर्यसन्देश का वार्षिक/आजीवन शुल्क भी अवश्य भेज।

३ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य उपदेशको, भजनोपदेशको तथा प्रचार वाहन की सेवाये आपके लिए प्रस्तुत हैं। आप अपनी आर्य-समाज मे, निकट की बस्तियो मे, पुनर्वास कालोनियो मे तथा निकटवर्ती ग्रामो मे तथा सार्वजनिक स्थानो पर वेदप्रचार के कार्यक्रम आयोजित करे। आपको सभा की ओर से पूर्ण सहयोग प्रदान किया जायेगा। इस समय सभा के अन्तर्गत श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी, महात्मा रामकिशोर जी वैद्य, आचार्य हरिदेव, श्री सत्यदेव स्नातक, श्री चुन्नी लाल, श्री वेदव्यास जी, श्री श्याम वीर राघव, श्री ज्योतिप्रसाद जी वेदप्रचार कार्य के लिए समर्पित है। आप इन महानुभावों की सेवाये प्राप्त करने के लिए श्री जगदीश लाल जी से सभा कार्यालय मे प्रात. १२-०० से ६ ०० बजे के बीच सपर्क करें। स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज का निवास भी सभा कार्यालय में ही है। आप स्वामी जी महाराज को फोन पर सूचित कर सकते हैं। आप स्वामी जी की आयु को देखते हुए उन्हे रात मे ९-०० बजे के बाद फोन पर या अन्य प्रकार कष्ट न दे।

४. आर्यसमाजो के रविवासरीय साप्ताहिक सत्सगो मे वेदोपदेश हेतु सभा योग्य विद्वानो को वेदप्रचार में सहयोग देने के लिए आमन्त्रित करती हैं। उन्हें सभी की ओर से कोई मार्गव्यय आदि नही दिया जाता। आर्यसमाजो को चाहिए कि उन्हे अपनी सामर्थ्य के अनुसार अधिक से अधिक दक्षिणा दे जिससे कि आर्य-समाज के कार्यो मे उनका सहयोग मिलता रहे।

हमे आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास है कि दिल्ली प्रान्त मे वेद-प्रचार को और अधिक तीव्र करने मे आपका पूर्ण सहयोग हमे अवश्य मिलेगा।

धन्यवाद।

डा० धर्मपाल
(महामन्त्री)

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्वाधीनता मे पराधीनता

रही थी। महर्षि को देश की इस अवस्था पर आंसू आ गए। यह तो दर्द उस मर्दे खुदा का, स्वाधीनता के गदा का। आखिर यही घटनाएं हमारे मुर्दा दिलों को झकोरेगी, कुरेदगी तथा उद्बुद्ध करेगी। सुभाष बाबू रंगून से बैंकाक अपनी सेना की टुकडी सहित सफर कर रहे थे, ट्रक भी चल रहे थे फौजी गाडिया भी, पर नेता पैदल थे। जैसे दूसरे सिपाही, जबकि उनके लैफ्टीनेंट का यह कहना था कि सुभाष के पैरों में छाले उबल रहे थे, परन्तु उस महान व्यक्ति ने साहस व उत्साह में लाले न पडने दिए। एक स्थान पर प्रवचन करते समय उनकी सेना के एक सिपाही ने अपनी सम्पत्ति आजाद हिन्द फौज को समर्पित कर दी। उल्लास का समारोह था। सुभाष नेता ने स्वयं उस युवक को समझाया कि सारी की सारी सम्पत्ति न दे डाले। वह सिपाही अपनी पेशकश पर कायम रहा। यह था हमारा चरित्र जिसके गुण अभी गाये जाते हैं। यह इस देश का सौभाग्य था। जो वृद्ध नही, फूले हुए नही पर शैशव व युवा काल के सत ज्ञानेश्वर देव का १३ वर्ष की आयु में गीता महाराष्ट्रीय भाषा में सस्कृत करना, शिवा जी का १३ वर्ष की आयु में तोरण किले को जीतना, अहिल्या बाई का १८ वर्ष मे बागडोर सम्भालना, जगद् गुरु शकराचार्य का १६ वर्ष की आयु में वेदादि सत्शास्त्रों मे उभरना, रवीन्द्रनाथ टैगोर का १३ वर्ष की आयु मे शैक्सपीयर मैकबेट का पढ डालना, बगाली कवियित्री तारादत्त का १८ वर्ष मे फूलना, सरोजनी नायडू का १३ वर्ष म कविता को सम्मानित करना इत्यादि। हमे तो इतिहास के किसी पन्ने मे यह किसी लिखित मे नही मिलता। फिर फिर दर्द जो बढ रहा है, क्यों न बढे ? कि हम से ही हमारा वैभव छिपाया जा रहा है वे सूद के मसले जिनसे हमारा अब कोई सरोकार नही हमारे मस्तिष्कों पर लादे जा रहे हैं। यह अन्याय तथा अयोग्य है, जिसे भारत सरकार एक योग्य रचना भडार से पूर्ति करे तथा हमारे भविष्य को चमत्कृत करने मे भागीदार बने। यह हमारा अधिकार है कि हमारी पूंजी की हमे पूरी जानकारी दी जाए।

(पृष्ठ २ का शेष)

भाग्य भी वटा बंटा

स्मृति बनाने की नीव जरूर तरेगी। एक आह यह भी कि दयानन्द व श्रद्धानन्द का साक्षात् कार्यकारिणी सम्पर्क हुआ होता, शुभ समागम का पुण्य तीर्थ बना होता। भारत मे एक ऐसी धरती खडी होती जो पुरातन काल की तुलना कर सकी होती। सुख होता, शान्ति होती, गद्दी हवाले की होती सम्भाल के दी होती। तख्त दिया होता, बख्त दिया होता, सुहाग दिया होता, सौभाग्य दिया होता, पर कैसे जब भगवान का शुभ आशीर्वाद न हुआ, विधाता का शुभ विधान न हुआ।

अखिल भारतीय सिंधी आर्य सभा का निर्वाचन

अखिल भारतीय सिन्धी आर्य सभा के नागपुर अधिवेशन के अवसर पर आगामी वर्ष के लिये सुप्रसिद्ध महिला उद्धारक आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य (कानपुर) को सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। शेष पदाधिकारी निम्न प्रकार से चुने गये—

मन्त्री—सगतराम आर्य (नागपुर)
कोषाध्यक्ष—श्रीचन्द आर्य (बडोदा)
प्रचार मंत्री—माधोदास (अहमदाबाद)

समाचार

श्री ओमप्रकाश आर्य राज निवास पर भूख हड़ताल करेंगे

दिल्ली के सुप्रसिद्ध आर्य नेता, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री ओमप्रकाश आर्य ने एक प्रेस वक्तव्य मे घोषणा की है कि यदि दिल्ली विकास प्राधिकरण ने १५ दिन के अन्दर-अन्दर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध चिकित्सालय माता चन्नन देवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, जनकपुरी, नई दिल्ली को दी गयी अतिरिक्त भूमि की रजिस्ट्रिया नही की तो वह राज निवास पर आमरण अनशन प्रारम्भ कर देंगे।

श्री आर्य ने कहा है कि लगभग एक साल होने को है, जबकि चिकित्सालय को मिली अतिरिक्त भूमि की रजिस्ट्री के लिए सारी औपचारिकताएँ पूरी करके दिल्ली विकास प्राधिकरण को दे दी गयी थी। यहा तक कि स्टम्पिंग ड्यूटी कराकर लीज की धनराशि भी जमा करा दी गई हुई है। श्री आर्य ने आरोप लगाया है कि वसे तो दिल्ली के उपराज्यपाल भ्रष्टाचार के खिलाफ लठ लिये घूम रहे है, और हम ने उनको कम से कम १०० पत्रो मे डी० डी० ए० के नाजूल-२ के एकाउण्टेण्ट के विरुद्ध शिकायत की है परन्तु अभी तक इस पर उन्होने उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नही की। श्री आर्य ने आरोप लगाया है कि डी०डी०ए० मे भ्रष्टाचार फैला हुआ है और अफसरो की पेटपूजा न करने वाले लोगो को ही नही बल्कि धार्मिक सस्थानो को भी परेशान किया जाता है।

श्री आर्य ने माग की है कि नाजूल-२ के एकाउण्टेण्ट को और उसको बचाने के लिए मदद करने वाले अफसरों के विरुद्ध कडी कार्यवाही की जाये। श्री आर्य ने भूख-हड़ताल की सूचना एक पत्र द्वारा उपराज्यपाल को दे दी है और उस की प्रति श्री राजीव गाधी, श्री अर्जुन सिंह, श्री कृष्णचन्द्र पन्त, श्री ओम कुमार, उपाध्यक्ष डी० डी० ए० को भेज दी है।

कार्यालय मंत्री

लोहड़ी त्योहार पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज दीवान हाल के तत्त्वावधान मे १३ जनवरी ८७ को टाउन हाल (चादनी चौक) मे दोपहर २ बजे से ५ बजे तक यज्ञ प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया जिसमे स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेदप्रचार सभा के प्रचार वाहन द्वारा पधारे। यज्ञ के पश्चात् प० वेदव्यास आर्य, प० चुन्नीलाल आर्य, प० सत्यदेव स्नातक, श्याम वीर राघव एव श्री गुलाबसिंह राघव के शिक्षाप्रद भजनोपदेश रहे। साथ ही आचार्य हरिदेव जी सिद्धान्तभूषण, प० सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी, प० यशपाल सुधाशु, सम्पादक, आर्यसन्देश, द्वारा लोहड़ी त्योहार पर्व के उपलक्ष्य में प्रवचन रहे। स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी का पर्व सबधी प्रवचन एव हास्य कविताएँ भी हुई। शांतिपाठ के पश्चात् रेवड़ी मूगफलियो का प्रसाद वितरित किया गया। इस कार्यक्रम मे सैकडों श्रोतागणों ने धर्मलाभ उठाया। यह लोहड़ी पर्व हर वर्ष आर्यसमाज दीवान हाल की व्यवस्था में धूमधाम के साथ मनाया जाता है।

—स्वरूपानन्द सरस्वती
दि० आ० प्र० सभा
वेदप्रचार विभाग

आर्यसमाज मोतीबाग का निर्वाचन

संरक्षक—श्री ज्ञानचन्द महाजन,
श्री हरिद्वारी लाल आर्य
प्रधान—श्री खुशालमणि ध्यानी
उप प्रधान—श्री सत्यपाल सेठी,
श्री रामनाथ वर्मा
मन्त्री—श्री जयप्रकाश शास्त्री
प्रचार मन्त्री—श्री सोहनलाल ओहरी
उप मन्त्री—श्री मनीष सिहल
कोषाध्यक्ष—श्री कुलभूषण भल्ला
लेखा अधिकारी—श्री रामनाथ कपूर
पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री प्रताप सिंह

भवदीय
जयप्रकाश शास्त्री

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव

प्रत्येक वर्ष की भांति इस बार भी टकारा (गुजरात) मे ऋषि जन्म भूमि पर बोधोत्सव २५ फरवरी से २७ फरवरी तक धूमधाम से मनाया जायेगा। देश भर से आर्य जन इस मे भाग लेगे। ऋषि मेले पर आवास एव भोजन की व्यवस्था टकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क होगी। इस ट्रस्ट द्वारा (१) ऋषि जन्मगृह प्रबन्ध (२) उपदेशक विद्यालय (३) गोशाला (४) दयानन्द-दर्शन चित्रगृह (५) अतिथि गृह (६) आर्ष पुस्तकालय एव वाचनालय आदि कार्य चलाये जा रहे हैं।

इस ट्रस्ट के विशिष्ट कार्यो को को देखते हुए तथा आर्थिक स्थिति की दशा चिन्ताजनक होने से सभी आर्यो को पुनीत कार्य मे धनादि से सहयोग करना चाहिए। मनीआर्डर या चैक आदि निम्न पते पर भेजे

मन्त्री
श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट
टकारा
आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००१
फोन ३४३७१८

मातृ मन्दिर समाचार

(१) २६।१२।८६ को स्थानीय बरनवाल समाज की ओर से आयोजित उनके आदिपुरुष की जयन्ती पर मातृ मन्दिर की छात्राओ ने भव्य कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जिन मे वैदिक मान्यताओ तथा उग्रपन्थियो के लोमहर्षक अत्याचारो को सजीव रूप देते हुए जनता को राष्ट्रीय अखडता की रक्षा की प्रेरणा दी। मत्रमुग्ध जनता ने बालिकाओ को उदारतापूर्वक पुरस्कृत किया।

(२) मातृ मन्दिर की आचार्या ने २६।१२।८६ से ३१।१२।८६ तक बिहार के लोहरदगा जिले के आदिवासी बहुल गांवो का भ्रमण किया, उन की समस्याओ को निकट से समझा। आदिवासियों का कहना था कि कोई उन की पुकार नही सुनता। स्थानीय आर्यसमाज लोहरदगा व शान्ति आश्रम की अवस्था भी दुर्बल है। आर्य प्रतिनिधि सभाओ को उधर ध्यान देना कर्त्तव्य है।

सरना व भरगांव ग्रामो मे आर्यसमाजो का गठन किया गया, पर उन्हें सतत सम्पर्क की आवश्यकता है।

—पुष्पावती

पंजाब समझौते की दाल में पानी तो नहीं दियाजा रहा?

भारत सरकार द्वारा केन्द्रीय मण्डल के तीन सदस्यो की एक समिति गठित की गई है, जिस के अध्यक्ष श्री वी० पी० नरसिंह राव होगे और सदस्य स० बूटासिंह और श्री अर्जुनसिंह। इस समिति ने सरकार बरनाला और बलवन्तसिंह से बात कर ली है। देखते हैं वे लोग हरियाणा के प्रतिनिधियों से कब बात करते हैं। अकालियो ने सीधी कार्यवाही की धमकी देकर समझौते पर अमल के लिए भारत सरकार को फिर से तत्परता दिखाने के लिए मजबूर किया है। उनकी इच्छा तो यह है कि इस दबाव मे वे अपनी अनुचित बातें मनवा ले।

इस तथ्य पर पता नही क्यों ध्यान नही जाता कि अकाली ही समझौते पर अमल करने मे सब से बडी रुकावट हैं। जब समझौते मे यह स्पष्ट लिखा है कि आयोगो को फैसला बिना फेरबदल के वैसे का वैसा दोनो पक्षो को मानना पडेगा, फिर अकालियो की आनाकानी कैसी और फिर उनकी आनाकानी और मनमानी के कारण समझौते को दाल मे पानी क्यों ?

—प्रो० शेरसिंह
अध्यक्ष
हरयाणा रक्षावाहिनी

आर्यसमाज शालीमार बाग का ६वां वार्षिकोत्सव

इस आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव ३० जनवरी से १ फरवरी तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक महिला सम्मेलन ३० जनवरी को हो रहा है। जिस में श्रीमती शान्तिदेवी अग्निहोत्री, श्रीमती उषा शास्त्री, श्रीमती प्रकाश आर्या, श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र, श्रीमती शारदा वर्मा सम्बोधन दे रही हैं। ३१ जनवरीको बाल सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस में महता चुन्नीलाल स्मारक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी है जिसके अध्यक्ष श्री के०एम० बग्गा तथा सयोजक श्री डा० धर्मपाल होगे।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन

इस सम्मेलन को अध्यक्षता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती करेंगे, इसके सयोजक होंगे डा० महेश मुख्य अतिथि श्री महाशय धर्मपाल, मुख्य वक्ता श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, महात्मा राम किशोर जी, श्री सूर्यदेव जी, डा० धर्मपाल, श्री यशपाल सुधाशु।

दान देने का सुअवसर

आर्य जगत् की शान

माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय

सी-१, जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८

के

भवन-निर्माण के लिए

निम्न भवन-सामग्री की आवश्यकता है।

दिल खोलकर दान दीजिये

लोहा	..	६०००/- प्रति टन
ईंट	..	१२००/- प्रति ट्रक
रोडी	...	७००/- प्रति ट्रक
स्टोन डस्ट	...	७५०/- प्रति ट्रक
सीमेंट	..	६५/- प्रति बोरी

जो सज्जन भवन-निर्माण सामग्री देना चाहे तो उनका नाम दानदाता सूची पर लिखा जायेगा।

भवन-निर्माण के लिए भेजी गई राशि नकद/मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा—

माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय,
सी-१, मेन बस स्टाप जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८

के पते पर भेजी जाये।

दान दी गयी राशि आयकर अधिनियम जी-८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

—: निवेदक :—

ओमप्रकाश आर्य (मन्त्री)

ला० गुरमुखदास ग्रोवर (कार्यकारी अध्यक्ष)

कवि सम्मेलन—

बड़े बेवफा हैं जयचन्द के बेटे

२८ जनवरी, गाजियाबाद। स्थानीय रामलीला मैदान मे एक विशाल अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। हजारो श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध करते कवियो ने आधी रात तक समा बाधे रखा। मच पर उपस्थित कवियो ने राष्ट्र जागरण, देशभक्ति, शृङ्गार, हास्य रस से ओतप्रोत तथा आतकवाद के विरुद्ध अपनी रचनाओं से श्रोताओ के हृदय को मन्त्रमुग्ध कर दिया। कवि कुवर बेचैन ने कहा—

हर दिन भी अगारो के,
हर रात अगारो की।
सौंपी है हमे किस ने
ये सौगात अगारों की ?
मुश्किल है बहुत मुश्किल है
अब घर से निकल पाना।
कागज की छतरिया है
बरसात अगारों की॥

कृष्ण मित्र गरजे—

कवच पहनने का समय आ गया है,
आतक चारो तरफ छा गय है,
तमचो की बाते, प्रपञ्चो का बात
असर खो चुकी हैं ये पञ्चो की
बाते।

वेदप्रकाश सुमन—

जरा सी बात पर
पावन वचन बेच देते हैं
बडे ही बेवफा हैं जयचन्द के बेटे,
अपने स्वार्थ की खातिर
वचन को बेच देते हैं।

श्याम निर्भय—

कुछ भगतसिंह हो गये,
कुछ हमीद हो गये।
वो दिवाली हुए और ईद हो गये
बन गए तीज त्योहार वो सब यहाँ
जो मिटे देश पर या
शहीद हो गये।

(पृष्ठ १ का शेष)

अग्रिम मोर्चे पर सेना...

साथ सीमा पर तनाव खत्म करने के लिए किए वार्ता के भारत के प्रस्ताव के विपरीत नही है। भारत सरकार तनाव कम करने तथा उस के लिए अविलम्ब पाकिस्तान से वार्ता के लिए तैयार है। इसमे किसी तरह का कोई फर्क नही पडा है। साथ ही भारत किसी आक्रमण की तैयारी नही कर रहा है और न ही उसका ऐसा कोई इरादा है किन्तु सुरक्षा प्रबन्ध मे ढील नही दी जा रही है।

बताया जाता है कि वार्ता के स्तर, स्थान तथा तिथि के बारे मे पाकिस्तान से सन्देश मिलते ही भारत उस पर अपनी सहमति दे देगा।

कई रेलें रद्द

सीमा पर सेना भेजने के कारण ये रेले रद्द हुई है—

उत्तर रेलवे द्वारा रद्द ट्रेनो मे हावडा-अमृतसर जनता मेल, अवध-असम एक्सप्रेस, टाटा-अमृतसर एक्सप्रेस और फिरोजपुर मेल शामिल हैं।

दक्षिण क्षेत्र में रद्द ट्रेनो के नाम भी मद्रास-बंबई जनता एक्सप्रेस, मद्रास-कोयम्बटूर चेरन एक्सप्रेस, कोचिच-निजामुद्दीन एक्सप्रेस, बंगलूर-धर्मवरम एक्सप्रेस, मद्रास-बोकारो सिटी एक्सप्रेस, कोचिच-तिरुचेरापल्ली एक्सप्रेस और एर्नाकुलम-कण्णोर एक्सप्रेस। इसके अलावा कई पैसेजर गाडिया भी रद्द की गई हैं।

(न०भा० से साभार)

R N No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 29, 30-1-87 Licensed to post without prepayment, Licence No. U 139
रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा

ओ३म्

साप्ताहिक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक १६ | रविवार १५ फरवरी, १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८ | माघ २०४३ | दयानन्दाब्द—१६२
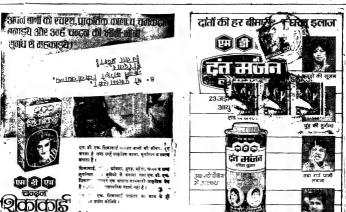
मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

दिल्ली प्रान्तीय आर्य युवा महासम्मेलन के परिप्रेक्ष्य में

युवकों को आह्वान एवं अपील

भारत देश का पुरातन इतिहास इतना उत्कृष्ट और देदीप्यमान है कि उसकी तुलना संसार में कोई इतिहास नहीं कर सकता। आर्य जाति त्याग, तप, आत्मिक शक्ति से युक्त ब्रह्मवर्चस् तथा आन बान शान और ओज तेज से युक्त, क्षात्र बल, कला कौशल, धन वैभव, उदार हृदय से युक्त, वाणिज्य बल, कठोर परिश्रमी पर्वतों को उखाडने वाले उद्दाम बल के समन्वित रूप से पराकाष्ठा पर पहुंची हुई थी। इसकी युवा शक्ति अनुशासन, विवेक और भद्र गुणों से भरपूर थी उसमें शक्ति का अजस्र स्रोत था, फडकती लौह भुजाएँ थी। पत्थर सी मांसपेशियां थी, उद्दामरौद्र रूप था, स्वाभिमान महत्वाकांक्षा और जिजीविषा थी। नहीं थी तो उच्छृङ्खलता नहीं थी। निराशा, चिन्ता, कुढ़न और जीवन से भागने की हताशा और विद्रोह का आवेश नहीं था। निर्माण और सृजन की दिशा मे बढते शक्तिशाली चरण तो थे परन्तु विनाश पर चलते विद्रोही क्रूर डरावने लक्ष्यहीन कदम नहीं थे। अनुशासित सभ्य युवा बल ने आज से एक हजार वर्ष पूर्व तक भारत में आर्य जाति का राजमुकुट ऊंचा किये रखा।

आज का युवा पथभ्रष्ट हो गया है उसका लक्ष्य खो गया है। खो गई है उसकी सृजन-शक्ति। नशे और निराशा से खोखला हुआ वह जीवन के संघर्ष से मुंह मोडकर भाग रहा है आज उसे वीरों का इतिहास प्रेरित नही कर रहा बल्कि अश्लील सिनेमा उपन्यास ने उसके भद्र विचारों के प्रवाह मे जहर घोल दिया है। वह भूल गया हनुमान्, अंगद, कर्ण, अर्जुन, अभिमन्यु, शिव, प्रताप, हकीकत जैसे वीरो की गौरव गाथा।

आज देश के नभ मण्डल पर फिर भयंकर घटाएँ घिरने लगी हैं। एकता और अखण्डता की मजबूत भित्ति को तोडने की भरपूर कोशिशे की जा रही हैं ऐसे में हमारा युवक अपने आप से विमुख हैं। उसमें अनुशासन की नितान्त आवश्यकता है। आवश्यकता है कि उसे अपने प्राचीन इतिहास से परिचित कराया जाये। आर्यसमाजी अपने जन्म-काल से ही निरन्तर देश, धर्म और मानव कल्याण के लिए हर सभव कार्य करता रहा है। इसी सन्दर्भ मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव आर्य वीरदल द्वारा दिल्ली आर्य युवा महासम्मेलन का आयोजन किया है। युवा निर्माण की दिशा मे इस सम्मेलन मे कुछ कदम उठाये हैं। आर्य वीर दल के माध्यम से भी आर्यसमाज युवकों को शारीरिक, और आत्मिक उन्नति के लिए प्रेरित करता रहा है।

यह सम्मेलन १६ फरवरी से २२ फरवरी १९८७ तक दिल्ली राज्य के चारो कोनों में एक साथ प्रारम्भ हो रहा है। जिसका समापन समारोह २२ फरवरी को तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम मे २ बजे से प्रारम्भ होगा। जिसमे युवको द्वारा भव्य प्रदर्शन होगे तथा वैदिक विद्वान् एव राष्ट्रीय नेता सम्बोधन देगे।

दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री डा० धर्मपाल ने अपील की है—"सभी देशप्रेमी, धर्मप्रेमी, युवा जागृति के समर्थक भाई बहनो का नैतिक कर्त्तव्य है कि कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अधिक से अधिक सख्या मे समापन समारोह तथा अन्य समारोहों मे पधारे। साथ ही धन आदि के द्वारा इस रचनात्मक कार्य के लिए अवश्य सहयोग दे। धन-राशि, चैक, ड्राफ्ट आदि, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली के पते पर भेजे।"

—यशपाल सुधांशु

धर्मवीर हकीकत बलिदान दिवस सम्पन्न

धर्म पर बलिदान होने वाले अमर बलिदानी बालवीर हकीकत राय के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह आर्यसमाज विनय नगर, नई दिल्ली में बडे उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इसका आयोजन अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति के माध्यम से प्रत्येक वर्ष किया जाता है। इस अवसर पर किशोर किशोरियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है जिसमें वीरता से परिपूर्ण और गाथाओं का मंचन एवं गायन किया जाता है। इस वर्ष रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के छात्रों का कार्यक्रम प्रभावपूर्ण एवं सराहनीय रहा।

बलिदानी बाल वीर की स्मृति में श्रद्धाञ्जलि सभा का समायोजन किया गया। जिसमें स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, श्री प० शिवकुमार शास्त्री, श्री सोमनाथ मरवाह, श्री सूर्यदेव, डा० धर्मपाल, श्री यशपाल सुधांशु तथा सारस्वत मोहन मनीषी

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आतंकवाद की धधकती ज्वाला में शहीद भगतसिंह की भानजी भी शहीद हुई

१५ फरवरी रविवार ३ बजे, आर्यसमाज दीवानहाल में

विराट् श्रद्धांजलि सभा

अध्यक्ष : स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

वक्ता : श्री जत्थेदार रिछपाल सिंह, प्रो० बलराज मधोक, पं० शिव कुमार शास्त्री, श्री मदनलाल खुराना आदि।

भारी संख्या में पहुंचकर शहीदे आजम भगत सिंह की भानजी श्रीमती गुरदेव कौर को श्रद्धाञ्जलि दीजिए।

—मन्त्री मूलचन्द गुप्त

समापन समारोह

तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम नई दिल्ली मे २ बजे से

खेलकूद, भाषण, वादविवाद, निबन्ध लेखन, चित्र कला और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से भरपूर आयोजन १६ फरवरी से प्रारम्भ हो रहे हैं। जिसका विवरण अन्दर के पृष्ठो पर देखे।

२२ फरवरी को तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम मे २ बजे से समापन समारोह का भव्य आयोजन किया गया है। जिसमें युवा वर्ग द्वारा शारीरिक और बौद्धिक कार्य-कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया जायेगा। इस अवसर पर अनेक आर्य विद्वान् राष्ट्रीय नेता तथा आर्य नेता मार्ग-दर्शन करेंगे। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए भारी सख्या मे बस आदि के द्वारा पधारे।

प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल | व्यवस्थापक—डा० [illegible] | सम्पादक—पं० यशपाल सुधांशु एम० ए०

॥ ओ३म् ॥

दिल्ली प्रान्तीय आर्य युवा महासम्मेलन

एवम्

खेल-कूद, भाषण, वाद-विवाद, निबन्ध-लेखन, चित्रकला, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अभूतपूर्व बृहद् आयोजन

१६ फरवरी १९८७ से २२ फरवरी १९८७

युवा निर्माण से ही समाज तथा राष्ट्र की उन्नति सम्भव

आज देश में चारों ओर अलगाववादी ताकतें, विदेशी विघटनकारी शक्तियों के इशारे पर भारतीय अखण्डता को ध्वस्त करने में प्रयत्नशील हैं। आर्यसमाज सदा से ही राष्ट्रोत्थान के लिए सजग प्रहरी रहा है। इन भीषण परिस्थितियों का सामना करने के लिए हमारा कर्तव्य है कि हम आने वाली पीढ़ी—आज के युवा जनों को सुसंगठित करें तथा उनमें कर्तव्य, सहभागिता और राष्ट्र रक्षा के लिए सजगता की भावना भरें। उनके चारित्रिक, आत्मिक एवं शारीरिक विकास के लिए कार्यक्रम आयोजित करें। युवा संसाधन में ही मानव कल्याण सम्भव है।

सभी धर्मप्रेमी भाई-बहनों से विनम्र निवेदन है कि इन सभी कार्यक्रमों में उपस्थित होकर युवा छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्धन करें तथा अपने बालकों को इन कार्यक्रमों में भाग लेने की प्रेरणा दें।

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

१६-२-८७	रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल वाई ब्लाक, विनय नगर (सरोजनी नगर), नई दिल्ली-२३
१७-२-८७	बिरला आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल बिरला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली-७
१८-२-८७	रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल स्थल—आर्यसमाज मन्दिर, १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली-१
१९-२-८७	मदभावा आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल करौलबाग, नई दिल्ली-५
२०-२-८७	सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली
२१-२-८७	रतनदेवी आर्य गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल कृष्णनगर, दिल्ली-५१
२२-२-८७	तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम

चित्रकला प्रतियोगिता

१६ फरवरी १९८७—प्रात: ११.०० बजे

स्थान—रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल
वाई ब्लाक, विनय नगर (सरोजनी नगर), नई दिल्ली-११००२३

संयोजक—श्री रोशनलाल गुप्ता

प्रथम वर्ग—कक्षा १ से ५ तक
द्वितीय वर्ग—कक्षा ६ से ८ तक
तृतीय वर्ग—कक्षा ९ से १२ तक

विषय—किसी आर्य नेता का चित्र अथवा सामाजिक महत्त्व का पोस्टर—जैसे दहेज विरोध, सड़क दुर्घटना, परिवार कल्याण आदि।

नियम—१ किसी एक विषय पर एक घण्टे में चित्र बनाना।
२. एक विद्यालय से एक वर्ग में केवल दो छात्र—कुल छः छात्र भाग ले सकेंगे।
३. प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय, तृतीय—कुल नौ पुरस्कार दिये जायेंगे।
४. निर्णायकों का निर्णय ही अन्तिम रूप से मान्य होगा।
५. विजेता छात्रों को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में २२-२-८७ को दिये जायेंगे।

निबन्ध-लेखन प्रतियोगिता

१६ फरवरी १९८७—प्रात: १२.०० बजे

स्थान—रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल
वाई ब्लाक विनय नगर (सरोजनी नगर), नई दिल्ली-११००२३

संयोजक—श्रीमती प्रनीता कपिला, प्रिंसिपल

प्रथम वर्ग—कक्षा १ से ५ तक
द्वितीय वर्ग—कक्षा ६ से ८ तक
तृतीय वर्ग—कक्षा ९ से १२ तक

नियम—१ विषय प्रतियोगिता-स्थल पर ही बताये जायेंगे। सभी विषय आर्यसमाज, समाज-सुधार तथा देश-प्रेम से सम्बन्धित होंगे। समय एक घण्टा होगा।
२. प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय, तृतीय—तीन पुरस्कार; कुल नौ पुरस्कार दिये जायेंगे।
३ एक विद्यालय से प्रत्येक वर्ग में केवल दो छात्र/छात्रा भाग ले सकेंगे
४. निर्णायकों का निर्णय ही अन्तिम एवं मान्य होगा।
५ विजेता छात्रों को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में २२-२-८७ को दिये जायेंगे।

वाद-विवाद प्रतियोगिता

१७ फरवरी १९८७—प्रात ११.०० बजे

स्थान—बिरला आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल
बिरला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली-७

संयोजक—श्रीमती सुशीला सेठी, प्रिंसिपल

कक्षा १ से ५ तक के छात्र-छात्राओं के लिए

विषय—विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा से ही छात्रों का सही विकास सम्भव है।

कक्षा ६ से ८ तक के छात्र-छात्राओं के लिए

विषय—भौतिक विज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान समाज-कल्याण के लिए आवश्यक है।

कक्षा ९ से १२ तक के छात्र-छात्राओं के लिए

विषय—राष्ट्र रक्षा शारीरिक रूप से बलिष्ठ लोग ही कर सकते हैं।

नियम—१. एक विद्यालय से प्रत्येक वर्ग में एक पक्ष में, एक विपक्ष में—बोलने के लिए दो; इस प्रकार कुल छः बालक भाग ले सकेंगे।
२. एक छात्र को तीन मिनट का समय दिया जायेगा।
३. प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय और तृतीय—तीन पुरस्कार अर्थात् कुल नौ पुरस्कार दिये जायेंगे।
४. निर्णायकों का निर्णय ही अन्तिम रूप से मान्य होगा।
५. विजेता छात्रों को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में २२-२-८७ को दिये जायेंगे।

भाषण प्रतियोगिता

१८ फरवरी १९८७—प्रात: ११.०० बजे

स्थान—रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल
स्थल—आर्यसमाज मंदिर, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

संयोजक—श्रीमती चन्द्र किनरा, प्रिंसिपल

कक्षा १ से ५ तक के छात्र-छात्राओं के लिए

विषय— १. महर्षि दयानन्द,
२. श्रीमती इन्दिरा गांधी,
३. स्वामी श्रद्धानन्द,
४. आर्यसमाज के कार्य।

कक्षा ६ से ८ तक के छात्र-छात्राओं के लिए

विषय—१. राष्ट्र निर्माण में युवा वर्ग का योगदान,
२. महर्षि दयानन्द—स्वराज्य के प्रथम मन्त्रदाता,
३. महात्मा हंसराज और डी० ए० वी० आन्दोलन।

कक्षा ९ से १२ तक के छात्र-छात्राओं के लिए

विषय—१. भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति में आर्यसमाज का योगदान,
२. आर्यसमाज और शिक्षा,
३. समाज सुधार।

नियम—१. किसी एक विषय पर तीन मिनट का हिन्दी में भाषण।
२. एक विद्यालय से प्रत्येक वर्ग से केवल दो छात्र भाग ले सकेंगे।
३. प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय और तृतीय—कुल नौ पुरस्कार दिये जायेंगे।
४. निर्णायकों का निर्णय ही अन्तिम रूप से मान्य होगा।
५. विजेता छात्रों को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में २२-२-८७ को दिये जायेंगे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगिता

१९ फरवरी १९८७—प्रातः ११.०० बजे

स्थान—सत्भावां आर्य कन्या महाविद्यालय
करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५

संयोजक—श्रीमती (डा०) सुदर्शन नाहल, प्रिंसिपल

प्रथम वर्ग—कक्षा १ से ५ तक
द्वितीय वर्ग—कक्षा ६ से ८ तक
तृतीय वर्ग—कक्षा ९ से १२ तक

विषय—देश प्रेम, आर्यसमाज, राष्ट्रनेता सम्बन्धी भजन, कविता, अथवा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम।

नियम—१. एक विद्यालय से केवल एक कार्यक्रम लिया जा सकेगा अर्थात्
२. समूह गान अथवा अन्य कार्यक्रम में अधिकतम दस छात्र/छात्रा भाग ले सकेंगे।
३. कार्यक्रम का अधिकतम समय १५ मिनट होगा।
४. तीनों वर्गों में अलग अलग प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाली टीमों को व्यक्तिगत पुरस्कार दिये जायेंगे।
५. निर्णायकों का निर्णय ही अन्तिम रूप से मान्य होगा।
६. विजेता छात्रों को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में २२-२-१९८७ को दिये जायेंगे।

खेलकूद प्रतियोगिता

२० फरवरी १९८७—प्रातः ११.०० बजे

स्थान—सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल
पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

संयोजक—श्रीमती वृजबाला भल्ला, प्रिंसिपल

प्रथम वर्ग— ५ वर्ष से १० वर्ष
द्वितीय वर्ग—११ वर्ष से १३ वर्ष
तृतीय वर्ग—१४ वर्ष से १७ वर्ष

खेल का नाम	आयु वर्ग	कुल पारितोषिक
१. भाला फेंकना (बालक)	१४ से १७ वर्ष	३
२. भाला फेंकना (बालिका)	१४ से १७ वर्ष	३
३. चक्का फेंकना (बालक)	१४ से १७ वर्ष	३
४. चक्का फेंकना (बालिका)	१४ से १७ वर्ष	३
५. ऊँची कूद (बालक)	११ से १३ वर्ष	३
६. ऊँची कूद (बालिका)	११ से १३ वर्ष	३
७. ऊँची कूद (बालक)	१४ से १७ वर्ष	३
८. ऊँची कूद (बालिका)	१४ से १७ वर्ष	३
९. लंबी कूद (बालक)	१४ से १७ वर्ष	३
१० लंबी कूद (बालिका)	१४ से १७ वर्ष	३
११. लंबी कूद (बालक)	११ से १३ वर्ष	३
१२. लंबी कूद (बालिका)	११ से १३ वर्ष	३
१३. १०० मीटर दौड़ (बालक)	५ से १० वर्ष	३
१४ १०० मीटर दौड़ (बालिकाएँ)	५ से १० वर्ष	३
१५. २०० मीटर दौड़ (बालक)	११ से १३ वर्ष	३
१६. २०० मीटर दौड़ (बालिकाएँ)	११ से १३ वर्ष	३
१७ ४०० मीटर दौड़ (बालक)	१४ से १७ वर्ष	३
१८ ४०० मीटर दौड़ (बालिकाएँ)	१४ से १७ वर्ष	३

नियम—१ एक विद्यालय से प्रत्येक वर्ग से केवल दो बालक/बालिकाएँ भाग ले सकेंगे।
२. बालक/बालिकाओं को अपने विद्यालय का आयु प्रमाणपत्र लाना अनिवार्य होगा।
३. प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय, तृतीय—कुल ५४ पुरस्कार दिये जायेंगे
४. निर्णायकों का निर्णय ही अन्तिम रूप से मान्य होगा।
५. विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में २२-२-८७ को दिये जायेंगे।

वालीबाल, प्रतियोगिता (बालिका)

२१ फरवरी १९८७—प्रातः ११.०० बजे

स्थान—रतनदेवी आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल
कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१

संयोजक—श्री नेतराम आर्य, प्रबन्धक

खेल का नाम—वालीबाल

नियम—१. एक विद्यालय से प्रत्येक खेल में केवल एक टीम भाग ले सकेगी।
२. प्रत्येक खेल में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाली टीमों के सदस्यों को व्यक्तिगत पुरस्कार दिये जायेंगे।
३. निर्णायकों का निर्णय ही अन्तिम रूप से मान्य होगा।
४. विजेता छात्राओं को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में २२-२-८७ को दिये जायेंगे।

समापन समारोह

२२ फरवरी १९८७ अपराह्न २.०० बजे

स्थान : तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम

कार्यक्रम—१ वेद गायन, २ पी०टी० प्रदर्शन, ३ शारीरिक कार्यक्रम व योग प्रदर्शन, ४ पुरस्कार वितरण, ५. अध्यक्षीय भाषण, ६. धन्यवाद एवं शान्ति पाठ।

अध्यक्षता : **श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती**
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

निवेदक

सूर्यदेव — प्रधान
डा० धर्मपाल — महामंत्री
(दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)

श्याम सुन्दर विरमानी — मंत्री
प्रियतमदास रसवन्त — अधिष्ठाता
(आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश)

नोट—तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टीम को एक बड़ी शील्ड विद्यालय के लिए दी जाएगी।

* ओ३म् *

★ निमन्त्रण ★

महात्मा प्रभु आश्रित जन्म-शताब्दी समारोह के भव्य आकर्षण

१४ फरवरी १९८७ से २२ फरवरी १९८७।

स्थान—वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक

१. स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता एवम् महात्मा दयानन्द के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद व राष्ट्रभृत यज्ञ।
२. वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक से शोभा-यात्रा (१४।२।८७) मध्याह्न २ बजे से ५ बजे तक।
३. वेद सम्मेलन, योग सम्मेलन एवं यज्ञ सम्मेलन की त्रिवेणी।
४. महात्मा दयानन्द, स्वामी आनन्द बोध, पं० जैमिनी शास्त्री, महात्मा बलदेव, पं० पृथ्वीराज शास्त्री एवं ब्र० आर्य नरेश के मनोहर प्रवचन।
५. आचार्य रामदत्त शर्मा, पं० वागीश जी का सस्वर वेद-पाठ।
६. साधकों, वेदकण्ठस्थियों एवम् याज्ञिकों का सम्मान।
७. भक्ति संगीत प० सत्यपाल जी पथिक, पं० जयदेव जतोई वाले, भक्त मदनलाल एवम् यादराम जी।
८. लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ की अध्यक्षता में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन।

आप सब से अनुरोध है कि अपने परिवार-जनों व इष्ट-मित्रों सहित पधार कर इस उत्सव की शोभा में वृद्धि करें।

विनीत :

लखपति शास्त्री
मन्त्री
प्रभु आश्रित जन्म शताब्दी समिति

दयानन्द
(प्रधान)

सम्पादक के नाम पत्र

ईसाई स्कूल या भिक्षा केन्द्र

साप्ताहिक 'आर्यसन्देश' १८ जनवरी, १९८७ अंक चाव से पढ़ा। 'हिन्दुस्तान में ईसाई मिशनरियों के काले कारनामों का भण्डाफोड' के माध्यम से श्री गोयल ने सेवा और सहायता के नाम पर पापाचार में लगे लोगों की अराष्ट्रीय तथा एकता विरोधी घृणित हरकतों पर प्रकाश डाला है। कलकत्ता महानगर में ईसाई समाज की कथित महान् सेवी मदर टैरेसा के रहते हुए भी हजारों भूखे नंगे फुटपाथ पर पड़े देखे जा सकते हैं। गरीबों और अभावग्रस्त लोगों के ऐसे अनेक इलाके इस महानगर में मौजूद है, जहां आज तक मदर टेरेसा ने कदम नहीं रखा। ईसाई समाज के ही गरीबों को पार्क सर्कस, ट्राम डिपो के समीप वाले गिरजा से कतार लगाकर अमेरिका से भेजा गया टूटा-फूटा गेहूं 'बुल्गा' नाम से ले जाते देखा जा सकता है।

रांची में 'पंचखण्ड पीठाधीश्वर' धर्मेन्द्र जी महाराज के भण्डाफोड़ करने पर एक विदेशी पादरी को केन्द्रीय सरकार ने भारत छोड़ने का आदेश दिया था, किन्तु कलकत्ता के ईसाइयों के दबाव में आकर प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने बिना सी०बी०आई० से जांच कराये उस पादरी को भारत में रुकने की अनुमति प्रदान कर दी। रांची तथा ब्यावर में छात्र-छात्राओं के साथ किये जा रहे घृणित एवं अनैतिक यौनाचार किसी भी सभ्य समाज के लिए कलंक के टीके हैं। क्या ईसाई समाज इस कलंक के रहते अपने आप को प्रभु ईसू का सच्चा सेवक कह सकता है?

एल्गिन रोड, कलकत्ता-२० अवस्थित 'जूलियन डे स्कूल' के छात्र-छात्राओं को प्रति शुक्रवार आलु और प्याज स्कूल में देने होते हैं। ये आलू-प्याज बोरों में भरकर ईसाई मिशनरी की 'नन्स' बूढे ईसाई नरनारियों हेतु ले जाती हैं। इतना ही नहीं जो छात्र आलू-प्याज लाना भूल जाते हैं उन्हें शारीरिक रूप से दंडित किया जाता है। शिक्षा-केन्द्र के माध्यम से ईसाई समाज की सेवा का यह अभिनव तरीका कलकत्ता में अपनाया जा रहा है। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री का कर्त्तव्य है कि इस तथ्य की जांच कराकर स्वाधीन भारत के शिक्षा-केन्द्र से सेवा के नाम पर भीख मांगने की इस अवांछनीय परम्परा को बन्द करायें।

—आत्माराम पण्डित
२४, शेक्सपियर सारणी
कलकत्ता-७०००१७

हिन्दी के लिए 'थोपना' शब्द का प्रयोग करना उचित नहीं

जब हमारे देश के कर्णधार राष्ट्रभाषा के संबंध में कोई वक्तव्य देने लगते हैं तो प्राय: दो बातें वे अवश्य कहते हैं—एक तो यह कि हिन्दी को सरल बनाया जाना चाहिए और दूसरे यह कि हिन्दी थोपी नहीं जायेगी।

जहाँ तक हिन्दी के सरल बनाये जाने का प्रश्न है, उस से तो यह सिद्ध होता है कि ऐसा कथन करने वाले महानुभावों को हिन्दी का पूर्ण ज्ञान ही नहीं है अन्यथा संसार की सर्वोत्कृष्ट लिपि देवनागरी एवं सरलतम भाषा हिन्दी के बारे में ऐसी निराधार टिप्पणी कदापि न करते। ऐसा वक्तव्य देते समय संभवत: उन्हें इसका अनुमान ही नहीं रहता कि उनके ऐसे कहने मात्र से हिन्दी भक्तों को कितना गहरा आघात पहुंचता होगा।

जहां तक हिन्दी के थोपे जाने की बात है, ऐसा कह कर स्वयं हिंदी का घोर अपमान करना है। थोपना शब्द का तो अर्थ होता है—किसी अनिच्छुक व्यक्ति पर बलात् कोई भार या अप्रिय वस्तु लादना। हिंदी भार तो नहीं और न ही कोई बुरी वस्तु है। वह तो भारतीय संविधान में स्वीकृत इस राष्ट्र की आदरणीया राष्ट्रभाषा तथा अपने आदि काल से इस देश की एकता, अखण्डता और अनुपम संस्कृति की जीवन्त संवाहिका है। लोकमंगल की भावना में अहर्निश तपस्यामग्न सन्तों के कण्ठ से निकली भाषा का गौरव और महत्त्व साधुजन ही समझ सकते हैं। जो लोग हिन्दी के माध्यम से राजनीतिक उपलब्धि चाहते हैं, वे इसकी महत्ता और विशेषता भला क्या समझेंगे।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

नाम दयानन्द का काम अंग्रेजों का

—डा० महेश विद्यालंकार

आर्यसमाज सुधारवादी क्रांति एवं चिन्तन रहा है। इसी कारण आर्यसमाज ने इतिहास में अपनी अनूठी छाप एवं पहिचान छोड़ी है। जागरूक प्रहरी की तरह इस विचार-धारा से सदैव ही धर्म संस्कृति-वेद, इतिहास एवं महान् आदर्शों की रक्षा करता आया है। इसका प्रवर्तक अपने में हर पहलु से सच्चा-पूरा और आदर्श रहा है। पद, लोभ, मान, यश, कीर्ति तथा चरित्र आदि की दृष्टि से उस महामानव में कोई भी दुर्बलता नहीं थी। इसी कारण उस महापुरुष का नाम लेते या सुनते हृदय श्रद्धा-आस्था और नम्र भावना से नत हो जाता है। ऐसा उच्च, दिव्य, भव्य देवात्मा भाग्यशाली पुरुष-समाज एवं राष्ट्र को ही मिलता है। जिसका समग्र जीवन प्राणी-मात्र के कल्याण उत्थान और निर्माण हेतु समर्पित रहा हो। जिसने अपना यौवन तिल-तिल सा जलाकर, भूले भटके तथा बिसरे मानव के मार्ग को प्रकाशित करने में लगा दिया हो। जिसका जीवन विचित्र व विलक्षण घटनाचक्रों में भी आदर्श-मय रहा हो।

ऐसे युग पुरुष के नाम पर आज हमीं कुछ लोग दुकानें, संस्थाएं, स्कूल आदि खोलकर व्यावसायिक दृष्टि-कोण अपनाते जा रहे हैं। इस प्रवृत्ति और आचरण से आर्यसमाज का प्रचार, प्रसार वास्तविक अर्थों में बढ़ने की बजाय घट रहा है। क्योंकि जहां व्यापार-बुद्धि आती है वहां श्रद्धा, आस्था-भावना, त्याग एव निर्माण-भावना समाप्त हो जाती है। मूल छूट जाता है। समाज का प्रचार-गौण हो जाता है। केवल लाभ और स्वार्थ प्रबल हो जाते हैं। सिद्धान्तों, मन्तव्यों और आदर्शों को भुलाकर केवल अर्थ एकत्र करना मात्र उद्देश्य बन जाता है। अपने सगे सम्बन्धियों, भाई-भतीजों को लाभ पहुंचाना दृष्टिकोण बनने लगता है। इसके लिए गलत व्यक्तियों को, अनुचित कामों को, सिद्धान्तहीन बातों को खुलेआम अपनाया और महत्त्व दिया जाता है। जैसा कि आज आर्यसमाज के मन्दिरों में पब्लिक स्कूल, इगलिश मीडियम स्कूल, मोडर्न स्कूल, आदर्श स्कूल आदि खोलने का भूत सा सवार, हो रहा है। इससे आर्यसमाज मंदिरों की समस्त मान-मर्यादा, आदर्श, सिद्धान्त-चिन्तन, चरित्र-शुद्धता, पवित्रता आदि को हानि पहुंच रही है। जहां भी समाज मन्दिरों में स्कूल खुले और चल रहे हैं वहां के सत्संगों में अड़ोस-पड़ोस की जनता में, अध्या-पक और विद्यार्थियों में कोई आर्य-समाज की चेतना-ललक और वेदना नजर नहीं आती। क्योंकि संचा-लकों का चरित्र व्यवहार-जीवन इतने विरोधाभासों में होता है कि श्रद्धालु, आस्थावान और संस्कृति प्रेमियों पर उल्टा असर हो रहा है। लोग निकट आने की बजाय दूर रहना ही अधिक ठीक समझते हैं।

पीडा होती है जब धन को एकत्र करने के लिए संस्कृति के नाम असां-स्कृतिक कार्यक्रम की टिकटें, कूपन और चन्दे की रसीद बुकें आर्यसमाज और दयानन्द के नाम पर बेची जाती हैं। जब आर्यसमाज मन्दिर के मंच पर, दयानन्द के चित्र के नीचे नाचना, गाना, रासलीला, स्वांग और महापुरुषों की नकल करके उनका उपहास उडाया जाता है। बीडी, सिगरेट, जूता, चप्पल लिये लोग मच पर आ रहे हैं। पिछले दिनों एक समाज मन्दिर के स्कूल के मच पर एक संन्यासी बैठे थे। उनके मुह पर नाचती हुई लड-कियों के घूंघरू आकर गिरे। उनका लंहगा, चुन्नी बार बार संन्यासी के शरीर को स्पर्श कर रहा था। क्या फर्क रह गया अग्रेजी स्कूलों में और दयानन्द नामधारी स्कूलो में। वे भी नाचते गाते और महापुरुषों की खिल्ली उडाते, हम भी वैसा ही कर रहे हैं। ऋषि ने जिन बातों का विरोध किया था वही हमने अपना लीं। ऋषि ने अंग्रेजो स्कूल खोलना सरकार का काम बताया है। सह-शिक्षा हमारी सस्कृति के लिए घातक है। ये दोनों ही बातें हमारे समाज मन्दिर के स्कूलों में हो रही हैं। ऊपर से दुहाई दी जाती है कि हमें जमाने के साथ चलना ही चाहिए नहीं तो पीछे रह जायेंगे? अन्धी नकल बौद्धिक दरिद्रता का चिह्न है। जमाना तो अनेक प्रकार के गलत कामों से आगे बढ रहा है, क्या हम भी वैसा ही करने लगे? हमें अपने स्वत्व और अस्तित्व को नहीं भूलना चाहिए। यदि अपने आदर्श, जीवन मूल्यों, स्वाभिमान एव चरित्र-बल कायम रखेंगे तो ससार झुकता है झुकाने वाला चाहिए। अकेले ऋषि ने, श्रद्धानन्द ने, हंसराज ने जो कर दिखाया उतना आज सब कुछ होते हुए भी नहीं हो पा रहा है क्योंकि मूल में भूल हो रही है। इतना ही नहीं अब तो आर्यसमाज के स्कूल अपने वार्षिक उत्सव में बम्बई से नाचने, गाने, भोगीविलासी नाना प्रकार के रग रूप बनाने वाले सिनेमा के अभिनेताओं को बुलाना आदर्श मानते हैं। क्या हम कोमल हृदय विद्यार्थियों को उन जैसा बनने की ही प्रेरणा-चेतना देना चाहते हैं? क्या यही दयानन्द की आदर्श शिक्षा पद्धति का उद्देश्य रह गया है?

आज ससार नाना प्रकार के दुःखों कष्टों और संघर्षों से निकल रहा है। अनेक प्रकार की समस्याओं से मानव जूझ रहा है। आर्यसमाज के मन्दिर आज के अशान्त मानव को बहुत कुछ दे सकते हैं। बशर्ते वे मन्दिर स्वयम् अपने स्वस्थ स्वरूप में अवस्थित हों। उनमें शुचिता, पवित्रता, सात्त्विकता और धार्मि-कता हो। सदस्यों, अधिकारियों और उपदेशक वर्ग मे यज्ञ, भजन, सत्संग साधना आदि में श्रद्धा और निष्ठा हो, उनके जीवनों में तप, त्याग, तपस्या हो। त्याग की भावना से सब झगडे छूट जाते हैं। मन्दिर झगडों की जगह नही है। मन्दिर तो मानसिक शांति के केन्द्र हैं। यहा से तापित, पीडित, अशान्त, क्षुब्ध, भूले-भटके, निराश, हताश मानव को सजीवनी शक्ति प्रेरणा चेतना मिल सकती है। आज संसार को इसकी सब से अधिक आवश्यकता है। मन्दिर ही इस कार्य को पूरा कर सकते हैं। यह हमारी कमी और स्वार्थ रहा कि हमने मन्दिरों को राजनीति के अखाडे बना दिए। पदों और झूठे-मान सम्मान के लिए सघर्ष हो रहा है। सेवा के लिए संघर्ष की जरूरत नही है। भारतीय चिन्तन में इलेक्शन को नही सले-क्शन का महत्त्व रहा है। जो पात्र हैं उसे अधिकार दो। कुपात्र को अधिकार देने से सर्वत्र संघर्ष-अशांति और विद्रोह फलेगा, वही हो रहा है।

आज समय की आवश्यकता और मांग है। बालकों, युवकों एवं युवतियों में श्रेष्ठ-आचार विचार, रहन, सहन तथा आस्तिक जीवन-मूल्यों की। जिससे वे भारतीय होने का स्वाभिमान कर सकें। जरूरत है नैतिक मूल्यों तथा आदर्शों की जिससे निर्माण हो सके। देश-धर्म और जाति को नवीन स्फूर्ति, प्रेरणा और आदर्श देने के लिए आर्यसमाज के अतीत का इतिहास अहं भूमिका निभा सकता है। समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों, घातक दुर्व्यसनों तथा अज्ञानता को मिटाने के लिए आर्यसमाज अपने मन्दिरों में कार्य-क्रम बनाए। मन्दिरों में विद्वानों, उपदेशकों, सगीतज्ञो और सन्यासियों को उचित मान-सम्मान सुविधाए देनी होंगी। उनके तप-त्याग को महत्त्व देकर ही मन्दिर जीवित रहेंगे। वे ही इन चिरन्तन मूल्यों की मसाल को आगे ले चलेंगे। वे भी इन मंदिरों की गरिमा, आदर्श, मर्या-दाओं का पालन करने वाले हों। उनमें व्यावसायिक वृत्ति न होकर निर्माण और प्रचार-प्रसार की भावना भरी हो। तभी मन्दिरों में आकर्षण उत्पन्न होगा। लोगों में श्रद्धा-भावना जागृत होगी। इसके लिए आर्यसमाज को सेवा का व्रत लेना होगा। पहले अपनी शुद्धि करनी होगी। अपने अन्दर झाकना होगा। अपने जीवन मे तप-त्याग और तपस्या को महत्त्व देना होगा। तभी अपनी उन्नति और समाज का प्रचार-प्रसार सभव हो सकता है।

संस्कृत नहीं संस्कृति को हटाने का षडयन्त्र

आर्यसमाज गोविन्द नगर के तत्त्वावधान में आयोजित सभा में उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने कहा कि नयी शिक्षा नीति मे संस्कृत को हटाने के पीछे आर्य (भारतीय) सस्कृति को हटाने का षड्यन्त्र है। आर्यसमाज जो अपने जन्म काल से सस्कृत का पक्षपाती रहा है, इस नापाक साजिश को सफल नही होने देगा।

सभा में स्वीकृत प्रस्ताव में भारत सरकार से माग की गई कि सस्कृत को ऐच्छिक नही बल्कि अनिवार्य भाषा बनाया जाये। त्रिभाषा फार्मूले से आधुनिक भाषा शब्द हटाकर केवल भारतीय भाषा जोडा जाये।

(पृष्ठ ४ का शेष)

हिन्दी के लिए…

हिन्दी के सन्दर्भ मे ऐसा कथन करने वालों को सर्वशक्तिमान् ईश्वर सद्बुद्धि दे, मेरी उससे यही करबद्ध प्रार्थना है।

—राजर्षि रणञ्जयसिंह
भूपति भवन, अमेठी-२२७४०५
जनपद सुलतानपुर, उ० प्र०

समाचार

आर्य युवा महासम्मेलन को सफल बनायें

अत्यावश्यक बैठक

युवा शक्ति ही राष्ट्र की धरोहर है। युवा शक्ति को समय समय पर जागृत करने, उनमे खेल-कूद वाद-विवाद, भाषण, निबन्ध लेखन, योग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपने वास्तविक धर्म का बोध कराना अपने सिद्धान्तों का ज्ञान कराना हम सब का पुनीत कर्तव्य है, तभी वह आगे चलकर देश की बागडोर सम्भालेगे और राष्ट्र को नई दिशा प्रदान करगे।

इसी उद्देश्य से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत वर्ष की भाति इस वर्ष भी १६ से २२ फरवरी १६८७ तक आर्य युवा महासम्मेलन का आयोजन किया है।

इस युवा महासम्मेलन को पूर्ण रूप से सफल बनाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्यों आर्यसमाज के प्रधानों, मंत्रियो, स्त्री आर्यसमाज की प्रधाना, मन्त्री शिक्षण-संस्थाओ के प्रिंसिपल महोदयों/महोदयाओ, प्रबन्धकों कार्यकर्ताओं को एक अत्यावश्यक बैठक शनिवार, १४ फरवरी १६८७ को मध्याह्नोतर ४-०० बजे आर्य-समाज मंदिर, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ में रखी गई है।

आप से मेरी सानुरोध प्रार्थना है कि आप इस बैठक मे अवश्य दर्शन देकर आय संगठन-शक्ति का परिचय दे।

आपका सहयोग, सद्भाव और आशीर्वाद ही हमारा सबल है।

भवदीय

(सूर्यदेव) सभा प्रधान

(डा० धर्मपाल) महामन्त्री

भाषण प्रतियोगिता

२२ फरवरी रविवार प्रात. ६ बजे—आर्यसमाज किंग्जवे कैम्प हडसन लाईन में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद गुरुतेग बहादुर शाखा के तत्त्वावधान में भाषण प्रतियोगिता होगी। विषय : राष्ट्र उत्थान में महर्षि दयानन्द जी का योगदान।

शान्ति सभा सूचना

गहन दुःख के साथ भरे हुए हृदय से सब आर्यजनों, आर्य सस्थाओं एव सभी हिन्दू संगठनों को सूचित किया जाता है कि आर्यजगत के निष्टावान कार्यकर्ता, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जयप्रकाश जी आर्य के सुयोग्य पुत्र श्री अजय कुमार का दिनांक ७-२८७ को असामयिक निधन हो गया है। शान्ति सभा दिनाक १५-२-८७ (रविवार) को प्रात ६ बजे उनके निवास स्थान ए/१०७, विवेक विहार, दिल्ली-३२ में होगी।

डा० धर्मपाल
महामन्त्री

दुःखद सूचना

समाजसेवी श्री रामभज बतरा की धर्मपत्नी का १ फरवरी को देहावसान हो गया। वे ६३ वर्ष की थी। उनकी स्मृति मे श्रद्धाञ्जलि सभा १५ फरवरी को आर्यसमाज पंजाबी बाग, नई दिल्ली में सायं ३ बजे से ४ बजे तक होगी।

धर्मवीर हकीकत…

(पृष्ठ १ का शेष)

आदि वक्ताओ ने अपने विचारों से जनता का मार्ग दर्शन किया। मच सचालन श्री रोशनलाल आर्य ने किया।

उल्लेखनीय है कि धर्मवीर हकीकत का बलिदान २४३ वर्ष पूर्व रावी नदी के किनारे लाहौर में मुस्लिम कट्टरता एवं मतान्धता के कारण हुआ था। उस समय भारत में मुगल शासक मोहम्मद शाह रंगीला का शासन था। उस समय गैर मुस्लिमों को हर तरह से अपमानित व प्रताड़ित होना। पड़ता था आतंक और अत्याचार के उस युग में भी १५ वर्षीय हकीकत ने मौत की तलवार के सामने धर्म से च्युत न होने का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया। जो तमाम हिन्दू समाज की जर्जरित काया में प्राण फूंकने वाला उल्लेखनीय कारण बना था।

कन्या गुरुकुल हसनपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

डा० धर्मपाल द्वारा महर्षि के मिशन को पूरा करने के लिए सेवा का व्रत लेने का आह्वान

"आर्यसमाज का अतीत गौरवमय है। हमें इसकी महान् उपलब्धियों व उत्कृष्ट कार्यों पर गर्व है। हमें सेवा निष्ठा, वेदप्रचार व शिक्षा के माध्यम से महर्षि के मिशन को आगे बढाने के लिए हर सम्भव त्याग के लिए तत्पर रहना चाहिए।" यह उद्गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर के वार्षिकोत्सव पर ३ फरवरी को आयोजित समापन समारोह में व्यक्त किए। विगत वर्षों में आर्यसमाज की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए डा० धर्मपाल ने बताया कि पोप पाल के भारत आगमन के अवसर पर कालाहाण्डी क्षेत्र में ३ लाख आदिवासियों को ईसाई बनाने की योजना थी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के नेतृत्व में एक शिष्ट मण्डल जिसमें प्रो० शेरसिंह और वे स्वय भी थे, श्री बलराम जाखड़, श्री राजीव गांधी और श्री अरुण नेहरू से मिला। श्री नेहरू ने उसी समय वायरलेस से सबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए और लाखों हिन्दूओं को ईसाई बनने से रोकने में आर्यसमाज सफल हुआ। इतना ही नहीं आर्यसमाज ने शुद्धि कार्यक्रम आयोजित करके उसी दिन ढाई हजार ईसाइयों को हिन्दू धर्म में प्रविष्ठ कराया। आर्यसमाज ने रामनाथपुरम और मीनाक्षीपुरम में मुसलमान बने, भाइयो को पुन: हिन्दू धर्म मे प्रविष्ठ कराया। पिछले दिनों हरियाणा के आर्य युवक श्री रामकुमार भारद्वाज को अपने साथ गीता व सत्यार्थप्रकाश रखने के आरोप मे सऊदी अरब की सरकार ने जेल में डाल दिया था। वह किसी प्रकार इस काण्ड की सूचना सार्वदेशिक सभा को भेजने मे सफल हो गया। स्वामी आनन्द बोध जी ने प्रधान मन्त्री और विदेश मन्त्री से आग्रह किया कि वह इस मामले में तुरन्त हस्तक्षेप करे। आर्यसमाज के ही सत्प्रयास से इस युवक को रिहा कर दिया गया। अमानवीय यातनाओं को सह कर भी मुसलमान न बनना स्वीकार करने वाले इस युवक पर आर्यसमाज को गर्व है। दिल्ली के न्यू रोशनपुरा में पिछले रविवार को भी एक नये आर्यसमाज मंदिर की स्थापना की गयी है। यहाँ से धर्म रक्षा महाअभियान देहातों में आर्यसमाजों की स्थापना करने और बिछुडे भाइयों को पुनः हिन्दू धर्म में प्रविष्ठ कराने के लिए प्रारंभ किया जायेगा। आर्यसमाज कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्देश्य लेकर मद्यपान और अन्य कुरीतियों को दूर करने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं।

इस दिन गुरुकुल में वसन्तोत्सव व गुरुकुल के संस्थापक प्रधान श्री स्वामी विजयानन्द का जन्म-दिवस भी मनाया गया। डा० साहब ने पुष्पहारों द्वारा स्वामी जी का स्वागत करते हुए वसन्त की तरह स्वस्थ प्रसन्न रहते हुए शतायु होने की कामना की। यह दिन वीर हकीकत राय के बलिदान का भी दिवस है। हमें उस वीर की धर्मनिष्ठा से प्रेरणा लेनी चाहिए।

महाराष्ट्र सरकार ने महात्मा फुले के ऊपर एक वृत्तचित्र तैयार किया है। महात्मा फुले एक महान समाज सेवी व शिक्षाप्रेमी थे। आर्यसमाज की स्थापना से पहले महर्षि दयानन्द ने पूना में १३ व्याख्यान दिए थे, जो जस्टिस राणाडे की कृपा से हमें उपलब्ध हैं। महात्मा फुले ने नारी जाति शिक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। ऋषि के भाषणों के दौरान निकाली गयी एक शोभायात्रा इस वृत्तचित्र में है, जिसमे दयानन्द और महात्मा फुले को साथ साथ चलते दिखाया गया है। यह चित्र इस बात को स्पष्ट करता है कि उस समय महर्षि दयानद का भरपूर स्वागत पूना में हुआ था।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द के मधुर भजनोपदेश ने सभी उपस्थित श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने देश, धर्म और जाति के लिए निर्भय होकर कार्य करने की आर्यजनों को प्रेरणा दी।

समारोह मे श्री स्वामी जी, डा० धर्मपाल और श्री विमलकान्त शर्मा का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। स्वामी स्वरूपानन्द ने स्वामी विजयानन्द को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य की ७५ पुस्तकें पुस्तकालय के लिए भेंट की।

—विमल कान्त शर्मा
प्रचार विभाग

ऋषि-मेला १९८७

सर्वतोमुखी क्रान्ति के मूल प्रणेता महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का बोध-दिवस दिल्ली राज्य की सभी आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान में बृहस्पतिवार २६।२।८७ को शिवरात्रि के दिन प्रातः ८ बजे से साय ४ बजे तक विशाल "ऋषि-मेला" के रूप मे कोटला फिरोजशाह के विस्तृत मैदान में पूरे समारोह से मनाया जाएगा।

कार्यक्रम की रूपरेखा

प्रातः ८.०० बजे से	बृहद् यज्ञ
९.३० बजे	ध्वजारोहण
१०.०० बजे	मन्त्र दौड, नियम दौड, कबड्डी, रस्साकसी, योगासन
१२.०० बजे से	आर्य युवक परिषद्, दिल्ली द्वारा विद्यार्थियों
१.३० बजे तक	की भाषण प्रतियोगिता, श्री मूलचंद गुप्ता
१.३० बजे से ३.०० बजे तक	सांस्कृतिक कार्यक्रम, पारितोषिक वितरण
मध्याह्न ३.०० बजे से	सार्वजनिक सभा प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में।

आप से प्रार्थना है कि उस दिन अपने कार्यालय से अवकाश लेकर अपनी-अपनी विशेष बसों द्वारा अधिक से अधिक सख्या में सपरिवार पधारकर अपने कर्तव्य का पालन करें।

आर्य शिक्षण-संस्थाओं के अधिकारियो से प्रार्थना है कि उस दिन का सार्वजनिक अवकाश घोषित कर सोल्लास ऋषि-मेले में सम्मिलित हों।

आर्यसमाजों/शिक्षण-संस्थाओं से विशेष प्रार्थना है कि उपरोक्त प्रतियोगिताओं के लिए नाम जल्दी भेजकर व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में सहयोग करें।

निवेदक :

महाशय धर्मपाल (प्रधान) — राजेन्द्र दुर्गा (महामन्त्री)

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजीकृत)

कार्यालय : १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

दूरभाष ३११२८०, ३१०१५०

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली

एक परिचय

वर्तमान में डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली द्वारा देश-विदेश में तीन सौ से ऊपर शिक्षण संस्थाए कार्यरत हैं, जिनमें अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम के लगभग १२५ डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल हैं। इन स्कूलों में वैदिक धर्म-शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य विषय स्वीकार किया हुआ है। परन्तु योग्य धर्म शिक्षक उपलब्ध न होने के कारण धर्म शिक्षा की समुचित व्यवस्था नही हो पा रही है। इस कमी को दूर कर योग्य धर्म शिक्षक तैयार करने हेतु १२ जून, १९८५ को डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान की स्थापना करने का निर्णय लिया गया था।

उपयुक्त स्थान उपलब्ध न होने के कारण प्रारभिक कार्य चलाने के लिए, लगभग २ लाख रुपया की लागत पर आर्यसमाज मदिर, अनारकली, मदिर मार्ग नई दिल्ली मे संस्थान के तीन सुन्दर कमरों का निर्माण हो चुका है। संस्थान में प्रशिक्षण हेतु प्रवेशार्थी की न्यूनतम योग्यता एम० ए० (संस्कृत) आचार्य उपाधि रखी गई है। साथ ही हिन्दी व अंग्रेजी भाषा तथा वैदिक कर्म-काण्ड व सिद्धान्तों का ज्ञान भी अवश्य होना चाहिए। प्रशिक्षण की अवधि एक वर्ष रखी गई है।

इस समय देश मे अनेक आर्य संस्थाए, उपदेशक व पुरोहित तैयार करने का प्रशसनीय कार्य कर रही हैं, परन्तु वहां शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् उनकी आजीविका का दायित्व कोई सस्था नहीं लेती। डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान इस दृष्टि से समस्त आर्य जगत मे अनूठा उदाहरण है, जहा सफल प्रशिक्षणार्थियो को डी० ए० वी० सस्थाओं में धर्म शिक्षक पद पर "टी० जी० टी०" वेतनक्रम मे सर्विस की गारण्टी दी जाती है।

सन् १९८६-८७ के लिए प्रवेशार्थियो का चयन कर २७ अक्तूबर १९८६ से अध्ययन कार्य प्रारम्भ हो चुका है और इसका विधिवत् उद्घाटन रविवार, १ फरवरी १९८७ को किया गया। आर्यसमाज के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान प्रो० रत्न सिंह जी ने सस्थान के प्रिंसिपल पद का भार सभालने की कृपा की है। डी० ए० वी० कालेज कानपुर मे सस्कृत विभाग मे सेवा निवृत्त प्रोफेसर डा० विजयपाल शास्त्री को प्रवक्ता पद पर नियुक्त किया गया है। इनके अतिरिक्त स्वामी सत्यप्रकाश जी, स्वामी विद्यानन्द जी (पूर्व नाम डा० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) डा० कृष्णलाल दिल्ली विश्वविद्यालय तथा डा० प्रशान्तकुमार वेदालकार (हसराज कालेज) आदि कई आर्य विद्वानों की विजिटिंग प्रोफेसर रूप मे सेवाए उपलब्ध रहेगी।

हमारे विचार मे यह सस्थान डी० ए० वी० शताब्दी वर्ष की एक बहुत बडी उपलब्धि सिद्ध होगी।

दरबारी लाल
सगठन सचिव
डी० ए० वी० कालेज
प्रबन्धकर्त्री समिति,
नई दिल्ली।

आवश्यकता है

ला० रामशरणदास स्मारक स्थिर निधि आर्यसमाज मदिर, हासी के लिए एक अच्छी भजन मण्डली की जो कि जिला हिसार के अन्तर्गत प्रचार कार्य कर सके। अच्छा वेतन। इस निधि का प्रधान कार्यालय आर्यसमाज मदिर, हासी में है। संपर्क करे—

प्रधान
आर्यसमाज मदिर, हासी
हिसार (हरियाणा)

R. N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 12; 13-2-87 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान विना भेजनी का लाइसेंस नं० यू १३६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ . अंक १७ | रविवार २२ फरवरी, १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८ | फाल्गुन २०४३ | दयानन्दाब्द -१६२

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

शहीद भगत सिंह के परिवार ने फिर कुर्बानी दी

पंजाब सेना के हवाले किया जाये

राष्ट्रवादी नेताओं की सरकार से अपील

१५ फरवरी, दिल्ली। आर्य-समाज दीवानहाल दिल्ली में शहीदे आजम सरदार भगतसिंह की भानजी श्रीमती गुरदीप कौर की नृशंस हत्या पर शोक प्रकट करने के लिए एक श्रद्धाञ्जलि सभा आयोजित की गई। इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता करते हुए स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा–शहीदे आजम सरदार भगतसिंह के परिवार वालों ने सिरफिरे गद्दारों की गोलियों का सामना करके फिर कुर्बानी दी। श्रीमती गुरदीप कौर पूरे देश की बेटी थी उनकी हत्या से राष्ट्रवादियो को भारी धक्का लगा है। उन्होंने कहा सरकार को चाहिए पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू कर आतक-वादियों के साथ कडाई से पेश आए। इस अवसर पर जत्थेदार रिछपाल सिह ने कहा कि हिन्दू सिख न कभी अलग थे न कभी अलग हो सकते हैं। जो लोग इस एकता को तोडने की कोशिश कर रहे हैं वे कौम के दुश्मन हैं। उन्होंने कहा कि बेगुनाहो की हत्या करने वालो को तनखैया करार देना चाहिए था। आतकवादियो के हाथ में खेलने वाले लोग पवित्र अकाल तख्त को भी बदनाम करके छोडेंगे। विदेशी इशारों पर नाचने वाले लोग देशद्रोही हैं। उनके साथ सख्ती से पेश आना चाहिए।

भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश के प्रधान श्री मदनलाल खुराना ने इस अवसर पर श्रीमती गुरदीप कौर को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा—'यात्रियों की बस से उतार कर हत्या कर देने पर दर-बारा सिंह की सरकार को अपदस्थ कर दिया गया था किन्तु आज तो २४-२४ लोग एक-एक दिन में मार दिये जाते हैं फिर भी केन्द्र चुप्पी साधे क्यों बैठा है? श्री खुराना ने कहा—मजहबी राज्य कायम करने की धुन में एक वर्ग निरन्तर हत्या काण्डों का सहारा ले रहा है तथा तनखइया का हुक्मनामा जारी करने वालो की अपनी स्थिति अनिश्चित व भ्रम की बनी हुई है। यह मौका है जब पंजाब मे फौज को भेजकर देशद्रोहियों से आसानी से निपटा जा सकता है। उन्होंने कहा कि बर-नाला पंगु मुख्यमन्त्री साबित हुए हैं

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ऋषि बोधोत्सव एवं ऋषि मेला

२६ फरवरी प्रात ८ बजे से

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे २६ फरवरी बृहस्पतिवार को फिरोजशाह कोटला मैदान में शिवरात्रि पर ऋषि बोधोत्सव धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। इस अवसर पर प्रात ८ बजे से यज्ञ तथा ९ ३० बजे ध्वजारोहण एव युवक भाषण प्रतियोगिता, शारीरिक व्यायाम प्रद-र्शन, क्रीड़ा, मधुर संगीत आदि के कार्यक्रम होगे। मध्याह्नोत्तर २ बजे से विशाल सभा आयोजित की गई है जिसमे देशप्रसिद्ध नेता आर्य विद्वान् अपने भाषणों द्वारा जनसमाज का मार्गदर्शन करेंगे।

प्रधान – महाशय धर्मपाल | महामन्त्री—राजेन्द्र दुर्गा

चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा

महर्षि दयानन्द जन्म-दिवस समारोह

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा द्वारा प्रतिवर्ष मनाने का निर्णय

१२ फरवरी को राजकीय अवकाश घोषित करने की मांग

"महर्षि दयानन्द सरस्वती नव-जागरण युग के पुरोधा, स्वतन्त्रता के प्रथम मन्त्रदाता स्त्री-शिक्षा के प्रबल समर्थक, सामाजिक कुरीतियो को दूर करने में अग्रणी महापुरुष थे। आर्यसमाज इन्हीं सिद्धान्तो पर चलते हुए राष्ट्र की एकता, अख-डता एव मानव मात्र के कल्याण के लिए कार्य कर रहा है।" यह उद्-गार स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने महाशय चुन्नीलाल चैरि-टेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित वेदप्रचार विभाग के तत्त्वावधान में आयोजित १२ फरवरी १९८७ को महर्षि दया-नन्द जन्म दिवस समारोह मे व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि एक बार गणेशदत्त गोस्वामी के निमन्त्रण पर महामना मदनमोहन मालवीय लाहौर पहुंचे। उनकी सभा की उप-स्थिति बहुत थोडी थी। उन्होने गणेशदत्त जी से इसका कारण पूछा, गणेशदत्त ने बताया कि आर्यसमाज बच्छोवाली के वार्षिकोत्सव पर श्री कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के भजनोपदेश हो रहे हैं। महामना मदन मोहन मालवीय ने उस आर्य वीर के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। अगले दिन रात्रि मे आर्यसमाज

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य युवा महासम्मेलन का भव्य आयोजन

१६ फरवरी से २२ फरवरी १९८७

समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

२२ फरवरी १९८७ अपराह्न १.०० बजे

स्थान **तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम**

स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा

अध्यक्षता श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

पुरस्कार वितरण श्री अर्जुनसिंह (केन्द्रीय सचार मन्त्री, भारत सरकार)

उद्घाटन श्री कुलानन्द भारती (कार्यकारी पार्षद, शिक्षा)

१. प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा
२. श्री रामनाथ सहगल महामंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
३. श्री बालदिवाकर हंस प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल
४. श्रीमती प्रकाश आर्या मंत्रिणी, प्रांतीय आर्य महिला सभा
५. डा० वाचस्पति उपाध्याय ६. डा० महेश विद्यालंकार

आज के परिप्रेक्ष्य में आर्यसमाज के कार्य और दायित्व के सम्बन्ध में आर्य नेता हमारा मार्गदर्शन करेंगे। आप सादर आमन्त्रित हैं।

सूर्यदेव प्रधान | डा० धर्मपाल महामंत्री

श्याम सुन्दर विरमानी मंत्री | प्रियतमदास रसवन्त अधिष्ठाता

(आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश)

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

भारतीय इतिहास का संघर्ष काल

—मांगेराम आर्य

संसार का गुरु यह देश सोने की चिड़िया के नाम से पुकारा जाता था, किन्तु कौरव-पाण्डवों के विनाशकारी युद्ध में देश के बहुत से विद्वान् बलवान योद्धा बलिदान हुए। उस युद्ध के बाद भारतीय समाज मे अविद्वानों ने पाखड को और बलहीन शासको ने मतभेदो को जन्म दिया। वाममार्ग फैला। धर्म और राजनीति में निष्कृष्ट व्यक्तियो का प्रभाव बढने के कारण जैन और बौद्ध धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ। अहिंसा का पालन अधिक होने के कारण क्षात्र धर्म प्राय समाप्त हो गया। स्वामी शकराचार्य जी के प्रशसनीय प्रयास से भारतीय समाज मे पुनर्जागरण हुआ। गुप्त शासको एव बाद में महाराजा हर्षवर्द्धन ने भारत को सगठित कर शक्तिशाली बनाया किन्तु हर्षवर्द्धन की मृत्यु के बाद भारत खंडित हो गया। और अन्त मे विश्व शिरोमणि भारत पराधीन हो गया और सघर्ष काल से गुजरने लगा। भारत के शासक और समाज आपसी फूट और जाति-पाति के कारण एक दूसरे से ईर्ष्या करने लगे। राष्ट्र और सस्कृति के आपत्ति-काल मे एक दूसरे का साथ न देकर शत्रु का साथ देने लगे।

७१२ ई० में मुहम्मद बिन कासिम ने भारत पर आक्रमण किया। राजा दाहिर का न किसी राजा ने और न भारत के बौद्ध लोगो ने साथ दिया। राज्य मिलने के लालच में राजा के मन्त्री बौद्धराज ने रात को किले के दरवाजे खोल दिये और फिर शत्रु ने सोए हुए भारतीय वीरों को गाजर मूली की भांति कत्ल कर दिया। राजा दाहिर भारत के सम्मान की रक्षार्थ युद्ध मे मारा गया, उनकी रानी सती हुई। सत्रह वर्ष से ऊपर की आयु वालों का इस्लाम धर्म स्वीकार न करने पर कत्ल कर दिया गया। मुलतान, देवलपुर, जयपुर, कराची, लाहौर के मन्दिर तोड़ कर मस्जिदे बनवाई। लाखो को कैद किया। तीन सौ तीन मन सोना दमिश्क पहुचाया। भारतीयो ने थोड़े ही समय में अपने को सभाल लिया और भारत अरबो से मुक्त हो गया।

गजनी के लुटेरे भूखे शासको ने भारत पर ९९९ से १०२६ ई० तक सत्रह आक्रमण किये। कई हजार मन्दिर गिराए, अनेक हिंदुओ का वध किया, हजारो को मुसलमान बनाया। चार हजार ऊंटो वा घोड़ों पर चार हजार मन के लगभग सोना, चांदी, जवाहरात लाद कर गजनी ले गया। जहा ससार भर के लोग भारत की अतुल सम्पदा को देखने के लिये इकट्ठे हो गए। २७ वर्ष के निर्मम अत्याचार सहन करने के पश्चात् फिर भारतीय विदेशी प्रभाव से मुक्त हो गए।

११९१ ई० में मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण करने प्रारम्भ किए। वह पृथ्वीराज से पराजित हुआ। कई बार पराजित होने पर भी बराबर आक्रमण करता रहा। और १२०६ ई० मे कन्नौज के राजा जयचन्द की सहायता से भारत में मुस्लिम राज्य स्थापित करने में सफल हुआ और हिन्दुओं के राजा यशपाल को प्रयाग के किले में बन्द कर दिया। तीन-चार लाख हिन्दुओं के जनेऊ तोड़े—उन्हें ताबीज पहनाए। मुट्ठी भर आक्रमणकारियो के सामने फूट की महामारी से ग्रस्त विशाल भारत ने पराधीनता स्वीकार कर ली।

(१२०६ ई० से १२१० ई०) कुतुबुद्दीन ऐबक ने पचास हजार हिन्दुओं का धर्म-परिवर्तन कर मुसलमान बनाया। बिहार मे एक लाख लोगो का वध किया, जिसमे ब्राह्मण अधिक थे। कालिन्जर, मेरठ, दिल्ली, कोइल मे मंदिर तोड कर मस्जिदे बनवाई।

(१२२२ ई० से १२३५ ई०) इल्तुमिश ने उज्जैन, भेलसा का तीन सौ वर्ष पुराना महाकाल का मन्दिर तुड़वाया और विक्रमादित्य की मूर्ति को दिल्ली की जामा मस्जिद के सामने गडवाया। (१२९६ ई० १३१६ ई०) अलाउद्दीन ने कर्नाटक के सभी मन्दिरो को मस्जिद बनवाया। चित्तौड़ के मन्दिर गिराए राजा के आदेश के बिना विवाह नही हो सकते थे। रानी पद्मिनी का जौहर अमर है। (१३२५-१३५१ ई०) मुहम्मद बिन तुगलक कन्नौज के मन्दिर तोडकर दो हजार हाथियों व १३ हजार बैलों पर सोना लाद कर ले गया। (१३९८ ई०) तैमूर ने एक लाख हिन्दू कैद किए और फिर उनकी हत्या की। मन्दिरो के स्थान पर मस्जिदे बनायी। बनारस के २० हजार हिन्दुओं को मकान में बन्द करके आग लगा दी। जम्मू के राजा को मुसलमान बनाया। ऐसे समय में भारत के महान सन्तों ने एक व्यवस्थित भक्ति आन्दोलन से हिन्दू धर्म की रक्षा की। इनमें रामानुजाचार्य, नामदेव, रामानन्द, गुरु नानक, जयदेव, चैतन्य महाप्रभु, वल्लभाचार्य, मीराबाई तुलसीदास, सूरदास आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

(१५३०-१५५५) हुमायू और शेरशाह ने बनारस जैसे पवित्र हिंदू तीर्थ को दो बार रौंद डाला तथा अनेक मन्दिरों को मस्जिदों में परिवर्तित किया किन्तु पूरनमल और मारवाड के राजा मालदेव, कालिंजर के कीरतसिंह व खोखरों के संघर्ष-पूर्ण योगदान को भुलाया नही जा सकता। चित्तौड के राणा सांगा के बलिदान की अमर कहानी है।

(१५५६-१६०५) अकबर के समय में हेमू, गोंडवाना की रानी दुर्गावती, चित्तौड के राणा प्रतापसिंह का अद्भुत साहस और त्याग प्रेरणा स्रोत है। रणथम्भौर के शासक सुरजन, कालिंजर के राजा रामचन्द्र, कश्मीर के भगवानदास के संघर्ष उल्लेखनीय हैं। अकबर ने चित्तौडगढ में लिंगदेव की मूर्ति तोडी।

(१६२७-१६५८ ई०) शाहजहां ने भी सारे जीवन भर हिन्दुओं को बुरी दृष्टि से देखा। हिन्दुओं की सम्पत्ति लूटने और मन्दिरों को मस्जिदों का रूप देने में लगा रहा।

(१६५८ ई० से १७०७) औरंगजेब ने बनारस, मथुरा, अजमेर और अहमदाबाद में (१६७९-८०) एक ही वर्ष में ६०४ मन्दिर गिरवाए। अनेक मस्जिदे बनवाई। बिहार के राजा प्रेमनारायण खरक कबीले के सरदार खशहाल सिंह, मथुरा के गोकुल जाट नेता, नारनौल और मेवात के सतनामियों, मेवाड के राजा जयसिंह, पूज्य गुरु गोविन्दसिंह और बन्दा वैरागी, प्रातः स्मरणीय छत्रपति शिवाजी का स्वतन्त्रता सघर्ष सदा अमर रहेगा। माता जीजा बाई और गुरु रामदास का भारत सदा ऋणी रहेगा। मुसलमान काल में अनुमानतया ५० हजार मन सोना भारत से बाहर ले जाया गया, ३० हजार मन्दिर तोड़े गए, २० लाख हिन्दू कत्ल किए गए और २० लाख हिंदुओं का धर्म-परिवर्तन किया गया। अंग्रेज शासन भारत में स्थापित हुआ और संघर्ष का दूसरा रूप प्रारम्भ हुआ। ईसाइयत का दौर शुरू हुआ। हिन्दुओं को ईसाई बनाया जाने लगा। मन्दिर तोडे गए। मद्रास और गोवा में ईसाई अत्याचार चोटी पर था। मालाबार तट पर सन् १५५६ में लूई डी० मल्लू ने तलवार और आग की ... कर सभी नगर और ग्राम नष्ट कर दिये। हिन्दुओं को बलात् ईसाई बनाया।

(१७५७-१९४७ ई०) 'फूट डालो और राज्य करो'। अंग्रेजों का मूल मन्त्र था। भारतीय राजाओं को आपस मे लडाकर, जनता मे पक्षपात की भावना भर कर अंग्रेजों ने भारत में अपने राज्य की नींव पक्की कर ली। इस काल में आमेर के राजा सवाई जयसिंह, भरतपुर के जाट राजा सूरजमल, अवध में रुहेलों ने, पंजाब मे सिखों ने, महाराष्ट्र में मराठों ने अपने स्वतन्त्रता प्रेम का अविस्मरणीय परिचय दिया। १८४९ ई० के लगभग समस्त भारत अंग्रेजो के अधीन हो गया। राजनीतिक परतन्त्रता के साथ-साथ भारतीयों का धार्मिक और आर्थिक शोषण भी किया गया। अंग्रेजों के इस अत्याचार के कारण ही १८५७ ई० में भारतीयों ने प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध छेड दिया। निश्चित समय से पहले युद्ध के छिड़ने से नेता धन और युद्ध सामग्री की कमी के कारण हम इस युद्ध में असफल हुए, किंतु इस युद्ध ने भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत कर दी। सगठन की भावना पैदा हुई। स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द आदि धार्मिक व सामाजिक नेताओं ने स्वतन्त्रता सघर्ष को बल दिया। १८८५ से १९४७ तक स्वतन्त्रता सघर्ष मे लोकमान्य तिलक, गोपाल-कृष्ण गोखले, श्याम कृष्ण वर्मा, ला० लाजपत राय, वीर सावरकर, शहीद भगत सिंह व उनके साथी, वीर सुभाषचन्द्र बोस, प० जवाहर लाल नेहरू, डा० राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल महात्मा गांधी आदि देशभक्तों ने बढ-चढकर भाग लिया। स्वतन्त्रता सघर्ष किसी न किसी रूप में हर समय जारी रखा। त्याग और बलिदान से भारतीय इतिहास भरा पडा है। फासी के तख्तों को सजाने वालों की अमर कहानी है। जेलों में असह्य कष्ट सहने वालों में फांसी पर झूलने वालों में अधिक संख्या देव दयानन्द के शिष्यों

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ऋषि सारे संसार के थे

—चमनलाल

संसार घटनाचक्र है। यहां हर प्राणी के जीवन में न जाने कितनी छोटी-बड़ी घटनाएं घटती हैं परन्तु सभी प्राय: यह कहकर उनकी उपेक्षा कर देते हैं कि ऐसा तो होता ही रहता है। यह साधारण सी बात है। परन्तु यदि कोई वही घटना किसी सस्कारी जीव के जीवन में घटती है तो वह न केवल उस के ही जीवन की दिशा बदल देती है अपितु संसार मे एक क्रान्ति पैदा कर देती है और बड़े-बड़े राष्ट्र और समाजो के व्यवहार में बड़े बड़े परिवर्तन लाने का कारण भी बन जाती है जो शताब्दियों तक उनके निवासियो के लिए प्रकाश स्तम्भ का काम भी करती है।

कितने ही साधु-सन्त, लोगों, गृहस्थियों को उपदेश देते रहते हैं। उनको बुरे काम छोड़कर अच्छे कर्म करने की प्रेरणा करते देखते हैं, परन्तु किसी पर कोई प्रभाव न पड़ता परन्तु नौ लाख वर्ष हुए जब कुछ यात्री साधुओं ने डाकू लुटेरे क्रूर रत्नाकर भील पुत्र को क्रूर काम छोड़ने का उपदेश दिया और यह विश्वास दिलाया कि तुम्हारे द्वारा किये जा रहे इन क्रूर कर्मों का फल तू अकेला ही भोगेगा और इसमे तुम्हारे परिवार मे से कोई भी साथ न देगा, बस इतने से उपदेश ने रत्नाकर के जीवन का मार्ग ही बदल दिया और वह डाकू लुटेरे से एक महर्षि वाल्मीकि के रूप मे हमारे पूज्य ऋषि बने। इसी महर्षि के जीवन का एक और अद्भुत दृश्य देखिये। अनेकों बार लोगो ने व्याध को सारस आदि पक्षियों को बाण से मारते हुए देखा होगा। परन्तु किसी के हृदय पर कभी कोई प्रभाव नही पड़ा होगा। परन्तु महर्षि वाल्मीकि ने जब क्रौंच के जोड़े को काम क्रीडा करते हुए एक व्याध द्वारा नर क्रौंच के मारे जाने का करुणामय दृश्य देखा तो उनका हृदय बड़ा द्रवित हुआ और सहसा उनके हृदय से निकल पड़ा—

"मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगम शाश्वती समा.। यत्क्रौंच मिथुनादेकमवधी: काम मोहितम्।"

महर्षि वाल्मीकि इस श्लोक को बार-बार पढ़ कर ठण्डी सांस लेने लगे। और उस दुखी सारसी के दुख को भुला न सके। और आश्चर्य की बात कि वह महर्षि इसी प्रकार के श्लोकों द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तम युग-पुरुष रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र लिखने मे सफल हुए जो वाल्मीकि रामायण के रूप मे हमारे प्राचीन साहित्य का एक स्वर्णिम ग्रंथ है। जो संसार के साहित्य में एक महाकाव्य के रूप में हमारे जीवन के लिए लाखों वर्षों से ज्योति स्तम्भ का कार्य कर रहा है। कितनी बार लोग बीमारो को, दीन-दुखियों और आर्तों को कराहते हुए देखते हैं, कितनी ही बार शवो को अन्त्येष्टि सस्कार के लिये जाते हुए देखते है, परन्तु इसका कोई स्थायी प्रभाव किसी पर पड़ते हुए नही देखा है। परन्तु जब पाटलीपुत्र के युवराज सिद्धार्थ ने इन दृश्यों को देखा तो ऐसे द्रवित हो उठे जो अपनी सुन्दर पत्नी, नवजात पुत्र और राजपाट के सुख को लात मारकर जङ्गल की राह ली और घोर तपस्या के बाद महात्मा गौतम बुद्ध के रूप में हमारे पूज्य महान् ऋषियो की कोटि मे गिने जाने वाले नेता बने जिनके उपदेशों और शिक्षाओं से प्रभावित होकर अशोक जैसे बड़े-बड़े राजा भी उनके अनुयायी बने। जिसके परिणाम स्वरूप एक समय ससार का एक बड़ा हिस्सा बौद्ध धर्म का अनुयायी बना जो आज भी दीख पड़ता है। वृक्षों से से नीचे गिरते फलों को सभी देखते हैं परन्तु किसी पर कोई प्रभाव नही होता, परन्तु यही किसी फल का वृक्ष से नीचे गिरने का दृश्य कही न्यूटन ने देखा, तो इसका उसके हृदय पर इतना प्रभाव पड़ा, कि उसने एक नये प्राकृतिक नियम (पृथ्वी की आकर्षण शक्ति) का आविष्कार कर दिया, जिसने विज्ञान के क्षेत्र में हलचल पैदा कर दी। मकड़ी को दीवार पर चढ़ते, उतरते गिरते और फिर चढ़ने की कोशिश करते हुए और अन्त में सफल होते हुए प्राय लोगों ने देखा होगा। परन्तु स्काटलैण्ड के दुखी हृदय, देश-भक्त स्वतन्त्रता प्रेमी राबर्ट ब्रूस के हृदय पर कुछ दूसरा ही प्रभाव हुआ, इसके परिणाम स्वरूप वह कष्टों का सामना करता हुआ अपने प्रयत्नो मे सफल हुआ। रसोई घर मे भाप के दबाव के कारण किसी डेगची पर से ढक्कन को ऊपर उठते हुए किसने नही देखा होगा, परन्तु किसी पर भी इस का कोई प्रभाव नहीं हुआ। हां! जब प्रसिद्ध वैज्ञानिक जेम्स वाट ने एक दिन इस जब घटना को अपने रसोई घर मे देखा तो चकित हो रहा था और सर्वप्रथम भाप से चलने वाले इञ्जन का ही निर्माण कर दिया और औद्योगिक जगत् और यातायात के संसार मे हलचल पैदा कर दी। न जाने कितनो ने काशी नरेश की सुपुत्री की वेदों के उद्धार के लिए आर्तनाद को सुना होगा, परन्तु किसी पर कोई असर नहीं हुआ। परन्तु यही आर्त स्वर—

"किं करोमि क्व गच्छामि को वेदानुद्धरिष्यति।"

एक नौजवान कुमारिल भट्ट ने सुना तो ऐसा प्रभावित हुआ कि अपना सब कुछ त्याग जैनियो के पास जाकर कुछ शिक्षा प्राप्त करके वेदों के सही अर्थों का प्रचार करने के कारण चावल की भूसी की आग मे अपने प्राणों की आहुति देने पर विवश होना पड़ा।

कितने मनुष्य स्त्री के मोह में वशीभूत हो कितने भयंकर दुष्कृत्य कर बैठते हैं और कितनी बार उन्हें स्त्रियां कुछ शिक्षा की बात कहती सुनी जाती हैं, परन्तु किसी पर कोई प्रभाव नही होता है। परन्तु काम वासना के चक्कर में पड़े तुलसी ने सर्प को रस्सी समझ कर अपनी पत्नी रत्नावली के कमरे मे चोरी-चोरी पहुंचे तो देवी ने कहा—

"अस्थि चर्ममय देह मम तामें ऐसी प्रीति। ऐसी जो श्रीराम में होती न तो भवभीति।"

जितनी प्रीति हमसे,
उतनी हर से होय।
तो चला जा बैकुण्ठ,
पल्ला पकड़े न कोय।

पत्नी के इन शब्दो का कामी तुलसीदास पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह मध्यकालीन सन्तों की उच्च कोटि की गणना मे आते है और हमारे सामने सन्त गोस्वामी तुलसीदास के नाम से सुप्रसिद्ध हुए और ऐसे राम भक्त हुए कि रामचरित मानस के रूप मे एक उच्च कोटि के हिन्दी साहित्य की रचना की जो उनके नाम को अमर कर गई।

इसी शृङ्खला मे गुजरात काठियावाड मे उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे दशक मे मूलशकर बालक के जीवन मे एक ऐसी ऐतिहासिक घटना घटी कि न केवल उस बालक के जीवन की दिशा बदली, बल्कि मानव जाति के जीवन में एक महान् क्रान्ति पैदा कर दी। घटना कुछ इस प्रकार है— भारत के प्राचीन निवासियों ने शीत काल के बीतने पर ऋतुराज बसन्त के आगमन के समय और गर्मियों की रबी की फसल के आने से कुछ पहले स्मरणातीत काल से 'शिवरात्री' नाम का एक विशेष दिन सामूहिक पूजा के लिए निश्चित किया हुआ था। इस दिन लोग प्राय ग्राम-ग्राम के मन्दिरों मे जाकर सारा दिन उपवास करके रात्री को जागरण करके जीवन कल्याण के लिए शिव जी महाराज की पूजा किया करते थे। न जाने अतीत मे कितनी शिव रात्रियां आई होंगी और कितनों का वास्तव में कल्याण हुआ होगा। यह तो इतिहासकारो के लिए खोज का विषय हो सकता है।

गुजरात काठियावाड प्रदेश स्थित मौरवी राज्य के टंकारा नाम के ग्राम के एक सम्पन्न शिव उपासक कृष्ण दत्त तिवारी के घर सन् १८२४ मे जन्मे उनके मूल शकर नाम के सुपुत्र माता के विरोध के बावजूद पिता की हठ के कारण सन् १८३८ मे शिवरात्री के दिन शिवरात्री का व्रत रखा। बेचारा १४ वर्षीय बालक मूल सारा दिन उपवास करके रात्री को घर के निकट बने शिव मन्दिर मे पिता व अन्य लोगों के साथ सम्मिलित रूप मे जागरण के लिए पूजा मे रत हो गया। परन्तु अर्ध रात्रि आते-आते सभी भक्त लोग तथा पुजारी और बालक मूल के पिता भी निद्रा देवी की गोद मे पड़े खर्राटे लेकर सोने लगे। इस समय केवल श्रद्धालु बालक मूल मुँह पर पानी के छींटे देकर निद्रा देवी की लपेट से बचकर कल्याणकारी शिव के दर्शनों के लिए बड़ी उत्सुकता के साथ टिकटिकी लगाये शिव पिण्डी की ओर देख रहा था। कुछ ही देर मे उसने एक छोटी सी चूहिया को शिव पिण्डी पर कल्लोल करते और उस पर चढ़े मिष्टान्न को चट करते देखा तो बड़ा आश्चर्य चकित रह गया। ज्ञानचक्षु खुले, अन्तरात्मा से आवाज आई कि यह शिव-शक्तिशाली शिव भगवान कैसा! जो छोटे से तुच्छ प्राणी से अपनी रक्षा नही कर सकता। भला वह ससार का रक्षक कैसे हो सकता है? प्रश्न उत्पन्न हुआ कि क्या यही सच्चा शिव है। इसी प्रश्न ने उसे सच्चे शिव की खोज के लिए प्रेरित किया। बालक मूल का सारा जीवन-यौवन उसी प्रश्न के उत्तर को समर्पित है। इसने इसके जीवन का मार्ग ही बदल दिया और वह बालक मूल से महर्षि देव दयानन्द के रूप मे हमारे कल्याण के लिए आये। अत: वह शिवरात्री अमर हो गई। और अब यह साधारण शिवरात्रि न रहकर ऋषि बोध पर्व

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज : आज के सन्दर्भ में (५)

आयोजक :
डा० धर्मपाल
डा० कमलकिशोर गोयनका

प्रश्न

महर्षि दयानन्द के जोवन की दो प्रमुख घटनाएँ हैं—शिवलिंग के ऊपर चूहे का चढ़ना तथा चाचा व भगिनी की मृत्यु। इन घटनाओ के फलस्वरूप उनके जोवन का लक्ष्य ही बदल गया था। उन्होंने उसी दिन से मृत्यु को जानने और मृत्युञ्जय बनने की बात को मन में ठान लिया था। क्या महर्षि दयानन्द अपने उद्देश्य मे सफल हो सके और अपनी विचारधारा फैलाकर जगत का कल्याण कर सके।

उत्तर

अक्षय कुमार जैन

महर्षि अपनी विचारधारा फैलाने मे अत्यन्त सफल।

अमरनाथ कांत (दिल्ली)

विश्व वन्दनीय महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती महाराज ने मृत्युञ्जय ही नही वरन् पूर्ण मृत्युजय बनकर अपना कोई नया मत नही दिया वरन परम पिता परमात्मा की वेद रूपी वाणी का प्रचार प्रसार किया है।

प्रो० कैलाशनाथ सिंह (नई दिल्ली)

महर्षि अपने उद्देश्य मे सफल रहे, मोक्ष प्राप्त किया। अपने जिन अनुयायियो पर दायित्व सौंपा वह सफलता की ओर अग्रसर हैं। इन दोनो घटनाओ से महर्षि ने तर्क और सत्य की स्थापना की।

प्रो० कृष्णलाल

हां वे अपने उद्देश्य मे सफल हुए और अपनी विचारधारा फैलाकर बहुत कुछ जगत का कल्याण कर सके। विशेष रूप मे भारत मे महात्मा गाधी सदृश अनेक महापुरुषों ने प्रच्छन्न रूप मे (उनका नाम लिये बिना) उनके मार्ग का अनुसरण किया और भारतीय सविधान मे अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा, राष्ट्रभाषा हिन्दी आदि अनेक बाते उनके विचारो से प्रेरित हैं। परन्तु बहुत अधिक किया जाना शेष है।

जगतराम आर्य

शिवलिंग के ऊपर चूहे का चढ़ना तथा चाचा और भगिनी की मृत्यु को देखकर ही ऋषि के जीवन ने नया मोड लिया। सच्चे शिव की तलाश और मृत्यु पर विजय पाने के लिए ही जीवन लगा दिया। अन्ततोगत्वा महर्षि अनेकों कष्ट सहन करके अपने उद्देश्य में सफल हुए और उनकी विचारधारा ने एक विशेष आन्दोलन का १९४७ तक रूप धारण किये रखा। १९४७ के बाद जो उथल पुथल हुई उसके फलस्वरूप और आपस की फूट कुछ कुर्सी की लोलुप्ता के कारण हम ऋषि के मिशन को आगे नहीं ले जा सके।

डा० दुखन राम

जड पूजा एवं मृत्यु की घटना दोनो से दो प्रकार के भाव ऋषि दयानन्द के हृदय में उत्पन्न हुए। सत्यकर्मो से सामाजिक उन्नति, नश्वरता से निरभिमानता का होना। इन दोनों कार्यों के प्रचार मे देवदयानन्द ने पूर्ण सफलता प्राप्त की जिससे सारे विश्व का कल्याण अब तक होता रहा है।

देवेन्द्र आर्य

मृत्युजय तो हो ही गए थे परन्तु हमारे दुर्भाग्य से वह न रहे। महर्षि के मन में जो जगत के कल्याण की कामना थो पूर्ण न हो सकी, उनकी कामना यजु के प्रथम अध्याय के छठे मंत्र के भाष्य से स्पष्ट होती है, मनुष्येद्वाभ्यां प्रयोजनाभ्यां प्रवर्तितव्यम्। प्रथम अत्यन्तपुरुषार्थशरीरारोगाभ्यां चक्रवर्ती राजश्रीप्राप्ति करण, द्वितीय सर्व विद्या पठित्वा तासां सर्वत्र प्रचारी करण महर्षि की दृष्टि राष्ट्र पर प्रथम थी बाद मे प्रचार कार्य। क्या आर्यसमाज ने इस ओर ध्यान दिया अब उपयुक्त समय है, लाभ उठाना चाहिये।

धर्मेन्द्र गुप्त

स्वामी दयानन्द जी का मैं मानव समाज, विशेष रूप से हिन्दुओं पर बहुत ऋण मानता हूँ। वह ऐसी शक्ति थे जिन्होंने हिन्दुओं को जागृति दी, एक किया और समता में मनुष्य को जीने की प्रेरणा दी। नारी मुक्ति की बात उन्होंने साकार कर दी तथा मनुष्य को ज्ञान के प्रकाश मे जीना सिखाया, और भी अनेक विशेषतायें इस सम्बन्ध में बताई जा सकती है।

प्रताप सहगल

स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन को धारा तो बदली, लेकिन उससे जगत का कल्याण हुआ, यह मानना गलत है देखा जाए तो उन्होंने एक तरह की पोंगापन्थी का विरोध करते हुए दूसरी तरह की पोंगापंथी को स्थापित किया। कर्मकाण्ड पर अधिक बल दिया, जिसके कारण आज भी अधिकांश आर्य समाजी मात्र कर्मकाण्डी होकर रह गए हैं। उन्होंने कोई ऐसी विचारधारा भी नहीं दी, जिससे समाज का आमूल परिवर्तन हो सके।

प्रो० प्रभुशूर आर्य

महर्षि दयानन्द के जीवन की दो प्रमुख घटनाओं—शिवलिंग के ऊपर चूहे का चढना तथा चाचा व भगिनी की मृत्यु ने उन्हें मृत्यु को जानने और मृत्युजय बनने की जो प्रेरणा दो थी, उसमें महर्षि पूर्णतया सफल हुए थे जिसका स्पष्ट उदाहरण उनके महाप्रस्थान की घटना से मिलता है। महर्षि दयानन्द का रोम-रोम फोडों से छलनी हो चुका था और उनसे पाप फूट रही थी। महर्षि ने जब शरीर त्यागने का निश्चय कर लिया (दीपावली १८८३ ई०) तो क्षौर करवा स्नान किया तथा ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना तथा स्वस्ति के मंत्रो का पाठ किया, सब को पीछे खड़े होने तथा सभी खिडकियां खोल देने का आदेश दिया और उस मृत्यु का आलिंगन करते हुए उनके मुखमंडल पर इतना अधिक आह्लाद और प्रसन्नता थी जैसे कोई वर्षों से बिछुडे मित्र (अंतरंग मित्र) से मिल रहा हो। फिर अन्त समय के शब्द "प्रभु तेरी यही इच्छा थी, तूने अच्छी लीला की, ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" और वह दृश्य जो पं० गुरुदत्त के जीवन में क्रांति ला गया, इस तथ्य को निर्विवाद रूप से सिद्ध करता है कि उन्होंने मृत्यु पर विजय पाली थी। वह अपनी विचारधारा की छाप जनमानस पर स्थायी रूप से छोडने में निश्चित रूप से सफल हुए हैं हालांकि अगर वह अकाल काल के ग्रास न बनते तो और अधिक क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते थे। उनकी विचारधारा का ही यह प्रभाव था कि अंग्रेज के शासन काल में आर्यसमाजी शब्द विद्रोह का पर्यायवाची माना जाने लगा था। एक मुसलमान की मां की बीमारी की सूचना आई तो उसने अपने अंग्रेज अधिकारी से अवकाश मांगा। अधिकारी द्वारा अनुनय विनय पर भी जब अवकाश न देने का निर्णय सुना तो उसने स्पष्ट कह दिया कि मैं जा रहा हूं आप चाहें तो अवकाश दे दें अथवा न देवें। अंग्रेज अधिकारी ऐसे उत्तर की अपेक्षा केवल आर्यसमाजी से ही कर सकता था। अतः बोला—'तुम आर्यसमाजी लगता है'। उसने कहा 'मैं तो मुसलमान हूं'। यह उत्तर सुनकर अंग्रेज अधिकारी बोला, 'वैल, टुम मुसलमान आर्यसमाजी हो'। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में हंसते-हंसते जिन वीरों ने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया अथवा घोर यातनाएं सही उनमें अस्सी प्रतिशत से भी अधिक आर्यसमाजी तथा उनके घनिष्ठ मित्र थे जिनमें पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' सरदार भगतसिंह, राजेन्द्र सिंह लाहड़ी, अशफाक उल्ला, भाई बालमुकन्द, भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक, सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि प्रमुख हैं जिनके बलिदान और तप से ही भारत स्वतन्त्र हुआ है। स्वतन्त्र भारत के संविधान के निर्माता चाहे आर्यसमाजी न थे परन्तु आर्यसमाज की विचारधारा तथा कार्य शैली से इतने अधिक प्रभावित थे कि उन्होंने आर्यसमाज की सभी सुधारवादी नीतितों का समावेश संविधान में कर लिया। उदाहरणार्थ—नारी शिक्षा तथा नारी व शूद्रों को समाज में समानाधिकार देने, छुआछूत को वधानिक अपराध मानना, लिंग अथवा जन्म के आधार पर किसी से भेदभाव न करना, हिन्दी को सम्पर्क भाषा-राष्ट्रभाषा घोषित करना, आदि। अभिवादन के लिये नमस्ते

का प्रयोग आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहा है और नारी शिक्षा के कट्टर विरोधी आज नारी शिक्षा के क्षेत्र में आगे-आगे हैं। अतः हम विश्वासपूर्वक यह घोषणा कर सकते हैं कि महर्षि की विचारधारा जगत का कल्याण करने में सफल रही है।

प्रेमनाथ

ऋषि दयानन्द अपने उद्देश्य में बहुत सफल हुए। आर्यसमाज समाप्त भी हो जाये तो ऋषि का नाम इसके पश्चात भी पतंजलि आदि ऋषियों की तरह अधिक ही चमकेगा। दुःख है कि आर्यसमाज में अब बहुत अवनति आ गई है। पदों की लालसा व निर्वाचनों आदि के झगड़े बहुत बढ़ गये हैं और वास्तविक वेद-प्रचार का कार्य नाममात्र रह गया है। अधिकारियों में ही स्वाध्याय नहीं रहा तो वेद प्रचार कैसे हो और जब कि उपदेशक भी अपनी दक्षिणा के लालची अधिक हो गये हैं।

डा० प्रशान्त कुमार

'मृत्युजय' की कल्पना महर्षि दयानन्द को नहीं थी। वे तो जीवन के यथार्थ को जानते पहचानते व सच्चे शिव के दर्शन करने घर से निकले थे। उन्होंने समाज में व्यक्त अविद्या, अन्धविश्वास, भूख को देखा और मनुष्य मात्र की सेवा वेद से करने का संकल्प लिया। उनके प्रयत्न व उनकी विचारधारा से उस समय समाज व राष्ट्र में क्रांति उत्पन्न हुई। आज भी उससे क्रांति उत्पन्न की जा सकती है।

प्रह्लाद दत्त वैद्य

चूहे वाली घटना से जड़ मूर्ति-पूजा का भूत कुछ अंश में कम अवश्य हुआ था। परन्तु देश-विभाजन के पश्चात् नैतिक शिक्षा में दोगलापन आया और वैदिक सिद्धांतों पर शंका समाधान और शास्त्रार्थ आदि बन्द हो गए। इसीलिए रोग पुनः उभर आया है। इसमें राजनीतिक पार्टियों का दोष अधिक है। मृत्युजय बनने की बात स्वयं महर्षि के जीवन में घटती है। क्योंकि मृत्यु के समय प्राणान्त होने से पूर्व ऋषि ने परमेश्वर को सम्बोधन करते हुए समसमर्पण किया और कहा कि हे जगदीश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो। तूने अच्छी लीला दिखाई। यह मृत्यु पर विजय ही तो है। ऋषि को कई बार विष दिया गया। परन्तु अपने ब्रह्मचर्य बल व योगबल से इस संकट से निडरता के साथ पार हो गये। उनको बहुत अल्प समय मिला। इस समय में इतना महान कार्य कैसे पूरा हो सकता था। हां, अपने व्यक्तिगत जीवन को अत्यंत उज्ज्वल निर्भीक बनाये रखा, जो व्यक्ति भी जिज्ञासा लेकर ऋषि के संपर्क में आया, उनमें बहुतों का कल्याण हुआ तथा जीवन धारा ही बदल गई एवं अपने को ऋषि से मिलकर सौभाग्यशाली समझा। ऋषि की विचारधारा तो लगभग सारे जगत में फैल चुकी है। किन्तु आचरण इतना नहीं हो रहा। जितनी ऋषि की विचारधारा फैलती जा रही है, और अधिक फैलने की आशा है, जब भिन्न-भिन्न भाषाओं में साहित्य का निर्माण एवं प्रकाशन करते रहेंगे। मैं महर्षि को उनके अपने उद्देश्यों में सफल मानता हूं। उन्होंने अत्यधिक सूत्र रूप में अपनी रचनाओं, व्याख्यानों, उपदेशों और आदेशों द्वारा जनता के सम्मुख प्रशस्त मार्ग प्रस्तुत किया। प्रत्येक समस्या पर विचार करना और आचरण करना हम सब का कर्तव्य है।

पं० बिहारीलाल शास्त्री

महर्षि दयानन्द, देशोत्थान और जाति के संरक्षण में जितने सफल हुए, उतना उस काल का कोई व्यक्ति सफल नहीं हुआ। श्री राजाराम मोहन राय, राम कृष्ण परमहंसादि, देश और जाति के लिए तड़पे। किन्तु वह दृष्टिकोण और विचार-धारा, एक ने भी प्रकट नहीं की जिसकी उस समय आवश्यकता थी। देश की स्वतन्त्रता का पहला विचार स्वामी जी ने दिया। सन् ५८ में जब विक्टोरिया की विज्ञप्ति निकली थी, कि जिस ईस्ट इण्डिया कम्पनी के विरुद्ध आप लोगों ने गदर किया था, उसे हमने तोड़ दिया है और सब शासन अपने हाथ में ले लिया है। शासन माता-पिता के समान हितकारी, न्याय और दया से युक्त, पक्षपात शून्य होगा। इस विज्ञप्ति को पढ़कर, हिन्दू और मुसलमान, दोनों खुशी से उछल पड़े। किन्तु ऋषि दयानन्द, उस समय नर्मदा के किनारे किनारे घूमते थे। इस विज्ञप्ति पर सन्तुष्ट नहीं हुए और कहा—"ऐसा विदेशी शासन लाभदायक नहीं हो सकता। केवल स्वदेशी शासन सफल रहता है।" उनकी ये पंक्तियां आज भी सत्यार्थ-प्रकाश में प्रकाशित हैं।

भगवान चैतन्य

महर्षि के जीवन में वास्तव में ही शिवलिंग पर चूहे को देखना तथा चाचा और बहिन की मृत्यु, इन दोनों घटनाओं का अत्यधिक महत्व है। प्रथम घटना ने उन्हें सच्चे शिव को पाने के लिए तथा दूसरी घटना ने मृत्युजय बनने को प्रेरित किया। उनकी जीवन लीला के अन्तिम शब्द 'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो" इस बात के साक्षी हैं कि दोनों ही लक्ष्य उन्हें प्राप्त हो चुके थे। इस एक वाक्य में प्रभु प्राप्ति एवं मृत्युंजय बनने का संकेत है। महर्षि दयानन्द जी को जितना कम समय कार्य करने के लिए मिला उसमें वे जितना कुछ भी कर पाए उससे आश्चर्य ही होता है।

डा० भवानीलाल भारतीय

निश्चय ही स्वामी जी अपने उद्देश्य में सफल हुए।

मदनगोपाल खोसला

अपने उद्देश्य में अपनी छोटी सी आयु के अनुसार बहुत सफल हुए। जगत का कल्याण स्वामी जी से बढ़कर किसी ने नहीं किया।

डा० मण्डन मिश्र

महर्षि दयानन्द जी के उद्देश्य की सफलता में तो कोई सन्देह नहीं है। उनके द्वारा जगत का कल्याण ही हुआ। वर्तमान परिस्थिति में मनुष्य इतना स्वार्थमय हो गया है कि उसका स्वार्थ के अलावा कुछ भी ध्यान में नहीं है। यदि महर्षि दयानन्द जी के सन्देश को व्यवहार में लाया जाये तो शायद मनुष्य कुछ ऊंचा उठ सके।

मुल्कराज भल्ला

महर्षि दयानन्द ने भारत का कल्याण तो किया—जगत पर कोई खास प्रभाव नहीं हुआ। विदेश में आर्यसमाज भारतवासियों में ही नाममात्र है।

यशपाल वैद

शिवलिंग के ऊपर चूहे का चढ़ना तथा चाचा भगिनी की मृत्यु से स्वामी जी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण ही बदल गया। महर्षि दयानन्द ने जीवन में सत्य और कल्याण के मार्ग पर चलने का संकल्प किया और उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता मिली। आयु-पर्यन्त वह पाखण्ड और आडम्बरों से दूर रहने, दूर करने में तत्पर रहे।

डा० रघुवीर वेदालंकार

महर्षि अपने उद्देश्य में बहुत कुछ सफल हुए। उन्होंने मृत्यु को जानने एवं मृत्युंजय बनने का भी यत्न किया। इसके लिए उन्होंने योग की उत्कृष्ट कोटि को प्राप्त किया। इस ओर से तृप्त होकर मानो ईश्वरीय आदेश, प्रेरणा से ही वे संसार के उपकार में लग गये। उन्होंने जगत का कल्याण नाना रूपों में किया—धार्मिक क्षेत्र में क्रांति करके, भारत में विलुप्त हुए वेदों का पुनः प्रकाशन एवं भाष्य करके कर्मकांड एवं धर्म आदि के सच्चे स्वरूप को प्रकट करने के लिए संस्कारविधि एवं सत्यार्थप्रकाश आदि रचकर, शास्त्रार्थ करके वैदिक धर्म का प्रसार किया।

इस प्रकार विविध क्षेत्रों में अपने कार्य को थोड़े से ही समय में अभूत-पूर्व रूप से एक साथ करने हुए उन्होंने बहुत सफलता प्राप्त की किन्तु ये कार्य पूर्ण न हो सके। महर्षि दयानन्द का जीवन भगवान कृष्ण के जीवन जैसा रहा जो योगिराज बनने के साथ जीवन भर संकटों से जूझते रहे, कुश्ती करते रहे। गीता के निष्काम कर्म योग को उन्होंने जीवन में चरितार्थ किया।

राजकुमार कोहली

स्वामी दयानन्द ने मृत्यु को जीत लिया था और मुक्ति के अधिकारी वह निश्चित रूप से बन चुके थे। आज उनकी विचारधारा चारों ओर सुगन्धि फैला रही है। इससे निश्चित है कि स्वामी जी अपनी विचारधारा फैला कर जगत का कल्याण करने में सफल रहे थे।

कु० विद्यावती आनन्द

महर्षि दयानन्द अपने उद्देश्य में अवश्य सफल हुए। स्वामी जी ने अपने ओजस्वी विचारों द्वारा सोये हुए भारतीयों को जगाया, भारतीयों के मुर्दा शरीरों में जीवन फूंका। जगत को कल्याण का मार्ग दिखलाया। जगत के कल्याणार्थ वह बहुत कुछ कर सकते थे, करना चाहते थे। परन्तु करने का समय नहीं मिला। उनके विरोधियों ने विष देकर उनकी जीवन लीला बीच में ही समाप्त कर दी। स्वामी जी के अनुयायी स्वामी जी की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार करके इस ओर महत्वपूर्ण कार्य कर सकते थे। परन्तु वह शीघ्र ही शिथिल हो गये अकर्मण्य हो गये। अब ऋषि निर्वाण शताब्दी पर आर्यसमाजियों को संकल्प लेना चाहिये कि वह जगत के कल्याण के लिये स्वामी जी की शिक्षाओं का, उनकी विचारधारा का प्रचार और प्रसार करेंगे।

विद्यानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द तो अपने उद्देश्य में सफल रहे। किन्तु उनकी विचार-

(शेष पृष्ठ ७ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

ऋषि सारे संसार के थे

बन गया। जिसे आर्य जनता ऋषि भक्त बड़ी श्रद्धा, निष्ठा और उल्लास से मनाते हैं और इस दिन सामूहिक तौर पर भावभरी श्रद्धाञ्जलियां ऋषि के प्रति अर्पित करते हैं व सच्चे दिल से यह भी अनुभव करते हैं कि यदि ऋषि न आता तो हिन्दू जाति का क्या होता यह तो आने वाला इतिहास ही बतलाता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती क्या थे इसका उत्तर तो यही ठीक प्रतीत होता है कि वह क्या नहीं थे उन्होंने शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों के सम विकास का उच्च आदर्श जनता के सम्मुख रखा। इस कथन में लेशमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है। संसार के महापुरुषों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि प्रत्येक में कोई न कोई विशेषता अपनी होती है। उनमें कोई धर्म संस्कारक है तो कोई स्वराज्य स्रष्टा निःस्पृह परिव्राट् है तो कोई योग-सिद्ध। परन्तु कोई ऐसा महामानव दृष्टिगोचर नहीं होता, जिस में इन विभिन्न आदर्शों की एक साथ परिणति हुई हो। गत पांच सहस्र वर्षों में योगीराज श्रीकृष्ण जी के पश्चात् महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती इस कोटि के महान् व्यक्ति हुए हैं। इन्होंने मृत प्राय हिन्दू जाति में जीवन का संचार किया। हिन्दू जाति जो आज जीवित जागृत दीख पड़ती है, वह सब उस महान् देव दयानन्द की ही कृपा का परिणाम है। परन्तु इसका कदाचित् यह अर्थ नहीं कि वह केवल हिन्दू जाति के ही उद्धारक थे, नहीं! नहीं! वह तो मानव मात्र के समस्त मानव समाज के त्राता थे, वह सब के मसीहा बनकर आये थे। वह तो संसार भर के लिये थे। उन के मन में रंगभेद या जातीयता का कोई दखल नहीं था। ऋषि के विशाल हृदय में सारा जगत् समाया था। ऋषि अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में स्पष्ट करते हैं—

'यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं, तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूं वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतमतान्तरों के साथ भी वर्तता हूं। क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आज कल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा हानि और बन्द करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता परन्तु यह बातें मनुष्यपन से बाहर हैं।"

दूसरों के मतों के खण्डन के आरोप के निवारण हेतु ऋषि ने इसी भूमिका में लिखा है—

'परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी है और न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है। किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"

कैसा महान् उद्देश्य है। सम्भवतः किसी और धार्मिक नेता ने इस कदर उच्च विचारों का प्रदर्शन कदाचित् कभी कराया हो। यही नहीं ऋषि चाहते थे कि इस प्रकार के सिद्धान्त प्रभु कृपा सहश और आप्तजनों की सहानुभूति से सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रकट हो जाये, जिसमें सब लोग सहज से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें, यह मेरा मुख्य प्रयोजन है।

परन्तु दुख है कि हमने ऋषि को समझने में बड़ी कोताही की। हमारे ही संकुचित विचारों के फल स्वरूप लोगों ने ऋषि को साम्प्रदायिक कहा और आर्यसमाज को साम्प्रदायिक संस्था। इसी कारण आज हमारा कहीं मान नहीं है। साधारण से साधारण साम्प्रदायिक संस्था के समान हम को हेय दृष्टि से देखा जाता है। स्वतन्त्रता संग्राम में ऋषि की प्रेरणा से ८० प्रतिशत लोगों ने भाग लेकर अपने जीवनों की बलि दी। परन्तु उनके ही हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महान् स्वतन्त्रता सेनानी जैसे वीर के बलिदान दिवस के समारोह की झांकी तक को दूरदर्शन पर नहीं दिखाते

अतः ऋषि को उनके ही महान् उच्च, उदार विचारों के परिप्रेक्ष्य में देखने की कोशिश करो। केवल बोध रात्रि के दिन कुछ भावभरी श्रद्धांजलियों से काम न चलेगा। हमें इस वेद मन्त्र को दृष्टि में रखकर ऋषि के स्वप्नों को साकार करने का प्रयत्न करना होगा—

"प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन् यदा महः संवरणाद् व्यस्थात्। आदस्य वातो अनुवाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति।"

अर्थात् जिस प्रकार घोर विरोध के बावजूद (अपने और गैरों से दोनों से) तिमिर अज्ञान और अन्धकार को हरते हुए रूढ़ियों से ग्रस्त और सहस्रों वर्षों की दासता की जंजीरों में जकड़े भारत और मतमतान्तरों के छोटे-छोटे गुटों में बंटी मानव जाति को ईश्वर विश्वास की ढाल एवं सत्य की अडिग सरोही से सब विघ्न बाधाओं को पार करता हुआ आगे बढ़ा और अन्त में हवा का रुख बदलने में सफल हुआ। हमें भी चाहिए कि इस समय सब मतभेदों को भुलाकर के देश की वर्तमान शोचनीय दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति देखकर जागें और देश को विघटन की आग से झुलसने से बचावें। ऋषि को इस दिन बोध हुआ। अतः यही शुभ संदेश इस वर्ष इस शिवरात्रि के अवसर पर होगा कि हम जगें और दूसरों को जागृत करें। ()

(पृष्ठ २ का शेष)

भारतीय इतिहास का…

की थी।

१५ अगस्त, सन् १९४७ ई० के पश्चात् संघर्ष ने नया रूप धारण कर लिया। देश में भ्रष्टाचार के कारण देश की साधारण जनता की दशा शोचनीय है। परिश्रमी और ईमानदार का जीवन दुःखी है। अतः अतः महान् शत्रु भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष शेष है। अनुमानतया यह संघर्ष आगामी १५-२० वर्ष तक चलेगा। सन् २००७ ई० के आसपास इस संघर्ष में परिश्रमी और ईमानदार लोगों की पूर्ण विजय होगी। फिर से भारत संसार का सर्व शक्तिशाली एवं सम्पन्न देश बन जायेगा।

इस संघर्ष में करोड़ों उत्साही संस्कृति एवं देश प्रेमी युवकों को अग्रसर होना होगा। देश की युवा पीढ़ी को नेतृत्व करना होगा। और भारत का विश्व में मान-सम्मान बढ़ाना होगा। अतीत में हुई लूट, कत्ल व शोषण के इतिहास को समाप्त कर प्यार, संगठन और सम्पन्नता का इतिहास लिखना होगा। भारत में ही नहीं बल्कि समस्त संसार में बन्धुत्व और मैत्री का वातावरण उत्पन्न करना होगा। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग पर चल कर भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना करें। सुदीर्घ स्वतन्त्रता संघर्ष में जिन वीरों ने अपने रक्त से इस पवित्र भारत भूमि को सींचा है उस पुनीत रक्त का सम्मान बढ़ाते हुए मिली हुई स्वतन्त्रता की रक्षा करनी है। महामारी 'फूट' के कारण ही विदेशी शक्तियों ने हमारा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक शोषण किया है। आज भी राष्ट्रीय एकता को नष्ट करने के लिए विदेशी शक्तियां पंजाब, आसाम, कश्मीर, पूर्वी-उत्तरांचल प्रदेशों में सक्रिय हैं। अतीत के भयंकर विनाश की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। आइए! एकता के सूत्र में बन्ध कर सभी भारतीय अपने खोए गौरव को प्राप्त कर सकें।

(पृष्ठ १ का शेष)

पंजाब सेना के…

तथा उनके पर कुतरने के लिए उनके अपने ही अलम्बरदार सक्रिय हो गए हैं। ऐसी अनिश्चय की हालत में आम जनता स्वयं को असुरक्षित समझने लगी है तथा पंजाब से हिन्दू लोग पलायन कर रहे हैं।

इस अवसर पर श्री बलराज मधोक ने कहा—समस्त समस्याओं का मूल है हिन्दू राज का न होना और राजनीति में हिन्दुओं की घोर उपेक्षा। जहां-जहां भी हिन्दू लोग अल्पसंख्यक हुए हैं वहीं हिस्सा भारत के हाथ से कटता रहा है और सारी समस्याएँ वहीं से उठती रही हैं। अन्त में श्री सूर्यदेव ने कहा—इस सभा के सभी वक्ताओं का मूल कथन यह था कि बरनाला सरकार को तुरन्त बरखास्त किया जाये और पंजाब को फौज के हवाले कर दिया जाये। क्योंकि जब तक सेना वहां दनदनाते आतंकवादियों की रीढ़ नहीं तोड़ेगी तब तक पंजाब में इसी तरह खून बहता रहेगा। अतः गोली का जवाब गोली से ही देना चाहिए।

(पृष्ठ १ का शेष)

कि जलसे में मालवीय जी पधारे। वहाँ पर महात्मा हंसराज एवं लाला लाजपतराय जी को भी वे साथ ले गये। कुंवर सुखलाल के उपदेश में देश,धर्म और जाति के लिए ऐसी कसक थी कि सारी उपस्थित जनता मन्त्र मुग्ध होकर कई घण्टे उन को सुनती रही। आर्यसमाज ने स्वतन्त्रता में पहले भी महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं और आज भी आर्यसमाज धर्म-रक्षा और समाज-कल्याण के कार्य कर रहा है। स्वामी जी ने बताया कि आर्यसमाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्मार्य सभा ने यह निर्णय लिया है कि १२ फरवरी को प्रति वर्ष महर्षि जन्म-दिवस समारोह मनाया जाये और सरकार से भी अपील की जाये कि वह जन्म-दिवस को सरकारी अवकाश घोषित करे। स्वामी जी ने महाशय धर्मपाल को इस पुनीत कार्य को प्रारम्भ करने के लिए बधाई दी।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० महेश विद्यालंकार, दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती आदि महानुभावों ने स्वामी जी के जीवन तथा उन द्वारा किये गये कार्यों पर प्रकाश डाला और सब को उनके आदर्शों के अनुरूप कार्य करने के लिए कहा। इस समारोह का संचालन वेदप्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री सुखीराम आर्य ने किया।

(पृष्ठ ५ का शेष)

आर्यसमाज आज के सन्दर्भ में

धारा को फैला कर जगत् का तो क्या स्वयं अपना कल्याण करने में भी आर्यसमाज सफल न हो सका—घुसपैठियों व स्वार्थियो के अधिक संख्या में होने के कारण।

डा० वेदप्रताप वैदिक

महर्षि दयानन्द अपने उद्देश्य में कितने सफल हुए, इसका निर्णय करना आसान नही है। किसी भी महापुरुष की सफलता को और कम से कम महर्षि दयानन्द जैसे महापुरुष की सफलता को १०० वर्ष के छोटे से से पैमाने पर नापना अनुचित ही होगा। महर्षि दयानन्द ने जो विचार प्रदान किये है हो सकता है कि उनके शिष्यों की क्षमता और योग्यता के कारण वह केवल उत्तर भारत में सिमट कर रह गए और जो बाती जल भी रही है वह काफी मद्धिम पड़ गयी है लेकिन विचार का बीज एक ऐसा बीज होता है जो कभी-कभी हजारों साल बाद भी फूट कर वटवृक्ष बन जाता है। कभी-कभी वह अपनी जमीन से उड कर दूर प्रदेशों में गिरता है और वहां भी छा जाता है। जैसे बौद्ध धर्म और फिलिस्तीन में जन्मा ईसाई धर्म। फिर भी मैं इतना कह सकता हूं कि यदि दयानन्द न होते तो भारत जो आज है, वह नहीं होता। १९वीं और २०वी सदी के महापुरुषों में दयानन्द का स्थान अन्यतम है।

वैद्यनाथ शास्त्री

जहां तक महर्षि का अपना सम्बन्ध है वे सच्चे शिव के ज्ञान एव मृत्युजयता मे सफल रहे। उनके उद्देश्य भी सफल हैं। उनकी ज्योति चतुर्दिक् विस्तृत हुई है और देश देशान्तर में फैली है। वे सफल हैं ज्योति सफल है। अब भी प्रज्वलित होती जा रही है—इसमें सदेह नही। हा यह प्रश्न हमे उनके अनुयायियों से पूछना चाहिए कि हम इस उद्देश्य में सफल हैं या नही। टंकारा की निकली महा ज्योति ने भारत ही नही मानवता के भाग्य को बदल दिया है और वह बुझने वाली नही है। भारत में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक साफल्य किसकी गरिमा को बताता है—क्या वह दयानन्द नहीं है।

सत्यदेव विद्यालंकार

इस प्रश्न का उत्तर कुछ भी नही बनेगा। सब कुछ सापेक्ष है।

डा० सहदेव वर्मा

इन महत्वपूर्ण घटनाओं से महर्षि के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन हुआ, उन्हें मृत्युंजय मानने में कोई आपत्ति नहीं। तत्कालीन पण्डित समूह में जो वैचारिक उथल पुथल हुई वह सर्वविदित है। परन्तु जागते हुए भी जो सोने का नाटक करे उसे क्या कहा जाये?

सुदर्शन देव

शिवलिंग की घटना एव चाचा व भगिनी की मृत्यु ने महर्षि दयानन्द के माध्यम से जडपूजा तथा मिथ्या पर आधारित प्रबल लोकमत को जबर्दस्त ठोकर लगाई। साथ ही मृत्यु का एवं विनाश का स्वरूप ऋषि के समक्ष स्पष्ट हुआ। इसलिए वे जीवन की महत्ता को अधिक अच्छी तरह समझ और समझा सके। विषम प्रवर्तन तथा उसकी सिद्धि बडी शक्तिमत्ता के साथ उन्होने अकेले ही ब्रिटिश देशों तथा सामाजिक एव मानसिक प्रतिरोधात्मक विषम स्थितियों मे कर दिया तथा उसे यौवन सीमा तक पहुंचा दिया। अब उनके अनुयायी आर्यसमाज पर पर निर्भर है कि वह युगानुरूप अपनी क्षमताओं को बढा कर उसे चिरजीवी बना सके।

डा० सुधीरकुमार गुप्त

स्वामी जी और उससे पूर्व के लगभग सभी धर्म सुधारकों बुद्ध, महावीर आदि की भी यही स्थिति रही है। उन्होंने मृत्यु पर कितनी विजय पाई, यह उनका ही अनुभव रहा। परन्तु घटनाचक्र बताता है कि लोक को कल्याण का मार्ग बताना और उस पर स्वय चलना ही मृत्युञ्जय होना है। आत्म और सर्व हितों का साधक समन्वित रूप ही कल्याण का मार्ग है। यह ऋषि ने भलीभांति प्रदर्शित कर दिया। इससे अधिक सफलता न किसी को मिली है, न मिलेगी क्योंकि अपना कल्याण प्राणी अपने आप ही कर सकता है, अन्य कोई नही। स्वामी जी की विचारधारा का व्यापक और सतत प्रचार-प्रसार अपेक्षित है। यह सदैव बहती नदी के समान चलती रहती है तो ऋषि का लक्ष्य पूरा होता हुआ माना जायेगा।

हरिकिशन मलिक

मृत्यु को जानने और मृत्युजय बनने के सकल्प को पूरा करने में महर्षि को नि:सन्देह पूर्ण सफलता मिली। प्रश्न मे लिखित घटनाओं को देखकर अपनी विचारधारा को फैलाने का कोई सकल्प महर्षि ने नहीं लिया था। वह संकल्प लिया उस समय जब गुरुदेव विरजानन्द जी से विदा ली। उस सकल्प मे भी महर्षि पूर्णरूपेण सफल रहे क्योंकि महर्षि को जितना समय प्रभु की ओर से मिला उतने समय में अन्य कोई भी व्यक्ति अपनी विचारधारा का इतना विस्तृत प्रसार नही कर सकता था जितना महर्षि ने किया।

बाल वीर हकीकत के बलिदान दिवस पर विशाल शोभायात्रा व कवि सम्मेलन

न्यू मोतीनगर, ८ फरवरी। अमर बलिदानी वीर बालक हकीकत राय के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे आर्यसमाज न्यू मोतीनगर एव क्षेत्रीय धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से धर्मवीर बाल हकीकत राय बलिदान समिति द्वारा रविवार, ८ फरवरी १९८७ को पजाबी बाग मोतीनगर कर्मपुरा व न्यू मोतीनगर क्षेत्र मे एक भव्य एव विशाल शोभा यात्रा निकाली गयी। यह शोभा यात्रा अपने नियत समय प्रात दस बजे दानवीर श्री महाशय धर्मपाल जी (एम० डी० एच०) ने रवाना की। शोभा यात्रा के शुभारम्भ पर श्री डा० धर्मपाल जी श्री तीर्थराम जी आहूजा, श्री शिवदास पुरी, श्री रामलाल जी मलिक, श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी आदि गण्य मान्य महानुभाव उपस्थित थे।

अपने ढग की इस निराली शोभा यात्रा मे अनेक प्रभावशाली झांकियां सम्मिलित की गयी। जिनमें त्रिशूलधारी युवकों के साथ मन्त्रोच्चारण सहित वेद भगवान की झांकी, जिस में दो वेदपाठियो सहित स्वामी स्वरूपानन्द जी विराजमान थे। लव कुश का अश्वमेध यज्ञ का घोडा पकडना, महाराणा प्रताप व शिवा जी की वेशभूषा मे घुडसवार युवकों के साथ त्रिशूलधारी युवको का जत्था तथा विद्यालयों के बच्चो के शोभा जनक प्रदर्शन उल्लेखनीय रहे। सैकडों व्यक्तियों द्वारा बाधी गयी केसरी पगडियों से युक्त शोभायात्रा जनमानस को वासन्ती रग मे रगकर उल्लास और उमग का वातावरण बनाते हुए बाल शहीद को सच्ची श्रद्धाञ्जली दे रही थी।

शोभायात्रा का समापन आर्य समाज न्यू मोती नगर मे गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा किये गये व्यायाम प्रदर्शन द्वारा हुआ इसमें ब्रह्मचारी रामपाल जी ने लोहे के सरिये को मोडना, थाली चीरना व जंजीर तोडना आदि आश्चर्यमय व्यायाम प्रदर्शन से जनता को प्रभावित किया। समारोह में समिति के सस्थापक और कार्यक्रम के सयोजक श्री तीर्थ राम आर्य ने स्थानीय सस्थाओं, सगठनों व उपस्थित जनसमूह को सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम मे श्री महाशय धर्मपाल जी व मनोहरलाल जी कुमार के द्वारा दिये गये सहयोग की विशेष सराहना की गयी।

श्री महाशय धर्मपाल जी ने वीर बालक हकीकत की जीवनी जनता मे उपहार स्वरूप बाटने के लिए दी। समिति को आर्थिक व अन्य सहयोग दिया।

अखिल भारतीय सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री मनोहर लाल जी कुमार ने विद्यालय के बच्चों के कई टोलियों के आकर्षक कार्यक्रमों द्वारा जुलूस की शोभा बढाई। श्री कुमार जी ने सम्पूर्ण शोभायात्रा का सुव्यवस्थित संचालन किया।

सोमवार ९ फरवरी १९८७ को रात्रि ८ बजे से कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमे श्री उत्तमचन्द जी शरर, श्री सत्यपाल बेदार, श्री बजरग, चमन नन्द नानवी, बरकत पजाबी आदि हिन्दी, उर्दू व पजाबी के कवियो ने बाल शहीद को काव्यमय तथा भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

क्षेत्र में हिन्दू (आर्य) सगठन की दृष्टि से समिति के अधिकारियो द्वारा किया गया यह एक सराहनीय प्रयास रहा। जिसमें आर्यसमाज न्यू मोतीनगर के प्रधान श्री तीर्थराम आर्य श्री भारतमित्र शास्त्री (महामन्त्री), श्री अर्जुनदास जी सर्राफ (प्रधान) ने दिन रात परिश्रम करके विभिन्न विचार अनुयायियों को एक मच पर एकत्रित करने का सत्प्रयास किया।

—आचार्य जगदीश [illegible]

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ · अंक १८ · रविवार १ मार्च, १९८७ · सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ · फाल्गुन २०४३ · दयानन्दाब्द—१६२

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे · वार्षिक २५ रुपये · आजीवन २५० रुपये · विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

आर्य युवा महासम्मेलन सम्पन्न

राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज का योगदान महत्त्वपूर्ण

—श्री अर्जुनसिंह संचारमन्त्री

२२ फरवरी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यवीर दल के तत्त्वावधान में आयोजित आर्य युवा महासम्मेलन बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम हजारों तालियों की गडगड़ाहट से गूंज उठा। जब समारोह में खेलकूद, भाषण संगीत आदि प्रतियोगिताओं में विजयी १८३ छात्र छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय संचार मंत्री श्री अर्जुनसिंह ने विजयी छात्र, छात्राओं को पुरस्कार वितरित किये। प्रथम विजयोपहार "एम० डी० एच महाशय धर्मपाल" (शील्ड) बिरला आर्य कन्या सीनियर सेकेण्डरी स्कूल दिल्ली को दिया गया। दूसरा पुरस्कार "एम० डी० एच, महाशय धर्मपाल" विजयोपहार सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग नई दिल्ली को दिया गया।

केन्द्रीय संचार मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा—राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज ने उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान की हैं तथा आर्य युवाओं की राष्ट्र के लिए उल्लेखनीय भूमिकाएँ रही हैं। उन्होंने कहा—भारत की तरुणाई को निर्माण और सृजन के कार्यों में अपने आपको लगाने की आज नितान्त आवश्यकता है। देश का युवक अगर विध्वंसक कार्यवाही से हटकर, नशे आदि की कमियों से बचकर, निराशा आक्रोश से सम्भलकर चले तो कौन सा बडे से बडा कार्य वे नहीं कर पायेंगे। उन्होंने युवकों से महर्षि दयानन्द की पुनीत शिक्षाओं पर चलने का निर्देश दिया। राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों की ओर इशारा करते हुए श्री अर्जुनसिंह ने कहा—आज राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को हर कीमत पर बनाए रखना है। हमें व्यक्तिगत धर्म के साथ राष्ट्र धर्म का भी पालन करना चाहिए।

समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) श्री कुलानन्द भारतीय ने कहा—महर्षि दयानन्द ने सर्वांगीण विकास का मार्ग दिखाया है जिस पर चल कर नैतिक और सामाजिक उत्थान सम्भव है। युवाशक्ति में चारित्रिक और नैतिक शिक्षा का होना भी आज की आवश्यकता है। उन्होंने कहा—आर्यसमाज ने विभिन्न क्षेत्रों में सदैव उत्कृष्ट सेवाएं की हैं।

उन्होंने समारोह के आयोजकों को बधाई देते हुए कहा—किशोरों और युवाजनों के लिए इसी तरह के उत्साहजनक कार्य एवं समारोह किये जाने चाहिए। सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने अध्यक्षता करते हुए कहा—राष्ट्रनिर्माण के लिए शराब, स्मैक आदि नशे और गोहत्या आदि के विरुद्ध युवकों को विशेष अभियान चलाना चाहिए।

सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की गतिविधियों का परिचय देते हुए राष्ट्रीय चेतना व जागृति में युवकों को आगे बढ़कर कार्य करने की अपील की। इस अवसर पर डा० महेश विद्यालंकार और रामनाथ सहगल आदि ने भी अपने विचार प्रकट किये।

सभामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य ने बताया कि इस वर्ष दिल्ली प्रतिनिधि सभा द्वारा १६ से २२ फरवरी ८७ तक विभिन्न स्थानों पर खेल कूद व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रतियोगिताए आयोजित की गईं और १८३ विजयी छात्र छात्राओं को शील्ड, ट्राफियां, कप तथा वैदिक साहित्य से पुरस्कृत किया गया। □

दिल्ली नगर निगम द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जन्म-दिवस आयोजित

देश एकता और अखण्डता के प्रतीक थे स्वामी श्रद्धानन्द

——महेन्द्रसिंह साथी महापौर

राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए जिन्होंने अपने लहू की एक बून्द भी बलिदान कर दी। समाज के उत्थान के लिए प्राणपण से जुटा रहा, दलित अनाथों के लिए जिसने अपना सर्वस्व त्याग कर दिया जो अंग्रेजों की संगीनों के सामने छाती तान कर खड़ा रहा, उस वीर संन्यासी महान् राष्ट्रवादी, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द को याद करके माथा श्रद्धा से झुक जाता है। यह उद्‌गार दिल्ली के महापौर श्री महेन्द्रसिंह साथी ने आज स्वामी श्रद्धानन्द के जन्म-दिवस के समारोह पर बोलते हुए व्यक्त किये। उन्होंने राष्ट्र में बढ़ते हुए विघटनकारी तत्त्वों के प्रति चिन्ता व्यक्त की और कहा अंग्रेज भारत में व्यापारी बनकर आया और हमारी फूट का फायदा उठाकर यहां का मालिक बन बैठा। आज आतंकवादी भी अपनी गोलियों से भाई भाई को लडाना चाहते हैं और उनके पीछे सूत्र हिलाने वाली विदेशी ताकतें भारत की बढती शक्ति और उन्नति के मार्ग को तोड देने के सपने देख रही हैं। हमें अपने धैर्य और संयम साहस को खोना नहीं है। हमारे वीर शहीदों ने जिसके लिए कुर्बानी दीं उस विरासत को हमें खोना नहीं है। हिन्दू मुस्लिम एकता तथा स्वाधीनता के प्रतीक थे स्वामी श्रद्धानन्द।

इस अवसर पर आर्यसमाज की ओर से श्री सूर्यदेव ने अपने महान् सेनानी वीर सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। उन्होंने कहा—आज हमें अपने बच्चों, अपने देश के कर्णधारों को अपने

(शेष पृष्ठ ३ पर)

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

कहीं हम अशिव को शिव तो नहीं मान रहे ?

—गजानन्द आर्य

ऋषि-जीवन की घटना है महाराज पूना नगर में ठहरे थे, प्रतिदिन प्रवचन, शंका समाधान और शास्त्रार्थ की चर्चाओं से पूना निवासी बहुत प्रभावित थे। स्वामी जी को विद्याबल से परास्त न कर सकने वाले स्वार्थी लोग उनको बदनाम करने और मखौल उडाने के नये-नये हथकंडे अपनाने लग रहे थे। "एक दिन भक्तजनों ने स्वामी जी को बतलाया कि एक आदमी को रंग मे रंगकर गले मे पट्टी डाली है, जिस पर लिखा है पंडित दयानन्द। उस आदमी को एक गधे पर उल्टा मुँह करके बैठाया है, कुछ शरारती बच्चे पीछे पीछे शोर मचाते जा रहे हैं।" स्वामी जी कुछ मुस्कराये, पर पास बैठे नवयुवकों से चुप नहीं रहा गया कहने लगे स्वामी जी आप यदि अनुचित न समझें तो हम उन दुष्टों को मजा चखा आवें। स्वामीजी ने शान्त करते हुए समझाया कि देखो ! असली दयानन्द तुम्हारे सामने बैठा है, उनके पास कोई नकली दयानन्द है, जिसका वे मखौल उडा रहे हैं। नकलचियों की यही दशा होती है अत. आप लोग जीवन मे असली चीज को असली कहें, नकली को असली समझने की भूल न करें।

उपरोक्त घटनाचक्र में मखौल उडाने वाले वे जन थे, जो स्वामीजी के द्वेषी बने हुए थे। उनके द्वेषी होने का कारण था कि उनके स्वार्थ पर आंच जो आ रही थी। पर समय का फर देखिये कि स्वामी जी के प्रति श्रद्धा भक्ति रखने वाले हम आर्य लोगों ने पूना वाले ड्रामे को बडे जोर-शोर से अपनाना शुरू कर दिया। हमारा वह ड्रामा विभिन्न स्थानों पर विभिन्न नामों से होता हुआ भी दृश्य एक जैसा प्रस्तुत करता है। हमें समाचार पत्रों से निम्न प्रकार के समाचार पढने को मिल जावें कि (१) आज पुलिस ने दयानंद मार्ग में एक जुए के अड्डे पर छापा मारा। (२) दयानन्द नगर निवासी एक व्यक्ति आज बलात्कार के आरोप में पकडा गया (३) कोर्ट में आज दयानन्द मार्केट में हुए मकान मालिक और किरायेदारों के बीच हुई मारपीट काड की सुनवाई हुई। इत्यादि ऐसे समाचारों से हमें सभवत मानसिक वेदना न हो, किन्तु ऐसी घटनाओ के साथ दयानन्द का नाम जुडने से दयानन्द के प्रति हमने सम्मान किया क्या ? जरा और आगे की कल्पना कीजिये संकडों वर्षों के पश्चात् के आर्यसमाजी अथवा गैर आर्यसमाजी पुराने समाचारपत्रों अथवा कोर्ट के केसों के माध्यम से आर्यसमाज को जानने का प्रयास करेंगे, तब उनको कैसा मसाला मिलेगा।

दूसरे मतावलम्बियों के देखादेखी हमने ऋषि के नाम को उजागर करने के सस्ते फारमूले अपनाने लागू कर दिये। हर किसी बस्ती का नाम दयानन्द के स्मारक स्वरूप रख देना कोई महत्त्व नहीं रखता, जब तक उस बस्ती में अथवा संस्थान में दयानन्द के कार्यों की कुछ चहल-पहल न हो। मात्र नाम रख देने से वहां के निवासी कुछ भी प्रभावित हों ऐसा भी नहीं है। श्रद्धानन्द मार्ग अगर वेश्याओं के कोठे के लिए प्रसिद्ध हो और वहां शराब व मांस धडल्ले से बिकते हों तो क्या वह कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति हमारी श्रद्धा का प्रतीक है ? नामकरण से सस्ती प्रसिद्धि के अलावा कुछ उपलब्धि नहीं है।

नगर ग्राम मोहल्ले और सडक चिर-स्थायी नहीं हैं। इनके माध्यम से यदि चिर-स्मरणीय रहा जाता तब महात्मा बुद्ध और उनके उपदेशों को भूलना नही चाहिए था, क्योंकि २५०० वर्ष पहले देश का चप्पा-चप्पा बुद्ध धर्म के उपदेशों से पत्थरों पर अंकित कर दिया गया था। आज वह पत्थर सम्भवत: किसी अजायबघर में देखे जा सके। आर्यसमाज में हर किसी स्थान का नाम दयानन्द रख देने की प्रवृत्ति स्वतन्त्रता के प्राप्ति के पश्चात् आई है। पहले इतना अवश्य होता था कि जिस स्थान पर आर्यसमाज का विशेष सम्मेलन व अधिवेशन किया जाता था उस स्थान का प्यारा सा नाम आयोजन के दिनों तक के लिए रख दिया जाता था, जितने दिनों तक वह आयोजन चलता था तब तक उस अस्थायी नाम की सार्थकता एवं गरिमा थी।

इस लेख द्वारा मेरा अभिप्राय ऋषि के नाम को मार्गों-नगरों अथवा बस्तियों के साथ जोडने के विरोध में नही है। मात्र यह आग्रह है कि ऋषि के पवित्र नाम को सरकारी आई० एस० आई ट्रेड मार्क की तरह बहुत सोच समझकर प्रदर्शित करें। वह नाम इतना गौरवशाली रहना चाहिए कि हर किसी जगह को वह नाम नहीं मिले। आई० एस० आई० ट्रेड मार्क लगाने का अधिकार हर किसी निर्माता को नहीं होता है। विशेष नियमों व प्रक्रियाओं के पालन करने पर आई० एस० आई० लगाने की अनुमति मिलती है, इससे उस वस्तु की विश्वसनीयता बनी रहती है। इसी प्रकार जिस स्थान पर आर्यसमाज का वर्चस्व और गतिविधियां हों उसी क्षेत्र को दयानन्द नाम दिया जाना चाहिए। आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द हमारे आदर्श हैं उनके नाम आदर्श के प्रतीक हैं। ऐसे प्रतीकों को पूना की तरह नकली बनाने की भूल हम से नहीं होनी चाहिए। अन्य मतावलम्बी अपने महापुरुषों का नाम जोडकर यदि सस्ती प्रसिद्धि लेते हों तो वैसा अनुकरण नही करना ही श्रेष्ठ है। पंडित गुरुदत्त जी ने ऋषि निर्वाण के पश्चात् ऋषि के स्मारक पर अपने विचार देते हुए कहा था ऋषि का स्मारक ईंट पत्थर पर नाम खुदवाकर नहीं बन सकता।'

शिवरात्रि का जागरण सारा शिवभक्त जगत् कर रहा था। भक्तों की उसी परम्परा में छोटा सा बालक मूलशंकर भी रतजगा कर रहा था। जागरूक मूलशंकर ने शिवनामधारी प्रतिमा पर चूहों के अशोभनीय कार्यों को देखकर उस प्रतिमा को शिव मानने से अस्वीकार कर दिया था। ऋषि बोध के इस पावन प्रसग पर हम आर्यों को नकली और असली का भेद समझना चाहिए। □

शास्त्रार्थ महारथी के संस्मरण

आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली में आर्य जगत् के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी प० शान्तिप्रकाश जी के प्रवचनों का आयोजन किया गया था। वयोवृद्ध विद्वान ने अपना प्रवचन-'स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् आयु' मन्त्र से आरम्भ करते हुए परमात्मा के परम उत्कृष्ट वेद ज्ञान के अत्यत महत्त्व का वर्णन किया। उस वेद की उपमा आकाश से देकर समझाया कि जैसे आकाश सर्वव्यापक है और उसकी चार मुख्य दिशाएँ पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण हैं और उनका माध्यम सूर्य है। इसी प्रकार वेदरूपी एक ही सूर्य के चार भाग ऋग्०, यजु०, साम, अथर्व हैं जो कि ध्रुव सत्य हैं तथा उस सत्य को पं० शान्ति प्रकाश जी ने निज नाम को सार्थक करते हुए किस प्रकार शान्त भाव से अन्य मतावलम्बियों को वेद धर्म की ओर आकर्षित किया, इसके कई उदाहरण उन्होंने अपने व्याख्यानों में प्रस्तुत किये।

१—मेधातिथि जी जो कि पहले मुसलमान थे तथा कुरान हाफिज व संस्कृत के भी ज्ञाता थे। जब पं० शान्ति प्रकाश जी से शास्त्रार्थ करने लगे तो एक शर्त रख ली कि यदि कुरान में वेद शब्द आया हो तो मुसलमान मजहब को छोडकर मैं वेद धर्म को स्वीकार कर लूंगा। पंडित जी ने कुरान की आयत से वेद के मन्तव्य को सिद्ध कर दिया तथा उनको वैदिक धर्म में दीक्षित करके शुद्धि की व उनका नाम मेधातिथि रखा। इसी प्रकार के कितने ही उदाहरण बताये।

२—एक बार एक शास्त्रार्थ के लिये पादरी लोगों को आह्वान किया परन्तु कोई नौजवान पादरी न निकला। तब एक वृद्ध पादरी समक्ष आये पर वे इस शर्त पर शास्त्रार्थ करने को उद्यत हुए कि पंडित जी कोई अपमानजनक शब्द न कहें परन्तु उन्होंने ही आर्यसमाज के प्रति अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया किन्तु पंडित जी ने उस पर क्रोध न करते हुए उसे क्षमा मागने को कहा। अन्तत उसे क्षमा मांगनी ही पड़ी। अन्य भी कई स्थानों की उन्होंने चर्चा की। जिस तरह सूर्य के समक्ष चन्द्र, तारे, दीपक आदि का कोई महत्त्व नहीं रहता है, इसी तरह वेद ज्ञान के समक्ष वेद विरुद्ध विचारधारा परास्त हो जाती है। अथवा जैसे माता सन्तान के पालन हित द्रवित व स्नवित होती है। उसी प्रकार वेद माता मानव मात्र को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति कराने के लिए प्रेरित करती है। माता का महत्त्व पिता से अधिक होता है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आत्म-बोध का पर्व शिवरात्री

—डा० महेश विद्यालकार

आर्यसमाज के निर्माण और इतिहास में शिवरात्रि का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस पर्व पर ही महामानव ऋषि दयानन्द की प्रसुप्त चेतना उद्बुद्ध हुई थी। जीवन मे भयकर झंझावात आया था। विचारों में तेज तूफान उठा था। शिव और अशिव का, धर्म और अधर्म का, सत्य और असत्य का भयंकर द्वन्द्व चला था। इसी कारण वह देवपुरुष अज्ञान-अविद्या, मोह, माया, पद, लोभ एव ऐश्वर्यों के बधनों को तोडने में समर्थ हो सका। हृदय में बोध हुआ। सत्य-ज्ञान प्रकाशित हो उठा। जीवन सच्चे शिव की ओर अग्रसर हुआ। जीवन में नया संकल्प लेकर निकल पडा। अनेक कष्ट बाधाए-विरोध आए पर वह महायोगी आगे ही बढ़ता गया। एक रात जागने के बाद वह जीवन भर नहीं सोया। उसी देवात्मा के बोध और स्मृति का प्रेरक पर्व है—शिवरात्रि।

पर्व जीवन में प्रेरणा, चेतना, उत्साह, संकल्प आदि का अमर सदेश देने के लिए आते हैं। प्रत्येक पर्व अपने मूल में जीवन-सन्देश लिये हुए हैं। जीवन की अन्तरंग चेतना को सोचने विचारने और प्रबोधने की प्रेरणा देते हैं। आत्मबोध और दिशाबोध जीवन की संजीवनी शक्ति है। इसी से मानव देवत्व को प्राप्त करता है। आत्मबोध से ही मानव स्व और पर का कल्याण कर सकता है। इसीलिए आत्मबोध भारतीय सस्कृति की मूल-चेतना रही है। यही मूल चेतना सम्पूर्ण शास्त्रो मे आद्यन्त विद्यमान है। घटनाए, परिस्थिति, उपदेश, सन्देश आदि सभी के जीवन में आते हैं—किन्तु कोई बिरले ही बुद्ध, ऋषि दयानन्द श्रद्धानन्द, विवेकानन्द, गुरुदत्त आदि बनते हैं। इतिहास साक्षी है, छोटी छोटी बातों, घटनाओं और उपदेशों ने जीवन बदल दिए। जीने की पद्धति मोड दी। कायाकल्प कर दिया। पतित जीवन में पवित्रता व धार्मिकता भर दी। भोगी विलासी और दुर्व्यसनी जीवन तपस्वी-त्यागी और परोपकारी बन गये। यह सब तब होता है जब हम अन्दर से ज्ञानी और जागरूक होते हैं। जब आत्म-चेतना की पकड़ गहरी मजबूत और पक्की होती है। आत्मा जरा से लोभ-लालच और मोह मे नही फिसलता है। संकल्प में तीव्रता आतुरता तथा वेदना होती है। आत्मा बलवान् है। तभी जीवन में निर्माण होता है।

पर्व-उत्सव, वेदकथाएं एवं जन्मदिन आदि आते हैं और चले जाते हैं। किन्तु हमारे जीवन में कही भी परिवर्तन-नूतनता एव दिव्यता नही आती है। जरूर कही मूल मे भूल है। कई तरह की शताब्दियां मनाईं। उसकी बाहर की घूमधाम-टीमटाम कुछ देर रही, पर अन्तर्जगत् को कोई चेतना एव प्रेरणा नहीं मिली। बदलाव बाहर की दुनिया में तेजी से हो रहा है। अन्दर की दुनिया सोई और खोई पडी है। हम अन्दर के सुख से बेमुख हैं। आवश्यकता है अन्दर की ओर देखने की।

शिव-रात्रि आत्मबोध का पर्व है। जीवन-चेतना का उत्सव है। आत्मानुभूति को जागृत करने का दिवस है। प्रकाश और चेतना की तिथि है। शिवरात्रि श्रेष्ठ सकल्पों एव व्रतो को दुहराने का त्योहार है। आज आर्यसमाज को आवश्यकता है-आत्मशुद्धि आत्म निरीक्षण और आत्मविश्लेषण की। मन-वचन और कर्म मे आई हुई अपवित्रता, अधार्मिकता, अव्यावहारिकता एव नास्तिकता आदि दुर्गुणों को दूर करने की। जीवन मे व्याप्त काम, क्रोध, लोभ, मोह, घृणा आदि बुराइयो को दूर करने की। जब तक जीवन मे तप, त्याग, सेवा, परोपकार, श्रद्धा आदि श्रेष्ठ गुणो को स्थान नहीं देंगे तब तक न तो अपना कल्याण होगा, न परिवार बनेगा, न समाज को कोई आदर्श दे सकेंगे। ऋषिवर के जीवन में ये सभी गुण थे। तभी अल्पकाल में उन्होंने अद्भुत अद्वितीय एवम् अनुपम कार्य कर दिखाया। इन गुणों से मानवता चलती है। जीवन में गति आती है। निर्माण होता है। परिवर्तन आयेगा। आज हमारे जीवन कर्मकाण्ड और उपासनाकाण्ड से दूर होते जा रहे हैं। जिसका परिणाम है जीवन में, परिवार में, समाज में सात्त्विकता, शुद्धता और धार्मिकता हटती जा रही है। जीवन खोखले होते जा रहे हैं। जीवन में भक्ति-भावना नहीं दिखाई देती है। आज आर्यसमाज के इतिहास में जो अमर हैं। जिनका नाम श्रद्धा और गौरव से लिया जाता है। उनका चरित्र बोलता है। उनके जीवन में आदर्श था। त्याग की भावना जागृत थी। उन्होंने आर्यसमाज के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। बदले की भावना कभी नही रखी। उन्होंने कभी नाम, पद, स्वार्थ के लिए समाज को माध्यम नही बनाया।

आज लोग आर्यसमाज को व्यवसाय बना रहे हैं। बदले में लाभ लेना चाह रहे हैं। कोई नाम के लिए कोई पद के लिए, कोई राजनैतिक स्वार्थपूर्ति के लिए, कोई व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति के लिए तो कोई धन के लिए आर्यसमाज को माध्यम बना रहे हैं। यह प्रवृत्ति अत्यन्त चिन्तनीय एव निन्दनीय है। आज बोधोत्सव पर इन समस्याओ पर सोचना, विचारना होगा कि उस पुण्यात्मा ने क्या इसीलिए आर्यसमाज बनाया था ? मूल से हट और कट रहे हैं ? हमारे मे भी वही प्रवृत्तिया और बातें आ रही हैं जिनका ऋषि ने विरोध किया था। सत्य हम से दूर होता जा रहा है। अपने स्वार्थ के लिए जो चाहे जैसा सिद्धान्त रीति-नीति एव पद्धति बनाने और चलाने लगा है। इससे सगठन की एकता समाप्त हो जाती है।

हमारे मन्दिरों की सत्सग की उपस्थिति कम होती जा रही है। मन्दिरों का भक्ति-श्रद्धा और भावना पूर्ण वातावरण क्षीण हो रहा है। मन्दिर भक्तिपूर्ण संगीत से दूर हो रहे हैं। संस्थाएँ लडाई-झगडे के दलदल में फंसती जा रही हैं। धार्मिक, नैतिक, सामाजिक मूल्य बडी तेजी से तोडे और बदले जा रहे हैं। व्यक्ति टूट रहा है। परिवार बिखर रहे हैं। व्यक्ति की अस्मिता संघर्ष मे है। वेद, सस्कृति, धर्म, इतिहास आदि सघर्ष के दौर में हैं। इनके स्वरूप और आदर्श को विकृत एवं बदलने के प्रयास चल रहे हैं। संस्कृत भाषा जो देवभाषा, आदि-भाषा, वेदवाणी आदि नामों से विभूषित है। जो समग्र भारतीय वाङ्मय की सन्देशवाहिका रही है। जिसमें सभी नैतिक मूल्य, आचार-संहिता, जीवन-पद्धति एव जीवन-दर्शन विद्यमान हैं। उसे अव्यावहारिक एव अनुपयोगी कहकर विदा किया जा रहा है। शिखा और यज्ञोपवीत जिन्हें कभी यवनों की तलवारें न काट सकी थीं, वे नई पीढी में अपने आप कट एव हट रहे हैं। नई पीढ़ी स्वदेशी खान-पान, रहन-सहन, भाषा-वेशभूषा आदि से दूर हटती जा रही है। ये सभी बातें राष्ट्र के लिए अत्यन्त घातक तथा भयावह हैं।

आर्यसमाज का आविर्भाव जागरूक प्रहरी, राष्ट्र चिन्तक, वेद-धर्म सस्कृति एवम् आस्तिक मूल्यों के रक्षक के रूप मे हुआ है। इसकी विराट् चेतना और जीवन-दर्शन में विश्व-बन्धुत्व, सर्वे भवन्तु सुखिन, वसुधैव कुटुम्बकम् यत्र विश्व भवति एक-नीडम्, सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु आदि भावनाए विद्यमान हैं। इसका आधार सत्य पर है। इसका प्रवर्तक सत्य के लिए जहर के प्याले पीता रहा। मारने वाले को भी दया का दान देकर दिव्य दयानन्द बन गया।

आज ज्ञान-पर्व पर आर्यसमाज अपने स्वरूप-लक्ष्य और कर्त्तव्य को पहिचाने, वेद-सस्कृति, धर्म आदि का दायित्व इसके ऊपर है। भौतिक एवं भोगवादी संसार को कोई कुछ दे सकता है तो वह आर्यसमाज है क्योंकि उसका चिन्तन, मान्यताए जीवन दर्शन आदि अपने मे पूर्ण तर्कसगत एव व्यावहारिक हैं। अत इस पुनीत अवसर पर पवित्रात्मा का गुण-कीर्तन करे। इस से चित्त प्रसन्न होगा। उनके दिव्य गुणों के प्रति प्रीति भाव बढेगा। ऋषि के बताए मार्ग पर चलने का सकल्प करें। अपने दुर्गुणो को दूर करने के लिए सदैव यत्नशील रहें। तभी इस महान् पर्व शिवरात्रि की सार्थकता व्यावहारिकता एवम् उपयोगिता सिद्ध होगी।

(पृष्ठ १ का शेष)

दिल्ली नगर निगम

सन्तो, ऋषियो, बलिदानियों की गाथाएँ सुनानी होंगी जिससे उन्हें पता चल सके कि किस उद्देश्य के लिए उनके पूर्वजो ने अपना बलिदान दिया और भारी सघर्ष किया। उन्होंने कहा—स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दी भाषा, अनाथ रक्षा, दलितो का उद्धार, सस्कृति रक्षा, जनसेवा, गुरुकुल स्थापना जैसे महान् कार्यों मे अपने आपको आहुत कर दिया। इस अवसर पर नगरनिगम की ओर से भव्य आयोजन किया गया। सफल बेंड वादकों ने देशभक्ति की धुनों से तथा छात्राओं ने ओजस्वी गीतो से सारे जनसमूह को आन्दोलित एव तरगित कर दिया। श्री सूर्यदेव ने नगर निगम के अधिकारियों को इस आयोजन के लिए बधाई दी।

★

धर्मवीर पं० लेखराम जैसे उपदेशकों की आवश्यकता

—चमनलाल

प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण, ऋषि मुनियों की जन्मभूमि इस भारत भूखण्ड जिसे महाराज मनु ने लाखों वर्ष पूर्व जगद्गुरु की पदवी से अलकृत करके इसके गौरव को बढाया था, उन्होंने अपने मनुस्मृति मे इन मार्मिक शब्दों में लिखा है—

एतद्देश-प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन.। स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा ।

इसी पवित्र धरती पर सम्भवत: देश, काल, जलवायु के प्रभाव से गत १८ वी शताब्दी मे कुछ ऐसे अनेकों भारत सपूत, देशभक्त, समाज सुधारक धर्म और मातृभूमि की लाज पर जीवन की बलि देने वाले और प्राचीन वैदिक सभ्यता एव सस्कृति को पुनर्जीवित करने वाले उत्पन्न हो गये हैं। जिन्होंने इन क्षेत्रो मे अनेकों विघ्न बाधाओ और प्रतिकूलताओ के होते हुए भी अपने उद्देश्य की पूर्ति में अग्रसर होते हुए जीवन की बलि देने तक की भी लेशमात्र चिन्ता न की। ऐसे भारत माता के लालो की इस छोटे से लेख में कोई सूची बनाना मेरा ध्येय नही है और न ही किसी भारत सपूत के नाम छूट जाने के कारण मैं पाप का भागी भी बनना नही चाहता। परन्तु इसी गत शताब्दो के आठवे दशक (सन् १८७३) मे इस शताब्दी के तीसरे दशक (सन् १८२४) में गुजरात काठियावाड स्थित मौरवी नामक राज्य मे टकारा नाम के गाव मे उत्पन्न हुए मूलशकर (महर्षि देव दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के इतिहास पर यदि तनिक सा दृष्टिपात करे तो पता चलेगा कि इस छोटे से अन्तराल (१८७५–१९५०) तक महर्षि से प्रेरणा प्राप्त किये, देश राष्ट्र समाज और धर्म की रक्षा हेतु जितने अधिक लालों ने जीवनो की बलि देकर ऊँचे आदर्श उपस्थित किये, सम्भवत: किसी भी देश के इतिहास मे इससे पूर्व ऐसा कभी न हुआ होगा। इसको देखकर ऐसा लगता है कि जैसे मानो आर्यसमाज का इतिहास उसके लिए बलिदानों की लम्बी कहानी है। क्या कहा जाये और कहे बिना रहा भी न जाये। सर्वप्रथम आर्यसमाज के स्थापक, युगपुरुष महर्षि दयानन्द जी महाराज विरोधियो के षड्यन्त्र का शिकार हुए और उनके द्वारा हलाहल विष देने के कारण इस शताब्दी के नौवे दशक (सन् १८८३) मे ३० अक्तूबर दीपावली के दिन आर्यसमाज की वेदी पर स्वय बलिदान हुए। इसके पश्चात् धर्म पर मर मिटने वालो की एक भारी झड़ी लग गई और लगभग तीन दर्जन धर्मवीरों देश के लालो ने अपने जीवनों की बलि देकर दुष्ट वृत्ति वाले तत्त्वों से धर्म की रक्षा की। इसी शृङ्खला में महर्षि के बलिदान के पश्चात दूसरा बडा बलिदान इसी (१९वी शताब्दी) शताब्दी के छठे दशक (सन १८५८) में जेहलम जनपद की तहसील चकवाल स्थित सैयदपुर नाम के ग्राम मे (वर्तमान में पाकिस्तान में) महता तारासिह के घर जन्मे धर्मवीर प० लेखराम आर्य पथिक का इसी शताब्दी के दशवे दशक (सन् १८९७) मे ६ मार्च को उनतालीस वर्ष की उभरती युवावस्था में एक धर्मान्ध भयकर आकृति वाले मुस्लिम नौजवान के घातक छुरे का शिकार होकर लाहौर मे बलिदान हुए। धर्म पर मिटने वाला, आर्यसमाज का सच्चा सेवक, हसता हुआ अपनी बूढी बिलखती माँ और निस्सन्तान जवान धर्मपत्नो को रोता हुआ प्रभु के आसरे छोड बलिदानियों की सूची मे जा समाये।

आज ६ मार्च को धर्मवीर प० लेखराम आर्य पथिक का नव्वे वां बलिदान दिवस है। धर्म की वेदी पर मर मिटने वाले के जन्म दिन, बलिदान दिवस पर बडे उत्साह, उमग और श्रद्धा से मनाकर उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना हमारा परम पुनीत कर्तव्य होना चाहिए। किसी ने ठीक ही तो कहा है—

शहीदों की याद में,
लगेंगे हर वर्ष मेले।
धर्म पर मरने वालों का,
यही नामो निशां होगा ॥

परन्तु सच्ची श्रद्धाञ्जलि तो वह होगी जब हम लोग उनके जीवनों से प्रेरणा लेकर उनके छोड़े हुए अपूर्ण कार्यों को पूरा करने में लगें। पडित जी के जीवन पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि वह बड़े प्रतिभाशाली और प्रखर बुद्धि के धनी थे। तत्कालीन देहाती स्कूल में उर्दू फारसी पढकर बडे आलिम बने और बाद में अरबी के ऐसे विद्वान् बने कि अपने प्रचार कार्य में और मुसलमान मौलवियों से जब शास्त्रार्थ करते समय कुरान मजीद की आयतें पढते तो बड़े-बड़े मौलवी भी आश्चर्य में पड जाते थे। आप आरम्भ से सादा और सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। प्रचार कार्य की आधिक्य के कारण वह कुर्ते का बटन लगाना अथवा हजामत करने की भी चिन्ता न करते थे। १७ वर्ष की आयु में वह पेशावर मे पुलिस मे नौकर हो गये। परन्तु आरम्भ से ही धार्मिक वृत्ति के कारण वहा के वातावरण के साथ वह मेल न कर सके और जल्दी ही नौकरी छोडकर ऋषि दयानन्द के लेखों से प्रभावित हो आर्यसमाज के प्रचार कार्य मे लग गये। नौकरी छोडने पर वह महर्षि से मिलने अजमेर गये और कुछ शकाओं का सतोष जनक समाधान पाकर प्रचार कार्य मे जीवन लगा दिया।

उनके प्रचार कार्य, कार्य-शैली की यह विशेषता थी कि जितना समय उन्हें दिया जाता था, उससे अधिक उन्हें बोलना पडता था। क्योंकि नियत समय समाप्त होने पर जनता बार बार उनके व्याख्यान जारी रखने के लिए आग्रह करती थी कारण यह कि लोगों को उनके व्याख्यान मे रस प्राप्त होता था। वह इतने कुशल वक्ता थे कि अन्य मतों की त्रुटियों पर आप इस ढग से प्रकाश डालते थे कि उसमें किसी प्रकार की कटुता, कमीनता और छिछोरापन न आने पाता था और यही कारण था कि मुसलमान भाई भी विरोधी विचारों के होते हुए उन के व्याख्यान में बडी संख्या में सम्मिलित होते थे और उनकी अकाट्य युक्तियों की प्रशंसा किये बिना न रह सकते थे। वैसे तो पण्डित जी सभी धर्मों का खण्डन-मण्डन समान रूप से किया करते थे परन्तु फिर भी जैन, सनातनी तथा सिक्खों को आपके प्रति कोई विशेष शिकायत न थी क्योंकि वे आपकी सुधार भावना को बड़ी अच्छी तरह समझते थे। एक बार प्रचार कार्य करते आप और महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) जी की भेंट सनातन धर्म के महोपदेशक एवं नेता श्री पं० दीनदयालु जी से हो गई। पं० लेखराम जी ने पं० दीनदयालु जी से बातों-बातों में कहा कि आप हमें कोसने में तो बड़े बहादुर हैं परन्तु मुसलमान आपकी जड़ें खोखली कर रहे हैं और आप चुप रहते हैं कुछ भी नहीं कह सकते। इस पर पण्डित दीनदयालु जी ने तुरन्त उत्तर दिया कि यह काम तो आर्यसमाज का है। भला पण्डित लेखराम जी के जीवित रहते हमारी जड कौन खोखली कर सकता है। सच है जिस को योग्यता और सद्गुण सम्पन्नता के गीत विरोधी भी गाये वास्तव में वही व्यक्ति धन्य है। सच है—

उत न: सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टय:। स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ॥

कि ऋग्वेद का यह मन्त्र आर्य पथिक के जीवन में पूर्ण रूपेण लागू होता था। एक और विशेषता उनके प्रचार की यह थी कि वह बडी निर्भीकता से अपना प्रचार कार्य करते थे। अजमेर हो या मसहर मालयर कोटला हो या लाहौर, वह किसी भी मुसलमान की धमकियों की लेशमात्र भी चिन्ता न करते थे। जिस प्रकार फ्रांस के नेता नेपोलियन बोनापार्ट की डिक्शनरी में (Impossible) शब्द नही था। ठीक इसी प्रकार धर्मवीर जी के शब्दकोश में 'डर, भय' शब्द का नामोनिशान न था।

पण्डित जी प्रचार कार्य के साथ-साथ लेख का काम भी कुछ कम नही करते थे। आप ने छोटी-बडी लगभग तीन दर्जन पुस्तके लिखकर आप ने अपने नाम (लेखराम) को सार्थक किया। आप ने लगभग डेढ दर्जन पुस्तकों का तो अरबी भाषा में अनुवाद किया और साथ ही मुस्लिम देशों मे प्रचार की दृष्टि से आर्यसमाज के नियमों का भी अरबी में अनुवाद किया। बडी विशेषता तो उनके लेखों की यह थी कि अन्य मत मतान्तरों के लेखकों की भांति उन्होंने उन मे कभी भी असभ्यता नही आने दी। आप का प्रचार का क्षेत्र बडा व्यापक था। सारा पंजाब, सिध, बलोचिस्तान, राजपूताना, गुजरात आदि देश के छोटे-बडे सभी स्थानों पर धर्म प्रचार के लिए जाते थे और घर को कितनी ही विवशता क्यों न हो, वह प्रचार कार्य को कभी स्थगित करके घर नहीं आये। बच्चा पैदा हो, बीमार हो या मृत्यु के मुंह में फंसा हो, भाई की मृत्यु का सन्देश भी प्रचार कार्य में कभी बाधक नहीं हुआ। ऐसे निष्ठावान् उपदेशक, प्रचारक आज कहां मिलेंगे। शुद्धि के काम में तो वह इतनी रुचि लेते थे कि खाना तक भी भूल जाते थे। कहना न होगा कि इसी शुद्धि की धुन में

(शेष पृष्ठ ५ पर)

उन्होंने अपनी बलि भी दी। उनको केवल इतना ही पता होना चाहिए था कि अमुक स्थान पर कुछ हिंदू मुसलमान होने वाले हैं। बस फिर क्या था जैसे भी हो, वह वहां जा धमकते थे और जाति के लोगों को धर्म-परिवर्तन करने से बचा लेते थे इस दीवानेपन की बहुत-सी घटनाओं में से एक इस प्रकार है—अभी-अभी पण्डित जी प्रचार कार्य से घर लौटे थे और विश्राम करके खाना

धर्मवीर पं० लेखराम जैसे उपदेशकों की आवश्यकता है

खाने लगे कि उसी समय माता ने एक लिफाफा पण्डित जी को लाकर दिया। लिखा था –

लिफाफा हाथ में लाकर
दिया जिस वक्त माता ने।
लगे हैं खोलकर पढ़ने
दिया है छोड़ खाने को॥
लिखा था उसमें कि कुछ हिंदू
मुसलमान होने वाले हैं।
उठे हैं बांधकर बिस्तर
हो गये तैयार जाने को॥

कहा माता ने :
अभी तो तुम आये हो
बच्चा बीमार भी है।

बोले
एक बच्चे का क्या, मैं जा रहा हूं।
जाति के सैकड़ों लाल बचाने को।

एक बार तो वह समय पर किसी स्थान पर पहुंचने के हेतु चलती ट्रेन से कूद मार कर ही चले गये, जरा भी जीवन की परवाह न की।

उन दिनों मिर्जा गुलाम अहमद कादयानी के प्रचार का जोर था। हमारे चरित्र नायक उनकी भविष्य-वाणी और हिन्दू धर्म पर किये गये आरोपों का बड़ा युक्तियुक्त तर्क संगत उत्तर तुरन्त देते थे और कुछ पम्फलेट भी अविलम्ब छपवा देते थे। जिस कारण वह हमारे पण्डित जी की जान के दुश्मन हो गए थे। दिल्ली, लाहौर, मेरठ, बम्बई में मुसलमानों ने उन पर कचहरियों में कुरान की तौहीन के केस चलाए, परन्तु पण्डित जी सब स्थानों पर निर्दोष पाए गए। एक बात मैं उन के सम्बन्ध में अपने ही जन्म-स्थान शाहबाद मार्कण्डे की अवश्य कहना चाहूंगा कि हमारे नगर में एक हिंदू परिवार किन्हीं कारणों से मुसलमान होने जा रहा था। यह बात पण्डित जी के बलिदान से लगभग दो तीन वर्ष पूर्व की है कि वहां के आर्यसमाज के अधिकारियों ने जिस में मेरे ताऊ जी भी सम्मिलित थे, नियत समय पर पण्डित जी को लाहौर सभा से बुलवाया और बड़े विरोध और मुसलमानों की तैयारी के बावजूद किस निर्भीकता और कुशलता के साथ उन्होंने उस परिवार को मुसलमान होने से बचाया यह उनकी अपनी ही योग्यता थी और फिर मण्डी में एक बड़ा प्रभावशाली व्याख्यान देकर लोगों को निर्भीकता का सबक पढ़ाकर वापस गए थे।

पण्डित जी विदेशों में भी आर्य-समाज का प्रचार करने हेतु जाना चाहते थे परन्तु अमेरिका आदि देशों में अंग्रेजी पढ़ने के कारण नहीं जा सके और अरब देशों में जाने की इच्छा जल्दी ही उनके बलिदान होने के कारण पूरी न हो सकी।

उनके व्यक्तिगत जीवन की एक दो बात कहना भी कुछ आवश्यक होगा। वह गृहस्थ होते हुए भी सच्चे त्यागी और तपस्वी थे और संयम के जीवन के कारण मनु के शब्दों में वह ब्रह्मचारी कहलाने योग्य थे। पैसे रुपये में उनका लेशमात्र का भी मोह नहीं था। केवल २५ रुपये, शादी होने पर ३० रुपये मासिक वह सभा से लेते थे और इससे अधिक लेने की कभी इच्छा तक न की। इस सम्बन्ध में मुझे ला० मुन्शीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द) के उनके आर्यसमाज में प्रवेश के समय कहे गये कुछ मार्मिक शब्द याद आ जाते हैं, जिनको श्रद्धानन्द जी ने तो मूर्तिमान करके दिखलाया ही है, परन्तु इसमें भी कुछ सन्देह नहीं है कि हमारे चरित्र नायक प० लेखराम जी ने भी उनको जीवन में धारण करके एक महान आदर्श प्रस्तुत किया है। वे वाक्य कुछ इस प्रकार हैं—

"हम सब के कर्तव्य और मन्तव्य एक होने चाहिये। जो वैदिक धर्म के एक-एक सिद्धान्त के अनुसार अपना जीवन नहीं ढाल लेगा, उसे उपदेशक बनने का साहस नहीं करना चाहिये। भाड़े के टट्टुओं से धर्म का प्रचार नहीं हो सकता। इस पवित्र कार्य के लिए निःस्वार्थ, त्यागी पुरुषों की आवश्यकता है।"

बन्धुओ! विचार कीजिये कि आजकल कहां ऐसे निष्ठावान उपदेशक मिलेंगे। पण्डित जी की हार्दिक इच्छा थी कि उनके पीछे तहरीर (लेख) और प्रचार के काम में किसी प्रकार की शिथिलता न आने पावे और इन दोनों ही चीजों का अभाव आर्यसमाज की उन्नति के रास्ते में बाधक हो रहा है।

वर्तमान में देश की परिस्थितियों में आर्यसमाज के प्रचार की पहले से भी कहीं अधिक आवश्यकता है। समाज विरोधी अराष्ट्रीय तत्त्व बड़ी तीव्रता के साथ सिर उठा कर उभर रहे हैं। यहां की जलवायु में पलने वाले, यहीं की पवित्र भूमि से उपजा अन्न खाने वाले पापाचारी लोग पाकिस्तान और अरब देशों की ओर देखते हैं। दुःख तो इस बात का है कि कुछ राजनीतिक दल स्वार्थवश चन्द वोटों के लोभ के कारण उनको अपने में समाए बैठे हैं। वे राष्ट्र ध्वज का अपमान करें, देश के विधान की प्रतियां जलावें, राष्ट्रभाषा हिन्दी को देश की भाषा न मानें, यहां के पूर्वजों और उनके नाम पर बने पूजा के स्थानों को मस्जिद बनाएं और न ही सरकार हिन्दू हितों की रक्षा का कोई ध्यान करे और आर्यसमाज जो आरम्भ से ही इस देश और आर्य-हिन्दू जाति का सजग प्रहरी बन कर रहा है, आज वह भी गहरी नींद में सो गया है। क्या होगा इस देश का? यह एक बड़ा प्रश्न आज हमारे सामने है। पंजाब और अन्य सभी प्रदेशों के धर्मान्ध लोग आतंक फैला रहे हैं। निर्दोष लोगों की हत्या करना और करोड़ों रुपया बैंकों से लूटना उनका एक पेशा (धर्म) बन गया है। सांप्रदायिकता और भ्रष्टाचार का नाद बज रहा है। युवा वर्ग जो किसी देश की रीढ़ की हड्डी कही जाती है, गत चालीस वर्षों में सही दिशा और उपयुक्त मार्गदर्शन न पाकर आज शुतुर बेमुहार की तरह (उद्देश्यहीन) अन्धकार में भटक रहे हैं और नशीले पदार्थों का सेवन करके जीवन बर्बाद कर रहे हैं और देश तथा परिवार पर व्यर्थ का भार बने हुए हैं। ऐसी दशा में आर्य पथिक जैसे सच्चे प्रचारकों तथा उपदेशकों की नितांत आवश्यकता है। स्कूल, कालेज तो बहुत खुल गए हैं और बहुत खोले जा रहे हैं परन्तु विश्वास रखिए ये प्रचार का साधन नहीं हो सकते।

अतः सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओं को चाहिए कि सब आपसी भेदभावों को भुलाकर ऐसे उपदेशक विद्यालय खोलें जिनमें आर्य पथिक जैसे प्रचारक तैयार किये जायें ताकि प्रचार कार्य को तीव्र गति से चालू किया जाए। ईसाइयों और रामकृष्ण परमहंस मिशन की तरह जब तक हमारे प्रचारक और उपदेशक न होंगे, सच जानिए हमारा कुछ भी भला होने वाला नहीं। अतः सच्ची श्रद्धांजलि धर्मवीर पण्डित लेखराम जी को यही होगी कि जहां हम कुशल उपदेशक, निष्ठावान प्रचारक पैदा करने का प्रबन्ध करें, वहां अपने जीवन को सच्चे अर्थों में आर्य बनायें। ☐

प्रान्तीय आर्य महिला सभा

निर्वाचन सूचना

आर्य बहिनों को सूचित किया जाता है कि ऋषि बोधोत्सव तथा सीताष्टमी पर्व ९।३।८७ सोमवार, राजौरी गार्डन स्त्री आर्यसमाज में होगा। निर्वाचन की तिथि २३।३।८७ सोमवार दीवान हाल में करने की निश्चित की गई है। आप से विनम्र निवेदन है कि अपनी प्रतिनिधि बहिनों के नाम वार्षिक रिपोर्ट तथा चन्दे शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

मन्त्रिणी श्रीमती प्रकाश आर्या

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बांकनेर, दिल्ली-४० का ३५वां वार्षिकोत्सव २८ फरवरी तथा १ मार्च १९८७ शनिवार, रविवार को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस शुभावसर पर भाषण, निबन्ध, बालीबाल, कबड्डी, दौड़, वजन की कुश्तियां (२८ किलो से २२ किलो) आदि प्रतियोगिताएं कराई जाएंगी। विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

प्रधान . मांगेराम आर्य

समाचार

धर्मरक्षा महाभियान
१००० ईसाई हिन्दू समाज में दीक्षित
पादरियों का घोर विरोध विफल

गुरुकुल आमसेना (उडीसा) ८ फरवरी १९८७ को सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री प० पृथ्वीराज शास्त्री तथा गुरुकुल आमसेना के संचालक स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के अथक प्रयास एवम् आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की प्रेरणा से १००० ईसाइयों ने स्वेच्छा पूर्वक वैदिक धर्म मे प्रवेश किया—

शुद्धि महायज्ञ की सूचना से सारे क्षेत्र मे सनसनी फैल गई थी। ईसाई पादरियो ने लोभ-लालच, भय व प्रलोभन से किसी भी तरह इस शुद्धि कार्यक्रम को रोकने का प्रयत्न किया, और लोगों को इसमे जाने से रोका गया। किन्तु आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता और गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के तेजस्वी अभियान का सामना विदेशी पादरी नही कर सके और उनका विरोध विफल हो गया।

८ फरवरी को गुरुकुल आमसेना के प्रांगण मे ४० परिवारो के २०० ईसाइयों का शुद्धि संस्कार किया गया। इस अवसर पर कुलभूमि वैदिक धर्म के जयजयकार से गूंज उठी।

१० फरवरी ८७ को केउटिपाली (बालंगीर) मे जो खरियार रोड से १५० किलोमीटर की दूरी पर है स्वामी धर्मानन्द, प० पृथ्वीराज शास्त्री तथा आर्य पंडितों के साथ गुरुकुल के ब्रह्मचारी पहुंच गए और सायकाल ३ बजे—

ओ३म् पताका की छाया में शुद्धि महायज्ञ प्रारम्भ हुआ—

इस ग्राम मे ८०० ईसाई स्त्री पुरुषो को यज्ञोपवीत देकर वैदिक धर्म मे प्रविष्ट किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती द्वारा प्रदत्त लगभग १० हजार रुपये के वस्त्र आदि प० पृथ्वीराज शास्त्री ने नव दीक्षित भाई बहिनों को प्रदान किए।

यह ज्ञातव्य है कि गत वर्ष भी २ फरवरी ८६ को इसी गुरुकुल में लगभग २५०० ईसाई शुद्ध होकर विशाल हिन्दू समाज के अग बने थे।

इस अवसर पर दूर दूर के आर्यसमाजो के कार्यकर्ता व धर्मप्रेमी जन बडी सख्या में उपस्थित थे।

राष्ट्रीय चेतना के लिए युवा आगे आयें
—मदन लाल खुराना

नई दिल्ली—देश की नीतियां देश को विभाजन के कगार पर ले जा रही हैं। पंजाब और मिजोरम समझौते की आलोचना करते हुए उन्होने कहा कि देश की जो हालत आज हो गई है वह ४० वर्ष से पहले कभी नहीं हुई। आर्यसमाज का इतिहास सदैव अग्रणी रहा है। देश मे जो विघटनकारी प्रवृत्तियां इस समय सिर उठा रही हैं उनका मुकाबला आर्य युवक ही कर सकते हैं।

श्री खुराना आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग के सभागार में केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय एकता सम्मेलन" मे बोल रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर युवा उद्घोष "पाक्षिक" के राष्ट्र चेतना विशेषांक का भी विमोचन किया।

विमोचन समारोह मे युवा उद्घोष के सम्पादक श्री अनिल कुमार आर्य, सांसद रामचन्द्र विकल, श्री हीरा लाल चावला, श्री राजपाल आर्य, श्री रामनाथ सहगल, श्री अजय सहगल, डा० प्रशान्त वेदालंकार आदि आर्यनेताओं के राष्ट्रीय चेतना पर भाषण हुए।

—राधेश्याम शास्त्री
प्रचार मंत्री

पंजाब समस्या फोड़े का रिसाव

समाचारपत्र हाथ में लेते ही एक जलती हुई घटना पढने को मिलती है और हृदय में एक गहरी टीस के साथ समाचारपत्र हाथ से छूट जाता है। मस्तिष्क कुछ सोचने को विवश होता है, मन कुछ करने को तडप उठता है। ओह! पचनद की गौरवमय भूमि, तक्षशिला का विकास स्थल पाणिनि मुनि की ज्ञान ज्योति का प्रसार क्षेत्र लाजपतराय, भगत सिंह, श्रद्धानन्द, हकीकतराय जैसे कर्मयोगियों की तपोभूमि और आज राक्षसों की लीला भूमि बनी है। जहां क्रूरता का नगा नाच हो रहा है, दानव आर्य ललनाओं की लाज लूट रहा है। उनका करुण विलाप वहीं की नदियों की लहरों में विलीन हो रहा है, जहां के निरीह निहत्थे नागरिक दस्यु की आसुरी रक्त पिपासा की बलि चढ रहे हैं।

और इसके साथ ही लज्जा व क्षोभ के साथ सुनने को मिलता है सरकार कुछ नही कर रही, आततायियों पर वश पाने में असफल हो रही है। हन्त गर्वोन्नत राष्ट्र के साथ यह कैसा खिलवाड! मानवता के भाग्य के साथ यह कसा निर्मम उपहास! केवल बातों से यह समस्या नहीं सुलझने वाली। यह समस्या पाकिस्तान के जन्म के साथ जुडी है तथा अन्य अनेक समस्याओं की प्रसवकर्त्री है जिसका स्पष्ट सकेत मिल रहा है आसाम, मिजोरम, नागालैण्ड वासियों के अलगाववाद के नारों में

वास्तव में पाकिस्तान के रूप में देश का विभाजन ही गलत था और अब उसको पृथक् बनाये रखना और भी गलत है। पाकिस्तान एक भयंकर फोडा है जो बढ गया है जिसका अब रिसाव हो रहा है, आतंकवाद व उग्रपंथ रूप में।

जब तक मूल समाप्त न होगा तब तक यह रिसाव दुर्भावना का प्रसार समाप्त नहीं होगा। अमेरिका, ब्रिटेन व चीन इस फोडे पर प्रलोभन का विष भरा फाहा रखकर इसको बढा ही रहे हैं। यह फोडा अपनी जड़ें गहरी किये जा रहा है जो कभी कैंसर की भांति सारे राष्ट्र के शरीर को गला देगा।

पाकिस्तान भारत का ही भूभाग है। इस पर हमारा स्वाभाविक अधिकार है। हमें प्राचीन भारत का मानचित्र सामने रखना होगा और तदनुरूप भारत की सीमाएँ निर्धारित करनी होंगी। संसार शक्तिशाली का वास्तविक रूप में शक्तिशाली का है, बात बनाने वालों या कायरों का नहीं। वीर नागरिक दूसरे की सम्पत्ति का अपहरण नहीं करते पर अपनी संपत्ति को अपहृत भी नही होने देते। आज भारत की धरती पर दूसरो की गृध्र दृष्टि गिर रही है और वे भारतवासियों के द्वारा ही भारतीयों का विनाश करा रहे हैं। इस आशा में कि इनके दुर्बल होने पर वे भारत पर कब्जा कर सके। उग्रवादी ऐसे ही गुमराह हुए लोग हैं। इनके मन इस सीमा तक बिगड चुके हैं कि अब समझाने से नही मानेंगे। इन को अब करारी चोट की आवश्यकता है। क्या भारत सरकार में यह चोट करने की शक्ति नहीं है? यदि है तो वह मूक बनी तमाशा क्यों देख रही है? निरपराध नागरिकों के रक्तपात का उत्तरदायित्व किस पर है?

भारतवासियों मे क्या अपने पूर्वजों का रक्त निःशेष हो गया है? ईरान, अमेरिका तक जिनका राज्य विस्तार था, क्या आज अपने ही घर में सुरक्षित नहीं रहेंगे? इस देश के वासियों में सब गुण विद्यमान हैं, सभी कुछ उनके पास है, केवल उनकी सामाजिक चेतना तथा संवेदना शक्ति सो गई है। इसके बिना वे प्राणवान् होते हुए भी निर्जीव सदृश हो रहे हैं। अपना ही रक्त बहते हुए देखकर तडप रहित हैं। इनकी कर्मठता को लकवा मार गया है। एक सीता का अपमान होने पर सारा राष्ट्र आन्दोलित हो गया था पर आज सैकडों सीताओं की लाज लुटते हुए भारतवासी विवश दृष्टि से देख रहे हैं तथा शान्तिप्रियता के नाम पर यदि हम इसे सहन कर रहे हैं तो यह आत्मप्रवंचना के अतिरिक्त और कुछ नहीं, अपनी कायरता पर पर्दा डालने का मात्र बहाना है।

आज भारत की युवाशक्ति को यह उत्तर देना है कि उसके रहते हुए भारत पर दस्यु का उत्पात कैसा? युवा हृदय भी भयभीत है क्या? रामकृष्ण के वंशजो या तो मैदान में आओ या मृत्यु की चादर ओढ़कर किसी कोने में छिप रहो। पर पूर्वजों की आन को लाज मत लगाओ। कृष्ण के पुजारियो! क्या याद नहीं रहा कि जरासन्ध व कंस का नाश आपके कृष्ण ने बेदर्दी से किया था। राक्षस दमन में कोई

(शेष पृष्ठ ७ पर)

(पृष्ठ २ का शेष)

शास्त्रार्थ महारथी के संस्मरण

इसकी पुष्टि मे कहा कि श्री रामचन्द्र का वन जाते समय माता कौशल्या से वार्तालाप यह सिद्ध करता है। यह माता कौशल्या ने राम से कहा कि हे पुत्र यदि तुम्हें पिता ने वन जाने का आदेश दिया है तो उनसे अधिक माता का अधिकार है, इसलिए मैं तुम्हे वन जाने को मना करती हू किन्तु जब श्री रामचन्द्र जी ने माता कैकेयी की भी अनुमति बतायी तो वे चुप हो गयी। इसी प्रकार महाभारत से भी दुर्योधन के परास्त होने पर माता गन्धारी व भीम का सम्वाद भी माता के महत्त्व को प्रकट करता है। अतः वेद माता के रूप मे मानव को इच्छित फल लम्बी आयु, प्राण शक्ति, उत्तम सन्तान, उपयोगी पशु, यश, कीर्ति, पुष्टिकारक दान व ब्रह्मतेज को प्रदान करके जीवन को मङ्गलमय बनाते हुए ब्रह्मलोक को प्राप्त कराने की क्षमता रखती है। सो युगद्रष्टा, धर्मोद्धारक वेदो के प्रकाण्ड विद्वान् महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये प्रशस्त मार्ग पर चलने से ही मानव समाज व राष्ट्र का कल्याण हो सकता है, इसके अतिरिक्त अन्य मान्यताएं, मत पन्थों से कल्याण होना दुलभ है। जैसे कि पडित जी ने किसी मौलाना का प्रमाण देकर बताया कि जब वो नमाज अदा कर रहे थे कि अचानक एक बिल्ली उनके वस्त्र पर आकर सो गई जिस पर वे नमाज पढ रहे थे, मौलाना ने उस बिल्ली को हटाने की अपेक्षा अपनी नमाज के हो अगों को छोड दिया जिससे प्राणी को कष्ट न हो सके, इसी की पुष्टि में उन्होने कुरान की भी आयत पढी कि जिसमे मोहम्मद साहब ने प्राणिमात्र पर दया को ही सच्ची इबादत बताया है जिसका अर्थ (आत्मन प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्) मनु भगवान् की इस उक्ति से चरितार्थ होता है। इसी प्रकार उन्होंने वेद विरुद्ध मतों को निरस्त करने के लिए उन्ही के ग्रन्थों से उनके सिद्धान्त का खण्डन कर देना व वेद की सत्यता को उनकी पुस्तक से सिद्ध कर देना शास्त्रार्थ विजय के ये दो हेतु बनाते हुए जीवन मे धर्म की रक्षा व शास्त्र का प्रतिपादन करने में उन्हें कितना परिश्रम करना पडा व यातनाएँ सहनी पडी, ऐसी कितनी ही घटनाएँ उन्होंने वर्णन की। इस समय तेहत्तर वर्ष की आयु में भी उनकी धर्म प्रचार की जो उत्कट इच्छा व व लग्न है। आगे आने वाली पीढी को उससे पाठ ग्रहण करना चाहिए। उसी लगन व पुरुषार्थ से धर्म-प्रचार के पुनीत कार्य के लिए अग्रसर होने को तत्पर रहना चाहिए। हमें भी अपना जीवन त्यागी तपस्वी और आदर्शमय, सदाचारी और अनुकरणीय बनाना चाहिए। तभी हमारा, हमारे देश का कल्याण होगा।

(पृष्ठ ६ का शेष)

पंजाब समस्या...

लापरवाही कोई रियायत उन्होंने नहीं की थी। और आज तुम कृष्ण की माला जपते हुए आततायियो को रोमहर्षक अत्याचारों की खुली छूट दे रहे हो।

नही अब और सहन नही करना होगा। सिंह की तरह दहाडकर आओ, पाकिस्तान सहित उग्रवाद का विनाश कर अखड भारत का वरदान इस धरती को दो। तुम्हारी प्रतीक्षा में माँ के वेदना भरे क्षण भारी रहे हैं। माँ का वरदान ही लो, उसका अभिशाप तुम्हें कही का न रहने देगा।

—डा० पुष्पावती आचार्या
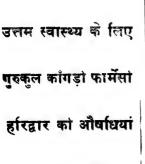
साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक २० | रविवार १५ मार्च, १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८ | फाल्गुन २०४३ | दयानन्दाब्द—१६२

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

श्री धर्मजित जिज्ञासु का भव्य स्वागत

अमेरिका में गुरुकुल स्थापना का महान् संकल्प

८ मार्च दिल्ली, वेद वेदांगों द्वारा आर्षप्रणाली से शिक्षा द्वारा चारित्रिक उत्थान एवं मानवीय विकास के चरमोत्कर्ष की दिशा में कार्य करने हेतु गुरुकुलीया शिक्षा आवश्यक है। पश्चिम की भौतिक चकाचौंध में खोयी मनुष्यता के उद्धार के लिए पूरब की दिव्य ज्योति की आज आवश्यकता महसूस हो रही है। अतः अमेरिका के भव्य नगर न्यूयार्क के आस-पास ही सुरम्य स्थान पर प्रकृति की छटा से सुशोभित स्थल पर गुरुकुल स्थापना करने को मैंने संकल्प किया। इसलिए न्यूयार्क से ७० मील दूर पर्वत उपत्यका में ५ एकड भूमि इस कार्य के लिए हमने प्राप्त कर ली है। यह विचार व्यक्त किए श्री धर्मजित जिज्ञासु ने। श्री जिज्ञासु न्यूयार्क आर्यसमाज के मंत्री हैं। उन्होंने न्यूयार्क में ८ नवम्बर १९८५ को एक भव्य भवन खरीद कर आर्यसमाज की स्थापना की है। श्री जिज्ञासु के प्रयत्न से ८ स्थानों पर आर्य सत्संग चलाये जाते हैं। आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली में उनका भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्री रामचन्द्र राव वन्दे मातरम् ने की। स्वामी आनन्द बोध जी ने श्री जिज्ञासु का स्वागत करते हुए कहा कि हमें धर्मजित जिज्ञासु जैसे नरपुंगवों पर गर्व है जो जहां भी रहते हैं वैदिक धर्म की विजय वैजयन्ती फहराने का महान् कार्य करते रहते हैं। श्री जिज्ञासु ने अमेरिका के महानगर में आर्यसमाज की स्थापना कर वैदिक धर्म के अनुयायियों का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है। उन्होंने कहा अब श्री जिज्ञासु का संकल्प है गुरुकुल स्थापना। ज्ञान विज्ञान के शिक्षा केन्द्र के लिए वे प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षा पद्धतियों की विशेषताओं से समलंकृत संस्थान स्थापित कर रहे हैं। इस के लिए मैं उन्हें समस्त आर्य जगत् की ओर से साधुवाद देता हूं। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रतिष्ठित जनों ने भी श्री धर्मजित जिज्ञासु का पुष्प मालाओं तथा मंगल कामनाओं द्वारा भरपूर स्वागत किया। सभा का संचालन आर्यसमाज दीवान हाल के मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त कर रहे थे।

चकमा आदिवासी

जब गत १५ जनवरी को त्रिपुरा-बांग्लादेश सीमा पर चकमा आदिवासियों ने बांग्लादेश वापस जाने से साफ इनकार कर दिया था, तब इरशाद सरकार ने आंखें काफी लाल पीली की थीं और दबी जबान में यह आरोप लगाया था कि भारत राजनैतिक कारणों से चकमा आदिवासियों का प्रत्यावर्तन नहीं होने देना चाहता। भारत ने अपनी तरफ से भरसक प्रयास किया लेकिन चकमा आदिवासी वापसी के डर से कांप रहे थे और जंगलों तक में जा छिपे थे। भारत ने उनको वापस सौंपने के लिए जोर-जबर्दस्ती इसलिए नहीं की कि एमनेस्टी इन्टरनेशनल जैसी संस्थाओं तक का ऐसा आग्रह था और चकमा आदिवासियों के इस डर को समझा गया था कि लौटने पर कहीं उन्हें मार न डाला जाए।

इस बीच चकमाओं का भारत की ओर प्रवाह वापस तो क्या मुड़ता, वह और तेज हो गया है। भारत में चोरी छिपे घुसने के लिए उद्यत लगभग १०० चकमा आदिवासियों का बांग्लादेश की स्पेशल टास्कफोर्स द्वारा कत्लेआम न केवल चकमा-भय को पुष्ट करता है बल्कि भारत के विवेक और मानवता को भी रेखांकित करता है। इस कत्लेआम से यह साबित होता है कि बांग्लादेश में इन निरीह आदिवासियों की वापसी का रास्ता खूखार है।

पिछले दिनों जब भारत सरकार ने संसद में बयान दिया कि भारत में चकमा आदिवासियों की संख्या ४९ हजार के करीब है, तब बांग्लादेश सरकार ने इस संख्या को अतिरंजित बताया था। लेकिन अब चकमा-प्रवाह को ध्यान में रखते हुए भारतीय आंकड़ा संदिग्ध मानने का कोई कारण नहीं होना चाहिए। अकेले जनवरी में ही १३ हजार चकमा आदिवासी आए हैं। बांग्लादेश सरकार सिर्फ २४ हजार ३६९ लोगों को अपना नागरिक मानती है।

कोई आदमी अपना घरबार तभी छोडता है जब वहां रहना असम्भव हो जाए। चटगांव की पहाड़ियों के चकमा आदिवासी बांग्लादेश के बनने के तत्काल बाद अत्याचार के शिकार होने लगे। वे हिन्दू और बौद्ध परम्परा के अनुयायी हैं। बांग्लादेश सरकार ने पहाडियों पर मुस्लिमों को बसाना शुरू किया, वहां तक तो ठीक हो सकता है। लेकिन इन आदिवासियों को इस्लाम अपनाने के लिए विवश किया तब विद्रोह होना ही था। फलस्वरूप शांतिवाहिनी जैसी आक्रामक आदिवासी सेना का उदय हुआ जो बांग्लादेश के मैदानी इलाकों से आए लोगों को चुन-चुनकर निशाना बनाती है। १९८४-८५ में शांतिवाहिनी के आपसी कलह के दौरान बांग्लादेश सरकार ने चटगांव पहाडियों पर और ज्यादा मुसलमानों को बसाया जिन्होंने बन्दूक की नोक पर चकमा और मोंग आदिवासियों को खदेडना शुरू किया। बांग्लादेश सरकार चाहती तो इस समस्या का राजनैतिक हल खोज सकती थी और जैसे भारत ने कुछ स्वायत्त आदिवासी जिले बनाये हुए हैं, वैसे वह भी बना सकती थी पर उसने ऐसा नहीं किया। भारत सरकार को चकमा आदिवासियों की वापसी के लिए बांग्लादेश सरकार से यह वचन लेना चाहिए कि उन पर अत्याचार नहीं होगा।

राजेन्द्र माथुर—न० भा० टा०

सात हजार बकरियों की बलि

मनुष्य की धर्मांधता किस तरह उसके मन में पशुता पैदा कर देती है उसका एक मुंह बोलता प्रमाण यह है कि नलगोंडा जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर ९ के पास स्थित 'लिंगामथल स्वामी' नामक गुम्बद जैसी पहाड़ी व उसका निकटवर्ती क्षेत्र ८ से १० फरवरी तक तीन दिन के लिए ७००० बकरियों व भेडों की बलिवेदी का रूप धारण किए रहा। यात्रा पर्व पर ये पशु बलियां दी गईं और इस स्थान का नाम ही अब भेड़ पर्वत तीर्थ रख दिया गया है। पुलिस का कहना है कि १० हजार पशुओं की बलि दी गई जबकि मन्दिर ट्रस्ट बोर्ड के

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

सहनशीलता

सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए०

वाजेषु सासहिर्भव । ऋ० ३।३७।६

(वाजेषु) युद्धों में (सासहिः) सहनशील, डटने वाला, अड़ने वाला (भव) बन।

वेद मन्त्र का यह छोटा सा टुकड़ा कितना जीवन को प्रेरणा देने वाला है। वास्तव में संसार एक युद्ध भूमि है। इस संसार मे कदम-कदम पर संघर्ष-संग्राम हो रहा है। इस संसार में विजयी होने के लिए हमें सहनशील बनना होगा। सहनशीलता के दो भाव हैं। एक तो युद्ध की परिस्थितियों में टिकना, घबराना नहीं और दूसरा भाव है अत्याचार, अनाचार और संघर्षों का शान के साथ सामना करना। कष्टों को सहना, घबराना नहीं। जो सहनशील होते हैं, वे ही जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। अपने विरोधियो का मुख बन्द कर देते हैं। कष्टों के पहाड़ आने पर भी झुकते नहीं। वे ही दुनिया में कुछ कर गुजरते हैं।

वेद का सन्देश है कि वीर पुरुषार्थी, ओजस्वी, निर्भय, कर्मण्य और आशावादी बनो, अत्याचारों को न सहो, पिशाचों को कुचल डालो। वेद कर्म रहित भवितवाद और भाग्यवाद का पोषक नहीं। सहनशीलता का भी उक्त वेद मंत्र में वर्णन किया गया है पर अत्याचार को सहना सहनशीलता नहीं। विरोधी को अत्याचार से हटाकर सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करना और उसके सुधार की कामना करना सहनशीलता है।

एक नवयुवती वधू बनकर एक घर में आई। सास बहुत ही लड़ाकू थी। बिना लड़े उसका खाना नहीं पचता था। वधू के आने से पहले वह पड़ोस मे लड़ झगड़कर अपना काम चला लेती थी। अब घर मे ही लड़ने का सामान मिल गया। बहू को वह बात बात पर ताने देने लगी। कभी कहती तुम्हारे बाप ने तुम्हें क्या सिखलाया है। तुम्हारी मा ने क्या तुम्हें यही सीख दी है। तेरे जैसी चुड़ैल मैंने कहीं नहीं देखी। बहू यह सब सुनकर भी शान्त रहती, यह चुप्पी भी उसे अखरती। प्रतिदिन ऐसा ही होता। आस पास के लोग भी सास के इस व्यवहार को देखते और उसकी निन्दा करते।

एक दिन जब वह बहू पर बरस रही थी। तब पड़ौसिन से न देखा गया। उसने कहा, लड़ने की बहुत इच्छा है तो आकर हम से लड़। तेरा चस्का पूरा हो जाएगा। इस बेचारी गाय के पीछे क्यों पड़ रही है। जो तेरी बात का उत्तर भी नहीं देती।

यह सुनकर जब तक सास उसकी चुनौती का जवाब देने के विचार से उससे लड़ने को आगे बढ़ ही रही थी बहू ने उठकर प्रार्थना भरे स्वर में पड़ौसिन से कहा-"चाची जी, इन्हें कुछ न कहिए। ये मेरी मां हैं। ये नही सिखायेंगी तो कौन सिखायेगा, अपनी बेटी को।

सास यह सुनकर लज्जित हो गई और उसका स्वभाव बदल गया।

आपने न्यूटन का नाम सुना होगा। विज्ञान के अब तक के सभी सिद्धान्तों का आधार उसके ही सिद्धान्त हैं। उसने आकर्षण शक्ति का पता लगाया और दुनिया को नई शक्ति दी। उसके घर में एक कमरा था। उस जगह वर्षों से वह एक यन्त्र के कुछ आंकड़ों का रिकार्ड रख रहा था। वह कागज बहुत वर्षों से वहीं पड़ रहने से पुराना पड़ गया था। उस पर धब्बे पड़ गए थे। वह ग्राफ का पेपर उस यंत्र के पास एकपिन से लगा रहता था। उसका पुराना नौकर चला गया तो नए को उस कागज के विषय में न तो कुछ पता था और न किसी ने उसकी उपयोगिता उसे बतलाई थी। वह घर को खूब व्यवस्थित और साफ रखता था, उसने उस कागज को रद्दी कागज का टुकड़ा समझ कर और पुराने कागज को फाड़कर रद्दी की टोकरी में डाल दिया।

न्यूटन जब वहाँ गया और उसने उस कागज को नहीं देखा, तब नौकर से उसके विषय में पूछा। नौकर ने कहा—"हुजूर, वह पुराना हो गया था न? अत: मैंने उसे बदल दिया और उसे फाड़फूड़ कर फेंक दिया।

न्यूटन यह सुनकर स्तंभित हो गया। पसीना पोंछते हुए उसने कहा "भाई, मेरा भारी नुकसान हो गया वर्षों का परिश्रम धूल मे मिल गया। पर कोई बात नहीं, परमेश्वर की यही इच्छा थी। वह घबराया नहीं उसने नये सिरे से अपना परिश्रम शुरू किया। यदि उसमे सहनशीलता न होती और वह घबरा जाता तो क्या जीवन में सफल हो पाता।

एक दूसरी कहानी कार्लाइल की सुनिए। कार्लाइल अंग्रेजी साहित्य का एक प्रसिद्ध विद्वान और लेखक हुआ है। उसने एक महत्वपूर्ण पुस्तक फ्रास की राज्य क्रान्ति पर लिखी। उसकी इस पुस्तक की पांडुलिपि उनके एक मित्र उससे मांगकर ले ले गए। उसे एक मेज पर रख दिया। एक बार कार्लाइल उनके घर पहुंचे। मित्रसे पुस्तक के गुण-दोष के विषय में पूछा और कहा कि उनके बताने के आधार पर इसमें परिवर्तन किया जा सकता है।

मित्र ने कहा "पुस्तक तो अभी पढ़ी नहीं।" अपने नौकर से मेज से लाने को कहा, पर वहां नहीं मिली। पूछताछ के बाद पता लगा कि एक नौकरानी ने उसे नीचे पड़ा हुआ देखा था। उसने उसे रद्दी कागजों का पुलिन्दा समझ कर आग जलाने का काम लिया है।

यह सुनकर कार्लाइल थोडी देर के लिए हतप्रभ हुए। पर शीघ्र ही अपने को संभाल कर इस महान कष्ट को सहा। घबराये नहीं, और फिर वह पुस्तक नए सिरे से लिख कर पूरी कर दी।

याद रखने की बात है कि जीवन में कष्ट आएँगे, असफलताएँ और विपत्तियां आएंगी ही उनको धैर्य से सहना चाहिए। उनका सामना कीजिए। सहनशीलता का धैर्य अनिवार्य साथी है। धैर्य में चार बातें होती है, इन्हें याद रखिए और जीवन में उतारिए। पहली तितीक्षा अर्थात कठिनाइयों को सहना, विपत्तियों का सामना करना विघ्न बाधाओं से भिड़ना। दूसरी साधना अर्थात निरन्तर अपने लक्ष्य की पूर्ति में लगे रहना तीसरी प्रतिज्ञा अर्थात समय की अवधि देखकर निराश न होना और चौथा संयम है अर्थात प्रत्येक दशा में अपने पर नियन्त्रण रखना। इन गुणों को धारण करने पर हम अपने जीवन में अवश्य सफल होंगे। वेद कहता है "वाजेषु सासहिर्भव' युद्धों में सहनशील बन।

●

होली

होली का रंग-बिरंगा त्यौहार
अब खुशियां नहीं लाता
मधुऋतु का अलमस्त पवन
अब सौरभ, सुगंध नहीं बांटता
पीत सुमनों से लदे-फंदे
सरसों के पौधे उल्लास नहीं भरते
अब तो चलती हैं प्रतिदिन
रक्त की पिचकारियां!
गुलाल की जगह उड़ता है
विस्फोटकों का धुंआं!
लोग गले तो मिलते हैं
किन्तु काटने को ललकते हैं
आह! घृणा और द्वेष ने
प्रेम, सद्भाव को परास्त कर दिया
कालगति ने होलिकोत्सव का
स्वरूप ही बदल दिया।

होलिहारो! कोई ऐसा 'फाग' गाओ
दिलों में देशभक्ति की आग जलाओ
हम सब दिल-दिमाग से एक हो जायें
बिछुड़ों को फिर सीने से लगायें
भारत मां प्रीति का गुलाल उड़ायें
सारा देश एक रंग में रंग जाये।

—डा० सुधांशु मोहन अग्निहोत्री
१, जी० टी०,
बांगरमऊ, (उन्नाव)

६ मार्च की रक्तरंजित वेला

—शान्तिप्रकाश आर्योपदेशक, जयपुर

आर्यों में ६ मार्च का विशेष महत्व है। क्योंकि ६ मार्च १८९७ ईस्वी को शहीदे अकबर (महान् बलिदानी) प० लेखराम आर्यपथिक के पेट,में एक मिर्जाई हत्यारे ने छुरा घोंपकर इस ढंग से घुमाया कि अन्तडियां कट कर जीवन लीला समाप्त हो जाए।

तब पं० जी कुछ समय पूर्व मुलतान से सक्खर जाने को तैयार ही थे कि सरवर से महामारी के कारण न आने का तार आ गया। तब धर्मवीर लाहौर लौट आये।

शुद्धि के लिए आये युवक ने ज्वर पीड़ित होने का बहाना करके कम्बल लपेट रखा था। पं० जी को उस पर दया आई और एक आर्य डाक्टर जी के पास ले गये। डाक्टर जी ने बहुत देखा—ज्वर नहीं था किन्तु आंखें लाल थीं।

डाक्टर जी ने प० जी को सावधान किया कि यह हत्यारा प्रतीत होता है—इससे सावधान हो जाओ किन्तु शुद्धि कराने आये कातिल पर भी प० जी ने विश्वास किया और अन्त में वही हुआ जो सोचकर कातिल आया था।

प्रभु भक्त वीर लेखराम धोखा जान न पाये और, वह धोखे में आ गये। धर्म के जोश मे ऐसा होना स्वाभाविक था। सत्यधर्मी सभी पर विश्वास करता है जिसने रात दिन शुद्धि की धुन द्वारा धर्म की रक्षा करना स्वभाव बना लिया हो-वह तो विश्वास करेगा ही।-

पं० लेखराम ऋषि जीवनी लिख रहे थे—उसे पूरा करने की मांग चारो ओर से हो रही थी—उस दिन लिखते लिखते दिन ढलने लगा तो माता जी ने वीर जी से कहा कि अमुक वस्तु लानी थी। वीर लेखराम उस समय महर्षि जी के अंतिम वेला के अन्तिम शब्द लिखकर उठे ही थे कि हे प्रभो तेरी लीला अपरंपार है तूने अच्छी लीला की···

तभी ही लिखने की थकावट से अंगड़ाई लेने लगे कि हत्यारे ने पेट में तुरन्त छुरा घुमा दिया और यह जा—वह जा—लाहौर की गलियों से काफूर हो गया।

वीर जी अपने हाथों से अन्तडियों को थामे खड़े थे कि क्यों हस्पताल में पहुंचाये गये—उफ तक न की और अर्द्धरात्रि में परमेश्वर के सच्चे प्यार को प्राप्त कर लिया। परमात्मा की अमृतमयी गोद ही उनको प्यारी लगी। वह भगवान् के प्यारे हो गये। लोग रोते रह गये और वीर लेखराम डके बजाता ईश्वरार्पित हो परलोक सिधारे। परमात्मा का प्यारा लेखराम परमात्मा के नाम पर अमर बलिदान देकर अमर पदवी को प्राप्त कर गया। वह महाभाग वीर था—सच्चा शहीद था। शहीदों का पद सर्वथा निराला सर्वोच्च है जो पवित्रात्माओं को ही प्राप्त होता है—वेद में कहा ही तो है—

वयं तुभ्य बलिहृतः स्याम।

हे मातृभूमे ! हम तेरे पुत्र-पुत्रियां तुझ पर बलिहारी हों और हमारा बलिदान समस्त संसार भर के लिए कल्याणकारी हो।

वेद में धर्म पर बलिदान का बहुत बडा महत्त्व है। यह भूमि, द्यौ, सूर्य, चद्र, तारे इसकी साक्षी देते हुए सत्यधर्म पर निष्ठ होकर अपने अपने कर्तव्य के पालन में जुटे हुए हैं।

मानव का अमर बलिदान ही सत्य के रक्षण सक्षण में सहकारी है। आर्यों के बलिदानों से आज भारतमाता परतन्त्रता की बेडियों को काटकर संसार के पिछड़े राष्ट्रों के उत्थान में संलग्न है और ससार का सबसे बडा प्रजातत्री राष्ट्र है।

महर्षि दयानन्द, हुतात्मा वीर लेखराम तथा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान व्यर्थ नहो गये। तीनों महाबलिदान वैदिक धर्म के रक्षण में सक्षम हुए और ससार में विचारों की महाक्रान्ति आई। म० राजपाल जी आदि अनेको ने शहादत का ताज पहना।

इन बलिदानों से ससार मे विचारों की क्रान्ति आई। काशी विद्वत् परिषद् ने इस देश को आर्यावर्त और स्वय को आर्य मान लिया। सर सैयद अहमद ने सीधे ऋषि विचारों को कुरआन के अपने भाष्य में भरने का प्रयत्न किया। ईसाईयत के बड़े लोग ईसा को खुदा का गद्दी नशीन मानने से इनकारी हो गये। आज इस वैज्ञानिक युग में सारा संसार विषाक्त वायुमंडल की शुद्धि का एकमात्र अचूक साधन वैदिक अग्निहोत्र को ही मान रहा है।

आर्य जाति विदेश गमन को महापाप मानती थी। पं० मदनमोहन मालवीय जी को इसी हेतु से प्रायश्चित करना पडा था किन्तु आज काशी के विद्वान् जर्मनी और स्विट्जरलैंड में वेदभाष्य के नाम पर दौडे-दौडे जा रहे हैं। बाल विवाह निषिद्ध और विधवा विवाह कानून के द्वारा विहित घोषित हो चुके हैं।

काशी में ही रातदिन वेदमन्त्रों का गुंजार स्त्री शूद्रादि सभी के कर्णगुहाओं को पवित्र कर रहा है।

सत्यवादी लेखराम के महाबलिदान ने अहमदियों की कमर तोड़कर रख दी है जिन लोगों ने पं० लेखराम के वध पर खुशियां मनाई थीं और भविष्यवाणी के सच्चा होने के डके बजाये थे कि आर्यों का नामोनिशान ससार में शेष न रहेगा। आज वह कहां हैं ?

पाकिस्तान में उनका अस्तित्व निषिद्ध घोषित हो चुका है। भारत मे विचार स्वातंत्र्य का तत्र है अत. कुछ अहमदी यहां परदे के पीछे देखे जा सकते हैं। किन्तु उनमे साहस नहीं कि वह आर्यों के साथ शास्त्रार्थ समर में पूर्व की भांति आ सकें।

मिर्जाई आर्यों के समाप्त होने की घोषणाएं करते करते आप ही समाप्त हो गये। परमेश्वर की लीला न्यारी है।

मिर्जा जी ने पं० लेखराम को मुहम्मदी तलवार की धमकी दी थी और प० जी ने वैदिक धर्म पर बलिदान होने का जयघोष लगाया था। यह मुहम्मदी तलवार नहीं थी किन्तु यह अहमदी छुरा था जिसको जग लग गया और पाकिस्तान में छुरा स्वय उन्हीं का घातक बना। मुझे अहमदियों से सहानुभूति है क्योंकि वैदिक धर्म प्राणिमात्र का भला चाहता है किन्तु यथायोग्यवाद के साथ ही।

पं० लेखराम ने मिर्जा जी के छुरे या तलवार के उत्तर में वीरतापूर्ण ललकार लगाते हुए लिखा था कि—वैदिक धर्म के सत्यमार्ग पर यदि मैं वध कर दिया जाऊं, वा मुझे जीवित जला दिया जाय तो भी पवित्र वेद के धर्म से कदापि मुख न मोड़ूंगा और आपाद मस्तक वैदिक धर्म की बलिवेदी पर हंसते-हंसते कुर्बान हो जाऊंगा।

सो वही हुआ जो ईश्वर ने चाहा और जिसकी प्रार्थना वीर ने स्वय की।

परमात्मा हमें भी ऐसा सामर्थ्य प्रदान करे जो वेद की आज्ञा है कि-

"वयं तुभ्य बलिहृत स्याम।"

हे भूमि माता! हम तेरे पुत्र पुत्रियां तुझ पर कुर्बान हो जाए। बलिहारी हो और तेरी रक्षार्थ ग्रीवाएँ कटानी पडें तो भी हम हसते हंसते प्राण न्यौछावर करके ससार भर मे आर्यों का एकछत्र चक्रवर्ती महाराज्य स्थापित करने में साधन बनें कि—

जिससे प्राणिमात्र के प्राणत्राण हों और दुष्टों, प्राणघातियो का सर्वथा विनाश होकर धर्म की जय हो और अधर्म का सत्यानाश हो। वीरवर हुतात्मा लेखराम की जय हो।

मिर्जा गुलाम अहमद कादयानी ने अपनी पुस्तक आईनाए कमालाते इस्लाम में प० जी को धमकी देते हुए लिखा था कि—

अला ऐ दुश्मने नादानो बेरा।
बतस अज तेगे बुरहाने मुहम्मद॥

ओ पथभ्रष्ट, बेसमझ शत्रु! सावधान हो जा और (तीक्ष्ण) चमकती मुहम्मदी तलवार से डर।

किन्तु वीर की वीरता देखिये तो, इन फारसी के शब्दों मे दी गई धमकी का उत्तर भी फारसी में ही देते हुए लिखा—जिसका अनुवाद यह है कि यदि वेद के सत्य मार्ग पर चलते हुए मैं कत्ल भी कर दिया जाऊं अथवा मुझे अग्निदग्ध ही कर दिया जाए (या मुझे जीवित जला दिया जाए) तो भी पवित्र वेद के धर्म से नहीं हटूंगा।

और मैं पवित्र वेद के धर्म पर सिर से पाव तक (आपादमस्तक) कुर्बान हो जाऊगा। मैं अपना सच्चा मित्र केवल ईश्वर को ही समझ कर निर्भय पद को प्राप्त हो चुका हूं। अत: मेरी आत्मा का बिगाड, कदापि कुत्रापि नही हो सकता,
नहीं हो सकता।

वाह रे लेखराम ! तू धन्य है
तेरी जननी धन्य है॥
काश कि हमें भी यह
पदवी प्राप्त हो॥
और ६ मार्च की स्मृति नवीन
होकर जीवन सफल हो जाए॥

पंजाब समस्या एवं आर्यसमाज

—डा० रघुवीर वेदालंकार, रामजस कालेज, दिल्ली

आप वहां मत जाइए, ऊपर छत पर आतंकवादी छिपे बैठे हैं जो कि छत पर चढने वाले किसी भी व्यक्ति को गोली का निशाना बना सकते हैं इसे अनसुनी करके वह लौह पुरुष बोला—यदि ऐसी बात है तो मैं वहां अवश्य जाऊंगा। साथियों ने आग्रह किया—हम भी साथ चलेंगे। वह झल्लाया—नहीं, तुम सब यहीं ठहरो। वहां मैं अकेला जाऊंगा। कौन था भद्र निर्भीक दृढव्रती ? एक जीवित शहीद।

सुनने में अवश्य अटपटा लगता होगा—भद्र कौन सा प्राणी है जो जीवित अवस्था में ही शहीद जैसा है। शहीद तो मृत्यु के उपरान्त कहकहलाते हैं। आर्यसमाजरूपी बगीचा शहीदों के रक्त से सींचा गया है। स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम, महाशय राजपाल सदृश अनेक शहीदों का बलिदान अमर है जिनके बलिदानी रक्त की ऊष्मा ही आज तक हमारी धमनियों में दौड रही है। कोई भी धर्म तथा जाति ऐसे बलिदानों के कारण ही जीवित रहती है। आर्यसमाज में यदि कुछ शैथिल्य कहीं पर दृष्टिगोचर होता भी है तो उसके मूल में इसी आत्मसमर्पण, स्वार्थ त्याग एवं बलिदानी भावना की न्यूनता है।

यह तो नहीं कहना चाहिए कि धर्म तथा जाति के ऊपर जबरदस्ती किसी का बलिदान होना ही चाहिए या कर ही देना चाहिए किन्तु इतना तो नि संकोच कहा जा सकता है कि ऐसी बलिदानी भावना से युक्त ऐसे दृढव्रती अवश्य होने चाहिएं जो सदैव प्राणों को हथेली पर लिए फिरते हों, जिनके जीवन तथा मृत्यु में अन्तर प्रतीत न होता हो, जो शरीर की अपेक्षा समाज को महत्त्वपूर्ण समझ कर वहां जाने से भी न झिझकते हों जहां मृत्यु साक्षात् खडी दिखलायी दे रही हो। ऐसे ही जीवन निर्मोही व्यक्तियों को कहते हैं—जीवित शहीद। इन्होंने जीवन के प्रति मोह सर्वथा छोडा होता है। समाज तथा राष्ट्र के लिए ऐसे व्यक्ति प्राणोत्सर्ग तक करने को सर्वदा उद्यत रहते हैं।

दिल्ली के घण्टाघर पर गोरों की संगीनों के सामने श्रद्धानन्द के रूप में ऐसे ही एक जीवित शहीद को दिल्लीवासियों ने देखा था। उनके ही पदचिह्नों पर चलने वाले उनके एक दृढव्रती शिष्य को पंजाब के दौरे के समय आतंकवादियों की गोलियों के खतरे में भी निर्भीक रूप से अकेले जाते हुए देखा था—प्रो० शेरसिंह ने, प० राजगुरु शर्मा ने, श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् ने श्री मदनमोहन तिवारी तथा श्री लक्ष्मीचन्द चौधरी पंजाब दौरे के समय में सब उनके साथ थे। इन साथियों को आपने अपने साथ ऊपर जाने से इसीलिए मना कर दिया कि उनके बलिदान के पश्चात् ये शेष व्यक्ति आर्यसमाज की गति को मन्द न होने दें।

पिछले ही वर्ष हम ने दीवान हाल में आनन्द बोध के रूप में जन्म लेते हुए हमने इस कर्मवीर के मुंह से सुना था—लोकैषणा, वित्तैषणा, पुत्रैषणा मया परित्यक्ता, मत्तः सर्वभूतेभ्योऽभयमस्तु। किन्तु पंजाब दौरे के समय हमने पाया कि भद्र व्यक्ति अपने साहसपूर्ण कर्म से यह मूक घोषणा भी कर रहा था—प्राणैषणा मया परित्यक्ता, अहं सर्वभूतेभ्योऽभयोऽस्मि। उक्त तीनों ऐषणाओं के साथ मैंने प्राणैषणा भी छोड दी, अब मुझे किसी से भी डर नहीं है। यह जीवन राष्ट्र को समर्पित है।

इन्होंने अन्य आर्यसमाजों, आर्यसभाओं तथा अनेक आर्यसमाजियों ने पंजाब समस्या को सुलझाने एवं समस्या पीडितों की सहायता करने में जो अनूठा कार्य किया है, वह सर्वथा श्लाघनीय है। आर्यसमाज का दायित्व था तथा है कि वह इस विषय में मूक दर्शक बन कर न बैठा रहे अपितु इसमें अपना सक्रिय योगदान दे। और इसने वह योगदान दिया, अभी भी दे रहा है तथा आगे भी देता रहेगा। इस सन्दर्भ में आर्यप्रादेशिक सभा, दिल्ली आर्य-प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सक्रिय योगदान रहा है। पंजाब समस्या के सन्दर्भ में जहां एक ओर आर्यों का शिष्टमण्डल पंजाब की स्थिति का प्रत्यक्ष आकलन करने लुधियाना, जालंधर, पट्टी; तरनतारन, अमृतसर आदि स्थानों पर गया, वहां जाकर दुखियों को सांत्वना दी, गले लगाया वहां दूसरी ओर दिल्ली में १२जुलाई को दीवानहाल में तथा १३ जुलाई को सप्रूहाउस में पंजाब समस्या पर सम्मेलन आयोजित करके जनजागरण भी किया। इतना ही नहीं अपितु स्वामी आनन्द बोध जी तथा उससे पूर्व लाला रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में कई बार आर्यों का शिष्टमण्डल श्रीमती इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी, अरुण नेहरू, अर्जुन सिंह आदि से भी मिला। उनको समय समय पर उचित जानकारियां तथा परामर्श दिये। उदाहरण के रूप में इसी प्रतिनिधि मण्डल ने स्वर्णमन्दिर में कार्यवाही करने का सुझाव आप्रेशन ब्लू स्टार से केवल तीन दिन पूर्व ही दिया था। जिसे तात्कालिक प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्वीकार कर लिया था। ११ जुलाई को ऐसा ही एक शिष्ट मण्डल राजीव गांधी से भी मिला तथा उनको विस्थापितों की समस्या से अवगत कराने के साथ साथ सुरक्षा-पट्टी के निर्माण का लिखित आश्वासन भी प्रधानमन्त्री से ले लिया था। इसी प्रकार के अथक प्रयासों के फलस्वरूप सरकार ने एक हजार रुपये प्रति मास पंजाब से आये विस्थापितों के लिए स्वीकार किये। आतंकवादियों की दिन प्रतिदिन बढी हुई क्रूर एवं गम्भीर हरकतों को देखते हुए पंजाब के सीमावर्ती जिले या पूरा पंजाब ही सेना को सौंपने की मांग भी इन्होंने की जिसे कि अभी भी केन्द्रीय सरकार न मान कर गल्ती कर रही है। जब तक ऐसा नहीं होगा आतंकवाद पर काबू पाना मुश्किल रहेगा। सरकार को यह नीति समझ लेनी चाहिए—आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। दुष्ट व्यक्तियों के साथ सरलता दिखलाना बुद्धिमत्ता नहीं है। अत यदि मोरार जी देसाई के अनुसार आतंकवादियों को जेलों में न डालकर उनके ऊपर राष्ट्र का पैसा बरबाद करने के बजाय उनको गोली से उडा दिया जाए तो यह आतंकवाद कुछ ही दिनों में समाप्त हो जायेगा। यही ठोस एवं एकमात्र इलाज है।

खैर यह तो सरकार पर निर्भर करता है कि वह क्या करे या क्या कर रही है। आर्यसमाज ने जहां एक ओर इस समस्या को सुलझाने के प्रयत्न राजनीतिक स्तर पर किए वहां सामाजिक स्तर पर भी उसका योगदान स्मरणीय रहेगा। विस्थापितों की आवास तथा वस्त्र; भोजन आदि की व्यवस्था करने से भी आर्यबन्धु एवम् आर्यसमाज अहर्निश जुटे हुए हैं। इसका एक यही उदाहरण पर्याप्त होगा कि सुभाष नगर आर्यसमाज में १३० निष्कासित परिवार रुके हुए हैं जहां उनकी व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से सुचारु रूप से की जा रही है। उनके रहने खाने का प्रबन्ध किया जा रहा है। उनमें रजाईयां, कम्बल आदि बांटे जा रहे हैं तथा धनादि के रूप में उनकी सभी प्रकार की सहायता की जा रही है। इस कार्य के लिए आर्यजनों से उदार सहायता प्राप्त हो रही है। हम सब का कर्तव्य है कि तन, मन, धन से इस कार्य में योगदान दें। इस प्रकार आर्यसमाज पंजाब समस्या के लिए तीन प्रकार से कार्य कर रहा है। (१) समस्या के स्थायी हल करने के लिए राजनीतिक स्तर पर राज नेताओं से बातचीत (२) सभा, सम्मेलन आदि के द्वारा जन जागरण (३) विस्थापितों की सहायता।

ये सब अति श्रम एवं शक्ति साध्य कार्य हैं। पुनरपि मेरा अनुमान है कि आर्यसमाज में इस दिशा में इस से भी अधिक कार्य करने की क्षमता है। आर्यसमाज की इस सुदृढ क्षमता का देश ने अवलोकन किया था—हैदराबाद सत्याग्रह के समय तथा हिन्दी रक्षा सत्याग्रह के समय। तब बलिदान भी हमने दिये किन्तु विजय भी ऐसी पायी जिसकी अब तक धाक जमी है। पंजाब के सन्दर्भ में भी आर्यसमाज पंजाब में शहीदी जत्थे भेजकर पंजाब को सरकार को कुछ ठोस कदम उठाने को बाध्य कर सकता था। शान्तिप्रिय जलूस निकाल कर, जल्से करके पंजाब में जनजागरण कर सकता था, विशेष तौर पर वहां के सिख भाइयों के सामने समस्या का वास्तविक रूप रख सकता था। अभी वहां आतंकवाद को धर्म एवं जनता का गुप्त समर्थन मिल रहा है अन्यथा यह कैसे सम्भव है कि यदि जनशक्ति उठ खड़ी हो तो आतंकवाद नष्ट न होने पाए। इसके साथ ही आर्यसमाज दिल्ली में सत्याग्रह करके केन्द्रीय सरकार को भी कुछ न कुछ शीघ्र ही करने के लिए बाध्य कर सकता था। यदि ऐसा होता तो सरकार इस विषय में शैथिल्य न दिखलाती।

रक्तसाक्षी श्री पं० लेखराम जी

प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर

'रईसे कादियां' नाम की एक पुस्तक एक मुसलमान ने लिखी है। विद्वान् मौलाना ने उसमे प० लेखराम जी की भी चर्चा की है। जब पं० जी मिर्जा गुलाम अहमद साहब के चमत्कारों की परीक्षा के लिए मिर्जा के 'इल्हामी कोके' पर गये तो पं० जी ने कहा कुरान में मोजजा शब्द नहीं है। मिर्जा ने कहा कि यह शब्द कुरान में है। पं० जी ने अपने थैले मे से कुरान निकाल कर आगे रख दिया और कहा कि दिखाओ इसमें मोजजा (चमत्कार) शब्द कहां है ? मिर्जा ने कुरान के पृष्ठ उलटे पलटे परन्तु वहा मोजजा शब्द हो तो निकले। इस पर रईसे कादियां का लेखक लिखता है कि अपने को पैगम्बर घोषित करने वाले मिर्जा ने इस्लाम की नाक कटवा दी। पं० लेखराम जी की सत्य बात पहले ही मान लेता तो ठीक था। इतना गहरा ज्ञान था पं० जी का।

प० इन्द्र जी बच्चे थे कि अपनी पैतृक कोठी के सामने आर्यसमाज श्रद्धानन्द बाजार जालंधर के कूप पर चले गये। वहां पं० जी कपड़े धो रहे थे। एक विद्यार्थी (वहा तब एक वैदिक पाठशाला होती थी) ने पूछा, "प० जी मन क्या है ?" पं० जी ने कहा, "उल्लू का पट्ठा।" सब विद्यार्थी डर गये कि प० जी ने यह क्या कह दिया। प० जी समझ गये और उनकी ओर देखकर कहा, "भाई मैंने ठीक कहा है। मन उल्लू का पट्ठा है। इसको बडे यत्न से काबू करना होता है। ऐसे होते थे पं० जी के उत्तर जो इकदम गले के नीचे उतर जाते।

आचार्य नरदेव जी शास्त्री महाविद्यालय ज्वालापुर वालों के पिता जी श्री प० श्रीनिवास राव जी १८९४ ई० में आर्यसमाज बच्छो वाली लाहौर के उत्सव पर बड़े रुग्ण हो गये। रात भर सो न सके। धर्मवीर पं० लेखराम जी रात भर उनके पास रहे। उनको देखभाल भी की और ऋषि के पूना-प्रवचन सम्बन्धी बडी महत्त्वपूर्ण चर्चा भी करते रहे। इसी का फल था कि प० जी ने पूना-प्रवचन का प्रथम हिन्दी अनुवाद करवाया।

पं० शान्तिस्वरूप जी उ० प्र० के विख्यात आर्यसमाजी विद्वान् थे। वह इस्लाम छोडकर आर्यसमाजी बने थे। एक बार वह गुजरात गये। वहां एक मुसलमान विद्वान् उनसे मिला। उसने प० जी को बताया कि एक बार प० लेखराम गुजरात आए थे। ऋषि-जीवन की खोज में वह गुजरात यात्रा पर गये थे। तब वह मौलवी बडी विपदा में था। उसने उस विपत्तिकाल मे भीख के लिए पं० लेखराम जी के सामने हाथ पसारते हुए कहा, "खुदा के नाम पर, अल्लाह के नाम पर कुछ दे दे।"

प० जी ने उसे कुछ देते हुए कहा, ले तूने ईश्वर के नाम पर मांगा है। मैं तुम्हें देता हू। उस मौलवी का यह कहना था कि ईश्वर के नाम पर द्रवित होने वाला ऐसा ईश्वर-विश्वासी उसने दूसरा कोई नहीं देखा।

प० जी रोटी खाते हुए जब एक बार न कर देते थे तो फिर और चपाती नहीं लेते थे। यदि कोई लेने का आग्रह करता तो वह कहा करते थे कि भाई एक बार जो कह दिया नहीं, तो क्या मैंने झूठ बोला था ? जालंधर में दीवान बद्रीदास आदि कई प्रतिष्ठित आर्यों के साथ पं० जी भोजन कर रहे थे। प० जी के रोकते रोकते एक युवक ने फिर भी एक रोटी रख दी। पं० जी को आवेश आ गया। आपने उसे हाथ से एक थप्पड मारा या झटका दिया कि उसकी पगडी (तब सब पगडी पहनते थे) दूसरी पंक्ति में बैठे सुन्दरसिंह जी पर जा गिरी। ऐसे थे वह सत्यवक्ता।

यह सुन्दर सिंह कौन था। यह सेना का एक सिख जवान था। अपने एक अन्य साथी के साथ मुसलमान बनने का इसने निश्चय कर लिया। भय से, लोभ से अथवा बहकावे से नहीं अपितु इस सिख युवक तथा इसके साथी की आवागमन पर कई शंकाएँ थीं। स्यालकोट छावनी का कोई सिख इन्हें सन्तुष्ट न कर सका। सिंह सभा स्यालकोट भी इनकी शंकाओं का समाधान न कर पाई। सब हिन्दू सिख चिन्तित हुए। तब सिख अधिकारियों ने बड़ा यत्न किया परन्तु वे अपने निश्चय से न टले। तब सिखों ने आर्यसमाज स्यालकोट से विनती की कि बुलाओ अपने लेखराम आर्य पथिक को, वही इन्हें बचा सकता है।

महात्मा मुंशीराम जी से सम्पर्क किया गया। प० जी को तारें दी गईं। वह स्यालकोट अपने मित्र आर्यसमाज के मन्त्री श्री लाला लाभामल के घर पहुंच गये। नहा धोकर सीधे स्यालकोट छावनी गये। वहाँ लम्बी बातचीत की फिर स्यालकोट के विशाल आर्यसमाज भवन में विराट् सभा में आकर बोले। सुन्दरसिंह ने प्रश्न किए। प० जी ने उत्तर दिये। सरदार सुन्दरसिंह गद्गद हो गये। अगले दिन भी पं० जी का भाषण हुआ। सेना के सिख जवान व अधिकारी तथा नगर के सहस्रों हिन्दू सिख वहां प० जी के दर्शन के लिए आए। प० जी की ज्ञान प्रसूना वाणी ने जादू का काम किया। सुन्दरसिंह पं० जी का पक्का भक्त बन गया। दोनों सिखों में से एक भी मुसलमान न बना। यह घटना मेरे द्वारा लिखे या मेरे से पहले के लिखे पं० जी के किसी भी जीवन-चरित्र में नहीं। तत्कालीन पत्रों मे तभी यह विस्तृत घटना छपी थी। मेरे पास वह पत्रिका है जिसमे यह घटना छपी थी। यह है सिखों की रक्षा के लिए आर्यसमाज के कार्य। द्वेष का विष फैलाना सरल है। प्रेम का अमृत-वर्षाना कठिन है। आओ देश का हित सोचें। आर्यसमाज भी सावधान रहे। आज वेद के प्रचार की बजाए हम मोटी मोटी फीस लेकर निजी प्रचार कराना चाहते हैं। वेद प्रवचन की बजाए भाण्डों की भांति अपनी 'नाईट' कराना चाहते हैं। प्रभु रक्षा करे।

श्री पं० रामचन्द्र जी ने १९५४ ई० में पं० लेखराम बलिदान महोत्सव लेखराम नगर (कादियां) के लिए सन्देश में लिखकर दिया था कि आर्यसमाज के उपदेशकों व सेवकों के लिए पं० लेखराम जी का जीवन आदर्श है। आज से चालीस वर्ष पूर्व आर्यसमाजी लोग अपनी नई पीढी को, अपने बच्चों को प० लेखराम के नाम की लोरियां दिया करते थे। अब तो शेष हिन्दुओं के समान आर्यसमाज ने भी अपने वीरों व शहीदों की चर्चा छोड ही दी है। जिस उत्साह से पहले पं० लेखराम बलिदान पर्व मनाया जाता था, अब उस उत्साह से यह दिन नहीं मनाया जाता।

एक और कमी आ गई है। आर्यसमाज की वेदी से Ready Made भाषण देने वाले अखबारी वक्ता वीर बिस्मिल, भक्तसिंह और लाला लाजपत राय के नाम की तो बडी दुहाई देते हैं परन्तु प० लेखराम, वीर चिरञ्जी व महात्मा नारायण स्वामी जी का नाम कम लिया जाने लगा है। देश पर जीवन लुटाने वाले सब वीर हमारे लिए माननीय हैं परन्तु जहां आर्यसमाज के धार्मिक दार्शनिक विचारों के प्रचार के लिए सम्मेलन महासम्मेलन हों वहां भी प० लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी सर्वदानन्द, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, प० रामचन्द्र देहलवी, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार आदि की चर्चा न होगी तो नये नये भक्तसिंह, 'बिस्मिल' व रोशन सिंह कहां से आयेंगे ?

इसी भूल का यह शूल है कि देश भर के एक भी आर्यसमाजी पत्र ने गत दस वर्षों में मुझे एक बार भी पं० लेखराम जी पर लेख लिखने के लिए नहीं कहा। पं० जी के जीवन व उनके सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणियों पर जो दस बारह विद्वान् अधिकारी लेखक के रूप में लिख सकते हैं, उनमें से एक इन पंक्तियों का लेखक भी है। आओ! इस भूल का सुधार करें।

महात्मा मुंशीराम मालेरकोटला मे एक मुसलमान की शङ्काओं का उत्तर दे रहे थे। उसे पता नहीं था कि यह विद्वान् कौन है। उसने महात्मा जी को प० लेखराम समझकर कुछ कहा तो उन्होंने उसे बताया कि मैं तो मुंशीराम हूं। महात्मा जी इस घटना से बड़े प्रभावित हुए, क्योंकि इससे पता चलता था कि इस्लामी जगत् मे प० जी के नाम की कैसी धूम है।

पं० यशपाल सुधांशु जी का भव्य स्वागत

आर्यसमाज राजोरी गार्डन, नई दिल्ली के साप्ताहिक सत्सग में १५।२।८७ को पं० यशपाल सुधांशु सम्पादक आर्यसन्देश के पधारने पर भव्य स्वागत किया गया। तथा आर्यसमाज की ओर से उन को एक सुन्दर ब्रीफ केस भेंट में दिया गया। प० जी के उपदेश का श्रोतागण पर बहुत प्रभाव पडा।

नन्द किशोर भाटिया
मन्त्री

कन्या गुरुकुल नरेला देहली का वार्षिकोत्सव

कन्या गुरुकुल नरेला देहली का वार्षिक उत्सव २१, २२ मार्च को होना निश्चित हुआ है। जिन में निम्नलिखित महानुभावों को आमन्त्रित किया गया है।

१ श्री स्वामी आनन्दबोध जी महाराज—प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

२. स्वामी ओमानन्द जी महाराज—कुलपति कन्या गुरुकुल नरेला तथा प्रधान परोपकारिणी सभा।

३. श्री बलराम जी जाखड़—स्पीकर लोक सभा

४. प्रोफेसर शेर सिंह जी—प्रधान प्रतिनिधि सभा।

५ श्री सूर्यदेव जी—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की भजन मण्डली।

तथा केन्द्रीय व प्रांतीय राज नेताओं को सादर आमन्त्रित किया गया है।

१५।३।८७ से सामवेद से यज्ञ किया जा रहा है। जिसकी पूर्ण आहुति २२ मार्च को प्रात. १० बजे होगी।

छात्राओं के नये प्रवेश के लिए प्रधानाचार्या कन्या गुरुकुल से सम्पर्क करें।

निवेदक :
वैद्य कर्मवीर आर्य
मन्त्री

आया होली का त्यौहार

भेद भाव हो दूर घरों से,
मिटे गरीबी, महगायी,
जगे जवानों में मानवता
भरी नवलतम तरुणायी

जन-जन में उपजे फिर व्यापक
प्रेम दया सद्व्यवहार।
आया होली का त्यौहार

दनुज वृत्तियां सारी जग की,
होली के संग आज जलें।
मनुज त्याग दे द्वेष भावना—
सभी परस्पर गले मिलें।

नव आशा, अभिलाषाओं का
पुन धरा पर हो सञ्चार।
आया होली का त्यौहार॥

जाति-पाति के, छूतछात के,
क्षत विक्षत हो कलुषित भाव।
बढ़े सभी का नित्य निरन्तर,
मानवता की ओर झुकाव।

त्याग तपों से, बलिदानों से
करें मनुजता का शृंगार।
आया होली का त्यौहार॥

—राधेश्याम आर्य

स्वामी विद्यानन्द विदेह के वेद विषयक भ्रामक विचार

स्व० विदेह जी की वेदमाता शीर्षक कोई पुस्तक इधर प्रकाशित हुई है। इसके कुछ उद्धरण या अंश आर्य पत्रों में भी प्रकाशित हुए हैं। मैं इस पुस्तक में लिखे कुछ ऐसे वाक्यों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं जो स्पष्टतया भ्रामक तो हैं ही स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रतिकूल भी हैं। अच्छा होता अपने पत्रों में प्रकाशित करने से पूर्व सम्पादक इन पर यथोचित टिप्पणी देते अब इन वाक्यों को देखिये—

वेद में धर्म नहीं है। वेद तो सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

वेद में धर्म नहीं है। सत्य है

वेद का पढ़ना पढ़ाना धर्म नहीं एक कृत्य है।

मनुष्य का धर्म न वेद है न जेद अवेस्ता···

कोई भी पुस्तक मनुष्य का धर्म नहीं हो सकती।

किसी भी ग्रन्थ में सत्य हो सकता है, धर्म नहीं।

उपर्युक्त वाक्यों को विचारशील पाठक पढ कर स्वयं निर्णय लें। ये वाक्य अर्थजरतीय से हैं। स्वामी दयानन्द से इन वाक्यों का विरोध तो स्पष्ट ही है क्योंकि महर्षि वेद को ही आर्यों का धर्म कहते हैं, वे वेद के पढने पढाने को आर्यों का परम धर्म कहते हैं।

इस पुस्तक की यथार्थ समीक्षा प० वेदव्रत शास्त्री ने सर्वहितकारी के २८ दिसम्बर के अंक में की है। पूरी पुस्तक मेरे देखने में नहीं आई, अन्यथा इस पर विस्तार से लिखता।

—डा० भवानीलाल भारतीय

(पृष्ठ १ का शेष)

सात हजार बकरियो···

अध्यक्ष पी जगत के अनुसार केवल ४ हजार पशुओं की ही बलि दी गई।

जैन सेवा संस्थान ने इस पशु बलि के खिलाफ आंध्र के मुख्यमन्त्री एन. टी. रामाराव को जो ज्ञापन दिया है उसमें बलि चढ़ाए गए पशुओं की संख्या २० हजार बताई गई है। अब मन्दिर ट्रस्ट और पुजारियों द्वारा पशु बलि पर पूरा जोर दिया जा रहा है जबकि जीव रक्षा संगम जैन सेवा संघ आदि विभिन्न संगठन इसका पूरा विरोध कर रहे हैं। दोनों पक्षों में हुई मुकद्दमेबाजी में आंध्र हाईकोर्ट ने १९८३ में निर्देश दिए थे कि केवल नर बकरों व भेड़ों की ही बलि दी जाए और वह भी मन्दिर से ८ किलोमीटर दूर।

यादव व गोलालुस जैसी चरवाहा जातियों के लिए यह पर्व यात्रा दो वर्ष बाद होता है। यह पर्व काली चामुण्डेश्वरी देवी को प्रसन्न करने के लिए मनाया जाता है। यात्रा का प्रारम्भ रेड्डी परिवार द्वारा एक गर्भवती बकरी की बलि देने के साथ होता है। बलि दिए गए पशु का मांस प्रसाद के रूप में खाया जाता है। ८ फरवरी को मंदिर से ५०० फुट की दूरी की भूमि पर पशुओं के खून से कीचड-सा हो गया था।

फार्म ४ नियम ८ के अन्तर्गत

आर्यसन्देश साप्ताहिक की घोषणा

प्रकाशन का स्थान	—	नयी दिल्ली
प्रकाशन अवधि	—	साप्ताहिक
मुद्रक का नाम	—	डा० धर्मपाल
क्या भारत का नागरिक है	—	भारतीय
यदि विदेशी है तो मूल देश	—	×
पता	—	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१
सम्पादक का नाम	—	यशपाल सुधांशु
क्या भारत का नागरिक है	—	भारतीय
यदि विदेशी है तो मूल देश	—	×
पता :	—	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हैं या हिस्सेदार हों।		"

मैं, डा० धर्मपाल एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक
६।३।१९८७

डा० धर्मपाल
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

आर्यसमाज राजौरी गार्डन, नई दिल्ली में ऋषि बोध उत्सव (शिवरात्री)

१।३।८७ को बहुत समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी रामेश्वर नन्द जी सरस्वती आचार्य गुरुकुल घरोण्डा व पूर्व सदस्य लोकसभा, पूज्य स्वामी आनन्द वेश जी के उपदेश व प० सत्यदेव जी के भजन हुए। महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल के छोटे-छोटे बालकों ने ऋषि बोध के बारे में अपनी तोतली जुबान से जब भाषण दिए तो श्रोतागण चकित हो गए! लोगों ने दिल खोलकर बच्चों को इनाम दिए। उत्सव के पश्चात ऋषि लगर का आयोजन किया गया। जिसका सारा भार श्री जगदीश जी आर्य ने सम्भाला स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने लोगों को शकाओं का समाधान भी किया।

नन्दकिशोर भाटिया
मन्त्री

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ अंक २१ | रविवार २२ मार्च १९८७ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०८८ | फाल्गुन २०४३ | दयानन्दाब्द—१६२
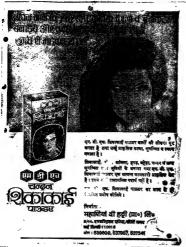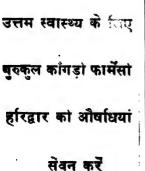
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर ३० पौंड

पाक परमाणु बम एक महीने में तैयार

लंदन, १५ मार्च (भाषा) पाकिस्तान के प्रमुख परमाणु वैज्ञानिक अब्दुल कादिर खान के भूतपूर्व अध्यापक प्रो० मार्टिन ब्रबर्स ने दावा किया है कि पाकिस्तान एक महीने में परमाणु बम बना लेगा।

यहा से प्रकाशित दनिक समाचार आब्जर्वर ने बताया कि पाकिस्तान ने परमाणु बम बनाने लायक सम्वर्धित यूरेनियम गुपचुप जमा कर लिया है। प्रो० बेबस पिछले नवम्बर मे पाकिस्तान जाकर श्री खान से मिले थे। उन्होने बताया कि अब परमाणु बम बनाने मे पाकिस्तान का एक मास से अधिक समय नहीं लगेगा।

पाकिस्तान अपने काहुटा सयत्र मे जो परमाणु ईंधन तयार कर रहा है। एलानिया तौर पर उसका उपयोग बिजली बनाने मे किया जा रहा है, लेकिन पश्चिमी गुप्तचर एजेन्सियो क अनुसार पाकिस्तान बम बनाने की कोशिश मे लगा है।

उल्लखनीय है कि पिछले महीने डा० अब्दुल कादिर खान ने आब्जर्वर से एक भेटवार्ता मे दावा किया था कि उनका देश परमाणु ताकत बन चुका है। लेकिन बाद म वाशिंगटन स्थित पाकिस्तानी दूतावास ने एक बयान जारी कर इसका खण्डन कर दिया।

पाकिस्तान के परमाणु वैज्ञानिक अब्दुल कादिर खान ने पिछले तीन वर्षों मे अपने विभिन्न वक्तव्यो तथा भेटवार्ताओं मे हमेशा दावा किया है कि पाकिस्तान के पास परमाणु बम बनाने की क्षमता है। नई दिल्ली में रक्षा अध्ययन सस्थान ने डा० खान के इन वक्तव्यो तथा भेंटवार्ताओ का एक पुस्तिका के रूप में सकलित किया है। डा० खान ने हाल ही में एक भारतीय पत्रकार के साथ अपनी भेटवार्ता मे दावा किया था कि पाकिस्तान के पास परमाणु बम है। डा० खान अपने इन वक्तव्यो में पश्चिमी देशो, भारत और यहूदियो के प्रति अपनी साम्प्रदायिक नफरत छिपा नहीं पाये हैं हालांकि खुद उनकी पत्नी हालैंड की है।

डा० खान ने फरवरी १९८४ मे उर्दू दैनिक नवा-ए-वक्त को दी गई भेंटवार्ता मे कहा था कि इजरायल समेत सभी पश्चिमी देश पाकिस्तान के ही नहीं बल्कि इस्लाम के भी दुश्मन हैं। उन्होने कहा था कि भारतीय तथा पश्चिमी देशो के अखबारो द्वारा पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम के विरोध का कारण यह है कि ये अखबार इस्लाम के विरोधी हैं।

उन्होने इसी भेटवार्ता मे अपने ऐतिहासिक वक्तव्य मे कहा था कि अल्लामिया की मेहरबानी से यूरेनियम को समृद्ध करने मे पाकिस्तान ने भारत को वर्षों पीछे छोड दिया है। उन्होने कहा था कि यदि परमाणु बम बनाने के सम्बन्ध मे राजनैतिक फैसला किया गया तो हम देश को निराश नही करगे।

डा० खान ने अप्रल १९८४ मे कराची की एक रक्षा पत्रिका म लिखा था कि जब हम यूरेनियम को तीन प्रतिशत यानि रियेक्टर स्तर पर समृद्ध करने म सक्षम हैं तो नब्बे प्रतिशत यानि हथियार स्तर तक इसे समृद्ध करने मे हमारे सामने कोई तकनीकी समस्या नही है।

उन्होंने १९८५ में इस्लामाबाद के उर्दू साप्ताहिक 'हुरमत' को दी गई भेटवार्ता म कहा था कि अमेरिका ने जो काम ४० वर्ष पहले और भारत ने ११ वर्ष पहले किया था वह इतना कठिन नहीं है। उसका सकेत १९७४ में भारत द्वारा पोखरण म किये गये भूमिगत परमाणु परीक्षण से था।

डा० खान द्वारा भारतीय पत्रकार कुलदीप नयर को दी गई भेंटवार्ता से उत्पन्न विवाद पर पाकिस्तान में अब भी खलबल मची हुई है। कराची के दैनिक 'डान' के अनुसार राष्ट्रीय असेम्बली के कुछ सदस्य डा० खान को श्रेष्ठ देशभक्त का खिताब देकर उनको इस बात के लिए तारीफ कर रहे हैं कि उन्होने एक ही झटके मे बम को पर्दे से बाहर निकाल कर देश का हौसला बढाया है और बाहरी खतरो को दूर किया है। कुछ अन्य सदस्य डा० खान की इस बात के लिए निन्दा कर रहे हैं कि उन जैसे तकनीकी विशेषज्ञ द्वारा सार्वजनिक रूप से ऐसे वक्तव्य दिये जाने से भविष्य मे अमेरिका से मदद हासिल करने मे पाकिस्तान को कठिनाई होगी।

राष्ट्रीय असेम्बली मे जमायते इस्लामी के सदस्य लियाकत बलूच

(शेष पृष्ठ २ पर)

आर्यसमाज दीवान हाल वार्षिकोत्सव एवं

आर्यसमाज स्थापना दिवस महोत्सव

२१ मार्च २ बजे से—लालकिला मैदान

आर्यसमाज स्थापना दिवस का ११२वा महोत्सव आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में २९ मार्च को २ बजे से लाल किला मैदान पुरानी दिल्ली मे भव्य समारोह के साथ मनाया जायेगा। आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली के १०२व वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिवस मे आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह गरिमापूर्ण रूप से सम्पन्न होगा। इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करगे।

मुख्य अतिथि—श्री बलराम जाखड।

मुख्य वक्ता—श्री सीताराम केसरी श्री वेदप्रताप वैदिक श्री राजगुरु शर्मा, श्री वाचस्पति उपाध्याय-आदि महानुभाव होंगे।

केन्द्रीय सभा के प्रधान म० धर्मपाल ने आय जनो से अपील की है कि स्थापना दिवस पर अपने घरो पर ओ म ध्वज लगायें तथा धूमधाम से इस पुनीत दिवस को मनाय। सभी आर्य सस्थाओ मे अपील की है कि २९ मार्च को लालकिला मैदान मे बस आदि के द्वारा भारी सख्या मे पधार।

— राजेन्द्र दुर्गा

आर्यसमाज दीवान हाल का वार्षिकोत्सव

२७ मार्च से लालकिला मैदान में

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली का १०२वा वार्षिकोत्सव २७ मार्च से २९ मार्च तक लालकिला मैदान मे मनाया जायेगा। उत्सव का आरम्भ यज्ञ से होगा। इस अवसर पर २७ मार्च को रात्रि मे कवि सम्मेलन २८ को महिला सम्मेलन रात्रि मे वेद सम्मेलन तथा २९ मार्च को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन प्रात १० बजे से प्रारम्भ होगा। उत्सव मे भारतवर्ष के प्रसिद्ध विद्वान सन्यासी, आर्य नेता, गायकजन पधार रहे हैं। भारी सख्या मे पधार कर धर्म लाभ उठाय।

—मूलचन्द गुप्त

सम्पादक—प्रो० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

भाषण प्रतियोगिताएँ

आर्यसमाज दीवान हाल के वार्षिकोत्सव में कालेज एवं स्कूलों के छात्र-छात्राओं के लिए उच्च स्तरीय भाषण प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई हैं। २७ मार्च को स्कूल के छात्र-छात्राओं के लिए विषय रखा है—

राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी

इस में तीन पुरस्कार—प्रथम : ३०० रुपये, द्वितीय : २०० रुपये, तृतीय १०० रुपये तथा ५० रुपये के दो विशेष पुरस्कार रखे हैं।

कालेज के प्रतियोगियों के लिए विषय है—

अल्पसंख्यक, बहुसंख्यकवाद राष्ट्रीय एकता के लिए घातक

प्रथम पुरस्कार—५०० रुपये, द्वितीय ३०० रुपये, तृतीय २०० रुपये तथा १०० रुपये के दो पुरस्कार होंगे। प्रथम आने वाले छात्र को कालेज विशेष शील्ड भी दी जाएगी।

भाग लेने के लिए मंत्री आर्यसमाज दीवान हाल से सम्पर्क करें। फोन : २३७४४०

ओ जीवन के देवता !

तुमको खड़ा पुकार रहा मैं,
ओ जीवन के देवता !

धरती का फट रहा कलेजा,
अंबर के तारक मलीन हैं;
छायी चारों ओर निराशा,
आशा स्वर संबल-विहीन हैं,
बुद्धि भटकती दर-दर घर-घर
कुमारी-करों के शिव प्रवीन हैं,
साधन शेष न रहे कहीं भी
साध्य हो गये जीर्ण-शीर्ण हैं;

चारों ओर बढ़ा छल-धोखा,
सच का रंग बन रहा चोखा;
उलझन का विस्तार हुआ है,
ओ यौवन के देवता !
तुम को खड़ा पुकार रहा मैं,
ओ जीवन के देवता !!

मन्दिर के भगवान चुप हुए,
मस्जिद के अल्लाह न बोले,
गिरजाघर सूने के सूने,
'गॉड'-हृदय के तार न खोले;
पंडित के मुंह पर ताला है,
मुल्ला है निज भेद न खोले,
'फादर' ने भी समझ-बूझ कर,
करुणा के उद्गार न तोले,

मानव का होता शोषण है,
कलह-कलुष का ही पोषण है,
आस्था की प्राचीर ध्वस्त है,
ओ चिन्तन के देवता !
तुम को खड़ा पुकार रहा मैं,
ओ जीवन के देवता !!

लालस की हावी नाई हैं,
क्या कर लेंगी कई प्रतिमाएं;
क्षुब्ध हृदय के समझाने में,
व्यर्थ रहेंगी स्व प्रथाएं।
वैज्ञानिकता के नारे से,
दूर न होंगी रंच व्यथाएं;
फ्रायड-मार्क्स सहम जायेंगे,
सुन कर कूतक परिभाषाएं,

सैद्धान्तिकता की पुकार है,
व्यवहारों का रुद्ध द्वार है,
शक्ति-सन्तुलन मिटने वाला,
ओ साधन के देवता !
तुम को खड़ा पुकार रहा मैं,
ओ जीवन के देवता !!

जन-बल में भरनी प्रतीति है,
मति-बल का करना मूल्यांकन;
आदर्शों के छोड़ झुलावे,
दृढ़ यथार्थ का गहन स्पन्दन;
मायोजन के स्वप्न संजोने,
श्रम-गरिमा का ले अवलम्बन,
युक्ति-शांति-सद्भाव-समन्वित,
सफल साध्य का होना अंकन;

बहुत हो चुकी अब तक कथनी,
दिखलानी है अपनी करनी,
नयन उघारो, लाल भुजाएँ,
ओ जन-गण के देवता !
तुम को खड़ा पुकार रहा मैं,
ओ जीवन के देवता !!

—भैरवदत्त शुक्ल

पाक परमाणु बम

(पृष्ठ १ का शेष)

ने आरोप लगाया है कि पाकिस्तान सरकार ने, भारतीय पत्रकार के साथ डा० खान की भेंटवार्ता जान-बूझ कर कराई थी।

इसी दैनिक ने पाकिस्तान के गुप्त परमाणु प्रतिष्ठान का कथित प्राप्त चित्र प्रकाशित किया। ए० एफ० पी० के अनुसार पत्र के मुख्य पृष्ठ पर छपा यह चित्र इस्लामाबाद के निकट काहुटा क्षेत्र में स्थित पाकिस्तानी यूरेनियम संवर्धन के एक गुप्त प्रतिष्ठान का है। इसी पत्र ने २८ फरवरी को पाक परमाणु वैज्ञानिक कादिर खां का वक्तव्य प्रकाशित किया था।

प्रोफेसर खान इसी प्रतिष्ठान के प्रमुख हैं। एक ब्रिटिश विशेषज्ञ के हवाले से पत्र ने लिखा है कि 'काहुटा' संयंत्र एक वर्ष में २४ किलोग्राम यूरेनियम संवर्धित कर सकता है। परमाणु बम बनाने के लिए यह क्षमता काफी है।

बताया जाता है कि प्रोफेसर ब्रॅार्स ने कहा था कि पाकिस्तान में एक दूसरा परमाणु केन्द्र भी है। यह केन्द्र इस्लामाबाद हवाई अड्डे के पास न्यू सिल्लिक्स में स्थित बताया गया है। —दैनिक प० के० से

ऋषि-बोधोत्सव

आर्यसमाज कालका जी के तत्वावधान में ८ मार्च, १९८७ को ऋषि बोध पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पं० शिवकुमार शास्त्री, भूतपूर्व संसद सदस्य ने जनता को उद्बोधन किया।

इस अवसर पर पं० बलजीत शास्त्री ने भी अपना प्रवचन किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफलतापूर्वक प्रेरणाप्रद रहा।

—विजेन्द्र सिंह
आर्यसमाज कालका जी
नई दिल्ली-११००१९

नवयुग के प्रतिनिधि

शतवर्षीय सन्तराम बी.ए.

जिनको आर्यसमाज से प्रेरणा मिली

—ब्रह्मदत्त स्नातक, केन्द्रीय सूचना सेवा (रिटा०)

श्री सन्तराम की एक मात्र कृति या संस्था जिसकी उन्होंने स्थापना की और जिसको लक्ष्य बनाकर उन्होंने अपने अधिकांश साहित्य का सृजन किया, वह जन्मना जाति भेद को समाप्त करने का रहा। इस काम को उन्होंने पूरी शक्ति से १९२२ में उपर्युक्त मंडल की लाहौर में स्थापना के द्वारा शुरू किया। अपनी इस संस्था के कार्य में आती बाधाओं को हटाने के लिए इस मंडल के प्रथम अध्यक्ष भाई परमानन्द से भी उन्होंने सम्बन्ध-विच्छेद इसलिए कर लिया कि भाई जी ने अपनी पुत्री का विवाह जाति की परवाह बिना किए, किया था, परन्तु भाई जी इसके साथ ही हिन्दू विचार धारा का जोरों से समर्थन करते थे।

उस समय के प्रसिद्ध आर्यसमाज के नेता लाला लाजपतराय से भी उन्होंने असवर्णों के प्रश्न पर किनारा काट लिया। इसका कारण यह था कि हरिजन अथवा पीछड़ी जातियों को पृथक् निर्वाचन या आरक्षण या संरक्षण देने की बात हिन्दू की दृष्टि से भाई जी लालाजी या स्वयं गांधी जी को रास नहीं आती थी। दृढ़ निश्चयी सन्तराम जी ने इस प्रश्न पर सब से प्रथम आवाज उठाई और यदि वर्तमान संविधान में इन वर्गों के लिए विशेष अधिकार अथवा संरक्षण मिले हुए हैं तो उसका बहुत बड़ा श्रेय सन्तराम जी को ही मिलना चाहिए, यद्यपि उन्होंने यह काम कोई पृथक् राजनैतिक मंच बनाकर अपने जीवन में नहीं किया। अखिल भारतीय स्तर के डाक्टर अम्बेडकर और दक्षिण भारत में (जस्टिस पार्टी) बनाकर जो काम राजनैतिक स्तर पर हुआ उससे भिन्न सन्तराम जी ने सामाजिक स्तर पर यह काम करके जन्म से ऊंच नीच के आधार का जमकर विरोध किया।

इस बारे में संतराम जी कितने सत्याग्रही या दुराग्रही रहे हैं और जिससे उनके ज्वलन्त आत्मविश्वास का भी पता लगता है, एक घटना बताना पर्याप्त होगा। १९१८ में लाहौर के पास पट्टी में उन्होंने एक कृषिफार्म चलाया जिसमें हरिजन और मुस्लिम मजदूर भी श्रमिक के रूप में सवर्णों के साथ में काम करते थे। हिन्दू और मुस्लिम के अतिरिक्त सिख कार्यकर्ता भी उनमें से थे। रसोई बनाने का काम उन्होंने मुस्लिम स्त्रियों को सौंप रखा था जिससे अप्रसन्न होकर सिख हिन्दू और यहां तक मुस्लिमों ने भी उनके यहां काम करने से मना कर दिया। दूसरी बात आजकल तो कृषि उपज बढ़ाने के लिए हड्डी की खाद का प्रयोग आम बात है परन्तु सन्तराम जी के फार्म पर इस प्रश्न को लेकर उस युग में बड़ा विरोध हुआ। क्योंकि उनमें गाय की भी हड्डियां होती थी। उस काम के लिए कुएँ पर चढ़ने, पानी लेने की मनाही किसी को नहीं थी।

हमें याद है कि जात पांत तोड़क मंडल का अधिवेशन आर्यसमाज के उत्सवों के साथ १९३० के आस पास के सालों में रखा जाता था और वहां पर आर्यसमाज के अनेक विद्वान कर्म के आधार पर वर्ण-व्यवस्था का प्रतिपादन करते थे। स्व० पंडित बुद्धदेव विद्यालंकार प्रमुख थे। परन्तु सन्तराम जी कर्म की शर्त को जाति की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार नहीं करते थे। १९३६ में डा० अम्बेडकर को मंडल के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता के लिए लाहौर बुलाया, जहां जनता के विरोध के कारण डा० अम्बेडकर नहीं पहुंचे, परन्तु उनका अध्यक्षीय भाषण वहां पढ़ा गया।

महात्मा गांधी जन्म गत जात पांत को मानते थे। यह बात दूसरी है कि बाद में उनके बेटे देवीदास गांधी का विवाह राजगोपालाचारी की पुत्री के साथ हुआ। बाद में गांधी जी के परिवार में अन्य भी अन्तर्जातीय विवाह हुए। दक्षिण अफ्रीका में मैंने देखा कि गांधी जी के पारिवारिक विवाह सम्बन्ध वहां के देसाई परिवार से हुए हैं। सन्तराम जी ने एक बार गांधी जी से इस प्रश्न पर प्रतिनिधि मंडल ले जाकर बातचीत की। इन दिनों गांधी जी का मत था कि जन्मगत व्यवसाय अपनाने से व्यवसायिक कुशलता में वृद्धि होती है और बेरोजगारी में कमी। इस पर पर सन्तराम जी का प्रश्न था कि आपने अपने पिता से चली आ रही दीवानगिरी छोड़कर बैरिस्ट्री क्यों पढ़ी? उनका कहना था कि कि जन्मगत व्यवसाय की दलील पर चमार हमेशा जूते ही बनाता रहेगा और भंगी अपने सिर पर मैला ढोता रहेगा। बाद में गांधी जी स्वयं को भंगी कहलाने में गौरव अनुभव करते थे।

जिन्ना के साथ मुलाकात

सन्तराम जी ने एक बार पाकिस्तान के जनक मुहम्मद अली जिन्ना से हिन्दू और मुस्लिमों को एक मंच पर लाने के बारे में बातचीत की। जिन्ना से सन्तराम जी का प्रश्न था कि चीन में मुसलमान भी रहते हैं परन्तु वे चीनी नामों और वहां की संस्कृति और सभ्यता को अपना कर चलते है। तत्कालीन इंग्लैण्ड में लार्ड हेडले मुस्लिम था परन्तु इन सभी लोगों ने अपनी चीनी या अंग्रेजी संस्कृति और भाषा पर अभिमान करना कभी नहीं त्यागा। क्रामवेल और नेलसन की तुलना में महमूद गजनवी या रुस्तम उनके लिए श्रेष्ठ नहीं रहे थे। इसी प्रकार भारत के मुसलमान धर्म परिवर्तन के बाद अपने पूर्वज राम और कृष्ण, यहां की नदी गंगा और यमुना, यहां की भाषा हिन्दी या बंगला आदि को छोड़कर हारून और अली के साथ अपना लगाव क्यों रखते है।

मुहम्मद अली जिन्ना का चालाकी भरा उत्तर था कि धर्म परिवर्तन के साथ हिन्दू हमें म्लेच्छ कहकर सदैव अपमान पूर्ण व्यवहार हमारे साथ करते रहे। इसलिए हम हिन्दुओं से पृथक् हैं और अपना अलग राष्ट्र मानते हैं। जिन्ना ने कहा कि जाति भेद हिन्दुओं की हार है और इस्लाम की विजय है। वस्तुत आज जिन्ना के पाकिस्तान में अफगानों, मुजाहिदों, सिन्धियों और पंजाबियों के बीच तथा इसी आधार पर शिया सुन्नी अहमदियों के बीच जो निरन्तर संघर्ष चल रहा है वह जिन्ना के पक्ष को खुली चुनौती है।

ईराक व ईरान युद्ध ईजिप्ट और सीरिया के बीच चलते मतभेद सन्तराम जी की बात को आज भी ठीक ठहरा रहे हैं।

भाषायी राज्य-आज देश में विभाजक ताकतों का जो उभार देखने में आ रहा है। आज से बहुत दिन पहले भारत के लौह पुरुष सरदार पटेल ने कहा था कि भाषायी राज्यों के पक्षपाती राष्ट्रीयता के हत्यारे है। भूतपूर्व फील्ड मार्शल करिअप्पा ने भी इसी प्रकार भाषायी राज्यों के खतरे को न केवल भांप लिया था अपितु सार्वजनिक रूप से उसके विरोध में अपना मत प्रकट किया था। कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने भी भाषायी राज्यों के बारे में इन खतरों से राष्ट्र को सावधान किया था। आज हमारे देश में पंजाब, गोआ-दमन तमिलनाडु, कर्नाटक आदि राज्यों में भाषा के नाम पर उपद्रव और हिंसा चल रही है। सन्तराम जी शुरू से इस मत के रहे है कि भाषायी राज्यों को जल्दी से जल्दी हटा देना राष्ट्र हित में होगा। उन्होंने इस सम्बन्ध में बहुत पहले मार्च १९७१ में मासिक सरस्वती पत्रिका तथा अन्य पत्रों में लेख लिखकर राष्ट्र को जागरूक किया। आज बौद्धिक वर्ग में भाषायी राज्यों के सवाल पर एक राष्ट्रीय चर्चा चल रही है यद्यपि राजनैतिक पार्टियां अपने स्वार्थों के कारण इस बारे में अपना मत प्रकट नहीं करती।

हिन्दी सेवी और साहित्यकार

साहित्य और वाङ्मय समानार्थक शब्द होते हुए भी सम्पूर्ण वाङ्मय साहित्य की कोटि में नहीं आता। वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम् की भावना के अनुसार भावनापूर्ण रचनाएं साहित्य की कोटि में आती हैं। सन्तराम जी द्वारा सम्पादित पत्र पत्रिकाओं और रचनाओं में यह गुण उल्लेखनीय रूप से पाया जाता है। सन् १९१८ में सन्तराम जी ने पंजाब से उषा और १९३३ में युगान्तर नामक पत्रिकाएं शुरू की थीं जो अल्पजीवी रहीं। सन् १९५२ में वे होशियारपुर की विश्व ज्योति पत्रिका के सहसम्पादक बने, वह कार्य अपने स्वास्थ्य क्षीण होने से पूर्व तक उन्होंने लगातार किया। जात पात तोड़क मंडल की ओर से उन्होंने हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में क्रान्ति और युगान्तर

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रेरक प्रसंग

प्रस्तोता—सत्यानन्द आर्य

गौरव स्तंभ

: १ :

आइंस्टीन अपनी प्रयोगशाला में बैठे किसी गम्भीर गुत्थी में उलझे थे कि नाक भौं सिकोड़ती उनकी पत्नी ने आकर कहा—"आपने वह नया नौकर भी क्या रखा है, बिलकुल गधा है। उसे तुरन्त निकाल देना चाहिए।"

अपने विचारों में डूबे ही डूबे आइंस्टीन ने कह दिया ठीक है।

पत्नी चली गई, लेकिन तभी दूसरे दरवाजे से क्षुब्ध क्रुद्ध नौकर आया प्रोफेसर ! आपकी पत्नी में तो नाममात्र की भी मनुष्यता नहीं है।

बात खत्म भी नहीं हो पाई थी कि आइंस्टीन बोल पड़े—ठीक है !

बाहर बरामदे मे बैठी पत्नी ने यह सुन लिया। आवेश से तिलमिलाती हुई वह कमरे में झपटी—"प्रोफेसर ! तुम नौकर के सामने मेरा अपमान कर रहे हो तुम पागल तो नहीं हो गये हो ?

आइंस्टीन ने इस बार भी उसी विश्वास के साथ कहा ठीक है।

सुनकर पत्नी और नौकर ने परस्पर एक दूसरे की ओर साश्चर्य देखा, तो दोनों की हंसी लाख रोकने पर भी नही रुक सकी।

: २ :

विख्यात हास्य अभिनेता चार्ली चैपलिन का पुत्र बीमार था। डाक्टर ने उसे दवा तो दी, पर साथ ही यह भी कहा कि उसकी बिमारी कुछ इस किस्म की है कि दवा से भी ज्यादा उसको मनोविनोद की आवश्यकता है, उसके पास हर दम कोई ऐसा व्यक्ति रहना चाहिए जो उसे हंसाता रहे। चैपलिन ने अपने एक मित्र को बुला लिया, जो खुद हास्य अभिनेता था। वह व्यक्ति चैपलिन के बेटे के पास रहकर उसका मनोरंजन करता रहा।

एक दिन किसी ने चैपलिन से पूछा—'आप खुद इतने बड़े हास्य अभिनेता हैं, फिर दूसरे को बुलाने की क्या जरूरत पड़ी।" चैपलिन का उत्तर था मैं एक दिन की शूटिंग के हजारों डालर लेता हूं। बेटे के पास बैठूंगा तो व्यर्थ में इतना नुकसान होगा। मेरा मित्र तो मित्रता की खातिर ही मेरे लिये यह कर सकता है।

: ३ :

सुप्रसिद्ध विनोदी लेखक मार्क ट्वेन के जन्म दिन पर एक प्रेमी पाठक ने उन्हें अभिनन्दन का एक पत्र लिखा। पर दुर्भाग्यवश ट्वेन का निश्चित पता ही उन्हें मालूम न था। अतः उन्होंने पते के स्थान पर लिखा श्रीयुत मार्क ट्वेन, पता नही मालूम, ईश्वर करे यह पत्र उन्हें मिल जाये !

कुछ दिनों बाद उक्त पाठक के पास मार्क ट्वेन का एक पत्र आया, जिसमें सिर्फ इतना ही लिखा था—ईश्वर ने कृपा की।

: ४ :

एक बार अंग्रेजी के प्रसिद्ध हास्य लेखक मार्क ट्वेन को एक ग्राम सभा में भाषण देने के लिए निमन्त्रित किया गया।

जब वे उस नगर में निश्चित तिथि को आये, तो उन्हें ऐसा लगा जैसे उनके कार्यक्रम का पूरा विज्ञापन नहीं किया गया है।

नागरिकों को उनके होने वाले भाषण का पता है या नहीं, यह जानने के लिए वे एक दुकान में चले गये।

उन्होंने दुकानदार से पूछा—"क्यों भाई, यहां पर आज कोई मनोरंजन कार्यक्रम नहीं होने वाला है, जिससे एक यात्री अपना शाम का समय काट सके !

दुकानदार ने उत्तर दिया—"हां हां, मेरा खयाल है कि आज यहां पर कोई भाषण होने वाला है। आज तो दिन भर काफी अण्डे बिके।

: ५ :

एक दिन एक साहब मिर्जा गालिब से मिलने आये। थोड़ी देर बैठकर जब वह जाने लगे, तो मिर्जा हाथ में शमादान लेकर नीचे पहुंचाने आये ताकि रोशनी में वे अपना जूता देखकर पहन लें।

आगन्तुक सज्जन कहने लगे—"किबला ! आपने क्यों कष्ट किया ! मैं अपना जूता स्वयं पहन लेता।"

तुरन्त ही मिर्जा ने अपने खास अन्दाज में जवाब दिया मैं आपको जूता दिखाने के लिए शमादान नहीं लाया हूं बल्कि इसलिए लाया हूं कि कहीं आप अन्धेरे में मेरा नया जूता न पहनकर चले जाएं।

: ६ :

एक बार मार्क ट्वेन बहुत बीमार थे। उनके सम्बन्ध में समाचारपत्रों में छप गया कि वे मर गये। जब ट्वेन को पता चला, तो उन्होंने निम्नलिखित वक्तव्य प्रकाशित कराया।

"आप लोगों को निराश करते हुए मुझे दुःख होता है, पर जहां तक मुझे मालूम है मैं मरा नहीं हूं।"

राष्ट्रीय एकता के प्रेरक स्वतन्त्रता सेनानी

'महर्षि दयानन्द के अनुयायियों ने गुरुदत्त जी से स्वामी जी का जीवन-चरित्र लिखने का कई बार अनुरोध किया। बार-बार आग्रह करने पर भी स्वामी जी की जीवनी न लिखने का कारण बताते हुए श्री गुरुदत्त ने कहा कि मैं अभी तो देव दयानन्द के उपदेशों को जीवन में अपनाने का प्रयास कर रहा हूं और यथासमय जीवनी लिखूंगा।" यह प्रसंग सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर ने हिन्दी अकादमी द्वारा ३० जनवरी, ८७ को आयोजित "राष्ट्रीय एकता के प्रेरक स्वतंत्रता सेनानी" संगोष्ठी में सुनाया। उन्होंने आगे कहा कि निष्ठा, त्याग व बलिदान की भावना को अपना कर ही हम सच्चे अर्थों में शहीदों को श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

सांसद श्री रामचन्द्र विकल ने एक संस्मरण सुनाते हुए कहा कि आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक चौ० तेजसिंह से उनके साथियों ने आखिरी समय में जब अन्तिम इच्छा पूछी तो उन्होंने कहा कि ब्रिटिश साम्राज्य के पाये तो हिल चुके हैं, अब मैं उन्हें गिरता देखना चाहता हूं।

समारोह के अध्यक्ष प्रख्यात पत्रकार श्री अक्षय कुमार जैन, मुख्य अतिथि कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) श्री कुलानन्द भारतीय, प्रो० विजयेन्द्र स्नातक आदि सभी वक्ताओं के उद्गारों का मूल स्वर यह था कि सब भेदभाव भुलाकर राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को सुदृढ कर ही हम अनेक ज्ञात व अनाम शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। सांसद श्रीमती वीणा वर्मा ने कहा कि मैं अपने स्व० पति श्री कृष्णकांत वर्मा को अन्तिम समय में दिये गये वचन के अनुसार ही हिन्दी द्वारा राष्ट्र की एकता व समृद्धि के लिए सदैव कार्य करती रहूंगी।

इकबाल का शेर—"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।" तथा श्री माखन लाल चतुर्वेदी की पंक्तियां—"मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर तुम देना फेंक, मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ पर जायें वीर अनेक।" सुनाते हुए हिन्दी अकादमी के सचिव डा० नारायण दत्त पालीवाल ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि कलम के धनी साहित्यकारों ने स्वतंत्रता-प्राप्ति में विशेष महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है और राष्ट्र-निर्माण में भी वे विशेष योगदान देते रहे हैं। अकादमी की सहायक सचिव श्रीमती स्नेहलता एवं हिन्दी कार्यक्रम अधिकारी श्री नरेन्द्रकुमार गुप्ता ने इससे पूर्व पुष्प गुच्छों द्वारा अतिथियों का स्वागत किया। अभिव्यक्ति कला संगम द्वारा 'अनाम शहीद" नृत्य नाटिका का प्रदर्शन भी किया गया।

—निर्मल कांत शर्मा

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

द्वारा सम्पादित

महाभारतम्

(तीन भाग)

पुनर्मुद्रण के लिए प्रेस में

●

तीनों भागों का मूल्य ६००.००

३१ मार्च से पूर्व ग्राहक बनने पर

मात्र ३००.०० में प्राप्त करें।

★

बहुत-से पाठकों के मन में यह बात रह गई थी कि 'महाभारतम्' को प्रकाशनपूर्व के मूल्य में वे १९८३-८४ नहीं ले सके।

अब उनके लिए फिर अवसर आ गया है। ३१ मार्च से पहले ६०० रु० की बजाय ३०० रु० ड्राफ्ट, मनीआर्डर द्वारा भेज दें। आपकी प्रति सुरक्षित कर दी जायेगी। इस अवसर को न चूकें, अन्यथा फिर यह बहुचर्चित ग्रंथ ६०० रु० में ही खरीदना पड़ेगा। आज ही ग्राहक बनें। ३१ मार्च तक प्रतीक्षा न करें। ३०० रु० में प्राप्त करने की सुविधा पहले आये तीन सौ ग्राहकों को मिल सकेगी। इसलिए शीघ्रता करें।

नया संस्करण अप्रैल १९८७ तक तैयार हो जाने की आशा है।

गोविन्दराम हासानन्द,
नई सड़क, दिल्ली-११०००६

दान देने का सुअवसर

आर्य जगत् की शान

माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय

सी-१, जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८

के

भवन-निर्माण के लिए

निम्न भवन-सामग्री की आवश्यकता है।

दिल खोलकर दान दीजिये

लोहा	..	६०००/- प्रति टन
ईंट		१२००/- प्रति ट्रक
रोड़ी	..	७००/- प्रति ट्रक
स्टोन डस्ट	...	७५०/- प्रति ट्रक
सीमेंट	..	६५/- प्रति बोरी

जो सज्जन भवन-निर्माण सामग्री देना चाहें तो उनका नाम दानदाता सूची पर लिखा जायेगा।

भवन-निर्माण के लिए भेजी गई राशि नकद/मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा—

माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय,
सी-१, मेन बस स्टाप जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८

के पते पर भेजी जाये।

दान दी गयी राशि आयकर अधिनियम जी-८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

—. निवेदक . —

ओमप्रकाश आर्य (मन्त्री) लाला गुरमुखदास ग्रोवर (कार्यकारी अध्यक्ष)

प्रचार के लिए साठ पैसे में दस पुस्तकें

प्रचार के लिए भेजी जाती हैं। धर्म शिक्षा, वैदिक सन्ध्या, हवन-मन्त्र, पूजा किसकी, सत्यपथ, प्रभु भक्ति, ईश्वर प्रार्थना, आर्यसमाज क्या है, दयानन्द की अमर कहानी, जितने चाहें भेंट मगावें।

हवन सामग्री ३-५० प्रति किलो, मुक्ति का मार्ग ४० पैसे, उपासना का मार्ग ६० पैसे, भगवान कृष्ण ४० पैसे, सूची मंगावें।

वेद प्रचारक मण्डल, न्यू रोहतक रोड, दिल्ली-५

"प्रभात आश्रम विजयी"

अनन्त श्री विभूषित धर्म सम्राट् श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के छठे आराधना दिवस के अवसर पर उन्हीं द्वारा संस्थापित धर्मसंघ महाविद्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित २४, २५ फरवरी को संस्कृत भाषण एवं सुत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता में प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी वाचस्पति, राजेन्द्र, बृहस्पति-विजयी हुए और प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त कर दो चल वैजयन्ती उपहार जीते। विजयी बन्धुओं को बहुत धन्यवाद। जिन्होंने प्रभाताश्रम बहुत एवं मेरठ का गौरव बढ़ाया।

स्नातक मण्डल
गुरुकुल प्रभात आश्रम
मेरठ

समाचार

आर्ष गुरुकुल : धर्म व संस्कृति के संवाहक

आर्य महाविद्यालय किरठल, मेरठ, का ७०वां वार्षिकोत्सव ६ से ८ मार्च १९८७ तक धूमधाम से मनाया गया—

८ मार्च को समापन समारोह के अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य ने गुरुकुलों की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा इन्हें धर्म व संस्कृति के संरक्षक बताया। गुरुकुलों में शिक्षित युवकों को वेदप्रचार, समाज सुधार, राष्ट्रनिर्माण एवं राष्ट्रीय एकता व अखण्डता बनाए रखने में सदैव की भांति सक्रिय योगदान देते रहने का भी उन्होंने आह्वान किया। डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज की श्रेष्ठ उपलब्धियों की विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि आर्यसमाज ने पोपपाल के आगमन पर काला हाण्डी क्षेत्र में ३ लाख आदिवासियों को न केवल ईसाई बनने से रुकवाया अपितु इस अवसर पर २,५०० ईसाइयों को भी हिन्दू धर्म में पुनः प्रविष्ट करवाया।

इस अवसर पर महाशय चून्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट, जनकपुरी के महामन्त्री तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य ने राष्ट्रभाषा हिन्दी को एकता का मूल मन्त्र बताते हुए कहा कि दूरदर्शन में अंग्रेजी कार्यक्रमों का बोलबाला है। उन्होंने आगे कहा कि दूरदर्शन पक्षपात पूर्ण रवैया अपनाकर आर्यसमाज के कार्यक्रमों को अपेक्षाकृत बहुत कम समय दे रहा है। पंजाब की स्थिति की चर्चा करते हुए उन्होंने वहां तुरन्त फौज भेजने की मांग की। पृथकतावादी शक्तियों से कड़ाई से निपटने की अपील करते हुए श्री आर्य ने कहा कि राष्ट्रीय अखण्डता को हर कीमत पर बनाए रखने में आर्यसमाज को अपनी परम्परा के अनुसार आगे बढ़कर काम करते रहना है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी ने कहा कि हमें सब व्यसनों को त्यागकर जीवन में आर्यत्व लाकर महर्षि दयानन्द जी के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के मिशन को तेजी से पूरा करना है।

जिलाधीश श्री राधेश्याम कौशिक ने आर्यसमाज की महती सेवाओं का जिक्र किया। उन्होंने महर्षि दयानन्द को आधुनिक युग का महान् समाजसुधारक बताते हुए स्वामी जी द्वारा बताये उच्च आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। श्री कौशिक ने गुरुकुल एवं क्षेत्र की स्थानीय समस्याओं की चर्चा करते हुए उनके रचनात्मक समाधान के लिए भरसक प्रयास करने का भी आश्वासन दिया।

श्री ब्रह्मसिंह आचार्य ने गुरुकुलों को वैदिक धर्म प्रचार के केन्द्र बताया। उन्होंने यजुर्वेदीय यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव के सफल आयोजन में भी सक्रिय सहयोग दिया।

इस अवसर पर स्वामी दर्शनानन्द जी, पहलवान टीकाराम, प्रिंसिपल माधवसिंह आदि ने भी विचार व्यक्त किए। समारोह में एस० डी० एम०, श्री मुकेश कुमार गुप्ता, तहसीलदार श्री रामप्रकाश एवं अनेक गणमान्य महानुभाव भी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि पूर्व सांसद सर्वश्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती एवं रघुवीर सिंह ने इस गुरुकुल के उत्थान के लिए अविस्मरणीय योगदान दिया था। इस गुरुकुल की स्थापना सन् १९१७ में हुई थी।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का वार्षिकोत्सव

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का आगामी १९वां वार्षिकोत्सव ५, ६, ७ अप्रैल ८७ रवि, सोम, मंगल (तदनुसार चैत्र शु० ७, ८, ९ वि० सं० २०४४) को सोल्लास मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर दूर-दूर से उच्चकोटि के विद्वान् भाग लेने आ रहे हैं। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी कन्याओं के उत्तमोत्तम चित्ताकर्षक कार्यक्रम होंगे।

निवेदयित्री—
प्रज्ञा देवी
आचार्या पाणिनि कन्या महाविद्यालय, तुलसीपुर वाराणसी-१०

हरियाणा में शराबबन्दी आंदोलन के बढ़ते कदम— शराब के ठेकों की नीलामी पर प्रदर्शन का कार्यक्रम

—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गत ३ वर्षों से हरयाणा में शराबबन्दी के लिए आन्दोलन चलाया जा रहा है। अनेक ग्राम पंचायतों से समय पर प्रस्ताव करवाकर सरकार को रजिस्ट्री पत्र द्वारा भिजवाये गये हैं। सारे हरयाणा में २१ फरवरी को स्मरण कराने हेतु जिला मुख्यालयों पर आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं द्वारा पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए ज्ञापन दिये गये।

सरकार आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों में शराब के सेवन के विरुद्ध वार्ताओं तथा लोकगीतों का प्रसारण कर रही है जो एक सराहनीय पग है। परन्तु राजस्व की आय में वृद्धि करने के लिए ग्रामों तथा नगरों में शराब के ठेकों की नीलामी करवाकर जनता को जहर पिलाती है। इस प्रकार शराब की बिक्री तथा इसके सेवन करने से जनता के चरित्र तथा स्वास्थ्य की हानि होने की उपेक्षा की जा रही है। सरकार को योजनाओं को सफल करने का बहाना बनाया जाता है। सरकार को इस दोहरी नीति से लाभ के स्थान पर हानि और बदनामी हो रही है।

हरयाणा विधानसभा के गत अधिवेशन में कुछ विधायकों ने पूर्ण शराबबन्दी की मांग की थी। नरवाना में मुख्यमन्त्री महोदय ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित शराबबन्दी सम्मेलन में, शराबबन्दी आन्दोलन के समर्थन करने का विश्वास दिलाया था और घोषणा की थी कि जिन पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव सरकार को प्राप्त हो जायेंगे, वहां पर ठेकों की नीलामी नहीं की जायेगी।

हरयाणा में विधानसभा के चुनाव शीघ्र होने वाले हैं। प्रत्याशी आपके पास वोट की भिक्षा लेने आयेंगे और चुनाव जीतने के लिए विभिन्न प्रकार के वायदे करके आप को अपने जाल में फंसाने का यत्न करेंगे। अतः आप को निश्चय करना चाहिए कि उन्हीं प्रत्याशियों का समर्थन करें जो हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी करवाने का वचन देवें। हरयाणा सरकार ने शराब के ठेकों की नीलामी करने का कार्यक्रम निम्न प्रकार बनाया है—

(१) हिसार २७ फरवरी, (२) करनाल २८ फरवरी, (३) अम्बाला २ मार्च, (४) जगाधरी ३ मार्च, (५) कुरुक्षेत्र ४ मार्च, (६) जीन्द ५ मार्च, (७) सिरसा ६ मार्च, (८) सोनीपत ७ मार्च, (९) नारनौल ९ मार्च, (१०) रोहतक १० मार्च, (११) भिवानी ११ मार्च, (१२) गुड़गांव १२ मार्च, (१३) फरीदाबाद १३ मार्च।

सभा के उपदेशक, भजनोपदेशक शराब के ठेकों पर प्रदर्शन की तैयारी में ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री के संयोजन में दिन-रात प्रचार-कार्य में रत हैं। अतः हरयाणा के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अन्य सामाजिक तथा धार्मिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से ऊपर लिखित स्थानों पर अपने-अपने जिलों के मुख्यालयों पर हजारों की संख्या में पहुंचकर नीलामी स्थान पर प्रदर्शन करके हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी की मांग करें तथा जिन पंचायतों को ओर से प्रस्ताव भिजवा रखे हैं, उन ग्रामों में ठेकों की नीलामी रुकवाने के लिए संघर्ष करके अपनी एकता तथा शक्ति का परिचय देवें। आशा है आप इस अवसर को हाथ से न जाने देंगे।

सत्यवान हुड्डा

भाषण प्रतियोगिता

आर्य केन्द्रीय प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान में दिल्ली के उत्तरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के छात्र/छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता का कार्यक्रम, महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर, आर्य आदर्श विद्यालय आदर्श नगर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन श्री महावीर बत्रा व्यवस्थापक विद्यालय ने किया। सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया तथा प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं को विशेष पुरस्कार भी दिए गए।

प्रथम पुरस्कार—अनुराग सिंहल डी० ए० वी० माडल स्कूल शालीमार बाग।

द्वितीय पुरस्कार—सुरुचि अग्नि आर्य आदर्श विद्यालय आदर्श नगर।

तृतीय पुरस्कार—मोनिका दहिया नगर निगम प्राथमिक विद्यालय केवल पार्क।

इन सभी छात्र/छात्राओं को ऋषि मेला कोटला मैदान में भी पुरस्कृत किया जाएगा।

महावीर बत्रा

हिन्दी अपनाना
सब से ज्यादा बुद्धिमानी का काम

देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद

'हमारे सम्पूर्ण देश के निर्माण में भाषा-विषयक अध्याय का दूरगामी प्रभाव होने वाला है। आज पहली बार हम अपने सविधान मे एक भाषा को स्वीकार कर रहे हैं कि जो भारत संघ के प्रशासन की भाषा होगी और जिसे समय के अनुसार अपने आपको ढालना और विकसित करना होगा। हम ने अभी देश का राजनैतिक एकीकरण सम्पन्न किया है। राजभाषा हिन्दी देश की एकता को कश्मीर से कन्या कुमारी तक अधिक सुदृढ बना सकेगी। मैं आशा करता हूँ कि सभी सदस्य इस निर्णय पर सतोष की भावना के साथ अपने घर लौटेंगे। एक भाषा मान्य कर लेने की घटना हमारे राष्ट्रीय जावन को दिशा देने वाली और हमारी मन स्थिति की दृष्टि से एक निर्णायक घटना है। हिन्दी हमारी केन्द्रीय भाषा हमे ज्यादा से ज्यादा निकट लाएगी।

हम ने आज सब से ज्यादा बुद्धिमानी का काम किया है और जो निर्णय हम ने लिया है उससे मुझे बहुत प्रसन्नता है। मैं समझता हू कि आने वाली पीढियां हमे इस निर्णय के लिए साधुवाद दगी और कृतज्ञ होंगी।'

१४ सितम्बर, १९४९ ई० देश के इतिहास में एक कोश स्तम्भ बना। इस दिन भारत की सविधान सभा ने सर्व सम्मति से सविधान के भाषा-प्रावधानों को स्वीकार किया और हिन्दी को भारतीय सघ की राजभाषा की गरिमा प्रदान की। मुशी अयगार सूत्र के पारित हो जाने पर सविधान सभा के अध्यक्ष देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद ने सदन को बधाई देते हुए प्रेरणादायक उपरोक्त शब्द कहे थे। वे आज भी उस उदीयमान स्वातन्त्र्य का उदघोष प्रतिध्वनित करते हैं और हमे अपने सांविधानिक दायित्वों का स्मरण कराते हैं।

कुछ लोग भले हो इन वाक्यो के महत्व की ओर ध्यान न द परन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस प्रकार से भारतीय सस्कृति मे सब कुछ समेटने की शक्ति है वही शक्ति हिन्दी भाषा मे भी है। हिन्दी वाङ्मय के अध्ययन से स्पष्ट होगा कि हिन्दी भाषा के विकास में विविध धर्मों, विविध सम्प्रदायो विविध भाषा भाषियो और विविध संस्कृतियों का योगदान है। समन्वय की यह साधना हिन्दी में अत्यन्त व्यापकता तथा गहराई के साथ दृष्टिगोचर होती है। यह भी कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा पूरे भारत की सास्कृतिक एकता और साहित्यिक माध्यम की सशक्त कड़ी के रूप में विकसित हुई है।

जालन्धर में प्रो० सहगल की हत्या के विरोध में डी० ए० वी० संस्थाएँ बन्द

नई दिल्ली, ३ मार्च डी० ए० वी० कालेज जालन्धर के प्रसिद्ध प्रो० श्री एस० के० सहगल की आतकवादियों द्वारा हत्या के विरोध में डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति ने पजाब के सभी डी० ए० वी० सस्थाओं को ८ मार्च तक बन्द रखने के आदेश जा ी किये हैं। सतप्त परिवार को २५००० (पच्चीस हजार) रुपये अनुग्रह राशि दिए जाने की भी घोषणा की है। प्रो० सहगल ी हत्या की सभी बुद्धिजीवियों एवम आर्य नेताओ ने घोर भर्त्सना की है।

डी ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति ने केन्द्र तथा पजाब सरकार से माग की है कि हत्यारो की तुरन्त खोज की जाये तथा डी० ए० वी० सस्थाओं को पूर्ण सरक्षण दिया जाये। ज्ञातव्य है कि डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति का एक शिष्ट मण्डल गत नवम्बर मास में प्रधान मत्री श्री राजीव गाधी से मिला था और इस आशका से उनको पूर्व अवगत करा दिया गया था। इससे स्पष्ट है कि सरकार उनको सरक्षण देने में असमर्थ रही है।

—जगन्नाथ
विशेष कार्य अधिकारी

(पृष्ठ ३ का शेष)

सन्तराम बी ए

पत्रों का सम्पादन-सचालन वे करते रहे उनकी भाषा और शैली दोनो अनूठी और चुस्त रही हैं। पजाबी क्षेत्र में हिन्दी की सहायता पजाबी सूबा की वास्तविकता पजाब मे हिंदी का मूलोच्छेदन, काश्मीर और हिन्दू जैसे ज्वलन्त प्रश्नो पर उन्होंने लेख लिखे हैं। उनकी लगभग १०० पुस्तक प्रकाशित हो चुकी हैं और लेखों की सख्या सहस्रो तक पहुचती है। राष्ट्र उनकी साहित्य साधना और हिन्दी सेवा को कभी भुला नही सकेगा।

हाल ही में जीवन मे पहली बार सन्तराम जी के दर्शन करने दिल्ली स्थित उनकी पुत्री के निवास पर गया अब उनको लगभग दिखलाई नही देता। स्मरण शक्ति बड़ी मुश्किल से काम देती है। चल फिर भी वे नही सकते। मेरा परिचय देने पर मुझे एक प्रेमी के रूप मे अपनी शुभ कामनाओ और आशीर्वाद की वर्षा उन्होंने की। उनके मुख से बारम्बार ये दो शेर निकलते रहे

यह दरिया चन्द रोजा है।
यहा रोना नही दायम।

बहारें फिर भी आयेंगी।
लेकिन हम तुम जुदा होंगे॥

खुदा मालुम दुनिया जलवा।
गहि नाज है किसको।

हजारो उठ गए लेकिन।
वही रौनक है महफिल की॥

R N. No. 32387/77
रजि० नं० डो० (सी०) ७५६

Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओइम् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश
वर्ष ११ अंक २२ रविवार २९ मार्च १९८७ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८ फाल्गुन २०४३ दयानन्दाब्द—१६३
मूल्य . एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० डालर ३० पौंड

भारत माँ का वीर सपूत भगतसिंह

लेखक—श्री राजेन्द्रसिंह (भगतसिंह के भाई)

शहीदे आजम सरदार भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को भारत के स्वाधीनता संग्राम के दौरान बरतानिया सरकार ने २३ मार्च, १९३१ को फासी के तख्ते पर लटका कर रात का चोरी से मौत के घाट उतार कर लाशो को टुकडे करके सतलुज नदी के किनारे फिरोजपुर के पास हुसैनीवाला के पास अधजला करके नदी मे फेक दिया था।

सरदार भगतसिंह की पार्टी का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट एसोसिएशन HSRA (हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी) था।

इस पार्टी के सदस्यों मे न प्रातीय मतभेद था न कोई जातपात थी, न मजहब का भेद। इस पार्टी के आदोलन ने भारतवासियों को एक लडी में पिरोकर एक राष्ट्र के रूप में खडा किया।

इन शहीदो ने न दिन देखा न रात देखी, सुख नही देखा, आराम नही देखा। उसी बरतानवी हकूमत से उलझ पडे जिसके राज्य मे कभी सूर्य अस्त नहीं होता था। देश का हर आदमी समृद्ध हो जाए—यह स्वप्न इन शहीदों के सामने था।

उस समय की कुछ झलकियां यादों के सहारे

दिल्ली मे एक सेण्ट्रल असेम्बली होती थी जिसमे सारे भारत से चुने हुए और कुछ सरकार-परस्त नामजद सदस्य होते थे। अंग्रेज वायसराय को वीटो करने का अधिकार होता था। वह सेण्ट्रल असेम्बली के पास किए हुए कानून को रद्द कर सकता था। रद्द किए हुए कानून को लागू कर सकता था। उन दिनो अंग्रेजी हकूमत दो कानून पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेडेड डिस्प्यूट बिल पास कराना चाहती थी ताकि भारतवासियो पर अपना शिकजा मजबूत कर सके।

एच एस आर ए ने इसे वीटो करने का फैसला किया। ८ अप्रैल १९२९ को सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने जो कि बगाल के जिला बर्दवान के थे, दो जोरदार आवाज बुलन्द करने वाले बम फेके और इश्तहार फेंके और पहली बार इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा लगाया जो कि पेशावर से लेकर कन्याकुमारी तक और कराची से लेकर ढाका तक एक स्वर मे गूजा और भारतवासियो को पता चला कि गुप्त सगठन भारत के स्वाधीनता सग्राम मे लगा हुआ है। दूसरे देशो को भी पता चला कि भारतीय सघर्ष कर रहे हैं। अंग्रजो ने इसे भारतवासियो का एक चेलेंज समझा जो कि पजाब और बगाल के जवानो ने दिया।

इस घटना पर टिप्पणी करते हुए चन्द्रशेखर आजाद ने कहा कि भगतसिंह और दत्त कौम की अमानत बन गए हैं। अब घर-घर मे इन की पूजा होगी पर हमारे ये प्यारे साथी हम से सदा के लिए बिछड गए हैं। दिल्ली बम केस और बयानो की सुर्खिया उन दिनो यू होती थी, भगतसिह दत्त का बयान।' भगतसिह और दत्त को लोग एक ही आदमी समझने लगे थे। दिल्ली बम केस मे सरदार भगतसिह और दत्त को उम्र कैद की सजा मिली। दत्त जो उम्रकैद काट कर बाहर आए और अपनी आयु के अन्तिम दिनो मे जब वह कैसर के रोग से पीडित थे दिल्ली अस्पताल मे उस समय पजाब के मुख्यमन्त्री कामरेड रामकिशन से कहा कि मेरा नाम भगतसिंह के नाम स जुड चुका है। मेरी इच्छा है कि मेरे मरने के

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य ललनाओं का रोमांचकारी प्रदर्शन

आर्य कन्या गुरुकुल नरेला का वार्षिक समारोह सम्पन्न

आर्य कन्या गुरुकुल नरेला का वार्षिकोत्सव बडे समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। २१ मार्च को लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड ने समारोह का उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने उत्साहवर्द्धक उद्बोधन दिया। क्षेत्र की जनता का अपार उत्साह देखते ही बनता था। छात्राओं की तलवारबाजी और लाठी प्रदर्शन बडा रोमाञ्चकारी था। वार्ता समाचार एजेन्सी ने समाचार दिया—

नई दिल्ली २२ मार्च (वार्ता) लाठी चला रही और तलवार घुमा रही लडकियो को देखकर एक बार तो यह भ्रम हो जाता है कि जैसे किसी स्टट फिल्म का कोई दृश्य फिल्माया जा रहा हो लेकिन इन लडकियो की गम्भीरता तथा लट्ठ और तलवारबाजो के प्रति उनकी श्रद्धा देख सच्चाई सामने आ जाती है।

ये उत्तर दिल्ली के बाहरी क्षेत्र नरेला के आर्य कन्या गुरुकुल की छात्रायें हैं जिन्हें आर्यसमाज की पद्धति पर शिक्षा दी जाती है। गुरुकुल ने अपना ३१वा वार्षिक समारोह आज मनाया। ससदीय मामलो के केन्द्रीय मत्री एच० के० एल० भगत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

आर्य कन्या गुरुकुल के अध्यक्ष हीरासिंह ने बताया कि हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, महाराष्ट्र, उडीसा, गुजरात और आन्ध्र प्रदेश की लगभग २०० लडकिया गुरुकुल मे रहकर शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इन्हें गुरुकुल पद्धति के अनुरूप लट्ठ और तलवार विद्या की भी शिक्षा दी जाती है।

सरकारी मान्यता प्राप्त यह गुरुकुल प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री और आचार्य की डिग्रिया तथा प्रमाण-पत्र देता है। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से सम्बद्ध हैं।

सिर्फ किताबी पढाई ही गुरुकुल का ध्येय नहीं है। छात्राय गुरुकुल परिसर मे सब्जिया भी उगाती हैं। उन्हें पशु पालन की जानकारी भी दी जाती है और ये छात्राय गुरुकुल की गाय, भैसो की सेवा भी करती हैं। दूध मक्खन इन छात्राओ को नियमित रूप से भोजन मे मिलता है।

श्री हीरासिह ने बताया कि गुरुकुल की छात्राओ को व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादक—प० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

नर से बढ़कर नारी मूल्यों की रखवाली

—पं० बलजीत शास्त्री

प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी ने समाज के, राष्ट्र के, परिवार के उन मूल्यों की रखवाली की है है जो आज भी समाज में जिन्दा हैं तो नारी के कारण ही हैं। अन्यथा वह भी पुरुष की तरह हो जाती तो आज इन मूल्यों का नाम तक नहीं मिलता।

पुरा काल के साहित्य के पन्ने पलटने से हमें नारी का रूप धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक सभी क्षेत्रों में सर्वोच्च स्थान पर दिखाई देता है। पुरुष अगर नास्तिक हो गया तो धर्म को जिन्दा रखा नारी ने जो कि आज भी हमें संस्कारवान नारियों में दिखाई देता है। राष्ट्र का पतन हुआ तो उसके उत्थान के लिए उसने मां बनकर वीरों को उत्पन्न किया। जिनके शौर्य से राष्ट्र का मस्तक ऊँचा हुआ। बलिदान देने की बात आया तो उसने भाई का, पति का बलिदान देकर अपने राष्ट्र की रक्षा की है।

महाभारत काल के आते-आते ये सामाजिक मूल्य छूट गये और समाज का पतन हो गया जिसका रूप मध्यकालीन भारत था। जिसके कारण स्त्री को भोग्या समझा जाने लगा और विदेशियों ने आकर धर्म एवं संस्कृति को रौंद डाला। फिर महापुरुषों के आवाहन पर नारी ने अपने रूप को पहचाना और नैतिक मूल्यों को जीवित किया।

सृष्टि के प्रथम राजा मनु महाराज ने जो उस समय सामाजिक व्यवस्था बनायी थी, वह उस समय का संविधान था। जो आज मनुस्मृति के रूप में हमारे सामने है। उसी के अनुसार आज भी बहुत कुछ हमारी सामाजिक व्यवस्था चल रही है। हमारे संविधान में भी उसकी व्यवस्थाएँ समाविष्ट हैं। मनु जी नारी के विषय में क्या विचार रखते हैं और समाज में उसका क्या रूप होना चाहिए, मनुस्मृति के अन्दर वे लिखते हैं—

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
रमन्ते तत्र देवता'।

जिस घर के अन्दर नारी का सम्मान होता है वहाँ सुख समृद्धि निवास करते हैं। जिस घर के अन्दर प्रातःकाल उठकर नारी आँसू बहाती है उस गृह के सब पुण्य नष्ट हो जाते हैं।

एक दृष्टि से देखा जाये तो नर एवं नारी स्त्री एवं पुरुष को आपस में तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि अपने आप में दोनों महान हैं। पुरुष अग्नि है स्त्री सोम है, परन्तु फिर भी समाज के निर्माण में, परिवार के निर्माण में, नारी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। नौ मास तक बच्चे को अपनी कुक्षि में रखकर उसका निर्माण करती है। जब बच्चे का जन्म हो जाता है तब पाँच वर्ष तक माँ बनकर नारी ही उसे संस्कारवान बनाती है। पश्चात् कहीं पिता एवं गुरु का स्थान आता है। गुरु तो सिर्फ शब्द ज्ञान ही कराता है नैतिक मूल्यों की रक्षा का उपदेश तो माँ से ही मिलता है। जब-जब समाज ने नारी की अवमानना की तब-तब उस समाज का पतन हुआ। हमारा प्राचीन गौरव नारी के ही कारण स्थिर रहा।

जब विदुला का पुत्र शत्रु से हारकर जंगल में जाकर छिप गया, तब विदुला युधिष्ठिर के द्वारा उसको सन्देश भिजवाती है कि तुम किसके वीर्य से हो? न माता के हो न पिता के हो! तुम में न कोप है न ताप। तुम नपुंसक हो, क्षत्रिय का बेटा शेर की तरह निर्भय विचरता है। वस्त्र उठाओ शत्रु को मारो या स्वयं मर जाओ। बेटे का खोया पौरुष जाग उठा शत्रु से युद्ध किया और विजयी रहा यह माँ के संस्कारों का फल था।

नारी ने समाज का बहुमुखी विकास किया है। उसने समाज निर्माण में योगदान एवं बलिदान दोनों दिये हैं। प्राचीन विद्वान अष्टावक्र की माँ गर्भावस्था में अपने पुत्रों को संस्कारवान बनाने के लिए कहा करती थी।

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि।
संसारमाया परिवर्जितोऽसि॥

हे मेरे बेटे! तू शुद्ध है बुद्ध है, निरंजन है संसार की माया से अलग है। इस प्रकार उनके सात बेटे सन्यासी हो गये। पति ने कहा वंश चलाने के लिए कोई पुत्र तो विवाह करे। तब उन्होंने अपने विचार बदले और अष्टावक्र ने विवाह किया।

प्राचीन साहित्य में गार्गी का स्थान सर्वोच्च है जिसने शास्त्रार्थ में याज्ञवल्क्य ऋषि को परास्त कर दिया था। मण्डन मिश्र की पत्नी भारती ने शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में पराजित किया। लोपामुद्रा, अपाला, घोषा, कौशल्या, सुमित्रा, शैव्या आदि नारियों ने राष्ट्र का निर्माण किया और नैतिक मूल्यों को जीवित रखा। पन्ना धाय ने मेवाड वंश को बचाने के लिए कु० उदयसिंह के लिए अपने पुत्र का बलिदान दे दिया। मां जीजाबाई ने शिवा को वीरों की कहानियां सुना-सुना कर वीर बनाया और शत्रु द्वारा जीते हुए किले दिखाकर उसके निश्चय को दृढ़ बनाया। अन्त में उसने उन्हें विजय किया। वास्तव में नारी नर से बढ़कर है।

माँ की मानसिक स्थिति का प्रभाव गर्भ में बच्चे पर कितना पड़ता है यह उदाहरण प्रत्यक्ष हमारे सामने है—

अमरीका के राष्ट्रपति गारफील्ड का हत्यारा 'गीटू' जब माँ के गर्भ में था तब उसकी माँ ने गर्भपात कराकर उसकी हत्या कर डालने का प्रयत्न किया। पर वह बच गया, उस समय की मानसिकता का प्रभाव बच्चे पर पड़ा जिससे वह हत्यारा बन गया।

नेपोलियन इतना बड़ा राष्ट्रनायक बना। वह भी माँ के विचारों के कारण बना। जब वह माँ के गर्भ में था तब उसकी मां सेनाओं की परेड देखती, सैनिकों के गीत सुनती तब उसका रोम-रोम हर्ष से प्रफुल्लित हो उठता था। गर्भावस्था में पड़े संस्कारों ने नेपोलियन को एक महान योद्धा बनाया। बरसते गोलों में वह निर्भीक खड़ा रहता था, कभी विचलित नहीं होता था।

प्रिंस बिस्मार्क जब मां के गर्भ में था तब उसकी माँ अपने घर के उन भागों को बड़े मानसिक कष्ट से देखा करती, जिन्हें नेपोलियन की फ्रेंच सेनाओं ने नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। इन तीव्र संस्कारों का परिणाम यह हुआ कि बिस्मार्क के हृदय में फ्रांस से बदला लेने की तड़प जाग उठी।

यह सब उदाहरण बताते हैं कि नारी के विचारों द्वारा समाज का उत्थान पतन आधारित है। वीर प्रताप, शिवाजी, छत्रसाल तांत्या टोपे, टीपू सुल्तान जैसे वीरों का निर्माण नारी ने किया। अगर समाज ने उसे भोग्या समझा प्रताड़ित किया, सम्मान नहीं दिया तो उसने समाज का नासूर रंगा और बिल्ला को उत्पन्न किया। आज अगर समाज के नैतिक मूल्यों की रखवाली करनी है तो नारी को सम्मान देना होगा। नारी को भी अपने छुईमुई एवं सौंदर्य की मूर्ति वाले रूप को छोड़कर रानी झांसी वाला रूप अपनाना होगा।

नारी वरती सम सब कुछ सहकर भी परिवार से जुड़ी रहती है पुरुष छोड़ जाता है फिर भी वह परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते हुए आगे बढ़ती है। न अरि =नारी, जिसका कोई शत्रु न हो, इस उक्ति को पूर्ण करती हुई चलती है। आज की नारी का रूप बड़ा विकृत है वह अपने आपको अबला समझकर बैठी आँसू बहाती है या सौंदर्य की प्रतिमा बनी बैठी है।

महादेवी वर्मा ने आज की नारी का चित्रण किया है—

"हमारे जमाने में हम लोग रक्त चन्दन तिलक मस्तक पर लगाकर जब शराब की दुकानों पर धरना देने जाती थीं तो बड़े से बड़ा पियक्कड़ भी हेमन्त पत्र की तरह काँप उठता था, आज की आधुनिकाओं से कहो जरा धरना देकर देखें, जो शराब नहीं पीते, वे भी मधुशाला में आ जायेंगे। कैबरे से लेकर बीड़ी साबुन और ब्लेड तौलियों के विज्ञापनों तक में आज की नारी स्वयं को अपनी देहयष्टि को अपनी चितवन मुस्कान को व्यञ्जन की तरह इस प्रकार परोस रही है कि स्वयम् एक व्यंजन मात्र बनकर रह गयी है।"

कहाँ पर तो स्वामी दयानन्द सरस्वती ने रास्ते में एक छोटी बालिका को देखकर मातृ शक्ति को नमस्कार किया। मनु की उक्ति ठीक है उसके अनुसार चलेंगे तो समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना हो सकेगी अन्यथा नहीं। पूर्व का समाज हो या पश्चिम का समाज, सब ने नारी को भोग्या समझ लिया है। नारी सम्मान की बातें नारी संस्थाएँ भी बहुत करती हैं, पर वह स्वयं अपने को अबला एवम् असहाय महसूस करती हैं। उन समाज की सर्वोच्च नारियों को अपने स्वरूप को पहचानना होगा। रानी लक्ष्मीबाई की तरह से वीरांगना बनकर समाज के गिरते मूल्यों को बचाना होगा। ●

जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई--

दानवीर महाशय धर्मपाल—एक भक्त, एक सेवक

सरल सहज स्वभाव, हंसता मुस्कराता चेहरा, साधारण परिधान, बनावट आडम्बर से दूर, नम्रता, सज्जनता, उदारता से सजा व्यवहार, सन्त, विद्वान्, संन्यासियों, वृद्धों के चरणों में झुका विनत मस्तक, प्रभु भक्ति के रस में सजल नेत्रों से गाता, पुकारता जन्म जन्मांतर की टेरसुनाता हृदय, कर्मठ, धुन का धनी, अथक परिश्रमी जीवन, अनाथ, दीन, हीन जनों के कल्याण में लगा निष्कामी सेवक, द्वार पर आये याचक की अञ्जलि को भरता दाता इन सभी गुणों को संयुक्त कर जो व्यक्तित्व उभरता है। वह हैं महाशय धर्मपाल। महाशय धर्मपाल का जन्म ६३ वर्ष पूर्व स्यालकोट (पाकिस्तान, में २७ मार्च को हुआ था। बचपन में ही पूज्यवर पिता जी की उंगली पकड़कर वे आर्यसमाज मन्दिर जाते थे। आर्यसमाज के संस्कार उन्हें घुट्टी में मिले, इसलिए वे महर्षि दयानन्द को ही अपना प्रेरक और गुरु मानते हैं। अपने माता पिता को वे अत्यधिक श्रद्धा, सम्मान से याद करते हैं। इनके पूज्य पिता श्री महाशय चुन्नीलाल स्यालकोट में हल्दी के व्यापारी थे। महाशय धर्मपाल के शब्दों में पिताजी को स्वदेशी वेष पहने देख लोग उन्हें महाशय जी कहकर पुकारते थे। अपने जीवन में अमीर बनने की तीव्र इच्छा से उन्होंने दूसरे व्यापारियों को देख हल्दी में २५ प्रतिशत मिलावट प्रारम्भ कर दी। दूसरे व्यापारी ५० प्रतिशत मिलावट कर रहे थे। हमारी बिक्री दूसरों की अपेक्षा अधिक थी। एक दिन पिता जी को किसी ने महाशय जी कहकर नमस्ते की। वे पूछने लगे भाई, हम खत्री अरोड़े हैं, हमें महाशय (पंजाब में आर्यसमाज ने हरिजनों को सम्मान देकर महाशय कहना प्रारम्भ किया था) क्यों कहते हो। आर्यसमाज में जाकर उन्होंने महाशय का अर्थ पूछा तो उनको बताया गया—जिस के विचार और कार्य महान् हैं वह महाशय है। बस यह सुनते ही वे दुकान पर आये और मिलावट वाली हल्दी की बोरियों को नाली में बिखेरने लगे। लोगों ने पूछा नाली में क्यों गिरा रहे हो। बोले अब झूठ का व्यापार नहीं करना। उनकी सच्चाई का व्यापार पर बुरा असर नहीं पड़ा बल्कि उससे हमारा कारोबार और भी अधिक चलने लगा। पिता जी आर्यसमाज के सत्संगों में जाने लगे और हमें भी आर्य विचार बचपन में ही मिलने लगे। स्यालकोट में महाशय जी का परिवार मध्यम समृद्ध परिवार था, परन्तु जैसे ही पाकिस्तान का बंटवारा हुआ उनके परिवार को भी काफी क्षति पहुंची। अमृतसर होते हुए दिल्ली पहुचकर उन्होंने पुनः भाग्य आजमाइश प्रारंभ की। अजमल खां रोड करौलबाग में महाशय धर्मपाल ने अपने पिता जी के साथ एक खोखा लेकर कार्य प्रारम्भ किया। म० धर्मपाल जी स्वयं चक्की चलाकर हल्दी पीसते और बेचते। उनके परिश्रम और भाग्य ने ऐसा पलटा खाया कि वे निरन्तर समृद्धि की ऊँचाइयां छूते चले गये। प्रभु कृपा से आज उनके पास जो है उसमें से वे अब तक डेढ करोड़ रुपये दान कर चुके हैं। उनका एक नेत्र अस्पताल जो साढे तीन करोड रुपये की लागत से जनकपुरी नई दिल्ली में बन रहा है उनकी उदारता एवं दानी स्वभाव का ज्वलन्त उदाहरण हैं। इस समय माता चन्नन देवी नेत्र चिकित्सालय

महाशय धर्मपाल एम० डी० एच० के स्वत्वाधिकारी एव आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान

जनकपुरी और सुभाषनगर आर्यसमाज मे कार्यरत है। एक चलता-फिरता अस्पताल स्कूल के छात्रो और ग्रामीण जनो की सेवा के लिए कार्य कर रहा है। उनके द्वारा इस समय पाँच स्कूल दिल्ली के विभिन्न स्थानो पर चल रहे हैं। जो उनके तथा उनकी माता चन्नन देवी एव पिता श्री महाशय चुन्नीलाल जी के नाम और महाशय धर्मपाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती लीलावती के नाम पर चल रहे हैं। उन का कारोबार देश विदेश मे फैला हुआ है।

महाशय धर्मपाल अपने नाम के अनुसार धार्मिक जीवन व्यतीत करते हैं। वे शाकाहारी, नित्यप्रति यज्ञ हवन करने वाले, नित्यप्रति सत्संग का आनन्द लेने वाले, नित्यप्रति दान और सेवा, नित्य ईश्वर भक्ति करने वाले ईश्वर भक्त हैं। उनके जीवन की एक विशेषता है-प्रभुभक्ति मे मस्त होकर भजन गाने की। सन्ध्या, यज्ञ के पश्चात् वे सुध बुध बिसार कर प्रभु गीत गा गा कर आनन्द मगन हो जाते हैं। अपनी कम्पनी के कर्मचारियों को नित्य प्रति सुबह शाम सत्संग मे बैठने के पैसे भी देते है। एक दिवस जब वे हवन सामग्री निर्माणशाला मे प्रविष्ट हुए तो उन्होने निर्मित हवन सामग्री मे बीडी का टुकड़ा देखा। देखते ही उन्होने सब कर्मचारी इकट्ठे किये और बोले जिस किसी ने भी यह टुकड़ा डाला है वह स्वय आकर अपना दोष स्वीकार करे। मैं सत्य कहने का दण्ड नही दूगा। दोषी व्यक्ति हाथ जोड़कर बाहर आकर बोला–महाशय जी मुझ से यह पाप हुआ है, महाशय बोले—भाई तू घबरा मत तूने सच कहा है, मैं तुम्हारे वेतन मे वृद्धि करूंगा। यदि तू बीड़ी पीना छोड दे तो मुझे और भी ज्यादा खुशी होगी। उस व्यक्ति ने बीड़ी पीनी छोड दी। महाशय जी ने उसके वेतन में और भी वृद्धि कर दी।

वैदिक धर्म के प्रचार के लिए

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वायु प्रदूषण की अपेक्षा आचार प्रदूषण महाघातक

—चमनलाल

किसी ने ठीक ही तो कहा है संसार समस्याओं का गढ है। अर्थात् समस्याओं के कारण ही यह संसार चक्र चल रहा है। सच जानिए यदि व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के जीवन में कोई समस्या न हो, संसार नीरस हो जावे, और इसकी प्रगति रुक जावे। समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, विज्ञान, मनीषी वैज्ञानिक उनका हल ढूढते हैं और विकास की ओर अग्रसर होते हैं। इतिहास इस बात का प्रमाण है कि जितने महापुरुष संसार में हुए हैं और जितने बड़े बड़े विकसित देश हम देख रहे हैं, वे सब अपने सामने आने वाली अनेकों समस्याओं का समयानुकूल हल करके आगे बढे हैं, और आज इस गौरवमयी स्थिति को प्राप्त हैं और लोगों के प्रशसा के पात्र बने हुए हैं।

वर्तमान मे भी विश्व के सारे ही छोटे-बड़े, विकसित, अविकसित अथवा विकासशील देश किसी न किसी समस्या से ग्रसित हैं। जनसख्या की वृद्धि की बडी भारी चिंताजनक समस्या के साथ-साथ वायुमण्डल प्रदूषण की समस्या ने सब को भारी चिन्ता के जाल में जकड़ा हुआ है। सभी देश इस प्रदूषण के परिणामों से प्रभावित हैं और वैज्ञानिक लोग इसको दूर करने के उपायों की खोज में लगे हैं। अपना देश भी इस प्रदूषण की जीवन-घातक समस्या से च्युत नहीं है। इसका एकमात्र कारण गावों का शहरीकरण (Urbannisaticn) की योजनाएं हैं। बडी-बडी लम्बी चौडी तारकोल की सडकें, आकाश चुम्बी अट्टालिकाएँ, ऊचे-ऊचे भवन, कारखाने, फैक्टरियाँ, लाखों वाहनों के द्वारा सैकडों टनो दूषित विषैले, पदार्थों का वायुमण्डल में फैलना, वायु को दूषित करते हैं, जो नाना प्रकार के रोगो का उत्पन्न करते है। यह शहरीकरण की वृत्ति ही पर्यावरण का सन्तुलन बिगाड देती है। दिल्ली मे ही समाचार पत्रो मे प्रकाशित खबरों के अनुसार ४५ व ५५ प्रतिशत वायु प्रदूषण लाखों वाहनो के कारण है। लगभग ३०० टन विषैली गैसें प्रतिदिन मोटर वाहन उगलते हैं। इस विषय के विशेषज्ञों के मतानुसार एक मोटर औसतन २०५ किलो विषैला पदार्थ वायु मण्डल में फैला देता है। इस दूषित वायु का हम सेवन करते हैं और अनेकों रोगों से प्रभावित होते चले जा रहे हैं। इस दूषित वातावरण के कारण न केवल मानव जीवन ही प्रभावित है अपितु पशु, पक्षी का जीवन भी इसके दुष्प्रभाव से बचा नहीं है। और तो और जड़ जगत् पेड़-पौदे, वनस्पतियां, बड़े-बड़े भवन चमडे का सामान और कीमती वस्त्र और दूसरी मूल्यवान वस्तुओं के लिए भी हानिकारक है। समाचार पत्रों में पढने को मिलता है कि आगरे का ऐतिहासिक ताजमहल की सुन्दर श्वेत इमारत भी मथुरा स्थित आयल रिफारमरी के द्वारा निकली दूषित गैस के कारण बुरी तरह प्रभावित होने लगी है। हमारे जीवन के तीन मौलिक आधार वायु, जल, अन्न (खाद्य सामग्री) हैं और ये तीनों ही वर्तमान मे प्रदूषित वायु मण्डल के कारण विषाक्त है। खाद्य पदार्थ के बीजने से लेकर उपभोक्ताओं तक पहुंचने तक कितनी ही प्रकार की विषैली दवाइयों से प्रभावित होती है। ताजी हरी सबजियां फल आदि सभी विषैली दवाइयों के प्रयोग से अधिक मात्रा में पैदा की जाती हैं, और उनको कीड़े आदि से सुरक्षित रहने के लिए और फिर किन्हीं फलो को जल्दी खाने योग्य बनाने के लिए तरह-तरह की जीवन घातक विषैली दवाइयो को ही प्रयोग में लाया जाता है। गाय, भैंसो का दूध भी शुद्ध नही कहा जा सकता, क्योंकि ये जानवर भी तो उसी दूषित वायुमण्डल में रहते हैं और उन्हीं दूषित पदार्थों को खाते हैं। यही कारण है कि आज कौन सा घर है जहां बीमारी, रोगों ने अपना गढ नही बनाया हुआ है। लोग भयकर रोगों से ग्रस्त हैं। सहस्रों लोग पाकेटों में दवाई लेकर चलते हैं। सरकार बडे-बडे हस्पताल खोलती है, अरबों रुपये के बजट बनाकर चिकित्सा का प्रबन्ध करती है परन्तु रोग दिन प्रतिदिन बढते ही जाते हैं और इतने पर भी रोगियों को सन्तोषजनक चिकित्सा सम्भव ही नहीं होती। इस वायु प्रदूषण का एकमात्र उपाय यज्ञ हवन की प्रथा हमारे ऋषि-मुनियों ने चलाई थी। नित्य प्रति दैनिक यज्ञ घर घर होते थे, समय-समय पर खरीफ और रबी (आषाढी) की फसल आने के अवसर पर बड़े-बड़े यज्ञों का भी आयोजन होता था-जिस कारण वायु-मण्डल शुद्ध रहता था और खाद्य पदार्थ भी प्रदूषणों से प्रभावित नहीं होते थे। इसके फलस्वरूप लोगों का स्वास्थ्य ठीक रहता था, बीमारियां कम होती थीं, और लोग दीर्घजीवी होते थे। रामायण काल मे हर घर मे यज्ञ होते थे। केकय देश के अधिपति राजा अश्वपति ने एक प्रसंग में बडे गौरव के साथ कहा था—

"न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न च मद्यपः। नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी, स्वैरिणी कुतः ॥

अर्थात् मेरे सारे राज्य में दुराचारी, मूर्ख, "यज्ञ न करने वाला कोई नहीं है।" रामचन्द्र जी और योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी नित्य यज्ञ किया करते थे। परन्तु दुःख है कि कालान्तर में वायुमण्डल को शुद्ध करने की इस प्रथा का लोप हो गया है, जिस कारण रोग दिन प्रतिदिन बढते जा रहे हैं। धन्य हो देव दयानन्द का कि उसने सहस्रों वर्षों के बाद पुनः हमें यज्ञ के महत्त्व से अवगत कराया है, परन्तु इतने बडे देश में सरकार के समर्थन के बिना इसका प्रचार नहीं हो पा रहा है।

जैसा कि ऊपर सकेत किया गया है यह वायु जल प्रदूषण हमारे शारीरिक रोगों को उत्पन्न करके हमारे स्वास्थ्य के गिराने वाला सिद्ध होता है जो भौतिक है, वह एक दिन अवश्य ही नष्ट होना है, चाहे कितने ही उपचार के साधन उपलब्ध हों, ठीक है प्रयत्न तो इस प्रदूषण को दूर करने का होना ही चाहिए। परन्तु याद रहे कि एक बडा प्रदूषण, जिसकी ओर किसी शासक वर्ग वा सत्ताधारी पार्टी का लेशमात्र भी ध्यान नही है जो व्यक्ति समाज और राष्ट्र के जीवन की जडों को खोखली कर रहा है और सारे राष्ट्र समाज के विनाश का कारण बना हुआ है वह है 'आचार प्रदूषण'। इस को दूसरे शब्दों मे दुराचार, भ्रष्टाचार कह सकते हैं। यह भयंकर रोग न केवल शरीर, वरन् मन, बुद्धि, मस्तिष्क और आत्मा के विनाश का कारण भी बनता है। जब तक हमारे जीवनों में सदाचार का महत्त्व रहा, यहां के आदर्श बडे ऊंचे रहे। इसी देश के ऋषि मुनियों ने भूतल के मानव समाज को आचार और शुद्ध व्यवहार की शिक्षा दी। यही कारण था कि वर्षों तक यह देश विश्व का गुरु बना रहा। महर्षि मनु ने ठीक ही कहा है—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्व स्व चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥ पाश्चात्य विद्वान रिचर्ड पाल के शब्दों मे किसी व्यक्ति वा राष्ट्र की महत्ता की कसौटी उसकी विचार-सरणी-ऊंचे आदर्श हो तो हैं—

The greatness of a man or a nation is measured not by the brutal victories attained by him but it is known by the greatness of an ideal."

यही नहीं ऐसे ही एक और पाश्चात्य विद्वान रिचर्ड एलडिक्टन का भी ऐसा ही कुछ मत है—कि राष्ट्र, समाज का बडप्पन, ऐश्वर्य उस के प्रजा जनों के सदाचारी, नीरोग स्वस्थ होने में माना जाता है, यदि ऐसा नहीं है, कितनी ही अपार सम्पदा होने पर भी वह राष्ट्र वा समाज निर्धन ही जानना चाहिये—

"The true wealth of a country lies in its men and women, if they are men, ill and unhappy, the country is poor."

निस्सदेह गत चालीस वर्षों में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आधुनिक टकनीक अपनाकर आशातीत उन्नति की है और हम विश्व के बडे-बड़े विकसित देशों की पंक्ति में खडे होने की क्षमता रखते हैं परन्तु आचार प्रदूषण के प्रभाव के कारण वह सब उन्नति हानिकारक सिद्ध हो रही है। पाच सहस्र वर्ष पूर्व महाभारतकाल में योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी ने एक प्रसंग में महात्मा विदुर जी को कुछ ऐसी ही बात कही थी—

"पर्यस्तां पृथिवीं सर्वां साश्वां सरथकुञ्जराम् । यो मोचयेन् मृत्युपाशात् प्राप्नुयाद् धर्ममुत्तमम्" ॥

अर्थात् आज संसार में क्या कुछ वैभव के साधन नहीं हैं तो भी पृथिवी मृत्यु के मुख में जा रही है

इस को तो कोई सदाचारी-धर्मात्मा ही बचा सकता है। आज हमारे देश की दशा बड़ी शोचनीय है। भ्रष्टाचार के कारण नाना प्रकार की व्यर्थ की समस्याओं ने जनजीवन को अस्तव्यस्त कर रखा है। जनसंख्या वृद्धि की भीष्म समस्या, आतङ्कवाद, भाषावाद, अलगाववाद, प्रान्तीयता, राष्ट्रध्वजा का अपमान, विधान की प्रतियों का जलाना, राष्ट्रीय समारोहों का बहिष्कार, धर्मान्धता, नवविवाहित युवतियों का स्वयं जलकर मरना वा सुसराल वालों द्वारा उनकी हत्या करना, होटलों में लज्जापूर्ण नग्न नाच और शारीरिक प्रदर्शन युवतियों द्वारा, युवा वर्ग को सही दिशा न मिलने के कारण नशीले पदार्थों के सेवन के कारण जीवन बर्बाद, कुछ मन्दिरों में पूर्णतया नग्न होकर पूजा की घोर लज्जाजनक प्रथा, छोटी-छोटी निर्दोष बच्चियों से बलात्कार की घटनाएँ, हर रोज के भिन्न वर्ग के लोगों के अतर्क संगत प्रदर्शन और धरने, चोरबाजारी रिश्वतखोरी देश के बहुमूल्य गुप्त रहस्य को चन्द कागज के टुकड़ों के बदले विदेशियों के हाथों बेचना और साम्प्रदायिकता के विष को फैलाने की दूषित प्रवृत्ति—आदि अनेक लज्जापूर्ण घटनाएं हैं जो न केवल देश की अखण्डता की जड़ों को कमजोर कर रही हैं, अपितु देश के गौरव को क्षति पहुंचा रही हैं और सब विकास कार्यों में बाधक हो रही हैं। कोई माने न माने, परन्तु सत्य तो यह है कि ये सब घटनाएं, समस्यायें 'आचार प्रदूषण, भ्रष्टाचार, दुराचार के वृक्ष व (off shoots) फलफूल और शाखाएँ हैं जो देश के जीवन में इतने गहरा व्याप गई हैं कि जिनसे मुक्ति पाना कठिन ही नहीं, अपितु कुछ असम्भव सा प्रतीत हो रहा है। यह देश का दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है। दूसरी ओर इनके निवारण के हेतु जो भी कुछ पग उठाये जा रहे हैं या कुछ योजनाएं बनाई जा रही हैं वह सब मानो किसी सूखे वृक्ष को फिर से हरा भरा करने हेतु उसकी जड़ों को पानी देने के स्थान पर उसके पत्तों को पानी देने के समान है। कितने ही शान्ति मार्च, कितनी ही सद्भावना पद यात्रा, राजनीतिक दलों तथा भिन्न-भिन्न धर्मों के नेताओं की सम्मिलित गोष्ठियां आदि और अनेक अन्य योजनाएं व्यर्थ का समय बर्बाद करने के कुछ भी नहीं हैं क्योंकि इनमें भाग लेने वाले जब तक सदाचार रूपी कवच को पहन कर नहीं निकलेंगे ये बुराइयां आक्रमण कर घातक बनी रहेंगी। इतिहास इस बात का प्रमाण है कि जब-जब जिस-जिस राष्ट्र देश समाज में आचार प्रदूषण व्यापा, वह नष्ट होकर ही रहा। इसीलिये किसी पाश्चात्य विद्वान् ने बड़ा ही सुन्दर कहा है—

"When wealth is lost, nothing is lost. When health is lost, something is lost But when character is lost, everything is lost."

अतः विचार कर देखो, कि भ्रष्टाचार से देश, समाज राष्ट्र का सर्वनाश हो जाता है जो हाल आज हमारा हो रहा है।

"को न भ्रष्टाचारपाय नसाई"। तथा "कयय सदाचार: किं न करोति पुमान् ।"

सारांश यह कि सदाचार के बिना प्राणी वा राष्ट्र का ऐहिक एवं पारलौकिक अभ्युदय सर्वथा अवरुद्ध रहता है निःश्रेयस तो अनन्त कोसों दूर है। जिस कर्म या व्यवहार से व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र में राजस्, तामस् वृत्तियां समाप्त हों, भय, कलह, विद्वेष आदि न रहें, सज्जनों द्वारा परिपालित वह सब कर्म या व्यापार, सदाचार कहलाते हैं। अतः सदाचार का पालन करना नितान्त आवश्यक है। देश, राष्ट्र, समाज के कल्याण के लिए यह अत्यन्त जरूरी हो जाता है कि सब से अधिक भ्रष्टाचार जो राजनीतिक क्षेत्र में व्याप रहा है और जिससे प्रेरित होकर अन्य लोग भी इस रोग के शिकार हो रहे है—भरसक प्रयत्न करके इसे दूर करना चाहिए।

यहां सन्तों के महात्माओं के सदाचार के महत्त्व पर विचार दिये जाते हैं। सभी देशवासी उनसे प्रेरणा लेकर देश को आचार प्रदूषण से मुक्त करें—

सदाचार की महिमा व प्रशंसा

धर्मोऽस्य मूलं धनमस्य शाखा,
पुष्पं च कामः फलमस्य मोक्षः।
असौ सदाचारतरुः सुकेशिन्,
ससेवितो येन स पुण्यभोक्ता ॥
(पुराण)

भावार्थ—सदाचार मानो एक वृक्ष है। जिसकी जड़ धर्म है और अर्थ अर्थात् धन इसकी शाखायें हैं। काम इस वृक्ष के फूल हैं और मोक्ष इसका फल है। ऋषिगण सुकेशी राक्षस से कह रहे हैं—हे सुकेशिन्! जिस पुरुष ने सदाचार रूप वृक्ष का भलीभांति सेवन किया है, वह पुरुष पुण्यों का भोक्ता होता है।

सदाचार अति सरस
सुतरु सुन्दर सुखदाई।
जा पादप को मूल धरम
हो दृढ़तर भाई।
शाखा जा को अरथ,
धरम धनतें हो होव।
काम सुमन कमनीय
धरमयुत कामहिं सेवे।
पुण्यवान पावन पुरुष,
सदाचार तरु सेवही।
धरम, अरथ, काम सुख,
मोक्ष रूप फल लेवही॥

और भी देखिये—

धर्मोऽस्य मूलमस्य सर्व. प्रकाण्डो
वित्तानि शाखा च्छादनानि काम ।
यशांसि पुष्पाणि फलं च
पुण्यमसौ सदाचारतरुर्महीयान् ॥

अर्थात् सदाचार रूपी महान् वृक्ष का मूल धर्म है। काण्ड (तना) आयु। शाखा धन है. पत्र कामना हैं, पुष्प यश है, और फल पुण्य है। इस प्रकार कल्पतरु (सदाचार) महामहीयान है।

इन्द्रियान्तरनिपातोऽसि
स्वाकृष्टानि मनोरथम्।
पौरुषेणेन्द्रियाण्याशु
सदस्य समतां नय ॥
(योगवाशिष्ठ)

अर्थात् मनोमय रथपर चढ़कर विषयों की ओर दौड़नेवाली इन्द्रिया वश में न होने के कारण बीच में पतन के गर्त में गिराने वाली हैं। अतः प्रबल पुरुषार्थ द्वारा इन्हें शीघ्र अपने वश में करके मन को समता में ले जाइये।

क्षान्तेन्द्रियेण दान्तेन
शुचिना चापलेन वै।
अदुर्बलेन धीरेण
नोत्तरोत्तरवादिना ॥
अलुब्धेनानृशंसेन
ऋजुना ब्रह्मवादिना।
चारित्रतत्परेणैव
सर्वभूतहितात्मना ॥
अरयः षड् विजेतव्या
स्वं देहमाश्रिता ।
कामक्रोधौ च लोभश्च
मानमोहौ मदस्तथा ॥

अर्थात् मनुष्यों को चाहिए कि संयतेन्द्रिय, मनोनिग्रही, पवित्र, चञ्चलतारहित, सबल, धैर्यशील, निरन्तर वाद-विवाद न करनेवाला, लोभहीन, दयालु, सरल, ब्रह्मवाद, सदाचारपरायण, और सर्वभूत हितैषी बनकर सदा अपने ही शरीर में रहने वाले काम, क्रोध, लोभ, मान, मोह और मद—इन छः शत्रुओं को अवश्य जीते।

(महर्षि पराशर)

नारुन्तुदः स्यान्न नृशंसवादी
न हीनतः परमभ्याददीत।
ययास्य वाचा पर उद्विजेत न
तां वदेद् रुशती पापलोक्याम् ॥
वाक्सायकवदनान्निष्पतन्ति
यैराहतः शोचति रात्र्यहानि।
परस्य वा मर्मसु ये पतन्ति
तान् पण्डितो नावसृजेत् परेषु ॥
(महाभारत)

अर्थात् दूसरो के मर्म पर आघात न करे, क्रूरतापूर्ण बात न बोले तथा औरो को नीचा न दिखाये। जिसके कहने से दूसरे को उद्वेग होता हो, ऐसी रूखी बात पापियो के लोको में ले जाने वाली होती है, अतः वैसी बात कभी न बोले। जिन वचनो रूपी बाणो के मुंह से निकलने से आहत होकर मनुष्य रात-दिन शोक में पड़ा रहता है। और जो दूसरों के मर्मस्थानो पर घातक चोट करते हैं, ऐसे वचन बाण सद्-असद् विवेकशील पुरुष दूसरों के प्रति कभी न छोड़े।

व्याचष्टे यः पठति च
शास्त्रं भोगाय शिल्पिवत्।
यतते न त्वनुष्ठाने
ज्ञानबन्धुः स उच्यते ।
कर्मस्पन्देषु नो बोधः
फलितो यस्य दृश्यते।
बोधशिल्पोपजीवित्वा-
ज्ज्ञानबन्धुः स उच्यते ॥
वसनाशन - मात्रेण
तुष्टा शास्त्रफलानि ये।
जानन्ति ज्ञानबन्धूंस्तान्
विद्याच्छास्त्रार्थशिल्पिनः ॥
(योगवासिष्ठ)

अर्थात् शिल्पी जीविका के लिए ही शिल्पकला सीखता है। वैसे ही जो मनुष्य केवल भोग प्राप्ति के लिए ही शास्त्रो को पढ़ता और उसकी व्याख्या करता है, स्वयं शास्त्रो के अनुसार आचरण के लिए प्रयत्न नही करता (सदाचारी नही बनता) वह ज्ञानबन्धु कहलाता है। जो वस्त्र भोजन से ही तुष्ट है—जिन्हें शास्त्र फल वैराग्य-विवेक नहीं हुआ, वे सब ज्ञानबन्धु हैं और उनका वह शास्त्र ज्ञान शिल्पमात्र ही है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ १ का शेष)

भारत माँ का वीर सपूत शहीद भगत सिंह

बाद मेरा संस्कार भगतसिंह जी की समाधि के पास किया जाए। अतः ऐसा ही किया गया।

दिल्ली बम केस के बाद सरदार भगतसिंह और उन के साथियों के विरुद्ध १० जुलाई, १९२९ को बम फैक्टरियां कायम करने (हकूमत बरतानिया का खात्मा करने के लिए) और मिस्टर साण्डर्स के कत्ल आदि के आरोप में लाहौर साजिश केस चला। उस समय जेल में राजनीतिक बन्दियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार होता था। उन्हें पशुओं जैसा खाना अर्थात् पत्ते, डण्ठलों की सब्जी, काली दाल और अधपकी रोटियां दी जाती थी, सोने के लिए टाट या फटे कम्बल दिए जाते थे, रात को कई-कई बार जगाकर नींद हराम करते, चक्की पीसने, कोल्हू चलाने आदि की कड़ी मेहनत कराई जाती।

बात-बात पर डांट-फटकार और काल कोठरी की सजा दी जाती थी, अखबार भी नहीं मिलते थे। मगर यूरोपियन और बड़े राजनीतिक नेताओं को मनपसंद भोजन, लिखने पढ़ने की सुविधाएँ दी जाती थी। इस दुर्व्यवहार के विरुद्ध सरदार भगतसिंह और उनके साथियों ने भूखहड़ताल शुरू कर दी जो कि १५ जून १९२९ से २ सितम्बर तक तक ७९ दिन चली मगर इसी दौरान सरकार ने भूखहड़तालियों की मांगों पर विचार करने के लिए एक कमेटी बनाई थी जिस में ला० दुनीचन्द आदि कई लोग थे। उन्होंने बार-बार मिल कर आश्वासन दिए कि उनकी मांगें मान ली जायेंगी।

२ सितम्बर को भूखहड़ताल छुड़वा दी गई पर श्री जितेन्द्र नाथ दास ने अपने साथियों से कहा कि मैं भूखहड़ताल छोड़ कर भी अब जिन्दा नहीं रह सकता, मेरी हालत खराब है अतः मुझे शहीद होने दो। उनकी हालत खराब थी। डाक्टरों ने कहा कि अगर दास जी 'एनीमा' लें तो उनकी जिन्दगी कुछ दिनों के लिए बच सकती है मगर दास जी इसके लिए तैयार न हुए। दास जी बोस्टन जेल में थे और सरदार भगतसिंह जी सेण्ट्रल जेल में थे। सरकारी अधिकारियों को मालूम था कि यह सिर्फ सरदार भगतसिंह का कहना ही मानेंगे। वह सरदार भगतसिंह जी को दास जी के पास ले गए। सरदार भगतसिंह जी ने कहा कि दास जी आप एनीमा करा लें। दास जी ने कहा, "भगतसिंह जी मैं आपकी बहुत इज्जत करता हूं। मैं एनीमा करा लेता हूं इस शर्त पर कि आप मुझे दोबारा भूख-हड़ताल छोड़ने और दवा लेने आदि के बारे में न कहना और दास जी ने एनीमा करा लिया। फिर ६३ दिन के बाद १३ सितम्बर १९२९ को दिन के एक बजकर पांच मिनट पर श्री जितेन्द्र नाथ दास की मृत्यु हो गई। जब सरदार भगतसिंह को दास जी के शहीद होने की खबर मिली तो उन्होंने कहा कि यह मौत मुझे आनी चाहिए थी।

आखरी घड़ी

सरदार भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी लगाने की तारीख २४ मार्च को निश्चित थी मगर २३ मार्च की शाम को फांसी लगा कर, लाशों को सतलुज के किनारे अधजला करके दरिया में बहा दिया गया। यह स्थान ठीक वर्तमान भारत-पाक सीमा पर स्थित है।

सरदार भगतसिंह और उनके साथियों की पसन्द का एक गाना यह था—

उरुजे कामरानी पर
कभी हिन्दोस्तां होगा।
रिहा सैयाद के हाथों से
अपना आशियां होगा॥

चखाएंगे मजा बर्बादी-ए-
गुलशन का गुलची।
बहार आ जाएगी उस दम
जब अपना बागवां होगा॥

कभी वह दिन भी आएगा
जब अपना राज देखेंगे।
जब अपनी ही जमीं होगी
और अपना आसमां होगा॥

वतन की आबरू का पास
देखे कौन करता है।
सुना है आज मकतल में
हमारा इम्तहां होगा।

शहीदों की चिताओं पर
लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का
यही बाकी निशां होगा॥

सरदार भगतसिंह जी मौत की आखिरी घड़ी तक इतने व्यस्त रहे जैसे कि कुछ होने वाला ही न हो।

फांसी की कोठरी में बेहद व्यस्त रहते थे। दिन में मिलने के लिए अधिकारी, वकील और अंग्रेज लाहौर छावनी से आते उनकी बातचीत से बहुत प्रभावित होते और उन की जिन्दादिली की सराहना करते।

वह नेताओं या सरकार के अपने से सम्बन्धित बयानों के के जवाब लिखते रहते। पार्टी के साथियों के गुप्त पत्रों के उत्तर देते, पार्टी की नीति के बारे में हिदायतें लिख कर बाहर भेजते, कैसा समाज चाहिए, नौजवानों को सन्देश देते, पंजाब के राज्यपाल को ऐतिहासिक पत्र आदि लिखते, रात को जेल के प्रेस से कागज मंगवाकर बिजली की रोशनी में लिखते, जेल के अफसरों के आने से पहले वह कागजात छिपाने के लिए भेज देते। फांसी की कोठरी से अपने साथी दत्त को एक पत्र स्मगल करके मुलतान जेल को भेजा। पत्र यूं था—

"प्यारे साथी दत्त जी!

तुम और मैं देश की आजादी के लिए एक रास्ते पर चले। मुझे मौत की सजा मिली, तुम्हें उम्र कैद हुई। फांसी की तुलना में उम्र कैद की सजा कठिन है।

मैं खुशी-खुशी फांसी पर चढ़कर दुनिया को दिखा दूंगा कि क्रांतिकारी अपने आदर्श के लिए किस तरह बहादुरी के बलिदान दे सकते हैं। तुम्हें उम्र कैद की सजा मिली है तुम ने जिन्दा रहकर दुनिया को दिखाना है कि क्रांतिकारी अपने आदर्श के लिए मर ही नहीं सकते बल्कि जिन्दा रहकर हर मुसीबत का मुकाबला भी कर सकते हैं। मौत सांसारिक दुखों से मुक्ति प्राप्त करने का साधन नहीं बनना चाहिए बल्कि जो क्रांतिकारी केवल संयोग से फांसी से बच गए हैं उन्हें दुनिया को जिन्दा रह कर यह दिखाना चाहिए कि वे न केवल अपने आदर्श के लिए फांसी पर चढ़ सकते हैं बल्कि जेल की तंग और अंधेरी कोठरियों में घुल-घुलकर निकृष्टतम ढंग के कष्ट भी सह सकते हैं।

आपका साथी,
भगतसिंह"

(पृष्ठ ५ का शेष)

वायु प्रदूषण की अपेक्षा आचार प्रदूषण महाघातक

अपने आचरण की बहुत सम्भाल रखो, क्योंकि जहां चाहो खाजो= सदाचार से बढ़कर सहायक जीते-मरते कहीं नहीं पा सकते। जिस पुरुष का आचरण पवित्र है, उसकी सभी इज्जत करते हैं, इसलिये सदाचार को प्राणों से भी अधिक मूल्यवान् समझो। दृढ़-प्रतिज्ञ सदाचार से कभी नहीं हटते क्योंकि वे जानते हैं कि सदाचार त्याग से कितनी आपत्तियाँ आती हैं और कितनी भारी हानियां भी होती हैं।

अहिंसा, इन्द्रिय संयम दया, क्षमा, मन का निग्रह, ध्यान और सत्य—इन सात पुष्पों द्वारा की हुई पूजा से भगवान् जितने प्रसन्न होते हैं, उतने साधारण भौतिक पुष्पों से नहीं होते; क्योंकि भगवान् को पुष्पादि सामग्रियों की अपेक्षा सद्गुण (सदाचार) अधिक प्रिय है। श्रद्धालु भक्त को छोड़कर भला इन सदाचारियों से भगवान् की पूजा दूसरा अन्य कौन करेगा।

बस अन्त में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि यदि वास्तव में देशहित और मानव समाज का कल्याण चाहना है तो वर्तमान में देशव्यापी आचार प्रदूषण की विषैली वायु से इसको मुक्त करने का प्रयत्न करना होगा। शासकों तथा नेताओं को अपने जीवन से आदर्श उपस्थित करके जनता का मार्ग दर्शन करना होगा—वरन् सत्य जानिये कि यह ऐसी विषैली वायु हमें जला रही है कि वह दुर्दिन दूर नहीं है जब हम पतन के ऐसे गर्त में गिरे पायेंगे, जिसमें से निकलना कठिनतम हो जायेगा। प्यारे नेताओ, देशवासियो जागो और सदाचार को अपना कर देश बचाओ। यही धर्म है और यही सत्कर्म है।

धन्यवाद

(पृष्ठ १ का शेष)

आर्य कन्या गुरुकुल नरेला

ताकि ये लड़कियां गुरुकुल से विदा होने के बाद जीवन संग्राम में डटकर संघर्ष कर सकें।

गुरुकुल में पुरातत्व महत्त्व के ६.९३५ सिक्के भी हैं। ये सिक्के दुनिया के विभिन्न देशों के हैं। गुरुकुल की छात्रायें वार्षिक पत्रिका भी निकालती हैं जिसका नाम 'ब्रह्मचारिणी' है।

सामवेद यज्ञ गुरुकुल परिसर में आज पूरा हुआ। प्रिंसिपल, आचार्य बहन सौमित्र अपनी सभी छात्राओं के साथ उपस्थित थी।

इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रतिष्ठित विद्वानों के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव तथा महामन्त्री डा० धर्मपाल ने भी जनसमूह को सम्बोधित किया। □

आर्य निर्देशिका का प्रकाशन

दिव्य पब्लिकेशन्स अजमेर के तत्वावधान में 'आर्य निर्देशिका' का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें आर्यजगत् के पूज्य संन्यासियों, मूर्धन्य विद्वानों, प्रचारकों, उपदेशकों, वानप्रस्थों व प्रतिष्ठित आर्य-सभासदों के सचित्र जीवन परिचय तथा प्रसिद्ध आर्यसमाजों व सभाओं के विवरण प्रकाशित किए जाएंगे।

जिन महानुभावों व आर्यसमाजों ने अपने विवरण आदि अभी तक प्रेषित नहीं किये हैं, उनसे निवेदन है कि वे अब शीघ्र ही अपने विवरण निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें—

सतीशचन्द्र शुक्ल
प्रबन्धक, वैदिक यंत्रालय
केसरगंज, अजमेर ३०५००१

॥ ओ३म् ॥

तेंतीस देवता व्यवहार के लिए हैं

ब्रह्म ही एक उपास्य देव है और सब देवता व्यवहार मात्र की सिद्धि के लिए हैं।

—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

अब आगे देवता विषय में तेंतीस देवों का व्याख्यान लिखते हैं। जैसा ब्राह्मण ग्रन्थों में वेद मन्त्रों का व्याख्यान लिखा है (त्रयस्त्रिंशत्) अर्थात् व्यवहार के ये (३३) तेंतीस देवता हैं—(८) आठ वसु, (११) ग्यारह रुद्र, (१२) बारह आदित्य, एक इन्द्र और एक प्रजापति।

उनमें से आठ वसु ये हैं—अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ, चन्द्रमा और नक्षत्र। इनका वसु नाम इस कारण से है कि सब पदार्थ इन्हीं मे बसते हैं, और ये ही सब के निवास करने के स्थान हैं।

(११) ग्यारह रुद्र ये कहाते हैं जो शरीर में दश प्राण हैं, अर्थात् प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय और ग्यारहवा जीवात्मा है। क्योंकि जब वे इस शरीर से निकल जाते हैं तब मरण होने से उसके सम्बन्धी लोग रोते हैं। वे निकलते हुए उनको रुलाते हैं, इससे इनका नाम रुद्र है।

इसी प्रकार आदित्य बारह महीनों को कहते हैं, क्योंकि वे सब जगत् के पदार्थों का आदान अर्थात् सब की आयु को ग्रहण करते चले जाते हैं, इसी से इन का नाम आदित्य है।

ऐसे ही इन्द्र नाम बिजुली का है, क्योंकि वह उत्तम ऐश्वर्य की विद्या का मुख्य हेतु है। और यज्ञ को प्रजापति इसलिए कहते है कि उससे वायु और वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा प्रजा का पालन होता है। तथा पशुओं की यज्ञ संज्ञा होने का यह कारण है कि उनसे भी प्रजा का जीवन होता है। ये सब मिल के अपने अपने दिव्य गुणों से तेंतीस देव कहाते हैं। और तीन देव—स्थान, नाम और जन्म को कहते हैं। दो देव—अन्न और प्राण को कहते हैं। अध्यर्धदेव अर्थात् जिससे सब का धारण और वृद्धि होती है, जो सूत्रात्मा वायु सब जगत् में भर रहा है, उसको अध्यर्धदेव कहते हैं।

प्र०—क्या ये चालीस देव भी सब मनुष्यों को उपासना के योग्य हैं ?

उ०—इनमें से कोई भी उपासना के योग्य नहीं हैं, किन्तु व्यवहारमात्र की सिद्धि के लिए ये सब देव है, और सब मनुष्यों के उपासना के योग्य तो देव एक ब्रह्म ही है। इसमे यह प्रमाण है—(स ब्रह्म०) जो सब जगत् का कर्त्ता, सर्वशक्तिमान् सबका इष्ट सब को उपासना के योग्य सब का धारण करने वाला, सब मे व्यापक और सब का कारण है, जिसका आदि अन्त नहीं और जो सच्चिदानन्दस्वरूप है, जिसका जन्म कभी नहीं होता, और जो कभी अन्याय नही करता, इत्यादि विशेषणों से वेदादि शास्त्रों में जिसका प्रतिपादन किया है, उसी को इष्टदेव मानना चाहिये और जो कोई इससे भिन्न को इष्ट देव मानता है, उसको अनार्य्य अर्थात् अनाड़ी कहना चाहिये। क्योंकि—

(ओमित्ये० इसमे आर्यों का इतिहास शतपथब्राह्मण मे है कि परमेश्वर जो सब का आत्मा है, सब मनुष्यो को उसी का उपासना करनी उचित है। इसमें जो कोई कहे कि परमेश्वर को छोड के दूसरे में भी ईश्वर बुद्धि से प्रेमभक्ति करनी चाहिए तो उससे कहे कि तू सदा दुःखी होके रोदन करेगा, क्योंकि जो ईश्वर की उपासना करता है वह सदा आनन्द में ही रहता है। जो दूसरे मे ईश्वरबुद्धि करके उपासना करता है वह कुछ भी नहीं जानता, इसलिये वह विद्वानो के बीच मे पशु अर्थात् गधा के समान है। इससे यह निश्चय हुआ कि आर्य लोग सब दिन से एक ईश्वर ही की उपासना करते आये हैं।

व्यवस्थापक
वैदिक प्रचार समिति
१२१, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७

(पृष्ठ ३ का शेष)

दानवीर महाशय धर्मपाल

उन्होने एक वेद प्रचार मण्डल की भी स्थापना की है। जिसमें २० उपदेशक प्रचार कार्य कर रहे हैं महाशय जी का पूर्ण परिवार धार्मिक एवं आस्तिक है यह और भी हर्ष की बात है। आर्यसन्देश परिवार की ओर से हम उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं। प्रभु से उनके शतायु होने की मगल कामना करते हैं।

—यशपाल सुधांशु

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
...प्रेस गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश
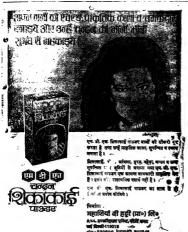
वर्ष ११ अंक २२ रविवार ५ अप्रैल, १९८७ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ चैत्र २० दयानन्दाब्द १६२
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश में ५० डालर ३० पौंड

स्वामी दयानन्द ने वैचारिक और सामाजिक क्रान्ति का महान् उद्घोष किया –श्री बलराम जाखड़

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर अपार जन समूह

धर्म और सम्प्रदाय की आड में राजनीति चलाने वाले तत्त्वों को देश को पुन खण्डित करने की चाल कभी सफल नहीं होने दी जाएगी। जनमत के आधार पर ऐसी तोडक ताकतों के खिलाफ सख्त कानून बना कर शिकजा कसा जाना चाहिए। लालकिला मैदान मे आर्यसमाज स्थापना दिवस के ११२वें समारोह का उद्घाटन करते हुए लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड ने उक्त विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने स्वभाषा, स्वधर्म, स्वराज्य और स्वसस्कृति का नारा देकर भारतीय जनमानस को अन्धकूप से निकलने का आह्वान किया था। स्वामी दयानन्द ने क्राति की दुन्दुभि उस समय बजाई, जब देश के विज्ञान, शिल्प, शिक्षा, स्वाभिमान व सस्कृति पर विदेशी पूरी तरह हावी हो चुके थे तथा पाखण्ड ने हिन्दू समाज को विघटन के कगार पर ला खडा किया था।

उन्होंने कहा कि आज भी देश को तोडने वाली शक्तिया पुन सक्रिय हैं, जिन से जूझने के लिए स्वामी दयानन्द के उक्त चारो सिद्धान्तो के अनुसरण की अत्यन्त आवश्यकता है।

श्री जाखड ने सस्कृत को सभी भाषाओं की जननी बताते हुए उस के उत्थान, प्रचार व प्रसार मे सरकारी स्तर पर अभियान छेड़ने पर बल दिया। श्री जाखड ने देश के कुछ हिस्सो मे व्याप्त आतकवाद की समस्या पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि आतकवादी जिस डाल पर बैठे हैं उसी को काटने की कोशिश कर रहे हैं किन्तु देश की जनता ऐसा नही होने देगी। उन्होंने कहा, भगतसिंह ने कुर्बानी ऐसा देश बनाने के लिए नहीं दी थी जिस मे उसकी बहन को गोली मार दी जाए।

इस अवसर पर सीताराम केसरी ने कहा कि आर्यसमाज मे जो पुरानी ज्वाला थी उसे फिर जाग्रत करना होगा। इस सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की। सभा को डा० वाचस्पति उपाध्याय और श्री राजगुरु शर्मा ने भी सम्बोधित किया। आर्यसमाज दीवानहाल के वार्षिकोत्सव पर आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान धान मे आयोजित समारोह का सयोजन श्री मूलचन्द गुप्त ने किया।

आर्यसमाज दीवानहाल वार्षिकोत्सव सम्पन्न

देश की व्यावहारिक भाषा हिन्दी ही हो सकती है

——के० सी० पंत

आर्यसमाज दीवान हाल के १०२वें वार्षिकोत्सव पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री के०सी० पन्त ने कहा कि हजारो साल से चली आ रही भारतीय सभ्यता इसलिए जीवित है कि हम ने अपने नैतिक मूल्यो को कायम रखा है। महर्षि दयानन्द ने इन्ही सामाजिक मूल्यो पर बल दिया। आर्यसमाज की राष्ट्र भक्ति व देश-प्रेम निर्विवाद है। उन्होंने कहा, देश की व्यावहारिक भाषा हिन्दी ही हो सकती है। तमिलनाडु ने हिन्दी का विरोध, जो अपने आप में ही समाप्त हो गया, इस बात को बताता है कि वे भी अब हिन्दी को आवश्यक मानते हैं। पाकिस्तान द्वारा अणु बम बनाने के सन्दर्भ में श्री पन्त ने कहा कि जनता को अपना मनोबल गिरने नहीं देना चाहिए। सरकार इस बात के लिए कृतसकल्प है कि वह देश की सीमाओं की रक्षा किसी भी कीमत पर करेगी। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए प० रामचन्द्र राव वन्दे मातरम् ने कहा कि साम्प्रदायिकता, भाषावाद, क्षेत्रीयवाद और जातिवाद हमारे देश को घुन की तरह खा रहे हैं। मुख्य वक्ता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि पाकिस्तान के इस्लामी बम से देश की सुरक्षा को गम्भीर खतरा पैदा हो गया है। इसी तरह देश के भीतर भी विघटनकारी सिर उठा रहे हैं। पाकिस्तान के बम का जवाब यही है कि भारत भी बम बनाए। स्वामी जी ने राम जन्मभूमि की रक्षा के लिए उचित कदम उठाने की मांग की। सम्मेलन मे खेल प्रतियोगिताओं मे भारत जैसे विशाल जनसख्या वाले देश के असफल रहने पर खेद व्यक्त करते हुए क्रिकेट जैसे निरर्थक खेल को रोकने की मांग की गई। प० राजगुरु ने भी अपने ओजस्वी विचार व्यक्त किये।

आर्यसमाज दीवान हाल का १०२वा वार्षिकोत्सव २७ मार्च से

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादक—प० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

सेवकों को अधिक आवश्यकता है

—प्रिंसिपल ओमप्रकाश

बलिदान के देवता, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य कुमारों को पुकारते हुए कहा था, "सेवक बनने का प्रयत्न करो, क्योंकि लीडरों की अपेक्षा आर्य जाति को सेवकों की अधिक आवश्यकता है। जब कभी आप का पैर डगमगाने लगे, तो राम के सेवक हनुमान् का स्मरण कर लिया करो···नवयुवको ! मैं पूछता हूँ क्या तुम में से कोई भी दयानन्द रूपी राम का सेवक हनुमान् बनने का यत्न न करेगा !"

वीर संन्यासी की लगभग ६० वर्ष पहले की गई पुकार आज भी नई दिखती है। सेवक' मैदान मे बहुत कम उतर रहे हैं। कर्मठ व निष्ठावान कार्यकर्त्ताओं की संख्या घट रही है। पदलोलुप व स्वार्थरत 'लीडर' खूब पनप रहे हैं।

इस स्थिति का परिणाम यह है कि आर्यसमाज के पवित्र संगठन में गाहे-बगाहे विघटन की लहरें उद्वेलित होती रहती हैं; अनुशासनहीनता के करिश्मे दृष्टिगोचर होते रहते हैं। तथाकथित लीडरों की वास्तविक नेताओं से खींचातानी होती रहती है और उस का प्रभाव साधारण सदस्यों पर पड़ता रहता है। लीडरी की भूख के मतवाले, अखबारों में 'सुप्रसिद्ध आर्य नेता' विशेषण छपवाने वाले इन श्रीमानों के चक्र देखकर अनेक नवयुवक आर्यसमाज की सेवा से ही विमुख होने को विवश हो गए।

एक आम आवाज है कि आर्यसमाज में नवयुवक नहीं आ रहे। मुद्दत से हम सुनते आ रहे हैं यह बात। लीडर यह नहीं मानते कि ठोस व सतत प्रयत्न ही इस दिशा में नहीं किया गया। कितनी सभाओं ने, कितने आर्यसमाजों ने बजट में 'आर्य कुमार सभा', 'आर्य युवक समाज' एव 'आर्य वीर दल' के लिए कोई निश्चित धनराशि रखी। कितने लीडरों के बच्चे 'आर्य वीर दल' में हैं जो कि आर्यों की शिरोमणि 'सार्वदेशिक सभा' द्वारा सचालित एव मान्यता प्राप्त एकमात्र युवक संगठन है। उत्सवों पर जलूसों पर बेइन्तहा रुपया खर्च किया गया पर 'युवक-संगठन', सेवक निर्माण' की ओर सम्यक् ध्यान नहीं दिया गया। और यदि कभी कहीं शताब्दी आदि समारोह के समय, ऐसा हुआ तो 'लीडरों' ने अपनी महत्वाकांक्षा की गंगा-जमुना में उसे प्रवाहित कर दिया। पोस्टरों में नाम और अखबारों में फोटो छपने तक सीमित कर दिया। उसे कोई स्थिर रूप देने की चिन्ता नहीं की।

भारत की राजधानी दिल्ली में तो हमने आश्चर्यजनक घटनाएं देखीं व सुनीं। वैधानिक नेताओं को मजबूर किया गया कि अमुक 'आर्यरत्न' को आर्य वीर दल का अधिष्ठाता, संचालक—सर्वेसर्वा बना दिया जाए। कड़ी शर्तें लगाई गईं सभा से पैसा लिया गया, पहले निष्ठावान संचालक से त्यागपत्र देने को कहा गया। फिर भरी सभा में घोषणा हुई, "अब युवक आर्य वीर दल में बाढ़ की तरह आएंगे··दो-तीन मास में दिल्ली में सड़कों पर हजारों आर्य नौजवानों का मार्च होता दीखेगा।" आंखें तरसती रहीं, वह मार्च नहीं दीखा। कई साल बीत जाने पर भी।

दुःखद परिणाम सामने है। सब कुछ माँ के पास है, पर वह परेशान है कि 'सेवक पुत्र' अब मोर्चे नहीं ले रहे। आर्यसमाज का रचनात्मक कार्य ठप्प सा पड़ा है, जो काम हो रहा है, उसके भीतर खोखलापन बढ़ रहा है। राष्ट्र में विघटनकारी तत्त्व सिर उठा रहे हैं और देश में अलगाववाद, नास्तिकता, गुण्डम, भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। आर्यसमाजों के जलसे फीके पड़ रहे हैं और सत्संगों में हाजरी कम हो रही है। जमाना दिव्यद्रष्टा दयानन्द के क्रान्तिवाद का लोहा मानने की ओर जब पग बढ़ा रहा है, हम पारस्परिक कलह-क्लेशों में शक्ति व धन का अपव्यय कर रहे हैं। एक दूसरे को गिराने, चुनाव में हराने व अन्य ढंगों से अपमानित करने की ही फिक्र में रहते हैं। इस परिस्थिति से लाभ उठाकर घुसपैठिए आर्यसमाज में आए और आ रहे हैं। बन्दूक कंधे पर रख कर, जंगल में मंगल करने वाले वीतराग संन्यासी श्रद्धानन्द का 'गुरुकुल कांगड़ी' रूपी गुलिस्तां ही उजाड़ दिया ऐसों ने।

समय बड़ा भयावह है। आर्यसमाज को फिर से आन्दोलन का रूप अति शीघ्र धारण करके धर्म और देश पर छाई घनघोर घटाओं के बीच ज्योत्स्ना चमकानी होगी। और उसके लिए पुनः अमर हुतात्मा श्रद्धानन्द की पुकार सुननी होगी कि 'आर्य जाति को लीडरों की अपेक्षा सेवकों की अधिक आवश्यकता है।' और मान्य नेताओं को अपनी परवाह न करके भी 'निष्ठावान वर्करों' के निर्माण की अति शीघ्र ठोस योजना बनानी होगी।

आर्यसमाज बांकनेर (दिल्ली) के वार्षिकोत्सव पर आयोजित युवा कार्यक्रम अनुकरणीय

—सूर्यदेव

आर्यसमाज बांकनेर के ३५वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित खेल-प्रतियोगिताओं का उद्घाटन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा कि यहाँ उपस्थित विशाल युवा-समूह को देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। मेरी इच्छा है कि आर्यसमाज बांकनेर की भांति अन्य समाजें भी इसी प्रकार के आयोजनों द्वारा युवकों को सम्मिलित होने की प्रेरणा दें। हम ने प्रतिनिधि सभा की ओर से भी प्रति वर्ष इसी प्रकार युवकों को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने के लिए आर्य युवा महासम्मेलनों का आयोजन करना आरम्भ किया है जिस में सभा को भारी सफलता मिली है।

आर्यसमाज बांकनेर का ३५वां वार्षिकोत्सव २८ फरवरी तथा १ मार्च, १९८७ को बड़ी धूमधाम, हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः ८ बजे से यज्ञोपदेश हुआ, जिस में पं० मूलचन्द गौतम तथा श्री पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री के प्रभावशाली प्रवचन हुए। मनुष्य को यज्ञमय बनने पर बल दिया गया।

खेल प्रतियोगिताओं (बालीबाल, कबड्डी, दौड़ तथा वजन-कुश्ती) में हजारों युवकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बालीबाल में गंगाराम क्लब, बांकनेर विजेता तथा बवाना क्लब उप-विजेता रही। कबड्डी (वरिष्ठ एवं कनिष्ठ) की शील्ड शक्ति स्पोर्ट्स क्लब, बांकनेर ने जीती तथा नरेला क्लब उप-विजेता रही। दौड़ (बालक) में अशोक पाराशर, एस एस. रंधा तथा सुरेन्द्र वान क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय एवं दौड़ (बालिका) में सुनीता प्रथम तथा कान्ता द्वितीय स्थान पर रहीं। वजन कुश्ती ६८ कि० से ८२ तक रमन (डेसू), संजय, जयप्रकाश, जयप्रकाश, आनन्द (नाहरी), अजय (डेसू), विजेन्द्र, रामसुनहरी (सैदपुर), लक्ष्मी नारायण (नरेला), महेन्द्र सिंह, आनन्द प्रकाश ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा संजय, राकेश, विजय पाल, वीरेन्द्र कुमार, अनिल कुमार, विजेन्द्र तथा सुनील (सांपला) द्वितीय स्थान पर रहे।

निबन्ध प्रतियोगिता में कुलदीप सिंह, देवकान्त तथा हीरालाल प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहे। भाषण प्रतियोगिता में राजेन्द्र सिंह, कुलदीप सिंह तथा ज्ञानप्रकाश ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजय कुमार

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्यसमाज स्थापना प्रेरणा और सन्देश

—डा० महेश विद्यालकार

आर्यसमाज की स्थापना घोर अधकार में प्रकाशस्तम्भ के रूप में हुई थी। भारत अपने स्वरूप को विस्मृत कर रहा था। इसी स्वरूप बोध हेतु आर्यसमाज का आविर्भाव हुआ। हम अपने स्वधर्म, स्वसस्कृति स्वाभिमान, स्वमातृभूमि, स्वभाषा एव स्वदेशी खान पान, रहन सहन को भूल चुके थे। वैदिक चिन्तन इन्हीं बातों में मौलिकता, नवीनता और विशेषताओं का सन्देश लेकर आया। इसीलिए ऐतिहासिक धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक सभी दृष्टियों से इसका महत्त्व एव योगदान है। देश शुद्ध सनातन सहज सरल वैदिक धर्म को भूलकर कपोल कल्पित, अवतारवाद मूर्तिपूजा, आडम्बरो, रूढियो, पाखण्डों और मतमतान्तरों में भटक रहा था। आर्ष कर्म,उपासना का स्थान मिथ्या विश्वास जादू-टोने, तन्त्र-मन्त्र एव जडपूजा ने ले लिया था। पचमहायज्ञों को छोडकर लोग समोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि भ्रामक बातो में फस रहे थे। लोग सर्वव्यापक परमात्मा की उपासना से विमुख होकर आधुनिक देवी देवताओं की पूजा करने लगे थे। मन्दिर और देवस्थान, भग-चरस, मादक द्रव्यों, अनाचार, दुराचार एव छल प्रपच के गढ बन गए थे। वैदिक वर्ण-व्यवस्था टूट और छूट रही थी। सच्चे महात्माओं, सन्यासियो का स्थान धूर्त-पाखण्डी अकर्मण्य, विद्याशून्य साधु ले रहे थे। भोली-भाली जनता को लूट रहे थे। वेदो के बारे मे अनेक मिथ्या, भ्रामक बात फल चुकी थी। धर्म केवल रूढियो मे सीमित हो रहा था।

दूसरी ओर यूरोप से उठी पाश्चात्य सभ्यता की आधी बडी तेजी से प्राचीन मान्यताओ आदर्शों, और गौरवपूर्ण इतिहास को छिन्न-भिन्न करने का षड्यत्र रच रही थी। 'यथा राजा तथा प्रजा'' की कहावत चरितार्थ हो रही थी। अधिकाश जनता गोरे अग्रेजो के रहन-सहन, खान-पान, भाषा एव योग्यताओ की नकल कर गौरव अनुभव करने लगी थी। हर चीज को यूरोप के चश्मे से देखने की प्रवृत्ति तेजी से बढ रही थी। शिखा-सूत्र, आचमन, धर्म-कर्म, खान-पान आदि पर प्रश्न चिह्न लग रहे थे।

पाश्चात्य शिक्षा से दीक्षित लोग निरीश्वरवादी, अहवादी, सदेहवादी एव भोगवादी नास्तिक हो रहे थे। निम्नजाति एवम् उच्चजाति की दीवार बढ़ती जा रही थी। इससे ईसाई पादरियों के प्रभाव में आकर लोग ईसाई मत ग्रहण करने लगे थे। प्राचीन सस्कृति एव सभ्यता अपनी वैभव एव गरिमा से दूर हटते जा रहे थे। प्रभु की कृपा और दया से वेद धर्म तथा सस्कृति की रक्षार्थ ऋषिवर का आगमन हुआ। उस पुण्यात्मा ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए और ससार के उपकार हेतु आर्यसमाज की स्थापना की। इसकी स्थापना के मूल में सर्वहितकारी एव प्राणीमात्र के कल्याण, उत्थान एव निर्माण की भावना रही है। इसलिए इसके चिन्तन, मनन, दर्शन एव मान्यताओ मे व्यापकता विराट्ता विशालता, उदारता तथा समग्रता विद्यमान है। सारी वसुधा को दृष्टि मे रखकर नियम एव व्यवस्था दी गई है। जैसा कि स्पष्ट है 'सर्वे भवन्तु सुखिन, वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु यत्र विश्व भवत्येकनीडम्' आदि कथन प्रमाण हैं।

ऋषि महान् भविष्य द्रष्टा थे। उन्होंने अग्रेजों की गहरी, भयकर और खतरनाक चाल एव साजिश को समझ लिया था। उनका हृदय भारत के भविष्य की कल्पना से आहत हो उठा। देशवासियो को गहरी तथा नशीली निद्रा से जगाया। अग्रेजो ने हमारे साहित्य और इतिहास को ऐसा विकृत एव भ्रष्ट किया कि वास्तविक सत्य हमारी आखो से ओझल हो गया। अग्रेजो ने इतिहास मे लिखवा दिया कि आर्य लोग इस देश के रहने वाले नहीं थे। वे तो मध्य एशिया से आक्रमणकारी के रूप मे भारत आए थे। किंतु यह उस महान् भारतीयात्मा का स्वर्णाक्षरो में लिखने योग्य ऐतिहासिक योगदान रहा है कि आर्य लोग कही बाहर से नही आए। वे इसी देश के वासी हैं। आर्यों से पहले इस देश में कोई भी नहीं बसता था। आर्यों के इस देश मे बसने के कारण ही इस देश का नाम आर्यावर्त हुआ है। इससे पहले इस देश का कोई और नाम नहीं था। दूसरे महर्षि ने यह प्रमाणित कर दिया कि वेद सब विद्याओं की पुस्तक है। गडरियों के गीत नही हैं। सारे ससार का आह्वान किया कि यदि वेदो के बारे में किसी को शका हो तो सामने आए। कोई सामने नही आया। अन्तत मैक्समूलर मानने को बाध्य हुआ कि महर्षि दयानन्द वेदो के धुरन्धर विद्वान् हैं। उनकी बनाई हुई 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पढे बिना वेद के मर्म को नही समझ सकते हैं। ऋषि ने इन्द्र मित्र वरुणमग्निम् का प्रमाण देकर सिद्ध किया कि अग्नि, मित्र वरुण आदि उस परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार गौणिक नाम हैं। आर्यजन उसी एक परमात्मा की उपासना किया करते थे।

उस महामानव ने भारतीयो के अन्दर स्वाभिमानहीनता आत्महीनता एव स्वत्वहीनता की भावना को हटाने-मिटाने तथा छुडाने का पुरजोर प्रयत्न किया। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे बडी प्रबलता से स्पष्ट किया है –

एतद्देशप्रसूतस्य
सकाशादग्रजन्मन ॥
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन
पृथिव्या सर्वमानवा ॥

ओ ससार के लोगो। भारत भूमि की शरण मे आओ। यहा से आचार विचार, व्यवहार और चरित्र को शिक्षा ग्रहण क ।

उन्होंने भारत को स्वर्ग भूमि का नाम दिया है। उनकी मान्यता है कि यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल मे कोई दूसरा देश नही है।

आर्यसमाज स्थापना दिवस ऋषि अनुयायियो भक्त व सभी को सोचने विचारने और करने के लिए प्रेरित कर रहा है। आज देश, धर्म एव सस्कृति फिर खतरे के दौर से गुजर रहे हैं। देश की अखण्डता व एकता पर प्रश्न चिह्न लग रहा है ? राष्ट्रीय चेतना और भावना क्षीण हो रही है। धर्म अपने मूलभाव से हटकर ढोंग पाखण्ड प्रदर्शन, कोलाहल और आडम्बरो मे घिरता जा रहा है। गली गली में धर्म और भगवान् के नाम पर पीर पैगम्बर देवता, अवतार आदि सौदा करते हुए घूम रहे हैं सस्कृति के नामपर नाचना, गाना बजाना, शोरगुल मचाना, और पूर्वजो की खिल्ली उडाना मात्र ही सस्कृति का स्वरूप बनता जा रहा है। चारो ओर स्वच्छन्दता का पतनोन्मुखी वातावरण बनता जा रहा है

ऐसे भोगवादी और नास्तिक वातावरण मे आर्यसमाज को अपनी शक्ति स्वरूप और सगठन का पुनर्मूल्याकन करना होगा। क्योकि आर्यसमाज का जन्म ही जागरूक प्रहरी के रूप मे हुआ है। प्रहरी के सोते ही सब कुछ लुट सकता है। शान्त एकाग्र बैठकर ईमानदारी से अपने हृदय की धडकनो से पूछना होगा। क्या हम सच्चे अर्थों मे आर्य हैं ? क्या हम सच्चे ऋषि-भक्त हैं ? क्या हम ऋषि द्वारा बताए मार्ग पर चल रहे हैं ? नही तो इस पुण्य स्थापना पर्व पर सकल्प ल कि हम आर्योचित गुण, कर्म स्वभाव से जीवन को आदर्शमय बनायगे। आर्यसमाज का इतिहास त्यागमय रहा है। या से आर्यसमाज बढा फला फूला और आगे ब ा है। यदि हमारे जीवन म त्याग की भावना आ जाय तो सभी ... के, गुरुकुलो के समाजो के सगठनो के सब झगडे दूर हो सकते हैं। सेवा की भावना म व्यक्ति, सस्था और जीवन से ऊपर उठता है इस पवित्र भाव को जीवन मे स्थान देकर ही ऋषि का स्वप्न 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम पूरा करने मे समर्थ होगे। यही स्थापना दिवस का अमर सन्देश है।

प्रभु का मन्दिर/मेरा मन्दिर

—डा० रघुवीर वेदालंकार

मैं प्रभु के मन्दिर में जाता हूं—शान्ति प्राप्त करने। प्रभु के दर्शन करने। किन्तु क्या मुझे सचमुच शान्ति चाहिए? क्या मैं वस्तुतः प्रभु से प्रेम करता हूं, उसके दर्शन करना चाहता हूं? नहीं, मैं यह सब कुछ नहीं चाहता। यह तो मेरा आडम्बर मात्र है कि मैं शान्ति के नाम पर, प्रभुदर्शन के नाम पर मैं कुछ और ही करता हूं। कुछ और ही चाहता हूं। मैं भगवान् का नहीं, अपना मन्दिर बनाता हूं। तभी तो हमारे मन्दिरों की शक्ल अलग-अलग है। उनका रूप रंग अलग-अलग है। उनकी बनावट अलग-अलग है।

मैं कहीं एक ऐसा मन्दिर बनाता हूं जिसका मुख पश्चिम की ओर ही रहेगा, जिसके कोनों पर ऊंचे ऊंचे गोल गुम्बद बने होंगे। मेरा एक दूसरा मन्दिर है जहां पर क्रास का चिह्न लटका हुआ होगा, इसके बिना वह अधूरा है। इनसे अलग मेरा एक मन्दिर और है जिसकी चोटियां ऊपर से गोलाकार होंगी तथा वहां पर बहुत ऊंचाई पर एक झण्डा लगा होगा जिसको मैं निशान साहिब बोलता हूं। इनके अलावा मेरे कुछ मन्दिर और भी हैं जिनके अन्दर मैंने अपने आराध्य देव को भी मूर्ति के रूप में तराश कर स्थापित कर दिया है। इनमें कहीं पर मैंने बुद्ध की मूर्ति को बिठा दिया तो कहीं पर दिगम्बर की मूर्ति मैंने स्थापित की है। इसी प्रकार किसी मन्दिर में एक पत्थर को गोलाकार गढ़कर मैंने स्थापित कर दिया और स्वयं मैंने ही उनमें प्राणप्रतिष्ठा भी कर दी। ये मेरे भगवान् हैं मेरे आराध्यदेव हैं। इनको आप शिव-शंकर शम्भु कुछ भी कह लें। कैसी विडम्बना है कि स्वयं भवन ने भगवान् में प्राण प्रतिष्ठित किये हैं। इसी प्रकार अन्य कुछ मूर्तियां भी मैं अपने मन्दिरों में रख देता हूं। प्रत्येक मूर्ति का अपना अपना कमरा है। पूजा के बाद मैं उनमें ताला भी लगा देता हूं कि कहीं भगवान् चोरी न चले जाएं।

इसके अतिरिक्त मैं एक और मन्दिर बनाता हूं जहां न मूर्ति है, न कोई गुम्बद आदि। यहां केवल एक हाल है जिसमें मैं सप्ताह में एक बार यज्ञ एवं शुष्क भाषणों के द्वारा भगवान् को पाने की कोशिश करता हूं। इसे दूसरों से अलग करने के लिए मैंने इसके नाम से मन्दिर शब्द ही हटा लिया।

कितनी विविधता है इन मन्दिरों की? क्या ये सब भगवान् के मन्दिर हैं? यदि ऐसा है तो इन सबमें एक-रूपता होनी चाहिए। भगवान् तो सारी दुनिया का एक ही है, एक जैसा ही है, फिर इन मन्दिरों में विविधता क्यों? अपनी भावनाओं के अनुरूप, अपने मन्दिरों के अनुरूप मैंने अपने भगवान् की कल्पना भी तो विविध रूपों में कर ली। उसके एकत्व को उसकी सर्वव्यापकता को भंग कर दिया मैंने। निश्चय से ये मन्दिर प्रभु के मन्दिर नहीं हो सकते। ये सब मेरे मन्दिर हैं। मैंने अपनी भावनाओं के अनुसार इनका निर्माण किया है। तभी तो मैंने इनके अनेक नाम रख दिए हैं—मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा, शिवमंदिर, दिगम्बर जैन मन्दिर, दुर्गामन्दिर, बौद्ध विहार, आर्यसमाज आदि। ये हमारे अपने मन्दिर हैं। अपने सम्प्रदायों के अपने गुटों के, अपने संगठनों के जो कि हमने आपस में बनाए हुए हैं। यदि ये उस भगवान् के मन्दिर होते, उस प्रभु के मन्दिर होते जो इस समस्त संसार में व्यापक है, जिसके यहां हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, आर्य-समाजी आदि किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं है, तो इन मन्दिरों में भी कोई भेद न होता। इनमें एक-रूपता होती, क्योंकि भगवान् एक है, केवल एक है।

हमने ये मन्दिर बनाए हैं—समाज में वर्गभेद खड़ा करने के लिए। अपना संगठन बनाने के लिए। मन्दिर के नाम पर अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए। यही कारण है कि इनमें से किसी भी मन्दिर में मुझे शांति नहीं मिलती, मुझे भगवान् के दर्शन नहीं होते। मैं अपनी मान्यताओं को साकार करता हूं—मन्दिरों के नाम पर। ईश्वर कहां है, इसकी मुझे परवाह नहीं।

मन्दिर जाने का उद्देश्य कहने को तो सब का एक ही है—प्रभु की पूजना, शान्ति की प्राप्ति। किन्तु क्या वस्तुतः हम सब का यही उद्देश्य रहता है मन्दिर में जाने का? जिस प्रकार अर्जुन को वृक्ष पर टंगी चिड़िया की केवल आंख दिखलायी पड़ती थी, क्या मन्दिर में पहुंच कर मेरा लक्ष्य केवल प्रभु रहता है? नहीं, हम अभ्यस्त हैं सब कुछ देखने के। हमें वृक्ष भी दिखलायी देता है, चिड़िया भी दिखलायी देती है। मन्दिरों में पहुंच कर भी हमारी दृष्टि भी प्रभु को छोड़ कर अन्य वस्तुओं की ओर रहती है। शान्ति एवं मेरा प्रभु पीछे छूट जाते हैं। अन्य बातों में दब जाते हैं। यहां पर एक कहानी याद आती है। एक जिज्ञासु किसी महात्मा के पास शांति का मार्ग खोजने पहुंचा। गुरु ने पूछा कहां से आये हो। उत्तर मिला पीकिंग से। फिर पूछा–वहां चावलों का क्या भाव है। शिष्य ने भाव बतला दिया। गुरु ने दूसरे जिज्ञासु से पूछा–कहां से आए? वह सोने का व्यापारी था उत्तर मिला सिंगापुर से। गुरु बोले–वहां पर सोने का क्या भाव है? जिज्ञासु नाराज हो गया। उसे आश्चर्य हुआ मैं यहां शांति की खोज में आया था। ये सोने का भाव पूछ रहे हैं। वह बोला—मुझे पता नहीं यहां पर था वहां पर सोने का क्या भाव है। वह भाव सिंगापुर में छूट गया। मैं यहां केवल शान्ति का भाव करने आया हूं। गुरु ने परीक्षा में इसे पास कर दिया। चावलों के भाव बतलाने वाले को विदा कर दिया।

हमारी भी यही स्थिति है। हम वहां जाते समय मन से शून्य नहीं होते। कितनी भावनाएं कितने उतार चढ़ाव रहते हैं हमारे मन में। हमारा मन मन्दिर में पहुंच कर शान्ति को नहीं खोजता। हमारी दृष्टि प्रभु पर न होकर रहती है—मन्दिर के फर्श पर, गेट पर, दीवारों पर, पत्थरों पर, मन्दिर के रंग पर, उसकी बनावट पर तथा साज-सज्जा पर। यदि इनमें से थोड़ा सा भी मेरी भावनाओं के विपरीत हो जाता है, वह मुझे अच्छा नहीं लगता क्योंकि मेरा लगाव, मेरा तादात्म्य भगवान् या शान्ति से नहीं अपितु इन सब से है।

यदि थोड़ी सी और गहराई में प्रवेश करें तो मन्दिर में पहुंच कर मेरी दृष्टि रहती है-अपने ऊपर, अपने मान-सम्मान के ऊपर, अपनी कीर्ति पर, अपने नाम पर, जो कि मुझे मन्दिर से मिलना चाहिए या मैं मन्दिर के माध्यम से प्राप्त करना चाहता हूं। इससे भी आगे मेरी दृष्टि जाती है उस अप्रत्यक्ष पर, जो कि मुझे बिना मांगे वहां जाने पर प्राप्त हो जाता है। कहां खो जाता है प्रभु इस बीच? कहां चली जाती है शान्ति की इच्छा, इस समय इसकी मुझे परवाह नहीं रहती। मन्दिर कितना सजा-धजा होगा, इसका फर्श कितना चमचमाता होगा, इसकी दीवारें कितनी उज्ज्वल होंगी, इसका रंग कैसा सुन्दर होगा, मैं कहां बैठूंगा, मेरा कितना सम्मान होगा, मेरी बात कितनी मानी जाएगी, यही सब मैं सोचता रहता हूं दिन रात। और यदि यह सब कुछ मुझे नहीं मिलता तो मन्दिर मेरे लिए बेकार है।

यदि थोड़ा सा और गहराई में जाएं तो मेरी दृष्टि रहती है उन कार्यों पर जो मैं मन्दिर के नाम से करता हूं—स्कूल, अस्पताल, उत्सव आदि। इनको चलाने के पीछे प्रतिष्ठा एवं पैसा प्राप्त करने की मेरी भूख छिपी रहती है। उसको मैं मन्दिर के माध्यम से प्राप्त करना चाहता हूं। यदि ऐसा न होता तो अनेक मन्दिरों ने इनको अपना व्यापार न बना लिया होता। वहां पर प्रचार, शांति, प्रभु भक्ति, समाज सेवा पीछे न रह गये होते।

यदि इससे भी अधिक गहराई में प्रवेश करें तो मैं अपने प्रभु के पवित्र मन्दिर से अपनी उन क्रूर एवं कुत्सित घृणित भावनाओं की पूर्ति का भी यत्न करता हूं जो कि यदि समाज में की जाएं तो अधर्म कहलाती हैं किन्तु मन्दिर में होने पर धर्म का चोगा पहनने पर वे ही धर्म बन जाती हैं। यदि ऐसा न होता तो मैं अपने मन्दिरों में जनता जनार्दन के वध के लिए, दूसरे रूप में भगवान् को पूजने वालों की हत्या के लिए हथियार जमा न करता। अपने को धार्मिक कहलाने वाले लोगों ने ऐसा किया और इन कार्यों की पूर्ति के लिए मन्दिरों को खुले व्यभिचार का अड्डा बनाने में भी शर्म नहीं की।

पुजारियों एवं भगवान् के तथा-कथित भक्तों की ऐसी कुत्सित एवं घृणित इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही तो मन्दिरों में नाच गाने की

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्यसमाज और श्रीराम

—सत्यानन्द आर्य

आर्यसमाज श्री रामचन्द्र को महापुरुष मानता है। यह भ्रान्ति गलत है कि श्री राम को आर्यसमाज अवहेलना करता है। अपितु सच्चाई यह है कि आर्यसमाज ही श्री राम को सच्चे रूप में मानता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन को आदर्श जीवन मानकर और समझकर आर्यगण अपने जीवन के सुधार की प्रेरणा लेते हैं।

श्री राम तो ईश्वर का अवतार बताना लोगो की अनभिज्ञता का प्रतीक है। आर्यसमाज इस मान्यता के विरुद्ध है। ईश्वर को अवतार लेने की आवश्यकता ही नही होती। महर्षि दयानन्द के शब्दों मे—"जो ईश्वर अवतार शरीर धारण किये बिना जगत् को उत्पत्ति किया और प्रलय करता है, उसके सामने कंस और रावणादि एक कीडी के समान भी नही। वह सर्वव्यापक होने मे कंस रावणादि के शरीरो मे भी परिपूर्ण हो रहा है। जब चाहे उसी समय मर्मच्छेदन कर नाश कर सकता है। भला इस अनन्त गुण कर्म स्वभावयुक्त परमात्मा को एक क्षुद्र जीव के मारने के लिए जन्म मरणयुक्त कहने वाले को-मूर्खपन से अन्य कुछ विशेष उपमा मिल सकती है।" ईश्वर अजर और अमर है, जब कि श्री राम व तथा-कथित अवतारों ने जन्म लिया है और मृत्यु को भी प्राप्त हुए हैं।

लेकिन आर्यसमाज बडी श्रद्धा और भक्ति से श्री राम के गुणों का कायल है। राम को ईश्वर का अवतार न बनाकर आर्यसमाज भले ही उसकी पूजा, पाठ, चन्दन, चढावा का दिखावा न करता हो, लेकिन राम के चारित्रिक गुणो का जितना प्रचार-प्रसार उसने किया है, वह अतुलनीय है। उनके गुणो और कार्यो को अपना ध्येय व कार्य-क्रम का अंग माना है। श्री राम ने राष्ट्र उद्धार व दैत्यों से मुक्ति के लिए संघर्ष किया, उसकी प्रेरणा पाकर आर्यसमाज निरन्तर राष्ट्र निर्माण की योजना में अग्रसर रहा है तथा राष्ट्र विरोधी विध्वंसक तत्त्वों के साथ जूझता रहा है।

श्री राम का आदर्श जीवन उनके गुण, मातृ-पितृ-भक्ति, भ्रातृ-प्रेम व उन जैसे कुशल योद्धा व प्रशासक हरेक राष्ट्र नेता के लिए अनुकरणीय है। आर्यसमाज श्री राम के राष्ट्रधर्म व मानव के लिए किए गए कार्यो का गुण गान करता रहता है। उन गुणो को ग्रहण करने के लिए प्रेरित करता है।

कई लोगों द्वारा श्री राम के लिए को जाने वाली रामलीला को आर्यसमाज मान्यता नहीं देता। जिन तरीकों और पात्रों द्वारा इन महापुरुषों के जीवन व नाम से खिलवाड किया जाता है, वह उनके प्रति भक्ति या श्रद्धा का प्रतीक न होकर कृतघ्नता ही मानी जायेगी। आर्यसमाज सच्चे अर्थों मे जीवन मे उनके गुणो को ग्रहण करने व धारण करने की प्रेरणा देता है। धर्म के निर्दिष्ट लक्षणो के अनुसार श्रीराम धैर्य, क्षमा, दम आदि महान् गुणो से परिपूर्ण महामानव थे।

आर्यसमाज का श्री राम व अन्य महापुरुषो के चित्र लगाने मे भी कोई विरोध नही। हम इन महापुरुषो के चित्र बडी श्रद्धा से लगाते हैं, ताकि उन पूज्य जनो के उपकार विशेषताएँ स्मृति मे निरन्तर बने रहे। साथ ही आने वाली पीढिया भी सहज मे ही उनके जीवन मे परिचित और उनके गुणो से प्रेरित होती रहें।

□

प्रभु का मन्दिर…

(पृष्ठ ४ का शेष)

प्रथा ने प्रवेश किया था। देवदासियो की प्रथा इसीलिए तो प्रारभ की गयी थी। क्या ही अजीब साधन था-भगवान् को सुन्दरियों के नृत्य से रिझाना। यदि ऐसा ही है तो भगवान् मे तथा उस व्यक्ति मे क्या अन्तर रह जाता है जो कि शाम को इत्र फुलेल लगाकर शाम को नाचने वालियो के यहां नाच देखता है तथा गाने सुनता है।

इतना ही नही मन्दिरों के माध्यम से मैंने उन क्रूर कर्मों को भी प्रारम्भ किया जिनको लौकिक जीवन मे हिंसा कहा जाता है। यदि मन्दिर के बाहर किसी व्यक्ति अथवा पशु को मार दिया जाता है तो वह हत्या मानी जाती है, उसे पाप कहा जाता है किन्तु जब भगवान् के नाम पर भगवान् के मन्दिर में किसी पशु अथवा मनुष्य का सिर काटा जाता है तो उसे भगवान् के लिए बलि बतलाया जाता है। भगवान् अपनी सन्तानो की बलि से ही प्रसन्न होता है। उसकी प्यास उसकी सन्तानों के रक्त से तृप्त होती है। यदि ऐसा ही है तो बाजार में बैठे बधिक में तथा भगवान् के इन भक्तो में क्या अन्तर है ?

कितनी विडम्बना है ? मन्दिरो के नाम पर हम क्या क्या कर रहे हैं। किस प्रकार प्रभु के इन मदिरों को हमने अपनी इच्छाओं की पूर्ति का साधन बना डाला। मेरा भगवान मेरी शान्ति, दूर, बहुत दूर हो गये जिनको प्राप्त करने के लिए इन मन्दिरों का निर्माण किया गया था। हम ईंट-पत्थरों से इन मदिरों को जोडते रहे, इनको भव्य बनाते रहे, अपनी समस्त शक्ति उनमे लगाते रहे। ऐसे लोगों के लिए ही कबीरदास जी ने कहा था—

> काकर पाथर जोडि के
> मस्जिद लयी बनाय।
> ता चढि मुल्ला बाग दे
> क्या बहरा हुआ खुदाय॥

भोले लोगो ? प्रभु इन मन्दिरों मे नहीं, वह तो तुम्हारे अन्दर विद्यमान है। चलते फिरते सब ये प्राणी भगवान् के मन्दिर हैं। भगवान् सर्वव्यापक है। घर घर मे छिपा है। उसका असली मन्दिर तो मेरा मन है। यदि मैं अपने मनमन्दिर में झाकू तो मुझे इन मन्दिरों में जाने की जरूरत नहीं रहेगी। यदि मैं इसकी स्वच्छता पर ध्यान दू, इसके रग रूप को सवारू तो मुझे इस ईंट-पत्थरो के मन्दिर की अधिक चिन्ता नही होगी। किन्तु यह तब सम्भव है जबकि इस पक्ति पर भी ध्यान रखूं—

'मन मन्दिर में गाफला झाडू रोज लगाया कर।' मेरा मन तभी पवित्र होगा, शुद्ध होगा, स्वच्छ होगा, शान्त होगा। जब मैं द्वेष का भाव मिटाकर सभी प्राणियो को अपने अन्दर देखने का यत्न करूगा। जब मेरी स्थिति 'आत्मवत् सर्वभूतेषु य पश्यति स पश्यति' को हो जायेगी तब मैं कह सकूगा। मन मन्दिर में भगवान् बसे जो इसकी पूजा करता है। 'मैं अपने मन को ही मन्दिर बना लू, वही पर भगवान् को देखने का यत्न करू, वहा शाति को प्राप्ति का यत्न करूं क्योकि भगवान् का असली मन्दिर तो मेरा मन है। मुझे इस पर पूर्ण भरोसा है - 'बसे मन मन्दिर मे भगवान्।'

नये वर्ष पर शुभ कामना

> वेद दिशा नभ, नेत्र विक्रमी सवत् शुभ हो आपको।
> निकट न आने दे परमेश्वर शोक और सताप को॥
>
> दो सहस्र शुभ चवालीस है वीर विक्रमादित्य का।
> नित्य सुखों के साथ आपको दर्शन हो आदित्य का॥
>
> मेकाले के पुत्र जनवरी मे नव वर्ष मनाते हैं।
> अपनी भूल भ्रान्ति मे भारत को इग्लैण्ड बनाते हैं॥
>
> चैत्र शुक्ल प्रतिपदा आपका शुभ दिन है नव वर्ष का।
> देता है सन्देश आपको हर्ष और उत्कर्ष का।
>
> घर-घर मे हो यज्ञ, वेद का पाठ, सुखी परिवार हो
> धर्म, सभ्यता, सस्कृति का भूमण्डल मे विस्तार हो॥
>
> ईशकृपा से सुख प्रसन्नता प्रम रहे परिवार में।
> अमर, धर्म के साथ आपका यश फैले ससार मे॥

अमर स्वामी सरस्वती
वेद मन्दिर विवेकानन्द नगर
गाजियाबाद।

वेदों में विज्ञान

अन्तरिक्ष विज्ञान में गन्धर्व

छैलबिहारीलाल गोयल

वेदों मे मूलत विज्ञान का एक अदम्य स्रोत है और चारों ही वेद पूर्णतः एक वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं जो एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। आधुनिक विज्ञान में अन्तरिक्ष विज्ञान विकास की ओर अग्रसर है किन्तु हमारे वेदों में इसका पूर्णांत विकास करके वेदों मे भर दिया गया है।

अन्तरिक्ष विज्ञान के लिए सामवेद पूर्वार्चिक के मन्त्र स० ३२० "नाके सुपर्णमुप" में अन्तरिक्ष विज्ञान के लिए एक विद्या का बीज डाला गया है। इसका विस्तार सामवेद १८४६ से १८४८ वाले त्रिक में विस्तार किया गया है। इसमें ऋषि वेन हैं, देवता इन्द्र:, छन्द त्रिष्टुप्, इस त्रिक मे अन्तरिक्ष से सम्बन्धित अनेकानेक विज्ञान के सिद्धान्त एक-एक शब्द मे दिये गये हैं। इनका और अधिक विस्तार ऋग्वेद के मण्डल १० के सूक्त १२३ में मन्त्र स० ६ से ८ तक के वर्ग में किया गया है तथा इस विद्या का अथर्ववेद १८।३।६६ मे भी विधान है। इसमे मुख्यतः हमको गन्धर्व विज्ञान को लेकर चलना है। इस विद्या से सम्बन्धित कुछ संदर्भ तैत्तिरीय ब्राह्मण २।५।८।५ तै० आ० ६।३।१ मे भी कोई सिद्धान्त है। इसी तरह से ऐ० ब्रा० ४।५।२२ मे भी संगृहीत किया गया है।

मेधातिथि: ऋषि ने गन्धर्व शक्ति के संदर्भ मे ऋग्वेद ८।१।११ से १५ वाले वर्ग मे अन्तरिक्ष विज्ञान से सम्बन्धित विद्याओं पर प्रकाश डाला है। इसका देवता इन्द्र(विद्युत्) छन्द त्रिष्टुप स्वर: धैवतः है। यह प्रकरण सामवेद मन्त्र स० २४४ अथर्ववेद १४ २।४७, तैत्ति आरण्यक ४।२०।१, ताण्ड्य ब्राह्मण ९।१०।१, कात्यायन श्रौत सूत्र २५।५।३ तथा अथर्ववेद २०।११६ द्वारा सदर्भित है।

पवित्र ऋषि ने भी गन्धर्व या या अन्तरिक्ष को गन्धर्व शक्ति के लिए ऋग्वेद मण्डल ९ सूक्त ८३ एक से पांच वाले वर्ग में प्रकाश डाला है। इस प्रसग में पृथ्यावादि शक्ति का नाम गन्धर्व बतलाया गया है। इसके अनेकानेक सिद्धान्त इस प्रसग मे दिये गये हैं इस प्रसग का संदर्भ सामवेद ५६५,८७५ से ७७, तैत्ति. आरण्यक १।११।१ ता० ब्रा० १।२।८, ऐ० ब्रा० ४।४।२० से भी कुछ सम्बन्ध है।

त्रय ऋषिगण: ने भी अपने ऋग्वेद मण्डल ९।८६।३६ से ४० वाले प्रसंग में गन्धर्व विज्ञान को पृथ्वी को धारण करने वाली शक्ति से सम्बन्धित सिद्धान्तों का वर्णन किया है।

यह प्रसंग सामवेद ९५५ से ९५७ तक के प्रसंग द्वारा जुड़ा हुआ है।

परमेष्ठी प्रजापति ऋषि ने भी गन्धर्व शक्ति का विधान भी यजुर्वेद के अध्याय ७ के मंत्र स. १ से ६ वाले प्रसंग में पृथ्वी को धारण करने वाले प्रसंग में प्रकाश डाला है। इसका देवता अग्नि, छन्द–त्रिष्टुप्, स्वर धैवत है।

बृहस्पति ऋषि ने यजुर्वेद अध्याय ९ के १ से ४ वाले प्रसग में भी गन्धर्व शक्ति के विभिन्न सिद्धान्तों के समन्वय करने का प्रकाश डाला है। इसी तरह से इन्हीं ऋषि ने अध्याय ९ के २ से ६ वाले प्रसंग में भी गन्धर्व शक्ति का विधान किया है।

प्रजापति ऋषि ने भी यजुर्वेद के अध्याय १ से ११ वाले प्रसंग में गन्धर्व शक्ति के सिद्धान्तों को समन्वय करने के सिद्धान्त दिये हैं। इसका देवता सविता है इन सिद्धान्तों का और अधिक विस्तार ऋग्वेद १०।१३।१ और ५।८१।३, वाले प्रसगों में भी है। तथा यजुर्वेद ५।१४ और ३७।२ मे भी इस संदर्भ में प्रकाश डाला गया है। यह प्रसंग तैत्ति स ४।११ एक से २ तथा १।२।१३।१ द्वारा भी वेद के अन्य स्थलों से जोड़ा गया है।

वरुण ऋषि ने यजुर्वेद बारहवें अध्याय के ९८वें मन्त्र वाले प्रसग में वैद्यक विद्या से सदर्भित गन्धर्व विद्या के सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रसंग ऋग्वेद १० ९७।२१ से २५ वाले प्रसग से जुड़ा हुआ है।

विश्वकर्मा ऋषि ने भी यजुर्वेद अध्याय १७ के २५ से ३२ वाले चौथे अनुवाक मे गन्धर्व शक्ति को प्रयोग करने के सिद्धान्त दर्शाये हैं।

देवा ऋषि ने भी यजुर्वेद अध्याय १८ के ३८ से ५० वाले अनुवाक में गन्धर्व शक्ति के समन्वय करने के विभिन्न सिद्धान्त दर्शाये हैं।

भार्गवो जमदग्नि ऋषि: ने भी २९वे अध्याय के गन्धर्व शक्ति के द्वारा पृथ्वी को रोकने के विभिन्न सिद्धान्त दर्शाये हुए हैं।

नारायण ऋषि ने भी यजुर्वेद तीसरे अध्याय के प्रथम अनुवाक के ६ मत्रों में पृथ्वी को धारण करने वाली शक्ति का दिग्दर्शन कराया है। यह प्रसग ऋग्वेद ५।८२।५ यजुर्वेद ३६।३ ३।३५, १२।६, सामवेद १४ से ६२, ऋग्वेद १।२२।७, तैत्ति आरण्यक १०।२।१, तथा २।४।६।३, १०।१०।२, तैत्ति ब्रा० द्वारा एक दूसरे से सदर्भित है।

इस तरह से गन्धर्व शक्ति के चारो वेदों में अनेकानेक प्रसग मिलते हैं। इस शक्ति के द्वारा पृथ्वी और अन्य लोकलोकान्तर को स्थिर करने वाला सिद्धान्त दर्शाया गया है। अगर हमारे यहा के विद्वान् इसको एक वैज्ञानिक ग्रन्थ मानते हुए वेदों का अध्ययन करें और अध्ययन से निकलने वाले परिणामों को आधुनिक विज्ञान के वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत करे तो इस प्रकृति के बहुत अधिक रहस्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

अतरिक्ष विज्ञान में गन्धर्व शक्ति पर शोध कार्य हेतु वेदो में कुछ स्थल ऋ. १।२२।११-१५, १।१६३। १-५, २।२२।११-१४, ८।१।११-१५, ९।८३।१-५, ९।८६।३६-४०, ९।११३। १-५ १ ।११।१-५, १ ।८५।४ -४१, १०।१२३।६-१०, १०।१३९।१-६, १०।१३६।१-७, वर्ग क्रम देखना चाहिये।

सामवेद ३२०, २४४।५६५, ८७५-७७, ९५५-५७, १८४७।

यजुर्वेद—१।३, वाला पूरा अनुवाक क्रम देखना चाहिये २।३, ९।१, ९।७, ११।७, १२।९८, १८।३८-४३, १७।३२, २४।३७, ३०।१, २९।१३, ३२।९, ३३।४७, ३०।८।

अथर्ववेद—२।१।१, २।२।१-५, ४।३७।४-१२, ७।१०९।३, ८।७।२३, ८।१०।५, ८, ९।८०।१, १०।९।९, ११।५।२, ११।६।४, ११।९।१६, १२।१।२३, १२।१।५०, १४।२।४, १७, १८, ४०, ४४, ३५, २०।११६।१, २, २०।१२८।४, १३।१।२३, १९। ५४।४, आदि तैत्तिरीय संहिता ४। ६।७।१, तैत्तिरीय आरण्यक १।११।१ ३।११।११, ४।२ ।१, ४।११।५, ७, १०, ५।९।२२, २९, ३२, ६।३।१, १०।१।३, १०।२८।१,

तैत्तिरीय ब्राह्मण २।५।८।५, ताण्ड्य ब्राह्मण २।२।८, कात्यायन श्रौत सूत्र २५।५।३, तैत्तिरीयोपनिषद् २।८।१० छान्दोग्य उपनिषद २।२१।१।

(पृष्ठ २ का शेष)

आर्यसमाज बांकनेर का वार्षिकोत्सव

तथा मनीष प्रकाश को भाषण तथा कविता गायन के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार दिये गये।

बांकनेर गांव के राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों—कुश्ती में संजय, जयप्रकाश, सुरेन्द्र प्रकाश, आनन्द प्रकाश, कबड्डी में सुरेन्द्र तथा त्रिजेन्द्र, दौड़ में अशोक पाराशर को सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय स्तर के मेधावी छात्र ज्ञान प्रकाश तथा छात्रा सुनीता पंवार को वरीयता सूची में आने पर इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया। कुल १२१ युवक-युवतियों को सम्मानित, पुरस्कृत तथा प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर दी गई सभी शील्ड आर्यसमाज बांकनेर के उत्साही युवक कार्यकर्ता श्री गुरबचन सिंह ने अपने पूज्य पिता श्री गोविंदराम की स्मृति में दान रूप में प्रदान की।

इस ऐतिहासिक अवसर पर वैदिक विद्वान पूज्य प० देवेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत), वेद-मार्तण्ड का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया जिसमें एक शाल तथा ५०५ रु० की थैली भेंट की गई। पण्डित जी के लम्बे सामाजिक जीवन की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रनाथ शास्त्री जी बोलते हुए भाव-विभोर हो गए तथा कुछ रुककर उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द के ऋण को चुकाने के लिए आर्यजन तथा युवक युवतियों का आह्वान किया कि वे आर्य-समाज की रक्षा-पंक्ति बनकर आगे आयें।

आर्य युवक सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में डा० महावीर, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय ने युवकों को प्रेरित किया कि वे सदा बलवान् तथा विद्वान् बनने में संलग्न रहें।

निवेदक,
मेहरलाल पवार
मन्त्री

आर्यसन्देश विशेषांक

आर्यसन्देश साप्ताहिक का मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम विशेषांक १२ अप्रैल को प्रकाशित हो रहा है। अत: आर्यसन्देश के २५ रु० भेजकर सदस्य बनें। सदस्यों को विशेषांक निःशुल्क मिलेगा।

—सम्पादक

(पृष्ठ १ का शेष)

हिन्दी देश की…

प्रारम्भ होकर २९ मार्च को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कालेज और स्कूल के छात्र-छात्राओं की प्रभावशाली भाषण प्रतियोगिता हुई जिस में स्व० लालमन आर्य की स्मृति में पुरस्कार बांटे गये। कवि सम्मेलन, वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन विशाल समारोह जैसे कार्यक्रमों में भारी संख्या में जनता ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। उत्सव का प्रारम्भ यजुर्वेदीय यज्ञ से हुआ, जो तीन दिन तक चला। यज्ञ के ब्रह्मा श्री राजगुरु शर्मा थे तथा श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, पं० यशपाल सुधांशु ने यज्ञ संचालित किया। गुरुकुल वेद विद्यालय गौतम नगर के छात्रों ने वेद पाठ किया। यज्ञ पर आचार्य विश्वानन्द शास्त्री, पं० शिवकुमार शास्त्री ने विशेष सम्बोधन दिया। समस्त कार्यक्रमों का संयोजन मूलचन्द गुप्त ने किया।
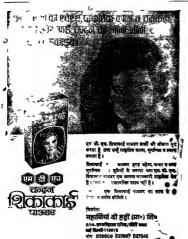
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७ कैलाशनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७५६

आर्यसन्देश विशेषांक

ओ३म्

आर्य सन्देश

श्री राम विशेषांक

इस अंक का मूल्य १० रुपये वार्षिक २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड
चैत्र २०४४ वर्ष ११ अंक २३ रविवार १२ अप्रैल १९८७ दयानन्दाब्द १६१

सम्पादक—यशपाल सुधांशु, एम० ए०

प्रकाशक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

अनुक्रमणिका

१.	सम्पादकीय	यशपाल सुधांशु	३
२.	वाल्मीकि के राम	रघुनाथ प्रसाद पाठक	५
३.	श्री राम और मांसाहार	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	८
४.	सद् विचारों के प्रचारक बनो	शिवकुमार शास्त्री	६
५.	मर्यादा पुरुषोत्तम राम	यशपाल सुधांशु	२०
६.	स्वराज्य की रक्षा चरित्र बल से	प्रकाशवीर शास्त्री	२२
७.	वीरांगना महारानी कैकेयी	गजानन्द आर्य	२६
८.	वेद और ज्योतिष	आचार्य सत्यमित्र शास्त्री	३३
६.	नहीं चाहिए चिमनियों का धुंआ (कविता)		३६
१०.	जीवन सारा बीत गया (कविता)		३७
११.	धन्य वही परिवार··· (कविता)	स्व० लालमन आर्य	४१
१२.	क्या राम ने शिवलिंग स्थापना कर उसकी आराधना की	सूर्या कुमारी	४२

सम्पादकीय--

श्रीराम द्वारा राक्षस विनाश महाभियान

--यशपाल सुधांशु

त्रेता युग का अन्तिम काल, कोसल देश की महानगरी राजधानी अयोध्या, सूर्यवंशी सम्राट् अज के सुपुत्र दशरथ का राज्यकाल। साठ मील लम्बी, पन्द्रह मील चौड़ी नगरी अयोध्या, जिसके चारों ओर गहरी जल भरी खाई। प्रस्तर की बनी दुर्ग की दीवारों के ऊपर रखी हुई तोपें, यन्त्रों, अस्त्रों-शस्त्रों के सज्जित, बलिष्ठ प्रहरी प्राचीर पर सतर्क। नगर के बाजारों को जोड़ती बड़ी-बड़ी विशाल सड़कें (राजमार्ग); अट्टालिकाओं के ओर छोर पर आम्रादि वृक्षों की झूमती डालियाँ, बीच-बीच में हरित उद्यान जिन मे गहरी छोटी झीलें और निर्झर जल फुहारे बिखेरते हुए, नागरिकों के बलिष्ठ शरीर सन्तुष्ट, प्रसन्न, ओज-तेज युक्त चेहरे। विशाल, तीव्रगामी रथयानों का आवागमन, घोड़ों, हाथियों पर घूमते नगर प्रहरी। ज्ञानियों, मनीषियों, वर्चस्वी क्षत्रियों, समृद्ध वैश्यों, तपस्वी बलिष्ठ सेवाभावी शूद्रों की दर्शनीय कर्त्तव्यपरायणता से प्रख्यात इस कोशल देश के राजा दशरथ की सुयोग्य सन्तानों में ज्येष्ठ थे श्री राम। जिनके विषय में मुनिश्रेष्ठ नारद ने महर्षि वाल्मीकि को बताया-जितेन्द्रिय, बुद्धिमान्, प्रियवक्ता, शत्रुनाशक, धर्मज्ञ, धैर्यशाली, सत्यवादी, वेदज्ञ, धनुर्धारी, समुद्र-समगम्भीर, पराक्रमी, अत्यन्त बलिष्ठ, समस्त गुणों से युक्त व्यक्तित्व एकमात्र श्री रामचन्द्र का है।

ब्रह्मर्षि वशिष्ठ के शिष्य राम, लक्ष्मण आदि भ्राता बाल्यकाल में ही शस्त्र और शास्त्र में निष्णात हो गए थे। १६ वर्ष की आयु तक पहुंचते-पहुंचते उन्हें विश्वामित्र राजर्षि के साथ वन जाकर ताड़का, मरीच और सुबाहु जैसे नराधम राक्षसों के आक्रमणों का बाणों से उत्तर देकर उन्हें मृत्युलोक को पहुंचाया। संघर्षों की छाँव में ही उन्हें तरुणाई प्राप्त हुई। पराक्रम शौर्य के ही पुरस्कार रूप में योग्यता का वरण करते हुए महाराज मिथिलाधीश जनक की सुपुत्री जानकी सीता को अपनी जीवन-संगिनी के रूप में प्राप्त किया। उस समय जानकी सीता १८ वर्ष और श्री राम २५ वर्ष की आयु के थे। इसका उल्लेख स्वयं सीता द्वारा अरण्यकाण्ड में रामायण में अंकित है। सीता जी कहती हैं—

> मम भर्ता महातेजा वयसा पञ्चविंशकः।
> अष्टादश हि वर्षाणि मम जन्मनि गण्यते॥
>
> (४७।१०)

उस समय मेरे पति महातेजस्वी श्री राम की अवस्था २५ वर्ष तथा मेरी १८ वर्ष थी।

पिता की आज्ञा का पालन करते हुए श्री राम यतिवर लक्ष्मण, जनक नन्दिनी सीता के साथ १४ वर्षों के लिए वन को चले। वन की यात्रा में उन्होंने अनेक ऋषियों के आश्रमों को देखते हुए ऋषियों से शिक्षा-दीक्षा लेते हुए अपनी यात्रा जारी रखी। यमुना नदी को पार कर उन्होंने चित्रकूट में महर्षि वाल्मीकि के दर्शन किए और उन्हीं के

आदेश से वहीं पर उन्होंने पर्णकुटी बनाई। इस से पूर्व उन्होंने गंगा-यमुना संगम के निकट महर्षि भारद्वाज के आश्रम में एक रात्रि रहकर उन से गुह्य विद्या एवं आशीर्वाद प्राप्त किया। दण्डक वन में श्रीराम को अनेक ऋषियों का आशीर्वाद एवं अभिनन्दन प्राप्त हुआ। यहां पर उन्होंने नरभक्षी "विराध" को मारकर दण्डक वन को अभयारण्य बनाया। शरभग आश्रम से सुतीक्ष्ण जी महाराज के आश्रम जाते समय फिर ऋषि-मुनियों ने अपने समूह के साथ श्री राम से भेंट की। मुनियों ने कहा—इन राक्षसों का आधिपत्य बढ रहा है। तपस्वियों को उनके शस्त्रों का शिकार बनना पडता है। कृपा करके धार्मिकों, तपस्वियों और ऋषियो की आप रक्षा करें। श्री राम ने विनम्रता से कहा—

नैवमर्हथ मां वक्तुमाज्ञप्तोऽहं तपस्विनाम्।
केवलेनात्मकार्येण प्रवेष्टव्यं मया वनम्॥

आप ज्ञानियों, तपस्वियों द्वारा प्रार्थना करना उचित नहीं। मैं तो तापस जनों का आज्ञाकारी हू। मैं आपके कार्य के लिए ही वन में प्रविष्ट हुआ हूं। मैं सभी पापी राक्षसों का विनाश करूंगा।

गोस्वामी जी के शब्दों में—

निशिचरहीन करौं मही, भुज उठाय पण कीन्ह।

आश्रम मण्डल में रहते हुए उन्होने दस वर्ष व्यतीत किए। तदनन्तर सुतीक्ष्ण के आश्रम होते हुए वे महर्षि अगस्त्य के आश्रम पहुंचे। अन्य ऋषियों की भांति यहां भी उन्होंने नवीनतम दिव्य धनुष और बाण प्राप्त किए। इसके बाद वे पचवटी पहुंचे। मार्ग में अपने पिता के मित्र गृध्रराज से भी मिले। ये जटायु ज्ञानी बलिष्ठ योद्धा थे न कि तथाकथित पक्षी। पचवटी में ही उन्होने युवकों के चरित्र का पतन करने वाली भोगवादी सस्कृति की युवती शूर्पणखा के अश्लील हिंसक कृत्य पर नाक कान काटकर उसे दण्डित किया। श्री राम के राक्षस-विनाश अभियान का सूत्रपात तो पहले ही हो चुका था परन्तु उस दिशा में विराट् संघर्ष इस स्थल पर प्रचण्ड हो गया था। खर, दूषण और त्रिशिरा जैसे भयंकर राक्षस सेना संचालकों के साथ १४ हजार सैनिकों के मारे जाने का यहां वर्णन मिलता है।

महाबली श्रीराम के इस अभियान से यह भी गुह्य तत्त्व पता चलता है जिस पर अनेक विद्वानों की राय है कि श्रीराम को वनवास दिया जाना कोई षड्यन्त्र नहीं एक सुविचारित योजना थी जो कैकेयी के माध्यम से कार्य में परिणत हुई। भोगवादी संस्कृति के अधिप रावण का साम्राज्य और घुसपैठ की नीति का मुहतोड जवाब विलासी वृद्ध दशरथ के पास नही था और न ही दशरथ की अल्प सेना के ही वश की यह बात थी। इस का उत्तर तो वही छापामार था जैसा रावण के घुसपैठिये करते जा रहे थे। जंगल ग्राम में डर दिखाकर घुसपैठ करना और अपनी चौकिया स्थापित करते जाना। खर, दूषण के मारे जाने पर रावण ने इन वीर तपस्वियो को विचलित करने का षड्यन्त्र सीता अपहरण के रूप में रचा। लेकिन इस षड्यन्त्र से स्वयं रावण ने अपने विनाश का साधन तैयार कर लिया। सीता की खोज मे ही उन्होंने कबन्ध राक्षस को पराभूत किया। पम्पा सरोवर को पार कर उन्हें वेदज्ञ, ज्ञानी, पराक्रमी वीर हनुमान मिले जो सुग्रीव द्वारा ऋष्यमूक पर्वत से भेजे गए थे। वीर वज्रांगबली हनुमान की वार्ता से श्रीराम बडे प्रभावित हुए। इस स्थल के वर्णन से पता चलता है हनुमान महाज्ञानी, पराक्रमी नरपुगव थे न कि कोई वानर आदि पशु। सुग्रीव से मैत्री होने पर यहा पर भी श्रीराम ने दुष्टदलन का कार्य जारी रखा, बाली अन्यायी, अत्याचारी राजा को दण्डित कर उसके भाई सुग्रीव को राज्य आरूढ किया, स्वयं वनचारी रहे। श्रीराम ने बालि के सुयोग्य सुपुत्र बलधारी अगद को सुग्रीव सेना मे उच्च अधिकारी के रूप मे नियुक्त कर अपनी शरण में सस्नेह रखा।

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

वाल्मीकि के राम

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

तपस्वी वाल्मीकि मुनि ने एक बार तप और स्वाध्याय में लगे हुए विद्वान् नारद से पूछा—

'हे मुनिवर इस समय ससार में गुणवान्, पराक्रमी, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवक्ता और अपने व्रत में दृढ पुरुष कौन है ? सदाचार से युक्त सब प्राणियों के कल्याण में तत्पर, विद्वान्, सामर्थ्यशाली और देखने में सब से सुन्दर पुरुष कौन है ? जो तपस्वी तो हो परन्तु क्रोधी न हो। तेजस्वी तो हो परन्तु ईर्ष्यालु न हो और इन सब दया, अक्रोध आदि गुणो से युक्त होते हुए भी जब रोष आ जाये तो जिस के सामने देवजन भी कांपने लगे। हे तपेश्वर, यदि आप किसी ऐसे महापुरुष को जानते हों तो उस का वृत्तान्त मुझ को बताइये क्योंकि आप त्रिलोक भ्रमण करने वाले है।'

वाल्मीकि मुनि के प्रश्न का उत्तर देते हुए नारद मुनि ने कहा कि अयोध्या मे इक्ष्वाकु वश मे उत्पन्न हुआ राम नाम से जो प्रसिद्ध राजा राज करता है, वह उन सब गुणो से युक्त है जिन का आपने उल्लेख किया है। नारद मुनि ने राम का तब तक का सम्पूर्ण चरित्र भी सक्षेप मे महर्षि को सुना दिया।

राम के उदात्त चरित्र को लिखने की प्ररणा महर्षि वाल्मीकि को क्यों कर हुई, इस का विवरण वाल्मीकि रामायण के बालकाड मे भावपूर्ण शब्दो मे अङ्कित है। वियोग जन्य क्रोंच पक्षी के करुण-क्रन्दन से द्रवीभूत हुए महर्षि के मुख से निकली 'मा निषाद'— ये छन्दोबद्ध पक्तियां ही रामायण की रचना का प्रेरक कारण बनी।

अपनी रामायण मे महर्षि ने उपर्युक्त सब प्रश्नों का विस्तार से उत्तर दिया है जो उन्होने नारद मुनि से किये थे। राम के पावन चरित्र का जितना अच्छा और सक्षिप्त विवरण उन प्रश्नों में है उतना अन्यत्र मिलना कठिन है। सारी रामायण को उन्ही प्रश्नों की विशद व्याख्या कह सकते हैं।

उन प्रश्नों को एक-एक करके लेते जाइये और राम कथा से उन का उत्तर लेते जाइये। पहला प्रश्न यह है कि ऐसा व्यक्ति कौन सा है जो गुणवान् भी हो और पराक्रमी भी।

यह बडा व्यापक प्रश्न है। बहुत से व्यक्ति गुणवान् होते हैं परन्तु वीर्यवान् नहीं होते। बहुत से वीर्यवान् होते हैं परन्तु गुणवान् नही होते। राम इन दोनों गुणों का समुच्चय थे। उन में भगवान् के दया और मन्यु इन दोनो गुणों का मिश्रण था। इसी कारण कुछ लोग उन्हे अवतार शब्द से याद करते हैं। हम उन्हें पुरुषोत्तम के नाम से पुकारते हैं, जैसा कि अन्य प्रश्नों की व्याख्या से सुप्रसिद्ध है।

महर्षि पूछते हैं—

"ऐसा कौन-सा व्यक्ति है जो धर्म को जानने वाला हो, किए को मानने वाला, सदा सत्य बोलने वाला और व्रत पर दृढ रहने वाला हो ? इन शब्दो से धर्मज्ञ एव गुणवान् की बात की विशद व्याख्या

हो जाती है। वाल्मीकि के राम के जिस रूप का पाठक के मन पर चित्र अङ्कित होता है, वह धर्म को जानने वाला है। प्रत्येक संकट के समय वह इस प्रश्न पर विचार करता है कि धर्म वा कर्त्तव्य क्या है ? आंखे बन्द करके परिस्थितियों के पीछे नहीं भागता।"

जब कैकेयी ने महाराज दशरथ के वचन को सत्य सिद्ध करने के लिए वन-गमन की सूचना दी तब राम ने कर्त्तव्य को ही सर्वोपरि स्थान दिया। जब भरत उन्हें वन से लौटाने के लिए गये और मन्त्रियों तक ने उन्हें अयोध्या लौटने की प्रेरणा की तब भी उन्होंने कर्त्तव्य को सर्वोपरि रखा। जब जाबाल ने उन के समक्ष पार्थिव प्रलोभन रखकर तर्क वितर्क के द्वारा उन का घर लौटना समुचित सिद्ध करने की चेष्टा की तब उन्होने जो उत्तर दिए वे धर्म के इतिहास में सदव स्वर्णाक्षरों से अंकित रहेंगे। उन्होंने कहा—

"अपने को वीर कहलाने वाला व्यक्ति कुलीन है या अकुलीन है, पवित्र है या अपवित्र, यह उसके चरित्र से ही विदित हो सकता है। यदि मैं धर्म का ढोंग करूं परन्तु आचरण करूं धर्म के विरुद्ध तो कैसे समझदार पुरुष मेरा मान करेगा। उस दशा में मैं कुल का कलक ही माना जाऊँगा।"

इस प्रश्न का दूसरा भाग यह है कि किए को मानने वाला कौन है ? यदि कृतज्ञता का आदर्श देखना हो तो राम को देखो।

सुग्रीव और विभीषण ने राम की सकट के समय सहायता की। राम ने उन दोनों का संकट निवारण करके उन दोनों को ही राज्य दिलाकर उस सहायता का जो भव्य बदला दिया था, वह राम की कृतज्ञता की भावना का ज्वलन्त प्रतीक है। इस प्रश्न का तीसरा भाग सत्य से सम्बद्ध है। राम की सत्यवादिता ने सत्य को गौरवान्वित किया था, यदि यह कहा जाये तो इस में अत्युक्ति न होगा। राम सत्य के जीते जागते स्वरूप थे। यदि राम कुछ हैं तो वह सत्य ही हैं। सत्य कहना और सत्य करना—ये दो राम के मुख्य गुण थे। राम के दो वाक्य ही उनके अपने चरित्र का सागोपांग चित्रण कर देते हैं। महाराज दशरथ के समक्ष कैकेयी ने जब राम को वनवास जाने का कठोर आदेश देने में कुछ आगा पीछा किया तो राम ने कहा था—

"हे देवि, राजा क्या चाहते हैं, यह मुझे बताइये। मैं उसे पूरा करूंगा, यह मेरी प्रतिज्ञा है। राम किसी बात को दूसरी बार नहीं कहता।"

"न आज तक मैंने कभी झूठ बोला है और न आगे कभी बोलूगा।" वस्तुत: सत्य और उस के पालन में दृढ़ता राम के भव्य जीवन के दो प्रधान तत्त्व हैं।

अगला प्रश्न है कि जो तपस्वी तो हो परन्तु क्रोधी न हो, तेजस्वी तो हो परन्तु ईर्ष्यालु न हो।

तपस्वियों को क्रोधावेश में शाप देते हुए तो बहुत कुछ सुना जाता है, वरदान देते हुए कम। इसलिए कि उनके तप का गृहस्थीजन के समक्ष वैसा महत्त्व नहीं रहता जैसा रहना चाहिए और तप के साथ अक्रोध का सम्मिश्रण रहने से वही महत्त्व रहता है। ये दोनों परस्पर विरोधी गुण एक-दूसरे की आभा को बिगाडने वाले नहीं, अपितु मिलकर चित्र को सुन्दर एवं पूरा बनाने मे सहायक होते हैं।

राम में सत्य है, शक्ति है, क्षमा है, कृतज्ञता है, क्रोध नहीं है और न ईर्ष्या-द्वेष है। तब तो उसे शांत और शीतल होना चाहिए। फिर किसी दुष्ट को उस से डरने की क्या आवश्यकता है ? परन्तु जिस व्यक्ति की शान्ति में अग्नि अन्तर्हित नहीं, वह ससार में किसी काम का शासक नहीं हो सकता। उसे शायद पुरुष तो कह सकें, पुरुषोत्तम नहीं कह सकते। वाल्मीकि मुनि ने सारी रामायण

में अपने अन्तिम प्रश्न का उत्तर बड़ी सुन्दरता से दिया है। प्रश्न यह है—

"वह कौन है कि इन सब गुणों के होते हुए भी जब रोष आ जाये तब देवता भी उस के सामने कांपने लगें?"

क्रोध निकृष्ट भावना है। जिस मनुष्य को क्रोध नहीं आता वह मूर्ख होता है और जो क्रोध पर काबू रखता है वह बुद्धिमान् होता है, परन्तु मन्यु क्रोध से भी अधिक उदात्त भावना होती है जो मानव के तेज की सूचक होती है। जो मनुष्य अन्याय, असत्य या अत्याचार को सहन कर लेता है, वह अपने व्यक्तित्व पर अत्याचार करता है और उस के क्षमा, दया आदि गुण दोष रूप में दीखने लगते हैं, क्योंकि ये कायरता के रूपान्तर होते हैं। धर्मज्ञ राम की शक्ति का वर्णन करते हुए रावण की सभा में विभीषण ने कहा था।

'इक्ष्वाकुवंश का अवधेश राम धर्मात्मा है, यह समझकर निःशंक नहीं होना। यह दुष्टों को दण्ड देने की शक्ति रखता है। इस कारण उसके सामने तो देवगण भी हतबुद्धि हो जाते हैं, मनुष्यों या राक्षसों की तो कथा ही क्या है?'

रावण के वध के पश्चात् जब भगवती सीता विभीषण के साथ राम के निकट पहुंची, तब राम ने जो शब्द कहे थे, उनमें धर्मज्ञ राम का रौद्ररूप प्रतिबिम्बित हो रहा था। उन्होंने कहा था—

"हम ने अपने शत्रु के साथ ही अपमान को भी मारकर गिरा दिया, आज हमारा पराक्रम प्रकाशित हुआ। आज हमारी प्रतिज्ञा पूरी हुई। जो मनुष्य अपने अपमान को तेज द्वारा दूर नहीं करता, उस अल्प तेजस्वी मानव का पुरुषार्थ व्यर्थ है।"

इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने नारद मुनि से जो प्रश्न किए थे, सम्पूर्ण रामायण मे उन के उत्तर देकर संसार के सामने मनुष्यत्व का एक अमर आदर्श स्थापित कर दिया है। वस्तुतः राम के ऊंचे आदर्श को देखकर अनायास ही यूरोप के प्रसिद्ध विद्वान् ग्रिफिथ ने लिखा था, 'वाल्मीकि रामायण प्रत्येक युग और प्रत्येक देश के साहित्य को यह चुनौती दे सकती है कि लाओ राम और सीता के सदृश पूर्ण आदर्श चरित्र का नमूना पेश करो।'

चरित्र की उस पूर्णता के कारण राम को हम पुरुषोत्तम या मर्यादापुरुषोत्तम कहकर पूजते हैं और राम एवं सीता के पावन चरित्र के कारण ही वाल्मीकि रामायण के विषय में ब्रह्मा का यह आशीर्वाद सफल हो रहा है कि—

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद्रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥

जब तक ससार मे सभी पर्वत और नदियां विद्यमान रहेंगी तब तक तुम्हारी रची रामकथा का प्रचार होगा।

श्रीराम और मांसाहार

श्रीराम मांस खाते थे अथवा नही ? यह विषय अत्यन्त विवादास्पद है। कुछ लोगों की धारणा है कि वे क्षत्रिय थे अत. मांस खाते थे । परन्तु हमारे विचार में यह धारणा अशुद्ध है। यहां हम रामायण के कुछ स्थलों पर विचार करेंगे। जब श्रीराम को वन गमन की आज्ञा हुई तब वे अपनी माता कौशल्या से आज्ञा लेने के लिए राजप्रासाद में आये। माता ने उन्हें बैठने के लिए आसन और खाने के लिए कुछ वस्तुएँ दीं, उस समय श्रीराम ने कहा—

चतुर्दश हि वर्षाणि वत्स्यामि विजने वने।
मधुमूलफलैर्जीवन् हित्वा मुनिवदामिषम् ॥

—अयो० २०।२९,३०

माता अब तो मुझे चौदह वर्ष तक घोर वन में वास करना पडेगा अतः मैं आमिष भोजन को छोडकर मुनिजन कथित कन्दमूल, फल आदि खाकर ही अपना जीवन निर्वाह करूँगा।

इस श्लोक में 'आमिष' शब्द को देखकर मांस-भक्षण-करने वाले कहते हैं कि श्रीराम मास-भक्षण करते थे तभी तो उन्होंने कहा, "मैं आमिष को छोडकर कन्दमूल-फलों से निर्वाह करूँगा।" यदि इस श्लोक का ऐसा ही अर्थ माना जाय तो रामायण में आगे चलकर मास भक्षण के जितने प्रसंग आते हैं वे सब प्रक्षिप्त सिद्ध हो जाते हैं। फिर महलों मे माँस खाने का प्रसंग सम्पूर्ण रामायण में कही भी नहीं है अत. इस श्लोक से ही श्रीराम के मासाहार का निषेध हो जाता है।

कोष में आमिष का एक अर्थ 'प्रिय वा मनोहर वस्तु भी है, अतः उपर्युक्त श्लोक का ठीक अर्थ यह होगा कि मैं मिष्ठान आदि प्रिय व मनोहर वस्तुओं को छोडकर मुनियो जैसा आहार करूँगा। यही अर्थ ठीक एवं श्रीराम की भावना के अनुकूल है। इसके लिए एक अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत है। पंडित भगवद्दत्त जी द्वारा सम्पादित रामायण के पश्चिमोत्तरीय संस्करण में यह श्लोक इस प्रकार है-

स्वादूनि हित्वा भोज्यानि फलमूलकृताशन ॥

अयो० २०।२१

यहां स्पष्ट ही स्वादु पदार्थों को छोडकर फल-मूल खाने का वर्णन है। "छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्।" मूल के कट जाने पर वृक्ष में न शाखा ही उग सकती है और न पत्ते ही आ सकते हैं। इस श्लोक से तो श्रीराम के मास-भक्षण की जड ही कट गई है।

रामायण में सीता जी द्वारा गंगा पर सुरा के घडे और मांसयुक्त भात चढाने का वर्णन आता है, परन्तु यह प्रकरण वाममार्गियो द्वारा मिलाया गया है। सीता जी द्वारा गगा पर शराब और मांसयुक्त भात की बलि देना सीता जी की भावनाओं के सर्वथा प्रतिकूल है। सीता जी वन जाने के लिए श्रीराम से प्रार्थना करते हुए कहती हैं—

फलमूलाशना नित्य भविष्यामि न सशय.।

अयो० २७।१५

मैं वन मे उत्पन्न फलो और मूलों को खाकर अपना निर्वाह कर लूगी इसमे तनिक भी संशय

(शेष पृष्ठ ४५ पर)

सद्विचारों के प्रचारक बनो

लेखक : पं० शिवकुमार शास्त्री
(भूतपूर्व संसद्-सदस्य)

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ।
दिव्यो गन्धर्वः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥ यजु० ३०।१॥

ऋषि : नारायणः। देवता सविता। छन्दः त्रिष्टुप्।

अन्वय·—हे देव सवित दिव्यः गन्धर्वः केतपूः नः केतम् पुनातु। वाचस्पति· नः वाचम् स्वदतु। यज्ञपतिं भगाय प्रसुव यज्ञं प्रसुव।

शब्दार्थ—(हे देव) दिव्यगुणयुक्त प्रभो! (सवितः) समस्त ऐश्वर्य से युक्त और जगत् को उत्पन्न करनेवाले जगदीश्वर! (दिव्यः) विशेष गुण युक्त (गन्धर्वः) वाणी और पृथिवी को धारण करनेवाले (केतपूः) ज्ञान से अपने को पवित्र करने वाले (नः) हमारी (केतम्) बुद्धि को (पुनातु) पवित्र कीजिए। (वाचस्पतिः) वाणी का स्वामी (नः) हमारी (वाचम्) वाणी को (स्वदतु) माधुर्य से युक्त करे। (यज्ञपतिम्) शुभ कर्मों के रक्षक को (भगाय) ऐश्वर्ययुक्त धन के लिए (प्रसुव) उत्पन्न कीजिए (यज्ञम्) शुभ कर्म की (प्रसुव) प्रेरणा कीजिए।

व्याख्या—इस मंत्र में भगवान् से चार प्रार्थनाएं की गई हैं। पहली 'यज्ञ प्रसुव' प्रत्येक मनुष्य के हृदय में शुभ कर्म करने की प्रेरणा कर।

दूसरी—'यज्ञपतिं प्रसुव' जो शुभ कर्म करने वाले हैं, उनके उत्साह को बढाओ।

तीसरी—'दिव्यः गन्धर्वः' दिव्य वाणी को धारण करने वाले और 'केतपूः' जिन्होंने ज्ञान से अपने आपको पवित्र किया है "नः केतं पुनातु" हम भूले-भटकों को मार्ग बतावें।

चौथी—"वाचस्पतिः नः वाच स्वदतु" वाणी के स्वामी हमारी वाणी को माधुर्य से युक्त बनावें।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने जहां धार्मिक क्षेत्र की अनेक कुप्रथाओं का सुधार किया वहां स्तुति प्रार्थना और उपासना के नाम पर जो धांधली चल रही थी, उसका भी वास्तविक स्वरूप हमारे समक्ष रखा। मध्यकाल में प्रार्थना करने वाला भक्त अपने दुःख को दूर करने की, सम्पत्ति और ऐश्वर्य मांगने की, अपने शत्रु के विनाश आदि की एक लम्बी फहरिस्त भगवान् के सामने पेश करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेता था। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में प्रार्थना का विश्लेषण करते हुए समझाया कि प्रार्थना प्राणिमात्र और मनुष्य-मात्र की सुख-समृद्धि के लिए करनी चाहिए। दूसरे के विनाश की अथवा पीडा देने की नहीं। प्रार्थी को भगवान् से प्रार्थना के साथ-साथ अपने प्रार्थित अभिप्राय की पूर्ति के लिए अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार स्वयं पुरुषार्थ करना चाहिए; तभी भगवान् भी सहायता करते हैं।

ऋषि-द्वारा प्रदत्त इस प्रकाश में मन्त्र में वर्णित इन चार प्रार्थनाओं का भाव यह निकला कि ससार को सुखधाम बनाने के लिए हम मे से प्रत्येक व्यक्ति के चार कर्तव्य हैं।

पहला यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को सद्‌विचारों का प्रचार करना चाहिए। दूसरा यह कि अच्छे काम करनेवाले धर्मात्माओं के काम की प्रशसा करके उनका उत्साह बढाना चाहिए। तीसरा यह कि जो-जो हम जानते जावें उस पर पूरी आस्था और दृढता के साथ आचरण आरम्भ कर देना चाहिए। चौथा यह कि मनीषी अनुभवियों से मधुर भाषण की शिक्षा लेकर हमें इस प्रकार की वाणी बोलनी चाहिए, जिसे सुनकर व्याकुल और विक्षुब्ध व्यक्ति भी शान्ति-लाभ करे।

अब एक-एक बात पर विस्तार से विचार कीजिए। इस समय समस्त संसार में बुराई बढ रही है, और अच्छाई कम हो रही है। अपने प्राचीन इतिहास (रामायण बालका०) में उस युग की इतनी सुन्दर झांकी प्रस्तुत की गयी है कि आज के युग में उस पर पूरा विश्वास जमना भी कठिन प्रतीत होता है।

क्वचिन्न राजा तत्रासीत् न दण्डो न च दाण्डिकः।
धर्मेणैव प्रजा. सर्वा रक्षन्ति स्म परस्परम्॥

उस समय न कोई राजा था, न कोई कानून था और न कोई व्यवस्थापक। सब प्रजा के लोग अपने कर्त्तव्य को जानकर एक-दूसरे की रक्षा करते थे।

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में अयोध्या का वर्णन निम्न प्रकार से किया है—

अयोध्या नाम तत्रासीन्नगरी लोक-विश्रुता।
मनुना मानवेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्॥

ससार-प्रसिद्ध अयोध्या नाम का सुन्दर नगर था। और मनुष्यों में श्रेष्ठ महाराज मनु ने स्वय इस नगर को बनवाया था।

आयता दश च द्वे च योजनानि महापुरी।
श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा सुविभक्तमहापथा॥

यह महानगरी बारह योजन (६० मील) चौड़ी और छत्तीस योजन (१८० मील लम्बी) थी। उसमें जाने-आने के लिए बहुत विस्तृत सड़कें थीं।

राजमार्गेण महता सुविभक्तेन शोभिता।
मुक्तपुष्पावकीर्णेन जलसिक्तेन नित्यशः॥

उस नगर में बहुत सुन्दर और विशाल राजपथ था। उस मार्ग पर नित्य पानी छिडका जाता था। और फूल खिले हुए थे। जहां तक स्थापत्य और वास्तुकला का सम्बन्ध है वह युग आज से किसी प्रकार कम नही प्रतीत होता। कुछ वैज्ञानिक उत्कर्ष तो उस समय के ऐसे हैं– जिनकी तुलना आज का कोई राष्ट्र नही कर सकता! रामायण में ही वर्णित है—

"अदंशमशकं राज्यन्नष्टव्यालसरीसृपम्"।

उस समय राज्य से मक्खी, मच्छर, बिच्छू और सांप सब समाप्त कर दिये गये थे। यह स्थिति संभवतः विश्व के किसी भी देश की न हो। भारत की राजधानी दिल्ली में तो मक्खी मच्छरों की भरमार है, पर विशेष चीज यह थी कि भौतिक सुख-साधनों के साथ-साथ वर्तमान भोगवाद का कोई दोष उस समय नही था। नैतिकता और मानवता से उच्चतम धरातल पर समाज का आचार-व्यवहार था। उस काल के सामाजिक व्यवहार की भी एक झाकी देखिए—

शुचीनामेकबुद्धीना सर्वेषा सम्प्रजानताम्।
नासीत् पुरे वा राष्ट्रे वा मृषावादी नरः क्वचित्॥

सब पवित्र उच्च कोटि के ज्ञानी, राष्ट्रीय कार्यों में ऐकमत्य से चलने वाले थे। सारे राष्ट्र में या अयोध्या नगरी में कोई झूठ बोलने वाला नहीं था।

क्वचिन्न दुष्टस्तत्रासीत् परदाररतो नर।
प्रशान्तं सर्वमेवासीद् राष्ट्रं पुरवरञ्च तत्॥

उस राज्य में परस्त्री से प्रेम करनेवाला कोई दुष्ट नहीं था। समस्त राष्ट्र और राजधानी में

सब प्रकार से शान्ति थी।

कामी वा न कदर्यो वा नृशंस पुरुषः क्वचित्।
द्रष्टुं शक्यमयोध्यायां नाविद्वान्न च नास्तिकः॥

उस राजधानी में कोई कामी, कञ्जूस, क्रूर, मूर्ख और नास्तिक नही था।

इसी प्रकार का और भी विस्तृत वर्णन उस प्रसंग में वहां विद्यमान है।

ऐसा स्वर्गीय वातावरण संसार के किसी भी देश में नहीं है। योरोप और अमेरिका मे वैज्ञानिक और आर्थिक उन्नति चाहे कितनी ही क्यों न हो, किन्तु नैतिक और मानवीय मूल्यों का स्तर वहां भी बहुत निम्न है।

इस समीक्षा से परिणाम यह निकला कि इस समय संसार में बुराई बढ रही है और अच्छाई घट रही है। सर्वप्रथम एक नैतिक प्रश्न यह है कि बुराई की उत्पत्ति का कारण क्या है और इस समय वह बढती पर क्यों है?

इस विषय में विश्लेषण करने से हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि संसार मे अच्छाई तो प्रयत्न करने से उत्पन्न होती है और बुराई जहां अच्छाई का प्रकाश नहीं पहुचेगा वहां स्वतः उत्पन्न हो जायेगी। सामान्यतया यह स्थापना बडी विचित्र सी लगती है कि अच्छाई का जन्म प्रयत्न और परिश्रम से होता है और बुराई अपने-आप पैदा होती है। किन्तु है वास्तविकता यही। क्यों? इसका उत्तर कठोपनिषद् मे आचार्य यम के उपदेश में है—

आचार्य यम ने कहा—

पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूस्तस्मात् पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्। कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्॥ क० ४।१।

प्रभु ने इन्द्रियों की रचना बाहर की ओर की है इसलिए ये बाहर की ओर दौडकर जाती हैं। आंख—रूप पर, नाक गन्ध पर, और जीभ—रस पर, कान शब्द पर, और त्वचा स्पर्श पर अर्थात् अपने-अपने ग्राह्य विषय की ओर दौडने की इनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इनकी सार्थकता भी तो इसी में है। जरा कल्पना करें—संसार में दिखने वाले ये सुन्दर दृश्य नाना प्रकार के रंग-रूप वाले पत्र, पुष्प, हिमाच्छादित शुभ्र पर्वतमालाएँ, पर्वत-शिखरों से गिरते हुए जल-प्रपात, रंग-बिरंगे पंक्षी, सुन्दर सजीली छींट के से परिधानों से आवृत तितलियां आदि-आदि तो होते, किन्तु इस रूप को निहारने वाली आंख न होती तो इस समस्त रचना का सौन्दर्य निरर्थक था। इसी प्रकार संसार में रूप को ग्रहण करने वाली आंख तो होती किन्तु रचना और दृश्य कोई न होता तो आंख का बनाना भी व्यर्थ था। अतः सिद्ध हुआ कि आंख की सार्थकता रूप से और रूप की सार्थकता आंख से है। किन्तु आंख उस रूप को ग्रहण इस प्रकार करे कि अपने आत्मा और समाज के लिए किसी प्रकार की बुराई उत्पन्न न हो, यह ज्ञान मानव को बहुत प्रयत्नपूर्वक शिक्षा देने से आता है स्वयं नहीं। आंख की स्वाभाविक प्रवृत्ति का चित्रण किसी शायर ने अच्छे ढग से इस प्रकार किया है—

दिल के जो दुश्मन हैं उनके शौक में रहती है आंख।
जान का मालिक जो है, उससे नजर मिलती नही॥

आंख से रूप किस प्रकार से ग्रहण किया जाय कि वह समाज में स्वस्थ परम्परा और वातावरण बनावे। यह योग्यता मनुष्य मे तब आती है, जब सुशिक्षित माता-पिता, ज्ञानदाता शिक्षक उसे निरन्तर सद्विचारों से सुसंस्कृत करते हैं।

सभ्य समाज की मर्यादा मे स्त्री और पुरुष के लिए यह सामान्य मान्यता है कि समान आयु की अपरिचित महिला बहन के समान, छोटी पुत्री के तुल्य और बडी माता के सदृश होती है। इसी प्रकार पुरुष एक महिला के लिए भाई, पुत्र और पिता के तुल्य होता है। ये सुसंस्कृत विचार शिक्षा के ही परिणाम हैं। यह धारणा स्वतः नही बन जाती अपितु इसके लिए निरन्तर प्रयत्न करना पडता है। जहां इन संस्कारों के डालने का प्रयत्न

नहीं होता, वहीं समाज असभ्य, असंस्कृत होकर जंगली जैसा हो जाता है। यह क्रम सृष्टि के प्रारंभ से चला आता है।

अब से लाखों वर्ष पूर्व कुछ मनुष्य-जातियों के असभ्य होने का कारण मनु ने लिखा है—

शनकैस्तु क्रियालोपादिमा: क्षत्रियजातय:।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥

धीरे-धीरे ज्ञानियों का सम्पर्क विच्छिन्न होने से क्षत्रियजातियां उत्तम आचरणों से शून्य होकर असंस्कृत और असभ्य हो गई। अत: समाज को शिष्ट बनाने के लिए वेद ने प्रथम मनुष्य का यह कर्त्तव्य बताया कि उसने जिस अच्छाई और सच्चाई को जान लिया है, वह उसका प्रचार करना भी अपना मुख्य कर्त्तव्य समझे। यदि आज समाज में बुराई बढ़ रही है तो उसका उत्तर-दायित्व अच्छे व्यक्तियों पर है। वे आलसी और प्रमादी बनकर सद्विचारों का प्रचार नहीं करते। यदि वे लग्न से लोगों को शुभ विचार दें तो फिर प्रसार अच्छाई का होगा, बुराई का नहीं।

इसके अतिरिक्त बुराई के बढने का एक कारण यह भी है कि बुराई और व्यसन में लिप्त व्यक्ति निरन्तर कष्ट सहन करके और पैसा खर्च करके भी अपने व्यसन का प्रचार करते रहते हैं। भांग, सुल्फा, सिगरेट और शराब आदि का व्यसनी सम्पर्क में आनेवाले को निरन्तर उस वस्तु के सेवन की प्रेरणा करता है। किन्तु यह धुन अच्छी चीजों के प्रचार में नहीं देखी जाती।

तीसरा कारण बुराई की प्रवृत्ति का यह भी है कि यह इन्द्रियों की विषयाभिमुखीवृत्ति के अनु-कूल चलने के कारण सुविधाजनक और आपात-रमणीय प्रतीत होती है। परिणाम तक सोचने-विचारने का बोझ ढोना इस प्रकार का व्यक्ति पसन्द ही नहीं करता। इन्द्रियों के विषयाचरण पानी की धारा के साथ तैरने के समान हैं। केवल शरीर साधना आना चाहिए—शेष बहने का काम तो पानी का प्रवाह स्वत: कर लेगा।

इन्द्रिय के विषय-प्रस्ताव को ठुकराकर उसके विपरीत दिशा में चलना पानी की धारा के प्रति-कूल तैरने के समान है। उस ओर तैरने के लिए दृढ़ निश्चय और धैर्य की आवश्यकता है। अतएव यह मार्ग कठिन है, किन्तु कठिनाई का यह तात्पर्य कदापि नही है कि उस ओर चलना ही असम्भव है। विचार यदि परिपक्व हों—तो फिर कोई भी कठिनाई बाधक नहीं हो सकती। ठीक ही कहा है किसी शायर ने—

हर इक मुश्किल बदल जाती है,
आसानी की सूरत में।
अगर दिल आजमाइश के लिए
तैयार हो जाये ॥

कुछ लोगों की यह भ्रान्त धारणा है कि प्रचार और उपदेश से किसी का कुछ सुधार नहीं होता। लोग कथा और उपदेश सुनते हैं—श्रवण के समय प्रभावित से भी लगते हैं किन्तु उनके आचरण में कोई गुणात्मक परिवर्तन नहीं होता। इस समय तो स्थिति यह है कि कुछ लोगों को उपदेश देने का व्यसन है—और कुछ को सुनने का चस्का है। पर पतनाला वहीं का वहीं रहता है।

यह धारणा सर्वथा भ्रममूलक है। मनुष्य एक विचारशील प्राणी है। उसे जिस प्रकार के विचार दिए जाते हैं उसी प्रकार की विचारतरगें उसके मस्तिष्क में उठती हैं। अनुकूल वस्तु की प्राप्ति की इच्छा जागृत होती है और प्रतिकूल को छोड़ने की। यदि कविसम्मेलन में अच्छे कवि के कविता पाठ को सुनता है तो ओज से आविष्ट होकर उसकी भुजाएं फडकने लगती हैं। वात्सल्य और करुण-रस की कविता सुनकर आँखों से अश्रुधारा बहने लगती है। इतिहास इस प्रकार के उदाहरणों से भरा पड़ा है कि समय पर दिए गये विचार के इन्जेक्शन से परिस्थिति हो पलट गयी।

प्रसिद्ध है कि जयपुर नरेश महाराज मानसिंह काबुल को जीतने का निश्चय करके फौज लेकर चले किन्तु अटक नदी पर पहुंचकर नदी की वेग-

वती धारा से संत्रस्त होकर फौज का पडाव डाल-कर ठहर गये। बहुत सोचने पर भी निर्णय नहीं कर पाये कि क्या किया जाये ? यदि नदी के पार करने का आदेश सेना को देते हैं तो भय था कि पानी की धारा सब को बहा ले जायेगी, और सब नष्ट हो जायेंगे। बिना काबुल को जीते वापस भी नहीं लौट सकते थे, क्योंकि जीतने की प्रतिज्ञा करके चले थे। चिन्तित मानसिंह ने उस पडाव से माता को पत्र लिखकर एक कासिद के हाथ भेजा और उसमें लिखा "माताजी काबुल विजय का निश्चय करके आपका पुत्र चला था, किन्तु यहाँ दरियाए अटक ने अटका रखा है। पुल कोई है नही और पुल के बिना यदि धारा में उतरते हैं तो पानी की तीव्र धारा सब को बहा ले जायेगी इस स्थिति में मुझे सूझता नही क्या करूँ ?"

पत्र माता के पास पहुंचा और माता ने पत्र के उत्तर में अपने आशीर्वाद के साथ निम्न दोहा लिख भेजा—

सबै भूमि गोपाल की यामें अटक कहाँ।
जिसके मन में अटक है सोई अटक रहा॥

इस उत्तर को लेकर कासिद उस समय पहुंचा जब दोपहर का भोजन करके फौज विश्राम कर रही थी। पत्रवाहक ने अभिवादन करके माता का पत्र महाराज को दिया। पत्र पढते ही महाराज को इतना जोश आया कि लगाम लगाकर घोड़े की नंगी पीठ पर सवार हो गये और सेना को दरिया पार करने का हुक्म देकर अपने घोड़े को पानी की धारा में उतार दिया। घोडा पार उतर गया और सैनिक भी अधिकांश पार उतर गये। कुछ पानी की धारा में बह गये, पर काबुल को जीतकर ही मानसिंह वापस लौटे।

महाराज मानसिंह के जीवन की दूसरी घटना भी बहुत प्रसिद्ध है। काबुल विजय के कुछ काल पश्चात् मानसिंह ने घोषणा की कि—अब लङ्का पर आक्रमण करके लङ्का को जीतें। सेना के प्रस्थान का दिन निश्चित हो गया। किन्तु इस आक्रमण के निश्चय से सेनापति और सैनिक प्रसन्न नहीं थे, उन पर यह प्रतिक्रिया थी कि काबुल के मार्ग में तो सिन्ध ही पड़ती थी उसे जैसे तसे पार-कर गये और उसमें भी कुछ बह गये। किन्तु लका के मार्ग में तो समुद्र पड़ता है, यह कैसे पार होगा ?

परिणाम होगा सब की जलसमाधि। किन्तु महाराज के सामने बोलने का किसी का भी साहस नही था।

प्रस्थान के दिन कूच के बाजे बजने लगे और चारण महाराज को और सेना को विदाई तथा आशीर्वाद देने पहुंचे। उस समय सेनापति को एक बात सूझी और बहुत अच्छे चारण कवि को बुला-कर लङ्का के आक्रमण की कठिनाई समझाते हुए प्रार्थना की कि किसी प्रकार महाराज के विचार बदलने चाहिए।

चारण कवि ने थोडा विचार किया। पहले तो महाराज को आशीर्वाद दिया और फिर उनकी वीरता और पराक्रम का वर्णन करते हुए कहा कि अब तक के सब काम आपने यश और गौरव के किए हैं। किन्तु आपका लङ्का विजय का संकल्प उचित नही है और आपके नाम पर बट्टा लगाने वाला है। यह सर्वथा कुलमर्यादा के विपरीत है। इस प्रस्ताव की पुष्टि करते हुए चारण ने एक निम्न सोरठा कहा–

मान महीपति मानि, दिये दान किन किन लिये।
रघुपति दीनो दान विप्र विभीषण जानिके॥

हे महाराज मानसिंह ! आप मेरा परामर्श मानिए। आज तक दिया हुआ दान किसी ने वापस नही लिया। तुम्हारे पूर्वज राम ने रावण को परास्त करके लका जीती थी और इसके बाद विभीषण की पात्रता देखकर उसे दान दे दी थी। अब तुम राम के वंशज ऐसे हुए हो कि उस दिये हुए दान को फिर छीनना चाहते हो। मानसिंह का मस्तिष्क एक साथ घूम गया और क्षमा माँगते हुए कवि चारण का धन्यवाद किया कि आपने हम को बहुत बड़े पाप से बचा लिया।

यहाँ स्पष्ट है कि दोनों घटनाओं में सामयिक विचार ने चमत्कार कर दिया। विचारों मे तो इतनी अद्भुत शक्ति होती है कि मनुष्य हंसते-हसते मृत्यु तक का आलिंगन करने को उद्यत हो जाता है।

हाँ इस बात में भी आंशिक तथ्य है कि उपदेश और भाषण का प्रभाव बाद मे नहीं टिक पाता। प्राय. धीरे-धीरे शिथिलता आ जाती है और वे विचार आचरण में नहीं आ पाते इसमें भी गहराई से विचारे तो दोष विचारों में नहीं, मात्रा में है।

इसे निम्न उदाहरण से समझिए—पानी में चीनी घोलने से पानी मीठा हो जाता है। एक किलो ग्राम पानी में ढाई सौ ग्राम चीनी घोली जावे तो पानी मीठा हो जावेगा। किन्तु एक व्यक्ति दस किलो पानी में ढाई सौ ग्राम चीनी डालकर और घोलकर यह निष्कर्ष निकाले कि चीनी से पानी मीठा नही होता, अभी चीनी घोली गई थी, किन्तु पानी फीका ही है। तो यह स्थापना भ्रमपूर्ण है और अनुपात तथा मात्रा का ध्यान न रखने के कारण हुई है। चीनी पानी को निश्चत रूप से मीठा करती है। किन्तु उसके लिए अनुपात का ध्यान रखना अनिवार्य है।

ठीक यही बात विचारों के लिए है। जो विचार उपदेश मे श्रवण किए हैं, उन्ही की चर्चा मार्ग में हो, उन्ही की घर में उठते बैठते वही प्रसग कार्यालय और दुकान पर चले और विचारों का एक वायुमण्डल तैयार हो जाये तो कोई कारण नही है कि जो विचार दिए गये हैं, वे आचरण मे न आ पावे। आज के वायुमण्डल में विचार करके देखे तो शुभ विचार उतनी मात्रा मे भी न बैठेंगे, जितनी कि दस किलो ग्राम पानी मे ढाई सौ ग्राम चीनी की मात्रा है। फिर इतने क्षीण सस्कार परिवर्तन का चमत्कार कैसे कर सकते हैं? अत शुभ विचारो का प्रचार निरर्थक नही है अपितु समाज को शान्ति और सुख के मार्ग पर चलाने के लिए आवश्यक है। पर यह काम प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को करना चाहिए। तभी उन विचारो का एक चक्र बनकर हृदय और मस्तिष्क को प्रभावित कर सकता है।

प्रचार का सर्वोत्तम प्रकार वार्तालाप द्वारा विचार विनिमय है। हम जब अपने एक परिचित व्यक्ति को जानकर उसकी किसी त्रुटि की ओर प्रेमपूर्वक ध्यान आकृष्ट करते हैं तो उसका विशेष प्रभाव होता है। हमारे द्वारा दिया गया मनोबल उसे उस व्यसन से सघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है, किन्तु भाषण में यह बात नही होती। एक प्रभावशाली भाषण श्रोता को प्रेरणा देता हुआ भी वह दबाव नही डाल पाता, क्योंकि श्रोता के मन में यह भाव बना रहता है कि यह बात विशेषरूप से मुझे ही नही कही जा रही यह तो एक सामान्य चर्चा है जो सब के लिए है। किन्तु वार्तालाप मे यह स्थिति नही होती। वहां विचारशील व्यक्तियों को अपने क्षेत्र की त्रुटियो की ओर निरन्तर ध्यान खीचते रहना चाहिए, तभी समाज को पवित्र बना सकेंगे।

यही बात साख्यदर्शन में कही गई है—

"उपदेश्योपदेष्टृत्वात् तत्सिद्धिरितरथान्धपरम्परा।" ३।७९

समझने, समझाने वाले सतत प्रयत्नशील रहने हैं तो समाज विवेकपूर्वक काम करता है। नही तो अन्धो के पीछे चलने वाले अन्धो के समान भटकते फिरते हैं।

सत् ज्ञान का प्रचार उसी प्रकार का पुनीत कर्म है जैसे नेत्रहीन व्यक्ति को खाई खन्दक से बचाकर ठीक मार्ग पर चलाना। कोई साधारण व्यक्ति भी ऐसा नही मिलेगा जो अपनी आंखो के आगे किसी अन्धे को खाई-खन्दक अथवा कुए में गिरने दे। आवश्यक से आवश्यक काम छोडकर सामान्य व्यक्ति भी दृष्टिहीन व्यक्ति को सम्भालता है, और ऐसा करने पर सन्तोष अनुभव करता है कि मैंने एक अच्छा काम किया है। इस प्रवृत्ति के धर्मभीरुओ से पूछना चाहिए कि—एक व्यक्ति चक्षुओं के अभाव में खन्दक मे गिरने वाला है, जहाँ उसकी

मृत्यु हो सकती है। आप उसे बचाना तो अपना पवित्र धर्म मानते हैं किन्तु एक व्यक्ति ज्ञानरूपी आंख के अभाव में पाप के कुएं में गिरने जा रहा है और आप जानते हुए भी उसे नहीं समझाते तो आप से यह उसी प्रकार का भयंकर पाप हो गया जैसे आपके देखते अन्धा कुए में गिरकर मर जाय। उस दुनियावी कुए में गिरने से तो एक जीवन ही नष्ट होता, किन्तु पाप-कूप में गिरकर तो उसके अनेक जन्म बिगड सकते हैं। अतः ज्ञान का प्रचार मनुष्य का एक पवित्र कर्तव्य है।

यों तो धर्म के सभी काम मनुष्य के मन को निर्मल करके आत्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करते हैं किन्तु उन सब में शुभ ज्ञान का प्रचार सर्वोपरि है। अन्य धार्मिक आचरणों का फल सीमित और साधारण है। जैसे आपद्ग्रस्त और दु खी की सेवा करना धर्माचरण है। अभावग्रस्त व्यक्तियों को अपने पास उपलब्ध साधनों से दान देकर सहायता करना पुण्य कार्य है। महाभारत में भीष्म ने दान की प्रशंसा करते हुए उस सात्त्विक दान को जो अपनी सुख सुविधा में कटौती करके दूसरे को लाभ पहुंचाने के लिए किया जाय उत्तम और कठिन काम बताया है— "न दुष्करतर दानात्" दान से भिन्न दूसरा कोई कठिन काम नही है।

अब इस कठिन और महत्त्वपूर्ण दान धर्म का विश्लेषण कीजिए कि इसका फल क्या होने वाला है तो आप इस परिणाम पर पहुंचेंगे कि 'दूसरों को सुख पहुंचाने के लिए हम जिन भोग्य वस्तुओं का त्याग कर रहे हैं, वे हमें इसी जन्म अथवा आगे आनेवाले जन्म में उतनी मात्रा में अथवा बढकर भोगने को मिलेंगी और हमें सुख पहुंचायेंगी।' इस बात को मनुष्य-समाज और दूसरे प्राणियों के जीवन पर दृष्टि डालके बडी सरलता से समझा जा सकता है। ससार में अनेक व्यक्ति ऐसे मिलेंगे जिनके विचार का स्तर बहुत घटिया है, उनके आचरण घृणित हैं कुष्ठादि संक्रामक रोग से पीडित हैं, फिर भी धन-दौलत और भोग के अन्य समस्त साधनों की उनके पास भरमार है, हमें उनसे बात करना या उनके पास बैठना तक भी पसन्द नही है, फिर उनके पास इस भोग सामग्री के ढेर क्यो ?

हमें यदि अधिकार दे दिया जावे तो ऐसे व्यक्तियों को समाज पर कलंक समझ कर हम उन को जीने तक का अधिकार भी देने को तैयार नहीं। किन्तु प्रभु कि क्या विचित्र लीला है कि अच्छे-अच्छे गुणी व्यक्ति अपने निर्वाह के लिए भी चारों ओर टक्कर मारते फिरते हैं और इधर लूले-लगडे कोढ़ी और कलंकी लाखों की सम्पत्ति के स्वामी बने बैठे है—यह कैसे ?

अनेक कुत्ते ऐसे देखे जिनको उपभोग की वे सब सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं जो लखपतियों और करोडपतियों को हो सकती हैं। उनके खाने के लिए दूध और टोस्ट, विश्राम के लिए अच्छा पलंग और गुदगुदा बिस्तर, घूमने के लिए कार ही नही, कार-वालों की गोद। एक बार समाचार पत्र में छपा कि भारत की प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी अमरीका प्रवास से भारत लौटीं तो उन्हें लाने के लिए जो ड्राइवर कार ले गया, उसमें वह इन्दिरा जी के प्यारे कुत्ते को भी बिठा ले गया। हवाई अड्डे पर प्रधान मन्त्री के स्वागत के लिए पचासों केन्द्रीय मत्री, सैकडों अफसर और हजारो नागरिक भागे-भागे फिर रहे थे और इधर प्रधान मन्त्री का प्यारा कुत्ता कार की पिछली सीट पैर फैलाकर आराम से लेटा हुआ था। इन्दिरा जी के आने पर कार का द्वार खोला गया तो देखा कुत्ते ने सब सीट घेरी हुई है। इन्दिरा जी ने दुलार से खिसकाते हुए कहा— भाई मुझे भी बैठने को थोडी जगह दो।

एक बार मैं और श्री प्रकाशवीर शास्त्री हवाई अड्डे पर अपने मित्र श्री डा० लक्ष्मीमल्ल जी सिंघवी के स्वागतार्थ पहुंचे। वे अमरीका से आ रहे थे। उस समय हम दोनों ही पार्लियामेण्ट के मेम्बर थे। अत हवाई अड्डे के अन्दर के कक्ष मे आगे तक चले गये। हमने देखा कि एक यात्री अपने साथ उसी विमान मे अमरीका से एक कुत्ता

लेकर आ रहा था और उस समय वह कुत्ता उसकी गोद में था। कुत्ते को और यह सुविधाजनक यात्रा कैसे उपलब्ध है ?

कर्म-विज्ञान के आधार पर इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि इन सब के गत जीवन के कुछ इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण कार्य थे, अर्थात् इन प्राणियों ने गत जीवन में चाहे समझ एवं मनुष्यत का कोई काम न किया हो, किन्तु एक गुण इनमें स्वाभाविक रूप में रहा होगा कि दूसरों को सुख-सुविधा देने के जो भी साधन इनके पास रहे हों उनका उदारता से इन्होंने त्याग किया होगा। अतः दुष्कर्मों के परिणामस्वरूप पशु-पक्षी की योनि में हैं किन्तु उस दान का फल उत्तम भोज्यपदार्थादि के रूप में इन्हें उपलब्ध है ही।

किन्तु ज्ञान का प्रचार इतना श्रेष्ठ कर्म है कि जीव यदि मुक्त नहीं होता तो अगले जन्म में मनुष्य अवश्य बनेगा, क्योंकि जिस वस्तु का दान हमने किया है, वह वस्तु हमें आगे उपभोग के लिए प्राप्त होगी। ज्ञान मनुष्य के उपभोग की वस्तु है, पशु और पक्षियों के नहीं। अतः मनुष्य को जानी हुई अच्छाई के प्रचार के लिए समय निकालना चाहिए इस शुभ कर्म से लोक और परलोक दोनों बनते हैं।

अब इस सम्बन्ध में एक बात और स्पष्ट करने योग्य है कि हमारे सनातनी भाइयों की यह धारणा है कि मनुष्य के करने-धरने से कुछ नहीं बनता, जो कुछ होता है समय के प्रभाव से होता है। सतयुग में धर्म के चारों पैर जमे हुए थे और पाप के चारों उखड़े हुए थे। अतः हम सब लोगों की प्रवृत्ति धर्म की ओर थी, कोई पाप करता ही न था। त्रेता में आकर धर्म का एक पैर उखड गया और पाप का जम गया अतः लोगों में कुछ-कुछ बुराई की प्रवृत्ति जगने लगी। इसके आगे द्वापर में यह बिगाड और बढ़ा तो आधे के लगभग मनुष्य पाप कर्म करने लगे। इतना कहने के बाद भगत जी कहने लगते हैं, महाराज अब तो कलियुग है। अब तो पाप के तीन पैर जमे हुए हैं और धर्म के तीन उखड़े हुए हैं। हजारों में से किसी की प्रवृत्ति धर्म की ओर होती है। यह सब कलियुग के कारण हो रहा है।

इस सम्बन्ध में निवेदन है कि यह नितान्त भ्रम है कि मनुष्य के करने धरने से कुछ नहीं बनता। जो कुछ बनता और बिगडता है वह मनुष्य के अच्छे और बुरे कर्मों का ही फल होता है। क्या सारा कलियुग हमारे देश के लिए ही है। हमारी आंखों के सामने कल परसों मुट्ठी भर यहूदियों के देश इजरायल ने जन्म लिया, वहाँ वही सब कुछ हो रहा है जो आपके सतयुग में वर्णित है। गत विश्व युद्ध में जर्मनी और जापान धूल में मिला दिए गये थे। किन्तु आज समृद्धि के शिखर पर हैं।

साथ ही अपने इतिहास पर एक दृष्टि डालें तो उससे यही पता लगता है कि उस समय के महापुरुषों ने अपने ऊँचे विचार और आचार से ही मनुष्य-समाज का नैतिक और व्यावहारिक स्तर ऊँचा करके सुख और शान्ति प्रदान की। सतयुग का तो इतिहास उपलब्ध नहीं होता। इतिहास की कडियां त्रेता युग की जो झांकी हमारे सम्मुख उपस्थित करती हैं उनसे इसी बात की पुष्टि होती है।

त्रेता युग के आते-आते वैदिक मर्यादाएँ शिथिल होने लगी थी। महाराज दशरथ ने ही एक पत्नी-व्रत की मर्यादा का पालन नहीं किया किन्तु उस समय राम जैसे महापुरुष ने अपने उच्च चरित्र और असाधारण सहिष्णुता से शिथिल वैदिक आदर्शों को पुनः स्थापित किया।

राम ने पुत्र, भाई, मित्र, पति और राजा आदि के सभी सम्बन्धों को आदर्श रूप में उपस्थित किया। विषम से विषम परिस्थिति में भी वह दृढ़ रहे। वाल्मीकि ने राम में कुछ ऐसे गुणों का वर्णन किया है जो लोकोत्तर कहे जा सकते हैं। राम की बोल-चाल का वर्णन देखिये—

स च नित्यं प्रशान्तात्मा मृदुपूर्वं च भाषते।
उच्यमानोऽपि परुषन्नोत्तरं प्रतिपद्यते॥

राम सदा शान्त रहते थे। बहुत मीठी भाषा बोलते थे। यदि कोई कटु भाषण करता था तो

उस कड़वी बात का उत्तर ही नहीं देते थे। राम के व्यवहार का आदर्श भी देखिये—

कदाचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति।
न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया॥

यदि कोई राम के साथ एक भी उपकार का काम कर दे तो वे इतने से ही सन्तुष्ट हो जाते थे। उनको हानि पहुंचाने के लिये कोई शतश विपरीत काम करता था तो भी वे अपने आत्मिक बल के कारण उसकी परवाह नही करते थे।

इन महान् गुणों के परिणामस्वरूप ही वह रामराज्य स्थापित हो सका, जिसे आज लाखों वर्ष बाद भी हम याद करते हैं। राम अपनी सूझ-बूझ से अपने पारिवारिक जनों और अपने भाइयों को न संभालते, तो फिर न जाने राम के घर की भी क्या दशा होती? उदाहरण के लिये एक दृश्य पर दृष्टि डालिये—

राम के वनवास की बात सुनकर लक्ष्मण राम के पास आये, और यह परामर्श देने लगे कि आपको वन नही जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में आपको किसी को कुछ कहने की अथवा करने की आवश्यकता नही है। सब कुछ आप मुझ पर छोड दीजिये। राम नें लक्ष्मण को समझाया और लक्ष्मण ने पिता के प्रति कठोर शब्दों का प्रयोग किया तो झिडका भी। राम सीता और लक्ष्मण के साथ वन में चले गये। वहां चित्रकूट में डेरा डाला। राम और सीता की सुरक्षा के लिये लक्ष्मण सदा तत्पर रहते।

इधर ननिहाल से भरत बुलाये गये। उन्हें सारी परिस्थिति जानकर अत्यन्त वेदना हुई। पिता की अन्त्येष्टि के बाद भरत ने मन्त्रिमण्डल और चुने हुए लोगो की सभा बुलाकर राम को वन से वापस बुलाने का विचार किया। सभा के निश्चय के अनुसार भरत तीनों माताओं और सभी मंत्रियों के साथ राम को वापस लाने के लिए वन में गये। भरत के साथ उस समय की रीति के अनुसार बहुत सी सेना (९ लाख—वा० रा० अयो० ८३) थी।

लक्ष्मण ने सेना के हाथी, घोड़े और रथों की धूल का घटाटोप आकाश में उठता हुआ चित्रकूट पर्वत की ऊँचाई से देखा और राम से कहा कि कोई सेना लेकर हमारी ओर आ रहा है। ज्यों-ज्यों धूल चित्रकूट की ओर बढ रही थी, लक्ष्मण की परेशानी भी उतनी बढती जाती थी उस समय राम की लापरवाही को देखकर झुंझलाकर लक्ष्मण ने कहा—आप तो ऐसे उदासीन हो गए हैं जैसे ससार मे जीना ही नहीं है। कोई सेना लेकर इधर आ रहा है तो सोचना चाहिये कौन है? और क्यों आ रहा है?

राम ने लक्ष्मण की व्याकुलता को देखकर उसी से पूछा—तुम्ही अनुमान लगाओ, कौन हो सकता है? अब लक्ष्मण का उत्तर वाल्मीकि के शब्दों में (अयोध्या काण्ड) पढिये—

सम्पन्नं राज्यमिच्छंस्तु व्यक्तं प्राप्याभिषेचनम्।
आवां हन्तुं समभ्येति कैकेय्या भरत सुत॥

स्पष्ट है कि राज्य प्राप्त करके भरत अपने राज्य को निष्कंटक बनाने के लिए सेना लेकर हम दोनों को मारने आ रहा है—

गृहीतधनुषावावां गिरिं वीर श्रयावहे।
अथवेहैव तिष्ठावः सन्नद्धावुद्यतायुधौ॥

आइए हम दोनों धनुष बाण लेकर पहाड पर चढ चले अथवा शस्त्रास्त्र से लैस होकर यही मोर्चा संभाल ले।

सम्प्राप्तोऽयमरिर्वीर भरतो बध्य एव मे।
भरतस्य वधे दोषन्नहि पश्यामि राघव॥

यह हमारा शत्रु भरत स्वय ही आ रहा है और सर्वथा मारने योग्य है हे! राघव मैं भरत के मारने में कोई दोष नही देखता।

पूर्वापकारिणं हत्वा नह्यधर्मेण युज्यते।
पूर्वापकारी भरतस्त्यागे धर्मश्च शाश्वतः॥

पहले घात करने वाले को मारने में कोई पाप नही लगता। भरत ऐसा ही है अत. इसका परित्याग धर्मानुकूल है।

राम लक्ष्मण के उत्तर को सुनकर छटपटा गये और कहने लगे--

धर्ममर्थञ्च कामञ्च पृथिवीं चापि लक्ष्मण।
इच्छामि भवतामर्थे एतत् प्रति शृणोमि ते॥

हे लक्ष्मण ! धर्म, अर्थ, काम और इस सारे राज्य को भी मैं तुम भाइयों को सुख पहुचाने की दृष्टि से चाहता हूं यह मैं तुझे विश्वास दिलाता हूं।

नेयं मम मही सौम्य दुर्लभा सागराम्बरा।
नहीच्छेयमधर्मेण शक्रत्वमपि लक्ष्मण॥

हे सौम्य लक्ष्मण ! मेरे लिये सागर पर्यन्त समस्त पृथिवी प्राप्त करना कोई कठिन नहीं है ! किन्तु मैं अधर्म से इन्द्र पद भी प्राप्त नहीं करना चाहता।

यद्विना भरतं त्वाञ्च शत्रुघ्न वापि मानद।
भवेन्मम सुखं किञ्चिद् भस्म तत् कुरुतां शिखी॥

हे लक्ष्मण ! भरत, तुझे और शत्रुघ्न को छोड कर यदि मुझे कुछ सुख प्राप्त हो भी तो ऐसे सुख को मैं आग लगाना पसन्द करूंगा।

स्नेहेनाक्रान्तहृदय: शोकेनाकुलितेन्द्रिय:।
द्रष्टुमभ्यागतो ह्येष भरतो नान्यथागत:॥

प्रिय लक्ष्मण ! प्रेमविभोर हृदय से मेरे तेरे वियोग में दु:खी भरत मुझे और तुझे मिलने आया है, किसी और विचार से नहीं।

विप्रियं कृतपूर्वन्ते भरतेन कदा नु किम्।
ईदृशं वा भयन्तेऽद्य भरतं यद्विशङ्कसे॥

क्या पहले कभी भरत ने तुम्हें कोई कष्ट दिया है जिसके कारण तुम डर रहे हो उस पर शंका कर रहे हो ?

यदि राज्यस्य हेतोस्त्वमिमां वाचं प्रभाषसे।
वक्ष्यामि भरत दृष्ट्वा राज्यमस्मै प्रदीयताम्।

यदि राज्य के कारण तुम यह बात कह रहे हो तो भरत के मिलने पर मैं उसे कहूगा कि यह राज्य लक्ष्मण को दे दो।

उच्यमानो हि भरतो मया लक्ष्मण तद्वच:।
राज्यमस्मै प्रयच्छेति बाढमित्येव मंस्यते॥

हे लक्ष्मण ! मेरे इस राज्य देने के प्रस्ताव पर भरत हां ही करेगा, ना नहीं।

राम के उद्गार कितने औदार्यपूर्ण और महान् हैं। राम ने इसी प्रकार के उदात्त विचार और आचार से अपने समय के समाज को अनुप्राणित किया था। यदि समय के प्रभाव से ही सब कुछ होता तो उसका प्रभाव लक्ष्मण पर क्यों नही है, जो भरत को मारने के लिये उद्यत हो गया। फिर बाली और सुग्रीव विभीषण और रावण भी तो त्रेता में ही थे। त्रेता का जादू उन्हें क्यों नही प्रभावित कर रहा था। वस्तुत: बात वही है कि राम ने अपने पवित्र और उच्च आचरण से सभी विचारशील व्यक्तियो को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया था।

इतिहास में अनेक उदाहरण ऐसे हैं कि राजा ने अपने अन्तिम समय में उत्तराधिकारी पुत्र को छोटा देखकर राज्य का अधिकार अपने भाई को देते हुए कहा कि इसके समर्थ और योग्य होने पर इसको राजा बना देना। यदि इसमें यह क्षमता न हो तो फिर शासनसूत्र अपने हाथ में ही रखना। इस संसार से विदा लेनेवाले भाई के प्रस्ताव को भाई ने रोकर स्वीकार किया, किन्तु राज्य पाने के बाद जब चस्का लगा तो असली उत्तराधिकारी को समाप्त करके भी शासन को अपने अधिकार में रखने की बात मन में आई। इस प्रकार के दो नाम मुंज और वनवीर के तो बहुत ही प्रसिद्ध हैं। मुंज को भोज के पिता ने और वनवीर को उदयसिंह के पिता महाराणा सांगा ने राजा बनाया था। फिर क्या कारण था कि १४ वर्ष तक अयोध्या पर शासन करके भी भरत के मन में कोई विकार नही आया।

भरत को नन्दिग्राम में जब राम के वन से वापस आने का समाचार दिया गया तो भरत पुल-

कित हो उठे और कहने लगे—

अद्य जन्म कृतार्थं मे संवृत्तश्च मनोरथः।
यत्त्वां पश्यामि राजानमयोध्यां पुनरागतम्॥

आज मेरा जीवन सफल हो गया। मेरी सब मनौतियाँ पूरी हो गईं कि आज अयोध्या के अधिपति को आपको आया हुआ देख रहा हूं।

पादुके ते तु रामस्य गृहीत्वा भरतः स्वयम्।
चरणाभ्यां नरेन्द्रस्य योजयामास धर्मवित्॥

भरत ने सिंहासन पर रखी राम की खडाऊं स्वयं अपने हाथ से उठाकर राम के चरणों में पहनाकर 'अयोध्या के साम्राज्य को ओर संकेत करके कहा—

"एतत्ते सकल राजम्न्यासन्निर्वर्तित मया।"

हे भाई! तुम्हारा यह सारा राज्य मैंने धरोहर के रूप में सुरक्षित रखा है, अब इसे आप सभालिए।

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि राम के समय का समाज राम, भरत तथा इसी प्रकार के उदात्तचरित विचारशील व्यक्तियों ने बनाया था। वह समय के प्रभाव से स्वतः नहीं बन गया था।

इसी प्रकार द्वापर में बुराइयों के बीहड़ जगल को सतत जागरूक रहकर और निरन्तर घोर परिश्रम करके योगिराज कृष्ण ने समाज के वायुमण्डल को शुद्ध किया था। अत. वेद ने कहा कि प्रत्येक विचारशील व्यक्ति सद्गुणों के प्रचार के लिये सचेष्ट रहे तो मानव समाज सुख और शान्ति का घर बन सकता है।

अब इसके आगे मन्त्र की तीन बातों की केवल सगतिमात्र लगाकर समाप्त करते हैं। पहली बात की व्याख्या ही पर्याप्त स्थान ले गयी।

मन्त्र की दूसरी बात है शुभ कर्म करने वालों के सद्गुणों की सराहना करके उनका उत्साह बढाना चाहिए। इससे वे और उमग से काम करेंगे तथा अन्य सामान्य व्यक्ति भी उनके यश और गौरव को देखकर शुभ कर्म करने की प्रेरणा लेंगे। इसके विपरीत यदि उनकी प्रशंसा न करके डाह और जलन से उन पर मिथ्या दोषारोपण करके उनकी टाँग खीचेंगे तो इससे समाज की बहुत बडी हानि यह होगी कि लोग भलाई का काम करने से कतरायेंगे और परिणामस्वरूप अच्छाई के प्रचार का मार्ग अवरुद्ध हो जायेगा।

मन्त्र की तीसरी बात है कि ज्ञान को अपने आचरण का अग बनाकर ही दूसरों को उपदेश देना चाहिए तभी कथन का प्रभाव होता है। यदि स्थिति इसके विपरीत हो तो उसका फल सन्तोषप्रद नहीं होगा फिर तो लोग आलोचना करते हुए यही कहेंगे—

मदहवेगुफतार को समझो न इखलाकी सनद।
खूब कहना और है और खूब होना और है॥

मन्त्र की चौथी और अन्तिम बात है—हम वाणी को वश में रखके उसका इस प्रकार प्रयोग करें कि सब ओर आनन्द और माधुर्य की वृद्धि हो।

मानवीय मूल्यों के सशक्त आयाम–

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

—यशपाल सुधांशु

सूर्यवंश प्रभाकर, अखिल आर्यनिषेवितपादपद्म साकेताधीश्वर, कौशल्योल्लासकारक, दशरथानन्द-वर्धन, जानकी जीवन, सुग्रीव सुहृद्, स्वकुलदीपक लोकप्रग्राहक, विश्वविश्रुतकीर्ति, लोकाभिराम मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज मानवी मूल्यों के लिए संघर्षरत सामाजिक चेतना से परिपूर्ण, अगाध ज्ञानसागर से आप्लावित, गहरी यातना, वेदना में डूबे इतिहास के निर्णायक मोड पर स्थित एक महान् व्यक्तित्व हैं। वे अपने समय को नई दिशा देने के प्रतीक निर्मल उद्दाम चारित्रिक सभावनाओं के सर्वोच्च शिखर पर आरूढ जनमानस के लाखों वर्षों से पवित्र आदर्श बने हुए हैं।

श्री राम का व्यक्तित्व अनेकानेक गुणों से लिपटा हुआ संघर्षरत है। जनमानस में रचा बसा, इतिहास के पृष्ठों से गरजता, मर्यादाओं के लिए सर्वस्व अर्पण करता आज भी अलख जगा रहा है। उनकी जीवन गाथा करुणा और दर्द से पटी पडी है। उनके दर्द या पीड़ा केवल मात्र निजी नही, अगर निजी होते तो शायद वे इतिहास मे स्थान न बना पाते। उनकी वेदना गहरी सामाजिक वेदना है। विश्वामित्र जैसे ज्ञानी गुरु ने भी उन्हें ढाल बनाया, शिक्षा के बहाने इसलिए शिष्य चुना जिससे वे अपने यज्ञ को निडरता से पूर्ण कर सकें। सुबाहु और ताडका का वध अपने किसी वैर या स्वार्थ कारण नही, जगहिताय को ध्यान में रखकर किया। श्री राम के जीवन की संघर्ष गाथा में सब से तीखा मोड उनके राज्याभिषेक के समय आता है। कहां राज्यसिंहासन पर आरोहण की मंगलमयी शहनाइयों की मृदु ध्वनियां थीं कहा एकाएक पटपरिवर्तन हो गया, १४ वर्षों का वनवास मिल गया। श्री राम के मुख पर किञ्चित् भी आक्रोश या विषाद की रेखा नही थी। आदि कवि महर्षि वाल्मीकि के शब्दों मे (आहूतस्याभिषेकाय) राज्याभिषेक के अवसर पर बुलाये हुए और वन के लिये विदा किये हुए श्री रामचन्द्र के मुख पर मैंने (वशिष्ठ ने) कोई भी कुछ भी अन्तर नही देखा। वास्तव में निष्काम, कर्मवीर का यही चित्र होता है। आज ही मृत्यु आ जाये या युगान्तर के बाद आये, वे अपनी राह नहीं भूलते, न उससे विचलित होते। उसी मधुर मुस्कान के साथ वे अपना कर्तव्य करते रहते हैं। वनवास की दुःखभरी व्यथा कथा में तेरह वर्षों का वर्णन न के बराबर है। वनवास का चौदहवां वर्ष सघर्ष और घोर तपश्चर्या का रहा। इस वर्ष में भगवती सीता के अपहरण की घटना ने श्री राम को अत्यन्त व्यथित कर दिया, परन्तु वे निजी व्यथा में डूबकर हो नहीं रह जाते बल्कि वियोग के अश्रुओं से नहाकर उनकी चेतना और भी दीप्तिमान हो जाती है। वे उस दुर्दान्त अहंकारी तानाशाह रावण के अन्याय को ललकारने को उद्यत होते हैं परन्तु वे एकाएक हमला नही करते। रावण को हनुमान और अंगद

रा चेतावनी दिलायी जाती है, लेकिन क्रूर, क्त के दर्प से अकड़ते रावण को सीधा होते न देख र अपने धनुष की प्रत्यञ्चा पर बाण चढाते हैं। हावीर हनुमान के सेनापतित्व में वानरजातीय द्धाओं की सेना को संगठित किया गया। लङ्का प के अतुल बलशाली, महापराक्रमी राक्षस जाति समृद्ध साम्राज्य अधीश्वर पापी अनाचारी रावण का विध्वंस कर विजय वैजयन्ती फहरायी। लंका के विजय करने के बाद रावण के अनुज धर्म-परायण विभीषण को ही प्रजापालनार्थ सिंहासन र श्रीराम ने आरूढ कराया।

श्री रामचन्द्र को समस्त विश्व से सर्वोच्च उपाधि मर्यादा पुरुषोत्तम को दी गई। जो और किसी महापुरुष को प्रदान नहीं की गई। उन्होंने अपने समस्त जीवन में कहीं भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। वाल्मीकि ने चित्रण किया—वन गमन आदेश कर देने के बाद दशरथ बेसुध हो गए। होश आते ही कहते हैं (अहं राघव ! कैकेय्या वरदानेन) हे राम ! मैं कैकेयी को वचन देकर बंध गया हू। तुम मुझे कैद करके अयोध्या के राजा बन जाओ। श्री राम ने अपनें गाम्भीर्य तथा विवेक का प्रदर्शन करते हुए कहा (भगवान् वर्षसहस्राय भव पृथिव्या) पिता जी ! आप इस धरती के हजारो वर्षों तक स्वामी रहें। मुझे तो वन का राज मिला है मैं सहर्ष उसी में सन्तुष्ट हूं। यहां स्थानाभाव होने से सम्पूर्ण तथ्य प्रस्तुत करना कठिन है, थोड़े शब्दों में कह सकते हैं। वे एक पत्नीव्रती पिता सेवक, आज्ञा पालक सन्तान वत्सल पिता, प्रजाहित में सर्वस्व अर्पण करने वाले आदर्श राम, मित्रों के दुःखहरण करने वाले प्रिय बन्धु, विश्व मर्यादा संस्थापक, भ्रातृ प्रेम के पवित्र आदर्श, दृढ तपस्वी, याजक, वेदविद्वान्, धर्मपरायण, मधुरस्वभावी, प्रभुविश्वासी, निष्काम कर्म के प्रबल योद्धा एवं शान्तचित्त थे।

स्वराज्य की रक्षा : चरित्र बल से

—प्रकाशवीर शास्त्री

एक बार जब राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित चाणक्य से जब किसी ने पूछा—दुनिया की इस हाय धुन, भाग दौड और खींचातानी के पीछे क्या रहस्य छिपा है ? मनुष्य शान्ति से क्यों नहीं बैठता आखिर किसकी तलाश मे यह भागा जा रहा है ? उस समय चाणक्य ने दो अक्षरों का उत्तर दिया 'सुख'। आराम से जीवन व्यतीत करने की लालसा ने इसे पागल बना रखा है। व्यक्ति हो, चाहे राष्ट्र —अपना चरित्र खोकर वे कहीं के नही रहते पर यह सुख मिलता कहा है ? जब यह उनसे पूछा गया तब उनका उत्तर था–धर्म पूर्वक जीवन व्यतीत करने से। अधर्मी व्यक्ति अपनी सासारिक इच्छाओ और क्षणिक वासनाओं की पूर्ति तो किसी न किसी तरह कर लेता है, परन्तु स्थिर सुख से वह वंचित ही रहता है। लेकिन धर्म के मूल सिद्धान्तो अथवा धार्मिक मान्यताओं की कमर पर जब अर्थ का हाथ आ जाता है तब वह और भी तेजी से फलने लगती हैं। बुद्ध के उपदेश भारत की चारदीवारी मे ही सिमट कर रह जाते, यदि उनकी कमर पर अशोक का हाथ न रखा गया होता। राजकुमार महेन्द्र और राजकुमारी सघमित्रा उसके प्रचारक बनकर यदि एशियाई देशों की यात्रा पर न निकलते। लगभग ऐसी ही बात ईसा और मुहम्मद की विचारधाराओं की भी है। राज्याश्रय मिलने से ही वे दूसरे देशों तक आसानी से पहुंच सके। अर्थ-शास्त्र की आधार-भित्ति है—व्यापार। सुदूर देशों से जब सामान का आयात-निर्यात होता है तब अर्थतन्त्र की रीढ़ मजबूत होती चली जाती है। पर व्यापार भी उन्ही राष्ट्रों का अच्छा चमकता है, जिनकी शासनसत्ता उनके अपने हाथ में हो। अंग्रेजों के समय में भारत सुई का भी बाहर से आयात करता था। फिर कहां से तो व्यापार चमकता और कहां से देश का आर्थिक ढांचा मजबूत होता, इसीलिए चाणक्य ने कहा—व्यापार भी उन्ही देशों का उभरता है, जो स्वाधीन हों। उन्मुक्तहस्त और उन्मुक्त मस्तिष्क से वे अपने व्यापार की दिशा निर्धारित करते हैं। किस माल की खपत कहाँ अधिक है, इसके लिए मण्डी तलाश करते हैं। चरित्र बल की महत्ता पर जब प्रश्नकर्ता ने उनसे आखिर एक प्रश्न और पूछा—स्वाधीन राष्ट्रों का स्वराज्य अक्षुण्ण कैसे रहता है ? तब उनका उत्तर था—चरित्र बल से। भ्रष्ट और स्वार्थी लोगों के हाथ में यदि सत्ता आ जायेगी तब स्वराज्य छिन जायगा। चाणक्य ने अपनी इसी विचारधारा को सूत्रबद्ध करते हुए लिखा—

सुखस्य मूल धर्म। धर्मस्य मूल अर्थ। अर्थस्य मूल वाणिज्यम्।
वाणिज्यस्य मूल स्वराज्यम्। स्वराज्यस्य मूल चारित्र्यम्॥

राष्ट्रीय संकल्प और राष्ट्रीय चरित्र मुट्ठी भर लोगों के देशों को विश्व की प्रमुख शक्ति बनाकर खडा कर देता है। महायुद्ध के खण्डहरों में दबे हुए जापान और जर्मनी जैसे देश आज दुनिया का नया चमत्कार बन गए। लेकिन जहां राष्ट्रीय चरित्र भाषणों, लेखों और उद्घोषों तक ही केवल सीमित

हो जाता है, वहाँ एक क्या पन्द्रह करोड़ की आबादी के नौ-नौ अरब राष्ट्र मिल कर भी पच्चीस लाख की आबादी वाले छोटे से इजराइज को नही दबा पाए। भारतीय पराधीनता की पृष्ठभूमि में झांक कर देख, तो वहाँ भी पग-पग पर इसके चिह्न दिखाई पडें। हमारी आपसी फूट और स्वार्थी मनोवृत्ति से ही तो अंग्रेज पौने दो सौ वर्षों तक यहां राज्य कर गया, पर जब राष्ट्रीय स्वाभिमान देश का उभर कर ऊपर आया, तब वह चुपचाप बिस्तर बांध कर अपने घर वापिस लौट गया। पौने दो सौ वर्ष का वह इतिहास घृणा, द्वेष और कुत्सित स्वार्थपूर्ति की घटनाओं से भरा पडा है। उसे याद कर के भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मनुष्य इतना भी नीचे उतर सकता है जो अपना पेट भरने के लिए लाखों निरपराध प्राणियों को एक साथ मौत के मुंह में झोंक देगा, आसानी से यह कल्पना नही होती।

अकाल की विभीषिका कभी इस हद तक भी पहुंची होगी—जब आदमी और कुत्ते को जूठी पत्तल चाटने के लिए संघर्ष करना पडा होगा। मां बाप अपने सीने पर पत्थर रखकर बच्चों को भेड़-बकरी की तरह बाजारों मे बेचेंगे। बागड (राजस्थान) के छप्पनियां अकाल की तो जरूर कुछ ऐसी बातें सुनने में आई थीं। जब लाला लाजपतराय एक ऐसे अबोध बालक को वहां से उठाकर लाए थे जो मरी हुई मा के स्तनों से दूध पीने के लिए छटपटा रहा था लेकिन १९४३ में जो दुर्भिक्ष बगाल में हुआ, उसनें तो आगे-पीछे के सब रिकार्ड ही तोड दिए। तोडता भी क्यों ना, यह अकाल भगवान की ओर से नही इन्सान की ओर से आया था। अंग्रेजों की शै पर कुछ गल्ला सेठ अपनी तिजोरियां भरनें में लगे थे। जब कि कई लाख आदमी मौत के घाट उतर चुके थे, पर काल चण्डिका इस पर भी अपना खप्पर लिये घूम रही थी। गोदामों में चावल भरा पडा था, पर खुदरा बिक्री की दुकानों पर मक्खियाँ भिनक रही थी। कुछ व्यापारी थे जो एक के सौ बनाने में लगे थे। उनकी हविश की खोपडी अभी पता नहीं कितनी और खाली थी?

लेकिन चन्द व्यापारी जहाँ अपने इस जघन्य व्यवहार से मनुष्यता को कलंकित कर रहे थे वहां ऐसे भी व्यक्ति उस समाज में थे —जो अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार दुखियों की सहायता करने में कुछ कसर उठाकर नहीं रख रहे थे। ऐसी एकता उन दिनों देखने में आई जो बहुत कम अवसरों पर देखने को मिलती है। स्वतन्त्रता के बाद भी कई राज्यों में उसी तरह की दैवी विपत्तियां आई। देश के दो तीन प्रमुख राज्य तो आज भी बुरी तरह सूखा और अकाल की लपेट मे हैं। इसमें सरकार और समर्थ व्यक्ति सहयोग भी कर रहे हैं पर कुछ गठकटे यहां भी अपनी आदत से बाज नही आ रहे। तब और आज में इतना अन्तर तो जरूर हो गया उस समय कुछ तिजोरिया भरने वाले सक्रिय थे, अब जेब भरने वाले सक्रिय हैं। लोकतन्त्र मे दायरा कुछ बढ गया है। राजस्थान तो अक्सर हर दूसरे-तीसरे साल ही सूखा और अकाल के जाल में फंस जाता है। केन्द्र से जो धनराशि पीछे सहायता के लिए वहां भेजी गई, सुनते हैं वह नीचे तक पहुंचते-पहुंचते आधी भी न रही। जिन हाथों से होकर सहायता की राशि निकली, उनमें चिपक-चिपक कर ही वह सूक्ष्म होती चली गई। काल के मुह में फसे दुखियों का कौर हडपने वाले इस तरह के लोगों को क्या कहा जाय? उनके इस व्यावहार का परिणाम यह हो रहा है—देश में गैर-सरकारी स्तर पर सहयोग करने का जो उत्साह रहता था वह भी मन्द पड गया। अभी पीछे इसी तरह के सूखाग्रस्त क्षेत्र को एक सरकार ने राज्य मे सहायता कार्य के लिए कुछ प्रमुख उद्योगपतियों से सहयोग की अपील की। उन्होंने सरकार को सहयोग का पूरा आश्वासन भी दिया। पर शर्त यह रखी—स्थान और वहां की आवश्यकतायें तो सरकार बता -, व्यवस्था सब वे करेंगे।

राज्य सरकार चाहती थी—ये लोग सहायता नकद दें, जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया।

राष्ट्रीय चरित्र का ह्रास

चीनी आक्रमण के दिनों में अरुणाचल (नेफा) में सैनिकों को खाने-पीने का सामान और गरम कपड़े भेजने का दायित्व उडीसा की एक विमान कम्पनी को भी सौंपा गया। जिन लोगों की यह कम्पनी थी, उनमें उस राज्य के वरिष्ठ नेता भी भागीदार थे। कम्पनी के विमान चालकों ने बडी मुस्तैदी से यह जिम्मेदारी निभाई। देश में चारों ओर उस कम्पनी की वाह-वाह हुई। पर पता नही कैसे चन्द दिनों बाद उस सामान का कुछ भाग कलकत्ता के बाजारों में बिकता हुआ भी पाया गया ऐसी ही कुछ चर्चाएँ पीछे बगलादेश से आये शरणार्थियों को मिली विदेशी सहायता सामग्री के सम्बन्ध भी सुनी गई। यह तो निश्चित करना है कि वह कहां तक सच थी ? लेकिन यदि उसमें कुछ भी सत्यांश है तो कहां जाकर इस पतन की पराकाष्ठा होगी ? हमारे चरित्र को क्या हो गया है ? जो मुसीबत के मारे शरणार्थी भी हमारी दया के पात्र नहीं रहे। अस्पतालों के मरीजों के लिए जो दूध या दवा आती है वह भी कई बार बाजारों मे बिकती पकडी गई। मोर्चों पर लडने वाले जवान जो देश के लिए अपना खून दें, उन्हें आटा-दाल चावल भी हम शुद्ध न दे सकें। इस से अधिक हमारे राष्ट्रीय चरित्र का ह्रास और क्या होगा ?

ये मौत के व्यापारी

घी असली नहीं, दूध असली नहीं, मक्खन असली नहीं। पंसारी की दुकान पर जाओ तो मनुष्य के दिन-रात के व्यवहार की चीजे हल्दी, जीरा, नमक, धनियां, हींग, काली मिर्च आदि भी असली नहीं मिलतीं। पीछे कलकत्ता में दमदम हवाई अड्डा के पास बसी गरीबों की एक कालोनी में मिलावटी तेल खाने से दो सौ आदमी पक्षाघात के शिकार हो गये। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के खाद्य दल ने अभी अपने एक प्रतिवेदन में बताया है जिन १११ खाद्य पदार्थों की हमने परीक्षा की, उनमे ६८ में मिलावट थी। यह हालत तब है, जब सरकार इसकी रोकथाम के लिए कानून भी बना चुकी है। दिल्ली के पास शाहदरा में नकली इन्जेक्शन बनाने वाला एक ऐसा कारखाना ही पकड़ा गया जो दवा की जगह पानी भर कर न जाने कब से बेच रहा था। पाकिस्तानी सीमा से लगते हुए राजस्थान के एक नगर में १९६५ के बाद सेना का आधुनिकतम हवाई अड्डा बन रहा था। उसकी पूरी की पूरी छत उस समय बैठ गई जब नीचे से उसके सहारे की बल्लियाँ हटाई गईं। कुछ मजदूर भी उसमें दब कर मरं गए। जाँच करने पर पता लगा कि जो सीमेण्ट उसमें लगा था, उसी में मिट्टी मिली थी। अब बताइए दो चार की नहीं लाखों की जिन्दगी से खिलवाड करने वाले इन मौत के व्यापारियों को क्या सजा दी जाय ? हजार-पांच सौ का जुर्माना या महीने दो महीने की जेल से इनका क्या बिगडने वाला है ? इसके लिए तो कुछ ऐसी ही कठोर व्यवस्था करनी होगी जैसी वह दूसरों की जिन्दगी से खिलवाड करते हैं।

लेकिन अब तो सवाल यह है—राष्ट्र के शरीर पर लगे इस बदनुमा धब्बे को मिटायेगा कौन ? जिनके हाथ पहले ही उस कीचड में सने हैं, वह तो और उसे गन्दा कर देंगे। उसके लिए तो स्वच्छ चरित्र और ईमानदारी के साँचे में ढले राजर्षि टण्डन और राजेन्द्र बाबू जैसे बेदाग व्यक्तियों को ऊपर उठाना होगा। शासक का ईमानदार होना ही केवल पर्याप्त नही है उसकी ईमानदारी दूर से झलके यह भी आवश्यक है। बड़े-बड़े राजनेताओं और समाज के पथ-प्रदर्शकों की गाथाएँ जब बन्द कमरों से निकल कर चौराहों पर चर्चा का विषय बन जाती हैं, तब देश का स्वच्छ वातावरण भी दूषित होने लगता है। हो सकता है उसमें कुछ

राजनीतिक द्वेष से प्रेरित हों पर जो भी हो देर तक उन पर रहस्य का पर्दा डाले रखना कहां की समझदारी है। हमारी ससदीय प्रणाली मे ब्रिटिश ससद की अधिकाश परम्पराएँ आदर्श मानी गई हैं पर मन्त्रियों और राजनेताओ के आचरण पर आए धब्बों को हटाने मे भी हमें उनका आदर्श अपनाना चाहिए।

ब्रिटेन का उदाहरण

श्री मोर्डलिंग (तत्कालीन) प्रधान मन्त्री श्री होथ की मन्त्रि-परिषद में गृह-मन्त्री थे। १८ जुलाई, १६७२ को प्रधानमन्त्री श्री हीथ ने हाउस आफ कामस मे श्री मोर्डलिग के इस्तीफे की घोषणा की। इस्तीफे के कारणों का आरम्भ ३ जुलाई को हुआ जब वैकफील्ड (यार्क शायर) मे जान पालसन नामक अन्तर्राष्ट्रीय भवन निर्माता और कई व्यापारिक कम्पनियों से सम्बद्ध व्यक्ति के दिवालियेपन की सर्वजनिक जाच शुरू हुई। इस जांच में अपना वक्तव्य देते हुए जान पालसन ने बताया कि-श्री माडलिंग उनकी एक सहयोगी कम्पनी के अवैतिनिक चेयरमैन हैं और उन्होंने यह कहा है कि—वह ईस्ट ग्रीनस्ट्रेण्ड स्थित एडलिन जैनी थियेटर के लिए चन्दे के रूप मे लगभग आठ हजार पौण्ड वार्षिक दान देने का एक कागज पत्र भर कर उन्हें दे। वह जानते थे---माडलिग की धर्मपत्नी, जो पहले एक अभिनेत्री थी इस थियेटर के लिए चन्दा इकट्ठा कर रही थी और माडलिग भी इस थियेटर के ट्रस्ट को आर्थिक दृष्टि से मजबूत आधार प्रदान करने में दिलचस्पी रखते थे।

सार्वजनिक जाच मे जान पालसन के इस वक्तव्य के समाचार प्रकाशित होते ही लिबरल ग्रुप के नेता श्री जर्मी थोप ने ब्रिटिश ससद में प्रस्ताव रख कर मांग की कि --इस मामले की पूरी जाच की जानी चाहिए। जाच का कार्य तो बाद मे शुरू हुआ लेकिन श्री पालसन के इस वक्तव्य मात्र मे ही श्री माडलिग ने अनुभव किया कि चूंकि इस जांच में उनका नाम थियेटर के लिए किसी निजी व्यक्ति से दान को राशि प्राप्त करने के सिलसिले में लिया गया है, इसलिए उसकी जाच पूरी होने की अवधि के दौरान अपने पद पर उन्हें नहीं बने रहना चाहिए।

इसी सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री और उनके बीच स्थिति को स्पष्ट करते हुए पत्रों का आदान प्रदान भी हुआ। जिन्हें १८ जुलाई १६७२ को श्री माडलिंग के इस्तीफे के साथ ही प्रकाशित कर दिया गया। अपने पत्र में श्री माडलिंग ने प्रधानमन्त्री को लिखा— चूकि इस जांच का दायित्व अन्ततोगत्वा महानगरीय पुलिस पर है और गृह मन्त्री के नाते मैं महानगर के लिए पुलिस की सत्ता और शक्ति के लिए जिम्मेदार हूँ इसलिए मैं यह उचित समझता हू कि जब तक इस सारे मामले पर जाँच का कार्य चल रहा है तब तक मैं इस पद पर न रहू क्योंकि इस सार्वजनिक जांच में मेरा नाम लिया गया है।

आगे चलकर उन्होने अपने पत्र में प्रधानमन्त्री को यह भी लिखा कि आपने बडी कृपापूर्वक मुझ से यह कहा कि मैं इस बीच सरकार का कोई अन्य पद सभाल लूं, किन्तु अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा के नाते मैं कोई ऐसा पद सभालना नहो चाहता।

सार्वजनिक सेवा की सर्वोत्तम परम्परा

श्री माडलिंग की व्यक्तिगत सच्चाई ईमानदारी और योग्यता की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए विरोधी दल के उपनेता श्री शार्ट ने हाउस आफ कामस मे उनके इस्तीफे पर हार्दिक खेद प्रकट करते हुए कहा–श्री माडलिंग ने ब्रिटेन मे सार्वजनिक सेवा करने वाले लोगो की सर्वोत्तम परम्परा के अनुसार ही अपना यह इस्तीफा दिया है।

लेकिन हमारे यहा तो ये बाते बहुत साधारण समझी जाती हैं। सैनिक दस्तावेजो की चोरी

अथवा सैनिक रहस्यों की जानकारी शत्रु देश को देने की कई घटनाये पीछे प्रकाश में आती रही हैं। १९६५ के भारतपाक संघर्ष में कच्छ से राजस्थान तक की सीमा के कोर कमाण्डर जनरल रावले थे। बाडमेर से आगे गदरा शहर तक भारतीय सेना का अधिकार हो चुका था। युद्ध की समाप्ति पर एक संसदीय शिष्टमण्डल उस क्षेत्र का दौरा करने गया। जनरल रावले से उनकी आपबीती शिष्टमण्डल के सदस्य सुन रहे थे। बातचीत जब समाप्ति की ओर आने लगी, तो लेखक ने जनरल रावले ने पूछा—एक बात यह और बताइए इस युद्ध में सब से बडी कठिनाई आपको क्या और कहां आई ?

प्रश्न सुनकर जनरल कुछ रुके और बोले यह तो आपने मेरी दुखती नस पर ही हाथ रख दिया मैंने कहा आप उत्तर न देना चाहें तो न दे। क्योंकि सेना के एक वरिष्ठ जनरल के नाते उत्तर देने में भी आपकी अपनी कुछ मर्यादाए हैं पर बात कुछ और ही थी जिसे ससद सदस्यों के सामने कहते हुए वह हिचक रहे थे। संभल कर कहने लगे—सब से बडी कठिनाई मेरी यह थी—कोई रहस्य यहा छिपा नही रहता था, इसीलिए दिन का काम भी प्रायः रात को ही करना पडता था।

क्या बनेगा इस देश का ?

जिलाधीश बाड़मेर भी हमारे साथ थे। उन्होने बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा—यह तो कुछ झिझक रहे हैं। आप पहले मेरी आपबीती सुनिए। यहा सीमा पर कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो इधर की खबरे उधर भेजने या उनसे मिलकर सांठ गाठ और तस्कर व्यापार करने में अच्छे माहिर हैं। सुरक्षा की दृष्टि से उनके दो सरगना लीडरों को पकड़ कर पुलिस ने जेल भेज दिया। यह हमे पता नही था कि इनकी कमर पर राज्य के कुछ बडे लोगों का भी हाथ है। बाद में पता चला दोनों को राज्य के दो प्रतिस्पर्धी वरिष्ठ मन्त्रियों का संरक्षण प्राप्त है। गिरफ्तारी की खबर सुनते ही पहले एक अभियुक्त के समर्थक मन्त्री महोदय यहां आए और उसे जेल से रिहा करवा कर बाजार में अपनी गाडी में बिठा कर निकले। बाद फिर दूसरे मन्त्री जी आए और उन्होंने भी ठीक वही नाटक दोहराया। इसमें अब क्या तो प्रशासन कर लेता और क्या सेना दखल देती। यहां तो इतना भी जो कुछ हो गया, उसका श्रेय भी हमारे जवानों की देशभक्ति या देशवासियों के भाग्य को है। सुनकर बहुत देर तक हम लोग एक दूसरे को देखते रहे। क्या बनेगा इस देश का ? जब बाड ही खेत खाने लगेगी तो कौन रक्षा करेगा ? जब लौट कर यह बात प्रधानमन्त्री शास्त्री जी को बताई गई, तब वह भी माथे मे हाथ मार कर रह गए।

उनकी राष्ट्रभक्ति

अरब-इजराइल संघर्ष के तत्काल बाद लेखक यह जानने के लिए इजराइल गया आखिर इन मुट्ठी भर लोगों ने कैसे नौ अरब राष्ट्रों का मुह फेर दिया ? उनकी इस सफलता का रहस्य क्या था ? वहा उनकी और तैयारियों और आधुनिकतम हथियारों के अतिरिक्त जिस बात ने सब से अधिक प्रभावित किया वह थी उनकी राष्ट्रभक्ति। मशीन की तरह हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारिया पूरी करने में व्यस्त था। दफ्तरों का समय यहा प्रातः आठ से शाम के पाच बजे है। आठ बजे सरकारी कर्मचारी अपने मेजो पर काम करते मिलेंगे। समय से कुछ पहले ही कार्यालय में पहुच जाते हैं। समय के बाद पहुंचने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। काम के लिए जो समय है उसमे चाय-काफी तो बहुत दूर की बात है, जभाई लेकर घडी की सुई देखते हुए भी कोई नही मिलेगा। एक मेज से दूसरी मेज पर फाइल पहुचाने के लिए चपरासी की जरूरत नही है। पहला अधिकारी स्वयं दूसरे अधिकारी को फाइल दे आएगा। अरबों के साथ हुए उस संघर्ष

में रक्षा-मन्त्री मोशे दायान की पुत्री मोर्चों से संवाद भेजने का काम कर रही थी। क्योंकि वह एक बड़े बाप की बेटी थी, इसलिए घर में बैठ कर ताश खेलती और गरीबों के बच्चे मोर्चों पर जाकर कटते, यह उन्होंने नहीं सीखा

बंगला देश मुक्ति-संघर्ष में अमेरिकी शासन और राष्ट्रपति निक्सन द्वारा पाकिस्तान की पीठ थपथपाने और हथियार देने की उनकी अपने देश में भी बड़ी तीखी आलोचना हो रही थी। सीनेटर कैनेडी और मेकगवर्न तो उस उभरते असंतोष के प्रतीक ही उन दिनों बन गए थे। इसी बीच श्री कैनेडी अपने एक सहयोगी के साथ बंगला देश आए एक करोड़ शरणार्थियों की दयनीय स्थिति अपनी आँखों से देखने भारत आए। शरणार्थी शिविर देखने के बाद जब वह कलकत्ता में प्रेस के संवाददाताओं से बात कर रहे थे तब उनसे कुछ ऐसे प्रश्न भी पूछे गए जिनमें निक्सन प्रशासन की आलोचना थी। एक आध प्रश्न को तो किसी तरह वह टाल गए, पर जब बार-बार संवाददाताओं ने घुमा कर उनसे उसी तरह के प्रश्न किए तब उन्होंने स्पष्ट कहा—राष्ट्रपति निक्सन के हम विरोधी जरूर हैं, पर वह विरोध अमेरिका से बाहर नहीं है। यहाँ मेरे लिए वह ऐसे ही श्रद्धेय हैं जैसा मेरा राष्ट्र। मुझे उनसे या उनकी सरकार से जो कहना होगा वह जी भर कर कहूँगा। पर कहूँगा अमेरिका पहुंच कर।

अंग्रेज भी पौने दो सौ साल भारत में राज कर गए। जितना चूसा जा सकता था उतना उन्होंने देश को चूसा भी। सदियों तक भी शायद अभी कमर सीधी नहीं हो सकेगी। इतना तबाह देश को उन्होंने कर दिया, पर एक गुण जो अंग्रेजों से सीखा जा सकता था वह था उनका राष्ट्रीय चरित्र उसी के बल पर वे भारत में इतनी देर तक टिके रहे। रिश्वत, घूस, काला, धन आदि जिन बुराइयों से आज देश त्रस्त है, कहीं वह भी इनमें फंस जाता तो उन्हें बहुत पहले अपना बोरिया बिस्तर बांधना पड़ता। हमने अंग्रेजों से उनकी संसदीय प्रणाली और पुराने कानून तो जरूर उधार लिये, पर चरित्र और अनुशासन दोनों उन्हीं के साथ चले जाने दिए।

देश की स्थिति का ख्याल

ऋणों का भारी बोझ राष्ट्र के कंधों पर आ जाने के बाद भी बाहरी चमक-दमक और फिजूल खर्ची से हमारा पीछा नहीं छूटा। जब कि दूसरे अपनी चादर की लम्बाई देखकर ही पैर फैलाते हैं। राजेन्द्र बाबू पहली बार जब राष्ट्रपति बने, उन्होंने भारत स्थित सभी देशों के राजदूतों को एक बार भोजन पर बुलाया। तत्कालीन रूसी राजदूत के पास भोज में एक मन्त्री भी बैठे थे। रूसी राजदूत के कोट में पीछे कमर पर लगी थेगली देखकर उन्होंने कहा—लगता है जल्दी में आप यह कोट बदलना भूल गए।

रूसी राजदूत समझ गए इस पर लगी थेगली को देखकर ही शायद इन्हें तकलीफ हुई है। उत्तर में रूसी राजनयज्ञ ने कहा—मुझे मेरी सरकार निजी व्यय के लिए जो पैसा देती है उसमें हर दावत के लिए नये कोट बनवाना मेरे लिए कठिन है। यह तो थेगली लगा कोट है कभी यदि जूट का बना कपड़ा भी पहन कर मुझे आना पड़े, तो भी मैं उसे अपने गौरव की बात समझूगा। मुझे अपने देश की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर ही व्यय करना होता है, लेकिन भारत जैसे गरीब देश के राजदूतों के विदेशों में जो ठाट बाट हैं, उसे देखकर तो लगता है कोई दर्द ही उन्हें देश की आर्थिक स्थिति का नहीं।

भ्रष्टाचार राष्ट्रीय जीवन का अंग

भ्रष्टाचार तो अब लगता है हमारे राष्ट्रीय जीवन का एक अंग ही बनता जा रहा है। दिल्ली महानगर परिषद में सत्ताधारी दल के ही एक सदस्य ने तो पीछे यह प्रस्ताव सदन में रखा था—

क्यों न रिश्वत को भी वैध घोषित कर दिया जाय? हर जगह हो जब आज इसका बोलबाला है और बिना उसका प्रयोग किए कोई फाइल आगे नहीं सरकती, तब उसके वैध मान लेने में क्या हिचक है ? अब तक न्यायालय और सेना के क्षेत्र जरूर इससे वंचित थे, पर वहां भी अब सुना जाता है—निचले स्तरों पर इस बीमारी के कीटाणु पहुचने लगे हैं। सरकारी दफ्तरों में सादगी और सद्भाव की प्रेरणा देने के लिए कही-कहीं राष्ट्रपिता गांधी जी के चित्र लगवा दिए हैं। उनमें ऐसे चित्र भी है जिनमें गांधी जी एक हाथ में डण्डा लिये हैं और दूसरा हाथ उठाकर शान्ति का सन्देश दे रहे हैं। दफ्तरों में बैठकर रिश्वत लेने वाले उस चित्र की भी व्याख्या अपने अनुकूल करने लगे हैं। कहते हैं पाँच तक की इजाजत तो गांधी बाबा भी दे गए हैं। यह अगले की सामर्थ्य पर निर्भर करता है - वह एक के सौ के या हजार के कौन से पाँच देता देता है। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के गरीबी हटाओ के नारे की भी उनकी अपनी अलग ही व्याख्या है। वे कहती हैं श्रीमान् जी, आप अपनी गरीबी के साथ-साथ कुछ हमारी गरीबी का भी तो ध्यान रखे। इन्दिरा जी तो सब की ही गरीबी हटाना चाहती हैं। फिर आप हमारे बच्चों का ध्यान क्यों नही कर रहे ? राजा जी ने इन्ही सब बातों से खिन्न होकर एक बार लिखा था—जब कुएँ में ही भाँग घुली हो तो कौन बच सकता है।

देश की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए आज कल कई चीजों का निर्यात भी भारत से हो रहा है। विदेशी मुद्रा के अर्जन का यह सब से अच्छा उपाय है, लेकिन कई ऐसी चीजों का निर्यात भी यहाँ से हुआ जो भारत की रही सही प्रतिष्टा को भी ले बैठा। विदेशों के साथ व्यापार का तो सीधा सा नियम यह है—माल समय पर पहुंचे, पूरा पहुंचे और उसकी किस्म गिरी हुई न हो। यहां माल दिखाएगे कुछ और भेजेंगे कुछ और इसे वह व्यापारिक कौशल मानते हैं। पीछे आगरा से रूस को एक करोड़ रुपये के ऐसे जूतों का निर्यात हुआ, जिनमे अन्दर चमडे के बजाय गत्ता लगा हुआ था। उन्होंने जूतों का वह पूरा जहाज ही उलटा वापिस कर दिया और फिर दूसरे देशों को वह आर्डर दिया। कई और घटनाएँ भी इस तरह की हुई जिनका भारत के निर्यात व्यापार पर बडा प्रतिकूल प्रभाव हुआ।

इधर पीछे विदेशी पर्यटकों के साथ कुछ ऐसी हल्की घटनाये देश के कई बडे नगरों मे हुई है जिन्हें सुनकर मारे शर्म के गर्दन झुक जाती है। बौद्ध देशों के यात्री इसलिए भारत आते हैं—यहाँ भगवान् बुद्ध ने जन्म लिया था। यूरोप आदि देशो मे भी भारत के प्राचीन गौरवशाली अतीत के परिचित होने की लालसा जगी है। पर जब कोई उन पर्यटकों को ठगता है अथवा उनका बटुआ छीन कर भाग जाता है, तब वे अपने देश मे जाकर क्या कहते होगे ? यह ही म० गौतम और म० गाधी का देश है ? भले ही ऐसा करने वाले दो-चार ही क्यो न हो। पर बदनाम तो पूरा देश ही उनसे होता है। दिल्ली में तो एक टैक्सी वाले ने विदेशी महिला का धन और इज्जत दोनों पहले लूटी और बाद में गला घोटकर उसे मार भी दिया। इन बातो से हमारा देश दुनिया मे कितना बदनाम होता है, इसे हम यहा बैठकर शायद उतना न समझ सके जितना दूसरे देशों मे अपना यह चित्र देखकर ग्लानि होती है। उधर दूसरे देश अपने राष्ट्र की छोटी बदनामी का भी कितना ध्यान रखते है–इसका उल्लेख स्वामी विवेकानन्द ने अपने यात्रा वृत्तान्त में लिखा है। स्वामी जी जापान के एक रेलवे स्टेशन पर फल खरीदना चाहते थे। सप्ताह में एक दिन वह केवल फल ही खाते थे। स्वामी जी ने बहुत खोजा पर फल न मिले। उनके साथ एक जापानी युवक भी यात्रा कर रहा था। उसने स्वामी जी की परेशानी पूछकर अगले स्टेशन पर बाहर से फल लाकर उन्हें दे दिए। स्वामी जी ने

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

वीरांगना महारानी कैकेयी

—गजानन्द आर्य कलकत्ता

रामकथा में महारानी कैकेयी एक ऐसे चरित्र के रूप में प्रस्तुत है, जिसे उपेक्षा एव घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। रामचरित मानस के अनन्य गायक गोस्वामी तुलसीदास राम के चरित्र को देवत्व तक पहुंचाने के लिये अन्य चरित्रों के साथ न्याय न कर पाये। जिनको धूमिल ही नही अपितु कलकित होना पडा है। रामकथा में कैकेयी को उचित सहानुभूति प्रदान नहीं कर सके, जबकि श्रीराम को महामानव और विश्ववन्द्य बनाने वाली कैकेयी ही है।

सदियों से इतिहासकारों, नाटकारो व कवियों महारानी कैकेयी के चरित्र पर लाछन लगाकर उसे प्रताडित उपेक्षित किया है। जहा कैकेयी एक वीरागना, राजनीति कुशला पति परायणा थी, किन्तु बना दिया पतिहत्यारी, कुलकलकिनी, स्वार्थिनी इत्यादि। देश धर्म और सत्य की रक्षा के लिए जैसा कौशल, साहस और दृढता कैकेयी ने प्रस्तुत किया है वैसा अन्य दुर्लभ है। वस्तुत कैकेयी का गौरव महान है।

आर्यावर्त के तत्कालीन इतिहास में देवों और असुरों के सघर्ष में कई राजाओ और योद्धाओ ने भाग लिया था, पर सफलता नही मिल रही थी। इन सघर्षो में महाराजा दशरथ के साथ महारानी कैकेयी भी गई थी। कैकेयी की वीरता, कौशल्य, साहस और प्रतिभा से युद्ध में सम्मिलित देव और ऋषि मुनि बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होने राक्षसों के विनाश के लिए महारानी कैकेयी के साथ एक योजना का निर्माण किया। राष्ट्र उद्धार की उस योजना में महारानी कैकेयी को साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया और उस माता ने सारे अपमान, अपयश, कलंक सहकर भी राष्ट्रहित की भावना को सर्वोपरि रखकर उस योजना को सफल किया। यह कोई कोरी कल्पना मात्र नही है बल्कि ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है।

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण मे वर्णित घटनाक्रमो मे ऐसे सूत्रो की भरमार है, जो राष्ट्ररक्षा की इस विशद योजना का संकेत है।

रामायण कालीन धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियो के तथ्यपरक विश्लेषण के आधार पर राम राज्य की वास्तविक सस्थापिका पवित्र हृदया वीरांगना महारानी कैकेयी की चरित्रगत विशेषताओ एव उसकी तद्विषयक भूमिका को समझा जा सकता है। इस सम्बन्ध मे सर्वाधिक प्रामाणिक इतिहास ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण के अध्ययनोपरान्त रचित इस शोध-प्रबन्ध के अनुसार यह विश्लेषण निम्न प्रकार प्रस्तुत है—

(१) शासकीय शिथिलता

अयोध्या के चक्रवर्ती सम्राट दशरथ की राज्य व्यवस्था में अत्यधिक शिथिलता आ गई थी। यही कारण है कि—

(क) "अयोध्या राज्यान्तर्गत किष्किन्धा का राजा "बाली" स्वेच्छाचारी होकर अपनी मनमानी चला रहा था। (अरण्यकाण्ड)

(ख) "अयोध्या के चक्रवर्ती साम्राज्य का ही

एक भाग "दण्डकारण्य" राक्षसों से आक्रान्त थी। छोटे-छोटे राजागण एवं वनवासी तपस्वीगण राक्षस "खर" एवं उसके अनुचरों द्वारा मारे जा रहे थे। (अरण्यकाण्ड)

(ग) चक्रवर्ती सम्राट कहे जाने पर भी महाराजा दशरथ लका के राजा रावण को अजेय मानकर उसके प्रभाव को समाप्त करने का कोई उपक्रम नहीं कर रहे थे या यों कहें कि वे क्षमताहीन हो रहे थे। (बालकाण्ड)

महारानी कैकेयी को जिसने देवासुर संग्राम के समय युद्धभूमि में महाराज दशरथ की सारथी बन स्वयं को एक अद्भुत वीरांगना के रूप मे कभी प्रस्तुत किया था, महाराज को यह कायरता स्वीकार्य नहीं हो सकती थी।

(घ) महाराज दशरथ की शासन व्यवस्था शिथिल पड जाने से अयोध्यावासी, यही नहीं सारे देश की प्रजा अनिष्टों व दुःखों से ग्रस्त थी तभी तो राम के राज्याभिषेक की घोषणा पर प्रजा ने राज्य की सारी विसगतियों से मुक्ति पा जाने की आशा से बडी प्रसन्नता व्यक्त की थी। (अयोध्याकाण्ड)

(ङ) राज्य का कोष, सेना, कोठार और विकास अवरुद्ध प्राय था यही कारण है कि मात्र चौदह वर्ष की अवधि मे ही भरत उसे दश गुणा करके राम को लौटा सके। (युद्धकाण्ड)

२. युवराज को निपुण बनाने की देवो (ब्राह्मणों, ऋषियो) की दायित्वपूर्ण प्रक्रिया

अयोध्या के युवराज को इस योग्य बनाना आवश्यक था कि सम्राट बनने से पूर्व राष्ट्र में विद्यमान सकटों को प्रत्यक्ष कर प्रजा को उनसे मुक्ति दिलाने का उपक्रम करे। युवराज राम को योग्य बनाने की देवों की इस प्रक्रिया में जो राम महाराज दशरथ की दृष्टि में धनुर्विद्या से रहित था, अस्त्रबल एवं बलाबल का जिसको ज्ञान नही था, युद्ध में निपुण नहीं था, महर्षि विश्वामित्र की छत्र छाया एव निर्देशन में मुनि द्वारा प्रदत्त परिस्थितियों से जूझने के परिणामस्वरूप वही राम सब विद्या, निर्भयता और युद्ध कौशल में निपुण होकर समस्त पृथ्वी का सम्राट होवे योग्य बना दिया गया। देवों की यह प्रक्रिया निश्चय ही एक विशद योजना का अग थी जो सम्भवतः राम जन्म से पूर्व ही तत्कालीन ऋषि मुनियों (देवों) ने राष्ट्र के प्रति अपना महान् दायित्व बोध करते हुए बनाई।

३. दण्डकारण्य के उद्धार की योजना

राक्षसी अत्याचारों से आक्रान्त दण्डकारण्य क्षेत्र के उद्धार के लिये देवगण मुनि विश्वामित्र द्वारा उपेक्षित वीर योद्धा राम को पीडित प्रजाजनों के बीच ले आना आवश्यक समझते थे। उन्हें पक्का भरोसा था कि युवराज राम में राक्षसों को समाप्त करने की पूर्ण क्षमता, सम्पन्नता है। यह भी उनकी योजना का अग ही था कि राम अयोध्या के राजा के रूप में नही एक तपस्वी के रूप में वहाँ आकर रहें, ताकी राक्षसों की बड़ी शक्तियों से एक साथ टक्कर न लेनी पड जाय। देवों ने राम के ठहरने की, मार्ग की, अस्त्र-शस्त्र एव परामर्शादि प्राप्त करने की सारी योजना तैयार कर छोडी थी।

योजना बडी गोपनीय थी। स्वय राम को, जिनके बलबूते पर यह सब व्यूह रचना की गई थी देवों ने अपनी योजना का सकेत राक्षस "खर" के वध के पश्चात् इस रूप मे दिया कि महर्षियों द्वारा आप यहाँ पर लाये गये हैं।

४. कैकेयी पर दोषारोपण व्यर्थ

(क) पुत्र स्वार्थ—देवी कैकेयी के प्रति फैलाया गया एक आरोप यह चला आ रहा है कि उसने अपने पुत्र भरत को राजगद्दी दिलाने के स्वार्थ के वशीभूत होकर ही यह सारी अभिसंधि की थी। यह आरोप सर्वथा मिथ्या है क्योंकि यदि भरत को

राजगद्दी दिलाना कैकेयी का अभिप्राय रहा होता तो उसे महाराज दशरथ को उनके पास धरोहर में रखे दो वर प्रदान करने हेतु वचनबद्ध करने की कोई आवश्यकता न होती क्योंकि महाराज दशरथ अपने पाणिग्रहण के समय से ही अपने श्वसुर कैकेयराज से प्रतिज्ञाबद्ध थे कि कैकेयी से होने वाली संतान अयोध्या की युवराज बनेगी। राम जैसा पुत्र पाने के बाद महाराज दशरथ द्वारा उक्त प्रतिज्ञा को पूर्ण करने का आग्रह करने की कोई आवश्यकता भी कैकेयी को कभी प्रतीत नही हुई— निहायत उसे ऐसा कुछ भी अभिप्रेत न था।

(ख) राम का राज्यभिषेक कैकेयी द्वारा देवों को दिये वचन की अवहेलना—भरत को राजगद्दी दिलाने की स्थिति उस समय आ खडी हुई, जब महाराज दशरथ ने देवी कैकेयी से छिपाकर रातों-रात स्वय को वयोवृद्ध घोषित कर राम को राजगद्दी देने का यकायक उपाय कर देवी कैकेयी द्वारा देवो को दिये हुए वचन की अवहेलना कर दी। इसके विकल्प में अभिषेक समारोह के लिए राम के स्थान पर भरत का नाम बडी दृढता और निर्लज-तापूर्वक रख देने के अतिरिक्त कैकेयी के सामने और कोई उपाय नही रह गया था। यों कैकेयी ने भरत को शासकीय योग्यता उसके नाना कैकेयराज के पास भेजकर दिलायी थी।

(ग) बनवास १४ वर्ष ही क्यों, आजीवन क्यो नही ?—भरत को राजगद्दी दिलाना ही यदि कैकेयी का ध्येय रहा होता तो राम को मात्र चौदह वर्ष के लिए और वह भी अपने ही राज्य के एक हिस्से दण्डकारण्य मे भेजने का प्रस्ताव क्यों करती? आजीवन देश निकाले की भी तो मांग वह कर सकती थी। वस्तुत: उस वीर माता को वह सब अभीष्ट न था। अपने राज्य में अपनी प्रजा की सुरक्षा के स्थायी हल के लिये ही तो राम को चौदह वर्ष के लिये वन भेजना जरूरी हो गया था। माता कौशल्या और स्वयं राम के सम्मुख यह भी स्पष्ट हो चुका था कि पन्द्रहवें वर्ष मे वापस लौटने पर राम ही अयोध्या की राजगद्दी प्राप्त करेंगे।

(घ) भरत द्वारा राज्य को न्यास समझना—राम की पादुकाएं सिहासनारूढ करना—राम के बदले भरत को अयोध्या का चक्रवर्ती सम्राट बनाना होता तो चित्रकूट में भरत के साथ गई माता कैकेयी क्यों कहलाती "भरत अकेला अयोध्या का राज्य नही सम्हाल सकता था, अत. राम की पादु-काएं सिंहासन पर रखकर उनकी अनुपस्थिति में एक न्यासी (ट्रस्टी) की तरह शासन कार्य चला-येगा।" (अयोध्याकाण्ड)

(ङ) राम को राजसिंहासन हस्तान्तरण—बनवास काल में धरती को राक्षसी अत्याचारों से मुक्त कर अभिसंस्तुत राम के पुन: लौटने पर भाई भरत ने राजसिंहासन बडी श्रद्धा और प्रेम से यह कहकर सौंपा कि आपने मेरी माता का सम्मान करके जो राज्य दिया था वह आपका राज्य आपको अर्पित है। वहाँ भी माता कैकेयी की ओर से कोई व्यवधान नहीं बल्कि व्यवधान तब भी नही जब राम ने भाई लक्ष्मण को युवराज पद देने की इच्छा व्यक्त की, भले ही लक्ष्मण के आग्रह पर पद भरत को मिल गया।

उसके अपने सान्निध्य मे देवों द्वारा राष्ट्र रक्षार्थ तैयार हुई योजना की गोपनीयता रक्षा की आवश्यकता ही एक मात्र ऐसा कारण बन गया जिसने परम विदुषी उस वीर माता को लांछित किया परन्तु यथासमय योजना के रहस्योद्घाटन के बाद उस देवी की यशोगाथा चतुर्दिक् फैल गई। भले ही कालान्तर में कवियों की कल्पनाओं के आवरण में पुन. विलुप्त हो गई। इसी का निराकरण ऐतिह्य की यथार्थ आवश्यक है और यही पवित्र लक्ष्य सामने रख पूर्ण ऐतिहासिकता का आश्रय लेकर हमने इस शोध प्रबन्ध को रचा है।

५. प्रजाओ द्वारा कैकेयी की लाछना, देवों द्वारा योजना का प्रकाश, कैकेयी को

प्रशस्ति, योजना कैकेयी से देवों के पूर्व परिचय के कारण बन सकी।

अयोध्या राजपरिवार एवं प्रजाजनों का यही कहना था कि कैकेयी द्वारा राम वन को भेजे गये हैं—उधर देवों का रहस्योद्घाटन कि हमारे द्वारा राम लाये गये हैं। इस विरोधाभास का समाधान मुनि भरद्वाज के उस संकेत से होता है जो उन्होने भरत को अपनी माता पर क्रोधित न होने का उपदेश देते हुए इन शब्दों में किया था—

"भरत तुम्हें कैकेयी पर दोषारोपण नही करना चाहिये। क्योंकि सम्भव है राम का वन गमन परिणाम में सुखकारी हो। रामचन्द्र के वनवास से देवों राक्षसों और आत्मज्ञानी ऋषियों का कल्याण होने वाला है।" (अरण्यकाण्ड)

इस गुत्थी के सुलझने के पश्चात् एक और प्रश्न जो उपस्थित होता है, वह यह कि देवो की पहुच कैकेयी तक हुई कैसे ? देवगण सीधे महाराज दशरथ से क्यों नहीं मिले ?

इसका समाधान पूर्व घटनाओं में मिल जाता है। वह यह कि देवासुर सग्राम मे महाराज दशरथ के साथ उनकी सारथी बनकर युद्ध मे गई हुई देवी कैकेयी की योग्यता और स्वभाव का परिचय देवों को हो चुका था। देवों ने महाराज दशरथ के पुत्र मोह को भी महर्षि विश्वामित्र द्वारा यज्ञ-रक्षार्थ राम की याचना के समय जान लिया था। इस बात पर कोई सन्देह नहीं रह जाता कि महर्षि विश्वामित्र द्वारा अयोध्या दरबार में आकर राम को ले जाकर उसे सर्वविद्यासम्पन्न कर देने की महती कृपा देवी कैकेयी के अनुरोध पर ही हुई थी वरना महर्षि को इतनी कोशिशे करके राम को प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नही थी। निश्चय ही देवी कैकेयी का ऋषि महर्षियो से परिचित रहना ही राष्ट्र रक्षा की उस विशद योजना के निर्माण का कारण बना। इस प्रकार निष्कर्ष यही निकला कि अयोध्या के चक्रवर्ती साम्राज्य की सुरक्षा और अभिवृद्धि के लिए देवों द्वारा रानी कैकेयी के माध्यम से युवराज राम को चौदह वर्ष के लिए तपस्वी के रूप में दण्डकारण्य भेजा गया था। देवी सीता और भाई लक्ष्मण स्वभावत राम के साथ गये थे।

इन सब परिस्थितियों व घटनाक्रमों पर गम्भीरता पूर्वक निष्पक्ष भाव से चिन्तन करने पर वीरांगना महारानी कैकेयी का चरित्र अत्यन्त उदात्त, उज्ज्वल और पवित्र दृष्टिगोचर होता है तथा यही परिलक्षित होता है कि वह मा एक ऐसे कुशल राज्य चिकित्सक की भाति शल्य क्रिया में सलग्न थी जो अपने रोगी की चीरफाड बडी सावधानी से करते हुए भी बडी निर्दयता से करता प्रतीत होता है और रोगी कष्ट के चलते अपने चिकित्सक (डाक्टर) को कटु वचन कहता है पर स्वस्थ हो जाने पर वही रोगी अपने उसी चिकित्सक की पूजा बडे आदर भाव से करता है। काश ! हम भी अपने रामराज्य सरीखे आदर्श राज्य की वास्तविक सस्थापिका उस वीर माता का शत-शत अभिनन्दन कर जनमानस मे राष्ट्र निर्माण की सत्प्रेरणा जागरित कर स्वय को धन्य कर सकते।

वेद और ज्योतिष

—आचार्य सत्यमित्र शास्त्री

वेदों के छः अङ्ग हैं। जिनमें ज्योतिष भी एक अङ्ग है। ज्योतिष शास्त्र को पाणिनि ऋषि ने वेदों का नेत्र कहा है। इसमें गणित की प्रधानता है। जिसमें सूर्यसिद्धान्तादि ग्रन्थ आते हैं। जिनमें बीज-गणित, अङ्क, भूगोल, खगोल और भूगर्भ विद्या है। ज्योतिष की रचना वेदों से हुई। जैसे यजुर्वेद का प्रधान मन्त्र 'ज्योतींषि सचते स षोडशी' ज्योतिष के षड् विद्याओं को बतलाता है। यजुर्वेद अ० १८ मन्त्र १४-२५ गणित विद्या का प्रतिपादक है। 'एका च मे तिस्रश्च मे'। अथर्ववेद 'द्वे हायने अस्य चत्वारि कृण्म' में सृष्टि की गणना को बतलाता है। ज्योतिष के आधार पर ४ लाख ३२ हजार वर्ष का कलियुग, ८ लाख ६४ हजार वर्ष का द्वापर, १२ लाख ९६ हजार वर्ष का त्रेता और १७ लाख २८ हजार वर्ष का सतयुग होता है। चारों युगो का योग ४३२०००० वर्ष हुए। ऐसे ७१ सतयुगो के ३०६७२०००० वर्ष इसको एक मन्वन्तर कहते हैं। इस प्रकार ६ मन्वन्तर सृष्टि के व्यतीत हो चुके आदि गणना वेदों के द्वारा ज्ञात हुई। कोलब्रुक से विद्वान् इसकी प्रशंसा कर रहे हैं। और जहा तक वैज्ञानिको ने खोज किया है वहा तक यही ज्ञात होता है। भास्कराचार्य कृत सूर्य सिद्धान्त तथा लीलावती, वराह मिहिर सहिता, वशिष्ठसूत्रम् आदि इसके प्रधान ग्रन्थ हैं। ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त ८४ मन्त्र १३ मे अर्जुनी और मघा दो नक्षत्रों का वर्णन है। और इसी सूक्त मे साधारण रीति से नक्षत्र विद्या का विधान है। तथा यह भी दर्शाया है कि ऋतुओं के परिवर्तन का कारण सूर्य है। ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १६४ मे ऋतुओं का पुनः वर्णन मिलता है। और इसी सूक्त के ४८वें मन्त्र में वर्ष के दिनों का वर्णन है। निरुक्त ७-२४ के अनुसार अयन का वर्णन है। मध्यवर्ती मास का वर्णन ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त २४ मन्त्र ८ में मिलता है।

ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त २४ मन्त्र ८ में लिखा है राशि मार्ग क्या है। और ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ४१ मन्त्र ४ तथा मण्डल १० सूक्त ८५ मन्त्र १ और मण्डल ५ सूक्त ४५ मन्त्र ७ व ८ में इसी राशि का वर्णन मिलता है तथा ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ११० मन्त्र २ तथा मण्डल १० सूक्त ८६ के मन्त्र ४ में अयन का व्यास की ओर सरकना तथा पृथिवी की कीली का वर्णन बतलाते हैं। यह अब सर्व-सम्मति से माना जाता है कि सप्तर्षि तारों का वर्णन ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त २४ मन्त्र १० में मिलता है। ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त ५० मन्त्र ४० में सूर्य ग्रहण का वर्णन मिलता है। और इसी सूक्त के मन्त्र ५ के यह शब्द भुवनानि अधिदधु.— सूर्यग्रहण के बोधक हैं और इससे आगे मत्र मे यह शब्द आता है। तुरीयेण ब्रह्मण विन्ददाचिः मे तुरीयेण ब्रह्मण इसके अर्थ यह करता है कि तुरीय द्वारा सिद्धांत शिरोमणि ११ १५ में एक यन्त्र का नाम तुरीय है और इसी प्रकार का कोई मन्त्र अवलोकनार्थ है जो दूरवीक्षण यन्त्र आकाश गगा को बतलाता है। ब्रह्म शब्द के अर्थ मन्त्र के हैं, तथा ज्ञान अथवा ज्ञान के साधन के ऋग्वेद मडल २ सूक्त मंत्र ७ मे यह शब्द क्रिया के अर्थ में आता

है। इसी लिए उक्त अर्थ तुरीय के हुए। ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १०५ मन्त्र १० में पांच ग्रहों का विधान है। और ऋग्वेद मण्डल ३ सूक्त ३२ मन्त्र २ तथा मण्डल ६ सूक्त ४६ मन्त्र ४ में शुक्र और मंथन का वर्णन है। ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १२३ में वेन ग्रह का वर्णन है। और इसी ग्रह को विदेशी विद्वान् वीनस कहते हैं। ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १६१ का १३वां मन्त्र सुषुप्वांस ऋभवस्तद पृच्छतागोह्य इत्येक इद नो प्रबूबुधत श्वान वस्तो-बोधकिततमब्रवीत संवत्सर इदमद्या व्यख्यत अर्थात् भूगोल खगोल की अन्तरिक्ष आदि विद्याएँ क्या हैं और उनमें क्या है। अत. सिद्ध हुआ कि ज्योतिष शास्त्र वेदों के द्वारा निष्पन्न है। और उसी के आधार को लेकर सूर्य सिद्धान्तादि ग्रहों की रचना की गई जो गणित विद्या का आधार है। अब रही फलित ज्योतिष—इसका सम्बन्ध वेदों से कुछ भी नही है। यह ठगने की विद्या है। सूर्य चन्द्रमादि को ग्रह इसलिये कहा गया कि गृह्णन्ति ते ग्रहा अर्थात् प्रत्येक ग्रह पृथिवी आदि एक से अपने आकर्षानुकर्ष से स्थित है। और इनके झूठे फलो को दिखाकर दुनिया को ठगा। और इसके गपोडे को ससार के समक्ष उपस्थित किया। इसका खडन सब से प्रथम महर्षि दयानन्द ने किया। और इसके मुहूर्त चिन्तामणि को मूर्ख चिन्तामणि तथा शीघ्र बोध को मूर्ख बोध एव होडा चक्र को घोडा चक्र लिखा। आज भृगु सहिता का नाम लेकर जो कुण्डलियां बनती हैं। यह भी वैसे ही है जैसे अष्टादश पुराणो की रचना वैदिक सिद्धान्तों के विनाश के लिए हुई। ऋषि दयानन्द ने जन्म-पत्र को शोक पत्र की सज्ञा देते हुए लिखा कि ये मूर्ख पाखण्डी जिसके हाथ में पैसा देखते हैं उनकी बात कहते हैं। ग्रह जड हैं उनका प्रभाव आत्माकृत कर्मो पर कुछ भी नही है। जब इनसे कोई पूछता है कि लडका होगा अथवा लडकी–तो इनका मन्त्र है लडका न लडकी। अर्थात् यदि लडका हुआ तो कहेंगे न लडकी और लडकी हुई तो कहेंगे न लडका अर्थात् लडकी। यह विद्या खाने कमाने के लिए रची गई। जिसमें सामुद्रिक ग्रन्थ के आधार पर हस्तरेखाएँ भी हैं। आज हमारा मानव समाज कर्तव्य से विमुख होकर फलित ज्योतिष के मिथ्या प्रपंच में फंसा हुआ है। भारत के बहुत समाचार पत्रों में यह राशी फल का गपोडा प्रकाशित होता रहता है। बहुत से साधु वेशधारी वंचक एव ज्योतिषी नामधारी लुटेरे भारत की ही हीन जनता को दिन दहाडे लूट रहे हैं। मैंने बहुत से तथाकथित आर्य नाम-धारी महात्मा साधुओं को भी लोगों का हाथ देखते देखा है। अपने को योगी विदेह कहने वाले महात्मागण भी इस गपोडे से नही बचे। दूसरों का क्या कहना है। फलित ज्योतिष का परिणाम था कि सोमनाथ का मन्दिर लूटा गया और हमारा देश पराधीन हुआ। वृद्ध विवाह, बाल-विवाह अनमेल विवाह का कारण फलित ज्योतिष ही है। वेदों मे केवल गणित ज्योतिष का ही वर्णन है। द्वा सुपर्णा इस मत्र से सिद्ध है कि ईश्वर जीव प्रकृति नित्य है। इनमें से जीव और परमेश्वर चेतन है। प्रकृति जड है, जीव स्वतत्रता से कर्म करता है और परमात्मा कर्म फलप्रदाता है। परमात्मा ने प्रकृति से जीवों के कर्म भोगार्थ इस सृष्टि को उसी प्रकार बनाया। जैसे प्रथम बनाया करता था। परमात्मा ने इस सृष्टि में दो प्रकार की सृष्टि की। एक प्राणि जगत् दूसरा अप्राणि जगत्, प्राणि जगत् जैसे मानव पशु पक्षी, अप्राणि जगत् जैसे अग्नि पृथ्वी जल हवा आदि। इस जगत् मे पर-मात्मा द्रष्ट कर्म फलप्रदाता, जीव भोक्ता और शेष जगत् भोग्य पदार्थ है। मानव पृथ्वी में रहता है और अन्न पैदा करता है। अग्नि से प्रकाश लेना और गर्मी ग्रहण करता है। जल से प्यास बुझाता है वायु से श्वास प्रश्वास लेता आकाश में रहता है। चन्द्र सूर्य सितारों से स्वेच्छानुकूल गर्मी, सर्दी, प्रकाश, बरसात तथा जलवायु की शुद्धता से स्वास्थ्य ग्रहण करता है। औषधियों से रोग दूर करता

और भी धातु लोहा पत्थर लकड़ी आदि से आवश्यकतानुसार उपकार लेता है। इससे सुख दु.ख भी तीन प्रकार के होते हैं (१) आध्यात्मिक जो अपनी आत्मा से ही मानसिक दुःख मिलते हैं। (२)आधिभौतिक जो दूसरे प्राणियों से मिलते हैं। (३) आधिदैविक जो उपर्युक्त पृथ्वी, सूर्य, सितारे आदि से गर्मी,सर्दी,बरसात, प्रकाश, आंधी, भूचाल आदि द्वारा मिलते हैं।

आत्मा कर्म स्वयं स्वतन्त्रता से करता है। परमात्मा कर्मानुसार फल उपर्युक्त ३ प्रकार के सुखों द्वारा देता है। अब यदि मानव परमात्मा से प्रार्थना करता है कि पृथ्वी, जल, नक्षत्र, औषधी मेरा कल्याण करें तो भी और यदि इन्ही पदार्थों से कल्याण की प्रार्थना करता है। तब भी उसका यही अभिप्राय है या इच्छा होती है कि इन पदार्थों के साथ मेरा जितना सम्बन्ध है या उपयोगिता है। उससे उतना ही मुझे सुख प्राप्त हो। दुख न प्राप्त हो इस प्रकार की प्रार्थनाओं से वस्तु की यथार्थता मे कोई अन्तर नही पडता है। चेतन-चेतन ही रहते हैं और जड-जड़ ही रहते हैं। जड़ पदार्थों से हमारे कर्म फल का कोई सम्बन्ध नही। इनके सदुपयोग से सुख और दुरुपयोग से दुख होता है वे प्रसन्न अथवा नाराज होकर हमे स्वय सुख दुःख नही दे सकते हैं। अत. ग्रहों के लिए किसी प्रकार शान्ति निमित क्रिया करना अवैदिक है। अब रही काल की बात इनका सम्बन्ध नित्य पदार्थों से नही अनित्य पदार्थो से है। सृष्टि के पैदा होने से सृष्टि के प्रत्येक पद से इनका सम्बन्ध है। कौन वस्तु कब हुई कब किस अवस्था में की है और होगी। इत्यादि काल का पदार्थों के साथ सम्बन्ध है। काल भी नक्षत्रों के कारण हमारे कर्म फल का प्रदाता नही। हम अच्छे कर्म करें अथवा बुरे इसमें ग्रह अथवा काल का कोई हस्तक्षेप नहीं। काल के ३ भेद हैं भूत, भविष्य, वर्तमान। परमात्मा में भूत भविष्य वर्तमान या हमारी अपेक्षाकृत व्यवहार होता है। परमात्मा भूतकाल की घटनाओं को सम्पूर्ण जानता है। जीव होश आने के पीछे अपनी और अपने से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं को जानता है। या किन्ही कार्यों को देख कर उनके कारणों का अनुमान करते हुए दूसरे के भूतकाल को किसी सीमा तक जान सकता है। पिछले जन्म के भूत को योगी अपने विषय में योगाभ्यास द्वारा जान सकता है। ज्योतिष से नही क्योंकि उसकी आत्मा में कार्य सस्कार उपस्थित है। दूसरों के पिछले जन्म के भूत काल को योगी भी नही जान सकता है। क्योंकि उनके संस्कार उनकी आत्मा में हैं योगी की आत्मा में नहीं हैं। वर्तमान काल को सर्वव्यापक होने से परमात्मा सब को सम्पूर्णतया जानता है। जीव अपने वर्तमान को तथा अपने समीपस्थ दूसरे के वर्तमान को भी जान लेता है। और जिस स्थान का भी ध्यान करे उस स्थान के वर्तमान को जान सकता है, ज्योतिष से नही। अब रह गयी भविष्य की बात सो परमात्मा सृष्टि सम्बन्धी बातों को तथा जीवों के कर्म फल के सम्बन्ध में किस कर्म का फल क्या किस काल मे देता है। इसको सम्पूर्ण जानता है। जीव भी जो वस्तु प्राकृतिक स्वभावानुकूल हो। उसके भविष्य काल को जान लेता है। तारीखों, तिथियों, ऋतुओं का परिवर्तन हिसाब सूर्य चन्द्र ग्रहण इत्यादि।

फलित ज्योतिष का खडन महामहोपाध्याय प० बापूदेव शास्त्री तथा सुधारक जैसे ज्योतिषाचार्यों ने अपनी लड़की विधवा होने के पश्चात् किया तथा इस पर ग्रन्थ भी लिखे। पुराणों मे भी लिखा है। ज्योतिर्विद महदर्थवोणा ये च पौराणपाठका श्रद्धे यज्ञे महादानेन वरणीयाः कदाचन। फलित ज्योतिष के ग्रन्थों की रचना जैमिनी के नाम से की गई है। किन्तु प० नीलकठ आर्य ने खण्डन किया है। अत गणित ज्योतिष ही ठीक है। सामुद्रिक आदि विदेशी भाषाएँ विदेशी लोगों के आने के साथ इस देश मे आई। इसका वेदों से कोई भी सम्बन्ध नही है। ●

नहीं चाहिए चिमनियों का धुआं

न चांदी न सोना रतन चाहिए, न कांटे न कलियां चमन चाहिए।
मुझे और कुछ भी नहीं मांगना—प्रभो ! सिर्फ तेरी शरण चाहिए।
सदा सत्य के पथ पे चलता रहूं। बचाने में औरों को जलता रहूं।
गिरूं गिरके फिर-फिर संभलता रहूं। लिए हाथ मरहम निकलता रहूं।

किसी का न मुझ को नमन चाहिए।
न रेशम का मुझ को कफन चाहिए।

लड़ूं मैं सदा दुष्ट अन्याय से मुझे न्याय-पथ में मरण चाहिए।
मुझे और कुछ भी नहीं मांगना—प्रभो ! सिर्फ तेरी शरण चाहिए।
किसी के अगर काम मैं आ सकूं। जहां भेजना है वहां जा सकूं।
तुम्हारी कृपा-दृष्टि मैं पा सकूं। सफल जिन्दगी की गजल गा सकूं।

न कलुषित कपट का नयन चाहिए।
न छल का कुटिल सा सृजन चाहिए।

पिता झूठ के तीर नित बेधते—मुझे सत्य का आवरण चाहिए।
मुझे और कुछ भी नहीं मांगना—प्रभो ! सिर्फ तेरी शरण चाहिए।
सदा प्यार के गीत गाता चलूं। घृणा को हृदय से भगाता चलूं।
जो बिछुडे उन्हें फिर मनाता चलूं। सभी को गले से लगाता चलूं।

न कागज के मुझ को सुमन चाहिए।
जला दे, न ऐसी तपन चाहिए।

मुझे और कुछ भी नहीं कामना—पिता ! तेरे पथ का वरण चाहिए।
मुझे और कुछ भी नहीं मांगना—प्रभो ! सिर्फ तेरी शरण चाहिए।
न मुझ में बनावट का व्यवहार हो। न अपमान हो सिर्फ सत्कार हो।
कहीं भी लहू का न व्यापार हो। सकल विश्व संयुक्त परिवार हो।

न उड़ने को मुझ को गगन चाहिए।
किसी और से ना मिलन चाहिए।

नहीं चाहिए चिमनियों का धुआं 'मनीषी' को संध्या हवन चाहिए।
मुझे और कुछ भी नहीं मांगना—प्रभो ! सिर्फ तेरी शरण चाहिए।

जीवन सारा बीत गया

जीवन सारा बीन गया, तेरा जीवन सारा बीत गया।
तुझ से मनाया नही मीत गया ॥

सब से उत्तम थे अधिकार तुझ को मिला।
तूने मौका सुनहरी यों ही खो दिया ॥
कभी हंसता रहा कभी रोता रहा।
कभी हो पल में भयभीत गया ॥
तेरा जीवन...

थे मिले तुझ को साधन सभी साज भी।
तूने पायी थी कोयल सी आवाज भी ॥
रह गये बावरे सब धरे के धरे।
गाया न कोई गीत गया ॥
तेरा जीवन...

सारी दुनिया को वश में तू करने चला।
तू तो गागर में सागर को भरने चला ॥
इतनी दुनिया भला तू तो जीतेगा क्या।
तेरा मन ही "पथिक" तुझे जीत गया ॥
तेरा जीवन...

(पृष्ठ २८ का शेष)

जब उनका मूल्य देना चाहा, तब उसने यह ही मूल्य मांगा—भारत जाकर आप किसी से यह न कहें कि जापान में स्टेशनो पर फलों की व्यवस्था नहीं है। अन्यथा भारत से जापान आने वाले पर्यटकों पर इसका विपरीत प्रभाव होगा।

अंग्रेजो के किसी विद्वान् ने जर्मनी के बहुप्रचलित उस आदर्श वाक्य का अनुवाद करते हुए लिखा था—यदि मनुष्य सम्पत्ति खो बैठे तो समझो कुछ नही गया। वह तो हाथ का मैल है फिर आ जायेगी पर यदि स्वास्थ्य बिगड़ जाए तो समझो कुछ गया। उसका सभलना कठिन रहता है, लेकिन चरित्र यदि चला गया, तब तो सब कुछ ही मनुष्य ने खो दिया। व्यक्ति हो चाहे राष्ट्र अपना चरित्र खो कर वे कही के नही रहते। □

क्या राम ने शिवलिंग की स्थापना कर उसकी आराधना की ?

—सुश्री सूर्या कुमारी स्नातिका

किसी भी व्यक्ति के धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय व्यक्तित्व के परिलक्षक उस के चारित्रिक गुण हुआ करते हैं। उन गुणों से ही सामान्य असामान्य का भेद करते हुए उस व्यक्ति को अपने हृदय में उचित स्थान देते हैं। त्रेता युग में उत्पन्न राम के वैदिक संस्कृति से ओत-प्रोत, मर्यादा-पुरुषोत्तम, धर्मज्ञ और नीतिज्ञ होने के कारण ही राम को हमने असामान्य प्रतिष्ठा दी है।

वाल्मीकि रामायण में श्री राम के विषय में कहा गया है—

ज्येष्ठे धर्मप्रधाने च न रामं नेतुमर्हसि।
बाल० २०।१२

ज्येष्ठं पुत्रं प्रियं रामं द्रष्टुमिच्छामि धार्मिकम्।
अयो० १४।२४

धर्मपालो जनस्यास्य शरण्यश्च महायशाः।
आरण्य० १।१८

धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च कथं पापं करिष्यति।
किष्कि० १६।५

तत् श्रुत्वा परमप्रीतो रामो धर्मभृतां वरः।
यु० १११।९६

इस प्रकार सम्पूर्ण रामायण में हम देखते हैं कि राम की धार्मिकता हिलोरें ले रही है। उनका प्रत्येक कार्य धर्म की मर्यादा से बंधा हुआ है। वह कहीं भी धर्म की डोरी से च्युत नहीं है। राम की इस धर्मज्ञता, धर्मनिष्ठा को जानने से पूर्व हम धर्म को जान लें। छान्दोग्योपनिषद् में धर्म का स्वरूप बताते हुए कहा है—

त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञोऽध्ययनं दानमिति प्रथमः।
तपः एव द्वितीयो, ब्रह्मचर्याचार्यकुलवासी तृतीयः ॥

छान्दो० प्र० २।२३। प्र० १।

धर्म के तीन स्कन्ध अर्थात् भाग हैं—यज्ञ, तप और ब्रह्मचर्य। यज्ञ—अर्थात् देवयज्ञ, शुभकर्मादि करना, अध्ययन—अर्थात् ज्ञान की पराकाष्ठा को पहुँचना, दान—अर्थात् त्याग की प्रवृत्ति, लोभ से कोसों दूर रहना। तप—यानि आत्म नियन्त्रण और द्वन्द्व-सहन। ब्रह्मचर्य—व्रत धारण करके आचार्य कुल में रहना।

राम के जीवन में धर्म के वे तीनों स्कन्ध इतने रच-पच गये हैं कि अन्ततोगत्वा वाल्मीकि कह उठे—

"रामो विग्रहवान् धर्मः।"

अर्थात् राम धर्म की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं। धर्म के प्रथम और तृतीय स्कन्धों पर कुछ न लिख कर दूसरे स्कन्ध पर ध्यान दिलाना है क्योंकि इन दो स्कन्धों को प्रायः आबालवृद्ध सभी जानते हैं कि राम ब्रह्मचर्य व्रत में दीक्षित होकर विश्वामित्र के साथ शिवाश्रम, सिद्धाश्रम इत्यादि आश्रमों में यज्ञ

की रक्षार्थ रहे। अयोध्या छोड़कर १४ वर्ष पर्यन्त वनवास में रहे और सुग्रीव एवं विभीषण को उनके भाइयों की मृत्यु के पश्चात् उनके राज्यों को सौंप दिये। इससे बढ़कर और कौन-सा दान तथा त्याग हो सकता है?

राम ने द्वितीय स्कन्ध अर्थात् तप को अपनी काया के आच्छादन की भांति अंगीकार किया था। चाहे अयोध्या हो, चाहे आश्रम हो, चाहे वन, दुःख हो या सुख, प्रत्येक परिस्थिति में वे देवाधि-देव की उपासना तथा अग्निहोत्र को नहीं भूलते। राम की इस ईश्वर भक्ति को रामायण के निम्न श्लोकों में देखा जा सकता है —

प्रभातकाले चोत्थाय पूर्वां सन्ध्यामुपास्य च।
प्रशुची परमं जाप्यं समाप्य नियमेन च॥

बाल० २६।३१

उपास्य तु शिवां सन्ध्यां दृष्ट्वा रात्रिमुपागमत्।

अयो० ४६।१३

ये स्थल कह रहे हैं कि राम निराकार सर्वान्तर्यामी प्रभु के ही उपासक थे। उसी निराकार, व्यापक, कल्याणकारी परमात्मा के विष्णु, शिव इत्यादि नाम हैं। 'शेवयति कल्याणं करोति इति शिव.' इन सुस्पष्ट स्थलों को देखते हुए कैसे कहा जा सकता है कि एकेश्वरवादो आस्तिक धर्मिष्ठ राम ने दक्षिण में समुद्र में तैरते हुए "रामेश्वरम् टापू" में रावण पर विजयार्थ सेतु बन्ध के पश्चात् शिव लिंग पूजा की थी।

राम ने शिवलिंग की स्थापना की या नहीं, इसका निर्णय करने से पूर्व किंचित् निम्नलिखित बातों पर दृष्टिपात करें—

(१) मूल रामायण युद्ध काण्ड के २२वें सर्ग में जहां पुल बांधने की चर्चा है वहां कहीं भी आगे-पीछे शिवलिंग की स्थापना की लेशमात्र भी चर्चा नहीं है।

सेतुमध्ये महादेवमीशानं कृत्तिवाससम्।
स्थापयामास वै लिंगं पूजयामास राघवः॥

कूर्म पुराण०

सुपुष्पकमारुह्य जलधिमुत्तीर्य
पारावारतटे सेनां समवस्थाप्य।
शिवप्रतिष्ठां तत्र कृत्वा मुनिभि-
र्देवैरभ्यर्चितोऽयोध्यामगमत्॥

पद्म० पुराकल्पीय रामा० ३२

इत्यादि वचनों द्वारा शिवलिंग की स्थापना पूजा तथा उसके दर्शन से पाप निवारण का माहात्म्य बताया गया है। परन्तु उन्हीं पुराणों में कहा है कि त्रेता अर्थात् राम के युग में मूर्ति पूजा नहीं थी—

सत्येषु मानसीपूजा देवानां तृप्तिकारिणी
त्रेतायां वह्निपूजा च यज्ञदानादिका क्रिया।
द्वापरे मूर्तिपूजा च देवानां वै प्रियकरी
कलौ तु दारुणे प्राप्ते ब्रह्मपूजनमुत्तमम्॥

—भविष्य पु० प्रतिसर्ग ३। अ०२२।११,१२

अर्थात् त्रेता में यज्ञ दान इत्यादि धार्मिक कार्य होते थे। पद्म पुराण, भविष्य पुराण इत्यादि पुराणों में तो यहां तक कहा है कि शिव के भक्त एवं पूजक पाखण्डी, शूद्र एवं विष्ठा के कीड़े होते हैं। एतादृश विरोधाभास युक्त बातें इन कपोल-कल्पित ग्रन्थों में भरी पड़ी है। शिव की पूजा और अपमान एक पलड़े पर है।

(२) पुराण अध्यात्म-रामायण तथा तुलसी रचित रामचरित मानस में अनेक बार लिखा है कि शिव जी पार्वती सहित राम का स्मरण मनन चिन्तन किया करते थे।

इन सब प्रमाणों से सिद्ध है कि राम पुराणादि में वर्णित त्रिशूलधारी शिव से पवित्र तथा उच्चादर्श वाले हैं। इसी कारण शिव अपने उद्धार के लिए श्री राम का जप करते है। इसी लिए ऐसी

स्थिति में कैसे सम्भव है कि पुराणोक्त तथाकथित शिव नामक पुरुष के लिंग की स्थापना वेदवेदांग-विद् पवित्र, धर्मात्मा चरित्रवान् राम ने की हो। श्री राम को मूर्तिपूजक बताना अपने मन की विकृति को ही उजागर करना है। न जाने कैसे तुलसीदास इत्यादि लोगों ने विरोधाभास-युक्त बातें लिख दीं।

युद्ध काण्ड के १२३ वें सर्ग के २० वें श्लोक में "महादेव" शब्द देखकर तिलक, इत्यादि टीकाकारों ने भी रामचन्द्र द्वारा शिवलिंग की स्थापना का प्रतिपादन किया है पर सेतुबंध के वर्णन में इस विषयक किंचित् मात्र भी चर्चा नहीं है।

इस संदर्भ में जगत् गुरु महर्षि दयानन्द, रामचन्द्र के इस असत्य कलंक को दूर करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के एकादश-समुल्लास में लिखते हैं—"रामचन्द्र के समय में उस लिंग वा मन्दिर का नामचिन्ह भी न था। किन्तु यह ठीक है कि—दक्षिण देशस्थ राम नामक राजा ने मन्दिर बनवा लिंग का नाम रामेश्वर रख दिया है।

जब रामचन्द्र सीता हनुमान् आदि के साथ लंका से चले तो आकाश मार्ग में विमान पर बैठे अयोध्या आते हुए उन्होंने सीता से कहा—

> अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद् विभुः।
> एतत् तु दृश्यते तीर्थं सेतुबन्ध इति श्रुतः॥
>
> —युद्ध० सर्ग० १२३।२०,२१

यही जो सर्वत्र विभु व्यापक देवों का देव महादेव परमात्मा है उसकी कृपा से हम को सब सामग्री यहां प्राप्त हुई। हमने यह सेतु बांधकर लंका में प्रवेश कर रावण को मारा और तुझ को ले आये।

इसके सिवाय वाल्मीकि ने इस प्रसंग में कुछ भी नहीं लिखा। ये महर्षि के अमृत तुल्य वचन तथा इस श्लोक का विभु शब्द ही बताता है कि वह देवों का देव परमात्मा एकदेशी नहीं है। निराकार एवं सर्वदेशी है। रामचन्द्र उसी सर्वदेशी के उपासक हैं।

अतः मानना होगा कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने ऐसा कार्य नहीं किया केवल स्वार्थी तत्त्वों ने यह कार्य राम के नाम के साथ साथ जोड़ा है।

पता—पाणिनि कन्या महाविद्यालय, तुलसीपुर, वाराणसी-१०

(पृष्ठ ४ का शेष)

राक्षसराज रावण के साथ किए गए रण-अभियान में सुग्रीव की वानर चिह्न नामक सेना तथा सुयोग्य मन्त्रियों, उत्साही धैर्यवान सेनापतियों तथा वीर हनुमान महापराक्रमी अंगद जैसे योद्धा का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा। जाम्बवान् और नील के कौतुकपूर्ण कार्य सेना का उत्साह बढ़ाते रहे। वज्रांगबली हनुमान का तथा महाबली अंगद का लंका में प्रवेश भी रावण के मनोबल को तोड़ने वाला सिद्ध हुआ। रण के अभियान में जिन सेना की बटालियनों का रणचातुर्य अनुपम था, वे नील, गज, गवय, महावीर, गवाक्ष, ऋषभ और गन्धमादन। सेना के लंका के समीप पड़ाव डालने पर तथा युद्ध की विधिवत् घोषणा कर देने पर विभीषण भी श्रीराम से आ मिले। इस प्रकार श्री राम ने योद्धाओं को मार कर तथा रावण को मार कर विजय प्राप्त की। इस प्रकार हमें श्री राम का अन्याय के विरुद्ध युद्ध का बिगुल बजाने वाले महान धनुर्धारी के दर्शन होते हैं। आज हिन्दू समाज को श्रीराम के वीरत्व भरे चरित्र को याद करने की आवश्यकता है।

(पृष्ठ ८ का शेष)

श्रीराम और मांसाहार

नहीं है।

पित्रा नियुक्ता भगवन् प्रवेक्ष्यामस्तपोवनम्।
धर्ममेव चरिष्यामस्तत्र मूलफलाशनाः॥

अयो० ५४।१६

जब श्रीराम महर्षि भरद्वाज के आश्रम में पहुंचे तो उन्होंने अपना परिचय देकर और वनवास की बात बताकर कहा—

भगवन्! हम लोग पिता के आदेशानुसार तपोवन में प्रवेश करेंगे और वहां फलमूल खाकर धर्माचरण करेंगे।

श्रीराम ने अपने मित्र गुह से भी कहा था—

कुशचीराजिनधरं फलमूलाशिनं च माम्।
विद्धि प्रणिहितं धर्मे तापसं वनगोचरम्॥

अयो० ५०।४४,४५

मैं तो कुश, चीर और मृगचर्म धारण करता हूं। आप मुझे पिता की आज्ञा से धर्म पालन में सावधान एवं वन में विचरने वाला तपस्वी समझें।

श्रीराम की दो प्रतिज्ञाएं प्रसिद्ध हैं। एक तो उन्होंने अपनी माता कैकेयी के समक्ष प्रकट की थी—

रामो द्विर्नाभिभाषते। अयो०१८।३०

राम दो प्रकार की बात नहीं करता, जो कहता है वही करता है

दूसरी प्रतिज्ञा उन्होंने सीता जी के समक्ष इस रूप में रक्खी थी—

अप्यहं जीवितं जह्यां त्वां वा सीते सलक्ष्मणाम्।
न तु प्रतिज्ञां संश्रुत्य ब्राह्मणेभ्यो विशेषतः॥

—अर० १०।१९

मुझे भले ही अपने प्राण त्यागने पड़ें अथवा लक्ष्मण सहित तुम्हें ही क्यों न छोड़ना पड़े, किन्तु मैं अपनी प्रतिज्ञा नहीं त्याग सकता, विशेषकर उस प्रतिज्ञा को जो ब्राह्मणों के सामने की जाये।

श्रीराम ने फलमूल आदि खाने की प्रतिज्ञा न केवल अपनी माता और गुह के समक्ष की है अपितु महर्षि भरद्वाज के समक्ष भी अपनी प्रतिज्ञा को दोहराया है जो ब्राह्मण ही नहीं, ऋषि हैं, अतः स्पष्ट सिद्ध है कि श्रीराम मांस नहीं खाते थे।

वन को चलते समय श्री लक्ष्मण जी ने भी अपनी उपयोगिता बताते हुए कहा था—

आहरिष्यामि ते नित्यं मूलानि च फलानि च।
वन्यानि यानि चान्यानि स्वाहार्हाणि तपस्विनाम्॥

—अयो० ३१।२६

मैं आपके लिए कन्दमूल-फल और तपस्वियों के भोजन करने योग्य वन में उत्पन्न होनेवाले शाक-पात आदि वस्तुएं नित्य ला दिया करूंगा।

इस प्रकार श्रीराम आदि की प्रतिज्ञाओं को देखते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वे मांस नहीं खाते थे। जहां उनके मांस खाने का उल्लेख है वह स्थल निश्चितरूप से प्रक्षेप है।

धन्य वही परिवार है,

धन्य वही परिवार है, जिस में सद् व्यवहार है।
घर में ही फिर स्वर्ग सा सच्चा सौख्य अपार है॥

पिता पुत्र भाई-भाई सब आपस में मिल रहते हैं,
प्रीति प्रतीति हृदय में रखते कड़वे वचन न कहते हैं।
पिता पुत्र को प्यार करे, पुत्र परम सत्कार करे,
आत्मीयता एकता जीवन का आधार है॥

बड़ा भ्रात छोटे भ्राता को सदा बराबर का जाने,
छोटा भी निज बड़े भ्राता को पूज्य जान आज्ञा माने।
यदि कोई कुछ कह देवे, दूजा उसको सह लेवे,
सच जानो संसार में सहनशीलता सार है॥

सास बहू जेठानी देवरानी जितनी भी हैं महिलाएँ,
बोलें ऐसे बैन बज रही हों मानों मृदु वीणाएँ।
ना झगड़ा उत्पात करें, कभी न ओछी बात करें,
वहाँ शान्त वातावरण जहाँ न द्वेष न रार है॥

जिसमें सद्व्यवहार है।

—स्व० लालमन आर्य

सास बहू को समझे पुत्री बहू सास जी को माता,
जेठानी देवरानी में हो सगी बहिन का सा नाता।
सद् गुण वाली देवियां, कहलाती हैं लक्ष्मियां,
गृहस्थ के उद्धार का इन पर पूरा भार है॥

पत्नी पति को देव और पति समझे देवी पत्नी को,
कभी भूल से नहीं दुखावे जीवन संगिनी के जी को।
पत्नी भी न दुराव रखे, पति के प्रति सद्भाव रखे,
दोनों में यदि मेल है जीवन नय्या पार है॥

जहां सुशिक्षित सभ्य बड़े हों सभ्य वहां बच्चे होते,
जाति सुधारक धर्म प्रचारक देशभक्त सच्चे होते।
नहीं बुरी कोई लत है, डाली अच्छी आदत है,
जीवन उसका सात्त्विकी जिसका उच्च विचार है॥

सत्पुरुषों का आदर, संध्या, अग्निहोत्र, सत्संग करें,
पत्थर पूजन, अंध भक्ति, भ्रम, भूत-प्रेत का भंग करे।
एक ईश आराधना यम नियमों की साधना,
कहे सकल मन लालमन स्वर्णिम फिर संसार है॥

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक २२ | रविवार १९ अप्रैल, १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ | वैशाख २०४४ | दयानन्दाब्द—१६२

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

सम्पादकीय—

मानवता के चमकते ध्रुवतारक

महात्मा हंसराज

अनादिकाल से सृष्टि का चक्र अविरत गति से चल रहा है। अगणित जन इस धरती धाम पर जन्मे और मृत्यु को प्राप्त हो गए। अनन्त आकाश में उभरते चमकते अनेक सितारे दिखते-दिखते आँखों से ओझल हो जाते हैं किन्तु युग-युगों से ध्रुवतारा अपने स्थान पर गतिमान् है। अन्धियारों में भूले भटके पथिकों का वह सदा दिग्दर्शक रहा है। ऐसा ही मानवता का मूर्तरूप ध्रुवतारक है महात्मा हंसराज। पंजाब की धरती का यह लाल अपने समय में प्रान्त भर में बी० ए० की परीक्षा में द्वितीय आया था। चाहता तो उस समय में अच्छी सरकारी नौकरी प्राप्त कर समृद्धि लक्ष्मी के फूलों से सुवासित पथ पर चल पड़ता। परन्तु उन्होंने स्वीकार किया शिक्षा सरस्वती का मार्ग जो काटों की चुभन से दहक रहा था। यह सहज ही सीधा सरल मार्ग नहीं था। ऊबड़-खाबड़ कंटीली झाड़ियों, हिंसक जानवरों की भयंकर गर्जना के बीच से गुजरने वाला एक लम्बा मार्ग, जिसकी मंज़िल बहुत दूर थी। सचमुच त्याग, तपस्या और बलिदान का मार्ग दुस्तर ही होता है और इसे कोई माई का लाल ही अपनाता है। महर्षि दयानन्द की शिक्षा नीति के प्रसार का महान् संकल्प धारण किया, महात्मा हंसराज ने। डी० ए० वी० स्कूल एवं कालिजों के महान् वटवृक्ष के रोपण का कार्य किया इस महामना ने। देश-देशान्तरों, प्रदेश, प्रान्तों में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल एवं कालेज का फैलाव उस महान् व्यक्तित्व की याद दिलाता है। उन्होंने कहा था, वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के प्रचार का एक मात्र गुर है उच्च बलिदानी, वीर एवं समर्पित त्यागी सेवक। वे इसी एक विचार पर सम्पूर्ण जीवन चलाते रहे। बिना वेतन लिये, भूखे पेट रहकर भारत की गुलाम धरती पर देश के भावी कर्णधार को शिक्षित करते रहे।

महात्मा हंसराज ने यह पग उस समय रखा जब समस्त भारत के जन-जन को अंग्रेजियत और ईसा मसीह की भेड़ों में शामिल करने का षड्यन्त्र लार्ड मेकाले की शिक्षा-नीति के अनुसार चलाया जा रहा था। शिक्षा-नीति एवं पद्धति तब केवल मात्र अंग्रेज शासकों के द्वारा अपनी योजना के अनुसार दी जा रही थी। ऐसे विकराल काल की महान् चुनौती बन कर खड़े हुए महात्मा हंसराज। महर्षि दयानन्द के इस धीर वीर शिष्य में सेवा, दया और त्याग का भी महान् गुण था। अगर मैं यह कहूं कि सेवा और त्याग का वह देवता था तो अतिशयोक्ति न होगी।

महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए जहाँ उन्होंने अपना जीवन दान दिया साथ ही अकाल पीड़ित जनता के लिए उन का सेवा कार्य एक देवत्वपूर्ण कार्य था। उन्होंने १८९५ से १९२१ तक बीकानेर, राजपूताना, सूरत, मध्यप्रदेश, बड़ौदा, अवध, गढ़वाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, पंजाब आदि के भयंकर अकाल में तथा काँगड़ा के भूकम्प के महाविनाश के समय उनके द्वारा किया गया सेवा कार्य तथा राहत कार्य उस महात्मा के मानवता के चरमोत्कर्ष का परिचायक है। युग-युगों तक मानव मात्र के लिए महात्मा हंसराज का पवित्र जीवन दिशा प्रदान करता रहेगा। सचमुच आज उस महान् नाविक की स्मृति रूपी लहरें रह-रहकर उनके प्रति अगाध श्रद्धा जगा रही हैं—

लहरों से लड़-लड़कर
पतवार हाथ में थामे।
जो बढ़ा चीर सागर का,
उस तूफानी बेला में॥

जब झंझा के झोंके थे,
उन्माद भरा था सागर।
मुंह फाड़े तकते थे जब,
लहरों के भूखे अजगर॥

जिसके अदम्य साहस ने,
डरकर मुंह जरा न मोड़ा।
जिसने अपनी नौका का,
पल भर भी साथ न छोड़ा॥

उस नाविक को तकती हैं
मेरी यह आज निगाहें।
"ओ" अन्त स्थल से बरबस
निकली पड़ती हैं आहें॥

☐

— यशपाल सुधांशु

इस अंक में

१ ईश्वर सिद्धि
२ महात्मा हंसराज जी को श्रद्धांजलियां
३ महात्मा हंसराज जी के कार्यों की झलक
४. प्रेरक प्रसंग
५ निष्काम और सकाम कर्म-भेद

तथा अन्य पठनीय सामग्री।

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

सत्संग वाटिका

ईश्वर-सिद्धि

—पुष्करलाल आर्य

ओ३म् शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा।
शन्न ईन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ॥

—पूना प्रवचन से

"ओ३म्" यह ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम है, क्योंकि इसमे उसके सब गुणों का समावेश होता है।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रण-
मस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
(यजुर्वेद)

कविर्मनीषी परिभू
स्वयम्भूर्याथातथ्यतो-
ऽर्थान् व्यदधाच्छा-
श्वतीभ्य समाभ्य ॥

न तस्य कार्यं करण च विद्यते
न तत्समश्चाम्याधिकश्च दृश्यते।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते
स्वाभाविकी ज्ञान-बल-क्रिया च ॥

(श्वेता० उप०)

(यह वाक्य कहकर स्वामी जो ने उसकी व्याख्या की) मूर्त देवताओं में यह गुण नहीं लगते। इसलिए मूर्ति पूजा निषिद्ध है। इस पर कोई ऐसी शंका करते हैं कि रावणादिकों के समान दुष्टों का पराभव करने के लिए, भक्तों को मुक्ति होने के अर्थ ईश्वर को अवतार लेने चाहिए परतु ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। इससे अवतार की आवश्यकता दूर होती है, क्योंकि इच्छामात्र से वह रावण जैसों का नाश कर सकता था। इसी प्रकार भक्तो को उपासना करने के लिए ईश्वर का कुछ आकार होना चाहिए, ऐसा भी बहुत से लोग कहते हैं, परन्तु यह कहना भी ठीक नहीं है क्योंकि शरीर स्थित जो जीव है वह भी आकार रहित है, यह सब कोई मानते है। जैसा आकार न होने पर भी हम परस्पर एक दूसरे को पहिचानते है और प्रत्यक्ष कभी न देखते हुए भी केवल गुणानुवादो ही से सद्भावना और पूज्यबुद्धि मनुष्य के विषय मे रखते हैं। उसी प्रकार ईश्वर के सम्बन्ध मे नही हो सकता, यह कहना ठीक नही।

श्री कृष्ण जी एक भद्र पुरुष थे उनका महाभारत मे उत्तम वर्णन किया हुआ है, परन्तु भागवत में उन्हें सब प्रकार के दोष लगाकर दुर्गुणों का बाजार गर्म कर रखा है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान है। इस शक्ति का अर्थ क्या है? 'कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुम्' ऐसी शक्ति से तात्पर्य नही है। सर्वशक्तिमान् का अर्थ न्याय न छोडते हुए काम करने की शक्ति रखना है, यही सर्वशक्तिमान् से तात्पर्य है। कोई-कोई कहते हैं कि ईश्वर ने अपना बेटा पापमोचनार्थ जगत् में भेजा, कोई कहते हैं कि पैगम्बर को उपदेशार्थ भेजा, तो यह सब कुछ करने की परमेश्वर को आवश्यकता न थी, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है।

एक व्यक्ति को इन्द्रियों द्वारा कितना ज्ञान हो सकता है? अर्थात् बहुत ही थोडा हो सकता है। इससे प्रत्यक्ष को एक ओर रखकर शास्त्रीय विषयों में अनुमान प्रमाण ही विशेष गिना गया है। व्यवहार के लिए अनुमान आवश्यक है। प्रमाण के बिना भविष्य के व्यवहारों के विषय में हमारा जो दृढनिश्चय रहता है, वह निरर्थक होगा। कल सूर्य उदय होगा यह प्रत्यक्ष नही तथापि इस विषय में किसी के मन में तिलमात्र भी शंका नही होती।

अब किसी को यह अपेक्षा लगे कि ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्ष ही प्रमाण होना चाहिए, तो उसका विचार यूं है कि प्रत्यक्ष रीति से गुण का ज्ञान होता है। गुण का अभिकरण जो गुण पदार्थ है उसका ज्ञान प्रत्यक्ष रीति से नहीं होता। इसी प्रकार ईश्वर सम्बन्धी गुण का ज्ञान चेतन और अचेतन सृष्टि द्वारा प्रत्यक्ष होता है। इसी पर से ईश्वर सम्बन्धी गुण का अभिकरण जो ईश्वर है उसका ज्ञान होता है ऐसा समझना चाहिए।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे
भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै
देवाय हविषा विधेम ॥

हिरण्यगर्भ का अर्थ शालिग्राम की बटिया नहीं है किन्तु हिरण्य अर्थात् ज्योति जिसके उदर में है वह "ज्योति रूप परमात्मा" ऐसा अर्थ है। मूर्तिपूजा का पागलपन लोगों में फैला हुआ है। यह एक प्रकार की जबरदस्ती है। मूर्ति का आडम्बर जैनियों से हिन्दुओं में आया।

यत्र नान्यत् पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यत् विजानाति। स एव परमात्मा ॥

वह अमृत है और वही सब के उपासना करने के योग्य है। इससे जो भिन्न है वह झूठा है। यह अपना आधार (साम्य) नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं कि मूर्त पदार्थों के बिना ध्यान कैसे करते बनेगा? इसके उत्तर में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने पूना-प्रवास के दौरान चौथे प्रवचन में कहा है कि शब्द का आकार नहीं तो भी शब्द ध्यान में आता है या नहीं आकाश का आकार नही तो भी आकाश का ज्ञान करने में आता है या नहीं। जीव का आकार नहीं तो भी जीव का ध्यान होता है या नहीं। ज्ञान, सुख, दु:ख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, ये नष्ट होते ही जीव निकल जाता है, यह किसान भी समझता है। ध्यान, यह ऐसा पदार्थ है। योग आदि शास्त्र में ध्यान का लक्षण दिया है।

रागोपहतिर्ध्यानम्।
ध्यानं निर्विषयं मनः।
तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्।

साकार का ध्यान कैसे करोगे? साकार के गुणों का ज्ञानाकार होने तक ध्यान नहीं बनता अर्थात् संभव नहीं होता कि ज्ञान के पहले ध्यान हो जाये। देखो एक सूक्ष्म परमाणु के भी अधम, उत्तम और मध्यम ऐसे अनेक विभाग ज्ञान बल से कल्पना में आते हैं। जब कोई ऐसा कहे कि मुट्ठी में क्या है तो विदित होने पर मुट्ठी की ओर देखने ही से केवल उस पदार्थ का ध्यान कैसे करें तो उससे मेरा यही कहना है कि प्रत्यक्ष के सिवाय उस पदार्थ को जानने के लिए और भी दृढतर सबल उपाय हैं। देखो अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव ये आठ उपाय हैं। अनुमान ज्ञान के सम्मुख प्रत्यक्ष की क्या प्रतिष्ठा है यह विचारणीय है।

—पूना प्रवचन से

'दूरदर्शन पर वयस्क फिल्मों के प्रसारण की घोर निन्दा

तुरन्त प्रतिबन्ध लगाया जाये

सूर्यदेव

आर्यसमाज साकेत के वार्षिकोत्सव पर दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भारत वर्ष के प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी सत्यप्रकाश जी, पं० शिवकुमार शास्त्री, श्रीमती उषा शास्त्री, प० यशपाल सुधांशु एवं सभा प्रधान श्रीयुत सूर्यदेव जी आदि महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किये। दिल्ली सभा के प्रधान ने इस अवसर पर एक प्रस्ताव जन समूह के सम्मुख रखा। प्रस्ताव मे दूरदर्शन पर अश्लील फिल्मों के प्रसारण पर तुरन्त रोक की माग की गयी। इस अवसर पर बोलते हुए श्री सूर्यदेव ने कहा—इस समय हमारा देश अनेक समस्याओं से ग्रसित है। विघटनवादी तत्त्वों का यत्र तत्र षड्यन्त्र रोज ही प्रकाश में आ रहा है। देश के युवाओं को राष्ट्रीय चरित्र से अवगत कराना आवश्यक है। आज आवश्यकता है देश का युवक अपने देश की समस्याओं से जूझने के लिए अपने आप को आहुत कर दे। इसलिए आज उसे कर्त्तव्य पुकार सुनानी पडेगी। राष्ट्र की भावी पीढी किशोर किशोरियों को अपने महान् पुरुषों और बलिदानियों की शौर्य गाथा सुनाने की आज नितान्त आवश्यकता है परन्तु दुर्भाग्य है, सरकार उसी पीढी को कामुकता और अश्लीलता से भरे दृश्य दिखा कर रसातल मे ले जाना चाहती है। हमारे नेता कहते है कार्यालयो मे और भी अधिक चुस्ती से काम हो, परन्तु जरा सोचिए जो व्यक्ति रात में ११ बजे से २ बजे तक फिल्म देखते हुए जागेगा वह सुबह कार्यालय में कैसे ठीक समय पर पहुचेगा। और पहुंचकर क्या काम कर पायेगा। वैसे तो मा बाप सो भी जाये बच्चे रात जाग कर उस दूरदर्शन से परोसे जा रहे अश्लीलता के नशे से कहा बच पायेगे। उन्होने सरकार से दूरदर्शन पर वयस्क फिलमो पर तुरन्त रोक लगाने की पुरजोर मांग की। जनसमूह ने हाथ उठा कर इस प्रस्ताव को पारित किया।

आर्यसमाज साकेत का वार्षिकोत्सव का आयोजन ६ अप्रैल वेद कथा से प्रारम्भ हो गया था। सप्तदिवसीय प्रवचनो का सिलसिला श्री यशपाल सुधांशु के द्वारा सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर सुश्री अर्चना मोहन के मधुर सगीत से श्रोता झूम उठे।

आर्यसमाज साकेत नई दिल्ली भव्य भवन से सज्जित मन्दिर है। इस का निर्माण ५०० गज भूमि पर १३ अप्रैल १९८३ से प्रारम्भ हुआ था। ८४ तक यज्ञशाला का भवन सम्पन्न हो गया था जिसका उद्घाटन स्वामी आनन्द बोध ने किया था। इस समय एक सत्संग कक्ष एवं ध्यान कक्ष निर्मित हो चुके हैं। डिस्पेन्सरी कक्ष निर्माण प्रारम्भ हो चुका है जिसके लिए १ लाख रुपये लण्डन मे डा बलदेव सहाय कौशल ने अभी प्रदान किये हैं। अनेक योजनाएँ अभी लागू की जानी बाकी हैं। इस समाज के प्रधान श्री एल० आर० कटारिया तथा मन्त्री बडे ही कर्मठ, सदस्यगण बडे ही सहयोगी हैं। भवन निर्माण के कुशल आर्किटेक्ट समाज के प्रधान श्री कटारिया के सुपुत्र हैं जिन्होने अथक परिश्रम से भवन निर्माण मे महत्त्वपूर्ण योगदान किया। □

श्रद्धा के सुमन

"वह चट्टान की तरह सुदृढ थे, ध्रुव तारे की तरह अटल। उनमे एक विशेष शक्ति थी। कदम आहिस्ता आहिस्ता रखते थे, लेकिन जहा रखते थे, वहा की धरती को पता लग जाता कि किसी ने कदम रखा है।"

—डा० गोकुल चन्द नारंग

"महात्मा जी त्याग, सेवाभाव, सरलता, सादगी, सयम और आत्मबलिदान के आदर्श थे। वह सब सम्प्रदायों की सेवा करते थे। नवयुवको को चाहिए कि केवल भाषण सुनकर ही न चले जाये, अपितु महात्मा जी के गुण अपने मे पैदा कर देश और जाति की सही सेवा करे।"

—डाक्टर ल्यूकस वाइस प्रिंसिपल एफ० सी० कालिज

'महात्मा जी का जीवन बलिदान की मुह बोलती तस्वीर है। वह त्याग के जीवन्त आदर्श थे। उनका त्याग बडा था, लेकिन उनका तप इससे भी बडा था।

—महाशय कृष्ण

"महात्मा जी ने अपने मिशन और उद्देश्य को पूरा करने के लिए हर बात को सहा और अन्तिम श्वास तक अपने प्रण को निभाया।

—सर जोधासिंह प्रिंसिपल खालसा कालेज

"उन्होंने हिन्दू धर्म के मान को कायम रखा। वह सादगी और शान्ति की तस्वीर थे। सारी आयु एक ही उद्देश्य के लिए काम किया। उनकी याद में सीस झुक जाता है।" **—रायबहादुर लाला रामशरण**

एक मुसलमान के रूप में मैंने महात्मा जी से बहुत कुछ सीखा है। उनकी निर्धनता पर संसार के लाखों पूंजीपतियो की पूंजियां निछावर की जा सकती हैं। उस मुसलमान का जीवन गौरवपूर्ण है, जो महात्मा जी के चरण चिह्नों पर चलकर जाति की सही सेवा करे।"

—मियां अब्दुल हयी शिक्षा मन्त्री पंजाब

'पजाब में इस समय जो शिक्षा का प्रचार दिखता है, इसमें बहुत भाग महात्मा जी का है उन्हें संस्कृत और हिन्दी से विशेष प्रेम था।"

—श्री अफजल हुसैन वाइस चांसलर पंजाब युनिवर्सिटी

महात्मा हंसराज जी के कार्यों की एक झलक

१८ अप्रैल १८६४	जन्म बेजवाडा होशियारपुर
नवम्बर १८८२	आर्यसमाज के सदस्य बने
३ नवम्बर १८८५	डी०ए०वी० के लिए जीवनदान की घोषणा
१ जून १८८६	प्रथम डी०ए०वी० स्कूल का सचालन
१८९१	आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान निर्वाचित
१८९३	प्रादेशिक सभा की स्थापना
२ फरवरी १९१२	स्कूल के प्रिंसिपल पद से त्यागपत्र
१८९५ से १९०१	बीकानेर, मध्यप्रदेश, राजपूताना, सूरत, बडौदा, अवध, गढवाल, उडीसा, छत्तीसगढ, पजाब मे भयकर अकाल तथा कागडा मे भूकम्प द्वारा तबाही। महात्मा जी द्वारा उपरोक्त क्षेत्रों मे अथक राहत और सेवा कार्य।
१९२१-२२	मालवा के मोपलो द्वारा हिन्दुओ पर अत्याचार महात्मा जी का साम्प्रदायिकता से सघर्ष।
१९२३	आगरा मे शुद्धि सभा की स्थापना।
१९२४	कोहाट मे हिन्दुओ की पठानो से रक्षा।
१९३२	जम्मू-कश्मीर में साम्प्रदायिकता से सघर्ष।
२७ मई १९३५	क्वेटा में भूकम्प पीडितों की सहायता।
१९३८	हरिद्वार मे कुम्भ पर प्रचार। अस्वस्थ।
१५ नवम्बर १९३८	देहावसान।

प्रेरक प्रसंग

प्रस्तोता—सत्यानन्द आर्य

: १ :

एक बार गांधी जी एक स्कूल देखने गये। उन दिनों वे लगोटी पहना करते थे। कधे पर चादर डाल लेते थे। उन्हें इस रूप मे देख एक बच्चे ने उनसे कहा 'आप कुर्ता क्यो नही पहनते ?" मैं अपनी मां से कहकर आपके लिए एक कुर्ता सिलवा दूंगा। आप पहनेगे न उसे ?"

"जरूर पहनूगा, गाधी जी बोले - लेकिन एक शर्त है बेटे! मैं अकेला नहीं पहनूंगा।"

'फिर आप को कितने कुर्ते चाहिये ?" बच्चा बोला।

"एक-दो नही, मेरे चालीस करोड भाई बहन हैं। उन सब को कुर्ते चाहिये। क्या तुम्हारी मां इतने कुर्ते सी सकेगी ?"

वह बच्चा तो कुछ समझ नहीं पाया। गाधी जी उसकी पीठ पर हाथ फेरकर चले गये।

: २ :

एक बार नेता जी सुभाष चन्द्र बोस एक जगह भाषण दे रहे थे। उनके गले में ढेर सारे हार पड़े थे। आजाद हिन्द फौज के लिए उन हारों की नीलामी की गई। एक हार की नीलामी एक लाख से बढ़कर पांच लाख तक पहुंच गई। अचानक एक उत्साही नवयुवक उठा और उसने अपनी सारी जमीन जायदाद बोली में लगा दी।

नेता जी ने उसे बुलाया और अलग ले जाकर उससे कहा, 'मेरे भाई, तुम ऐसा न करो। अपनी सारी जिन्दगी कैसे गुजारोगे ?"

युवक ने जोश में आकर कहा, "साहब अगर आप अपना पूरा जीवन ही राष्ट्र को समर्पित कर सकते हैं तो क्या मुझे जमीन जायदाद तक देश को समर्पित करने का अधिकार नही है। देश की आजादी मेरी जमीन जायदाद से कही अधिक कीमती है।"

: ३ :

अप्रैल १९२९ मे भगतसिह और उसके साथियो ने असेम्बली में बम फेंके। वे भाग सकते थे, पर भागे नही। वे कई की मौत के घाट भी उतार सकते थे, पर ऐसा भी उन्होने नही किया। वे वहां खडे "इकलाब जिन्दाबाद" और "अंग्रेजी साम्राज्यवाद का नाश हो।" के नारे लगाते रहे। उन्होंने पुलिस के समक्ष निर्भीकता सहित आत्म समर्पण कर दिया।

मुकद्दमे मे भगतसिह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा दी गई। २३ मार्च १९३१ की अर्धरात्रि लाहौर सेण्ट्रल जेल मे जब सुखदेव और राजगुरु के साथ भगत सिह को फांसी पर ले जाने के लिए पुकारा गया तो भगत सिह पुस्तक पढने में तल्लीन थे। वधिक से हसी करते हुए जवांमर्द बोल उठा, "अरे भाई! इस पुस्तक को तो समाप्त कर लूं। तुम तब तक फांसी की रस्सियों को तनिक मजबूत कर लो। कहीं ऐसा न हो कि इस शुभ घडी में वे ढीली न पड जाये।"

: ४ :

सच्चे शिव की प्राप्ति व मृत्यु पर विजय पाकर मृत्यजय बनने की प्रबल अभिलाषाओं को लेकर स्वामी दयानन्द ग्राम-ग्राम और नगर विचरते हुए उत्तराखण्ड के निकट वन को पार करते हुए बडी रात बीते ओखीमठ में पहुंचे। प्रभात होने तक वे सुखपूर्वक वहां सोये। प्रातः उठते ही शरीर के कष्ट क्लेश की परवाह न कर आगे चल पड़े। उनके हृदय में मठ को देखने की उत्सुकता जागृत हो गई। वह वापस मठ में लौट आये। स्वामी जी ने देखा कि मन्दिर में ऐसे पशुओं की भरमार थी जो प्रायः पाखण्ड परायण थे। वे सभी ज्ञान और वैराग्य से शून्य थे। मठ की सम्पत्ति विशाल थी। मठाधीशों का जीवन ठाठ-बाट और आडम्बर में बीत रहा था। कुछ दिन वहां ठहरकर स्वामी जी ने उनके जीवन का निरीक्षण और परीक्षण किया। ओखीमठ का प्रमुख महन्त दयानन्द के ब्रह्मचर्य की दीप्ति, ज्ञान और गुणों पर मोहित हो गया। एक दिन उसने दयानन्द से अपना शिष्य बन जाने का अनुरोध किया और प्रलोभन देते हुए कहा "दयानन्द! घुमक्कडों की भांति घूमने से क्या मिलेगा ? हमारे शिष्य बनकर गद्दी के स्वामी और लाखों रुपये की सम्पत्ति के अधिकारी बनो। तुम महन्त कहलाओगे और तुम्हारी मान-प्रतिष्ठा का भी पार न रहेगा।"

स्वामी जी महाराज कच्चे धागे के बने न थे। वे घर से सब कुछ सोचकर चले थे। अतः उस ऐश्वर्य को ठुकराते हुए दयानन्द ने कहा— "महन्त जी जिस दौलत पर आप को अभिमान है, मेरे पिता की सम्पत्ति आप की पूजापाठ के पाखंड से एकत्र की गई सम्पत्ति से कई गुना अधिक है। जब मैं उसे भी काष्ट-लोष्ठ के समान त्याग आया हूँ, तब आप के धन धान्य की ओर कब ध्यान कर सकता हू ? जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर मैंने सकल सांसारिक सुखों से मुख मोड़ा और ऐश्वर्यपूर्ण पितृ गृह को सदा के लिए छोड़ा है, मैं देखता हूँ उस उद्देश्य पर न तुम चलते हो और न उसका तुम लोगों को कुछ ज्ञान ही है। इस अवस्था में शिष्य बनना तो दूर, मेरा तुम्हारे पास रहना भी असम्भव है।" महन्त ने पूछा— "आप का उद्देश्य क्या है ? किस वस्तु की जिज्ञासा मे मग्न तुम इतने कष्ट क्लेश उठा रहे हो।" स्वामी जी ने उत्तर दिया—"मैं सत्य विद्या और मोक्ष चाहता हूँ। स्वामी जी बहुत वार्तालाप मे कुछ सार न देख अपनी मंजिल की ओर आगे चल पडे।

: ५ :

बचपन से ही "नानक" एकान्त प्रिय थे। उन्होंने पिता जी की आज्ञानुसार पढाई तो पूरी कर ली, परन्तु व्यापार आदि कार्यों में बिल्कुल रुचि नहीं थी। मानव सेवा में उन्हें बचपन से हो मजा आता था। पिता ने उसे काम धन्धों में लगाने की बड़ी कोशिश की।

एक दिन पिता जी ने कुछ रुपये देकर नानकदेव जो को बाहर सौदा खरीदने भेजा। मार्ग में एक विद्वान् सन्त मिल गये। वे कई दिनों से भूखे थे। तब रुपये उनकी सेवा में लगा दिये। घर आकर कह दिया— "मैंने ऐसा सच्चा सौदा खरीदा है, जो कोई नहीं खरीद सकता।"

: ६ :

रावलपिण्डी में वैदिकनाद गुंजा कर स्वामी दयानन्द जी गुजरात जाते हुए झेलम ठहर गये। एक एक दिन एक व्यक्ति ने निवेदन किया—"महाराज! आज्ञा हो तो एक गाना सुनाऊँ।" महाराज के स्वीकृति देने पर गाना आरम्भ हुआ। श्रोता मस्त हो गये, स्वामीजी भी झूम उठे। सत्संग की समाप्ति पर एक भक्त ने बताया-आज जिस व्यक्ति ने गाना गाया था, वह वहाँ का तहसीलदार है, गाता अच्छा है, परन्तु चरित्रहीन है। अपनी धर्मपत्नी को त्यागकर वेश्याएँ रखी हुई हैं। शराब पीता है, मांस खाता है, रिश्वत लेता है।

अगले दिन के सत्संग में स्वामी जी की स्वीकृति से उस सज्जन ने फिर एक गाना गया समां बंध गया। श्रोता और स्वामी जी सभी फिर झूम उठे। गाना समाप्त हुआ। ऋषि ने उस व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कहा—"अमीचन्द हो तो हीरा परन्तु कीचड मे पडे हो।" स्वामी जी के शब्दों ने विद्युत् की भांति प्रभाव किया। वे वहाँ से उठकर चल दिये और कह गये अब पाप-पंक से निकलकर ही आपके दर्शन करूंगा। घर जाकर उन्होंने शराब की बोतलों को तोड़ दिया। वेश्याओं को निकाल दिया। मांस न खाने और शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। तार देकर पत्नी को बुलाया। सारे नगर मे शोर मच गया कि तहसीलदार बदल गया। वही सज्जन आगे चलकर महता अमीचन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए, जिनके भजन "आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद" आदि आज बड़े प्रेम और श्रद्धा से गाये जाते हैं।

सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव

—यशपाल आर्यबंधु

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अनुपम ज्ञानालोक सत्यार्थप्रकाश कई दृष्टियों से अनुपम है। अपने नाम उद्देश्य तथा उपादेयता की दृष्टि से तो यह अनुपम है ही प्रभाव की दृष्टि से भी यह पूर्णतया अनुपम है। इस ग्रन्थ का चमत्कारी प्रभाव मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर पड़ा है और उसे सर्वत्र सरलता से ढूढा जा सकता है। पर महर्षि के इस अमर ग्रन्थ के प्रभाव का यथार्थ मूल्यांकन कर पाना सरल नहीं। उगते सूर्य की किरणे किस पर क्या एवं कैसा प्रभाव डालती हैं इसका यथार्थ अनुमान कौन कर सकता है? सूर्य के उदय के साथ जहां से अन्धकार तिरोहित हो जाता है और प्रकाश सर्वत्र व्याप्त हो जाता है। पर सूर्य के उदय के साथ जहां संसार आंखें खोलता है वहां कुछ ऐसे भी तो जीव-जन्तु हैं कि जो उसके प्रकाश को सहन नहीं कर सकते एवम् उन्हें बलात अपनी आंखे मूंद लेनी पड़ती हैं। सूर्य की किरणें जहां असंख्य पेड़ पौधों के लिए जीवन-दायिनी शक्ति लेकर आती हैं वहां दूसरी ओर कतिपय रुण्ड मुण्ड पेडों के लिए वह काल बनकर आती हैं। अतः इस से कौन क्या-क्या ग्रहण करता है एवं इस का कैसा-कैसा प्रभाव पड़ता है इसका ठीक-ठीक वर्णन कौन कर सकता है?

जैसे भौतिक सूर्य के प्रभाव का वर्णन करना अति दुष्कर है वैसे ही इस ज्ञान सूर्य के प्रभाव का वर्णन करना भी अत्यन्त दुष्कर है। सत्यार्थ प्रकाश रूपी भानु के उदय होने से प्रकाश प्रिय लोगों के ज्ञान चक्षु खुल गये किन्तु अन्धकार-प्रिय लोगों को अपनी आंखे मूंदनी पड़ी। उन लोगों ने इस ज्ञान-सूर्य को भरपेट कोसना प्रारम्भ कर दिया। कोई-कोई तो इस पर कीचड़ ही उछालने लग गया। किन्तु जैसे सूर्य से आंख मिलाने की सामर्थ्य किसी मे नही, वैसे ही इस ज्ञान सूर्य के सम्मुख भी किसी की आंख नहीं उठ सकी। सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने के घृणित कार्यों के अतिरिक्त इसके विरोध में कई एक ग्रन्थ लिख डाले गए। पर बादल चाहे कितने ही घने क्यों न हों, एवं कितने ही व्यापक क्षेत्र में सुविस्तृत क्यों न हों, वे सूर्य को सदा सदा के लिए ढांक नहीं सकते। ऐसे ही विरोधियों के यह कार्य सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव को क्षीण नही कर सके।

सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव को आंकने के लिए निष्पक्ष किन्तु व्यापक दृष्टि की आवश्यकता है। सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव की समीक्षा की थी आर्यसमाज के मूर्धन्य संन्यासी पूज्यपाद श्री स्वामी वेदानन्द जी ने। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव नामक एक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना की थी जिसकी भूमिका एक अन्य विद्वान् सन्यासी ने लिखी थी। वे थे पूज्य स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज उस ग्रन्थ की भूमिका में श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज लिखते है कि—'सत्यार्थप्रकाश के लिखे-जाने के ठीक अस्सी वर्ष पश्चात् महर्षि के अनन्य भक्त महा विद्वान् पूज्य पाद श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ ने अपने देहावसान से कुछ दिन ही पूर्व यह सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव नामक प्रबन्ध लिखा था। 'सत्यार्थप्रकाश' का प्रभाव एक प्रतिवेदन है इस बात का कि गत अस्सी वर्ष में स्वामी दयानन्द अनुमोदित ब्रह्मा से लेकर जैमुनि मुनि पर्यन्त (जिन्हें प्रबन्ध लेखक ने विरजानन्द मुनि पर्यन्त लिखा है) महाशय महर्षियों के मन्तव्य कहां तक सर्वत्र भूगोल मे प्रवृत्त हो पाये हैं। पाठक पुस्तक पढ़कर स्वयं जान लेंगे कि सत्य किस प्रकार अपने विरोधियों को मूक बना देता है। किस तरह प्रतिद्वन्द्वी अनुकूल होकर सत्पथ पर आना आरम्भ करते हैं किस भांति प्रबल प्रचार होते हुए भी निराधार ईसाई मन्तव्य ऋषि की समीक्षा की ताब न लाकर अपने आस्थावान् अनुयायियों के हृदय मे भी आधार शून्य से प्रतीत होने लगते हैं क्यों और क्योंकर इस्लामी सिद्धान्त 'सत्यार्थ प्रकाश' के आलोक में नये-नये प्रकार से निर्वाचित (निरुक्त) होकर मूल प्रवर्तकानुमोदित अपने रौद्र रूप को छोडकर विज्ञानानुकूल रूप धारण कर रहे हैं। आर्यसमाज उन सब विधर्मी लेखकों का आभारी है जिन्होंने सत्यार्थप्रकाश में की गई समीक्षा की सुखद छाया में उत्साह पूर्वक अनृत को त्याग कर सत्य को ढूंढने का प्रयत्न किया है और इस प्रकार भिन्न-भिन्न मत-मतान्तरों में बंटी हुई मानव जाति के विभिन्न समुदायो को एक दूसरे के समीप लाने का प्रयास किया है।" (प्रस्तावना सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव)

सत्यार्थप्रकाश मे सत्यासत्य के निर्णय हेतु निष्पक्ष भाव से अन्य मतमतान्तरों की जो आलोचना की गई है वह जहां सुधी पाठको को सत्यासत्य के निर्णय करने मे सहायक होती है वहां उन मतमतान्तरो के लिए बड़ी हो लाभदायक भी सिद्ध हुई है। वे लोग सत्यार्थप्रकाश मे की गई आलोचनाओं के कारण अपने सिद्धान्तो मन्तव्यो एव मान्यताओ की नवीन व्याख्याये करने लगे है एव यथासम्भव उन्हे बुद्धि सम्मत एव तर्क-सगत बनाने का प्रयत्न करने लगे हैं। किन्तु जैसे स्वर्ण पर मैल चढ़ जाने से उसे भट्टी में तपाकर कुन्दन बनाया जा सकता है किंतु कोयले को कुन्दन बनते आज तक किसी ने नही देखा। भले ही अग्नि में पड कर थोडी देर को उसकी कालिमा जाती रहे किंतु स्वर्ण की सी दीप्ति उसमें कभी भी नही आ सकती। ठीक इसी प्रकार असत्य सिद्धान्तों की व्याख्याये चाहे जितनी बदल-बदल कर क्यो न कि जाये असत्य तो असत्य ही रहता है उसे तो त्यागने मे ही भला है। तनिक सोचे तो सही कि लोद पर चादी का वर्क चढा देने से वह मिठाई थोड़े ही बन जाती है। जो भी हो सत्यार्थप्रकाश का अपना प्रभाव तो कार्य करेगा ही वस्तुतः इसी की सुखद छाया मे नवीन तर्क मूलक व्याख्यायें आज सोची जाने लगी हैं। और सत्य तो यह है कि जैसे आकाशवाणी से उद्घोषित स्टैण्डर्ड टाईम से सभी लोग अपनी अपनी घड़ियों की सुइयां मिलाते हैं और समय सम्बन्धी उनके दोषों को दूर करते हैं ठीक वैसे ही मतवादी लोग भी सत्यार्थप्रकाश मे उद्घोषित सत्य सनातन सिद्धान्तों से अपने-अपने सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों का मिलान कर उनके दोषों को दूर करने में लगे हैं। सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है? श्रीयुत चन्द्रप्रकाश जी एम.ए. ठीक ही लिखते हैं कि जिन्हें इतिहास का ज्ञान है वे जानते हैं कि इस शताब्दी मे अन्धविश्वास पाखण्ड एव कुरीतियों का कूड़ा करकट जितना इस एक ग्रन्थ के अध्ययन मे दूर हुआ है उतना विश्व के किसी दूसरे ग्रन्थ मे नही। (हम सत्यार्थ-प्रकाश क्यो पढे ? पृष्ठ ७) यदि निष्पक्ष भाव से देखा जाये तो रूढ़ियों अन्धविश्वासों, कुरीतियों, कुप्रथाओं आदि से बचाने के लिए यह विश्व-साहित्य को अद्वितीय तथा अनुपम रचना है।

मानवता का पथ-प्रदर्शक महर्षि का यह ग्रथ सत्यार्थप्रकाश असंख्य भूले भटके मानवो को सुपथ दर्शा चुका है। और न जाने भविष्य के कितने भूले भटके भाई इसके आलोक मे सुपथ पा सकेगे नास्तिक शिरोमणि गुरुदत्त विद्यार्थी इसी ग्रथ के स्वाध्याय से प्रबल आस्तिक हो नही आस्तिकता के प्रबल प्रचारक बन गये थे। बाबू मुन्शीराम इसी के स्वाध्याय से प्रथम महात्मा मुंशीराम और फिर स्वामी श्रद्धानन्द बन सके। ऋषि के इस ग्रन्थ को पाने के लिए वे कितने आतुर थे यह उनकी आत्म-कथा मे ज्ञात हो सकता है। वे इस से कैसे प्रभावित हुए इसका भी सुविस्तृत वृत्तान्त है जो यहां स्थानाभाव के कारण नही दिया जा सकता। पर यह सत्य है कि उक्त दोनों महानुभाव सत्यार्थप्रकाश के चमत्कारी प्रभाव से ही प्रभावित हुए थे। सत्यार्थप्रकाश में वर्णित पुनर्जन्म के सिद्धान्त को पढ़ कर ही मुन्शीराम जी ने घोषणा की थी कि आज मैं सच्चे दिल से आर्य-समाज का सभासद बनता हूं।

जो मुन्शीराम महर्षि दयानन्द के प्रत्यक्ष साक्षात्कार से भी आर्य सभासद् नहीं बन पाये थे वे उनके विचार पुनः सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से आर्य सभासद बनने की स्वतः ही घोषणा करते हैं। यह सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव नहीं तो और क्या है?

स्वामी धर्मानन्द नाम के एक वेदान्ती साधु थे। उनकी शिष्य मण्डली ने उन्हें सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति इस आशय से दी कि वे वेदान्त के खण्डन का उत्तर लिख दें। श्री स्वामी जी ने पुस्तक ली और उसे पढने लगे ज्यो-ज्यो पढते जाते वेदान्त का मिथ्यावाद तिरोहित होता जाता था। कई दिन व्यतीत हो जाने पर जब शिष्यो ने उसका उत्तर मांगा तो श्री स्वामीजी ने निम्न पंक्ति लिख कर दे दी। "सारी उम्र

(शेष पृष्ठ ६ पर)

समाचार

हिन्दू राम जन्मभूमि पर कोई समझौता नही करेगे : पंडिता राकेश रानी

अजमेर ६ अप्रैल। अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष पण्डिता राकेश रानी ने कहा है कि राम जन्मभूमि को लेकर हिन्दू कोई समझौता नही करेंगे।

किशनगढ से २५ किलो मीटर दूर रूपनगढ मे रामनवमी के अवसर पर आयोजित हिन्दू सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए उन्होंने सरकार से अपील की कि वह राष्ट्र विरोधी ताकतों का दृढ़ता के साथ मुकाबला करे तथा एक और पाकिस्तान बनने से रोके।

उन्होने कहा कि उन पर सरकार ने ४१ अपराधिक मुकद्दमे इस लिए चला रखे हैं, क्योंकि वे हिन्दुत्व की रक्षा और देश के प्रति निष्ठा की बात कहती हैं जबकि बोट क्लब पर राष्ट्र विरोधी-धमकी भरे भाषण देने वाले लोगों के खिलाफ कोई कारवाही नही की जाती। 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' का नारा लगाने वालों को भारत से निकाला जाना चाहिए।

उन्होने हिन्दुओ से अपील की कि वे वर्तमान संकट मे सभी भेद-भाव भूलकर सगठित हो और अपने आपको एक राजनीतिक शक्ति का रूप दें। तभी उनकी बात सुनी जाएगी।

सम्मेलन मे बोलते हुए दयानन्द सस्थान के मत्री प्रो० धर्मवीर ने कहा कि हिंदुओ के धर्म परिवर्तन के लिए हम भी जिम्मेदार हैं क्योंकि हम अपने ही समाज के लोगो मे फर्क करते हैं। उन्हे जोडते नही तोडते हैं।

—सत्यपाल शास्त्री

वयस्क फिल्मों का प्रसारण बन्द करो

आर्यसमाज नारायणा विहार के मत्री श्री दर्शनलाल कत्याल ने २६।३।८७ को प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी तथा सभी ससद सदस्यो को एक पत्र भेजकर माग की है कि पिछले कुछ समय से दूर-दर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्य-क्रमो के समय मे निरतर वृद्धि हो रही है। अब यह कार्यक्रम प्रात ७-३० बजे से आरम्भ होकर रात को ११ ३० बजे तक चलते हैं अभी हाल मे हुई एक सरकारी घोषणा के अनुसार अब रात को १२ बजे के बाद केवल 'वयस्को के लिए दिखाने योग्य चलचित्र भी दूरदर्शन पर दिखाए जायगे।

रात को ९-३० बजे के बाद प्रसारित होने वाले कुछ सीरियल्स जैसे कर्मचन्द' और 'खोज' विद्यार्थी और युवावर्ग के दृष्टिकोण से काफी मनोरंजक होते हैं और विद्यार्थी अपना अध्ययन छोडकर ये कार्यक्रम देखते हैं। रात को देर तक जागते रहने के कारण वे प्रात भी देर से उठते हैं और अपनी पढाई की हानि करते हैं। कुछ कार्यक्रमो से जैसे 'सुबह' का विद्यार्थियो तथा युवावर्ग के चरित्र पर भी बुरा प्रभाव पडता है। ये कहने की आवश्यकता नही कि विद्यार्थी और युवा वर्ग वयस्को को दिखाये जाने वाले चलचित्रो को भी अवश्य देखेगे। इन सबका उनके अध्ययन और चरित्र पर अवश्य ही बुरा प्रभाव पडेगा।

आर्यसमाज के सभी सदस्यो ने भारत सरकार से मांग की है कि ऐसे मनोरंजन कार्यक्रम जिनको विद्यार्थी अथवा युवावर्ग देखना चाहेगे रात को ९-३० बजे के बाद न दिखाए जायें। रात को व्यस्त चल-चित्र दिखाने का विचार बिल्कुल छोड दिया जाए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से भी अनुरोध किया है कि वे भी ऐसे प्रस्ताव पास करके प्रधान मन्त्री तथा अन्य मन्त्रियो तथा सासदों को भेजें।

डा० धर्मपाल
(महामत्री)

पाक एजेण्टों को गिरफ्तार करो

नई दिल्ली आर्यसमाज श्री निवास पुरी मे राम जन्मोत्सव कार्य क्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के विलक्षण व्यक्तित्व व कृतित्व पर सवश्री वेद कौशिक हसराज की कविताएँ व नरेन्द्र अवस्थी पत्रकार हरिश्चन्द्र प्रभुदयाल आदि के प्रवचन हुए। एक प्रस्ताव में गत दिवस बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी द्वारा आयोजित रली मे दिए गए इमाम बुखारी सैयद शहाबुद्दीन के हिसा भडकाने, साम्प्रदायिक तनाव पैदा करने वाले देशद्रोहिता पूर्वक भाषणों की निन्दा करते हुए इन्हे पाक एजेन्ट समझ कर तत्काल गिरफ्तार किया जाए। एक अन्य प्रस्ताव मे हिन्दू मन्दिरो की स्थिति मुस्लिम आक्रमणकारियो के पूर्व की स्थापित करने की माग की गई। अयोध्या को राम जन्मभूमि तत्काल हिन्दुओ को सौपी जाय।

—प्रभुदयाल

सत्यार्थप्रकाश

(पृष्ठ ५ का शेष)

बीत गई सारी सज्जना दी याद न आई।' अर्थात् हमारी सारी आयु व्यतीत हो गई दुःख है कि हमे स्वामी दयानन्द जैसे सज्जन की याद न आई। शिष्य मण्डली हैरान थी और इसका तात्पर्य पूछने लगी। इस पर श्री स्वामी जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने शाश्वत सत्य का प्रति पादन किया है। ससार मे ऐसा कौन है कि जो उसका खण्डन कर सके। यह है सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव।

श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महा राज भी वेदान्ती साधु हो थे। एक आर्यसमाजी भक्त द्वारा उनके रुग्ण होने पर सेवा सुश्रूषा करने पर वे उस पर बडे प्रसन्न हुए। चलते समय उस व्यक्ति ने एक पुस्तक सुन्दर से वस्त्र मे लपेट कर श्री स्वामी जी को भेट की और निवेदन किया कि यदि वे उस पर उसकी सेवा से प्रसन्न हैं तो इस पुस्तक का स्वाध्याय अवश्य करें। श्री स्वामी जी ने पुस्तक पढने का वचन दे दिया और पुस्तक रख ली। मार्ग में उस पुस्तक को देखने का विचार आया कि देख तो सही कि यह पुस्तक कौन सी है। यह सोचकर उन्होंने उस पुस्तक को निकाला और जब उस पर सत्यार्थ-प्रकाश छपा हुआ पढा तो कुछ सक-पका से गये। वेदान्ती वेदान्ती होने के कारण वे सदैव इस पुस्तक को घृणा की दृष्टि से देखते रहे थे किन्तु अब प्रतिज्ञा वश उन्होंने उसे पढना प्रारम्भ कर दिया और समाप्त होने पर काया ही पलट गई। वेदान्त का वह झूठा गर्व गल कर बह गया। और वे एक निष्ठावान् आर्य सन्यासी बन गये। (देखें महापुरुषों के जीवन तथा कार्य पृष्ठ ११६) यही नहीं ऐसे अगणित व्यक्ति हैं कि जिन के जीवन की काया पलट सत्यार्थ-प्रकाश के स्वाध्याय से हुई है।

सत्यार्थप्रकाश का एक प्रभाव यह हुआ कि इससे स्वतन्त्र चिन्तन का श्री गणेश हुआ। इस ग्रन्थ ने लोगों को स्वतन्त्र चिन्तन की राह दिखाई और स्वतन्त्र चिन्तन ने धर्म मे बुद्धिवाद को प्रवेश दिया। स्वतन्त्र चिन्तन के कारण ही हिन्दू जाति रुढिवादिता को लौको तोडने में सफल हो सकी। सत्यार्थप्रकाश मे महर्षि दयानन्द ने बुद्धिवाद की अद्भुत मशाल जलाई थी जिसके सम्बन्ध मे कविवर दिनकर को भी यह तथ्य स्वीकारना पडा कि दया-नन्द ने जो बुद्धिवाद की मशाल जलाई थी उसका कोई जवाब नही था। सत्य तो यह है कि आज जो अविश्वसनीय तथ्यो एव घटनाओं चरित्रो एव भावनाओ को विश्व सनीय या बुद्धिसम्मत धरातल पर उतारने के प्रयत्न हो रहे हैं, वे सत्यार्थप्रकाश प्रदत्त स्वतन्त्र चिन्तन की भावनाओ का सुफल है। इसी ग्रन्थ की रचना के बाद ही राम-कृष्ण आदि अवतारो का मानवी-करण तथा उनसे सम्बद्ध प्राय सभी अलौकिक लीलाओ को बुद्धि-वादी धरातल पर लाने के प्रयास सम्भव हो सके हैं। यह सब सत्यार्थ प्रकाश का चमत्कारी प्रभाव है। यह उस महान ऋषि की साधना है। और उसकी साधना का ही यह सुफल है कि आज विश्व उस की ओर खिचा चला आ रहा है। सत्य है—

ऋषिराज तेज तेरा
चहुं ओर छा रहा है।
तेरे बताये पथ पर
ससार आ रहा है॥

निष्काम और सकाम कर्म-भेद

—ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका से

जब मोक्ष अर्थात् सब दुःखों से छूट के केवल परमेश्वर की ही प्राप्ति के लिए धर्म से युक्त सब कर्मों का यथावत् करना, यही निष्काम मार्ग कहाता है, क्योंकि इसमें संसार के भोगों की कामना नहीं की जाती। इसी कारण से इसका फल अक्षय है। और जिसमें संसार के भोगों की इच्छा से धर्म-युक्त काम किये जाते हैं, उनको सकाम कर्म कहते हैं। इस हेतु से इसका फल नाशवन् होता है क्योंकि सब कर्म करके इन्द्रिय भोगों को प्राप्त होके जन्म मरण से नहीं छूट सकता।

अग्निहोत्र से लेके अश्वमेध पर्यन्त जो कर्मकाण्ड है, उनमें चार प्रकार के द्रव्यों का होम करना होता है—एक सुगन्धगुणयुक्त, जो कस्तूरी केशरादि हैं, दूसरा मिष्टगुणयुक्त, जो कि गुड़ और शहत आदि कहाते हैं, तीसरा पुष्टिकारकगुणयुक्त, जो घृत, दुग्ध और अन्न है, और चौथा रोगनाशकगुणयुक्त जो कि सोमलतादि औषधि आदि हैं। इन चारों का परस्पर शोधन, संस्कार और यथायोग्य मिला के अग्नि में युक्तिपूर्वक जो होम किया जाता है, वह वायु और वृष्टिजल की शुद्धि करने वाला होता है। इससे सब जगत् को सुख होता है। और जिसको भोजन, छादन, विमानादि यान; कलाकुशलता, यन्त्र और सामाजिक नियम होने के लिए करते हैं, वह अधिकांश से कर्ता को ही सुख देने वाला होता है—

इसमें पूर्वमीमांसा धर्मशास्त्र की भी सम्मति है। एक तो द्रव्य, दूसरा संस्कार और तीसरा उनका यथावत् उपयोग करना, ये तीनों बात यज्ञ के कर्ता को अवश्य करनी चाहिए। सो पूर्वोक्त सुगन्धादियुक्त चार प्रकार के द्रव्यों का अच्छी प्रकार संस्कार करके अग्नि में होम करने से जगत् का अत्यन्त उपकार होता है। जैसे दाल और शाक आदि में सुगन्ध द्रव्य और घी इन दोनों को चमचे में अग्नि पर तपा के उनमें छौंक देने से वह सुगन्धित हो जाता है, क्योंकि उन सुगन्ध द्रव्य और घी के अणु उनको सुगन्धित करके दाल आदि पदार्थों को पुष्टि और रुचि बढ़ाने वाले कर देते हैं, वैसे ही यज्ञ से जो भाफ उठता है, वह भी वायु और वृष्टि के जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत् को सुख करता है, उससे वह यज्ञ परोपकार के लिए ही होता है।

इसमें ऐतरेय ब्राह्मण का प्रमाण है कि अर्थात् जनता नाम जो मनुष्यों का समूह है, उसी के सुख के लिए यज्ञ होता है, और संस्कार किये द्रव्यों का होम करने वाला जो विद्वान् मनुष्य है, वह भी आनन्द को प्राप्त होता है, क्योंकि जो मनुष्य जगत् का जितना उपकार करेगा उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा। इसलिए यज्ञ का अर्थवाद यह है कि अनर्थ दोषों को हटा के जगत् में आनन्द को बढ़ाता है। परन्तु होम के द्रव्यों का उत्तम संस्कार और होम के करने वाले मनुष्यों को होम करने की श्रेष्ठ विद्या अवश्य होनी चाहिए। सो इसी प्रकार के यज्ञ करने से सब को उत्तम फल प्राप्त होता है, विशेष करके यज्ञकर्ता को अन्यथा नहीं।

—पुष्करलाल आर्य

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ · अंक २३ रविवार २६ अप्रैल, १९८७ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ वैशाख २०४४ दयानन्दाब्द—१६२

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

संस्कृत रक्षा महाभियान

१० मई को सम्पूर्ण भारत में संस्कृत रक्षा दिवस के रूप में मनायें

संस्कृत और संस्कृति की रक्षा के लिए आगे आओ

—स्वामी आनन्द बोध—

भारत सरकार की नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा की नितान्त उपेक्षा की गई है। इस नीति से हमारी संस्कृति, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक मूल्यों पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। सार्वदेशिक सभा ने संस्कृत के चुने हुए विद्वानों की एक गोष्ठी गत ५ अप्रैल, १९८७ को आर्यसमाज दिल्ली में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री की अध्यक्षता में आयोजित की थी। इस बैठक में अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति का गठन स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता में किया गया। स्वामी जी ने आगामी १० मई, १९८७ को अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत रक्षा दिवस का आह्वान किया और कहा इस अवसर पर प्रस्ताव के अनुसार पत्र लिखकर भेजे। सभा में यह भी कहा गया कि संस्कृत के समर्थन में अधिक से अधिक लोगों के हस्ताक्षर कराकर सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में भिजवाने हैं, ताकि यहां से उन्हें भारत सरकार के सामने प्रस्तुत किया जा सके।

स्वामी आनन्द बोध ने सार्वजनिक अपील की है कि देव वाणी की रक्षा के लिए आप अपने समस्त स्कूल, विद्यालय, गुरुकुल व अन्य शिक्षण संस्थाओं को इस कार्यक्रम पर पूर्ण रूप से अमल करने की प्रेरणा करें।

नई शिक्षा-पद्धति में संस्कृत : एक प्रस्ताव

--आचार्य कृष्णलाल

भारत सरकार की नई शिक्षा-पद्धति में माध्यमिक स्तर पर जो त्रिभाषा सूत्र स्वीकार किया गया है, उसमें केवल आधुनिक भारतीय भाषाओं का उल्लेख है। यहां आधुनिक शब्द क्यों जोड़ा गया है, यह विचारणीय है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में पन्द्रह भारतीय भाषाओं में संस्कृत का समावेश है। परन्तु वहां पर प्राचीन या आधुनिक भारतीय भाषा जैसा कोई भेदमूलक वर्गीकरण नहीं किया गया है। इस प्रकार "आधुनिक" विशेषण लगाकर और संस्कृत को आधुनिक न मानकर इस त्रिभाषा सूत्र में केवल उसे बहिष्कृत किया गया है। इस सम्बन्ध में हमारी मांग है कि नई शिक्षा पद्धति में भाषा के साथ जो "आधुनिक" विशेषण जोड़ा गया है, उसे हटाकर केवल "भारतीय भाषाएँ" पाठ होना चाहिये जिससे भारतीय भाषाओं को एकता के सूत्र में जोड़ने वाली संस्कृत भाषा अध्ययन यदि कोई करना चाहे तो उसे ऐसा करने की छूट हो।

इस नई शिक्षा पद्धति में आगे चलकर उच्च शिक्षा के लिए संस्कृत के ज्ञान का महत्त्व स्वीकार किया गया है और उसके लिए व्यवस्था भी विद्यमान है किंतु क्या यह हास्यास्पद जैसा नहीं लगता कि जिस छात्र को निम्न स्तर पर संस्कृत पढने का अवसर ही नहीं मिला वह उच्च शिक्षा में संस्कृत शोध का कार्य करे ?

अत: हमारा भारत सरकार से अनुरोध है कि संस्कृत के पठन-पाठन की व्यवस्था माध्यमिक स्तर पर

(शेष पृष्ठ ४ पर)

संस्कृत सभी भाषाओं की जननी

संविधान की धारा ३४३ के अनुसार राष्ट्रभाषा के नाम से प्रसिद्ध देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया गया है। उच्च स्तर के चिन्तन, शिक्षण अनुसधान एवं प्रशासन, न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका आदि से सम्बन्धित समस्त कार्यों के लिए संस्कृत निष्ठ हिन्दी ही उपयोगी हो सकती है। इसलिए सविधान की धारा ३५१ में हिन्दी को समृद्ध और सक्षम बनाने के लिए मुख्य रूप से संस्कृत से शब्दावली को लेने पर बल दिया गया है।

यह भी निर्विवाद है कि आज भी देश की सभी भाषाओं में ओत-प्रोत संस्कृत की शब्दावली और उसमें उपलब्ध साहित्य और कर्मकाण्ड ने ही समूचे देश को एकता के रूप में बांधा हुआ है। वस्तुत इस देश का इतिहास और धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं संक्षेप में इस देश की अस्मिता संस्कृत के बिना सुरक्षित नहीं रह सकती। इसलिए आपसे निवेदन है कि आप निम्नलिखित प्रस्ताव पारित करे—

प्रस्ताव का प्रारूप

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत निर्धारित पाठ्यक्रम में किसी न किसी स्तर पर प्रत्येक भारतीय के लिए अनिवार्य रूप से संस्कृत के पठन पाठन की व्यवस्था की जाए। एतदर्थ आवश्यक है कि त्रिभाषा सूत्र मे मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा के साथ तीसरी भाषा के रूप मे सस्कृत को अनिवार्य बनाया जाए। यह भी निश्चित है कि जब तक अंग्रेजी की अनिवार्यता रहेगी, तब तक संस्कृत को उसका समुचित स्थान दिया जाना सभव न होगा।

इसलिए हमारी मांग है कि पाठ्यक्रम मे त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत अंग्रेजी के अध्ययन को व्यवस्था विश्वविद्यालयो मे ऐच्छिक विषय के रूप मे की जाए।

भवदीय
ब्रह्ममित्र अवस्थी सयोजक

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

परमात्मा परम न्यायकारी है

प्रस्तोता--राजेन्द्र पाल गुप्त

जप, तप, यज्ञ त्याग, तीर्थधाम आदि कितना भी कुछ किया जाये परन्तु मनुष्य द्वारा किया गया अपराध और पाप कभी निष्फल नहीं जाएगा। पाप का फल तो अवश्य मिलेगा। अन्य मत मतान्तरों ने परमात्मा और मनुष्य के बीच अवतार, रसूल या पीर आदि की कल्पना कर भक्त और भगवान् की दूरी बढाई है। भगवान् और भक्त के बीच किसी एजेण्ट प्रतिनिधि की आवश्यकता नही है। नही परमात्मा के न्याय में किसी प्रतिनिधि से सिफारिश कर देने पर दण्ड से मुक्ति ही हो सकती है। परमात्मा किसी पीर, पैगम्बर की सिफारिश से किसी के साथ पक्षपात नही कर सकता। पीर पैगम्बर की कल्पना ने संसार सच्चे धर्म से सच्ची भक्ति से दूर हुआ है। अन्य मतमतान्तरों एवं सम्प्रदायों ने परमात्मा की न्याय-व्यवस्था को मजाक बना दिया है। जिसको अमुक पीर पैगम्बर खुदा का तथाकथित बेटा सिफारिश कर देगा वह अपने जघन्य अपराधो के फल से भी बच जायेगा। बाकी तो निरपराधी भी हैं और पैगम्बर को नही मानेगे वे नरक के अधिकारी होंगे। यह विचार व्यक्ति को ईश्वर की न्याय-प्रणाली को नकारा साबित कर देते हैं। इस से पापी पाप करने की छूट पाता है। ऐसी न्याय-व्यवस्था को तो हम अपने समाज और राष्ट्र मे सहन नही कर पायेगे। अत: श्रीकृष्ण का घोष अत्यन्त कल्याणप्रद है-अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।

अपने द्वारा किये गए शुभ अशुभ कर्म का फल शुभ और अशुभ रूप में या सुख और दुःख के रूप में अवश्य भोगना पडता है। इस वक्तव्य के वक्ता थे आर्यसन्देश के सम्पादक श्री यशपाल सुधांशु। वक्ता महोदय आर्यसमाज साकेत नई दिल्ली में अपने सप्त दिवसीय "वेद प्रवचन" के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होने कहा—वैदिक धर्म के सिद्धांत अकाट्य हैं तथा बुद्धि ग्राह्य हैं। संसार एक दिन इस सच्चे धर्म को जानेगा और मानेगा। पता नहीं अन्य नेताओं ने इस पर कितना मनन किया होगा, परन्तु यह बात मेरे मन को इतनी छू गई है कि मन में बहुत से विचार उठ रहे हैं। कुछ निम्नांकित हैं।

(१) संयुक्त राज्य अमेरिका के सिक्कों और नोटों पर बहुधा यह लिखा रहता है 'In God we trust' अर्थात् हम ईश्वर मे विश्वास रखते हैं। यह पूर्णरूपेण वैदिक विचार है। महर्षि दयानन्द ने तो स्थान-स्थान पर बारम्बार कहा है कि 'उसी (ईश्वर) की उपासना करनी योग्य है।' पता नहीं इस बात की कोई सम्भावना है या नहीं परन्तु श्री सुधांशु जी एक प्रयत्न तो कर ही सकते हैं कि अमेरिका के राष्ट्रपति को इस वेद के वाक्य को मुद्राओं पर अंकित करने के लिए धन्यवाद दिया जाए। साथ ही यदि आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रभाव को भी उपयोग मे लाकर अमेरिका के राष्ट्रपति से निवेदन किया जाए कि वे इस रेखा को थोडी-सी और बढा दें और इसके साथ ही यह भी अंकित करा दें कि 'And He is just', पूरा अंकन इस प्रकार हो 'In God We trust And He is just' अर्थात् हम ईश्वर में विश्वास करते हैं और ईश्वर न्यायकारी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि उचित स्तर पर इस मामले को उठाया जाए तो अमेरिकी राष्ट्रपति इस बात को मान लेगे।

(२) मुस्लिम देशों में अपनी मुद्राओं पर क्या लिखा जाता है मैं ठीक से नहीं जानता। परन्तु अनुमान है कि उन पर 'खुदा जब देता है तो बेहिसाब देता है' या 'यह सब अल्लाह के फजल से है' या इसी प्रकार की कोई बात लिखी होती होगी। इसका पता लगाकर इस लकीर को भी बदलने का यत्न करना चाहिए और वहां भी '...और खुदा मुन्सिफ है लिखा जाना चाहिए।

(३) भारत में तो मुद्राएं भी धर्मनिरपेक्ष बना दी गई हैं और उन पर मात्र यह लिखा होता है कि 'मैं धारक को... रुपये देने का वचन देता हूं। वहां ईश्वर की कोई आवश्यकता अनुभव नहीं की गई। निश्चय ही सम्पादक सुधांशु जी अधिकारपूर्वक भारत सरकार से तो आग्रह कर ही सकते हैं कि सभी सिक्कों और नोटों पर 'ईश्वर न्यायकारी है' लिखा जाए। भारत सरकार को यह समझने में अधिक दिक्कत नहीं होनी चाहिए कि इन शब्दों से 'धर्मनिरपेक्षता' हत या आहत नही होगी अपितु पुष्ट ही होगी क्योंकि कोई भी मजहब या मत इस पर एतराज नहीं कर सकता।

मनुष्य जब भी दुराचरण करता है तो ईश्वर की न्यायकारिता को भूल कर ही करता है। यदि यह बात 'तकिया कलाम' बना ली जाए कि 'ईश्वर न्यायकारी है' तो मानवमात्र सदाचारी बन जाए क्योंकि दुराचार तो न्याय से छिपकर या बचकर ही किया जा सकता है। सभी मजहबों और मत वालों को भी पापियों के ऊपर से अपनी छत्रछाया तुरन्त हटा लेनी चाहिए।

सुधांशु जी की वेद कथा बडी तन्मयता और भारी उत्साह से सुनी गई है। एक सम्पादक के रूप में उनकी शक्ति का स्मरण दिलाने के लिए निवेदन है कि

'तीर उठाओ न तुम
तलवार निकालो।
मुकबिल हो अगर तोप
तो अखबार निकालो॥

खड़ा आवाज देता हूं, दुलारे आर्य वीरों को

खडा आवाज देता हूं,
दुलारे आर्य वीरों को,
अगर हिम्मत हो जरा भी तो,
उसे भी आजमा लो तुम।
लिये झण्डा निकलते हो,
वही तो ओ३म् का प्यारा,
जिसे लेकर कभी भी आज तक
कोई नही हारा।
वही है रक्त की ऊष्मा,
वही है आज का नारा,
'भली-सी आर्य संस्कृति में,
रंगेगे यह जगत् सारा।
तदपि यह खेद बस, इतना,
भुलाये हो खुदी बैठे;
अगर अरमान बाकी हों,
उन्हें भी तो निकालो तुम!
अगर हिम्मत हो जरा भी तो,
उसे भी आजमा लो तुम॥
सहस्रों ईंट-गारे के,
भवन मंदिर बनाये हैं,
खोल दिल पर्व-उत्सव पर,
बहुत रुपये लुटाये हैं,
कही फोटू निकाले हैं,
कहीं भाषण छपाये हैं,
तदपि सपने सभी ऋषि के,
बिना झिझके भुलाये हैं,
परीक्षा की घडी है सामने,
सन्नद्ध हो जाओ,
पडा दायित्व संकट में,
उसे बढ़कर बचा लो तुम!
अगर हिम्मत हो जरा भी तो,
उसे भी आजमा लो तुम॥
कही पर घूस है फैली,
कहीं इज्जत उतरती है,
कहीं होटल व रेस्ट्रां मे,
नयी जन्नत उभरती है,
नियम-कानून में बढकर,
बुराई ही संवरती है,
वकीलों के शिकंजों में,
अदालत तक सिसकती है,
मिले हर रोग की औषधि,
यहां केवल रुपैया में,
तडपते न्याय के मुख में,
यत्न-जल-बिन्दु डालो तुम।
अगर हिम्मत हो जरा भी तो,
उसे भी आजमा लो तुम॥
निकालो देश को नय्या,
दलों के घोर दलदल से,
भटकती भावनाओं को
हटा लो कटु अमंगल से,
तडपने दो न प्रतिभा को,
अनादर के हलाहल से,
करो खण्डन बुराई का,
सजग साहित्य-संबल से,
लडाई दूर कर सारी,
दिशा सहयोग की खोजो,
हुआ है लक्ष्य धूमिल जो,
उसे उज्ज्वल बना लो तुम।
अगर हिम्मत हो जरा भी तो,
उसे भी आजमा लो तुम॥

—भैरवदत्त शुक्ल

प्रलोभन से बचो

लेखक—अभय विद्यालंकार

प्रातः जागरण के पश्चात् व्यायाम, युक्ताहार, संध्या, यज्ञ, स्वाध्याय आदि हमारे बहुत से कर्त्तव्य जिन्हें कि बिना पालन किये हमारा कल्याण नहीं हो सकता। हमें अपनी अवस्था और समय के अनुसार अपने कर्त्तव्यों का निश्चय करना चाहिए और फिर उस पर दृढ़ होना चाहिये। इन अपने कर्त्तव्यों और अपने धर्मों का सेवन करने से ही एक आर्य "आर्य" है। एक मनुष्य-शरीरधारी 'मनुष्य' हो सकता है, क्योंकि एकमात्र इन्हीं धर्मों के अनुसार चलते हुए ही हम अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं और सर्व प्रकार की वास्तविक समृद्धि प्राप्त कर सफल जीवन हो सकते हैं।

इसलिए हम इस अति महत्त्व की बात पर विचार करेंगे कि हम अपने धर्म पर दृढ़ कैसे रहें, अपने धर्म से हमें विचलित कराने वाली कौन-सी चीज है जिसे जान लेने पर हम सहजतया धर्मसेवी बन सकते हैं, किस एक शत्रु पर विजय पा लेने से हमें कर्त्तव्य से विचलित होने का डर नहीं रहेगा। आशा है कि हम इस चौथे उपदेश को ग्रहण करने के लिए सर्वथा उद्यत होंगे।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का यह प्रसिद्ध वाक्य है—

"हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्याऽपिहितं मुखम्।"

'चमकते हुए सोने के ढकने से सत्य का मुंह ढका हुआ है।' जो मनुष्य इसकी सचाई को हृदयंगम कर लेते हैं, वे सदा सन्मार्ग को ही चुनते हैं। यह एक ऐसा सत्य है जो सर्व जगत् में फैला हुआ है। सब जगह सचाई चमकीले ढकने से ढकी हुई है। इसलिए मनुष्य उस चमक में फंस जाता है, किन्तु उसे अलग कर [illegible] पर नहीं पहुंच सकता। संसार में सब कहीं यही आकर्षण व चमक है जो कि हमें फंसाती है, हमें प्रलोभित करती है। यह इन्द्रियों के सुख हैं, भोग हैं, आराम हैं, धन-दौलत है, यश है। परन्तु मनुष्य का असली मार्ग इससे बच करके जाता है। कठोपनिषद् में यह वर्णन है कि नचिकेता नामक जिज्ञासु मृत्यु के पास गया। मृत्यु के कहे तीन वरों में से उसने दो वर मांगे जो उसे आसानी से मिल गये। फिर तीसरा वर उसने यह मांगा कि मुझे बताओ कि मरकर जीव का क्या होता है [illegible] आत्मा है या नहीं? परन्तु मृत्यु ने उससे कहा कि इस विषय में बड़े-बड़े देव भी संशयित होते हैं, यह गम्भीर बात है, इसे मत पूछो। उसने आग्रह किया। मृत्यु ने तब कहा कि तू हाथी, घोड़े, रथ, दिव्य स्त्रियां, दीर्घजीवन, राज्य, जो चाहे ले ले, मैं तुरन्त दे दूंगा, पर इस प्रश्न को मत पूछ। परन्तु धीर नचिकेता ने देखा कि भोगों से तो केवल इन्द्रियों का तेज जीर्ण होता है, दीर्घायु भी मैं ऐसी संशयित अवस्था में लेकर अधिक दुःखी होऊंगा, मुझे तो वह अवस्था चाहिए जो मरण रहित है। अन्त में मृत्यु को उसे उसका वर देना पड़ा। तब उसने कहा कि दुनिया में दो मार्ग हैं, एक श्रेय-मार्ग और एक प्रेय-मार्ग। एक वह मार्ग है जो हमारे कल्याण का मार्ग है और एक वह मार्ग है जो हमें सुन्दर और प्रिय प्रतीत होता है। ये दोनों मार्ग सभी मनुष्यों के सामने आते हैं। अविवेकी पुरुष इनमें से खिचावट के मार्ग में चला जाता है, परन्तु धीर पुरुष विवेकपूर्वक इस कल्याण के परन्तु कठिन मार्ग को चुनता है। जो मनुष्य प्रलोभन के आने पर उसमें नहीं फंसता वही धीर है। यह अवस्था हर एक मनुष्य के सम्मुख प्रतिदिन आया करती है। एक तरफ आनन्द होता है, एक तरफ कठिनता। एक तरफ प्रलोभन होता है, एक तरफ अपना कर्त्तव्य। उस समय वे ही मनुष्य सन्मार्ग को ग्रहण कर सकते हैं जिनके मन ने बार-बार मनन करके इस वेद के उपदेश को ग्रहण किया है—

"हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्याऽपिहित मुखम्।"

ससार में सब जगह धोखा भरा हुआ है। सत्य आड़ में छिपा बैठा है। जो इस धोखे में नहीं आते वे ही धन्य हैं। परन्तु क्या हममें से अधिकांश ऐसे नहीं हैं जो इन्द्रियों की खिचावट में फस जाते हैं, और सयम के श्रेष्ठ मार्ग को छोड देते हैं। भोग में फस जाते हैं, ब्रह्मचर्य को छोड देते हैं। धन में फंस जाते हैं, धर्म को छोड देते हैं। जो इन छोटे प्रलोभनों को जीत भी लेते हैं वे फिर मान मे फंस जाते हैं और सत्य को छोड़ देते हैं। यह इसलिए कि हमने इस वेदोपदेश को ग्रहण करके विवेक की आदत नहीं बनाई है। हर एक आर्यसमाज के सभ्य को अपने आर्य कर्त्तव्य को पालन करने के लिए यह ज्ञान ग्रहण करना चाहिये। यदि हमने अपने जीवन पर विचार करने का समय बना लिया है तो दिन भर की ऐसी अवस्थाओं को गिनना चाहिए जब-जब प्रलोभन और कर्त्तव्य का मुकाबला हुआ हो और सायंकाल के समय यह देखना चाहिए कि मैं कब-कब प्रलोभन मे फंसा और क्यों फंसा इत्यादि। और फिर प्रातः काल परमात्मा से बल मांगकर अगले दिन में प्रविष्ट होना चाहिए और दृढ़ निश्चय करना चाहिए कि आज सब प्रलोभनों को जरूर परास्त करूंगा। इस विधि से धीरे-धीरे आपका वह अभ्यास हो जायेगा, श्रेय और प्रेय दोनों वस्तुओं के आते ही आप शीघ्र ही श्रेय को ग्रहण कर लिया करेंगे। प्रत्येक आर्य को धर्मारूढ बनने के लिए यह अभ्यास प्राप्त करना चाहिए।

हमारे आचार्य दयानन्द को पूर्वजन्म से ही यह विवेक-बुद्धि प्राप्त थी। उन्होंने मृत्यु के सवाल को हल करने के लिए घर छोड़ा, जायदाद छोडी, गृहस्थ छोड़ा और सत्य की तलाश में जगह-जगह धक्के खाना, जगलों में कांटों से लहूलुहान होकर फिरना, नाना कष्ट सहना इन सब को स्वीकार किया। विद्या प्राप्त करने के बाद भी यदि वे चाहते तो कहीं सुख से बैठ सकते थे, परन्तु वे हिरण्मय पात्र की फसावट से दूर हो चुके थे, इसलिए लोगों के ईंट-पत्थर उन्होंने सहे, गालियां सही, जहर खाना भी सहा, परन्तु सत्य प्रचार को नहीं छोड़ा। एक राजा ने उनसे कहा कि आप मूर्ति-पूजा का खण्डन छोड दीजिये और यह सब राज्य आपका ही है। शायद हमें यह बडा आसान—सुगम प्रतीत होता होगा कि वे कह देते—"मूर्ति-पूजा अच्छी है।" परन्तु उन्होंने सत्य को देखा हुआ था, वे स्वप्न मे भी इस फसावट में नहीं फस सकते थे। हम में से कितने होंगे जिन्हें यदि कहा जाय कि तुम्हें हजार रुपये देंगे तुम इतना झूठ बोल दो, तो वे झूठ नहीं बोल देंगे। केवल १० रुपये दिये जाने पर भी अपनी मातृ-भूमि तक के विरुद्ध आचरण करने वाले हम मे मिल जायेंगे। ऐसे कितने पुरुष हैं जो केवल सस्ता होने के कारण विदेशी वस्तुएं ले लेंगे और अपने देश की व्यवसाय-वृद्धि में सहायक होने की परवाह नहीं करेंगे। क्योंकि खद्दर मोटा होता है और अच्छा नहीं लगता। केवल इसीलिये स्वावलम्बी स्वदेशी धर्म को त्याग देंगे। इसी प्रकार हम अपनी थोड़ी सी सहूलियत के लिए भी अपने कर्त्तव्य और धर्म का बलिदान कर डालते हैं। यह हमारी कितनी गिरी हुई अवस्था है। हमें वेद की शरण जाकर हिरण्य की चमक से बचना चाहिये तभी कल्याण होगा। यह वेदोपदेश हमें उठाकर सच्चा आर्य नहीं बना सकेगा।

ऋषि दयानन्द का इस ससार में आकर जो महान् कार्य हुआ है उसे एक शब्द में हम यों कह सकते हैं कि उन्होंने प्रेय मार्ग में बहे जाते हुए लोगों को खड़े होकर श्रेय मार्ग का अवलम्बन करना बतलाया। जब वे उत्पन्न हुए उस समय इस देश में पश्चिमी सभ्यता जोरों पर बह रही थी, सभी लोग इसकी चमक-दमक में फंसकर बहे जा रहे थे, इस देश की पुरानी तपोमय वैदिक सभ्यता नष्टप्राय थी। तब ऋषि ने आकर अपने ब्रह्मचर्य के तप से इस लहर को रोका। यह कितना कठिन काम था। यह ब्रह्मचारी ही कर सकता था। जब संसार की आंखे खुलेंगी तब दुनिया यह समझेगी कि हम दयानन्द के कितने ऋणी हैं। पश्चिमी सभ्यता का सारांश—भोग-विलास और हमारी सभ्यता संयम और सरलता है। इसलिए आर्यसमाज का उद्देश्य संसार को प्रेय मार्ग से हटाकर श्रेय मार्ग पर लाना ही है। परन्तु यदि आर्य लोग भी सत्य को छोड चमक-दमक में फसने वाले हों तो कितने दुःख की बात है। आज हमे दयानन्द का स्मरण करके अपने में यह व्रत लेना चाहिए कि हम श्रेय मार्ग पर ही चलेंगे, उसमे चाहे कितने ही दुःख क्यों न हों। तभी हम अपना कल्याण कर सकेंगे और आर्यसमाज द्वारा जगत् का कल्याण भी कर सकेंगे।

निस्सन्देह ससार में धोखा है परन्तु इससे बचने की कुंजी यही है—"हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्याऽपिहितं मुखम्।" ससार में जितनी कल्याण की चीजे हैं वे बुरी मालूम होती हैं और हमें नाशकारी वस्तु सुन्दर और प्रिय दिखाई देती हैं। परन्तु कड़वी औषधि ही हितकारी होता है और जिह्वा को आनन्द देने वाले भोजन स्वास्थ्य का नाश करते हैं। सांप जैसे सुन्दर चमकते प्राणी के अन्दर जहर की थैली

(शेष पृष्ट ७ पर)

प्रेरक प्रसंग

प्रस्तोता—सत्यानन्द आर्य

: १ :

यद्यपि, आर्यसमाज मे नियम परिवर्तन आदि के सारे अधिकार स्वामी जी के हाथ मे थे, परन्तु वे इतने निरभिमान और निर्लिप्त थे कि उसका दूसरा दृष्टान्त मिलना अति दुर्लभ है। आर्यसमाज लाहौर के साधारण अधिवेशन मे महाशय शारदा प्रसाद जी ने प्रस्ताव किया—"आर्यसमाज के संस्थापक की पदवी मे विभूषित किया जाय।" सब सभासदो ने इस प्रस्ताव का सुप्रसन्नता से अनुमोदन किया। स्वामी जी महाराज ने हसकर कहा—'मैंने कोई नया पन्थ चलाकर गुरु गद्दी का मठ नही बनाया है। मैं तो लोगों को मतवादियो के मठ से स्वतन्त्र करना चाहता हू। ऐसी पदवियो से अन्त मैं हानिया ही हुआ करती हैं।"

शारदा जी ने दूसरा प्रस्ताव किया, "महाराज को इस समाज का परम सहायक नियत किया जाय।" इस पर उन्होने कहा—"यदि मुझे परम सहायक मानोगे तो उस परमपिता परमेश्वर को क्या कहोगे! परम सहायक तो वह जगदीश्वर ही है। हा, यदि आप मेरा नाम लिखना ही चाहते हैं, तो सहायकों की पंक्ति मे लिख लीजिए।"

: २ :

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक बन कर, अपने गुरु भाइयों को मेरठ और दिल्ली में छोड़कर, अज्ञात यात्रा करने के लिए दक्षिण की ओर चल दिये। पहला पड़ाव हुआ—अलवर मे, दिल्ली से लगभग नब्बे किलोमीटर दूर। सुरीले स्वर मे उनके भजन से आकर्षित होकर लोगो ने पूछा, 'स्वामी जी, आप को जात क्या है ?" प्रश्न का उत्तर मिला—"संन्यासी की जात भी कोई होती है ?" "पूर्वाश्रम मे क्या थी ?" "कायस्थ।" यह भगवा बाना क्यों धारण किया ?" "भिक्षुओं का बाना यही तो होता है।"

इतने बडे शहर में छोटी सी झोंपडी मे रहने वाली एक बुढ़िया ही थी, जो अपने "लाला" (स्वामी जी) को अपने हाथ से रोटी बना कर गरम-गरम खिलाती थी। और था एक वैष्णव सन्यासी रामसनेही, जो अक्सर मधुकरी माग कर लाये आटे की चपातियां दोनों के लिए बनाकर नमक-प्याज से उन्हें खिलाता था।

बहुत दिनों बाद स्वामी जी जब शिकागो धर्म सम्मेलन से भारत लौटे, तो अलवर वालों ने भी उस "अज्ञात परिव्राजक" का जोरों से सत्कार किया।

स्वामी जी ने रामसनेही को दूर से ही पहचाना और आप ही आवाज लगाकर बुलाया। रात के अंधेरे मे चुपके से वे निकल पड़े। जब लोगों ने इधर-उधर ढूंढा तो बहुत देर बाद एक पिछडी बस्ती की जर्जर कुटिया में एक बुढ़िया के साथ मिलकर गरम-गरम रोटियां खाते मिले-विश्व विख्यात स्वामी विवेकानन्द !

: ३ :

संत तुकाराम ने जब अपना सब कुछ दीन दुखियों की सेवा में अर्पण कर दिया तो एक दिन अनशन की नौबत आ गई। पत्नी ने कहा—"बैठे क्या हो, खेत मे गन्ने खड़े हैं। एक गट्ठर बाध लाओ। आज का दिन तो निकल ही जायेगा।" तुका महाराज तत्काल खेत मे पहुचे और गन्नों का एक गट्ठर बाधकर घर की तरफ चले। रास्ते में मांगने वाले पीछे पड गये। एक-एक निकाल-निकाल सब को दे दिया। जब घर पहुंचे तो उनके पास केवल एक गन्ना बचा था।

पत्नी बेहद भूखी थी। जब उसने महाराज के हाथ में एक ही गन्ना देखा तो आग बबूला हो गई। तुकाराम जी के हाथ से गन्ना छुडाकर उसने उन्हें मारना शुरू कर दिया। मारते-मारते जब गन्ना टूट गया तो उसका क्रोध थमा। तुका महाराज मौन मार खाते रहे, किन्तु जब गन्ने के दो टुकडे हो गये तो हंसते हुए बोले—"देख तेरे क्रोध ने काम अच्छा हो गया। गन्ने के टुकडे हो गये। एक तू चूस ले, एक मैं चूस लूगा।"

क्रोध के प्रचंड दावानल के सामने क्षमा और प्रेम के अगाध अनत समुद्र को देख, तुकाराम जी की पत्नी ने पश्चात्ताप मे अपना सिर पीट लिया। महाराज ने अपनी पगड़ी के पल्ले से उसके आंसू पोछे और छीलकर सारा गन्ना उसे खिला दिया।

शिक्षा-पद्धति में संस्कृत···

(पृष्ठ १ का शेष)

अवश्य हो। यह तभी सम्भव है जब त्रिभाषा सूत्र में भाषा के साथ "आधुनिक" विशेषण हटा कर "भारतीय भाषाएँ" ऐसा उल्लेख हो।

भारतीय सविधान के ३५१ वे अनुच्छेद में यह भी उल्लेख है कि राजभाषा हिन्दी तथा अन्य सभी भारतीय भाषाएँ अपनी शब्दावली के लिए मुख्य रूप से संस्कृत का आश्रय लेगी। इस परिप्रेक्ष्य में भी माध्यमिक स्तर पर तीन भाषाओं के अन्तर्गत संस्कृत के कम से कम ऐच्छिक अध्ययन की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिये।

यदि भाषाओ के साथ "आधुनिक" विशेषण लगाना ही हो तो भी उनमें से संस्कृत का बहिष्कार करना अनुचित है क्योंकि संस्कृत को आधुनिकता की परिधि से बाहर नही रखा जा सकता। जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि बहुत से परिवारों तथा व्यक्तियों की मातृभाषा संस्कृत है। स्वाभाविक है कि संस्कृत का दैनन्दिन आधुनिक प्रयोग हो रहा है। संस्कृत में अनेक आधुनिक दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिकाएं नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं तथा कविता, कहानी, आदि सभी विधाओ मे आधुनिक विषयों पर आधुनिक संस्कृत साहित्य की रचना हो रही है।

संस्कृत भारतीय संस्कृति की मूलाधार तथा एकता का प्रबल सूत्र है। नई शिक्षा-पद्धति में संस्कृत को माध्यमिक स्तर पर समुचित सम्मानजनक स्थान अवश्य दिया जाना चाहिए। त्रिभाषासूत्र के अन्तर्गत संस्कृत के अध्ययन का विकल्प विद्यालयों में अवश्य रहना चाहिए।

अत हमारी मांग है कि त्रिभाषा सूत्र में भारतीय भाषाओ से पूर्व "आधुनिक" विशेषण न जोडा जाए अथवा संस्कृत को भी आधुनिक भाषा माना जाए।

प्रो० संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

सुविख्यात संस्कृत विद्वान् व पं० चारुदेव शास्त्री दिवंगत

आधुनिक पाणिनि के नाम से जाने-माने विद्वान् पंडित चारुदेव जी शास्त्री का हृदय गति रुकने से देहावसान हो गया। इस समय उनकी आयु ९० वर्ष की थी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्यसमाज दीवानहाल के अधिवेशन में दिवंगत आत्मा के प्रति गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि आर्य जगत् के विद्वान् के प्रयाण से महती क्षति हुई है।

श्री स्वामी जी ने कहा श्री चारुदेव जी शास्त्री ने संस्कृत, व्याकरण आदि के कई ग्रन्थ लिखे हैं। उनकी विद्वत्तापूर्ण लेखन शैली को साहित्यिक क्षेत्र मे बड़ा सम्मान मिला है। १९७४ में उनका सार्वजनिक अभिनन्दन भी भी किया गया था। संस्कृत के विद्वानो में वह सदैव प्रशंसा व सम्मान के योग्य रहे हैं। उनकी महान् प्रतिभा व व्यक्तित्व के आधार पर बनारस विश्वविद्यालय द्वारा डी-लिट की उपाधि से उन्हें सम्मानित किया गया था। पंजाब सरकार ने भी उन्हें संस्कृत शिरोमणि साहित्यकार घोषित किया था। वह अनेक भाषाओं के ज्ञाता भी थे। लाहौर और अम्बाला में डी० ए० वी० कालेज में अध्यापक का कार्य भी करते थे। आर्यसमाज के साथ उनका गहरा सम्बन्ध था। उनके निधन से संस्कृत का एक महान् विद्वान् हम ने खो दिया है।

शोक सभा में दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई।

मूलचन्द गुप्त
मन्त्री

श्री० जनकनंदिनी जानकी : जीवन की एक झांकी

—प्रकाशवती शास्त्री

जनकनंदिनी राजरानी सीता मिथिला की राजकुमारी तथा अयोध्या की वधू थी। इनका नाम सीता रखा गया। क्योंकि इनका जन्म उस दिन हुआ था जिस दिन इनके पिता जनक एक सीता यज्ञ (कृषियज्ञ) कर रहे थे। अकाल के निवारण और खेती के संवर्धन के लिए। राजर्षि जनक ने इस कन्या के जन्म को शुभ मानकर इनका नाम सीता रखा था क्योंकि उसी दिन यज्ञ के फलस्वरूप राज्य में प्रभूत वर्षा हुई थी।

राजर्षि जनक ब्रह्मज्ञानियों के कुल में उत्पन्न हुए थे इसलिए उनके राज्य में प्राय: ऋषि मुनि आते रहते थे और आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा होती रहती थी। ऋषिवर याज्ञवल्क्य, अष्टावक्र आदि ज्ञानी ऋषि तथा गार्गी, सुलभा आदि ऋषिकाएं इसी काल के आभूषण हैं।

ऐसे वातावरण में उत्पन्न और पालिता सीता, स्वभावत: आध्यात्मिकता के उत्तम विचारों से ओतप्रोत थी। वह न केवल शारीरिक सुन्दरता में अनुपम थीं वरन् मानसिक और आत्मिक सौंदर्य का भी कोष थीं।

उनके शरीर में लावण्य और वीरता का अनोखा सामंजस्य था। इसीलिए उनके पिता ने उनके लिए एक वीर पति पाने की शर्त रखी। वाल्मीकि ऋषि ने उसे वीर्यशुल्का नाम दिया तो गोस्वामी तुलसीदास ने भी जनक के मुंह से निराशा की अवस्था में "वीरविहीन मही मैं जानी" कहलवाया है। जिसके उत्तर में उसे एक नहीं वरन् दो-दो रघुवंशी वीरों के रूप में मिल गए लक्ष्मण जी को क्रोध आ गया। वे बोले—

रघुवंशिन में एकहु जहा होई।
तिस समाज अस कहे न कोई॥
जनक कही जस अनुचित वाणी।
विद्यमान रघुकुलमणि जानी॥

विश्वामित्र जी का संकेत पाकर श्री राम ने शिव धनुष उठाया। सीता का विवाह राम से हो गया। (सीता) उसने अपनी व्यवहार कुशलता से सब का मन जीत लिया। वह प्रेम, दया और सौहार्द की मूर्ति थी। ससुराल में वह सब को प्यारी बन गई।

राम वन गमन के समय सीता का एक दूसरा ही रूप सामने आता है। वह एक आदर्श पत्नी है जो पति का साथ विपत्ति में भी नहीं छोड़ सकती। जब राम ने उसे कष्टों से सावधान करना चाहा तो उसने शास्त्रों की आज्ञा का हवाला ही नहीं दिया वरन् राम की भर्त्सना भी की। यहा सीता एक आर्या पत्नी है, आदर्श पत्नी केवल पति की आज्ञा का ही पालन नहीं करती उसके धर्म की भी रक्षा करती है। उसे कर्तव्य का बोध कराती है। वह कहती है— मेरे पिता ने तुम्हें नहीं पहिचाना, तुम तो स्त्री के रूप में पुरुष दिखाई देते हो जो अपनी पत्नी को साथ ले जाने में कतराते हो। उसने कहा—

त्वा हामन्यत विदेह:
पिता मे मिथिलाधिप:।
राम जामातर प्राप्य
स्त्रिय पुरुषविग्रहम्॥

मुझे लगता है, मेरे पिता ने पुरुष रूप स्त्री को दामाद बनाया है। सीता एक सशक्त व्रतधारिणी नारी थी। गोस्वामी जी के शब्दों में व्यग्य करती है—

तुम तो वन में तपस्या करो और मैं महलों में मौज करू।
मैं सुकुमारी, नाथ वन योगू।
तुम ही उचित तप, मोकह भोगू।

वाह भई वाह—

आगे चलकर वह राम को विश्वास दिलाती है कि वह वन में जाकर किसी प्रकार के विलास या या भोग की कामना करके उसका व्रत भी भंग नहीं करेगी।

शुश्रूषमाणा ते नित्यं
नियता ब्रह्मचारिणी।
सह रंस्ये त्वया वीर
वनेषु मधु गन्धिषु॥

सेवा करती हुई व्रतधारिणी ब्रह्मचारिणी बन मैं तेरे साथ वन में रहूँगी।
आगे कहती हैं—

फलमूलाशना नित्यं
भविष्यामि न संशय:।
न च मे भविता तत्र
कश्चित् तनुपरिश्रम॥

अर्थात् मैं फल फूल खाती हुई सुखपूर्वक रह लूगी।
आप चिन्ता न करे—
आगे चलिए। दण्डकारण्य में प्रविष्ट होते समय जब राम ने ऋषि मुनियों को पीड़ित देख राक्षसों को मारने की प्रतिज्ञा की—

निशचरहीन करौ महि
"भुज उठाय प्रण कीन्ह"

वही सीता उन्हें सावधान करती हैं।—

"अपराध विना हन्तु
लोकान् वीर न कामये।"

हे वीर किसी प्राणी का बिना अपराध मारना ठीक नहीं। राम ने इसका उत्तर भी दे दिया था कि क्षत्रिय का धनुष पीड़ितों की रक्षा के लिए ही उठता है। पितृकुल से श्वसुर कुल में, श्वसुर कुल से वन में आकर सीता रानी ने अपने कर्तव्य-पालन का पर्याप्त प्रयास किया है।

आगे चलकर उनकी शक्ति की कठोर परीक्षा का समय आया जो उनके आत्मबल की कसौटी थी। अब तक वह अपने वीर पति राम की छाया में थी, उसके संरक्षण में अपने धर्म का पालन कर रही थी। परन्तु रावण जब उसका अपहरण करके ले जाता है, वह नितांत अकेली पड़ जाती है। एक आर्य महिला अनार्यों के घेरे में। यहीं उसका सतीत्व चमकता है, कितनी निर्भय कितनी साहसी। यहा जिस प्रकार उसने रावण को भर्त्सना की है उसने उसे भारतीय इतिहास में अद्वितीय बना दिया है। वहां जब रावण उसे कहता है :—

पिब विहर रमस्व भुङ्क्ष्व भोगान्

सीता उत्तर देती है :—

शक्या लोभयितुं नाह-
मैश्वर्येण धनेन वा।
उपनत्या राघवेणाहं
भास्करेण प्रभा यथा॥

अर्थात् हे रावण तू मुझे धन वैभव से नहीं लुभा सकता क्योंकि मेरा और राम का सम्बन्ध वैसे ही एकाकार है जैसे सूर्य का अपनी प्रभा से होता है।

रावण की यन्त्रणामयी कैद से निकलने के लिए भी वह हनुमान् जैसे परपुरुष को भी स्पर्श करने के लिए तैयार नहीं। राम से पृथक् रहकर भी वह उसके गौरव का सदा ध्यान रखती है। भयकर से भयकर कष्ट में पड़कर भी वह उलाहना नहीं देती। उसका पति प्रेम सात्त्विक है जो विश्वास और श्रद्धा की अटूट नींव पर खड़ा है।

रावण के मरने के पश्चात् वह अपने पूज्यपति मर्यादा पुरुषोत्तम राम के पास पहुंचती है। तो वहा उसे राम के कटु वचन सुनने को मिलते हैं। वे कहते है —

हे सीता मैं जानता हू कि तू निर्दोष है निष्कलंक है परन्तु संसार की आंखें प्रमाण मांगती हैं, तुम्हारी शुद्धता का प्रमाण, तुम्हारे सतीत्व का प्रमाण। अहो कितनी कठिन परीक्षा थी। साधारण नारी ऐसे समय क्या करती? विद्रोह करती, पतिता हो जाती या आत्महत्या कर लेती। परन्तु सीता की आत्मा राम से पृथक् न थी, उसे अपने पति पर अटल विश्वास था। वह तुरन्त परीक्षा देने को तैयार हो जाती है। श्रेष्ठ ऋषियो ने आगे बढ़कर उसकी पवित्रता का समर्थन किया और राम ने उसे स्वीकार किया। जनता ने जयजयकार किया। यही थी जानकी की अग्नि-परीक्षा।

राम अयोध्या में लौट आए, राज-पाट संभाल लिया। वनवासिनी जनक नंदिनी सीता राज-राजरानी बन गई। प्रजा को प्रेम का संरक्षण देने लगी।

परन्तु अभी उसका एक परम कर्तव्य शेष था मातृत्व। रघुवंश को एक उत्तम संतान की विभूति से विभूषित करना। मातृत्व ही तो नारी की पूर्णता का रूप है। इसके बिना नारी का पूर्ण विकास असंभव है। राजदुलारी सीता ने अपने पति राम को एक आदर्श राजा बनने के लिए पूर्ण अवसर दिया। उन्हें अपने कर्तव्य पालन की पूर्ण स्वतन्त्रता देकर अपनी गर्भावस्था में ही ऋषि वाल्मीकि के आश्रम में चली गई। आध्यात्मिक और सात्त्विक वातावरण में लव कुश पुत्र रत्नों को

(शेष पृष्ठ ७ पर)

समाचार

दक्षिण भारत में व्यापक शुद्धि समारोह

दक्षिण भारत मे सार्वदेशिक सभा के प्रमुख कार्यकर्ता और प्रचारक श्री एम० नारायण स्वामी ने दिनांक २७ मार्च १९८७ को बड़े समारोह के साथ ग्राम नार्थम पेट्टी. मुथु रामलिंगापुरम पंचायत (तमिल नाडु के ईसाई ग्राम) के अन्तर्गत ४६ परिवारों के २५० सदस्यो को वैदिक धर्म में दीक्षित किया। शुद्धि के बाद उनको जनेऊ दिये गये। इस में पंचायत के प्रधान श्री जगरक्षक ने बड़ी सहायता की। आर्यसमाज मदुराई के तीन सदस्यों ने भी बहुत बड़ा सहयोग दिया।

इसके अतिरिक्त २९ मार्च ८७ को कुड़कराई ग्राम (कन्याकुमारी जिले) में ७ ईसाई परिवारों के १९ सदस्यों को वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। यहां स्थानीय आर्य समाजों के कार्यकर्त्ताओं ने बड़ा सहयोग दिया। इस ग्राम में गत माह भी ५ ईसाई परिवार शुद्ध किए गए थे। सच्चिदानन्द शास्त्री

मंत्री—सार्वदेशिक सभा

आर्यसमाजें ध्यान दें !

आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही एक सजग प्रहरी के रूप मे अपनी भूमिका निभाता चला आ रहा है। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने समय समय पर अपनी बलिदानियां दी हैं और समाज मे फैली बुराइयों तथा कुरीतियो के विरुद्ध आवाज उठाई है और सफलता प्राप्त की है। चाहे वह देश की एकता तथा अखण्डता का प्रश्न हो, दहेज का प्रश्न हो, गो-हत्या तथा मद्य निषेध का प्रश्न हो, किसी पर बिना कारण हो रहे अत्याचार का प्रश्न हो, प्रचार प्रसार का प्रश्न हो, हमने उसके लिए सरकार के कर्णधारों का ध्यान इस ओर दिलाया है। हाल ही मे भारत सरकार ने वर्ष १९८७-८८ के केन्द्रीय बजट मे लोगो को रसोई पर अन्धाधुन्ध टैक्स लगाये हैं जिससे भारत की गरीब जनता पर व्यर्थ का बोझ पड़ा है, जिनसे जनता काफी परेशान है। अत. मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप इस सबंध में नीचे लिखे प्रारूप के अनुसार प्रधान मंत्री, श्री राजीव गांधी वित्त मन्त्री श्री ब्रह्मदत्त एवं मन्त्री मण्डल के सदस्यों को अपनी ओर से तथा अपनी आर्यसमाज की ओर से पत्र भिजवायें कि हमारी रोजमर्रा की वस्तुओं पर से तुरन्त यह अनर्थक बोझ हटा लिये जाये।

प्रारूप

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी व वित्त राज्य मन्त्री श्री ब्रह्मदत्त से

अपील

१ १९८७-८८ के केन्द्रीय बजट मे हल्दी, मिर्च, धनिया एवं मिश्रित बन्द पैकेटों पर लगाई गई १५ प्रतिशत केन्द्रीय शुल्क को तुरन्त हटाया जाए।

२. इस उत्पादन शुल्क से यह मसाले जो कि मध्यवर्ग एवं गरीब जनता उपयोग करती है १६ रुपये किलो तक महगे हो गये हैं।

३. इस उत्पादन शुल्क के लगने से लोग एगमार्क मसालो के खरीदने मे असमर्थ हो जायेगे।

४ खुला गन्दा व मिलावटी माल खरीदने से जनता के स्वास्थ्य पर भारी असर पड़ेगा।

५ यह माल पहले ही दिल्ली के बाहर से आता है, इस पर ४ प्रतिशत केन्द्रीय बिक्री कर लगता है और अब १५ प्रतिशत केन्द्रीय उत्पादन शुल्क लग जाने से सरकार का भाग २६ प्रतिशत हो जाएगा।

६. एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त को जाने वाले इन मसालों पर सरकार का भाग ३० प्रतिशत से भी उपर हो जाएगा।

अत: मैं/हम सरकार से मांग करते हैं कि जनता की रसोई पर लगाए गये इस टैक्स को तुरन्त हटा लिया जाये, ताकि भारत की ८० प्रतिशत गरीब तथा पिछड़े वर्ग की जनता को राहत मिल सके।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप इस कार्य को यथाशीघ्र कराने का कष्ट करेंगे। —डा० धर्मपाल

महामन्त्री

सस्वर वेदपाठ प्रशि. शिविर

इस वर्ष १५ मई से जून मास के अन्त तक १५-१५ दिनों के लिए तीन प्रशिक्षण शिविर इन्दौर में आयोजित किये जायेंगे। जो इस निमित्त प्रशिक्षणार्थ आना चाहें और यज्ञ चिकित्सा विज्ञान सीखना चाहें वे शीघ्र ही वेद सदन, महारानी रोड, इन्दौर-४५२००७ से सम्पर्क करें।

—वीरसेन वेदश्रमी

अध्यक्ष, वेद सदन, इन्दौर

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के शिविर

गत वर्षों की भांति आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से आर्य समाजों, आर्य सस्थाओं में युवकों के चरित्र विकास, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना जागृत करने तथा शस्त्र प्रशिक्षण देने के लिए एक शिविर का आयोजन किया गया है। यह शिविर ग्रीष्म कालीन अवकाश प्रारम्भ होते ही २२ से ३१ मई १९८७ तक चलेगा। शिविर दिल्ली से बाहर किसी स्थान पर लगाया जायेगा, जिसके स्थान की घोषणा यथाशीघ्र की जायेगी।

इस शिविर में केवल १६ से ३५ वर्ष तक के प्रशिक्षणार्थी भाग ले सकेंगे। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को केवल १०/-रुपये शुल्क देना होगा।

अत: समस्त आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं के माननीय प्रधान तथा मन्त्री शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धकों, प्रिंसिपल महोदया/महोदयाओं से प्रार्थना है कि अपनी आर्यसमाज/शिक्षण संस्था की ओर से कम से कम दो युवकों के नाम आयु तथा घर के पते सहित यथाशीघ्र आर्य वीर दल के कार्यालय १५-हनुमान रोड नई दिल्ली—११०००१ के पते पर भिजवाने का कष्ट करें।

विस्तृत कार्यक्रम यथाशीघ्र आपकी सेवा में भेज दिया जायेगा।

हमें पूर्ण आशा है कि आपका सहयोग, सद्भावना तथा आशीर्वाद हमें पूर्व की भांति प्राप्त होता रहेगा।

धन्यवाद सहित,

डा० धर्मपाल
महामंत्री
(दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)

श्याम सुन्दर खिरमानी
महामंत्री
(आर्य वीर दल, दिल्ली)

निर्वाचन परिणाम घोषणा

१५ अक्टूबर १९८४ से प्रभावशील। संशोधित विधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर (कैम्प अलवर) रजिस्टर्ड ४१४।८५ कार्यालय रजिस्ट्रार संस्थाएं राजस्थान सरकार, जयपुर एवं प्रकाशित आर्यमार्तण्ड १ मई १९८५ की पृष्ठ संख्या ३ के प्रदत्त अधिकारों, कर्तव्यों एवं कार्यों को २७ के अनुसरण में प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा के अधिवेशन ११।१।८७ के प्रभाव संख्या ६ के अन्तर्गत प्रधानान सभा के पत्र संख्या १०३८ दिनांक २।३।८७ द्वारा नियुक्त मैं विद्यासागर शास्त्री निर्वाचन अधिकारी अलवर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर के अलवर में १२ अप्रैल, १९८७ (रविवार) को सम्पन्न द्विवार्षिक निर्वाचन का परिणाम दयानन्द भवन वैदिक विद्या मन्दिर अलवर स्थान उक्त विधान की धारा २० के अभिप्रायों के अनुसरण में सार्वजनिक रूप से घोषित करता हूं :—

प्रधान : श्री छोटूसिंह एडवोकेट
उपप्रधान : श्री दत्तात्रेय आर्य
मंत्री ओमप्रकाश झवर
उपमंत्री : शुद्ध बोध गंगानगर
कार्यालय मंत्री : ओमप्रकाश, जयपुर
कोषाध्यक्ष : सत्यनारायण शाह
वेदप्रचाराधिष्ठाता : सत्यव्रत सामवेदी
आर्य वीर दल अधिष्ठाता : सुखदेव गोयल
पुस्तकालयाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र आर्य

आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यसमाज कालका जी के तत्वावधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस एवम् नव सवत्सर का उत्सव बड़े उत्साहपूर्वक दिनांक ५।४।८७ को मनाया गया। इस अवसर पर श्री प्रियव्रत जी शास्त्री, संगीताचार्य ने अपने मधुर सगीत द्वारा आर्यसमाज की भूमिका एवम् महर्षि दयानन्द के कार्यों की प्रशसा की। श्री यशपाल जी सुधांशु, संपादक, आर्यसंदेश ने इस अवसर पर जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज की परिस्थितियों मे आर्यसमाज ही एक ऐसी क्रांतिकारी संस्था है जो राष्ट्र एवम् देश को उन्नति की ओर ले जा सकती है।

भवदीय
विजेन्द्र सिंहल

प्रलोभन से बचो

(पृष्ठ ३ का शेष)

रखी होती है और फूलों में कांटे होते हैं, यह बात हमें याद रखनी चाहिए। भोग अन्त में विष की तरह घातक होते हैं, यह ज्ञान आज से ही हर एक आर्य को ग्रहण कर लेना चाहिए। आराम जरूर प्रिय मालूम होता है परन्तु फल हमेशा परिश्रम करने से ही प्राप्त होता है। संयम के कठोर छिलके के अन्दर ही हमारे लिए अमृतमय फल रखा हुआ है। जो हमारे हितकारी मनुष्य हैं वे आकर्षक नहीं हैं, उनकी नसीहतें हमें कड़वी मालूम होती होंगी। परन्तु हितकर वही हैं। इसके विपरीत ठग लोग बड़े रोचक होते हैं, मधुर वाणी बोलते हैं पर वे हमारा सब धन हर लेते हैं। इस प्रकार कई प्रकार से यह जगत् प्रलोभक है, हमें सन्मार्ग से हटाने के लिए इसमें बहुत से फांस हैं, हमें इसी वेदवाक्य का अवलम्बन कर इस संसार से तरना है। प्रलोभन को छोड़ते हुए कर्त्तव्य पर ही लगन लगाये रखनी है। हमारी बुद्धि ही ऐसी हो जानी चाहिए कि हमें अकर्त्तव्य कभी प्रलोभित न कर सके, बल्कि जितनी प्रीति अविवेकी पुरुष की खिचावट के अन्दर होती है उससे भी अधिक आसक्ति हमारी कर्त्तव्य में धर्म में हो जाय। तब हम इस सौंदर्य को देख सकेंगे कि किस प्रकार हमारा परम कल्याणकारी करुणासागर भगवान् हमें बिल्कुल प्रलोभित न करता हुआ छिपा हुआ बैठा है। मानो वह है ही नहीं, किन्तु यह प्रकृति चमक-दमक हमारी आंखों में इतनी तीव्रता से प्रविष्ट हो रही है कि मानो यही सब कुछ है और कुछ है ही नहीं। इस वेद-वाक्य का अन्तिम अर्थ इस प्रकृति के ढकने को हटाकर अन्दर छिपे हुए सत्य स्वरूप परमात्मा को प्राप्त करने से है। भगवान् ही हमें ऐसा बल दें कि हम इस ढक्कन को हटाकर उसके सत्यस्वरूप को देख सकें। □

जनकनंदिनी जानकी

(पृष्ठ ५ का शेष)

जन्म दिया। राजसी ऐश्वर्य से पृथक् रहकर दोनों बच्चों का लालन-पालन किया। ऋषि मुनियों द्वारा उसने उन्हें सुशिक्षित किया। स्वयम् उन्हें शस्त्रास्त्र विद्या सिखलाई। इस प्रसंग से प्रकट होता है कि सीता जहां एक महान विदुषी थी वहीं शस्त्र विद्या की ज्ञाता वीरांगना भी थी।

आदर्श सन्तान वही होती है जो अपने पिता के अनुरूप हो। वह भी जो पिता अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण आदर्श माना जाता हो। उसकी यह माता सीता के ही सत् प्रयत्नों का फल था कि लव कुश पलते रहे, राम को पता तक नहीं लगा। रणक्षेत्र में सामना होने पर भी वह उनको नहीं पहिचानते और उनसे पराजित हो जाते हैं। यहां सीता ने सिद्ध कर दिया कि नारी क्यों पुरुष से श्रेष्ठ है? वही नर का निर्माण करती है।

वाल्मीकि ऋषि राम का सारा जीवनचरित्र उनके पुत्रों को कण्ठस्थ करवा के राम को सुनवाते हैं। धन्य है उस ऋषि की विद्वत्ता और कला।

रहस्य जानकर राम आश्चर्य और आनन्द से परिप्लावित होकर पुन रानी सीता को ग्रहण करने को तैयार हैं पर कैसे। वह तो उनकी पत्नी ही नहीं, वह तो अब लव कुश की माता है। और इस विशाल धरती की पुत्री है, उसे तो उसी में समा जाना है जहां से वह आई थी। आम लोग इस भ्रम में हैं कि यह मट्टी की धरती फटी तो उसमें से सीता निकली और पुन फटी तो उसमें चली गई। वास्तव में वह इतनी महान् थी कि वह केवल जनक की ही बेटी नहीं समस्त विश्व की बेटी थी।

माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या। अपने उदार चरित्र से एक आर्य नर-नारी भूमि का ही पुत्र या पुत्री होता है। सीता का चरित्र न केवल अपने कुल या देश के लिए वरन् धरती भर के लिए मंगल का संदेश है। पहले भी था और भविष्य में भी रहेगा।

वैदिक राजनीति

लेखक पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार जी, समीक्षा डा० विजय द्विवेदी. प्रकाशक आर्य कुमार सभा(रजि), किंग्जवे, देहली प्रकाशन तिथि रामनवमी १९८६, पृ० सं० ८३, मूल्य तीन रुपये।

पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार वेद और वेद विद्या के अच्छे ज्ञाता हैं। आप इसके पहले भी वेद विषयक बहुत सी पुस्तकें लिख चुके हैं। इसमें "सफल जीवन" और 'सिकंदर और साधु" जैसी कुछ पुस्तिकाओं को "आर्य कुमार सभा", किंग्जवे, दिल्ली ने प्रकाशित तथा प्रचारित करके वैदिक साहित्य में रुचि रखने वालों पर बहुत उपकार किया है। सभा ने अपने 'बहुजनहिताय, बहुजन सुखाय" की भावना के तहत पंडित जी की प्रस्तुत पुस्तक को छापकर आर्य-जन समेत पूरे राष्ट्र का अनन्त हित सम्पन्न किया है। इसका कारण यह है कि आज राजनीति के चलते ही भारत अपनी परम्परा पहिचान एवं शक्ति को खोकर विदेशियों का मानसिक गुलाम बनकर रह गया है। मानसिक दासता भौतिक दासता से अधिक दुखदायी होती है। स्वामी दयानन्द ने विदेशी शासन की तुलना में 'स्वदेशी" राज्य को इसलिए श्रेष्ठ बताया था क्योंकि स्वदेशी शासन व्यवस्था में ही सब तरह की पराधीनता से मुक्ति सम्भव है। स्वाधीनता भारत का यह परम दुर्भाग्य यह है कि इस देश की राजनीति ने देश के निवासियों को प्रशिक्षित-अनुशासित तथा समाजोन्मुख मन और हृदय नहीं दिया। इसने उधार में लाकर हमें दिया— स्वास्थ्य, आत्मकेन्द्रितता और अमानवीय शोषण। आज देश चारों ओर से खोखला हो गया है, टूट रहा है, चारों ओर अशान्ति उपद्रव मचा हुआ है। इनसे बचने के उपाय खोजने राजनेता विदेशों और विदेशियों की ओर भागने का दिखावा कर रहे हैं। मगर वे अपने और अपने देश की ओर देखने में भय अनुभव कर रहे हैं। अन्यथा क्या भारतीय आधुनिक राजनेताओं को पता नहीं है कि आधुनिक भारत की सारी समस्याओं का निदान वैदिक भारत में निहित है। वैदिक समाज हमें बताता है कि आध्यात्मपरक धर्माचरण ही राजनीति है। इसका निकट सम्बन्ध मानवीय मूल्यों के विकास से है।

वैदिक राजनीति का मूलाधार, उपनिषद्, गृह्य सूत्र और स्मृतियां हैं। स्वयं वेदों में न इतिहास है, न राजनीति। इनमें आध्यात्मिक मानव की एकता, अखण्डता और समता की रक्षा तथा निर्वाह के सूत्र हैं। श्री वेदालंकार जी ने वेदों का उक्त, विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए स्वामी दयानन्द के 'राजधर्म' के आधार पर वैदिक राजनीति के समयोचित स्वरूप का सम्यग विवेचन किया है और बताया है कि 'स्वराज्य' लाना ही वैदिक राजनीति का मुख्य और अन्तिम उद्देश्य है।'

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक २४ | रविवार ३ मई, १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ | वैशाख २०४४ | दयानन्दाब्द—१६३

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का अपमान असह्य

"कलियुग और रामायण" फिल्म पर पूर्ण प्रतिबन्ध की मांग

राजधानी में प्रदर्शित फिल्म कलयुग और रामायण में श्री रामचन्द्र, जनक नन्दिनी सीता के चरित्र को बड़े कुत्सित ढग से छायांकित किया गया जिससे सम्पूर्ण हिन्दू समाज में इस फिल्म से भारी रोष व्याप्त हो गया। राजधानी में कुछ स्थानों पर तोड फोड़ और प्रदर्शन भी हुए। जन आक्रोश तथा आर्यसमाज और सनातन धर्म के नेताओं की सामूहिक प्रतिक्रिया से इस फिल्म का नाम परिवर्तन कर अब सिर्फ "कलयुग और ? ? ?" कर दिया तथा इसमें प्रदर्शित पात्रों के नाम भी बदल दिये गये। इस सम्बन्ध में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि इस सम्बन्ध में उनके नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल आज उपराज्यपाल से मिला था। उपराज्यपाल ने उन्हें आश्वासन दिया है कि यह फिल्म उक्त नाम से प्रदर्शित नही होगी।

सनातन धर्म एवम् आर्यसमाजी सगठनों के नेताओं ने कलियुग और रामायण फिल्म के सार्वजनिक प्रदर्शन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाए जाने की मांग की है।

इस अवसर पर उपस्थित बम्बई के आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा कि केवल नाम बदलने से कुछ नहीं होगा। अगर यह फिल्म चलेगी तो हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचेगी। अत: इसका सार्वजनिक प्रदर्शन रोका जाना चाहिए।

सनातन धर्म के नेता श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने कहा कि यह फिल्म युवा पीढी के मस्तिष्क में भारतीय संस्कृति के विपरीत विचार उत्पन्न करेगी। अत: भारतीय संस्कृति के प्रति घृणा के बीज बोएगी। उन्होंने कहा कि फिल्म में हनुमान् को चोर, साला, बेईमान का भाई आदि शब्दो से सम्बोधित किया गया है। अनेक संवाद इतने आपत्तिजनक हैं कि जिसे सुनकर शर्म आती है। उदाहरण के लिए यह रेडीमेड हनुमान् है। मैं गली का हनुमान् लेकर आता हूं आदि। उन्होंने कहा कि फिल्म में अनेक आपत्तिजनक दृश्य भी हैं।

आर्यसमाज व सनातन धर्म के नेताओं ने सेंसर बोर्ड के विरुद्ध भी कार्यवाही किये जाने की मांग की है जिसने इस प्रकार की घोर आपत्तिजनक फिल्म को प्रदर्शन का प्रमाण-पत्र दिया है।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के डा० मदनलाल गोपाल ने यहां एक वक्तव्य जारी करके इस फिल्म पर रोक लगाए जाने की मांग की।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा द्वारा जारी एक प्रेस वक्तव्य में कहा गया है कि दिल्ली की सनातन धर्म सभाओं के प्रतिनिधियों और कार्यकारिणी के सदस्यों की एक संयुक्त बैठक में यह निर्णय लिया गया कि निर्माता निर्देशक मनोजकुमार द्वारा निर्मित फिल्म कलियुग और रामायण धार्मिक जनता की दृष्टि में आपत्तिजनक है, इसलिए मनोजकुमार को लिखा जाए कि वह इस फिल्म को पहले हमें दिखायें। मनोजकुमार ने यह फिल्म लगभग डेढ सौ व्यक्तियों को पैलेस सिनैमा दिल्ली में दिखाई। जिसमें सनातन धर्मियों के अतिरिक्त सभी हिन्दू संस्थाओ के प्रतिनिधि मौजूद थे। फिल्म के नाम पात्रों के नाम के साथ सवादों और गीतों पर भी आपत्ति की गई। जिन्हें बाद में मनोजकुमार ने परिवर्तित कर दिया।

इस सिलसिले में आज हुए प्रदर्शन में तोड-फोड के अपराध में विद्यारत्न सोनी, देवराज भाटिया, बी० एल० वर्मा, मजीत तथा रामलाल (निगम पार्षद) गिरफ्तार किए गए हैं। जिन्हें सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कहने पर रिहा कर दिया गया है। □

पाकिस्तान बनवाने वाले मुहाजिरों की अब अपने 'नये वतन' में दो कौड़ी की कीमत नहीं

नई दिल्ली, २६ अप्रैल, सिंध के मुहाजिरों की दुर्दशा की दास्ताव बडी ही अजीबो गरीब है। चालीस साल पहले ये लोग उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, दिल्ली, मद्रास और हैदराबाद से पाकिस्तान गये और वहां के शासक बन बैठे। उर्दू ने, जिसे मुस्लिम लीग ने बंटवारे से पहले भारतीय मुसलमानों की भाषा घोषित कर दिया था, नवजात प्रांत पर इनके दबदबे को कायम रखने में अहम् भूमिका निभाई। लेकिन जल्दी ही इनका पतन शुरू हुआ। १९४८ में पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना का निधन हो गया और उसके लगभग तीस साल बाद प्रधानमंत्री लियाकत अली खान की हत्या हो गई। उसी दशक में सत्ता का केन्द्र कराची से इस्लामाबाद पहुंच गया और सत्ता भी मुहाजिरों से पजाबियों के हाथ चली गई।

सिन्ध में मुहाजिर स्थानीय लोगों की आंख में कांटे की तरह खटकते थे। ये इन्हें प्रान्त मे अपना दबदबा बनाये रखने के लिए उर्दू के शोषक के रूप में देखते थे। भाषा के नाम पर सिंधियों और मुहाजिरों के बीच दंगे होते रहे। सब से भयकर दगे १९७२ में हुए जब प्रान्तीय सरकार ने उर्दू के साथ सिंधी को भी सरकारी भाषा का दर्जा दे दिया।

इस्लामाबाद से प्रकाशित 'द मुस्लिम' अखबार ने लिखा है कि मुहाजिरों को दो बडे धक्के लगे। पहले १९७० के आम चुनावों में उन

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

गृहस्थों को वेद सन्देश

लेखक—जुगल किशोर चतुर्वेदी

सहृदय साम्मनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः। अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सो जातमिवाघ्न्या ॥१॥

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु सम्मनाः। जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शन्तिवाम् ॥२॥

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा। सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥३॥

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः। तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः ॥४॥

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वियौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः। अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्वः सम्मनसस्कृणोमि ॥५॥

अथर्व० ३।३०।१-५।

उपर्युक्त ५ वेद मन्त्रों के माध्यम से जगन्नियन्ता जगदीश्वर मनुष्य मात्र को उपदेश देते हैं कि वे माता-पिता संतान, स्त्री-पुरुष, मित्र, भृत्य तथा पड़ोसी आदि सब के साथ वैर-विरोध त्याग कर उसी प्रकार प्रेम और आत्मीयता का व्यवहार करें, जिस प्रकार गौ अपने नवजात बछड़े को प्यार करती है।

(वेदों में अतिशय प्रेम प्रदर्शित करने के प्रसंग में गाय के अपने बछड़े के प्रति प्रेम की उपमा देते हुए मनुष्यों को भी परस्पर उसी प्रकार प्रेमपूर्ण व्यवहार करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है, क्योंकि गाय अपने बच्चे की आक्रमणकारियों से रक्षा करने के लिए अपना जीवन तक उत्सर्ग करती हुई देखी गई है। फलतः मानव समुदाय से भी यह अपेक्षा की जाती सर्वथा स्वाभाविक है कि वह अपने सभी सगे सम्बन्धियों, कुटुम्बियों, परिवार जनों तथा मित्रों आदि के प्रति अकृत्रिम तथा निःस्वार्थ भाव से प्रेम का का परिचय दे।)

उक्त वेद मन्त्रों में यह भी प्रतिपादित किया गया है कि पुत्र-पुत्रियाँ अपने माता-पिता का मानसम्मान करते हुए उनकी आज्ञा का यथावत् पालन करें और माता-पिता, पुत्र-पुत्रियों का लाड़-प्यार सहित लालन-पालन करके अपने दायित्व को निभायें। इसी प्रकार स्त्री पति की प्रसन्नता के लिये माधुर्य गुण युक्त वाणी बोले और पति भी शान्त भाव से अपनी पत्नी के साथ मधुर भाषण करे।

इतना ही नहीं वेद मन्त्रों में इस बात पर बल दिया है कि भाई-भाई से द्वेष न करे, बहन-बहन और भाई-बहन आपस में प्रेम पूर्ण व्यवहार रक्खें तथा दूसरे से कल्याणकारी वाणी बोलें।

वेद का उपदेश केवल कुटुम्बी जनों तक सीमित नहीं रहा है अपितु उसके द्वारा यह भी प्रतिपादित किया गया है कि जिस प्रकार विद्वान लोग परस्पर पृथक् भाव वाले नहीं होते और न एक दूसरे के प्रति द्वेष-भाव रखते हैं, उसी प्रकार सभी मनुष्यों को परस्पर प्रेम पूर्ण तथा आह्लादकारी वचन बोलने चाहियें अर्थात् समाज के सभी सदस्यों में वैर-विरोध वैमनस्य युक्त व्यवहार न होकर उनके बीच प्रेम की धारा प्रवाहित होती रहनी चाहिये।

परिवार के समस्त सदस्यों तथा इतरजनों के बीच पारस्परिक व्यवहार कैसा हो, इस पर पूर्वोक्त वेद मन्त्रों द्वारा सम्यक् प्रकाश डाला गया है अर्थात् उनमें यह स्पष्ट किया गया है कि पुत्र-पुत्रियों का माता-पिता के प्रति, माता-पिता का सन्तान के प्रति, भाई का भाई एवं भाई का बहन के प्रति प्रेम और आदर का भाव बना रहना चाहिये। इसी प्रकार पति-पत्नी में परस्पर प्रेम हो। परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति भी इसी प्रकार आदर और सम्मान पूर्वक आचरण करने के उपदेश विवाह संस्कार के अवसर पर दिये जाते हैं (जिसका उल्लेख अगले पृष्ठों में किया जायेगा)। ऐसा करने से ही प्रत्येक गृहस्थ में सुख, शांति और आनन्द की मंदाकिनी प्रवाहित हो सकती है।

वर्तमान काल में समाज के अन्दर अहंभाव, स्वार्थपरता, वैर-विरोध, छीना-झपटी, धोखा-धड़ी तथा राग-द्वेष की जो दूषित भावना फैली हुई है वैदिक आदर्श के अनुसार उसे गर्हित ठहराया गया है तथा समस्त मनुष्यों के लिए एक दूसरे की सहायता करने तथा सहयोग देने का विधान किया गया है। अन्तिम अर्थात् पांचवें मन्त्र में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि—

हे गृहस्थो! तुम उत्तम विद्यादि गुणों से युक्त और पूर्ण विद्वान होकर जीवन व्यतीत करो तथा मिल-जुल कर धन- धान्य राज्य-वैभव और सुख-समृद्धि को प्राप्त हो, पारस्परिक विरोध और वैमनस्य के भाव मत रक्खो। एक दूसरे के प्रति सत्य और मधुर वाणी का प्रयोग करो और समान लाभालाभ की भावना के साथ एक दूसरे के विचार सामंजस्य वाले बनो।

कम से कम हमारे देश में तो सृष्टि के आरम्भ से लेकर द्वापर के अन्त अर्थात् महाभारत काल तक उक्त वेद मन्त्रों का प्रायः अक्षरशः पालन होता रहा, जिससे यहां ज्ञान-विज्ञान की इतनी उन्नति हुई कि मानव धर्मशास्त्र के प्रणेता महर्षि मनु ने संसार के समस्त मानवों का यहां—भारत में आकर ज्ञान अर्जित करने के लिए इन शब्दों में आह्वान किया था—

एतद्देशप्रसूतस्य
सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्
पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

अर्थात् संसार के समस्त मनुष्य भारत देशान्तर्गत ब्रह्मर्षि देश के विद्वान् ब्राह्मणों से अपने-अपने आचरणों की शिक्षा ग्रहण करें।

यही वह युग था, जब यहां कपिल, कणाद, गौतम, याज्ञवल्क्य, गार्गी, मैत्रेयी आदि ऋषि, मुनि शास्त्रकार और स्मृतिकार इस देश के ज्ञान गौरव को दिग्दिगन्त में प्रसारित कर रहे थे।

केवल धार्मिक अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र में ही इस देश ने इतनी उन्नति की हो, सो बात नहीं; यहां के राजन्य वर्ग का भी उस समय पूरे भू मण्डल पर आधिपत्य जमा हुआ था, जैसा निम्नलिखित प्रमाणों से सिद्ध होता है—

अथ किमेतैर्वा परेऽन्ये महाधनुर्धराश्चक्रवर्तिनः केचित् सुद्युम्न भूरिद्युम्नेन्द्रद्युम्नकुवलयाश्व- यौवनाश्वाश्वपति शशबिन्दु-हरिश्चन्द्राऽम्बरीष-ननक्तु - शर्याति - अनरस - अक्षसेन - मरुत्-प्रभृतयो राजानः। (मैत्र्युपनिषद् प्र० १। ख० ४)

अर्थात् सृष्टि के आदि से लेकर महाभारत पर्यन्त भारत देश में सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, कुवलयाश्व, यौवनाश्व, शश, अश्वपति, शशबिन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, ननक्तु, शर्याति अनरस, अक्षसेन, मरुत और भरत सार्वभौम चक्रवर्ती नरेशों का शासन रहा था।

इसी प्रकार उस समय वाणिज्य, व्यवसाय, शिल्प, उद्योग आदि क्षेत्रों में भी यह देश उन्नति की चरम सीमा पर पहुंच चुका था, जिस के फलस्वरूप तत्कालीन संसार के सभी सभ्य देशों का धन यहां निरन्तर रूप से खिचकर आता रहा था। हमारी इस धारणा की साक्षी भारतीय विद्वान ही नहीं, विदेशी लेखक और इतिहासकार भी देते रहे हैं। यथा सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्रीयुत थर्नटन्स ने अपने Description of Ancient India नामक ग्रन्थ में लिखा है—

यूरोपीय सभ्यता के मूल जनक यूनान और इटली जब कि निरी जंगली अवस्था में थे तब भी भारतवर्ष सम्पत्ति और वैभव का केन्द्र था। यहां चारों ओर बड़े-बड़े उद्योग-धन्धे जारी थे। यहां की जनता दिन-रात काम में लगी रहती थी। यहां की भूमि उर्वरा थी जिससे यहां खूब फसल पैदा होती थी। यहां किसानों को अपने परिश्रम का फल बहुत ही अच्छा मिलता था। वे धन-धान्य पूर्ण रहते थे। यहां बड़े-बड़े चतुर कारीगर थे जो यहां के कच्चे माल से नफीस, उमदा पक्का माल तैयार करते थे, जिसको संसार भर में मांग होती थी और कई पाश्चात्य और पौर्वात्य राष्ट्र इसे बड़े चाव से खरीदते थे। यहां सूती वस्त्र इतने

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वैदिक वाङ्मय में वसु

—छैल बिहारी लाल गोयल

वैदिक वाङ्मय के रहस्यों को खोजने के लिए वेद संस्थान में 'वसु' विषय पर वेद गोष्ठी का आयोजन किया गया। अभी तक के महाभारत काल के उपरान्त के भाष्यकारों के भाष्यों को देखने से प्रतीत होता है कि उन्होंने इनके अर्थ करते समय ऋषि देवता, छन्द, स्वर और प्रकरणों का ध्यान नहीं रखा है। इस कारण से वह वेद भाष्यों के सही अर्थ को पकड़ करने से चूक गए प्रतीत होते हैं। वेद भाष्यकारों ने ऋग्वेद के वर्ग प्रकरणों का ध्यान नहीं रखा है जिस से लगता है कि वह मार्ग से भटक गये हैं। सामवेद में भी पूर्वार्चिक के मन्त्रों के क्रम को आगे उत्तरार्चिक में त्रिक या तृच्छ के समूह में विस्तृत होते हुए ध्यान नहीं दे पाए लगते हैं। फिर उन्हीं त्रिकों का और अधिक विस्तार ऋग्वेद के वर्गों के रूप में किया गया लगता है। इसी तरह से यजुर्वेद में भी किन्हीं मन्त्रों का ऋग्वेद में वर्गों के रूप में पूर्ण ज्ञान दिया गया है जैसे यजुर्वेद के ३३वें अध्याय के ५३वें मन्त्र का ऋग्वेद ६।५२।१३ वाले वर्ग के मन्त्रों में विस्तार किया गया है। ५४ वाले मंत्र का ऋग्वेद ४।५४।२ वाले वर्ग में विस्तार किया गया है। ३३।५५ वाले मन्त्र का ६।४६।४ वाले वर्ग में विस्तार किया गया है। ५६ वाले मन्त्र का ऋग्वेद १।२।४ वाले वाले वर्ग के मन्त्रों में विस्तार किया गया है। ५७ वाले मन्त्र का ऋग्वेद १।२।७ वाले वर्ग में विस्तार किया गया है। ३३।५८ वाले मन्त्र का ऋग्वेद १।३।४ वाले वर्ग में विस्तार किया गया है। ५९ वाले मन्त्र का ऋग्वेद ३।३१।६ वाले वर्ग में विस्तार प्रतीत हो रहा है। इस तरह से चारों वेद अपना समाधान आप ही देने में पूर्णतः सक्षम दीख रहे हैं।

"वसु" विषय पर सौभरि ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक के चवालीसवे मन्त्र 'ये विश्वा वयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्।' में अग्नि के द्वारा वसु नामक धनों को प्राप्त करने के सिद्धांतों का दिग्दर्शन कराया प्रतीत होता है। इसका और अधिक विस्तार और प्रकरण सामवेद १५८३-८४ वाले तृक में किया गया है। और अधिक स्पष्ट करने के लिए ऋग्वेद मण्डल ८ के १०३ सूक्त के ६ से १० तक वाले वर्ग मंत्रों में और अधिक स्पष्टीकरण किया गया है। इन सबके ऋषि सौभरि हैं। देवता, अग्नि तथा छन्द बृहती।

सामवेद पूर्वार्चिक के मंत्र ९६ से "त्वमग्ने वसूंरिह" ऋषि प्रस्कण्व, देवता अग्नि तथा छन्द अनुष्टुप् में वसु के ८ (अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, सूर्य, प्रकाश, चन्द्रमा और नक्षत्र) (ध्रुव, सोम, आवा, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास) का ११ रुद्र और आदित्य के समन्वय द्वारा अग्नि के विभिन्न सिद्धांतों का वर्णन किया गया है। इस प्रकरण का कुछ विधान निरुक्त ३।१७ में भी है।

सामवेद ११० वाले मंत्र "मा नो हृणीथा अतिथिं वसुरग्निः" वाले मन्त्र में ऋषि सौभरिः, देवता अग्नि, तथा छन्द ककुप् में भी विभिन्न अग्नियों के द्वारा वसु नामक पदार्थों का धन रूप में प्राप्त करने के सिद्धांत दर्शाए गए हैं। दूसरा विस्तार ऋग्वेद मंडल ८ सूक्त १०३ के ११ से १४ वाले वर्ग में किया गया लगता है।

त्रिशोक ऋषि सामवेद पूर्वार्चिक के मन्त्र २०७ से "यद्वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर।" मन्त्र में देवता, इन्द्र और छन्द गायत्री, इन्द्र (विद्युत) द्वारा भूगर्भ में स्थित वसु नामक नामक सम्पत्ति को प्राप्त करने के विभिन्न सिद्धांत दर्शाए गए हैं। इस का और अधिक विस्तार सामवेद १०७० से ७२ वाले त्रिक में किया गया है तथा ऋग्वेद ८।४५।३६ से ४२ तक वाले वर्ग में इसी विद्या विशेष के विभिन्न सिद्धांतों पर प्रकाश डाला गया है तथा अथर्ववेद २०।४३।१०३ वाले प्रकरण का भी इस से कुछ सम्बन्ध लगता है। तैत्तिरीय आरण्यक १।३।१ द्वारा इस प्रकरण को वेद के अन्य स्थलों से जोड़ा प्रतीत है तथा निरुक्त ४।२ में भी इसके लिए कुछ निर्देश हैं।

भर्गः ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक मन्त्र सं० २४० में जिसका देवता इन्द्र, छद बृहती है, में इन्द्र के मघवन् नामक किस्म के द्वारा वस्तु सम्पत्ति प्राप्त करने के विभिन्न सिद्धांत दर्शाए हैं। जो सामवेद उत्तरार्चिक के मन्त्र सख्या १५८१-८२ के त्रिक या तृच्छ में प्रकाश डाला है इसका और अधिक विस्तार "वसु" नामक विभिन्न स्वर्ण आदि।

सम्पत्ति प्राप्त करने के साधन दर्शाए हैं। इस का और अधिक विस्तार ऋग्वेद ८।६१।६ से १० वाले वर्ग के प्रकरण में विस्तार किया गया है तथा अथर्ववेद २०।११८।१ वाले प्रकरण से भी सम्बन्ध जोड़ता है।

वशिष्ठ ऋषि ने भी इस विषय में सामवेद पूर्वार्चिक २७० नम्बर के मन्त्र जिसका देवता इन्द्र तथा छंद बृहती है में पृथिव्यादि लोकों में बसने वाले वसु नामक धन के साथ विद्युत के विभिन्न सिद्धांतों को दर्शाया गया है। इसका विस्तार सामवेद १७९६ से ९७ वाले त्रिक तथा ऋग्वेद ७।३२।१६ से २० वाले तथा अथर्ववेद २०।८२।२ वाले प्रकरणों से संदर्भित लगते हैं।

नोधा ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक २९६वे के मन्त्र में जिसका कि देवता—इन्द्र, छंद—बृहती। विद्युत विद्या द्वारा वसु नामक धनों को प्राप्त करने के साधन या सिद्धांत दर्शाए हैं तथा सामवेद ३१२ का भी इससे कुछ सम्बन्ध लगता है। इस प्रकरण का सामवेद उत्तरार्चिक ६८५-८६ ऋग्वेद मण्डल ८।८८।१०६ वाले वर्ग यजुर्वेद २६।११ वाला अनुवाक तथा अथर्ववेद २०।९।१ तथा २०।४९ वाले सूक्त से संदर्भित लगते हैं।

वसिष्ठ ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक ३१४, देवता इन्द्र छन्द त्रिष्टुप् में भी विद्युत द्वारा वसु नामक विभिन्न सम्पत्तियों को प्राप्त करने के सिद्धांत दर्शाये हैं जो ऋग्वेद मंडल ७/२४ से ६ वाले वर्ग में विस्तृतीकरण किया गया लगता है।

गोतम ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक ३८९ जिसका देवता इन्द्र छन्द उष्णिक में भी वसु नामक सम्पत्ति को विद्युत धारा प्राप्त करने के प्राप्त करने के सिद्धान्त दर्शाये हैं। इसका संदर्भ सामवेद लगते हैं तथा निरुक्त ४/१७/५/१२ ऐतरेय ब्राह्मण २२।२।६० द्वारा भी निर्देशित हैं। इन्हीं ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक ४१४ उत्तरार्चिक १००२ से ४ ऋग्वेद १।८१।१ से ५ यजुर्वेद ८।३३ तैत्तिरीय संहिता १।४।३७।१ तथा ३८।१ के द्वारा भी एक दूसरे से जोड़ा गया है।

वसुश्रुत ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक ४२५ जिसका देवता अग्नि छद पङ्क्तिः १ में वर्णित तथा आसव पदार्थों से अग्नि के द्वारा वसु नामक सम्पत्ति को प्राप्त करने के साधन दर्शाए गए हैं। यह सामवेद उत्तरार्चिक १७३६ से ३९, ऋग्वेद ५।६।१ से ५ वाले वर्ग, यजुर्वेद १५।४१ वाले अनुवाक द्वारा सदर्भित है तथा इन प्रकरणों को वेद के अन्य स्थलों से जोड़ने के लिए तैत्तिरीय ब्राह्मण ३।११।६-४, तैत्तिरीय सहिता ४।४।४।६ द्वारा निर्देशित हैं।

कृतयशाः ऋषि नें सामवेद पूर्वार्चिक मन्त्र सं० ५८१ जिसके देवता सोम, छंद, ककुप् में वसु नामक सम्पत्तियों को धारण करने वाले विभिन्न रूपों का वर्णन किया है जो ऋग्वेद मण्डल ९। ०८ के ११, १२ मन्त्र सं० द्वारा सिद्धांत दिखाए हैं। इसी तरह से ऋणवः ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक ५८२वें मन्त्र का वसु नामक भांति-भांति के रत्नों को देने वाले पदार्थों के सिद्धांत दर्शाए हैं। यह सामवेद उत्तरार्चिक १०९६ और ९७ द्वारा विस्तृतीकरण किया गया है तथा ऋग्वेद ९।१०८।१३ से १६ वाले वर्ग में और अधिक विस्तृतीकरण है।

□

जप मात्र से असीम लाभ—एक भ्रान्त धारणा

—आचार्य वेदभूषण
अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद

एक बार हम एक नगर में गए थे। उस नगर के जो नगराध्यक्ष था जो नगरपालिका के मेयर थे उन्होंने बड़े आदर व स्नेह से हमें अपने घर पर आमंत्रित किया। इसी अवसर पर उन्होंने अपने घर का एक कमरा हमें दिखलाया। उस कमरे में सुतली (एक प्रकार की डोरी) का ढेर लगा हुआ था। उस सुतली में थोड़े-थोड़े अन्तर से गाठियां लगी हुई थी।

उन्होंने हमें बतलाया कि ये जो सुतली का विशाल ढेर लग गया है यह मेरी माता जी का प्रसाद है। नगराध्यक्ष ने कहा कि मेरी वृद्धा माता अनेक वर्षों से 'राम राम' का नाम जपती हैं। प्रत्येक राम शब्द के जप के बाद वह सुतली में गाँठ लगाती जाती हैं। जिस का परिणाम है सुतली की गांठियों वाले ढेर से यह कमरा भर गया है।

सन् १९८४ में पुरोहितो के प्रशिक्षण एवं प्रचार के लिए मौरिशस आर्य सभा ने एक वर्ष के लिए हमें मौरिशस बुलाया था। वहाँ एक महिला ने हमें बतलाया कि वह प्रतिदिन सौ बार गायत्री मन्त्र का जाप करती है। गायत्री जप का माहात्म्य तो सनातनी और आर्यसमाजियों में समान रूप से स्वीकार किया जाता है। राम नाम की जगह आर्यसमाज में 'ओ३म्' के जाप का महत्त्व दर्शाया जाता है।

इससे अनेक फल प्राप्ति की बाते प्रचलित हैं। क्या जाप सचमुच ही उत्तम फल देने वाला है? महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज के विचारों को ध्यान में रखते हुए हम इस जप विधि पर विचार करेंगे।

जप क्या है? जप या जाप से हमारा अभिप्राय है 'दोहराना' एक ही शब्द को बार-बार कहना! अंग्रेजी में इसका अर्थ होगा रिपीटेशन। जब छोटी श्रेणियों में गणित का अध्ययन आरम्भ किया जाता है तो प्रायः गिनती और पहाड़े बार-बार दोहराए जाते हैं। यह भी एक प्रकार का अकों का जाप ही कहलाएगा। इस जाप का एक फल हम प्रत्यक्ष देखते हैं—वह है उस का स्मरण हो जाना। जिस शब्द को या अंकों को हम बार-बार दोहराते हैं वे शब्द या अक या पहाड़े बार-बार दोहराने से जप करने से हमें स्मरण हो जाते हैं।

इसी जाप के हिसाब के लिए अनेक लोग मनकों की माला भी फेरा करते हैं। पौराणिक भाइयों ने तो राम नाम के बैंक भी खोल दिये हैं। यदि गंभीरता से पूर्ण श्रद्धा के साथ हम विचार करें तो यह शब्द जाप सर्वथा व्यर्थ और निरर्थक ही होता है।

आर्यसमाज में भी अनेक विद्वान् गायत्री जप और ओ३म् शब्द के जप का महत्त्व बखानते हैं। जो इस प्रकार के जप का प्रचार करते हैं उन्होंने वैदिक उपासना पद्धति के महत्त्व को अभी समझा ही नहीं।

चाहे राम शब्द का चाहे ओ३म् शब्द का चाहे गायत्री मन्त्र का हम जाप करें यदि शब्दों को बार-बार दोहराना ही जाप है तो इस जाप का एक ही फल है कि बार-बार के दोहराने से वह शब्द या मन्त्र हमे स्मरण हो जाएगा। इससे अधिक इसका कोई अन्य फल नहीं है।

सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में पौराणिकों की जाप पद्धति का खण्डन करते हुए महर्षि लिखते हैं कि—

प्रश्न—तो कोई तीर्थ, नाम स्मरण सत्य है वा नहीं? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महर्षि पहले 'तीर्थ' के बारे में बतला कर आगे लिखते हैं कि—नाम स्मरण इसको कहते हैं कि—"यस्य नाम महद्यशः." यजुर्वेद का उद्धरण देकर इसका अर्थ इस प्रकार कहते हैं—परमेश्वर का नाम बड़े यश अर्थात् धर्मयुक्त कामों का करना है। जैसे ब्रह्म, परमेश्वर, ईश्वर, न्यायकारी, दयालु, सर्व शक्तिमान् आदि नाम परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के हैं। जैसे ब्रह्म सब से बड़ा, परमेश्वर—ईश्वरों का ईश्वर, ईश्वर—सामर्थ्ययुक्त, न्यायकारी—कभी अन्याय नही करता, दयालु—कृपा दृष्टि रखता है……आदि नामों के अर्थों को अपने भीतर धारण करे।

इस प्रकार परमेश्वर के नामों का अर्थ जानकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल अपने गुण, कर्म, स्वभाव को करते जाना ही परमेश्वर का नाम स्मरण है।

इसी समुल्लास में दूसरी जगह लिखते हैं कि—"यह केवल इनको भ्रम है कि—राम राम कहने से कर्म छूट जाएगे। केवल ये अपना और दूसरों का जन्म खोते हैं।

इसी ग्यारहवें समुल्लास में नाम स्मरण अर्थात् जाप के सन्दर्भ में महर्षि के विचार द्रष्टव्य हैं।

प्रश्न—क्या नाम लेना सर्वथा मिथ्या है? जो सर्वत्र पुराणों में नाम स्मरण का बड़ा माहात्म्य लिखा है।

उत्तर—नाम लेने की तुम्हारी रीति उत्तम नहीं। जिस प्रकार तुम नाम स्मरण करते हो वह रीति झूठी है।

प्रश्न—हमारी कैसी रीति है?

उत्तर—वेद विरुद्ध।

प्रश्न—भला अब आप हमको वेदोक्त नाम स्मरण की रीति बतलाइए।

उत्तर—नाम स्मरण इस प्रकार करना चाहिए। जैसे "न्यायकारी" ईश्वर का एक नाम है। इस नाम से जो इसका अर्थ है कि—जैसे पक्षपात रहित होकर परमात्मा सब का यथावत् न्याय करता है, वैसे उसको ग्रहण कर न्याय युक्त व्यवहार सर्वदा करना, अन्याय कभी न करना इस प्रकार एक नाम से भी मनुष्य का कल्याण हो सकता है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचार उनके द्वारा दिए गए पूना के भाषणों से भी स्पष्ट होते हैं। पूना प्रवचन नामक महर्षि के भाषणों का संग्रह है, उसमें पांचवें प्रवचन में दिए गए विचार इस सम्बन्ध में अच्छा प्रकाश डालते हैं। महर्षि अपने भाषण में कहते हैं—आजकल के पंडित लोग ऐसा कहते हैं कि—"पहले केवल मन्त्रोच्चार के सामर्थ्य से आग्नेयास्त्रादि निर्माण होते थे। परन्तु ऐसा (कहना सत्य) नहीं है। मंत्र अर्थात् विशेष अक्षर आनुपूर्विक अर्थात् शब्दों में और अर्थों में संकेत मात्र सम्बन्ध है और (दूसरा)सामर्थ्य नहीं। जैसे अग्नि शब्द में दाहकत्व नहीं है। मन्त्र जप करने में कोरा समय खोना है। व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत धारण करने के समय लड़के का अल्प सामर्थ्य रहने से एक ही मन्त्र उसे बार-बार रटना पड़ता है। इससे यह मंत्र का एक सच्चा विनियोग नहीं है। मन्त्र का अर्थ है विचार, राजमंत्री कहने से विचार करने वाला यही सत्य अर्थ होगा। यदि यह अर्थ न मानो तो राजमंत्री या अमात्य राजा का माला लेकर जप करने वाला ऐसा अर्थ करना पड़ेगा। तो मंत्री शब्द का अर्थ जप करने वाला नहीं किन्तु विचार करने वाला ही होता है। वेद मंत्र का सच्चा विनियोग करना अर्थात् बुद्धिवैशद्य, बुद्ध्युन्नति, बुद्धिप्रकाश, बुद्धि सामर्थ्य बढाना यह है। इस प्रकार का सामर्थ्य पहले आर्यों में था। वे एक ही मंत्र को लेकर जपते नहीं बैठते थे। परन्तु अनेक मंत्रों की मीमांसा करते थे। इसलिए वारुणास्त्र आग्नेयास्त्र आदि उन्हें विदित थे। अर्थात् पदार्थों के गुणों को जान उनकी विशेष योजना वे करते थे।"

पाठक गण महर्षि के ऊपर उद्धृत किए गए विचारों पर गंभीरता से विचार करें तो ज्ञात होगा कि—ओ३म् शब्द का या गायत्री मंत्र का या अन्य किसी प्रकार के शब्द समूह के या शब्द के जाप का स्मरण के सिवाय अन्य कोई भी लाभ नहीं है।

जो लोग गायत्री मंत्र के जाप करने से बुद्धि आदि का तीव्र होना मानते हैं वे भ्रम में स्वयं तो पड़े ही हुए हैं और औरों को भी इस अन्ध विश्वास में ढकेल कर उनके समय को नष्ट करवाते फिरते हैं।

हमारे उपरोक्त कथन से चौंकिए नहीं! बात को समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

जैसे कोई व्यक्ति वैद्य द्वारा दर्शाई गई औषध का सेवन न कर

जप मात्र से असीम लाभ-एक भ्रान्त धारणा

केवल औषधी के नाम के जाप से रोग का निवारण कभी नहीं कर सकता।

या कोई हलवा बनाने के फार्मूले का प्रतिदिन सौ सौ बार जाप करे तो भी उसे जीवन भर जाप मात्र से हलुए की प्राप्ति नहीं होगी। मंत्र के अर्थ को या किसी भी शब्द को एक ही बार जप कर उसके तात्पर्य को समझ कर तदनुकूल प्रयत्न व आचरण करने से ही फल की प्राप्ति करने की कल्पना अल्प बुद्धि एवं अन्धविश्वासी लोगों के मस्तिष्क की उपज है।

महर्षि पतंजलि ने अपने योग दर्शन में प्रथमपाद समाधिपाद के अट्ठाईसवें सूत्र में कहा है- "तज्जपस्तदर्थभावनम्" अर्थात् उस ओंकार का जप करते हुए उसके अर्थ अर्थात् स्वरूप पर ध्यान देना और उससे भावित होना जाप है न कि केवल शब्द मात्र जपते जाना।

जैसे हम अपनी मा का स्मरण करते हैं तब मां शब्द की प्रधानता नहीं होती अपितु माता के स्वरूप और उसके उपकारों और बातो का ध्यान ही मुख्य रूप से हम करते हैं। मां शब्द से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

अत: नाम स्मरण या गायत्री मन्त्र का जाप आदि का उपदेश करने वाले को और उपदेश सुनने वाले को केवल शब्दोच्चार मात्र से कोई लाभ सम्भव नहीं है। पहले राम राम जपते रहे और अब ओम्-ओम् जप लें तो शब्द समूह के उच्चारण से लाभ होगा सोचना अल्पज्ञता होगी। नाम से मन्त्र से हमें ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है पर जब तक ज्ञान के अनुकूल आचरण नहीं होगा तब तक हम फल से लाभान्वित नहीं हो सकते।

किसी नाम का या शब्द का जाप या स्मरण एक बार करें या सौ बार कर लें इससे विशेष अन्तर नहीं पडता। पर जब कोई कर्म एक बार किया जाए या अनेक बार इससे फल पर न्यून और अधिक का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

हम प्रतिदिन सन्ध्या के जिन मन्त्रों का पाठ करते हैं और उन मन्त्रों के अर्थ पर विचार कर उसे अपने जीवन में क्रियान्वित नहीं करते तो उस सन्ध्या के करने का कोई विशेष लाभ नहीं। हां समय की हानि अवश्य है।

आजकल योग ध्यान आदि के नाम पर जो स्वार्थी लोग धनोपार्जन में संलग्न हैं। अष्टांग योग मे वर्णित जो यम और नियम हैं जब तक हम उन्हें क्रियात्मक रूप से जीवन में ढाल नहीं लेते तब तक योग सिद्धि या प्रभु दर्शन की बात कोरी आत्म प्रवंचना मात्र है।

इसलिए हम जाप करने वाले साधकों से बहुत विनम्रता और अत्यन्त आत्मीयता से कहना चाहेंगे कि स्मरण करने की दृष्टि से वे शब्द या मन्त्र का बार-बार जाप कर सकते हैं किन्तु यदि किसी अन्य लाभप्रद फल की कामना है तो आप उसके अनुरूप स्वय को ढालने का क्रियात्मक यत्न आरम्भ कीजिये तो आप अनुभव करने लग जाएगे कि-आप प्रतिपल प्रतिक्षण जीवन में उन्नति करने लगे हैं आगे बढ रहे हैं।

मान लीजिए कि-मैं नित्य सौ बार 'ओ३म्' नाम का स्मरण करता हूं पर फिर दिन भर परमात्मा को भूल जाता हू। पर जो ओ३म् इस शब्द मात्र का जाप न कर दिन भर प्रत्येक कार्य को प्रभु को उपस्थित जान कर उसे साक्षी रखकर करता है वह निश्चय ही सुफल को प्राप्त करने लग जाता है।

गायत्री मंत्र में 'धीमहि' शब्द का अर्थ ध्यान करें, अवश्य है पर ध्यान से पूर्व स्थिति है धारण करें। बिना धारण किए ध्यान संभव नही है। 'तत् सवितु देवस्य यद् वरेण्यं भर्गः अस्ति तत् धीमहि' अर्थात् उस सविता देव के जो वरण करने योग्य श्रेष्ठ तथा अत्यन्त पवित्र गुण कर्म स्वभाव हैं हम उन्हें निरन्तर धारण करने का प्रयत्न करें। यह प्रयत्न ही गायत्री मन्त्र का वास्तव में जाप है। यदि शब्दों का दोहराना मात्र ही फलदायक होगा तो मनुष्य से भी शीघ्र टेप रेकार्डर और रेडियो सेट मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। क्यों कि उन पर दिन भर यह जाप घुमाया जा सकता है।

सन्ध्या, पूजा, उपासना का मुख्य प्रयोजन शारीरिक मानसिक और आत्मिक पवित्रता और उनकी स्वास्थ्य प्राप्ति ही है। जो इन तीनों का ध्यान नही रखता वह सन्ध्या या उपासना का अभिनय मात्र ही करता है।

आशा है हम आर्य जन स्वयं प्रकाश के सत्य मार्ग पर चलेगे व अन्यों को भी शुद्ध प्रेरणा देंगे न कि अन्ध विश्वासों मे ढकेल कर औरों को भी अन्धकार मे ढकेलेंगे। हमारे इन विचारो को शुद्ध भावना से ही ग्रहण किया जाना चाहिए। क्योंकि हमारा उद्देश्य यथार्थ सत्य को प्रकट कर के वास्तविक उन्नति की ओर साधकों को अग्रसर करना मात्र है।

अन्यथा अध्यात्म मार्ग के पथिक धीरे-धीरे निराशा से घिरकर सत्य मार्ग मे विमुख हो जाएगे। □

हम कितने धर्म निरपेक्ष हैं ?

रगमंच पर राजनीतिक और अश्लीलता आदि को लेकर अकसर विवाद उठते रहे हैं। कई एक बार नाटक को आपत्तिजनक करार देकर पुलिस और प्रशासन ने नाटक की प्रस्तुति पर प्रतिबंध लगाए या रग-कर्मियों की पुलिस ने पिटाई की या पूरे रंगकर्मी दल को गिरफ्तार कर लिया गया। कई एक मर्तबा कुछ नाटक द्विअर्थी संवादों और अश्लीलता की वजह से विवाद और आलोचना के घेरे मे आए। पर कुछ पहले बंबई में अचानक एक नाटक, जो प्रेक्षकों की अच्छी भीड जुटा रहा था। विवाद के घेरे में आ गया। इस नाटक के विवादग्रस्त होने की वजह न राजनीतिक थी और न ही कोई और, बल्कि धार्मिक भावना के मुद्दे पर वह नाटक सुर्खी में आया।

नाटक था-'शेक्सपीयर की राम लीला'। यह नाटक रिजर्व बैंक में काम कर रहे छब्बीस बरस के इकबाल ख्वाजा ने लिखा है। इससे पहले ख्वाजा 'स्नफ' और 'हम सब गेडे हैं' भी खेल चुके हैं। पर उनकी शेक्सपीयर की रामलीला' की प्रस्तुति के बाद यह सवाल उठ खड़ा हुआ कि क्या धार्मिक सहिष्णुता सिर्फ हिंदु के लिए है? यह सवाल तब उठा, जब आर्य प्रतिनिधि सभा के कैप्टन देव रत्न आर्य ने तार के जरिए यह कहा कि इस नाटक ने हिंदुओं की भावनाओं को बुरी तरह ठेस पहुंचाई है। कैप्टन आर्य ने इस नाटक पर तत्काल प्रतिबंध लगाने की भी मांग की और एक शाम संयुक्त हिंदु मोर्चा के बैनर तले २०० व्यक्तियों का एक जलूस पृथ्वी थियेटर पहुंच गया। हुआ यह कि 'इडियन एक्सप्रेस' में उस नाटक का कथा सार छपा था, जिसमें कहा गया था कि रावण और सीता के किरदार रोमियो और जूलियट की तरह खेले गए। ख्वाजा का कहना था कि मैंने लोगों को समझाने की कोशिश की थी कि 'इडियन एक्सप्रेस' में जो कुछ छपा, वह पूरी तरह गलत है, मगर क्रुद्ध और उत्तेजित लोगों से कौन तर्क कर सकता है? पर कैप्टन आर्य का कहना है कि... 'रामलीला' जैसे नाटक नई पीढी के दिमाग को दूषित करने के लिए ही हैं वरना ख्वाजा ने 'शेक्सपीयर का कुरान' क्यों नहीं लिखा और खेला ?

ख्वाजा का कहना है कि नाट्यालेख पूरी तरह हलका-फुलका है और इस उम्मीद से लिखा और खेला गया है कि लोग हंसेंगे। पर हुआ और ही। उत्तेजित भीड़ के नेताओं को ख्वाजा ने नाटक देखने की दावत भी दी। नाटक हो कैसे सकता था। अन ख्वाजा ने अखिल भारतीय हिंदु महासभा के अध्यक्ष विक्रम सावरकर के पैर छूकर उनकी हर मांग मानने का वादा किया और रामलीला की आगामी प्रस्तुतियां रद्द कर दीं।

सांप्रदायिक नजरों से हमारा हिंदी रंगमच कम-अज-कम अब तक बचा हुआ था, लेकिन अब यहा भी सप्रदायवादी हवा के झोंके पहुंचने लगे हैं। हालांकि हिंदी रगमंच पर यह पहली बार था, पर क्या गारंटी है कि यह आखिरी बार है। (इससे पहले बंबई में ही कैथोलिक समुदाय के लोगों ने एक नाटक पर इसलिए आपत्ति उठाई थी, क्योंकि उसमें क्राइस्ट को एक सामान्य व्यक्ति की तरह पेश किया गया है।) इसमें दो राय नहीं है कि रामलीला से हिंदुओं की धार्मिक आस्था जुडी हुई है और ऐसे नाजुक विषय पर हास्य की रचना दुस्साहसपूर्ण काम है। शायद ख्वाजा ने सोचा होगा कि बबई का प्रेक्षक वर्ग इस विषय को उसके वास्तविक अर्थों मे ही देखेगा। पर यह हुआ नही। यह होगा भी नही, क्योंकि आखिर हम धर्म निरपेक्ष हैं...। ख्वाजा ने भी यही कहा है कि अब हम यह नाटक नही खेलेंगे।

—अवधेश व्यास

नभाटा, बम्बई, २२ मार्च, १९८७

समाचार

आर्यसमाज के अधिकारियों की सेवा में नम्र निवेदन

आर्यसमाजो का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९८७ को समाप्त हो गया है। आप आगामी वर्ष के वार्षिक साधारण सभा बैठक विधानानुसार ३१ मई १९८७ तक अवश्य आयोजित कर लें तथा आगामी वर्ष के लिए अधिकारियों तथा यदि आपने गत वर्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियों का निर्वाचन न किया हो तो कर लें। आपकी समाज की ओर से प्रथम दस सभासदो पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदों पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है, जिसकी आयु पच्चीस वर्ष से कम न हो और जो पिछले दो वर्षों से समाज का सभासद रहा हो।

आप ३० अप्रैल १९८७ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय मे भिजवाने की कृपा करें—

१. १ अप्रैल १९८६ से ३१ मार्च १९८७ का वार्षिक विवरण।

(अ) यज्ञ, संस्कार, शुद्धिया, अन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय साधारण रीति एवं बिना दहेज कराये गये विवाहो का तथा समारोहों का विवरण।

(आ) समाज के अधीन चल रही सस्थाओं-विद्यालयों, चिकत्सालय, पुस्तकालय, सेवा समिति, आर्य वीर दल आदि का विवरण।

२ १ अप्रैल १९८६ से ३१ मार्च १९८७ तक का आय-व्यय विवरण।

३. सदस्य सूची -निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वयं बना लें:-

क्रम संख्या (सदस्य का नाम) (पिता का नाम) (पता) (वर्ष भर में प्राप्त सदस्यता शुल्क

४. सदस्यता शुल्क का दशांश, वेदप्रचार न्यूनतम ११/-रुपये और आर्यसन्देश का वार्षिक शुल्क २५/-रु०

निवेदक
महामन्त्री
डा० धर्मपाल

आर्यसमाज पुष्पांजलि विहार नई दिल्ली की अपील

४५० वर्ग गज भूमि पर स्थापित यह आर्य समाज बड़े उत्साह से कार्य कर रहा है। इस समय यज्ञशाला विस्तार तथा सत्संग भवन व पुस्तकालय के लिए चार लाख की आवश्यकता है। इस पुनीत कार्य के लिए सभी दानी महानुभाव अवश्य सहयोग दें।

–डा० धर्मपाल (सभा मन्त्री)

धन भेजने का पता—
मन्त्री
आर्यसमाज समुदाय भवन
पुष्पांजलि एन्क्लेव दिल्ली-३४

शताब्दी समारोह–एक अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का शताब्दी समारोह १५, १६, १७ मई १९८७ को रोहतक में बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की स्थापना १८८६ में अमृतसर में हुई थी। उस समय पजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू कशमीर राज्यों में इसी सभा के माध्यम से आर्यसमाज तथा समाज-सुधार के कार्य और प्रचार होता था। गत १०० वर्षो मे आर्यसमाज ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, शुद्धि आन्दोलन, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन, समालखा तथा कुण्डली मे गोहत्या उन्मूलन आदि आंदोलन चलाए हैं, जिनसे आर्यसमाज का प्रभाव जन जन पर पड़ा है।

पंजाब, हरियाणा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से १५ से १७ मई १९८७ तक रोहतक में स्थापना शताब्दी समारोह धूमसे आयोजित किया गया है। हम सब का पुनीत कर्तव्य बनता है कि हम इस शताब्दी समारोह को सफल बनावें के लिए अपना तन, मन, धन से सहयोग करें। दिल्ली की आर्यसमाजों ने सभा के प्रत्येक आयोजनों में बढ़ चढकर भाग लिया है और संगठन शक्ति का परिचय दिया है।

शताब्दी समारोह के उपलक्ष में १५।५।८७ को दोपहर ३ से ५ बजे तक रोहतक नगर में शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया है। इस शोभायात्रा में भी आप विशेष बसों द्वारा अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर भाग लें।

आपसे मेरी सभा की ओर से सानुरोध प्रार्थना है कि आप इस शताब्दी समारोह को अधिक से संख्या में पहुंचकर सफल बनायें तथा अपनी समाज की ओर से तथा अपनी ओर सहयोग राशि भी अवश्य "आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, दयानन्द मठ, रोहतक (हरियाणा)" के पते पर भेजें और उसकी सूचना सभा कार्यालय को भी देने की कृपा करें।

महामंत्री
(डा० धर्मपाल)

गृहस्थों के वेद सन्देश

(पृष्ठ २ का शेष)

खूबसूरत और मुलायम बनते थे कि उनकी तुलना नहीं हो सकती थी।"

इसके अतिरिक्त सुविख्यात विद्वान डा० ल्लर ने ऋग्वेद के कतिपय मन्त्र उद्धृत करके यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि वैदिक काल में आर्य लोग अन्य राष्ट्रों के साथ अपना व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करके अगणित द्रव्य प्राप्त करते थे। नाव और जहाज बनाने का हुनर भी उस समय मौजूद था। ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ११६ मंत्र ५ में अगाध समुद्र को चीरते १०० पतवारों से सज्जित जहाज का वर्णन है।

उस समय के भारत की इस स्पृहणीय स्थिति का वर्णन राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने 'भारत-भारती' नामक काव्य ग्रन्थ में इस प्रकार किया—

रौंदी हुई है सब हमारी,
भूमि इस ससार की।
फैला दिया व्यापार,
कर दी धूम धर्मप्रचार की।।

यदि हम अपने देश की उस उन्नत अवस्था की तुलना वर्तमान अधोगति से करते हैं, तो उसमें जमीन आसमान का अन्तर पाते हैं तथा इसका कारण वही है, जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं अर्थात् यह कि उस समय हम वेदों के उपदेशों का पालन करते हुए प्रेम-पूर्वक सगठित होकर रहते थे और अब आपस में मनोमालिन्य, वैर-विरोध, ईर्ष्या, द्वेष से अभिभूत होकर माता-पिता तथा पुत्र-पुत्री, भाई-भाई तथा बहन-बहन और पति-पत्नी भी अपनी-अपनी डफली और अपना-अपना राग अलापने में लगकर गोस्वामी तुलसीदास जी की इस सूक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं:—

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना।।

तथा जिस भेदभावपूर्ण दुष्प्रवृत्ति का दुष्परिणाम हम महाभारत के युद्ध में देख चुके थे, जिसका वर्णन श्री मैथिलीशरण गुप्त ने अपने उक्त 'भारत-भारती' नामक ग्रन्थ में इन भेदभावपूर्ण शब्दों में किया है—

हा! बन्धुओं के ही करों से
बन्धु कितने कट मरे।
वह भव्य भारत प्रान्त में
बन ही गया मरघट हरे।।
इस सर्वनाशी युद्ध का
वह दृश्य कैसा घोर था।
उस ओर था यदि पुत्र तो
लड़ता पिता इस ओर था।।
सन्तान ही के रक्त से यह
मातृभूमि सनी यहाँ।
उस स्वर्ग की सी वाटिका
की हाय राख बनी यहाँ।।

तथा यह भी–

आनन्द नद में मग्न थे,
जिस देश के वासी सभी।
सुर भी तरसते थे जहां
पर जन्म लेने को कभी।।
हा! आज उस की यह दशा,
संताप छाया सब कहीं।
सुर क्या, असुर भी अब
यहां का जन्म चाहेंगे नही।।

अस्तु। यदि हमें अपने देश को पूर्व काल की भाँति पुनः सुखी, सम्पन्न तथा धन-धान्य पूर्ण बनाकर "स्वर्गादपि गरीयसी" के पद पर पहुंचाना अभीष्ट है तो हम को अपने आचरण और व्यवहार में पूर्वोक्त वेदोक्त जीवन को अपनाना पड़ेगा। ऐसा हम जितना शीघ्र करेंगे, उतना ही अच्छा होगा। □

पुरोहित चाहिए

"आर्य समाज एच० ई० एम० पिपलानी-भोपाल (म० प्र०) हेतु एक सुयोग्य, विद्वान, कर्मठ कार्य करने वाले पुरोहित की आवश्यकता है, जो समाज, स्कूल एवं आसपास वेदप्रचार एवं संस्कार आदि आदि कार्य कर सके। समाज में आवास, पानी, बिजली आदि सुविधायें निःशुल्क हैं। वेतन (दक्षिणा) योग्यतानुसार होगी। कृपया पूर्ण विवरण एवं अपेक्षित वेतन के साथ आवेदन करें।"

मंत्री
आर्यसमाज बी०एच०ई०एम०
पिपलानी-भोपाल
(म० प्र०) ४६२०२१

सचमुच दयानन्द तुम थे महान्

तुमने ऐसा आन्दोलन चलाया
विदेशियों को भारत से भगाया
शिक्षाक्षेत्र में नया परिवर्तन आया
जिसने अज्ञान तिमिर को मिटाया
देश में राष्ट्रीयता का भाव जगाया
जिसने फूट के गढ़ों को ढहाया
कैसे करें तुम्हारा गुणगान
सचमुच दयानन्द तुम थे महान्।

तुमने धर्म की सही परिभाषा की
दीन दलितों को नई आशा दी
वेदों का सच्चा मार्ग बताया
जिसने आडम्बर पाखण्ड हटाया
धर्म का सच्चा स्वरूप दिखाया
मुक्ति का सच्चा मार्ग दिखाया
कैसे करें तुम्हारे सुकर्मों का बखान
सचमुच दयानन्द तुम थे महान्।

हिन्दी को आर्यभाषा बनाया
उसके प्रचार का बीड़ा उठाया
स्वदेशी भावना घर-घर पहुंचाया
अछूतोद्धार का आन्दोलन चलाया
ऊँच नीच का भेद मिटाया
सबको नैतिकता का पाठ पढ़ाया
कैसे गायें तुम्हारी देशभक्ति का आख्यान
सचमुच दयानन्द तुम थे महान्।

विधवाओं की स्थिति को सुखद बनाया
बाल-विवाह पर रोक लगाया
गोहत्या बन्दी हेतु अभियान चलाया
नशासेवन के दुष्परिणाम बताया
तुमने परहित जीवन दान दिया
पत्थर खा, विष पी काम किया
तुम थे त्याग तपस्या की खान
सचमुच दयानन्द तुम थे महान्।

—डा० शकुनचन्द गुप्त विद्यावाचस्पति

पाकिस्तान बनवाने वाले...

(पृष्ठ १ का शेष)

पार्टियों का सफाया हो गया जो इस्लाम या पाकिस्तान के नाम पर चुनाव मैदान में उतरीं। ये लोग जमात-ए-इस्लामी और जमात उल उलेमा-ए-पाकिस्तान से अपनी पहचान बनाकर पाकिस्तान के आदर्शों के रक्षक के रूप में उभर रहे थे। लेकिन चुनाव परिणामों से इनको गहरा आघात लगा।

पूर्वी बंगाल का १९७१ में अलग होना एक ऐसा आघात था जिससे मुहाजिर यह समझ गये कि पाकिस्तान आदर्शों के बल पर जिन्दा नहीं रह सकता। लेकिन उर्दू के एकाधिपत्य और आदर्शों के बिना मुहाजिर अपने को अलग-थलग महसूस करने लगे।

१९८० में सिंध भारी सख्या में पंजाबी और पठानों के आ जाने से उनकी स्थिति और डावाडोल हुई। लोकतन्त्र बहाली आंदोलन द्वारा शुरू सिविल नाफरमानी आंदोलन में पंजाबियों के शासन के खिलाफ सिंधियों का आक्रोश उभरा, मुहाजिरों के खिलाफ नहीं। इस दौरान मुहाजिर और जीये सिंध के युवक एक साथ हो गये। उसी साल पाकिस्तानी नौ सेना का मुख्यालय कराची से इस्लामाबाद चला गया और बहुत से मुहाजिर बेकार हो गये। उनका पठानों के साथ खूनी संघर्ष हुआ जो कि सिंध के पंजाबियों के साथ यह मांग कर रहे हैं कि मुहाजिर भारत वापस जाएं। □

R N No 32387/77 Post in N D P S.O. on 30, 1-5-87 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
रजि० न० डी० (सी०) ७१६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,
चावड़ी बाजार दिल्ली-६ फोन : २६१८७१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली नं० १७ कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित । रजि० नं० डी० (सी०) ७११

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक २५ रविवार १९ अप्रैल, १९८७ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ वैशाख २०४४ दयानन्दाब्द—१६३

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश में ५० डालर ३० पौंड

सम्पादकीय——

मानवता के चमकते ध्रुवतारक

महात्मा हंसराज

अनादिकाल से सृष्टि का चक्र अविरत गति से चल रहा है। अगणित जन इस धरती धाम पर जन्मे और मृत्यु को प्राप्त हो गए। अनन्त आकाश में उभरते चमकते अनेक सितारे दिखते-दिखते आँखों से ओझल हो जाते हैं किन्तु युग-युगों से ध्रुवतारा अपने स्थान पर गतिमान् है। अन्धियारों में भूले भटके पथिकों का वह सदा दिग्दर्शक रहा है। ऐसा ही मानवता का मूर्तरूप ध्रुवतारक है महात्मा हंसराज। पंजाब की धरती का यह लाल अपने समय में प्रान्त भर में बी० ए० की परीक्षा में द्वितीय आया था। चाहता तो उस समय में अच्छी सरकारी नौकरी प्राप्त कर समृद्धि लक्ष्मी के फूलों से सुवासित पथ पर चल पड़ता। परन्तु उन्होंने स्वीकार किया शिक्षा सरस्वती का मार्ग जो कांटों की चुभन से दहक रहा था। यह सहज ही सीधा सरल मार्ग नहीं था। ऊबड़-खाबड़ कंटीली झाड़ियों, हिंसक जानवरों की भयंकर गर्जना के बीच से गुजरने वाला एक लम्बा मार्ग, जिसकी मंजिल बहुत दूर थी। सचमुच त्याग, तपस्या और बलिदान का मार्ग दुस्तर ही होता है और इसे कोई माई का लाल ही अपनाता है। महर्षि दयानन्द की शिक्षा नीति के प्रसार का महान् संकल्प धारण किया, महात्मा हंसराज ने। डी० ए० वी० स्कूल एवं कालिजों के महान् वटवृक्ष के रोपण का कार्य किया इस महामना ने। देश-देशान्तरों, प्रदेश, प्रान्तों में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल एवं कालेज का फैलाव उस महान् व्यक्तित्व की याद दिलाता है। उन्होंने कहा था, वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के प्रचार का एक मात्र गुर है उच्च बलिदानी, वीर एवं समर्पित त्यागी सेवक। वे इसी एक विचार पर सम्पूर्ण जीवन चलाते रहे। बिना वेतन लिये, भूखे पेट रहकर भारत की गुलाम धरती पर देश के भावी कर्णधार को शिक्षित करते रहे।

महात्मा हंसराज ने यह पग उस समय रखा जब समस्त भारत के जन-जन को अंग्रेजियत और ईसा मसीह की भेड़ों में शामिल करने का षड्यन्त्र लार्ड मैकाले की शिक्षा-नीति के अनुसार चलाया जा रहा था। शिक्षा-नीति एवं पद्धति तब केवल मात्र अंग्रेज शासकों के द्वारा अपनी योजना के अनुसार दी जा रही थी। ऐसे विकराल काल की महान् चुनौती बन कर खड़े हुए महात्मा हंसराज। महर्षि दयानन्द के इस धीर वीर शिष्य में सेवा, दया और त्याग का भी महान् गुण था। अगर मैं यह कहूं कि सेवा और त्याग का वह देवता था तो अतिशयोक्ति न होगी।

महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए जहाँ उन्होंने अपना जीवन दान दिया, साथ ही अकाल पीड़ित जनता के लिए उन का सेवा कार्य एक देवत्वपूर्ण कार्य था। उन्होंने १८९५ से १९२१ तक बीकानेर, राजपूताना, सूरत, मध्यप्रदेश, बड़ौदा, अवध, गढ़वाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, पंजाब आदि के भयंकर अकाल में तथा कांगड़ा के भूकम्प के महाविनाश के समय उनके द्वारा किया गया सेवा कार्य तथा राहत कार्य उस महात्मा के मानवता के चरमोत्कर्ष का परिचायक है। युग-युगों तक मानव मात्र के लिए महात्मा हंसराज का पवित्र जीवन दिशा प्रदान करता रहेगा। सचमुच आज उस महान् नाविक की स्मृति रूपी लहरें रह-रहकर उनके प्रति अगाध श्रद्धा जगा रही हैं—

लहरों से लड़-लड़कर
पतवार हाथ में थामे।
जो वक्ष चीर सागर का,
उस तूफानी बेला में॥

जब झंझा के झोंके थे
उन्माद भरा था सागर।
मुंह फाड़े तकते थे जब,
लहरों के भूखे अजगर॥

जिसके अदम्य साहस ने,
डरकर मुंह जरा न मोड़ा।
जिसने अपनी नौका का,
पल भर भी साथ न छोड़ा॥

उस नाविक को तकती है,
मेरी यह आज निगाहें।
"ओ" अन्त स्थल से बरबस
निकली पड़ती हैं आहें॥

□

— यशपाल सुधांशु

इस अंक में

१ ईश्वर सिद्धि
२ महात्मा हंसराज जी को श्रद्धांजलियां
३ महात्मा हंसराज जी के कार्यों की झलक
४. प्रेरक प्रसंग
५ निष्काम और सकाम कर्म-भेद

तथा अन्य पठनीय सामग्री।

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

ईश्वर-सिद्धि

—पुष्करलाल आर्य

"ओ३म्" यह ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम है, क्योंकि इसमें उसके सब गुणों का समावेश होता है।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रण-
मस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
(यजुर्वेद)
कविर्मनीषी परिभूः
स्वयम्भूर्याथातथ्यतो-
ऽर्थान् व्यदधाच्छा-
श्वतीभ्यः समाभ्यः॥

न तस्य कार्यं करणं च विद्यते
न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते
स्वाभाविकी ज्ञान-बल-क्रिया च॥

(श्वेता० उप०)

(यह वाक्य कहकर स्वामी जी ने उसकी व्याख्या की) मूर्त देवताओं में यह गुण नहीं लगते। इसलिए मूर्ति पूजा निषिद्ध है। इस पर कोई ऐसी शंका करते हैं कि रावणादिकों के समान दुष्टों का पराभव करने के लिए, भक्तों को मुक्ति होने के अर्थ ईश्वर को अवतार लेने चाहिए परंतु ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। इससे अवतार की आवश्यकता दूर होती है, क्योंकि इच्छामात्र से वह रावण जैसों का नाश कर सकता था। इसी प्रकार भक्तों को उपासना करने के लिए ईश्वर का कुछ आकार होना चाहिए, ऐसा भी बहुत से लोग कहते हैं, परन्तु यह कहना भी ठीक नहीं है क्योंकि शरीर स्थित जो जीव है वह भी आकार रहित है, यह सब कोई मानते हैं। जैसा आकार न होने पर भी हम परस्पर एक दूसरे को पहिचानते हैं और प्रत्यक्ष कभी न देखते हुए भी केवल गुणानुवादों ही से सद्भावना और पूज्यबुद्धि मनुष्य के विषय में रखते हैं। उसी प्रकार ईश्वर के सम्बन्ध में नहीं हो सकता, यह कहना ठीक नहीं।

श्री कृष्ण जी एक भद्र पुरुष थे उनका महाभारत में उत्तम वर्णन किया हुआ है, परन्तु भागवत में उन्हें सब प्रकार के दोष लगाकर दुर्गुणों का बाजार गर्म कर रखा है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान है। इस

ओ३म् शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा।
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः॥

—पूना प्रवचन से

———

शक्ति का अर्थ क्या है? कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुम् ऐसी शक्ति से तात्पर्य नहीं है। सर्वशक्तिमान् का अर्थ न्याय न छोड़ते हुए काम करने की शक्ति रखना है, यही सर्वशक्तिमान् से तात्पर्य है। कोई-कोई कहते हैं कि ईश्वर ने अपना बेटा पापमोचनार्थ जगत् में भेजा, कोई कहते हैं कि पैगम्बर को उपदेशार्थ भेजा, तो यह सब कुछ करने की परमेश्वर को आवश्यकता न थी, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है।

एक व्यक्ति को इन्द्रियों द्वारा कितना ज्ञान हो सकता है? अर्थात् बहुत ही थोड़ा हो सकता है। इससे प्रत्यक्ष को एक ओर रखकर शास्त्रीय विषयों में अनुमान प्रमाण ही विशेष गिना गया है। व्यवहार के लिए अनुमान आवश्यक है। प्रमाण के बिना भविष्य के व्यवहारों के विषय में हमारा जो दृढ़निश्चय रहता है, वह निरर्थक होगा। कल सूर्य उदय होगा यह प्रत्यक्ष नहीं तथापि इस विषय में किसी के मन में तिलमात्र भी शंका नहीं होती।

अब किसी को यह अपेक्षा लगे कि ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्ष ही प्रमाण होना चाहिए, तो उसका विचार यूं है कि प्रत्यक्ष रीति से गुण का ज्ञान होता है। गुण का अभिकरण जो गुण पदार्थ है, उसका ज्ञान प्रत्यक्ष रीति से नहीं होता। इसी प्रकार ईश्वर सम्बन्धी गुण का ज्ञान चेतन और अचेतन सृष्टि द्वारा प्रत्यक्ष होता है। इसी पर से ईश्वर सम्बन्धी गुण का अभिकरण जो ईश्वर है उसका ज्ञान होता है ऐसा समझना चाहिए।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे
भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै
देवाय हविषा विधेम॥

हिरण्यगर्भ का अर्थ शालिग्राम की बटिया नहीं है किन्तु हिरण्य अर्थात् ज्योति जिसके उदर में है वह 'ज्योति रूप परमात्मा" ऐसा अर्थ है। मूर्तिपूजा का पागलपन लोगों में फैला हुआ है। यह एक प्रकार की जबरदस्ती है। मूर्ति का आडम्बर जैनियों से हिन्दुओं में आया।

यत्र नान्यत् पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यत् विजानाति। स एव परमात्मा॥

वह अमृत है और वही सब के उपासना करने के योग्य है। इससे जो भिन्न है वह झूठा है। यह अपना आधार (साम्य) नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं कि मूर्त पदार्थों के बिना ध्यान कैसे करते बनेगा? इसके उत्तर में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने पूना-प्रवास के दौरान चौथे प्रवचन में कहा है कि शब्द का आकार नहीं तो भी शब्द ध्यान में आता है या नहीं आकाश का आकार नहीं तो भी आकाश का ज्ञान करने में आता है या नहीं। जीव का आकार नहीं तो भी जीव का ध्यान होता है या नहीं। ज्ञान, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, ये नष्ट होते ही जीव निकल जाता है, यह किसान भी समझता है। ध्यान, यह ऐसा पदार्थ है। योग आदि शास्त्र में ध्यान का लक्षण दिया है।

रागोपहतिर्ध्यानम्।
ध्यानं निर्विषयं मनः।
तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्।

साकार का ध्यान कैसे करोगे? साकार के गुणों का ज्ञानाकार होने तक ध्यान नहीं बनता अर्थात् संभव नहीं होता कि ज्ञान के पहले ध्यान हो जाये। देखो एक सूक्ष्म परमाणु के भी अधम, उत्तम और मध्यम ऐसे अनेक विभाग ज्ञान बल से कल्पना में आते हैं। जब कोई ऐसा कहे कि मुट्ठी में क्या है तो विदित होने पर मुट्ठी की ओर देखने ही से केवल उस पदार्थ का ध्यान कैसे करे तो उससे मेरा यही कहना है कि प्रत्यक्ष के सिवाय उस पदार्थ को जानने के लिए और भी दृढ़तर सबल उपाय हैं। देखो अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव ये आठ उपाय हैं। अनुमान ज्ञान के सम्मुख प्रत्यक्ष की क्या प्रतिष्ठा है यह विचारणीय है। —पूना प्रवचन से

दूरदर्शन पर वयस्क फिल्मों के प्रसारण की घोर निन्दा

तुरन्त प्रतिबन्ध लगाया जाये

सूर्यदेव

आर्यसमाज साकेत के वार्षिकोत्सव पर दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भारत वर्ष के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी सत्यप्रकाश जी, पं शिवकुमार शास्त्री, श्रीमती उषा शास्त्री, पं० यशपाल सुधांशु एवं सभा प्रधान श्रीयुत सूर्यदेव जी आदि महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किये। दिल्ली सभा के प्रधान ने इस अवसर पर एक प्रस्ताव जन समूह के सम्मुख रखा। प्रस्ताव में दूरदर्शन पर अश्लील फिल्मों के प्रसारण पर तुरन्त रोक की मांग की गयी। इस अवसर पर बोलते हुए श्री सूर्यदेव ने कहा—इस समय हमारा देश अनेक समस्याओं से ग्रसित है। विघटनवादी तत्त्वों का यत्र तत्र षड्यन्त्र रोज ही प्रकाश में आ रहा है। देश के युवाओं को राष्ट्रीय चरित्र से अवगत कराना आवश्यक है। आज आवश्यकता है देश का युवक अपने देश की समस्याओं से जूझने के लिए अपने आप को आहुत कर दें। इसलिए आज उसे कर्त्तव्य पुकार सुनानी पड़ेगी। राष्ट्र की भावी पीढ़ी किशोर किशोरियों को अपने महान पुरुषों और बलिदानियों की शौर्य गाथा सुनाने की आज नितान्त आवश्यकता है परन्तु दुर्भाग्य है सरकार उसी पीढ़ी को कामुकता और अश्लीलता से भरे दृश्य दिखा कर रसातल में ले जाना चाहती है। हमारे नेता कहते हैं कार्यालयों में और भी अधिक चुस्ती से काम हो परन्तु जरा सोचिए जो व्यक्ति रात में ११ बजे से २ बजे तक फिल्म देखते हुए जागेगा वह सुबह कार्यालय में कैसे ठीक समय पर पहुंचेगा। और पहुंचकर क्या काम कर पायेगा। वैसे तो मां बाप सो भी जाय बच्चे रात जाग कर उस दूरदर्शन से परोसे जा रहे अश्लीलता के नशे में कहां बच पायगे। उन्होंने सरकार से दूरदर्शन पर वयस्क फिल्मों पर तुरन्त रोक लगाने की पुरजोर मांग की। जन समूह ने हाथ उठा कर इस प्रस्ताव को पारित किया।

आर्यसमाज साकेत का वार्षिकोत्सव का आयोजन ६ अप्रल वेद कथा से प्रारम्भ हो गया था। सप्तदिवसीय प्रवचनों का सिलसिला श्री यशपाल सुधांशु के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सुश्री अचना मोहन के मधुर संगीत से श्रोता झूम उठे।

आर्यसमाज साकेत नई दिल्ली भव्य भवन से सज्जित मन्दिर है। इस का निर्माण ५०० गज भूमि पर १२ अप्रल १९८३ से प्रारम्भ हुआ था। ८४ तक यज्ञशाला का भवन सम्पन्न हो गया था जिसका उद्घाटन स्वामी आनन्द बोध ने किया था। इस समय एक सत्सग कक्ष एवं ध्यान कक्ष निर्मित हो चुके हैं। डिस्पेन्सरी कक्ष निर्माण प्रारम्भ हो चुका है जिसके लिए १ लाख रुपये लण्डन से डा बलदेव सहाय कौशल ने अभी प्रदान किये हैं। अनेक योजनाएं अभी लागू की जाना बाकी हैं इस समाज के प्रधान श्री एन० आर० कटारिया तथा मन्त्री वेद ही कर्मठ सदस्यगण वेद ही सहयोगी हैं। भवन निर्माण के कुशल आर्चिटेक्ट समाज के प्रधान श्री कटारिया के सुपुत्र हैं जिन्होंने अथक परिश्रम से भवन निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। □

श्रद्धा के सुमन

वह चट्टान की तरह सुदृढ थे, ध्रुव तारे की तरह अटल। उनमें एक विशेष शक्ति थी। कदम आहिस्ता आहिस्ता रखते थे लेकिन जहां रखते थे, वहां की धरती को पता लग जाता कि किसी ने कदम रखा है।'

—डा० गोकुल चन्द नारंग

' महात्मा जी त्याग, सेवाभाव, सरलता सादगी, सयम और आत्म बलिदान के आदर्श थे। वह सब सम्प्रदायों की सेवा करते थे। नवयुवकों को चाहिए कि केवल भाषण सुनकर ही न चले जाय, अपितु महात्मा जी के गुण अपने में पैदा कर देश और जाति की सच्ची सेवा करें।

—डाक्टर ल्यूकस वाइस प्रिंसिपल एफ० सी० कालिज

'महात्मा जी का जीवन बलिदान की मुंह बोलती तस्वीर है। वह त्याग के जीवन्त आदर्श थे। उनका त्याग बड़ा था लेकिन उनका तप इससे भी बड़ा था।

—महाशय कृष्ण

' महात्मा जी ने अपने मिशन और उद्देश्य को पूरा करने के लिए हर बात को सहा और अन्तिम श्वास तक अपने प्रण को निभाया।

—सर जोधासिंह प्रिंसिपल खालसा कालेज

"उन्होंने हिन्दू धर्म के मान को कायम रखा। वह सादगी और शान्ति की तस्वीर थे। सारी आयु एक ही उद्देश्य के लिए काम किया। उनकी याद में सीस झुक जाता है।" —रायबहादुर लाला रामशरण

एक मुसलमान के रूप में मैंने महात्मा जी से बहुत कुछ सीखा है। उनकी निर्धनता पर संसार के लाखों पूंजीपतियों की पूंजियां निछावर की जा सकती हैं। उस मुसलमान का जीवन गौरवपूर्ण है, जो महात्मा जी के चरण चिह्नों पर चलकर जाति की सही सेवा करे।"

—मियां अब्दुल हयी शिक्षा मन्त्री पंजाब

' पंजाब में इस समय जो शिक्षा का प्रचार दिखता है, इसमें बहुत भाग महात्मा जी का है उन्हें संस्कृत और हिन्दी से विशेष प्रेम था।"

—श्री अफजल हुसैन वाइस चांसलर पंजाब युनिवर्सिटी

महात्मा हंसराज जी के कार्यों की एक झलक

१८ अप्रल १८६४	जन्म बेजवाड़ा होशियारपुर
नवम्बर १८८२	आर्यसमाज के सदस्य बने
३ नवम्बर १८८५	डी०ए०वी० के लिए जीवनदान की घोषणा
१ जून १८८६	प्रथम डी०ए०वी० स्कूल का सञ्चालन
१८९१	आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान निर्वाचित
१८९३	प्रादेशिक सभा की स्थापना
२ फरवरी १९१२	स्कूल के प्रिंसिपल पद से त्यागपत्र
१८९५ से १९०८	बीकानेर, मध्यप्रदेश राजपूताना, सूबा बड़ौदा अवध गढ़वाल सीमा छत्तीसगढ़ पंजाब में भयंकर अकाल तथा कांगड़ा में भूकम्प द्वारा तबाही। महात्मा जी द्वारा उपरोक्त क्षेत्रों में अथक राहत और सेवा कार्य।
१९२१-२२	मालवा के मोपलों द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार महात्मा जी का साम्प्रदायिकता से संघर्ष।
१९२३	आगरा में शुद्धि सभा की स्थापना।
१९२४	कोहाट में हिन्दुओं की पठानों से रक्षा।
१९३२	जम्मू-कश्मीर में साम्प्रदायिकता से संघर्ष।
२७ मई १९३५	क्वेटा में भूकम्प पीड़ितों की सहायता।
१९३८	हरिद्वार में कुम्भ पर प्रचार। अस्वस्थ।
१५ नवम्बर १९३८	देहावसान

प्रेरक प्रसंग

प्रस्तोता—सत्यानन्द आर्य

: १ :

एक बार गांधी जी एक स्कूल देखने गये। उन दिनों वे लंगोटी पहना करते थे। कधें पर चादर डाल लेते थे। उन्हें इस रूप में देख एक बच्चे ने उनसे कहा, "आप कुर्ता क्यों नहीं पहनते?" मैं अपनी मां से कहकर आपके लिए एक कुर्ता सिलवा दूंगा। आप पहनेंगे न उसे?"

"जरूर पहनूंगा, गांधी जी बोले -- लेकिन एक शर्त है बेटे! मैं अकेला नहीं पहनूंगा।"

"फिर आप को कितने कुर्ते चाहिये?" बच्चा बोला।

"एक-दो नहीं, मेरे चालीस करोड़ भाई बहन हैं। उन सब को कुर्ते चाहिये। क्या तुम्हारी मां इतने कुर्ते सी सकेगी?"

वह बच्चा तो कुछ समझ नहीं पाया। गांधी जी उसकी पीठ पर हाथ फेरकर चले गये।

: २ :

एक बार नेता जी सुभाष चन्द्र बोस एक जगह भाषण दे रहे थे। उनके गले में ढेर सारे हार पड़े थे। आजाद हिन्द फौज के लिए उन हारों की नीलामी की गई। एक हार की नीलामी एक लाख से बढ़कर पांच लाख तक पहुंच गई। अचानक एक उत्साही नवयुवक उठा और उसने अपनी सारी जमीन जायदाद बोली में लगा दी।

नेता जी ने उसे बुलाया और अलग ले जाकर उससे कहा, 'मेरे भाई, तुम ऐसा न करो। अपनी सारी जिन्दगी कैसे गुजारोगे?"

युवक ने जोश में आकर कहा, "साहब अगर आप अपना पूरा जीवन ही राष्ट्र को समर्पित कर सकते हैं तो क्या मुझे जमीन जायदाद तक देश को समर्पित करने का अधिकार नहीं है। देश की आजादी मेरी जमीन जायदाद से कहीं अधिक कीमती है।"

: ३ :

अप्रैल १९२९ में भगतसिंह और उसके साथियों ने असेम्बली में बम फेंके। वे भाग सकते थे, पर भागे नहीं। वे कई को मौत के घाट भी उतार सकते थे, पर ऐसा भी उन्होंने नहीं किया। वे वहां खड़े "इंकलाब जिन्दाबाद" और "अंग्रेजी साम्राज्यवाद का नाश हो।" के नारे लगाते रहे। उन्होंने पुलिस के समक्ष निर्भीकता सहित आत्म समर्पण कर दिया।

मुकद्दमे में भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा दी गई। २३ मार्च १९३१ को अर्धरात्रि लाहौर सेण्ट्रल जेल में जब सुखदेव और राजगुरु के साथ भगत सिंह को फांसी पर ले जाने के लिए पुकारा गया तो भगत सिंह पुस्तक पढ़ने में तल्लीन थे। बधिक से हंसी करते हुए जवांमर्द बोल उठा, "अरे भाई! इस पुस्तक को तो समाप्त कर लूं। तुम तब तक फांसी की रस्सियों को तनिक मजबूत कर लो। कहीं ऐसा न हो कि इस शुभ घड़ी में वे ढीली न पड़ जायें।"

: ४ :

सच्चे शिव की प्राप्ति व मृत्यु पर विजय पाकर मृत्यजय बनने की प्रबल अभिलाषाओं को लेकर स्वामी दयानन्द ग्राम-ग्राम और नगर विचरते हुए उत्तराखण्ड के निकट वन को पार करते हुए बड़ी रात बीते ओखीमठ में पहुंचे। प्रभात होने तक वे सुखपूर्वक वहां सोये। प्रातः उठते ही शरीर के कष्ट क्लेश की परवाह न कर आगे चल पड़े। उनके हृदय में मठ को देखने की उत्सुकता जागृत हो गई। वह वापस मठ में लौट आये। स्वामी जी ने देखा कि मन्दिर में ऐसे पशुओं की भरमार थी जो प्रायः पाखण्ड परायण थे। वे सभी ज्ञान और वैराग्य से शून्य थे। मठ की सम्पत्ति विशाल थी। मठाधीशों का जीवन ठाट-बाट और आडम्बर में बीत रहा था। कुछ दिन वहां ठहरकर स्वामी जी ने उनके जीवन का निरीक्षण और परीक्षण किया। ओखीमठ का प्रमुख महन्त दयानन्द के ब्रह्मचर्य की दीप्ति, ज्ञान और गुणों पर मोहित हो गया। एक दिन उसने दयानन्द से अपना शिष्य बन जाने का अनुरोध किया और प्रलोभन देते हुए कहा "दयानन्द! घुमक्कड़ों की भांति घूमने से क्या मिलेगा? हमारे शिष्य बनकर गद्दी के स्वामी और लाखों रुपये की सम्पत्ति के अधिकारी बनो। तुम महन्त कहलाओगे और तुम्हारी मान-प्रतिष्ठा का भी पार न रहेगा।"

स्वामी जी महाराज कच्चे धागे के बने न थे। वे घर से सब कुछ सोचकर चले थे। अतः उस ऐश्वर्य को ठुकराते हुए दयानन्द ने कहा—"महन्त जी जिस दौलत पर आप को अभिमान है, मेरे पिता की सम्पत्ति आप की पूजापाठ के पाखंड से एकत्र की गई सम्पत्ति से कई गुना अधिक है। जब मैं उसे भी काष्ट-लोष्ठ के समान त्याग आया हूँ, तब आप के धन धान्य की ओर कब ध्यान कर सकता हूं? जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर मैंने सकल सांसारिक सुखों से मुख मोड़ा और ऐश्वर्यपूर्ण पितृ गृह को सदा के लिए छोड़ा है, मैं देखता हूं उस उद्देश्य पर न तुम चलते हो और न उसका तुम लोगों को कुछ ज्ञान ही है। इस अवस्था में शिष्य बनना तो दूर, मेरा तुम्हारे पास रहना भी असम्भव है।" महन्त ने पूछा—"आप का उद्देश्य क्या है? किस वस्तु की जिज्ञासा में मग्न तुम इतने कष्ट क्लेश उठा रहे हो।" स्वामी जी ने उत्तर दिया—"मैं सत्य विद्या और मोक्ष चाहता हूं। स्वामी जी बहुत वार्तालाप में कुछ सार न देख अपनी मंजिल की ओर आगे चल पड़े।

: ५ :

बचपन से ही "नानक" एकान्त प्रिय थे। उन्होंने पिता जी की आज्ञानुसार पढ़ाई तो पूरी कर ली, परन्तु व्यापार आदि कार्यों में बिल्कुल रुचि नहीं थी। मानव सेवा में उन्हें बचपन से ही मजा आता था। पिता ने उसे काम धन्धों में लगाने की बड़ी कोशिश की।

एक दिन पिता जी ने कुछ रुपये देकर नानकदेव जी को बाहर सौदा खरीदने भेजा। मार्ग में एक विद्वान् सन्त मिल गये। वे कई दिनों से भूखे थे। सब रुपये उनको सेवा में लगा दिये। घर आकर कह दिया—"मैंने ऐसा सच्चा सौदा खरीदा है, जो कोई नहीं खरीद सकता।"

: ६ :

रावलपिण्डी में वैदिकनाद गुंजा कर स्वामी दयानन्द जी गुजरात जाते हुए झेलम ठहर गये। एक एक दिन एक व्यक्ति ने निवेदन किया—"महाराज! आज्ञा हो तो एक गाना सुनाऊँ।" महाराज के स्वीकृति देने पर गाना आरम्भ हुआ। श्रोता मस्त हो गये, स्वामीजी भी झूम उठे। सत्संग की समाप्ति पर एक भक्त ने बताया—आज जिस व्यक्ति ने गाना गाया था, वह वहां का तहसीलदार है, गाता अच्छा है, परन्तु चरित्रहीन है। अपनी धर्मपत्नी को त्यागकर वेश्याएँ रखी हुई हैं। शराब पीता है, मांस खाता है, रिश्वत लेता है।

अगले दिन के सत्संग में स्वामी जी की स्वीकृति से उस सज्जन ने फिर एक गाना गया समां बंध गया। श्रोता और स्वामी जी सभी फिर झूम उठे। गाना समाप्त हुआ। ऋषि ने उस व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कहा—'अमीचन्द हो तो हीरा परन्तु कीचड़ में पड़े हो।" स्वामी जी के शब्दों ने विद्युत् की भांति प्रभाव किया। वे वहां से उठकर चल दिये और कह गये अब पाप-पंक से निकलकर ही आपके दर्शन करूंगा। घर जाकर उन्होंने शराब की बोतलों को तोड़ दिया। वेश्याओं को निकाल दिया। मांस न खाने और शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। तार देकर पत्नी को बुलाया। सारे नगर में शोर मच गया कि तहसीलदार बदल गया। वही सज्जन आगे चलकर महता अमीचन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए, जिनके भजन "आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद" आज बड़े प्रेम और श्रद्धा से गाए जाते हैं।

सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव

—यशपाल आर्यबंधु

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अनुपम ज्ञानालोक सत्यार्थप्रकाश कई दृष्टियों से अनुपम है। अपने नाम उद्देश्य तथा उपादेयता की दृष्टि से तो यह अनुपम है ही प्रभाव की दृष्टि से भी यह पूर्णतया अनुपम है। इस ग्रन्थ का चमत्कारी प्रभाव मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर पड़ा है और उसे सर्वत्र सरलता से ढूंढा जा सकता है। पर महर्षि के इस अमर ग्रन्थ के प्रभाव का यथार्थ मूल्यांकन कर पाना सरल नहीं। उगते सूर्य की किरणें किस पर क्या एवं कैसा प्रभाव डालती हैं इसका यथार्थ अनुमान कौन कर सकता है? सूर्य के उदय के साथ जहां से अन्धकार तिरोहित हो जाता है और प्रकाश सर्वत्र व्याप्त हो जाता है। पर सूर्य के उदय के साथ जहां संसार आंखें खोलता है वहां कुछ ऐसे भी तो जीव-जन्तु हैं कि जो उसके प्रकाश को सहन नहीं कर सकते एवम् उन्हें बलात अपनी आंखें मूंद लेनी पड़ती हैं। सूर्य की किरणें जहां असंख्य पेड़ पौधों के लिए जीवन-दायिनी शक्ति लेकर आती हैं वहां दूसरी ओर कतिपय रुण्ड मुण्ड पेड़ों के लिए वह काल बनकर आती हैं। अतः इस से कौन क्या-क्या ग्रहण करता है एवं इस का कैसा-कैसा प्रभाव पड़ता है इसका ठीक-ठीक वर्णन कौन कर सकता है?

जैसे भौतिक सूर्य के प्रभाव का वर्णन करना अति दुष्कर है वैसे ही इस ज्ञान सूर्य के प्रभाव का वर्णन करना भी अत्यन्त दुष्कर है। सत्यार्थ प्रकाश रूपी भानु के उदय होने से प्रकाश प्रिय लोगों के ज्ञान चक्षु खुल गये किन्तु अन्धकार-प्रिय लोगों को अपनी आंखे मूंदनी पड़ी। उन लोगों ने इस ज्ञान-सूर्य को भरपेट कोसना प्रारम्भ कर दिया। कोई-कोई तो इस पर कीचड़ ही उछालने लग गया। किन्तु जैसे सूर्य से आंख मिलाने की सामर्थ्य किसी में नहीं, वैसे ही इस ज्ञान सूर्य के सम्मुख भी किसी की आंख नहीं उठ सकी। सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने के घृणित कार्यों के अतिरिक्त इसके विरोध में कई एक ग्रन्थ लिख डाले गए। पर बादल चाहे कितने ही घने क्यों न हों, एवं कितने ही व्यापक क्षेत्र में सुविस्तृत क्यों न हों, वे सूर्य को सदा सदा के लिए ढांक नहीं सकते। ऐसे ही विरोधियों के यह कार्य सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव को क्षीण नहीं कर सके।

सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव को आंकने के लिए निष्पक्ष किन्तु व्यापक दृष्टि की आवश्यकता है। सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव की समीक्षा की थी आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी पूज्यपाद श्री स्वामी वेदानन्द जी ने। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव नामक एक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना की थी जिसकी भूमिका एक अन्य विद्वान् सन्यासी ने लिखी थी। वे थे पूज्य स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज उस ग्रन्थ की भूमिका में श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज लिखते हैं कि—'सत्यार्थप्रकाश के लिखे जाने के ठीक अस्सी वर्ष पश्चात् महर्षि के अनन्य भक्त महा विद्वान पूज्य पाद श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ ने अपने देहावसान से कुछ दिन ही पूर्व यह सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव नामक प्रबन्ध लिखा था। 'सत्यार्थप्रकाश' का प्रभाव एक प्रतिवेदन है इस बात का कि गत अस्सी वर्ष में स्वामी दयानन्द अनुमोदित ब्रह्मा से लेकर जैमुनि मुनि पर्यन्त (जिन्हें प्रबन्ध लेखक ने विरजानन्द मुनि पर्यन्त लिखा है) महाशय महर्षियों के मन्तव्य कहां तक सर्वत्र भूगोल में प्रवृत्त हो पाये हैं। पाठक पुस्तक पढ़कर स्वयं जान लेंगे कि सत्य किस प्रकार अपने विरोधियों को मूक बना देता है। किस तरह प्रतिद्वन्द्वी अनुकूल होकर सत्पथ पर आना आरम्भ करते हैं किस भांति प्रबल प्रचार होते हुए भी निराधार ईसाई मन्तव्य ऋषि की समीक्षा को ताब न लाकर अपने आस्थावान् अनुयायियों के हृदय में भी आधार शून्य से प्रतीत होने लगते हैं क्यों और क्योंकर इस्लामी सिद्धान्त 'सत्यार्थ प्रकाश' के आलोक मे नये-नये प्रकार से निर्वाचित (निरुक्त) होकर मूल प्रवर्तकानुमोदित अपने रौद्र रूप को छोड़कर विज्ञानानुकूल रूप धारण कर रहे हैं। आर्यसमाज उन सब विधर्मी लेखकों का आभारी है जिन्होंने सत्यार्थप्रकाश में की गई समीक्षा की सुखद छाया में उत्साह पूर्वक अनृत को त्याग कर सत्य को ढूंढने का प्रयत्न किया है और इस प्रकार भिन्न-भिन्न मत-मतांतरों में बंटी हुई मानव जाति के विभिन्न सम्प्रदायों को एक दूसरे के समीप लाने का प्रयास किया है।" (प्रस्तावना सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव)

सत्यार्थप्रकाश में सत्यासत्य के निर्णय हेतु निष्पक्ष भाव से अन्य मतमतान्तरों की जो आलोचना की गई है वह जहां सुधी पाठकों को सत्यासत्य के निर्णय करने में सहायक होती है वहां उन मतमतान्तरों के लिए बड़ी ही लाभदायक भी सिद्ध हुई है। वे लोग सत्यार्थप्रकाश में की गई आलोचनाओं के कारण अपने सिद्धान्तों मन्तव्यों एवं मान्यताओं की नवीन व्याख्यायें करने लगे हैं एवं यथासम्भव उन्हें बुद्धि सम्मत एवं तर्क-सगत बनाने का प्रयत्न करने लगे हैं। किन्तु जैसे स्वर्ण पर मैल चढ़ जाने से उसे भट्टी में तपाकर कुन्दन बनाया जा सकता है किंतु कोयले को कुन्दन बनते आज तक किसी ने नहीं देखा। भले ही अग्नि में पड़ कर थोड़ी देर को उसकी कालिमा जाती रहे किंतु स्वर्ण की सी दीप्ति उसमें कभी भी नहीं आ सकती। ठीक इसी प्रकार असत्य सिद्धान्तों की व्याख्यायें चाहे जितनी बदल-बदल कर क्यों न कि जायें असत्य तो असत्य ही रहता है उसे तो त्यागने में ही भला है। तनिक सोचे तो सही कि लीद पर चांदी का वर्क चढ़ा देने से वह मिठाई थोड़े ही बन जाती है। जो भी हो सत्यार्थप्रकाश का अपना प्रभाव तो कार्य करेगा ही वस्तुत. इसी की सुखद छाया में नवीन तर्क मूलक व्याख्यायें आज सोची जाने लगी हैं। और सत्य तो यह है कि जैसे आकाशवाणी में उद्घोषित स्टैण्डर्ड टाईम से सभी लोग अपनी अपनी घड़ियों की सुइयां मिलाते हैं, और समय सम्बन्धी उनके दोषों को दूर करते हैं ठीक वैसे ही मतवादी लोग भी सत्यार्थप्रकाश में उद्घोषित सत्य सनातन सिद्धान्तों से अपने-अपने सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों का मिलान कर उनके दोषों को दूर करने में लगे हैं। सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है? श्रीयुत चन्द्रप्रकाश जी एम.ए. ठीक ही लिखते हैं कि जिन्हें इतिहास का ज्ञान है वे जानते हैं कि इस शताब्दी में अन्धविश्वास पाखण्ड एवं कुरीतियों का कूड़ा करकट जितना इस एक ग्रन्थ के अध्ययन से दूर हुआ है उतना विश्व के किसी दूसरे ग्रन्थ से नहीं। (हम सत्यार्थ-प्रकाश क्यों पढ़ें? पृष्ठ ७) यदि निष्पक्ष भाव से देखा जाये तो रूढ़ियों अन्धविश्वासों कुरीतियों, कुप्रथाओं आदि से बचाने के लिए यह विश्व-साहित्य की अद्वितीय तथा अनुपम रचना है।

मानवता का पथ-प्रदर्शक महर्षि का यह ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश असंख्य भूले भटके मानवों को सुपथ दर्शा चुका है। और न जाने भविष्य के कितने भूले भटके भाई इसके आलोक में सुपथ पा सकेंगे नास्तिक शिरोमणि गुरुदत्त विद्यार्थी इसी ग्रंथ के स्वाध्याय से प्रबल आस्तिक ही नहीं आस्तिकता के प्रबल प्रचारक बन गये थे। बाबू मुन्शीराम इसी के स्वाध्याय से प्रथम महात्मा मुंशीराम और फिर स्वामी श्रद्धानन्द बन सके। ऋषि के इस ग्रन्थ को पाने के लिए वे कितने आतुर थे यह उनकी आत्म-कथा से ज्ञात हो सकता है। वे इस से कैसे प्रभावित हुए इसका भी सुविस्तृत वृत्तान्त है जो यहां स्थानाभाव के कारण नहीं दिया जा सकता। पर यह सत्य है कि उक्त दोनों महानुभाव सत्यार्थप्रकाश के चमत्कारी प्रभाव से ही प्रभावित हुए थे। सत्यार्थप्रकाश में वर्णित पुनर्जन्म के सिद्धान्त को पढ़ कर ही मुन्शीराम जी ने घोषणा की थी कि आज मैं सच्चे दिल से आर्य-समाज का सभासद बन सकता हूं।

जो मुन्शीराम महर्षि दयानन्द के प्रत्यक्ष साक्षात्कार से भी आर्य सभासद् नहीं बन पाये थे वे उनके बिना पुनः सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से आर्य सभासद बनने की सहर्ष ही घोषणा करते हैं। यह सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव नहीं तो और क्या है?

स्वामी धर्मानन्द नाम के एक वेदान्ती साधु थे। उनकी शिष्य मण्डली ने उन्हें सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति इस आशय से दी कि वे वेदान्त के खण्डन का उत्तर लिख दें। श्री स्वामी जी ने पुस्तक ली और उसे पढ़ने लगे ज्यों-ज्यों पढ़ते जाते वेदान्त का मिथ्यावाद तिरोहित होता जाता था. कई दिन व्यतीत हो जाने पर जब शिष्यों ने उसका उत्तर मांगा तो श्री स्वामीजी ने निम्न पंक्ति लिख कर दे दी। "सारी उम्र

(शेष पृष्ठ ६ पर)

समाचार

हिन्दू राम जन्मभूमि पर कोई समझौता नहीं करेंगे : पंडिता राकेश रानी

अजमेर, ९ अप्रैल। अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष पण्डिता राकेश रानी ने कहा है कि राम जन्मभूमि को लेकर हिन्दू कोई समझौता नहीं करेंगे।

किशनगढ से २५ किलो मीटर दूर रूपनगढ मे रामनवमी के अवसर पर आयोजित हिन्दू सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए उन्होंने सरकार से अपील की कि वह राष्ट्र-विरोधी ताकतों का दृढ़ता के साथ मुकाबला करे तथा एक और पाकिस्तान बनने से रोके।

उन्होंने कहा कि उन पर सरकार ने ४१ अपराधिक मुकद्दमे इसलिए चला रखे हैं, क्योंकि वे हिन्दुत्व की रक्षा और देश के प्रति निष्ठा की बात कहती हैं, जबकि बोट क्लब पर राष्ट्र विरोधी-धमकी भरे भाषण देने वाले लोगों के खिलाफ कोई कार्रवाही नहीं की जाती। 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' का नारा लगाने वालों को भारत से निकाला जाना चाहिए।

उन्होंने हिंदुओं से अपील की कि वे वर्तमान सकट में सभी भेद-भाव भूलकर संगठित हों और अपने आपको एक राजनीतिक शक्ति का रूप दें। तभी उनकी बात सुनी जाएगी।

सम्मेलन में बोलते हुए दयानद सस्थान के मंत्री प्रो० धर्मवीर ने कहा कि हिंदुओं के धर्म परिवर्तन के लिए हम भी जिम्मेदार हैं, क्योंकि हम अपने ही समाज के लोगो मे फर्क करते हैं। उन्हें जोडते नही, तोडते है।

—सत्यपाल शास्त्री

वयस्क फिल्मों का प्रसारण बन्द करो

आर्यसमाज नारायणा विहार के मंत्री श्री दर्शनलाल कत्याल ने २१।३।८७ को प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी तथा सभी संसद सदस्यों को एक पत्र भेजकर मांग की है कि पिछले कुछ समय से दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के समय मे निरतर वृद्धि हो रही है। अब यह कार्यक्रम प्रातः ७-३० बजे से आरम्भ होकर रात को ११-३० बजे तक चलते हैं। अभी हाल मे हुई एक सरकारी घोषणा के अनुसार अब रात को १२ बजे के बाद केवल "वयस्कों के लिए दिखाने योग्य चलचित्र" भी दूरदर्शन पर दिखाए जायेंगे।

रात को ९-३० बजे के बाद प्रसारित होने वाले कुछ सीरियल जैसे 'कर्मचन्द' और अब 'खोज' विद्यार्थी और युवावर्ग के दृष्टिकोण से काफी मनोरंजक होते हैं और विद्यार्थी अपना अध्ययन छोडकर ये कार्यक्रम देखते हैं। रात को देर तक जागते रहने के कारण वे प्रातः भी देर से उठते हैं और अपनी पढ़ाई की हानि करते हैं। कुछ कार्यक्रमों से जैसे 'सुबह' का विद्यार्थियों तथा युवावर्ग के चरित्र पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। ये कहने की आवश्यकता नही कि विद्यार्थी और युवा वर्ग वयस्कों को दिखाये जाने वाले चलचित्रों को भी अवश्य देखेंगे। इन सबका उनके अध्ययन और चरित्र पर अवश्य ही बुरा प्रभाव पडेगा।

आर्यसमाज के सभी सदस्यों ने भारत सरकार से माँग की है कि ऐसे मनोरंजक कार्यक्रम जिनको विद्यार्थी अथवा युवावर्ग देखना चाहेंगे रात को ९-३० बजे के बाद न दिखाए जायें। रात को व्यस्त चलचित्र दिखाने का विचार बिल्कुल छोड दिया जाए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से भी अनुरोध किया है कि वे भी ऐसे प्रस्ताव पास करके प्रधान मन्त्री तथा अन्य मन्त्रियों तथा सांसदों को भेजें।

डा० धर्मपाल
(महामंत्री)

पाक एजेण्टों को गिरफ्तार करो

नई दिल्ली आर्यसमाज श्री निवास पुरी में राम जन्मोत्सव कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के विलक्षण व्यक्तित्व व कृतित्व पर सर्वश्री वेद कौशिक हंसराज को कविताएँ व नरेन्द्र अवस्थी पत्रकार, हरिश्चन्द्र, प्रभुदयाल आदि के प्रवचन हुए। एक प्रस्ताव में गत दिवस बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी द्वारा आयोजित रैली में दिए गए इमाम बुखारी सैयद शहाबुद्दीन के हिंसा भड़काने, साम्प्रदायिक तनाव पैदा करने वाले देशद्रोहिता पूर्ण भाषणों की निन्दा करते हुए इन्हें पाक एजेन्ट समझ कर तत्काल गिरफ्तार किया जाए। एक अन्य प्रस्ताव में हिन्दू मन्दिरों की स्थिति मुस्लिम आक्रमणकारियों के पूर्व की स्थापित करने की मांग की गई। अयोध्या की राम जन्मभूमि तत्काल हिन्दुओं को सौंपी जाय।

—प्रभुदयाल

सत्यार्थप्रकाश

(पृष्ठ ५ का शेष)

बीत गई सानू सज्जनां दी याद न आई।" अर्थात् हमारी सारी आयु व्यतीत हो गई दुःख है कि हमें स्वामी दयानन्द जैसे सज्जन की याद न आई। शिष्य मण्डली हैरान थी और इसका तात्पर्य पूछने लगी। इस पर श्री स्वामी जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने शाश्वत सत्य का प्रतिपादन किया है। ससार में ऐसा कौन है कि जो उसका खण्डन कर सके। यह है सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव।

श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज भी वेदान्ती साधु हो थे। एक आर्यसमाजी भक्त द्वारा उनके रुग्ण होने पर सेवा सुश्रूषा करने पर वे उस पर बड़े प्रसन्न हुए। चलते समय उस व्यक्ति ने एक पुस्तक सुन्दर से वस्त्र में लपेट कर श्री स्वामी जी को भेंट की और निवेदन किया कि यदि वे उस पर उसकी सेवा से प्रसन्न हैं तो इस पुस्तक का स्वाध्याय अवश्य करें। श्री स्वामी जी ने पुस्तक पढ़ने का वचन दे दिया और पुस्तक रख ली। मार्ग में उस पुस्तक को देखने का विचार आया कि देखे तो सही कि यह पुस्तक कौन सी है। यह सोचकर उन्होंने उस पुस्तक को निकाला और जब उस पर सत्यार्थप्रकाश छपा हुआ पढा तो कुछ सकपका से गये। वेदान्ती वेदान्ती होने के कारण वे सदैव इस पुस्तक को घृणा की दृष्टि से देखते रहे थे किन्तु अब प्रतिज्ञा वश उन्होंने उसे पढ़ना प्रारम्भ कर दिया और समाप्त होने पर काया ही पलट गई। वेदान्त का वह झूठा गर्व गल कर बह गया। और वे एक निष्ठावान् आर्य संन्यासी बन गये। (दिव्य महापुरुषों के जीवन तथा कार्य पृष्ठ ११६) यही नहीं ऐसे अगणित व्यक्ति हैं कि जिन के जीवन की काया पलट सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय से हुई है।

सत्यार्थप्रकाश का एक प्रभाव यह हुआ कि इससे स्वतन्त्र चिन्तन का श्री गणेश हुआ। इस ग्रन्थ ने लोगों को स्वतन्त्र चिन्तन को राह दिखाई और स्वतन्त्र चिन्तन ने धर्म में बुद्धिवाद को प्रवेश दिया। स्वतन्त्र चिन्तन के कारण ही हिन्दू जाति रुढिवादिता की लौ को तोडने में सफल हो सकी। सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानन्द ने बुद्धिवाद की अद्भुत मशाल जलाई थी जिसके सम्बन्ध में कविवर दिनकर को भी यह तथ्य स्वीकारना पड़ा कि दयानन्द ने जो बुद्धिवाद की मशाल जलाई थी उसका कोई जवाब नहीं था। सत्य तो यह है कि आज जो अविश्वसनीय तथ्यों एवं घटनाओं चरित्रों एवं भावनाओं को विश्वसनीय या बुद्धिसगत धरातल पर उतारने के प्रयत्न हो रहे हैं, वे सत्यार्थप्रकाश प्रदत्त स्वतंत्र चिन्तन की भावनाओं का सुफल है। इसी ग्रन्थ की रचना के बाद ही रामकृष्ण आदि अवतारों का मानवीकरण तथा उनसे सम्बद्ध प्रायः सभी अलौकिक लीलाओं को बुद्धिवादी धरातल पर लाने के प्रयास सम्भव हो सके हैं। यह सब सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव है। यह उस महान ऋषि की साधना है। और उसकी साधना का ही यह सुफल है कि आज विश्व उस की ओर खिचा चला आ रहा है। सत्य है—

ऋषिराज तेज तेरा
चहुं ओर छा रहा है।
तेरे बताये पथ पर
ससार आ रहा है॥

निष्काम और सकाम कर्म-भेद

—ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका से

जब मोक्ष अर्थात् सब दुःखों से छूट के केवल परमेश्वर की ही प्राप्ति के लिए धर्म से युक्त सब कर्मों का यथावत् करना, यही निष्काम मार्ग कहाता है, क्योंकि इसमें संसार के भोगों की कामना नहीं की जाती। इसी कारण से इसका फल अक्षय है। और जिसमें संसार के भोगों की इच्छा से धर्म-युक्त काम किये जाते हैं, उनको सकाम कर्म कहते हैं। इस हेतु से इसका फल नाशवान् होता है क्योंकि सब कर्म करके इन्द्रिय भोगों को प्राप्त होके जन्म मरण से नहीं छूट सकता।

अग्निहोत्र से लेके अश्वमेध पर्यन्त जो कर्मकाण्ड है, उनमें चार प्रकार के द्रव्यों का होम करना होता है—एक सुगन्धगुणयुक्त, जो कस्तूरी केशरादि हैं, दूसरा मिष्टगुणयुक्त, जो कि गुड़ और शहत आदि कहाते हैं, तीसरा पुष्टिकारकगुणयुक्त, जो घृत, दुग्ध और अन्न है, और चौथा रोगनाशकगुणयुक्त जो कि सोमलतादि औषधि आदि हैं। इन चारों का परस्पर शोधन, संस्कार और यथायोग्य मिला के अग्नि में युक्तिपूर्वक जो होम किया जाता है, वह वायु और वृष्टिजल की शुद्धि करने वाला होता है। इस से सब जगत् को सुख होता है। और जिसको भोजन, छादन, विमानादि यान; कलाकुशलता, यन्त्र और सामाजिक नियम होने के लिए करते हैं, वह अधिकांश से कर्ता को ही सुख देने वाला होता है—

इसमें पूर्वमीमांसा धर्मशास्त्र की भी सम्मति है। एक तो द्रव्य, दूसरा संस्कार और तीसरा उनका यथावत् उपयोग करना, ये तीनों बात यज्ञ के कर्ता को अवश्य करनी चाहिए। सो पूर्वोक्त सुगन्धादियुक्त चार प्रकार के द्रव्यों का अच्छी प्रकार संस्कार करके अग्नि में होम करने से जगत् का अत्यन्त उपकार होता है। जैसे दाल और शाक आदि में सुगन्ध द्रव्य और घी इन दोनों को चमचे में अग्नि पर तपा के उनमें छोंक देने से वह सुगन्धित हो जाता है, क्योंकि उन सुगन्ध द्रव्य और घी के अणु उनको सुगन्धित करके दाल आदि पदार्थों को पुष्टि और रुचि बढ़ाने वाले कर देते हैं, वैसे ही यज्ञ से जो भाफ उठता है, वह भी वायु और वृष्टि के जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत् को सुख करता है, इससे वह यज्ञ परोपकार के लिए ही होता है।

इसमें ऐतरेय ब्राह्मण का प्रमाण है कि अर्थात् जनता नाम जो मनुष्यों का समूह है, उसी के सुख के लिए यज्ञ होता है, और संस्कार किये द्रव्यों का होम करने वाला जो विद्वान् मनुष्य है, वह भी आनन्द को प्राप्त होता है, क्योंकि जो मनुष्य जगत् का जितना उपकार करेगा उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा। इसलिए यज्ञ का अर्थवाद यह है कि अनर्थ दोषों को हटा के जगत् में आनन्द को बढ़ाता है। परन्तु होम के द्रव्यों का उत्तम संस्कार और होम के करने वाले मनुष्यों को होम करने की श्रेष्ठ विद्या अवश्य होनी चाहिए। सो इसी प्रकार के यज्ञ करने से सब को उत्तम फल प्राप्त होता है, विशेष करके यज्ञकर्ता को अन्यथा नहीं।

—पुष्करलाल आर्य

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक २६ रविवार २६ अप्रैल, १९८७ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ वैशाख २०४४ दयानन्दाब्द—१६२
मूल्य : एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

संस्कृत रक्षा महाभियान

१० मई को सम्पूर्ण भारत में संस्कृत रक्षा दिवस के रूप में मनायें

संस्कृत और संस्कृति की रक्षा के लिए आगे आओ

—स्वामी आनन्द बोध—

भारत सरकार की नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा की नितान्त उपेक्षा की गई है। इस नीति से हमारी संस्कृति, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक मूल्यों पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। सार्वदेशिक सभा ने संस्कृत के चुने हुए विद्वानों की एक गोष्ठी गत ५ अप्रैल, १९८७ को आर्यसमाज दिल्ली में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री की अध्यक्षता में आयोजित की थी। इस बैठक में अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति का गठन स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता में किया गया। स्वामी जी ने आगामी १० मई, १९८७ को अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत रक्षा दिवस का आह्वान किया और कहा इस अवसर पर प्रस्ताव के अनुसार पत्र लिखकर भेजें। सभा में यह भी कहा गया कि संस्कृत के समर्थन में अधिक से अधिक लोगों के हस्ताक्षर कराकर सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में भिजवाने हैं, ताकि यहां से उन्हें भारत सरकार के सामने प्रस्तुत किया जा सके।

स्वामी आनन्द बोध ने सार्वजनिक अपील की है कि देव वाणी की रक्षा के लिए आप अपने समस्त स्कूल, विद्यालय, गुरुकुल व अन्य शिक्षण संस्थाओं को इस कार्यक्रम पर पूर्ण रूप से अमल करने की प्रेरणा करें।

नई शिक्षा-पद्धति में संस्कृत : एक प्रस्ताव

—आचार्य कृष्णलाल

भारत सरकार की नई शिक्षा-पद्धति में माध्यमिक स्तर पर जो त्रिभाषा सूत्र स्वीकार किया गया है, उसमें केवल आधुनिक भारतीय भाषाओं का उल्लेख है। यहां आधुनिक शब्द क्यों जोड़ा गया है, यह विचारणीय है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में पन्द्रह भारतीय भाषाओं में संस्कृत का समावेश है। परन्तु वहां पर प्राचीन या आधुनिक भारतीय भाषा जैसा कोई भेदमूलक वर्गीकरण नहीं किया गया है। इस प्रकार "आधुनिक" विशेषण लगाकर और संस्कृत को आधुनिक न मानकर इस त्रिभाषा सूत्र में केवल उसे बहिष्कृत किया गया है। इस सम्बन्ध में हमारी मांग है कि नई शिक्षा पद्धति में भाषा के साथ जो "आधुनिक" विशेषण जोड़ा गया है, उसे हटाकर केवल "भारतीय भाषाएं" पाठ होना चाहिये जिससे भारतीय भाषाओं को एकता के सूत्र में जोड़ने वाली संस्कृत भाषा अध्ययन यदि कोई करना चाहे तो उसे ऐसा करने की छूट हो।

इस नई शिक्षा पद्धति में आगे चलकर उच्च शिक्षा के लिए संस्कृत के ज्ञान का महत्त्व स्वीकार किया गया है और उसके लिए व्यवस्था भी विद्यमान है किंतु क्या यह हास्यास्पद जैसा नहीं लगता कि जिस छात्र को निम्न स्तर पर संस्कृत पढ़ने का अवसर ही नहीं मिला वह उच्च शिक्षा में संस्कृत शोध का कार्य करे ?

अतः हमारा भारत सरकार से अनुरोध है कि संस्कृत के पठन-पाठन की व्यवस्था माध्यमिक स्तर पर

(शेष पृष्ठ ४ पर)

संस्कृत सभी भाषाओं की जननी

संविधान की धारा ३४३ के अनुसार राष्ट्रभाषा के नाम से प्रसिद्ध देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया गया है। उच्च स्तर के चिन्तन, शिक्षण अनुसंधान एवं प्रशासन, न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका आदि से सम्बन्धित समस्त कार्यों के लिए संस्कृत निष्ठ हिन्दी ही उपयोगी हो सकती है। इसलिए सविधान की धारा ३५१ में हिन्दी को समृद्ध और सक्षम बनाने के लिए मुख्य रूप से संस्कृत से शब्दावली को लेने पर बल दिया गया है।

यह भी निर्विवाद है कि आज भी देश की सभी भाषाओं में ओत-प्रोत संस्कृत की शब्दावली और उसमें उपलब्ध साहित्य और कर्मकाण्ड ने ही समूचे देश को एकता के रूप में बांधा हुआ है। वस्तुत. इस देश का इतिहास और धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं संक्षेप में इस देश की अस्मिता संस्कृत के बिना सुरक्षित नही रह सकती।

इसलिए आपसे निवेदन है कि आप निम्नलिखित प्रस्ताव पारित करे—

प्रस्ताव का प्रारूप

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत निर्धारित पाठ्यक्रम में किसी न किसी स्तर पर प्रत्येक भारतीय के लिए अनिवार्य रूप से सस्कृत के पठन पाठन की व्यवस्था की जाए। एतदर्थ आवश्यक है कि त्रिभाषा सूत्र में मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा के साथ तीसरी भाषा के रूप मे सस्कृत को अनिवार्य बनाया जाए। यह भी निश्चित है कि जब तक अंग्रेजी की अनिवार्यता रहेगी, तब तक सस्कृत को उसका समुचित स्थान दिया जाना संभव न होगा।

इसलिए हमारी माग है कि पाठ्यक्रम मे त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत अंग्रेजी के अध्ययन को व्यवस्था विश्वविद्यालयो मे ऐच्छिक विषय के रूप में की जाए।

भवदीय
ब्रह्ममित्र अवस्थी सयोजक

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

परमात्मा परम न्यायकारी है

प्रस्तोता—राजेन्द्र पाल गुप्त

जप, तप, यज्ञ, त्याग, तीर्थधाम आदि कितना भी कुछ किया जाये परन्तु मनुष्य द्वारा किया गया अपराध और पाप कभी निष्फल नहीं जाएगा। पाप का फल तो अवश्य मिलेगा। अन्य मत मतान्तरों ने परमात्मा और मनुष्य के बीच अवतार, रसूल या पीर आदि की कल्पना कर भक्त और भगवान् की दूरी बढाई है। भगवान् और भक्त के बीच किसी एजेण्ट प्रतिनिधि की आवश्यकता नहीं है। नहीं परमात्मा के न्याय में किसी प्रतिनिधि से सिफारिश कर देने पर दण्ड से मुक्ति ही हो सकती है। परमात्मा किसी पीर, पैगम्बर की सिफारिश से किसी के साथ पक्षपात नहीं कर सकता। पीर पैगम्बर की कल्पना से संसार सच्चे धर्म से सच्ची भक्ति से दूर हुआ है। अन्य मतमतान्तरों एवं सम्प्रदायों ने परमात्मा की न्याय-व्यवस्था को मजाक बना दिया है। जिसको अमुक पीर पैगम्बर खुदा का तथाकथित बेटा सिफारिश कर देगा वह अपने जघन्य अपराधों के फल से भी बच जायेगा। बाकी जो निरपराधी भी हैं और पैगम्बर को नहीं मानेंगे वे नरक के अधिकारी होंगे। यह विचार व्यक्ति को ईश्वर की न्याय-प्रणाली को नकारा साबित कर देते हैं। इस से पापी पाप करने की छूट पाता है। ऐसी न्याय-व्यवस्था को तो हम अपने समाज और राष्ट्र में सहन नहीं कर पायेंगे। अतः श्रीकृष्ण का घोष अत्यन्त कल्याणप्रद है-अवश्यमेव भोक्तव्य कृतं कर्म शुभाशुभम्।

अपने द्वारा किये गए शुभ अशुभ कर्म का फल शुभ और अशुभ रूप में या सुख और दुःख के रूप में अवश्य भोगना पड़ता है। इस वक्तव्य के वक्ता थे आर्यसन्देश के सम्पादक श्री यशपाल सुधांशु। वक्ता महोदय आर्यसमाज साकेत नई दिल्ली में अपने सप्त दिवसीय "वेद प्रवचन" के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा—वैदिक धर्म के सिद्धांत अकाट्य हैं तथा बुद्धि ग्राह्य हैं। संसार एक दिन इस सच्चे धर्म को जानेगा और मानेगा। पता नहीं अन्य श्रोताओं ने इस पर कितना मनन किया होगा, परन्तु यह बात मेरे मन को इतनी छू गई है कि मन में बहुत से विचार उठ रहे हैं। कुछ निम्नांकित हैं।

(१) संयुक्त राज्य अमेरिका के सिक्कों और नोटों पर बहुधा यह लिखा रहता है 'In God we trust' अर्थात् हम ईश्वर में विश्वास रखते हैं। यह पूर्णरूपेण वैदिक विचार है। महर्षि दयानन्द ने तो स्थान-स्थान पर बारम्बार कहा है कि 'उसी (ईश्वर) की उपासना करनी योग्य है। पता नहीं इस बात की कोई सम्भावना है या नहीं परन्तु श्री सुधांशु जी एक प्रयत्न तो कर ही सकते हैं कि अमेरिका के राष्ट्रपति को इस वेद के वाक्य को मुद्राओं पर अंकित करने के लिए धन्यवाद दिया जाए। साथ ही यदि आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रभाव को भी उपयोग में लाकर अमेरिका के राष्ट्रपति से निवेदन किया जाए कि वे इस रेखा को थोड़ी-सी और बढा दें और इसके साथ ही यह भी अंकित करा दें कि 'And He is just', पूरा अंकन इस प्रकार हो 'In God We trust And He is just' अर्थात् हम ईश्वर में विश्वास करते हैं और ईश्वर न्यायकारी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि उचित स्तर पर इस मामले को उठाया जाए तो अमेरिकी राष्ट्रपति इस बात को मान लेंगे।

(२) मुस्लिम देशों में अपनी मुद्राओं पर क्या लिखा जाता है मैं ठीक से नहीं जानता। परन्तु अनुमान है कि उन पर 'खुदा जब देता है तो बेहिसाब देता है' या 'यह सब अल्लाह के फजल से है' या इसी प्रकार की कोई बात लिखी होती होगी। इसका पता लगाकर इस लकीर को भी बदलने का यत्न करना चाहिए और वहां भी "...और खुदा मुन्सिफ है लिखा जाना चाहिए।

(३) भारत में तो मुद्राएं भी धर्मनिरपेक्ष बना दी गई हैं और उन पर मात्र यह लिखा होता है कि 'मैं धारक को... रुपये देने का वचन देता हूं। वहां ईश्वर को कोई आवश्यकता अनुभव नहीं की गई। निश्चय ही सम्पादक सुधांशु जी अधिकारपूर्वक भारत सरकार से तो आग्रह कर ही सकते हैं कि सभी सिक्कों और नोटों पर 'ईश्वर न्यायकारी है' लिखा जाए। भारत सरकार को यह समझने में अधिक दिक्कत नहीं होनी चाहिए कि इन शब्दों से 'धर्मनिरपेक्षता' हत या आहत नहीं होगी अपितु पुष्ट ही होगी क्योंकि कोई भी मजहब या मत इस पर एतराज नहीं कर सकता।

मनुष्य जब भी दुराचरण करता है तो ईश्वर की न्यायकारिता को भूल कर ही करता है। यदि यह बात 'तकिया कलाम' बना ली जाए कि 'ईश्वर न्यायकारी है' तो मानवमात्र सदाचारी बन जाए क्योंकि दुराचार तो न्याय से छिपकर या बचकर ही किया जा सकता है। सभी मजहबों और मत वालों को भी पापियों के ऊपर से अपनी छत्रछाया तुरन्त हटा लेनी चाहिए।

सुधांशु जी की वेद कथा बड़ी तन्मयता और भारी उत्साह से सुनी गई है। एक सम्पादक के रूप में उनकी शक्ति का स्मरण दिलाने के लिए निवेदन है कि

'तीर उठाओ न तुम
तलवार निकालो।
मुकबिल हो अगर तोप
तो अखबार निकालो॥

□

खड़ा आवाज देता हूं, दुलारे आर्य वीरों को

खड़ा आवाज देता हूं,
दुलारे आर्य वीरों को,
अगर हिम्मत हो जरा भी तो,
उसे भी आजमा लो तुम।
लिये झण्डा निकलते हो,
वही तो ओ३म् का प्यारा,
जिसे लेकर कभी भी आज तक
कोई नहीं हारा।
वही है रक्त की ऊष्मा,
वही है आज का नारा,
'भली-सी आर्य संस्कृति में,
रंगेगी यह जगत् सारा।
तदपि यह खेद बस, इतना,
भुलाये ही खुदी बैठे;
अगर अरमान बाकी हों,
उन्हें भी तो निकालो तुम!
अगर हिम्मत हो जरा भी तो,
उसे भी आजमा लो तुम॥
सहस्रों ईंट-गारे के,
भवन-मंदिर बनाये हैं,
खोल दिल पर्व-उत्सव पर,
बहुत रुपये लुटाये हैं,
कहीं फोटू निकाले हैं,
कहीं भाषण छपाये हैं,
तदपि सपने सभी ऋषि के,
बिना झिझके भुलाये हैं,
परीक्षा की घड़ी है सामने,
सन्नद्ध हो जाओ,
पड़ा दायित्व संकट में,
उसे बढ़कर बचा लो तुम!
अगर हिम्मत हो जरा भी तो,
उसे भी आजमा लो तुम॥
कहीं पर घूस है फैली,
कहीं इज्जत उतरती है,
कहीं होटल व रेस्ट्रां में,
नयी जन्नत उभरती है,
नियम-कानून में बढ़कर,
बुराई ही संवरती है,
वकीलों के शिकंजों में,
अदालत तक सिसकती है,
मिले हर रोग की औषधि,
यहां केवल रुपया में,
तड़पते न्याय के मुख में,
यत्न-जल-बिन्दु डालो तुम।
अगर हिम्मत हो जरा भी तो,
उसे भी आजमा लो तुम॥
निकालो देश की नय्या,
दलों के घोर दलदल से,
भटकती भावनाओं को
हटा लो कटु अमंगल से,
तड़पने दो न प्रतिभा को,
अनादर के हलाहल से,
करो खण्डन बुराई का,
सजग साहित्य-संबल से,
लड़ाई दूर कर सारी,
दिशा सहयोग की खोजो,
हुआ है लक्ष्य धूमिल जो,
उसे उज्ज्वल बना लो तुम।
अगर हिम्मत हो जरा भी तो,
उसे भी आजमा लो तुम॥
—भैरवदत्त शुक्ल

प्रलोभन से बचो

लेखक––अभय विद्यालंकार

प्रातः जागरण के पश्चात् व्यायाम, युक्ताहार, संध्या, यज्ञ, स्वाध्याय आदि हमारे बहुत से कर्त्तव्य जिन्हें कि बिना पालन किये हमारा कल्याण नहीं हो सकता। हमें अपनी अवस्था और समय के अनुसार अपने कर्त्तव्यों का निश्चय करना चाहिए और फिर उस पर दृढ़ होना चाहिये। इन अपने कर्त्तव्यों और अपने धर्मों का सेवन करने से ही एक आर्य "आर्य" है। एक मनुष्य-शरीरधारी 'मनुष्य' हो सकता है, क्योंकि एकमात्र इन्हीं धर्मों के अनुसार चलते हुए ही हम अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं और सर्व प्रकार की वास्तविक समृद्धि प्राप्त कर सफल जीवन हो सकते हैं।

इसलिए हम इस अति महत्त्व की बात पर विचार करेंगे कि हम अपने धर्म पर दृढ़ कैसे रहें, अपने धर्म से हमें विचलित कराने वाली कौन-सी चीज है जिसे जान लेने पर हम सहजतया धर्मसेवी बन सकते हैं, किस एक शत्रु पर विजय पा लेने से हमें कर्त्तव्य से विचलित होने का डर नहीं रहेगा। आशा है कि हम इस चौथे उपदेश को ग्रहण करने के लिए सर्वथा उद्यत होंगे।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का यह प्रसिद्ध वाक्य है––

"हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्याऽपिहितं मुखम्।"

'चमकते हुए सोने के ढकने से सत्य का मुंह ढका हुआ है।' जो मनुष्य इसकी सचाई को हृदयगम कर लेते हैं, वे सदा सन्मार्ग को ही चुनते हैं। यह एक ऐसा सत्य है जो सर्व जगत् में फैला हुआ है। सब जगह सचाई चमकीले ढकने से ढकी हुई है। इसलिए मनुष्य उस चमक में फंस जाता है, किन्तु उसे अलग कर सत्य पर नहीं पहुंच सकता। संसार में सब कहीं यही आकर्षण व चमक है जो कि हमें फंसाती है, हमें प्रलोभित करती है। यह इन्द्रियों के सुख हैं, भोग हैं, आराम हैं, धन-दौलत है, यश है। परन्तु मनुष्य का असली मार्ग इससे बच करके जाता है। कठोपनिषद् में यह वर्णन है कि नचिकेता नामक जिज्ञासु मृत्यु के पास गया। मृत्यु के कहे तीन वरों में से उसने दो वर मांगे जो उसे आसानी से मिल गये। फिर तीसरा वर उसने यह मांगा कि मुझे बताओ कि मरकर जीव का क्या होता है अथवा आत्मा है या नहीं? परन्तु मृत्यु ने उससे कहा कि इस विषय में बड़े-बड़े देव भी संशयित होते हैं, यह गम्भीर बात है, इसे मत पूछो। उसने आग्रह किया। मृत्यु ने तब कहा कि तू हाथी, घोड़े, रथ, दिव्य स्त्रियां, दीर्घजीवन, राज्य, जो चाहे ले ले, मैं तुरन्त दे दूंगा, पर इस प्रश्न को मत पूछ। परन्तु धीर नचिकेता ने देखा कि भोगों से तो केवल इन्द्रियों का तेज जीर्ण होता है, दीर्घायु भी मैं ऐसी संशयित अवस्था में लेकर अधिक दुःखी होऊंगा, मुझे तो वह अवस्था चाहिए जो मरण रहित है। अन्त में मृत्यु को उसे उसका वर देना पड़ा। तब उसने कहा कि दुनिया में दो मार्ग हैं, एक श्रेय-मार्ग और एक प्रेय-मार्ग। एक वह मार्ग है जो हमारे कल्याण का मार्ग है और एक वह मार्ग है जो हमें सुन्दर और प्रिय प्रतीत होता है। ये दोनों मार्ग सभी मनुष्यों के सामने आते हैं। अविवेकी पुरुष इनमें से खिचावट के मार्ग में चला जाता है, परन्तु धीर पुरुष विवेकपूर्वक इस कल्याण के परन्तु कठिन मार्ग को चुनता है। जो मनुष्य प्रलोभन के आने पर उसमें नहीं फंसता वही धीर है। यह अवस्था हर एक मनुष्य के सम्मुख प्रतिदिन आया करती है। एक तरफ आनन्द होता है, एक तरफ कठिनता। एक तरफ प्रलोभन होता है, एक तरफ अपना कर्त्तव्य। उस समय वे ही मनुष्य सन्मार्ग को ग्रहण कर सकते हैं जिनके मन ने बार-बार मनन करके इस वेद के उपदेश को ग्रहण किया है––

"हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्याऽपिहितं मुखम्।"

संसार में सब जगह धोखा भरा हुआ है। सत्य आड़ में छिपा बैठा है। जो इस धोखे में नहीं आते वे ही धन्य हैं। परन्तु क्या हममें से अधिकांश ऐसे नहीं हैं जो इन्द्रियों की खिचावट में फंस जाते हैं, और सयम के श्रेष्ठ मार्ग को छोड़ देते हैं। भोग में फस जाते हैं, ब्रह्मचर्य को छोड़ देते हैं। धन में फस जाते हैं, धर्म को छोड़ देते हैं। जो इन छोटे प्रलोभनों को जीत भी लेते हैं वे फिर मान में फस जाते हैं और सत्य को छोड़ देते हैं। यह इसलिए कि हमने इस वेदोपदेश को ग्रहण करके विवेक की आदत नहीं बनाई है। हर एक आर्यसमाज के सभ्य को अपने आर्य कर्त्तव्य को पालन करने के लिए यह ज्ञान ग्रहण करना चाहिये। यदि हमने अपने जीवन पर विचार करने का समय बना लिया है तो दिन भर की ऐसी अवस्थाओं को गिनना चाहिए जब-जब प्रलोभन और कर्त्तव्य का मुकाबला हुआ हो और सायंकाल के समय यह देखना चाहिए कि मैं कब-कब प्रलोभन में फसा और क्यों फसा इत्यादि। और फिर प्रातः काल परमात्मा से बल मांगकर अगले दिन में प्रविष्ट होना चाहिए और दृढ़ निश्चय करना चाहिए कि आज सब प्रलोभनों को जरूर परास्त करूंगा। इस विधि से धीरे-धीरे आपका वह अभ्यास हो जायेगा, श्रेय और प्रेय दोनों वस्तुओं के आते ही आप शीघ्र ही श्रेय को ग्रहण कर लिया करेंगे। प्रत्येक आर्य को धर्मारूढ़ बनने के लिए यह अभ्यास प्राप्त करना चाहिए।

हमारे आचार्य दयानन्द को पूर्वजन्म से ही यह विवेक-बुद्धि प्राप्त थी। उन्होंने मृत्यु के सवाल को हल करने के लिए घर छोड़ा, जायदाद छोड़ी, गृहस्थ छोड़ा और सत्य की तलाश में जगह-जगह धक्के खाना, जगलों में कांटों से लहुलुहान होकर फिरना, नाना कष्ट सहना इन सब को स्वीकार किया। विद्या प्राप्त करने के बाद भी यदि वे चाहते तो कहीं सुख से बैठ सकते थे, परन्तु वे हिरण्मय पात्र की फसावट से दूर हो चुके थे, इसलिए लोगों के ईंट-पत्थर उन्होंने सहे, गालियां सही, जहर खाना भी सहा, परन्तु सत्य प्रचार को नहीं छोड़ा। एक राजा ने उनसे कहा कि आप मूर्ति-पूजा का खण्डन छोड़ दीजिये और यह सब राज्य आपका ही है। शायद हमें यह बड़ा आसान—सुगम प्रतीत होता होगा कि वे कह देते—"मूर्ति-पूजा अच्छी है।" परन्तु उन्होंने सत्य को देखा हुआ था, वे स्वप्न में भी इस फसावट में नहीं फस सकते थे। हम में से कितने होंगे जिन्हें यदि कहा जाय कि तुम्हें हजार रुपये देंगे तुम इतना झूठ बोल दो, तो वे झूठ नहीं बोल देंगे। केवल १० रुपये दिये जाने पर भी अपनी मातृ-भूमि तक के विरुद्ध आचरण करने वाले हम में मिल जायेंगे। ऐसे कितने पुरुष हैं जो केवल सस्ता होने के कारण विदेशी वस्तुएं ले लेंगे और अपने देश की व्यवसाय-वृद्धि में सहायक होने की परवाह नहीं करेंगे। क्योंकि खद्दर मोटा होता है और अच्छा नहीं लगता। केवल इसीलिये स्वावलम्बी स्वदेशी धर्म को त्याग देंगे। इसी प्रकार हम अपनी थोड़ी सी सहूलियत के लिए भी अपने कर्त्तव्य और धर्म का बलिदान कर डालते हैं। यह हमारी कितनी गिरी हुई अवस्था है। हमें वेद की शरण जाकर हिरण्य की चमक से बचना चाहिये तभी कल्याण होगा। यह वेदोपदेश हमें उठाकर सच्चा आर्य नहीं बना सकेगा।

ऋषि दयानन्द का इस ससार में आकर जो महान् कार्य हुआ है उसे एक शब्द में हम यों कह सकते हैं कि उन्होंने प्रेय मार्ग में बहे जाते हुए लोगों को खड़े होकर श्रेय मार्ग का अवलम्बन करना बतलाया। जब वे उत्पन्न हुए उस समय इस देश में पश्चिमी सभ्यता जोरों पर बह रही थी, सभी लोग इसकी चमक-दमक में फसकर बहे जा रहे थे, इस देश की पुरानी तपोमय वैदिक सभ्यता नष्टप्राय थी। तब ऋषि ने आकर अपने ब्रह्मचर्य के तप से इस लहर को रोका। यह कितना कठिन काम था। यह ब्रह्मचारी ही कर सकता था। जब ससार की आंखें खुलेंगी तब दुनिया यह समझेगी कि हम दयानन्द के कितने ऋणी हैं। पश्चिमी सभ्यता का सारांश—भोग-विलास और हमारी सभ्यता सयम और सरलता है। इसलिए आर्यसमाज का उद्देश्य ससार को प्रेय मार्ग से हटाकर श्रेय मार्ग पर लाना ही है। परन्तु यदि आर्य लोग भी सत्य को छोड़ चमक-दमक में फसने वाले हों तो कितने दुःख की बात है। आज हमें दयानन्द का स्मरण करके अपने में यह व्रत लेना चाहिए कि हम श्रेय मार्ग पर ही चलेंगे, उसमें चाहे कितने ही दुःख क्यों न हों। तभी हम अपना कल्याण कर सकेंगे और आर्यसमाज द्वारा जगत् का कल्याण भी कर सकेंगे।

निस्सन्देह ससार में धोखा है परन्तु इससे बचने की कुंजी यही है–"हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्याऽपिहितं मुखम्।" ससार में जितनी कल्याण की चीजें हैं वे बुरी मालूम होती हैं और हमें नाशकारी वस्तु सुन्दर और प्रिय दिखाई देती हैं। परन्तु कड़वी औषधि ही हितकारी होती है और जिह्वा को आनन्द देने वाले भोजन स्वास्थ्य का नाश करते हैं। सांप जैसे सुन्दर चमकते प्राणी के अन्दर जहर की थैली

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रेरक प्रसंग

प्रस्तोता—सत्यानन्द आर्य

: १ :

यद्यपि, आर्यसमाज में नियम परिवर्तन आदि के सारे अधिकार स्वामी जी के हाथ में थे, परन्तु वे इतने निरभिमान और निर्लेप थे कि उसका दूसरा दृष्टान्त मिलना अति दुर्लभ है। आर्यसमाज लाहौर के साधारण अधिवेशन में महाशय शारदा प्रसाद जी ने प्रस्ताव किया—"आर्यसमाज के संस्थापक की पदवी से विभूषित किया जाय।" सब सभासदों ने इस प्रस्ताव का सुप्रसन्नता से अनुमोदन किया। स्वामी जी महाराज ने हंसकर कहा—'मैंने कोई नया पन्थ चलाकर गुरु गद्दी का मठ नहीं बनाया है। मैं तो लोगों को मतवादियों के मठ से स्वतन्त्र करना चाहता हूं। ऐसी पदवियों से अन्त में हानियां ही हुआ करती हैं।"

शारदा जी ने दूसरा प्रस्ताव किया, "महाराज को इस समाज का परम सहायक नियत किया जाय।" इस पर उन्होंने कहा—"यदि मुझे परम सहायक मानोगे तो उस परमपिता परमेश्वर को क्या कहोगे। परम सहायक तो वह जगदीश्वर ही है। हां, यदि आप मेरा नाम लिखना ही चाहते हैं, तो सहायकों की पंक्ति में लिख लीजिए।"

: २ :

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक बन कर, अपने गुरु भाइयों को मेरठ और दिल्ली में छोड़कर, अज्ञात यात्रा करने के लिए दक्षिण की ओर चल दिये। पहला पड़ाव हुआ—अलवर में, दिल्ली से लगभग नब्बे किलोमीटर दूर। सुरीले स्वर में उनके भजन से आकर्षित होकर लोगों ने पूछा, 'स्वामी जी, आप की जात क्या है?' प्रश्न का उत्तर मिला—"संन्यासी की जात भी कोई होती है?" "पूर्वाश्रम में क्या थी?" "कायस्थ।" यह भगवा बाना क्यों धारण किया?" "भिक्षुओं का बाना यही तो होता है।"

इतने बड़े शहर में छोटी सी झोंपड़ी में रहने वाली एक बुढ़िया ही थी, जो अपने "लाला" (स्वामी जी) को अपने हाथ से रोटी बना कर गरम-गरम खिलाती थी। और था एक वैष्णव सन्यासी रामसनेही, जो अक्सर मधुकरी मांग कर लाये आटे की चपातियां दोनों के लिए बनाकर नमक-प्याज से उन्हें खिलाता था।

बहुत दिनों बाद स्वामी जी जब शिकागो धर्म सम्मेलन से भारत लौटे तो अलवर वालों ने भी उस "अज्ञात परिव्राजक" का जोरों से सत्कार किया।

स्वामी जी ने रामसनेही को दूर से ही पहचाना और आप ही आवाज लगाकर बुलाया। रात के अंधेरे में चुपके से वे निकल पड़े। जब लोगों ने इधर-उधर ढूंढा तो बहुत देर बाद एक पिछड़ी बस्ती की जर्जर कुटिया में एक बुढ़िया के साथ मिलकर गरम-गरम रोटियां खाते मिले-विश्व विख्यात स्वामी विवेकानन्द!

: ३ :

संत तुकाराम ने जब अपना सब कुछ दीन-दुखियों की सेवा में अर्पण कर दिया तो एक दिन अनशन की नौबत आ गई। पत्नी ने कहा—"बैठे क्या हो, खेत में गन्ने खड़े हैं। एक गट्ठर बांध लाओ। आज का दिन तो निकल ही जायेगा।" तुका महाराज तत्काल खेत में पहुंचे और गन्नों का एक गट्ठर बांधकर घर की तरफ चले। रास्ते में मांगने वाले पीछे पड़ गये। एक-एक निकाल-निकाल सब को दे दिया। जब घर पहुंचे तो उनके पास केवल एक गन्ना बचा था।

पत्नी बेहद भूखी थी। जब उसने महाराज के हाथ में एक ही गन्ना देखा तो आग बबूला हो गई। तुकाराम जी के हाथ से गन्ना छुड़ाकर उसने उन्हें मारना शुरू कर दिया। मारते-मारते जब गन्ना टूट गया तो उसका क्रोध थमा। तुका महाराज मौन मार खाते रहे, किन्तु जब गन्ने के दो टुकड़े हो गये तो हंसते हुए बोले—"देख तेरे क्रोध से यह काम अच्छा हो गया। गन्ने के दो टुकड़े हो गये। एक तू चूस ले, एक मैं चूस लूंगा।"

क्रोध के प्रचंड दावानल के सामने क्षमा और प्रेम के अगाध अनंत समुद्र को देख, तुकाराम जी की पत्नी ने पश्चात्ताप में अपना सिर पीट लिया। महाराज ने अपनी पगड़ी के पल्ले से उसके आंसू पोंछे और छीलकर सारा गन्ना उसे खिला दिया।

शिक्षा-पद्धति में संस्कृत...

(पृष्ठ १ का शेष)

अवश्य हो। यह तभी सम्भव है जब त्रिभाषा सूत्र में भाषा के साथ "आधुनिक" विशेषण हटा कर 'भारतीय भाषाएँ' ऐसा उल्लेख हो।

भारतीय संविधान के ३५१ वें अनुच्छेद में यह भी उल्लेख है कि राजभाषा हिन्दी तथा अन्य सभी भारतीय भाषाएं अपनी शब्दावली के लिए मुख्य रूप से संस्कृत का आश्रय लेगी। इस परिप्रेक्ष्य में भी माध्यमिक स्तर पर तीन भाषाओं के अन्तर्गत संस्कृत के कम से कम ऐच्छिक अध्ययन की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिये।

यदि भाषाओं के साथ "आधुनिक" विशेषण लगाना ही हो तो भी उनमें से संस्कृत का बहिष्कार करना अनुचित है क्योंकि संस्कृत को आधुनिकता की परिधि से बाहर नहीं रखा जा सकता। जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि बहुत से परिवारों तथा व्यक्तियों की मातृभाषा संस्कृत है। स्वाभाविक है कि संस्कृत का दैनन्दिन आधुनिक प्रयोग हो रहा है। संस्कृत में अनेक आधुनिक दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिकाएं नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं तथा कविता, कहानी, आदि सभी विधाओं में आधुनिक विषयों पर आधुनिक संस्कृत साहित्य की रचना हो रही है।

संस्कृत भारतीय संस्कृति की मूलाधार तथा एकता का प्रबल सूत्र है। नई शिक्षा-पद्धति में संस्कृत को माध्यमिक स्तर पर समुचित सम्मानजनक स्थान अवश्य दिया जाना चाहिए। त्रिभाषासूत्र के अन्तर्गत संस्कृत के अध्ययन का विकल्प विद्यालयों में अवश्य रहना चाहिए।

अतः हमारी मांग है कि त्रिभाषा सूत्र में भारतीय भाषाओं से पूर्व "आधुनिक" विशेषण न जोड़ा जाए अथवा संस्कृत को भी आधुनिक भाषा माना जाए।

प्रो० संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

सुविख्यात संस्कृत विद्वान् व पं० चारुदेव शास्त्री दिवंगत

आधुनिक पाणिनि के नाम से जाने-माने विद्वान् पंडित चारुदेव जी शास्त्री का हृदय गति रुकने से देहावसान हो गया। इस समय उनकी आयु ९० वर्ष की थी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्यसमाज दीवानहाल के अधिवेशन में दिवंगत आत्मा के प्रति गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि आर्य जगत् के विद्वान् के प्रयाण से महती क्षति हुई है।

श्री स्वामी जी ने कहा श्री चारूदेव जी शास्त्री ने संस्कृत, व्याकरण आदि के कई ग्रन्थ लिखे हैं। उनको विद्वत्तापूर्ण लेखन शैली को साहित्यिक क्षेत्र में बड़ा सम्मान मिला है। १९७४ में उनका सार्वजनिक अभिनन्दन भी भी किया गया था। संस्कृत के विद्वानों में वह सदैव प्रशंसा व सम्मान के योग्य रहे हैं। उनकी महान् प्रतिभा व व्यक्तित्व के आधार पर बनारस विश्वविद्यालय द्वारा डी-लिट की उपाधि से उन्हें सम्मानित किया गया था। पंजाब सरकार ने भी उन्हें संस्कृत शिरोमणि साहित्यकार घोषित किया था। वह अनेक भाषाओं के ज्ञाता भी थे। लाहौर और अम्बाला में डी० ए० वी० कालेज में अध्यापक का कार्य भी करते थे। आर्यसमाज के साथ उनका गहरा सम्बन्ध था। उनके निधन से संस्कृत का एक महान् विद्वान् हम ने खो दिया है।

शोक सभा में दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई।

मूलचन्द गुप्त
मन्त्री

श्री० जनकनंदिनी जानकी : जीवन की एक झांकी

—प्रकाशवती शास्त्री

जनकनंदिनी राजरानी सीता मिथिला की राजकुमारी तथा अयोध्या की वधू थी। इनका नाम सीता रखा गया। क्योंकि इनका जन्म उस दिन हुआ था जिस दिन इनके पिता जनक एक सीता यज्ञ (कृषियज्ञ) कर रहे थे। अकाल के निवारण और खेती के संवर्धन के लिए। राजर्षि जनक ने इस कन्या के जन्म को शुभ मानकर इनका नाम सीता रखा था क्योंकि उसी दिन यज्ञ के फलस्वरूप राज्य में प्रभूत वर्षा हुई थी।

राजर्षि जनक ब्रह्मज्ञानियों के कुल में उत्पन्न हुए थे इसलिए उनके राज्य में प्राय: ऋषि मुनि आते रहते थे और आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा होती रहती थी। ऋषिवर याज्ञवल्क्य, अष्टावक्र आदि ज्ञानी ऋषि तथा गार्गी, सुलभा आदि ऋषिकाएं इसी काल के आभूषण हैं।

ऐसे वातावरण मे उत्पन्न और पालिता सीता, स्वभावत: आध्यात्मिकता के उत्तम विचारों से ओत-प्रोत थी। वह न केवल शारीरिक सुन्दरता में अनुपम थीं वरन् मानसिक और आत्मिक सौंदर्य का भी कोष थीं।

उनके शरीर मे लावण्य और वीरता का अनोखा सामजस्य था। इसीलिए उनके पिता ने उसके लिए एक वीर पति पाने की शर्त रखी। वाल्मीकि ऋषि ने उसे वीर्यशुल्का नाम दिया तो गोस्वामी तुलसीदास ने भी जनक के मुह से निराशा की अवस्था में "वीरविहीन मही मैं जानी" कहलवाया है। जिसके उत्तर में उसे एक नहीं वरन् दो-दो रघुवशी वीरो के रूप में मिल गए लक्ष्मण जी को क्रोध आ गया। वे बोले—

रघुवशिन मे एकहु जहाँ होई।
तिस समाज अस कहे न कोई॥
जनक कही जस अनुचित वाणी।
विद्यमान रघुकुलमणि जानी॥

विश्वामित्र जी का सकेत पाकर श्री राम ने शिव धनुष उठाया। सीता का विवाह राम से हो गया। (सीता) उसने अपनी व्यवहार कुशलता से सब का मन जीत लिया। वह प्रेम, दया और सौहार्द की मूर्ति थी। ससुराल में वह सब की प्यारी बन गई।

राम वन गमन के समय सीता का एक दूसरा ही रूप सामने आता है। वह एक आदर्श पत्नी है जो पति का साथ विपत्ति में भी नहीं छोड सकती। जब राम ने उसे कष्टो से सावधान करना चाहा तो उसने शास्त्रों की आज्ञा का हवाला ही नही दिया वरन् राम की भर्त्सना भी की। यहा सीता एक आर्या पत्नी है, आदर्श पत्नी केवल पति की आज्ञा का ही पालन नहीं करती उसके धर्म की भी रक्षा करती है। उसे कर्तव्य का बोध कराती है। वह कहती है—मेरे पिता ने तुम्हें नही पहिचाना, तुम तो स्त्री के रूप मे पुरुष दिखाई देते हो जो अपनी पत्नी को साथ ले जाने में कतराते हो। उसने कहा—

त्वा हामन्यत विदेह.
पिता मे मिथिलाधिप.।
रामं जामातरं प्राप्य
स्त्रिय पुरुषविग्रहम्॥

मुझे लगता है, मेरे पिता ने पुरुष रूप स्त्री को दामाद बनाया है। सीता एक सशक्त व्रतधारिणी नारी थी। गोस्वामी जी के शब्दों मे व्यंग्य करती है—

तुम तो वन मे तपस्या करो और मैं महलो में मौज करू।
मैं सुकुमारी, नाथ वन योगू।
तुम ही उचित तप, मोकह भोगू।
वाह भई वाह—

आगे चलकर वह राम को विश्वास दिलाती है कि वह वन मे जाकर किसी प्रकार के विलास या या भोग की कामना करके उसका व्रत भी भग नही करेगी।

शुश्रूषमाणा ते नित्यं
नियता ब्रह्मचारिणी।
सह रंस्ये त्वया वीर
वनेषु मधु मान्धिसु॥

सेवा करती हुई व्रतधारिणी ब्रह्मचारिणी बन मैं तेरे साथ बन में रहूँगी।
आगे कहती हैं—

फलमूलाशना नित्यं
भविष्यामि न संशय:।
न च मे भविता तत्र
कश्चित् तनुपरिश्रम॥

अर्थात् मैं फल फूल खाती हुई सुखपूर्वक रह लूगी।
आप चिन्ता न करे—
आगे चलिए। दण्डकारण्य में प्रविष्ट होते समय जब राम ने ऋषि मुनियो को पीडित देख राक्षसों को मारने की प्रतिज्ञा की—

निशचरहीन करौं महि
"भुज उठाय प्रण कीन्ह"

वहीं सीता उन्हें सावधान करती हैं:—

"अपराध विना हन्तु
लोकान् वीर न कामये।"

हे वीर किसी प्राणी का बिना अपराध मारना ठीक नही। राम ने इसका उत्तर भी दे दिया था कि क्षत्रिय का धनुष पीडितों की रक्षा के लिए ही उठता है। पितृकुल से श्वशुर कुल में, श्वशुर कुल से वन में आकर सीता रानी ने अपने कर्तव्य-पालन का पर्याप्त प्रयास किया है।

आगे चलकर उसकी शक्ति की कठोर परीक्षा का समय आया जो उसके आत्मबल की कसौटी थी। अब तक वह अपने वीर पति राम की छाया मे थी, उसके सरक्षण मे अपने धर्म का पालन कर रही थी। परन्तु रावण जब उसका अपहरण करके ले जाता है, वह नितात अकेली पड जाती है। एक आर्य महिला अनार्यों के घेरे में। यही उसका सतीत्व चमकता है, कितनी निर्भय कितनी साहसी। यहा जिस प्रकार उसने रावण की भर्त्सना की है उसने उसे भारतीय इतिहास में अद्वितीय बना दिया है। वहा जब रावण उसे कहता है:—

पिब विहर रमस्व भुङ्क्ष्व भोगान्

सीता उत्तर देती है:—

शक्या लोभयितुं नाह-
मैश्वर्येण धनेन वा।
उपनत्या राघवेणाह
भास्करेण प्रभा यथा॥

अर्थात् हे रावण तू मुझे धन वैभव से नहीं लुभा सकता क्योकि मेरा और राम का सम्बन्ध वैसे ही एकाकार है जैसे सूर्य का अपनी प्रभा से होता है।

रावण की यन्त्रणामयी कैद से निकलने के लिए भी वह हनुमान् जैसे परपुरुष को भी स्पर्श करने के लिए तैयार नही। राम से पृथक् रहकर भी वह उसके गौरव का सदा ध्यान रखती है। भयंकर से भयकर कष्ट में पडकर भी वह उलाहना नही देती। उसका पति प्रेम सात्विक है जो विश्वास और श्रद्धा की अटूट नींव पर खडा है।

रावण के मरने के पश्चात् वह अपने पूज्यपति मर्यादा पुरुषोत्तम राम के पास पहुंचती है। तो वहां उसे राम के कटु वचन सुनने को मिलते हैं। वे कहते है —

हे सीता मैं जानता हू कि तू निर्दोष है निष्कलक है परन्तु ससार की आखे प्रमाण मागती हैं, तुम्हारी शुद्धता का प्रमाण, तुम्हारे सतीत्व का प्रमाण। अहो कितनी कठिन परीक्षा थी। साधारण नारी ऐसे समय क्या करती? विद्रोह करती, पतिता हो जाती या आत्महत्या कर लेती। परन्तु सीता की आत्मा राम से पृथक् न थी, उसे अपने पति पर अटल विश्वास था। वह तुरन्त परीक्षा देने को तैयार हो जाती है। श्रेष्ठ ऋषियो ने आगे बढकर उसकी पवित्रता का समर्थन किया और राम ने उसे स्वीकार किया। जनता ने जयजयकार किया। यही थी जानकी की अग्नि-परीक्षा।

राम अयोध्या में लौट आए, राज-पाट सभाल लिया। वनवासिनी जनक नदिनी सीता राज-राजरानी बन गई। प्रजा को प्रेम का सरक्षण देने लगी।

परन्तु अभी उसका एक परम कर्तव्य शेष था मातृत्व। रघुवश को एक उत्तम सतान की विभूति से विभूषित करना। मातृत्व ही तो नारी की पूर्णता का रूप है। इसके बिना नारी का पूर्ण विकास असभव है। राजदुलारी सीता ने अपने पति राम को एक आदर्श राजा बनने के लिए पूर्ण अवसर दिया। उन्हें अपने कर्तव्य पालन की पूर्ण स्वतन्त्रता देकर अपनी गर्भावस्था में ही ऋषि वाल्मीकि के आश्रम मे चली गई। आध्यात्मिक और सात्त्विक वातावरण में लव कुश पुत्र रत्नो को

(शेष पृष्ठ ७ पर)

समाचार

दक्षिण भारत में व्यापक शुद्धि समारोह

दक्षिण भारत में सार्वदेशिक सभा के प्रमुख कार्यकर्ता और प्रचारक श्री एम० नारायण स्वामी ने दिनाक २७ मार्च १९८७ को बडे समारोह के साथ ग्राम नार्थम पेंट्टी, मुथु रामलिंगापुरम पंचायत (तमिल नाडु के ईसाई ग्राम) के अन्तर्गत ४९ परिवारों के २५० सदस्यों को वैदिक धर्म में दीक्षित किया। शुद्धि के बाद उनको जनेऊ दिये गये। इस में पंचायत के प्रधान श्री जगरक्षक ने बडी सहायता की। आर्यसमाज मदुराई के तीन सदस्यों ने भी बहुत बडा सहयोग दिया।

इसके अतिरिक्त २९ मार्च ८७ को कुड्करार्ड ग्राम (कन्याकुमारी जिले) में ७ ईसाई परिवारों के १९ सदस्यों को वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। यहां स्थानीय आर्य समाजों के कार्यकर्त्ताओं ने बडा सहयोग दिया। इस ग्राम मे गत माह भी ५ ईसाई परिवार शुद्ध किए गए थे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मंत्री—सार्वदेशिक सभा

आर्यसमाजें ध्यान दें !

आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही एक सजग प्रहरी के रूप मे अपनी भूमिका निभाता चला आ रहा है। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ ने समय समय पर अपनी बलिदानिया दी हैं और समाज मे फैली बुराइयों तथा कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई है और सफलता प्राप्त की है। चाहे वह देश की एकता तथा अखण्डता का प्रश्न हो, दहेज का प्रश्न हो, गो-हत्या तथा मद्य निषेध का प्रश्न हो, किसी पर बिना कारण हो रहे अत्याचार का प्रश्न हो, प्रचार प्रसार का प्रश्न हो, हमने उसके लिए सरकार के कर्णधारो का ध्यान इस ओर दिलाया है। हाल ही मे भारत सरकार ने वर्ष १९८७-८८ के केन्द्रीय बजट मे लोगो का रसोई पर अन्धाधुन्ध टैक्स लगाये हैं जिससे भारत की गरीब जनता पर व्यर्थ का बोझ पडा है, जिनसे जनता काफी परेशान है। अतः मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप इस सबध में नीचे लिखे प्रारूप के अनुसार प्रधान मन्त्री, श्री राजीव गांधी वित्त मन्त्री श्री ब्रह्मदत्त एव मन्त्री मण्डल के सदस्यो का अपनी ओर से तथा अपनी आर्यसमाज की ओर से पत्र भिजवाये कि हमारी रोजमर्रा की वस्तुओं पर से तुरन्त यह अनर्थक बोझ हटा लिये जायें।

प्रारूप

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी व वित्त राज्य मन्त्री श्री ब्रह्मदत्त से

अपील

१. १९८७-८८ के केन्द्रीय बजट मे हल्दी, मिर्च, धनिया एव मिश्रित बन्द पैकेटो पर लगाई गई १५ प्रतिशत केन्द्रीय शुल्क को तुरन्त हटाया जाए।

२. इस उत्पादन शुल्क से यह मसाले जो कि मध्यवर्ग एव गरीब जनता उपयोग करती है १६ रुपये किलो तक महगे हो गये हैं।

३. इस उत्पादन शुल्क के लगने से लोग एगमार्क मसालो के खरीदने मे असमर्थ हो जायेंगे।

४. खुला गन्दा व मिलावटी माल खरीदने से जनता के स्वास्थ्य पर भारी असर पड़ेगा।

५. यह माल पहले हो दिल्ली के बाहर से आता है, इस पर ४ प्रतिशत केन्द्रीय बिक्री कर लगती है और अब १५ प्रतिशत केन्द्रीय उत्पादन शुल्क लग जाने से सरकार का भाग २६ प्रतिशत हो जाएगा।

६. एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त को जाने वाले इन मसालों पर सरकार का भाग ३० प्रतिशत से भी उपर हो जाएगा।

अत. मैं/हम सरकार से मांग करते हैं कि जनता की रसोई पर लगाए गये इस टैक्स को तुरन्त हटा लिया जाये, ताकि भारत की ८० प्रतिशत गरीब तथा पिछडे वर्ग की जनता को राहत मिल सके।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप इस कार्य को यथाशीघ्र कराने का कष्ट करेंगे।

—डा० धर्मपाल
महामन्त्री

सस्वर वेदपाठ प्रशि. शिविर

इस वर्ष १५ मई से जून मास के अन्त तक १५-१५ दिनों के लिए तीन प्रशिक्षण शिविर इन्दौर में आयोजित किये जायेंगे। जो इस निमित्त प्रशिक्षणार्थ आना चाहें और यज्ञ चिकित्सा विज्ञान सीखना चाहें वे शीघ्र ही वेद सदन, महारानी रोड, इन्दौर-४५२००७ से सम्पर्क करें।

—वीरसेन वेदश्रमी
अध्यक्ष, वेद सदन, इन्दौर

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के शिविर

गत वर्षों की भांति आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं में युवकों के चरित्र विकास, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना जागृत करने तथा शस्त्र प्रशिक्षण देने के लिए एक शिविर का आयोजन किया गया है। यह शिविर ग्रीष्म कालीन अवकाश प्रारम्भ होते ही २२ से ३१ मई १९८७ तक चलेगा। शिविर दिल्ली से बाहर किसी स्थान पर लगाया जायेगा, जिसके स्थान की घोषणा यथाशीघ्र की जायेगी।

इस शिविर मे केवल १६ से ३५ वर्ष तक के प्रशिक्षणार्थी भाग ले सकेंगे। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को केवल १०/-रुपये शुल्क देना होगा।

अतः समस्त आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं के माननीय प्रधान तथा मन्त्री शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धकों, प्रिंसिपल महोदया/महोदयाओं से प्रार्थना है कि अपनी आर्यसमाज/शिक्षण संस्था की ओर से कम से कम दो युवकों के नाम आयु तथा घर के पते सहित यथाशीघ्र आर्य वीर दल के कार्यालय १५-हनुमान रोड नई दिल्ली—११०००१ के पते पर भिजवाने का कष्ट करें।

विस्तृत कार्यक्रम यथाशीघ्र आपकी सेवा में भेज दिया जायेगा।

हमें पूर्ण आशा है कि आपका सहयोग, सद्भावना तथा आशीर्वाद हमें पूर्व की भांति प्राप्त होता रहेगा।

धन्यवाद सहित,

डा० धर्मपाल
महामंत्री
(दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)

श्याम सुन्दर बिरमानी
महामंत्री
(आर्य वीर दल, दिल्ली)

निर्वाचन परिणाम घोषणा

१५ अक्टूबर १९८४ से प्रभावशील। संशोधित विधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर (कैम्प अलवर) रजिस्टर्ड ४१४।८५ कार्यालय रजिस्ट्रार संस्थाएं राजस्थान सरकार, जयपुर एवं प्रकाशित आर्यमातण्ड १ मई १९८५ की पृष्ठ संख्या ३ के प्रदत्त अधिकारों, कर्तव्यों एवं कार्यों की २७ के अनुसरण में प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा के अधिवेशन ११।१।८७ के प्रभाव संख्या ६ के अन्तर्गत प्रधानान सभा के पत्र सख्या १०३८ दिनांक २।३।८७ द्वारा नियुक्त मैं विद्यासागर शास्त्री निर्वाचन अधिकारी अलवर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर के अलवर मे १२ अप्रैल, १९८७ (रविवार) को सम्पन्न द्विवार्षिक निर्वाचन का परिणाम दयानन्द भवन वैदिक विद्या मन्दिर अलवर स्थान उक्त विधान की धारा २० के अभिप्रायों के अनुसरण में सार्वजनिक रूप से घोषित करता हू :—

प्रधान : श्री छोटूसिंह एडवोकेट
उपप्रधान : श्री दत्तात्रेय आर्य
मंत्री : ओमप्रकाश भंवर
उपमंत्री : शुद्ध बोध गंगानगर
कार्यालय मंत्री : ओमप्रकाश, जयपुर
कोषाध्यक्ष : सत्यनारायण शाह
वेदप्रचाराधिष्ठाता : सत्यव्रत सामवेदी
आर्य वीर दल अधिष्ठाता : सुखदेव गोयल
पुस्तकालयाध्यक्ष : ज्ञानेन्द्र आर्य

आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यसमाज कालका जी के तत्त्वावधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस एवम् नव संवत्सर का उत्सव बडे उत्साहपूर्वक दिनांक ५।४।८७ को मनाया गया। इस अवसर पर श्री प्रियव्रत जी शास्त्री संगीताचार्य ने अपने मधुर संगीत द्वारा आर्यसमाज की भूमिका एवम् महर्षि दयानन्द के कार्यों की प्रशंसा की। श्री यशपाल जी सुधांशु, संपादक, आर्यसंदेश ने इस अवसर पर जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज की परिस्थितियों में आर्यसमाज ही एक ऐसी क्रांतिकारी संस्था है जो राष्ट्र एवम् देश को उन्नति की ओर ले जा सकती है।

भवदीय
विजेन्द्र सिंहल

प्रलोभन से बचो

(पृष्ठ ३ का शेष)

रखी होती है और फूलों में कांटे होते हैं, यह बात हमें याद रखनी चाहिए। भोग अन्त में विष की तरह घातक होते हैं, यह ज्ञान आज से ही हर एक आर्य को ग्रहण कर लेना चाहिए। आराम जरूर प्रिय मालूम होता है परन्तु फल हमेशा परिश्रम करने से ही प्राप्त होता है। संयम के कठोर छिलके के अन्दर ही हमारे लिए अमृतमय फल रखा हुआ है। जो हमारे हितकारी मनुष्य हैं वे आकर्षक नहीं हैं, उनकी नसीहतें हमें कड़वी मालूम होती होंगी। परन्तु हितकर वही हैं। इसके विपरीत ठग लोग बड़े रोचक होते हैं, मधुर वाणी बोलते हैं पर वे हमारा सब धन हर लेते हैं। इस प्रकार कई प्रकार से यह जगत् प्रलोभक है, हमें सन्मार्ग से हटाने के लिए इसमें बहुत से फांस हैं, हमें इसी वेदवाक्य का अवलम्बन कर इस संसार से तरना है। प्रलोभन को छोडते हुए कर्त्तव्य पर ही लगन लगाये रखनी है। हमारी बुद्धि ही ऐसी हो जानी चाहिए कि हमें अकर्त्तव्य कभी प्रलोभित न कर सके, बल्कि जितनी प्रीति अविवेकी पुरुष की खिंचावट के अन्दर होती है उससे भी अधिक आसक्ति हमारी कर्त्तव्य में-धर्म में हो जाय। तब हम इस सौंदर्य को देख सकेंगे कि किस प्रकार हमारा परम कल्याणकारी करुणासागर भगवान् हमें बिल्कुल प्रलोभित न करता हुआ छिपा हुआ बैठा है। मानो वह है ही नहीं, किन्तु यह प्रकृति चमक-दमक हमारी आंखों में इतनी तीव्रता से प्रविष्ट हो रही है कि मानो यही सब कुछ है और कुछ है ही नहीं। इस वेद-वाक्य का अन्तिम अर्थ इस प्रकृति के ढकने को हटाकर अन्दर छिपे हुए सत्य स्वरूप परमात्मा को प्राप्त करने से है। भगवान् ही हमें ऐसा बल दे कि हम इस ढकन को हटाकर उसके सत्यस्वरूप को देख सकें। □

जनकनंदिनी जानकी

(पृष्ठ ५ का शेष)

जन्म दिया। राजसी ऐश्वर्य से पृथक् रहकर दोनों बच्चों का लालन-पालन किया। ऋषि मुनियों द्वारा उसने उन्हें सुशिक्षित किया। स्वयम् उन्हें शस्त्रास्त्र विद्या सिखलाई। इस प्रसंग से प्रकट होता है कि सीता जहां एक महान विदुषी थी वहीं शस्त्र विद्या की ज्ञाता वीरांगना भी थी।

आदर्श सन्तान वही होती है जो अपने पिता के अनुरूप हो। वह भी जो पिता अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण आदर्श माना जाता हो। उसकी यह माता सीता के ही सत् प्रयत्नों का फल था कि लव कुश पलते रहे, राम को पता तक नहीं लगा। रणक्षेत्र में सामना होने पर भी वह उनको नहीं पहिचानते और उनसे पराजित हो जाते हैं। यहां सीता ने सिद्ध कर दिया कि नारी क्यों पुरुष से श्रेष्ठ है? वही नर का निर्माण करती है।

वाल्मीकि ऋषि राम का सारा जीवनचरित्र उनके पुत्रों को कण्ठस्थ करवा के राम को सुनवाते हैं। धन्य है उस ऋषि की विद्वत्ता और कला।

रहस्य जानकर राम आश्चर्य और आनन्द से परिप्लावित होकर पुनः रानी सीता को ग्रहण करने को तैयार है पर कैसे। वह तो उनकी पत्नी ही नहीं, वह तो अब लव कुश की माता है। और इस विशाल धरती की पुत्री है, उसे तो उसी में समा जाना है जहां से वह आई थी। आम लोग इस भ्रम में हैं कि यह मट्टी की धरती फटी तो उसमें से सीता निकली और पुनः फटी तो उसमें चली गई। वास्तव में वह इतना महान् थी कि वह केवल जनक की ही बेटी नहीं समस्त विश्व की बेटी थी।

माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या। अपने उदार चरित्र से एक आर्य नर-नारी भूमि का ही पुत्र या पुत्री होता है। सीता का चरित्र न केवल अपने कुल या देश के लिए वरन् धरती भर के लिए मंगल का संदेश है। पहले भी था और भविष्य में भी रहेगा।

वैदिक राजनीति

लेखक प० सुरेशचन्द्र वेदालंकार जी, समीक्षा डा० विजय द्विवेदी, प्रकाशक आर्य कुमार सभा(रजि), किंग्जवे, देहली प्रकाशन तिथि रामनवमी १९८६, पृ० सं० ८३, मूल्य - तीन रुपये।

प० सुरेशचन्द्र वेदालंकार वेद और वेद विद्या के अच्छे ज्ञाता हैं। आप इसके पहले भी वेद विषयक बहुत सी पुस्तकें लिख चुके हैं। इसमें "सफल जीवन" और "सिकंदर और साधु" जैसी कुछ पुस्तिकाओं को "आर्य कुमार सभा", किंग्जवे, दिल्ली ने प्रकाशित तथा प्रचारित करके वैदिक साहित्य में रुचि रखने वालों पर बहुत उपकार किया है। सभा ने अपने 'बहुजनहिताय, बहुजन सुखाय" की भावना के तहत पंडित जी की प्रस्तुत पुस्तक को छापकर आर्य-जन समेत पूरे राष्ट्र का अनन्त हित सम्पन्न किया है। इसका कारण यह है कि आज राजनीति के चलते ही भारत अपनी परम्परा पहिचान एवं शक्ति को खोकर विदेशियों का मानसिक गुलाम बनकर रह गया है। मानसिक दासता भौतिक दासता से अधिक दुखदायी होती है। स्वामी दयानन्द ने विदेशी शासन की तुलना में 'स्वदेशी" राज्य को इसलिए श्रेष्ठ बताया था क्योंकि स्वदेशी शासन व्यवस्था में ही सब तरह की पराधीनता से मुक्ति सम्भव है। स्वाधीनता भारत का यह परम दुर्भाग्य यह है कि इस देश की राजनीति ने देश के निवासियों को प्रशिक्षित-अनुशासित तथा समाजोन्मुख मन और हृदय नहीं दिया। इसने उधार में लाकर हमें दिया — स्वास्थ्य, आत्मकेन्द्रितता और अमानवीय शोषण। आज देश चारों ओर से खोखला हो गया है, टूट रहा है, चारों ओर अशान्ति उपद्रव मचा हुआ है। इनसे बचने के उपाय खोजने राजनेता विदेशों और विदेशियों की ओर भागने का दिखावा कर रहे हैं। मगर वे अपने और अपने देश की ओर देखने में भय अनुभव कर रहे हैं। अन्यथा क्या भारतीय आधुनिक राजनेताओं को पता नहीं है कि आधुनिक भारत की सारी समस्याओं का निदान वैदिक भारत में निहित है। वैदिक समाज हमें बताता है कि आध्यात्मपरक धर्माचरण ही राजनीति है। इसका निकट सम्बन्ध मानवीय मूल्यों के विकास से है।

वैदिक राजनीति का मूलाधार उपनिषद्, गृह्य सूत्र और स्मृतियां हैं। स्वयं वेदों में न इतिहास है, न राजनीति। इनमें आध्यात्मिक मानव की एकता, अखण्डता और समता की रक्षा तथा निर्वाह के सूत्र हैं। श्री वेदालंकार जी ने वेदों की उक्त, विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए स्वामी दयानन्द के 'राजधर्म' के आधार पर वैदिक राजनीति के समयोचित स्वरूप का सम्यग् विवेचन किया है और बताया है कि 'स्वराज्य' लाना ही वैदिक राजनीति का मुख्य और अन्तिम उद्देश्य है।'

R. N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 23, 24-4-87 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
रजि० नं० डो० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित । रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओइम् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक २७ रविवार ३ मई, १९८७ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ वैशाख २०४४ दयानन्दाब्द—१६३

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का अपमान असह्य

"कलियुग और रामायण" फिल्म पर पूर्ण प्रतिबन्ध की मांग

राजधानी में प्रदर्शित फिल्म कलयुग और रामायण में श्री रामचन्द्र, जनक नन्दिनी सीता के चरित्र को बड़े कुत्सित ढग से छायांकित किया गया जिससे सम्पूर्ण हिन्दू समाज में इस फिल्म से भारी रोष व्याप्त हो गया। राजधानी में कुछ स्थानों पर तोड़ फोड़ और प्रदर्शन भी हुए। जन आक्रोश तथा आर्यसमाज और सनातन धर्म के नेताओं की सामूहिक प्रतिक्रिया से इस फिल्म का नाम परिवर्तन कर अब सिर्फ "कलयुग और ? ? ?" कर दिया तथा इसमें प्रदर्शित पात्रों के नाम भी बदल दिये गये। इस सम्बन्ध में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि इस सम्बन्ध में उनके नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल आज उपराज्यपाल से मिला था। उपराज्यपाल ने उन्हें आश्वासन दिया है कि यह फिल्म उक्त नाम से प्रदर्शित नहीं होगी।

सनातन धर्म एवम् आर्यसमाजी सगठनों के नेताओं ने कलियुग और रामायण फिल्म के सार्वजनिक प्रदर्शन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाए जाने की मांग की है।

इस अवसर पर उपस्थित बम्बई के आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा कि केवल नाम बदलने से कुछ नहीं होगा। अगर यह फिल्म चलेगी तो हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचेगी। अतः इसका सार्वजनिक प्रदर्शन रोका जाना चाहिए।

सनातन धर्म के नेता श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने कहा कि यह फिल्म युवा पीढ़ी के मस्तिष्क में भारतीय संस्कृति के विपरीत विचार उत्पन्न करेगी। अतः भारतीय संस्कृति के प्रति घृणा के बीज बोएगी। उन्होंने कहा कि फिल्म में हनुमान् को चोर, साला, बेईमान का भाई आदि शब्दों से सम्बोधित किया गया है। अनेक संवाद इतने आपत्तिजनक हैं कि जिसे सुनकर शर्म आती है। उदाहरण के लिए यह रेडीमेड हनुमान् है। मैं गली का हनुमान् लेकर आता हूं आदि। उन्होंने कहा कि फिल्म में अनेक आपत्तिजनक दृश्य भी हैं।

आर्यसमाज व सनातन धर्म के नेताओं ने सेंसर बोर्ड के विरुद्ध भी कार्यवाही किये जाने की मांग की है जिसने इस प्रकार की घोर आपत्तिजनक फिल्म को प्रदर्शन का प्रमाण-पत्र दिया है।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के डा० मदनलाल गोयाल ने यहां एक वक्तव्य जारी करके इस फिल्म पर रोक लगाए जाने की मांग की।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा द्वारा जारी एक प्रेस वक्तव्य में कहा गया है कि दिल्ली की सनातन धर्म सभाओं के प्रतिनिधियों और कार्यकारिणी के सदस्यों की एक संयुक्त बैठक में यह निर्णय लिया गया कि निर्माता निर्देशक मनोजकुमार द्वारा निर्मित फिल्म कलियुग और रामायण धार्मिक जनता की दृष्टि में आपत्तिजनक है, इसलिए मनोजकुमार को लिखा जाए कि वह इस फिल्म को पहले हमें दिखायें। मनोजकुमार ने यह फिल्म लगभग डेढ सौ व्यक्तियों को पैलेस सिनेमा दिल्ली में दिखाई। जिसमें सनातन धर्मियों के अतिरिक्त सभी हिन्दू संस्थाओं के प्रतिनिधि मौजूद थे। फिल्म के नाम पात्रों के नाम के साथ सवादों और गीतों पर भी आपत्ति की गई। जिन्हें बाद में मनोजकुमार ने परिवर्तित कर दिया।

इस सिलसिले में आज हुए प्रदर्शन में तोड-फोड के अपराध में विद्यारत्न सोनी, देवराज भाटिया, बी० एल० वर्मा, मंजीत तथा रामलाल (निगम पार्षद) गिरफ्तार किए गए हैं। जिन्हें सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कहने पर रिहा कर दिया गया है। □

पाकिस्तान बनवाने वाले मुहाजिरों की अब अपने 'नये वतन' में दो कौड़ी की कीमत नहीं

नई दिल्ली, २६ अप्रैल, सिंध के मुहाजिरों की दुर्दशा की दास्तान बड़ी ही अजीबो गरीब है। चालीस साल पहले ये लोग उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, दिल्ली, मद्रास और हैदराबाद से पाकिस्तान गये और वहां के शासक बन बैठे। उर्दू ने, जिसे मुस्लिम लीग ने बंटवारे से पहले भारतीय मुसलमानों की भाषा घोषित कर दिया था, नवजात प्रांत पर इनके दबदबे को कायम रखने में अहम् भूमिका निभाई। लेकिन जल्दी ही इनका पतन शुरू हुआ। १९४८ में पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना का निधन हो गया और उसके लगभग तीस साल बाद प्रधानमंत्री लियाकत अली खान की हत्या हो गई। उसी दशक में सत्ता का केन्द्र कराची से इस्लामाबाद पहुंच गया और सत्ता भी मुहाजिरों से पंजाबियों के हाथ चली गई।

सिन्ध में मुहाजिर स्थानीय लोगों की आंख में कांटे की तरह खटकते थे। ये इन्हें प्रान्त में अपना दबदबा बनाये रखने के लिए उर्दू के शोषक के रूप में देखते थे। भाषा के नाम पर सिंधियों और मुहाजिरों के बीच दगे होते रहे। सब से भयकर दगे १९७२ में हुए जब प्रान्तीय सरकार ने उर्दू के साथ सिंधी को भी सरकारी भाषा का दर्जा दे दिया।

'इस्लामाबाद से प्रकाशित 'द मुस्लिम' अखबार ने लिखा है कि मुहाजिरों को दो बडे धक्के लगे। पहले १९७० के आम चुनावों में उन

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

गृहस्थों को वेद सन्देश

लेखक—जुगल किशोर चतुर्वेदी

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः। अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥१॥

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु सम्मनाः। जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥२॥

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा। सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥३॥

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः। तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः ॥४॥

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वियौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः। अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्वः सम्मनसस्कृणोमि ॥५॥

अथर्व० ३।३०।१-५।

उपर्युक्त ५ वेद मन्त्रों के माध्यम से जगन्नियन्ता जगदीश्वर मनुष्य मात्र को उपदेश देते हैं कि वे माता-पिता संतान, स्त्री-पुरुष, मित्र, भृत्य तथा पड़ोसी आदि सब के साथ वैर-विरोध त्याग कर उसी प्रकार प्रेम और आत्मीयता का व्यवहार करें, जिस प्रकार गौ अपने नवजात बछड़े को प्यार करती है।

(वेदों में अतिशय प्रेम प्रदर्शित करने के प्रसंग में गाय के अपने बछड़े के प्रति प्रेम की उपमा देते हुए मनुष्यों को भी परस्पर उसी प्रकार प्रेमपूर्ण व्यवहार करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है, क्योंकि गाय अपने बच्चे की आक्रमणकारियों से रक्षा करने के लिए अपना जीवन तक उत्सर्ग करती हुई देखी गई है। फलतः मानव समुदाय से भी यह अपेक्षा की जानी सर्वथा स्वाभाविक है कि वह अपने सभी सगे सम्बन्धियों, कुटुम्बियों, परिवार जनों तथा मित्रों आदि के प्रति अकृत्रिम तथा निःस्वार्थ भाव से प्रेम का का परिचय दें।)

उक्त वेद मन्त्रों में यह भी प्रतिपादित किया गया है कि पुत्र-पुत्रियाँ अपने माता-पिता का मानसम्मान करते हुए उनकी आज्ञा का यथावत् पालन करें और माता-पिता, पुत्र-पुत्रियों का लाड-प्यार सहित लालन-पालन करके अपने दायित्व को निभायें। इसी प्रकार स्त्री पति की प्रसन्नता के लिये माधुर्य गुण युक्त वाणी बोले और पति भी शान्त भाव से अपनी पत्नी के साथ मधुर भाषण करे।

इतना ही नहीं वेद मन्त्रों में इस बात पर बल दिया है कि भाई-भाई से द्वेष न करे, बहन-बहन और भाई-बहन आपस में प्रेम पूर्ण व्यवहार रक्खें तथा दूसरे से कल्याणकारी वाणी बोलें।

वेद का उपदेश केवल कुटुम्बी जनों तक सीमित नहीं रहा है अपितु उसके द्वारा यह भी प्रतिपादित किया गया है कि जिस प्रकार विद्वान लोग परस्पर पृथक् भाव वाले नहीं होते और न एक दूसरे के प्रति द्वेष-भाव रखते हैं, उसी प्रकार सभी मनुष्यों को परस्पर प्रेम पूर्ण तथा आह्लादकारी वचन बोलने चाहियें अर्थात् समाज के सभी सदस्यों में वैर-विरोध वैमनस्य युक्त व्यवहार न होकर उनके बीच प्रेम की धारा प्रवाहित होती रहनी चाहिये।

परिवार के समस्त सदस्यों तथा इतरजनों के बीच पारस्परिक व्यवहार कैसा हो, इस पर पूर्वोक्त वेद मन्त्रों द्वारा सम्यक् प्रकाश डाला गया है अर्थात् उनमें यह स्पष्ट किया गया है कि पुत्र-पुत्रियों का माता-पिता के प्रति, माता-पिता का सन्तान के प्रति, भाई का भाई एवं भाई का बहन के प्रति प्रेम और आदर का भाव बना रहना चाहिये। इसी प्रकार पति-पत्नी में परस्पर प्रेम हो। परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति भी इसी प्रकार आदर और सम्मान पूर्वक आचरण करने के उपदेश विवाह संस्कार के अवसर पर दिये जाते हैं (जिसका उल्लेख अगले पृष्ठों में किया जायेगा)। ऐसा करने से ही प्रत्येक गृहस्थ में सुख, शांति और आनन्द की मंदाकिनी प्रवाहित हो सकती है।

वर्तमान काल में समाज के अन्दर अहंभाव, स्वार्थपरता, वैर-विरोध, छीना-झपटी, धोखा-धड़ी तथा राग-द्वेष की जो दूषित भावना फैली हुई है वैदिक आदर्श के अनुसार उसे गर्हित ठहराया गया है तथा समस्त मनुष्यों के लिए एक दूसरे की सहायता करने तथा सहयोग देने का विधान किया गया है। अन्तिम अर्थात् पांचवें मन्त्र में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि—

हे गृहस्थो! तुम उत्तम विद्यादि गुणों से युक्त और पूर्ण विद्वान होकर जीवन व्यतीत करो तथा मिल-जुल कर धन-धान्य राज्य-वैभव और सुख-समृद्धि को प्राप्त हो, पारस्परिक विरोध और वैमनस्य के भाव मत रक्खो। एक दूसरे के प्रति सत्य और मधुर वाणी का प्रयोग करो और समान लाभालाभ की भावना के साथ एक दूसरे के विचार सामंजस्य वाले बनो।

कम से कम हमारे देश में तो सृष्टि के आरम्भ से लेकर द्वापर के अन्त अर्थात् महाभारत काल तक उक्त वेद मन्त्रों का प्रायः अक्षरशः पालन होता रहा, जिससे यहां ज्ञान-विज्ञान की इतनी उन्नति हुई कि मानव धर्मशास्त्र के प्रणेता महर्षि मनु ने संसार के समस्त मानवों का यहां—भारत में आकर ज्ञान अर्जित करने के लिए इन शब्दों में आह्वान किया था—

एतद्देशप्रसूतस्य
सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्
पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

अर्थात् संसार के समस्त मनुष्य भारत देशान्तर्गत ब्रह्मर्षि देश के विद्वान् ब्राह्मणों से अपने-अपने आचरणों की शिक्षा ग्रहण करें।

यही वह युग था, जब यहां कपिल, कणाद, गौतम, याज्ञवल्क्य, गार्गी, मैत्रेयी आदि ऋषि, मुनि शास्त्रकार और स्मृतिकार इस देश के ज्ञान गौरव को दिग्दिगन्त में प्रसारित कर रहे थे।

केवल धार्मिक अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र में ही इस देश ने इतनी उन्नति की हो, सो बात नहीं; यहां के राजन्य वर्ग का भी उस समय पूरे भू मण्डल पर आधिपत्य जमा हुआ था, जैसा निम्नलिखित प्रमाणों से सिद्ध होता है—

अथ किमेतैर्वा परेऽन्ये महाधनुर्धराश्चक्रवर्तिनः केचित् सुद्युम्न भूरिद्युम्नेन्द्रद्युम्नकुवलयाश्व- यौवनाश्वावध्र्यश्वाश्वपति शशबिन्दु-हरिश्चन्द्राऽम्बरीष-ननक्तु - शर्याति - अनरस - अक्षसेन-मरुत्-प्रभृतयो राजानः। (मैत्र्युपनिषद् प्र० १। खं० ४)

अर्थात् सृष्टि के आदि से लेकर महाभारत पर्यन्त भारत देश में सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, कुवलयाश्व, यौवनाश्व, वध्र्यश्व, अश्वपति, शशबिन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, ननक्तु, शर्याति, अनरस, अक्षसेन, मरुत और भरत सार्वभौम चक्रवर्ती नरेशों का शासन रहा था।

इसी प्रकार उस समय वाणिज्य, व्यवसाय, शिल्प, उद्योग आदि क्षेत्रों में भी यह देश उन्नति की चरम सीमा पर पहुंच चुका था, जिस के फलस्वरूप तत्कालीन संसार के सभी सभ्य देशों का धन यहां निरन्तर रूप से खिंचकर आता रहा था। हमारी इस धारणा की साक्षी भारतीय विद्वान ही नहीं, विदेशी लेखक और इतिहासकार भी देते रहे हैं। यथा सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्रीयुत अर्मस्ट्रांग ने अपने Description of Ancient India नामक ग्रन्थ में लिखा है—

यूरोपीय सभ्यता के मूल [illegible] यूनान और इटली जब कि निरी जंगली अवस्था में थे तब भी भारतवर्ष सम्पत्ति और वैभव का केन्द्र था। यहां चारों ओर बड़े-बड़े उद्योग-धन्धे जारी थे। यहां की जनता दिन-रात काम में लगी रहती थी। यहां की भूमि उर्वरा थी जिससे यहां खूब फसल पैदा होती थी। यहां किसानों को अपने परिश्रम का फल बहुत ही अच्छा मिलता था। वे धन-धान्य पूर्ण रहते थे। यहां बड़े-बड़े चतुर कारीगर थे जो यहां के कच्चे माल से नफीस, उमदा पक्का माल तैयार करते थे, जिसकी संसार भर में मांग होती थी और कई पाश्चात्य और पौर्वात्य राष्ट्र इसे बड़े चाव से खरीदते थे। यहां सूती वस्त्र इतने

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वैदिक वाङ्मय में वसु

—छैल बिहारी लाल गोयल

वैदिक वाङ्मय के रहस्यों को खोजने के लिए वेद संस्थान में 'वसु' विषय पर वेद गोष्ठी का आयोजन किया गया। अभी तक के महाभारत काल के उपरान्त के भाष्यकारों के भाष्यों को देखने से प्रतीत होता है कि उन्होंने इनके अर्थ करते समय ऋषि देवता, छन्द, स्वर और प्रकरणों का ध्यान नहीं रखा है। इस कारण से वह वेद वाक्यों के सही अर्थ की पकड़ करने से चूक गए प्रतीत होते हैं। वेद भाष्यकारों ने ऋग्वेद के वर्ग प्रकरणों का ध्यान नहीं रखा है जिस से लगता है कि वह मार्ग से भटक गये हैं। सामवेद में भी पूर्वार्चिक के मन्त्रों के क्रम को आगे उत्तरार्चिक में त्रिक या तृच्छ के समूह में विस्तृत होते हुए ध्यान नहीं दे पाए लगते हैं। फिर उन्हीं त्रिकों का और अधिक विस्तार ऋग्वेद के वर्गों के रूप में किया गया लगता है। इसी तरह से यजुर्वेद में भी किन्हीं मंत्रों का ऋग्वेद में वर्गों के रूप में पूर्ण ज्ञान दिया गया है जैसे यजुर्वेद के ३३वें अध्याय के ५३वें मंत्र का ऋग्वेद ६।५२।१३ वाले वर्ग के मंत्रों में विस्तार किया गया है। ५४ वाले मंत्र का ऋग्वेद ४।५४।२ वाले वर्ग में विस्तार किया गया है। ३३।५५ वाले मंत्र का ६।४६।४ वाले वर्ग में विस्तार किया गया है। ५६ वाले मंत्र का ऋग्वेद १।२।४ वाले वाले वर्ग के मंत्रों में विस्तार किया गया है। ५७ वाले मंत्र का ऋग्वेद १।२।७ वाले वर्ग में विस्तार किया गया है। ३३।५८ वाले मंत्र का ऋग्वेद १।३।४ वाले वर्ग में विस्तार किया गया है। ५९ वाले मंत्र का ऋग्वेद ३।३१।६ वाले वर्ग में विस्तार प्रतीत हो रहा है। इस तरह से चारों वेद अपना समाधान आप ही देने में पूर्णतः सक्षम दीख रहे हैं।

"वसु" विषय पर सौभरि ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक के चवालीसवें मंत्र 'ये विश्वा वयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्।' में अग्नि के द्वारा वसु नामक धनों को प्राप्त करने के सिद्धांतों का दिग्दर्शन कराया प्रतीत होता है। इसका और अधिक विस्तार और प्रकरण सामवेद १५८३-८४ वाले तृक में किया गया है। और अधिक स्पष्ट करने के लिए ऋग्वेद मण्डल ८ के १०३ सूक्त के ६ से १० तक वाले वर्ग मंत्रों में और अधिक स्पष्टीकरण किया गया है। इन सबके ऋषि सौभरि हैं। देवता, अग्नि तथा छन्द बृहती।

सामवेद पूर्वार्चिक के मंत्र ९६ से "त्वमग्ने वसूंरिह" ऋषि प्रस्कण्व, देवता अग्नि तथा छन्द अनुष्टुप् में वसु के ८ (अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, सूर्य, प्रकाश, चन्द्रमा और नक्षत्र) (ध्रुव, सोम, आवा, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास) का ११ रुद्र और आदित्य के समन्वय द्वारा अग्नि के विभिन्न सिद्धांतों का वर्णन किया गया है। इस प्रकरण का कुछ विधान निरुक्त ३।१७ में भी है।

सामवेद ११० वाले मंत्र "मा नो हृणीथा मतिथिं वसुरग्निः" वाले मंत्र में ऋषि सौभरिः, देवता अग्नि, तथा छन्द ककुप् में भी विभिन्न अग्नियों के द्वारा वसु नामक पदार्थों का धन रूप में प्राप्त करने के सिद्धांत दर्शाए गए हैं। दूसरा विस्तार ऋग्वेद मंडल ८ सूक्त १०३ के ११ से १४ वाले वर्ग में किया गया लगता है।

त्रिशोक ऋषि सामवेद पूर्वार्चिक के मंत्र २०७ से "यद्वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर।" मंत्र में देवता, इन्द्र और छन्द गायत्री, इन्द्र (विद्युत) द्वारा भूगर्भ में स्थित वसु नामक नामक सम्पत्ति को प्राप्त करने के विभिन्न सिद्धांत दर्शाए गए हैं। इस का और अधिक विस्तार सामवेद १०७० से ७२ वाले त्रिक में किया गया है तथा ऋग्वेद ८।४५।३६ से ४२ तक वाले वर्ग में इसी विद्या विशेष के विभिन्न सिद्धांतों पर प्रकाश डाला गया है तथा अथर्ववेद २०। ४३।१०३ वाले प्रकरण का भी इस से कुछ सम्बन्ध लगता है। तैत्तिरीय आरण्यक १।३।१ द्वारा इस प्रकरण को वेद के अन्य स्थलों से जोड़ा प्रतीत है तथा निरुक्त ४।२ में भी इसके लिए कुछ निर्देश हैं।

भर्गः ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक मंत्र सं० २४० में जिसका देवता इन्द्र, छंद बृहती है, में इन्द्र के मघवन् नामक किरण के द्वारा वस्तु सम्पत्ति प्राप्त करने के विभिन्न सिद्धांत दर्शाए हैं। जो सामवेद उत्तरार्चिक के मंत्र संख्या १५८१-८२ के त्रिक या तृच्छ में प्रकाश डाला है इसका और अधिक विस्तार "वसु" नामक विभिन्न स्वर्ण आदि।

सम्पत्ति प्राप्त करने के साधन दर्शाए हैं। इस का और अधिक विस्तार ऋग्वेद ८।६१।६ से १० वाले वर्ग के प्रकरण में विस्तार किया गया है तथा अथर्ववेद २०। ११८।१ वाले प्रकरण से भी सम्बन्ध जोड़ता है।

वशिष्ठ ऋषि ने भी इस विषय में सामवेद पूर्वार्चिक २७० नम्बर के मंत्र जिसका देवता इन्द्र तथा छंद बृहती है में पृथिव्यादि लोकों में बसने वाले वसु नामक धन के साथ विद्युत के विभिन्न सिद्धांतों को दर्शाया गया है। इसका विस्तार सामवेद १७९६ से ९७ वाले त्रिक तथा ऋग्वेद ७।३२।१६ से २० वाले तथा अथर्ववेद २०।८२।२ वाले प्रकरणों से संदर्भित लगते हैं।

नोधा. ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक २९६वें के मंत्र में जिसका कि देवता—इन्द्र, छंद—बृहती। विद्युत विद्या द्वारा वसु नामक धनों को प्राप्त करने के साधन या सिद्धांत दर्शाए हैं तथा सामवेद ३१२ का भी इससे कुछ सम्बन्ध लगता है। इस प्रकरण का सामवेद उत्तरार्चिक ६८५-८६ ऋग्वेद मण्डल ८।८८।१०६ वाले वर्ग यजुर्वेद २६।११ वाला अनुवाक तथा अथर्ववेद २०।९।१ तथा २०।४९ वाले सूक्त से संदर्भित लगते हैं।

वसिष्ठ ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक ३१४, देवता इन्द्र छन्द त्रिष्टुप् में भी विद्युत द्वारा वसु नामक विभिन्न सम्पत्तियों को प्राप्त करने के सिद्धांत दर्शाये हैं जो ऋग्वेद मंडल ७/२४ से ६ वाले वर्ग में विस्तृतीकरण किया गया लगता है।

गौतम ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक ३८९ जिसका देवता इन्द्र छन्द उष्णिक में भी वसु नामक सम्पत्ति को विद्युत धारा प्राप्त करने के प्राप्त करने के सिद्धान्त दर्शाये हैं। इसका संदर्भ सामवेद लगते हैं तथा निरुक्त ४/१७/५/१२ ऐतरेय ब्राह्मण २२।२।६० द्वारा भी निर्देशित हैं। इन्हीं ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक ४१४ उत्तरार्चिक १००२ से ४ ऋग्वेद १।८१।१ से ५ यजुर्वेद ८।३३ तैत्तिरीय संहिता १।४।३७।१ तथा ३८।१ के द्वारा भी एक दूसरे से जोडा गया है।

वसुश्रुत ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक ४२५ जिसका देवता अग्नि छंद पङ्क्ति १ में वर्णित तथा आसव पदार्थों से अग्नि के द्वारा वसु नामक सम्पत्ति को प्राप्त करने के साधन दर्शाए गए हैं। यह सामवेद उत्तरार्चिक १७३६ से ३९, ऋग्वेद ५।६।१ से ५ वाले वर्ग, यजुर्वेद १५। ४१ वाले अनुवाक द्वारा संदर्भित है तथा इन प्रकरणों को वेद के अन्य स्थलों से जोडने के लिए तैत्तिरीय ब्राह्मण ३।११।६-४, तैत्तिरीय संहिता ४।४।४।६ द्वारा निर्देशित हैं।

कृतयशाः ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक मंत्र सं० ५८१ जिसके देवता सोम, छंद, ककुप् में वसु नामक सम्पत्तियों को धारण करने वाले विभिन्न रूपों का वर्णन किया है जो ऋग्वेद मण्डल ९।१०८ के ११, १२ मंत्र सं० द्वारा सिद्धात दिखाए हैं। इसी तरह से ऋणचः ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक ५८२वें मंत्र का वसु नामक भांति-भांति के रत्नों को देने वाले पदार्थों के सिद्धांत दर्शाए हैं। यह सामवेद उत्तरार्चिक १०९६ और ९७ द्वारा विस्तृतीकरण किया गया है तथा ऋग्वेद ९।१०८।१३ से १६ वाले वर्ग में और अधिक विस्तृतीकरण है। □

जप मात्र से असीम लाभ—एक भ्रान्त धारणा

—आचार्य वेदभूषण
अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद

एक बार हम एक नगर में गए थे। उस नगर के जो नगराध्यक्ष या जो नगरपालिका के मेयर थे उन्होंने बड़े आदर व स्नेह से हमें अपने घर पर आमंत्रित किया। इसी अवसर पर उन्होंने अपने घर का एक कमरा हमें दिखलाया। उस कमरे में सुतली (एक प्रकार की डोरी) का ढेर लगा हुआ था। उस सुतली में थोड़े-थोड़े अन्तर से गांठियां लगी हुई थीं।

उन्होंने हमें बतलाया कि ये जो सुतली का विशाल ढेर लग गया है यह मेरी माता जी का प्रसाद है। नगराध्यक्ष ने कहा कि मेरी वृद्धा माता अनेक वर्षों से 'राम राम' का नाम जपती हैं। प्रत्येक राम शब्द के जप के बाद वह सुतली में गाँठ लगाती जाती हैं। जिस का परिणाम है सुतली की गांठियों वाले ढेर से यह कमरा भर गया है।

सन् १९८४ में पुरोहितों के प्रशिक्षण एवं प्रचार के लिए मौरिशस आर्य सभा ने एक वर्ष के लिए हमें मौरिशस बुलाया था। वहाँ एक महिला ने हमें बतलाया कि वह प्रतिदिन सौ बार गायत्री मन्त्र का जाप करती है। गायत्री जप का माहात्म्य तो सनातनी और आर्यसमाजियों में समान रूप से स्वीकार किया जाता है। राम नाम की जगह आर्यसमाज में 'ओ३म्' के जाप का महत्त्व दर्शाया जाता है।

इससे अनेक फल प्राप्ति की बातें प्रचलित हैं। क्या जाप सचमुच ही उत्तम फल देने वाला है? महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज के विचारों को ध्यान में रखते हुए हम इस जप विधि पर विचार करेंगे।

जप क्या है? जप या जाप से हमारा अभिप्राय है 'दोहराना' एक ही शब्द को बार-बार कहना! अंग्रेजी में इसका अर्थ होगा रिपीटेशन। जब छोटी श्रेणियों में गणित का अध्ययन आरम्भ किया जाता है तो प्रायः गिनती और पहाड़े बार-बार दोहराए जाते हैं। यह भी एक प्रकार का अंकों का जाप ही कहलाएगा। इस जाप का एक फल हम प्रत्यक्ष देखते हैं—वह है उस का स्मरण हो जाना। जिस शब्द को या अंकों को हम बार-बार दोहराते हैं वे शब्द या अंक या पहाड़े बार-बार दोहराने से जप करने से हमें स्मरण हो जाती हैं।

इसी जाप के हिसाब के लिए अनेक लोग मनकों की माला भी फेरा करते हैं। पौराणिक भाइयों ने तो राम नाम के बैंक भी खोल दिये हैं। यदि गंभीरता से पूर्ण श्रद्धा के साथ हम विचार करें तो यह शब्द जाप सर्वथा व्यर्थ और निरर्थक ही होता है।

आर्यसमाज में भी अनेक विद्वान् गायत्री जप और ओ३म् शब्द के जप का महत्त्व बखानते हैं। जो इस प्रकार के जप का प्रचार करते हैं उन्होंने वैदिक उपासना पद्धति के महत्त्व को अभी समझा ही नहीं।

चाहे राम शब्द का चाहे ओ३म् शब्द का चाहे गायत्री मन्त्र का हम जाप करें यदि शब्दों को बार-बार दोहराना ही जाप है तो इस जाप का एक ही फल है कि बार-बार के दोहराने से वह शब्द या मन्त्र हमें स्मरण हो जाएगा। इससे अधिक इसका कोई अन्य फल नहीं है।

सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में पौराणिकों की जाप पद्धति का खण्डन करते हुए महर्षि लिखते हैं कि—

प्रश्न—तो कोई तीर्थ, नाम स्मरण सत्य है वा नहीं? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महर्षि पहले 'तीर्थ' के बारे में बतला कर आगे लिखते हैं कि—नाम स्मरण इसको कहते हैं कि—"यस्य नाम महद्यशः" यजुर्वेद का उद्धरण देकर इसका अर्थ इस प्रकार कहते हैं—परमेश्वर का नाम बड़े यश अर्थात् धर्मयुक्त कामों का करना है। जैसे ब्रह्म, परमेश्वर, ईश्वर न्यायकारी, दयालु, सर्व शक्तिमान् आदि नाम परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के हैं। जैसे ब्रह्म सब से बड़ा, परमेश्वर-ईश्वरों का ईश्वर, ईश्वर—सामर्थ्ययुक्त, न्यायकारी—कभी अन्याय नहीं करता, दयालु—कृपा दृष्टि रखता है······आदि नामों के अर्थों को अपने भीतर धारण करे।

इस प्रकार परमेश्वर के नामों का अर्थ जानकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल अपने गुण, कर्म, स्वभाव को करते जाना ही परमेश्वर का नाम स्मरण है।

इसी समुल्लास में दूसरी जगह लिखते हैं कि—"यह केवल इनको भ्रम है कि—राम राम कहने से कर्म छूट जाएंगे। केवल ये अपना और दूसरों का जन्म खोते हैं।

इसी ग्यारहवें समुल्लास में नाम स्मरण अर्थात् जाप के सन्दर्भ में महर्षि के विचार द्रष्टव्य हैं।

प्रश्न—क्या नाम लेना सर्वथा मिथ्या है? जो सर्वत्र पुराणों में नाम स्मरण का बड़ा माहात्म्य लिखा है।

उत्तर—नाम लेने की तुम्हारी रीति उत्तम नहीं। जिस प्रकार तुम नाम स्मरण करते हो वह रीति झूठी है।

प्रश्न—हमारी कैसी रीति है?

उत्तर—वेद विरुद्ध।

प्रश्न—भला अब आप हमको वेदोक्त नाम स्मरण की रीति बतलाइए।

उत्तर—नाम स्मरण इस प्रकार करना चाहिए। जैसे "न्यायकारी" ईश्वर का एक नाम है। इस नाम से जो इसका अर्थ है कि—जैसे पक्षपात रहित होकर परमात्मा सब का यथावत् न्याय करता है, वैसे उसको ग्रहण कर न्याय युक्त व्यवहार सर्वदा करना, अन्याय कभी न करना इस प्रकार एक नाम से भी मनुष्य का कल्याण हो सकता है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचार उनके द्वारा दिए गए पूना के भाषणों से भी स्पष्ट होते हैं। पूना प्रवचन नामक महर्षि के भाषणों का संग्रह है, उसमें पांचवें प्रवचन में दिए गए विचार इस सम्बन्ध में अच्छा प्रकाश डालते हैं। महर्षि अपने भाषण में कहते हैं—आजकल के पंडित लोग ऐसा कहते हैं कि—"पहले केवल मन्त्रोच्चार के सामर्थ्य से आग्नेयास्त्रादि निर्माण होते थे। परन्तु ऐसा (कहना सत्य) नहीं है। मंत्र अर्थात् विशेष अक्षर आनुपूर्विक अर्थात् शब्दों में और अर्थों में संकेत मात्र सम्बन्ध है और (दूसरा) सामर्थ्य नहीं। जैसे अग्नि शब्द में दाहकत्व नहीं है। मन्त्र जप करने में कोरा समय खोना है। व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत धारण करने के समय लड़के का अल्प सामर्थ्य रहने से एक ही मन्त्र उसे बार-बार रटना पड़ता है। इससे यह मंत्र का एक सच्चा विनियोग नहीं है। मंत्र का अर्थ है विचार, राजमंत्री कहने से विचार करने वाला यही सत्य अर्थ होगा। यदि यह अर्थ न मानो तो राजमंत्री या अमात्य राजा का माला लेकर जप करने वाला ऐसा अर्थ करना पड़ेगा। तो मंत्री शब्द का अर्थ जप करने वाला नहीं किन्तु विचार करने वाला ही होता है। वेद मंत्र का सच्चा विनियोग करना अर्थात् बुद्धिवैशद्य, बुद्धयुन्नति, बुद्धिप्रकाश, बुद्धि सामर्थ्य बढ़ाना यह है। इस प्रकार का सामर्थ्य पहले आर्यों में था। वे एक ही मंत्र को लेकर जपते नहीं बैठते थे। परन्तु अनेक मंत्रों की मीमांसा करते थे। इसलिए वारुणास्त्र आग्नेयास्त्र आदि उन्हें विदित थे। अर्थात् पदार्थों के गुणों को जान उनकी विशेष योजना वे करते थे।"

पाठक गण महर्षि के ऊपर उद्धृत किए गए विचारों पर गंभीरता से विचार करें तो ज्ञात होगा कि—ओ३म् शब्द का या गायत्री मंत्र का या अन्य किसी प्रकार के शब्द समूह के या शब्द के जाप का स्मरण के सिवाय अन्य कोई भी लाभ नहीं है।

जो लोग गायत्री मंत्र के जाप करने से बुद्धि आदि का तीव्र होना मानते हैं वे भ्रम में स्वयं तो पड़े ही हुए हैं और औरों को भी इस अन्ध विश्वास में ढकेल कर उनके समय को नष्ट करवाते फिरते हैं।

हमारे उपरोक्त कथन से चौंकिए नहीं! बात को समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

जैसे कोई व्यक्ति वैद्य द्वारा दर्शाई गई औषध का सेवन न कर

जप मात्र से असीम लाभ-एक भ्रान्त धारणा

केवल औषधी के नाम के जाप से रोग का निवारण कभी नहीं कर सकता।

या कोई हलवा बनाने के फार्मूले का प्रतिदिन सौ सौ बार जाप करे तो भी उसे जीवन भर जाप मात्र से हलुए की प्राप्ति नहीं होगी। मंत्र के अर्थ को या किसी भी शब्द को एक ही बार जप कर उसके तात्पर्य को समझ कर तदनुकूल प्रयत्न व आचरण करने से ही फल की प्राप्ति करने की कल्पना अल्प बुद्धि एवं अन्धविश्वासी लोगों के मस्तिष्क की उपज है।

महर्षि पतंजलि ने अपने योग दर्शन में प्रथमपाद समाधिपाद के अट्ठाईसवें सूत्र में कहा है- "तज्जपस्तदर्थभावनम्" अर्थात् उस ओंकार का जप करते हुए उसके अर्थ अर्थात् स्वरूप पर ध्यान देना और उससे भावित होना जाप है न कि केवल शब्द मात्र जपते जाना।

जैसे हम अपनी मां का स्मरण करते हैं तब भी शब्द की प्रधानता नहीं होती अपितु माता के स्वरूप और उसके उपकारों और बातों का ध्यान ही मुख्य रूप से हम करते हैं। मां शब्द से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

अतः नाम स्मरण या गायत्री मन्त्र का जाप आदि का उपदेश करने वाले को और उपदेश सुनने वाले को केवल शब्दोच्चार मात्र से कोई लाभ सम्भव नहीं है। पहले राम राम जपते रहे और अब ओम्-ओम् जप लें तो शब्द समूह के उच्चारण से लाभ होगा सोचना अल्पज्ञता होगी। नाम से मन्त्र से हमें ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है पर जब तक ज्ञान के अनुकूल आचरण नहीं होगा तब तक हम फल से लाभान्वित नहीं हो सकते।

किसी नाम का या शब्द का जाप या स्मरण एक बार करें या सौ बार कर लें इससे विशेष अन्तर नहीं पड़ता। पर जब कोई कर्म एक बार किया जाए या अनेक बार इससे फल पर न्यून और अधिक का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

हम प्रतिदिन सन्ध्या के जिन मन्त्रों का पाठ करते हैं और उन मन्त्रों के अर्थ पर विचार कर उसे अपने जीवन में क्रियान्वित नहीं करते तो उस सन्ध्या के करने का कोई विशेष लाभ नहीं। हां समय की हानि अवश्य है।

आजकल योग ध्यान आदि के नाम पर जो स्वार्थी लोग धनोपार्जन में संलग्न हैं। अष्टांग योग में वर्णित जो यम और नियम हैं जब तक हम उन्हें क्रियात्मक रूप से जीवन में ढाल नहीं लेते तब तक योग सिद्धि या प्रभु दर्शन की बात कोरी आत्म प्रवंचना मात्र है।

इसलिए हम जाप करने वाले साधकों से बहुत विनम्रता और अत्यन्त आत्मीयता से कहना चाहेंगे कि स्मरण करने की दृष्टि से वे शब्द या मन्त्र का बार-बार जाप कर सकते हैं किन्तु यदि किसी अन्य लाभप्रद फल की कामना है तो आप उसके अनुरूप स्वय को ढालने का क्रियात्मक यत्न आरम्भ कीजिये तो आप अनुभव करने लग जाएंगे कि-आप प्रतिपल प्रतिक्षण जीवन में उन्नति करने लगे हैं आगे बढ रहे हैं।

मान लीजिए कि-मैं नित्य सौ बार 'ओ३म्' नाम का स्मरण करता हूं पर फिर दिन भर परमात्मा को भूल जाता हूं। पर जो ओ३म् इस शब्द मात्र का जाप न कर दिन भर प्रत्येक कार्य को प्रभु को उपस्थित जान कर उसे साक्षी रखकर करता है वह निश्चय ही सुफल को प्राप्त करने लग जाता है।

गायत्री मंत्र में 'धीमहि' शब्द का अर्थ ध्यान करें, अवश्य है पर ध्यान से पूर्व स्थिति है धारण करें। बिना धारण किए ध्यान संभव नही है। 'तत् सवितुः देवस्य यद् वरेण्य भर्गः अस्ति तत् धीमहि' अर्थात् उस सविता देव के जो वरण करने योग्य श्रेष्ठ तथा अत्यन्त पवित्र गुण कर्म स्वभाव हैं हम उन्हें निरन्तर धारण करने का प्रयत्न करें। यह प्रयत्न ही गायत्री मन्त्र का वास्तव में जाप है। यदि शब्दों का दोहराना मात्र ही फलदायक होगा तो मनुष्य से भी शीघ्र टेप रेकार्डर और रेडियो सेट मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। क्यों कि उन पर दिन भर यह जाप घुमाया जा सकता है।

सन्ध्या, पूजा, उपासना का मुख्य प्रयोजन शारीरिक मानसिक और आत्मिक पवित्रता और उनकी स्वास्थ्य प्राप्ति ही है। जो इन तीनों का ध्यान नहीं रखता वह सन्ध्या या उपासना का अभिनय मात्र ही करता है।

आशा है हम आर्य जन स्वयं प्रकाश के सत्य मार्ग पर चलेंगे व अन्यों को भी शुद्ध प्रेरणा देंगे न कि अन्ध विश्वासों में ढकेल कर औरों को भी अन्धकार में ढकेलेंगे। हमारे इन विचारो को शुद्ध भावना से ही ग्रहण किया जाना चाहिए। क्योंकि हमारा उद्देश्य यथार्थ सत्य को प्रकट कर के वास्तविक उन्नति की ओर साधकों को अग्रसर करना मात्र है।

अन्यथा अध्यात्म मार्ग के पथिक धीरे-धीरे निराशा से घिरकर सत्य मार्ग से विमुख हो जाएंगे। □

हम कितने धर्म निरपेक्ष हैं ?

रंगमंच पर राजनीतिक और अश्लीलता आदि को लेकर अकसर विवाद उठते रहे हैं। कई एक बार नाटक को आपत्तिजनक करार देकर पुलिस और प्रशासन ने नाटक की प्रस्तुति पर प्रतिबंध लगाए या रंगकर्मियों की पुलिस ने पिटाई की या पूरे रंगकर्मी दल को गिरफ्तार कर लिया गया। कई एक मर्तबा कुछ नाटक द्विअर्थी सवादों और अश्लीलता की वजह से विवाद और आलोचना के घेरे में आए। पर कुछ पहले बंबई में अचानक एक नाटक, जो प्रेक्षकों की अच्छी भीड जुटा रहा था। विवाद के घेरे में आ गया। इस नाटक के विवादग्रस्त होने की वजह न राजनीतिक थी और न ही कोई और, बल्कि धार्मिक भावना के मुद्दे पर वह नाटक सुर्खी में आया।

नाटक था-'शेक्सपीयर की रामलीला'। यह नाटक रिजर्व बैंक में काम कर रहे छब्बीस बरस के इकबाल ख्वाजा ने लिखा है। इससे पहले ख्वाजा 'स्नफू' और 'हम सब गेंडे हैं' भी खेल चुके हैं। पर उनकी शेक्सपीयर की रामलीला' की प्रस्तुति के बाद यह सवाल उठ खड़ा हुआ कि क्या धार्मिक सहिष्णुता सिर्फ हिंदु के लिए है? यह सवाल तब उठा, जब आर्य प्रतिनिधि सभा के कैप्टन देव रत्न आर्य ने तार के जरिए यह कहा कि इस नाटक ने हिंदुओं की भावनाओं को बुरी तरह ठेस पहुंचाई है। कैप्टन आर्य ने इस नाटक पर तत्काल प्रतिबंध लगाने की भी मांग की और एक शाम संयुक्त हिंदु मोर्चा के बैनर तले २०० व्यक्तियों का एक जलूस पृथ्वी थियेटर पहुंच गया। हुआ यह कि 'इंडियन एक्सप्रेस' में उस नाटक का कथा सार छपा था, जिसमें कहा गया था कि रावण और सीता के किरदार रोमियो और जूलियट की तरह खेले गए। ख्वाजा का कहना था कि मैंने लोगों को समझाने की कोशिश की थी कि 'इंडियन एक्सप्रेस' में जो कुछ छपा, वह पूरी तरह गलत है, मगर क्रुद्ध और उत्तेजित लोगों से कौन तर्क कर सकता है? पर कैप्टन आर्य का कहना है कि... 'रामलीला' जैसे नाटक नई पीढी के दिमाग को दूषित करने के लिए ही हैं वरना ख्वाजा ने 'शेक्सपीयर का कुरान' क्यों नहीं लिखा और खेला?

ख्वाजा का कहना है कि नाट्यालेख पूरी तरह हलका-फुलका है और इस उम्मीद से लिखा और खेला गया है कि लोग हंसेंगे। पर हुआ और ही। उत्तेजित भीड़ के नेताओं को ख्वाजा ने नाटक देखने की दावत भी दी। नाटक हो कैसे सकता था। अत ख्वाजा ने अखिल भारतीय हिंदु महासभा के अध्यक्ष विक्रम सावरकर के पैर छूकर उनकी हर मांग मानने का वादा किया और रामलीला की आगामी प्रस्तुतियां रद्द कर दीं।

सांप्रदायिक नजरों से हमारा हिंदी रगमच कम-अज-कम अब तक बचा हुआ था, लेकिन अब यहां भी संप्रदायवादी हवा के झोंके पहुचने लगे हैं। हालांकि हिंदी रगमंच पर यह पहली बार था, पर क्या गारटी है कि यह आखिरी बार है। (इससे पहले बंबई मे ही कैथोलिक समुदाय के लोगों ने एक नाटक पर इसलिए आपत्ति उठाई थी, क्योंकि उसमें क्राइस्ट को एक सामान्य व्यक्ति की तरह पेश किया गया है।) इसमें दो राय नहीं है कि रामलीला से हिंदुओं की धार्मिक आस्था जुडी हुई है और ऐसे नाजुक विषय पर हास्य की रचना दुस्साहसपूर्ण काम है। शायद ख्वाजा ने सोचा होगा कि बबई का प्रेक्षक वर्ग इस विषय को उसके वास्तविक अर्थों मे ही देखेगा। पर यह हुआ नहीं। यह होगा भी नही, क्योंकि आखिर हम धर्म निरपेक्ष हैं...। ख्वाजा ने भी यही कहा है कि अब हम यह नाटक नही खेलेगे।

—अवधेश व्यास

नभाटा, बम्बई, २२ मार्च, १९८७

समाचार

आर्यसमाज के अधिकारियों की सेवा में नम्र निवेदन

आर्यसमाजों का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९८७ को समाप्त हो गया है। आप आगामी वर्ष के वार्षिक साधारण सभा बैठक विधानानुसार ३१ मई १९८७ तक अवश्य आयोजित कर लें तथा आगामी वर्ष के लिए अधिकारियों तथा यदि आपने गत वर्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियों का निर्वाचन न किया हो तो कर लें। आपकी समाज की ओर से प्रथम दस सभासदों पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदों पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है, जिसकी आयु पच्चीस वर्ष से कम न हो और जो पिछले दो वर्षों से समाज का सभासद रहा हो।

आप ३० अप्रैल १९८७ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय में भिजवाने की कृपा करें—

१. १ अप्रैल १९८६ से ३१ मार्च १९८७ का वार्षिक विवरण।

(अ) यज्ञ, सस्कार, शुद्धियां, अन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय साधारण रीति एव बिना दहेज कराये गये विवाहों का तथा समारोहों का विवरण।

(आ) समाज के अधीन चल रही संस्थाओं-विद्यालयों, चिकित्सालय, पुस्तकालय, सेवा समिति, आर्य वीर दल आदि का विवरण।

२. १ अप्रैल १९८६ से ३१ मार्च १९८७ तक का आय-व्यय विवरण।

३. सदस्य सूची-निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वयं बना लें:-

क्रम संख्या (सदस्य का नाम) (पिता का नाम) (पता) (वर्ष भर में प्राप्त सदस्यता शुल्क

४. सदस्यता शुल्क का दशांश, वेदप्रचार न्यूनतम १.१/-रुपये और आर्यसन्देश का वार्षिक शुल्क २५/-रु०

निवेदक
महामन्त्री
डा० धर्मपाल

आर्यसमाज पुष्पांजलि विहार नई दिल्ली की अपील

४५० वर्ग गज भूमि पर स्थापित यह आर्य समाज बड़े उत्साह से कार्य कर रहा है। इस समय यज्ञशाला विस्तार तथा सत्संग भवन व पुस्तकालय के लिए चार लाख की आवश्यकता है। इस पुनीत कार्य के लिए सभी दानी महानुभाव अवश्य सहयोग दें।

—डा० धर्मपाल (सभा मन्त्री)

धन भेजने का पता—
मन्त्री
आर्यसमाज समुदाय भवन
पुष्पांजलि एन्कलेव दिल्ली-३४

शताब्दी समारोह—एक अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का शताब्दी समारोह १५, १६, १७ मई १९८७ को रोहतक में बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना १८८६ में अमृतसर में हुई थी। उस समय पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू कश्मीर राज्यों में इसी सभा के माध्यम से आर्यसमाज तथा समाज-सुधार के कार्य और प्रचार होता था। गत १०० वर्षों में आर्यसमाज ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, शुद्धि आन्दोलन, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन, समालखा तथा कुण्डली में गोहत्या उन्मूलन आदि आंदोलन चलाए हैं, जिनसे आर्यसमाज का प्रभाव जन जन पर पड़ा है।

पंजाब, हरियाणा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से १५ से १७ मई १९८७ तक रोहतक में स्थापना शताब्दी समारोह धूमधाम से आयोजित किया गया है। हम सब का पुनीत कर्तव्य बनता है कि हम इस शताब्दी समारोह को सफल बनाने के लिए अपना तन, मन; धन से सहयोग करें। दिल्ली की आर्यसमाजों ने सभा के प्रत्येक आयोजनों में बढ़ चढ़कर भाग लिया है और संगठन शक्ति का परिचय दिया है।

शताब्दी समारोह के उपलक्ष में १५।५।८७ को दोपहर ३ से ५ बजे तक रोहतक नगर में शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया है। इस शोभायात्रा में भी आप विशेष बसों द्वारा अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर भाग लें।

आपसे मेरी सभा की ओर से सानुरोध प्रार्थना है कि आप इस शताब्दी समारोह को अधिक से संख्या में पहुंचकर सफल बनायें तथा अपनी समाज की ओर से तथा अपनी और सहयोग राशि भी अवश्य "आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, दयानन्द मठ, रोहतक (हरियाणा)" के पते पर भेजें और उसकी सूचना सभा कार्यालय को भी देने की कृपा करें।

महामंत्री
(डा० धर्मपाल)

गृहस्थों के वेद सन्देश

(पृष्ठ २ का शेष)

खूबसूरत और मुलायम बनते थे कि उनकी तुलना नहीं हो सकती थी।"

इसके अतिरिक्त सुविख्यात विद्वान डा० इलर ने ऋग्वेद के कतिपय मन्त्र उद्धृत करके यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि वैदिक काल में आर्य लोग अन्य राष्ट्रों के साथ अपना व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करके अगणित द्रव्य प्राप्त करते थे। नाव और जहाज बनाने का हुनर भी उस समय मौजूद था। ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ११६ मंत्र ५ में अगाध समुद्र को चीरते १०० पतवारों से सज्जित जहाज का वर्णन है।

उस समय के भारत की इस स्पृहणीय स्थिति का वर्णन राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने 'भारत-भारती' नामक काव्य ग्रन्थ में इस प्रकार किया—

रौंदी हुई है सब हमारी,
भूमि इस संसार की।
फैला दिया व्यापार,
कर दी धूम धर्मप्रचार की॥

यदि हम अपने देश की उस उन्नत अवस्था को तुलना वर्तमान अधोगति से करते हैं, तो उसमें जमीन आसमान का अन्तर पाते हैं तथा इसका कारण वही है, जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं अर्थात् यह कि उस समय हम वेदों के उपदेशों का पालन करते हुए प्रेम-पूर्वक संगठित होकर रहते थे और अब आपस में मनोमालिन्य, वैर-विरोध, ईर्ष्या, द्वेष से अभिभूत होकर माता-पिता तथा पुत्र-पुत्री, भाई-भाई तथा बहन-बहन और पति-पत्नी भी अपनी-अपनी डफली और अपना-अपना राग अलापने में लगकर गोस्वामी तुलसीदास जी की इस सूक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं:—

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना॥

तथा जिस भेदभावपूर्ण दुष्प्रवृत्ति का दुष्परिणाम हम महाभारत के युद्ध में देख चुके थे, जिसका वर्णन श्री मैथिलीशरण गुप्त ने अपने उक्त 'भारत-भारती' नामक ग्रन्थ में इन खेदपूर्ण शब्दों में किया है—

हा! बन्धुओं के ही करों से
बन्धु कितने कट मरे।
वह अब भारत अन्त में
बन ही गया मरघट हरे॥
इस सर्वनाशी युद्ध का
वह दृश्य कैसा घोर था।
उस ओर था यदि पुत्र तो
लड़ता पिता इस ओर था॥
सन्तान ही के रक्त से यह
मातृभूमि सनी यहाँ।
उस स्वर्ग की सी वाटिका
की हाय राख बनी यहाँ॥

तथा यह भी—

आनन्द नद में मग्न थे,
जिस देश के वासी सभी।
सुर भी तरसते थे जहां
पर जन्म लेने को कभी॥
हा! आज उस की यह दशा,
संताप छाया सब कहीं।
सुर क्या, असुर भी अब
यहां का जन्म चाहेंगे नहीं॥

अस्तु। यदि हमें अपने देश को पूर्व काल की भांति पुनः सुखी, सम्पन्न तथा धन-धान्य पूर्ण बनाकर "स्वर्गादपि गरीयसी" के पद पर पहुंचाना अभीष्ट है तो हम को अपने आचरण और व्यवहार में पूर्वोक्त वेदोक्त जीवन को अपनाना पड़ेगा। ऐसा हम जितना शीघ्र करेंगे, उतना ही अच्छा होगा।

पुरोहित चाहिए

"आर्य समाज एच० ई० एम० पिपलानी-भोपाल (म० प्र०) हेतु एक सुयोग्य, विद्वान, कर्मठ कार्य करने वाले पुरोहित की आवश्यकता है, जो समाज, स्कूल एवं आसपास वेदप्रचार एवं संस्कार आदि आदि कार्य कर सके। समाज में आवास, पानी, बिजली आदि सुविधायें निःशुल्क हैं। वेतन (दक्षिणा) योग्यतानुसार होगी। कृपया पूर्ण विवरण एवं अपेक्षित वेतन के साथ आवेदन करें।"

मंत्री
आर्यसमाज बी०एच०ई०एम०
पिपलानी-भोपाल
(म० प्र०) ४६२०२१

सचमुच दयानन्द तुम थे महान्

तुमने ऐसा आन्दोलन चलाया
विदेशियों को भारत से भगाया
शिक्षाक्षेत्र में नया परिवर्तन आया
जिसने अज्ञान तिमिर को मिटाया
देश में राष्ट्रीयता का भाव जगाया
जिसने फूट के गढ़ों को ढहाया
कैसे करें तुम्हारा गुणगान
सचमुच दयानन्द तुम थे महान् ।

तुमने धर्म की सही परिभाषा की
दीन दलितों को नई आशा दी
वेदों का सच्चा मार्ग बताया
जिसने आडम्बर पाखण्ड हटाया
धर्म का सच्चा स्वरूप दिखाया
मुक्ति का सच्चा मार्ग दिखाया
कैसे करें तुम्हारे सुकर्मों का बखान
सचमुच दयानन्द तुम थे महान् ।

हिन्दी को आर्यभाषा बनाया
उसके प्रचार का बीडा उठाया
स्वदेशी भावना घर-घर पहुंचाया
अछूतोद्धार का आन्दोलन चलाया
ऊँच नीच का भेद मिटाया
सबको नैतिकता का पाठ पढाया
कैसे गायें तुम्हारी देशभक्ति का आख्यान
सचमुच दयानन्द तुम थे महान् ।

विधवाओं की स्थिति को सुखद बनाया
बाल-विवाह पर रोक लगाया
गोहत्या बन्दी हेतु अभियान चलाया
नशासेवन के दुष्परिणाम बताया
तुमने परहित जीवन दान दिया
पत्थर खा, विष पी काम किया
तुम थे त्याग तपस्या की खान
सचमुच दयानन्द तुम थे महान् ।

—डाο शकुनचन्द गुप्त विद्यावाचस्पति

पाकिस्तान बनवाने वाले...

(पृष्ठ १ का शेष)

पार्टियों का सफाया हो गया जो इस्लाम या पाकिस्तान के नाम पर चुनाव मैदान में उतरी। ये लोग जमात-ए-इस्लामी और जमात उल उलेमा-ए-पाकिस्तान से अपनी पहचान बनाकर पाकिस्तान के आदर्शों के रक्षक के रूप मे उभर रहे थे। लेकिन चुनाव परिणामों से इनको गहरा आघात लगा।

पूर्वी बंगाल का १९७१ में अलग होना एक ऐसा आघात था जिससे मुहाजिर यह समझ गये कि पाकिस्तान आदर्शों के बल पर जिन्दा नहीं रह सकता। लेकिन उर्दू के एकाधिपत्य और आदर्शों के बिना मुहाजिर अपने को अलग-थलग महसूस करने लगे।

१९८० में सिंध भारी संख्या में पंजाबी और पठानों के आ जाने से उनकी स्थिति और डावाडोल हुई। लोकतंत्र बहाली आंदोलन द्वारा शुरू सिविल नाफरमानी आंदोलन में पंजाबियों के शासन के खिलाफ सिंधियों का आक्रोश उभरा, मुहाजिरों के खिलाफ नहीं। इस दौरान मुहाजिर और जीये सिंध के युवक एक साथ हो गये। उसी साल पाकिस्तानी नौ सेना का मुख्यालय कराची से इस्लामाबाद चला गया और बहुत से मुहाजिर बेकार हो गये। उनका पठानों के साथ खूनी संघर्ष हुआ जो कि सिंध के पंजाबियों के साथ यह माग कर रहे हैं कि मुहाजिर भारत वापस जाए। □

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ अंक ३३ रविवार ५ जुलाई १९८७ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ आषाढ़ २०४४ दयानन्दाब्द—१६३
मूल्य : एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

अभागा पंजाब

—के० नरेन्द्र

समझ नहीं आता कि भारत की दुर्भाग्य कहूं या पंजाब का या पंजाब में रहने वाले हिंदू सिखों का, क्योंकि पिछले पांच छह वर्षों में इसकी समस्या हल करने का जो भी प्रयास किया गया है वह असफल ही हुआ है। आपरेशन ब्लू स्टार के बाद यह विचार हुआ कि शायद अब प्रांत में शांति हो जावे। किंतु अब यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि जिन लोगों ने आपरेशन ब्लू स्टार की सलाह श्रीमती इन्दिरा गांधी को दी थी। इनके मन में कोई बात स्पष्ट न थी कि इसके बाद इन्होंने क्या करना है। मुझे बड़ी अच्छी तरह से याद है कि १० जून सन् १९८४ के समीप मैंने लिखा था कि आपरेशन ब्लू स्टार के श्रीमती इन्दिरा गांधी को यह सोच लेना चाहिए कि साम्प्रदायिकों से कोई समझौता सफल नहीं हो सकता। इसलिए कि वे यह भी समझते हैं कि इनकी किसी मांग को मान लेना इन के आगे झुकने का दूसरा नाम है। इनकी मांग सच्चाई व न्याय और सहनशीलता पर चूंकि आधारित नहीं होती इसलिए जब भी वे मान ली जाती हैं तो इनका साहस और भी बढ़ना प्रारम्भ हो जाता है और वे यह समझना आरम्भ हो जाते हैं कि जो कोई [illegible] इनके आगे झुक गया [illegible] झुक जायेगा। कुछ ऐसा ही पंजाब में हुआ। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आतंकवाद को [illegible] किया किन्तु यह बात न समझी कि यह आतंकवाद [illegible] नहीं बल्कि [illegible] बीमारी का एक लक्षण है। बीमारी तो साम्प्रदायिकता थी और श्रीमती जी [illegible] परिणाम यह हुआ कि [illegible] समय की आपरेशन ब्लू स्टार से पहले था। वैसे इन्दिरा ने सिखों में सांप्रदायिकता को समाप्त करने का कोई समुचित प्रयास न किया और यह न समझा कि आपरेशन ब्लू स्टार की आवश्यकता क्यों पड़ी। मुझे बाद में प्रकट होने वाली घटनाओं पर दुख था किंतु इतना संतोष अवश्य था कि मेरा अनुमान ठीक सिद्ध हुआ और इसका प्रमाण ३० अक्तूबर को मिल गया जब इन्हीं खालिस्तान समर्थकों ने श्रीमती इन्दिरा गांधी की जीवन लीला समाप्त करके रख दी।

इनके बाद उनका बेटा जान शासनारूढ़ हुए। मुझे याद है जब आपने शासन संभाला तो मैंने लिखा था कि आप नवयुवक हैं इसलिये ठीक सम्भव है कि देश की बिगड़ी हुई परिस्थितियों को सुधार सकें। किंतु मुझे कुछ संकोच अवश्य था इसलिए कि मेरा अनुभव यह था कि केवल लोकप्रिय होना या पढ़ा लिखा होना ही किसी भी देश और विशेषतः भारत जैसे देश की समस्याओं को हल करने के लिये काफी नहीं है। इसके लिए अनुभव, संवाद, इतिहास का ज्ञान, पिछले एक सौ वर्षों की घटनाओं की समझ विभिन्न नेताओं के रुझानों की समझ आदि इत्यादि बातों का जानना आवश्यक था। इसलिए मैंने अपनी राय बिलकुल प्रकट न की थी किंतु कुछ ही दिनों में मुझे यह दिखाई दे गया कि जिन [illegible] के बल से मेरा दिमाग [illegible] था वह निर्मूल न था। अपने व्यवहार से भी राजीव गांधी ने देश की जिस समस्या को भी हाथ में लिया उसमें हेराफेरी की। दूसरी समस्याओं को छोड़िये पंजाब की समस्या हल करने के लिए आपने जितना प्रयास किया वह सारे का सारा व्यर्थ सिद्ध हुआ। आपने सबसे पहले अकाली नेता संत हरचंद सिंह लोंगोवाल से समझौता किया। आज हरियाणा के चुनाव ने इसकी सम्पुष्टि कर दी है। ऐसा क्यों हुआ है केवल इसलिए कि राजीव साहब ने अपनी हेकड़ी में किसी और को सुनने की आवश्यकता ही न समझी और स्वयं इन्हें घटनाओं और इतिहास का पता न था और देशवासियों पर यह सिद्ध करने के लिये कि जहां इनकी पूज्य माता जी असफल हो गईं वहां आपने यह कमाल कर दिया है कि पंजाब की समस्या का हल पेश कर दिया है। श्री राजीव के जितने ढिंढोरची थे उन्होंने पंजाब के समझौते को राजीव के जीवन में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर बताया। किन्तु जो लोग मेरे विचार पढ़ते रहे हैं वे इस बात के गवाह हैं कि मैंने समझौते के दूसरे दिन ही लिख दिया था कि यह समझौता कभी सफल न होगा। क्योंकि यह सच्चाई, न्याय और सहनशीलता पर आधारित नहीं है। राजीव गांधी अकाली सूरमाओं के आगे घुटने टेकने पर विवश कर दिये गये हैं और जो समझौता आपने किया है वह कभी सफल न होगा। न केवल इसलिए कि इसमें जानबूझ कर हरियाणा के हितों की हत्या करके रख दी थी बल्कि अकाली मनोवृत्ति को एकदम से दृष्टि से ओझल करके इन नेताओं से समझौता कर लिया गया था। दुर्भाग्य से इसने किसी को संतुष्ट न किया। हरियाणा के लोग घोषित रूप में इसके विरुद्ध थे। भजनलाल और बंसीलाल जैसे भाड़े के टट्टू तो इसकी प्रशंसा करने पर विवश थे किंतु और किसी ने इसे स्वीकार न किया। और तो और पंजाब में भी इसका परिणाम न्यूनाधिक वही हुआ जो हरियाणा में हुआ था। हरियाणा के कांग्रेसी इसके पक्ष में आवाज निकाल रहे थे और इसी तरह पंजाब में लोंगोवाल धड़े के लोग इसका दम भरते थे। किन्तु इनके सिवाय कोई भी इसका नाम लेने को तैयार न था पंजाब के हिंदू चूंकि किसी गिनती में न थे इसलिये राजीव को इनकी भावनाओं की रत्ती भर भी चिंता न थी। किंतु सिखों में भी भारी संख्या ने इस समझौते का विरोध किया। बादल धड़ा इनके विरुद्ध था। सारे उग्रवादी इसके विरुद्ध थे। बरनाला धड़े में काफी ऐसे थे जो इसके पक्ष में केवल इसलिए आवाज निकाल रहे थे कि इन्हें कुछ कुर्सियां मिली हुई थीं। इस प्रकार यह समझौता असफल होना था और हो भी गया।

इसके लिये जितनी भी कमीशनें बनीं इन्होंने यह फतवा दिया कि चंडीगढ़ पंजाब को तभी मिल सकता है जब पंजाब हरियाणा को ७० हजार एकड़ आराजी दे। यह ७० हजार एकड़ जमीन कौन सी होनी थी यह इस कमीशन ने न बताई और यह काम दूसरे कमीशन के सुपुर्द कर दिया गया। दूसरा कमीशन यह निर्णय न कर सका कि कौन से क्षेत्र इस ७० हजार एकड़ आराजी में सम्मिलित किये जाने थे केवल इसलिए कि जिस पंजाब समझौते की शर्तों का यह सब विवाद था वह इस अयोग्यता से निर्माण की गई थी कि पहले ही दिन से यह कह दिया गया था कि यह समझौता असफल हो जायेगा और इसके लिए जितनी कमीशनें बनेंगी वे भी कुछ दिन की उछल कूद के बाद नाकारा सिद्ध हो जायेंगी। चुनांचे ऐसा ही हुआ। दूसरी कमीशनें भी यह निर्णय न कर सकीं कि कौन सा ७० हजार एकड़ आराजी हरियाणा को दिया जाय। इस प्रकार चंडीगढ़ आज वहीं का वहीं ही है जहां उस दिन था जब यह समझौता तय हुआ था और आज प्रत्येक इसकी असफलता

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

कथा माला—४

ईशोपनिषद् प्रवचन

पूज्य महात्मा नारायण स्वामी

(गतांक से आगे)

इस मन्त्र में ईश्वर के कतिपय गुणों को इकट्ठा कर दिया है। उपासना क्यों करनी चाहिए? अपनी उन्नति के लिए उनकी उपासना करते हैं। उनके गुणों को अपने सामने रखकर उन्हें अपने भीतर लाओ और अपना जीवन उन्नत करो यही उपासना का ठीक ठीक अर्थ है और इसी को उपासना का पहला अङ्ग कहते हैं। उसके बाद देखना है कि मनोवृत्ति कैसी होनी चाहिए। उपासना का दूसरा और अन्तिम अङ्ग ब्रह्म को हृदय में धारण कर लेना है। पहले अङ्ग मे जहां वाचक को समझते हुए हृदय मे रक्खा जाता है वहाँ दूसरे अङ्ग मे हृदय को वाच्य का मन्दिर बनना पड़ता है। ब्रह्मविद्या के पहले अङ्ग की प्राप्ति के लिए उद्योग सन्ध्या से शुरू किया जाता है और दूसरे अङ्ग की पूर्ति अष्टाङ्ग योग के आखिरी अङ्गों से होती है। सन्ध्या से शारीरिक मानसिक और आत्मिक तीनों प्रकार की उन्नति हुआ करती है।

जो आदमी सब चीजों मे ईश्वर को देखता है और ईश्वर मे सब चीजों को देखता है वह सब का प्यारा हो जाया करता है। जब हम ऐसा समझ ले तब संसार के सब प्राणी ईश्वर के मन्दिर के रूप में दीख पड़ेगे और यदि हम वास्तविक प्रेम करते हैं तो हम उसके मन्दिर का किस प्रकार अनिष्ट चिन्तन कर सकते है? इस बात के तत्त्व को समझने वाला किस प्रकार उस मंदिर को नष्ट भ्रष्ट कर सकता या उससे घृणा कर सकता है। फिर छुआ छूत के झगड़े किस प्रकार ठहर सकते हैं। उपर्युक्त वाक्य मे विश्व प्रेम का कितना सुन्दर पाठ सन्निहित है। है। जब हमारी वृत्ति विश्व-प्रेममय हो जायेगी तो सब हमें प्यार करेंगे। वृन्दावन में मैंने देखा कि तीन चार लड़कों ने अपना एक-एक मोर निश्चित कर रक्खा था। लड़के दाने ले जाते थे और अपने अपने मोर को खिला दिया करते थे। मोर भी बिना किसी भय या शङ्का के दाने खा जाया करते थे। यह बात इससे और भी सुस्पष्ट हो जाती है कि जहां पशु-पक्षियों का शिकार-वर्जित नहीं है वहाँ के पशु-पक्षी मनुष्य से सशङ्कित रहा करते हैं और उसकी आहट सुनते ही डर जाया करते हैं परन्तु जहां वर्जित है वहां शिकार के पशु-पक्षी स्वच्छन्द रीति से विचरण किया करते हैं और मनुष्य से प्रेम करते हैं। यह प्रेम और घृणा का कितना सुन्दर उदाहरण है। पशु-पक्षी तथा प्राणि मात्र से प्रेम करना, न कि घृणा, विश्व प्रेम की श्रेष्ठ मनोवृत्ति का द्योतक है। यह मनोवृत्ति ईश्वर को सब प्राणियों में देखने और सब प्राणियों को ईश्वर में देखने से ही विकसित हुआ करती है।

एकत्व

योग के सातवें अङ्ग तक पहुंचने पर जिज्ञासु को तीन बातों का ध्यान रहता है। वे तीन बातें इस प्रकार हैं।

(१) ध्यान। (२) ध्याता। (३) ध्येय।

ध्यान की अवस्था मे ध्यानावस्थित जिज्ञासु समझता कि वह ध्याता है और किसी ध्येय की प्राप्ति के लिए ध्यानरूपी क्रियाएं करता है। जब ध्यान से ऊँची अवस्था में पहुंचना है तब ध्याता और ध्यान दोनों को भूल जाया करता है। तब ध्येय ही उसके सामने रह जाया करता है। प्रेम की ऊँची हालत यही है जब वह अपने प्यारे के ध्यान में अपने को भूल जाय। तब उसे हर जगह अपने प्यारे के ही दर्शन होते हैं। यहीं एकत्व देखता है और यहीं द्वैत और अद्वैत दोनों वाद मिलते हैं।

ध्यान

जब यह कहा जाता है कि निराकार ईश्वर का ध्यान करो तब लोग स्वाभाविक रीति से कहा करते हैं कि जिसकी कोई शक्ल नहीं, सूरत नहीं, रूप नहीं, भला फिर किस प्रकार कोई उसका ध्यान कर सकता है? ऐसे लोगों ने समझ लिया है कि हम किसी बाहरी रूप-रंग वाली वस्तु को अपने ध्यान में लाया करते हैं परन्तु बात इसके सर्वथा विपरीत है। ध्यान उसे कहते हैं कि जो चीज तुम्हारे भीतर जमा है उसे निकाल कर फेंक दो। तब ही कपिल ने कहा है "कि मन के खाली (निर्विषय) कर देने को ध्यान कहते हैं।"

मन का खाली करना

मन को खाली करने का अभिप्राय यह है कि मन का इन्द्रियों से काम लेना, जिससे जागृत अवस्था बना करती है छूट जावे तथा मन का अपने भीतर काम करना भी, जिससे स्वप्नावस्था बनती है, बन्द हो जावे अर्थात् मनुष्य की जागृत अवस्था में ही सुषुप्ति की हालत हो जाने को मन का खाली हो जाना कहते हैं।

साधन

आत्मा की दो वृत्तियां होती हैं। एक बहिर्मुखी और दूसरी अन्तर्मुखी जब आत्मा को बहिर्मुखी वृत्ति काम करती है तब अन्तर्मुखी काम नहीं करती। बहिर्मुखी वृत्ति को बन्द करना ही मन का निर्विषय करना है। इसके साधन ध्यान के अभ्यास हैं। मन के खाली हो जाने मात्र से आत्मा की अन्तर्मुखी वृत्ति खुद जारी हो जाया करती है। नहर रूपी बाह्यवृत्ति के बन्द होने से आत्मा रूपी नदी में अन्तर्मुखी वृत्ति रूप जल स्वयमेव बहने लगता है। मन का खाली करना उपासना का अन्तिम अंग है। यहां पहुंचकर जिज्ञासु को जो आनन्द प्राप्त होता है वह केवल अनुभव की चीज है। है। तर्क इत्यादि से नहीं जानी जा सकती। उपनिषद् ने इसे निदिध्यासन कहा है। तात्पर्य यह है कि पहले अपने को जानो। जब जान लोगे तब परमात्मा की तलाश की जरूरत नहीं वह स्वयं मिल जायेगा। यही ईश्वरोपासना का अंत है।

ईश्वर प्राप्ति का उपाय

ऋग्वेद में कहा है—

"हे प्रकाश वाले प्रभो! यदि मैं तू हो जाऊं, तू मैं हो जाय तब ही आपका आशीर्वाद सच्चा हो जाय।"

आशीर्वाद यह है कि अमरता प्राप्त करो। अमरता प्राप्त करने के लिए मेरा और तेरापन सब दूर हो जायगा। मेरे-तेरे की जड़ में अहंकार है। अहंकार से ही बन्धन पैदा हुआ है और इसी से ठहरा है। ईश्वर-प्राप्ति पथ तक जाने पर खोलना पड़ता है। मनुष्य जब तक मन और बुद्धि के चक्र में रहता है तब तक अहंकार में ही रहा करता है, इसी को बाहर की वृत्ति कहते हैं। जब इसके चक्र से निकल जाता है तब ही भीतर की ओर चला करता और अमरता प्राप्त किया करता है। इसी संबंध में कबीर ने ठीक ही कहा है।

"भीतर के पट जब खुलें, बाहर के हों बन्द" एक और कवि ने कहा:

बेखुदी छा जाय ऐसी,
दिल से मिट जाये खुदी।
उनके मिलने का तरीका,
अपने को खो जाने में है।

आगे कबीर ने कहा है—

जब मैं थी तब हर नहीं।
जब हर है तब मैं नाय।
प्रेम गली अति सांकरी,
जा में दो ना समायँ॥

अर्थात् अपने को साथ लेकर चलोगे तब वह नहीं मिलेगा। जब अपने को छोड़कर प्रेममय होकर चलोगे तब वह मिल जायेगा।

रहस्य

उपासना का प्रारम्भ ईश्वर के गुणों के मनन और उनको जीवन मे धारण और चरितार्थ करने से होता है। इसके लिए सन्ध्यादि का विधान है। उपासना का दूसरा अङ्ग ध्यान से बहिर्मुखी वृत्तियों का बन्द करना और अन्तर्मुखी वृत्ति जागृत करना है और अन्तर्मुखी वृत्ति से ईश्वर का साक्षात्कार करना है। यहां प्रश्न निराकार साकार का नहीं रहता है। दोनों वृत्तियों का ही है यही निराकार प्रभु की उपासना का रहस्य है। इस उपनिषद को कण्ठ करके उपरान्त सन्ध्या योग से उपासना करके उसकी उदात्त शिक्षाओं पर विचार और मनन करो। यह हृदय पर छाप डालेगी और तुम्हें ऊँचा उठायेगी तथा अन्तिम ध्येय तक पहुंचाने में सहायक होगी।

कथा सातवीं

बहनो और भाइयो!

आप पिछले दो दिनों में इस उपनिषद् के दो भाग सुन चुके हैं। आप को याद रहा होगा कि प्रथम भाग में वे पांच बातें बतलाई गई थीं जिनके अनुकूल आचरण से मनुष्य लोक और परलोक में श्रेष्ठ बना करता है। इसके बाद कल आप के सामने ब्रह्मविद्या और ईश्वर-प्राप्ति के संबंध में प्रारम्भिक और अन्तिम बातें रक्खी गई थीं। आज ईश्वर-प्राप्ति के साधनों पर विचार किया जायेगा।

(क्रमश:…)

स्व० चरणसिंह और आर्यसमाज

लेखक—आचार्य दत्तात्रेय (वाब्ले) आर्य अजमेर

चौधरी चरणसिंह के निधन पर देश के प्रमुख अंग्रेजी तथा हिन्दी समाचार पत्रों ने अपने-२ दृष्टिकोण से कई प्रकार की प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की हैं। अनेक प्रमुख नेताओं ने भी उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने विचार व्यक्त किये हैं। चौधरी साहब जैसे राजनैतिक क्षेत्र के एक वरिष्ठ नेता के संबंध में ऐसी प्रतिक्रियाएँ स्वाभाविक है। उनकी राजनैतिक विचारधारा तथा दलगत राजनीति के संबंध में इसलिये मैं यहां कोई विवेचन नहीं करना चाहता। किन्तु इन सब मूल्यांकनों में जिस बात पर प्रायः सब एकमत प्रतीत होते हैं वह यह है कि चौधरी साहब एक ईमानदार निष्ठावान तथा स्पष्टवादी राजनेता थे। जैसा 'टाइम्स आफ इंडिया' आदि कुछ पत्रों ने लिखा है कि उनकी इन विशेषताओं का श्रेय आर्यसमाज को है।

चौधरी साहब उन थोड़े से गिने चुने प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं में से एक थे जिन्होंने कभी यह स्वीकार करने में संकोच नहीं किया कि उनका प्रारंभिक जीवन व चरित्र निर्माण आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द की ही देन है। समाचार पत्रों में उनके निवास स्थान के उस कमरे का चित्र प्रकाशित हुआ है जिसमें उनका पार्थिव शरीर जनता के दर्शनार्थ रखा गया था। उस कमरे में दो चित्र साथ साथ रखे हुए दिखाई देते हैं—प्रथम ऋषि दयानन्द तथा दूसरा महात्मा गांधी का। इन दोनों ही की कुछ विशिष्ट शिक्षाओं के श्री चरणसिंह एक प्रतीक थे। देश के आर्थिक नवनिर्माण और विशेषकर ग्रामीण किसानों की उन्नति के संबंध में उनका दृष्टिकोण स्पष्टवादी तथा गांधीवादी था। उनका सादा जीवन तथा रहन सहन भी एक गांधीवादी नेता का स्मरण दिलाता था किन्तु ऋषि दयानन्द ही उनके वास्तविक प्रेरणा-स्रोत व मार्गदर्शक रहे हैं यह तथ्य भी निर्विवाद है। उनकी निर्भीकता स्पष्टवादिता, सैद्धान्तिक दृढ़ता तथा जन्मगत जातपांत जैसी कुरीतियों का विरोध इसका प्रमाण है। अपने इस संक्षिप्त लेख में, मैं उसके केवल कुछ उदाहरण देकर उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं।

जाट बनाम किसान

चौ० चरणसिंह जी के संबंध में उनके समालोचक अक्सर यह कहते हैं कि उन्होंने राजनीति में जातिवाद और विशेषकर जाटवाद को प्रोत्साहन दिया किन्तु उनके जीवन, व्यवहार व विचार इन तीनों से इन आरोपों का खंडन होता है। उन्होंने अपनी कन्याओं का विवाह जन्मगत जातिपांत तोड़कर, गैर जाटों में किया, मुझे स्मरण नहीं है कि वे कभी किसी जाट संस्था या संगठन से संबंधित रहे हों और न ही किसी जाट सम्मेलन या सभा की उन्होंने अध्यक्षता या सदस्यता स्वीकार की। ये सही है कि देश में किसान वर्ग और विशेष कर उत्तर भारत में किसानों में एक बड़ी संख्या जाटों की है, किन्तु साथ में यह भी सही है कि चरणसिंह उनके समर्थक या नेता इसलिए नहीं थे कि वे जाट थे बल्कि इसलिए थे कि वे किसान थे। यही कारण है कि उनके समर्थकों में जाटों के अतिरिक्त गूजर, अहीर आदि अन्य पिछड़ी जाति के किसानों की बहुत बड़ी संख्या थी। अनेक उच्च जाति के लोग भी जिन्हें गांधी जी की ग्रामीण अर्थ व्यवस्था और बड़े उद्योगों के स्थान में कुटीर उद्योगों के महत्त्व में विश्वास था। चौधरी साहब को अपना नेता स्वीकार करते थे। लोकदल आदि जिन दलों का नेतृत्व उन्होंने किया उनमें प्रायः सब जातियों के, यहां तक कि मुसलमान भी तटस्थ व अधिकारी रहे हैं।

जाट राजपूत विवाद

राजस्थान में जाटों के साथ राजपूतों द्वारा दुर्व्यवहार किये जाने के अनेक उदाहरण दिये जाते हैं। उन्हें अपेक्षाकृत छोटी जाति का समझ कर राजपूत राजा और ठिकानेदार सामाजिक दृष्टि से उनके साथ लगभग अछूतों जैसा व्यवहार करते थे। अपने विवाह में जाट वर को घोड़े पर नहीं बैठा सकते थे और न ही वधू को सोने के जेवर पहना सकते थे। यहां तक कि वे अपने भोज में देशी घी का प्रयोग नहीं कर सकते थे उन्हें तेल का ही उपयोग करने की छूट थी। जैसा चौधरी साहब ने एक बार कहा था, 'जन्माभिमानी क्षत्रियों के इसी प्रकार के दुर्व्यवहार का परिणाम था कि पंजाब में लगभग ५१ प्रतिशत जाट या तो मुसलमान हो गये या फिर सिख बन गये। आधुनिक युग में ऋषि दयानन्द ही एकमात्र ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने वेद और शास्त्रों के आधार पर जाटों को क्षत्रिय घोषित किया। इतना ही नहीं आर्यसमाज के अनेक प्रसिद्ध सन्यासी, विद्वान्, पंडित आदि जन्म से जाट हैं। आज भी यदि किसी वर्ग विशेष के अधिकांश व्यक्ति आर्यसमाज के अनुयायी हैं तो वे जाट ही हैं। चौ० चरणसिंह जी इसीलिए अन्त तक अपने आप को आर्यसमाजी व ऋषि दयानन्द का अनुयायी घोषित करने में गौरव अनुभव करते थे।

अन्तर्जातीय विवाह एकमात्र उपाय

मेरी सम्मति में उनकी सब से बड़ी देन उनका जातिवाद के विरुद्ध वह क्रांतिकारी अभियान था, जिसे स्व० पं० नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेता भी स्वीकार करने में झिझकते थे। चौधरी साहब ने पं० नेहरू से सन् १९४५ में ही यह मांग की थी कि वे कम से कम सरकारी अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिये अन्तर्जातीय विवाह अनिवार्य कर दें किन्तु नेहरू जी ने उनके सुझाव को यह कह कर अमान्य कर दिया कि विवाह एक व्यक्तिगत मामला है उसमें राज्य या कानून को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। नेहरू जी की यह दलील सैद्धान्तिक दृष्टि से सही थी, किन्तु भारत की परिस्थितियों में उसका एक सामाजिक व राष्ट्रीय पहलू भी है। जन्मगत जातपांत न केवल हमारे सामाजिक अपितु राष्ट्रीय जीवन का भी एक बड़ा अभिशाप रहा है, कुछ अपवादों को छोड़कर कोई भारतीय और विशेषकर हिन्दू अपना विवाह केवल व्यक्तिगत गुण दोषों के आधार पर शायद ही करता हो। प्रायः सब जाति व धर्मों के लोग विवाह संबंध अपनी जाति व धर्म की सीमा के अन्दर ही करते हैं। यहां तक कि आर्यसमाज की स्थापना के पूर्व व बाद में हिन्दू कोड बिल के पारित होने के पहले अपनी जाति में ही विवाह करना कानून की दृष्टि से आवश्यक था। यदि कोई उच्च वर्ग का हिन्दू किसी अन्य जाति की कन्या से विवाह कर लेता था तो उसे कानून भी स्वीकार नहीं करता था। ऐसे विवाहों में उत्पन्न संतानें अवैध समझी जाती थी। उन्हें अपनी पैतृक सम्पत्ति में कोई अधिकार या हिस्सा नहीं मिल सकता था। ऐसी स्थिति में चरणसिंह जी का सुझाव जातिवाद के उन्मूलन के लिए एक सर्वथा उपयुक्त और आवश्यक कदम समझना चाहिये था। कानून द्वारा अपनी ही जाति में विवाह करने के लिए बाध्य किया जा सकता है तो अपनी ही जाति में विवाह न करने का कानून अनुचित क्यों समझा जाये। वस्तुतः जन्मगत जातिपात के निराकरण का वर्तमान परिस्थिति में यही एक कारगर उपाय है।

जातिवाद को प्रोत्साहन

यह दुर्भाग्य की बात है कि स्वाधीनता के बाद चुनाव आदि राजनैतिक स्वार्थों के कारण हमारे अनेक प्रमुख नेता तक जातिपात के इस राष्ट्र विरोधी भस्मासुर को प्रोत्साहन देने में संकोच नहीं करते। अंग्रेजी राज्य में जिन सामाजिक व धार्मिक सुधारों को हम अपनी राजनैतिक मुक्ति के लिये आवश्यक समझते थे। जातिप्रथा का निराकरण उनमें सबसे अधिक महत्त्व का प्रश्न था। ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम इसलिए गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था को ही वेदोक्त सिद्ध करके जन्मगत जातपात के आधार को ही नष्ट करने का प्रयत्न किया। छूआछूत अथवा हरिजनों की समस्या भी इसी सर्वभक्षी जाति व्यवस्था के वृक्ष के विषैले फल मात्र हैं। जन्म के स्थान में कर्म के आधार पर तथाकथित अछूतों को ब्राह्मण आदि उच्च वर्गों में सर्वथा आत्मसात् करके इस समस्या का चिरस्थायी और कारगर उपाय किया जाना

(शेष पृष्ठ ५ पर)

स्वप्न लीला

लेखक—श्री कर्मनारायण कपूर; दिल्ली

★

१ निद्रा की वह अवस्था स्वप्न कहलाती है जिस में व्यक्ति किसी दृश्य व घटना का चित्र देखता है अथवा किसी कर्म करने का अनुभव करता है। स्वप्न का वास्तविक रूप नही होता है वह सर्वथा काल्पनिक होता है। स्वप्न में उपलब्ध वस्तु जाग्रत अवस्था में अदृश्य हो जाती है।

२. यह तो निर्विवाद है कि स्वप्न का देखने वाला आत्मा होता है। आत्मा का प्रमुख करण मन है जो बहुत चचल है। इसके बिना कोई कर्म नहीं किया जा सकता, यह स्मृति का भण्डार है (यजु० ३४ ३)। मन अथवा चित्त की पांच वृत्तियां हैं। प्रमाण—यथार्थ ज्ञान, विपर्यय—मिथ्या ज्ञान विकल्प—कल्पित वस्तु का ज्ञान, निद्रा—सोना तथा स्मृति—पूर्व में देखी व सुनी वस्तु का स्मरण (योगदर्शन १ २।६) स्पष्ट है कि स्वप्न में इन पांचों वृत्तियों का खेल होता है। मन द्वारा ही स्वप्न की लीला रची जाती है और आत्मा उस लीला का द्रष्टा होता है।

३. कई विद्वानों का मत है कि ईश्वर स्वप्नों को रचता है। यह मत मानने योग्य नही, क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ और विवेकी है। वह किसी अवस्था मे असत्य, भ्रांत, विवेकहीन, निरर्थक, तथ्य रहित तथा भयानक दृश्यो को रच कर आत्मा को विचलित नही कर सकता है।

४ अन्य विद्वानों की धारणा है कि आत्मा स्वयम् ही स्वप्न का कर्त्ता है। यह धारणा इस लिए अशुद्ध है कि जिस प्रकार नाटक करने वाला और नाटक देखने वाले भिन्न भिन्न व्यक्ति होते हैं। इसी प्रकार स्वप्न कर्त्ता और स्वप्नद्रष्टा एक नहीं हो सकता है। अपरच ज्ञानवान आत्मा अज्ञानी बन मूर्खता के कार्य नहीं कर सकता है। राजा की आत्मा को ज्ञान है कि वह राजा है वह स्वप्न में निर्धन अथवा पंगु होने का अनुभव नहीं कर सकता है।

५ वेदों तथा उपनिषदों में स्वप्न ज्ञान का दिग्दर्शन निम्न रूप में उपलब्ध होता है—

(क) हे स्वप्न! वरुणानी तेरी माता है और यम तेरा पिता है। (अथर्व० ६।४६।१) कई पौराणिक विद्वान् वरुणानी को वरुण देवता की पत्नी मानते हैं। यदि वरुणानी वरुण की पत्नी हो तो स्वप्न का पिता वरुण होना चाहिये न कि यम। इसलिए यह धारणा पूर्णरूप से अशुद्ध है। इस मन्त्र में वरुणानी रात्री और यम दिन के द्योतक हैं। स्वप्न रात को देखा जाता है अतः रात्री अथवा वरुणानी स्वप्न की माता है और दिन मे इन्द्रियां जिन दृश्यों को देखती अथवा कार्यों को करती हैं उन का प्रतिबिम्ब स्वप्न में मिश्रित या विकृत रूप में चित्रित होता है, अतः यम अथवा दिन स्वप्नों का पिता कहा गया है।

(ख) वह आत्मा स्वप्न में महिमा का अनुभव करता है, जो देखा है, जो देखा नहीं उसका अनुभव करता है, जो सुना है, जो सुना नहीं है वह सुनता है, जो सत्य है और जो असत्य है उस को देखता है। (प्रश्न० उप० ४-५)

(ग) स्वप्नावस्था में रथ नहीं होते, घोडे नहीं होते, सड़कें नहीं होतीं वहां आनन्द नहीं होता, मोद नही होता, प्रमोद नहीं होता, तालाब नही होते, झीलें नहीं होतीं नदियां नहीं होतीं किन्तु मन उन सब को रच लेता है। बृहदारण्यक उप० ४।३।१०)।

स्वप्न लोक में ऊंच और नीच से गुजरता है। अनेकों रूपों को देखता है, कभी स्त्रियों के संग आमोद-प्रमोद करता है। कभी बन्धु-बान्धवों के संग हंसता खेलता है और कभी भयानक दृश्यों को देखता है (वहीं ४।३।१३)।

यह (आत्मा) अपने शरीर-रूपी घोंसले की रक्षा का भार प्राण को सौंप कर स्वयं घोंसले के बाहर इच्छा पूर्वक घूमा करता है। (वहीं ४।३।१२)।

५ स्वप्न एक प्राकृतिक दृश्य है जिसका अनुभव प्रायः सब व्यक्तियों को हुआ करता है। विरले विरक्त जन ही इसके मायाजाल से बाहर रहते हैं। मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि मन में अनेक अपूर्ण तथा दबी हुई इच्छाएँ पड़ी रहती हैं जिन की पूर्ति का आभास स्वप्न में हो जाया करता है। स्वप्न तो एक प्रकार का सेफ्टी वाल्व है जो मन में संचित अनावश्यक इच्छाओं का निर्गमन कर देता है। इसके अतिरिक्त स्वप्न कुछ अंश तक निम्न प्रयोजनों को सिद्ध करता है—

(क) आत्मा के शुभ सङ्कल्पों का आमोद तथा प्रमोद द्वारा सुख प्रदान करना।

(ख) आत्मा के अशुभ सङ्कल्पों का भयानक दृश्यों द्वारा दुःख प्रदान करना।

(ग) भविष्य में होने वाली घटनाओं का संकेत करना। इस तथ्य के तीन प्रमुख उदाहरण हैं—

१. अमरीका के प्रधान लिङ्कन का शव रखने वाले सन्दूक का देखना तथा रक्षा करने वाले सिपाहियों द्वारा कहना कि प्रधान की मृत्यु हुई है। इस स्वप्न के एक सप्ताह पश्चात् प्रधान लिङ्कन की हत्या हुई।

२. रुडयार्ड किपलिंग ने स्वप्न में अपने आप को एक विशाल हाल में पाया। पीछे से आकर किसी व्यक्ति ने उसके कन्धे पर हाथ रख कर कहा, श्रीमान् जी मैं आप से कुछ बात करना चाहता हूं। यह स्वप्न तब सत्य हुआ जब किपलिंग युद्ध स्मारक सम्मेलन के अवसर पर वेस्ट मिन्सटर ऐबे में गया और एक व्यक्ति ने पीछे से आकर उसके कन्धे पर हाथ रख कर कहा श्रीमान् जी मैं आप से कुछ बात करना चाहता हूं। किपलिंग अपनी जीवन गाथा में प्रश्न करते हैं क्यों और कैसे मुझे अपने जीवन के अप्रकाशित चलचित्र की झांकी दिखाई गई।

३. एक यात्री ने इंग्लैण्ड के विख्यात समुद्री जहाज टिटानिक में अपनी सीट आरक्षण कराई। उसी रात को उसने स्वप्न में टिटानिक को डूबते देखा। यह स्वप्न दूसरी तथा तीसरी रात को उसे पुनः दिखाई दिया। उस ने अपनी सीट रद्द करवा ली। टिटानिक कई दिनों के पश्चात् समुद्र में डूब गया।

(घ) किसी गूढ़ समस्या के समाधान का संकेत होना। एक व्यक्ति को स्वप्न में एक समस्या का समाधान मिल गया जिस पर वह कई दिनों से सत्यापन्थी कर रहा था।

(ङ) किसी गुप्त रहस्य का संकेत मिलना—एक विधवा स्त्री को स्वप्न में उस के मृत पति ने बताया कि उसने तीस हजार रु० अमुक बैंक में जमा कराया हुआ है जिस की जानकारी केवल उसे ही है। विधवा ने उस बैंक में जाकर पूछा तो स्वप्न की बात सत्य निकली। बैंक वालों ने [illegible] को [illegible] [illegible] दिया। यह एक सच्ची घटना है। इससे मिलती-जुलती घटना का उल्लेख सरदार दीवान सिंह कृत [illegible] में भी मिलता है।

(च) पूर्व जन्मों के कतिपय दृश्यों का दिग्दर्शन कराना—कई स्वप्न ऐसे होते हैं जिनके दृश्यों तथा घटनाओं का अनुबन्ध वर्तमान जन्म के कार्यों तथा परिस्थितियों के साथ नहीं हो सकता। ऐसे स्वप्न पूर्व जन्मों से सम्बन्धित होते हैं। (अथर्व० ४।४४।३) में कर्मस्वप्ना वृक्षाः इस तथ्य का द्योतक है क्योंकि वर्तमान जीवन मे वृक्षों ने कोई कार्य नहीं किया होता जो स्वप्न का आधार बन सके। अपरंच यह साधारण अनुभव है कि नवजात शिशु के मुख पर कुछ सप्ताह पर्यन्त कभी खिलखिलाता मुस्कराहट और कभी-कभी क्लेश के चिह्न दिखाई देते हैं। इस जन्म में उसे कोई ऐसे संस्कार नहीं प्राप्त हुए होते जो इनका कारण बन सकें। न्यायदर्शन के सूत्रकार का कथन है कि शिशु की पूर्व जन्म की स्मृतियां ही उसकी मुस्कराहट तथा क्लेश का कारण होती हैं जो स्वप्न के रूप में प्रकट होती हैं।

कई विद्वानों का मत है कि इस जन्म तथा पूर्व जन्मों के अचेतन मन पर पड़े हुए संस्कारों की स्मृति-छाया स्वप्न के रूप में दिखाई देती है। अन्य स्वप्न मन की स्वाभाविक चंचलता का चित्र होता है।

अमर स्वामी जी महाराज अस्वस्थ

आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान् शास्त्रार्थ केसरी श्री अमर स्वामी जी अस्वस्थ चल रहे हैं। डाक्टरों ने उनको गले का कैंसर घोषित किया है। चलना-फिरना बिल्कुल बन्द है। केवल पेय पदार्थों पर ही जीवन आश्रित रह गया है। कोई भी चीज खा नहीं सकते।

सभी आर्य सज्जनों को इस स्थिति में उनकी आर्थिक सहायता करनी चाहिये। उनका चारपाई से उठना बैठना भी बन्द है। इसके बावजूद भी स्वामी जी में अपार साहस देखने को मिल रहा है। सभी आर्य सज्जन उनके स्वस्थ होने की कामना करें।

[illegible] राय [illegible]
१०५८ [illegible] [illegible]

क्या "आर्य" हिन्दू नहीं ?

लेखक—मांगीराम आर्य
प्रधान, आर्यसमाज, अहमद नगर (महाराष्ट्र)

आर्य "हिन्दू" नहीं हो सकता क्योंकि "आर्य" शब्द की परिभाषा महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने अपनी कृति आर्योद्देश्यरत्न माला क्रम सं० ४० में इस प्रकार लिखी है—"आर्य" जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा परोपकारी, सत्य विद्या गुणयुक्त और आर्यावर्त देश में सब दिन से रहने वाले हैं उनको "आर्य" कहते हैं। इसी प्रकार क्रम सं० ४२ में दस्यु (अनार्य) अर्थात् अनाडी, आर्यों के स्वभाव और निवास से पृथक् डाकू, चोर, हिंसक जो कि दुष्ट मनुष्य है, वह दस्यु कहाता है। जैसे "आर्य" श्रेष्ठ और "दस्यु" दुष्ट मनुष्य को कहते हैं, वैसे ही मैं भी मानता हूं। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश, क्र० सं० २६)।

"हिन्दू" शब्द हमारी वैदिक संस्कृति का नहीं है। यह विदेशी भाषा अरबी तथा फारसी का है, जिस के अर्थ काला, काफिर और चोरादि होते हैं जो दस्यु (अनार्य) शब्द का पर्यायवाची है, आर्य शब्द का नहीं। इसलिए "आर्य" हिन्दू नहीं हो सकता। और आगे देखिये महर्षि दयानन्द महाराज क्या कहते कहते हैं—

"आर्यो ब्राह्मणकुमारयो ।" पाणिनिसूत्रम्। राजा भगीरथ के समय ब्रह्मचारी और ब्राह्मण का नाम "आर्य" था। ऐसी व्यवस्था होते हुए हमारे देश का नाम, आर्यस्थान 'आर्य खण्ड" होना चाहिये सो उसे छोड़ न जाने हिन्दुस्थान यह नाम कहां से निकला ? भाई श्रोतागण ! हिन्दू शब्द का अर्थ काला, काफिर, चोर इत्यादि है और हिन्दुस्थान कहने से काले, काफिर, चोर लोगों की जगह अथवा देश, ऐसा अर्थ होता है, तो भाई इस प्रकार का बुरा नाम क्यों ग्रहण करते हो ? और आर्य अर्थात् श्रेष्ठ अथवा अभिजात इत्यादि। और आवर्त कहने से ऐसों का देश अर्थात् आर्यावर्त का अर्थ श्रेष्ठों का देश ऐसा होता है। सो भाई ऐसे श्रेष्ठ नाम को तुम क्यों स्वीकार नहीं करते ? क्या तुम अपना मूल का नाम भी भूल गये ? हा ! हम लोगों की यह स्थिति देखकर किसके हृदय को क्लेश न होगा, सब ही को होगा। अस्तु सज्जन जन ! अब हिन्दू इस नाम का त्याग करो और आर्य तथा आर्यावर्त्त इन नामों का अभिमान धरो। गुण भ्रष्ट हम लोग हुए तो हुए; परन्तु नाम भ्रष्ट तो हमें न होना चाहिये। ऐसी आप सबों से मेरी प्रार्थना है। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः। (उपदेश मंजरी व्याख्यान नं० ८, -स्वामी दयानन्द सरस्वती)।

इस ऊपर लिखित व्याख्यान से विदित है कि जो आर्यसमाजी सज्जन अपने लेखों में आर्य (हिन्दू) लिखते हैं और हिन्दुत्व का दम भरते हैं वह महर्षि की प्रार्थना व मान्यता के विरुद्ध वर्तते हैं। ऐसा जो अपने निज विचारों से कर रहे हैं, वह गहरी भूल पर हैं क्योंकि कोष्ठ में हमेशा पर्यायवाची शब्द ही लिखा जाता है। हिन्दू शब्द का एकमात्र समानार्थक शब्द दस्यु (अनार्य) है जिसको आप हिन्दू (अनार्य) या दस्यु (हिन्दू) लिख सकते हैं। क्या आप आर्य (अनार्य) और आर्य (दस्यु) लिख सकते हैं ? कदापि नहीं। ऐसा लिखना अनुचित है क्योंकि इन दोनों शब्दों के अर्थ भिन्न भिन्न हैं। सो आर्य (हिन्दू) लिखना सार्थक नहीं, भ्रममूलक है और त्यागने योग्य है। इसलिये मेरा सभी आर्यसमाजी विद्वानों, लेखकों और पत्रकारों से नम्र निवेदन है कि वह महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को दृढतापूर्वक अपनाएं और अपने लेखों और उपदेशों में हिन्दू शब्द का खण्डन और आर्य शब्द का मण्डन कर इसे क्रिया में लायें जिससे वैदिक संस्कृति की रक्षा होवे। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का वैदिक नाद पूरा हो। परमेश्वर आर्यों को आर्यत्व ग्रहण करने और हिन्दुत्व को छोड़ने की शक्ति और सद्बुद्धि प्रदान करे जिससे वह वैदिक धर्म, आर्य संस्कृति और भारतीय सभ्यता का प्रचार प्रसार करने में सफल होवें। यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है। आर्य नेता असत्य को छोड़कर सत्य को धारण करें यह वेद का सन्देश है। □

चाहिये था किन्तु स्वाधीनता के बाद हम वर्गों को उचित तात्कालिक स्थान में अब प्राय: सदा के लिये स्वयं उनके हित विरोधी, राजनैतिक व आर्थिक लाभ के प्रलोभन देकर हम ने जन्म की दृष्टि से उन्हें हमेशा के लिये अछूत बना दिया है। आज स्थिति यह है कि हरिजनों के लिये निर्धारित आर्थिक व राजनैतिक लाभ उठाने के लिए ऊंची जाति के लोग झूठे प्रमाण पत्र देकर अछूत बन रहे हैं।

स्व० चरणसिंह

(पृष्ठ ३ का शेष)

जाति सूचक नामों का निषेध—

चौधरी साहब द्वारा अन्तर्जातीय विवाह का उपर्युक्त सुझाव स्वीकार करना यदि कठिन था तो कम से कम इस प्रकार का कानूनी या संवैधानिक प्रावधान तो किया ही जा सकता था कि कोई सरकारी अधिकारी अपने नाम के आगे अपनी जाति का उल्लेख न करे। अब हम रामसिंह रैमर मजिस्ट्रेट या दयाराम जाट कलेक्टर ? अथवा बलदेव गुप्ता पुलिस अधीक्षक जैसे नाम पट्टी पर लगते हैं तो जातिवाद का प्रोत्साहन मिलता है, चाहे जाति सूचक नाम के अधिकारी स्वयं कितने ही निष्पक्ष हों उनकी जाति से सम्बन्धित व्यक्तियों के मन में यह आशा और अपेक्षा उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि यह अधिकारी उनका पक्ष लेंगे। दूसरी तरफ अन्य जाति के लोगों में उनके प्रति सही या गलत यह आशंका भी उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि भिन्न जाति के होने के कारण उनसे न्याय की अपेक्षा नहीं कर सकते। मैंने स्वयं चरणसिंह जी को जब वे प्रधान मंत्री बने, तब नेहरू जी को दिये गये उनके सुझाव का स्मरण दिलाते हुए आग्रह किया था कि यदि अपने कार्यकाल में वे हिन्दुओं की जाति प्रथा को सर्वथा गैर कानूनी घोषित नहीं कर सकते तो कम से कम सरकारी क्षेत्र में जाति सूचक नामों के उपयोग का कानून द्वारा निषेध अवश्य कर दें यह उनके प्रधानमंत्री काल की बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। मेरी भावना से सहमति सूचक उनके कार्यालय का पत्रोत्तर भी मुझे प्राप्त हुआ किन्तु दुर्भाग्य से उनके प्रधानमंत्रित्व काल की लघु अवधि तथा विवादग्रस्तता के कारण वे यह कार्य नहीं कर सके।

वस्तुत: मैंने स्व० श्रीमती इंदिरा गांधी को भी इस प्रकार का सुझाव देकर निवेदन किया था कि वे केन्द्रीय तथा राज्य मन्त्रियों तथा समस्त सरकारी कर्मचारियों को यह आदेश दें कि वे अपने सरकारी पदों के साथ अपने जातिसूचक नामों का प्रयोग न करें। यह बात निर्विवाद है कि जब तक हिन्दू समाज अन्तर्गत जाति प्रथा के अभिशापों से सर्वथा मुक्त नहीं हो जाता तब तक हमारा देश एक राष्ट्र तो दूर स्वयं हिन्दू समाज का भी उसका एक शक्तिशाली राष्ट्रीय आधार नहीं बन सकता। हमारे प्राय: सभी धार्मिक व सामाजिक सुधार भी जातपांत के इस नागकी खान में विलीन होकर नष्ट होते जा रहे हैं। अतएव स्व० चरणसिंह के प्रति सब से बड़ी श्रद्धांजलि मेरी सम्मति में यही हो सकती है कि हम उनकी स्मृति में एक ऐसा देशव्यापी जातपांत उन्मूलक आन्दोलन प्रारम्भ करें कि जिसके परिणाम स्वरूप हमारे देश व समाज का यह ऐतिहासिक कलंक सदा के लिए समाप्त हो जाये। □

आर्यसमाजों के निर्वाचन

आर्यसमाज माटुंगा बम्बई—
प्रधान—श्री ओंकारनाथ आर्य, मंत्री श्री कमल स्वरूप सूद कोषाध्यक्ष श्री कस्तूरी लाल उदासी।

आर्यसमाज माडल टाऊन—
प्रधान श्री महावीरप्रसाद अग्रवाल, मन्त्री श्री कृष्णचन्द शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल।

आर्यसमाज सागरपुर नई दिल्ली ४६
प्रधान श्री कंवल सिंह आर्य, मन्त्री—श्री अवेलसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री बृजपाल आर्य, आर्य वीर दल अध्यक्ष—श्री हरिसिंह आर्य।

आर्यसमाज सुन्दर विहार, नई दिल्ली
प्रधान श्री सदानन्द गोगिया, मंत्री—श्री सत्यदेव गुप्त, कोषाध्यक्ष—श्री ईश्वरी प्रसाद शर्मा।

समाचार

पुरोहित पिछड़े व उपेक्षित क्षेत्रों में रचनात्मक कार्य करें—महात्मा दयानन्द

देहरादून। आर्यसमाज देहरादून की ओर से स्थानीय वैदिक साधन आश्रम, तपोवन में आयोजित 'पुरोहित शिविर' के समापन-समारोह में बोलते हुए महात्मा दयानन्द जी ने कहा—उपदेशक वर्ग पिछड़े व उपेक्षित क्षेत्रों में कार्य करने के लिए रचनात्मक पग उठाये। वैदिक संस्कृति के उत्थान में "सादा जीवन उच्च विचार" के आदर्श समाज में वे पुनः प्रतिष्ठित करें। स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी ने स्वाध्याय करने पर बल दिया। शिविर का कुशल प्रशिक्षण सहारनपुर के श्री सुखदेव शास्त्री जी ने दिया। आर्यसमाज के प्रधान श्री यशपाल व मन्त्री श्री देवदत्त बाली के संयोजन में श्री रमेशचन्द्र आर्य, श्री रघुनाथ प्रसाद, श्री सुशील कुमार, श्री अशोक भार्गव (सहारनपुर) क्रमशः प्रथम, द्वितीय तृतीय, चतुर्थ पुरस्कारों से सम्मानित हुए।

चन्द्रमोहन आर्य
प्रेस सचिव

निर्णय के तट पर (शास्त्रार्थ संग्रह) के १ व ३ भाग का प्रकाशन

सर्व सज्जनों को विदित हो कि निर्णय के तट पर (शास्त्रार्थ संग्रह) नामक ग्रन्थ के प्रथम व तृतीय भाग का प्रकाशन आधे से भी ज्यादा हो चुका है। कार्य प्रगति पर है। इसके प्रकाशन हेतु आधे मूल्य में अग्रिम बुकिंग योजना निकाली गयी थी। जिसमें पर्याप्त ग्राहक न बनने के कारण प्रकाशन में आर्थिक संकट सामने आ रहा है।

अतः सभी आर्य भाइयों से निवेदन है कि ६०/रु० प्रति भाग से बुक करावें। बाद में १२५/रु० मूल्य होगा। मैं कैंसर से पीड़ित हूं। मैं चाहता हूं यह ग्रन्थ मेरे जीवनकाल में ही प्रकाश में आ जावे। यह तभी हो सकता है जब आप अधिक से अधिक बुकिंग करावें तथा इस ज्ञान यज्ञ में आर्थिक सहयोग दें। मेरा दावा है कि ऐसी पुस्तक शायद ही भविष्य में छप पावे।

बुकिंग कराने का पता
"प्रबन्धक"
१०५८, विवेकानन्द नगर
गाजियाबाद (उ० प्र०)

हरियाणा में वैदिक धर्म प्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य युवा भजनोपदेशक श्री वेदव्यास आर्य, पं० चुन्नीलाल आर्य, ढोलक वादक श्री ज्योतिप्रसाद आर्य द्वारा १ जून से १६ जून १९८७ तक लगातार १६ दिवस तक धूमधाम के साथ प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज सैक्टर ७ फरीदाबाद (हरियाणा) के सभी आर्य महानुभावों ने परिवारों में यज्ञ व प्रवचन के लिए सुन्दर व्यवस्था बनाकर सलग्न होकर वैदिक धर्म प्रचार में पूर्ण सहयोग प्रदान किया इस प्रचार कार्य की समाप्ति १६ जून ८७ को रात्रि को रखी गई जिसमें सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य एवं स्वामी स्वरूपानन्द जी और साथ ही श्री जगदीशलाल जो फरीदाबाद (हरियाणा) पधारे। फरीदाबाद के आर्यबन्धुओं में एक खुशी की लहर जाग उठी और आगन्तुक जनों का पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत किया। इस अवसर पर स्वामी स्वरूपानन्द जी की हास्य कविता और भजनोपदेश से जनसमुदाय खिल उठा। सभामंत्री डा० धर्मपाल ने वैदिकी शिक्षाओं से सम्मत प्रेरणाप्रद सम्बोधन दिया जिस पर श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गये। दिल्ली सभा की ओर से दिल्ली देहात और राजधानी की कोलोनियों में निरन्तर सुधार कार्य उपदेशकों द्वारा अबिरत होता रहता है। इस वर्ष प्रचार कार्य में अधिक प्रगति रही।

(संवाददाता आर्यसन्देश)

पी० ए० सी० की सराहनीय भूमिका

जनता पार्टी के नेता चन्द्रशेखर, मधु दण्डवते सरीखे अनेक नेता मेरठ में नियोजित विद्रोह की वास्तविकता को जानते हुए भी मुस्लिम साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देकर राष्ट्र विरोधी कार्य कर रहे हैं। पी० ए० सी० की निन्दा करना दंगाइयों को उत्साहित करना है। सच तो यह है कि यदि पी० ए० सी० अपने कार्य व कर्तव्य का पालन न करती तो मेरठ की और बरबादी होती। पी० ए० सी० अनुशासित फोर्स के रहते ही हर शान्तिप्रिय व्यक्ति को सुरक्षा प्राप्त होती रहेगी। धर्म स्थलों को अवैध हथियारों और अवांछित लोगों का अड्डा बनने से रोकने की आवश्यकता है।

नरेन्द्र अवस्थी
प्रधान आर्यसमाज
श्री निवासपुरी
नई दिल्ली—६५

वैद्य और पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज, पंखा रोड "सी" ब्लाक (पंजीकृत), सी—३, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८ को एक अनुभवी पुरोहित तथा आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय हेतु अंशकालिक (प्रात. २ घण्टे) सुयोग्य वैद्य की आवश्यकता है—

१. वैद्य/डाक्टर—समाज सेवा में अभिरुचि रखने वाला तथा सेवानिवृत्त होना चाहिए। योग्यताएँ बी० आई० एम-एस, बी० ए० एम-एस, आयुर्वेदाचार्य अथवा इसके समकक्ष होना आवश्यक है। उचित मानदेय योग्यता के आधार पर देय होगा।

२. पुरोहित—किसी मान्यता प्राप्त संस्था से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए और वैदिक संस्कारों को कराने में निपुण होना आवश्यक है। मानदेय योग्यता के आधार पर देय होगा।

गुरुकुल के स्नातक को वरीयता दी जाएगी। आवेदन-पत्र १५ जुलाई ८७ तक भेजने की कृपा करें—

मन्त्री, आर्यसमाज, पंखा रोड "सी" ब्लाक–सी–३, पार्क, जनकपुरी
नई दिल्ली—११००५८

उपराज्यपाल महोदय को लिखा गया खुला पत्र

आदरणीय कपूर साहब,
सादर नमस्ते

निवेदन यह है कि आर्य जगत् में इस बात को लेकर बड़ा क्षोभ और असन्तोष फैला हुआ है, कि आपने देशद्रोहियों, कट्टर मुल्लाओं और उनके नेता मौलाना अब्दुल्ला बुखारी के सामने बुरी तरह घुटने टेक दिए हैं। दंगा करने वाले सभी मुसलमानों को बिना शर्त रिहा कर दिया है। दंगा पर काबू पाने वाले बहादुर पुलिस अफसरों को स्थानान्तरित कर दिया है।

एक तरफ तो सरकार दिन रात भारत की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए ढिंढोरा पीट रही है और दूसरी ओर देश का बंटवारा करने वाले और देश का पुनः बटवारा करने वाले देशद्रोहियों के सामने घुटने टेक रही है। इससे तो प्रतीत होता है कि सरकार को देश की एकता और अखण्डता की नहीं अपितु अपने वोटों की ज्यादा चिन्ता है। उसे हर हालत में गद्दी पर बना रहना है, चाहे मुल्क भाड़ में चला जाये।

मैं आर्य जगत् की तरफ से बलपूर्वक मांग करता हूं—

१. अब्दुल्ला बुखारी और उनके साथियों की भारतीय नागरिकता तुरन्त समाप्त की जाये।

२. इनको दंगा भड़काने के आरोप में इनके खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जाये।

३. जिन पुलिस अफसरों को स्थानान्तरित किया गया है, उनको उसी स्थान पर पुनः लगाया जाये।

४. इस कार्य के लिए सरकार पर दबाव डालने वाले व्यक्तियों के नाम जनता को बताये जायें।

५. निर्दोष हिन्दू युवक जो अभी तक नजरबन्द हैं, उन्हें तुरन्त रिहा किया जाये। यदि सरकार ने समय रहते हुए हमारी मांगें तुरन्त न मानी तो आर्य जगत् को इसके लिए आन्दोलन आरम्भ करना पड़ेगा, जिसकी सारी जिम्मेवारी आप पर होगी।

मैं आशा करता हूँ कि कांग्रेस की तुष्टीकरण वाली नीति का आप बहिष्कार करेंगे, जिसका परिणाम भारत का विभाजन हुआ ताकि इन देशद्रोहियों से भारत का पुनः विभाजन रुकवाया जा सके।

धन्यवाद सहित,
श्री हरकृष्ण लाल कपूर
उपराज्यपाल दिल्ली,
राज निवास,
दिल्ली–५४

उत्तराकांक्षी
ओम प्रकाश आर्य
मन्त्री

आर्य विद्या सभा की वार्षिक बैठक सम्पन्न

डी०ए०वी० संस्थाओं में संस्कृत, हिन्दी व धर्मशिक्षा पर बल

आर्य विद्या सभा के अंतर्गत डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन ३० मई, १९८७ को सभा प्रधान श्री प्रो० वेदव्यास की अध्यक्षता में आर्य समाज, मन्दिर मार्ग में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित सदस्यों को सम्बोधित करते हुए डी ए वी कालेज समिति के संगठन सचिव श्री दरबारी लाल जी ने कहा कि डी ए. वी. आन्दोलन का इतिहास बड़ा शानदार रहा है। इस आन्दोलन का आरम्भ आर्यसमाज के सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए किया गया था। आप ने कहा कि शिक्षा की व्यवस्था करना सरकार करना सरकार का दायित्व है। हम लोग डी. ए. वी. शिक्षण संस्थायें केवल इसलिए चलाते हैं कि इनके माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार हो। संस्थायें चलाना हमारा साध्य नहीं है वरन् साधन मात्र है। आप ने इस बात पर विशेष बल दिया कि प्रत्येक स्कूल व कालेज में छात्रों को अनिवार्यत. धर्मशिक्षा दी जाए। उन्होंने करतल ध्वनि के बीच में कहा कि उनके द्वारा जारी किए गए उन दो परिपत्रों का आर्य जगत में बहुत स्वागत हुआ जिसमें उन्होंने आर्य शिक्षण-संस्थाओं में हिन्दी का प्रयोग करने तथा गुड मार्निंग शब्द की बजाय नमस्ते का प्रयोग करने और नैकटाई-का बहिष्कार करने के लिए कहा था। अनेक प्रतिनिधियों ने इस बात पर जोर दिया कि केवल परिपत्र जारी होना ही पर्याप्त नहीं है अपितु यह भी देखना होगा कि इन आदेशों का पालन भी हो।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने श्री दरबारी लाल जी द्वारा प्रकाशित दोनों परिपत्रों की काफी अधिक प्रशंसा की। उन्होंने यह भी बताया कि स्थानाभाव के कारण हम नैतिक शिक्षा संस्थान में अधिक विद्यार्थी प्रविष्ट नहीं कर सके। आशा है इस वर्ष के पांच विद्यार्थियों की तुलना में अगले वर्ष हम अधिक विद्यार्थियों को संस्थान में प्रवेश दे सकेंगे। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि विद्यार्थियों को जो पुरस्कार दिए जा रहे हैं उनमें "सत्यार्थप्रकाश" और 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन परिचय" भी दिया जाए। आर्य विद्या सभा की बैठक की कार्यवाही नैतिक शिक्षा संस्थान में पढ़ रहे विद्यार्थियों के भाषणों से समाप्त हुई। उनके भाषणों की सभी उपस्थित सज्जनों ने सराहना की।

अन्त में सभा के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी ने कहा कि श्री दरबारी लाल जी ने नैकटाई के विरोध में परिपत्र जारी करके मेरे मन की बात कही है। उन्होंने यह भी कहा है कि मैं तो यह भी चाहता हूं कि बन्द गले के कोट का प्रयोग किया जाए क्योंकि भारतीय वेशभूषा में इसका विशेष स्थान है।

रामनाथ सहगल
मन्त्री

अभागा पंजाब

(पृष्ठ १ का शेष)

के लिए राजीव सरकार को दोषी ठहरा रहा है।

इस समझौते की एक शर्त इराडी कमीशन की रिपोर्ट के रूप में प्रकट हुई। इसके सम्बन्ध में घोषणापूर्वक कहा जा रहा है कि जस्टिस इराडी ने स्वप्न में कुछ आंकड़े कहीं देखे और इनके अनुसार अपना फतवा दे दिया।

हरियाणा वालों को शांत करने के लिए कहा गया कि १५ अगस्त १९८६ तक जमुना सतलुज लिंक नहर बनकर हरियाणा को पानी देना प्रारम्भ हो जायेगा। आगामी कुछ दिनों में १५ अगस्त १९८७ आ जायेगा किंतु इस नहर का कहीं नामो निशान ही नहीं।

इस प्रकार कोई भी यह मानने को विवश होगा कि इस समझौते की एक एक शर्त असफल हुई है और आज हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल कहते हैं कि पंजाब में नये चुनाव कराये जाये ताकि वहां जनता की सरकार स्थापित हो। जिससे आप निर्णय करें कि दोनों प्रांतों की समस्याओं का निदान कैसे किया जाना है।

अब हमारे हृदय सम्राट बगलें झांक रहे हैं और लज्जा के मारे यह नहीं मान रहे कि जो समझौता आपने इस उत्साह से सारे संसार के सम्मुख पेश किया था इसका दाह संस्कार भी हो चुका है।
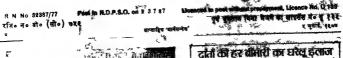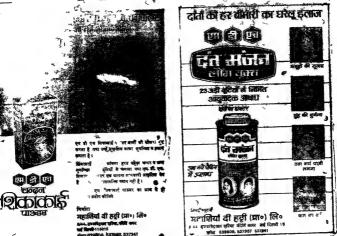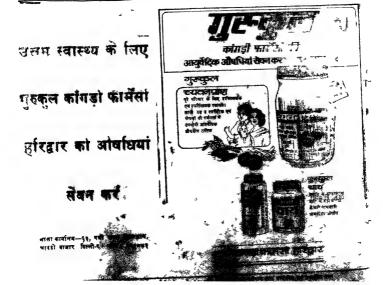
[वीर अर्जुन से साभार]

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ अंक ३४ | रविवार १२ जुलाई १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ | आषाढ २०४४ | दयानन्दाब्द—१६३

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

दक्षिण भारत में आर्य समाज के बढ़ते कदम

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का तूफानी दौरा

दिल्ली, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने २६ जून, १९८७ से लगातार ३ जुलाई ८७ तक दक्षिण भारत का तूफानी दौरा किया। आपके साथ सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री रामचन्द्रराव 'वन्देमातरम्' भी थे।

हैदराबाद होते हुए आप मद्रास पहुंचे। जहां आर्यसमाज मद्रास के प्रधान श्री जयदेव जी व आर्य शिक्षण संस्थाओं के महामन्त्री श्री रवि मल्होत्रा व अनेक आर्य बंधुओं ने हार्दिक स्वागत किया। श्री स्वामी जी ने वन्देमातरम् जी से मद्रास में आर्यसमाज के तत्वावधान में सचालित शिक्षण संस्थाओं का निरीक्षण किया तथा हार्दिक सन्तोष व्यक्त किया। स्वामी जी ने वहां अनेकों कार्यकर्ताओं से भेंट की व उन्हें आर्य समाज के कार्यों को और आगे बढ़ाने की प्रेरणा की।

२७ जून को श्री स्वामी जी मदुराई विमान से चलकर उतरे, जहां स्वामी जी का स्वागत सारे तमिलनाडु से वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त करने ४ दिवसीय शिविर में भाग लेने आए आर्य बंधुओं ने ओ३म् पताका फहराते हुए किया। इस शिविर का सचालन दक्षिण भारतीय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सयोजक श्री एम० नारायण स्वामी वानप्रस्थ द्वारा किया गया था। मदुराई समाज के प्रधान जी व मन्त्री तथा प्रो० ममति नन्दन जी, श्री पाण्डुरंगराव मंत्री, आर्यसमाज सेण्ट्रल मद्रास के ब्रह्मचारी राज गोपाल का पूर्ण सहयोग प्राप्त था। देहली वालों के होटल मालिकों ने प्रशिक्षार्थियों के लिए आवास व भोजन की व्यवस्था की। उन्होंने अपने होटल के दो विशाल हाल जिस मे एक हजार से भी अधिक व्यक्ति बैठ सकें, शिविर के उपयोग के लिए नि शुल्क प्रदान किए। इन हालो को ओ३म् के झण्डों से सजाया गया था।

सायंकाल की सार्वजनिक सभा में श्रद्धेय स्वामी जी ने देश की वर्तमान परिस्थितियों पर विशद प्रकाश डाला। हिन्दू समाज इस प्रकार घोर सकटों मे ग्रस्त है, इसकी चर्चा करते हुए स्वामी जी ने हिन्दुओ से अपील की कि वे आर्यसमाज के झण्डे के नीचे सगठित होकर ही अपनी रक्षा कर सकते हैं।

देश मे अलगाववादी व देशद्रोही शक्तियां पूरे जोर से सिर उठा रही हैं, अत. आज हिन्दुओं के सगठन की परम आवश्यकता है। आर्यसमाज ने हिन्दुओं की हर सकट मे जान हथेली पर रखकर सेवाएँ की हैं। श्री वन्देमातरम् जी ने कहा कि धर्मनिरपेक्षवाद का सहारा लेकर सरकार अल्पसख्यकों को सिर पर चढ़ा रही है। चाहिए यह था कि देश मे ऐसा वातावरण बनाया जाता कि सभी

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य समाज मंदिर किंग्ज्वे कैम्प को गिराया तो गम्भीर परिणाम होंगे

डी० डी० ए० को स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की चेतावनी

दिल्ली, ६ जुलाई।

दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा किंग्ज्वे कैम्प में आज से चालीस वर्ष पुराने आर्यसमाज मन्दिर को गिराने की चेष्टा बनाने पर उस क्षेत्र की धार्मिक जनता में भारी रोष फैलता जा रहा है।

५ जुलाई ८७ को रविवारीय सत्संग के अवसर पर आर्यसमाज किंग्ज्वे कैम्प में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने डी०डी०ए० के अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा कि वे इस प्रकार की भूल न करें जिससे दिल्ली व बाहर की हिन्दू जनता में सरकार की अदूरदर्शितापूर्ण नीति से बेचैनी फैले। स्वामी जी ने कहा कि देश के कोने-कोने में अवैध कब्रें तथा मकबरे बनाए जा रहे हैं। नई सड़कों तथा पुलों के निर्माण के साथ ही कब्रें बनाई जाती हैं। किन्तु सरकार खामोशी से मूकदर्शक बनकर सहन कर लेती है।

इसके विपरीत इस पुराने आर्य समाज मन्दिर और यज्ञशाला को गिराने की स्कीम बनाना प्रशासन की अनैतिक एवं भेदभावपूर्ण नीति होगी।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि अगर इस समाज मन्दिर की एक ईंट को भी हिलाया गया तो इसकी भयानक प्रतिक्रिया होगी। हम किसी अवस्था में भी इस अत्याचार को सहन नहीं करेंगे। इसलिए डी०डी०ए० के अधिकारी सोच समझ कर कोई कदम उठाये।

आर्यसमाज किंग्ज्वे कैम्प की इस विशाल सभा की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने की। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा, यह आर्य समाज १९४८ से इस क्षेत्र की जनता की सेवा करता हुआ अपनी गरिमा बनाए हुए है। १९५२ से इसके बैंक खाते एवं बिजली आदि के बिल के सबूत विद्यमान हैं। क्षेत्र की धार्मिक जनता दैनिक एव रविवार के सत्संगों के साथ-साथ विशेष समारोह मे बढ चढकर लाभ उठाती रही है परन्तु डी०डी०ए० द्वारा मन्दिर को गिराने की चेष्टा औरगजेबी हकूमत की याद दिलाती है। इस समय देश अनेक समस्याओं से गुजर रहा है और यदि इस अवस्था का ध्यान न कर आर्यसमाज मन्दिर को गिराया गया तो नतीजे खतरनाक हो सकते हैं। प्रशासन को अपनी भूल का गहरा पश्चात्ताप करना होगा। शांत धार्मिक जनता की भावना के साथ खिलवाड करना अच्छा नही है। इस अवसर पर सभा मे श्री रामचन्द्र "त्रिरल", डा० धर्मपाल, श्री वाचस्पति उपाध्याय, श्री रामनाथ सहगल सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने भी अपना सम्बोधन दिया।

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

कथा माला—५

ईशोपनिषद् प्रवचन

पूज्य महात्मा नारायण स्वामी

(गताक से आगे)

वेद में कहा गया है कि— जो ज्ञान की उपेक्षा करके कार्य करते हैं वे गहरे अन्धकार में जाते हैं, जो कर्म की अवहेलना करके ज्ञान में रमते हैं वे उससे भी अधिक अन्धकार में जाते हैं।'

ज्ञान का और ही फल कहते हैं और कर्म का और फल कहते हैं। ऐसा हम धीर पुरुषों के वचन सुनते हैं।'

'जो ज्ञान और कर्म इन दोनों को साथ-साथ जानता है वह कर्म से मृत्यु को तैरकर ज्ञान से अमरता को प्राप्त करता है।'

विद्या और अविद्या

यह यजुर्वेद के ४०वे अध्याय के मन्त्रों का सार है। इनका देवता आत्मा है अर्थात् इनमे जिस विषय का वर्णन किया गया है वह आत्मा है। जब हम आत्मा के गुणों पर विचार करते हैं तब हमें इसके स्वाभाविक गुण, ज्ञान और प्रयत्न देख पड़ते हैं। विद्या ज्ञान को कहते हैं। अविद्या के दो अर्थ किए जाते हैं एक पारिभाषिक और दूसरा यौगिक। दर्शनों में प्राय पारिभाषिक अर्थ 'मिथ्या ज्ञान' के लिए जाते हैं परन्तु अविद्या के यौगिक अर्थ 'विद्या से भिन्न' के हैं अर्थात् जो विद्या या ज्ञान नहीं हैं। जो ज्ञान नहीं वह क्या है? इस प्रश्न का उत्तर इन मन्त्रों का देवता देता है। इन मन्त्रों का देवता आत्मा है। आत्मा के स्वाभाविक गुण ज्ञान और कर्म हैं। ज्ञान से भिन्न कर्म है इसलिए अविद्या का अर्थ कर्म हो ग।

कर्म और ज्ञान पर विचार करने पर पता लगेगा कि जो व्यक्ति केवल कर्म को लेते है वे अन्धकार मे रहते हैं और जो कर्म की उपेक्षा करके ज्ञान को लेते हैं वे उससे भी ज्यादा अन्धकार मे रहते है। उन्हें अन्धकार का फल मिला करता है। ज्ञान का नहीं। इसके प्रकाश मे जो केवल कर्म को लेते है उन्हें अच्छा बतलाया गया है परन्तु श्रेष्ठ नहीं। जो दोनो को साथ-साथ काम मे लाते हैं वे कर्म के द्वारा मृत्यु से पार हो जाया करते हैं और ज्ञान से अमरता को प्राप्त कर लिया करते हैं। उपदेश यह है कि ज्ञान हासिल करो परन्तु आचरण भी उसी ज्ञान के अनुकूल करो। यही वैदिक धर्म है। तुम कहीं से भी ज्ञान हासिल क्यों न करो, परन्तु वह ज्ञान और उसके अनुसार कर्म मौत के बन्धनों को ढीला करने वाले ही हों। मनुष्य का यही मुख्यतम कर्त्तव्य कहा गया है।

पश्चिमी जगत्

पश्चिमी जगत् में दो नियम काम करते हैं। वे साइन्स और आर्ट हैं। साइन्स ज्ञान में और आर्ट कर्त्तव्य में सम्मिलित कहा गया है Science consists in knowing and art consists in doing पश्चिम के देशों की तरक्की के मूल में ये ही दो बाते हैं। देखना यह है कि पश्चिम के ज्ञान और कर्म का आदर्श वैदिक ज्ञान और कर्म के आदर्श के सदृश हैं या इन दोनों में कोई विभिन्नता है। वेद और उपनिषद ने शिक्षा दी है कि ज्ञान और कर्म वे ही होने चाहिएं जो परतन्त्रता को दूर करने वाले हों, जिनसे मृत्यु के बन्धन ढीले हो जायें। परतन्त्रता दुःख है, स्वतन्त्रता सुख है। परतन्त्रता के वास्तविक अर्थ दूसरों की हकूमत नहीं है वरन् इन्द्रियों की दासता ही परतन्त्रता के वास्तविक अर्थ हैं। अपने भीतर स्वतन्त्र होने से ही स्वतन्त्रता मिला करती है। पूर्व के ज्ञान और कर्म का उद्देश्य यही है, आदर्श यही है। पश्चिम के ज्ञान और कर्म का उद्देश्य और आदर्श यह नहीं है। साइन्स मनुष्यों को कहाँ पहुँचाना चाहती है इसका पता नहीं है। पश्चिम के लोग तरक्की कर रहे हैं पर उद्देश्य का उन्हें पता नहीं। पश्चिमी साइंस जनसंहार में काम आ रही है। नाना प्रकार की जनसंहारिणी गैसें तैयार हो रही हैं। एक गैस इस प्रकार की तैयार की गई है कि यदि उसका दुनिया के सबसे बड़े नगर लण्डन पर प्रयोग किया जाए, यदि वह गैस तीन हवाई जहाजों पर से छोड़ी जाए और वह लण्डन में श्वास लेने वाली वायु में मिल जाए तो तीन घण्टे में अस्सी लाख आबादी वाले लण्डन शहर की आबादी नष्ट हो जाए। जर्मनी के सात वैज्ञानिकों ने एक जहरीली गैस तैयार की। वे समझते थे कि यह गैस सबसे ज्यादा भयानक गैस है। वे उसे स्टोर में धर रहे थे। किसी प्रकार उस गैस का कुछ भाग रसायनशाला की हवा में मिल गया। श्वास लेते ही वे सातों वैज्ञानिक वहीं मर गए। जिस गैस को उन्होंने दूसरे हजारों आदमियों के संहार के निमित्त बनाया था उसी से वे स्वयं मर गए। कहने का मतलब यह है कि पश्चिम के ज्ञान और कर्म का कोई उद्देश्य नहीं है। वैदिक ज्ञान कर्म का उद्देश्य है। मनुष्य को ऐसे ही ज्ञान और कर्म का सहारा लेना चाहिए जिनका उद्देश्य हो। यही मनुष्य का मुख्य कर्म है।

ज्ञान का क्षेत्र

आगे ज्ञान के क्षेत्र के सम्बन्ध में वेद में बताया गया है कि—

"जो केवल असम्भूति (कारण शरीर) का सेवन करते हैं वे गहरे अन्धकार में हैं और जो केवल सम्भूति—सूक्ष्म और स्थूल शरीर में कारण की उपेक्षा करके रमते हैं वे उससे भी ज्यादा अन्धकार में हैं।"

'सूक्ष्म और स्थूल शरीर के और ही फल कहते हैं और कारण शरीर के और ही फल कहते हैं।"

'जो कोई कार्यरूप प्रकृति= सूक्ष्म+स्थूल शरीर और कारण रूप प्रकृति=कारण शरीर, इन दोनों को जो साथ-साथ जानता है वह कारण शरीर से मृत्यु को तर कर कार्य शरीर से अमरता को प्राप्त करता है।"

इन मन्त्रों का मुख्य विषय सम्भूति और असम्भूति का ज्ञान है। सम्भूति कार्य प्रकृति और असम्भूति कारण रूप प्रकृति को कहते हैं। ये दोनों जब आत्मा से सम्बन्धित होती हैं तब इनके अर्थ कारण और कार्य शरीर होते हैं। कारण शरीर की कल्पना घटाकाशवत है।

जगत् में व्यापक कारण रूप प्रकृति का जो अंश हमारे भीतर है उसी का फर्जी नाम 'कारण शरीर' है। कार्य शरीर दो हैं—सूक्ष्म और स्थूल। इन तीनों के काम अलग-अलग हैं।

स्थूल शरीर

यह शरीर सूक्ष्म शरीर का साधन है। उसी के द्वारा विषयमय जगत् से सूक्ष्म शरीर का सम्बन्ध होता है। स्थूल शरीर के विकास और उसकी पुष्टि से सूक्ष्म शरीर की उन्नति होती है।

सूक्ष्म शरीर

सूक्ष्म शरीर १७ चीजों के समुदाय का नाम है।

५ ज्ञानेन्द्रियाँ।

५ सूक्ष्म विषय=तन्मात्रा(शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध)।

५ प्राण।

१ मन।

१ बुद्धि।

सूक्ष्म शरीर के विकास और उसकी पुष्टि से मानसिक उन्नति होती है।

कारण शरीर

कारण शरीर के विकास और उसकी पुष्टि से मनुष्य में प्रभु-प्रेम का संचार होता है और वह योगी करता है। मतलब यह है कि तीनों प्रकार के शरीर उन्नत होने चाहिएं। यदि सूक्ष्म शरीरों की उपेक्षा करके केवल कारण शरीर की उन्नति चाहते हो तो अन्धकार में पड़ना पड़ेगा। यदि कारण शरीर की उपेक्षा करके स्थूल और सूक्ष्म शरीरों को उन्नत करना चाहते हो तो भी भविष्य अंधकारमय होगा, क्योंकि इससे नास्तिकता पैदा होगी। दोनों प्रकार के शरीरों की उन्नति साथ-साथ होनी चाहिए तभी मौत का बन्धन छूटा करता है।

मनुष्य के उपर्युक्त कर्त्तव्यों को बतलाते हुए उपनिषद् ने मनुष्यों को चेतावनी दी कि इन कर्त्तव्यों के पालन में सच्चाई होनी चाहिए अन्यथा इनकी उपादेयता न रहेगी। चेतावनी यह है—

"कि तुम पुरुषार्थमय जीवन सावधानता पूर्वक व्यतीत करो। संसार में धर्म क्या है? सत्य ही धर्म है। वेद और उपनिषद् ने स्पष्ट रीति से बतलाया कि धर्म अन्य किन्हीं नियमों को नहीं वरन् सत्य ही को कहते हैं। जो धर्म है वह सत्य है। जो सत्य है वह धर्म है। बतलाया गया कि जिस सत्य को हम प्राप्त करना चाहते हैं उस पर चमकती हुई चीजों का पर्दा पड़ जाया करता है। हम सोने चांदी और अन्य प्रलोभनों में पड़कर सत्य से विमुख हो जाया करते हैं। जब मनुष्य अपनी कमजोरी से सत्य पर पर्दा

(शेष पृष्ठ ४ पर)

इतिहास

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीराबाद (उ० प्र०)

सन् १९७५ ई० में कुछ तथा-कथित इतिहासज्ञों ने महाभारत हुआ ही नहीं, महाभारत हुआ तो था किन्तु रामायण से पहले, न कभी गाण्डीव रहा न पिनाक। यह तीन वक्तव्य देकर अपनी भारतीय इतिहास विषयक अज्ञानता का परिचय दिया था। उस समय हम ने "रामायण, महाभारत और लंका, रामायण इतिहास है कपोल कल्पना नहीं, गाण्डीव भी था और पिनाक भी। रामायण पहले महाभारत बाद में" ये चार लेख विविध समाचार पत्रों में लिखे थे। उक्त मान्यता वाले सज्जनों को यह लेख भेजे भी किन्तु किसी ने कोई उत्तर तक देने का साहस नहीं किया। जिज्ञासु पाठकों के लिए यह लेख प्रसारित किए जा रहे हैं, जो क्रमश: पाठकों को पढ़ने को मिलेंगे। इतिहास किसे कहते हैं? इन पंक्तियों में हम इस विषय पर लिखने लगे हैं!

मैकाले की योजना की शिक्षा से शिक्षित कहलाने वाले इन तथा-कथित इतिहासज्ञों को यह पता है कि मैकाले ने यह शिक्षा योजना इसलिए भारत में प्रचलित कराई थी कि इससे शिक्षित होकर भारतीय केवल रक्त, रंग और नाम से ही भारतीय रह जाये, किन्तु आचार-विचार से एकदम अभारतीय तथा अंग्रेजी सभ्यता के पुजारी बन जायें। यह जानकर भी उसी पद्धति को कार्यान्वित करने के लिए अंग्रेजों द्वारा तैयार किए गए कल्पित मिथ्या इतिहास को स्वाधीनता के चालीस वर्ष बीत जाने पर आज भी प्रमाण मानते रहना बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती। खेद की बात तो यह है कि विदेशियों और उनका अन्धानुकरण करने वाले भारतीय लेखकों के लेखों से इधर-उधर हटकर खोज करना तो एक ओर रहा। यह लोग साधारण तर्कों से भी काम लेने को तैयार नहीं। उन तर्कों से भी, जो इनके अपने विचारों मान्यताओं और धारणाओं के विषयों में उत्पन्न होते हैं। तर्कों के उत्पन्न होने पर उन तर्कयुक्त प्रश्नों के युक्तियुक्त तथा प्रमाणित उत्तर ढूंढना ही अनुसंधान कहलाता है। जो व्यक्ति इस प्रकार अनुसन्धान के लिए तैयार न हो, वह वास्तविकता को कदापि नहीं जान सकता और बिना वास्तविकता को जाने इतिहासवेत्ता के विचार रखना नितान्त खोखला तथा दम्भ मात्र है। ऐसे व्यक्तियों द्वारा इतिहास विषयक वक्तव्य देना अनधिकार प्रयत्न तथा जाति को दिग्भ्रान्त करने का पाप है।

उन दिनों जब इन तथाकथित इतिहासवेत्ताओं के वक्तव्य भारत के प्रमुख समाचारपत्रों में प्रकाशित हो रहे थे, तब कई स्थानों पर "रामायण और महाभारत ऐतिहासिक ग्रन्थ है अथवा नहीं? इस विषय पर गोष्ठियां और सम्मेलन आयोजित किए गए। परतु गोष्ठियों और सम्मेलनों के आयोजकों के मन-मस्तिष्क पर भी तो मैकाले की योजना की शिक्षा का ही प्रभाव है, परिणामस्वरूप वही पी-एच० डी० और कालिज प्रवक्ता बुलाये जाते रहे। वह बेचारे क्या कहते? या तो वह पक्ष लेते प्राध्यापकों द्वारा प्रतिपादित भारतीय इतिहास विषयक सम्भ्रांतियों का और या यदि आयोजकों की भावनाओं की ओर ध्यान देते तो यह कह देते कि "अभी भारतीय इतिहास पर और खोज की आवश्यकता है। इस विषय में और अधिक जानकारी किए बिना कुछ कहना उचित नहीं।" इसका अर्थ यह हुआ कि "खुश रहे शैख भी, शैतान भी बेजार न हो।"

यह सामान्य बात है। जब विषय की जानकारी न हो, तब किसी भी पक्ष और वह भी विशेषकर कार्यक्रम के आयोजकों को रुष्ट करना अभिप्रेत न हो तो इस प्रकार का निर्णय अथवा वक्तव्य देना उपयोगी रहता है। वैसे इस प्रकार के वक्तव्य से एक ही परिणाम निकलता है कि आयोजन निरर्थक और निष्फल रहा। चाहे मन में विरोधी और कपटपूर्ण भावना रखते हुए आयोजकों से बुरा न बनने के लिए ऐसा वक्तव्य दिया गया हो अथवा अपनी अज्ञानता और अयोग्यता को छिपाने के लिए।

इन आयोजनों में भारतीय इतिहास की जानकारी रखने वालों को नहीं बुलाया गया। बुलाना तो एक ओर रहा—इन लोगों से सम्पर्क कर यह जानने का प्रयत्न भी नहीं किया गया कि इस विषय पर आप कोई जानकारी दे सकेंगे क्या? अथवा इस विषय में आप कुछ कहने की इच्छा रखते हैं क्या?

भारतीय इतिहास को योरोपीय लोगों, विशेषकर ब्रिटेन निवासियों ने क्यों विकृत किया? इस विषय में इतिहास विषयक सुप्रसिद्ध अनुसंधानकर्ता तथा भाषा का इतिहास, वैदिक वाङ्मय का इतिहास, भारतवर्ष का बृहद् इतिहास आदि अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के रचयिता स्वर्गीय श्री पण्डित भगवद्दत्त जी के विचार पाठकों की जानकारी के लिए हम नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं तथा इसके पश्चात् इतिहास किसे कहते हैं? एतद्विषयक प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत करेंगे।

"राथ, ह्विटने, वेबर, मैक्समूलर, मैकडानल, कीथ और रैप्सन आदि पाश्चात्य लेखकों को यह महान् भय था कि यदि एक बार भी आर्य इतिहास सत्य स्वीकृत हो गया तो तौरेत, जबूर और इन्जील का मत—जो वर्तमान यहूदी और ईसाइयों ने समझ रखा है संसार से उठ जाएगा। संसार वेदों की ओर झुकेगा, भारतीय गौरव पराकाष्ठा को प्राप्त होगा और संसार भारत का अभूतपूर्व मान करने लगेगा। मनु आदि ऋषि सर्वोपरि माने जायेंगे। कथित आसुरी और पञ्च आदि सांख्य-प्रवक्ता, हिरण्यगर्भ आदि योगवक्ता, स्कन्द, इन्द्र, विष्णु, भारत चक्रवर्ती, मान्धाता, हैहय, अर्जुन, जामदग्न्य राम, दाशरथि राम और पार्थ अर्जुन आदि अति महारथ, महा सेनापति वर्तमान ऐतिहासिकों के हृदय में उज्ज्वलता प्राप्त करेंगे। संसार का अद्वितीय पुरुष श्रीकृष्ण—जिसके पश्चात् उस से शतांश दिव्य गुण रखने वाला एक पुरुष भी आज तक इस भूतल पर नहीं जन्मा, संसार का हृदय सम्राट् होगा। अत इन जर्मन और अंग्रेज आदि लेखकों ने भारतीय इतिहास पुराण ग्रन्थों का महा निरादर किया। वैदिक ग्रन्थों से वे साक्षात रूप में परे नहीं हट सके। पर उन्हें अधिकांश मिथ्या कल्पनाएँ कह कर उन्होंने परे फेंक दिया और इतिहास आदि को उन्होंने वैदिक ग्रन्थों के विपरीत बताकर अपनी कपोल कल्पना आरम्भ कर दी।"

—अनुसंधानकर्ता श्री पं० भगवद्दत्तकृत भारतवर्ष का बृहद् इतिहास

इन विचारों को व्यक्त करने वाले स्वनामधन्य श्री प० भगवद्दत्त जी ने भारतीय इतिहास विषयक अपनी खोज प्रस्तुत करते हुए घोषणा की है कि योरुप के लेखकों को ज्ञान हो जाना चाहिए कि उनकी कल्पनाएं अब भारत में मान्य नहीं होंगी, उन्हें शिष्य बनकर भारतीय विद्वानों से पढ़ना होगा और अपने उच्छृङ्खल तथा कल्पित भाषा. मतों को तर्कयुक्त बनाना होगा। उन्हें ईसाई पक्षपात छोड़कर सत्य की आराधना करनी होगी।

इतिहास किसे कहते हैं? इस विषय को पाठकगण नीचे की पंक्तियों में पढ़ें और तब निश्चय करें कि यह लोग कितने इतिहासवेत्ता हैं, जो आजकल इतिहास के अधिकृत विद्वान् और प्रवक्ता होने का दम भरते हैं।

"इतिहास' पुरावृत्त ऋषिभि' परिकीर्त्यते।" आचार्य शौनक कृत बृहद् देवता ४।४४६।

इतिहास अर्थात् पुरावृत्त (पुराना वृत्तांत) ऋषियों द्वारा कीर्तित, वर्णित है।

इतिहैवमासीदिति य. कथ्यते स इतिहास।' आचार्य दुर्गा कृत निरुक्त भाष्यवृत्ति २।१०

यह निश्चयपूर्वक इस प्रकार हुआ था, ऐसा जो कहा जाता है, वह इतिहास है

'इतिहास पुरावृत्तम्।'
अमरकोष नामलिंगानुशासनम्। १।६।४।

इतिहास प्राचीन वृत्तान्त को कहते हैं।

'इति ह शब्द. पारम्पर्यं विज्ञेयोऽव्ययम्। इति हास्तेऽस्मिन्निति इतिहास।
(श्री सर्वानन्द कृत टीका सर्वस्व)

परम्परा से जो कहा जा रहा है कि ऐसा हुआ था, वह अव्यय है अर्थात् उसमें परिवर्तन योग्य कुछ भी नहीं है, इसलिए वह इतिहास है।

इद शृणु महाप्राज्ञः धर्मपुत्र महायश.। इतिहास पुरावृत्त शरणार्थं महाफलम्।।
महाभारत अनु० पर्व ६७।३।

इस श्लोक की द्वितीय पंक्ति में इतिहास को पुरावृत्त (प्राचीन वृत्तांत) कहा गया है।

पुराणप्रविभेद एवेतिहास इत्येके। स च द्विविधा परक्रियापुराकल्पाभ्याम्। परक्रियापुराकल्प इतिहास इति द्विधा।
(राजशेखरकृत काव्यमीमांसा पृ० ३)

इतिहास की गति दो प्रकार है। वे दो प्रकार की परिक्रिया और पुराकल्प हैं। परक्रिया में एक नायक अथवा प्रधान व्यक्तित्व होता है तथा पुराकल्प में अनेक प्रधान व्यक्तित्व होते हैं।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

दंगे नहीं बगावत—
इमाम बुखारी को दण्डित करो

हाल ही मे दिल्ली और मेरठ में जो साम्प्रदायिक दगे हुए हैं। इन दंगों के पीछे दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम बुखारी का हाथ है. यह स्पष्ट होता जा रहा है कि दोनों स्थानो मे दगे पूर्व नियोजित थे। इसमें अब कोई शक नही रहा है। मेरठ और दिल्ली के दगों का मूल कारण शाही इमाम द्वारा दिए गए भडकीले भाषण हैं।

दिल्ली मे एक साइकिल सवार और एक स्कूटर सवार की मामूली सी कहा-सुनी ने तुरन्त अफवाहों के माध्यम से उग्र रूप धारण कर लिया और देखते ही देखते वहा मुसलमानों की एक भारी भीड इकट्ठी हो गई और शुरू हो गया हिंसा का ताण्डव नृत्य। इन छोटी घटनाओं से इतना बडा कहर बरपा न होता अगर शाही इमाम बुखारी ऐसे भडकीले भाषण न देकर मुस्लिम जनता में साम्प्रदायिकता का जहर न भरता

तभी तो इमाम बुखारी का जरा सा भी संकेत मिलते ही सब मस्जिदों से ध्वनि विस्तारक यन्त्रों के माध्यम से खुदा के बन्दों को घर से निकलने को कहा गया और देखते ही देखते लगभग तीन हजार आदमी बन्दूक, भाले, फरसे, बर्छियां और पेट्रोल के कनस्तर व हाथ में मशाले लिये निकल पडे। यह सब तैयारियां एक दिन में नही हो सकती हैं। मेरठ और दिल्ली के दंगे एक खुली बगावत हैं, देशद्रोह हैं और यह सब शाही इमाम बुखारी के नेतृत्व में हो रहा है। दिल्ली और मेरठ के दंगों का दोषी इमाम बुखारी को ठहराया जाना उचित है।

मेरठ और दिल्ली के दंगों से ऐसा लगता है कि वह किसी भारी घटना का रिहर्सल है। ३० मार्च को इमाम बुखारी ने मुसलमानों की विशाल रैली का दिल्ली बोट क्लब पर आयोजन किया था। उस रैली में जिस प्रकार के भाषण दिए, भाषणो से उस कडी के सूत्र अपने आप उभरकर सामने आते हैं। उस रैली में जिस प्रकार के भाषण दिए स्पष्ट रूप से देश में अराजकता फैलाने के गहरे षड्यन्त्र थे। इस रैली से पहले भी इमाम बुखारी अखबार को यह वक्तव्य दे चुके थे कि मुसलमानों के मन मे हिन्दू राज्य आने का डर है इसलिए एक दिन मुसलमान अपनी हिफाजत के लिए अलग से होमलैण्ड की मांग करेंगे। और कहेंगे कि उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, असम आदि में जितने मुसलमान हैं उन्हें एकत्रित करके मुस्लिम होमलैण्ड बनाओ। खुदा न करे वह दिन आए पर हालात वह दिन जरूर ला देगा।

इमाम बुखारी ने मिनिस्टरों को भी यह चेतावनी दी कि अपनी आंखें खोल लो, कान खोल कर सुन लो नही तो मैं तुम्हारी खटिया खड़ी कर दूगा, तुम्हारी कोठियां जला दूंगा, हम तुम्हारी कोठियां लूट लेंगे और तुम्हारी टांग तोड देंगे, हिंदुओं का हम नामोनिशान मिटा देंगे।

इमाम बुखारी ने मुसलमानों की रैली को सम्बोधित करते हुए कहा था—खुदा न खास्ता मैं अभी यह ऐलान कर दू कि जाओ और कोठियां फूंक दो,- हिन्दुओं का नामोनिशान मिटा दो, तो दुनिया की कोई ताकत इसे नहीं रोक सकती है। लेकिन वह समय नजदीक है जब जामा मस्जिद से यह ऐलान किया जाएगा तब बन्द पड़ी हर एक मस्जिद का ताला खोल दिया जाएगा। बुखारी साहब ने यह भी फरमाया कि हम सरकार को स्वीकार नहीं करते हैं हमारी तो सरकार दादरे वतन [सऊदी अरब] है। हम इस आजादी को आजादी नहीं मानते और हिन्दुस्तान की अदालतों में हमारा कोई विश्वास नहीं है। अब तक हमने बहुत सब्र रखा परन्तु अब हम इन गुलामी की जजीरों को तोडकर रहेंगे। सरकार का शुक्रिया है कि उसने सोए हुए शेर को जगा दिया।

मौलाना कशोछवि ने भी कहा कि सरकार अपनी पुलिस और सुरक्षा बल को हटा ले और हिन्दू और मुसलमानों को आपस में निपटने दें।

क्या इस प्रकार के भाषणों के पश्चात् भी उन्माद और घृणा के ताण्डव की इस कड़ी के सूत्र कहां छिपे रह सकते हैं? अब यह स्पष्ट हो चुका है कि इमाम बुखारी जैसे राष्ट्रद्रोही तत्त्व भारत में गृह युद्ध छेडने और देश के टुकड़े करने पर आमादा हैं।

अब भी समय रहते हुए हमारी सरकार ने इमाम बुखारी जैसे राष्ट्रद्रोही तत्त्वों को दण्डित नहीं किया तो देश में उन्माद और ताण्डव का वह भीषण नृत्य होगा जिस की कल्पना भी नही की जा सकती तब यहां पर हिन्दुओं का नामोनिशान नहीं रहेगा। और फिर सारा भारत दारुल इस्लाम बन जाएगा।

—अशोक गौड
आर्यसमाज, रावतभाटा
वाया कोटा (राज०)

(पृष्ठ २ का शेष)

ईशोपनिषद् प्रवचन

डाल दिया करता है तब वह धर्म का प्यारा मुंह नही देखा करता। प्रभो! उस पर्दे को हटा दीजिए। फल यह होगा कि सत्य रूपी धर्म देख पडने लगेगा। नीति में खुले तौर पर कहा गया है:

"यज्ञ, स्वाध्याय, दान, तप, सत्य, धृति, क्षमा, अलोभ धर्म के मार्ग हैं। पहले चार में नुमाइश की जा सकती है परन्तु अन्त के चार में नहीं। यदि इनमें सच्चाई हो तो ठीक। जब इन अन्तिम चार को न छोड़कर काम करेंगे वह धर्म होगा। इन्हीं के ठीक-ठीक आचरण की शिक्षा से पर्दे के हटाने की कोशिश की गई है।

सत्य की महिमा

उपनिषद् में सत्य की बडी महिमा वर्णन की गई है। सत्य ईश्वर को भी कहते हैं। वह सत्य में ही प्रतिष्ठित है। एक जगह ब्रह्म का नाम 'सत्यम्' कहा गया है। ब्रह्म को 'सत्यम्' क्यों कहते हैं? इसलिए कि 'सत्यम्' शब्द तीन अक्षरों से बना है स+ति+यम्। 'स' जीव का वाचक है। 'ति' ब्रह्मांड के लिए प्रयुक्त हुआ है और 'यम' जीव और ब्रह्मांड दोनों को नियम में रखने वाला होने से ब्रह्म का नाम है। इस प्रकार 'सत्यम्' ब्रह्म ही का नाम है। ईश्वर प्राप्ति के लिए सत्य का सहारा लो। सत्य बोलो, सत्य मानो और सत्य ही करो।

उपदेश

आगे कहा गया है कि—

"वह सबका पालन पोषण करने वाला है, न्यायकारी है।"

शिक्षा यह है कि जिन साधनों से दुःख हुआ करता है उन से हमें दूर कराए जिन से कल्याण हो वें प्राप्त कराए।

हे प्रभु! आप कल्याणकारी हैं, परन्तु हम आपके उस रूप को तभी देख पायेंगे जब दुःख के साधनों से रहित हो जायेंगे।

इस प्रकार आठ मन्त्रों का यह तीसरा भाग है।

इस भाग में शिक्षा यह दी गई है कि ज्ञान प्राप्त करो और उसके अनुकूल आचरण करो तथा मृत्यु को पार करके अमरता प्राप्त करो। तुम्हारे सब कर्त्तव्यों में सत्यता होनी चाहिए और उनका अनुष्ठान दुःख को दूर करने और अन्तिम गति को प्राप्त करने वाला हो। मतलब यह है कि अपने को श्रेष्ठ बनाओ।

(समाप्त)

(पृष्ठ ३ का शेष)

इतिहास

प्राग्वृत्तकथनं चैक-
राज्यकृत्यमिवादितः।
यस्मिन् स इतिहासः स्यात्
पुरावृत्तः स एव हि॥

शुक्रनीतिसार ४।३।१०२।१०३।

प्राचीन कथन जिसमें एक राजा का कृत्य वर्णित है, इतिहास हो है, क्योंकि उस में निश्चित प्राचीन वर्णन है।

पुराणम्-इतिवृत्तम्-आख्या-
यिका-उदाहरणं-धर्मशास्त्रम्
अर्थशास्त्रं चेति
इतिहासः॥

(आचार्य विष्णुगुप्त कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र अ० ५)

पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका, उदाहरण, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, ये छः इतिहास हैं।

अत्रापि उदाहरन्ति इमं इतिहासं पुरातनम्।

[महाभारत शान्तिपर्व]

यहां भी उदाहरण देते हैं इस पुरातन इतिहास का। इस उद्धरण में इतिहास और पुरातन शब्द के साथ-साथ "उदाहरन्ति" अर्थात् उदाहरण देते हैं भी द्रष्टव्य तथा विचारणीय है।

धर्मार्थकाममोक्षाणा-
मुपदेशसमन्वितम्।
पुरावृत्त-कथायुक्त-
मितिहासं प्रचक्षते॥

—विष्णुपुराण की श्रीधर स्वामी कृत टीका १।१४।

भूल सुधार

(२८ जून) नाम दयानन्द का, काम मैकाले का" के लेखक श्री दत्तात्रेय तिवारी, वरिष्ठ पत्रकार हैं। पाठक नोट करें।

प्रेरक प्रसंग

प्रस्तोता—सत्यानन्द आर्य

: १ :

एक दिन स्वामी दयानन्द व्याख्यान के अनन्तर कई राजाओं और पण्डितों सहित भ्रमण करने जा रहे थे। मूर्तिपूजा पर युक्तियाँ—प्रतियुक्तियाँ चल रही थीं। आगे ग्रामीण लोगों का एक देवालय आ गया। उस समय वहाँ बहुत से छोटे-छोटे बच्चे मिल जुलकर स्वच्छतापूर्वक खेल कूद रहे थे। स्वामी जी ने वहाँ एकाएक सिर नीचा कर दिया और फिर आगे चल पड़े। एक साथी पंडित ने कहा—"स्वामी जी! प्रतिमा पूजन का खण्डन चाहे जितना करो पर देव बल का भी प्रत्यक्ष प्रभाव है कि देवालय के सामने, आपका मस्तक आप ही आप नीचा हो गया।" महाराज यह सुनते ही उन्हीं पावों पर खड़े हो गये और उन बालकों में खेलती हुई एक चतुर्वर्षीया निर्वस्त्र बालिका की ओर संकेत करके बोले-"देखते नहीं हो यह मातृ शक्ति है, जिसने हम सब को जन्म प्रदान किया है?" ये शब्द सुनते ही सारी संगति पर सन्नाटा छा गया, सभी मूक हो गये। आसन पर लौट आने तक इन सब के कानों में वही शब्द गूंज रहे थे

: २ :

कलकत्ता यूनीवर्सिटी के वाईस चांसलर का एक दिन एक पत्र पंडित मदन मोहन मालवीय को मिला, जिसमें लिखा था, "कलकत्ता यूनीवर्सिटी आपको डाक्टरेट की सम्मानित उपाधि से अलंकृत करके गौरवान्वित होना चाहती है। आशा है आप अपनी स्वीकृति से मुझे शीघ्र सूचित करेंगे।" एक क्षण का भी विलम्ब न कर उन्होंने इस पत्र का उत्तर दिया—"मैं जन्म और कर्म से ब्राह्मण हूँ। ब्राह्मण के लिए पण्डित से बढ़कर अन्य कोई उपाधि नहीं हो सकती। "डाक्टर" मदनमोहन कहलाने की अपेक्षा मैं "पण्डित" मदनमोहन कहलाना अधिक पसन्द करूंगा। आशा है, आप इस ब्राह्मण की इस भावना का आदर करेंगे।"

वृद्ध मालवीय जी वाईसराय की कौंसिल के वरिष्ठ काउंसलर थे। उनकी गहन और तथ्यपूर्ण आलोचनाओं के बावजूद वाइसराय उनकी मेधा, मधुरता, सज्जनता का बहुत कायल था। एक विशेष मुलाकात में वाइसराय ने कहा, "पण्डित मालवीय, हिज मेजेस्टी की सरकार आपको "सर" की उपाधि से अलंकृत करना पसन्द करेगी। क्या आप उसे स्वीकार करेंगे?" मालवीय जी ने तुरन्त उत्तर दिया—महामहिम धन्यवाद! किन्तु ब्राह्मण के लिए "पण्डित की उपाधि ही सर्वोपरि है, जो मुझे वंशपरम्परा से ही प्राप्त है।"

काशी के पण्डितों को भी सभा द्वारा 'पण्डितराज" की उपाधि दिये जाने के सुझाव पर उस देवता ने कहा, "पंडित की उपाधि विशेषणातीत है। मुझे पण्डित ही रहने दीजिए।"

: ३ :

कलकत्तास्थ बेलूर मठ में नास्तिक नरेन्द्र ने उपहासपूर्वक पूछा, "क्या ईश्वर है, और क्या उसे देखा जा सकता है?"

"हां है, और उसे वैसे ही देखा जा सकता है जैसे तुम मुझे देखते हो और मैं तुम्हें" रामकृष्ण परमहंस के इन शब्दों ने नरेन्द्र को परम आस्तिक बना दिया।

"स्वामी दयानन्द कलकत्ता आये हुए हैं। मेरी इच्छा है कि दूर से उनके दर्शन करूं", एक सायं नरेन्द्र ने परमहंस की सेवा में निवेदन किया।

"अवश्य, अवश्य, नरेन्द्र! और हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे", परमहंस बोले।

उस सायं उस लम्बे बरामदे में एक नग्नकाय, कौपीनधारी दीप्तमूर्ति को अंधेरे में इधर उधर घूमते हुए देख कर परमहंस बोले, "निस्सन्देह, ये ही आचार्य दयानन्द हैं, नरेन्द्र!"

"वे अंधेरे में कैसे दीप्त प्रतीत हो रहे हैं, गुरुदेव!" यह ब्रह्मचर्य की महिमा है, नरेन्द्र!"

"तो मैं भी अखण्ड ब्रह्मचारी ही रहूंगा, गुरुदेव!" "नरेन्द्र तुम्हारा व्रत पूरा हो।"

"गुरुदेव! वे इतने उत्तेजित और उद्विग्न-से क्यों घूम रहे हैं?"

इनके हृदय में युग-युग की पीड़ा है, नरेन्द्र! ये स्वदेश के गर्वीले अतीत का वर्तमान में प्रत्यावर्तन करना चाहते हैं, वत्स!"

"बहुत सुन्दर, नरेन्द्र का आत्मा बोल उठा, "और मैं भी सद्य: सन्यास धारण करके विश्व को अपने अतीत के दिव्यालोक का दर्शन कराऊँगा। नरेन्द्र ने विवेकानन्द बनकर समस्त मानव मण्डल को वेदान्त के आलोक से आलोकित कर दिया।

: ४ :

नव स्नातक भट्टाचार्य वेदभाष्य में तल्लीन थे। उनकी विधवा माता आईं और बोलीं, "वत्स! तेरे विवाह की तैयारियां हो रही हैं। आगामी सोमवार को संस्कार होना निश्चित हुआ है।" "तथास्तु" अनायास ही आचार्य के मुख से निकला।

विवाह के कुछ ही दिन बाद, आचार्य की माता महाप्रयाण कर गईं। आचार्य ने स्वधर्मिणी को अपने अभिमुख आसन पर बिठाकर कहा, "देवी! मैंने चारों वेदों का अविकल भाष्य समाप्त होने तक अखण्ड ब्रह्मचर्य का सुसंकल्प धारण किया हुआ है। ब्रह्मस्थ हुआ मैं ब्रह्म के ब्रह्म (वेदज्ञान) का अनुवाद कर रहा हूं। मुझे अपने शरीर की रक्षा का लेशमात्र ध्यान नहीं रहता। अब तक माताश्री मेरी देखरेख रखती थीं, अब तुम रखना। अति प्रसन्नवदन और श्रद्धापूर्ण हृदय से देवी ने उत्तर दिया, "तथास्तु, देव!"

६८ वर्ष की आयु में पूर्णिमा की सायं भट्टाचार्य ने चारों वेदों का भाष्य समाप्त किया। उस रात पति-पत्नी को बड़ी निश्चिन्तता से निद्रा आई। रात्रि के चतुर्थ प्रहर में आचार्य की निद्रा भंग हुई। छत पर चटाई पर लेटे-लेटे उन्होंने इधर-देखा "चन्द्रिका मुस्करा रही है। प्रकृति हंस रही है। वाम पार्श्व में एक तपस्विनी चटाई पर लेटी हुई है।"

आचार्य ने अपने और अपनी धर्मिणी के श्वेत केशों को देखकर मन ही मन कहा, 'दोनों ही शिर चन्द्रिका के समान श्वेत हो गए।"

देवी ने अंगड़ाई ली और पति की ओर मुख किया। आचार्य ने अपनी वाम भुजा फैलाई। परन्तु पूर्व इसके कि वह देवी के शरीर को स्पर्श कर सकते, देवी उठकर खड़ी हो गई, और दोनों कर जोड़, पति को प्रणाम करती हुई बोली, देव! आयु के अन्तिम प्रहर में भी इन दोनों अछूते जीवनों को अछूते ही बने रहने दो। अब तक वेदभाष्य में लगे रहे। अब वेदप्रचार में लग जाइए।"

"तथास्तु" कहकर आचार्य उठे, पत्नी को प्रणाम किया, आकाश की ओर देखकर गद्गद हृदय से बोले, "सत्यं शिवं सुन्दरम्, शान्तम्, शाश्वतम्।"

दूसरी ही प्रात दोनों ने यथाविधि सन्यास लिया और शेष समस्त जीवन वेद प्रचार में लगाया। ये थे महान् शंकराचार्य के प्रेरणा स्रोत कुमारिल भट्ट।

दूरदर्शन पर रामायण

सूचना प्रसारण मन्त्री के नाम सभा मन्त्री का पत्र

गत कुछ सप्ताह से रविवार को प्रात ६-३० से धारावाहिक रामायण का सीरियल दूरदर्शन पर दिखाया जा रहा है। रामायण मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन की एक गाथा है, जो बहुत ही प्रभावशाली और शिक्षाप्रद है। रामायण क्योंकि हिन्दुओं का एक धार्मिक ग्रंथ है, इसे समस्त—बच्चे, वृद्ध और युवा वर्ग के लोग बडी रुचि लेकर देखते हैं। ऐसा सीरियल आपने दूरदर्शन पर चलाया है उसके लिए आप और आपके विभाग के समस्त अधिकारी बधाई के पात्र हैं। मैं सभा की ओर से आपका धन्यवाद करता हू।

आपको विदित ही है कि प्रत्येक धर्मस्थान, सनातन धर्म मन्दिरो, आर्यसमाज मन्दिरों मे प्रात. काल ७ से ११ बजे तक सत्संग आयोजित किए जाते हैं. जिसमें हजारो बहन-भाई युवा वर्ग के लोग उपस्थित होकर अपना-अपना सत्संग करते हैं।

आपके रामायण के प्रसारण का समय प्रातः ६-३० बजे से है, जिससे सत्सग में भाग लेने वाले बहन भाई और खासकर युवा वर्ग आपके इस सीरियल को देखने से वचित हो जाते हैं।

आपको विदित ही है कि यह सभा दिल्ली की २०० आर्यसमाजों का एक सुदृढ सगठन है। हमें लगातार आर्यसमाजों से इस सीरियल का समय बदलवाने के लिए प्रस्ताव तथा पत्र प्राप्त हो रहे हैं।

हमारी हार्दिक इच्छा है कि ऐसे सीरियल दूरदर्शन पर दिखाए जाने चाहिए, जो प्रेरणादायी हो, परन्तु इनका समय ऐसा निर्धारित किया जाना चाहिए, जिससे सब इसे देख पायें। अत. मेरी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो की ओर से मांग है कि आप इस रामायण के सीरियल का समय प्रात ६.३० के स्थान पर ११.०० बजे के बाद या रात्रि को १०-०० बजे से पूर्व किसी समय रखने की कृपा करें, जिससे सभी बहन भाई इसका पूर्ण लाभ उठा सकें।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप इस सम्बन्ध में तुरन्त उचित कार्यवाही करेंगे।

डा० धर्मपाल
महामन्त्री

नोट—आर्य सत्सगों में भी रविवार को रामायण सीरियल के कारण उपस्थिति कम होने लगी है। आर्यसमाजों के अधिकारी एवं सदस्यों को भी इस आशय के पत्र श्री अजीत पांजा, सूचना प्रसारण मन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली के नाम भेजने चाहिए।

—सम्पादक

आर्यसमाज मन्दिर न्यू मोतीनगर में बृहद् यज्ञ एवं वेद कथा निर्विघ्न पूर्ण

२६-६-८७ से ५-७-८७ तक प्रात: पारिवारिक यज्ञ में बडी सख्या में उपस्थिति, यज्ञ के ब्रह्मा श्री ओमवीर सिंह जी के बडे सुन्दर ढग से वेद के मन्त्रो की व्याख्या ने बडी उत्कण्ठा व श्रद्धा उत्पन्न की। रात्रि श्री जैमिनी जी एव प० यशपाल जी सुधांशु, सम्पादक आर्य सन्देश द्वारा कथा और दोनों समय श्री श्याम वीर राघव के भजनों द्वारा एक अनोखा समा बधता रहा। उपस्थिति आशा से अधिक रही। पूर्ण आहुति ५-७-८७ मे यजमानों ने पूर्ण उत्साह से भाग लिया। इस क्षेत्र के ए० सी० जा० सरदार बलजीतसिंह यज्ञ में शुरू से अन्त तक बैठे रहे। मुख्य अतिथि के नाते धर्म उपदेश में सब महान् पुरुषों का आदर सम्मान करने का आदेश दिया। डा० महेश चन्द विद्यालंकार, डा० धर्मपाल आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं भारत मित्र जी शास्त्री ने अपने विचार प्रकट किए। संगीत सम्मेलन की प्रधानता श्री देवीदयाल जी चड्ढा ने की और संयोजक के नाते श्री सत्यदेव स्नातक ने कार्य भार समाला। अन्त मे ऋषि लंगर सफलतापूर्वक एवं निर्विघ्न समाप्त हुआ। ऋषि लंगर में लगभग १००० लोगो ने भोजन किया।

तीर्थ राम आर्य
प्रधान

नोट—मुख्य अतिथि बलजीतसिंह जी द्वारा आर्यसमाज मन्दिर, न्यू मोती नगर की तरफ से एक अनाथ के लिए सिलाई मशीन दी गई।

आर्यसमाज सेक्टर ७ फरीदाबाद में

आध्यात्मिक पुनर्जागरण व पारिवारिक सत्संग

आर्यसमाज सेक्टर ७ के तत्वावधान में एक आध्यात्मिक पुनर्जागरण व पारिवारिक सत्सगों का एक बहुत ही रोचक कार्यक्रम चलाया गया जिसका मुख्य उद्देश्य था कि घर-घर में वेद प्रचार हो। यह कार्यक्रम अपने आप में एक अनोखा कार्यक्रम था। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माननीय अधिकारियों ने हमारा उत्साह बढाया और हमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री वेदव्यास जी व ज्योति स्वरूप तथा बाद के कुछ दिनों मे श्री चुन्नीलाल जी को इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु हमें इनका सहयोग दिया। भजनोपदेशकों की मधुर वाणी, शील स्वभाव व तर्कसंगत वैदिक विचारधारा ने सभी का मन जीत लिया। तीनों ही भजनोपदेशकों ने बिना थकान महसूस किए एक दिन में तीन-तीन और कभी-कभी तो चार परिवारों मे सत्सग कराए। लोगों में अपार उत्साह था और जनमानस में यह भावना पैदा हुई कि आर्यसमाज ही एक ऐसी सस्था है जो प्रत्येक प्राणीमात्र के कल्याण की बात सोचती है।

हम सोचते हैं कि इस प्रकार के कार्यक्रम हमारी सभी आर्यसमाजें साल में एक बार अवश्य करायें। इस से घर-घर में वेद प्रचार के साथ आर्यसमाज की आवश्यकताओं के लिए दान के रूप में धन भी प्राप्त होगा। हमें इस १६ दिन के पारिवारिक सत्संग से भवन निर्माण हेतु लगभग १०,५०० रु० दान के रूप में प्राप्त हुआ। हम उन दानी महानुभावों के प्रति कृतज्ञ हैं।

अन्तिम दिन तो आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय मन्त्री डा० धर्मपाल जी व स्वामी स्वरूपानन्द जी ने आकर हमारा उत्साहवर्धन किया।

मन्त्री
श्री बलवीर आर्य

आर्यसमाज का इतिहास (सातवां भाग)

आवश्यक निवेदन

"आर्यसमाज का इतिहास" का छठा भाग प्रकाशित हो गया है, और अब सातवें भाग की पाण्डुलिपि तैयार की जा रही है। इस सातवें (अन्तिम) भाग में अन्य विषयों के साथ साथ निम्नलिखित का भी समावेश होगा—

१. आर्यसमाजों या आर्य नर-नारियों द्वारा संचालित विविध मठों आश्रमों, साधना केन्द्रों, शोध संस्थानों, धर्मार्थ चिकित्सालयों तथा जनसेवा के लिए स्थापित संस्थाओं का परिचय। उनके कार्य कलाप का विवरण।

२. आर्य युवक सभाओं, युवा परिषदों एव कुमार सभाओं का परिचय तथा उनके कार्यकलाप का विवरण।

३. विविध प्रदेशों मे स्थापित आर्य वीर दलों का इतिहास तथा उनका सेवा कार्य।

४. आर्य सन्यासियों, प्रचारकों, विद्वानों, साहित्यकारों, भजनोपदेशकों, दानियों, कर्मठ कार्यकर्ताओं और आर्यसमाज की विविध प्रकार की संस्थाओं के सस्थापकों, संचालकों तथा पदाधिकारियों का परिचय एवम् उनके कार्य का विवरण।

५. भारत के सुदूर व दुर्गम क्षेत्रों (पूर्वांचल, उड़ीसा, झारखण्ड, केरल, तमिलनाडु, पार्वत्य प्रदेश आदि) में वैदिक धर्म के प्रचार का प्रयत्न एवम् उसकी सफलता।

६. विविध आर्य प्रतिनिधि सभाओं के गत ४० वर्षों (सन् १६४० के पश्चात् के काल) के कार्य का विवरण।

पाठकों से सानुरोध प्रार्थना है, कि उपर्युक्त विषयों पर समुचित जानकारी भेज कर आर्यसमाज के इस विस्तृत इतिहास को पूर्ण व निर्दोष बनाने में हमारी सहायता करें। साथ ही, अब तक प्रकाशित छह भागों में जो त्रुटियां रह गई हों या जो जानकारी देने से रह गई हो, उनसे भी हमें अवगत कराने की कृपा करें।

हमारी इच्छा है, कि आर्यसमाज के विविध प्रकार के नेताओं व कार्यकर्ताओं के परिचय के साथ उनके चित्र भी दिये जा सकें। पर चित्रों के प्रकाशन में जो व्यय होता है. वह १०० रुपये प्रति चित्र के लगभग बैठता है। हम यह भी अपेक्षा रखते हैं, कि आर्य नर नारी इस व्यय को वहन करने में भी संकोच नहीं करेंगे।

भवदीय
सत्यकेतु विद्यालंकार
आर्य स्वाध्याय केन्द्र
ए-१/३२ सफदरजंग एन्क्लेव,
नई दिल्ली

(पृष्ठ १ का शेष)

दक्षिण भारत में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

धर्मों के लोग अन्य धर्म वालों से बुद्धि पूर्वक चर्चा करके ऐसे समाज का निर्माण करते जो सत्यान्वेषक और मानवतावादी होता। सच्ची राष्ट्रीयता पैदा करने का यही एक-मात्र श्रेष्ठ मार्ग था जिसे महर्षि दयानन्द ने अपनाया था। आज भी आर्यसमाज उसी श्रेष्ठ मार्ग का अनुकरण व प्रचार करता है। सभा को मदुराई के भूतपूर्व मेयर श्री बालकृष्ण, हैदराबाद के भू०पू० मेयर श्री बी० किशनलाल ने भी सम्बोधित किया।

मदुराई से श्री स्वामी जी पानपौली गए जहां शुद्ध हुए हरिजनों ने स्वामी जी का हार्दिक अभिनन्दन किया। वहां से श्री स्वामी जी मीनाक्षीपुरम पहुंचे। जहां उन्होंने सार्वदेशिक सभा द्वारा सचालित शिक्षा संस्थाओं एवं निर्माणाधीन आर्यसमाज मन्दिर व यज्ञशाला का निरीक्षण किया। विद्यार्थियों और अध्यापकों ने श्री स्वामी जी का अभिनन्दन किया तथा हिन्दू जाति के अस्तित्व को ही समाप्त करने वाले घोर षड्यन्त्रों से हिन्दुओं को बचाने पर स्वामी जी का हार्दिक धन्यवाद किया। आर्यसमाज मीनाक्षीपुरम के श्री अनन्तराम सेशन एवं रामचन्द्र देवर तथा अन्य सदस्यों ने भी स्वामी जी का हार्दिक स्वागत किया। वहां से श्री स्वामी जो तिरुनावल्ली ग्राम गए जहां श्री स्वामी जी ने दयानन्द वैदिक गुरुकुल की आधारशिला रखी। गुरुकुल के लिए एक भूपति श्री बी० रामचन्द्रन ने भूमि प्रदान की है। इसके साथ ही वहां एक महर्षि दयानन्द कालोनी का भी विकास किया जाएगा। श्री स्वामी जी ने भारतीय विद्या भवन के संस्कृत परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए। इस अवसर पर श्री लक्ष्मणन् व श्री बी० रामचन्द्रन ने समारोह को सम्बोधित किया।

मद्रास लौटकर स्वामी जी ने १ जौलाई ८७ को डी०ए०वी० हाई स्कूल के छात्रों और अध्यापकों द्वारा आयोजित विशेष यज्ञ समारोह में भाग लिया जिसका आयोजन श्री जयदेव जी द्वारा किया गया था। स्वामी जी ने विद्यार्थियों और अध्यापकों को वैदिक संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न कराने के लिए प्रेरणात्मक उद्बोधन दिया। २ जुलाई को स्वामी जी ने हैदराबाद लौटकर विनायक भवन में कार्यकर्ताओं को एक बड़ी सभा को सम्बोधित किया जिसकी अध्यक्षता हैदराबाद सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव कल्याणी ने की।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ अंक ३५ | रविवार १९ जुलाई १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ | श्रावण २०४४ | दयानन्दाब्द—१६३

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर ३० पौंड

अमरीका में भारत विरोधी प्रचार

अमरीका में खालिस्तान का समर्थन करने वाले तत्व अच्छी-खासी संख्या में मौजूद हैं, यह कोई नई जानकारी नही है। ये अमरीका के सासंसदस्यों से भी सम्पर्क रखते है तथा पृथकतावादी सिख राजनीतिज्ञों को संरक्षण तथा समर्थन देते है। इनमें से अधिकाश अमरीका के पश्चिमी तट पर बसे धनी सिख किसान और व्यापारी हैं। अभी पिछले दिनों ही अमरीका स्थित भारतीय राजदूत पी० के० कौल ने कहा है कि पंजाब की समस्या पर इस देश में गलत सूचनाएँ प्रसारित करने के लिए सक्रिय अभियान चलाया जा रहा है। पंजाब में जो कुछ हो रहा है उससे अमरीका ससद को सीधा कुछ लेना-देना नहीं है। फिर भी अमरीकी ससद की प्रतिनिधि सभा में गत माह "पंजाब की स्थिति पर बहस हुई जिस मे १५ सांसदों ने हिस्सा लिया। इनमे से अधिकाश ने भारत सरकार की आलोचना की। अमरीका ससद मे "पंजाब की स्थिति" पर बहस का औचित्य आम आदमी की समझ से परे है। जाहिर है कि भारत सरकार की रीति नीति की आलोचना करने के उद्देश्य से ही इस बहस का आयोजन किया गया। सच तो यह है कि अमरीका में भारत के विरुद्ध अनेक लाबिया काम कर रही हैं। परोक्ष या अपरोक्ष रूप मे इन्हें अमरीकी प्रशासन का समर्थन प्राप्त है। जब कभी अमरीका में भारत विरोधी प्रचार की ओर ध्यान दिलाया जाता है तो प्रशासन के प्रवक्ता कहते हैं कि यह स्वतन्त्र देश है और यहाँ किसी को भी अपनी बात कहने का और अपने पक्ष के प्रचार की स्वतन्त्रता है। सिद्धान्त रूप में उनका दावा सही भी है। लेकिन वास्तविकता यह है कि रेगन प्रशासन के भारत विरोधी रुख को देखते हुए भारतीय पक्ष को रखने वाली किसी भी लाबी को सफलता नहीं मिल सकती है।

भारतीय राजदूत पी०के० कौल ने रिपब्लिकन पार्टी के सांसद नार्मन शमवे को पत्र लिखकर स्थिति स्पष्ट करने की कोशिश भी की है। श्री शमवे ने प्रतिनिधि सभा मे "पंजाब की स्थिति" पर बहस के आयोजन में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया था। श्री कौल ने इस ओर ध्यान दिलाया है कि कभी अमरीका की अखण्डता को भी चुनौती दी गई थी और उससे निपटने में राष्ट्र को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। ऐसी स्थिति मे कम से कम अमरीका जैसे लोकतन्त्री राष्ट्र में तो खालिस्तान की मांग करने वाले तत्वों के प्रति सहानुभूति नही होनी चाहिए। श्री पी०के० कौल अमरीकी सांसदो तथा अधिकारियों से मिलकर भारत की स्थिति रख रहे हैं, यह अच्छी बात है। कम से कम अमरीका के नीति-निर्धारकों को यह शिकायत करने का मौका तो नहीं मिलेगा कि भारत ने उनके सामने अपना पक्ष नही रखा है। लेकिन यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि जब तक रेगन प्रशासन भारत के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो की स्थापना में दिलचस्पी नही दिखाता तब तक स्थिति मे सुधार नही आने वाला है। इतिहास के वर्तमान दौर में तो भारत और अमरीका के बीच दोस्ती की कोई सम्भावना नजर नही आती है। लेकिन परिस्थितियों में परिवर्तन आता है। हो सकता है कि कल अमरीका को भारत की मैत्री और नैतिक समर्थन की आवश्यकता महसूस हो। इसलिए दोनों देशो के बीच सामान्य सम्बन्धों का दरवाजा बन्द कर देना नासमझी मानी जाएगी। रेगन प्रशासन भारत के विरोधों के बावजूद पाकिस्तान को अत्याधुनिक हथियारो की सप्लाई कर रहा है। यह समझ में आता है कि अफगानिस्तान मे सोवियत सेना की मौजूदगी के कारण यह किया जा रहा है। यह बात और है कि इन हथियारों का इस्तेमाल सोवियत सेना के विरुद्ध नही बल्कि भारत के खिलाफ किया जाएगा। लेकिन "पंजाब की स्थिति" पर अमरीकी ससद मे बहस का और भारत सरकार की नीतियों की आलोचना का औचित्य और आधार समझ से बाहर है।

—श्री विनोद मिश्र
दैनिक हिन्दुस्तान

वेदप्रचार सप्ताह अवश्य मनाइये !

आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य "वेद का सन्देश घर-घर पहुंचाना सारे ससार को श्रेष्ठ बनाना, समाज में दिन-प्रतिदिन फैल रही बुराइयों तथा कुरीतियों को दूर करना, सभी प्राणियों को अपने वास्तविक धर्म का ज्ञान कराना, युवा पीढी को संगठित करना, अपने बिछुडे हुए भाइयों को गले लगाना है। आर्यसमाज ने समय-समय पर विभिन्न आंदोलनों में यह सिद्ध करके भारत की जनता को यह दिखा दिया है कि आर्यसमाज ही एकमात्र ऐसी सस्था तथा शक्ति है, जो भीषण परिस्थितियो का मुकाबला करते हुए देश को सही रास्ता दिखा सकती है। सभा इस कार्य में समाजों का हर प्रकार से सहयोग करती है।

आगामी मास में श्रावणी तथा जन्माष्टमी पर्व हैं। हमें अभी से इन को मनाने की तैयारियाँ प्रारम्भ कर देनी चाहिएं। इन अवसरों पर आर्यसमाजों के अधिकारियों से मेरा अनुरोध है कि वह एक-एक सप्ताह के वेदप्रचार सप्ताह, कथाओं, उत्सवों सम्मेलनों, प्रभात फेरियो, साहित्य वितरण तथा जनसम्पर्क के आयोजन करे और सभा का इस कार्य मे पूरा सहयोग प्राप्त करें।

सभा के पास महोपदेशको, उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों की सेवाएं हर समय उपलब्ध हैं। आप तिथिया निश्चित कर सभा से सम्पर्क करे और उपदेशक तथा भजनोपदेशक बुक करा लें।

सुविधानुसार वेदप्रचार सप्ताह (कथा प्रवचन) की तिथियाँ परिवर्तित कर सकते हैं परन्तु सभी संस्थाओं में वेदप्रचार अवश्य कराने चाहिएँ तथा श्रावणी उपाकर्म एवं जन्माष्टमी का पर्व धूमधाम से मनाये।

—डा० धर्मपाल
महामन्त्री

इस अंक मे

१. ग्रहों की उत्पत्ति और सूर्य को चक्राकार कक्षा को प्राप्ति
२ संस्कृत भाषा को महानता
३ मेरे साथ स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश का सम्बन्ध
४ महाभारत के झरोखे से अमृत कण
५. विभिन्न समाचार

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

ग्रहों की उत्पत्ति और सूर्य को चक्राकार कक्षा को प्राप्ति

मनोहरलाल गुप्त,
एम. एस-सो, पी-एच. डी. (लन्दन), डी. आई. सी. (लन्दन)
३१४, कृष्णानगर, भरतपुर

प्रत्य्-उष्टं रक्षः, प्रत्य्-उष्टा अ-रातयो, निष्-टप्ता अ-रातयः। उरु अन्तरिक्षम् अन्व् एमि।

देवता: यज्ञः। यजुर्वेद १'७

(रक्षः) राक्षस समूह (प्रति-उष्टम्) दग्ध हो गया। (अ-रातयः) अ-रातियां (प्रति-उष्टाः) दग्ध हो गईं। (रक्षः) राक्षस समूह (निः तप्तम्) निस्तप्त हो गया। (अ-रातयः) अ-रातियां (निःतप्ताः) निस्तप्त हो गईं। मैं (उरु अन्तरिक्षम्) विशाल अन्तरिक्ष को (अनु एमि) प्राप्त हो रहा हू।

★

इस कडिका की देवता यज्ञ है। पिछले मन्त्र मे प्रजापति द्वारा सूर्य को उसके मन्दाकिनी-केन्द्र से युक्त होने का रहस्य बताए जाने के पश्चात्, अब इस मन्त्र मे उस यज्ञ का वर्णन है जिसमे सविता, अर्थात् मन्दाकिनी-केन्द्र की प्रेरणा से, सूर्य से उसके विकार रूप ग्रह बाहर निकलते हैं और जिसके परिणाम स्वरूप उसकी अनृत की स्थिति कुछ काल के लिए समाप्त होती है। इसका सकेत 'श्रेष्ठतमाय कर्मणे' शब्दों के द्वारा प्रथम मंत्र मे भी दिया गया है। उस मन्त्र के अनुसार सूर्य को सविता देव की प्रेरणा तीन प्रकार से प्राप्त होती है। जिस प्रकार सूर्य से इष्, अर्थात्, उसकी शतधाराओं रूपी कण-विकिरण और 'ऊर्ज' अर्थात्, प्रकाश और उष्मा, आदि बाहर निकलती हैं उसी प्रकार सविता देव से भी ये दोनो प्रकार के विकिरण सूर्य को निरन्तर प्राप्त होते रहते हैं, (देवस्य त्वा सविता पुनातु…, मन्त्र ३)। ऊर्जा-विकिरण से सूर्य का ताप और दाब बढता है तथा एक ही प्रकार के विद्युद्-आवेशित कण-विकिरण के विद्युद्-विकर्षण-प्रभाव से भी सूर्य के दाब मे निरन्तर वृद्धि होती है। इसके साथ ही, इस परमाणु-नाभिक विकिरण से सूर्य के केन्द्र भाग में हो रही नाभिक प्रक्रियाओं की तीव्रता में भी वृद्धि होती है जिसमे सूर्य का ताप और दाब उग्र रूप धारण कर लेता है। यहां यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि ये घटनाएँ उस काल की अर्थात् अब से लगभग पाच छह अरब वर्ष पहले की हैं जबकि सूर्य का जन्म हुआ था तथा जब सविता देव, अर्थात् मन्दाकिनी केन्द्र से अन्य सूर्यों का भी निष्कासन हो रहा था तथा इस कारण वह महान् अग्नि-पुञ्ज अत्यन्त प्रचण्ड रूप धारण किए हुए था, तथा उसका ऊर्जा और कण-विकिरण अत्यन्त तीव्र था। सूर्य भी उस काल मे मानो अपने सकल्प के अनुसार (मन्त्र ५) सविता देव से प्राप्त होने वाले इन सभी प्रभावों को अपनी ओर आकर्षित कर, अच्छे प्रकार आत्मसात् कर रहा था जिससे उसके बढे हुए ताप और दाब के कारण उसका विकार पूर्ण रूप से बाहर निकल जाए। मन्दाकिनी केन्द्र की तीव्र गुरुत्वाकर्षण शक्ति भी सूर्य के अतिरिक्त पदार्थ को बाहर खींच लाने के लिए निरन्तर क्रियाशील थी, जो सविता देव की सूर्य को प्राप्त होने वाली तीसरी प्रेरणा थी। मंत्र में विभिन्न कारणों से उत्पन्न भीषण दाबों को 'रक्ष' कहा गया है। इस राक्षस-समूह का प्रभाव जब इतना अधिक हो गया कि सूर्य की गुरुत्वाकर्षण शक्ति उसे सहन कर पाने में असमर्थ हो गई तब सूर्य में एक अत्यन्त भीषण विस्फोट हुआ। उसके फल-स्वरूप वायव्यरूप शनिग्रह, सूर्य में से नीहारिका-केन्द्र की ओर उसके आकर्षण से निकला, तथा सूर्य उस की विपरीत दिशा में ऊपर की ओर अग्रसर हुआ। पर इससे भी उसका आंतरिक दाब कुछ अधिक कम न हुआ। कुछ समय पश्चात् ही उसमें से छह अन्य वायव्य रूप ग्रह एक के पश्चात् एक, विस्फोटों के परिणाम स्वरूप, निकले तथा सूर्य भी प्रत्येक विस्फोट के साथ ऊपर उठता हुआ अन्त मे एक चक्राकार कक्षा में पहुंच गया। इस प्रकार पूरी शृखला में सात ग्रह सूर्य मे से विस्फोटों के फलस्वरूप प्रकट हुए जिससे उसका आन्तरिक दाब शान्त हुआ तथा साथ ही उसका व्रत जो उसने अपनी अनृत की स्थिति समाप्त करने तथा सत्य की स्थिति प्राप्त करने के लिए धारण किया था, पूर्ण हुआ।

२. प्रस्तुत मन्त्र में ग्रहों की उत्पत्ति की बात प्रत्यक्ष रूप में नहीं बताई गई है पर मंत्र की आरम्भिक और अन्तिम पक्ति में समन्वय का विचार करते ही यह स्पष्ट हो जाती है क्यों कि, जैसा आगे मंत्र की व्याख्या में बताया गया है, राक्षस रूपी दाब के शान्त होते ही सूर्य विशाल अन्तरिक्ष को प्राप्त हो जाता है, अर्थात् विस्फोटों के कारण सूर्य को उच्च आकाश की ओर संवेग प्राप्त होता है जो सूर्य से निकले हुए ग्रहों के विपरीत दिशा के संवेग से ही उत्पन्न होता है। अतः मंत्र में सूर्य से ग्रहों की उत्पत्ति का ज्ञान परोक्ष रूप में संकेत से ही दिया गया है, जो वेद की संकेतात्मक शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। मन्त्र में ग्रहों की संख्या भी नहीं बताई गई है, पर यह वेद के अन्य मंत्रों (विशेष तया ऋ० १।१६४ ५।१५) से स्पष्ट हो जाती है। ऋ० १।१६४।५ में कहा गया है कि सूर्य की आरम्भिक अवस्था में ही कवियों, अर्थात् निर्माण-कारी प्राकृतिक शक्तियों ने उसके ऊपर सात तन्तुओं यानी विस्तृत वायव्य भुजाओं का विस्तार किया तथा इन्हीं प्राकृतिक शक्तियों ने इन तन्तुओं को बुनकर, अर्थात् वायव्य पदार्थ को संघात-रूप कर ग्रहों के रूप में प्रकट किया, वत्से बष्कयेऽधि सप्त तन्तून् वि तत्निरे कवय ओतवा उ। ऋ० १।१६४।५ इसी प्रकार ऋग्वेद १:१६४।१५ में बताया गया है कि शनि ग्रह एक अत्यन्त तीव्र विस्फोट से उत्पन्न हुआ जब कि अन्य छह ग्रह सामान्य प्रक्रिया से जन्मे। इस प्रकार यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि चारों वेदों का ज्ञान आपस में इस तरह गुथा हुआ है कि एक वेद के मन्त्रों को समझने के लिए दूसरे वेद के मन्त्र कुंजी का काम देते हैं। इस प्रकार वेद ज्ञान की एकता और वेद का संहिता रूप भी स्पष्ट होता है। यहां यह भी स्मरण रखने योग्य है, जैसा इस लेख माला के प्रथम लेख में भी बताया गया है, कि यजुर्वेद का उद्देश्य वेदज्ञान का प्रयोगात्मक पक्ष प्रस्तुत करना है। दूसरे शब्दों में, जिस घटना का ज्ञान ऋग्वेद में दिया हुआ है उसकी प्रक्रिया यजुर्वेद में स्पष्ट की गई है। अतः सूर्य से सात ग्रहों की उत्पत्ति का जो ज्ञान ऋग्वेद में है उससे सम्बन्धित प्रक्रिया इस मन्त्र में वर्णित की गई है, जिसमें सूर्य में विस्फोटों के फलस्वरूप ग्रहों की उत्पत्ति; विकार-रूप ग्रहों के निष्कासन के पश्चात् उसके भीषण दाब का शमन; उसकी अनृत की स्थिति की क्षणिक समाप्ति तथा सूर्य को नीहारिका-केन्द्र के चारों ओर चक्राकार कक्षा की प्राप्ति का वर्णन है।

३. सूर्य कहता है कि,
रक्षः प्रति-उष्टम् : वह राक्षस-समूह, अर्थात् विभिन्न कारणों से उत्पन्न हुआ भीषण दाब नष्ट हो गया है। मेरे आन्तरिक विकार के, ग्रह-रूप में, बाहर निकल जाने के पश्चात् वह भीषण आन्तरिक दाब जो मेरे विशाल शरीर को खण्ड खण्ड कर देने पर उतारू था, अब शान्त हो गया है।

अ-रातय. प्रति उष्टाः : 'अ-राति' का अर्थ होता है अनृत और अदान की स्थिति। सूर्य कहता है कि मेरे शरीर का जो विकार पहले थोडी मात्रा में बाहर निकलता था उससे (जैसा पिछले मंत्र, स० ५ की व्याख्या में स्पष्ट किया गया है) मेरी कक्षा किसी निश्चित वक्र पर स्थिर नहीं रह पाती थी, जिससे अनृत की स्थिति उत्पन्न होती थी। यह अदान की भी स्थिति थी क्योंकि मेरे अन्दर के अतिरिक्त पदार्थ का दान न हो पाने के कारण ही यह स्थिति बनती थी। अब मैंने अपने इस अतिरिक्त पदार्थ का ग्रहों के रूप में अदिति माता (अक्षय ऊर्जा, यानी, आकाश तत्व) को दान कर दिया है जिससे अदान की स्थिति समाप्त होते ही मेरी अनृत की स्थिति भी समाप्त हो गई है।

रक्षः निः-तप्तम् : सूर्य से ग्रहों के निष्कासन और उस के भीषण आन्तरिक दाब के शान्त हो जाने के पश्चात् उस की गुरुत्वाकर्षण शक्तियां जो अब आन्तरिक दाब से अधिक प्रबल हैं उसके पदार्थ को अन्दर की ओर आकर्षित कर उसे संकुचित करने का प्रयत्न करती हैं, और इस संकुचन के परिणाम स्वरूप सूर्य के अन्दर दाब फिर वृद्धि को प्राप्त होता है। पर वह अब पहले की तरह भीषण या उग्र नहीं है। अतः सूर्य फिर कहता है कि आन्तरिक दाबों रूपी राक्षस समूह निस्तप्त या निस्तेज हो गया है। अब वह कोई उग्र विस्फोट करने योग्य नहीं रहा।

अ-रातयः निः तप्ताः : इसी प्रकार अ-रातियां या अनृत की स्थि-

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महाभारत के झरोखे से अमृत कण

—प्रेमशील महेन्द्र—

जगत् प्रसिद्ध है कि हमारी पुण्य भूमि भारत आदि काल से सोने की खान रही है। यहां पर दूध घी की नदियां बहती थीं। धन-धान्य व उत्कृष्ट वैभव से समृद्ध यह धरा सदा ही विश्व के हर देश व व्यक्ति के आकर्षण का केन्द्र बनी रही है। शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रोगियों को यहां आकर सार्थक उपचार प्राप्त हुआ है। ज्ञान-पिपासा से विह्वल अनेकों ने यहां पर अपनी पिपासा को शान्त करके सुख पाया है। इसी भूमि को 'सोने की चिड़िया' नाम की उपाधि से विभूषित किया गया है। प्रत्येक भारतीय के लिए यह गौरव का विषय है कि इसकी सर्वांगीण गरिमा ने न जाने कितने लोगों को लुभायमान किया है। इतिहास के पन्ने इसकी गौरव गाथा गाते थकते नहीं। किन्तु हमारी अपनी ही अनेक भूलों के कारण यह पुण्य भूमि अनेक बार अनेकों आक्रान्ताओं द्वारा पद-दलित भी होती रही। फल स्वरूप हमें शताब्दियों पर्यन्त दासता की परिधियों से गुजरना पड़ा और अपमानित जीवन जीना पड़ा, तथापि प्रारम्भ से ही समय-समय पर हमारे महान् नेता, मनीषी व सन्यासी अपने मार्ग दर्शन व बलिदानों के द्वारा यहां के जन-जन को पतन से उबारते रहे हैं।

इसके अतिरिक्त हमारा देश सर्वोत्तम साहित्य से भी समृद्ध है। विश्व की सर्वोत्कृष्ट ज्ञान-गंगा जो कि सब सत्य विद्याओं की भरपूर निधि है, वेदों के रूप में इसी पुण्य भूमि पर आदि काल से प्रवाहित है। इसके अतिरिक्त हमारे अनेकों ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ मानव जीवन की प्रत्येक जटिलता को सुलझाने का सुदृढ़ मार्गदर्शन कर रहे हैं। बिना किसी पक्षपात के मानव मात्र के कल्याण व उत्थान के लिए इन ग्रन्थों में आध्यात्मिक, आधिदैविक व आधिभौतिक ज्ञान भरा पड़ा है। यह एक ऐसा सागर है जिसमें गहरा पैठने पर हर व्यक्ति अपनी ऐच्छिक उपलब्धि से अपने को धन्य बनाता हुआ सौभाग्य के सितारे की अंतरिक्ष को छूने वाली ऊंचाइयों तक पहुंच सकता है। वेदों के पश्चात् जगद्-विख्यात हमारे रामायण व महाभारत जैसे ऐतिहासिक ग्रन्थ भी हमें अपने पुरातन, सनातन इतिहास के साथ आध्यात्मिकता का भी भरपूर ज्ञान देते हैं, जिससे हमें जीने के ढंग के अतिरिक्त मोक्ष प्राप्ति का भी उत्कृष्ट उपाय बताते हैं। धर्म की वास्तविक परिभाषा—"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः" के स्वरूप का पूर्ण दिग्दर्शन कराके मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य "परमानन्द" की प्राप्ति में भी सक्षम हैं। प्रस्तुत है महाभारत के शान्ति पर्व के अन्तर्गत मोक्ष धर्म के विषय में कुछ श्लोकों का भावार्थ।

आत्मा एवं परमात्मा के साक्षात् का उपाय तथा महत्व।

१. मनु कहते हैं—बृहस्पते ! जैसे स्वप्नावस्था में यह स्थूल शरीर तो सोया रहता है, और सूक्ष्म शरीर विचरण करता रहता है, उसी प्रकार इस शरीर को छोड़ने पर यह ज्ञान स्वरूप जीवात्मा या तो इन्द्रियों के सहित पुनः शरीर ग्रहण कर लेता है या सुषुप्ति की भांति मुक्त हो जाता है।

२. जिस प्रकार मनुष्य स्वच्छ और स्थिर जल में नेत्रों द्वारा अपना प्रतिबिम्ब देखता है, वैसे ही मन सहित इन्द्रियों के शुद्ध एवं स्थिर हो जाने पर वह ज्ञान दृष्टि से ज्ञेय स्वरूप आत्मा का साक्षात्कार कर सकता है।

३. वही मनुष्य हिलते हुए जल में जैसे अपना रूप नहीं देख पाता, उसी प्रकार मन सहित इन्द्रियों के चञ्चल होने पर वह बुद्धि में ज्ञेय स्वरूप आत्मा का दर्शन नहीं कर सकता।

४. अविवेक से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, और उस भ्रष्ट बुद्धि से मन राग आदि दोषों में फंस जाता है। इस प्रकार मन के दूषित होने से उस के अधीन रहने वाली पांचों इन्द्रियां भी दूषित हो जाती हैं।

५. जिस को अज्ञान से ही तृप्ति प्राप्त हो रही है, वह मनुष्य विषयों के अगाध जल में सदा डूबा रह कर भी कभी तृप्त नहीं होता। वह जीव प्रारब्धाधीन हुआ विषय भोगों की इच्छा के कारण बारम्बार इस संसार में आता और जन्म ग्रहण करता है।

६. पाप के कारण ही संसार में पुरुष की तृष्णा का अंत नहीं होता। जब पापों की समाप्ति हो जाती है, तभी उस की तृष्णा निवृत्त हो जाती है।

७ विषयों के संसर्ग से, सदा उन्हीं में रचे पचे रहने से तथा मन के द्वारा साधन के विपरीत भोगों की इच्छा रखने से पुरुष को परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती।

८. पाप कर्मों का क्षय होने से ही मनुष्यों के अंतःकरण में ज्ञान का उदय होता है। जैसे स्वच्छ दर्पण में ही मानव अपने प्रतिबिम्ब को अच्छी तरह देख पाता है।

९ विषयों की ओर इन्द्रियों के फैले रहने से ही मनुष्य दुखी होता है, और उन्हीं को संयम में रखने से ही सुखी हो जाता है। इसलिए इन्द्रियों के विषयों से बुद्धि के द्वारा अपने मन को रोकना चाहिए।

१०. इन्द्रियों से मन श्रेष्ठ है, मन से बुद्धि श्रेष्ठ है, बुद्धि से ज्ञान श्रेष्ठतर है और ज्ञान से परात्पर परमात्मा श्रेष्ठ है।

११. अव्यक्त परमात्मा से ज्ञान प्रसारित हुआ है, ज्ञान से बुद्धि और बुद्धि से मन प्रकट हुआ है। यह मन ही श्रोत्रादि इन्द्रियों से युक्त होकर शब्द आदि विषयों का भली भांति अनुभव करता है।

१२ जो पुरुष शब्द आदि विषयों को, उनके आश्रय भूत सम्पूर्ण व्यक्त तत्वों को स्थूल भूतों और प्राकृत गुण समुदायों को त्याग देता है, अर्थात् उनसे सम्बन्ध विच्छेद कर लेता है, वह उन्हें त्यागकर अमृत स्वरूप परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

१३-१४. जैसे सूर्य उदित होकर अपनी किरणों को सब ओर फैला देता है और अस्त होते समय उन समस्त किरणों को अपने भीतर ही समेट लेता है, उसी प्रकार जीवात्मा देह में प्रविष्ट होकर फैली हुई इन्द्रियों की वृत्तिरूपी किरणों द्वारा पांचों विषयों को ग्रहण करता है, और शरीर को छोड़ते समय उन सब को समेट कर अपने साथ लेकर चल देता है।

१५ जिस ने प्रवृत्ति प्रधान पुण्य पापमय कर्म का आश्रय लिया है, वह जीवात्मा कर्मों द्वारा कर्म-मार्ग पर बार-बार लाया जा कर अर्थात् संसार चक्र में भरमाया जाकर सुख दुःख रूप कर्म फल को प्राप्त होता है।

१६. इन्द्रियों द्वारा विषयों को ग्रहण न करने से पुरुष के वे विषय तो निवृत्त हो जाते हैं, परन्तु उन में आसक्ति बनी रहती है। परमात्मा का साक्षात् कर लेने पर वह आसक्ति भी दूर हो जाती है।

१७ जिस समय बुद्धि कर्म जनित गुणों से छूट कर हृदय में स्थित हो जाती है, उस समय जीवात्मा ब्रह्म में लीन हो कर ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है।

१८. पर ब्रह्म परमात्मा स्पर्श, श्रवण, रसन, दर्शन, घ्राण और संकल्प विकल्प से भी रहित है? इसलिए विशुद्ध बुद्धि ही उसमें प्रवेश कर पाती है।

१९ मन में शब्दादि विषय रूप समस्त आकृतियों का लय होता है। मन का बुद्धि में, बुद्धि का ज्ञान में और ज्ञान का परमात्मा में लय होता है।

२०. इन्द्रियों द्वारा मन की सिद्धि नहीं होती अर्थात् इन्द्रिया मन को नहीं जानती हैं। मन बुद्धि को नहीं जानता और बुद्धि सूक्ष्म एवं अव्यक्त आत्मा को नहीं जानती है; किन्तु अव्यक्त आत्मा इन सब को देखता और जानता है।

संस्कृत भाषा की महानता

लेo—सिद्धान्त विदुषी सुशीला राजपाल

आज भारत के चालीस वर्ष स्वतन्त्रता के पश्चात् भी संस्कृत भाषा को उचित स्थान प्राप्त नही हो रहा। आज भी हमारे लिए यह विवादास्पद प्रश्न बन कर रह गया है ? संस्कृत भाषा की महानता को अनभिज्ञता के कारण विवाद पैदा हो गया है। इस विवाद का समाधान तब हो सकता है जब हम जनचेतना के द्वारा इस भाषा का चिन्तन करके सप्रमाण सिद्ध करें। माट्रियल (कनाडा) में मैंने टेलीविजन में सन् १९८४ में संस्कृत भाषा की गरिमा पर भाषण काल मे चित्र उपस्थित किये थे कि हमारे शरीर में पाये गये ८ चक्रों मे देवनागरी लिपि पायी जाती है। इसका प्रभाव तीन लोकों में है। सूर्य की १२ राशियों, नक्षत्र और नक्षत्रों के देवताओं में। केवल यह भारत की भाषा नहीं है विश्व की भाषा है। जब श्री अरविंद से संस्कृत भाषा के विषय में प्रश्न पूछा गया ? तब उन्होने ये उत्तर दिया कि संसार में पायी गयी सभी भाषाओं की वर्णमाला ब्राह्मी लिपि मे ही निहित है। रोमन लिपि, ग्रीक लिपि, देव नागरी लिपि से निकली हैं। संस्कृत भाषा की लिपि इसीलिए ब्राह्मी लिपि कहलायी जाती है कि यह अनन्त के जगत् से प्रादुर्भूत भाषा है। परा के जगत् में ऋषि जनों ने तदाकारता मे पहले ध्वनियों को सुना (पश्यन्ति में) ध्वनियो मे दिये वर्णों के आकार को देखा वाच्य और वाचक व्यंजना और व्यंग्यात्मक रूप में ध्वनि और वर्ण एक दूसरे में गठित थे। (मध्यमा) में वर्ण और वर्ण के अर्थ तैरते हुए सामने आये। (वैखरी) में कंठ द्वारा उन वर्णों का उच्चारण हुआ। वर्णमाला भी अपौरुषेय है। वर्ण और शब्द के बीच में शब्द और वाक्य के बीच में वैज्ञानिक सम्बन्ध है। जो अर्थ और ध्वनि के साथ कार्य और कारण भाव दर्शाता है।

मैक्समूलर को जब पता नहीं लगा कि किस ध्वनि का अमुक अर्थ होता है। प० मण्डली सब चुप हो गयी पर वैदिक आर्य चुप न हुए। उन्होंने कहा कि मौलिक भाषा अपौरुषेय है। उसके कारण रूप धातुओं और वर्णों का अर्थ अवश्य है। जिस प्रकार एक-एक अणु और परमाणु से पृथ्वी बनी है। जो गुण अणु में हैं वह पृथ्वी में भी हैं। इसी प्रकार 'अक्षर' शब्द उस टुकडे को कहते हैं, जिसके फिर टुकड़े न हो सकें। वैदिक भाषा अर्थ सहित है। उसके अखण्ड टुकड़े भी सार्थक होने चाहिए विशेष कर जो भाषा परमेश्वरीय और वैज्ञानिक होने का दावा करती है। उसके अक्षर तो अवश्य ही सार्थक होने चाहिए।

पतञ्जलि ऋषि ने भी कहा है 'एके वर्णाः अर्थवन्तः दृश्यन्ते' अर्थात् वर्ण अर्थ वाले होते हैं। धातु, नाम, प्रत्यय और निपात का प्रत्येक वर्ण अर्थवान् होता है।

ऋचाएँ भी परम अविनाशी शब्दमय अक्षर में ठहरी हुई हैं। जिनमें देवता अर्थ का विषय ठहरा हुआ है।

जो उस अक्षरार्थ को नहीं जानता वह ऋचाओं से क्या लाभ प्राप्त करेगा। 'क' का अर्थ सुख, ख—को आकाश, ग—गति, च—पुनः, ज—उत्पन्न, क्ष—नाश, त—पार, थ—ठहरना, द—देना, ध—धारण करना, न—नहीं, प—रक्षा करना, भ—प्रकाश करना, मा—मापना, य—जो, ल—लेना, स—साथ, ह—निश्चय करना। समस्त देव नागरी लिपि में पाये गये अक्षरों के अर्थ पाये जाते हैं।

संसार में जितनी भाषाएँ हैं। उनमें सब से विस्तृत और पूर्ण भाषा संस्कृत है। संस्कृत में ५०, फ्रैंच में २५, अंग्रेजी में २६, स्पेन और अरबी में २८, फारसी में ३१, रूसी मे ३५ हैं। शब्द ब्रह्म से ही जगत् की उत्पत्ति होती है। वह वर्ण के रूप में अभिव्यक्त होती है। उन्हें माता कहा गया है। वर्ण देवता का शरीर है। साधक सर्वप्रथम अक्षरों को अपने शरीर के अन्दर चक्रों पर प्रतिष्ठित करता है। इस अन्तरमात को न्यास कहते हैं। इसके पश्चात् शारीरिक चेष्टाओं द्वारा बाह्य मात का न्यास करता है वर्णमाला के अक्षर देवता के विभिन्न अङ्ग माने जाते हैं। वे मिल कर सम्पूर्ण देवता को साधक के शरीर में प्रतिष्ठित कर देते हैं। वह अपने हाथ को शरीर के विभिन्न अंगों पर रखकर सम्बद्ध अक्षरों का न्यास उच्चारण करते हैं। अभ्यन्तर न्यास का निरूपण अष्ट चक्रों के साथ किया गया है। प्रत्येक अक्षर की आवस्ति नीचे अनुसार की जाती है।

दक्षिण और वाम नासिका में उ तथा ऊ। दक्षिण और वाम कपोल में ऋ, लृ। ऊपर तथा नीचे ओष्ठ में ए, ऐ। ऊपर तथा नीचे के दांत में ओ, औ। सिर में अं मुख विवर में अः हमारा सम्पूर्ण वाङ्मय साहित्य संस्कृत भाषा में पाया जाता है।

संस्कृत हिन्दी भाषा विश्व भाषा
मेरा नत प्रणाम,
युग-युगान्तरों तक देती रही
अध्यात्म ज्ञान।
ब्रह्म लोक से उतरी ब्रह्म लिपि
कहलायी
खुल गयी ऋषियों की अन्तर दृष्टि
पवित्र हृदय समायी।
५० अक्षरों की सहज स्वाभाविक ब्राह्मी लिपि।
एक-एक अक्षर में भरे खजाने
जैसे दिये मोती सीपी।
क अर्थ सुख ख का अर्थ खं ब्रह्म
आकाश ग का अर्थ गति
भ का अर्थ पूर्ण प्रकाश।
मुख के सप्त स्थानों से निकली
ब्राह्मी लिपि की महिमा अपार
कंठ, तालु, मूर्धा दन्तव्यादि गंगा
जैसी सप्त धार।
पढने लिखने में सहज स्वाभाविक सन्धि विग्रह विसर्ग का
देती ज्ञान।
संस्कृत भाषा विश्व भाषा मेरा
नत नत प्रणाम॥

मेरे साथ स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश का सम्बन्ध

लेखक—स्वामी ओमानन्द सरस्वती

आर्यसमाज के महान् लेखक, विद्वान् स्वामी वेदानन्द वेदवागीश के निधन से आर्य जगत् में जो स्थान रिक्त हुआ है वह भरा नही जा सकेगा। सेवा भावी इस विद्वान् ने आर्यसमाज की अन्तिम समय तक सेवा की। स्वामी ओमानन्द जी के वे अन्यतम सहयोगी थे। प्रस्तुत हैं स्वामी जी द्वारा उनके संस्मरण।

लगभग सन् १९३६ की बात है कि स्वामी जी महाराज उस समय गुरुकुल चित्तौडगढ में पढ़ा करते थे, मैं उस समय दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर मे पढा करता था। गुरुकुल चित्तौडगढ में उस समय पूज्य शंकरदेव जी पढाते थे, वह महावैयाकरण माने जाते थे। गुरुकुल संस्थापक एवम् आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी का यह प्रयत्न रहता था कि कहीं कहीं से अच्छे ब्रह्मचारी छाटकर लाए और उन्हें विद्वान् बनाए। इसी प्रसंग में मुझे स्वामी व्रतानन्द जी दिल्ली गुरुकुल से चित्तौडगढ ले गए। उस समय मेरी स्वामी वेदानन्द जी से प्रथम मुलाकात हुई। इसके बाद मैं तो पूर्व जन्म के संस्कार कहूँ या कुछ ईश्वरीय देन ही कहूँ, हम दोनों एक दूसरे से सम्बद्ध होते चले गये। इस सम्बन्ध का क्या कारण था यह तो न मुझे पता और न ही पूज्य स्वामी जी को ही पता। इस सम्बन्ध के विषय में मैं पूज्य स्वामी जी की लेखनी द्वारा लिखा कुछ छोटा अंश लिखता हूं। इन्हीं शब्दों से पाठकों को पता चल जायेगा मेरे और उनके सम्बन्ध कैसे हुए।

"मैं आपकी दिनचर्या और खान पान से प्रभावित हुआ। मैंने भी उस समय नमक छोड दिया था तब मेरा और आचार्य भगवान्देव जी (स्वामी ओमानन्द जी) का छोटे बड़े भाई जैसा सम्बन्ध हो गया। संस्कारों का आकर्षण कहें या कुछ और हम दोनों अब तक आबद्ध चले आ रहे हैं। हमारी परस्पर की मेल की कोई बात नहीं हुई। मैं स्वतः ही आपकी आज्ञा का पालन शिरोधार्य समझता हूं। जब चित्तौडगढ गुरुकुल से स्नातक बनकर आया तो जैसे ही आपने मुझे प० श्री स्वामी आत्मानन्द जी के सान्निध्य में रहने को कहा, मैं एकपदे तैयार हो गया। स्वामी जी का न पहले नाम सुना था, न जाना ही था किन्तु मैंने वहां पहुंच कर तृप्ति पायी वह मेरे जीवन नौका की खेवनहार बनी। इस दृष्टि से मैं श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज का अत्यन्त आभारी हूं। आपके और मेरे विचारों में कुछ मतभेद हो सकता है। फिर भी मैं कुछ कह नहीं सकता कौन सी अदृष्ट शक्ति है जो

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आत्मदर्शन के साधन

—डा० रघुवीर वेदालंकार

मानव जीवन का चरम लक्ष्य आत्म साक्षात्कार परमात्म साक्षात्कार माना गया है। कदाचित् इसी लिए याज्ञवल्क्य कहते हैं—'इह चेदवेदीन् अथ सत्यमस्ति नो चेदवेदीन्महती विनष्टि.'। यदि इसी जन्म में आत्मा-परमात्मा को जान लिया तो ठीक है अन्यथा महान् अनर्थ हो जाएगा। आत्मदर्शन का सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं प्रामाणिक मार्ग महर्षि पतञ्जलि प्रणीत योग मार्ग है। उपनिषदों में भी विस्तार से आत्म-साक्षात्कार की बात कही गई है। किन्तु वहां पर अष्टाङ्ग योग का नाम नहीं लिया गया। तथापि यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि योग दर्शन के अष्टांग योग से उपनिषदों में वर्णित आत्मदर्शन के मार्ग की बिल्कुल समानता है। उपनिषदों में चर्चित ब्रह्म ही योगदर्शन में 'पुरुषविशेषः ईश्वरः' कहा गया है। उपनिषदों के अनुसार ब्रह्मदर्शन से पूर्व आत्म-साक्षात्कार होना अनिवार्य है। इसी प्रकार योगदर्शन के अनुसार ईश्वर प्रणिधान से प्रत्यक् चेतनाधिगम अर्थात् आत्मस्वरूप दर्शन होता है। योगदर्शन में ईश्वर का वाचक (मुख्य नाम) ओ३म् माना गया है तथा ओ३म् के जप से आत्म-दर्शन की बात कही है। इसी प्रकार उपनिषदों में 'ओ३म् खं ब्रह्म, ओमिति ब्रह्म' आदि के द्वारा यही भाव व्यक्त कर के कहा गया है कि प्रणव को धनुष बनाकर ब्रह्म की प्राप्ति करनी चाहिए।

ब्रह्म प्राप्ति के साधन—ब्रह्म अथवा ईश्वर किस प्रकार प्राप्त होता है, इस विषय में उपनिषदों तथा योगदर्शन में पर्याप्त समानता है। उपनिषदों में ब्रह्म-प्राप्ति के जो साधन बतलाए गए हैं उन का ही उल्लेख एक क्रमबद्ध पद्धति के रूप में योगदर्शन में उपलब्ध होता है। उपनिषदों में इस प्रकार की सुसयमित पद्धति दृष्टिगोचर नहीं होती। इन शास्त्रों में ब्रह्म-प्राप्ति के साधन इस प्रकार वर्णित हैं—

१. सत्य, तपस्या, ज्ञान तथा ब्रह्मचर्य—श्वेताश्वतरोपनिषद् तथा मुण्डकोपनिषद् में कहा गया है कि आत्मा, सत्य, तप, ज्ञान तथा ब्रह्मचर्य से प्राप्त होता है। इसी प्रकार कठोपनिषद् में भी 'यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति' आदि के द्वारा ब्रह्मचर्य को ब्रह्म-प्राप्ति का उपाय बतलाया गया है। योगदर्शन में सत्य, तप ब्रह्मचर्य आदि का वर्णन अष्टांगयोग के अन्तर्गत किया गया है। तपस्या पर जोर देते हुए योगदर्शन के भाष्यकार व्यास जी कहते हैं—'नातपस्विनो योगः सिद्ध्यति'। अर्थात् तपरहित पुरुष का योग सिद्ध नहीं हो सकता क्योंकि कर्म-क्लेश तथा वासना से दूषित चित्त तपस्या के बिना शुद्ध नहीं हो सकता। उपनिषदों में भी इसी प्रकार तपस्या पर बहुत अधिक बल दिया गया है। आधुनिक काल में विलासिता के साथ-साथ योग-साधना का ढोंग करने वालों के लिए यह एक चेतावनी है कि तपस्या के बिना योग सिद्ध नहीं हो सकता।

२ सम्यक् ज्ञान—मुण्डकोपनिषद् में सम्यक् ज्ञान को भी ब्रह्मदर्शन का साधन माना गया है। इस का उल्टा असम्यक् ज्ञान है। इसी को योगदर्शन में अविद्या कहा गया है। पतञ्जलि के अनुसार अनित्य, अशुचि, दुःख तथा अनात्मा में क्रमशः नित्य, शुचि, सुख तथा आत्म बुद्धि रखना अविद्या कहलाती है। योग-दर्शन में समाधि की सिद्धि के लिए चित्त की एकाग्रता आवश्यक मानी गई है। चित्त की एकाग्रता के विभिन्न साधन योगदर्शन में गिनाए गए हैं। इन साधनों में से ही एक साधन है—प्रणव का जप। व्यास जी ने इस सूत्र के भाष्य में लिखा है कि प्रणव का जप करते हुए तथा प्रणवाभिधेय ईश्वर का ध्यान करते हुए योगी का चित्त एकाग्र हो जाता है। उपनिषदों में भी इसी प्रकार प्रणव जप पर बहुत बल दिया गया है। योगदर्शन तथा उपनिषदों के अनुसार प्रणव का जप चित्त की एकाग्रता को उत्पन्न करके समाधि लाभ कराता है।

३. ईश्वर-प्रणिधान—योगदर्शन में समाधि के उपायों में ईश्वर-प्रणिधान भी प्रधान उपाय है। प्रणिधान का फल बतलाते हुए योग भाष्यकार कहते हैं कि प्रणिधान अर्थात् भक्ति विशेष से प्रसन्न होकर ईश्वर योगी को अभिध्यान मात्र से अनुगृहीत करता है। यही भावना कठोपनिषद् तथा मुण्डकोपनिषद् में व्यक्त की गई है कि परमात्मा जिस को स्वीकार कर लेता है उसके द्वारा ही प्राप्तणीय होता है। यह एक प्रकार का भक्तियोग है। गीता में इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है—

अनन्यांश्चिन्तयन्तो मां
ये जना पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां
योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
८।२२।

पतञ्जलि ने तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान के रूप में इस क्रियायोग का वर्णन किया है। ईश्वर प्रणिधान को उपनिषदों में 'धातु-प्रसाद' अर्थात् परमात्मा की कृपा के रूप में भी कहा गया है। श्वेताश्वतर तथा कठोपनिषद् में समान रूप से एक श्लोक प्राप्त होता है। 'तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातु-प्रसादान्महिमानमात्मनः।'

अर्थात् परमात्मा की कृपा से शोक रहित व्यक्ति उसके दर्शन कर सकता है।

४ प्रज्ञान—कठोपनिषद् में कहा गया है कि आत्मा को समाहित चित्त होकर प्रज्ञान के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इसी उपनिषद् में अन्यत्र अग्रा सूक्ष्मा प्रज्ञा के द्वारा ब्रह्मप्राप्ति की बात कही गई है। यह प्रज्ञा तथा प्रज्ञान एक ही चीज हैं। व्यास भाष्य के अनुसार यह प्रज्ञा समाहित चित्त वालों को ही प्राप्त होती है। कठोपनिषद् तथा मुण्डकोपनिषद् में अन्यत्र इस बुद्धि को मनीषा कहा गया है। इसके द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार होना है—हृदा मनीषा मनसाऽभिक्लृप्तो य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति।

यह अवस्था ज्ञान की पराकाष्ठा है। यह परम वैराग्य से प्राप्त होती है। योगदर्शन के भाष्य में इसे ज्ञान-प्रसाद नाम दिया गया है। इसके तुरन्त पश्चात् कैवल्य हो जाता है। उपनिषदों में 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' कहकर इसी ओर संकेत किया गया है। योगदर्शन एवं उपनिषदों के अनुसार इस अवस्था में आत्मा के स्वरूप दर्शन के साथ-साथ परमात्मा का साक्षात्कार भी हो जाता है।

मेरे साथ स्वामी वेदानन्द

(पृष्ठ ४ का शेष)

मुझसे आपके आदेश का पालन करा देती है। गुरुकुल श्री रावलपिंडी में रहते हुए आपने पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज की आद्योपान्त जीवन घटनाओं को संकलित करने का मुझे आदेश दिया, मैंने उसे स्वीकार कर उसे पूर्ण कर लिया। १९६४ में जीवन चरित्र लिखने को कहा, मैंने लिख दिया। श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ की परीक्षाएं चलाने का निर्देश दिया मैं तैयार हो गया। मैं आज देख रहा हूं कि जिन से मेरे बड़े भाई श्री रामदेव जी एम० ए० आर्टिस्ट का सम्बन्ध रहा, उनसे आपका भी सम्बन्ध चला आ रहा है। अथवा जिनसे मेरा सम्बन्ध रहा, उनसे आपका भी सम्बन्ध पहले से ही चला आ रहा है। बिना किसी प्रमाण के ये बातें चली आयीं। ऐसा लगता है अब आजीवन ऐसा ही चलेगा। यदि कदाचित विद्रोह हुआ भी तो अटूट सम्बन्ध ही रहेगा। कुछ हम एक दूसरे के पूरक से बन गये हैं।"

ये शब्द पूज्य स्वामी वेदानन्द महाराज के स्वयं अपनी लेखनी से लिखे हुए हैं। इन्हीं से सम्यक्तया पता चल जाता है कि हम दोनों एक दूसरे से कितने सलग्न थे और जीवन पूरा होने तक ऐसे ही बने रहे। जैसे कि हम को परमात्मा ने एक ही साथ कार्य करने को भेजा हो। वे मेरे बहुत बड़े सहयोगी थे। उनके स्थान की पूर्ति होना मुश्किल है। वह विद्वान् और सन्यासी होते हुए भी मेरी आज्ञा में निरन्तर चलते रहे। उन्होंने विद्यापीठ का कार्य भी इतनी निपुणता से किया जो भुलाया नहीं जा सकता। वे मुझे बड़े भाई के समान मानते थे और मैं उनको छोटे भाई की तरह। अब परमात्मा ने मेरे एक विशेष सहयोगी को छीन लिया है।

समाचार

"स्मृतियों में राजनीति और अर्थशास्त्र" का राष्ट्रपति द्वारा विमोचन

ज्ञानपुर (वाराणसी) स्थानीय विश्वभारती अनुसन्धान परिषद् द्वारा प्रकाशित एवं श्रीमती डा० प्रतिभा आर्य द्वारा लिखित 'स्मृतियों में राजनीति और अर्थशास्त्र' का विमोचन राष्ट्रपति भवन में एक समारोह में राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि इस ग्रंथ की रचना द्वारा लेखिका ने महत्त्वपूर्ण सराहनीय कार्य किया है क्योंकि वर्तमान युग में स्मृतियां एवं वेदों का अत्यधिक महत्त्व है।

इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय संस्कृति पर १४ वीं शताब्दी से लेकर अब तक निरंतर उसे नष्ट करने का प्रयत्न होता रहा है, परन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे हुए हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति की इज्जत करने की जगह इसे बदनाम किया है, इससे हमारे समाज को बहुत हानि हुई है।

राष्ट्रपति ने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि स्वतन्त्रता के ४० वर्ष के बाद भी इस संस्कृति को बचाने के लिए जितना प्रयत्न होना चाहिए था, वह नहीं हुआ है। बल्कि भारतीय संस्कृति को संकीर्ण रूप देकर उसे एक सम्प्रदाय विशेष की संस्कृति का रूप दे दिया गया। आप ने कहा कि भारतीय संस्कृति को केवल हिन्दू संस्कृति नहीं मानना चाहिए बल्कि यह प्रत्येक भारतीय की गौरवमयी संस्कृति है, जो हमें भारतीय सांस्कृतिक एकता और समन्वय का पाठ पढ़ाती है। श्री जैलसिंह ने कहा कि प्रत्येक धर्म की बुनियाद प्रेम और मुहब्बत है। जहां तक हो सके हमें एक दूसरे को पूरी सहायता करनी चाहिए, तभी हम धर्मनिरपेक्ष वातावरण को बनाए रख सकते हैं और देश की उन्नति और एकता को मजबूती से दुनिया के सामने रख सकते हैं।

राष्ट्रपति ने इस आवश्यकता पर बल दिया कि आने वाली पीढ़ी को प्राचीन भारत के गौरवमय इतिहास और परम्पराओं का ज्ञान करवाया जाए जिससे उनमें देश प्रेम, राष्ट्रीयता और आत्मिक उन्नति का विकास हो सके।

राष्ट्रपति ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि परिषद् भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार के कार्य के साथ-साथ वेदों पर, वेदामृतम् ग्रंथमाला का प्रकाशन कर रहा है।

कार्यक्रम के आरम्भ में संस्था के निदेशक डा० कपिलदेव द्विवेदी ने राष्ट्रपति का अभिनन्दन किया और परिषद् के कार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया। डा० द्विवेदी ने परिषद् द्वारा प्रकाशित विषयानुसार प्रकाशित दस भागों में वेदामृतम् ग्रंथमाला भेंट की, राष्ट्रपति ने वेदामृतम् ग्रन्थावली के ४० खण्डों में से १० भाग प्रकाशित हो जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए शीघ्र ही अन्य बचे हुए तीस भागों को प्रकाशित करने की इच्छा व्यक्त की।

परिषद् के अध्यक्ष डा० भारतेन्दु द्विवेदी एवं संयोजक श्री अजीत आर्य ने माल्यार्पण कर राष्ट्रपति का स्वागत किया।

अन्त में परिषद् की ओर से हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् पद्मश्री क्षेमचन्द्र सुमन ने राष्ट्रपति और अभ्यागतों को धन्यवाद दिया।

आर्येन्दु द्विवेदी
प्रचारमंत्री
विश्वभारती अनुसंधान परिषद्
ज्ञानपुर (वाराणसी)

आवश्यकता है

आर्य गुरुकुल चित्तौडगढ़ की माध्यमिक कक्षाओं के लिए प्रशिक्षण प्राप्त व्याकरणाचार्य प्राचीन तथा अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, भूगोल संस्कृत एवं हिन्दी के लिए प्रशिक्षित स्नातक-स्नातकोत्तर अध्यापकों के आवेदन पत्र उनकी योग्यता-विवरण सहित आमन्त्रित हैं।

आयु सीमा २३ से ४५ तक, वेतन योग्यतानुसार, इच्छुक महानुभाव आवेदन करें—

मुख्याधिष्ठाता :
श्री आर्य गुरुकुल चित्तौडगढ़
राजस्थान-३१२००१

चाहिए

प्रौढ अथवा सक्षम सेवानिवृत्त व्यक्ति जिसे शैक्षणिक एवं प्रशासनिक अनुभव हो, चित्तौडगढ़ गुरुकुल आश्रम बालकों की परिचर्या हेतु छात्र संरक्षक पद के लिए अपेक्षित है। स्नातक व अनुभवी व्यक्ति को प्राथमिकता देय, वेतन योग्यतानुसार। बायोडाटा सहित आवेदन-पत्र आमन्त्रित। पत्र माध्यम से संपर्क करें अथवा स्वयं मिलें -

मुख्याधिष्ठाता
श्री आर्य गुरुकुल चित्तौडगढ़
राजस्थान-३१२००१

सुयोग्य वर की आवश्यकता

एक पंजाबी सारस्वत ब्राह्मण आर्यसमाजी परिवार की सुन्दर एम. ए. कर रही, २२ वर्षीया कन्या, जो कि घरेलू कार्यों और सिलाई-कढ़ाई में दक्ष है, के लिए सुन्दर-सुयोग्य बारोजगार ब्राह्मण वर की आवश्यकता है।

पत्र व्यवहार का पता .

आदर्श कुमार
सी-२११, पाकेट-I
मयूर विहार, दिल्ली-९१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य

कक्षा प्रथम	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम)		१.५०
कक्षा द्वितीय	नैतिक शिक्षा (भाग द्वितीय)		१.५०
कक्षा तृतीय	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२.००
कक्षा चतुर्थ	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ)		३.००
कक्षा पंचम	नैतिक शिक्षा (भाग पंचम)		३.००
कक्षा षष्ठ	नैतिक शिक्षा (भाग षष्ठ)		३ ००
कक्षा सप्तम	नैतिक शिक्षा (भाग सप्तम)		३.००
कक्षा अष्टम	नैतिक शिक्षा (भाग अष्टम)		३ ००
कक्षा नवम	नैतिक शिक्षा (भाग नवम)		३.००
कक्षा दश	नैतिक शिक्षा (भाग दश)		४.००
कक्षा ग्यारह	नैतिक शिक्षा (भाग ग्यारह)		४.००
कक्षा बारह	नैतिक शिक्षा (भाग बारह)		५.००
	धर्मवीर हकीकतराय	वैद्य गुरुदत्त	५.००
	फ्लैश आफ ट्रुथ (Flash of Truth)	डा० सत्यकाम वर्मा	२.००
	सत्यार्थप्रकाश सन्देश	,, ,,	२.००
	एनाटोमी ऑफ वेदान्त	स्वा० विद्यानंद सरस्वती	५.००
	आर्यों का आदि देश	,, ,,	२.००
	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (संक्षिप्त)	पं० सच्चिदानन्द शास्त्री	५.००
	सत्यार्थ सुधा	पं० हरिदेव सि०भू०	२.००
	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)		५०/- रु० सैकड़ा
	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५०/- रु० सैकड़ा
	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५०/- रु० सैकड़ा
	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५०/- रु० सैकड़ा
	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका		५.००
	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्धशताब्दी स्मारिका		५.००
	राघव गीत उद्यान	स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती	३.५०
	ठुकराया वीर	,, ,,	२.००
	सरल चिकित्सा भाग-१	,, ,,	३.५०
	रोगों की सरल चिकित्सा भाग-२	,, ,,	३ ५०
	समय के मोती	,, ,,	१०.००

वैदिक विचारधारानुकूल आधुनिक तर्जों से ओत-प्रोत, धार्मिक, प्रभु-भक्ति प्रेरक गीत, संस्कार पर्वों के नवीन गीत, कविताओं का अपूर्व संग्रह अवश्य पढ़ें।

नोट—उपरोक्त सभी पुस्तकों पर १५% कमीशन दिया जाएगा।

कृपया अपना पूरा पता एवं नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें। पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक् नहीं लिया जाएगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान—
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

वैदिक मिशनरी गुरुकुल, वेद मन्दिर, वृन्दावन मार्ग मथुरा में प्रवेश सूचना

सर्वसाधारण को यह जानकर प्रतीव हर्ष होगा कि धर्म, संस्कृति और राष्ट्र की रक्षार्थ विगत ४ वर्षों से स्व० लालमन जी आर्य की पुण्य स्मृति में प्रारम्भ हुए वैदिक मिशनरी दीक्षा केन्द्र, वेद मन्दिर, मथुरा से जो महत्वपूर्ण कार्य हो रहा है, उसे व्यवस्थित और स्थायी रूप देने हेतु (वैदिक मिशनरी गुरुकुल) चालू हो गया है और इस गुरुकुल में प्रवेश आरम्भ हो गया है। ११ जुलाई ८७ से नया सत्र चालू हो गया है। अतः प्रवेश के इच्छुक छात्रों से अनुरोध है कि वे उक्त पते पर अपने अभिभावकों सहित गुरुकुल में सम्पर्क स्थापित करें या प्रवेश के लिए नियम व शर्तों की नियमावली मंगवा लें। युवा वैदिक मिशनरी शिक्षण प्रणाली :

प्रथम वर्ग —

प्रवेश योग्यता—गुरुकुलों से स्नातक या बी०ए०/एम०ए० (संस्कृत अथवा दर्शनशास्त्र सहित)

शिक्षण काल—योग्यता एवं क्षमतानुसार एक वर्ष से दो वर्ष तक, जिस में छः महीने कार्यक्षेत्र में प्रायोगिक प्रशिक्षण सम्मिलित रहेगा।

उपाधि—सिद्धान्त वाचस्पति, वेद वाचस्पति, वैद्य विशारद, संगीत विशारद एवं शास्त्रार्थ महारथी आदि। "वैदिक मिशनरी" पद सभी के साथ जुड़ेगा।

द्वितीय वर्ग—

प्रवेश योग्यता—संस्कृत सहित हाई स्कूल या इण्टर अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण।

शिक्षण काल—योग्यता व विषयानुसार दो से तीन वर्ष तक।

उपाधि—सिद्धान्तभूषण, शास्त्रार्थ प्रवीण, वेदभूषण, वैद्य रत्न, संगीत रत्न आदि।

तृतीय वर्ग—

प्रवेश योग्यता—सातवीं या आठवीं कक्षा उत्तीर्ण, मेधावी, सुशील एवं अनुशासनप्रिय छात्रों को आठवीं एवं नवीं कक्षा में प्रवेश मिलेगा।

शिक्षा व्यवस्था—डी० ए० वी० हायर सेकेण्डरी स्कूल में रहेगी। साथ-साथ इन्हें संस्कृत एवं वैदिक सिद्धान्तों का विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा। इनको भी परीक्षायें होंगी। गुरुकुलीय दिनचर्या का पालन आवश्यक होगा।

उपाधि—मैट्रिक (हाईस्कूल) के अतिरिक्त सरोज, संस्कृत सरोज आदि।

भवदीय,
प्रेम भिक्षु
वैदिक मिशनरी गुरुकुल,
वेद मन्दिर, वृन्दावन मार्ग,
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

द्रष्टव्य—उक्त वैदिक मिशनरी गुरुकुल भवन का उद्घाटन गत माह स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती द्वारा एवं अध्यक्षता स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती द्वारा की गई थी।

यज्ञ विशेषज्ञों की सेवा में

मात मन्दिर कन्या गुरुकुल, वाराणसी को यज्ञशाला का निर्माण प्राचीन ऋषि शैली में करने का संकल्प है। यह यज्ञशाला प्रायोगिक होगी, जिसमें वेदमन्त्र ध्वनि मिश्रित सूर्य किरणों पर वैज्ञानिक प्रयोग किए जायेंगे।

आर्यसमाज व अन्यत्र अनेक सुविज्ञ विद्वान् हैं जिनका वैदिक यज्ञों पर इसी दृष्टि से विस्तृत अध्ययन व क्रियात्मक अनुभव है, कृपया वे हमें इस विषय में पथ प्रदर्शन करें। ऐसी यज्ञशाला का कोई चित्र तथा उपकरणों की सूची भी भेज सकें तो अति कृपा होगी। इस सम्बन्ध में आवश्यक व्यय मातृ मन्दिर वहन करेगा। यथासमय ऐसे विद्वानों की गोष्ठी भी आमन्त्रित की जाएगी।

आशा है सुविज्ञ माननीय विद्वद्गण इस पुनीत कार्य में पूर्ण सहयोग प्रदान कर ऋषि ऋण उतारने की दिशा में एक ठोस कदम उठायेंगे व हमें कृतार्थ करेंगे।

—डा० पुष्पावती
अध्यक्षा,
मात मन्दिर कन्या गुरुकुल
डी ४५/१२६, नई बस्ती,
रामापुरा, वाराणसी

ग्रहों की उत्पत्ति...

(पृष्ठ २ का शेष)

नियां तो पहले बहुत तीव्र थी, और जो ग्रहों के निष्कासन पर समाप्त हो गई थी, अब सूर्य में पुनः सामान्य से कुछ अधिक दाब उत्पन्न हो जाने पर, सूक्ष्म रूप में पुनः प्रारम्भ हो गई हैं, यद्यपि वे पहले की तुलना में नगण्य सी हैं। अब सूर्य कहता है कि अग्नियां पहले से सूक्ष्म आकार धारण कर निस्तेज हो गई हैं।

उरु अन्तरिक्षम् अनु एमि। अब मैं, अब सूर्य मन्दाकिनी-केन्द्र के सापेक्ष से अपनी स्थिति बतलाता है। वह कहता है कि ग्रहों के निष्कासन के परिणाम स्वरूप मैं जो पहले मन्दाकिनी-केन्द्र की ओर निरन्तर गिरता चला जा रहा था, जिसकी गति इस केन्द्र की ओर उसके आकर्षण के कारण, निरन्तर बढ़ती जा रही थी अब विशाल अन्तरिक्ष को प्राप्त हो रहा हूं अर्थात् अब मेरी गति की वृद्धि मन्दाकिनी केन्द्र की ओर न होकर, विशाल अन्तरिक्ष की ओर या पहली दिशा की विपरीत दिशा में है, तथा मैं इस प्रकार निरन्तर ऊपर उठता हुआ, अपने संकल्प के अनुरूप मन्दाकिनी-केन्द्र के चारों ओर एक विशाल चक्राकार कक्षा में पहुंच गया हूं। □

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शाखा कार्यालय –६३, गली राजा केदारनाथ,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ फोन। २६१८७१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक ३६ | रविवार २६ जुलाई १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८३ | श्रावण २०४४ | दयानन्दाब्द—१६३

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर ३० पौंड

सर्वधर्म विश्व शान्ति कान्फ्रेंस के लिए

श्रीमती प्रभात शोभा को भावभीनी विदाई

प्रसिद्ध विदुषी श्रीमती प्रभात शोभा को १९ जुलाई आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल मे दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से भावभीनी विदाई दी गई। श्रीमती शोभा "वर्ल्ड कान्फ्रेंस ऑन रिलीजन एण्ड पीस" (सर्वधर्म विश्व शांति सम्मेलन) मे भाग लेने के लिए न्यूयार्क अमेरिका मे जा रही हैं। यह सम्मेलन सयुक्त राष्ट्र सघ (यूनाइटेड नेशन्स) को ही एक सस्था द्वारा आयोजित किया जाता है। इस संस्था द्वारा सभी वर्ग और धर्म के लोगों को सगठित करके विश्व में मानवता को जीवित रखने के लिए तथा विश्व में शान्ति के लिए कार्य करने के लिए जनमत तैयार किया जाता है। यह सम्मेलन २४ अगस्त से ११ सितम्बर तक न्यूयार्क मे होगा।

विदाई समारोह की अध्यक्षता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की उन्होंने कहा, श्रीमती प्रभात शोभा आर्यसमाज के उद्भट विद्वान् स्व० बुद्धदेव विद्यालंकार की बेटी हैं, जिन्होंने पिता श्री से वेदवेदागों की शिक्षा और सस्कार पाए। ये कन्या गुरुकुल देहरादून की स्नातिका हैं। इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे ये भारतीय सस्कृति एव धर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिए जा रही हैं। समस्त हिन्दू समाज को ओर से इन्हें प्रतिनिधि माना गया है। यह सौभाग्य की बात है। मुझे विश्वास है आर्यसमाज की यह विदुषी वैदिक सन्देश से संसार भर में कीर्ति प्राप्त करेंगी।

इस अवसर पर प्रांतीय महिला सभा की उपप्रधाना श्रीमती सुशीला आनन्द तथा मंत्री श्रीमती प्रकाश आर्या तथा स्वामी ओमानन्द, प० शिवकुमार शास्त्री, दिल्ली सभा के प्रधान सूर्यदेव और आर्यसमाज दीवान हाल के मत्री श्री मूलचन्द ने श्रीमती प्रभात शोभा का पुष्पमालाओं से स्वागत किया तथा शुभकामनाएं दीं। अपने सम्बोधन मे श्रीमती शोभा ने कहा, ससार के सभी मनुष्य एक-दूसरे के साथ प्रेम और सद्भाव से रहे। दुखियों पर करुणा दया करे और हिसक वृत्ति का सर्वथा सर्वदा परित्याग करे परन्तु दया करुणा और दुखियों की पीडा हरने का भी काम न करे तो कम से कम पीडा और दुःख बढाने का काम न करे। आज ससार भर में अस्त्र और शस्त्रों का जखीरा जमा करने को होड लग रही है। परमाणु अस्त्रों के लिए अमूल्य सम्पत्ति नष्ट की जा रही है। इस धनराशि के द्वारा दुर्भिक्ष जैसी विपदाओं से लडने का काम होना चाहिए न कि बढाने का। परमाणु अस्त्रों की प्रतिद्वन्द्विता से विनाशकारी अहकार निरन्तर पनपा है और उसी कारण आज विश्व में विनाश के बादल मंडरा रहे हैं। मनुष्य मे मनुष्यता घटी है। वेद का पवित्र सन्देश भी "मनुर्भव" है। मनुष्य बन विचारशील हों, सभी कल्याण करे। आज फिर उसी पुरातन गीत को गाने की आवश्यकता है—असतो मा सद गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। असत से सत की ओर चले। अज्ञान अन्धकार से ज्ञान रूपी प्रकाश का अनुसरण करे।

मैं आप सबका आशीर्वाद प्राप्त कर इस सम्मेलन में हिन्दू वर्ग का प्रतिनिधित्व करने जा रही है। इस से पूर्व भी अनेक सम्मेलनो में गयी। मैंने देखा है भारतीय ग्रन्थों और उनकी मान्यताओ पर विश्व भर में आस्था है परन्तु अभी सऊदी अरब जैसे कुछ देश हैं जहाँ धार्मिक सकीर्णता है। वहां अन्य धर्मावलबी अपनी धार्मिक पुस्तक न ले जा सकता है, न पढ सकता है। हमारा उद्देश्य यह भी है कि सभी वर्ग और मान्यताओं के लोग सर्वधर्म समभावी हो। यद्यपि मूल धर्म तो एक ही है जिसको सार्वभौम कहा जा सकता है

स्मरणीय है कि श्रीमती प्रभात शोभा आर्य नेता प्रो० शेरसिह की धर्मपत्नी हैं।

शोक संवेदना

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष बाबू सोमनाथ मरवाह के भतीजे श्रीयुत वीरेन्द्र कुमार का आकस्मिक निधन हो गया। वे ५५ वर्ष के थे, अपने पीछे दो बेटे छोड गए हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने उनके निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया है। सभा कार्यालय में दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करके प्रार्थना की गई कि परमात्मा दिवगत आत्मा को उनके सद्कर्मों के अनुसार सद्गति प्रदान करे तथा पारिवारिक जनों को धैर्य, विवेक और शक्ति दे जिससे वे इस अगाध दुःख को सहन कर सकें।

निवेदक

आर्यसन्देश परिवार

भव्य संग्रहणीय विशेषांक

आर्यसन्देश 'साप्ताहिक' का एक सग्रहणीय भव्य विशेषाक १६ अगस्त को प्रकाशित किया जा रहा है। यह विशेषांक वेद सम्बन्धी ज्ञान-विज्ञान से भरपूर होगा। इस की साज-सज्जा तथा सामग्री अनुपम एव वैचारिक क्रान्ति से सम्पन्न होगी।

यह विशेषांक आर्यसन्देश के सदस्यों को निःशुल्क मिलेगा। मूल्यवान अङ्क को प्राप्त करने के लिए आज ही २५ रुपये भेजकर आर्यसन्देश के सदस्य बनें।

पता : सम्पादक आर्यसन्देश, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

अग्निहोत्र सर्वस्व

ले०—स्वामी दीक्षानन्द

यज्ञ के ये तत्त्वत्रय परस्पर इतने आबद्ध हैं कि एक को दूसरे से पृथक् नहीं किया जा सकता, न इनमें से एक तत्त्व दूसरे को छोडकर ही अपना अर्थ दे सकता है।

देव-पूजा, सगतिकरण और दान इन तत्त्वत्रय में से प्रथम तत्त्व 'देव-पूजा' है, जिसका सीधा अर्थ है देव की पूजा ! निस्सन्देह पूजाकर्म यज्ञ है, परन्तु पूजा से पहले यह जानना आवश्यक है कि पूजा किसकी हो ? पूजा उसकी कि जो देव हो। पूजा के पात्र व्यक्ति का देव होना आवश्यक है। उस पात्र व्यक्ति को देव बनने के लिए जिस तत्त्व की आवश्यकता है वह तत्त्व है दान। निरुक्त के अनुसार देवो दानात् अर्थात् प्रथम तत्त्व 'देवपूजा' को तृतीय तत्त्व 'दान' का आश्रय आवश्यक है। इस प्रकार प्रथम तत्व तृतीय तत्व से आबद्ध है। देव-पूजा दान से आबद्ध है। यज् धातु का पहला अर्थ देव-पूजा यज्धातु के तृतीय अर्थ दान के आश्रित है।

पूजा

न केवल देवत्व ही दान पर आश्रित है, अपितु याजक की पूजा भी दान पर आश्रित है। याजक को भी देव के प्रति दातव्य (सामग्री) का त्याग करना ही होगा, इसी त्याग का समर्पण का नाम दान है, अतः जहां व्यक्ति का देवत्व दान पर अवलम्बित है, वहां याजक की पूजा भी दान पर अवलम्बित है। देव का देवत्व, याजक की पूजा—दोनों ही दान पर आश्रित हैं।

देव और याजक मे अन्तर

यदि देव का देवत्व और याजक की पूजा, दोनो ही दान पर आश्रित है, तो दोनो में अन्तर क्यो ? एक देव क्यो ? और दूसरा याजक क्यो ? एक पूज्य क्यो ? और दूसरा पूजक क्यों ? यह क्यो ? कि एक पूजा पाये और दूसरा पूजा करे !

इसका समाधान अति स्पष्ट है दोनो के दान मे अन्तर है एक का लेना देने के लिए है तथा दूसरे का देना लेने के लिये है। यही अन्तर एक को पूज्य और दूसरे को याजक बनाए हुए है। याजक का देना लेने के लिए है, जबकि देव का लेना देने के लिए है। एक का दान आदान के लिए है दूसरे का आदान दान के लिए आदान हि विसर्गाय। जहा देकर लेने की भावना याजक को देव बनने से रोकती है, वहा लेकर देने की भावना देव को पूज्य पद पर अधिष्ठित करती है। इसी दानादान के माध्यम का ही नाम हवि है। हवि वह पदार्थ है, 'जिसे दिया जाता है, लेने के लिए'। तथा जिसे 'लिया जाता है, देने के लिए'। इसी हवि पर हवन अवलम्बित है। यजमान हवि देता है लेने के लिए, जबकि देव हवि लेता है देने के लिए। वस्तुतः यजमान को यही सीखना है, कि उसका दान आदान के लिए न हो। यजमान की नित्य यज्ञ-प्रक्रिया इसी भावना को परिपक्व करने के लिए है। इस भावना के परिपक्व होने पर उसे नित्य यज्ञ की आवश्यकता नहीं रहती। इस प्रकार देव और याजक का, पूज्य और पूजक का अन्तर स्पष्ट हुआ।

संगतिकरण

जहां देव-पूजा दानादान पर आश्रित है, वहां दानादान संगतिकरण पर, अर्थात् प्रथम तत्व तृतीय तत्व पर तथा तृतीय तत्व द्वितीय तत्व पर आश्रित है। तात्पर्य यह है कि तीनों तत्व परस्पर एक-दूसरे के पूरक हैं।

यज्ञ के 'देवपूजा' और 'दान' तत्व व्यर्थ हो जायें यदि 'संगतिकरण' न हो, बिना सगतिकरण के दानादान, लेना-देना असम्भव है। देव का आदान याजक तक न पहुचे और याजक का दान (पूजासामग्री) देव तक न पहुचे, यदि उनमे परस्पर सगतिकरण न हो तो। सगतिकरण का ही परिणाम है कि पूज्य-पूजक मे परस्पर दानादान होता है और दानादान का ही परिणाम है कि, देव-पूजा हो रही है। अत सिद्ध हुआ कि सगतिकरण वह तत्व है, जिससे देव-पूजा और दान आबद्ध हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ कि यज्ञ का देव-पूजा महान् तत्व है। दान महत्तर तत्व है तथा सगतिकरण महत्तम तत्व है।

इस सारे को विवेचनसहिता में इस प्रकार कहा जा सकता है 'देव' पूर्वरूपम्। पूजनम् उत्तरूप। दानं सन्धिः। संङ्गतिकरणं सन्धानम्। इत्यधियज्ञम्।

सर्वः खल्वयं यज्ञः

उपर्युक्त तत्वत्रयरूप कसौटी को किसी भी कक्षा तथा क्षेत्र में लागू किया जा सकता है। इसके लागू होते ही प्रत्येक कर्म की यज्ञरूपता स्पष्ट हो जाएगी। अब गहना कर्मणो गति कहकर टालने की आवश्यकता नही। यदि कोई कर्म पूजात्मक है, तो वह यज्ञ है। यदि कोई कर्म सगतिकरणात्मक है, तो वह भी यज्ञ है। यदि कोई कर्म दानात्मक है, तो वह भी यज्ञसज्ञक होगा।

इन तीनों तत्त्वों का सामञ्जस्य व्यक्ति में दृष्टिगोचर होने पर व्यक्ति भी यज्ञरूप होगा। परिवार में दृष्टिगोचर होने पर परिवार यज्ञरूप कहलाएगा। समाज में दृष्टिगोचर होने पर समाज यज्ञरूप होगा। राष्ट्र में दृष्टिगोचर होने पर राष्ट्र यज्ञरूप होगा। ब्रह्माण्ड को यज्ञ इसलिए कहते हैं कि उसकी हर क्रिया-प्रक्रिया में तीनों तत्त्वों का सामंजस्य है।

आइये इन तीनों तत्त्वों का भिन्न-भिन्न कक्षाओं में प्रत्यक्ष करे।

पुरुषो वाव यज्ञः

यदि देखा जाय तो ये तीन तत्त्व मनुष्य-पिण्ड मे भी व्याप्त है। इसमें देव-पूजा, संगतिकरण और दान चल रहा है। देह की हर छोटी शक्ति अपने से बडी शक्ति की पूजा में लगी हुई है। सभी इन्द्रियां अपने राजा इन्द्र (आत्मा अथवा मन) के सत्कार में लगी हुई हैं, और सतत अपनी भेट (ज्ञान-हवि) लाकर मस्तिष्क (शिरो देवकोषः) में डालती जा रही हैं। यह इनकी ओर से यज्ञ के देव-पूजा नामक तत्त्व के 'पूजा' भाग की पूर्ति हो रही है और इधर आत्मदेव भी इस इन्द्रियगण को अपना चैतन्य प्रदान कर, यज्ञ के देव-पूजा नामक तत्त्व के 'देव' भाग की पूर्ति कर रहे हैं, अर्थात् देवत्व का लाभ कर पूजा के पात्र बन रहे हैं। इन्हीं के चैतन्य दान का परिणाम है कि इन्द्रियगण रूप, रस, गन्धादि विषय हवि की भेट चढा रहे हैं। आत्मा और इन्द्रियगण मे परस्पर दानादान चल रहा है। यह दानादान संगतिकरण पर आश्रित है। देखिए जैसे ही मनुष्य के सामने भोजन का थाल आया कि सर्वप्रथम आंखों ने निरीक्षण करके मस्तिष्क को सूचित किया कि ग्राह्य है, ले लो ! तत्काल हाथों को आदेश हुआ कि ग्रास उठाओ। सहसा हाथ ग्रास लेने व तोडने लगा ही था कि स्पर्शेन्द्रिय ने कहा रुको गरम है ठंडा होने दो, अन्यथा मुंह जल जायेगा। ठंडा होने पर हाथ ग्रास को मुख के पास ले ही गया था कि नासिका ने कहा कि रुको ! कुछ दुर्गन्ध आ रही है—ऐसा ज्ञात होता है कि बासी भोजन ही गरम करके परोस दिया गया है। बस हाथ वहीं का वहीं रुक गया। यदि सावधानी न बरती जाती, और ग्रास मुंह में चला जाता, प्रथमत उसका निगलना ही कठिन होता, कदाचित् निगल भी लिया जाता तो उगलना पडता और पिछला खाया हुआ भी वह उगलवा लेता। यह सब परस्पर सहयोग अथवा सगतिकरण के आश्रित चल रहा है। इसी सहयोग अथवा सगतिकरण का नाम यज्ञ है। □

७वां मध्यप्रदेश हिन्दू महासम्मेलन (१२ जुलाई, १९८७) ग्वालियर (म०प्र०)

पंजाब को सेना के सुपुर्द किया जाये

श्री स्वामी आनन्द बोध की मांग

ग्वालियर १२ जुलाई। यहां आयोजित मध्यप्रदेश हिन्दू महा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भारत सरकार से मांग की है कि पंजाब को ५ वर्ष के लिए सेना के हवाले कर दिया जाय। उन्होंने कहा कि पंजाब के प्रशासन में आतकवादियों से सहानुभूमि रखने वाले तत्व बड़ी सख्या में घुसे हुए हैं, जो किसी भी योजना को सफल नहीं होने देंगे।

यह बहुत स्पष्ट है कि पंजाब के आतंकवादियों को पाकिस्तान मे प्रशिक्षण दिया जा रहा है और उनकी शस्त्र और धन से पूरी सहायता कर रहा है, इसलिए हमे जैसलमेर से कश्मीर तक पूरी सीमा को बन्द कर देना चाहिए। हमने प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को यह सुझाव दिया था कि पाकिस्तान की सीमा पर ५ मील चौडी सुरक्षा पट्टी बनाई जाय और वहा भूतपूर्व सैनिकों के परिवारों को बसाया जाय। यदि हमारा सुझाव मान लिया गया होता तो आज जो पंजाब मे हिन्दुओं का हत्याकाण्ड हो रहा है, वह नही होता।

पुलिस में साम्प्रदायिकता फैलाने का प्रयास

अहमदाबाद, बड़ोदा, मेरठ, दिल्ली तथा अन्य शहरों में हुए साम्प्रदायिक दगों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह पूर्व नियोजित है। सी०आर०पी० और पी० ए०सी० के जवानों के विरुद्ध झूठी शिकायतें कर पाकिस्तान समर्थक लोग इन बलों में मुसलमानों की अधिक भर्ती की मांग कर रहे हैं। उनका सही उद्देश्य देश भर के सशस्त्र बलों को साम्प्रदायिक आधार पर दो भागों मे बांटना है, यह हमें समझना चाहिए। इस सम्बन्ध में राजनैतिक दलो की चर्चा करते हुए उन्होने कहा कि मार्गभ्रष्ट लोग नेता बन बैठे हैं। सत्ता हथियाने के एकमात्र उद्देश्य से वह सभी प्रकार के देशद्रोही असामाजिक तत्वों की सहायता ले रहे हैं। आज देशमें रूसी लाबी है, पाकिस्तानी लाबी है, अमरिकी लाबी है, पर हमारा दुर्भाग्य है कि भारत के हितों की रक्षा करने के लिए कोई सशक्त लाबी आज भी देश में नही है।

विरोधी दल साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दे रहे हैं

विरोधी दलों पर देश मे साम्प्रदायिकता को बढावा देने का आरोप लगाते हुए उन्होंने जनतापार्टी अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर और लोकदल के श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा की कटु आलोचना की। उन्होने कहा सैयद शाहबुद्दीन जैसे कट्टर धर्मान्ध को जहां श्री चन्द्रशेखर शह दे रहे हैं, वहां अब्दुल्ला बुखारी जैसे खुलकर मुस्लिम साम्प्रदायिकता का प्रचार करने वाले के साथ श्री बहुगुणा अपनी मैत्री निभा रहे हैं। मेरठ के दगों के बाद श्री चन्द्रशेखर ने जो वक्तव्य दिए हैं, वह नितान्त झूठे हैं। जिस मलियाना की घटना का वह शोर मचाते हैं, वहां जिन १२० लोगों की हत्या की बात करते हैं, उनमें से ८५ व्यक्ति जीवित गाव लौट गए हैं। केवल कुछ वोट पाने के लिए मुस्लिम साम्प्रदायिकता को हवा देकर, यह लोग देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं। मैं स्वयं मेरठ गया था, वहा हिन्दुओं की दो अरब की सम्पत्ति नष्ट की गई है, किन्तु उन्हें मदद करने की बात इनको नही सूझती।

श्री देवीलाल दलगत राजनीति से ऊपर उठें

हरियाणा और पंजाब में हिन्दुओं के सामूहिक हत्याकाण्ड का उल्लेख करते हुए उन्होंने हरियाणा के मुख्य मंत्री श्री देवीलाल को इस जघन्य हत्याकाण्ड को दलगत राजनीति का प्रश्न न बनाने की सलाह दी और कहा कि हरियाणा की जनता ने उन्हें पंजाब समझौते के विरुद्ध मत देकर विजयी बनाया है। वह वास्तव में हिन्दू भावना की विजय है। इस हत्याकाण्ड के लिए उत्तरदायी अपराधियों की खोज करने की बजाय भूतपूर्व मुख्यमत्री श्री भजन लाल की ओर सकेत करना अपनी जिम्मेदारी को टालना और लोगो का ध्यान बटाना मात्र है। श्री भजनलाल जी के भाइयों को गिरफ्तार कर उन्होने भूल की है।

अल्पसंख्यकों की समस्या

श्री आनन्द बोध सरस्वती ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि भारत को स्वतन्त्र हुए ४० वर्ष बीत गये, किन्तु आज भी हम विभाजन पूर्व की स्थिति से ही गुजर रहे हैं। सारे विश्व में बहुमत का राज्य होता है और शासन का आधार बहुमत की परम्परा और सस्कृति होती है, किंतु भारत मे हिन्दुओं के अधिकार को कुचला जा रहा है, और अल्पसंख्यकों की खुशामद में सारा शासन और विरोधी दल लगे हुए हैं, परिणामस्वरूप उनमे अलगाववाद की भावना निरन्तर बढती जा रही है, यदि विभाजन के तत्काल बाद बहुसख्यक अल्पसख्यक वाद को समाप्त कर सब के लिए एक शिक्षा और समान कानून बनाते तो आज हमे यह दुर्भाग्यपूर्ण दिन नहीं देखने पडते।

प्रधानमंत्री के सलाहकार

उन्होंने प्रधानमत्री राजीव गाधी के वर्तमान सलाहकारो को अनुभवहीन बताते हुए कहा कि केन्द्र में अनिश्चितता की स्थिति से देश कमजोर होगा। प्रधानमत्री को विघटनवादी देश-द्रोही ताकतो को सख्ती से दबाना होगा। उन्होने प्रधानमत्री से आग्रह किया कि इस सकटापन्न स्थिति में उन्हें उन लोगों से सलाह लेनी चाहिए, जिनकी देशभक्ति की ओर राष्ट्रवादी भावना पर कोई उगली न उठा सके। उन्होने इस सम्बन्ध में भूतपूर्व प्रधानमत्री श्री मोरार जी देसाई और भूतपूर्व सेनाध्यक्ष फिल्ड मार्शल मानिक शा के नाम का विशेष रूप मे उल्लेख किया।

हिन्दू युवक सशस्त्र बनें

हिन्दुओ के जीवन और सम्मान की रक्षा करने के लिए हिन्दु युवको को आगे आने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दू युवको को आधुनिक शस्त्र चलाने की शिक्षा तुरन्त लेनी चाहिए। हमे अब केवल सरकार के भरोसे नहीं रहना चाहिए। उन्होंने भारत सरकार से मांग की कि या तो वह हिन्दुओं को शस्त्र रखने की अनुमति दे दे या जिनको किसी न किसी आधार पर शस्त्र रखने दिए जाते हैं, उनसे सारे शस्त्र वापिस ले। निरपराध हिन्दू केवल शस्त्र के अभाव में अब इन जल्लादों के हाथो मरना स्वीकार नहीं करेंगे, यह मैं सरकार को स्पष्ट चेतावनी देना चाहता हू।

हिन्दू विरोधियों को वोट नहीं

हमारे देश में प्रजातन्त्र है। यह एक दु:खद है कि देश मे कोई सशक्त हिन्दू पार्टी नहीं है। हमारा किसी राजनैतिक दल से सम्बन्ध नहीं है, किन्तु हम यह अवश्य चाहते है कि इस देश को यदि जीवित रहना है तो ऐसे ही व्यक्ति अब सत्ता मे आयें, जिनका प्रथम लक्ष्य हिन्दू हितो की रक्षा करना हो। इसलिए हम आदोलन करेंगे। हम ऐसा वातावरण बनायेगे कि हिन्दू केवल उसी दल को वोट दे जो प्रकट रूप से घोषणा करेगा कि वह हिन्दू हितों की कभी अवहेलना नही करेगा।

कार्यालय सचिव,
म०प्र० हिन्दू महासम्मेलन,
ग्वालियर

कामनाओं का नियन्त्रण ही अशान्ति की अचूक दवा

लेखक—चमनलाल
पूर्व प्रधान आर्यसमाज अशोक विहार

सृष्टि के नियन्ता भगवान ने हमारे कर्मों के अनुसार हमारे लिए जाति, आयु और भोगों की व्यवस्था की है। महर्षि पतञ्जलि के अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ योगदर्शन में साधन पाद के १३वें सूत्र में इस तत्व को इस प्रकार स्पष्ट किया है :

सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा ॥

हमको हमारे शुभ कर्मों के फल स्वरूप यह मानव देह सत्रह तत्वों से बना मिला है। इसमें पाच द्रव्य पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, पाच ज्ञान इन्द्रियाँ, पाच कर्म इन्द्रियाँ मन और बुद्धि सम्मिलित हैं। आत्मा इन का अधिष्ठाता है। कठोपनिद् मे यमाचार्य ने नचिकेता को उपदेश देते हुए यही बात बहुत विस्तार मे इस प्रकार से कही है

आत्मान रथिन विद्धि,
शरीर रथमेव तु।
बुद्धि तु सारथि विद्धि,
मन. प्रग्रहमेव च ॥

इन्द्रयाणि हयानाहु,
विषयास्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रिय मनोयुक्त,
भोक्तेत्याहुर्मनीषिणा ॥

अर्थात् शरीर रूपी रथ में बैठ कर आत्मा स्वतन्त्रतापूर्वक जिधर चाहे, हरिलीला देखता फिरता है। बुद्धि से यह शरीर रूपी रथ चलाया जाता है। इसमे इन्द्रियो रूपी दश घोडे जुते है। ये घोडे विषय रूपी मार्ग पर चलते हैं। उनके मुह मे मन रूपी लगाम पडी है। इन्द्रियाँ और मन के साथ मिलकर आत्मा सुख-दु.ख भोगता है। इनमे मन, इन्द्रियो और उनके विषयो मे कहीं अधिक प्रबल है।

इन्द्रियेभ्य. परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च पर मन।

यही बात भगवान श्रीकृष्ण महाराज ने गीता मे अर्जुन को उपदेश देते हुए ऐसे कही है

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्य. पर मन।

अर्थात् यह मन बडा शक्तिशाली है। इसकी प्रबल शक्ति के विषय मे यजुर्वेद मे ३४वे अध्याय के पहले ६ मन्त्रो मे विशद वर्णन किया गया है। ये ६ मन्त्र शान्तिकरणम् के बीसवें मन्त्र से पच्चीसवे मन्त्र तक 'यज्जाग्रतो' से आरम्भ होकर 'हृत्प्रतिष्ठ यदजिर जविष्ठ तन्मे मन शिव सकल्पमस्तु' पर समाप्त होते हैं। इन्हीं मन्त्रों में से तीसरा मन्त्र जो इस प्रकार है

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्जोतिरन्तरमृत प्रजासु। यस्मान्न ऋते किचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

में कहा गया है मन के बिना कुछ भी कर्मसम्भव नही है। इसकी चंचल शक्ति के बारे मे अर्जुन ने कृष्ण जी से कहा कि यह मन वायु के वेग से भी अधिक चचल है, अतः इसको वश में करना अति कठिन है.

चञ्चल हि मन: कृष्ण
प्रमाथि बलवद् दृढम्।
तस्याह निग्रह मन्ये
वायोरिव सुदुष्करम् ॥

श्रीकृष्ण ने अर्जुन की बात की पुष्टि करते हुए गीता के इसी ६ठे अध्याय के ३५वे श्लोक में कहा कि इसमें सन्देह नही कि मन चचल है और इसका निग्रह करना कठिन भी है। परन्तु हे कौन्तेय! तो भी अभ्यास और वैराग्य से यह स्वाधीन किया जा सका है।

असशय महाबाहो
मनो दुर्निग्रह चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय
वैराग्येण च गृह्यते ॥

इस वेग शील अति चचल मन को निग्रह करने का यह उपाय महर्षि पतञ्जलि ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ योगदर्शन मे भी कहा है :

अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः।

परन्तु यह मन की शक्ति हमारे लिए कल्याणकारिणी भी हो सकती है और अकल्याणकारिणी भी। यह ससार को स्वर्ग भी बना सकती है और नरक भी। यह सुन्दर और शांति के काम भी कर सकती हैं और घोर लज्जाजनक कर्म भी। मन को यदि ब्रह्मसंशित कर लिया जाए अर्थात् वेद ज्ञान, ब्रह्म ज्ञान से मांज कर पवित्र कर लिया जाए तो यह कल्याणकारी हो सकता है और यदि इस परब्रह्म ज्ञान की लगाम न लगाई जाए अर्थात् इसे विषयों में भटकने दिया जाए तो यह घोर कर्मकारी हो जाता है।

इद यत् परमेष्ठिनं
मनो वां ब्रह्मसंशितम्।
येनैव ससृजे घोर
तेनैव शान्तिरस्तु न. ॥
अथर्व० १६।६।४।

प्रभुदत्त इस शक्तिशाली मन को हमारे जीवन में बहुत ऊँची स्थिति है। यदि यह भजन की, सोचने-विचारने की शक्ति हम मे न हो तो हमारा ससार मे कोई भी व्यवहार सम्पन्न नही हो सकता। मनुष्य किसी क्षेत्र में भी जो उन्नति करता है वह सब मन के कारण ही सम्भव होती है। मनुष्य के पास मन न रहने की अवस्था में उसमें और किसी जड पदार्थ में कुछ भी तो अन्तर नहीं रह जाता। मनहीन मनुष्य पशु से भी हीन है। यह सारा खेल मनुष्य के मन के व्यवहार का ही है अच्छा या बुरा। अत मन की चंचलता और इस को विषय भोगों में फसने की प्रवृत्ति को रोककर ही ससार मे शान्ति का राज्य स्थापित किया जा सकता है। मन की शक्ति इतनी प्रबल है कि वर्षों सयम का जीवन बिताने वालों, बडे-बडे संयमी लोगों को भी समय आने पर यह मन नरकगामी बना देता है। इसीलिए बृहदारण्यकोपनिषद् में प्रजापति ने देवों को भी दमन करने का उपदेश दिया था·

'उषित्वा ब्रह्मचर्यं देवा ऊचुर्ब्रवीतु नो भवानिति। तेभ्यो हैतदक्षरमुवाच "द" इति। व्यज्ञासिष्टा३ इति ? व्यज्ञासिष्मेति होचुर्दाम्यतेति न आत्थेति। ओमेति होवाच व्यज्ञासिष्टेति।"

सम्भवतः पतञ्जलि मुनि इसी बात को ध्यान में रखकर मन के निरोध के सम्बन्ध में यह सूत्र लिखा है :

स तु दीर्घकालनैरन्तर्यसत्कारासेवितो दृढभूमिः।

ऐसे वेगशील अत्यन्त चंचल मनस समुद्र में कामनाओं, इच्छाओं रूपी लहरों का तूफान आया रहता है। यह अनगिनत होती हैं और प्रतिक्षण मन में हलचल पैदा करती रहती हैं। एक क्षण में किसी एक वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न होती है तो दूसरे ही क्षण किसी और अन्य पदार्थ के पाने की चाह आ खडी हो जाती है। इच्छाओं का तारतम्य कभी भी समाप्त होने पर नहीं आता। दिन-प्रतिदिन, क्षण-प्रतिक्षण। यह लालसा बढ़ती ही जाती है और इस की बाढ के कारण हमारा मन सदा अशांत और बेचैन रहता है। नयेनये पदार्थ प्राप्त करके सुखोपभोग की इच्छा आदमी को अन्धा बना देती है और इन की पूर्ति के लिए घोर पाप कर्म करने पर बाधित कर देती हैं क्योंकि सभी इच्छाओं की साधारण तौर पर पूर्ण होना सम्भव नही हो सकता। इच्छा पूर्ति न होने के कारण आदमी को दुःख होता है और दूसरों के प्रति क्रोध की ज्वाला भी भडक जाती है। जिस इच्छा की पूर्ति से आदमी को जो कुछ न्यूनाधिक सुख मिलता था वह भी क्षणभगुर होने के कारण प्राय चिन्ता का विषय बन कर रह जाती है और मनुष्य अपने बहुत से दुखों का कारण स्वय ही हो जाता है। इन कामनाओं में डूबे हुए मनुष्य को वेद ने कामनाओं का पुतला कह कर पुकारा है.

पुलुकामो हि मर्त्य।

कामनाओं की आग जब भडक उठती है तो कितनी ही वस्तुएँ उस को उपलब्ध क्यों न हो जावें, तृप्ति फिर भी उससे कोसों दूर रहती है। महाभारतकार व्यास मुनि ने विषय भोग की अग्नि में छटपटाते ययाति राजा के मुख से ये वचन ठीक हीं तो कहलवाया हैं.

यत् पृथिव्यां व्रीहियवौ
हिरण्यं पशव: स्त्रियः।
नीलमेकेन तत् सर्व-
मिति मत्वा शमं व्रजेत् ॥

अर्थात् पृथ्वी पर उपभोग की खाने पीने की वस्तु चावल आदि से लेकर बड़ी से बडी चीजे स्वर्ण, गौ, घोड़े और रूपवती स्त्रियाँ, मनुष्य का सन्तोष और मर्यादा का बांध टूट जाए तो एक व्यक्ति को भी तृप्त नहीं कर सकतीं। इस रहस्य को समझ कर कामनाओं को मर्यादित करके ही शांति प्राप्त हो सकती है। कामनाओं-इच्छाओं की दलदल में फंसे व्यक्ति का उसमें से निकलने हेतु बल लगाना उसे उत्तरोत्तर फंसा तो सकता है, निकाल नहीं सकता।

कामनाओं का नियन्त्रण ही अशान्ति की अचूक दवा

इसी प्रकार भोगासक्त मनुष्य भोग से तृप्त और सन्तुष्ट होना चाहे तो वह कभी नही हो सका। महर्षि मनु ने इस सम्बन्ध में एक बहुत सुन्दर मनोविज्ञानिक बात कही है "न जातु कामः कामनां

उपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव
भूम एवाभिवर्धते ॥
मनु २।४४

अर्थात् कामियों की इच्छाएं कभी भी भोग से शान्त नही होती, अपितु जैसे घी डालने से अग्नि और भडकती है वैसी ही भोग इच्छाए और भी प्रबल होती जाती है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य की बहुरगी इच्छाए सांसारिक वस्तुओ के सग्रह करने मात्र से तृप्त नही होती।

हजारों ख्वाइशें ऐसे कि
हर ख्वाइश पे दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमान
लेकिन फिर भी कम निकले ॥

यदि नही इच्छाओं की अपूर्ति की अवस्था में मन बडा अशान्त रहता है और सकून और शान्ति उससे कोसो दूर रहती है। हिन्दी के किसी कवि ने बडा ही सुन्दर कहा है—

'तृष्णा अग्नि प्रलय की,
तृप्त कबहुं न होय।
सुर, नर, मुनि और रंक सब,
भस्म करत है सोय' ॥

सचमुच तृष्णा की अग्नि नरक की विकराल अग्नि के समान है जो जो राजा हो या रक, मुनि हो या साधारण व्यक्ति सबको भस्मीभूत कर देती है। इस प्रकार इन इच्छाओं का तार बधा रहता है जो कभी टूटने में नही आता। जीवन समाप्त हो जाता है परन्तु इनका अन्त नहीं होता। प्रसिद्ध नीतिकार भर्तृहरि ने ठीक ही तो कहा है—

भोगा न भुक्ता वयमेव न भुक्ताः
तपो न तृप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याताः,
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ॥

यह तृष्णा शान्त क्या होगी, सदैव तरुण रहती हैं। भर्तृहरि ने इस सम्बन्ध में बड़ा सुन्दर कहा है—

'वलिभिर्मुख माक्रान्त
पलितैरङ्कित शिरः।
गात्राणि शिथिलायन्ते
तृष्णैका तरुणायते ॥

ये असुरी कामनाएं न केवल इस जीवन में हमारे विनाश का कारण सिद्ध होती है। अपितु हमारे आने वाले जीवन को सुखद बनाने में बाधक भी होती है। कुरान मजीद में लिखा है कि कयामत के दिन जब खुदा नरक की आग से पूछेगा कि क्या तेरी तृप्ति हो चुकी हैं तो वह भी यही कहेगी।

'नही और लाओ और अधिक लाओ।''

अन जो लोग दुर्भाग्यवश इन वासनाओ का शिकार हो जाते हैं। उनको जीवन भर शान्ति प्राप्त नही होती। किसी ने भजन की एक कडी मे बहुत सुन्दर बात कही हैं—

सच्ची खुशी से रहते हैं,
सदा वे दूर-दूर।
मन जिनका विषम भोग मे,
हों वे फसा हुआ ॥

तो प्रश्न पैदा होता है क्या इच्छाओं से नितान्त मुक्त होना सम्भव भी है। उत्तर स्पष्ट है 'नहीं'। क्योंकि भगवान की इस शरीररूपी अद्भुत रचना में मन और इन्द्रियो के रूप मे अवयव रखे है वही वास्तव मे इन इच्छाओ के स्रोत हैं और यह भी सत्य है कि प्रजापति की इस सृष्टि मे कोई भी जड-चेतन पदार्थ निष्प्रयोजन नही है। अत मनुष्य मे इच्छाओ का होना स्वाभाविक ही नही अपितु सृष्टि नियमों के सर्वदा अनुकूल है। संसार में प्रभु की जान के सिवाय और कोई भी प्राणधारी नही है जो अपने को कामना रहित कह सके। उसी हो जगत नियन्ता को अथर्ववेद में "अकामोधरि" कहा है। जनसाधारण की तो बात ही क्या, बड़े-बडे तपस्वी, सन्त, महात्मा और संन्यासी भी इन कामनाओं का शिकार हुए बिना नहीं रहे। वेद में स्थान-स्थान पर जीव भगवान से अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करता हुआ दीखता है—

(क) अस्य स्तोतुः मघवन् कामना-पृण।

(ख) यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है इच्छाओं का सर्वदा छोडना सम्भव नहीं और न ही सभी इच्छाओं की पूर्ति सम्भव है। अत अपूर्ति की अवस्था में क्रोध और दुःख की बाढ को रोकने में ही शान्ति है। अच्छे-अच्छे स्वादिष्ट भोजनो को अत्यधिक मात्रा मे खाने से जहाँ रोग-ग्रस्त होने की आशका होती है। वहां उनको सर्वथा छोडने से भी तो शान्ति नही होती। अत सयम मे मर्यादा में रहकर ही उनका उपभोग लाभकारी और शान्तिप्रद होगा। अत सयम का जीवन ही खुशी देने वाला होता है। महर्षि मनु ने सयम को अपनाने का ही उपदेश दिया है

इन्द्रियाणा विचरता
विषयेष्वपहारिषु।
सयमे यत्नमातिष्ठेद्वि
द्वान्यन्तेव वाजिनाम् ॥
मनु० २।८८।

परन्तु अपने चहु ओर दृष्टिपात करने से तो पता है कि मानो जैसे समाज-राष्ट्र में सयम का बांध ही टूट गया हो और स्वार्थ, अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार की भीषण बाढ सी आ गई हो। जीवन का कोई भी क्षेत्र इसके प्रभाव से बचा नही है। राजनीतिक क्षेत्र में जिसका छाप आज हमारे जीवनों पर लगी है। कोई काल था जब हमारे जीवनो राजनीति की दूषित छाप के स्थान पर धर्म-सदाचार की पवित्र छाप लगी थी।) जहां सबसे अधिक घोर भ्रष्टाचार व्याप रहा है। इसके अनेक कारणों मे से मुख्य कारण अपनी प्राचीन सस्कृति के मूल्यो की अवहेलना है और पाश्चात्य एकमात्र भौतिक संस्कृति का अन्धानुकरण है। हमारे धर्मग्रन्थो मे तो इन्द्रियों का असंयम ही सब दोषों का मूल कारण कहा गया है

सर्वे दोषेषु मुख्यो अयमेव यदिन्द्रियमाणामसयम।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब राजाओ-शासकों ने स्वच्छन्दता के कारण अपनी इन्द्रिय-रूपी घोडों को भोगविलास के घने वन में स्वतन्त्र रूप से विचरने दिया, तभी राष्ट्र-समाज और देश रसातल को प्राप्त हुआ। असयम से उत्पन्न अनाचार, दुराचार तथा भ्रष्टाचार ऐसे सक्रामक रोग है जो बहुत जल्दी ही सर्वत्र व्याप जाते हैं और सर्वनाश का कारण बन जाते हैं। दरिया जब मर्यादा में बहता है जो ठीक; परन्तु जब किनारों को लांघ कर बाढ का रूप धारण करता है तो वह जन, धन, यश, जमाने-मकानों के नाश का कारण बन जाता है। इच्छाओं को सयम करने के लिए कुछ भौतिक प्रलोभनों का परित्याग करना होगा। त्याग मे ही तो शाति मिलती है, नही-नहीं इससे भगवान भी मिलते हैं

त्यागाच्छान्ति निरन्तरम्।
त्यागेनैन्देन अमृतत्व मानशु. ॥

इसलिए हे मानव! यदि तू सुख और शान्ति चाहता है तो अपनी आवश्यकताओ और बढती हुई इच्छाओं को नियन्त्रित करके तृष्णा पिशाचिनी के फदे से मुक्त हो जा। मनरूपी पक्षी तभी तक तृष्णारूप आकाश मे उडता है जब तक वह सयम रूपी बाज की झपट में नही सुख और शाति के इच्छुकों को स्वामी रामतीर्थ का यही तो उपदेश था—

Be above desires

अर्थात् यथासम्भव अपनी इच्छाओं को कम करो और इसके परिणाम-स्वरूप मन की चचलता को रोक सकेगा और शान्ति को पाएगा। किसी ने भजन को एक कडी मे बडा ठीक कहा है—

मन की चंचलता को प्यारे त्याग तू।
फिर पाएगा दुनिया में आराम तू ॥

अत वर्तमान मे, देश मे व्याप्त अशान्ति, बेचैनी और हाय तौबा की स्थिति मे अपनी बढती हुई इच्छाओं और अनावश्यक आवश्यकताओं को नियन्त्रित करना ही सच्ची देश-सेवा होगा और यही देशव्यापी अनाचार, दुराचार और भ्रष्टाचार आदि सामाजिक रोगों को अचूक दवा भी है।

श्रावणी उपाकर्म

—शान्ति प्रकाश

श्रावण मास में होने वाले उपाकर्म को ही आर्यसमाज वेद सप्ताह के रूप में मनाता चला आ रहा है। हर सक्रिय समाज वेदसप्ताह मनाता है। किन्तु उपदेशक भजनीकों का हर स्थान पर प्रबन्ध हो सकना दुष्कर है। अत: मैंने आर्यसमाजों से निवेदन किया था कि चौमासा का प्रत्येक सप्ताह ही वेदसप्ताह के नाम से मनाये तो प्रबन्ध करना सरल होगा। इसे आर्यो ने स्वीकारा और वैदिक धर्म प्रचार की सर्वत्र धूम मच गई।

अब भी आर्य भाई बहिनों से से मेरा नम्र निवेदन है कि चौमासे के किसी भी सप्ताह में अपने-अपने वेद सप्ताहों का आयोजन करे और मनोवाछित प्रचारको द्वारा प्रचार की धूम मचा दे।

धर्मप्रचार के साथ-साथ बडे-बडे यज्ञ भारतभर मे हो रहे हो तो अनावृष्टि दोष का निवारण भी स्वत. सम्भव होगा। हैदराबाद दक्षिण में पर्यावरण निवारणार्थ एक बहुत बडे महायज्ञ का समारम्भ होने जा रहा है। जनता इससे पूर्णत लाभान्वित होगी तथा अवश्य मेघमालाओं का गर्जन वर्षण होगा। माननीय प० शिरोमणि वेदभूषण जी अवश्य सफल प्रयत्न होंगे।

किन्तु स्मरण रहे कि यह चमत्कार शुद्ध घृत तथा शुद्ध सामग्री का है। वेदमन्त्रो के द्वारा यज्ञ सम्पन्न होता है। उन मन्त्रो में मन. शुद्धि द्वारा आत्म-कल्याण को भावना निहित होती है और घृत सामग्री के मिश्रण व प्रज्वलन से अन्तरिक्ष का पर्यावरण दूर होकर शुद्ध जलो का निरन्तर वर्षण होकर भूमि माता शस्यशालिनी बन जीव मात्र के कल्याणार्थ प्रवृत्त होती है।

वेद मे हो तो लिखा है कि—

ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया ॥

"हे यजमान पत्नी! तू अपने कर्तव्य कर्म पर दृढ है और तेरा पति यजमान भी स्थिरमति है। आप दोनों उत्तम सन्तान और गो आदि पशुओ मे युक्त होकर यज्ञ यागादि द्वारा शुभ कर्मो मे प्रवृत्त रहो जिस मे यह द्यौलोक और पृथ्वीलोक यज्ञों द्वारा घृतधाराओ की हुतआहुतियो की सुगन्धि मे पूरित होकर पर्यावरण के विनाश और शुभ तथा शुद्ध द्रव्य भण्डारो से युक्त रहे। तू इन्द्र [संसार के चक्रवर्ती राज्य] की छत अर्थात् आश्रयदात्री और प्राणी मात्र के भले के लिए छायारूप है।"

वेद का रूप अति सरल है। जिन बडे और महोपकारक कार्यो को ससार की बडी-बडी सरकारे नही कर सकती। उस हितकारी कार्य को ड्यूटी और कर्तव्य के रूप में प्रत्येक द्विज गृह को कर्तव्य रज्जू से दृढ बन्धित कर दिया गया है। यही वेद का वेदत्व है कि कष्ट भी किसी को न हो और कार्य भी भली प्रकार हो जाए।

यज्ञ के अर्थ ही परोपकार के हैं। यज् धातु का अर्थ देव पूजा, सगतिकरण और दानार्थक है। जड, चेतन परोपकारी वस्तुजात देव शब्द से व्यवहृत होती है। पूजा शब्द पवित्रता और यथायोग्य व्यवहार में व्यवहृत होता है। यह शब्द लोक में पूजना—'सफाई करना" के अर्थो में भी व्यवहृत है। शास्त्र में इसके अर्थ यथायोग्य व्यवहार के हैं। उपासना के अर्थो में भी यह शब्द मुख्य रूप से प्रसिद्ध है।

यज्ञ का सूर्य चन्द्रनक्षत्रादि जड देवों का आकाशपाताल समेत शुद्धिकरण मुख्य अग है। उस मे भाग लेने वाली जनता का सगतिकरण सच्चा सुदृढ संगठन होता है, जिससे जगतीतल का मानवमात्र एक सुसंगठित विचाराधारा के सूत्र में ग्रथित रहता है। देवासुरसग्राम की तो बात ही क्या है? ईर्ष्या, द्वेष के लिए भी ऐसे याज्ञिक वातावरण मे गुजाइश नही रहती।

आर्यों के पञ्च महायज्ञों मे यह देवयज्ञ दूसरा है। ब्रह्मयज्ञ वेदपाठ और अहोरात्र कालीन संध्या का नाम भी है। जिसमे चित्तवृत्तियों की एकाग्रता पूर्वक वेदमत्रो द्वारा ईश्वरचिन्तन और आत्मा का मनन होता है।

देवयज्ञ विद्वानों का सघटन, वेद पाठ और जडदेवों के शुद्धिकरण के साथ-साथ मनुष्यों और प्राणिमात्र की रोगादि से रक्षा करना अभिप्रेत है तथा समय पर शुद्ध जलवर्षण द्वारा पवित्र अन्नों का भण्डारण व यथायोग्य वितरण करना अभिलक्षित है।

पितृयज्ञ अपने से योग्यतम विद्वानों अर्थात् विद्यावृद्धों व वयोवृद्धों की सेवा का करना।

अतिथियज्ञ में अटनशील परम विद्वान् संन्यासी महात्मा पुरुषों का सेवन पूजनादि सुकृत्य कर्म करना और उनसे सदुपदेश ग्रहण करना।

बलिवैश्व देव यज्ञ में विश्व अर्थात् समस्त लाभकारी गो आदि पशु, पक्षी तथा पीडित वर्ग का

(शेष पृष्ठ ७ पर)

श्रावणी उपाकर्म

(पृष्ठ ६ का शेष)

संरक्षण।

यह आर्यों अर्थात् श्रेष्ठ प्रजा के नित्य करणीय कर्तव्य या धर्म हैं।

धारण करने योग्य शुभ कर्मों का नाम धर्म है। शास्त्र में कहा है कि—

धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः।

धारण से धर्म कहलाता है क्योंकि धर्म ही प्रजाओं का धारक है। उसके विपरीत अधर्म तो संसार का संहारक है।

मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताए हैं। धर्म धारक है संहारक नहीं। जिससे संसार का संहार हो वह अधर्म है, अधर्म ही पाप का मूल कारण है। विषैली जड़ तो विष वृक्ष की जन्मदात्री बनेगी। वहाँ धर्म और पवित्रता का क्या काम?

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं
शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो
दशकं धर्मलक्षणम्॥

१ धारणा शक्ति और धैर्य धारण करना,

२. क्षमा—सहनशक्ति की क्षमता

३ दमो—दमन, स्व मन पर काबू पाना,

४ अस्तेय—चोरी त्याग, दूसरे के अधिकार का हनन न करके परधन हरण न करना,

५ शौच—भीतर बाहिर पवित्रता, अर्थ शुचि,

६. इन्द्रियनिग्रह.—ज्ञानकर्म, १० इन्द्रियों को वश में रखना,

७ धी—बुद्धि पूर्वक कर्तव्य परायणता,

८ विद्या—अविद्या के नाश पूर्वक विद्या वृद्धि,

९ सत्य—यथार्थतापूर्ण मान्यता,

१० अक्रोधो क्रोधाभावता।

यह दशलाक्षणिक धर्म है। इस में मुख्यत सभी शुभ बातों का समावेश है।

भारत के सचिवालय के साथ-साथ संसार भर के हर घर में यह श्लोक अपनी-अपनी भाषाओं में भावार्थ सहित लिखा रहना ही समुचित है।

वेदाद्धर्मो हि निर्बभौ।

वेद से ही धर्म का आविर्भाव हुआ है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, पूर्ण है परमात्म प्रदत्त है।

ऋषि शास्त्रकार डंके की चोट से घोषित करता है—

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः सधर्मः। वैशे०

जिससे लोक परलोक सिद्ध हो वह धर्म है, इससे विपरीत अधर्म है।

आर्यों के घर-घर के यज्ञों और समाज के सत्संगों तथा बड़े-बड़े उत्सवों द्वारा धर्म की सिद्धि और अधर्म का नाश हो। परमात्मा करे कि ऐसा हो। यही इस लेख का प्रयोजन है।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक ३७ | रविवार २ अगस्त १६८७ | सृष्टि संवत् १६७२६४६०८७ | श्रावण २०४४ | दयानन्दाब्द- १६३

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

श्री राजीव गांधी का राजनीतिक भविष्य खतरे में ?

पिछले दो हफ्तों से भारत की राजनीति और खास तौर पर सत्तारूढ़ दल कांग्रेस (इ) पार्टी में जबरदस्त बदलाव तथा उथल-पुथल देखने को मिल रही है। इन दो हफ्तों में सत्तारूढ़ दल की राजनीति मे जो तूफान उठा है उसने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। वर्तमान राजनीतिक दौर में अब जो कुछ हो रहा है और जिस तरह से राजनीतिक परिस्थितियां तेजी के साथ हर दिन रंग बदल रही हैं उस की पृष्ठभूमि में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की नीतियों और सरकार चलाने के तरीके की तस्वीर साफ झलकती है। फेयरफैक्स से शुरू होकर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी पर आरोपों का जो सिलसिला तीन माह पहले शुरू हुआ था इसमें फिर पनडुब्बियों की खरीद, बोफोर्स, अजिताभ और अमिताभ बच्चन द्वारा कमीशन खाने तथा रिश्वतें प्राप्त करने के आरोप, इण्डियन एक्सप्रेस के मालिक श्री रामनाथ गोयनका के निवास स्थान पर छापे, गुरुमूर्ति की गिरफ्तारी, श्री वी.पी सिंह को वित्त मन्त्रालय से हटाकर सुरक्षा मन्त्रालय प्रदान करने और अब उन्हें कांग्रेस (इ) से निष्कासित करने तक। इस बीच श्री आरिफ मुहम्मद खां, श्री अरुण नेहरू और श्री वी० सी० शुक्ल को पार्टी से बर्खास्त करना और अमिताभ बच्चन के बाद प्रधानमन्त्री के सबसे करीबी दोस्त श्री अरुण सिंह द्वारा त्यागपत्र देने की कड़ियां जुड़ी हुई हैं। इस सिलसिले में तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह की महत्वपूर्ण भूमिका को भी नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। असल में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने अपने लिए उपरोक्त वर्णित मुसीबतों का पहाड़ उसी दिन खड़ा करने की नींव रख ली थी जिस दिन उन्होंने राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के साथ दुश्मनी मोल ले ली थी। क्योंकि इस दौरान एक समय ऐसा भी आया था जब प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी के विरुद्ध चलने वाले प्रत्येक तीर मे जहर राष्ट्रपति भवन से ही भरने की आशकाएं पैदा हो गई थी।

बहरहाल, फेयरफैक्स, बोफोर्स और पनडुब्बियों की खरीद में उछाले गए मुद्दों के हीरो सांसद श्री अमिताभ बच्चन ने पिछले दिनों अपना त्यागपत्र प्रधानमन्त्री को सौंप दिया है। इस से पहले उपरोक्त सभी विवादपूर्ण मामलों को प्रधानमन्त्री के विरुद्ध खोलने वाले श्री वी० पी० सिंह को भी पार्टी से निकाल दिया गया है। श्री वी० पी० सिंह को निकालने से पहले उनके साथ श्री आरिफ मुहम्मद खां, श्री अरुण नेहरू और श्री वी० सी० शुक्ल को भी पार्टी से बर्खास्त कर दिया गया। इस बीच इण्डियन एक्सप्रेस के सपादक श्री अरुण शोरी ने स्विटजरलैण्ड से श्री अजिताभ बच्चन की लाखों रुपये की सम्पत्ति के सम्बन्ध में जो रहस्योद्घाटन किया है उसके बाद प्रधानमन्त्री ने श्री अजिताभ बच्चन की सम्पत्ति की जांच का हुक्म भी दे दिया है।

इस दौरान असन्तुष्ट कांग्रेसी नेताओं द्वारा राजीव विरोधी अभियान जारी है। हालांकि अभी तक देश के अन्य राज्यों से कांग्रेस में फूट की शुरुआत अभी तो नहीं हुई है, लेकिन उत्तर प्रदेश के असन्तुष्ट कांग्रेसी मन्त्रियों और विधायकों ने 'पर' निकालने शुरू कर दिए हैं। पिछले दिनों मुख्यमन्त्री श्री वीर बहादुरसिंह ने अपने मन्त्रिमण्डल के तीन सदस्यों से त्यागपत्र भी ले लिये हैं। इसके बाद भी इस समय इस बात की अटकलें जोरों से लगाई जा रही हैं कि असन्तुष्ट कांग्रेसी नेता पहले उत्तर प्रदेश मे वीर बहादुर सिंह की सरकार को गिरायेंगे और उसके बाद केन्द्र में श्री राजीव गांधी के विरुद्ध सभी मुद्दों को जनजागरण के रूप में पूरे देश में घूमकर ग्राम जनता को बतायेंगे। इस तरह असन्तुष्ट और पार्टी से निष्कासित कांग्रेसी नेताओं का अब एक ही लक्ष्य रह गया है कि किसी तरह श्री राजीव गांधी को प्रधानमन्त्री पद से उखाड़ कर फेंका जाए। एक असन्तुष्ट एवं बर्खास्त कांग्रेसी नेता का यह कहना है कि इस समय हम नंबर की नहीं बल्कि उसूल की लड़ाई लड़ रहे हैं। बेशक लोकसभा में इस समय हमारा नम्बर में कम समर्थन है, लेकिन पूरे देश की जनता का पूरा समर्थन हमारे साथ है। एक अन्य बर्खास्त नेता का यह भी कहना है कि अगर आज श्री गांधी देश में आम चुनाव करवाते हैं और कांग्रेस (इ) पार्टी उनके नेतृत्व में चुनाव लड़ती है तो फिर इस चुनाव मे कांग्रेस (इ) की हालत हरियाणा चुनाव की तरह या उससे भी बुरी होगी। इस नेता के मुताबिक इस समय विभिन्न विवादपूर्ण मुद्दों की वजह से भारत की जनता का विश्वास श्री राजीव गांधी और कांग्रेस (इ) पार्टी से खत्म हो चुका है।

इस समय असन्तुष्ट कांग्रेस (इ) नेता भूतपूर्व सुरक्षा राज्यमन्त्री श्री अरुणसिंह के त्यागपत्र को बड़ी गम्भीरता से ले रहे हैं। इनका यह कहना है कि श्री अरुण सिंह का त्यागपत्र श्री राजीव गांधी के राजनीतिक कफन पर आखिरी कील साबित होगा। श्री अरुण सिंह द्वारा त्यागपत्र देने के मामले पर तरह-तरह की अटकलें इस समय राजधानी दिल्ली के राजनीतिक क्षेत्रों मे लगाई जा रही है। समाचार पत्रों मे छपे तथ्य और असन्तुष्ट कांग्रेसी नेताओं के मुताबिक श्री अरुण सिंह ने बोफोर्स के मामले मे चल रही धांधलियों को लेकर ही श्री गांधी के केन्द्रीय मंत्रिमंडल से अपना त्यागपत्र दिया है। एक अन्य समाचार के अनुसार श्री अरुण सिंह ने अपना त्यागपत्र १[illegible] जुलाई के दिन ही प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को भेज दिया था क्योंकि श्री अरुण सिंह को बोफोर्स के मामले मे धांधली और रिश्वतें तथा कमीशनों के पक्के सबूत मिल गए थे। संसद मे श्री अरुण सिंह ने बोफोर्स के मामले में श्री गांधी के समर्थन में स्टैंड लिया था। उन्होंने तो सदन मे यहां तक कहा था कि "अगर हम गलती करते पकड़े जाते हैं तो आप हमें बेशक फांसी पर लटका सकते हैं।" बाद में श्री अरुण सिंह को जब यह पता चला कि संसद में तो वह यह कहते रहे थे कि बोफोर्स के मामले में न तो किसी ने रिश्वत ली है और न ही किसी किस्म की कोई कमीशन दी गई है, लेकिन असलियत में जो तथ्य सामने आ रहे हैं वह उसके उलट हैं। तब इस बात पर विश्वास करने को उन्हें मजबूर होना पड़ा कि बोफोर्स के मामले मे कमीशन दी गई है। क्योंकि श्री गांधी ने श्री अरुण सिंह को आखिरी समय तक इस मामले मे धोखे मे रखा। इसलिए श्री अरुण सिंह के पास अब प्रधानमन्त्री को अपना त्यागपत्र सौंपने के अलावा और कोई भी चारा न बचा था।

उच्च सूत्रों के मुताबिक श्री अरुण सिंह द्वारा अपना त्यागपत्र देने के पीछे की कहानी इस तरह बताई जाती है कि स्वीडिश नेशनल आडिट ब्यूरो द्वारा अपनी रिपोर्ट में

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

परमात्मा विचित्र है

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावा-पृथिवी अन्तरिक्षँ सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा॥

—यजु० ७।४२।

(चित्रं) विचित्रं, विचित्र, अद्भुत (देवानाम्-अनीकं) देवानां मुखम्, देवों का मुख, देवों में प्रधान, देवों में मुख्य (उत्-अगात्) उत्कृष्टतया भली भांति प्राप्य है। चक्षुः) चक्षु, नेत्र है, (मित्रस्य) मित्र का, सूर्य का, (वरुणस्य) वरुण का, वरण करने के योग्य का, चन्द्रमा का, (अग्ने.) अग्नि का, ज्ञानी का, विद्वान् का, (द्यावा) द्यौ लोक (पृथिवी) पृथ्वी लोक [तथा] (अन्तरिक्षं) अन्तरिक्ष लोक को (आ-अप्रा) भली-भांति आप्लावित कर रहा है। (सूर्य्य) [वह] प्रकाश स्वरूप, प्रकाशक (आत्मा) आत्मा है, जीवन का कारण है (जगत.) जगत् का, गतिशील का, प्राणियों का (तस्थुषः च) और अप्राणी अर्थात् जड़ का, (स्वाहा=सु+आहा) सुन्दर उच्चारण है, ठीक कहा गया है, ठीक कहा है।

प्रस्तुत मन्त्र का प्रथम शब्द 'चित्र' भगवान् की अद्वितीय शक्ति का वर्णन करता है। चित्र, विचित्र अर्थात् वह प्रभु विचित्र है। क्या सचमुच प्रभु विचित्र है? ससार की प्रत्येक वस्तु पर दृष्टि डालिए, प्रभु इन सभी से विचित्र है। यदि किसी वस्तु में प्रभु का गुण मिलेगा भी तो स्वल्प मात्रा में। पूर्णतया तो ससार के किसी भी पदार्थ में चाहे वह जड हो वा चेतन प्रभु का कोई भी गुण नही मिलेगा। उदाहरण के लिए आकाश व्यापक है किन्तु वह व्यापक मात्र ही है, सर्वव्यापक नही। सर्वव्यापक तो केवल प्रभु ही है, यहाँ तक कि व्यापक आकाश मे भी व्यापक है, यह प्रभु की विचित्रता ही तो है। किसी भी प्रकार ससार का कोई भी पदार्थ उस जैसा नही। इसीलिए वेद 'चित्र' विशेषण द्वारा उस की गुणावली का गान कर रहा है। प्रभु विचित्र तो है ही; परन्तु उन की विचित्रताएँ जिस प्रकार की हैं, उन का भी दिग्दर्शन मन्त्र में आगे कराया गया है।

देवानां-अनीकं, देवों का मुख, समस्त देवों मे मुख्य, प्रधान है। है ही प्रधान, सन्देह को स्थान ही कहाँ है? ससार के जितने भी दिव्य पदार्थ हैं, उन सब से बढ़कर दिव्यतायें हैं, उस दिव्य प्रभु में। सत्य बात तो यह है कि समस्त दिव्य पदार्थों में उसकी दिव्यताये हैं। सारे दिव्य पदार्थ उसी दिव्य देव की दिव्यता से देदीप्यमान हो रहे हैं। वही देव अपनी दिव्यताओं को संसार के विभिन्न पदार्थों मे से विभिन्न रूपो में प्रस्फुटित कर रहा है। अग्नि मे उसी का तेज है, वायु में उसी की गति, चन्द्रमा मे उसी की शीतलता है, सूर्य में उसी का प्रकाश, स्वर्ण में उसी की दमक है और हीरे मे उसी की चमक। हो भी क्यों नही, हिरण्यगर्भ जो ठहरा वह।

देव का एक अर्थ है विद्वान्। ससार के समस्त विद्वानों की विद्वत्ता उस प्रभु की विद्वत्ता के सामने राई के दाने के समान भी नही। विद्वानों के पास जो भी विद्वत्ता है वह आई कहाँ से? आदिसृष्टि में कौन था, जिसने मानव को ज्ञान दिया, विद्वत्ता प्रदान की, विद्वान् कहलाने का अधिकारी बनाया? वही था न, वही प्रभु जिसे वेद ने कहा है "आनीदवात स्वधया तदेकं" तब वह अकेला बिना वायु के ही श्वास ले रहा था तथा "हिरण्यगर्भ. समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्" वह हिरण्यगर्भ जो उत्पन्न हुए प्राणी मात्र का एकमात्र स्वामी है, सृष्टि की उत्पत्ति से पहले भी सम्यक् प्रकारेण था। जो पुकार-पुकार कर कह रहा है कि "स्तुता मया वरदा वेद माता" वरदात्री वेद माता मेरे द्वारा प्रस्तुत की गई है। उस दयालु ने दया कर सृष्टि के प्रारम्भ में ही मानव के कल्याण के लिए वेद ज्ञान प्रदान किया, जिस से सृष्टि के प्रारम्भ में मानव विद्वान् बना और अब भी परम्परा से बनता चला आ रहा है क्योंकि उस देव की कृपा से ही समस्त विद्वानों (देवों) को ज्ञान प्राप्त हुआ है। अतः समस्त विद्वानों (देवों) में वही मुख्य है।

उत्-अगात् उत्कृष्टतया, भली-भाँति प्राप्त है। अपनी व्याप्ति की शक्ति मात्र से, व्यापक होने के कारण से वह किसी से भी दूर नहीं। उसके लिए उसकी खोज में नगर-नगर, जंगल-जंगल तथा पर्वत-पर्वत भटकने की आवश्यकता नहीं है। वह सर्वव्यापक होने के कारण प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक को प्राप्त होता है। उस की प्राप्ति की इच्छा से किसी स्थान विशेष पर जाना या जाने के लिए प्रयत्न करना सर्वथा भूल है।

वह मित्र, वरुण और अग्नि का चक्षु है। मित्र अर्थात् सूर्य, वरुण अर्थात् चन्द्रमा तथा अग्नि जिस चक्षु से देख रहे हैं, वह प्रभु ही है। इन तीनों में जो प्रकाश है, जिस प्रकाश से ये तीनों प्रकाशित हैं, वह उस प्रभु ही का है। यह तीनों तो प्रकृति के परमाणुओं का संघात मात्र हैं और परमाणु अपने आप में प्रकाश रहित हैं। यदि परमाणुओं में प्रकाश होता तो वह प्रलय काल में भी प्रकाश देते किन्तु उस समय तो "तम आसीत्तमसा गूढम्" महान् अन्धकार से ढका हुआ अन्धकार था। इस समय जो परमाणु संघात अर्थात् प्रकृति-जन्य सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि में प्रकाश प्रस्फुटित होता रहता है, वह उसी प्रभु का है। अतः प्रभु इन सब का चक्षु है।

जो लोग संसार में राग-द्वेष रहित होकर अर्थात् संसार के मित्र बनकर रहते हैं, वही प्रभु के मित्र होते हैं और प्रभु इन मित्रों का मार्गदर्शक होता है अर्थात् राग-द्वेष रहित निर्मल चित्त होने से ऐसे लोग ही प्रभु के ज्ञान से वास्तविक लाभ उठाते हैं। जो वरुण अर्थात् वरण करने के योग्य उत्तम गुण कर्म स्वभाव वाले लोग हैं, वह प्रभु उन का भी (चक्षुः) प्रकाश प्रदान करने वाला है। अग्नि अर्थात् जो विद्वज्जन हैं, प्रभु उन का भी (चक्षु.) मार्गदर्शक है अर्थात् विद्वान् (विद्+वान्) जानने वाले उस प्रभु के ज्ञान से लाभ उठाते हैं।

पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौलोक में वह (आ-अप्रा) आप्लावित हो रहा है, भर रहा है, सर्वत्र व्याप रहा है। पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौलोक में कोई भी स्थान ऐसा नहीं, जहाँ प्रभु न हो, जहाँ उसकी गति न हो, जहाँ उसकी व्याप्ति न हो, जहाँ उसका वास न हो। वह न केवल (अप्रा) आप्लावित हो रहा है अपितु (आ) "आ समन्तात्" सब ओर से, सर्व प्रकारेण, भली-भांति (अप्रा) आप्लावित हो रहा है। उस की व्याप्ति सीमित नहीं है। ऐसा नहीं कि वह पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा द्यौ के किसी क्षेत्र में, स्थान विशेष में, कुछ दूरी तक व्याप कर रह गया हो। समस्त भूमण्डल, समस्त द्यौलोक तथा संपूर्ण अन्तरिक्ष लोक उससे ओत-प्रोत है

वह सूर्य अर्थात् प्रकाश स्वरूप तथा समस्त संसार का प्रकाशक समस्त चेतन और जड का, संसार के समस्त चेतन और जड़ पदार्थों का निरन्तर सर्वत्र व्यापक होने से "अतति सर्वत्र व्याप्नोतीत्यात्मा" जीवन का कारण अस्तित्व को बनाए रखने वाला अर्थात् आत्मा है। संसार में जो कुछ भी दृष्टिगोचर हो रहा है, चाहे वह जड हो वा चेतन (जगतः तस्थुषः च) सबका अस्तित्व केवल उस प्रभु के कारण से है। उसी की शक्ति है, जो यह सब पसारा अस्तित्व में है। उस सर्वोत्पादक और सर्व नियन्ता की शक्ति के बिना यह संसार कुछ भी नहीं। अतः वेद ने उसे जड़ और चेतन दोनों प्रकार के संसार का आत्मा कहा है।

मंत्र का अन्तिम शब्द है स्वाहा। (सु+आहा) सु आहेति, स्वा वागाहेति अर्थात् सुन्दर उच्चारण है ठीक कहा है। लोक भाषा में स्वाहा का अनुवाद होता है वाह वा, बहुत अच्छे अर्थात् मन्त्र में जो यह विचार प्रकट किए गए हैं कि वह विचित्र जो देवों में मुख्य है, जो मित्र ...ण और अग्नि का चक्षु है, पृथ्वी, अंतरिक्ष तथा द्यौलोक में सर्वत्र व्यापक व्यापक है। समस्त जड और चेतन ससार का अस्तित्व जिसके आधार पर है वह प्रकाश स्वरूप और सारे संसार का प्रकाशक प्रत्येक स्थान पर भली-भाँति प्राप्त है। वाह-वा, खूब अर्थात् यह भी खूब रही कि हमें आज तक ज्ञान न हो सका, हम निरर्थक ही भटकते रहे और वह अद्भुत देव सर्वत्र उपस्थित है।

उपनिषद् कथा :

अन्तिम उपदेश

—धर्मेन्द्रपाल शास्त्री

एक सुन्दरी प्रौढ़ा नदी-तट पर बैठी जल की तरंगों में अपने मन को लगा रही थी। उस के मुख पर अद्भुत आभा छिटक रही थी। पूर्ण तृप्ति से वह आप्लावित थी। पगडण्डी से एक लावण्य युक्त स्त्री उस की ओर आ रही थी, इस ओर उस का ध्यान नहीं था। जब उस स्त्री ने उसे पुकारा—"बहन मैत्रेयी", वह चौंक पड़ी और उसने पीछे मुड़ कर देखा।

"कहो कात्यायनी, आओ बैठो।" दोनों याज्ञवल्क्य की पत्नी थीं। मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी थी। आध्यात्मिक विषयों की ओर उसके मन का झुकाव था, ब्रह्मसम्बन्धी चर्चा में वह लीन रहती थी। कात्यायनी छोटी थी, वह गृह कार्यों में निपुण थी। उससे दो पुत्र उत्पन्न थे—कात्यायन और हारित।

बहन, तुमने कुछ अनुभव किया? क्या? मुझे बड़ी चिन्ता लग रही है। महर्षि कुछ…। क्या महर्षि का स्वास्थ्य ठीक नहीं है? मुझे तो लगता नहीं। बहन तुम्हारा ध्यान लौकिक विषयों की ओर कम जाता है, कात्यायनी खीझ कर बोली। महर्षि कुछ विरक्त मालूम पड़ते हैं। तुम्हारे रहते हुए वे विरक्त होने लगे तो इसमें तुम्हारा दोष है, मैत्रेयी ने व्यग्य किया। अगर तुम परेशान करोगी तो मैं रो पड़ूंगी। कात्यायनी रूआंसी हो उठी। पता नहीं उनके मन को क्या व्यथा मथे जा रही है? व्यथा नहीं, कोई नया विचार उपजा होगा, उसी पर चिन्तन चल रहा होगा, ऐसा मैत्रेयी ने कहा। फिर भी पूछ लेना, कात्यायनी बोली। वे क्या हम से कोई बात छिपाते हैं? हमारे पूछने से अनर्थ होने का भय रहता है। क्या पता उनकी विचार श्रृंखला टूट जाए और उसे जोड़ने में समय नष्ट हो। मैत्रेयी ने कात्यायनी को समझा दिया, फिर भी उस जैसी स्थिति का भार पूर्ववत् रहा।

मैत्रेयी, अब मैं सोचता हूँ मुझे सैन्यास ले लेना चाहिए, याज्ञवल्क्य ने कुटिया की ओर बढ़ते हुए अपनी सहचारिणी से कहा। यह तीन दिन पूर्व की बात है। कात्यायनी के कहने पर भी मैत्रेयी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया था कि महर्षि का ध्यान आश्रम के कार्यों में नहीं लगता है। आज उसका कारण भी पता चल गया।

"महर्षि, आप सोचते हैं कि आप ने सारा कार्य पूर्ण कर लिया है?" हाँ, मैत्रेयी। मैंने शुक्ल यजुर्वेद और शतपथ ब्राह्मण को लिखकर शिष्यों को उन का ज्ञान प्रदान किया है। अपना ब्रह्म और आत्मा विषयक चिन्तन मैंने इस ईश उपनिषद् और बृहदारण्यकोपनिषद् में लिखा है। इसके अतिरिक्त जो मैंने जीवन के नियम बनाए हैं या समझाए हैं वे भी कोई मेरा वंशज स्मृति में लिख या एकत्र कर देगा। देव! एक बात और पूछू? हाँ, कहो।

शंका यह होती है कि आप के बाद आश्रम कौन चलाएगा। आप युग के महान् दार्शनिक हैं। आप ने शास्त्रोक्त विधि को सुधारा है और ब्रह्म तथा आत्मा को सबसे अधिक पहचाना है। आपने बताया है कि आत्मा हमारा अन्तर्वर्ती ज्ञान है। आत्मा अन्तर्वर्ती ज्ञान होने के रूप में हम से पृथक् और कोई वस्तु नहीं बन सकती और इसीलिए स्वयं अज्ञेय है। आत्मा ही एकमात्र सत्य है। इस ज्ञान के पिपासु सहस्रों शिष्य घर-द्वार छोड़ कर आश्रम में आए हुए हैं। क्या आपके सन्यास लेने से उन्हें और देश को कोई हानि नहीं होगी?

याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया इस अहम् ने कुछ दिन मुझे भी बाध्य किया, किन्तु अब मैंने विजय पाई है। जो कुछ मैंने कहा, वह अन्त नहीं है। विचार-विमर्श चलता रहेगा। और फिर अनेक शिष्य तैयार किए हैं जो स्थान-स्थान पर आश्रम चला रहे हैं। मेरे दोनों पुत्र मेरे विचारों से निष्णात हैं, वे इस आश्रम को सुचारु रूप से चला लेंगे।

कुटिया का द्वार आ गया था जहाँ कात्यायनी दो नारियों के साथ धान कूट रही थी। याज्ञवल्क्य को आया देखकर उसने शीघ्र कुटिया में जाकर कुशासन बिछा, दीपक जला दिया। फिर वह बाहर आकर अपना हाथ का काम पूरा करने लगी। याज्ञवल्क्य ने आसन पर बैठ कर मैत्रेयी से फिर कहा, मैत्रेयी, मैं गृहस्थ आश्रम त्याग कर कहीं चला जाऊँगा और तप करूँगा। मेरी जो सम्पत्ति है उसे मैं तुम्हारे और कात्यायनी के बीच बांटना चाहता हूं।

मैत्रेयी ने पूछा—भगवन, यदि यह सम्पूर्ण पृथ्वी अपनी समस्त सम्पत्ति सहित मुझे प्राप्त हो जाती है तो क्या मैं अमर हो जाऊंगी? याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया—नहीं। केवल सम्पत्ति की प्राप्ति से तुम कदापि अमर नहीं हो सकतीं। धन से धनी व्यक्तियों की तरह जीवन बीत सकता है। पर अमरता नहीं प्राप्त की जा सकती है। मैत्रेयी ने कहा—"तब सम्पत्ति लेकर क्या करूं? जब वह मुझे अमर करने में असमर्थ है, तो मेरे लिए व्यर्थ है। महर्षि, मुझे सम्पत्ति देने के बदले ऐसा उपाय बतलाइए जिस से मैं अमरता के पथ पर पांव रख सकूं।" याज्ञवल्क्य बोले—मैत्रेयी, तुम मुझे पहले भी प्रिय थी और इस समय भी तुम ने बड़ी प्रिय बात कही है। मैं तुम्हें अमरता या अमरत्व की प्राप्ति का उपाय बतलाता हूं। ध्यान देकर सुनो—

स्त्री को पति पति के लिए प्रिय नहीं लगता, आत्मा के लिए ही पति प्रिय लगता है, पति को पत्नी पत्नी के लिए प्रिय नहीं लगती आत्मा के लिए ही पत्नी प्रिय लगती है। माता पिता को पुत्रों के लिए पुत्र प्रिय नहीं लगते, आत्मा के लिए ही प्रिय लगते हैं। सम्पत्ति के लिए सम्पत्ति प्रिय नहीं लगती, आत्मा के लिए प्रिय लगती है। देवताओं के लिए देवता प्रिय नहीं लगते, बल्कि आत्मा के लिए प्रिय लगते हैं। वेदों के लिए वेद प्रिय नहीं लगते, बल्कि आत्मा के लिए वेद प्रिय लगते हैं। प्राणियों के लिए प्राणी प्रिय नहीं लगते, बल्कि आत्मा के लिए प्राणी प्रिय लगते हैं। इसीलिए, मैत्रेयी, आत्मा ही ऐसी है जो देखने योग्य है, सुनने योग्य है और समझने योग्य है। इसे जान लेने पर विश्व में सब कुछ समझ में आ जाता है।

ब्राह्मण को चाहिए कि उस व्यक्ति का बहिष्कार करे जो ब्राह्मण जाति को अपनी आत्मा से कुछ भी भिन्न मानता है। क्षत्रिय को चाहिए उस व्यक्ति का बहिष्कार करे जो क्षत्रिय जाति को अपनी आत्मा से कुछ भी भिन्न मानता है। समाज को चाहिए उस व्यक्ति का बहिष्कार करे जो समाज को अपनी आत्मा से कुछ भी भिन्न मानता है या समझता है। देवताओं को चाहिए वे उस व्यक्ति का बहिष्कार करें जो उन्हें अपनी आत्माओं से कुछ भी भिन्न समझता है। विश्व को चाहिए उस व्यक्ति का बहिष्कार करे जो विश्व को अपनी आत्मा से भिन्न समझता है। आत्मा ही ब्राह्मण है, वही क्षत्रिय है वही समाज है, वही देवता है, वही विश्व है।

जिस प्रकार ढोल, शंख अथवा वीणा की आकृति और प्रकृति से अपरिचित कोई व्यक्ति जब दूर से वाद्य का शब्द सुनता है तो पहचान नहीं होती कि यह शब्द शंख, ढोल या वीणा का उत्पन्न हो रहा है। जब तक वह वाद्य वस्तु को नहीं देख लेता। देखने पर वह व्यक्ति समझ जाता है कि किस वाद्य से कैसे शब्द उत्पन्न हुआ, वह कैसा है। उसी प्रकार आत्म-तत्व से अपरिचित व्यक्ति जब आत्मा से उद्भूत शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धमयी सृष्टि के नाना रूपों को देखता है, तो नहीं जान पाता कि उन सब का मूल कारण क्या है। पर आत्म तत्व से परिचित हो जाने पर वह जान लेता है कि उनकी उत्पत्ति किस तत्व से, कैसे और क्यों हुई?

जिस प्रकार गीली लकड़ी के जलने पर उससे तरह तरह का धुआं और तरह-तरह की चिंगारियां निकलती रहती हैं, उसी प्रकार इस आत्मा-रूपी महान प्राणी (महद् भूत) से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, इतिहास-पुराण, विद्या, उपनिषद्, सूत्र, भाष्य आदि निकलते रहते हैं। जिस प्रकार सब प्रकार के जलों का एकमात्र आशय समुद्र है, सब प्रकार के स्पर्शों का एकमात्र आधार त्वचा (चमड़ा) है। सब प्रकार के रसों का एकमात्र आधार जीभ है। सब प्रकार के गंधों का एकमात्र अनुभूति स्थल नाक है। सब प्रकार के रूपों का एकमात्र अवलम्ब आंखें हैं। सब प्रकार के शब्दों का एकमात्र आधार कान हैं। सब प्रकार के संकल्पों का एकमात्र मूल स्थान मन है। सब प्रकार के ज्ञान का एकमात्र आधार हृदय है। सब प्रकार के कर्मों का एकमात्र कर्ता हाथ है। सब प्रकार की गति का एकमात्र आधार पाँव हैं। सब प्रकार

(शेष पृष्ठ ५ पर)

कुछ तो समय निकालें आत्म-शुद्धि के लिए

लेखक—चमनलाल
पूर्व प्रधान आर्यसमाज अशोक विहार

प्रकृति का यह अटल नियम है कि दिन के बाद रात्रि और रात्रि के बाद दिन आता है। ठीक इसी प्रकार एक ऋतु के बाद दूसरी ऋतु का आना अनिवार्य है। गर्मी के पश्चात् वर्षा ऋतु का आगमन और गर्मी का समाप्त हो जाना, तो भी मनुष्य गर्मी के प्रकोप से अपने शरीर को आराम पहुंचाने और इस की तपन को कम व दूर करने के लिए क्या कुछ नहीं करता।

परन्तु खेद है कि इसके विपरीत जीवात्मा जो लाखों वर्षों से तड़प रहा है और नाना प्रकार की पशु-पक्षियों की योनियों में भटकता-फिरता है, इस की तड़पन को दूर करने की ओर हमारा लेशमात्र भी ध्यान नहीं जाता। सम्भवतः इसका एकमात्र कारण यह है कि हम ने अज्ञानवश इस परिवर्तनशील नाशवान पञ्चभूतों से बने शरीर को ही 'मैं' मान लिया है अर्थात् इसको ही आत्मा भी समझ बैठे हैं। अत जो कुछ भी सुविधा हम इस शरीर हेतु जुटाते हैं मानो वह आत्मा के ही लिए तो है। यह भ्रम है यह वैदिक सिद्धान्त भी नहीं है। वास्तव में शरीर और आत्मा दो अलग-अलग वस्तुएं हैं। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में निम्न मन्त्र में इसका बड़ा सुन्दर स्पष्टीकरण कर दिया गया है—

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्।

अर्थात् एक आत्मा है जो अपार्थिव अप्राकृतिक, अविनाशी अमृत है, दूसरा शरीर है जो विकार वाला, नाशवान, प्राकृतिक पदार्थ है जो आत्मा के निकल जाने पर भस्म हो जाता है, नाश हो जाता है। उपनिषदों में भी आया है कि शरीर एक रथ के समान है जिस में आत्मा स्वामी के रूप में विराजमान है—

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।

यही नहीं ऋग्वेद १।१६४।२० निम्न मन्त्र में तो कतई तौर पर स्पष्ट कर दिया गया है कि प्रकृति (शरीर) आत्मा, परमात्मा—ये तीन एक दूसरे से भिन्न पदार्थ हैं—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्य-
नश्नन्नन्यो अभि चाकशीति॥

अत किसी ने ठीक ही तो कहा है—

"इस देह को 'मैं' कहना एक बड़ा अपराध है। यह महान पाप है जो सब पापों का बाप है।"

हमारे वैदिक धर्म की एक बड़ी विशेषता "कर्म सिद्धान्त" है अर्थात् मनुष्य जैसा अच्छा व बुरा कर्म करता है जगन्नियन्ता उसको उसके कर्मों के अनुसार जाति, आयु तथा भोग देता है। महर्षि पतञ्जलि ने यही बात योगदर्शन में इस प्रकार कही है—

सति मूले तद्विपाको जात्यायु-र्भोगाः।

दूसरे शब्दों में यूं कहना अनुचित न होगा कि संसार का सारा व्यवहार इस कर्म सिद्धान्त पर ही चल रहा है। अतः किसी ने बड़ा ही सुन्दर कहा है—

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा,
जो जस करे ताही फल चाखा।

और आश्चर्य तो यह है कि यह कर्म फल देने का कार्य द्रष्टा बनकर निष्पक्षपात के देता है। इसमें किसी प्रकार का विकार-अन्याय नहीं होता। वह प्रभु हिसाब, ठीक हिसाब रखने के कारण सच्चा बनिया कहा जा सकता है। उपनिषद् में आया है:

सङ्ख्याता अस्य निमिषो जनानाम्।

अर्थात् जीवन में जितनी बार मनुष्य की आंख पलक झपकती हैं, प्रभु के ज्ञान में उसका भी सही-सही हिसाब रहता है। अतः हमारा कोई भी अच्छा व बुरा कर्म बिना फल के नहीं छूट सकता। भर्तृहरि ने अपने सुप्रसिद्ध नीतिशतक में एक स्थान पर इस तत्व की पुष्टि बड़े सुन्दर ढंग से की है—

मज्जत्वम्भसि यातु मेरुशिखरं शत्रूञ्जयत्वाहवे, वाणिज्यं कृषि-सेवनादि सकला विद्याः कलाः शिक्षतु। आकाशं विपुलं प्रयातु खग-वत्कृत्वा प्रयत्नं परं, नाभाव्यं भव-तीह कर्मवशतो भाव्यस्य नाशः कुतः॥

इसका भाव यही है कि मनुष्य चाहे कुछ भी कर ले वह किसी भी हालत में किए कर्म के फल के भोगे बिना नहीं रह सकता। और यह सब विधि विधान के अनुसार बिना किसी न्यूनाधिक के होता रहता है। अथर्ववेद में इस की बड़े मार्मिक शब्दों में पुष्टि की गई है—

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति,
न यन्मित्रैः सममममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत्,
पक्तारं पक्वः पुनराविशाति॥

जैसा कि ऊपर कहा भी जा चुका है कि जीव (आत्मा) अपने किए कर्मों का फल भोगने के लिए बार-बार जीवन मरण के चक्कर में मारा-मारा फिरता है और भिन्न-भिन्न योनियों में आने के लिए माता के गर्भ में प्रवेश करता है इसीलिए शास्त्रों में इसका एक नाम "मातरिश्वा" भी है। माता के गर्भ में बार-बार आना ही इसकी पीड़ा है तड़पन है। इसका एक रोमांचकारी वर्णन गर्भोपनिषद् में इस प्रकार किया गया है—

आहारा विविधाभुक्ताः,
पीता नानाविधाः स्तनाः।
जातश्चैव मृतश्चैव
जन्म चैव पुनः पुनः॥
यन्मया परिजनस्यार्थे
कृतं कर्म शुभाशुभम्।
एकाकी तेन दह्योऽहं
गतास्ते फलभोगिनः॥
अहो दुःखोदधौ मग्नो
न पश्यामि प्रतिक्रियाम्।
यदि योन्यां प्रमुच्येऽहं
तत् प्रपद्ये महेश्वरम्॥
अशुभक्षयकर्तारं
फलमुक्तिप्रदायकम्।
यदि योन्यां प्रमुच्येऽहं
तत् प्रपद्ये नारायणं॥
अशुभक्षयकर्तारं
फलमुक्तिप्रदायकम्।
यदि योन्यां प्रमुच्येऽहं
तत् सांख्यं योगमभ्यसे॥
अशुभक्षयकर्तारं
फलमुक्तिप्रदायकम्।
यदि योन्यां प्रमुच्येऽहं
ध्याये ब्रह्म सनातनम्॥

अर्थात् मैं बार-बार जन्मा-मरा, बार-बार गर्भ की यातनायें सहीं। नाना विध माताओं के स्तनपान किए, अनेक पिताओं से पालित हुआ। जब बड़ा हुआ, परिवार परिजनों आदि के सुख-सुविधा के लिए न जाने कितने घोर पाप कर्म किए। ये सब करने पर जब मेरा देहपात हुआ तो मुझे प्रतीति हुई कि उन सब पापों की अग्नि में स्वयं जलभुन रहा हूं। इस घोर दुःख-कष्ट में मेरा कोई हाथ बटाने को भी नहीं आता और इस भयंकर दुःखसागर में डूबा मैं कुछ भी सार्थक प्रतिक्रिया अपने में अनुभव भी तो नहीं कर पा रहा हूं अतः इस बार योनियुक्त होने पर प्रभु-भक्ति, उसके सिमरण आदि से अपने को पवित्र करूँगा और इस प्रकार जीवन-मरण की पीड़ा से मुक्त हो जाऊँ। पर दुःख होता है, मानव जब गर्भ से बाहर आता है और अपने गर्भ के कष्टों को भूल जाता है और प्रकृति की चकाचौंध में फंस फिर वही पाप कर्म करने लगता है, मोह वश नाना प्रकार के अत्याचार, पाप करके पुनः जन्म-मरण के चक्कर में फंसा इधर-उधर भटकता फिरता है, अपने उद्देश्य प्रभु-प्राप्ति के लक्ष्य को भूलने से इसकी यह दुर्दशा होती है। इस कारण सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक जीव भटक रहा है। किसी ने बड़ा ही सुन्दर कहा है—

"सदियों से जीव भटक रहा है और कहीं चैन नहीं पाता है।"

बेचारा मूढ़ हुआ दुःखी मन से कहता है कि मैं तो अपने स्वरूप तथा लक्ष्य को ही भूल बैठा हूं। मन तथा इन्द्रियों के वशीभूत होकर अपनी सुध-बुध खो चुका हूं। मेरा दशा समीचीन न होकर प्रतिकूल हो गई है। इस के मूढ़पन को वाक इस मन्त्र में बड़ी सुन्दरता से स्पष्ट करता है—

न वि जानामि यदिवेदमस्मि
निण्यः संनद्धो मनसा चरामि।
यदा मागन् प्रथमजा ऋतस्या-
दिद्वाचो अश्नुवे भागमस्याः॥

ऋग् १।१६४।३७

अतः यह दुःखी जीव अपनी दर्द भरी दशा को भोगों के कारण संतप्त हुआ भगवान के सामने इस प्रकार प्रकट करता है—

कुछ तो समय निकाल
आत्म-शुद्धि के लिए

अहं सो अस्मि यः पुरा सुते वदामि कानिचित्। तं मां व्यन्त्याध्यो३ वृको न तृष्णजं मृगं, वित्तं मे अस्य रोदसी।

ऋग्० १।१०५।३

अर्थात् जीव कहता है कि मैं वही हूं जो पूर्व जन्म में था। अब मैं कुछ-कुछ कहता हूं कि मुझ को मानसिक दुख-कष्ट प्राप्त हो रहे हैं। जिस प्रकार मानो प्यासे मृग को भेड़िया आ दबाता है। हे द्यावापृथिवी! मेरी इस दर्दनाक फरियाद को जानो और भगवान से प्रार्थना करता हुआ कहता है—

तड़प रही है यह आत्मा,
कृपा कर परमात्मा,
मन बुद्धि को निर्मल कर दे,
पापों का हो खात्मा।

ऋग्वेद ७।८६।४ में भी दुखी जीव भगवान से प्रार्थना करता है कि सुखस्वरूप सुखदाता सब विघ्न-बाधाओं को दूर करने वाले, मेरी दयनीय दीन दशा पर कृपा करके मेरी तड़पन को दूर कर दो। अपने आनन्द सागर में गोता लगवा दो—

अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णाविदज्जरितारम्। मृळा सुक्षत्र मृळय।

प्रभु की कृपा तो शुभ कर्म करने और सुकर्मा बनने से ही सम्भव हो सकती है। दुराचार त्याग सदाचार का पथ अपनाकर ही तो जीव प्रभु कृपा का पात्र बन सकता है। प्रभु भक्ति के बिना इस दुखी जीव की तड़पन को दूर करने का और साधन ही नहीं है। इसी बात को श्वेताश्वतरोपनिषद् के ऋषि ने बहुत ही काव्यमय ढंग से कहा है—

यदा चर्मवदाकाशं
वेष्टयिष्यन्ति मानवाः।
तदा देवम् विज्ञाय
दुःखस्यान्तो भविष्यति॥

६।२०

अर्थात् जब जीव चमड़े के समान आकाश को लपेटने में समर्थ हो जावेंगे तब सम्भवतः प्रभु को जाने बिना दुखों से छूट सकेंगे। सार यह निकला कि जिस प्रकार आकाश का चर्मवत वेष्टन असम्भव है। ठीक उसी प्रकार प्रभु के जाने बिना दुखों कष्टों से छूटना भी सम्भव नहीं है। परन्तु भोगों की लिप्सा, कञ्चन, कामिनी व सत्ता के हथियाने में इतना ग्रस्त हो गया है कि उस ने अपने जीवन व्यवहार में से प्रभु-दर्शन की भावना, धार्मिकता को ऐसे निकाल कर फेंक दिया है जैसे कोई गृहिणी दूध में पड़ी मक्खी को तुच्छ वस्तु समझ कर फेंक देती है। दूसरी ओर यह भी नितांत सत्य है कि जीवन उसी का सफल समझा जाता है जो संसार में जीवन व्यवहार के सब कार्यों को करता हुआ, इस जगद नियन्ता को याद करता रहे।

अन्त में मैं यही कहूंगा कि प्रभु हम सब को सुमति दे कि हम इस नश्वर शरीर की तड़पन-कष्टों को भौतिक साधनों से दूर करते हुए अमर-अविनाशी आत्मा को तड़पन और इसके भटकने को दूर करने हेतु प्रभुभक्ति रूपी रसपान करना न भूलें। वेद में बड़ा ही सुन्दर कहा गया है—

य इन्द्राय मनसा सोममस्मै
सर्वहृदा देवकाम सुनोति।
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति
प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति।

अर्थात् जो व्यक्ति प्रेम भरे मन और भरपूर श्रद्धा से भगवान की भक्ति अर्थात् उसकी आज्ञा का पालन करता है, उसके जीवन-मरण के सब बन्धन टूट जाते हैं और उसका ही जीवन सुन्दर होता है और ऐसे ही भाग्यशाली व्यक्ति भगवान जो सब का एक समान आश्रय स्थान है, में दिव्य गुण युक्त मुक्त आत्मा अमृत का उपभोग करता हुआ अनन्तकाल तक विचरता रहता है—

यत्र देवा अमृतमानशाना-
समाने योनावध्यैरयन्त।

इस अथर्ववेद के अलावा यजुर्वेद ३२।१० में भी कुछ ऐसी मिलती-जुलती बात कही गई है—

यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त

उपनिषद के ऋषि ने तो एक और ही बात कह दी कि इस उच्च क्लेश रहित स्थान से वह मुक्त आत्मा वापिस ही नहीं लौटता सर्वथा वहीं आनन्द भोगता रहता है।

अन्तिम उपदेश

(पृष्ठ ६ का शेष)

के वेदों का एकमात्र आधार वाणी है। उसी प्रकार वह मूल पुरुष (आत्मा) इन सबों का एकमात्र आधार है।

मैत्रेयी ने पूछा—महर्षि, क्या उस आत्मा में इन सब की पृथक् सत्ता का पता लग सकता है। जिस प्रकार नमक का एक टुकड़ा पानी में पड़ने पर पानी में ही घुल जाता है और कोई उसे केवल आंखों से देख कर यह नहीं बता सकता कि वह नमक का टुकड़ा जल के किस विशेष भाग में मिला है, उसी प्रकार इस आत्मा को भी समझो। जल और नमक की तरह वह समस्त विश्व के अणु-परमाणु में मिला हुआ है और समस्त विश्व का अणु-परमाणु उस में मिला हुआ है। वह अनन्त है न उसका कोई अन्तर है न बाह्य। वह स्वतन्त्र सत्ता है वह विशुद्ध ज्ञान की अनुभूतिमय आत्मा है। जीव पंच तत्वों से उद्भूत होता है और उन तत्वों के नष्ट होने पर स्वयं भी नष्ट हो जाता है। मृत्यु के बाद उसकी संज्ञा (चेतना) जाती रहती है।

मैत्रेयी ने कहा—आप के कथन ने कि मृत्यु के बाद संज्ञा जाती रहती है, मुझे आत्मा के सम्बन्ध में भ्रम में डाल दिया है फिर बतलाइए।

याज्ञवल्क्य बोले—मैंने भ्रम में डालने की कोई बात तुम से नहीं कही है। पहले मेरी पूरी बात सुन लो। मैंने मृत्यु के बाद केवल उस संज्ञा के नष्ट होने की बात कही है जो पंच भूतों के मेल से उत्पन्न होती है। पर जीव की आत्मा मरने पर भी नष्ट नहीं होती। यह अविनाशी अजर, अमर और अद्वैत है। यह सर्वत्र सब देशों में, सब काल में सब वस्तुओं में एक रूप में विराजमान रहती है।

यह आत्मा न यह है न वह। यह अगृह्य है इसे कोई पकड़ नहीं सकता, यह अशीर्य है, इसका छीजन नहीं होता, यह असंग है किसी से यह लिप्त नहीं होती, न यह पीड़ित होती है न इसका नाश होता है, मैत्रेयी! उस आत्मा को चितना इन्हीं तथ्यों के आधार पर करते रहने से ही अमरता प्राप्त हो सकती है। कात्यायनी बीच में दो बार आई थी किन्तु दोनों को चर्चा में लीन देखकर लौट गई थी।

मैत्रेयी, तुम्हें उपदेश दिया जा चुका है। कल प्रातः काल मैं आश्रम से सन्यास के लिए प्रस्थान करूंगा। मैत्रेयी को कोई विकल्प नहीं था। मैं भी वहीं रहूंगी, जहां आप रहेंगे। आपके साहचर्य के अमूल्य क्षण मैं अनन्त समय तक रखना चाहती हूं।

अगले दिन प्रातः काल तो ब्रह्मवादी जीवन और जीवन के सुखों का परित्याग कर अज्ञात में समाविष्ट हो गए।

समाचार

आर्य विद्यालयों के प्रिंसिपल महोदयों/महोदयाओं के नाम आवश्यक परिपत्र

गत वर्ष आर्य विद्या परिषद् द्वारा आर्य स्कूलों में नैतिक शिक्षा की परीक्षाएँ नवम्बर मास में आयोजित की गई थी। इस वर्ष भी यह परीक्षायें नवम्बर मास में हो आयोजित की जायेगी। इस में आप का तथा आपके विद्यालय का सहयोग अपेक्षित है। परिषद् द्वारा प्रथम श्रेणी से बारहवीं श्रेणी तक नैतिक शिक्षा की पुस्तकें निर्धारित की हुई हैं। परिषद् द्वारा केवल चार परीक्षायें 'नीति प्रवेशिका', 'नीति अधिकारी', 'नीति ज्ञाता', 'नीति विशारद' क्रमश: पांचवी, आठवी, दसवी और बारहवी कक्षाओं के छात्र/छात्राओं के लिए आयोजित की जाती हैं। शेष कक्षाओं की परीक्षायें स्थानीय विद्यालयों द्वारा उसी प्रकार आयोजित की जाती हैं, जिस प्रकार इन कक्षाओं की अन्य परीक्षायें आयोजित की जाती हैं। ग्यारहवीं कक्षा की परीक्षा भी स्कूल के प्रबन्ध में ही अन्य कक्षाओं की भांति ही ली जायेगी। पाठ्य पुस्तकें सभा कार्यालय में उपलब्ध है जो रविवार के अतिरिक्त किसी भी दिन प्रातः १२ बजे से साय ६ बजे तक प्राप्त की जा सकती हैं। सभी प्रिंसिपल महोदयों एवं महोदयाओं से अनुरोध है कि शिक्षा सत्र प्रारम्भ होने पर अन्य पाठ्य पुस्तकों के साथ ही सभी कक्षाओं के छात्र/छात्राओं को नैतिक शिक्षा की पुस्तकें भी अवश्य उपलब्ध करावें जिससे वह वर्ष भर में इन पुस्तकों को भी भली प्रकार पढ़ सकें और परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त कर सकें।

भवदीय
प्रि० चन्द्रदेव
प्रस्तोता
आर्य विद्या परिषद् दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक एवं संगीत कलाकारों के कार्यक्रम

महात्मा रामकिशोर जी वैद्य

२।८।८७ से ८।८।८७ तक	आर्यसमाज अमरकालोनी
१०।८।८७ से १६।८।८७ तक	आर्यसमाज राजेन्द्र नगर
१७।८।८७ से २३।८।८७ तक	आर्यसमाज प्रताप नगर
२४।८।८७ से ३०।८।८७ तक	आर्यसमाज राजनगर गाजियाबाद

प० सत्यदेव जी स्नातक

६ अगस्त से ८ अगस्त	आर्यसमाज तीनगर
९ अगस्त से १६ अगस्त	,, ग्रेटर कैलाश नं० १

प० चूनीलाल भजनोपदेशक

२ से १६ अगस्त	आर्यसमाज करौलबाग
१७ से २३ अगस्त	,, प्रताप नगर

प० वेदव्यास भजनोपदेशक

२ अगस्त से ८ अगस्त	आर्यसमाज अमर कालोनी
९ अगस्त से १६ अगस्त	,, हनुमान रोड
२४ अगस्त से ३० अगस्त	,, राजनगर गाजियाबाद

श्री जोतीप्रसाद ढोलक वादक

२ से ८ अगस्त	आर्यसमाज करौलबाग
९ से १६ अगस्त	,, ग्रेटर कैलाश नं० १
१७ से २३ अगस्त	,, प्रताप नगर
२४ से ३० अगस्त	,, राजनगर गाजियाबाद

संगीत का अद्भुत प्रयोग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के डा० त्रिलोक चन्द्र ने "योग और संगीत" के द्वारा एक ऐसा प्रयोग किया है जिस से स्मैक, ब्राउन शुगर, अफीम आदि के नशों को छुड़ाने में बहुत सहायता मिलती है। नई दिल्ली के एक हस्पताल में सात नशेड़ियों पर आठ दिन तक इस का सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया।

यौगिक क्रियाओं में से चुनकर डा० चन्द्र ने एक ऐसा सेट बनाया है जिस से मस्तिष्क के रिसेप्टर्स, स्नायु संस्थान, आटोनामिक स्नायु सस्थान ठीक प्रकार से कार्य करने लगते हैं। इसके परिणामस्वरूप नशेड़ी की बुद्धि, हृदय, फेफड़े, पाचन संस्थान, रक्त का सचार धीरे-धीरे ठीक होने लगता है। सेक्स भी सामान्य हो जाता है। व्यक्ति में शक्ति की धीरे-धीरे वृद्धि होती है। साथ ही उसका नैतिक और आध्यात्मिक विकास भी होता है। संकल्प शक्ति, जो कि नशेड़ियों में बहुत कम हो जाती है, की वृद्धि होती है।

संगीत के सेट को उन्होंने अपने सिद्धांतों के आधार पर रिकार्ड कराया है जिसके सुनने से शरीर में प्राण का प्रवाह सामान्य हो जाता है जिससे नशे किए बिना नशेड़ी का बेचैनी, दर्द आदि कम हो जाते हैं। मन को एकाग्रता बढ़ता है और नशेड़ी नशे की इच्छा को भूलकर संगीत सुनने में मग्न हो जाता है।

योग और संगीत दोनों के प्रभाव से नशेड़ी को नींद भी अच्छी आने लगती है।

इसके अतिरिक्त नशे से होने वाली हानियाँ, आर्थिक हानियाँ, स्वास्थ्य की हानि, सामाजिक हानि आदि विषयों पर विशेष व्याख्यान तैयार किए हैं जिनसे जीवन को धीरे धीरे मृत्यु के मुंह में धकेल देने वाले इन नशों से ऐसी तीव्र घृणा हो जाए जो अचेतन मन में भी अपना प्रभाव जमा लेवे। डा० त्रिलोक चन्द्र का दावा है कि इस कार्यक्रम से किसी भी नशेड़ी को नशामुक्त होने में बहुत सहायता मिलती है।

देश में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार के निवारण का एकमात्र उपाय—सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय

आज देश में बढ़ रही नास्तिकता, अनैतिकता, अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार की स्थिति से आप सभी विचारशील लोग चिन्तित होंगे। इसको दूर करने के लिए आचार-निर्माण की नितांत आवश्यकता है और इस का एकमात्र उपाय आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय एवं अनुशीलन है। इस युग के एकमात्र महापुरुष, देशोद्धारक, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सौ वर्ष पूर्व सहस्रों आर्ष-अनार्ष ग्रन्थों का बुद्धिपूर्वक मंथन करके मानव जीवन के निर्माण के लिए एक अद्भुत, अद्वितीय अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना की थी। यह पवित्र ग्रंथ गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक मनुष्य के चरित्र-निर्माण की शिक्षाओं से भरपूर है। इसके स्वाध्याय से मानव वास्तव में एक सद्गृहस्थ, श्रेष्ठ नागरिक, देशभक्त तथा सदाचारी व्यक्ति बन सकता है। इस दृष्टि से आर्य युवक परिषद्, दिल्ली (पंजी०) गत पच्चीस वर्षों से सत्यार्थप्रकाश की सत्यार्थ रत्न, भूषण, विशारद तथा शास्त्री की परीक्षाओं का समूचे देश में आयोजन कर रहा है। इससे सहस्रों परिवारों के बहन-भाई, युवक-युवतियाँ लाभान्वित हो रहे हैं।

अतः इन परीक्षाओं में बैठकर अपने जीवन को पवित्र करें।

—चमनलाल

दीर्घायुष्य कामना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सर्वात्मना समर्पित स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती महाराज का जन्मदिन बाबू मेहरचन्द राघव के निवास स्थान डी-६४ लक्ष्मी नगर में धूमधाम के साथ मनाया गया। क्षेत्रीय आर्यजनों ने स्वामी जी महाराज का पुष्पमालाओं से स्वागत किया तथा उनके दीर्घायु की कामना की। श्री गुलाबसिंह राघव ने बधाई गीत गाए। बाबू मेहरचन्द राघव ने सभी मेहमानों का भोजनादि से स्वागत सत्कार किया। स्वामी जी का जन्म आषाढ सुदी गुरु पूर्णिमा को संवत् १९७७ में हुआ था। स्वामी जी ने दिल्ली आ० प्र० सभा तथा अन्य संस्थाओं को इस अवसर पर दान भी दिया।

स्वामी जी की दीर्घायु के लिए शुभ कामनाएं।

डा० धर्मपाल
(महामंत्री)

संजीव गांधी का राजनीतिक भविष्य...

(पृष्ठ १ का शेष)

यह कहने पर कि १५५ एम.एम. तोपों की खरीद में कमीशन दी गई है। श्री अरुण सिंह ने एक पत्र प्रधानमंत्री को लिखा था और यह सलाह दी थी कि वह तोपों की खरीद के इस अनुबन्ध को रद्द कर दें क्योंकि उन्हें ऐसा लगता है कि इस मामले में हेराफेरी हुई है, लेकिन कहा जाता है कि प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने अपने मित्र श्री सिंह को तब यह आश्वासन दिया था कि तोपों की खरीद का यह मामला बिल्कुल स्वच्छ है और इस मामले को लेकर सरकार पर भ्रष्टाचार के जो आरोप लगाए जा रहे हैं वे जल्दी ही साफ हो जायेंगे। इसके बाद पिछले दो हफ्तों में श्री अरुण सिंह को बोफोर्स में की गई धांधलियों के कुछ पक्के सबूत मिले थे। हालांकि इन सबूतों को श्री अरुण सिंह ने अपनी छाती से ही लगाए रखा लेकिन अब उन का मन्त्रिमण्डल में रहना मुश्किल हो गया था।

श्री अरुण सिंह द्वारा मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देने का मुख्य कारण वे दो आश्वासन थे जो उन्होंने संसद में कुछ अर्सा पहले दिए थे। इन दो आश्वासनों की वजह से अगर श्री अरुण सिंह अपना त्यागपत्र न देते तो वह एक बहुत बडी मुसीबत में फसने वाले थे। इसकी मुख्य वजह यह थी कि जो दो आश्वासन उन्होंने १५ अप्रैल को संसद में दिए थे उन्हें पूरा करने में वह नाकाम रहे थे। पहला आश्वासन उन्होंने जर्मन पनडुब्बियों की खरीद के सम्बन्ध में सदन को दिया था। इस सम्बन्ध में तब उन्होंने अपने पूर्व 'बॉस' श्री वी. पी. सिंह पर पनडुब्बियों की खरीद के मामले की जांच के बारे में को जानकारी देने का आरो- था। उनकी दलील थी की विभागीय जांच ... नहीं है। उन्होंने कहा ... मन्त्रालय और वह ... तरह की जांच का ... लेकिन वह इस मामले में कोई सबूत नहीं दे सके। दूसरा आश्वासन भी श्री अरुण सिंह ने पनडुब्बियों की जांच के सम्बन्ध में ही सदन को दिया था, लेकिन अब श्री अरुण सिंह को यह लगने लगा था कि वह संसद में दिए अपने आश्वासनों पर पूरे नहीं उतरेंगे।

राजधानी के राजनीतिक क्षेत्रों में श्री अरुण सिंह द्वारा त्यागपत्र देने के निर्णय के पीछे एक और कहानी भी चल रही है। सुना जाता है कि रक्षा मन्त्रालय ने पहले प्रधानमन्त्री की सहमति से एक पत्र बोफोर्स कम्पनी को कुछ अर्सा पहले लिखकर यह मांग की थी कि उन्हें बोफोर्स के मामले में सलिप्त उन व्यक्तियों के नामों की सूची दी जाए जिन्हें बोफोर्स कम्पनी ने कमीशन दी है। इस पर बोफोर्स कम्पनी ने जवाब दिया कि वह भारत सरकार को वह सूची दे सकती है और अगर भारत सरकार चाहे तो वह अपनी एक टीम स्वीडन भेज कर इस मामले में पूर्ण जान- ... यह दाल में जरूर कुछ का... प्रधानमन्त्री ने उन्हें धोखे में रखा, ... क्योंकि श्री अरुण सिंह दलाली के इस मामले में अपने आप को फंसने से बचाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने झटपट अपना त्यागपत्र प्रधानमन्त्री को सौंप दिया।

सचमुच श्री अरुण सिंह के त्यागपत्र के पश्चात् प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी के इर्द-गिर्द मुसीबत के बादल और भी घने हो गए हैं। इस बात की चर्चा भी आम है कि और भी कई मन्त्री श्री गांधी को अपने त्यागपत्र देने जा रहे हैं। अगर गौर से देखा जाए तो इस समय सचमुच प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी एक गम्भीर मुसीबत में फसे हैं और उनका राजनीतिक भविष्य इस समय उपरोक्त वर्णित राजनीतिक गतिविधियों की वजह से एक खतरनाक स्थिति से गुजर रहा है।

(पंजाब केसरी)

आर्य स्पेशल ट्रेन

भारत भ्रमण के लिए यह स्पेशल ट्रेन दिनांक २५।१०।८७ को चल कर गुडगांव, रिवाडी, अलवर, जयपुर, अजमेर [पुष्कर], चित्तौडगढ [चित्तौड किला], नीमच, मन्दसौर, रतलाम, उज्जैन, इन्दौर, मऊ कैण्ट, खण्डवा, अकोला, पूर्णियां, औरगाबाद[अजन्ता एलोरा गुफा], जालना, नान्देड, निजामाबाद, सिकन्दराबाद (हैदराबाद), महबूब नगर, गन्तोकल, वासकोडीगामा, मडगाम, पंजम (गोवा), हुबली, मैसूर (वृन्दावन, गार्डन), बेंगलौर, त्रिचनापल्ली, मदुरई, त्रिवेन्द्रम [कन्याकुमारी], रामेश्वरम्, पांडिचेरी, मद्रास, तिरुपति, विजयवाडा, राजमुन्द्री, वाल्टेर, जगन्नाथ पुरी, भुवनेश्वर. हावडा [कलकत्ता], धनबाद, गया, पटना, मुगलसराय, वाराणसी, इलाहाबाद (प्रयाग), कानपुर, शिकोहाबाद, आगरा, मथुरा से होती हुई १७ नवंबर १९८७ की प्रातः नई दिल्ली वापस लौट आएगी।

नोट : जिस-जिस स्थान पर स्पेशल ट्रेन ठहरेगी, उस उस स्थान की आर्यसमाजें एवं संस्थाएँ आपका स्वागत करेंगी। विद्वान् एवं भजनोपदेशक इस गाडी के साथ होंगे।

विभिन्न श्रेणियों के नीचे दिए गए किराये मे रेलों, बसों और खाने एव प्रात. की चाय, आवास आदि का व्यय शामिल है।

फर्स्ट क्लास ५५००/- रु० पूरी बर्थ

II क्लास २३५०/- रु० सोने की सीट

मार्ग व्यय में ऐतिहासिक स्थान जो देखने योग्य होंगे, बसों का व्यय सभा की ओर से होगा। इसमें भोजन व बसों का व्यय शामिल है।

सम्पूर्ण जानकारी के लिए सपर्क करें :—

संयोजक
श्री रामलाल मलिक
आर्यसमाज मन्दिर, आर्य नगर
पहाड़गंज, दिल्ली-११००५५
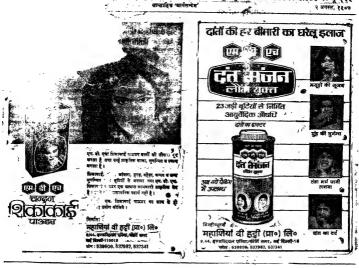
साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक ३६ | रविवार १६ अगस्त १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ | भाद्रपद २०४४ | दयानन्दाब्द—१६३

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

क्षात्र धर्म के आदर्श पुरुष

❀ योगेश्वर श्री कृष्ण ❀

"विकट परिस्थिति आने पर प्रत्येक व्यक्ति उस परिस्थिति से निकलने के लिए जूझना चाहता है परन्तु स्वार्थ अथवा भीरुता के कारण जूझ नहीं पाता। उस समय कोई महापुरुष होता है जो सब की पीड़ा को अपने हृदय में खींच कर परिस्थिति की विषमता से लड़ने के लिए उठ खड़ा होता है और जब कोई ऐसा महापुरुष सामने आता है तब सबके सिर उसके पैरों पर झुक जाते हैं।" विदेशी लेखक ट्योनबी के इस कथन के अनुसार समय-समय पर अनेक विषम परिस्थितियों की चुनौतियों को ललकारने वाले समय समय पर इस धरती धाम में अनेक जन्मे हैं। योगेश्वर कृष्ण भी अपने युग की चुनौतियों का महान उत्तर थे। यौवन की दहलीज पर कदम रखते-रखते उन्होंने कंस के अत्याचार की चुनौती का जवाब उसे मृत्युदण्ड देकर दिया।

हस्तिनापुर की राजनीति के साथ सम्पर्क होने के बाद उन्होंने यह अनुभव किया कि इस देश में एक बड़ा प्रबल संगठन उन राजाओं का है जो भारतीय राजनीति की प्राचीन लोकपक्षीय परम्पराओं के विरुद्ध निरंकुश होकर राजशक्ति का प्रयोग करते हैं जिनके कारण प्रजा में क्षोभ कष्ट है। उस समय जरासन्ध भारत के एक बड़े भाग का सम्राट् था। उसके साम्राज्य का साधन था पाशविक बल। (तस्मादिह बलादेवं साम्राज्यं कुरुते हि सः। सभा० १५। १८) १८ भोजकुलों को मिटाकर उसने समाप्त कर दिया। यादवों के संघ को मिटाकर उसने उसकी जगह कंस को मथुरा का एकराट् बनाया। उसने कई गणराज्य नष्ट-भ्रष्ट कर दिए। छियासी राजाओं को बन्दी

बनाकर उसने घोषणा की इन बन्दी राजाओं की संख्या सौ हो जाने पर इनकी बलि दी जाएगी। श्री कृष्ण यादव, अन्धक वृष्णि शाखा से थे जो एक गणराज्य था और वे उसके सदस्य थे। इसी कारण उन की सहानुभूति जनता के साथ थी। मगध की राजधानी गिरिव्रज में इस क्रूर महाबली जरासन्ध का उन्होंने भीम द्वारा वध कराकर उसके पुत्र जरासंधि सहदेव का अभिषेक कराकर राज्य सौंप दिया। इससे पृथ्वी भर में फैला जरासन्ध आतंक मिटा कर प्रजारंजन का कार्य किया। श्री कृष्ण ने समूचे भारत को जरासन्ध के पंजे से छुड़ाने के लिए जो संकल्प किया था उसके साथ उन्होंने भारत वर्ष के छोटे बड़े एकराट् बहुराट्, संघ श्रेणी, सभी प्रकार के राज्यों के संगठन को छत्र छाया में लाना निश्चित किया। चेदि जनपद में शिशुपाल का एकछत्र शासन था। शिशुपाल दुर्योधन की राजनीति का का समर्थक था। दुर्योधन की शक्ति को निर्बल बनाने के लिए जरासंध और शिशुपाल का वध करके माहिष्मती की गद्दी पर उसके पुत्र धृष्टकेतु को बैठाया। नग्नजित् के पुत्रों को हराकर गधार देश को अनुकूल किया। बलिष्ठ पाण्डयराज को मल्लयुद्ध में अपने वक्षःस्थल की टक्कर से चूर-चूर कर डाला। सौभ नगर में शाल्वराज को वशीभूत किया। सुदूर पूर्व के प्राग्ज्योतिष दुर्ग में भौमनरक का निरंकुश शासन था, जिस ने एक हजार कन्याओं को अपने बन्दीगृह में डाल रखा था। उसकी निर्मोचन नामक राजधानी में सेना सहित मुर और नरक का वध करके कामरूप प्रदेश को स्वतंत्र किया। बाणासुर, कलिंग राज और काशिराज, इन सब को कृष्ण से लोहा लेना पड़ा और सभी उन के बुद्धि कौशल के आगे परास्त हुए।

कृष्ण की राजनीतिक बुद्धि अद्भुत थी। अर्जुन ने कहा था कि युद्ध न करने पर भी कृष्ण मन से जिसका अभिनन्दन करें वह सब शत्रुओं पर विजयी होगा। धृतराष्ट्र की धारणा थी कि जब तक रथ पर कृष्ण अर्जुन और अजिज्य गाण्डीव धनुष, ये तीन तेज एक साथ हैं तब तक ग्यारह अक्षौहिणी भारतीय सेना होने पर भी कौरवों की विजय असम्भव है।

भारतीय इतिहास में महाभारत का युद्ध एक दारुण घटना है। इस प्रलयकारी युद्ध में दुर्योधन की ओर से वाह्लीक, केकय, कम्बोज, गधार, सिन्धु, मद्र, त्रिगर्त (कांगड़ा) सारस्वतगण, मालवा और अंग आदि देशों के राजा प्रवृत्त हुए। युधिष्ठिर की ओर से विराट्, पचाल, काशि, चेदि, सृञ्जय वृष्णि आदि वंशों के क्षत्रिय युद्ध के लिए आए। ऐसे भयंकर युद्ध को रोकने के लिए कृष्ण से जो प्रयत्न हो सकता था उन्होंने किया। वे पाण्डवों की ओर से समस्त अधिकार लेकर हस्तिनापुर गए। यह जानते हुए भी कि दुर्योधन हठी है और उसके मंत्री शकुनि, दुःशासन और कर्ण हैं जो उसे कभी सीधे रास्ते पर न आने देंगे। इन्होंने संधि कराने का पूरा प्रयत्न किया।

इस सब का फल केवल यही हुआ दुर्योधन अन्तर्राष्ट्रनीति के सभी नियम तोड़कर उन्हें ही कैद करने के मनसूबे बांधने लगा। इन की नारायणी सेना का कुछ भाग कृतवर्मा की अध्यक्षता में हस्तिनापुर में विद्यमान था। कृतवर्मा दुर्योधन के

(शेष पृष्ठ ६ पर)

विशेषांक के विषय में

आर्यसन्देश का विशेषांक यन्त्रालय की विद्युत् सम्बन्धी अव्यवस्था के कारण हम समय पर प्रकाशित नहीं कर पाए। इसके लिए हम अपने पाठकों से क्षमा प्रार्थी हैं। हम अपने पाठकों के लिए बृहद् विशेषांक विजयादशमी पर ४ अक्तूबर को प्रकाशित कर रहे हैं। पत्र के नियमित ग्राहकों को यह अंक निःशुल्क मिलेगा।

—सम्पादक

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

प्रेरक प्रसंग

प्रस्तोता—सत्यानन्द आर्य

: १ :

एक दिन स्वामी दयानन्द अकेले बैठे हुए थे। उस समय उदयपुर के श्री राणा जी पधारे और गुरु महाराज से विनीत विनय करने लगे—"भगवन्, आप मूर्ति पूजा का खण्डन छोड़ दें। यह राजनीति के "सर्व सग्रह" सिद्धांत के प्रतिकूल है। यदि यह बात स्वीकार कर लें तो एक लिंग महादेव के महन्त की गद्दी आप की है। वैसे तो यह राज्य भी उसी मन्दिर को समर्पित है, परन्तु मंदिर के नाम जो राज्य का भाग लगा हुआ है, उसकी आय भी लाखों रुपये वार्षिक है। इतना भारी ऐश्वर्य आपका हो जाएगा। सारे राज्य के आप गुरु माने जायेंगे।"

श्री राणा जी की प्रार्थना श्रवण करते ही स्वामी जी झुंझला कर बोले, 'आप मुझे तुच्छ प्रलोभन दिखा कर परमात्मदेव से विमुख करना चाहते हैं। उसकी आज्ञा भंग करना चाहते हैं। राणा जी! आप के जिस छोटे से राज्य और मंदिर से मैं एक दौड़ लगाकर मैं बाहर जा सकता हूं वह मुझे अनन्त ईश्वर की आज्ञा भंग करने के लिए विवश नहीं कर सकता! परमात्मदेव के परम प्रेम के सामने, इस मरुभूमि की मायाविनी मरीचिका अति तुच्छ है। लाखों मनुष्यों के विश्वास केवल मेरे भरोसे पर निर्भर हैं। मुझे ऐसे शब्द कहने का फिर कभी साहस न कीजिएगा।

: २ :

दक्षिण अफ्रीका में एक बार कुछ युवक एक माह तक बिना नमक भोजन करने की प्रतिज्ञा लेकर "फिनिक्स आश्रम" में भर्ती हुए। लेकिन शीघ्र ही वे इस सादे भोजन से उकता गए। एक दिन उन्होंने दरबान से खाने की मसालेदार और स्वादिष्ट चीजें मंगवायीं और चुपचाप खा लीं। बाद में उन्हीं में से एक ने बापू से शिकायत कर दी।

शाम को प्रार्थना के समय बापू ने उनसे यह बात पूछी तो उन्होंने इन्कार कर दिया इतना ही नहीं उन्होंने सूचना देने वाले को झूठा ठहराया।

गांधी जी इस पर अपने ही हाथों से अपने गालों को पीटने लगे और बोले, "मुझ से सच्चाई छिपाने में कसूर तुम्हारा नहीं, मेरा है, क्योंकि अभी तक मैंने सत्य का गुण प्राप्त नहीं किया है सत्य मुझ से दूर भागता है।"

वे अपने गालों को पीटते ही रहे। अन्त में सभी युवकों ने एक-एक करके सामने आकर अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

: ३ :

एक घटना है ई० स० १९१५ की। अमेरिका में भारतवासियों ने क्रांति का प्रचार करने के लिए गदर पार्टी की स्थापना की तथा क्रांति के प्रचारार्थ श्री सोहनलाल पाठक को भी बाहर भेजा गया। प्रथम बैंकाक शहर मे आए तथा बाद में ब्रह्मदेश के रंगून शहर में उन्होंने प्रवेश किया। प्रथम महायुद्ध चालू था तथा अंग्रेज सरकार युद्ध में व्यस्त थी। इसका लाभ उठाने के लिए आप ने ब्रह्मदेश की भारतीय सेना में प्रचार प्रारम्भ किया। २१ फरवरी को भारत में सर्वत्र जोशपूर्ण आंदोलन खड़ा करके भारत को स्वतन्त्र कराने की योजना बनाई। परन्तु किसी गद्दार ने इस योजना की जानकारी अंग्रेज सरकार को दे दी। सोहन लाल जी को पकड़ने के लिए अंग्रेज सरकार ने जाल बिछा दिया। स्वयं के पास तीन रिवाल्वर होते हुए भी निहत्थों की नाहक हत्या होगी इस कारण उस उदार हृदय क्रांतिकारी ने प्रतिकार नहीं किया और पकड़े गये। कारागृह में बन्दी बनाए गए और उन्हें मृत्युदण्ड दिया गया।

कारागृह में किसी भी अंग्रेज अधिकारी के आने पर उसे सैल्यूट करने की प्रथा थी, परन्तु सोहनलाल पाठक ने इस प्रथा का पालन कभी नहीं किया। जिसका माथा सदैव मातृभूमि के सम्मुख झुका था वह किस प्रकार शत्रु को अभिवादन करता। ब्रह्मदेश के गवर्नर ने प्रत्यक्ष भेंट लेकर पूछा कि यदि वे क्षमा याचना करेंगे तो उनकी सजा कम की जा सकती है, परन्तु उन्होंने उत्तर दिया कि क्षमा कौन किससे मांगेगा? अंग्रेज स्वयं अपराधी हैं क्योंकि उन्होंने भारतवासियों पर अनन्त अत्याचार किए हैं। अतः क्षमा याचना करनी ही है तो अंग्रेजों को करनी चाहिए।

कारागृह में स्टाफ व बंदी प्रायः पाषाण हृदय होते हैं परन्तु सोहन लाल पाठक की विनम्र साधुशील वृत्ति का उन पर इतना प्रभाव पड़ा कि वे सभी द्रवित हो गए। अनेकों को फांसी के फन्दे पर लटकाने वाले हाथों ने भी इस सत्पुरुष को फांसी देने से इन्कार कर दिया। आखिर विलियम नाम के एक ईसाई को बाहर से बुलाया गया। परन्तु फांसी का दिन जैसे जैसे पास आता गया वह भी इनके विनम्र व मोहक व्यवहार का कायल होने लगा। अन्त में विलियम को खूब मद्य पिलाकर तैयार किया गया। फांसी पूर्व तैयारी की जाने लगी, सिर पर मृत्यु की छाया मंडराते देख विचलित नहीं हुए वरन् सोहनलाल पाठक स्वयं वधस्तम्भ पर आरूढ़ हुए तथा फांसी का फन्दा स्वयं ही अपने गले लटकाया और 'वन्दे मातरम्' उद्घोष कर अनन्त में विलीन हो गए।

: ४ :

शत्रु की सेनाएं निरन्तर आगे बढ़ती जा रही हैं। मातृभूमि की स्वतन्त्रता खतरे में है, यह जान कर सुकरात तिलमिला उठा।

फौजी पोशाक पहन कर और शस्त्रास्त्रों से लैस होकर, वह अपने राष्ट्र के फौजी कैम्प में जा पहुंचा। सेनापति को फौजी सलाम पेश करके सुकरात ने कहा, "यदि आप मेरे राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकते तो युद्ध का संचालन मुझे करने दीजिए।"

"जिस राष्ट्र का फिलोसोफर तक रणक्षेत्र में कूदता हो उस राष्ट्र को संसार की कोई शक्ति पराजित नहीं कर सकती।" सेनापति के इन शब्दों से उत्तेजित होकर फौजी कैम्प "महान् सुकरात के महान् राष्ट्र" की जयघोष से गूंज उठा।

घायल सुकरात की तम्बू में मरहम पट्टी की जा रही थी। सेनापति ने महान् सुकरात को फौजी सलाम अर्पित करके अपनी पूर्ण विजय की सूचना दी। प्रफुल्लित होकर सुकरात ने कहा, "विजय मुबारक! अब मुझे शीघ्र मेरे अध्ययन कक्ष में पहुंचा दीजिए।"

: ५ :

अपार धन दौलत लूटकर देशों पर विजय प्राप्त कर स्वदेश रवाना हुआ तो सिकन्दर को याद आया कि गुरुदेव अरस्तु ने भारत से एक दार्शनिक लाने को कहा था, सिकन्दर ने अपने सेनापति से कहा।

"बहुत बहतर।"

कई दिन के बाद सेनापति को महान् दार्शनिक, योगी कालोनूस का पता लगा।

"आप को सिकन्दर महान् ने याद किया है।"

"क्यों?"

"वे आपका दर्शन करना चाहते हैं।"

"तो वह स्वयं यहां आये।"

सिकन्दर और सेनापति ने घोड़ों से उतरकर कालोनूस को प्रणाम किया। सिकन्दर ने अपना अभिप्राय प्रकट किया। स्वीकृति मिलने पर अपार हर्ष हुआ।

बेबीलोन में विश्राम के लिए सेना ने डेरा डाला। "सिकन्दर को बुलाओ", कालोनूस ने एक रात को आदेश दिया।

"मैं उपस्थित हूं", सिकन्दर ने सप्रणाम कहा।

सिकन्दर! मेरे लिए फौरन चिता चिनवाओ।" आदेश का पालन किया गया। सिकन्दर हैरान था।

"सिकन्दर! इस देह में निवास करते हुए सौ वर्ष हो गए इस पुराने शरीर को अब त्याग देना चाहता हूं।"

चिता तैयार हुई। कालोनूस उस पर समाधिस्थ हो गए। ब्रह्मरंध्र खुला और आत्मज्योत्सना देह से प्रयाण कर गई। चिता में आग लगाई गई। देह जल कर भस्म हो गई। "ऐसे महान् पुरुषों के महान् देश पर आक्रमण करके मैंने महान् पाप किया है।" सिकन्दर पश्चात्ताप करने लगा, उसी रात शोक से सिकन्दर को ज्वर हो गया और अगली प्रातः इस संसार से चल बसा। मरने से पूर्व उसने सेनापति से कहा, "गुरुदेव से कहना, स्वयं भारत जाकर किसी ऋषि से वहां सच्चा ज्ञान प्राप्त करें।"

हिरण्यगर्भ

—डॉ० रवि दत्त शर्मा आचार्य
सबलपुर, पो० टाँडा अफजल, जि० मुरादाबाद २४४६०१

परमेश्वर के विभिन्न नामों में से हिरण्यगर्भ भी एक सारगर्भित नाम है, जिस से प्रभु का सम्पूर्ण प्रभुत्व, स्वप्रकाशत्व, जगत् प्रकाशत्व एवं सर्वोत्कृष्ट देवत्व अभिव्यक्त होता है। वेद में सर्वत्र समान साक्ष्य है। कहीं भी विसंगति नहीं लक्षित होती। वैसे ईश्वर का मुख्य नाम तो ओ३म् है परन्तु गुणों के आधार पर हिरण्यगर्भ नाम भी अपना विशेष महत्व रखता है। यास्काचार्य इस शब्द की निरुक्ति करते हैं—

हिरण्यगर्भो हिरण्यमयो
गर्भोऽस्येति वा।
गर्भो गृभेर्गृणात्यर्थे
गिरत्यनर्थानिति वा॥
नि० १०।२३।

जो समस्त तेजों को धारण करता है अथवा जिस का अन्तस्तल तेजोमय है, गर्भ निगलने अर्थ में जो अनर्थों को निगल जाता है।

अज्ञान, अन्धकार, तमोगुण का आवरण अथवा कष्टों को दूर करके सद् ज्ञान, प्रकाश, सत्वगुण तथा सुख प्रदान करने वाली शक्ति का नाम हिरण्यगर्भ है। अज्ञान तथा अन्धकार को प्रकाश ही दूर कर सकता है और तमोगुण का निराकरण सत्वगुण के द्वारा ही सम्भव है। अत: इस कार्य हेतु उसी रूप में परमेश्वर की उपासना की जानी उचित है। स्वामी दयानन्द हिरण्यगर्भ की व्याख्या में लिखते हैं—

"जिस में सूर्यादि तेज वाले लोक उत्पन्न होकर जिसके आधार रहते हैं अथवा जो सूर्यादि तेज: स्वरूप पदार्थों का गर्भ नाम उत्पत्ति और निवास स्थान है इस से उस परमेश्वर का नाम हिरण्यगर्भ है।"
—सत्यार्थप्रकाश प्रथम समु०

सायणाचार्य हिरण्यगर्भ की व्याख्या करते हैं—

'हिरण्यगर्भ: हिरण्मयस्याण्डस्य गर्भभूत: प्रजापतिर्हिरण्यगर्भ:।'

सृष्टि की उत्पत्ति हिरण्यगर्भ से हुई। सृष्टि से पूर्व प्रकृति का स्वरूप तेजोमय अण्डाकार था उसी से सकल प्रपञ्च का आविर्भाव हुआ। प्राकृतिक अण्ड को ही हिरण्मय अथवा सुवर्णमय कहा गया है। पुराणों में ईश्वर को ब्रह्मा कहा गया है और उस के गर्भ या अण्ड को ब्रह्माण्ड कहा गया है। हिरण्यगर्भ ही सृष्टि के पूर्व विद्यमान था। अत: वही प्रजापति सब का स्वामी कहा गया। सब का पति वही हो सकता है जिस का कोई अन्य स्वामी न हो, वह हिरण्यगर्भ ही है। प्रजापति को 'क' नाम से भी जाना जाता है। 'क' का अर्थ है सुखस्वरूप। जगतप्रपञ्च से पूर्व केवल हिरण्यगर्भ ही प्रकट हुआ। उस से पूर्व कुछ भी न था, ऐसा प्रबल प्रमाण वेद में मिलता है। जगत् की रचना वही कर सकता है जो कार्यरूप जगत् से पूर्व विद्यमान हो। ससार में भी देखने में आता है कि शिल्पकार पहले हुआ और कला का निर्माण बाद में हुआ। अत निर्विवाद सिद्ध है कि रचयिता पहले हुआ और रचना बाद में हुई। संसार में जो सबसे बडा है वही प्रणाम के योग्य है। इस कोटि मे परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं आता। यदि कोई प्रश्न करे कि दुनिया की सबसे प्राचीन वस्तु क्या है? तो उत्तर होगा 'परमात्मा'। पृथ्वी आदि लोक उस के बाद में बने अत: उसी ने सब को धारण किया। जितना भी स्थूल-सूक्ष्म, चराचर जगत् है उस सबका आधार परमात्मा ही है। मानव की रचना के साथ-साथ उसने सुख के साधनों को भी उत्पन्न किया इसलिए उसे 'क' कहा गया। ऋग्वेद मंडल १०, सूक्त १२१ का प्रथम मंत्र यह ही बताता है—

हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे
भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथ्वी द्यामुतेमां
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

प्रस्तुत सूक्त में हिरण्यगर्भ रूपी परमेश्वर के द्वारा किए गए विचित्र कार्यों का वर्णन किया गया है। सृष्टि की उत्पत्ति, पालन तथा सहार करने का संकेत भी मिलता है। सूक्त के द्वितीय मंत्र में आत्मदा, बलदा तथा मृत्यु शब्दों का कुछ ऐसा ही भाव है। आत्मदा का अर्थ है आत्मा को प्रदान करने वाला अर्थात् जीवनदाता। बलदा का अर्थ है शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करने वाला अर्थात् पोषण करने वाला। मृत्यु का अर्थ है विनाश। उसके प्रशासन में मृत्यु का भी विधान है, यह नहीं भूलना चाहिए। इन्हीं कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए ईश्वर के तीन रूपों—ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की कल्पना कर ली गई, परन्तु वैदिक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि समस्त कार्यवाही को सम्पन्न करने वाला एक ही परमपिता है। अनेक ईश्वरों की कल्पना करना अवैदिक है एक अनर्थ परम्परा है। यदि प्रत्येक कार्य के लिए नये-नये ईश्वरों की नियुक्ति होती जाएगी तो कोई भी दूसरे के शासन को शांतिपूर्वक न चलने देगा, सब अपनी मनमानी करेंगे, जिस के परिणामस्वरूप सभी ईश्वरों मे झगडा हो जाएगा तो उसका फैसला कौन करेगा? झगडे के दौरान फिर सृष्टि की कौन देखभाल करेगा? अत: सन्देह को समाप्त कर निम्न मंत्र को प्रमाण मानना चाहिए—

य. प्राणतो निमिषतो
महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पद:
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
यजु० २५।११

दुराग्रहवश सभी शक्ति को भिन्न-भिन्न देवताओं के रूप में मानने वालों के लिए ऋ० मं० १०, सू० १२१, मंत्र ८ में प्रमाण प्रस्तुत है—

यो देवेष्वधिदेव एक आसीत्।

अर्थात् जो सभी देवताओं, दिव्य-शक्तियों का आधिपत्य करता है, अत: वही देवाधिदेव है, दिव्य शक्तियों का नियन्ता है। मन्त्र ७ में भी इसका ही समर्थन किया गया है 'देवानां समवर्ततासुरेक:' जो देवताओं का एकमात्र प्राण है। संसार की समस्त शक्तियों का नियन्त्रण एक परमात्मा ही करता है। ऋग्वेद में ही अन्यत्र इस का प्रमाण मिलता है—

तमीशान जगतस्तस्थुषस्पतिं।
धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्॥
ऋ० १।८९।५

ईशनी शक्ति से सम्पन्न, चराचर का स्वामी, बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करने वाले सर्वेश्वर को हम अपनी रक्षा के लिए पुकारते हैं।

यदि परमेश्वर को अल्प सामर्थ्य वाला माना जाए और उसके सहायकों की कल्पना कर ली जाए तो फिर हिरण्यगर्भ नाम निरर्थक हो जाता है।

श्वेताश्वतर उपनिषद में परमात्मा का नाम हिरण्यगर्भ आया है। समस्त दिव्य शक्तियों का जनक तथा सवर्धक है, सबका अधिपति है, वही रुद्र है, महान् ज्ञानी, सर्वज्ञ है, वही उत्तम बुद्धि से युक्त करता है—

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च
विश्वाधिपो रुद्रो महर्षि.।
हिरण्यगर्भं पश्यत जायमान
स नो बुद्धया शुभया सयुनक्तु।
श्वे० ४।१२

मुण्डकोपनिषद् मे परमात्मा के कोश को हिरण्मय तेजोमय बताया है। तदनुसार वह सर्वथा पवित्र अवयवरहित सभी ज्योतियों की ज्योति है जिस को आत्मज्ञानी ही जानते हैं—

हिरण्मये परे कोशे
विरज ब्रह्म निष्कलम्।
तच्छुभ्रं ज्योतिषा ज्योति-
स्तद् यदात्मविदो विदु॥
मु० २।९।

उपनिषदों के अनुसार भी विश्व की अखिल शक्तियों का केन्द्र हिरण्यगर्भ ही है। भूगर्भवेत्ता एव वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व पृथ्वी आग का एक गोला थी। इससे सिद्ध होता है कि परमात्मा के तेज से ही सृजन हुआ। यह तेज ज्ञान, प्रकाश तथा ऊर्जा का प्रतीक है। केवल ईश्वर मे सम्पूर्ण शक्तियाँ समा सकती हैं क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है, सर्वज्ञ है, सर्वव्यापक है। जैसा वह महान है वैसा ही महान प्रयत्न उसे प्राप्त करने के लिए अपेक्षित है। यह परमात्मा का परम पद है। जिस को पुरुषार्थी ही प्राप्त कर सकता है—

तद् विष्णो: परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरय:।'

उसे कहीं खोजने नही जाना पडेगा। भौतिक शरीर में ही उस की पारमार्थिक सत्ता विद्यमान है। अष्ट चक्र एव नव द्वारों वाले, इन्द्रियों से युक्त शरीर में वह ज्योति प्रकाशित है—

अष्टा चक्रा नवद्वारा
देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्मय: कोश:
स्वर्गो ज्योतिषावृत॥
अथर्व० १०।२।३१

सुराज्य स्वराज्य का स्थानापन्न नहीं हो सकता

> "कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"
>
> —महर्षि दयानन्द सरस्वती

ले०—यशपाल आर्यबन्धु

सत्यार्थप्रकाश से उद्धृत महर्षि दयानन्द के उपरोक्त वाक्य को बार-बार और ध्यानपूर्वक पढ़ने से महर्षि दयानन्द की राजनीतिक सूझबूझ, परिपक्वता और चेतना का पता चलता है। महर्षि दयानन्द सुराज्य अर्थात् उत्तम राज्य के प्रबल पक्षपाती थे। उत्तम राज्य के सस्थापनार्थ महर्षि ने अपने अमर ज्ञान कोष सत्यार्थप्रकाश मे एक स्वतंत्र अध्याय (समुल्लास) लिखा है। अपने इसी छठे समुल्लास में महर्षि उत्तम राज्य और राजा का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि—"जिस राजा के राज्य में न चोर, न परस्त्रीगामी, न दुष्ट वचन का बोलनेहारा न साहसिक डाकू और न दण्डघ्न अर्थात् राजा की आज्ञा का भंग करने वाला है। वह राजा (और राज्य) अतीव श्रेष्ठ है।" इतना ही नहीं महर्षि यहां तक लिखते है कि—"राजा प्रजा को अपने सन्तान के सदृश सुख देवे और प्रजा अपने पिता सदृश राजा और राजपुरुषों को जाने। यह बात ठीक है कि राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले हैं और राजा उनका रक्षक है। जो प्रजा न हो तो राजा किसका? और राजा न हो तो प्रजा किस की कहावे? दोनों अपने-अपने काम मे स्वतन्त्र और मिले हुए प्रीतियुक्त काम में परतन्त्र रहें। प्रजा की साधार सम्मति के विरुद्ध राजा व राजपुरुष न हों। राजा की आज्ञा के विरुद्ध राजपुरुष व प्रजा न चलें।" भला इस से सुराज्य की कोई क्या कल्पना कर सकता है? किन्तु यह किस लिए? महर्षि के ही शब्दों मे—"जो प्रजा से स्वतन्त्र स्वाधीन राजवर्ग रहे तो राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करे। जिस लिए अकेला राजा स्वाधीन व उन्मत्त होके प्रजा का नाशक होता है अर्थात् वह राजा प्रजा को खाए जाता है इसलिए किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिए। जैसे सिंह व मांसाहारी हृष्ट पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं, वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है अर्थात् किसी को अपने से अधिक न होने देता। श्रीमान् को लूट खूंट अन्याय से दण्ड लेके अपना प्रयोजन पूरा करेगा।' महर्षि ने राज की सुन्दर व्यवस्था के लिए तीन सभाओं का भी विधान किया है। तात्पर्य यह है कि उत्तम राज्य की जो परिकल्पना की जा सकती है उस सबका विधान महर्षि ने अपने इस ग्रंथ में कर दिया हैं। इस पर भी महर्षि ने सुराज्य को स्वराज्य पर वरीयता कभी प्रदान नहीं की।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी से भारत को हथिया लेने के पश्चात् महारानी विक्टोरिया की ओर से एक विज्ञप्ति भारतवासियों में बांटी गई। जिसमें कहा गया था कि—"अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ से शासन हम ने ले लिया है। अब प्रजा के साथ पक्षपातरहित, न्यायमुक्त, माता-पिता के समान दयापूर्ण शासन होगा।" भारतीय जनता जो कंपनी के शासन से बहुत उत्पीडित थी। इस विज्ञप्ति से प्रसन्न हो उठी। यह स्वाभाविक भी था। उसने शांति की सास ली और प्रभु को धन्यवाद देने लगी। मुसलमानों ने तो अपने सर्वमान्य नेता सर सैयद अहमद खां के नेतृत्व में तो सर्वथा घुटने ही टेक दिए थे। हिन्दू भी किसी से कम नहीं थे। उन्होंने भी महारानी की प्रशंसा में विरुदावलियां गानी प्रारम्भ कर दी। यहां तक कि उसे त्रिजटा का अवतार तक घोषित कर दिया। चारों ओर अंग्रेजी शासन और महारानी की जय-जयकार होने लगी। सभी सन्तुष्ट थे, सभी शांत थे किन्तु यदि कोई असन्तुष्ट था, कोई व्याकुल और परेशान था तो एक अकेला ऋषि दयानन्द था। वे इसे स्वतन्त्रता प्राप्ति के मार्ग में बड़ी बाधा मानते थे। अतः वे इस का प्रतिकार करने को उतावले हो रहे थे। वे भारतवासियों को अंग्रेजों की इस कुचाल से सावधान करना चाहते थे और इसके लिए उपयुक्त अवसर की टोह में थे। अन्ततः वह अवसर भी प्रभु कृपा से प्राप्त हो गया, तब जबकि महर्षि सत्यार्थप्रकाश की रचना करने लगे।

उस समय जब स्वराज्य की बात करना मृत्यु को आमंत्रित करना था, महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में प्रबल शब्दों और सशक्त स्वर में उद्घोष किया था कि—कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने पराए का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ [illegible] का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" पाठक विचार करें कि क्या उपरोक्त शब्द विक्टोरिया की उपर्युक्त विज्ञप्ति का अक्षरशः प्रतिवाद नहीं? दुर्दान्त अंग्रेजी शासन में भी महारानी की विज्ञप्ति के उत्तर का साहस जुटा पाना महर्षि सरीखे किसी महामानव का ही काम हो सकता है।

हैनरी कैम्पबेल बैनरमैन से वर्षों पूर्व महर्षि ने सुस्पष्ट घोषणा की थी कि सुराज्य स्वराज्य का स्थानापन्न नहीं हो सकता। यद्यपि ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ जान स्टुआर्ट मिल अपनी पुस्तक 'दी लिबर्टी' में यह भाव व्यक्त कर चुके थे कि सुराज्य कभी स्वराज्य का स्थान नहीं ले सकता, तथापि महर्षि दयानन्द आंग्ल भाषा से अनभिज्ञ होने तथा अपना प्रेरणास्रोत स्वदेशीय होने के कारण मिल से उधार लिये विचार व्यक्त नहीं कर रहे हैं, अपितु अपनी प्रखर प्रज्ञा के आधार पर तथा उत्कट स्वदेशी भावनाओं से प्रेरित होकर महारानी विक्टोरिया की उक्त विज्ञप्ति का प्रतिपादन करने को अत्यन्त आतुर प्रतीत हो रहे थे। उस समय स्वदेशीय राज्य अथवा स्वराज्य की बात कहना जबकि देश राजनीतिक दृष्टि से नितांत अपरिपक्व था, महर्षि की राजनीतिक परिपक्वता तथा उत्कट राष्ट्रीयता का ही द्योतक कहा जाएगा। वस्तुतः महर्षि बहुविध गुणों से युक्त परकीय शासन को स्वराज्य की तुलना में स्वल्प महत्व भी नहीं देते, यह उन की अद्भुत क्रान्तदर्शिता है। महर्षि के इस वाक्य से यह सिद्ध होता है कि वे भले ही राजनीतिक नेता न हों, पर वे राजनीतिक चिंतक अवश्य थे। उनका चिन्तन आधुनिक चिन्तकों से किसी भी दशा में न्यून नहीं था। जिस समय देश के सभी अग्रगण्य नेता अंग्रेजी शासन को एक वरदान बता रहे थे, दयानन्द ही एक अकेला ऐसा महापुरुष था जो स्वराज्य के स्वर भारतवासियों में फूंक रहा था। स्पष्ट है कि सुराज्य की महत्ता को स्वीकारते हुए भी जहां तक स्वराज्य का प्रश्न है, उसे सुराज्य से श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट मानते हैं। उनकी दृष्टि में सुराज्य स्वराज्य का स्थानापन्न नहीं हो सकता। यदि सुराज्य और स्वराज्य में किसी एक को वरीयता देनी हो तो महर्षि स्वराज्य को ही वरीयता देंगे, सुराज्य को नहीं। सुराज्य अच्छी वस्तु है किन्तु स्वराज्य उससे भी अच्छी वस्तु है। काश! हम महर्षि की भावना को समझ पायें।

समाचार

दक्षिण दिल्ली आर्य महासम्मेलन

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में आर्यसमाज सरोजिनी नगर, नई दिल्ली के उत्सव स्थल पर दक्षिण दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से आर्य महा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसका कार्यक्रम निम्न प्रकार होगा—

भव्य शोभा यात्रा—शनिवार १९ सितम्बर, १९८७ को दोपहर २.३० बजे आर्यसमाज सफदरजंग एन्क्लेव से प्रारम्भ होगी। सफदरजंग एन्क्लेव मार्कीट से होती हुई सरोजिनीनगर बी डी. ब्लाक, डी जी. ब्लाक, जी आई ब्लाक, पी एण्ड टी क्वार्टर, रिजर्व बैंक क्वार्टर, ए ब्लाक, वाई ब्लाक, आर्यसमाज मन्दिर, पोस्ट आफिस होती हुई सरोजिनी नगर मार्कीट, बाबू मार्कीट होती हुई साय ५ बजे भारत सेवक समाज ग्राउण्ड, सरोजिनी नगर मार्कीट में समाप्त होगी।

चरित्र-निर्माण सम्मेलन—रविवार २० सितम्बर को प्रात ८ से ११ बजे बृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति और १० बजे से दोपहर १ बजे तक चरित्र निर्माण सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमे अनेक आर्य विद्वान् आर्य नेता महात्मा सन्यासी पधार कर अपने विचार रखेगे। दोपहर १ बजे ऋषि लगर होगा।

रोशनलाल गुप्त
(सयोजक)
उपप्रधान, आर्यसमाज विनयनगर
नई दिल्ली

श्री शिवकुमार शास्त्री को मातृ शोक

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के मन्त्री श्री शिव कुमार शास्त्री की १०० वर्षीया माता जी श्रीमती निहाली बाई का निधन पांच अगस्त १९८७ को हो गया है। ग्राम अकबर पुर बरोटा, जिला सोनीपत, हरियाणा में उनके पैतृक निवास पर शान्ति यज्ञ श्री रामलाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में दिनांक ८ अगस्त १९८७ को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर परिवार की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, आर्यसन्देश, आर्य अनाथालय, आर्य गुरुकुल घरौण्डा तथा अन्य संस्थाओं को २५००/- रुपये का दान भी दिया गया।

योगेश्वर श्रीकृष्ण

(पृष्ठ १ का शेष)

पक्ष में होने पर भी कृष्ण के पकड़े जाने को सहन करने वाला नहीं था, वह भनक लगते ही सेना लेकर दुर्योधन के द्वार पर आ खड़ा हुआ। कृष्ण दूत के कार्य को निभाते हुए बिल्कुल शान्त रहे, नहीं तो वहीं पर खून की धार बहने लगती। कृष्ण न्याय और सत्य धर्म के पक्षपाती थे इसलिए वे युधिष्ठिर के पक्ष मे गए।

श्री कृष्ण अहिंसा और सत्य के पूरे पक्षपाती थे उन्होंने अपने क्षात्र-धर्म को रक्त की व्यर्थ बहती रिसती बूंदों से सदा बचाने का प्रयत्न किया। वे शील की प्रतिमा, वेद विज्ञान के अर्णव, सदाचार के स्वरूप, आदर्श साम्राज्य निर्माता, शूर-धर्म शिरोमणि थे। अपने बड़ों के सम्मान में सदा तत्पर थे। व्यास, धृतराष्ट्र, कुन्ती तथा युधिष्ठिर आदि को जब भी मिले सदा उनके चरण छूते रहे। युधिष्ठिर ने उन्हें घर लौटने का कारण पूछा—बोले, पितृचरणों के दर्शन करने की इच्छा है। कृष्ण चरित्र जीवन की विविधताओं, मानव के विकास के चरमोत्कर्ष का अद्वितीय उदाहरण है। सच कहें तो श्रीकृष्ण जीवनी की महिमा के मर्म को ठीक से समझ पाना और उनकी निर्लिप्तता की गहराई को पूरी तरह से हृदयगम करना किसी के वश की बात नहीं है। तभी तो महाभारत में भीष्म, विदुर तथा व्यास जैसे गुरु जब तब उस युगद्रष्टा की प्रशस्ति गाते पाए जाते हैं।

योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र

इस संसार में अनेक मानव जन्म लेते हैं। समय-समय पर ऐसे नर-रत्नों का जन्म होता रहता है। ऐसे ही नर-रत्नों में श्री कृष्णचन्द्र जी अपना शीर्ष स्थान रखते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण वेद वेदांग के विशिष्ट ज्ञाता, शारीरिक शक्ति से अधिक बलवान्, हीन कर्म से लज्जा करने वाले, यशस्वी, प्रखर बुद्धि वाले, विनम्र, धैर्यवान्, कान्तिमान, हर प्रकार से हृष्ट पुष्ट थे।

समय-समय पर आती रहती हैं आत्मा महान्।
प्यारे भारत में जन्मे थे कृष्णचन्द्र भगवान्॥
भादों मास अष्टमी पहली झुकी अंधेरी रात।
बन्द जेल में करे कंस ने योगी के पितुमात॥
ले वसुदेव चले गोकुल को थी भारी बरसात।
नन्द गोप घर जा पहुंचाया थरथर कांपे गात॥
कन्या को वापिस ले आये पाये कष्ट महान्।
प्यारे भारत में जन्मे थे कृष्णचन्द्र भगवान्॥१॥
नन्द यशोदा ने बालक को लाड चाव से पाला।
कोई कृष्ण कहे कोई कन्हैया कोई नन्द का लाला॥
मुरलीधर घनश्याम कान्ह मधुसूदन गोपाला।
मथुरावासी गोकुलवासी पुरी द्वारका वाला॥
अपनी बंसी पर भर देता एक सुरीली तान।
प्यारे भारत मे जन्मे थे कृष्णचन्द्र भगवान॥२॥
दूध, दही का श्रीकृष्ण ने बिकना बन्द कराया।
ग्वाल बाल साथी संग लेकर जत्था एक बनाया॥
छिप छिप के जो जायें ग्वालिनें दुग्ध सभी लुटवाया।
खाकर माखन मिश्री अपने को बलवान बनाया॥
चक्र सुदर्शन का चक्कर उनके लिए आसान।
प्यारे भारत में जन्मे थे कृष्णचन्द्र भगवान॥३॥
गुरुकुल में शिक्षा पाई था वैदिक धर्म पियारा।
पापी अत्याचारी ब्रज से ढूढ़ ढूढ़ कर मारा॥
केश पकड़ कर कंस राजा को मथुरा बीच पछारा।
प्यारा नन्द यशोदा का वह था नैनन का तारा॥
महाभारत में बनकर आये अर्जुन के रथवान।
प्यारे भारत में जन्मे थे कृष्णचन्द्र भगवान॥४॥
आज भूल बैठे भारत में उनकी सभी कहानी।
चोर जार व्यभिचारी कहते यह कितनी नादानी॥
परनारी गामी बतलाते यह कैसी मनमानी।
बतलाते हैं रहीं कृष्ण के सोलह सौ पटरानी॥
याद न रहता श्रीकृष्ण का गीता जी का ज्ञान।
प्यारे भारत में जन्मे थे श्रीकृष्ण भगवान॥५॥

स्वामी स्वरूपानन्द
अधिष्ठाता वेदप्रचार
दि० आ० प्रतिनिधि सभा

यजुर्वेदीय यज्ञ एवं जन्माष्टमी पर्व

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली में ३ अगस्त से जन्माष्टमी तक प्रतिदिन यज्ञ ११ वेद पाठी विद्वानों द्वारा हो रहा है। पूर्णाहुति में रक्षा मन्त्री श्री कृष्ण चन्द्र पन्त भी उपस्थित होंगे। अनेक विद्वान् एवं राष्ट्रीय नेता सम्बोधन देंगे। पूर्णाहुति का समय ९ बजे का है। कार्यक्रम प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक चलेगा।

आर्यसमाज विनय नगर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज विनय नगर का वार्षिकोत्सव सोमवार १४ सितम्बर से रविवार २० सितम्बर १९८७ तक सरोजिनी नगर मार्केट पार्क में बड़े समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। प्रात: ७ से ८.३० बजे बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया है जिसके ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती होंगे रात्रि ८.३० से ९.३० बजे स्वामी जी महाराज वेद कथा करेंगे। कथा से पूर्व मनोहर भजन होंगे।

पुस्तक समीक्षा

वरेण्यम्

लेखक : हरबंसलाल सहगल 'पाठक' प्रकाशक : गुरु-मल० सहगल चैरिटेबल ट्रस्ट, टी- ६९८, मलका गंज रोड, दिल्ली-७; मूल्य ४० रुपये, समीक्षक : दशपाल सुधांशु, सम्पादक, साप्ताहिक आर्यसन्देश।

वरेण्यम् पुस्तक का प्रथम भाग २७२ पेज का है। पुस्तक के लेखक एक श्रद्धावान साधक हैं। उन्होने अपने जीवन मे भक्ति मार्ग पर चलते हुए जो पाया वह पुस्तक में सहज-सरल भाव मे लिखा। श्री हरबंसलाल जी प्रसिद्ध प्रभु भक्त 'प्रभु आश्रित जी महाराज' के शिष्य हैं। उन्हें गायत्री मन्त्र से अतिशय प्रेम एवं श्रद्धा है इसीलिए उन्होने अपना विषय भी गायत्री मन्त्र ही चुना। गायत्री मन्त्र के 'वरेण्यम्' शब्द को ही अपनी पुस्तक का शीर्षक के रूप मे दिया।

प्रस्तुत पुस्तक मे आध्यात्मिक धारा से सज्जित काव्य है। उर्दू की शायरी है मन्त्रों की हृदयग्राही प्रेरक व्याख्या है। पुस्तक पद्यमय नही है, लिखी तो गद्य मे गई है परन्तु भक्ति की तरंग अनेक स्थलों पर कविता का आनन्द देती है। अष्टांग योग की विशद व्याख्या भक्तिरस की ओर आकृष्ट करती है। सन्ध्या मन्त्रो पर दिया गया चिन्तन परमप्रिय प्रभु को पुकारने के लिए बाधित करता है। अष्टचक्रों का विवरण साधकों के लिए रास्ता दिखाने वाला है। पुस्तक की विशेषताओं में एक विशेषता है इसकी तालिकाएँ। जिसमें गागर में सागर भरने का लेखक ने घोर चिंतन द्वारा अच्छा प्रयत्न किया है। लेख व भाषा की दृष्टि से पुस्तक सामान्य स्तर की है। यद्यपि भाव और भावना की दृष्टि से पुस्तक अति उत्तम है लेकिन अशुद्धियो और क्रम की त्रुटियाँ पाठक को खटकती अवश्य हैं। इसका एक कारण लेखक का उर्दू माध्यम मे शिक्षित होना भी है।

गायत्री सम्बन्धी समस्त ज्ञान लेखक ने संजोने का प्रयास किया फिर भी "गायत्री उपनिषद्" लेखक को स्वाध्याय के लिए मिल सकता तो उनका चिन्तन और भी प्रखर बन कर विषय के साथ न्याय कर पाता। कट्टरवादी वैदिको को कहीं-कहीं कथानको की अतिशयोक्ति तथा अन्ध श्रद्धापरक प्रसग आलोचना के लिए बाध्य करेंगे। ऋषि भक्तो को सिद्धान्त की दृष्टि मे कठोर होना भी चाहिए।

पुनश्च मैं स्वाध्यायप्रेमी एवं तपस्वी साधक श्री हरबंसलाल सहगल को पुस्तक लिखने पर बधाई देता हूँ। इनका प्रयत्न स्तुत्य है। पुस्तक अध्यात्म-पथ के पथिकों के लिए उपयोगी है। आकर्षक साज-सज्जा, छपाई, सफाई और परिश्रम को देखते हुए पुस्तक का मूल्य अधिक नहीं है।

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ फोन : २६१८७१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री [illegible] द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा [illegible] प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। पंजिका सं० डी० (सी०) ७११

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक ४० | रविवार २३ अगस्त १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ | भाद्रपद २०४४ | दयानन्दाब्द —१६३

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

कृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से सम्पन्न

कोटि-कोटि जनमन के श्रद्धास्पद श्रीकृष्ण

—के० सी० पन्त

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित वृष्टियज्ञ आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली में १६ अगस्त जन्माष्टमी को सम्पन्न हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर दिल्ली के उपराज्यपाल श्री हरिकिशन लाल कपूर एवं रक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने आहुति प्रदान की। इस अवसर पर श्री कपूर ने कहा—उत्तर भारत के बहुभाग में भारी सूखा पड़ा है इससे जहां जनजन को भारी समस्या का सामना करना पड़ रहा है वहीं पशुओं के चारे का भी भारी संकट आन पड़ा है। हमारे अन्नदाता किसान तथा श्रमिक जनों को असहनीय क्षति हुई है। सरकार यथासम्भव कदम उठा रही है। बहुत हद तक इस समस्या से उत्पन्न संकट की क्षतिपूर्ति हो सकेगी ऐसी आशा है। मैं सभी जनगण से प्रार्थना करता हूं कि अपने विवाह शादी अन्य खुशी के अवसरों पर कम से कम लोगों को आमन्त्रित किया जाये तथा अन्नादि आहार का सदुपयोग किया जाये, बेकार न जाने दें।

रक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा—करोड़ों जनमानस के श्रद्धास्पद भगवान श्री कृष्ण के जन्मदिवस पर मैं आप सब को हार्दिक बधाई देता हूं। उन्होंने कहा—विश्व में शायद ही कोई ऐसा देश होगा जो पांच हजार साल पुरानी अपनी संस्कृति से लगातार प्रेरणा लेता आ रहा है। यही कारण है कि भगवान् श्री कृष्ण जो हमारे लिए आज प्रासंगिक हैं। वह हमारे लिए ज्योतिपुंज हैं। अन्याय, अत्याचार के खिलाफ जैसा निर्भीक व्यक्तित्व भगवान् कृष्ण का है वैसा व्यक्तित्व दिखायी नहीं पडता। जिसमें दार्शनिकता हो धर्म नीति, कर्म नीति, कूटनीति आदि का समावेश हो तथा ज्ञान विज्ञान का समन्वय हो।

उन्होंने कहा—देश आज विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। आतंकवाद बढ़ता जा रहा है। मैं उन लोगों की सराहना किए बिना नहीं रह सकता जो पंजाब में विपरीत स्थितियों में दृढ़ता से संघर्ष कर रहे हैं और सामाजिक सद्भाव बनाए रखने में जुटे हुए हैं। हमें आज और भी साहस तथा विवेक से चलना होगा।

इस अवसर पर पं० शिवकुमार शास्त्री, श्री वाचस्पति उपाध्याय, श्री सोमनाथ मरवाह तथा सूर्यदेव जी आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। स्वामी आनन्द बोध ने अपने सम्बोधन में कहा—योगेश्वर कृष्ण ने खण्डित भारत को अखण्ड भारत कर राष्ट्र को बल दिया था। ८६ राजाओं को कैद से मुक्त कर पापी सम्राट् जरासन्ध को मृत्युदण्ड दिया था तथा देश की मानसिकता को नैतिक बल दिया। कृष्ण चरित्र अनुपम है। वे एक विवेकी तत्त्वज्ञानी, महान् नीतिज्ञ, सच्चे मित्र, गोपालक, राष्ट्र नायक थे। हमें उन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

यह यज्ञ ३ अगस्त से प्रारम्भ हुआ था। यज्ञ में गुरुकुल गौतम नगर के वेद पाठी ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया। यज्ञ में पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, श्री पं० यशपाल सुधांशु आदि विद्वानों ने वेद व्याख्या की। यज्ञ का संचालन भी इन्हीं विद्वानों ने किया।

यज्ञ की पूर्णाहुति पर अनेकों लोगों ने जीवन सुधार तथा वेद स्वाध्याय का व्रत लिया। यजुर्वेद के १९७५ मन्त्रों को कण्ठस्थ करने वाले ब्र० नरदेव ने इस अवसर पर पूर्ण यजुर्वेद के विभिन्न अध्यायों को पाठ कर सुनाया। जिस से जनसमूह करतल ध्वनि कर उठा। समस्त कार्यक्रम का संचालन समाज के मन्त्री श्री मूलचन्द ने किया। □

अमर स्वामी प्रकाशन गाजियाबाद से श्री अमर स्वामी जी ने सम्बन्ध तोड़ा

नई दिल्ली। विश्वस्त सूत्र से विदित हुआ है कि अमर स्वामी प्रकाशन १०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद से श्री अमर स्वामी सरस्वती जी ने अपना सम्बन्ध तोड लिया है। उक्त प्रकाशन के सर्वेसर्वा श्री लाजपत राय हैं तथा प्रकाशन का पता भी उनके घर का ही है। अब उक्त प्रकाशन को भेजा गया धन न तो स्वामी जी को प्राप्त होगा और न वह उनके किसी उपयोग में आएगा। दिनांक १६।८।८७ के 'आर्य जगत्' साप्ताहिक के अंक के पृष्ठ १२ पर "अमर स्वामी महाराज की अन्तिम इच्छा पूरी करें" शीर्षक से प्रकाशित समाचार नितान्त भ्रामक है।

घनश्याम आर्य

आर्य जगत्
आर्यसमाज मन्दिर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००१

आर्यसमाज करौल बाग में बृहद् यज्ञ तथा वेद कथा

आर्यसमाज करौलबाग में २ अगस्त से वेदकथा का आयोजन किया गया जो १६ अगस्त तक चलता रहा। सायंकाल १५ दिन श्री पं० यशपाल सुधांशु सम्पादक, आर्य सन्देश द्वारा वेदकथा हुई। प्रातः प्रो० पुरुषोत्तम तथा पं० शिवकुमार शास्त्री द्वारा वेद प्रवचन हुए। प्रातःकालीन यज्ञ का संचालन श्री हरिदत्त आचार्य ने किया। अजमल खां पार्क में हजारों नर-नारियों का समूह वेदकथा सुनता रहा। सारा दृश्य भक्तिमय तथा आश्चर्यजनक था। इस अवसर पर श्री चुन्नीलाल ने मधुर भजन गाये। विस्तृत विवरण अगले अंक में।

सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

प्रेरक प्रसंग

प्रस्तोता—सत्यानन्द आर्य

: १ :

विष्णुगुप्त चाणक्य ने अपनी सबसे प्यारी मां के देहावसान के बाद तक्षशिला नगर के बाहर एक कुटी में अपने को समाहित कर लिया। ऋषि के तुल्य अपने को ढालने लगे। उन दिनों ग्रीस से चल कर सिकन्दर देशों पर देशों को रौंदता हुआ भारत के भी बहुत से उत्तरी भाग को निगल चुका था। देश की दुर्दशा पर चाणक्य की आंखों से चिंगारियाँ फूट पडीं। बाल्मीकि और विश्वामित्र का वंशज अपने भाइयों की रक्षा के उपाय सोचने लगे। उस महर्षि ने अपने बुद्धि बल से उस समय के अपने देश के सबसे बड़े राज्य पाटलिपुत्र के महामन्त्री के रूप में बागडोर अपने हाथ में लेकर सारे देश को एक झंडे तले एकत्र किया। महाराजा चन्द्रगुप्त के अधीन एक बड़ी सेना के साथ देश को विदेशियों से स्वतन्त्र कराने के लिए कूच किया।

नीति में चतुर राजर्षि चाणक्य की देखरेख में इसने यवनों को सिंधु नदी के पार खदेड दिया। विदेशी यवनों को मुंह की खानी पड़ी। यवनराज सेल्यूकस को अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त से करना पड़ा। साथ ही हिन्दूकुश पर्वत की सीमा तक का सारा प्रदेश बलोचिस्तान, मकरान और अफगानिस्तान भी भारत को सौंपना पड़ा। इस प्रकार चाणक्य के बुद्धि कौशल ने हारे हुए देश को उन्नति की चोटी पर पहुंचा दिया।

परंतु राजर्षि चाणक्य एक सच्चे त्यागी ब्राह्मण थे, देश को एक झण्डे तले लाकर व उन्नति की चोटी पर पहुंचाकर स्वयं राज से हटकर फिर अपनी पुरानी झोपड़ी में जा बैठे, तक्षशिला नगर के बाहर।

: २ :

राजा कर्ण अर्जुन के इन्द्रास्त्र-प्रहारों से घायल होकर कुरुक्षेत्र की रणभूमि पर पड़े-पड़े अन्तिम सांस ले रहे थे। भगवान् कृष्ण को भान हुआ कि कर्ण अभी जीवित था। फौरन अर्जुन को बुला भेजा।

"अर्जुन ! ब्राह्मण विद्यार्थी का रूप बनाकर शीघ्र मेरे पास आओ।" ब्राह्मण विद्यार्थी के रूप में अर्जुन वापस आया तो देखा, कृष्ण स्वयं ब्राह्मण का रूप धारण किये खड़े हैं। और चल दिए कुरुक्षेत्र।

"राजा कर्ण की जय ! दानी कर्ण की जय" ब्राह्मण ने घोष किया।

कर्ण ने आंखें घुमाकर देखा, दो ब्राह्मण उसके पैरों की ओर खड़े थे। एक ठण्डी सांस भरकर कर्ण बोले, 'पूज्य ब्राह्मणो ! बड़े बेमौके आये हैं आज आप। इस समय क्या ब्राह्मण बिना स्वर्णदान के ही लौटेंगे ?"

"राजन् ! इस समय हम केवल आपके अन्तिम दर्शन करने के हेतु ही यहाँ आये हैं, स्वर्ण की आशा से नहीं।"

"यह स्वर्ण रक्त से सना हुआ है, और इसके भीतर हड्डी है। हम इसका स्पर्श भी नहीं कर सकते।"

दान की भावना से उत्तेजित होकर कर्ण खड़ा हो गया। एक तीर की नोक से उसने दांतों पर से स्वर्ण की दोनों पर्तों को उतारा। दूसरे ही क्षण एक तीर कसकर पृथ्वी में दे मारा। जल का एक फव्वारा ऊपर को उठा और स्वर्ण की दोनों पर्तों को धोकर एक-एक करके ब्राह्मणों के चरणों पर रख दिया। तत्क्षण कर्ण धडाम से पीछे गिरते हुए बोला, "मैं जानता हूँ, यह कृष्ण हैं और यह अर्जुन। पर क्योंकि तुम ब्राह्मण के रूप में हो, मैं तुम्हें स्वर्णदान किये बिना नहीं रह सकता था।"

"दानी कर्ण की जय।"

कृष्ण की इस जयोक्ति पर प्रसन्न होकर कर्ण ने कहा, 'धर्मावतार कृष्ण को कर्ण का प्रणाम" और वह सदा के लिए मौन हो गया। स्वर्ण के दोनों पर्तों को उठा कर कृष्ण ने कर्ण की उन दोनों हथेलियों पर चिपका दिया जिन से वह ब्राह्मणों को स्वर्णदान किया करता था। कृष्ण के इस उदार रूप की झांकी करके अर्जुन स्तब्ध रह गया।

"अर्जुन ! दान का यह महान् सूर्य आज अस्त हो गया।"

: ३ :

एक दिन एक साधु ने स्वामी दयानन्द से कहा कि आप प्रवृत्ति मार्ग में क्यों पड रहे हैं ? पहले की भांति अवधूत वृत्ति में विचरिये। इस प्रकार के बखेड़े में क्या रखा है ? स्वामी जी मुस्कराकर बोले, "साधु जी, शास्त्रीय प्रवृत्ति प्रजा प्रेम से प्रेरित होकर सबको करना उचित है।"

साधु जी बोले, 'प्रजा प्रेम का नया बखेड़ा क्यों गले में डालते हो ? आत्मा से प्रेम करो, जिसका वर्णन श्रुतियां कर रही हैं।" स्वामी जी ने पूछा, 'महात्मन्, क्या आप सर्वव्यापी घट-घट के साक्षी आत्मा से प्रेम करते हैं ?" उसने उत्तर दिया, 'हाँ, करता हूँ।" महाराज गम्भीरतापूर्वक बोले, "नहीं, आप उस आत्मा से प्रेम नहीं करते। आप को अपनी भिक्षा की चिन्ता है, अपने वस्त्र उज्ज्वल बनाने का ध्यान है, अपने भरण पोषण ही का विचार है। क्या आप ने अपने उन बन्धुओं का भी कभी चिन्तन किया है जो आप ही के देश में लाखों की संख्या में भूख की चिता पर पड़े रात-दिन, बारहों महीने भीतर ही भीतर जल कर राख हो रहे हैं ? आपके देश में सहस्रों मनुष्य ऐसे हैं जिन्हें उदर भर कर खाने को अन्न नहीं जुटता। उन के तन पर सड़े गले, मैले-कुचैले चिथड़े लिपट रहे हैं। लाखों निर्धन दीन ग्रामीण भेड़ों और भैंसों की भाँति गन्दे कीचड और कूडे के ढेरों से घिरे हुए सड़े गले झोंपडों में लोटते हुए अपने जीवन के दिन काट रहे हैं। ऐसे कितने ही दीन-दुखिया भारतवासी हैं, जिनकी सार-संभार कोई भूले भटके भी नहीं लेता। बहुतेरे कुसमय में ही, राजमार्गों पर पड़े पांव पीटकर मर जाते हैं। परन्तु उनकी बात तक कोई पूछने वाला नहीं मिलता। महात्मन्, यदि आत्मा से, विराट् आत्मा से प्रेम करना है तो अपने अंगों की भाँति सबको अपनाना होगा। अपनी क्षुधा निवृत्ति की तरह उनकी भी चिन्ता करनी पड़ेगी। सच्चा परमात्म-प्रेमी तो किसी से घृणा नहीं करता। वह ऊंच-नीच की भेद-भावना को त्याग देता है। वह अपने ही पुरुषार्थ से दूसरों के दुःख निवारण करता है, कष्ट क्लेश काटता है, जितने से कि बने। ऐसे ज्ञानी जन ही, वास्तव में, आत्म-प्रेमी कहलाने के अधिकारी हैं।" यह उपकारमय उपदेश सुन कर साधु जी श्री चरणों में पड़कर धन्यवाद करने लग गए।

: ४ :

जनक भोग में लिप्त रहता था। जनक सो रहा था। उसने स्वप्न देखा शत्रु की प्रबल सेनाओं ने उस की राजधानी मिथिला पर आक्रमण कर दिया। अन्त में शत्रु की विजय हुई और जनक की पराजय। बन्दी बनाकर जनक को विजेता राजा के सामने प्रस्तुत किया गया। विजेता ने आदेश दिया, या तो जनक बिल्कुल नंगा होकर अपनी राजधानी के बीच से गुजरता हुआ अपने राज्य की सीमा से बाहर हो जाए अन्यथा उस का वध किया जाए। प्रथम विकल्प को स्वीकार कर, जनक नितान्त नग्नकाय, जनकपुरी से गुजरते हुए, मिथिला पुरी से बाहर एक वृक्ष के नीचे खड़ा होकर अपनी दुरवस्था पर विलाप करने लगा, सुबक-सुबक कर रोने लगा।

रानी ने जनक को जगाया। जनक हड़बड़ाकर बैठ गया और उस ने रानी को अपना स्वप्न सुनाया। रानी बोली, "राजन् !" जब तक आप निद्रावस्था में थे तब तक कुछ क्षणों के स्वप्न की वे अयथार्थ घटनायें यथार्थ प्रतीत हो रही थीं। आंख खुलने पर आपको पता पड़ा कि वे क्षणिक, अवास्तविक घटनायें थीं। स्वप्न में जिस प्रकार आप जागृतवत् अपनी हीनावस्था पर शोकातुर हो रहे थे, कहीं जागृति सी प्रतीत होने वाली, यह राजावस्था भी वैसी ही तो नहीं है ? राजन् ! जागृति समझकर आप जो कुछ कर रहे हैं यह सब भी स्वप्नवत् अयथार्थ है। पर इस की प्रतीति आपको तभी होगी जब आप सौ वर्ष के जीवनस्वप्न की समाप्ति पर आत्मजागरण को प्राप्त होंगे।"

जनक ने सुना, स्वप्न और जागृति की इस भूल-भुलैयां पर विचार किया, समझा और उसी क्षण से वह जनक से "जनक विदेह" बन गया। भोगी योगी बन गया। ●

स्वामी दयानन्द : एक संन्यासी योद्धा

—श्री मदन गोपाल
अनुवादक : डॉ० धर्मपाल आर्य

१९५० के मध्य में जब प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की शताब्दी मनाये जाने की योजना बन रही थी, उस समय एक वैदिक विद्वान् ने १८५७ के संदर्भ से सम्बन्धित लेखों का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि महर्षि दयानन्द सरस्वती (१८२५-८३) ने इस १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में बड़ा ही सक्रिय योगदान दिया था। इन विद्वान् का नाम है—स्वामी वेदानन्द सरस्वती, जिन्होंने १९५४ में स्वामी विरजानंद की जीवनी लिखी। इसमें उन्होंने कहा है, कि १८५५ में स्वामी पूर्णानन्द ने महर्षि दयानन्द को धार्मिक कार्यों की प्रेरणा देने के साथ साथ यह परामर्श दिया था कि वह मथुरा में प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानंद जी महाराज से मिलें। स्वामी दयानन्द ने मथुरा जाने के बजाय मध्य भारत में भ्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। यह वही स्थान थे जहाँ पर बाद में ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध विद्रोह हुआ। स्वामी वेदानंद ने लिखा है कि यह विचारधारा सम्भवतः लोगों को सही न लगे, पर इसको एकदम गलत भी नहीं कहा जा सकता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया था अथवा नहीं, यह आर्यसमाज के क्षेत्र में विवाद का विषय है। इस विषय पर कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हुई कुछ लोग इस विचारधारा का विरोध करते हैं कि कि स्वामी दयानन्द ने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया था, जबकि कुछ दूसरे इस विचारधारा का पूर्णतया समर्थन करते हैं। जो लोग यह कहते हैं कि स्वामी दयानन्द ने इस संग्राम में भाग नहीं लिया था। उनकी दलील यह है कि १८७० तक दयानन्द केवल धार्मिक कार्यों से सम्बन्धित रहे और उन्होंने स्वयं को राजनीति से दूर रखा। इस विचारधारा को इस आधार पर सही नहीं माना जा सकता कि उस समय स्वामी दयानन्द की आयु ३२ वर्ष थी। और यह एक ऐसी आयु है जब व्यक्ति की भावनाएं और विचारधारा विद्रोहात्मक होती है। और ऐसे मामलों में सक्रिय भाग लेने की व्यक्ति की रुचि होती है। यह बात एक और तथ्य से सिद्ध हो जाती है कि बाद के वर्षों में महर्षि दयानंद ने स्वदेशी राज्य और स्वराज्य की बात को प्रचारित किया है उन्होंने नमक कर का भी विरोध किया था। उन्होंने राष्ट्रीय भाषा की बात कही थी, उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल दिया तथा अस्पृश्यता का विरोध किया। इनसे यह स्पष्ट है कि भले ही वह धार्मिक नेता थे पर वह राजनीति से अछूते नहीं थे। वस्तुतः वह दूरदृष्टि वाले व्यक्ति थे, उनकी विचारधारा ने बाद में चलकर महात्मा गांधी के लिए भी दिशा निर्देशन का कार्य किया उस समय विदेशी राज्य का विरोध हो रहा था और दयानन्द जैसा व्यक्ति इस विचारधारा से अप्रभावित नहीं रह सका।

महर्षि दयानन्द के प्रारम्भिक जीवन संबंधी हमारा ज्ञान उनके उस भाषण पर आधारित है, जो उन्होंने १८७५ में पूना में दिया था और बाद में अन्य १४ भाषणों सहित मराठी में छपा था।

महर्षि दयानन्द ने अपनी जीवनी से सम्बन्धित ३ लेख हिन्दी में लिखवाये थे। इन लेखों के लिए १८७९ में थियोसोफिस्ट सोसायटी के अध्यक्ष कर्नल एच० एस० अलकाट ने प्रार्थना की थी। यह लेख अंग्रेजी में अनूदित किये गये और सोसायटी के पत्र थियोसोफिस्ट के अक्तूबर १८७९, दिसम्बर १८७९ और नवम्बर १८८० में प्रकाशित हुए थे। सम्भवतः महर्षि दयानन्द अपनी जीवनी को धारावाहिक रूप से लिखते, पर इसे बन्द कर दिया गया क्योंकि उनके थियोसोफिस्ट सोसायटी से बाद में चलकर सम्बन्ध खराब हो गये थे।

यह कहा जाता है कि महर्षि दयानन्द अप्रैल १८५६ से कानपुर इलाहाबाद के निकट क्षेत्रों में देखे गये। वह जनवरी, फरवरी १८५७ में इलाहाबाद में थे और मार्च १८५७ में गढ़मुक्तेश्वर में मार्च २६, १८५७ से नवम्बर १८६० तक यह कहा जाता है कि वह नर्मदा के किनारे-किनारे इसके स्रोत अमरकन्टक तक गये। १८६० में वे स्वामी विरजानन्द के पास पहुंचे थे। मार्च १८५७ से नवम्बर १८६० तक की स्वामी दयानन्द की चुप्पी ने विद्वानों के अंदर यह उत्सुकता जागृत की और उन्हें यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि वे १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम से सम्बन्धित थे।

उन्नीस वर्ष पश्चात् स्वामी वेदानंद सरस्वती ने अपनी पुस्तक का दूसरा संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण प्रकाशित कराया। इसमें उन्होंने श्री मीर मुश्ताक के फारसी में लिखे हुए सर्वखाप पंचायत के निर्णयों को परिशिष्ट के रूप में दिया। इसमें उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि स्वामी जी स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग ले रहे थे। सर्वखाप पंचायत का मुख्य कार्यालय सोरम मुजफ्फरनगर में था। इस पंचायत में मथुरा से प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानंद को भी बुलाया गया था। उन्होंने चुने हुए लोगों की इस बैठक में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता कैसे प्राप्त करें इस विषय पर परामर्श दिया था। लगभग इसी समय सत्यप्रिय शास्त्री की भारतीय स्वतन्त्रता के संग्राम में आर्यसमाज का योगदान प्रकाशित हुई थी। इसमें उन्होंने दयानन्द के योगदान की बात लिखी है। श्री पिण्डी दास ज्ञानी ने भी १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में स्वराज्य प्रवर्तक महर्षि दयानंद का क्रियात्मक योगदान प्रकाशित कराया।

१९७० में पण्डित दीनबन्धु "योगी का आत्मचरित्र" ३८ वर्षों का अज्ञात जीवन प्रकाशित हुआ इसमें यह दावा किया गया है कि महर्षि दयानन्द ने १८५७ के युद्ध में भाग लिया था। यह महर्षि दयानंद के उन आत्मचरित्रात्मक टिप्पणियों पर आधारित है जो उन्होंने अपने दर्जनों प्रशंसकों को बंगाल प्रवास के समय लिखाई थी। उन्होंने यह भी कहा था कि यह सब उनके जीवन काल में प्रकाशित नहीं होना चाहिए। यह टिप्पणियां बंगाली भाषा में लिखी हुई थीं और श्री दीनबन्धु ने यह दावा किया है कि उन्होंने इन सब टिप्पणियों को खोज निकाला है।

इस विवरण के अनुसार १८५५ में दयानन्द ने माउंट आबू से हरिद्वार के लिए अपनी यात्रा प्रारम्भ की। वे अजमेर, जयपुर, दिल्ली, मेरठ होते हुए गये। वह जहाँ भी कहीं ठहरे बाजार में, धर्मशाला में, स्नान घाट पर अथवा मन्दिर में उन्होंने सब जगह यही पाया कि लोग कह रहे थे कि अंग्रेज भारत को राहु और केतु की तरह ग्रस रहे हैं। दिल्ली में एक युवा ने साधुओं पर कटाक्ष करते हुए कहा कि यह लोग भारत की दशा को देखते हुए भी केवल अच्छे भोजन और अच्छे रहन सहन में ही रुचि रखते हैं। दयानन्द को बाद में पता लगा कि वह युवा व्यक्ति हाथरस के जिम्मीदार दयाराम का पौत्र था, जो अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई में मारा गया था और जो क्रान्तिकारी राजा महेन्द्रसिंह का पूर्वज ने था। दिल्ली में लालकिला के सामने एक महाराष्ट्रीयन साधु ने दयानन्द को सलाह दी कि वह हरिद्वार में जाकर अपने आपको पवित्र करें तथा देश की रक्षा के लिए कार्य करें। उस साधु ने बताया कि वह भी उन सैकड़ों साधुओं में से एक है जो इसी उद्देश्य को लेकर सारे देश में घूम रहे हैं। बाद में २५० साधु दिल्ली से मेरठ, बैरकपुर और वैलूर की ओर गये। इन गतिविधियों के लिए केन्द्रीय व्यक्ति दिल्ली के जोगमाया मन्दिर का एक पुजारी त्रिशूल बाबा था। यह साधु अपने हाथ में कमल का प्रतीक लेकर चल रहे थे और साधारण लोगों के बीच में रोटियां लेकर चलते थे। इस विद्रोह के लिए मई ३१ निश्चित की गयी थी पर दुर्भाग्यवश मंगल पाण्डे ने समय से पूर्व २१ मार्च को अपनी कार्यवाहियां प्रारम्भ कर दी थी।

उपर्युक्त टिप्पणियों से यह भी पता लगता है कि वैष्णव लोगों ने इस कार्य में साधुओं के सहयोग का विरोध किया था। उनका कहना था कि मंदिर देवताओं के स्थान हैं। यहां पर केवल देवताओं की पूजा होनी चाहिए। किसी देश, समाज अथवा राष्ट्र की नहीं।

पुनः हरिद्वार में दयानन्द ऐसे लोगों के सम्पर्क में आये जिन्होंने १८५७ के संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बाद में हार के पश्चात् कुछ नेताओं ने नेपाल में शरण लेने का प्रयास किया था, जहां उनको शरण नहीं मिल सकी थी। दया-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सुखशान्ति का मार्ग

—डॉ० रवि दत्त शर्मा आचार्य
सबलपुर, पो० टांडा अफजल, जि० मुरादाबाद २४४६०१

मनुष्य जीवन को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। संसार में प्रत्येक वस्तु का मूल्य निर्धारित है परन्तु मनुष्य अनमोल है। इसी स्वाभिमान से वह अपने आप में फूला-फूला फिरता है, सम्भवत. उसे यह पता नही कि तीन प्रकार के दुःख हर समय घेरे हुए हैं। इन दुःखों मे से एक-एक का अलग-अलग भी आक्रमण सम्भव है और एक साथ भी। चरम सीमा पर पहुंचा हुआ तो एक दुःख भी विक्षिप्त कर देता है, फिर संयुक्त आक्रमण का तो कहना ही क्या? ये तीन दुःख हैं—आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक।

१ आध्यात्मिक दुःख—यह शारीरिक और मानसिक भेद से दो प्रकार का होता है, क्योंकि आत्मा का सम्बन्ध शरीर व मन दोनो से है। वात, पित्त, कफ आदि के कुपित होने पर शारीरिक दुःख उत्पन्न होता है तथा काम क्रोध, लोभ, मोह मद, मात्सर्य, ईर्ष्या, द्वेष, भय एवं अभीष्ट विषयों की अप्राप्ति से होने वाले दुःख मानसिक कहे जाते हैं।

२. आधिभौतिक दुःख—हिंसक जीवों, चोर डाकुओं तथा शत्रुओं से होने वाला दुःख आधिभौतिक कहलाता है। इसका सम्बन्ध सांसारिक प्राणियों से है। किसी के द्वारा कोई भी हानि हो जाए, वह आधिभौतिक दुःख के अन्तर्गत समाविष्ट होगी। पारिवारिक कलह तथा न्यायालय द्वारा घोषित दण्ड आदि भी इसी श्रेणी में आते हैं।

३. आधिदैविक दुःख—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, ओलावृष्टि, शीत, ताप, अग्निदाह, आंधी-तूफान एवं भूकम्प आदि को आधिदैविक दुःख कहा जाता है।

इन दुःखों से छुटकारा पाने के लिए मनुष्य अपनी ओर से पूर्ण प्रयत्नशील है। बढ़ते हुए विज्ञान से भी इस कार्य मे बहुत सहयोग मिला है, शत्रु से बचने के लिए नित्य नये शस्त्रास्त्रों का निर्माण हो रहा है। आज बारूद एक खिलौना बन गई है। शारीरिक दुःख की निवृत्ति के लिए आयुर्वेद की शरण लेकर नयी से नयी औषधि की खोज हो रही है। दैवी आपदाओं से बचने के लिए वृक्षारोपण बांध आदि की योजनाएं अपनाई जा रही हैं। मानसिक व्यथा से बचने के लिए भांति-भांति के मनोरंजन साधन सुलभ किए जा रहे हैं।

दुःखों के विनाश के लिए जितने अधिक उपाय किए जा रहे हैं, उतने ही कष्ट अधिक बढ़ते जा रहे हैं। चिकित्सालय-चिकित्सक आदि में वृद्धि हो रही है, इसके विपरीत रोग ऐसे उत्पन्न हो रहे हैं जो कि चिकित्सक की जानकारी के बाहर हैं। शत्रुशमन का उपाय तो सूझा परन्तु शत्रुता ने हृदयों में अपना स्थान बना लिया, शस्त्र शत्रु पर तो चल सकता है, परन्तु शत्रुता का कोई उपचार प्रतीत नही होता। बांध इसलिए बनाए गए थे कि बाढ़ पर नियन्त्रण हो सके और सूखे का मुकाबला किया जा सके अर्थात् अनावृष्टि से फसल सूखने न पावे फिर भी दोनों ही आपत्तियाँ सता रही हैं। जहां बाढ़ आ रही है, असीम धन जन की हानि हो रही है और जहां सूखा पड रहा है, वहाँ कृषि का व्यवसाय ठप्प हो रहा है।

किन्तु क्या निराश होकर निष्क्रिय बैठे रहें? कदापि नहीं, क्योंकि जो वास्तविक उपाय है, उस तक अभी हम पहुंचे ही नहीं। इस दिशा में महर्षि दयानन्द ने अथक परिश्रम करके एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिस को चला कर निश्चित रूप से सदा के लिए दुःखों से मुक्त हुआ जा सकता है। वह उपचार वेद सम्मत है जिसे भूल से घृणा का स्थान समझा जाता रहा है। आध्यात्मिक अर्थात् शारीरिक व मानसिक कष्टों से बचने के लिए ब्रह्मचर्य और तप ही सबसे बड़े साधन हैं। यदि यह अनुष्ठान भली-भांति पूर्ण कर लिया जाए तो रोग तो क्या मृत्यु को भी जीतना असम्भव नहीं। रोग कब होगा? जब किसी अंग में कमजोरी आ जाएगी, बल का अभाव होगा। उस सामर्थ्य को बनाए रखने के लिए ही ब्रह्मचर्य की रक्षा का विधान है। पातञ्जल योगदर्शन में एक सूत्र के द्वारा यही स्पष्ट किया गया है—"ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः।" ब्रह्मचर्य सिद्ध होने पर बल की प्राप्ति होती है। वेद में यह घोषणा की गई है कि कोई शक्ति का कार्य ब्रह्मचर्य के बल पर ही सम्भव है और ब्रह्मचर्य का बल रहते कोई भी कार्य असम्भव नहीं है। मनुष्य असमर्थता का अनुभव तब ही करता है जब कि ब्रह्मचर्य का पालन न हो रहा हो। अतः ब्रह्मचर्य पालन पर विशेष ध्यान दिया जाए—

ब्रह्मचर्येण तपसा
राजा राष्ट्रं विरक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण
ब्रह्मचारिणमिच्छते॥
अथर्व० ११।३।१७

ब्रह्मचर्येण तपसा
देवा मृत्युमुपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण
देवेभ्यः स्वराभरत्॥
अथर्व० ११।३।१९

राजा अपने राष्ट्र की रक्षा ब्रह्मचर्य के द्वारा ही कर सकता है और ब्रह्मचर्य की शक्ति रहने पर आचार्य अर्थात् गुरु अपने शिष्य का निर्माण कर सकता है। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से ही विद्वान् जन मृत्यु को जीत कर दीर्घायु प्राप्त करते हैं और ईश्वर ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों को ही सम्पूर्ण सुख प्रदान करता है।

दूसरे प्रकार के आधिभौतिक दुःख हैं जो समाज की विकृति के कारण उत्पन्न होते हैं। मनुष्य को मनुष्य से कष्ट तब होता है जबकि मनमुटाव हो। इसके लिए समाज को शक्तिशाली बनाया जाये और स्वार्थ, राग, द्वेष आदि को समाप्त किया जावे। वेद का आदेश है कि आपत्ति में एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की रक्षा करे "पुमान् पुमांस परिपातु विश्वतः।" इसके लिए एकता ही सबसे बड़ा सूत्र है। एकता के लिए समान विचारधारा आवश्यक है—"समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।" एकता का सही रूप लाने के लिए ऋषि ने आर्यसमाज की स्थापना की। इसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व को भी एक सूत्र में बांधा जा सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई कारगर उपाय नहीं है। यह एक ज्वलन्त उदाहरण है कि आर्यसमाज से सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति आज तक देशद्रोही, चोर, डाकू या समाज विध्वंसक नहीं हुआ। आज जो विनाशलीला हो रही है, उस में विभिन्न मतों एवं पन्थों का योगदान है जो कि विश्व शान्ति को भंग करने के लिए निरन्तर सक्रिय हैं। एकता को चाहने वाले सज्जन आर्यसमाज के कार्यक्रम पर ध्यान दें और उसे अपनावें तो सभी भय से मुक्त हो सकते हैं।

तीसरा आधिदैविक दुःख है। इस विषय में देवयज्ञ के द्वारा ही सफलता मिल सकती है। यज्ञ के द्वारा दैवी शक्तियों को अनुकूल बनाया जा सकता है। प्राचीन ऋषि-मुनि प्रकृति के अनुकूल रहकर सर्वदा सुख का अनुभव करते थे। मनुष्य प्रकृति के जितना ही निकट रहेगा, उतना ही सुखी रहेगा। यज्ञ के द्वारा अग्नि वायु आदि सभी दैवी शक्तियों को पुष्ट किया जाता है और उनके द्वारा सृष्टि को जो भी मिलता है, वह सुख का हेतु है। वेद में बताया गया है "अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः" यदि मनुष्य आधार को ही छोड़ देगा तो सृष्टि में रहना ही कठिन होगा। यज्ञ सम्पूर्ण शक्तियों का स्रोत है, जो लोग दक्षतापूर्वक श्रद्धा से यज्ञ करते हैं वे परमेश्वर की मैत्री के साथ-साथ अमृत को प्राप्त करते हैं "ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता इन्द्रस्य सख्यममृतत्वमानश।" ऋ० १०।६२।१। इस वेदवाक्य के अनुसार असीम ऐश्वर्य प्राप्त किया जा सकता है जिस को अमृतत्व कहते हैं।

इस प्रकार वेद के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर सभी प्रकार के दुःखों से मुक्ति प्राप्त हो सकती है। व्यवहार मे उपरोक्त प्रक्रियाओं को अपनाने से लक्ष्य की सिद्धि निश्चित है। ब्रह्मचर्य का पालन, सामाजिक संगठन तथा यज्ञ का अनुष्ठान, इन तीनो कार्यक्रमों को अपना कर त्रिविध दुःखों की ऐकान्तिक तथा आत्यन्तिक निवृत्ति निश्चित है।

राष्ट्रीय एकता और धर्म निरपेक्षता

ले०—डॉ० भवानी लाल भारतीय

आज हमारे राष्ट्र नेता इस देश को उस गुलदस्ते की उपमा देते हैं जिस में विभिन्न धर्मों भाषाओं, संस्कृतियों तथा विचारों के फूल सजे हुए हैं। अनेकता में एकता की बात भी कही जाती है तथा यह भी कहा जाता है कि इस देश में सभी प्रकार प्रकार के धर्म, मत, पन्थ, भाषा, संस्कृति तथा जीवन प्रणालियों के मानने वाले लोग बसते हैं तथा उन का भिन्न-भिन्न भाषाओं, संस्कृतियों तथा विचार प्रणालियों को फलने-फूलने तथा पनपने एवं विकसित होने का पूरा अवसर दिया जायेगा। यह बात कहने में जितनी सरल और आपातरमणीय लगती है, वस्तु-स्थिति इसके विपरीत ही है। हम यह तो मानते हैं कि इस देश में नाना धर्मों और मत पन्थों के मानने वाले लोग निवास करते हैं और प्रत्येक को आस्था के अनुकूल उपासना प्रणाली को चुनने का पूर्ण अधिकार है, किन्तु हम उससे एक कदम आगे बढ़कर यह कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाते कि धर्म और मत के नाम पर देश को विखण्डित करने की किसी भी चेष्टा को निर्मूल कर दिया जाएगा। हमारे देश में बोली जाने वाली सभी भाषाओं के विकास पर तो जोर देते हैं किन्तु हमारे शासकों में यह कहने का साहस नहीं है कि देश की एक सामान्य राष्ट्रभाषा को उसके पद और गौरव से च्युत करने की किसी भी साजिश को नाकाम कर दिया जायेगा। हम देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित नृत्य, संगीत, कला और साहित्य की विविधता को देख कर देश में व्याप्त अनेकता की बात तो करते हैं तथा इस अनेकता को यथावत् रखने की प्रतिज्ञा भी करते हैं, किन्तु इस देश के सत्तर करोड निवासियों में उस एकता के तन्तु को तलाशने का प्रयत्न नहीं करते जिसके कारण काश्मीर से कन्याकुमारी तथा गुजरात से असम तक विस्तृत इस विशाल भूभाग का प्रत्येक नागरिक अपने आप को भारतवासी कहता है। इस विशाल और पुरातन राष्ट्र की एकता की बुनियाद जिन सांस्कृतिक तत्वों में निहित है उन्हें पहचानने और मजबूत करने की अपेक्षा हम नागालैण्ड, मिजो, गोआ, असम, तमिलनाडु आदि भिन्न भिन्न प्रान्तों की पृथक्-पृथक् संस्कृतियों का गौरवगान करने लग जाते हैं और इन प्रान्तों के निवासियों को महान् भारत राष्ट्र का नागरिक समझने के महत्व पर जोर डालने का यत्न नहीं करते।

हमारे कथन का यह अभिप्राय नहीं है कि क्षेत्रीय भाषाओं जीवन पद्धतियों तथा वहां की कला एवं संस्कृति के विकास का राष्ट्रीय एकता के साथ कोई मौलिक विरोध है। यदि पंजाब में पंजाबी भाषा और साहित्य का विकास होता है, वहां के नर-नारी गिद्धा और भांगड़ा नृत्यों के द्वारा अपना मनोरंजन करते हैं तो देश के अन्य राज्यों के निवासियों को इस में क्या आपत्ति है किन्तु यदि वहां के निवासी एक पृथक् राज्य की मांग करें, यहां किसी सम्प्रदाय विशेष का ही प्रभुत्व होने का स्वप्न संजोया गया हो, तो उसे देश के व्यापक हित में कैसे सहन किया जा सकता है। मिजो लोग यदि ईसाई धर्म का पालन करें और चर्च में जाकर खुदावन्द ईसा मसीह को याद करें तो देश के बहुमत को कोई आपत्ति नहीं, किन्तु यदि इन चर्चों में विदेशी पादरी भारत राष्ट्र को दुर्बल बनाने के षड्यन्त्र करें और विद्रोही लोगों को पड़ोसी देशों से सहायता लेकर देश को छिन्न-भिन्न करने की बात करें तो उन की इन कार्यवाहियों को राष्ट्रविरोधी ही माना जाएगा। तमिलनाडु अपने सरकारी कामकाज तथा शिक्षा में तमिल भाषा का प्रयोग करे तो इस पर आपत्ति करने का कोई प्रश्न ही नहीं है, किन्तु देश के संविधान द्वारा स्वीकृत राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बन्द कराने के लिए यदि कोई भावुक तमिल युवक आत्मदाह करता है तो उसे शहीद का दर्जा कैसे दिया जा सकता है।

सच तो यह है कि हमारे संविधान निर्माताओं ने 'धर्म निरपेक्षता' को जिस अर्थ में समझा था, उसे उसी अर्थ में हम समझने में आनाकानी कर रहे हैं। संविधान में धर्म-निरपेक्षता का अभिप्राय राज्य के 'सम्प्रदायनिर्लिप्त' होने से लिया गया था। आज हमारे शासक अधिक से अधिक साम्प्रदायिक गतिविधियों में लिप्त होने को ही अपनी लोकप्रियता की कसौटी मानते हैं। तभी तो मुसलमान फकीरों की कब्रों पर हमारे मन्त्रीगण चादर चढ़ाते हैं, गुरुद्वारों में जाकर मत्था टेकते हैं, मन्दिरों और मठों में पूजा करते और आचार्यों का प्रसाद ग्रहण करते हैं, कैथोलिक सम्प्रदाय के पोप का राष्ट्रीय स्तर पर स्वागत करते हैं, मस्जिदों, ईदगाहों पर ईद, क्रिसमस, सूफी-सन्तों के उर्स आदि पर भाग लेते हैं, कृष्ण जन्माष्टमी पर मथुरा और वृन्दावन की रामलीला आदि के दृश्य प्रदर्शित करते हैं और यह सब कुछ करके भी वह यह चाहते हैं कि भारत का धर्म निरपेक्ष राष्ट्र माना जाए। हमारे कथन का यह अर्थ नहीं कि कोई भी मन्त्री या शासक व्यक्तिशः किसी धर्म स्थान पर न जाये या किसी प्रकार की पूजा उपासना में व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित न हो। आपत्ति तो तब होती है जब साम्प्रदायिक तुष्टीकरण के लिए मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजों और गुरुद्वारों के प्रति सरकारी रूप से श्रद्धा प्रकट की जाती है, केवल इन धर्म स्थानों पर एकत्र होने वाली भीड़ को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए।

भारत में साम्प्रदायिकता के प्रसार का एक प्रमुख कारण यह भी है कि हमारे राजनीतिज्ञों ने बहुमत और अल्पमत की त्रुटिपूर्ण तथा सिद्धान्तहीन धारणाओं को लोगों में अत्यन्त उग्र रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है। जब संविधान ने प्रत्येक नागरिक को सभी प्रकार के अधिकार समान रूप से प्रदान किए हैं तो बहुमत और अल्पमत के आधार पर एक वर्ग के साथ विशेष पक्षपात करने अथवा दूसरे वर्ग की उपेक्षा करने का औचित्य ही नहीं रहेगा। देखा जाये तो 'धार्मिक दृष्टि से अल्पमत' के सिद्धान्त को स्वीकार

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हमारे देश में ज्यों-ज्यों विघटनकारी शक्तियां अधिक बलवती होती जाती हैं, त्यों-त्यों राष्ट्रीय एकता की आवाज वातावरण में अधिक शक्ति के साथ गूंजने लगती है। किसी भी सांप्रदायिक उपद्रव अथवा अन्य प्रकार के हिंसात्मक काण्ड के पश्चात् राष्ट्रीय एकता की रस्मी बैठक आयोजित की जाती है जिस में शासक दल, विरोधी दल तथा कुछ पत्रकार किस्म के व्यक्ति मिल बैठकर लम्बी चौड़ी तकरीरें करते हैं, साम्प्रदायिकता को तिलांजलि देने की कसमें खाते हैं और सभा की समाप्ति के पश्चात् अपनी उन्हीं पुरानी हरकतों को करने लगते हैं जिन से राष्ट्रीय एकता को हानि ही पहुंचती है। समस्या की जड़ तक जाने का कोई प्रयास नहीं किया जाता और वृक्ष को जड़ को सींचने की अपेक्षा उस की डालों को ही पानी से सींचने की चेष्टा की जाती है।

इधर पंजाब की भयंकर समस्या बंगाल में गोरखालैण्ड की मांग, काश्मीर में इस्लामी मोर्चे की गतिविधियों तथा बिहार में पृथक् झारखण्ड की मांग जैसी विध्वंसात्मक कार्यवाहियों को उभरता हुआ देख कर राजनीति को धर्म से पृथक् करने की बात की जाती है। देश के नेता इस प्रश्न पर एक राष्ट्रीय बहस कराना चाहते हैं, परन्तु वे स्वयं इस बात को लेकर स्पष्ट नहीं हैं कि क्या वे सचमुच धर्म को राजनीति से पृथक् करना चाहते हैं, या केवल इसे एक प्रचार का मुद्दा बनाये रखना चाहते हैं। वस्तुतः राष्ट्रीय एकता का सवाल किसी भी राष्ट्र के लिए सर्वोपरि महत्त्व का होता है और इसे लेकर किसी भी सम्प्रदाय, दल या वर्ग से समझौता करना घातक हो सकता है। जब महर्षि दयानन्द से राष्ट्रीय एकता की व्यावहारिकता या सम्भाव्यता को लेकर उदयपुर के प० मोहन लाल विष्णु लाल पण्डया ने प्रश्न पूछा था तो दूरदर्शी ऋषि का उत्तर स्पष्ट था—जब तक इस देश के सभी लोग एक ही प्रकार के भाव और विचार नहीं रखेंगे, जब तक इस देश के निवासियों की भाषा, वेशभूषा और अभिव्यक्ति एक-सी नहीं होगी अथवा जब तक समस्त देशवासी राष्ट्र की सामान्य जीवनधारा में बहना नहीं सीखेंगे तब तक भारत की एकता असम्भव ही है। महर्षि दयानन्द का १०५ वर्ष पूर्व कहा गया यह कथन आज भी उतना ही सार्थक है जितना उस समय था।

राष्ट्रीय एकता...

(पृष्ठ ५ का शेष)

करना धर्म निरपेक्षता पर कुठाराघात करना है। यदि भारत के १० करोड़ मुसलमान इस्लाम की रीति नीति के अनुसार एक अल्लाह की उपासना करते हैं और पैगम्बर साहब पर ईमान लाते हैं तो इस बात का क्या औचित्य है कि सरकारी नौकरियों में उनके लिए स्थान सुरक्षित किए जायें, मेडिकल और इंजीनियरिंग कालेजों में उनके प्रवेश को आरक्षित किया जाये अथवा उनकी मस्जिदों और खानकाहों की मरम्मत के लिए सरकारी धन उपलब्ध कराया जाए। यदि धार्मिक आधार पर ही अल्पमतों को सरक्षण देना है तो कुछ लाख पारसी लोग ही इन अधिकारों को पाने के सच्चे पात्र हैं, १० करोड़ की भारी भरकम आबादी वाले मुसलमान किस प्रकार 'अल्प' कहला सकते हैं। और सबसे बड़ा आश्चर्य यही है कि निश्चय ही धार्मिक अल्पमत कहलाने वाले अग्निपूजक पारसी वर्ग के लोगों ने कभी सरकार से किसी भी प्रकार के सरक्षण या आरक्षण की मांग नहीं की। इस दृष्टि से वे ही सच्चे भारतीय नागरिक हैं जो साम्प्रदायिकता से कोसों दूर हैं और अपने मत का दृढ़ता से पालन करते हुए भी राष्ट्र के पुनर्निर्माण के कार्य में सर्वात्मना जुटे हुए हैं।

तथ्य यह है कि आज की राजनीति वोट जुटाने की राजनीति बन गई है। अल्पमत वालों से वोट प्राप्त करने के लिए उनकी जायज और नाजायज सभी प्रकार की मांगों को मान लिया जाता है और बहुमत की अवहेलना और उपेक्षा करके भी धार्मिक अल्पमतों को सन्तुष्ट करने की राष्ट्रघाती नीति अपनाई जाती है। प० जवाहर लाल नेहरू ने जब केरल में मुस्लिम लीग से गठबन्धन किया तो उन्हें झूठमूठ ही यह कहना पड़ा कि केरल की लीग जिन्ना की मुस्लिम लीग से भिन्न है, जबकि भारतीय मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना की विचारधारा को आज भी कट्टरता से अपनाए हुए हैं।

यदि राष्ट्रीय एकता को सचमुच सुदृढ बनाना है तो धर्म निरपेक्षता की नीति को बिना किसी भेदभाव और लागलपेट के अपनाना होगा। भारत के नागरिकों को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और सिख रूप में न पहचान कर मात्र भारतीय के रूप में स्वीकार करना होगा। धर्म व्यक्तिगत आचरण की वस्तु है। अतः धार्मिक मतवादों को राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा के मार्ग की बाधा नहीं बनने दिया जायेगा। किन्तु धर्म के मूलभूत तत्वों तथा नैतिक मूल्यों का तो राजनीति से कोई विरोध ही नहीं है। यदि राजनैतिक आचरण को नैतिकता पर आधारित करना है तो धर्म से उसको पृथक् करने की बात सोची ही नहीं जा सकती, किंतु यह धर्म मानव धर्म ही है, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और पारसी आदि मतों से उसका कोई संबंध नहीं है।

स्वामी दयानन्द...

(पृष्ठ ३ का शेष)

नाग धनुष कोटि, कन्याकुमारी और रामेश्वर भी गये जहां वह साधुओं के एक ऐसे वर्ग से मिले जिनका कहना था कि वह दिल्ली के जोगमाया मंदिर से आये हैं। दयानन्द ने उनमें से एक पहचान भी लिया था। यह नाना साहब थे। दयानन्द के कहने पर उसने सन्यास लिया और स्वामी दिव्यानन्द बनकर दयानन्द के राज्य मोरवी में गये जहां पर वह मृत्युपर्यन्त एक धनी व्यक्ति के साथ वेश बदल कर रहे। उनकी स्मृति में एक बहुत बड़ा स्मारक बनाया गया, जिसके लिए बिठूर के मंदिर से धन प्राप्त हुआ था।

दीनबन्धु का कहना है कि बंगाली भाषा में प्राप्त टिप्पणियों को पहले प्रकाशित नहीं किया जा सकता था और उन्हें १८८३ में दयानन्द की मृत्यु के पश्चात् भी इनको प्रकाशित नहीं किया जा सका क्योंकि सभी लेखक ब्रह्मसमाजी थे और वह सभी दयानन्द से द्वेष रखते थे। यह बात उल्लेखनीय है कि दयानन्द को ब्रह्मसमाजियों ने बंगाल में बुलाया था। जब दिसम्बर १८७३ में वह कलकत्ता में थे, तब वह देवेन्द्र नाथ टैगोर और केशव चन्द्र सेन से मिले। केशव चन्द्र सेन दयानन्द से बहुत अधिक प्रभावित हुआ और इच्छा प्रकट की कि यदि दयानन्द अंग्रेजी जानते तो वह उन्हें ब्रिटेन में ले जाते। दयानन्द ने कहा कि काश केशव चन्द्र सेन संस्कृत जानते और वह पश्चिम का अन्धानुकरण न करते। दयानन्द ने सेन की सलाह मानकर अपना सारा कार्य संस्कृत की जगह हिन्दी में करना शुरू कर दिया था।

बाद के वर्षों में दयानन्द और ब्रह्मसमाज में भेद इतने अधिक बढ गये थे कि ब्रह्मसमाजियों ने दयानन्द को लाहौर में बुलाया पर उनके भाषणों का बायकाट किया और दयानन्द के रहने की व्यवस्था भी एक एक मुस्लिम प्रशंसक के घर करनी पड़ी। यह भेद इतने ज्यादा बढ़े कि लाहौर में ब्रह्मसमाज के सस्थापक श्री दयालसिंह मजीठिया ने लिखा कि आर्यसमाज के सदस्यों को उनके ट्रस्ट तथा अन्य सस्थाओं से निकाल बाहर किया जाये।

फिर भी दयानन्द के बहुत से बंगाली प्रशंसक थे और यह उल्लेखनीय है कि दयानन्द की जीवनी लिखने वालों में देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय थे, जिन्होंने दयानन्द चरित्र (१८९६) आदर्श सुधारक दयानन्द और विरजानंद चरित्र लिखे। मुखोपाध्याय ने विभिन्न स्थानों की यात्रा करके ऐसी सामग्री एकत्रित की थी जो बाद के जीवनी लेखक श्री घासीराम के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। श्री घासीराम ने दयानन्द की जीवनी मुख्यतया मुखोपाध्याय और पं० लेखराम की उर्दू कृति पर आधारित की है। दीनबन्धु के इस दावे को कि दयानन्द के बंगाली प्रशंसकों ने कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणिया लिखी थी, इसको असम्भव नहीं माना जा सकता। उन्होंने बंगाली में जो इधर उधर टिप्पणियां उपलब्ध थीं उन्हीं के आधार पर दयानन्द की जीवनी लिख दी। १८५७ से १८६० तक के सम्बन्ध में दीनबन्धु का कहना है कि स्वामी जी जनवरी, फरवरी १८५७ में संबल और मुरादाबाद में थे और गढमुक्तेश्वर में मार्च १८५७ में थे। वह कानपुर जून ५ को पहुंचे। मसवकर घाट जून २२ को और कानपुर और इलाहाबाद के बीच में वह घूमते रहे। मई, जून, जुलाई १८५७ में वह मिरजापुर में थे। जुलाई में बिठूर में और सितम्बर में विन्ध्याचल में। नवम्बर में वह चन्दनगढ़ और बनारस में थे। उनका कहना है कि इसके बाद भी वह रीवा जिले में नर्मदा के स्रोत तक पहुंचे थे। रीवा में उस समय बघेल सरदार का राज्य था। रीवा की फौजों ने नवम्बर, दिसम्बर १८५७ में विद्रोह किया।

दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में मूर्ति पूजा के संबंध में लिखा है कि १८५७ में जब बघेल बिठूर के आसपास रहते थे, उन्होंने अंग्रेजों का विरोध किया और अंग्रेजों ने उनके मन्दिरों पर बम बरसाए। "तुम्हारी मूर्तियां बघेलों को बचाने के लिए उस समय क्या कर रही थीं। वह मक्खी भी नहीं मार सके।" दीनबन्धु का कहना है कि दयानन्द द्वारा यह विवरण ऐसा लगता है जैसे उनकी स्वय की साक्षी हो। उन्होंने यह भी कहा है कि दयानन्द लगभग उन्हीं स्थानों पर घूमे जहां पर उस समय या कुछ बाद में भीषण युद्ध हुआ। यह विवाद आज भी चल रहा है कि महर्षि दयानन्द ने स्वतन्त्रता संग्राम के उस प्रथम दौर में भाग लिया था अथवा नहीं। इस लेख में ऊपर दिए गए ऐतिहासिक तथ्य यह सिद्ध करते हैं कि दयानन्द ने इस पहली लड़ाई में सक्रिय योगदान दिया, उन्होंने लोगों को प्रेरणा दी तथा भले ही भारतीय इस पहली लड़ाई में हार गए हों पर उनके अन्दर एक ऐसा विश्वास जागृत हो गया था कि वह अंग्रेजों को अवश्य उखाड़ फेंकेंगे। दयानन्द ने सर्वत्र स्वराज्य को ही अच्छा बताया और बाद में हमें स्वराज्य मिला भी। महात्मा गांधी को मार्ग दिखाने वाले वस्तुतः दयानन्द ही थे।

(स्टेट्समैन, ६ जून १९८५)

मेधावी छात्र

श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर, नई दिल्ली-४९ के मेधावी स्नातक श्री धर्मेन्द्र कुमार आत्मज श्री रामभाऊ जी 'आर्य' निमखेड़ बाजार, जि० अमरावती (महाराष्ट्र) निवासी ने दिल्ली विश्वविद्यालय की स्नातकोत्तर एम० ए० (सस्कृत) परीक्षा में सर्वोच्च ७७% अंक लेकर इस विद्यालय के साथ-साथ दिल्ली विश्वविद्यालय को भी गौरवान्वित किया।

इसलिए 'दीक्षान्त समारोह' में विश्वविद्यालय की ओर से आपको स्वर्णपदक से सम्मानित किया जाएगा। वैसे भी आप सम्पूर्ण सामवेद कण्ठस्थ कर एवं अन्य अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में भी अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

हरिदेव आचार्य
आचार्य
श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय
११९ गौतम नगर, नई दिल्ली-४९

मेधावी छात्र

श्रीमद्दयानन्द वेदविद्यालय ११९ गौतम नगर, नई दिल्ली-४९ के मेधावी छात्र श्री नरदेव यजुर्वेदी आत्मज श्री सागर नायक धउरामटा जि० सम्बलपुर (उडीसा) निवासी ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (शास्त्री विभाग) सर्वगुरुकुलीय स्नातक परीक्षा शास्त्री में सर्वोच्च अंक लेकर सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

आपने न केवल परीक्षा में ही सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया अपितु केवलमात्र १३ वर्ष की आयु में संपूर्ण 'यजुर्वेद' कण्ठस्थ कर आर्य जगत् में अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया।

भवदीय
हरिदेव आचार्य
आचार्य
श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय
११९ गौतमनगर, नई दिल्ली-४९

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य

कक्षा	पुस्तक	लेखक	मूल्य
कक्षा प्रथम	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम)		१.५०
कक्षा द्वितीय	नैतिक शिक्षा (भाग द्वितीय)		१.५०
कक्षा तृतीय	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२.००
कक्षा चतुर्थ	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ)		३.००
कक्षा पंचम	नैतिक शिक्षा (भाग पंचम)		३.००
कक्षा षष्ठ	नैतिक शिक्षा (भाग षष्ठ)		३.००
कक्षा सप्तम	नैतिक शिक्षा (भाग सप्तम)		३.००
कक्षा अष्टम	नैतिक शिक्षा (भाग अष्टम)		३.००
कक्षा नवम	नैतिक शिक्षा (भाग नवम)		३.००
कक्षा दश	नैतिक शिक्षा (भाग दश)		४.००
कक्षा ग्यारह	नैतिक शिक्षा (भाग ग्यारह)		४.००
कक्षा बारह	नैतिक शिक्षा (भाग बारह)		५.००
	धर्मवीर हकीकतराय	वैद्य गुरुदत्त	५.००
	फ्लैश आफ ट्रुथ (Flash of Truth)	डा० सत्यकाम वर्मा	२.००
	सत्यार्थप्रकाश सन्देश	" "	२.००
	एनाटोमी ऑफ वेदान्त	स्वा० विद्यानद सरस्वती	५.००
	आर्यों का आदि देश	" "	२.००
	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (सक्षिप्त)	प० सच्चिदानन्द शास्त्री	५.००
	सत्यार्थ सुधा	प० हरिदेव सि०भू०	२.००
	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)		५०/- रु० सैकड़ा
	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५०/- रु० सैकड़ा
	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५०/- रु० सैकड़ा
	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५०/- रु० सैकड़ा
	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका		५.००
	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्धशताब्दी स्मारिका		५.००
	माधव गीत उद्यान	स्वामी स्वरूपानद सरस्वती	३.५०
	ठुकराया वीर	" "	२.००
	सरल चिकित्सा भाग-१	" "	३.५०
	रोगों की सरल चिकित्सा भाग-२	" "	३.५०
	समय के मोती	" "	१०.००

वैदिक विचारधारानुकूल आधुनिक तर्जों से ओत-प्रोत, धार्मिक, प्रभु-भक्ति प्रेरक गीत, संस्कार पर्वों के नवीन गीत, कविताओं का अपूर्व संग्रह अवश्य पढ़ें।

नोट—उपरोक्त सभी पुस्तकों पर २५% कमीशन दिया जाएगा।

कृपया अपना पूरा पता एवं नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें। पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक् नहीं लिया जाएगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान—
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित आर्ष ग्रन्थ अति अल्प मूल्य पर उपलब्ध

महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा द्वारा इस वर्ष वेद-प्रचार एवं प्रसार के अपने सघन कार्यक्रम के अन्तर्गत महर्षि के साहित्य का पूरा सैट, जिसका विक्रय मूल्य लगभग १०००) रु० है, मात्र ६००) रुपयों में उपलब्ध कराया जा रहा है। समस्त समाजें, स्कूल, गुरुकुल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, पुस्तक विक्रेता तथा स्वाध्यायशील आर्यजन इस अपूर्व सुविधा का लाभ उठावें।

महर्षि कृत ग्रन्थों की सूची

नाम ग्रन्थ	मूल्य रु०
ऋग्वेद संहिता (डीलक्स संस्करण)	१२५.००
यजुर्वेद संहिता "	३०.००
सामवेद संहिता "	२०.००
अथर्ववेद संहिता (बडा टाइप)	१००.००
ऋग्वेदभाष्य (१ से ६ भाग)	३६०.००
ऋग्वेदभाष्य (मण्डल १०, प्रथम भाग)	४०.००
यजुर्वेदभाष्य चार भागों मे	२००.००
सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	२५.००
ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (अजिल्द)	१८.००
संस्कारविधि (सजिल्द)	८.००
महर्षि दयानन्द की आत्मकथा	५.००
आर्याभिविनय (बडा आकार, अजिल्द)	५.००
शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	२.५०
	९६८.५०

नाम ग्रन्थ	मूल्य रु०
संस्कृतवाक्यप्रबोध	२.००
व्यवहारभानु	२.००
पञ्चमहायज्ञविधि	२.००
भ्रान्तिनिवारण	२.००
वेदविरुद्धमतखण्डन	१.५०
सत्यधर्मविचार	१.५०
शिक्षापत्रीध्वान्तनिवारण	१.००
अनुभ्रमोच्छेदन	१.००
भ्रमोच्छेदन	१.००
शास्त्रार्थ काशी	१.००
गोकरुणानिधि	१.००
स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश	०.५०
स्वीकारपत्र	०.५०
आर्योद्देश्यरत्नमाला	०.५०
वेदान्ति-ध्वान्तनिवारण	०.५०
	१८.००

कुल योग रु० ९८६.५०

विशेष छूट :

वैदिक पुस्तकालय की ओर से २५% से	२४६.५०
श्री ओंकारनाथ जी के सौजन्य से १०% से	७४.००
श्री कर्मचन्द जी गुप्त के सौजन्य से	३३.००
श्री गजानन्द जी आर्य की व्यवस्था से	३३.००
कुल छूट रु०	३८६.५०
देय मूल्य रु०	६००.००

विशेष निवेदन

१. यह छूट अजमेर डिलीवरी पर है।

२ अन्य स्थानों पर डाक या रेल पार्सल द्वारा पुस्तकें भेज दी जायेंगी जिसका मार्ग व्यय व अन्य खर्चा ग्राहक को देना होगा। पैकिंग व्यय सभा वहन करेगी।

३ आदेश के साथ ६००) रु० अग्रिम भेजें। शेष व्यय की वी. पी भेजी जाएगी।

निम्न स्थानों से भी यह पूरा सैट प्राप्त किया जा सकता है—

दिल्ली : श्री सत्यानन्द आर्य, ६३/४१ पंजाबी बाग, नई दिल्ली-११००२६
कलकत्ता : श्री गजानन्द आर्य, १९, बालीगंज सर्क्युलर रोड, कलकत्ता-७०००१९
बम्बई : मंत्री, आर्यसमाज सान्ताक्रूज, बम्बई-४०००५४

—मंत्री, परोपकारिणी सभा
केसरगंज, अजमेर

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यसन्देश

वर्ष ११ : अंक ४१ | रविवार ३० अगस्त १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ | भाद्रपद २०४४ | दयानन्दाब्द—१६३

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

पंजाब से हिन्दुओं का फिर पलायन

यदि सरकार ने ठोस कदम न उठाये तो परिणाम भयंकर होंगे ।

दिल्ली, २२ अगस्त । पंजाब की स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती ही जा रही है। गुप्त रूप से हिन्दुओं को वहां से बाहर निकालने का षड्यन्त्र जारी है। प्राप्त सूचना के अनुसार अजनाला से ३०० हिन्दू परिवार अपना गांव छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर चले गए हैं। बारीवाल तहसील के अन्तर्गत फानपुरा गांव के भी अनेक परिवार पानीपत (हरियाणा) आ चुके हैं। अन्य गांवों से भी हिन्दू परिवार इसी प्रकार अपना घर-द्वार छोड कर सुरक्षा की तलाश में अन्यत्र चले गए हैं। सारे पंजाब में आतंकवाद की छाया गहरी होती जा रही है।

राष्ट्रपति शासन पर टिप्पणी करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक वक्तव्य में बताया कि अब स्थिति इतनी भयानक हो चुकी है कि भारत सरकार के गृहमंत्री श्री बूटा सिंह के परिवार के व्यक्ति भी मौत के घाट उतार दिए गए हैं। सीमांत क्षेत्रों में भी स्थिति सरकार के हाथ से निकलती जा रही है।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक विशेष पत्र प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को लिखकर मांग की है कि पंजाब को तुरन्त सेना के हवाले किया जाये। अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाने का प्रस्ताव संसद में स्वीकार हो चुका है। अतः पकिस्तान की सीमा के साथ जैसलमेर से पंजाब और काश्मीर तक सुरक्षा पट्टी बनाई जाए और आतंकवादियों से उसी भाषा में बात की जाए जिसे वे समझते हैं। स्वामी आनन्द बोध जी ने प्रधानमन्त्री को याद दिलाया कि गत वर्ष १६ जुलाई को आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल उन से मिला था और एक ज्ञापन दिया था जिस में सुरक्षा पट्टी के साथ-साथ बसाने की मांग की गई थी। स्वामी जी ने बताया कि प्रधानमन्त्री ने उस समय हमारी मांगों से पूर्ण सहमति प्रकट करते हुए पंजाब के मामले को जल्दी ही हल करने का आश्वासन दिया था। स्वामी जी ने कहा कि अब पंजाब सर्वनाश के कगार पर खड़ा है। भारत सरकार की जनता मूक दर्शक बनकर वहां हो रहे जघन्य नर-संहार को किस प्रकार सहन कर सकती है?

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने बताया कि "हम जल्दी ही देश भर के हिन्दू नेताओं की एक सर्व-दलीय सभा बुलाकर इस मामले पर विचार करेंगे।" स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री को यह भी लिखा है कि पंजाब की इस समय बिगडी हुई स्थिति सरकार की दुरंगी और अस्थिर नीति का ही परिणाम है और इसी से आज देश मे अनेक विवाद खडे हो रहे हैं।

प्रचार-विभाग
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली में वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज मंदिर हनुमान रोड, नई दिल्ली में वेद सप्ताह दिनांक ९ से १६ अगस्त तक समारोहपूर्वक मनाया गया। रविवार ९ अगस्त को प्रातः रक्षाबन्धन (श्रावणी पर्व) एवं सत्याग्रह बलिदान दिवस उत्साह पूर्वक मनाया गया। श्रावणी पर्व की विशेषता के उपलक्ष्य में पण्डित भारद्वाज पाण्डेय एवं सत्याग्रह बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में डा० रूप किशोर शास्त्री एवं प्रो० रतनसिंह द्वारा प्रकाश डाला गया और बलिदानी सत्याग्रहियों को स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

सोमवार १० अगस्त से प्रातः ऋग्वेद पारायण महायज्ञ एवं रात्रि को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य भजनोपदेशक श्री वेदव्यास के मनोहर भजन एवं प्रो० रतनसिंह जी द्वारा वेदकथा का सुन्दर आयोजन था। प्रातः यज्ञ के अवसर पर स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी के भजन होते रहे।

वेद प्रचार दिवस

करोलबाग आर्य महिला मण्डल की ओर से बुधवार ९।९।८७ को मध्याह्न १ बजे से सायं ५ बजे तक आर्य स्त्री समाज पहाड़गंज, चूना मण्डी, नई दिल्ली में वेद प्रचार दिवस का आयोजन किया गया है।

प्रतियोगिता में भाग लेने वाली बहनों से निवेदन है कि वे स्वस्तिवाचन के १५ मन्त्र अर्थ सहित कंठस्थ करके आये।

कृष्णा बसन्त
मंडल मन्त्रिणी

उपाधि परीक्षा सूचना

सन् १९५२ से संचालित भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद्, अजमेर (राज०) का केन्द्र स्थापित करने के लिए नियमावली व फार्म निम्नलिखित पते से निःशुल्क मगाये। परीक्षाएँ जनवरी/फरवरी में होती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संचालित इन परीक्षाओं के देश-विदेश मे सैकड़ों केन्द्र हैं। छात्रों को इन से दोहरा लाभ होता है। उपाधियां अत्याकर्षक हैं। पुरस्कार व प्रशंसा पत्र भी दिए जाते हैं।

प्रो० बुद्धिप्रकाश आर्य
परीक्षा मंत्री
भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद
रामगंज, अजमेर-३०५००१ (राज)

महर्षि दयानन्द और योगेश्वर श्रीकृष्ण

—कृष्णस्वरूप विद्यालंकार

★

महर्षि दयानन्द और योगेश्वर श्रीकृष्ण अपने समय में युगान्तर क्रान्तिकारी महापुरुष हुए हैं। महापुरुषों का परस्पर तुलनात्मक विवेचना करना कभी भी उचित नहीं कही जा सकती। महापुरुष अपने-अपने समय में समयानुसार ससार के कल्याण के लिए नीति परिवर्तन करते हैं। भगवान श्रीकृष्ण अपने समय के योगेश्वर राजनीतिज्ञ राजर्षि थे और भगवान महर्षि दयानन्द अपने समय के योगेश्वर चतुर्मुखी क्रान्तिकारी ब्रह्मर्षि थे।

न तो श्री कृष्ण जी ने और न महर्षि दयानन्द ने ही अपना कोई नवीन मत चलाया, अपितु श्रीकृष्ण जी ने तो विवस्वान द्वारा मनु और मनु द्वारा इक्ष्वाकु को दिए गए (कर्मयोग) का, कि जिसका लोप हो चुका था, गीता में अर्जुन के बहाने से संसार को उपदेश, संदेश दिया है, और महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश स्वमन्तव्यामन्तव्य में स्पष्ट लिखा है कि मेरा कोई नवीन मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो ब्रह्मा से लेकर मुनि पर्यन्त मानते आए हैं, उन ही सत्य तत्वों का मानना मनवाना अभीष्ट है।

यह सभी ऋषि मुनि 'आप्त पुरुष थे।'' 'आप्तोपदेश. शब्दः' न्याय दर्शन। शब्द प्रमाण उन ही का माना जाता है कि जो आप्त हो। आप्त का लक्षण है कि आप्ता खलु साक्षात्कृतधर्माण ऋषयः।

आप्त वही होता है कि जिस ने इस सत्य तत्व का साक्षात्कार किया हो। महर्षि दयानन्द उन सभी ऋषि मुनियों को आप्त मानते थे इसीलिए उनके सिद्धांतो को मानते थे। महर्षि दयानन्द ने श्रीकृष्ण जी को भी 'आप्त' की उपाधि दी है और उनके उपदेशो को भी अपने जीवन में चरितार्थ किया है।

सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास में लिखते हैं कि 'श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है उन का गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है जिस में कोई भी अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी के जन्म से लेकर मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा है।'

इन्ही कर्मयोगी आप्त श्रीकृष्ण के उपदेश को भगवान् महर्षि दयानन्द ने किस प्रकार अपने जीवन में दृढ़ किया था इसे उन के मृत्यु के समय के दृश्य में देखिये।

मृत्यु का समय ऐसा होता है कि उस समय मनुष्य जो कुछ जीवन में अपने संस्कारों को दृढ करता है, वह सब संस्कार एकत्र होकर भावी जन्म की ओर ले जाते हैं। परन्तु मुक्त पुरुष सब संस्कारों को शून्य सा कर देते हैं अतएव अगला जन्म नहीं लेते।

भगवान् श्रीकृष्ण गीता के आठवें अध्याय में अर्जुन के इस प्रश्न के उत्तर में कि "आत्मसयमी पुरुषों के द्वारा भी दुःखदायी मृत्यु का समय आने पर किस प्रकार आप उन के ध्यान में आ सकते हैं, और आपके किस स्वरूप का ध्यान योगी लोग करते हैं।" कहते हैं कि यह निश्चित सिद्धान्त है कि अन्त काल में जो मेरा (परमेश्वर का) स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करता है वह अवश्य ही परब्रह्म को पाता है। इस में कोई सन्देह नही है।

मनुष्य के अन्त समय में जो-जो भावनाएँ पैदा होती हैं, उन ही के अनुसार मनुष्य अगला जन्म पाता है। इसीलिए अन्त समय में उत्तम भावनाएँ संस्कार ही जागे। अतः जीवन परमेश्वर का स्मरण करते हुए व्यतीत करना चाहिए।

परब्रह्म सर्वज्ञ, नित्य, संसार का शासक नियन्ता सूक्ष्मातिसूक्ष्म सब का धारण पोषण करने वाला, प्रकाश स्वरूप अन्धकार रहित है। इस अव्यक्त, अचिन्त्य ज्ञान स्वरूप का जो भक्ति से युक्त योगबल द्वारा भौहों के बीच में प्राणों को स्थिर करके ध्यान करता है, वह दिव्य परम पुरुष को प्राप्त होता है। जो मूर्ध्न में प्राणों को चढ़ाकर ओ३म् का जाप करता हुआ प्राणों का त्याग करता है वह परगति मोक्ष पाता है।

यह ऊपर का वर्णन गीता के आठवें अध्याय के ५ से १३ तक श्लोकों का शब्दानुवाद है।

महर्षि दयानन्द की मृत्यु समय की स्थिति में इन श्लोकों का जीवित जागृत चित्रण हैं।

महर्षि ने ३० अक्तूबर, १८८३ ई० कार्तिक बदी अमावस सं०१९४० विक्रमी को, मंगलवार के दिन प्राण त्याग करते हुए प्रथम संस्कृत और हिन्दी में परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना की, फिर गायत्री मन्त्र का जाप करते-करते समाधिस्थ हो गए इसके बाद आंखें खोलकर कहा कि हे सर्वशक्तिमन् ईश्वर! तेरी यही इच्छा है। तेरी यही इच्छा है। तेरी यही इच्छा है। परमात्म देव! तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा तू ने अच्छी लीला की। ज्ञान के बाद "ओ३म्" के उच्चारण के साथ श्वास को बाहर निकाल कर जीवन लीला समाप्त करदी।

आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी को महापुरुष भक्तात्मा मानता है और यही विचार महर्षि दयानन्द सरस्वती के लिए भी रखता है।

पौराणिक भाई श्रीकृष्ण जी को तो ईश्वर का साक्षात् अवतार मानते हैं परन्तु उनके उपदेशों का साक्षात् मूर्त रूप महर्षि को महापुरुष भी नहीं मानना चाहते जिसने उनके शिक्षा सूत्र को और आर्य संस्कृति की रक्षा की। यह उनके हृदयों की संकीर्णता है।

योगीराज भगवान् श्रीकृष्ण ५००० वर्ष पूर्व हुए और योगीराज भगवान् महर्षि दयानन्द १९वीं सदी में हुए। श्रीकृष्ण जी में यदि पूर्व महर्षियों के सब गुण थे तो महर्षि में श्रीकृष्ण जी से पूर्व हुए महर्षि और श्रीकृष्ण जी के भी गुण थे। इससे वह अन्य सबों से गुणों में बढ़ जाते हैं। महर्षि को जिस पहलु से देखो वह अद्वितीय दिखाई देते हैं। यही उनकी अपूर्वता है जो अन्यो में नहीं मिलती।

योगीराज महर्षि दयानन्द की जय!
योगीराज श्रीकृष्ण की जय!!

यही श्रावणी का संदेश

वेद पढ़े हम, तथा पढ़ायें
वेदों का हम करे प्रचार।
वेदों के पथ पर चलने को,
उद्यत जिससे हो संसार॥

ऋषि-मुनियों के निर्देशों का,
जीवन में करके अनुपालन-
आर्य बनें हम तथा बनायें-
आर्य जगति के सारे जन॥

मानवता के पदचिह्नों पर,
चले निरन्तर वसुन्धरा।
मानवता के शुभ तत्वों से
पुण्य बने यह दिव्य धरा॥

दानवता के तत्व सभी जो,
विस्तृत है भू पर अविराम;
क्षत-विक्षत हो इस धरती से,
बने धरित्री ललित ललाम॥

ज्ञान-प्रदीप जले उर-उर में
स्वर्ग सदृश हो सतत स्वदेश।
वैदिक धर्म ध्वजा लहराएं,
यही श्रावणी का संदेश॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर उ.प्र

राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत : महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखिका—डॉ० यशोदा आर्य शास्त्री
(एम० ए०, पी-एच० डी०)
प्रिंसिपल, वैदिक ओरिएण्टल कालेज
कच्ची छावनी, जम्मू-१८०००१

मनुष्य जहाँ जन्म लेता है अथवा जहां उस के पूर्वज उत्पन्न हुए हों, वह उसकी मातृभूमि अथवा पितृ भूमि कहलाती है। व्यक्ति जहाँ रहता हो, उसके आसपास के प्रदेशों जिन में भावनात्मक एकता हो और एक ही शासन व्यवस्था हो, को देश या राष्ट्र कहते हैं। अपने देश के प्रति उत्कट प्रेम और अगाध श्रद्धा को राष्ट्रवाद की सज्ञा दी जा सकती · किसी राष्ट्र के सामूहिक उत्थान .ए राष्ट्रवाद की भावना का होना अनिवार्य है क्योंकि राष्ट्र की उन्नति के बिना राष्ट्रवासियों की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। राष्ट्रवाद की भावना को जगाने के लिए राष्ट्र की जनता को उसके गौरवमय अतीत से परिचित कराना होता है।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वह केवल संन्यासी ही नहीं थे, केवल दिग्विजयी पण्डित ही नहीं थे, वह भारतीय एकता के स्थापनकर्त्ता भी थे। दयानन्द मूलतः राष्ट्रवादी थे। पाण्डिचेरी के सन्त योगीराज अरविन्द स्वामी दयानन्द की राष्ट्रीय भावना की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं जबकि फ्रांस के विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक रोमां रोलां का यह दृढ़ विश्वास था कि दयानन्द ने भारत की राष्ट्रीय एकता जगाने में अद्भुत कार्य किया है। होम रूल आंदोलन की नेत्री श्रीमती ऐनी बेसेंट ने तो यहां तक कहा है—"Dayanand was the first to proclaim India for the Indians." अर्थात् दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 'भारत भारतीयों के लिए' का नारा लगाया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अच्छी प्रकार समझते थे कि राष्ट्रीय एकता का विशालकाय भवन स्वराज्य, स्वदेशी, स्वभाषा व सामाजिक समानता के आधार स्तम्भों पर ही खड़ा हो सकता है और उन की सुदृढ़ता पर ही राष्ट्र की सुदृढ़ता निर्भर करती है। महर्षि दयानन्द आजीवन इन स्तम्भों को सुदृढ़ करने में जुटे रहे। वह भारत को पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ देख कर अत्यन्त दुःखी होते थे और उन बेड़ियों को काट फेंकने के लिए अपने लेखों, भाषणों आदि का खुल कर प्रयोग करते रहते थे। वह अपनी अमर कृति 'सत्यार्थप्रकाश' के एकादश समुल्लास में लिखते हैं—

"यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिस के सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम स्वर्ण भूमि है क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसीलिए सृष्टि के आदि में आर्य लोग इसी देश में आकर बसे। xxx पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिस को लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। xxx सृष्टि से लेकर पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देश में माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे क्योंकि कौरव पाण्डव पर्यन्त यहां के राज्य और राज शासन में सब भूगोल के राजा और प्रजा चलते थे। xxx चीन का भगदत्त, अमेरिका का बब्रुवाहन, यूरोप देश का बिडालाक्ष अर्थात् मार्जार के सदृश आंख वाले, यवन जिस को यूनान कह आए और ईरान का शल्य आदि सब राजा राजसूय यज्ञ और महाभारत युद्ध में आज्ञानुसार आए थे। xxx सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्यकुल में ही हुए थे। अब अन्य सन्तानों का अभाग्योदय होने से राजभ्रष्ट होकर विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहे हैं।"

स्वामी दयानन्द ने उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में स्वराज्य की कल्पना और उसका प्रचार-प्रसार उस समय किया था जबकि राष्ट्रीय संस्था अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था। कांग्रेस में सर्वप्रथम १९०६ ई० में दादा भाई नौरोजी ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया था; १९१६ ई० में लखनऊ कांग्रेस के अधिवेशन में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है।' (Swarajya is my birth right) इस मन्त्र की घोषणा की थी परन्तु कांग्रेस ने १९२९ ई० में लाहौर कांग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर ही रावी के किनारे पर पं० जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में पूर्ण स्वराज्य को अपना ध्येय बनाया था। अंग्रेजों की विस्तारवाद की नीतियों के विरोध मे १८५७ ई० मे भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथम सग्राम लडा गया था जिसके प्रमुख नेता थे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह 'जफर', कानपुर के नाना साहिब, तांत्या टोपे आदि अप्रत्यक्ष रूप में इनको प्रेरणा देने वालों में महर्षि दयानन्द व उनके गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द प्रमुख थे। भारतीय स्वतन्त्रता के प्रथम युद्ध में कुछ राजपूत राजाओं व पटियाला जींद आदि सिक्ख रियासतों ने अंग्रेजों का साथ दिया जिस के कारण यह प्रयास निष्फल गया। उस आंदोलन के प्रमुख नेता युद्ध में मारे गए, मुगल सम्राट बहादुरशाह 'जफर' को रंगून की जेल मे आजीवन कारावास भोगने के लिए बन्द कर दिया गया। हजारों लोगों को मौत के घाट उतार कर अंग्रेज सरकार ने देश में आतंक का वातावरण उत्पन्न कर दिया था। अंग्रेजों ने देशवासियों को भयभीत करने के लिए एक ओर दमन चक्र चलाया तो दूसरी ओर कूटनीति का सहारा लिया और ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने एक घोषणा पत्र जारी किया जिस में विश्वास दिलाया गया था कि "उनके राज्य में किसी के भी धर्म में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा, अपने व पराये का भेदभाव न बर्ता जाएगा; भारतीय प्रजा के प्रति माता-पिता के समान कृपा, न्याय एवं दया दृष्टि से व्यवहार किया जाएगा और अंग्रेजी राज्य को भारतीयों के लिए पूरी तरह सुखदायक बनाया जाएगा।" महर्षि दयानन्द ने १८७५ ई० में सत्यार्थप्रकाश की रचना कर इस घोषणा पत्र की धज्जियाँ उड़ा दीं। स्वामी दयानन्द ने महारानी विक्टोरिया के शासनकाल में ही महारानी के घोषणा पत्र के एक-एक शब्द का जिस जोरदार ढग से खण्डन किया है वह उनकी नीति कुशलता, निर्भीकता और आत्मशक्ति का अद्भुत प्रमाण है। आप सत्यार्थप्रकाश मे स्वराज्य महिमा का वर्णन करते हुए लिखते हैं—"कोई कितना भी करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" महर्षि दयानन्द अच्छे से अच्छे विदेशी शासन को स्वराज्य की तुलना मे पूर्ण रूपेण हेय मानते हैं। इसी कारण दयानन्द को हम क्रान्ति द्रष्टा और राष्ट्रीयता के अग्रदूत मानते हैं। स्वामी जी ने आर्यों की प्रार्थना पुस्तक 'आर्याभिविनय' में वेद मन्त्रों के अर्थ स्वराज्य व राष्ट्र परक करके अपनी राष्ट्रीय भावना का प्रबल प्रमाण प्रस्तुत किया है। 'ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना' के मन्त्रों का अर्थ करते हुए महर्षि लिखते हैं—'हम राज्यादि ऐश्वर्य के स्वामी होवें। यह स्वामी दयानन्द ही थे जो भारत के वायसराय कर्नल नार्थ ब्रुक को मुंह पर कह सके थे कि मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब भारतीयो का अपना राज्य होगा। महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय भावना की प्रमुख विशेषता यह है कि यह पश्चिम की देन नही है। वह सस्कृत के विद्वान् थे और विदेशी भाषा अंग्रेजी का उनका ज्ञान शून्य था और वह विदेशी सम्पर्क मे नही आए थे। भारत में यह धारणा प्रबल रही है कि राष्ट्रीयता की भावना भारतीयो में अंग्रेजी शिक्षा व पश्चिम से सम्पर्क के कारण ही उत्पन्न हुई थी परन्तु दयानन्द अपवाद हैं और उन्होंने अपनी बुद्धि के बल पर प्राचीन वेदादि आर्ष ग्रन्थों के आधार पर देश की स्वतन्त्रता आदि के सिद्धान्त जनता के समक्ष रखे।

स्वामी दयानन्द स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग राष्ट्रीय भावना व राष्ट्रीय एकता को सुदृढ करने का मूलाधार मानते थे। वह अनुभव करते थे कि देशवासियो मे स्वदेश भक्ति गौरव के साथ प्रतिष्ठित करने के लिए उन मे अपने देश की वस्तुओं के प्रति प्रेम उत्पन्न करना अनिवार्य है। महर्षि दयानन्द अपने सम्पर्क में

राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती

आने वाले व्यक्तियों को स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग करने की प्रेरणा देते रहते थे। स्वामी जी ब्राह्मसमाज की समीक्षा में सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास में बड़े मार्मिक शब्दों में अपना स्वदेशी प्रेम अनुराग प्रकट करते हुए लिखते हैं—"ब्रह्मसमाजियों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। अंग्रेज अपने देश के बने हुए जूते को आफिस और कचहरी में जाने देते हैं इस देशी जूते को नहीं। इतने ही में समझ लेओ कि अपने देश के बने जूतों का वे जितना मान प्रतिष्ठा करते हैं उतना भी अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते। देखो, कुछ सौ वर्ष के ऊपर इस देश में आये यूरोपियनों को हुए और आज भी यह लोग मोटे कपडे आदि पहनते हैं जैसा कि स्वदेश में पहिनते थे परन्तु उन्होंने अपने देश का चाल-चलन नहीं छोडा और तुम में से बहुत से लोगों ने उनकी नकल कर ली, इसी से तुम निर्बुद्धि और वह बुद्धिमान ठहरते हैं।"

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीयता की भावना को मजबूत करने के लिए जिन-जिन उपायों को अपनाया उन में सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए एक राष्ट्र भाषा के प्रचार और प्रसार का उपाय सर्वप्रमुख है। उनकी मातृ भाषा गुजराती थी और संस्कृत के वह प्रकाण्ड पण्डित थे परन्तु उन्होंने हिन्दी (देवनागरी लिपि) को सम्पर्क भाषा के योग्य समझा और इसे आर्य भाषा का नाम दिया। वह हिन्दी को समग्र आर्यावर्त (भारत वर्ष) की एकमात्र प्रधान भाषा के रूप में स्वीकृति प्रदान कराना चाहते थे। १८७५ ई० में उन्होंने अपनी प्रमुख कृति सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में लिखकर प्रकाशित कराई जो उनके राष्ट्र प्रेम की द्योतक है। उनके द्वारा हिन्दी प्रचार की जो प्रेरणा उनके अनुयायियों को मिली उसी के फलस्वरूप हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो सकी है। हिन्दी को अधिक से अधिक व्यापक बनाने के लिए किए गए सभी प्रयत्नों का स्वामी जी ने पूर्ण समर्थन किया था। पं० मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या से वार्तालाप के प्रसंग में उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया था कि जब तक समस्त देशवासी एक धर्म, एक भाषा, एक आचार-विचार तथा एक ध्येय वाले नहीं बन जाते तब तक जातीय उन्नति स्वप्नवत् ही रहेगी। निश्चय ही राष्ट्रीय एकता की सिद्धि में राष्ट्र भाषा हिन्दी की महत्ता को उन्होंने पूर्णतया अनुभव किया था। राष्ट्रीय एकता केवल राजनीतिज्ञों द्वारा प्राप्त किया जाने वाला लक्ष्य नहीं है, स्वामी दयानन्द का दृढ विचार था कि उसके लिए विभिन्न धर्माचार्यों और सार्वजनिक नेताओं को प्रयत्न करना होगा। उन्होंने स्वय राष्ट्रीय एकता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न भी किया था। वे अपने भ्रमणकाल में विभिन्न समकालीन धार्मिक और सामाजिक महापुरुषों से सम्पर्क स्थापित कर राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करने के लिए विचार-विमर्श करते रहते थे। राष्ट्रीय एकता के लिए उन का एक महत्वपूर्ण प्रयास उस समय हुआ जब १८७७ ई० में लार्ड लिटन द्वारा आयोजित दिल्ली दरबार के अवसर पर उन्होंने तत्कालीन प्रमुख धार्मिक नेताओं तथा विभिन्न प्रान्तों के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन आयोजित किया जिस में मुस्लिम पुनर्जागरण के अग्रदूत व अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद अहमद खाँ, ब्राह्मसमाज के नेता केशवचन्द्र सेन, नवीनचन्द्र राय उपस्थित हुए। महाराष्ट्र के हरिश्चन्द्र चिन्तामणि, पंजाब के अलखधारी, पश्चिमोत्तर प्रदेश के मुन्शी इन्द्रमणि को भी बुलाया गया था। स्वामी दयानन्द ने भारतीयों को हिन्दू की अपेक्षा आर्य कहलाने की प्रेरणा दी जो किसी नस्ल, जाति या धर्म का सूचक नहीं है अपितु श्रेष्ठ, धार्मिक, आस्तिक एवं साधु प्रकृति के पुरुषों का परिचायक है। स्वामी दयानन्द ने देश के लिए आर्यावर्त नाम अपनाने का आग्रह किया जो मनुस्मृति आदि पुरातन वैदिक साहित्य में प्रयुक्त हुआ है मनुस्मृति में आर्यावर्त का अर्थ निरूपण करते हुए कहा गया है कि हिमालय से लेकर रामेश्वर पर्यन्त और पूर्व में ब्रह्म देश से लेकर पश्चिम में अटक नदी तक का देश आर्यावर्त के नाम से जाना जाता है। वेदों अर्थात् विद्वानों द्वारा बसाये जाने के कारण भी इसे आर्यावर्त कहा जाता है। हिन्दी भाषा को आप ने आर्य भाषा का नाम देकर राष्ट्रीय एकता को पुष्ट किया। इसी प्रकार उन्होंने राष्ट्रीय अभिवादन के रूप में 'नमस्ते' को अपनाने का आह्वान किया जो किसी सम्प्रदाय का प्रतीक नहीं है अपितु गुणवाचक है जो व्यक्ति के प्रति सम्मान, प्रेम और श्रद्धा के भाव परिलक्षित करता है। स्वामी दयानन्द स्वेच्छापूर्वक शुद्धि आन्दोलन अपनाने के पक्षधर थे क्योंकि आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक विवशताओं से विधर्मी हुए हिन्दुओं को उनकी इच्छानुसार पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित न करना अन्याय है।

महर्षि दयानन्द का दृढ़ मत था कि आर्य लोग इसी देश के मूल निवासी थे और अन्य किसी स्थान से नहीं आये। आप सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं—"किसी संस्कृत ग्रन्थ व इतिहास में नहीं लिखा है कि आर्य लोग ईरान से आए और यहां के जंगलियों को लड़कर जय पाके, निकाल इस देश के राजा हुए, पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है।"

पंजाब में उग्रवाद और बेगुनाहों की हत्याएँ बन्द न होंगी

कहावत है कि ऐसा कोई काम नहीं जो न हो सकता हो। हो सकता है यदि उसका सही तरीके से प्रयास किया जाए तो।

इसका हल सही तरीके से नहीं हो रहा है। इसका हल सरकार नहीं कर सकती, सरकार ने पंजाब में राष्ट्रपति राज्य की घोषणा कर दी उस से कोई फर्क नहीं पड़ा, बेगुनाहों की हत्याएँ पहले से कुछ अधिक ही हो रही हैं।

इसका हल पंजाब से बाहर रहने वाली सिख महिलाएँ और सिख भाई ही कर सकते हैं। पंजाब में उग्रवादियों के संगठनों के जितने भी नेता हैं सैंकड़ों की तादाद में सिख महिलायें विशेषकर सिख भाई भी दसों गुरुओं की दुहाई देकर आतंकवादियों को गुरु ग्रन्थ साहब की कसम देकर उन से कहलवायें कि आज से हम ने बेगुनाहों की हत्या करनी छोड़ दी है।

जो सिख बहिन भाई पंजाब न जा सकते हों वे हजारों की तादाद में उग्रवादियों के संगठनों को तारें भेजें कि दसों गुरुओं और ग्रंथ साहब का वास्ता है बेगुनाहों की हत्याएँ करना बन्द करो।

पंजाब से बाहर रहने वाले सिख नेता समाचार पत्रों में और टी. वी. में पंजाब में की जा रही बेगुनाहों की हत्याओं का खेद दुःख तो प्रकट करते हैं यह तो एक दिखावा ही समझा जाता है, इसका कोई असर नहीं होता।

यदि सैंकड़ों सिख महिलाये और सिख भाई पंजाब जाकर उग्रवादियों के संगठनों पर जाकर धरना दे और कहें पहले हमें मारो और सैंकड़ों-हजारों तार उग्रवादियों को यहाँ से भेजे जायें तो अवश्य ही उसका असर होगा।

जगतराम आर्य
आर्यसमाज, गांधी नगर,
दिल्ली

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् को मोटर साइकिल भेंट

१६ अगस्त, आर्यसमाज करोल बाग के वेदप्रचार पक्ष के समापन दिवस पर आर्यसमाज के प्रांगण में एक विशाल सभा हुई। जिस की अध्यक्षता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की। इस अवसर पर पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री रामचन्द्र विकल, श्री सोमनाथ मरवाह, श्री यशपाल सुधांशु, डा० धर्मपाल, श्रीमती प्रकाश आर्या आदि वक्ताओं ने सम्बोधित किया।

आर्यसमाज करोल बाग की ओर से श्री रामलाल मलिक द्वारा संगृहीत राशि से ग्रामीण क्षेत्रों में वैदिक सन्देश फैलाने के उद्देश्य से केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् को एक मोटर साइकिल तथा एक मोपेड भेंट की गई। यह भेंट स्वामी आनन्द बोध के करकमलों द्वारा श्री अनिल आर्य को अर्पित की गई। उपस्थित जन-समूह ने हर्ष ध्वनि से स्वागत किया।

समाचार

दर्शनाचार्य पं० उदयवीर जी शास्त्री को पक्षाघात

सुविख्यात आर्य विद्वान् एवं अमर शहीद सरदार भगतसिंह के गुरु सांख्ययोगाचार्य पं० उदयवीर जी शास्त्री को आज जवाहरलाल नेहरू अस्पताल, अजमेर मे पक्षाघात के कारण भर्ती कराया गया है। माननीय शास्त्री जी की आयु इस समय ९३ वर्ष की है। (वे कुछ समय से पक्षाघातग्रस्त हुई अपनी धर्मपत्नी सहित अजमेर में आकर स्वकन्या श्रीमती उषा जी के यहाँ आकर रह रहे थे।) ऐसी अवस्था में भी उनका स्वास्थ्य अनुकरणीय चल रहा था। अकस्मात् दिनांक ४।८।८७ को प्रातः काल सन्ध्या करते समय उन्हे पैरों में सुन-सुन मालूम हुई और फिर दायें भाग में सज्ञाशून्यता अनुभव की। तत्काल उक्त अस्पताल में भर्ती कराया गया। इलाज जारी है। उन के दौहित्र उनकी सेवा कर रहे हैं।

रुग्णता का समाचार मिलते ही स्थानीय परोपकारिणी सभा के सदस्य उनकी कुशलक्षेम पूछने पहुंचे। ऐसे मूर्धन्य विद्वान् के इस प्रकार रुग्ण हो जाने से समस्त आर्य जगत् व इष्ट मित्रों को दुःख पहुंचना स्वाभाविक है। परमेश्वर शीघ्र उन्हें नीरोगता प्रदान करे।

दिनांक ९।८।८७ को नगर आर्य-समाज, अजमेर द्वारा आयोजित श्रावणी पर्व के लिए आप ने सहर्ष विशिष्ट अतिथि बनना स्वीकार किया था। इस आयु में भी आपकी लेखनी अप्रत्याहत गति से कार्यरत है। आर्य जगत् के सभी समाचार पत्र आप के सारगर्भित लेखों की प्रतीक्षा में रहते हैं।

निवेदक
धर्मवीर
अजमेर

कानपुर वेश्यालय में बेची गई युवती बरामद

कानपुर। सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता तथा केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने थाना मूलगज पुलिस की सहायता से मूलगज वेश्यालय मे बेची गई २० वर्षीय युवती चन्दा को बरामद कर लिया। ज्ञातव्य है कि उक्त युवती को एक माह पूर्व दिनेश नामक बुरदा फरोश नौकरी का लालच देकर नेपाल से कानपुर लाया था। यहां पर उसने चन्दा को तीन हजार रुपये में वेश्यालय मे बेच दिया और फरार हो गया। वेश्यालय की संचालक उसे मार-पीटकर शारीरिक व्यापार करने को बाध्य करने लगी। जिसके लिए वह तैयार नहीं हुई। किसी ने श्री आर्य को इसकी सूचना गुप्त रूप से दी। श्री आर्य ने जांच करने के पश्चात् उक्त ठेके पर छापा मारा और चन्दा को बरामद कर लिया। परन्तु अभियुक्त मौका पाकर भाग निकले जिनकी तलाश जारी है। श्री आर्य ने उक्त युवती को उसके परिवार तक पहुंचा दिया है।

मन्त्री
केन्द्रीय आर्य सभा
कानपुर

अण्डों का प्रचार

सायंकाल प्रकाशित अंग्रेजी पत्रिका MIDDAY मे श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल १७७५ कूचा लट्टू शाह का एक पत्र पढने से विदित हुआ कि इन दिनों आकाशवाणी दूरदर्शन पर अण्डों के प्रयोग का बहुत प्रचार हो रहा है। जबकि जहां अधिकांश चिकित्सक अण्डों के प्रयोग को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताते हैं वहाँ इस देश की मर्यादा को समझते हुए अहिंसावादी देश की सस्कृति का स्पष्ट अपमान करना है। अतः सरकार को अण्डों के प्रयोग का प्रचार बन्द कराके यहाँ की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की प्रवृत्ति को समाप्त कराने में अग्रसर होना चाहिए।

भवदीय
ओमप्रकाश, मंत्री
आर्यसमाज नया बांस, दिल्ली

योग शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल में ६ सितंबर से १२ सितंबर तक लग रहा है। भोजन शुल्क ५०) रु० है जो सज्जन सम्मिलित होना चाहें, पत्र-व्यवहार करें।

वेदप्रचारक मंडल
नई दिल्ली-५

श्रद्धांजलि

फिजी आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक श्री परमेश्वर का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी के भूतपूर्व प्रधान और सभा के वर्तमान सरक्षक श्री रामभीर परमेश्वर का ८७ वर्ष की आयु में १० जुलाई को राजधानी सुवा में देहांत हो गया। अन्तिक समय तक वे बिल्कुल स्वस्थ रहे।

श्री परमेश्वर का जन्म १९०१ में सेवा जिला के नाकाईकोगो नामक स्थान में हुआ। उनकी शिक्षा मारिस्ट बन्धुओं के भारतीय स्कूल में हुई थी। ३० वर्ष तक वे सुवा स्थित अनेक प्रसिद्ध कानूनी फर्मों के क्लर्क रहे। वे श्री जी. एफ. ग्राहम नामक वकील के मुंशी रहे। इस अवधि में वे क्लब के अंशकालीन सेक्रेटरी भी रहे और बाद में उन्होंने अपना व्यवसाय बीमा कम्पनी में काम करके शुरू किया।

आर्यसमाज की सेवा

फिजी आर्यसमाज आन्दोलन की शुरुआत से वे शिक्षा के क्षेत्र में जुडे रहे। वहाँ १९०४ में आर्यसमाज की स्थापना धार्मिक, शैक्षणिक और परोपकारी कामों के लिए हुई थी। सभा ने १९८२ में उनकी सेवाओं के उपलक्ष्य में आर्य रत्न की उपाधि से उनको विभूषित किया था। फिजी की सरकार ने उन को एम. बी. ई. और जस्टिस आफ पीस की भी उपाधि दी।

श्री परमेश्वर ने लगभग ३० वर्ष तक आर्यसमाज का कार्य किया बाद में १९१८ मे आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन हुआ। उन्होंने उपमन्त्री, उपप्रधानमन्त्री और प्रधान के रूप में आर्यसमाज की सेवा की।

१९७९ में उन्हें सभा का संरक्षक बनाया गया जिसको अन्तिम क्षण तक वे निभाते रहे। आर्यसमाज के विद्यालयों के शिक्षा बोर्डों के अध्यक्ष और मैनेजर के रूप में उन्होंने बहुत काम किया था। सुवा स्थित केन्द्रीय आर्यसमाज के वर्षों प्रधान रहे। वे विभिन्न सामाजिक तथा खेलों के क्लबों से भी जुडे रहे।

इस शताब्दी के तीसरे दशक में जब सनातनधर्मियों ने आर्यसमाज से शास्त्रार्थ करने की ठानी, तो श्री परमेश्वर ने शास्त्रीय प्रमाणों को एकत्र करके वैदिक सिद्धांतों का प्रचार किया और स्वर्गीय पं० धर्मीचन्द्र विद्यालंकार के लिए कचहरी में मान-हानि का मुकदमा चलने पर शास्त्रीय प्रमाण इकट्ठे किए थे। अदालत से आर्यसमाज को बरी कराया। श्री परमेश्वर के निवास पर मेरा और मेरे निवास पर उन का आना-जाना रहता था। वे बड़े सरल स्वभाव के थे। अपने पीछे वे एक भरा-पूरा परिवार व ९ बच्चों और अपनी पत्नी को छोड़ गए हैं। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी ने उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट की है।

ब्रह्मदत्त स्नातक
अवै० प्रेस एवं जनसंपर्क सलाहकार

निर्वाचन

२ अगस्त, १९८७ रविवार को आर्यसमाज पश्चिम विहार का निर्वाचन निर्विरोध सम्पन्न हुआ। इस में निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान : हीरालाल चावला
मंत्री : बलबीरसिंह बत्रा
कोषाध्यक्ष : हरिचन्द जयरथ

भवदीय
हरिचन्द जयरथ

आर्यसमाज मालवीय नगर

प्रधान : धर्मवीर जी भसीन
मंत्री : डी. आर. जुनेजा
कोषाध्यक्ष : चूनीलाल आर्य
स. कोषाध्यक्ष : देशराज महाजन
स्टोर कीपर : शान्ति स्वरूप
इन्चार्ज औषधालय : डा. चमन लाल अरोड़ा
पुस्तकालयाध्यक्ष : मा. रामचन्द
लेखा निरीक्षक : अशोक ग्रोवर

प्रधान : वीर भान वीर
मन्त्री : जगदीश नागपाल
कोषाध्यक्ष : हरदेव ग्रोवर

भवदीय
मन्त्री
आर्यसमाज तिलक नगर

प्रधान : डा. दयानन्द लीखा
मन्त्री : सुरेन्द्र बुद्धि राजा
कोषाध्यक्ष : जितेन्द्र खरबन्दा

भवदीय
सुरेन्द्र बुद्धि राजा
मन्त्री, आर्यसमाज कीर्तिनगर

मनुष्यों की आदिसृष्टि तिब्बत है

लेखक— आचार्य दिनेशचन्द शास्त्री

राष्ट्रपितामह जगद् गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज अपने महान् अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में प्रश्नोत्तर रूप में लिखते हैं—

प्रश्न—मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल में हुई ?

उत्तर—त्रिविष्टप अर्थात् जिस को 'तिब्बत' कहते हैं।

प्रश्न—आदि सृष्टि में एक जाति थी वा अनेक ?

उत्तर—एक मनुष्य जाति थी। पश्चात् "विजानीह्यार्य्यान् ये च दस्यवः।" यह ऋग्वेद का वचन है। श्रेष्ठों का नाम 'आर्य' विद्वान् देव और दुष्टों के 'दस्यु' अर्थात् डाकू मूर्ख नाम होने से आर्य और दस्यु दो नाम हुए। —अष्टमसमुल्लासः

आर्य और दस्यु शब्द वेद में गुणवाचक आये हैं, जातिवाचक नहीं। वास्तव में सब से प्रथम पग इस देश की पावन धरती पर आर्यों ने ही रखा तथा आदि काल से अर्थात् १९७२९४९०८७ वर्षों से यहां रह रहे हैं। महर्षि दयानन्द क्रान्तदर्शी थे, ऋषि क्रान्तदर्शी होता है। सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द ने इस भ्रांत धारणा के विरुद्ध आवाज उठाई थी। श्री महाराज ने इस प्रकार घोषणा की—"किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहां के जंगलियों से लड़कर, जय पाके, उन्हें निकाल के इस देश के राजा हुए। पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है ?"

कोई-कोई प्रश्न करते हैं त्रिविष्टप का अर्थ तिब्बत नहीं स्वर्ग ही है ?

हमारा उत्तर है—यदि तिब्बत का नाम त्रिविष्टप तथा स्वर्ग भी हो तो हमारी इस में क्या हानि है ? त्रिविष्टप तथा स्वर्ग के सम्पूर्ण लक्षण तिब्बत में ही मिलते हैं, इसलिए त्रिविष्टप वा स्वर्ग तिब्बत का ही नाम है और उसी में प्रथम सृष्टि उत्पन्न हुई। निम्नलिखित प्रमाण हैं—

उध्वो नाकस्याधिरोह विष्टपं स्वर्गोलोक इति यं वदन्ति ॥

अथर्व० ११।१।७

इमानि त्रीणि विष्टपा तानीन्द्र विरोहय। ऋ० ८।९१

तनस्त्रिविष्टपं गच्छे-
त्त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
तत्र वैतरणी पुण्या
नदी पाप-प्रनाशिनी ॥

महा० वन० अ० ८३

अर्थात् हे मनुष्य ! जिस को त्रिविष्टप और स्वर्ग लोक भी कहते हैं उस पर तू चढ़ जा। वह सब पृथ्वी से ऊँचा सुख का देने वाला स्थान है इत्यादि। हे राजन् ! तू उस त्रिविष्टप स्थान को प्राप्त कर जो सारी पृथ्वी से ऊंचा है और मनुष्यों के लिए सुखकारी है।

□

R. N No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 27, 28-8-87 Licenced to post without prepayment; Licence No. U 139
रजि० नं० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

★

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ फोन : २६१८७१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक ४३ | रविवार १३ सितम्बर १९८७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७ | आश्विन २०४४ | दयानन्दाब्द—१६३

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

महात्मा अमर स्वामी का देहावसान

शास्त्रार्थ युग का योद्धा चला गया

आर्य जगत् का लौह स्तम्भ, शास्त्रार्थ युग का महान् योद्धा, प्रकाण्ड विद्वान् महात्मा अमर स्वामी जी महाराज का ९३ वर्ष की आयु में प्राणान्त हो गया। वे कई मास से रोग शय्या पर मृत्यु से सघर्ष कर रहे थे। ४ सितम्बर को उन्होंने कैंसर रोग से लडते-लडते शरीर छोडा। ५ सितम्बर शनिवार को हिण्डन नदी के तट पर उन के शरीर को अग्नि में समर्पित कर दिया। हजारों आर्यों की आंखें चिता की जलती लपटों को देखकर नम हो गयी।

इस अवसर पर स्वामी आनन्द बोध ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा—"शास्त्रार्थ युग का स्तम्भ गिर गया। वाणी और लेखनी का एक युग समाप्त हो गया। स्वामी जी ने हजारों शास्त्रार्थ किये और आर्य-समाज की विजय पताका लहराई। हम आर्यों को अपने इस प्रकाण्ड विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी पर सदा गर्व रहेगा।"

आर्यसमाज के वटवृक्ष को अपने खून से सींचने वाले प० लेखराम ने मृत्यु शय्या पर कहा था कि मेरी अन्तिम इच्छा यही है आर्यसमाज से तहरीर और तकरीर का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए। प्रवचन और लेखन से आर्यसमाज के मिशन को अनेक तपस्वी ऋषिभक्तों ने अविरत आगे बढ़ाया। ऋषि दयानन्द ने वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात किया था। उस वैचारिक क्रान्ति का सिंह-नाद हुआ शास्त्रार्थ समर से। हर मत, सम्प्रदाय, पन्थ, मजहब अपने ही मत को श्रेष्ठ और ईश्वरीय मानता है। आर्यसमाज के सुविज्ञ योद्धाओं ने सभी मतों, पन्थों, सम्प्र-दायों और मजहबों को चुनौतियां दीं कि आप अपने मत को सत्य सिद्ध कीजिए। अनेक शास्त्रार्थ हुए आर्य समाज के वैदिक सिद्धान्तों की सर्वत्र विजय हुई। गांव के गांव आर्यसमाज के सिद्धान्तों को अपनाते चले गये। नगर, ग्राम सभी जगह आर्यसमाजों के शास्त्रार्थों की चर्चा होने लगी। आर्य विद्वानो के तर्क के सामने विरोधी पक्ष ठहर न पाता। वैदिक धर्म की धूम मची इन शास्त्रार्थों के द्वारा।

शास्त्रार्थों की परम्परा तो सदियों पुरानी है। आर्यसमाज में शास्त्रार्थ स्वामी दयानन्द के गुरु स्वामी विर-जानन्द से ही प्रारम्भ हुआ। उसी अग्नि को स्वामी दयानन्द ने धारण किया, बाद तक यह शृङ्खला चलती रही। अतः हम कह सकते हैं प्रथम शास्त्रार्थ महारथी स्वामी विरजा-नन्द थे फिर स्वामी दयानन्द और बाद में प० भीमसेन, प० लेखराम आर्य मुसाफिर, स्वामी दर्शनानन्द, पं० गणपति शर्मा, स्वामी अच्युता-नन्द, पं० भोजदत्त जी, पं० आर्य मुनि जी, पं० राजाराम जी शास्त्री, पं० मुरारीलाल जी, प० धर्म भिक्षु जी, पं० बिहारीलाल शास्त्री, पं० मनसाराम जी वैदिक तोप, प० राम चन्द्र देहलवी, प० व्यासदेव जी, प० बुद्धदेव जी तथा ठाकुर अमर सिंह जी। इस तरह सैकडों शास्त्रार्थ महा-रथियों का इतिहास वैदिक धर्म का रहा है।

ठाकुर अमरसिंह (महात्मा अमर स्वामी) जी प्रखर वाक् प्रतिभा के धनी, अकाट्य प्रमाणों के प्रणेता, विरोधी पक्ष को चुटकियों में हरा देने वाले महान् तार्किक थे। उनकी प्रवचन शैली मधुर, हास्य रस से भरी हुई, व्यंग्य के द्वारा विपक्ष पर चुसकी लेने की आदत श्रोताओं के आनन्द का कारण बनती थी। उन के शास्त्रार्थ में विपक्षी पर भारी पड़ने वाली एक विशेषता थी उनके हजारों प्रमाणों को प्रसग और उद्ध-रण सहित स्मृति शक्ति। जिस पर दूसरे पक्ष का विद्वान् भी अवाक् रह जाता था। उन के उदाहरण भी सटीक बैठते थे। इस सबके साथ वे अच्छे कवि और सगीतज्ञ भी थे। उनके लिखे भजन तो आज भी अनेक भजनोपदेशक गाते है। वे स्वय भी अपने आध्यात्मिक प्रवचन के बाद मधुर प्रेरक भजन श्रोताओ से बुल-वाते थे। एक बार स्वय गाते और एक बार श्रोता। वातावरण उनके बोलने से तथा भजन के गुंजन से बध सा जाता। ९३ वर्ष की आयु तक भी उन की आवाज का ओज बना रहा। उन की वाग्धारा जब बहती थी सतत प्रवाह के साथ घटों तक श्रोता सुनते रहते थे। आर्य-समाज कलकत्ता, विधान सरणी की शताब्दी के अवसर पर "क्या आर्य लोग बाहर से आये थे" विषय पर वे दो घण्टे तक बोले थे। उन के उदाहरण, अनेकों प्रमाणो, सरल भाषा में बिना तनाव के दिये गये भाषण को लोग आज तक भी याद करते हैं।

आर्यसमाज के शास्त्रार्थ युग को जिन्होंने भी देखा है और जिन्होने अमर स्वामी के शास्त्रार्थों को सुना है वे आज तक भी रोमाचित हो जाते हैं। शरद जी की पंक्तियां स्मरण आ रही हैं—

"वह विरक्त, वह वीर पुरुष, वह अमर स्वामी संन्यासी, पाखण्डों का सदा सदा विद्रोही, ईश्वर विश्वासी, जीवन भर जो रहा पूजता वैदिक आदर्शों को, सदा सदा आमन्त्रित करता आया संघर्षों को, वेद ज्योति से अपने जीवन को ज्योतित कर डाला, निज वाणी से, लेखनी से, जग आलोकित कर डाला, शास्त्रार्थ समर में वह योद्धा बन अड जाता। कौन हिला पाये अंगद का पांव गड़ जाता, दयानन्द का सैनिक वह, सेनानी वह आर्य सेना का, बढा जिधर को ओ३म् ध्वजा ले, फहरी विजय पताका। तर्क बाण, जब यह प्रमाण का देता बरसाता, पाखण्डों का दुर्ग, धराशायी हो गिर जाता।"

महात्मा अमर स्वामी ने जहा अनेकों लेख लिखे साथ हो अनेकों पुस्तके भी उन्होने लिखी हैं जिन मे प्रमुख पुस्तक इस प्रकार है—

सत्यार्थप्रकाश मण्डन, कौन कहता है द्रौपदी के पाच पति थे, महर्षि दयानन्द लोगो की दृष्टि में, गायत्री मन्त्र व्याख्या, अमर गीता-जलि ३ भाग, मूर्तिपूजा और शकरा-चार्य। इसके साथ उनके शास्त्रार्थों का सग्रह जो "निर्णय के तट पर" नाम से प्रकाशित हुआ।

स्वामी जी ने अपने जीवन में सैकडो युवक तैयार किये जो आज देश के कोने-कोने मे वेद सन्देश सुना रहे हैं। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले के अरनिया ग्राम मे वि० स० १९५१ चैत्र शुक्ल प्रति-पदा को हुआ था। जीवन भर वैदिक धर्म के लिए लगे रहे और इसी लक्ष्य मे उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। आर्यसन्देश परिवार उस महामना को श्रद्धानत होकर श्रद्धा-जलि अर्पित करता है।

—यशपाल सुधांशु

इस अंक में

- ☐ सम्पत्ति की सार्थकता : प्रवचन
- ☐ हिन्दी भाषा और राष्ट्रीय एकता
- ☐ साहित्य सौरभ
- ☐ प्रेरक प्रसग

तथा अन्य सामग्री।

सह-सम्पादक—पं० यशपाल 'सुधांशु' एम० ए०

मुख्य सम्पादक—डा० धर्मपाल

सम्पत्ति की सार्थकता : प्रवचन

—भैरवदत्त शुक्ल

(गतांक से आगे)

बस, इतना ध्यान रखना अपेक्षित है कि जिस दान-पद्धति से भिक्षा-वृत्ति को प्रोत्साहन मिलता हो, व्यक्ति अकर्मण्य रूप में समाज और राष्ट्र के लिए दुर्वह भारवत् प्रतीत होता हो; ढोंगों, रूढ़ियों, आडम्बरों की सैलाबी बाढ़ आती हो; कुछ पोंगापंथी चामत्कारिक बाबाओं, 'पीरो' और 'फादरों' को मौज-गुलछर्रे उड़ाने के अवसर मिलते हों; और जन-जन के हाथों दिये दान-रूप धन से मदिरा का उन्मुक्त सेवन किया जाता हो, वासना की दुरापगा प्रवाहित की जाती हो, कामान्धता के उन्मादी ज्वार में मजबूरी और मासूमियत का फायदा उठा कर हजारों का कौमार्य और नारीत्व नीलाम किया जाता हो; उसका विरोध करना हमारा पुनीत दायित्व है, समाज का विशिष्ट कर्म है और राज्य एवं शासन को ऐसी दान-पद्धति का समूलोच्छेदन करने के लिए सदैव सावधानी और सक्रियता के साथ तत्पर रहना चाहिए।

वैदिक परम्परा तो उसी दान को वास्तविक दान मानती है जिस से धन का विकेन्द्रीकरण सम्भव हो; शिक्षा, उद्योग और सर्वतोमुखी सामर्थ्य का विकास एवं उन्नयन किया जा सके और कहीं भी किसी भी तरह का अभाव न दृष्टिगत हो। आज पूरा भारतीय समाज दानी बनने की डींग हाँकता है, मगर हर मन्दिर, तीर्थ स्थल और पर्यटन-केन्द्र पर भिखारियों की बे-तहाशा भीड़, शिक्षित और अशिक्षित बेकार-बेरोजगार लोगों का प्रतिवर्ष बढ़ जाने वाला अनुपात, विद्वानों एवं साहित्यकारों की ईमानदारी या निष्ठा के नकारने को दुष्प्रवृत्ति, चाटुकार-अवसरवादी तत्वों की अवांछित मनोवृत्ति का दिनों-दिन विकास और सामाजिकता और राष्ट्रीयता के प्रशस्तपथ पर अड़ने वाले अवरोध चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं कि हमारी दान-पद्धति में कहीं न कहीं खोट या खामी अवश्य है।

खैर, कुछ भी हो, दान के लिए लगाए जाने वाले सार्वजनिक हितकारी धन को ही वेदों में 'रायः' 'रयि' पदों से अभिहित किया गया है।

(ग) भोग—धन की तृतीय स्थिति 'भोग' है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक सभी प्रकार की आवश्यकताओं की परिपूर्ति सम्मिलित है। चाहे कुटीर, गृह या प्रासाद विनिर्मित करना हो; रोटी-दाल-चावल-पूड़ी-कचौड़ी आदि छप्पन प्रकार के व्यंजन बनाकर, उनका स्वाद ग्रहण करते हुए उदर की बुभुक्षा शांत करनी हो, शर्बत-लस्सी, जल-सोडा, टानिक आदि पीकर पिपासा के शमन के साथ-साथ तुष्टि और पुष्टि ग्रहण करनी हो; या धोती-कुर्ता, बेलबाटम-शर्ट, सूट आदि परिधान बनाकर सौन्दर्य-प्रदर्शन की बलवती स्पृहा की पूर्ति के साथ तन ढकना हो, इन सब के लिए प्रयुक्त होने वाले धन को वैदिक पारिभाषिक पदावली में 'वसु' संज्ञा प्रदान की गयी है।

हम ठहरे मनुष्य! केवल तन ढककर, खा-पीकर या किसी कक्ष-कुटीर में रह कर संतोष नहीं होता। चाहे सीमित परिधि हो या विस्तृत परिवेश—सर्वत्र घर, परिवार, कुटुम्ब, गोत्र, पड़ोसी आदि के साथ हमारे सम्मान या प्रतिष्ठा का सूत्र अनुस्यूत रहता है। उसी को सामाजिक या पारस्परिक व्यवहार बतलाया गया है। बड़ा जटिल और समस्या-संकुल है इसका क्षेत्र। जितने भी सामाजिक उन्नयन के आयोजन आज तक सम्भव हुए हैं, सारे के सारे इसी के जाने-अनजाने क्षेत्र में। साथ ही, विवाह आदि मांगलिक समाजोपयोगी संस्कारों में तड़क-भड़क, विद्युत्प्रकाश-आतिशबाजी, नेग-ठहरौनी, दहेज प्रभृति कु-प्रथाएँ सामाजिक व्यवहार की ही लाडिली बेटियाँ हैं जिन्हें हम अनुपयोगी जान कर भी कलेजे से पूरी तौर से लिपटाए हुए हैं। चाह कर भी हम उन्हें छोड़ नहीं पाते।

इस सामाजिक व्यवहार पर धन का जो अंश प्रयुक्त किया जाता है, उसी को 'राधः' कहा गया है। परन्तु जिस से नवविवाहिता वधू को निर्ममता के साथ भूसे की कोठरी में बंद करके केवल इसलिए घुट-घुटकर मर जाने के लिए मजबूर कर दिया जाता है कि वह पूरा दहेज साथ में नहीं ला पायी या सद्यः-प्रसूत शिशुओं को नाली, शौचालय या सरिता की लहरों में केवल इसलिए फेंक दिया जाता है कि दो कामान्ध व्यक्तियों का वासना-पूरित स्वेराचार समाज की आँखों के सामने प्रकट न हो सके या फुसला कर किशोर-किशोरियों को सुदूर अरब आदि देशों में केवल इसलिए बेच दिया जाता है कि कुछ ही समय में हवेली खड़ी की जा सके; वह 'राधः' वस्तुतः 'राध' न होकर 'कु-राध' है। हम कितने भीरु हो गए हैं! 'कु-राधः' का पर्दाफाश करने की हम में हिम्मत नहीं रह गई है। हम से भले तो वे पशु हैं, जो सींग चलाकर या लातें मारकर अन्याय का विरोध करते हैं। हम तो आँखें होते हुए भी अन्धे बने रहते हैं, कान रखते हुए भी बधिर बनने का अभिनय करते हैं और बुद्धि पर काई डालने में ही गौरव मानते हैं।

मनन से हो मनुष्य बनता है। मनन का क्षेत्र मन-बुद्धि से लेकर आत्मा तक है। इसीलिए मनुष्य केवल सामाजिक व्यवहारों में ही उलझ कर नहीं रह जाता। यदि इन्हीं में उलझ कर रहना भी चाहे, तो रह नहीं सकता। बुद्धि की किकोटी उसे चैन से बैठने ही नहीं देगी। उसे मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक आवश्यकताओं के भी तीखे तेवर और नित्य नये नाज-नखरे उठाने पड़ते हैं। यदि मन, बुद्धि और आत्मा का विकास न हुआ तो मानव जीवन का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता। लेकिन, वाह रे आधुनिक जीवन! और उस में साँसें ढोता मानव! वह आकाश में प्रति-स्वन यानों के सहारे उड़ान भरता है, और राकेटों में चन्द्र-शुक्र प्रभृति ग्रहों का मर्म टटोलता है; सागर की आलोड़ित-विलोड़ित ऊर्मियों में जल-यानों के सहारे मुस्कुराते हुए सन्तरण करता है और पनडुब्बियों द्वारा उसके निम्नतम तल तक ही जाकर नहीं अटक जाता; उसके भी नीचे दबे हुए तेल आदि की तलाश करने में व्यस्त होता है; वसुन्धरा के वक्षस्थल का दुग्ध-पान करके तृप्त न होकर, उस की पर्तों में कोई पुरातन संस्कृतियों के पद-चिह्न खोजता है लेकिन अपने खोटे के मन को संयमित नहीं कर पाता; बुद्धि की क्षमता का दुरुपयोग करता है और आत्मा को पहचान तक नहीं पाता। सभ्यता के घिनौने संकेतों पर थोथी अपूर्ण वैज्ञानिकता की संकीर्ण वीथि पर चलते हुए, पोली-दलदली धरती पर अशक्त पैर टिकाकर, लिजलिजे हाथ उठाए हुए गगनभेदी स्वर में यह घोषित करने में ही गोलगप्पा हुआ जा रहा है कि आत्मा नाम की कोई वस्तु ही नहीं है।

इसीलिए अमेरिका के सम्पन्न किशोर ऊल-जलूल नशों में उलझे हैं; फ्रांस और जर्मनी के तरुण समलैंगिक प्रेम की काम-लोलुप कर्मनाशा में तैरते हैं; ब्रिटेन और इटली के वयस्क आत्म-रति की छद्म-प्रवंचना में जीवन को मिटाने पर तुले हुए हैं। आत्महत्या एक फैशन बन गया है और बुद्धि का बौनापन भयावह मर्ज के रूप में उभर आया है जिस से हरा बाबा, बाल योगेश्वर, और आचार्य रजनीश जैसे नये पो[illegible] का विस्तृत साम्राज्य पनपता है।

पक्षियों और पशुओं से और आत्मिक दृष्टि से ही तो अधिक ऊँचा और विशिष्ट माना गया है। यदि वह बुद्धि उन्नयन न कर सका और आत्मा ऊर्ध्व संचरण के लिए प्रयत्नशील न हुआ तो उस का अधोगमन निश्चित है। उस समय तो वह पक्षियों से हीन और पशुओं से निकृष्ट जाएगा।

उसे ईश्वर द्वारा जो असीम विभव मिला है, उस से ऊपर बतलाई गई आवश्यकताएँ तो पूरी होती ही हैं परन्तु मुख्य रूप से मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए।

आज का मानव इन आवश्यकताओं पर धन का व्यय करने की बात सोच तक नहीं पाता। यदि किन्हीं प्रेरणा-केन्द्रों से प्रभावित होकर क्षणिक आवेश में कुछ व्यय करने की इच्छा करता भी है तो वह व्यय न होने के ही बराबर होता है। उसका न तो कोई स्थायी नियोजन होता है और न उससे किसी प्रकार का कल्याण ही सम्पादित हो पाता है। हम पेड़ को बिना खाद दिए, बिना सींचे यह आशा पालते हैं कि उससे प्रचुर फल उपलब्ध होंगे।

(क्रमशः…)

सम्पादकीय—

हिन्दी दिवस के अवसर पर

हिन्दी भाषा और राष्ट्रीय एकता

★

राष्ट्रीय एकता को ईंट, पत्थर और छैनी-हथौड़ों से तैयार नहीं किया जा सकता, यह तो दिलों और दिमागों में चुपचाप उत्पन्न होकर विकसित होती है। यह प्रक्रिया केवल शिक्षा की प्रक्रिया है। यह एक धीमी प्रक्रिया है पर स्थायी और दृढ़ प्रक्रिया है। यह शब्द डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने १९६१ में राष्ट्रीय एकता परिषद् में व्यक्त किए थे। यह सुनिश्चित है कि राष्ट्रीय एकता को विकसित करने का महत्त्वपूर्ण साधन शिक्षा है। शिक्षा ही हमारे राष्ट्रीय दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है तथा हमारे हृदयों में छिपी हुई बलिदान और सहिष्णुता की भावना को विकसित करती है। शिक्षा के प्रचार प्रसार से ही हमारी वैचारिक संकीर्णता समाप्त होती है। जब हम क्षेत्रीय, भाषायी, धार्मिक संकीर्णता से ऊपर उठकर एक राष्ट्र, एक भाषा, एक धर्म की ओर उन्मुख होते हैं, तब हमारा राष्ट्रीय संगठन सुदृढ़ होता है और हम सर्वांगीण उन्नति करते हैं।

भारत एक विशाल देश है, इस में विभिन्न भाषाएँ और बोलियां हैं। अधिकांश लोग सरल भाषा में बोली हुई संस्कृत को समझ लेते है, क्योंकि यह भाषा उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत की सभी भाषाओं की शब्द-स्रोत है। मराठी, गुजराती, बंगाली, हिन्दी, तेलगू, तामिल, मलयालम, कन्नड़ सभी भाषाओं में संस्कृत भाषा के शब्द हैं। संस्कृत से विकसित हुई जो आज की सर्वाधिक प्रचलित भाषा है वह हिन्दी है। हिन्दी को लोग कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक सभी समझ लेते हैं। ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहां पर हिन्दी को समझा न जाता हो। इस कार्य को करने में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का कार्य सराहनीय है।

सामाजिक, व्यापारिक, राजनीतिक, क्रान्ति के लिए राजा राम मोहन राय से लेकर आज तक के सभी समाजसुधारकों ने, राजनेताओं ने तथा दार्शनिकों ने हिन्दी भाषा के माध्यम से कार्य किया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती, केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय आदि महानुभावों ने राष्ट्रीय एकता के लिए तथा स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन बनाने के लिए इस भाषा का प्रयोग किया वह हिन्दी ही थी। स्वतंत्रता आंदोलन कांग्रेस का आंदोलन माना जाता है। कांग्रेस पार्टी की प्रारम्भ की भाषा अंग्रेजी थी पर जब इस आंदोलन को जन आंदोलन का रूप दिया गया तब महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद सभी ने अपनी बात हिन्दी में ही कही। फलस्वरूप जब देश आजाद हुआ तब एक मत से यही निर्णय लिया गया था कि हिन्दी राष्ट्रभाषा होगी।

भाषा, जाति, सम्प्रदाय, धर्म, क्षेत्र इन संकीर्णताओं से उठकर यदि हम सम्पूर्ण राष्ट्र को एक करना चाहते हैं, तो हमे अपनी क्षुद्रताओं का त्याग करना होगा और इसके लिए यही आवश्यक है कि हम हिन्दी को ईमानदारी से अपनायें। हिन्दी की सबसे बड़ी दुश्मन अंग्रेजी है। अंग्रेजी तो असल में जादूगरनी है। स्वतन्त्रता से पहले और उसके बाद भी अंग्रेजी के समर्थकों ने भारतीय भाषाओं के साथ जमकर खिलवाड़ किया। राष्ट्रभाषा हिन्दी को पंगु बनाने का प्रयास किया फिर भी अंग्रेजी जानने वाले पांच प्रतिशत से अधिक नहीं हैं। अंग्रेजी में सारा सरकारी कामकाज होता है, अंग्रेजी बोलने वाले को इज्जत मिलती है, अंग्रेजी बोलने वाले को बड़ा आदमी माना जाता है। दुकानदार अंग्रेजी नहीं जानता फिर भी वह बोर्ड अंग्रेजी में लिखता है। सामाजिक संगठनों की कार्यवाहियां अंग्रेजी में लिखी जाती हैं। वे संस्थाएँ जिनके उद्देश्यों में हिन्दी और भारतीय भाषाओं के प्रचार प्रसार की बात लिखी होती है, वे भी बैठकों में अंग्रेजी का सहारा लेते हैं अब आप ही बताइए अंग्रेजी जादूगरनी है या नहीं।

स्कूलों, कालेजों में अंग्रेजी अनिवार्य विषय है। यद्यपि अंग्रेजी कोई पढ़ना नहीं चाहता। कालेज स्तर पर हम अंग्रेजी को जैसे छात्र-छात्राओं को पढ़ा रहे हैं और जिस तरह पढ़ा रहे हैं, वह एक मजाक है, फिर भी अंग्रेजी पढ़ाई जा रही है।

कभी कभी कुछ छात्र आते है और कहते हैं हमें यह अध्यापक नहीं वह चाहिए। इसका कारण मैं आप को बताऊँ। बात गोपनीय है। यह छात्र उस अध्यापक को मांगते हैं, जो कुंजियों की शैली पर पढ़ाता है, जो स्वयं कुंजियां लिखाता है और जो अंग्रेजी नहीं हिन्दी, पंजाबी, हरियाणवी, अथवा किसी दूसरी भाषा के टूटे फूटे शब्दों का प्रयोग अधिक करता है। फिर भी देश को चलाने में इस देश के नियामकों ने अंग्रेजी की लगाम पकड़ी हुई है। वे सोचते है कि यदि अंग्रेजी है, तो सारा देश एक है। वे यह भी सोचते हैं कि यदि अंग्रेजी है, तो उनका सम्मान विदेशों में भी है। परन्तु होता इस का उलटा ही है। यू० एन० ओ० में हिन्दी में बोलने पर जो सम्मान श्री अटल बिहारी वाजपेयी को मिला था, ऐसा सम्मान विदेशों में कभी किसी राष्ट्रीय नेता को नहीं मिला। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है, परन्तु ऐसा नहीं है अंग्रेजी न जापान में बोली जाती है, न रूस में और न जर्मनी में और न इटली में, और तो और इंगलैण्ड से केवल २६ किलोमीटर की दूरी पर जो यूरोपीय देश पड़ते हैं, जैसे फ्रांस, डेनमार्क और स्वीडन, इनमें भी अंग्रेजी नहीं बोली जाती।

अब बात आती है कि हमारे देश में बहुत सी भाषाएँ हैं फिर हिन्दी ही क्यों हो, इसका स्पष्ट कारण है, हिन्दी भारत के सब से बड़े भू-भाग में बोली जाती है। हिन्दी भारत के सभी प्रांतों में समझी जाती है। तमिलनाडु में कभी कभी राजनैतिक कारणों से हिन्दी का विरोध किया जाता है। पर एक सर्वेक्षण के बाद यह पाया गया कि मद्रास के ४६ सिनेमाघरों में से ३८ में हिन्दी फिल्में चल रही थीं। फिल्मों को देखने वाले आम लोग होते हैं और वे ही वास्तविक भाषा का स्वरूप बताते हैं। किसी राष्ट्र की स्वतन्त्रता के केवल चार चिह्न हैं—राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय भाषा और राष्ट्रीय संविधान। अतः राष्ट्रभाषा का होना तो राष्ट्रीय एकता के लिए नितांत आवश्यक है। रूस में २३ भाषाएँ बोली जाती हैं, पर फिर भी राष्ट्रीय भाषा रूसी है, जो सारे देश को जोड़कर रखती है। उसी तरह हमारे देश में भी १४ प्रमुख भाषाओं तथा अन्य अनेक बोलियों के होते हुए एक भाषा का राष्ट्रभाषा होना इस देश को एकता की ओर ले जाने में अनिवार्य तत्व है और निश्चय ही यह कार्य हिन्दी कर सकती है। भाषा प्रयोग से समृद्ध होती है जब तक हम इसका प्रयोग नहीं करेंगे तो यह समृद्ध होगी कहां से। और अंग्रेजी के दानव हमें यह करने नहीं दे रहे हैं। पहली आवश्यकता अंग्रेजी को खत्म करने की ही है। नई शिक्षा नीति में हिन्दी को समुचित स्थान दिया गया है। पर अंग्रेजी के वर्चस्व को समाप्त करने की दिशा में कोई भी प्रयास नहीं किया गया। संस्कृत जो पूरे देश की भाषाओं को शाब्दिक ऊर्जा प्रदान करती है उस की ओर भी कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। समस्त भारतीय भाषाओं की सामान्य शब्दावली संस्कृत से भरपूर है। पहले संस्कृत भाषा एकता की वाहक थी। अब हिन्दी ही वह कार्य कर सकती है। हम मानते हैं भाषा शिक्षण में पहला स्थान मातृभाषा को दिया जाना चाहिए और दूसरा स्थान हिन्दी भाषा को और इसके बाद तीसरी भाषा कोई विदेशी भाषा हो सकती है, या उत्तर वालों के लिए दक्षिण की भाषा और दक्षिण वालों के लिए उत्तर की भाषा। इस प्रकार के आदान-प्रदान से हमारा राष्ट्रीय संगठन सुदृढ़ होगा।

अब यह प्रश्न उठता है कि क्या हम हिन्दी का सही प्रचार प्रसार कर रहे है? दिल्ली भारत की राजधानी है। यहां पर चार केन्द्रीय विश्वविद्यालय भी है। इन सभी में हिन्दी पढ़ाई भी जाती है और यहाँ के प्राध्यापक हिन्दी के लिए सतत प्रयत्नशील लगते हैं। वे अपनी नौकरी के लिए दो या चार घण्टे लगाते होंगे। बाकी सारा समय हिन्दी के लिए ही देते हैं। पुस्तकें लिखते हैं, पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखते हैं। निरन्तर प्रकाशकों और सम्पादकों से सम्पर्क बनाए रखते हैं। कभी कभी अपनी पुस्तक के प्रकाशन के लिए प्रकाशक को आर्थिक सहायता भी प्रदान करते हैं। कभी कभी वे अपनी पत्रिका स्वयं भी निकालते हैं। इस काम में अंग्रेजी

(शेष पृष्ठ ७ पर)

विचार वाटिका—

साहित्य सौरभ

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
वेद सदन, अबोहर

मुन्शी कन्हैयालाल जी के सम्बन्ध मे—

इन दिनों 'परोपकारी' आदि कई आर्य पत्रों में प्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री डा० भवानीलाल जी भारतीय का मुन्शी कन्हैयालाल जी के सम्बन्ध में एक खोजपूर्ण लेख छपा है। यही निबन्ध उनकी एक नवीन पुस्तक में भी है। निश्चय ही मुन्शी जी के साहित्य व जीवनी में रुचि रखने वालों के लिए यह लेख पठनीय है परन्तु, इस में एक बात ठीक नहीं छपी। श्री डा० भारतीय जी ने यह लिखा है कि आर्यसमाज पेशावर की स्थापना मुन्शी जी ने की थी। यह अतथ्य है।

जिस किसी के आधार पर भी मान्य भारतीय जी ने यह लिखा है—यह बात सत्य नहीं है। शीघ्र ही आर्य जगत् स्वामी श्रद्धानन्द जी लिखित पं० लेखराम जी की जीवनी का एक नया संस्करण पढ़ेगा। इसे डा० भारतीय जी ने ही सम्पादित किया है। इसमें स्पष्ट लिखा है कि पं० लेखराम जी ने आर्यसमाज पेशावर की स्थापना की थी। इन पंक्तियों के लेखक द्वारा लिखित रक्त साक्षी पं० लेखराम भी दूसरी बार छपने जा रहा है। इसमें भी अनेक प्रमाणों के आधार पर यही लिखा है कि आर्यसमाज पेशावर के संस्थापक पं० लेखराम जी थे। स्वयं पं० लेखराम जी ने ऐसा लिखा है। श्री पं० लेखराम जी के चाचा पं० गण्डाराम जी ने भी यही लिखा है।

मुन्शी जी ऋषिभक्त तो थे परंतु वह नास्तिक थे। वह कभी भी आर्यसमाज के सदस्य न बने। हां, इतना अवश्य है कि मुन्शी जी के 'नीतिप्रकाश' पत्र से पं० जी को ऋषि दयानन्द की जानकारी प्राप्त हुई और पं० जी अजमेर ऋषि दर्शन के लिए गए। मुन्शी जी ने 'नीतिप्रकाश' उर्दू में ऋषि जी पर जो कुछ भी लिखा उसे हमने हिन्दी में अनूदित करके पुस्तक रूप में छपवा दिया था। एक बात और पाठक नोट कर लें कि श्री पं० गुरुदत्त व लाला लाजपत राय भी पहले कन्हैया लाल जी के चेले थे और पं० लेखराम जी की लेखन शैली पर भी मुन्शी जी की शैली का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

वह खड़क सिंह थे—

श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी ने एक नई पुस्तक लिखी है ARCHITECTS of the Aryasamaj इस में अमृतसर में ऋषि से एक भारतीय पादरी की भेंट का वर्णन किया है। इसका नाम स्वामी जी ने काहनसिंह लिखा है। यह ठीक नहीं है। उक्त पादरी का नाम खड़कसिंह था। इसे ऋषि के साथ शास्त्रार्थ के लिए बुलाया गया था परन्तु वह ऋषि के दर्शन करके व उनके कुछ विचार सुन कर एकदम बदल गया। वह शुद्ध हुआ उसकी तीन पुत्रियां थीं। तीनों आर्य परिवारों में ब्याही गई। पहले भी किसी ग्रन्थ में इसके सम्बन्ध में कुछ अशुद्ध बात छप गई। इसलिए मैंने इस भूल का सुधार करना आवश्यक जाना।

आर्यसमाज का इतिहास—
(चौथा व छठा भाग)

इन दोनों ग्रन्थों को मैंने विहंगम दृष्टि से देखा है। दोनों खण्डों में पर्याप्त खोजपूर्ण व पठनीय सामग्री है। सरकारी रिपोर्टों से जानकारी प्राप्त करने का सुन्दर प्रयास किया गया है। कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में सुनी-सुनाई अतिशयपूर्ण बातें लिख दी गई हैं। कई व्यक्तियों व घटनाओं के बारे में लेखकों ने जांच पड़ताल का कष्ट ही नहीं किया। आर्यसमाज के पत्रों का पूरा प्रयोग नहीं किया गया। कई अध्याय अनावश्यक हैं। ऐसा मेरा मत है।

इस इतिहास के पीछे कई खण्डों में बार-बार आया है कि स्वामी सर्वानन्द जी ने प्रथम जून सन् १९५५ ई० को संन्यास-दीक्षा ली। यह ठीक नहीं है। मैं भी श्री स्वामी जी की संन्यास दीक्षा में सम्मिलित हुआ था। यह दीक्षा समारोह पहली मई १९५५ ई० को हुआ था।

स्व० श्री प्रकाशचन्द्र जी मूना के परिचय में लिखा है कि लण्डन आर्यसमाज के संस्थापक श्री लक्ष्मी नारायण जी इनके चाचा थे। यह सर्वथा अशुद्ध है। श्री प्रकाश जी मून तो महेश्वरी हैं और श्री लक्ष्मी नारायण जी कायस्थ कुल में जन्मे। प्रकाश चन्द्र जी के चाचा इंजीनियर थे जबकि आर्यसमाज लण्डन के संस्थापक श्री लक्ष्मी नारायण बैरिस्टर थे। श्री लक्ष्मी नारायण जी के पिता साँपला (हरियाणा) में तहसीलदार थे। प्रकाशचन्द्र जी मूना के परिवार का रोहतक हरियाणा से कोई सम्बन्ध ही नहीं।

श्री लाला लाजपत राय के प्रसंग में लिखा है कि कांगड़ा का भूकम्प १९०४ ई० में आया। यह ठीक नहीं। यह भूकम्प १९०५ ई० में आया।

हिन्दी सत्याग्रह के वर्णन में फीरोजपुर जेल के लाठी काण्ड में लिखा है कि स्वामी परमानन्द को स्वामी आत्मानन्द समझकर पीटा गया। यह सब असत्य है। लेखक भी उसी जेल में था। पिटवाने वाले पीटने वाले सब जानते थे कि स्वामी श्री आत्मानन्द इस जेल में नहीं। न जाने किसने यह बात लिखवा दी।

बेशों वाली धर्म सभा का लंबा चौड़ा वृत्तान्त व्यर्थ में ही दे दिया। इस में भी कई अतिशय हैं। यदि लिखना ही था तो फिर लिखते कि बेशों ने कितने रंग बदले, कब-कब जमानतें जब्त करवाई और मुकदमाबाजी की। आर्य युवक परिषद् और आर्य सभा की जीपें, स्कूटर सब आर्य लोगों ने बचा लीं।

स्वाधीनता संग्राम में कुछ लोगों की तो अच्छी चर्चा है परन्तु आश्चर्य की बात है कि कांग्रेस के १९३० ई० के आंदोलन के सर्वाधिकारी, वायसराय की आज्ञा से लाहौर शाही किले में बन्दी बनाए गए एकमेव संन्यासी (वायसराय की आज्ञा से स्वाधीनता संग्राम में केवल एक ही साधु बन्दी बनाया गया) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की चर्चा तक नहीं की गई। पं० मनसा राम जी, पं० विष्णुमित्र जी, चन्द्रकवि, ला० गणेशदास जी स्यालकोटी, स्वामी अनुभवानन्द जी महाराज, लाला जसवन्त राय जी, चौधरी वेदव्रत जी सम्पादक आर्य गजट का उल्लेख क्या किया है? काले पानी में एक आर्य वीर ने आजीवन के लिए आजोलिकर्म कर दिए। पं० जगतराम जी ने काले पानी में वैदिक नाद बजाया। इस इतिहास की कहां चर्चा है?

पंजाब के गवर्नर पर गोली चलाने वाला हुतात्मा हरिकृष्ण, मुसलमानी वेश में नेता जी सुभाष को विदेश पहुंचाने वाला भक्तराम, दोनों सगे भाई और आर्य परिवार के थे। सारा परिवार स्वतन्त्रता के लिए जेल गया। इस की चर्चा कहां है? ऋषि के पश्चात् आर्यसमाज के प्रथम शहीद वीर चिरञ्जीलाल के भाई चौटाराम स्वतन्त्रता सेनानी थे परन्तु उनकी चर्चा ही नहीं। नामी इतिहासकारों ने इन सबकी चर्चा की है। आश्चर्य तो यह है कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के तीन छोटे बड़े जीवन चरित्र उपलब्ध हैं। म० नन्द किशोर ने प्रधान सम्पादक जी को लाकर दिये भी परन्तु न तो उपदेशक विद्यालय लाहौर की चर्चा है और न विद्यालय के स्नातकों की तथा न विद्यालय के आचार्य पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की जेल यात्राओं का वर्णन है।

श्री रामप्रसाद बिस्मिल के गुरु स्वामी श्री सोमदेव जी का पूर्व नाम अशुद्ध छपा है उनका नाम ब्रजलाल चोपड़ा था, वह बजीराबाद में जन्मे थे न कि लाहौर में। वह महाशय कृष्ण के लंगोटिए थे। बीकानेर के स्वामी गोपालदास जी का वर्णन भी अधूरा है। वह नित्य सत्यार्थप्रकाश का पाठ करते थे। यह तथ्य लिखा जाता तो कितना अच्छा था। इन्हीं स्वामी के साथी जी० हरिश्चन्द्र जी जैन की चर्चा ही नहीं। प्रसिद्ध आर्य विद्वान् डा० भारतीय जी ने भी इन के दर्शन किए थे। लोकसभा अध्यक्ष श्री० बलराम जाखड़ के लिए भी वह प्रेरणास्रोत रहे हैं।

श्री रणवीर ने आर्यसमाज की कितनी सेवा की? उसकी तो इतनी चर्चा कर दी। वह स्वतन्त्रता सेनानी थे, यह लिख दिया बस पर्याप्त था परन्तु स्वर्गीय ला० पिण्डीदास, महता नन्दकिशोर, महाशय रतनचन्द (काले पानी वाले) तथा स्वामी विद्यानन्द जी (अभी भी जीवित हैं) पर एक अध्याय नहीं। हैदराबाद के आर्यों की यातना व संघर्ष पर इन खण्डों में क्या आया है? यह पाठक स्वयं देख लें।

स्वामी सत्यप्रकाश जी एकमेव वैज्ञानिक हैं जो स्वाधीनता संघर्ष में जेल गये। इस स्वर्णिम इतिहास की कितनी चर्चा है, यह पाठक स्वयं पढ़ लें। केन्द्रु वैज्ञानिक आर्यविद्वान

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रेरक प्रसंग

प्रस्तोता—सत्यानन्द आर्य

: १ :

भट्ट नागेश गंगा के किनारे काशी के समीर वट वृक्ष के नीचे चौकी पर बैठे हुए नित्य प्रातः से सायं तक असंख्य विद्यार्थियों को निःशुल्क वेद, वेदांग, अष्टाध्यायी [illegible] महाभाष्य पढ़ाया करते थे। छोटी-सी एक कुटीर थी जिसमें नागेश अपनी पत्नी तथा पुत्री सहित निवास किया करते थे। बिना याचे जो कुछ अन्नदस्त्र आ जाता, तीनों प्राणियों का उसी से निर्वाह होता था।

आपके त्याग, तप और पाण्डित्य की चर्चा सुनकर काशीराज ने स्वयं उपस्थित होकर महाराज से विनय की, "श्रीचरण कभी महल में पधार सकें तो महारानी सहित आप का सत्कार करके हम अपने को सौभाग्यशाली बनायें।"

राजमहल जाने के विचार से उस दिन नागेश नाव घाट पहुंचे और एक नौका में बैठ गए। नाविक ने किराये का एक टका मांगा। "हमारे पास टका कहां से आया", नागेश ने कहा। "एक टका भी पास नहीं रखते, भट्ट नागेश ही चले आए हीं के", मल्लाह बोला। नागेश सद्यः नौका से उतरकर अपनी कुटीर को [illegible] दिए।

"यह स्वयं नागेश ही हैं", यात्रियों ने मल्लाह को बताया। नाविक ने दौड़कर चरण पकड़ लिये और गिड़गिड़ाया, "भूल से अनजाने बड़ा अपराध हो गया, भगवन्! तेरा कल्याण हो, नाविक! तू ने मुझे बड़े पाप से बचा दिया। जिस नागेश के त्याग की कीर्ति रंक से राजा तक फैल रही है, उसे किसी के द्वार पर जाना अशोभनीय है", यह कहकर नागेश अपने स्थान को चल दिए।

: २ :

पाण्डवों और कौरवों को शस्त्र शिक्षा देते हुए आचार्य द्रोण के मन में उन की परीक्षा लेने की बात उभर आई। आचार्य ने काफी सोच विचार के बाद अपनी इच्छा सभी शिष्यों के सामने प्रकट कर दी। परीक्षा के लिए शिष्यों ने तैयारियां करना शुरू कर दीं। आचार्य, परीक्षा कैसे और किन विषयों में ली जाये, विचार करते रहे। अकस्मात् उन्हें एक बात सूझी कि क्यों न इन की वैचारिक प्रगति और व्यावहारिकता की परीक्षा ली जाए।

दूसरे दिन प्रातः जैसे ही सभी शिष्य आचार्य के सामने उपस्थित हुए। आचार्य ने राजकुमार दुर्योधन को अपने पास बुलाया और कहा—"वत्स, तुम समाज में से एक अच्छे आदमी की परख करके उसे मेरे सामने उपस्थित करो।" दुर्योधन ने कहा—"जैसी आपकी इच्छा", और वह अच्छे आदमी की खोज में निकल पड़ा। कुछ दिनों बाद दुर्योधन वापस आचार्य के पास आया और कहने लगा, "मैंने कई नगरों, गांवों का भ्रमण किया परन्तु कहीं कोई अच्छा आदमी नहीं मिला। इस कारण मैं किसी अच्छे आदमी को आप के पास न ला सका।"

आचार्य द्रोण ने कुछ नहो कहा। अब की बार उन्होंने राजकुमार युधिष्ठिर को अपने पास बुलाया और कहा, "बेटा इस पृथ्वी पर से कोई बुरा आदमी ढूंढ कर ला दो।" युधिष्ठिर ने कहा, "ठीक है महाराज मैं कोशिश करता हूं।" इतना कहने के बाद वे बुरे आदमी की खोज में चल दिए।

काफी दिनों के बाद युधिष्ठिर आचार्य के पास आए और प्रणाम करके खड़े हो गए। आचार्य ने पूछा, "क्यों? किसी बुरे आदमी को साथ लाये या खाली हाथ लौट आए?" युधिष्ठिर ने कहा, "महाराज मैंने सर्वत्र बुरे आदमी की खोज की परंतु मुझे कोई बुरा आदमी मिला ही नहीं। इस कारण मैं खाली हाथ लौट आया हूं।"

सभी शिष्यों ने युधिष्ठिर को भी खाली हाथ वापस लौटा देखकर आचार्य से पूछा, "गुरुवर, ऐसा क्यों हुआ कि दुर्योधन को कोई अच्छा आदमी नहीं मिला और युधिष्ठिर को कोई बुरा आदमी नहीं।"

शिष्यों के प्रश्न को सुन कर आचार्य बोले, "बेटा, जो व्यक्ति जैसा होता है उसे सभी वैसे सारे लोग दिखाई पड़ते हैं। इसलिए दुर्योधन को कोई अच्छा व्यक्ति नहीं मिला और युधिष्ठिर को कोई बुरा आदमी न मिल सका।"

अब शिष्यों का समाधान हो गया था।

: ३ :

एक दिन आर्यसमाज रुड़की की अन्तरंग सभा के सदस्यों के आग्रह पर स्वामी दयानन्द ने उन्हें उपदेश देते हुए कहा—"सभा में हठ और दुराग्रह नहीं करना चाहिए। अपने पक्ष की पुष्टि में चाहे जितनी युक्तियां दो, परन्तु प्रकृति और हृदय में ऐंठन न आने दो। किसी बात को पकड़कर इतना नहीं खींचना चाहिए कि परस्पर के भ्रातृ भाव का तार ही टूट जाए। बहुमतानुसार जो मत उत्तीर्ण हो जाए उस पर फिर हठ नहीं करना चाहिए। अन्तरंग सभा के कार्यों को प्रकाशित करना उचित नहीं है। वह मनुष्य अतीव तुच्छ और ओछा होता है जो किसी गुप्त सम्मति को गुप्त नहीं रख सकता। ऐसा मनुष्य विश्वासपात्र भी नहीं रहता।"

: ४ :

गांधी जी यरवदा जेल में थे, उनके स्वास्थ्य को देखते हुए यह निश्चित किया गया कि उन्हें मक्खन खाना चाहिए। गांधी जी बोले, "मैं तो सिर्फ बकरी के दूध का मक्खन ले सकता हूं।"

मक्खन उन्होंने आटे के साथ लेना मंजूर किया। दस सेर आटा आ गया। लेकिन कुछ दिनों बाद गांधी जी ने मक्खन व आटा खाने से इन्कार कर दिया, उन्होंने आटा व मक्खन वापस करना चाहा। लेकिन जो जेल के स्टोर से दिया जा चुका था, उसे अधिकारी वापस कैसे ले लेते। गांधी जी ने उन्हें समझाते हुए कहा, जितनी चिन्ता मुझे अपने पैसों की है, उतनी ही सार्वजनिक धन की भी। यह पैसा भी तो मेरा व जनता का ही है। □

श्री केदारनाथ दीक्षित पुरस्कार

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य (पंजीकृत) द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण उत्सव पर दिनांक २२।१०।१९८७ को एक वैदिक विद्वान् को ११००/- रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

इस हेतु वैदिक विद्वानों के नामों का सुझाव, उनके पूरे विवरण सहित चयन समिति के संयोजक श्री मनोहर जी विद्यालंकार, ४५५ कटरा ईश्वर भवन खारी बावली, दिल्ली-६ के पते पर या सभा कार्यालय में ७।१०।८७ तक भेजने का कष्ट करें।

महाशय धर्मपाल
प्रधान

राजेन्द्र दुर्गा
महामंत्री

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

कश्मीर यात्रा

आर्य परिवारों की एक बस दिनांक १९.९।८७ सायं ४ बजे देहली से चलेगी और दिनांक ३०.९। ८७ रात्रि वापस आएगी। यात्रा में दैनिक सत्संग का विशेष प्रबन्ध है। इस यात्रा में आप भी देखेंगे धरती के स्वर्ग कश्मीर के प्राकृतिक दृश्य—श्रीनगर, गुलमर्ग, खिलनमर्ग, सोनमर्ग, पहलगाम, [illegible], वेरीनाग, कुकरनाग, [illegible], निशात, शालीमार, डल झील का आनन्द उठायेंगे। आप आज ही रु० ४१५/- प्रति यात्री देकर अपनी सीटें रिजर्व करवा लें।

विशेष जानकारी के लिए श्री प्राणनाथ जी घई से देहली में फोन ६४१९९१४ पर सम्पर्क करें।

रामचन्द्र आर्य
आर्य यात्रा प्रबन्धक
४६६, भीम नगर
गुड़गांव [हरियाणा]

समाचार

सत्यार्थप्रकाश परीक्षा

आर्यसमाज के प्रधानों, मन्त्रियों एवं सदस्यों तथा इसमें आस्था रखने वाले स्त्री पुरुषों, साथ ही स्कूल के प्रिंसिपलों, मुख्याध्यापकों व अध्यापकों एव सुविचारशील व्यक्तियों, जो देश (विश्व) के भावी नागरिकों को सदाचारी चरित्रवान बनाना चाहते हैं उन सब को—

—सेवा में नम्र निवेदन—

यदि आप भारत देश के महान विद्वान समाज-सुधारक, वेद, स्त्री, आर्य जाति के पुनरुद्धारक, सत्य-प्रचारक, महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धा रखते हैं तो उनके अमरग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" को विश्व का सच्चा सुख शान्ति का रास्ता दिखाने वाली पुस्तक जरूर मानते होंगे।

यदि ऐसा है तो इसके पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने का कार्यक्रम तेज करें और अपने बच्चों व छात्र/छात्राओं में इसी प्रकार की रुचि पैदा करें ताकि हमारा प्यारा भारत देश पुनः विश्व को रास्ता दिखाने वाला जगद् गुरु बन सके।

आर्य युवक परिषद् (रजि०) दिल्ली ने देश के कोने-कोने से "सत्यार्थ-प्रकाश" के प्रचार व प्रसार के लिए पिछले २६-२७ वर्षों से बहुत ही सरल विधि शुरू कर रखी है जिसकी शुरुआत देश के ४ लाख हिन्दू, सिख, ईसाई और मुस्लिम में हो चुकी है। आप भी इस में सहयोग देकर महान पुण्य के भागीदार बनें और ऋषि ऋण से उऋण होवें।

सरल विधि यह है कि आप अपने समाज, स्कूल, मुहल्ले में सत्यार्थ-प्रकाश परीक्षाओं में बिठाने के लिए कम से कम ५ व्यक्ति या छात्र/छात्राएँ तैयार करें। उनको रियायती मूल्य पर सत्यार्थप्रकाश लेकर दें ताकि वे अपने घर बैठकर सत्यार्थप्रकाश पढ़कर परीक्षाओं की तैयारी कर सकें।

आर्य युवक परिषद् 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के प्रोग्राम को आगे बढ़ाने के लिए इस वर्ष २० सितम्बर १९८७ को सत्यार्थप्रकाश की परीक्षाएँ पूर्ववत् आयोजित कर रहा है। आप इसके व्यवस्थापक बनकर इस में सहयोग करें।

परीक्षा में उत्तीर्ण होने वालों को आकर्षक प्रमाण-पत्र तो दिये ही जायेंगे साथ ही प्रथम, द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को २५, २०, १५ रु० के नकद इनाम भी दिये जाते हैं। स्कूली छात्र/छात्राओं के हर वर्ग की परीक्षा में प्रथम पांच परीक्षार्थियों को सौ-सौ रुपये के विशेष पारितोषिक भी दिये जाते हैं।

केन्द्र व्यवस्थापक को सत्यार्थ प्रचार का प्रमाणपत्र दिया जायेगा।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप अपने संस्था/विद्यालय में ५-१०० तक या इस से भी अधिक परीक्षा में बिठाकर वेद प्रचार में सहयोग करेंगे। नियमावली हेतु सम्पर्क व पत्र-व्यवहार करें।

चमनलाल
परीक्षामंत्री
एच-६४, अशोक विहार, दिल्ली-५२

निर्वाचन

दिनांक २२।८।८७ को महिला आर्यसमाज हरीनगर घण्टाघर का वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधाना : श्रीमती प्रकाशवती वर्मा
उपप्रधाना : सीता देवी
मन्त्रिणी : राजरानी सूदन
कोषाध्यक्षा : सत्या चौधरी

दिनांक २२।८।८७ को आर्यसमाज हरीनगर घंटाघर का वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान : श्री ओमप्रकाश खन्ना
उपप्रधान : सोहनलाल वर्मा
मन्त्री : आनन्द प्रकाश वर्मा
उपमन्त्री : नरेन्द्र कुमार मलिक
कोषाध्यक्ष : हरिश्चन्द्र वर्मा
प्रचारमन्त्री : ओमप्रकाश शर्मा 'सैलानी'
संपत्ति अध्यक्ष : बनारसीदास खन्ना
पुस्तकालयाध्यक्ष : ताराचन्द पंवार

ओमप्रकाश वर्मा, मन्त्री
राम नगरी आर्यसमाज हरीनगर
घण्टाघर (रजिस्टर्ड) नई दिल्ली-६४

दक्षिण दिल्ली आर्य महासम्मेलन

१४ सितम्बर से २० सितम्बर तक

आर्यसमाज विनय नगर, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में १४ सितम्बर से २० सितम्बर तक स्वामी दीक्षानन्द के ब्रह्मत्व में राष्ट्र कल्याण यज्ञ प्रातः ७ बजे से ८.३० बजे तक चलेगा। रात्रि में ८.३० बजे से ९.३० बजे तक प्रवचन होंगे। २० सितम्बर को पूर्णाहुति एव आर्य महासम्मेलन होगा जो १० बजे से लेकर १ बजे तक चलेगा।

भव्य शोभा यात्रा

शनिवार १९ सितम्बर को दोपहर २.३० बजे आर्यसमाज सफदरजंग एनक्लेव से प्रारम्भ होकर सफदरजग एनक्लेव मार्कीट, राज नगर चौराहा से होकर सरोजिनी नगर बी० डी० ब्लाक, डी० जे० और जी० आई ब्लाक, एच० ब्लाक, पी० एन० टी० क्वार्टर्स, रिजर्व बैंक क्वार्टर्स से होती हुई बाबू मार्कीट, सरोजनी नगर मार्कीट से होती हुई उत्सव स्थल भारत सेवक समाज पार्क सरोजनी नगर समाप्त होगी। शोभा यात्रा में दक्षिण दिल्ली की सभी आर्यसमाजें सम्मिलित होंगी।

शोभायात्रा संयोजक—श्री राम शरण दास आर्य, श्री रामसिंह शर्मा

वेद कथा

रात्रि ८ से ९ बजे तक
भजन—श्री गुलाबसिंह राघव
रात्रि ९ से १० बजे
वेदकथा—स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती द्वारा
रविवार २० सितम्बर १९८७
प्रातः ७.३० से ९.३० बजे तक
महायज्ञ की पूर्णाहुति
प्रातः ९.३० से १० बजे तक
भजन—श्री गुलाबसिंह राघव

संयोजक
रोशनलाल गुप्त

हिन्दी भाषा और ..

(पृष्ठ ३ का शेष)

और विज्ञान के प्राध्यापक भी उन की सहायता करते हैं। पर क्या इस से हिन्दी का प्रचार प्रसार हो रहा है। एन० सी० ई० आर० टी० की किताब में कविवर बच्चन का परिचय अमिताभ बच्चन के पिता जी कहकर दिया जाता है। और शब्द लिखे जाते हैं परयत्न, पतरिका, मिष्ट, सहमती और सकूटर, यदि गलती से बच्चा सही शब्द लिख देता है तो उसकी टीचर उसे काट-कर 'गल्त' कर देती है। यह विडम्बना ही है कि इस से हिन्दी का प्रचार प्रसार कैसे हो।

हमारी दृष्टि महर्षि दयानन्द ..स्वती की ओर जाती है, जिन्होंने गुजराती भाषी होते हुए, सस्कृत का विद्वान् होते हुए भी हिन्दी में लिखा था। वे हिन्दी के कथालेखकों मे पहले हैं। ...ने पत्र महर्षि दयानन्द ... र मिलते हैं, अधिक पहले हिन्दी में बनाए थे। आज भी रजिस्ट्रार कार्यालय में वही भाषा ज्यों की त्यों प्रयुक्त होती है।

यदि हम चाहते हैं हमारा राष्ट्र सगठित हो, हम शक्तिशाली हो, तो हमें एक होना ही पडेगा। और वह एकता हिन्दी भाषा के प्रयोग से आएगी। राष्ट्रपति वेंकट रमण हिन्दी जानते हैं, उन्होंने डा० शकर दयाल शर्मा को हिन्दी भाषा मे शपथ दिलाई। ऐसे राष्ट्रीय नेताओं के हिन्दी प्रयोग से हिन्दी को बल मिलेगा और हम उन से भी अपेक्षा करेंगे कि वे जब स्वतन्त्रता दिवस पर अथवा गणतन्त्र दिवस पर दूर-दर्शन और आकाशवाणी से राष्ट्र के नाम सन्देश केवल अग्रेजी में न दे, बल्कि हिन्दी मे स्वय दे और किसी अन्य भाषा मे देना है तो बाद मे दे।

—डा० धर्मपाल

वेदप्रचार विभाग के कार्यक्रम

जुलाई १९८७

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने ५ जुलाई १९८७ को आर्यसमाज मन्दिर टैगोर गार्डन में वेदोपदेश किया तथा पं० टेकचन्द पुरोहित के सुपुत्र अनुव्रत को उसके जन्मदिवस पर दीर्घायुष्य का आशीर्वाद दिया। १४ जुलाई १९८७ को विवेक विहार झिलमिल कालोनी, खिचडीपुर, मयूर विहार तथा १९ जुलाई को केशवपुरम, २२ जुलाई को निर्माण विहार रोहताम नगर, घोण्डा, २६ जुलाई को अशोक विहार फज २, ३१ जुलाई को अशोक नगर मे भज-नोपदेश किया तथा वेदप्रचार की नयी सम्भावनाओं के विषय मे आर्य जनों से सम्पर्क किया।

अगस्त १९८७

१ अगस्त १९८७ को श्री रतन लाल सहदेव के निवास पर स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज ने भजनोपदेश किया। २ अगस्त को दयानन्द वाटिका, राणाप्रताप बाग, किंग्जवे कैम्प, तीमारपुर, ५ अगस्त को राजौरी गार्डन, रमेश नगर, नारायणा विहार, सुदर्शन पार्क, ६ अगस्त को त्रिनगर, ८ अगस्त को मानसरोवर गार्डन, ९ अगस्त को शकरपुर, १२ अगस्त को दीवान हाल, १४ अगस्त को बिरला आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल, १५ अगस्त को आर्यसमाज घोण्डा तथा १६ अगस्त को रघुवरपुरा न० २ में भजनोपदेश किया। □

साहित्य सौरभ

(पृष्ठ ४ का शेष)

...हाशय निहालसिह तक्षक अग्रणी ...ानी जैल सिह के साथी पं० ...राम जी अभी जीवित ही होंगे। ...की चर्चा नहीं। श्री सुदर्शन ...पत्नी ने स्वाधीनता संग्राम में ...मे कार्य किया। आचार्य ...सत्यानन्द) भी जेल गए थे। देश स्वतन्त्र होने के पश्चात् श्री पं० रुचिराम जी व प० मेधातिथि जी ने शोषा तली पर धरकर जो कार्य किए उनका Black out ही मिलेगा। मेरे लेखों व ग्रन्थों मे इन की भी चर्चा है तथापि हम इतिहास के किसी खंड में भी इनके साहसिक कार्यों का उल्लेख तक नहीं। कमिया तो प्रत्येक जीव की कृति मे रहेंगी परन्तु ये कुछ कमियां तो बडी खटकती हैं। मेरी चाह है कि पाठक इन्हे अवश्य पढे और ध्यान पूर्वक पढे।

साप्ताहिक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश
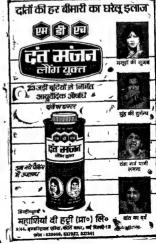
ऋषि

निर्वाणाङ्क

विशेषांक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द निर्वाण विशेषांक

इस अंक का मूल्य १० रुपये वार्षिक २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

कार्तिक २०४४ वर्ष ११ अंक ४९ रविवार १८ अक्तूबर १९८७ दयानन्दाब्द १६३

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम० ए० प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

प्रकाशक :

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

विषयानुक्रमणिका

१ सम्पादकीय — श्री यशपाल सुधांशु—३
२ निवेदन-अपील — स्वामी आनन्दबोध सरस्वती—६
३ महर्षि दयानन्द का बलिदान हिन्दुओं की रक्षा के लिए — आचार्य शिवराज शास्त्री—७
४ महर्षि दयानन्द और कार्ल मार्क्स — ओमप्रकाश शास्त्री—९
५ महर्षि दयानन्द और मार्टिन ल्यूथर — हरिश्चन्द्र विद्यार्थी—१२
६ महर्षि दयानन्द और ईसामसीह — शान्तिप्रकाश जी—१४
७ वेद का इस्लाम पर प्रभाव — प० रामचन्द्र देहलवी—१७
८ वेद माता — स्वामी विद्यानन्द विदेह—३०
९ ऋषिवर तेरे अहसा को न भूलेगा जहाँ बरसो — ओमप्रकाश शास्त्री—३७
१० महर्षि दयानन्द से वेद के सम्बन्ध मे प्रश्नोत्तर—३८
११ देश की स्वतन्त्रता एवम् उन्नति के प्रेरक महर्षि दयानन्द — प्रशान्तकुमार वेदालङ्कार—४०
१२ वेद और मानवता — डा० महेश विद्यालकार—४४
१३ महर्षि दयानन्द और महात्मा बुद्ध — प० रामानन्द शास्त्री—४७
१४ आर्यसमाज : देश की उन्नति का कारण — महर्षि दयानन्द सर०—४९
१५ राजर्षि शाहू महाराज और आर्यसमाज — प्रा० कुशलदेव शंकरदेव कवडवलकर—५०
१६ दयानन्द अकेला था (पद्य) — प्रकाश कविरत्न—५१
१७ युगविधाता दयानन्द — स्वामी श्रद्धानन्द—५२
१८ महर्षि दयानन्द का ऋषित्व — विद्याभास्कर डा० कपिलदेव द्विवेदी—५६
१९ वे महिला जो मारीशस मे रहने के बाद ऋषि से मिली थी — ग० गगाराम—५८
२० तेज बलधारी दयानन्द ब्रह्मचारी थे — प्रकाश कविरत्न—६५
२१ महर्षि दयानन्द और अन्य वेदभाष्यकर — आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री—६६
२२ बताये तुम्हे हम दयानन्द क्या था? — कुवर सुखलाल आर्यमुसाफिर—७०
२३ आर्यसमाज के प्रवर्तक वेदोद्धारक शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती — स्वामी धर्मानन्द सरस्वती—७१

ऋषि निर्वाण विशेषांक

अपने पाठको की तीव्र आकाक्षा को ध्यान मे रखते हुए हम यह विशेषाक प्रस्तुत कर रहे है। हमारी इच्छा थी अपने पाठको को हम इससे पूर्व ही अक भेट करते परन्तु सामयिक समस्याओ के रहते यह सम्भव न हुआ। अस्तु! अब यह विशेषाक अपने भव्य आकर्षण के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है।

ऋषि दयानन्द ने वेद को ईश्वरीय वाणी कहा है, हमने इस अक मे कुछ वेद के विषय मे भी महत्वपूर्ण लेख दिये है जो पाठको को पसन्द आयेगे ऐसा विश्वास है। युग निर्माता, राष्ट्रोद्धारक ऋषियो मे महर्षि स्वामी दयानन्द ने दीपावली को निर्वाण प्राप्त किया था। उनका बलिदान देश, धर्म और सम्पूर्ण मानवता के लिए हुआ था, हमने उस युगद्रष्टा, क्रान्तिमना ऋषि के उन कार्यो से सम्बन्धित लेख भी दिये है, जिससे पता चलता है कि महर्षि ने भारत की सुषुप्त चेतना को जागृत किया। ऋषि दयानन्द के महान् विचार ससार के महान् चिन्तकों तक पहुचे हैं। इसीलिए उन्हे विदेशी मनीषियो ने प्रकाश स्तम्भ की सज्ञा दी।

अपने युग के महान् सुधारको, नेताओ, चिन्तको, दार्शनिको ने जो ससार को भेट किया उस पर दृष्टिपात करते ऋषि दयानन्द के कार्य को देखा जाये तो माथा श्रद्धा से झुक जाता है। मार्टिन ल्यूथर, कार्ल मार्क्स, लेनिन, ईसा मसीह, महात्मा बुद्ध के विचारो को पढकर ऋषि दयानन्द के विचारो को पढा जाये तो योगी दयानन्द के विचारो का प्रभाव चमत्कार की तरह अमर किये बिना नही रहता। तुलनात्मक दृष्टि से भी कुछ महत्वपूर्ण लेख हमने पाठको के लाभार्थ प्रस्तुत किये हैं। इस सम्बन्ध मे हमे जिन स्रोतों से सामग्री मिली है, हम उनके आभारी हैं। हम उसे साभार विनत भाव से प्रस्तुत कर रहे हैं।

सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव और महामन्त्री डा० धर्मपाल का भी मैं आभारी हूँ जिनकी सत्प्रेरणा और सहयोग से यह अंक प्रकाशित हो पाया है। अपने लेखक जनो के भी हम हृदय से आभारी है।

—यशपाल सुधांशु

कालजयी राष्ट्रनिर्माता देव दयानन्द

भारतीय लोक सभा के भू०पू० अध्यक्ष श्री अनंत शयनम आयगर ने कहा था कि, "यदि गांधी जी देश के राष्ट्रपिता है तो जगद् गुरु राष्ट्रोद्धारक महर्षि दयानद सरस्वती जी महाराज राष्ट्र के पितामह है।" भारतवर्ष के इतिहास मे स्वदेश भक्ति, स्वराज्य और विदेशी शासक अग्रेजो को भारत से निकालकर भारत को स्वतत्र कराने की मौलिक विचारधारा सर्वप्रथम यदि किसी ने दी है तो वह जगद्गुरु महर्षि दयानद जी महाराज ने ही दी है। श्रीमती एनिबिसेंट ने भी अपने अध्यक्षीय भाषण को पढते हुए इस बात को स्वीकार किया था कि भारतवासियो को मानसिक दासता से मुक्त कराने वाला प्रथम व्यक्ति दयानद था।

प्रसिद्ध इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार ने लिखा है कि "सच्चा राजनैतिक वह है जो भविष्य के लिए विधान का निर्माण करता है। जो एक शक्ति को जन्म दे सकता है जो आने वाली पीढियो के जीवन व विचारधारा पर प्रभाव डालती है। जब भारत के उत्थान का प्रगति का इतिहास लिखा जायेगा तो यह उच्च सिंहासन नगे फकीर लगोट बद दयानंद को दिया जायेगा।"

जिस नंगे फकीर को महानताओं पर इतिहासकार ने उसे सर्वोच्च सिंहासन पर बैठाना चाहा, जिस राष्ट्र निर्माता को चितक नेता आयंगर ने राष्ट्र का सम्मान देते हुए राष्ट्र पितामह कहा उस स्वामी दयानद को भारत के राजनेताओं ने स्वाधीन भारत के शासकों ने सामान्य कोटि का सुधारक मानकर कोने मे टागे गये चित्र जैसा कर दिया। पाच हजार वर्षों के पश्चात् महर्षि दयानद जी सर्वप्रथम भारतीय दार्शनिक व महान् योगी हुए हैं जिन्होंने अध्यात्मवाद के साथ देश की राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक उन्नति पर बल दिया। जिसने अपने आध्यात्मिक सिद्धातों के साथ राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक समस्याओं पर भी अपने ठोस विचार उपस्थित किये।

यह भी कम महत्व की बात नहीं कि आर्यसमाज के इस सस्थापक ने आर्यों की सन्ध्या पद्धति में जिन मत्रों का विनियोग किया उसमे "अदीना: स्याम शरद शतम् का मत्र भी रखा जिसमें प्रार्थना है कि हे प्रभो! हम अपने जीवन में किसी के दास और पराधीन होकर न जीवे। आर्यों की प्रार्थना ही स्वराज्य की कामना से जुड गयी। महर्षि दयानद की घुट्टी का प्रभाव ही था कि देश की आजादी के लिए जेल जाने वालों में ८५ प्रतिशत आर्यसमाजी थे जिसे कांग्रेस के इतिहास लेखक सीताभि पट्टाभिरमैया ने भी स्वीकार किया।

महर्षि दयानंद की आंतरिक अभिलाषा थी कि ऋषियों की पवित्र भूमि भारत शीघ्र ही स्वतंत्र हो और विदेशियों के चगुल से मुक्त हो। और वह अपनी प्राचीन सस्कृति के अनुसार पुन: एक महान् शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विकसित हो।

उन्होंने आर्यों के लिए प्रार्थनापुस्तक आर्याभिविनय लिखी उसमें प्रथम प्रकाश के ४३वें मन्त्र में लिखते हैं—अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुग कृधि। हे परमात्मन् ! हमारे लिए चक्रवर्ती राज्य और साम्राज्य धन को सुख से प्राप्त कराओ। ४५ वें मन्त्र में कहते हैं—हे रुद्र भगवान् आपकी न्याय युक्त नीतियों में प्रवृत्त होकर हम वीरों के चक्रवर्ती राज्य को आपके अनुग्रह से प्राप्त हों। प्रभु आपकी कृपा से हम लोग सौ वर्ष किसी के पराधीन न हों तथा आप कृपा करें कि सौ वर्ष से उपरान्त भी हम स्वाधीन रहें। भाग २ के ३१ वे मन्त्र की व्याख्या में ऋषि लिखते हैं कि "अन्यायी देशवासी राजा हमारे देश में कभी न रहे तथा हम लोग पराधीन कभी न हो।" इस प्रकार के उदाहरण स्वामी दयानन्द के रचे ग्रन्थों में भिन्न भिन्न स्थलों पर पढ़ने को मिलते हैं। जिससे पता चलता है कि महर्षि के रोम रोम में कैसी स्वदेश भक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। अंग्रेजों के कठोर शासन काल में इस प्रकार की बातों को लिखना और कहना कितने प्रबल साहस का कार्य था।

कलकत्ता प्रवास के दिनों में उनके प्रवचनों और प्रभाव से प्रभावित होकर कलकत्ता के एक पादरी से तत्कालीन वायसराय नार्थ ब्रुक ने स्वामी जी से मिलने की इच्छा व्यक्त की। स्वामी जी महाराज ने उनसे दुभाषिये की मदद से बातचीत की। इस वार्तालाप से ऋषि दयानन्द की देशभक्ति की प्रदीप्त भावना प्रकट होती है। लार्ड नार्थ ब्रुक ने इस बातचीत का विवरण इण्डिया आफिस को भेजते हुए लिखा था कि सरकार को इस विद्रोही फकीर पर सतर्कता पूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए।

इण्डिया आफिस को भेजे गये विवरण के अनुसार यह बातचीत इस प्रकार हुई थी।

वायसराय—मुझे बताया गया कि आप अन्य धर्मों पर जो कटु प्रहार करते हैं उनसे आर्यों और मुसलमानों में आपके प्रति विरोध भाव पैदा हो गया है। क्या आपको यह भय है कि आपके विरोधी आप पर कोई आक्रमण करेंगे ? विशेष रूप से मैं यह पूछना चाहता हू कि क्या आपको हमारी सरकार की ओर से किसी प्रकार के संरक्षण की आवश्यकता है ?

ऋषि दयानन्द—मुझे इस राज्य में अपने विश्वास के अनुसार प्रचार करने की पूरी स्वाधीनता है। मुझे अपने ऊपर किसी प्रकार के संरक्षण की आवश्यकता नहीं है।

वायसराय—प० दयानन्द ! यदि ऐसी बात है तो क्या आप इस देश को ब्रिटिश शासन द्वारा दिये गये शान्ति और सुख के वरदान के सम्बन्ध में अपनी प्रशंसा के कुछ उद्‌गार प्रकट करेंगे और अपने उपदेशों के साथ की जाने वाली प्रार्थनाओं में समस्त भारत पर ब्रिटिश शासन की स्थिरता बने रहने की चर्चा करेंगे ?

ऋषि दयानन्द—"मैं किसी भी स्थिति में इस प्रकार के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि मेरा दृढ विश्वास है कि मेरे देशवासियो के विकास के लिए और ससार के राष्ट्रों में सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए यह मेरा भारत वर्ष (आर्यावर्त्त) देश शीघ्र ही पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करे। मैं प्रति दिन प्रातः साय भगवान से प्रार्थना करते हुए यह मांगता हूँ कि वह दयालु भगवान् मेरे देश को विदेशी शासन से शोघ्र मुक्त करे।"

लार्ड नार्थ ब्रुक ने तो इस स्पष्ट और निर्भीक उत्तर की कतई कल्पना भी नहीं की थी उसने एकदम बातचीत समाप्त कर दी।

इस बातचीत से वायसराय के हृदय में स्वामी दयानन्द के उद्देश्यों तथा कार्यों के सम्बन्ध में सन्देह उत्पन्न कर दिया। तभी उन्होंने सरकार को इस नंगे विद्रोही फकीर से सावधान रहने की सलाह

दी। तभी से स्वामी दयानन्द की इस प्रबल राष्ट्रीय विचारधारा से भयभीत होकर तत्कालीन अंग्रेज शासकों ने महर्षि दयानन्द के पीछे गुप्तचर लगाये। कुछ इतिहासकारों की यह भी मान्यता है कि महर्षि दयानन्द १८५१ में कानपुर से इलाहाबाद और फर्रुखाबाद तक गंगा के किनारे-किनारे घूमते रहे और इन वर्षों के विषय में अपनी जीवन की घटनाएं लिखते समय वे सर्वथा मौन रहे। इसका मतलब है यह क्रान्तिकारी संन्यासी उन दिनों स्वाधीनता का शंखनाद फूंकने में तथा स्वाधीनता के लिए निरन्तर प्रयत्नशील था। कुछ भी हो, परन्तु इतना तो स्पष्ट है १८५७ के राष्ट्रीय विद्रोह को महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपनी आंखों से देखा था किस प्रकार धार्मिक मतभेद और जातीय विषमता के कारण एकता के अभाव में एक झण्डे के नीचे एकत्र न होने से राष्ट्रीय संग्राम असफल हो गया इसलिए उन्होंने यह सोचा कि जब तक धार्मिक विषमता और जातीय भेद रूपी खाई नहीं पाटी जायेगी तब तक स्वराज्य रूपी विशाल भवन को खड़ा करना असम्भव है। यही सोचकर महर्षि दयानन्द जी ने स्वराज्य को भी अपना लक्ष्य बनाया और राष्ट्र व समाज की अनेक बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकने का कार्य किया।

जीवन पर्यन्त इसी प्रबल भावना के लिए वे जनमत तैयार करते रहे। आर्यसमाज की स्थापना भी वे एक जलती मशाल के आन्दोलन के रूप में कर गये। यही कारण है कि आज भी हर आर्यसमाज के उत्सव में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन या राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन अवश्य आयोजित किया जाता है। उस महान् राष्ट्रनायक, देशोद्धारक ऋषि दयानन्द को इतिहास में केवल एक समाज सुधारक की संज्ञा देना कृतघ्नता है।

यह भी सच है कि ऋषि दयानन्द जहां राष्ट्र-निर्माता और समाज की कुरीतियों के निवारक थे वे वहां महान् योगी, गम्भीर दार्शनिक, तत्त्वज्ञ सन्त, महान् वैज्ञानिक, शिक्षा शास्त्री, अर्थशास्त्री, नीति-निपुण राजनीतिज्ञ, प्रभुभक्ति में आकण्ठ आप्लावित प्रभु भक्त थे। हिन्दू समाज उन्हें सदा प्रकाश-स्तम्भ के रूप में याद करेगा। इसी भावना को हिन्दी के प्रख्यात सुकवि रामनरेश त्रिपाठी ने लिखा था—

लोक-हित-चिन्तन में गृह-सुख-त्यागी वेद—
ब्रह्म का अनन्य अनुरागी ऊर्ध्वरेता था।
ज्ञानी, अद्वितीय अभिमानी आर्य सभ्यता का,
जीवन का दानी धर्म ग्रन्थ का प्रणेता था।
हरि के समान कोटि कोटि शिव मण्डल में,
विकट विरोधियों के वृन्द का विजेता था।
भारत के भाग्य का भविष्य रूप दयानन्द,
शंकर के बाद हिन्दुओं का एक नेता था।

——यशपाल सुधांशु

ऋषि निर्वाण दिवस पर महर्षि दयानन्द के कार्य को पूरा करने का संकल्प लीजिए

आर्य जनों से स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का निवेदन

आर्य बन्धुओ ! दीपावली के पुनीत अवसर पर महर्षि दयानन्द के महान बलिदान का स्मरण करते हुए हम सब प्रतिज्ञा करें कि आगामी वर्ष में हम आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने का पूरा प्रयत्न करेंगे। अनुशासन का पालन करते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे । गुरुवर दयानन्द की 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की इच्छा पूरी करने में हम अपनी पूरी शक्ति से कार्य करेंगे।

आज आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं की संख्या तो बढ़ती जा रही है किन्तु उसका परिणाम संतोषजनक नहीं है। अतः हम शिक्षा केन्द्रों को वैदिक धर्म के सिद्धान्तों के अनुरूप बनाने का प्रयत्न करें। हम देख रहे हैं कि उच्चकोटि के आर्य विद्वान एवं सन्यासियों की संख्या नित्य प्रति घटती जा रही है। इस अवस्था पर गम्भीरता से विचार करके आर्यसमाज को शक्तिशाली बनाने के लिए जीवनदानी महानुभावों को अपने पारिवारिक बन्धनों से बाहर निकल कर आगे आना चाहिए।

बिना त्याग एवं बलिदान के कोई धर्म अथवा संगठन आगे नहीं बढ सकता। अतः हम सब को स्वार्थ त्याग कर अपने आपको वैदिक धर्म की सेवा के लिए तैयार करना होगा तथा अपने धर्म के प्रति जन-जन के मन में आस्था और विश्वास पैदा करना होगा, तभी हम सफलता की ओर अग्रसर हो सकेंगे। हम दूसरों की तरफ न देखकर यह सोचें कि मैं क्या कर रहा हू ?

दीपावली के अवसर पर हम आर्य जनों को नित्य प्रति वैदिक साहित्य का अध्ययन, मनन और चिन्तन करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त हम सब अपने-अपने नगरों, कस्बों और गांवों में बड़े-बड़े यज्ञ करके जन सामान्य में धर्म के प्रति श्रद्धा जगाकर आर्यसमाज को एक धार्मिक आंदोलन का स्वरूप देने की कोशिश करें।

इस अवसर पर नवयुवकों को सामूहिक यज्ञोपवीत देकर आर्य वीर दलों की स्थापना करके युवा शक्ति को आर्यसमाज के संगठन का अंग बनाना चाहिए। क्योंकि आगे चलकर आज के आर्य नवयुवकों को ही वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार का कार्य सम्भालना होगा। गुरुडम, मूर्ति-पूजा तथा अनेक प्रकार के पाखण्ड नित्य नये स्वांग बनाकर धर्म के स्वरूप को धूमिल कर रहे है।

आर्य पुरुषो ! आज के दिन प्रतिज्ञा करो कि वैदिक सिद्धांतों का स्वाध्याय करके हम में से प्रत्येक भाई-बहन धर्म प्रचारक का कार्य करेगा। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के गुरुकुल तथा संस्कृत शिक्षा संस्थाओं को भी भरसक सहायता देकर अपने पैरों पर खड़ा करना चाहिए। हमारा दृढ विश्वास है कि संस्कृत शिक्षा से दीक्षित नवयुवक ही मनसा-वाचा-कर्मणा वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार करने में समर्थ हो सकते हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में आर्यसमाज के दायित्व को समझते हुए देश के वातावरण में अवैदिक विचारधारा को फैलाने तथा देश को तोड़ने वाले तत्वों से सावधान होकर आर्यसमाज के अधिकारी एवं कार्यकर्ता जागरूकता पूर्वक स्वदेश, स्वधर्म तथा स्वसंस्कृति की रक्षा का दृढ संकल्प लेकर महर्षि निर्वाण दिवस पर नये उत्साह के साथ आगे बढ़े।

महर्षि दयानन्द का बलिदान : हिन्दुओं की रक्षा के लिए

लेखक--आचार्य शिवराज शास्त्री, एम० ए०, मौलवी फाजिल

क्या कोई तर्क कोई विचार इस बारे में सगत लगता है, कि जिस देश में प्रभु प्यारे ने अपनी सर्वप्रथम मानव सतति पर अपना सर्वश्रेष्ठ ज्ञान वेद उतारा जिसकी साक्षी संसार का प्रत्येक आर्येतर धर्म ग्रन्थ कर रहा है, जिस देश ने ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषियों की परम्परा स्थापित की, करोडों वर्ष तक जिसको गुलाम बनाने को कोशिश तो क्या कोई स्वप्न भी नही देख पाया वह देश एक सर्वथा नवीन व आध्यात्मिक सामाजिक व राजनीतिक साहित्य से शून्य विदेशी विचारधाराओं से कैसे प्रभावित होकर अपने ही देश में न केवल हजार वर्ष की दयनीय दासता सहता रहा अपितु अपने ही देश के निवासियों को करोडों की सख्या मे विधर्मी व विदेशी सम्प्रदायो को सुपुर्द कर आज उनसे सघर्षरत देश को सकटापन्न स्थिति में डाल बैठा है। आज के करोडों की सख्या में मुसलमान अरब ईरान देशों के निवासी नहीं है। वे हमारे ही देश के हिन्दू जाति के वशधर हैं जो हमारी ही कमजोरियों के कारण हम से बहुत-बहुत दूर चले गए हैं।

आओ, महर्षि के आगमन से पूव की सामाजिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करें। इस अध्ययन मे हमे इस प्रश्न का भी उत्तर मिलेगा कि क्या कारण है कि पिछले ३१ हजार वर्ष से भारत की हिन्दू जाति पर होने वाले अत्याचारो पर किसी शकराचार्य या किसी तथाकथित सनातन धर्म के धर्माचार्य की लेखनी से लिखा हुई एक भी पुस्तक क्यो उपलब्ध नहीं है। केवल महर्षि दयानद ही पहले व्यक्ति हैं जिन्होने हिन्दू समाज के इस घोर दारुण दर्द का इलाज अपनी तीव्र औषधि से प्रस्तुत किया, और पुरस्कार स्वरूप विष के प्याले पिए और अन्तिम प्याला जिसकी चर्चा बेचारे जगन्नाथ के नाम पर की जाती है वह उनका प्राण लेवा ही बन गया। कोई बारीकी से नहीं विचारता कि बेचारे जगन्नाथ का क्षोभ ने क्या बिगाडा था। जोधपुर दरबार तो महर्षि के परम भक्त थे। परंतु इस अन्तिम विष का प्याला किसने भिजवाया जो देव दयानन्द की जान ही ले बैठा।

महर्षि दयानन्द पहले ऋषि हैं जिन्होंने भारत की दुर्दशा पर न केवल गभीरतापूर्वक मनन किया अपितु देश के सभी महारोगों का एक सफल चिकित्सक की भांति इलाज भी किया। हिंदू समाज को विनाश से बचाया।

ऋषि के काल मे करोडों की सख्या में हिंदू धर्मान्तरण कर मुसलमान बन चुके थे व बन रहे थे। उर्दू को हिन्दुस्तान की भाषा बनाने का महान् अभियान चलाने वाले बा बाए उर्दू मौलाना अब्दुलहक के पूर्वज कायस्थ थे। प्रसिद्ध कवि इकबाल के पूर्वज ब्राह्मण थे। जिन्ना साहब के पूर्वज गुजरात के भाटिया थे। सारा देश हिंदू धर्म छोडकर इस्लाम की शरण मे जाने को तैयार था कि अनायास महर्षि ने बडे मनोयोग पूर्वक इस लहर को लगाम लगाई। तब कही हिंदुओ का धर्मान्तरण रुका।

महर्षि से पूर्व

१८४५ ई० में मुहम्मद इदरोस बोकमी ने एक पुस्तक 'रद्दे हिंदू' में हिंदू धर्म के घोर घृणित स्वरूप का वर्णन करते हुए हिंदुओं को मुसलमान बनाने की दावत दी। यही पुस्तक १८४५ मे मुहम्मद इदरीस बिन अब्दुल्ला निरमाई ने प्रकाशित की। इसका एक सस्करण जहा बम्बई में छपा दूसरा कानपुर मे १८५० मे प्रकाशित हुआ। इसका उत्तर चौबे बद्रीदास ने रद्दे मुसलमान' इन्तिखाबुल मरवातिमीन नाम से लिखा। १८५१-५२ मे मौ० उबेदुल्ला नामक नौ मुसलिम ने (जो अनन्तराम

था और १८४८ में मुसलमान बना) तोहफतुल हिंदू नामक पुस्तक लिखी। इसका उत्तर फारसी भाषा में मुंशी इन्द्रमन ने तोहफतुल इस्लाम के नाम से लिखा। जिसका उत्तर सैयद मेहमूद हुसैन ने 'खलअते हनूद' नाम से १८६५ में प्रकाशित किया। प्रत्युत्तर में १८६६ में मुन्शी इन्द्रमन ने पैदायशे इस्लाम फारसी भाषा में लिखी। बरेली के किसी मुसलमान ने एक कविता 'दीने हिंदू' नाम से लिखी जिसका उत्तर मुन्शी इन्द्रमन ने 'मसनबी दीने अहमद' के नाम से दिया। मौ० मुहम्मद हुसैन फकीर की पुस्तक 'तेगे फकीर बर गर्दने शरीर' १८६३ में प्रकाशित हुई। मुरादाबाद के मौ० अहमद दीन ने रोजाजे मुहम्मदी और मौ० कुतुब-आलम ने 'बदिया उस्नाम' हिंदू धर्म पर घोर घृणित पुस्तकें लिखीं तो (१८६५ मे मुन्शी इन्द्रमन ने 'हमलाए हिंद व सहसाये हिंद' प्रकाशित की। १८६७ में उन्हीं की पुस्तक सौलते हिंद प्रकाशित हुई। तोहफतुल हिंद का दूसरा सस्करण १८६० में प्रकाशित हुआ। इस पर लेखक का नाम मौ० उबैदुल्ला लिखा है। हिंदुओं की वकालत में ही यह कुछ हिंदु विद्वानों का सघर्ष था जिसमें कुरान की चर्चा कम थी।

महर्षि के कार्य का प्रारम्भ १८६३ से था उससे पूर्व के धर्म नाम पर बहुत उपद्रव मचा हुआ था स्वामी जी बडे गम्भीर चिन्तक व धर्म के कट्टर अनुरागी थे लगातार दस वर्ष तक प्रचार काल मे उन्हें भांति-भांति के अनुभव हुए। परिणामस्वरूप उनका विचार अपने समाज की रक्षा व हिंदू जाति की रक्षा के उपायो के लिए उपयोगी साहित्य बनाने का हुआ। ताकि सर्वसाधारण उनके विचारों से लाभान्वित हो सके।

मूलतः जहां उन्होने प्राचीन आर्य सभ्यता सस्कृति के वैदिक शुद्ध स्वरूप से सत्यार्थ प्रकाश के १० समुल्लासो के रूप में रचा वहां उस समय के मतमतान्तरों पर भी आलोचनात्मक ११वां १२वां १३वां समुल्लास लिखा। स्वामी जी पहले हिंदू महान् पुरुष थे जिन्होंने १८७७ में मौ० अहमद हसन उपनाम वली मुहम्मद से जालन्धर में इस्लाम धर्म के सम्बन्ध मे शास्त्रार्थ किया। १८७६ में सुपरि-ण्टैण्डेण्ट पुलिस मौलवी अब्दुल रहमान से (जो अदा-लत मे जज भी थे) इस्लाम के सम्बन्ध में शास्त्रार्थ किया जिसका प्रबन्ध कर्नल बंसल व कैप्टन स्टुअर्ट ने किया। अनेक बडे बडे सरकारी कर्मचारी व सम्भ्रान्त नागरिक इन शास्त्रार्थों में उपस्थित थे। महर्षि शास्त्रार्थ में विजयी थे। इस्लाम को बहुत झटका लगा।

लाहौर में स्वामी जी ने नवाजिल अली की कोठी में इस्लाम के सम्बन्ध में एक बडा लम्बा व्याख्यान दिया जिसे सुनकर मुसलमान दग रह गए। स्वामी जी ने कुरान का कितना गहन अध्य-यन किया था कि वे मौ० मोहम्मद कासिम को भेजे अपने पत्र में १५ अगस्त १८७८ को लिखते हैं कि "मैं केवल कुरान पर ही आक्षेप करूंगा आप केवल वेद पर ही कीजिये।" जीवन चरित्र पं० लेखराम पृ० ७५१-५२

इसके पश्चात् तो १४ वें समुल्लास में महर्षि ने इस्लाम पर जो आलोचना की है उसने इस्लाम की बढ़ती हुई लहर को ही रोक दिया। मुसलमानों की बोलती बन्द हो गई व आज हिन्दू जाति के लोग भी कभी कभी आर्यसमाज की व उसके प्रव-र्तक की आलोचना कर दोषी सिद्ध करते हुए नहीं लजाते। जातियां कैसे बनती व बिगडती हैं। कोई दयानन्द सा त्यागी तपस्वी ही अपने जीवन का बलिदान देकर उन्हें बचाता है। काश कि हम ऋषि के बलिदान का सही मूल्यांकन कर पाते। आज भी सकट की घडियों मे हमे ऋषि निर्देशित मार्ग ही बचा सकता है। हिन्दू जाति अपने कर्तव्य को पहचाने।

●

महर्षि दयानन्द और लेनिन तथा कार्ल मार्क्स

—ओमप्रकाश शास्त्री

पिछले ५०० वर्षों में मानव समाज के लिए सब से हानिप्रद बात यह हुई कि वह उस एक केन्द्र बिन्दु (Main Point) से वंचित हो गया जिस पर कि विश्व मानव मात्र का मस्तिष्क और हृदय केन्द्रित होता। इस बीच में जो भी विचारधाराएँ संसार में आई उन्होने मानवो के मस्तिष्क और हृदयों को केन्द्रित करने की अपेक्षा विकेन्द्रित किया। जिस प्रकार रात्रि के आ जाने पर ससार मे अन्धकार छा जाता है और मनुष्य सार्वभौमिक सूर्य के प्रकाश से हीन और वंचित हो जाने के कारण पथभ्रष्ट, परस्पर टकराता और ठोकरें खाता है इसी प्रकार सार्वभौमिक ज्ञान-प्रकाश-प्रदाता वेदों के महाभारत काल के पश्चात् लुप्त या अस्त हो जाने पर अज्ञान और अविद्या की घनी रात ससार मे व्याप्त हो गई। जिस प्रकार भौतिक सूर्य हीन दशा मे अन्धकार को दूर करने के लिए लोग अन्य मानवीय प्रकाश साधनों का सहारा लेते हैं, उसी प्रकार इस अज्ञान रात्रि के अन्धकार को दूर करने और ससार के मानवों को प्रकाश देने के लिए समय-समय पर कुछ महान् आत्माएँ (टार्च बियरर) प्रकाश देने वाले के रूप में ससार मे अवतरित होती रही है। उन ही महान् आत्माओ मे आचार्य जरतुस्थ, हजरत मूसा, ईसा, मुहम्मद, गौतम बुद्ध, महावोर स्वामी आदि अपने-अपने समय में आये और उन्होने अपनी योग्यता, शक्ति और परिस्थितियों के अनुसार अज्ञानांधकार को दूर कर प्रकाश लाने का प्रयत्न किया। अत उनकी नीयत पर सन्देह नहीं किया जाना चाहिये। यह इसलिये भी कहा जा सकता है कि उक्त सभी महापुरुषों के उपदेशों तथा आदेशों में जहां तक मानव के विचार, आचार आदि का सम्बन्ध है वहाँ तक सभी मनुष्यों के चरित्र-सुधार का उपदेश करते हुए दिखाई देते हैं परन्तु जहाँ यह बात सत्य है वहाँ यह भी सत्य है कि लालटेन या बिजली का भारी से भारी पावर का बल्ब कितना भी तीव्र प्रकाश देता हो वह सूर्य के प्रकाश का साम्मुख्य नही कर सकता, यह ही परमेश्वर और मनुष्य के ज्ञान व शक्ति का महान् अन्तर है क्योंकि जहाँ सूर्य का प्रकाश सार्वभौमिक होता है वहाँ मनुष्यो से रचित प्रकाश साधन निश्चित रूप से सीमित और दोषपूर्ण होते हैं। अतएव यह जितने भी मत-मतान्तर उक्त महापुरुषो के नाम पर समय-समय पर प्रचलित और प्रसारित हुए वह सार्वभौम वैदिक धर्म के समान विशेषकर मानवमात्र तथा सामान्यतया प्राणीमात्र के लिये हितकर न हो सके। इसीलिए उनको सार्वभौम धर्म न कहकर सम्प्रदाय या मनमतान्तरों के नाम से ही पुकारा जा सकता है। इसके अतिरिक्त क्योंकि वह मानव ज्ञान के आश्रय पर ससार में आये तो उनमें मानव की स्वाभाविक अल्पज्ञता, स्वार्थ तत्परता और दोष युक्तता का प्रभाव बराबर बना रहा। परिणाम

स्वरूप जहाँ मानव समाज ५००० साल पहले एक सार्वभौम (Universal) ईश्वर और सार्वभौम धर्म का मानने वाला सार्वभौमिक वेद के सूर्य से प्रभावित और प्रकाशित था। वहाँ वह विभिन्न आचार, विचार, आहार और व्यवहार में विभाजित हो गया। इस विभाजन ने मानवमात्र को एक दूसरे के समीप लाने की अपेक्षा, एक दूसरे से दूर मजहबों की दीवारों में बाँटकर रख दिया। मानव-मानव से घृणा तथा द्वेष करने लगा। इस पारस्परिक द्वेष के कारण समय-समय पर मानव मानव का, हजारों वर्षों से रक्त बहाता चला आ रहा है। संसार का कोई भी मजहब ऐसा नहीं है, जिसके हाथ, निर्दोष अपने से इतर मतावलम्बियों के रक्त से सने हुए न हों। मनुष्य इस मजहब परस्ती अथवा फिरका-परस्ती के प्रभाव मे मनुष्यता से, पाशविक वृत्तियों का सहारा लेकर यहाँ तक गिरा कि सहस्रों वर्षों से आज तक वह निरीह, बेबस, मासूम बच्चों और असहाय माता और बहनों पर अत्याचार करता चला आ रहा है। बहन और बेटियों की आबरू से भी खिलवाड की गई है। इसके ज्वलन्त उदाहरण साम्प्रदायिक इतिहासों के पन्नो में पढने को मिल जाते हैं। यहाँ तक कि जो ईश्वर कुल चराचर जगत् का उत्पादन करने वाला एक था वह भी विभिन्न सम्प्रदायों के पृथक्-पृथक् मान्य स्वरूपों के कारण एक की जगह अनेक बन गया था और उसकी पूजा, उसकी स्तुति, प्रार्थना के विभिन्न तरीकों, उसके विभिन्न गौणिक नामों के कारण भी मानव आपस में लडते और झगडते रहे हैं। उक्त पूजा स्थानों के पण्डित पुजारी, पादरी और मुल्ला परमेश्वर और मानव के बीच के माध्यम बनकर ईश्वर और धर्म के नाम पर संसार को ठग रहे हैं। ईश्वर के नाम पर ढोंग भरी पद्धतियाँ और परमेश्वर को विभिन्न शक्लों वाली मूर्तियाँ प्रचलित और पूजित हो रही थीं। स्वर्ग प्रदान करने के बहाने तत्-तत् मतों के प्रमुख लोग, धन कुबेरों से चर्चों, मन्दिरों और मठों को सम्पत्ति का केन्द्र बना रहे थे। पुण्य के स्थान पर पाप, धर्म के स्थान पर अधर्म, सदाचार के स्थान पर कदाचार, अहिंसा के नाम पर हिंसा, न्याय के स्थान पर अन्याय और दया के स्थान पर पीडा और अत्याचार स्थान ले चुके थे। पाषाण प्रतिमाओं के सामने मूक पशुओं के साथ-साथ निरीह मानवों की भी बलियाँ दी जाती थी। मन्दिर देव दासियों की घृणित प्रथा के कारण व्यभिचार के अड्डे बन चुके थे। ऐसे समय में आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व उक्त तीन महान् आत्माएँ संसार में अवतरित हुई और यह संयोग की बात है कि ये तीनों एक ही काल में पैदा हुए और तीनों ने ही इस संसार को अपनी-अपनी जगह से देखा। साथ ही तीनों व्यक्ति महान् क्रान्ति के जन्मदाता के रूप में आज भी स्मरण किये जाते हैं। उक्त तीनों ही महापुरुषों ने ससार में प्रचलित ईश्वर और धर्म के नाम पर होने वाले ढोंग और पाखण्ड को देखा। तीनो ही का हृदय द्रवित और उद्वेलित हुआ। परन्तु सोचने का मार्ग तीनों का पृथक्-पृथक् था सोचने के साधन भी पृथक्-पृथक् थे जिसका यह परिणाम निकला, कि लेनिन और कार्ल मार्क्स क्योंकि योरोप की भूमि पर खडे हुए इस वातावरण को देख रहे थे। और वह ऋषि अर्थात् क्रान्तदर्शी न होकर एक आचार्य की दृष्टि से केवल वर्तमान को देखने की शक्ति रखते थे उन्होंने वर्तमान प्रचलित ईश्वर तथा धर्म को देखकर ही ईश्वर को ढोंग और धर्म को अफीम कहकर मनुष्यों को उक्त अज्ञान और अविद्या से निकालने का प्रयत्न किया। कार्ल मार्क्स ने देखा कि बडे-बडे मठों और चर्चों में जुल्म और अत्याचारों द्वारा धन कमाने वाले धनिकों का प्रभुत्व और उनकी प्रतिष्ठा होती है। सदाचारी निर्धन ही नहीं सामान्य-जन भगवान के घर मे प्रताडित और उपेक्षित होता था। उसने इस आर्थिक विषमता के विरुद्ध आवाज उठाई। इस प्रकार वह कथित धार्मिक क्षेत्र के विरोध में सफल तो हो सके परन्तु वास्तविक ईश्वर और धर्म के स्वरूप को न जानने के कारण विश्व मानव को नास्तिकता के गर्त में ले

डूबे। यह ऐसा ही हुआ जैसे कोई हाथ कीचड़ में सन जाने पर उसे साफ शुद्ध न करके कटा ही बैठे। परन्तु लेनिन और कार्ल मार्क्स के समय में ही, यद्यपि वे ही सारी परिस्थितिया महर्षि दयानन्द के भी सम्मुख आई परन्तु एक महर्षि अर्थात् एक महान क्रान्तिदर्शी होने के कारण उन्होंने भी जहां प्रचलित कथित ईश्वरों और उनके पूजा के साधनों और उपायों को ढोंग कहकर तीव्र खण्डन किया, धर्म के नाम पर प्रचलित अधर्मी मतमतान्तरों की तीव्र समालोचना की, वहीं उन्होंने सार्वभौम सूर्य के समान प्रकाश देने वाले वेदों की ओर मनुष्य को आकृष्ट किया और कहा कि हे संसार के अज्ञानांधकार में भटकने वाले मनुष्यो! अगर सत्य ज्ञान की ज्योति प्राप्त कर सत्य पथ पर आरूढ होना चाहते हो तो वेदों की ओर लौटो और उस (Universal light) सार्वभौम प्रकाश के सहारे अपनी मंजिल तय करो और इसके लिए पिछले ५००० वर्षों में जिन शब्दों के अर्थ बदल गए थे, उन शब्दों के सही अर्थ प्रकट करने के लिए अपना 'सत्यार्थप्रकाश' जैसा ग्रन्थ मानव के कल्याण के लिए रचा, ताकि संसार का मानव ईश्वर, धर्म, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, स्तुति-प्रार्थनोपासना तथा मोक्षादि शब्दों के सत्य अर्थ और स्वरूप समझ सके। काश उस काल में उक्त तीनों व्यक्तियों को कोई परस्पर एक दूसरे से मिला दिया होता तो सम्भवत आज का विश्व इतना समस्याओं में उलझा हुआ और परेशान न होता। यदि ऐसा उस समय न हो सका तो कम से कम वर्तमान काल के विद्वानों को लेनिन और कार्ल मार्क्स के भक्तों तक महर्षि अथवा वेदों के विचारों को पहुंचाने का प्रयत्न योजना बद्ध रूप में करना चाहिए ताकि संसार को और उसकी भावी पीढियों को नास्तिकता से बचाया जा सके। ●

आर्यों से

हमने लोगो के कठोर हृदयों को कोमल बनाना है, दूर भागतों को आकर्षित करना है। यदि वे अत्याचार भी करें तो अपने उदात्त उद्देश्य को दृष्टि में रखकर हमे तो उनसे प्रेम ही करना चाहिए। धर्म के नाम से बदला लेने की भावना सर्वथा अभद्र है। हमारे उपदेश आज विरेचक औषधि की भांति घबराहट अवश्य लाते है। परन्तु हैं वे जातीय शरीर के सशोधक और आरोग्यप्रद, वर्तमान आर्य संतान चाहे जो हमें कहे।

—महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द और मार्टिन ल्यूथर

—हरिश्चन्द्र विद्यार्थी

मार्टिन ल्यूथर जर्मन प्रोफेसर था। उसने उस समय की पोप की बुराइयों का खण्डन किया। पोप की शक्ति का मुकाबला किया और प्रोटैस्टैन्ट सम्प्रदाय का प्रवर्तक बना। जिन विद्वानों ने केवल-प्रोटैस्टैन्ट लेखकों के लेखों से ही ल्यूथर का जीवन पढा उनके दिमाग पर उसकी दृढता की छाप है।

भारत के सनातन धर्मी पण्डित पुरोहितों और गद्दीदार महन्तों से श्री स्वामी दयानन्द का सघर्ष चला और स्वामी जी ने इस प्रकार के ठगो को पोप कहकर पुकारा।

प्रत्येक बात पर पश्चिम की मुहर लग जाने से लोग उसे विश्वसनीय मान लेते हैं, इस धारणा में हमारे आर्यसमाज के प्रचारक, उपदेशक भी बह गये और स्वामी दयानन्द को भारत का ल्यूथर कहकर अपनी तरफ से स्वामी जी का मान बढाने लगे।

अग्रेजी पढ़े-लिखे विद्वानों के मुख से तो मैंने कई बार यह उपमा सुनी। मैं तो सोचता था कि क्या कभी इन लोगों ने ल्यूथर के इन विचारों को भी सुना है और उसके विचारों या जीवन का मुकाबला स्वामी दयानन्द के जीवन से किया भी है कि परम्परागत बात को वेदि से दोहराये जाते हैं।

जनता तो गतानुगतिका होती है। वेदि से जो विचार उसके सामने रखा जाता है, उसे कुछ लोग वही छोड देते हैं, मगर कई लोगो के मन पर यह संस्कार चला भी जाता है। इसी का परिणाम है कि यह भद्दी उपमा अब तक आर्यसमाज के मञ्च पर से भी सुनाई दे जाती है।

सत्य बात यह है कि ल्यूथर पहले दर्जे का रूढिवादी था। वह केवल पोप का विरोध करता था। जहां तक बायबिल के विचारों का सम्बन्ध है या जहां तक ईसाई अन्ध विश्वासो का सबध है वह अपने समय के पादरियो और पोपो से कम अन्धविश्वासी न था। ऐसे व्यक्ति को स्वामी दयानद का उपमान बना लेना तो स्वामी जी से घोर अन्याय करना है।

बायबिल मे दो परस्पर विरोधी विचार-धाराएँ चलती हैं। सत का मत था (देखो उसका रोमनों को पत्र ३-२८) कि मुक्ति के लिए मनुष्य को अच्छे कर्म करने की आवश्यकता नहीं। उसका विश्वास (ईसा में विश्वास मात्र) ही मोक्ष के लिए पर्याप्त है।

दूसरी तरफ प्रेरित जेम्ज का (देखो जेम्ज २-२४) मत था कि मनुष्य का दर्जा कर्म से बनता है, केवल विश्वास या अन्ध-श्रद्धा से नही।

इस मतभिन्नता पर ल्यूथर ने भी अपने (टैबलटाक) विचार प्रकट किए हैं। उसका कथन है कि 'वह मनुष्य जो यह कहता है कि बायबिल के अनुसार मोक्ष के लिए अच्छे कर्म करना आवश्यक है, पूर्णतया झूठा है—यह मैं साफ-साफ और

स्पष्ट कहता हूं। यदि मनुष्य ईसामसीह में दृढ़ विश्वास रखे तो उसका मोक्ष सुनिश्चित है, उसको कोई खतरा नहीं, चाहे वह व्यभिचार करे और दिन भर में हजार हत्याएँ कर दे।' उसने जेम्ज के विचारों को निन्दनीय और बायबिल विरोधी ठहराया—और जेम्ज को झूठा कहकर पुकारा।

क्या इस प्रकार के विचारो वाला आदमी स्वामी दयानंद का सानी माना जा सकता है, उसके साथ स्वामी दयानन्द की उपमा देना तो अनर्थ करना है।

बायबिल में बहुत-सी बाते बुद्धिविरुद्ध हैं। लिखा है (देखो उत्पत्ति की पुस्तक २-१७) भलाई-बुराई, धर्म-अधर्म या कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य के ज्ञान के वृक्ष का फल किसी को भी न चखना चाहिए। "अज्ञानी, अन्धविश्वासी बने रहना ही बाइबिल के अभिप्रेत है। फिर लिखा है (देखो कारट ३-१९) इस ससार की विद्या, ज्ञान, परमात्मा के दरबार में मूर्खता है। अर्थात् विद्याविरोधी मूर्ख रहना ही बायबिल को अभीष्ट है। इधर स्वामी दयानद ने आर्यसमाज के नियमों मे "विद्या की वृद्धि और अविद्या का नाश करना" सम्मिलित किया है।

इसी पुस्तक की आयत २-८ मे लिखा है कि—मनुष्यो को दर्शन-शास्त्र पढकर अपना मस्तिष्क खराब न करना चाहिए।

इसी का परिणाम है कि पादरी सदा ज्ञान-प्रचार के विरोधी रहे और अब भी अन्धविश्वास और ईसा के चमत्कारों का जितना प्रचार करते हैं, अन्य बातो का नही।

ल्यूथर महोदय इस विषय मे भी सर्वोपरि हैं। आपका कथन है तमाम ईसाइयो को बुद्धि, विवेक, ज्ञान का नाश कर देना चाहिए।

बाइबिल की शिक्षा पर आधारित ईसाई इतिहास तीन लाख व्यक्तियों के जिन्दा जलाए जाने से रक्तरजित है। यूरोप के प्रत्येक नगर में तीन सौ साल तक भली महिलाओं को "जादूगरनी" कहकर जिदा जलाया जाता रहा। जोन ऑफ आर्क, जिसे अब सत की पदवी प्राप्त है—को इसी अपराध में जिदा जलाया गया था। बायबिल में लिखा है (देखो एक्सोउस २२-१८) किसी जादूगरनी को जिदा मत छोड़ो, और भी कई स्थानों पर ऐसा उपदेश दिया है।

जोहन वैसली और विलियम ब्लेक्स्टोन का मत था कि जादू-टोने में विश्वास न करना बाइबिल के परमात्मप्रदत्त होने से इन्कार करना ही है।

ल्यूथर एक कदम आगे जाता है। उसका कथन है कि मुझे जादूगरो पर जरा भी दया नही। मैं चाहता हू, इन सब को जला दिया जाय।

ल्यूथर बहु-विवाह का पोषक था। हेनरी अष्टम को उसने बहु-विवाह की सलाह दी थी।

ज्योतिषशास्त्र से बाइबिल का सदा विरोध रहा है। गैलेलियो जैसे विद्वान् को अपना बुढ़ापा जेल की बद कोठरी मे गुजारना पडा। कापरनोकस अपना प्रसिद्ध ग्रथ जीते-जी प्रकाशित न कर सका। यूरोप मे वह प्रथम ज्योतिषी था जिसने यह कहने और लिखने को हिम्मत की कि सूर्य नही, जमीन घूमती है।

उसके बारे मे ल्यूथर कहता है—कापरनोकस मूर्ख है। ज्योतिषशास्त्र की सारी प्रक्रिया को उलटा देना चाहता है। बायबिल मे जोशुवा ने (देखो जोशुवा १०-१२-१३) सूर्य को ठहरने की आज्ञा दी थी, पृथ्वी को नहीं।

इन विचारो का मालिक मार्टिन ल्यूथर स्वामी दयानद के समान कैसे माना जा सकता है।

●

महर्षि दयानन्द और ईसा मसीह

—शान्ति प्रकाश

इन दोनों महापुरुषों में कई बातें सामान्य और कुछ विशेष हैं। दोनों प्रचारक थे। प्रचार के लिए कठोर परिश्रम की आवश्यकता है। अपनी परिस्थिति के अनुसार दोनों यत्नवान् रहे। कुदेश का सुधार हो और ससार भर की परिस्थिति परिवर्तित हो।

दोनों उस समय हुए जब उनकी मातृभूमि राज्य से पीडित थी। अतः दोनों ने स्वतन्त्रता प्राप्ति को मनुष्यों का जन्म सिद्ध अधिकार माना। इसके लिए कार्य किया और कष्ट उठाये। जहां ऋषि दयानन्द को कई बार विषपान करना पडा और अन्त में अपने ही रसोइये के द्वारा अपनी जीवन लीला की परि-समाप्ति की। और उस समय की सरकार ने अली अहमद डाक्टर की सहायता से ऋषि के जीवन का अन्त कर दिया। वहां "ईसामसीह को भी उनके अपने ही शिष्य यहूदा ने पकड़कर सरकार के हवाले कराया और ३०) का इनाम लेकर एक खेत खरीदा और अन्त में बुरी मौत मरा। इधर ऋषि का हत्यारा भी प्रलोभन का ही शिकार बना था।

विशेषता यह थी कि ईसामसीह अपने शिष्य से सदैव डरते रहे कि यह किसी समय पकडवा देगा। क्योंकि ईसा ब्रह्मचारी थे पुनरपि एक स्त्री उनकी मालिश करने लगी जिसको शिष्यों ने बुरा माना और वह क्रुद्ध हुए।

ऋषि दयानन्द का ब्रह्मचर्य अखण्ड था। वह स्त्री के एकान्त वास के सदैव विरुद्ध रहे। एकान्त समाधि में एक देवी ने उनके पाव छुए तो ऋषि ने तीन दिन तक निरन्तर भूखा प्यासा रहकर उसके लिये उग्र तप किया।

लुधियाना में देवियां उपदेश सुनने आई तो कहा अपने पतियों को भेजो। हम उनको उपदेश सुनायेंगे और वह आपको बतायेंगे। ऋषि दयानन्द धर्मसभा में जहां एक ओर पुरुष और दूसरी ओर देवियां बैठी हों, वहां उपदेश देने में संकोच नहीं करते थे। किन्तु स्त्रियों में उपदेश के अत्यन्त विरुद्ध थे।

ईसामसीह अपने पकडवाने वाले षिष्य को सन्देह की दृष्टि से देखते रहे। और ऋषि दयानन्द ने अपने घातक को रुपयों की बहुत बडी पोटली देकर बचाने का यत्न किया। वह भिन्न-भिन्न स्थानो में विचरता और अपने पापों से कांपता हुआ अन्त में बुरी मौत मरा

इन दोनों महापुरुषों को कार्य करने का पूरा अवसर नहीं मिला। दोनों ने स्वजीवन काल में देश स्वतन्त्र होते नहो देखे किन्तु दोनों के प्रयत्नों का परिणाम स्वतन्त्रता प्राप्ति में अत्यन्त सहायता हुआ।

योग पर दोनों की आस्था थी ईसामसीह योग के चमत्कार दिखाने में सफल नहीं हो सके, वह भ्रमजाल का स्वय भी शिकार थे और अपने शिष्यों को भी भ्रमजाल की बहुत बडी खाई मे फंसा गये। जिन,भूत निकालने की भांति बदरूहों को निाकलना उनका मुख्य काम रहा। उन्होंने दया के सिद्धान्त की घोषणा करके भी कबरो से निकली हुई दुष्ट आत्माओं को सूरों के गोल में जाने की आज्ञा देकर उन्हें तडप कर झील के पानी मे डूब मरने का साधन जुटा दिया। आज दिन तक ईसामसीह के शिष्य बुरी रूहों के निकालने और अन्धो को आखें देने, मुर्दों को जिन्दा करने, लंगडों को चगे करने के ढोंग रचाकर छल कपट से ईसाईयत का प्रचार करते फिरते है। ईसामसीह अपने तपस्या के दिनो में भारत—जगन्नाथपुरी तथा लेह और तिब्बत के बौद्ध मठों में १२ वर्ष तक रहे किन्तु उनको यथार्थ धर्म का ज्ञान न हो सका। केवल बौद्धो को अहिसा का अधूरा सा ज्ञान लेकर वापिस अपने देश मे लौटे और अपने गाल पर थप्पड खाने का पहाडी उपदेश दिया और कहा कि मैं कुर्बानी को नहीं, वरन् अहिसा और दया को चाहता हूं। आसमानी राज्य का प्रोपेगंडा धर्म की आड में करने का प्रयत्न किया। बेबस होकर पकडे गये और छिपने का प्रयत्न सफल न हो सका।

ईसामसीह मृत्यु से बुरी तरह घबराकर ईश्वर से बार-बार प्रार्थना करते रहे कि ऐ खुदा! ऐ खुदा!! ऐ मेरे ही खुदा!!! हो सके तो तू मौत का प्याला मेरे से टाल दे।

पादरी लोग ईसामसीह की मौत से खिलवाड कर रहे हैं कि वह मरने के पश्चात् तीसरे दिन जी उठे और चालीस दिन अपने शिष्यों को दृष्टिगत होते रहे और फिर वह जीवित ही आसमान पर जा पहुंचे। खुदा ने अपने बेटे को अपने तख्त पर दाहिनी ओर बिठाकर सम्पूर्ण अधिकार संसार के जीवो की व्यवस्था का उनको सौंप दिया। जो उन पर विश्वास करके उन पर ईमान लाएगा त्राण पायगा। शेष संसार नरकाग्नि में सदैव झुलसता तडपता रहेगा।

इससे बढकर अविद्यान्धकार की बात और क्या हो सकती है कि सृष्टि नियम के विरुद्ध मुर्दे को जीवित और ईश्वर को रिटायर होने का अप-सिद्धान्त स्वीकार करके ससार के जीवों को धन बल से इसी अन्ध महागर्त में धकेलना चाह रहे हैं।

ऋषि दयानन्द अखण्ड ब्रह्मचारी, धर्मव्रतधारी, सृष्टि नियम के पालनकर्ता, ईश्वर विश्वासी और प्रभु के भक्त थे। जिन्होंने ईसा के गुरुडम और उन पर विश्वास लाने के जाल रूप प्रत्येक तार को तार-तार कर दिया। ईसाई ढोल की ऐसी पोल खोली कि पाखण्ड दल में त्राहि-त्राहि का शोर मचा।

ईसा मसीह को ईसाई भले ही अनपढ कहकर उसे खुदा का बेटा मानते हुए चमत्कारी पैगम्बर सिद्ध करने का प्रयत्न करे किन्तु अब इस विज्ञान सिद्ध विश्व मे योरप उनके भ्रमपूर्ण मन्तव्यों को छोड चुका है। सत्य यह है कि ऋषि दयानन्द के विज्ञानानुकूल वैदिक मन्तव्यों का योरुप में दिन प्रतिदिन बोल बाला हो रहा है जबकि स्वय ईसा की जन्मभूमि मे उनके सिद्धान्त प्रचलित नहीं हैं।

ईसामसीह योगी न थे। योग के नाम पर चमत्कार दिखाने के लिए प्रयत्नशील रहे। महर्षि दयानन्द सरस्वती योग विद्या निष्णात महापुरुष थे। चमत्कारों का खण्डन और सृष्टि क्रमानुसार चलने वाले विज्ञान का वह सदैव मण्डन करते रहे।

ईसा के अनुयायी संसार में अधिक हैं। किन्तु विज्ञान मूलक धर्म न होने के कारण इनका विचार

परिवर्तन होकर धर्म परिवर्तन होना अवश्यंभावी है।

ईसा को फांसी पर चढते देख भयभीत होकर ईसा के शिष्य उनके मानने से इनकार करने लगे और डरकर भाग गये। पुनरपि ईसाईयत पुन: प्रचलित हो गई तो ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का संसार में प्रसार भी असंदिग्ध है। यह वैदिक सिद्धांत विज्ञान मूलक है। इनका परीक्षण अभी समय की अपेक्षा रखता है। संसार के विद्वानों ने इन सिद्धांतों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है और विद्वानों के अधिक भाग ने इन्हें स्वीकार भी कर लिया है।

ईसा की अब बीसवीं शताब्दी है और ऋषि दयानन्द के विचारों की शताब्दी में अभी १० वर्ष शेष हैं। विश्वास करना चाहिए कि वैदिक सत्य सिद्धान्तों का प्रसार जिस द्रुत गति से योरोपादि विदेशों में होता जा रहा है, ऋषि दयानन्द की बीसवीं शताब्दी तक समग्र संसार वैदिक झण्डे तले होकर सभी भेद भावों, भ्रमपूर्ण संस्कारों, ईसा आदि पैगम्बरों के चमत्कारों से मुक्त होकर विज्ञान की चरम सीमा को पहुंच जायेगा।

ईसा के १२ शिष्यों से बढकर उसके १ लाख से ऊपर पादरी आज संसार के समस्त देशों को अज्ञान में फंसा रहे हैं।

ऋषि दयानन्द के जीवन काल में ही उनके शिष्य संसार के सभी बड़े देशों में विद्यमान थे। उनके विचारों का समर्थन करने लगे थे। दयानन्द की बीसवीं शताब्दी तक दयानन्द के लाखों प्रचारक होंगे और कोई भी विद्वान् ऋषि के विचारो से प्रभावित हुए बिना न रह सकेगा।

ईसा के विचारों का विस्तार राजनीति से हुआ है। ऋषि के शिष्य अभी निर्णय नहीं कर पाये कि राज्य शक्ति से लाभ किस प्रकार उठाया जा सकता है और अभी तक आर्य-राज्य की रूप रेखा की आधार शिला रखने पर सहमति भी नहीं हो पा रही है। किन्तु यह सब काम होगा और संसार की भ्रान्ति ध्वान्ति मिट कर रहेगी। ऋषि दयानन्द ने पश्चिम सन्देश (वसीयत) अर्थात् अपने स्वीकार पत्र में लिखा भी है कि जब संसार में मेरे जैसे सहस्रों प्रचारक होंगे तभी संसार की एक भाषा, एक धर्म और एक विचार द्वारा संसार का सच्चा कल्याण सम्पन्न होगा।

ईसा के शिष्य शास्त्रार्थों मे ऋषि के शिष्यों से पराजित होकर खुले मुकाबले से भाग खडे हुए हैं। पादरी अब्दुलहक्क इलाहाबाद के शास्त्रार्थों से ऐसा घबराया कि अब शास्त्रार्थों का नाम नही लेता।

मुझे एक पादरी ने बताया था कि जब तुम्हारे साथ शास्त्रार्थ करते हुए पादरी अब्दुलहक्क ने पं० रामचन्द्र जी देहलवी की प्रधानता में अपनी पराजय स्वीकार की थी तो ईसाईयों के मच पर १५० पादरी मौजूद थे किन्तु वह ईसाई सिद्धान्तो और इन्जील के प्रमाणों को खंडित होने से बचा न सके। धर्म नीति में पराजित होने वाले यह ईसाई, राजनीति में भी आर्यसमाज के प्रवेश करने पर मुकाबले से भाग खडे होंगे। वैदिक संसार की कल्पना आते ही अमरीका और इंग्लैंड के राजनीतिक खिलाड़ी तथा नास्तिक प्रकृति वादी मार्क्स के पुजारी और सेकुलर वाद के धर्म-निरपेक्ष भ्रष्टवादी, शुद्ध, धार्मिक, पक्षपात शून्य, प्राणिमात्र हितकारी आर्य राजनीति के गौरवपूर्ण सिद्धान्तों से भागते दृष्टिगत होंगे। केवल आवश्यकता है कि दयानन्द के शिष्य निद्रा त्याग उठ खड़े हों।

□

वेद का इस्लाम पर प्रभाव

व्याख्याता—श्री प० रामचन्द्र देहलवी
शास्त्रार्थ-महारथी

□ ● □

ओ३म् । द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्य-
नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

विषय तो आप ने विज्ञापन मे देख ही लिया होगा कि वेद का कुर्आन पर या मुसलमानो पर या इस्लाम पर क्या प्रभाव पडा है ? हम ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों को अनादि मानते हैं। यह हमारा मौलिक सिद्धान्त है। और इन्ही तीनो से सृष्टि का बनना सम्भव है।

यदि किसी धर्म या सम्प्रदाय वाला इन तीन से कम मानता है तो न तो दुनिया बन सकती है और न उस का सिलसिला आगे चल सकता है। इसलिए उन लोगो ने (मुसलमानों ने) यह सोचकर कि धर्म के मैदान मे, जबकि बुद्धि इतनी उन्नति कर रही है और ये मसले, जिन की तरफ लोगो की तबीयत रुजू नही होती थी, अब वह सामने आ रहे है और उनके सम्बन्ध मे लोग विचार करने लगे हैं कि जब परमात्मा को दुनिया मे ही ऐसा नियम चल रहा है कि कोई चीज के बगैर पैदा नहीं होती है तो यह मसला फरामोशी की हालत में छोडा नही जा सकता। कल्पना कर ली जाए किसी चीज की भी। क्या वह अपने-आप पैदा है तो है ? क्या उसके लिए किसी प्राकृतिक पदार्थ की आवश्यकता नही होती है ? होती है। तो यह देख कर ही जनाब मौलवी शिबली नौमानी ने अपनी किताब 'अल्कलाम' में लिखा हुआ है कि 'माद्दा कदीम है' अर्थात् प्रकृति अनादि है। इसके बगैर जगत् नही बन सकता। प्रकृति के मायने भी यही है कि 'प्रक्रियते अनया' जिस से सबसे पहले कोई चीज बनाई जाए। उसे प्रकृति कहते हैं, उसी को माद्दा कहते हैं। हमारी सदाकत ने इतना जोर मारा कि उन्होंने यह मजूर किया कि 'हयूला' (उपादान कारण) अर्थात् माद्दा, वह हमेशा से होना चाहिए और उसके अन्दर उसकी सिफात और हरकात भी जाती होनी चाहिए। यानी उस में हमेशा से होनी चाहिए। मैंने तो उन्हें कुर्आन मे भी दिखा दिया कि आप ने बिना देखे अपना यह अकीदा बना लिया कि नेस्तो से हस्ती हो सकती है।

इम्मिन् शैइन इल्ला इन्दना खजाइनुहू वमा नुनज्जिलुहू इल्ला बिकदरिम्मालूम् ॥

सूरत १५। रु० कु० २। आयत २१।

अर्थ—जितनी चीजें हैं हमारे यहाँ सब के खजाने हैं, मगर हम एक निश्चित परिणाम और ज्ञान के साथ उनको भेजते रहते हैं।

कहते हैं कि जो चीज भी है वह सब हमारे खजाने में मौजूद है। कौन कह रहा है यह ? कुर्आन का अल्लाह कह रहा है कि 'हमारे खजाने मे तमाम चीजे मौजूद हैं और जिस कदर हम जानते हैं कि उन मे से लेनी चाहिए उतनी हम अपनी प्रजा के लिए ले लेते हैं। तो बताइए यह कहना कि कोई चीज नही थी, दुनिया बन गई, गलत बात है। हम तो इसे ऐसे मानते हैं कि जैसे बाजीगर जामा मस्जिद के पास खड़ा होकर जब टिकरी के रुपये बनाता है तो हम समझ लेते हैं कि वैसे ही उस ने भी (खुदा ने भी बिना माद्दा के दुनिया) बनाई होगी। अगर सचमुच रुपये बन जाते तो पीछे पैसे क्यों माँगता ? जब पीछे हरेक से पैसा-पैसा माँगता है तो मालूम हुआ कि यह सिर्फ हाथ की चालाकी है। तो इसी तरीके पर उन लोगों ने मान लिया कि खुदा कहता है 'हो जा' और हो जाता है— कुर्आन में एक आयत आई हुई है "इजा अरादा शइन् इन्नमायक़ूलुहू कुन्, फयकून्" जब अल्लाह किसी काम के करने का इरादा करता है तो कह देता है कि 'हो जा' और हो जाता है। तो भला ऐसा कही होता है ? बहुत पुरानी बात है। सब से पहले मैंने इसे स्वर्गीय श्री लेखराम जी की किताब मे पढा था कि उन्होंने यह ऐतराज किया था।' बहुत ठीक ऐतराज है अगर कोई चीज नही थी तो कहा किस से कि हो जा ? और यदि कोई चीज थी तो यह कहना कि सिवाय खुदा के कुछ नही था, गलत बात है। दोनों बातों में से कोई एक बात सही और एक बात गलत है। पण्डित गुरुदत्त जी विद्यार्थी ने बडा अच्छा लिखा है। कहते हैं कि—

"अगर आप मानते है कि एक कोई ऐसी नफी है, (नेस्ती है) जिस से कोई चीज पैदा हो जाती है और दूसरी कोई ऐसी है जिस से पैदा नही होती तो कहते हैं कि There must be two kinds of nothing, one ordinary nothing and the other peculiar nothing. (दो प्रकार की नेस्ती होनी चाहिए—एक साधारण नेस्ती और दूसरी खास नेस्ती) ? होगी जो कई किस्म की होगी जो कोई चीज होनी चाहिए, नाचीज नही होनी चाहिए। कितनी अच्छी बात उन्होने कही !

तो यही बात मैंने एक बार फतहपुर हसुवा में जो कानपुर से आगे है एक मौलवी साहब से पूछी थी। वे वहाँ इलाहाबाद से तशरीफ लाए थे। मैंने उन से पूछा था—जरा लफ्ज सख्त हैं, मैं उन्हें बाद में हिन्दी में आपको समझा दूंगा—"पैदाइशे दुनिया से पहले मुम्किनात का भी अदम था और मुम्त-नियात का भी। क्या वजह है कि मुम्किनात का अदम तो दुनिया की पैदाइश होने पर खत्म हो गया लेकिन मुम्तनेआत का अदम बाकी रहा", आप नही समझे होंगे। इसलिए मैं आप को जरा समझा दू। मुम्किन शब्द के अर्थ हैं सम्भव, कि जो चीज पैदा हो सकती है। दुनिया पैदा हुई है, सम्भव है और असम्भव, जो न पैदा हो सके वह असम्भव है, जैसे गधे के सिर पर सीग। गधे के सीग पैदा नहीं हुए। न पहले थे और न अब हैं। जब गधा पैदा नही हुआ था तब भी गधे के सीग नही थे और उसके पैदा हो जाने के बाद भी नही हैं। तो गधे के सीग न होना असम्भव चीज है, जो कभी नही हो सकती Impracticable तो दुनिया से पहले गधा नही था और गधे के सीग भी नही थे अर्थात् मुम्किनात व मुम्तनियात दोनो का अदम था। दुनिया को पैदाइश से पहले न गधा था और न गधे के सींग। लेकिन जब दुनिया पैदा हुई तो गधे का 'न होना' होने मे बदल गया अर्थात् जो गधे का न होना था खत्म हो गया। लेकिन सीग वैसे के वैसे ही रहे। न तो सीग गधे के न होने से पहले थे और न गधे के होने के बाद हैं। इस प्रकार जो मैंने प्रश्न किया कि—

"दुनिया की पैदाइश से पहले मुम्किनात का भी अदम था और मुम्तनिआत का भी। क्या वजह है कि दुनिया की पैदाइश के बाद मुम्किनात का

अदम तो खत्म हो गया और मुस्तनेआत का बाकी रहा ?"

मौला-ा क्या जवाब देते हैं कि, "पण्डित जी, एक में सलाहियत थी और दूसरे मे नही थी।"

मैंने कहा, "बस जहां सलाहियत होगी वह शय होगी, लाशय नही रहेगी. वह कोई चोज हो जाएगी, वह Something होगी Nothing नही हो सकती।" खैर, यह एक लतोफ चीज थी जो मैंने आप को सुना दी। यह चोज देखकर उन्होंने मान लिया कि हाँ हकीकत मे माद्दा था, प्रकृति थी और खुदा ने माद्दे से दुनिया बनाई।

अब दूसरा प्रश्न यह उठता है कि दुनिया किस के लिए बनाई ? यदि वह न हो तो दुनिया का बनाना बेकार ? इसलिए उस का (जीवात्मा का) मानना भी अनिवार्य है, जरूरी है। दुनिया मे हम देखते ही है कि तीन से कम के अन्दर कोई काम पूर्ण नही होता है। पूर्ण हो नही सकता है। 'तीन' पूर्णता का द्योतक है। यहाँ भी, इस समय, मैं (व्याख्यान देने वाला), आप (श्रोता, सुनने वाले) और मेरा व्याख्यान (जो मैं बोल रहा हू) तीन है। इन तोनो में से किसी एक को निकाल दीजिए तो यहाँ का जलसा खत्म। बाजार में भी तीन चीजें हैं (दूकानदार, खरीदार और चीज)। इन तीनो मे से एक चीज निकाल दीजिए, फिर बाजार चलता है क्या ? एक जगह दूकानदार नही है, दूसरी जगह खरोदार नही है। अब चलाइए बाजार ? बाजार कभी नहीं चलेगा। वह खुला हुआ भी बन्द होगा। बस इस सदाकत को देखकर मौलाना शिबली नो अमानी ने यह बयान किया था कि माद्दा कदोम है और उस से दुनिया बनती है।

एक बार मिर्जा हैरत साहब देहलवी जो बडे दरीबे में रहते थे उन से एक दिन मेरी बात हुई। उन से पूछा कि कहिए जनाब, अगर आप यह मानते हैं कि रूह पैदा हुई है तो जरा फरमाइए कि इसके (आत्मा) अजजा क्या हैं कि जिन से यह बनी है ? कहने लगे, "पण्डित जी, यह बात नही है— कुर्आन में आया हुआ है 'फइजा सव्वैतूहूवनफक्तु-फीहिमिरूंही", अल्लाह कहता है जब हम ने तैयार कर लिया, किस को ? आदम के पुतले को, (न फक्तु) तो उस मे अपनी रूह फूँक दी (मिरूंही) अपनी रूह मे से। तो क्या खुदा की रूह पैदा हुई थी ? मुझ से उलाहना देते हुए कहने लगे, "नही, इसलिए रूह पैदा नही होती, वह हमेशा से है।" इस प्रकार उन्होंने रूह और माद्दे का होना हमेशा से मान लिया। खुदा को वे मानते ही थे।

क्यों हुआ यह परिवर्तन ? क्या वजह है, यह तब्दीली वाकै हुई ? कोई तो कारण होना चाहिए ? मैं कहता हू कि यह सृष्टि इतनी जोरदार है, इतनी Predominent (प्रीडामीनैण्ट) है, इतनी शक्ति-शाली है कि जो चोजे गलत हैं उन्हें भुलवा देती है और जो सही हैं उन्हे मनवा देती है। लेकिन जरा गौर करने वाला होना चाहिए। जिन लोगों ने गौर किया उन लोगो ने हकीकत का बयान कर दिया।

अब इस से आगे बयान करता हू मिर्जा साहब, मिर्जा गुलाम, अहमद कादियानी, अहमदी जमात उन्होंने क्या लिखा है ? कुदरती बात है, जब तीनों चीजे है तो खाली नहीं रह सकता (खुदा)। यह खयाल कि बेकार रहता है भला कैसे हो सकता है ? अकेला रहे तो जरूर बेकार रहेगा। इन तीनों चीजो मे से (ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति) कोई चोज अकेली मान लीजिए बाकी चीजें बेकार रह जायेंगी। मोटे तौर पर उपदेशक बेकार यदि सुनने वाले न हो, राजा बेकार यदि प्रजा न हो, डाक्टर बेकार यदि मरीज न हों, मास्टर बेकार यदि पढने वाले न हो। इसलिए खुदा भी बेकार है (जीवात्मा और प्रकृति के अभाव में)। यह सोचकर उन्होने क्या किया ? उन्होंने सिलसिला बयान किया, जो हम ने अपनी उम्र में जब से न जाने कितने मुबा-हसे किए हैं उन मे बीसियो मौलानाओं से बातचीत

करने का मौका हुआ। वे इस दुनिया या सृष्टि को सब से पहली सृष्टि मानते हैं। कहते हैं, "यह सब से पहली दुनिया है। इस से पहले कोई दुनिया नही थी।" लेकिन जब उन्होंने यह देखा कि उस से पहले इतना बडा जमाना, जिस का न कोई शुरू है और न कोई खातिमा, Interminable Period, और इतने वक्त तक परमात्मा बैठा रहा खाली। अच्छा नहीं मालुम होता। आजकल Unemployment है। क्या हालत हो रही है? क्या खुदा भी इतने लम्बे समय तक Unemployed रहा? यह खयाल करके उन्होंने यह परिवर्तन किया कि जब से खुदा है तब से दुनिया का सिलसिला चला आ रहा है और यह चलना भी तभी से चाहिए। तो मिर्जा साहब ने खुदा के अन्दर दो ताकते मानी हैं। एक दुनिया के पैदा करने की और दूसरी नाश करने की, जिस को उन्होंने इफ्ना (नाश) और ईजाद (उत्पन्न) नाम दिया है। उत्पन्न करने की व नाश करने की शक्ति। यह दोनो शक्तियाँ भगवान् में हमेशा से हैं। वह ऐसा मानते हैं। जब एक का दौर समाप्त हो जाता है तो दूसरी का दौर शुरू हो जाता है। यह बराबर चलता रहता है और हम नहीं कह सकते हैं कि इसका कोई शुरू है कि नहीं और इसी सम्बन्ध में उन्होंने कुर्आन की एक आयत पेश कर दी 'कुल्ला योमिन् हुव फीशान्।"

खुदा हर एक दिन किसी न किसी शान में रहता है। यह एक कुर्आन की आयत लेकर इसी के आधार पर उन्होंने यह माना। उन्होंने कहा कि यह हमारी तराश या इख्तरा नहीं है, कुर्आन के आधार पर ही यह हमारा अकीदा है। हम ने कोई नई चीज नहीं निकाली है यह कुर्आन में मौजूद है। अब इस से आप क्या अन्दाजा लगाते हैं? वेद के कितने नजदीक आ गए हैं? वेद में लिखा है "पादोऽस्येहाभवत् पुनः।"

वेद में आया हुआ है कि यह क्रम हमेशा से है। दुनिया के बाद सृष्टि और सृष्टि के बाद प्रलय, प्रलय के बाद सृष्टि। रात के बाद दिन और दिन के बाद रात होते चले आ रहे हैं।

स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज के आग्रह पर मैं एक बार उन के गाँव मे गया। वह गाँव मुसलमानों के आधिक्य वाला है। स्वामी जी ने कहा था कि वहाँ के निवासी क्योंकि मुसलमान हैं इसलिए आपका व्याख्यान सुनने वे जरूर आयेंगे। तो वहाँ मेरा व्याख्यान तनासुख पर हो रहा था। मैंने कुर्आन की आयतों से यह बताया कि उसमे तनासुख मौजूद है। चाहे आप न मान यह और बात है। वैसे आप के यहाँ मुतनाकिया नामक एक बहुत बडा सम्प्रदाय भी था जो आवागमन अर्थात् तनासुख को मानता था। यहाँ दिल्ली सदर मे दारूल्फला नाम की एक जगह है। उसके एक बडे बुजुर्ग व अन्य बहुत से उनके साथी यहाँ एक कान्फ्रेंस मे आये थे। मैं उस मे प्रधान था (एक सम्मेलन का) वहाँ उन्होंने तनासुख अर्थात् आवागमन को स्वीकार किया था। वह कहते थे कि कुर्आन मे आवागमन है और वे आयत वही पेश करते थे जो मैं किया करता हूँ और कहते थे कि इस बिना पर तनासुख जरूर होता है और होना चाहिए। एक जोरदार बात उन्होंने और कही जो हम भी कहा करते हैं क्योंकि सीधी-सी बात है, "सौ सयाने एक मत।"

उन्होंने यह कहा कि, "दुनिया मे आप देखिये कि बहुत-से आदमी पागल रहते हैं, वे सारी उम्र पागल ही रहते हैं, और बडी भारी संख्या ऐसे लोगो की है जो मूर्ख हैं, समझते कुछ नही, अपनी रोजी कमाते हैं और सारा दिन गुजार देते हैं रात को सो जाते है। बहुत-से ऐसे बच्चे हैं जो थोडी उम्र में मर जाते हैं, बहुत-से ऐसे हैं जो माता के गर्भ में ही समाप्त हो जाते हैं, बहुत-से ऐसे हैं जो नास्तिक हैं परमात्मा को मानते ही नही हैं।" तो कहते हैं कि

जब दुनिया में ऐसे आदमी भी हैं और खुदा ने दुनिया क्यों बनाई है ? ताकि लोग इबादत करे, "माख-लक्तुलिजन्न वलिसा इल्लालियाबुदून्" हम ने जिन और इन्सान इबादत के लिए पैदा किये हैं। दुनिया में लोगो के पैदा करने की खुदा की गरज है कि लोग उसकी इबादत करे। कैसे पूरी होगी ? पागल, मूर्ख व नास्तिक हैं ये सब कैसे इबादत करेंगे ? जो बच्चे थोडी अवस्था मे, या माता के गर्भ में ही मर गए हैं, वे खुदा की इबादत कैसे करेंगे ? तो इन सभी लोगो का दुनिया मे फिर आना जरूरी है। बगैर दुबारा आए वे दुनिया में आने का मक्सद अर्थात् खुदा की इबादत कैसे कर सकेंगे ? इसलिए अहमदी लोगों ने दुनिया के सिलसिले को माना है और अब दूसरी जमात वाले भी मानने लगे है और अब कहने लगे है कि हम नहीं कह सकते हैं कि खुदा ने आज तक कितनी बार दुनिया पैदा की है क्योंकि पैदाइश के बाद फना और फना के बाद पैदाइश यह सिलसिला चला आ रहा है। यह परिवर्तन हो गया है।

तो वहाँ लखनौती में, स्वामी ब्रह्ममुनि जी के गाँव में जो व्याख्यान हो रहा था, उसे सुनने बडी तादाद में मुसलमान लोग आए थे। वहाँ मैंने कुर्आन को एक आयत पढी, 'तूलिजुल्लैल फिन्नहारि व तूलि जुन्नहारा फिल्लैल व तुखिजुल्हैयामिनलमैयता व तुखिजुल्लमैयतामिनल्है', इसका अर्थ यह है कि अल्लाह रात को दिन मे दाखिल करता है और दिन को रात मे दाखिल करता है और मुर्दा से जिन्दा को और जिन्दा से मुर्दा को निकालता है। मैंने यह कहा कि, "यह स्पष्ट है और रात के बाद दिन होता ही है। इस में कोई शका की बात नही है तो इसी सच्चाई की बिना पर उन्होने नीचे लिखा है कि जैसे दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होता है और यह सिलसिला बराबर जारी है"—एक बार मुबाहसे के बीच एक खास मजेदार बात आई थी। मैंने अपने मद्दे मुकाबिल मौलाना से पूछा था, "बताइए यहाँ जो बयान है यह महज एक दिन और एक रात का है या ज्यादा का ?" तो कहने लगे कि "आप भोले बनते हैं— नही ! यह सिलसिले को बयान किया है, अल्ला अल्लाह शानऊ ने, परमात्मा ने, खुदा ने इस सिल-सिले को बयान किया है कि रात के बाद दिन और दिन के बाद रात बराबर होता चला आ रहा है।" "सिलसिला है ?" "कि जी हाँ", तो इस से आगे वाली आयत के बारे में क्या कहेंगे आप कि व तुखि-जुल्है यामिनलमैयता व तुखिजुल्लमैयतामिनल्है मुर्दा से जिन्दा को निकालता है और जिन्दा को मुर्दा से ?" तो मौलवी साहब बोले कि "इस से आप तनासुख साबित कर रहे हैं।" मैंने कहा कि, "मै साबित नही कर रहा हूँ जो साबित है उसे दिखा रहा हूँ। अब कहिए आप क्या मानते हैं ?"

इस बयान को सुनकर एक मुसलमान साहब बडे प्रभावित हुए। तो उन्होंने कहा कि आप हमारी दावत कबूल करें कल सुबह आठ बजे। मैंने कहा, "बहुत अच्छा।" मैं, स्वामी जी व श्री जगदीश भूषण भजनीक, हम तीनों अगले दिन प्रातः ८ बजे उन साहब के घर पहुंच गए। उन्होंने वहाँ बड़े साफ बर्तन में अपनी भैंस का दूध निकाला, हमारे सामने गर्म किया और निहायत साफ गिलासो में हमें वह पीने के लिए दिया। जब हम दूध पी चुके तो वह मुझे एक अलग कमरे मे ले गए और कहा, "पण्डित जी, रात के व्याख्यान से मुझ पर बडा प्रभाव पडा है।" मैंने कहा, "क्या ?" तो बोले कि, "मै बेवकूफ नही हू, मैं अरबी जानता हूँ, कुर्आन पढता हू। आप ने जो हवाला दिया है, उस हवाले से मुझ पर असर पडा है। मैं आज से तनासुख का मानने वाला बन गया हू, कुर्आन मे यह चीज मौजूद है।" इस से आप अन्दाजा लगाइए कि वैदिक सच्चाई कितनी जोरदार रही है कि वह मसले जो पहले नहीं माने जाते थे वह माने जाने लगे हैं। कहते हैं हकीकत मे यह बात ठीक है कि खुदा

दुनिया पैदा करता है और फना करता है और यह सिलसिला बराबर जारी रहता है और अगर वह ऐसा न करे तो उस का खाली बैठना साबित होता है। रूह भी मौजूद है। प्रकृति भी मौजूद है। तोनों मौजूद हैं। ऐसी अवस्था में वह खाली नही बैठ सकता।

अगर कोई यह मान ले कि खुदा सारी दुनिया को बिल्कुल फना कर देता है, फिर नये सिरे से बनाता है तो यह चीज लाजिम आएगी कि जो जीवात्मा दोजख और बहिश्त मे जाने चाहिए वे भी खत्म हो जायेंगे। कैसे वे दोजख व बहिश्त में जा सकेंगे ? वे तो फना हो जायेंगे। तो वे मानते हैं, 'नहीं आत्माएँ रहती हैं।' वे कहते हैं कि यह दोजख और बहिश्त में रहेंगे। Eternal Condemination and Eternal Reward ऐसा इनाम जो हमेशा रहेगा, ऐसा Condemination जो हमेशा रहेगा। ये दोनो बाते वहां उन्होने बयान की। अब इस मे भी कुछ परिवर्तन हो गया है।

यहीं परेड के मैदान में शास्त्रार्थ तो नही हो रहा था, ख्वाजा कमालुद्दीन साहब व्याख्यान दे रहे थे। वह अहमदी जमात के एक बहुत बडे वकील थे और वे व्याख्यान दे रहे थे। उस व्याख्यान में उन्होंने कहा था कि 'हमारे यहाँ दोजख हमेशा का नही है, क्या कभी जेलखाना हमेशा के लिए हुआ करता है ? जितनी सजा है उस से ज्यादा नही हो सकती। इसलिए दोजख हमेशा के लिए नही हो सकता। कुर्आन मे यह चीज मौजूद है। जब लोग अपने पाप को भोग लेंगे तो खुदा उन्हें वहाँ से (दोजख से) निकाल देगा। कुर्आन में साफ लिखा है कालन्नारुमस्वाकुम् खालिदी ने फोहा इल्लामाशा अल्लाह--कहा कि आग तुम्हारा ठिकाना होगा, जिस मे हमेशा-हमेशा रहोगे जो अल्लाह चाहे।

आग तुम्हारा घर होगा, आग तुम्हारा ठिकाना होगा जिस में हमेशा-हमेशा रहेंगे। मगर जो अल्लाह चाहे। अगर अल्लाह चाहे तो उन्हें निकाल सकता है। इसीलिए दोजख से निकाल लिये जायेंगे। यह सब अस्पताल की कोठरिया हैं। इन में से निकल आयेंगे और इन को निकालकर जन्नत मे भेज देगा। वहाँ वे अपने अच्छे कर्मों का फल भोगेंगे।" जब वह यह व्याख्यान दे रहे थे तो मैंने कहा कि "मौलाना, मै आप से एक बात पूछना चाहता हू ?" उन्होंने कहा, "क्या ?" मैंने कहा, "वे लोग बहिश्त में हमेशा कैसे रहेंगे ? अभी आप ने दलील यह दी है कि कर्म (पाप) खत्म होने पर (भोगने से) खुदा उन्हें दोजख से निकालकर जन्नत में भेज देता है। तो जन्नत भी तो शुभ कर्मों का फल है, वे कर्म भी तो भोगने से खत्म हो जायेंगे तो जन्नत या बहिश्त हमेशा के लिए कैसे हो सकती है ? मैं आप से यह पूछता हूँ कि दुनिया में लोग ज्यादा बुरे काम करते हैं कि ज्यादा अच्छे ?" उन्हें बोलना पडा क्योंकि कुर्आन के बखिलाफ तो बोल नही सकते थे। अगर बोलते कि, 'लोग अच्छे काम करते हैं', तो वहाँ मैं पढ देता 'कलीलुम्मिन् इबादियश्शकूर।'

हमारे बन्दों में शुक्र करने वाले बन्दे बहुत कम है—"कि हाँ पाप तो लोग ज्यादा करते हैं और पुण्य कम।" तो मैंने कहा कि पाप ज्यादा होते हुए भोगने से समाप्त हो जाते है और उसके परिणामस्वरूप उन्हें मिली दोजख से निकालकर ईश्वर उन्हें जन्नत में डाल देगा तो जो पुण्य-कर्म है वे समाप्त नही होंगे क्या ? और उनके परिणामस्वरूप मिली जन्नत में से क्या निकालना नही होगा ? याद रखिए यदि आप वहाँ से न निकलेंगे तो मैं आपको वहाँ से निकाल लाऊँगा क्योंकि पुण्य समाप्त होने पर बहिश्त में कोई नही रह सकता।" तो इस पर मौलाना बोले कि जन्नत या बहिश्त तो खुदा की रहमत से मिलती है, तो मैंने कहा कि ये दोजख खुदा के गजब से नहीं मिलती है क्या ? खुदा में

गजब भी है और रहमत भी है। तो कहने लगे, "गजब पर रहमत गालिब रहती है", तो मैंने कहा, "खुदा सिफत में अपने ऊपर गालिब और मगलूब भी रहता है। उसकी सिफत एक-दूसरे के ऊपर गालिब है क्या कह रहे हैं आप ? बडी मुश्किल में रहता होगा ? ऐसा नहीं हो सकता। मैं आप को वहाँ रहने न दूंगा।" वहाँ कुरान में ऐसा लिखा हुआ है 'अत्वा अन् गैरामज जुज' यह देन है जो गंडेदार नही है, एकरस होती है यानी उस मे जुज नही है।

अभी इतना और अभी इतना ऐसा नहीं है, गंडेदार नहीं है। एक मियादे मुअय्यना तक, एक नियत समय तक जन्नत या बहिश्त या स्वर्ग का आनन्द लगातार भोगता है। यो कहिए कि वह सुख गडेदार नही है बल्कि लगातार एक निश्चित समय तक मिलता रहता है। आगे लिखा है कि जब तक आसमान और जमीन कायम रहेंगे, तो मैंने कहा कि "क्या आसमान और जमीन हमेशा कायम रहेंगे ?" "नहीं ! हमेशा तो नही रहेंगे", मौलाना बोले। तो मैंने कहा कि बस साफ बता दिया कि जब तक आसमान और जमीन रहेंगे तभी तक वह सुख प्राप्त होगा। साफ हो गया कि न जन्नत हमेशा की है और न दोजख हमेशा की है। यह साफ बात है कि लोग आराम की जगह से नही निकलते। इस प्रकार आज वेद का यह असर उन पर पडा कि वह अपने पुराने और गलत विश्वासों को छोडने के लिए विवश हुए।

आगे जो अन्य विवादास्पद बात है वह यह है कि हम वेद का इल्हाम सब से पहला मानते हैं कि सृष्टि की आदि मे वेद आया। जब इन्होंने (मुसलमानों ने) यह देखा कि कुर्आन से पहले और भी किताबें थीं (तौरात, जबूर और इंजील) तो पहले और भी कोई जमाना रहा होगा या होना चाहिए। तो क्या कहते हैं, "हाँ, इब्तदा में वेद आया है। यह पहली जमात का है जैसे Primary जमात होती है और उसकी किताबे होती हैं इस तरह पर वेद आया है हमारा M A. का Course है। कुर्आन मजीद M.A. का Course और वेद, वह Primary Class की किताब है।" मैंने कहा, "खैर आप ने (वेद को) किसी क्लास की किताब तो माना। लेकिन हम आप से पूछ लेते हैं, जरा यह तो बताइए कि ऐसा कौन-सा मसला है कि जो जरूरी है इन्सान को इन्सान बनाने के लिए, मुक्ति प्राप्त कराने के लिए, महान् से महानतम उन्नति के लिए आवश्यक है और वह वेद में नहीं है और कुर्आन मे है ? क्या आप बता सकते हैं कि जिस से ऊँची से ऊँची तरक्की इन्सान कर सके वह चीज कुर्आन मे हो और वेद मे नही हो। वह आप जरा फरमा दीजिए ?" इस पर वह कुछ न बोले। उस मजमे में एक पागल-से साहब बैठे थे, बोले कि जनाब एक चीज नही है। मास खाना यह कुर्आन में है और वेद में नही है। मैंने कहा कि "बहुत बडी चीज के लिए कुर्आन आया है। इन को तो हम भेडियों से, कुत्तों से, गीदडो से सीख सकते थे। इस काम के लिए कुर्आन के आने की क्या जरूरत थी ? उस ने ऐसे जानवर पैदा कर दिए थे जो हमे यह बात सिखा सकते थे।" एक समझदार शख्स वहाँ बैठे थे, कहने लगे, "पण्डित जी साहब, आप किस की तरफ लग रहे हैं। ये तो बेसमझ आदमी हैं, इनका दिमाग फिरा हुआ है (उनके कहने पर मुझे ज्ञात हुआ कि वे पागल है) आप सोचे मेरा कहने का मतलब यह है कि वेद के सिद्धान्त जाकर इतना जोर पकड गए हैं कि उन का कोई जवाब नही बन पाता। मै कुर्आन की बिना पर ही हमेशा उन का जवाब दिया करता हू। वह कहते है पहले कमइल्म लोग थे। धीरे-धीरे, धीरे-धीरे इल्म बढता हुआ चला गया है और इसलिए खुदा ने कुर्आन को पीछे भेजा। बरेली की बात है। वहाँ शास्त्रार्थ था। बरेली के शास्त्रार्थ में मुसलमानों ने दावत दी थी। गुफ्तगू का समय दिया था इसलिए हमें पहुचना ही था। मैं यहाँ दिल्ली से बरेली पहुंचा। स्टेशन पर

एक आर्य भाई आए हुए थे आर्यसमाज से। वह कहने लगे, "कहाँ चलेंगे पण्डित जी ?" मैंने कहा कि सीधे वहीं मस्जिद मे जहाँ जल्सा हो रहा है, तो हम वहीं चले गये। जब हम वहाँ पहुंच गये तो हम ने उन से कहा कि आप का जल्सा शुरू होने वाला है आप ने दावत दी है, हम हाजिर हो गये हैं, कृपया हम को मौका दिया जाये। मन्त्री जी—आप जानते हैं—उन का कहना मानना ही पडता है। वह कहने लगे, "पण्डित जी साहब, आप देखिए जरा, रात का वक्त है, देर हो गई है।" मैंने कहा, "देर क्या है ? जल्सा तो आप का शुरू नही हुआ है अभी, इसलिए मौका दीजिये।" एक मौलाना जो पटना से आए हुए थे खड़े हो गए और कहने लगे, "क्यों नही वक्त देते हैं नाजिम साहब इन्हें, यह माँग रहे हैं।" तो नाजिम जरा नाराज हो गये कि "इन्तजाम के बीच दखल दे रहे हैं आप।" तो उन्होंने कहा कि आप ही खडे हो जाइए, पण्डित जी सवाल करेंगे और आप जवाब दीजिए। बिचारों को खडा होना पडा।

मैंने उन से पूछा कि, "देखिए आप के यहाँ तौरात, जबूर और इजील ये किताबें आईं। अल्लाह की तरफ से आईं। खुदा कादिर मुतलक है, सर्वज्ञ भी है और शक्तिमान भी है। मानते हैं आप ?" "हाँ जरूर", "तो बताइये जो उस ने अपना इल्म जाहिर किया था तौरात में, जबूर में उस इल्म को तब्दील करने की क्या जरूरत पडी ? क्या उस ने अपने अनुभव Experience के साथ तब्दीली की है ? कौन-सी बात भूल गया था ? स्वामी दर्शनानन्द जी ने अपनी किताब में यही लिखा है—कौन-सी बात भूल गया था तौरात में जो जबूर में ठीक कर दी ? और फिर जबूर के बाद इंजील आई। तो कौन-सी गलती रह गई थी जबूर में जो इजील में ठीक की गई ? और इजील में कौन सी रह गई जो कुर्आन में ठीक की है ? और यह सिलसिला कहां तक चलेगा ? आगे अब और कौन-सी चीज आएगी अगर कुर्आन में भी कोई कमी रह गई हो ?"

तो मौलाना खडे हुए मुस्कराते हुए और क्या कहते हैं ? 'पण्डित जी साहब, आप का किसी हकीम से वास्ता नही पडा ?' मैंने कहा, "किसी बीमार को पडा करता है, तन्दुरुस्त को क्या मतलब पडा है ?" मैंने कहा, "फरमाइये, क्या कहते हैं आप ?" कहने लगे, "हकीम का यह तरीका होता है कि अगर किसी को कोई तकलीफ होती है और पेट की खराबी हो तो पहले वह दवाई देता है जिस से मेदा नर्म हो जाये और जब मेदा नर्म हो जाता है तब ऐसी दवा देता है कि जिस से जुल्लाब होकर पाखाना हो जाये और मेदा साफ हो जाये। तो यह जितनी किताबें हैं (तौरात, जबूर व इजील) ये वे थीं कि जिस से खुदा ने उन लोगों के अन्दर जो माद्दा था सच्चाई के बखिलाफ, वहदानियत के बखिलाफ उस तमाम को नर्म कर दिया और जब कुर्आन मजीद आया तो जुल्लाब से कतई सब को निकालकर बाहर फेंक दिया।" मैंने कहा, "बहुत ठीक", अब मैं आप से पूछता हूं, "वह लोग जो पहले चले गए (तौरात, जबूर व इजील के वक्त के) उनका मेदा नर्म हो गया लेकिन जुल्लाब नहीं हुआ वह चिल्ला रहे हैं कि अल्लाह मियाँ ये दुनिया के जो हकीम हैं उनके तरीके के भी बखिलाफ हैं वह जिसका मेदा नर्म करते है उसी को जुल्लाब भी देते है। आप ने हमारा मेदा नर्म करके हमें जुल्लाब नही दिया, हम यों गुल मचा रहे है और इन को बिना मेदा नर्म किये जुल्लाब दे रहे हैं। जो कुर्आन वाले हैं यह इधर गुल मचा रहे है यह क्या किया ? सोचना चाहिए क्या होगा ?" जब नाजिम ने देखा कि गडबड़ हो रही है तब वह मेरे पास आये और बोले, "पण्डित जी साहब, अब कल।" मैंने कहा, "हाँ। कल के लिए मैं बेकल नहीं हू। अब कल के लिए कह दीजिए लेकिन सोच-विचारकर रखिए। कौन आदमी रखना चाहिए ?" तब उन्होंने दूसरे

दिन एक और मौलाना को रखा। उन्हें कह दिया कि आप रहने दीजिए।

अगले दिन वहां मुबाहसे में जीवात्मा के मुताल्लिक बात आई। मैं आप को यह बताना चाहता हूं कि यह लोग (मुसलमान) क्या मानते है। वह मानते हैं इन्सान की रूह अलग होती है और जानवरों की रूह अलग होती है, इन सबकी रूहें अलग-अलग होती हैं। ऐसा ये मानते हैं।

तो कहने लगे, "पण्डित जी, तनासुख मानने से इबलाते नौईयत लाजिम आती है यानी जाति की विशेषता भग हो जाएगी जो जिस योनि की है उसी योनि में दाखिल हो सकती है—अन्य योनि मे दाखिल नही हो सकती। जरा लफ्ज सख्त हैं, लेकिन मैं हिन्दी में कर दूगा—क्योंकि नो यह हैं कि तमाम जितनी रूहें हैं, इन्सानों (की) के शरीर में वह सब एक प्रकार की हैं 'समानप्रसवात्मिका जाति:।' यह जाति का लक्षण किया है। यानी जितने भी Individuals किसी भी जाति के हैं वे सब यकता होने चाहिएं। अगर आदमी गधा बन जाये तो यह समझिए कि उसकी रूह की असलियत बदल गई (नौईयत तब्दील हो गई) उसकी (आत्मा की) असलियत जो है वह परिवर्तित हो गई इसलिए इब्ताले नौईयत लाजिम आता है। "कैसे मानते हैं आप इस चीज को?" मैंने कहा कि इब्ताले नौईयत का उसूल अगर सही है तो मैं आप से पूछता हू कि खुदा ने बहुत-सों को बन्दर और सूअर बना दिया था कि नहीं? जब उन्होने खुदा का हुक्म नही माना था कि 'हफ्ते के दिन मछली का शिकार न करना।' तो बन्दर और सूअर बना दिया कि नही बना दिया था? अब गौर करना चाहिए कि यह कसे हो गया? कुर्आन फरमाता है मल्लानहुल्लाहु व गजिबा अलैहि व जिअला मिन्हुमुल्किरदता वल्खना जीर। साफ है कि नही [illegible] हुआ?" कि, "हाँ, यह तो है।" तो बताइए आप के फरमाने के मुताबिक इब्ताले नौईयत लाजिम आ गई क्या? जो इन्सान थे उन्हें बन्दर और सूअर बना दिया। अहमदी लोग कुछ और मानते हैं लेकिन उनकी वह बात चलती नहीं है। मौलाना ने यह मान लिया है कि हकीकत में इन्सान नीची योनियों में जा सकता है। इस को तनासुख माना है, मस्ख हो गये हैं। यानी उन की शक्ल-सूरत तब्दील हो गई इस तरह पर कि कुछ आदमियों को बन्दर बना दिया है और कुछ आदमियों को सूअर बना दिया। यह तनासुख क्या है? जो नस्ख करके शरीर को बर्बाद करके, जलाकर, फूंककर, कुछ करके दूसरा नया बनाया जाय यह तनासुख है। तो कहने लगे कि नही उन इन्सानों की शक्लो सूरत नही बदली बल्कि उन इन्सानों की हालत ही ऐसी हो गई। यह बात अहमदी लोगों ने कही है। कैसी बन गई? कि वे सूअर और बन्दर मिजाज के हो गए लेकिन शक्ले नही बदली, वे वैसी की वैसी रही। मैंने कहा जरा गौर करे यह उस अकीदे से बेहतर नहीं है बल्कि बदतर है। अगर यह मान ले कि एक आदमी हकीकत में सूअर को शक्ल अख्तियार करके भाग जाता है पाखाने की तरफ तो बुरा नहीं लगेगा। लेकिन, अगर वह आदमी की तो शक्ल का हो और आदत यह पड गई हो कि बजाय सीधा मेरे पास आने के वह उधर पाखाने की तरफ चला जाय तो आप गौर कीजिए कि क्या अच्छा लगेगा? इसलिए अपनी इस तावील को इस Interpretation को जो आप कर रहे हैं इस को जरा हटा दीजिए और सीधी हमारी बात मानिये। क्या मानिये? कि जब हकीकत मे इन्सान अपने को मनुष्य योनि में ही ऐसा बना लेता है तो भगवान् कहता है That is not a fit place for you go there. तुम्हारे लिए यह वाजिब जगह नही है तुम वहाँ चले जाओ। इसलिए फिर वह वहाँ चला जाता है और उसको वहाँ भेज दिया जाता है। वहाँ बुरा नही लगता। इसलिए परम्परा का तरीका बडा साफ है और उसको मिसाल तो आप के पास भी मौजूद है। इस तरह उन लोगों को

खुदा ने बना दिया और आदमी थे वह बन्दर और सूअर बन गये। जब इतना स्पष्ट है तो हमारा अकीदा इतना जबरदस्त है कि खुदा को भी मंजूर करना पड़ा। आप चाहे न मानें यह और बात है। लेकिन खुशी है कि आप इस चीज को मान गए हैं।

अब आगे रहा थोड़ा-सा यह कि गुनाहों की माफी होती है या नहीं। हम मानते हैं कि गुनाहों की माफी नहीं होती। "अवश्यमेव भोक्तव्य कृतं कर्म शुभाशुभम्।" कुरान में लिखी है यह बात 'मन्अमिला स्वालिहन् मिन्जकरिन् औउन्साफ-उलाइका यद्खुलुनल्जन्नता व युर्जकूना फीहा बिगैरि' हिसाब की जो मर्द हो या औरत कोई हो, अगर शुभ कर्म करे तो जन्नत में भेजे जायेंगे और उनको वहाँ रोजी बेहिसाब दी जाएगी। यह ठीक है। जब यह चीज है तो मैं मालूम करना चाहता हूं कि जब उनको बेहिसाब दी जायेगी तो क्या बात बाकी रह गई ? क्या खुदा उनके कर्म का फल देता है ? तो एक नौजवान मौलवी शौकतअली सब्ज-बारी मेरठ में बहस कर रहे थे। वहाँ मेरठ में, टाउन हाल के सामने जलसा हो रहा था, उन्होंने बड़ी अच्छी तरह मुझ से फरमाया, "पण्डित जी, सजा का मंशा क्या है ?"—(बडी अच्छी गुफ्तगू करने वाले थे) मैंने कहा—सजा का मंशा यह है कि जो काम हम ने गलत किया है फिर न करें, दुबारा मौका दिया जाये हमें करने का। यह नहीं कि दुबारा मौका न दिया जाये तो वह सजा नहीं है। वह तो बदला है। ऐसा न होना चाहिए। लेकिन कुरान में तो ऐसी चीज मौजूद है। बोले—"वह क्या है ?" मैंने कहा—"देखिये साफ लिखा हुआ है 'कालु रब्बना गलबत् अलैना शिकवतुनाव कुन्ना कौमज्ज्वाल्लीन् रब्बना अख्रिज्नामिनहा फइन्उदना फइन्ना ज्वालिमून्' लोग पूछते हैं खुदा से कि ऐ रब हमारी बदबख्ती ने गल्बा किया··· और हमारे रब हमें दोजख से निकाल ले अगर हम दुबारा करे तो हमारा कुसूर। कितनी सीधी बात है कि ऐ रब हमारी बदबख्ती ने हम पर गलबा किया है कि इस वजह से हम ने पाप कर्म कर लिया। अब तू मेहरबानी करके हमें इस में से (दोजख से) निकाल दे। अगर हम हुक्मउदूली करें, दुबारा करें तो हमारा कुसूर। तो अल्लाह क्या कहता है 'कालख्सऊ फीहावलातुकल्लिमून्', इस में फिटकारे पड़े रहो और हम से बात मत करो। मैंने कहा—"यह तो आप के यहाँ है। और मेरे यहाँ यह चीज नही है। मेरे यहाँ तो खुदा आदमी को फल देता है और फल देकर यह कहता है कि जो तू पवित्र हो गया है अब फिर शुभ कर्म कर।" तो फिर अब मुझ से पूछने लगे कि "पण्डित जी, सजा की गरज तो यही है कि हम गुनाह दुबारा न करे।" मैंने कहा कि "जी हाँ।" तो मौलाना बोले कि "खुदा कादिर मुतलक होने से, ज्ञानी होने से दिल के हाल को जानता है कि यह शख्स दुबारा पाप नही करेगा। तो मानो ऐसा शख्स है जिस ने सच्ची तौबा की है और दुबारा नही करेगा।" मुझ से उन्होंने कहा कि "खुदा सर्वज्ञ है, सब-कुछ जानता है, कि अमुक आदमी ने सच्ची तौबा की है वह आगे नहीं करेगा क्योंकि वह दिल के हाल से वाकिफ है तो सजा का मंशा पूरा हो गया—आगे पाप न करे जिसे पहले कर चुका है—तो यह चीज खुदा जानता है फिर तो सजा न होनी चाहिए और तौबा कुबूल हो जानी चाहिए। फिर क्यों कहते हैं कि कर्मों को भोगना पडेगा ?"

मैंने कहा—"आप ने उस का सिर्फ एक जुज लिया है। दूसरे जुज की तरफ खयाल नहीं किया।" "क्या दूसरा भी है ?" फर्ज कीजिए किसी शख्स ने किसी जगह आग लगा दी कि जिस से बहुत-से छोटे-छोटे बच्चे वगैरह, गाय, भैंस, भेड, बकरी आदि जल गये। अब फिर उसके दिल में खयाल पैदा हुआ कि हाँ हकीकत में मैंने अच्छा काम नहीं किया। मैंने किसी दुश्मनी की वजह से यह काम किया था लेकिन इसके परिणाम को देखकर मुझे

भी बुरा लगा है। इस वास्ते वह खुदा से दुआ कर रहा है कि ऐ खुदा ! तू मुझे मुआफ कर, मेरे से गलती हो गई है, मैं दुबारा ऐसा नहीं करूंगा। तो खुदा क्या कहता है, ठीक है तू आगे नहीं करेगा तो मैं आगे तुझे सजा नहीं दूंगा। लेकिन अब क्या हो रहा है ? अब यह जरूर हो रहा है कि जिन का तू ने नुकसान किया है तुझ को दुनिया में आना होगा और दुनिया में आकर उस नुकसान को Make good (मेक गुड) करना होगा। पूरा करना होगा। तू ने जो दुनिया का नुकसान किया है उसे पूरा करना पडेगा, जरूर भोगना पड़ेगा। यह जो मैंने शौकतअली साहब से कहा तो जरा उन की गर्दन नीची हो गई। मैंने कहा, "बताइये, यह नुकसान हुआ है कि नहीं ?" एक आदमी होली के दिन अपने हाथों में कालौस लगाकर किसी के पीछे भागता है और उसका मुंह काला करना चाहता है, वह उसके पीछे भागा लेकिन वह हाथ न आ सका तो उसका हाथ तो काला हो ही गया लेकिन अगर वहां लगा पाता तो उसका मुंह भी काला हो जाता। तो दो जगह असर हुआ कि नहीं ? इसी तरह दो जगह हैं इस चीज को याद रखिये कि जिस आदमी ने पाप-कर्म किया है, पाप करने से आन्तरिक तौर से उसका हृदय जो काला हुआ है और दूसरों के लिए उसने जो उल्टा सोचा है या नुकसान किया है उस नुकसान का फल भी उसको भोगना पडेगा। इसीलिए कहा जाता है 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृत गमय'। यह परमात्मा से इसीलिए प्रार्थना की गई है कि आदमी कभी गलत रास्ते की तरफ न चला जाये। इसलिए यह जितने भी गलत अकीदे हैं जब हमारे साथ मिलाये गये तो लोगों ने उनमें तब्दीली पैदा कर ली।

मैं जरा-सा हाल आप को हैदराबाद का सुना दूं कि वहां क्या हुआ था। जिस वक्त मैं वहां गया तो मेरा व्याख्यान तनासुख पर हो रहा था—एक चीज बाकी रह गई। वह बताकर फिर हैदराबाद का हाल सुनाऊँगा और फिर अपने वक्तमुअय्यन में समाप्त कर दूंगा।

पिलखुवे में शास्त्रार्थ हो रहा था। यहीं के (दिल्ली के) एक मौलवी थे ! वहां शास्त्रार्थ के लिए गये थे। नौजवान ही थे, मेरे सामने लडके ही थे। वहां शास्त्रार्थ के लिए गए हुए थे। मजमा तैयार था। दावत दी गई थी। ऐसी सूरत थी जैसी यहां हो रही है। मैं जब वहां पहुंचा तो उन्होंने कहा—"पण्डित जी, वक्त हो गया है आप शुरू कीजिए।" मैंने कहा—"बहुत अच्छा।"

मैंने इस तरह कहना शुरू किया कि, "इतने बड़े मजमे में क्या कोई शख्स ऐसा बहादुर है जो अपनी जबान से यह कह दे कि मेरी बीवी मुझ से पैदा हुई है ?" किसी ने जवाब नहीं दिया तो मैंने कहा कि, 'मैं आदम-अलै-सलाम की तारीफ किए बगैर नहीं रहता हूं कि वह यह कहते हैं कि मेरी बीवी मुझ से पैदा हुई है। कहिए क्या कहते हैं आप ?" अब मौलाना साहब और··· मैंने कुर्आन की एक आयत पढ दी कि 'खलका मिनहा जौजहा' उससे बीवी को पैदा किया। तो उन्होंने तब्दीली की और बडी अच्छी तब्दीली की। मैं बहुत खुश हुआ। मैंने उनकी तारीफ की। कहने लगे कि "मिनहा की जमीर इसलिए है कि उसकी जाति में से बनाई गई। मनुष्य जिस जाति का है उसी की जाति की उसकी बीवी को बनाया, उसके अन्दर से पैदा नहीं किया।" मैंने कहा, "किताबों में तो यही लिखा है।" "बेशक लिखा जरूर है। लेकिन हमारा यह खयाल है जो आपके सामने पेश कर रहे हैं।" मैंने कहा, "इन लोगों को पहले तो काफिर कहा करते थे जो ऐसा मानते थे। आप तो एक आदम और एक हौवा की पैदाइश मानते हैं न ?" 'नहीं पण्डित जी, बहुत-से आदम और बहुत-सी हौवाएँ पैदा हुई थीं। एक आदम और एक हौवा नहीं हुई थी। यदि आप एक मानें तो ऐतराज पैदा होता

है।" मैंने कहा, "एक अब्दुल हकीम खाँ नाम के साहब हुए हैं पटियाले में। वे हकीम थे। इन्होंने कुर्आन का तर्जुमा अंग्रेजी मे किया था। उन्होंने लिखा है कि यह कानून कुदरत के बखिलाफ है कि आदमी (मर्द) के पेट से औरत पैदा हो। कुर्आन के अल्फाज हैं 'खलका मिनहा जौजहा।' इससे इसके जोड़े को पैदा किया, जौजा के माने जोड़े के हैं। इसलिए आदमी के लिए जोजा औरत है। और औरत के लिए जौजा मर्द है। इसलिए यह जोड़े के लिए आया हुआ है कोई बात नहीं। आदम से हौवा पैदा नहीं हुई बल्कि हौवा से आदम पैदा हुआ। ठीक है, मैंने कहा कि एक बात तो आप ने साफ कर दी कि आदम से हौवा पैदा नहीं हुई और वह (आदम को बेटी) नहीं हुई, लेकिन हौवा से आदम के पैदा होने पर माँ-बेटे का सम्बन्ध बना रहा। यह तो आप ने कर दिया है। लेकिन मेरा ऐतराज एक अभी बाकी है। आप की तावील से ऐतराज तो कायम रहा चाहे उस की सूरत तब्दील हो गई", तो मौलाना कहने लगे, 'पण्डित जी, हम यह मानते हैं।" मैंने कहा, "जिस ने पहले यह माना था उसे आप काफिर कहते थे लेकिन आज मंजूर कर रहे हैं कि आदम बहुत हुए और हौवाएँ भी बहुत हुईं और इस तरह पर जो पैदा हुई उन्हीं के नौ की हुईं, उन्हीं की जाति की हुईं, उन्हीं की Species की हुईं। उन से पैदा नहीं हुईं। लोग तो यह कहते चले आये हैं कि आदम की एक पसली से निकालकर हौवा तैयार की थी। अभी तक तो यही अकीदा आ रहा है। लेकिन यह तब्दीली हमारे मुआफिक है, हम इसकी तारीफ करते हैं। आप इस पर कायम रहें।" लोगों ने जहाँ भी यह चीज सुनी अचम्भा किया, ताज्जुब किया। मैंने कहा, "यदि कोई शक हो तो दिल्ली में मौलवी साहब से दर्यापन कर लीजिएगा कि उन्होंने यह जवाब दिया था कि नहीं।" ये परिवर्तन क्यों हुए? ये इसलिए हुए कि वैदिक सिद्धान्त इतने शुद्ध, पवित्र व इतने बुद्धिपूर्वक हैं कि जरूर मानने ही पड़ते हैं इसमें कोई शक नहीं है।

हैदराबाद की बात क्या है? मैं हैदराबाद में व्याख्यान तनासुख पर दे रहा था। किसी शख्स ने वहाँ Prime Minister कृष्ण प्रसाद जी के पास जाकर मेरी तारीफ कर दी। जब तारीफ की कि वे तनासुख कुर्आन से साबित करते हैं तो वे कहने लगे कि मियाँ कुर्आन तो मैंने पढ़ी है लेकिन हमें तो कहीं भी ऐसा मालूम नहीं दिया कि वह कौन-सी आयत है। इसलिए उन्हें जरा बुलाइये और हम से मिलाइये। वे बड़े सादा मिजाज के आदमी थे। दिन मुकर्रर हो गया। वे कार लेकर आ गये। जब वहाँ पहुंचे तो उनका एडोकाँग खड़ा ही था। इजाजत मिलने पर हम लोग अन्दर दाखिल हुए। क्या देखा कि एक हुक्का रखा था, दूर रखा था। उसमें नै लगी हुई थी, वे हुक्का पी रहे थे। जैसे ही मैं वहाँ पहुंचा वे खड़े हो गये। हाथ मिलाया। कुर्सी पर बैठाया, कहा, "बैठिये।" कहने लगे कि मैंने आपकी तारीफ सुनी है। मेरे एक दोस्त मुझ से मिला करते हैं, उन्होंने मुझ से कहा था कि कल रात लेक्चर हुआ था, कुर्आन की आयतों से आप ने तनासुख साबित किया था तो मैं मालूम करना चाहता हूं कि वह कौन-सी आयत है? मैंने आयत सुनानी प्रारम्भ की और उनका अर्थ करना शुरू किया। तो क्या बोलते हैं, "जजाक अल्लाह, मर्हबा, जजाक अल्लाह।" ऐसा कहते रहे। तारीफ करते रहे, अल्लाह आप को अच्छा फल दे इत्यादि। कहने लगे, "मैंने पढ़ा जरूर लेकिन मुझे यह खयाल ही नहीं आया कि इस आयत से तनासुख साबित होता है। लेकिन जनाब के फरमाने से वह खयाल बदल गया।" मैंने कहा, "जनाब, हमें तो टोह रहती है, ढूंढ रहती है। इसलिए हम ने इसमें से निकाल लिया। आप को इस का क्या खयाल?" कि "हाँ, बेशक यही बात हो सकती है।"

आगे मैंने कहा कि 'जनाब से एक बात पूछना चाहता हूं और माफी चाहता हूं", कि "नहीं-नहीं,

आप खुले दिल से पूछें", (मैंने पूछा) कि "क्या कोई ऐसा जमाना भी था जब आप की तबीयत इस्लाम की तरफ रुजू कर रही थी ?" कि "हाँ, लेकिन अब नहीं है।" मैंने कहा, "क्या वजह थी जिस की वजह से आप इस्लाम की तरफ रुजू कर रहे थे ?" कहने लगे, "मैंने देखा कि वहाँ हिन्दू जिनको मैं जानता हूं, जो मेरी सल्तनत में हैं सिवाय पानी, पत्थर और दरख्त के और कुछ नहीं पूजते। कोई दरख्त पूज रहा है, कोई पानी डाल रहा है। जब मैंने यह देखा कि इनका खुदा यह है तो मुझे नफरत हो गई। कुर्आन में मैंने पढा है कि 'कुलहु-वल्लाहु अद् अल्लाहुद् समद्।' कह दो कि वह अल्लाह एक है, बेनियाज है। देखिये इस आयत में तो एक वाहिद खुदा का जिक्र किया गया है कि जिस खुदा से यह दुनिया पैदा हुई है। ऐसा बयान किया गया है। कितना अच्छा बयान किया है! आप जरा सोचिये। इन सब बातो को देख कर मेरी जरा तबीयत इस्लाम की तरफ रुजू हुई थी मगर अब बिल्कुल नही है।" तो मैंने कहा कि जगतप्रसाद जो इतने बडे पण्डित हैं, आप के यहां मौजूद हैं और आप को उन्होंने नहीं समझाया ? मेरे वेद में तो इस से बहुत ऊँची चीज लिखी हुई है—इसके सुबूत में वेद का मन्त्र पेश करता हू—

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते,
न पचमो न षष्ठ सप्तमो नाप्युच्यते।
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते,
तमिद निगत सह स एष एक एकवृदेक एव।

मैंने कहा, 'न वह दो है, न तीन है, न चौथा है, न पाँचवाँ है, न छठा है, न सातवाँ कहा जाता है। न आठवाँ है, न नवाँ है, न दसवाँ कहलाता है और सबके ऊपर गालिब है वह एक है (गिनती मे), वह एक है (लासानी है), वह एक है, बसीत है अर्थात् एकरस है उसमें किसी गैर चीज का मेल नही है।" "यह वेद की बात है ?" "जी हाँ, यह वेद की बात है। कुर्आन का बयान इस दर्जे का नही है", तो बोले, "उसमें क्या नुक्स है ? कुर्आन में उसे कैसा बयान किया ?" मैंने कहा, उस में नुक्स, कहा है कि 'वलम्यकुल्लहू कुफुवन् अहद' उस का सानी कोई नहीं है तो कोई उससे छोटा या बडा हो यह मुमकिन है कि नहीं (Logically Speaking) ? तो मुस्कराकर कहने लगे कि "हाँ, यह बात तो निकलती है। तो छोटा-बडा कौन हो सकता है ?" मैंने कहा कि छोटा तो जीवात्मा है ही। आगे को बात मुबाहिसे की है, हम कह दिया करते हैं कि खुदा से बडा शैतान है जो उस का कहना नही मानता। हमेशा उसके कहने का उल्टा करता है। लेकिन मेरे यहाँ है 'न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते' कि न कोई उसके बराबर है और न कोई उससे अधिक है। देखिये कितना मुकम्मल कलाम है! यहाँ शक की जरा भी गुजाइश नहीं है।

इस प्रकार मैंने, वेद के सच्चे व बुद्धिपूर्वक सिद्धान्तों का इस्लाम पर जो प्रभाव पडा है उसकी कुछ बाते आपकी सेवा मे इस थोडे से समय में अर्ज की हैं। इनको अगर आप समझ गये हैं तो समझ लीजिये कि ये सिद्धान्त सबके लिए अनुकरणीय व मानने योग्य हैं।

वेदमाता

ले०—स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

वेद ही सत्य धर्म है। वेद को अपनाओ। वेद ही परम गुरु है।

वेद की दिव्य शिक्षाओं के बिना मानव और मानवता का विकास निरुद्ध ही रहेगा।

संसार का सारा मानवो साहित्य मानव के अज्ञानान्धकार को मिटाने में उसी प्रकार विफल सिद्ध होगा जिस प्रकार रात्रि के समय भू के अन्धकार को मिटाने में दोप, बल्ब आदि नित्य विफल सिद्ध होते रहते हैं।

वेदोदय होने पर ही मानवसमाज का तमिस्र दूर होगा। वेद की रश्मियों के प्रसरित होने पर ही मानव को सब कुछ ठीक ठीक दिखाई देगा। तब ही वह ठीक ठीक कार्य करेगा और तब ही मानव इस वसुधा पर सुख-शान्ति का आस्वादन करेगा।

वेद सोम है जिसकी साचार व्याप्ति से पृथ्वी की सम्पूर्ण मानवप्रजा का दिव्यीकरण होगा।

वेदाध्ययन और वेदाचार से मनुष्य आर्य (मिताचारी) बनता है। वेदवाणी और देववाणी के प्रचार से मनुष्यमात्र को आर्य और इस लोक को आर्य लोक बनाया जा सकता है।

पूर्णात् पूर्णम् उद् अचति,। अ० १०।८।२६

पूर्ण से पूर्ण उदय होता है। पूर्ण को कृति पूर्ण ही हुआ करती है। सृष्टि पूर्ण है, वेद पूर्ण हैं क्योंकि दोनों पूर्णकृत हैं, दोनों पूर्ण की, पूर्ण ब्रह्म की कृति हैं।

आत्मानन्द के लिए ब्रह्मज्ञान की तथा शरीर-सुख के लिए विज्ञान (सृष्टिविद्या, पदार्थविद्या) की आवश्यकता है। ज्ञान और विज्ञान, दोनों कर्म-साध्य हैं। ज्ञान, विज्ञान और कर्म द्वारा ही सुख और आनन्द की सिद्धि होती है। वेद में ज्ञान, विज्ञान और कर्म का विशद विवरण है। वेद में ये तीनों विद्याएँ हैं। इसीलिए वेद को त्रयी कहते हैं।

संसार कर्तव्यमय है। वैदिक परिभाषा में कर्तव्य को धर्म कहते हैं। वेद में व्यक्तिधर्म है, परिवारधर्म है, राष्ट्रधर्म है, भूधर्म (अन्तरराष्ट्र धर्म) है, विश्वधर्म है। वेद में पांचों धर्मों का प्रतिपादन है। वेद पचधर्मा है।

वेद का पढ़ना-पढाना और सुनना-सुनाना प्रत्येक स्त्री पुरुष का परम धर्म है।

: २ :

वेद की पद्धति प्रार्थनात्मक है, आध्यात्मिक है। वेद में असंख्य शिक्षाओं का प्रकाश प्रार्थना के रूप मे किया गया है।

वेद की पद्धति सजीव पद्धति है। लोक में जिन्हें जड़ पदार्थ कहते हैं, वेद की दृष्टि में वे सब सजीव हैं। वेद का प्रत्येक शब्द सजीवता से संपूर है और

वह अपने पढ़ने वालों में सजीवता का संचार करता है।

जिस में छानकर किसी वस्तु को शोधा जाता है उस चलनी अथवा छाननी को पवित्र कहते हैं। वेद की सहस्रों ऋचायें ईश्वरीय सज्ञान का वह सहस्रधार पवित्र हैं जिसमें छानकर देव जन सन्तत अपने-अपने आत्मा को पवित्र करते रहते हैं। केवल प्रार्थना से नहीं, प्रार्थना के अनुरूप साधना से वेद-माता हमारे जीवनों को पवित्र करेगी। ऋचाओं की सहस्रधार शिक्षाओं और साधनाओं की चलनी में छनकर हम पवित्र हो जाये।

वेद का प्रत्येक मन्त्र शं-भुव (सुख, शान्ति, स्वस्ति और आनन्द का देने वाला) है। वेद का प्रत्येक मन्त्र अनेहस् (निर्दोष, इन्नोसेण्ट) है। शं-भुव=कल्याणकारी। अनेहस्=भूल, दोष, पाप, त्रुटि को दूर करने वाला है। वेद की शिक्षाएँ कल्याणकारिणी हैं। वेद की प्रेरणाएँ मानव को निर्मूल, निर्दोष, निष्पाप, त्रुटिरहित—अन्यून—पूर्ण बनाती हैं।

वेदवाणी सुमन्मा है। मनपूर्वक अनुशीलन की जाने पर सुन्दर-सुशोभन सज्ञानों की देने वाली सिद्ध होती है।

वेदवाणी वस्वी है। वेदनिहित ज्ञान-विज्ञानो के आश्रय से लौकिक और पारलौकिक असख्य वस्तुओं-ऐश्वर्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

वेदवाणी रन्ती है। वेदानुसार आचरण करने से विश्व में रमणीयता की स्थापना होती है।

वेदवाणी सूनरी है। उसमें जो कुछ है सब सु और सत्य वाणी है।

ऐसी शोभना वाणी का अनुशीलन मानव-सन्ततियां वंशानुवंश सदैव करती रहें।

वेदों का वेदत्व साम की उपासनासाध्य समता में है। विषमता के निराकरण का एकमात्र उपाय सामोपासनाजन्य समता ही है। अतः परमात्मा को 'वेदों में सामवेद' कहा गया है।

अग्नि, विद्युत्, सूर्य प्रकाश के प्रतिरूप हैं। जहां जो ज्योति है वह सब अग्नि, विद्युत् वा सूर्य की है। ये ज्योति से भिन्न नही हैं, ज्योति इन से भिन्न नही है। जहां जो ज्ञान-विज्ञान की ज्योति है वह सब वेदाग्नि, वेदविद्युत्, वेदसूर्य की है। वेद ज्ञान-ज्योति अथवा विज्ञान-ज्योत्स्ना वेद से भिन्न नही है।

वेदों में असंख्य सत्यविद्याएँ भरी पडी हैं। किन्तु वास्तव में तो वेद का लक्ष्य ब्रह्म की प्राप्ति और मोक्ष की उपलब्धि ही है।

वेद निस्सन्देह सत्यविद्याओ के, दिव्य ज्ञानों के, सार्वभौम शिक्षाओं के, पूत प्रेरणाओ के आदिस्रोत हैं। वेदों में सशय करना साधनाविहीनता का द्योतक है।

वेद सत्यविद्याओं की ज्ञान-विज्ञानपूर्ण पुस्तके हैं और जिन ऋषियों पर वेदो का ईश्वरीय ज्ञान अवतरित (नाजिल) हुआ था उनके जीवन नितान्त निर्मल तथा सदिव्य थे।

वेद धर्म नहीं है। वेद तो सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद में धर्म नही है, सत्य है। वेद का पढना-पढाना धर्म नहीं है, एक कृत्य है।

मनुष्य का धर्म न वेद है न जेन्द अवेस्ता, न उपनिषद् है न गीता, न धम्मपद है न बाइबिल, न कुरआन है न पुराण। कोई भी पुस्तक मनुष्य का धर्म नहीं हो सकती। पुस्तक केवल सत्यविद्याओं की पुस्तक हो सकती है।

वेद में धर्म नही है, सत्य है, निर्भ्रम और निर्भ्रान्त, दिव्य सत्य। किसी भी ग्रन्थ मे सत्य हो सकता है, धर्म नही।

सत्य जब तक पढने-पढाने और सुनने-सुनाने का विषय रहता है तब तक वह सत्य है। सत्य जब जीवन में धारण किया जाता है, आचरण मे लाया जाता है तब वह धर्म बनता है। तभी तो कहा है, सत्यं वद, धर्मं चर, (सत्य बोल, धर्माचरण कर)।

पठित और उदित सत्य जब आचरण में आता है तब ही वह धर्म होता है। उदित सत्य जब जीवन मे धारित होता है तब ही वह धर्म कहाता है। धारित सत्य धर्म हैं। अधारित सत्य अधर्म है।

वेद में धर्म नहीं है, ज्ञान है, निर्भ्रान्त निर्भ्रम दिव्य ज्ञान। वेद का अर्थ धर्म नही है, दिव्य ज्ञान। अन्य ग्रंथों में भी ज्ञान हो सकता है, धर्म नहीं।

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद में सब सत्यविद्याओं का मूल है। वेद में सम्प्रदायवाद नहीं है, वेद में मानवधर्म है। वेद पन्थ-ग्रन्थ नहीं है, वेद तो मानव-धर्मशास्त्र है।

वेद दैवी ज्ञान है और सृष्टि के आदि में दैवी भाषा (देव-भाषा, संस्कृत) मे ही वेदज्ञान का अवतरण हुआ करता है। वेद अपौरुषेय हैं, वेद की भाषा भी अपौरुषेय है। वेदज्ञान जिस भाषा में है वह भाषा मानवनिर्मित नहीं है, वह तो प्रकृति की तरह नैसर्गिक है।

वेद देव का काव्य है। वेद स्वयं कहता है, 'पश्य देवस्य काव्यम्' (मनुष्य, देव के इस काव्य को देख)। कैसा है काव्य ? वेद स्वयं बताता है, 'न ममार, न जीर्यति' (जो न मरा करता है, न जीर्ण होता है)। वेद अमृत है, अमर है। अमर देव की प्रत्येक कृति अमर है।

सृष्टि प्रकृत है। देव के मिष-मात्र से, सत् और ऋत, परमाणु और प्राकृत क्रम द्वारा सृष्टिप्रवाह प्रवाहित हो रहा है। सृष्टि पूर्ण है क्योंकि वह पूर्ण की नैसर्गिक कृति है। सृष्टि देवकृत है, दैवी है। वेद, सृष्टि का, दैवी कृति का दैवी ज्ञान है।

स्वयं 'वेद' शब्द इस तथ्य का द्योतक है कि वेद मानव-धर्मशास्त्र है, वर्ग-विशेष का सम्प्रदाय-ग्रन्थ नहीं। वेद मे सब कुछ है और वेद का सर्वस्व मनुष्यमात्र के लिए है। चारों वेदों में एक मन्त्र तो क्या एक शब्द भी ऐसा न मिलेगा जिसमें वर्ग, देश या भूमि का सकोच अथवा व्यवधान है।

वेद की शिक्षाएँ किसी देश-विशेष अथवा वर्ग-विशेष के लिए नहीं हैं। उसकी शिक्षाएँ सभी देशों, सभी राष्ट्रों और सभी वर्गों के लिए समान रूप से उपदिष्ट हैं। वेद की शिक्षाएँ सार्वभौम हैं। इसी-लिए चारों वेदों में कहीं भी किसी विशेष देश, राष्ट्र या वर्ग का नामोल्लेख नही किया गया है।

वेद न केवल सत्यविद्याओं का पुस्तक है अपितु समस्त ज्ञानों, अखिल विज्ञानों तथा सकल दिव्यताओं का अनादि अनन्त स्रोत है। ज्ञान, धर्म, साधना और कर्म की जितनी सरिताएँ बह रही हैं वे सब उस ही एक अनादि अनन्त स्रोत की धारायें हैं।

स्रोत से सम्बन्धविच्छेद हो जाने के कारण वे सब धारायें सूखती चली जा रही हैं। उन सबका पुन: वेद के साथ सम्बन्धस्थापन कीजिए। और उसका एक ही उपाय है, प्रतिदिन वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना अपना परम धर्म समझिए। आर्यों का यह परम कर्तव्य है कि रोज वेद पढ़े-पढ़ायें, वेद सुनें-सुनाये और वेदवित् होकर सभी ग्रन्थों को वेद की तुला पर तोले।

जिसने चारों वेदों का अध्ययन तथा अनुशीलन किया है वह ही जान सकता है कि किस ग्रन्थ में क्या-क्या वैदिक और अवैदिक हैं।

मनु का आशय यह कदापि नहीं है कि वेदेतर ग्रन्थों का अध्ययन व अनुशीलन किया ही न जाए। उनका आशय केवल यह है कि वेदों का अध्ययन करके और वेदों का अध्ययन करते हुए ही अन्यत्र

श्रम किया जाए और अन्य ग्रंथों का अनुशीलन किया जाए क्योंकि वेदाध्ययन के बिना यह नहीं जाना जा सकता है कि किस-किस ग्रन्थ में क्या-क्या वेदानुकूल है और क्या क्या वेदविरुद्ध है। मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक वेदानुयायी मनु की इस व्यवस्था पर विचार और व्यवहार करे।

हम आर्य वेद को ईश्वरोय ज्ञान मानते है। हमारा विश्वास है कि सृष्टि के आदि में आदि ऋषियों के पवित्र अन्त.करणों में वेद ज्ञान का अवतरण हुआ करता है। आर्येतर निष्पक्ष तथा बहुश्रुत विद्वानों ने भी इस बात को स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है कि वेद ससार मे प्राचीनतम ग्रथ हैं और सर्वश्रेष्ठ विद्याभण्डार हैं। उनकी यह भी मान्यता है कि आदर्श, धर्म, सस्कृति, सभ्यता तथा सदाचार का पाठ भी ससार को वेदानुयायी आर्यों ने ही पढाया है।

हमने लगभग सभी तथाकथित धर्मग्रथों का वेदों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया है। अत: स्वानुभव के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि उन तथाकथित धर्मग्रंथों मे जो कुछ सत्य और शिव है वह सब वेदों का है और जो कुछ वेद से भिन्न है वह सब भ्रम, भ्रांति और अनाचार का कारण है।

वेदों की महिमा वेदों के वैदिक अर्थों से प्रकाशित होगी, रूढ और पण्डिताऊ अर्थों से नही।

और वेदों का वैदिक अर्थ प्रकाशित होगा अन्तस्साधना द्वारा वेदमय होकर वेदो में पैठने से।

वेदों का वैदिक अर्थ प्रकाशित होने पर ही जैन्द अवेस्ता, उपनिषद् गीता, जंन साहित्य, धम्मपद, पुराण, बाइबिल, कुरआन, आदि ग्रन्थों के सही अर्थ निर्धारित किए जा सकेंगे क्योंकि वेद समस्त धर्मों के आदिस्रोत हैं।

साधनाशील विद्वानों की सम्पूर्ण शक्ति वेदार्थ के प्रकाशन में लगनी चाहिए। वेदों के सही अर्थों के समझे जाने पर अन्य सब कुछ ठीक-ठाक समझा जा सकेगा।

जब तक वेद नहीं पढोगे तब तक 'बाइबिल' के सच्चे अर्थ और रहस्य जान नहीं सकोगे। आदम, हव्वा, अदन की बाडी, फरिश्ता, शैतान, आदि शब्द वैदिक हैं। 'आदम' शब्द 'आदिम' का रूपान्तर है। शिशु का जब जन्म होता है तो आदिमावस्था में आज भी नंगा होता है और हर वस्तु मुह में दे कर खाना चाहता है। नारी नर की हव्य है, वह उसमें वीर्य की आहुति देता है, वह हव्य है। 'स्तेन' का अपभ्रंश 'शैतान' है। धर्म धर्म की परिभाषा है पशु को मानव बनाना, मनुष्यमात्र को अपना परिवार समझना, सारी पृथ्वी को एक अभिन्न घर समझना, मनुष्यमात्र को नमना, मनुष्यमात्र और प्राणिमात्र की सुसेवा करना, मनुष्य समाज को सदाचारी बनाना। धर्म की लेबलबाजी ने मानव धर्म को ध्वस्त कर दिया है। मनुष्य का धर्म केवल मनुष्यता है, मानव का धर्म केवल मानवता है, इसान का धर्म इसानियत के के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता।

वेद सर्वविषय हैं। ऐसा कोई विषय नहीं है जो बीज-रूप से वेदों में न हो। जो कुछ है और हो सकता है वह सब वेद में है। वेद सब सत्य विद्याओं के पुस्तक हैं। वे समस्त ज्ञानों और विज्ञानों के, वे सब भाषाओं और धर्मों के, वे सकल भावों और भावनाओं के, अखिल साधों और साधनाओं के, वे सम्पूर्ण प्रवृत्तियों और धारणाओं के आदिस्रोत हैं। वेद के विषय अनन्त हैं, 'अन्-अन्ता वै वेदा:'।

वेद फिलोसोफी नही है, दर्शन है, क्योंकि वह साक्षात्कर्मा और साक्षाद्द्रष्टा ऋषियों की उपलब्धि है।

वेद की साक्षात्कृति यह है कि मोक्षावस्था में भी आत्मा दिव्य (अभौतिक) शरीर से युक्त हुआ

निर्बाध दिव्य (ब्राह्म) कर्म करता है।

ब्रह्म की प्राप्ति की संसाधना करने वाले की वाणियां—स्तुतियां—प्रार्थनाएँ जिस प्रकार ब्रह्म को लक्ष्य करके उच्चारी जाती हैं उसी प्रकार वेद की वाणियां (ऋचायें) ब्रह्म के प्रति ही उच्चारी जाती हैं, ब्रह्म की महिमा का ही प्रकाशन कर रही हैं। उच्चरित होने पर प्रत्येक ऋचा ब्रह्माग्नि की ओर अनुधावन करती है।

ब्रह्म समष्टि सृष्टि के भीतर व्यापा हुआ है। उसी की चेतनामय प्रेरणा से प्रभु का स्मरण, ज्ञान और संशय-रहित ईशविश्वास की प्राप्ति होती है।

सब वेदों का लक्ष्य ब्रह्मज्ञान और ब्रह्म की प्राप्ति ही है। ब्रह्म की प्राप्ति ही वेद का अन्त (लक्ष्य) है। ईश्वरीय ज्ञान होने से वेदवित् अथवा वेद का ज्ञाता स्वयं ब्रह्म ही है। इसीलिए वेदार्थ के लिए ब्राह्मी स्थिति आवश्यक है।

आत्मदर्शन अथवा ब्रह्मसाक्षात्कार के लिए उत्कट योगसाधना करनी पड़ती है। उसी प्रकार वेदार्थ के साक्षात्कार के लिए गहन सुदीर्घ साधना की आवश्यकता है।

मछलियां समुद्र के ऊपर तैरने से हाथ पड़ जाती हैं। मोती बटोरने के लिए सागर की गहनतम गहराई में जाना पडता है। संस्कृत भाषा तथा संस्कृत-व्याकरण से वेद का स्थूल अर्थ ही जाना जा सकता है। वेद के तत्त्व का दर्शन करने और वेद के यथार्थ आशय को समझने के लिए आत्मना गहनतम गहराइयों में जाना होगा।

जिसका जीवन जितना ऊचा होगा, वेद-महासागर में वह उतना ही गहरा जा सकेगा। नीचा जीवन वेद-महासागर में प्रविष्ट भी नहीं हो सकता, गहरा जाने की तो बात ही क्या !

अक्षर में, अक्षरसमूह में, शब्द में ऋचायें हैं, वेदमन्त्र हैं, चारों वेद हैं। ऋचायें, वेदमन्त्र, चारों वेद अक्षर में हैं, शब्दमय हैं, वाङ्मय हैं। अक्षर अक्षर मिलकर शब्द बनते हैं। अतः अक्षरों में शब्द हैं और शब्दों में अक्षर हैं। वेद अक्षर-मात्र हैं। वेद के अक्षरों से जिस तत्त्व का विवेचन और जिस वस्तु का वर्णन किया गया है, यदि वेद के पढ़ने वाले ने उस तत्त्व या वस्तु को नहीं पाया तो ऐसा वेदज्ञ व्यक्ति वेदाक्षरों का भारवाहक पशु है जो वेदाक्षरों का बोझा ढो रहा है।

वेद का लक्ष्य उस सत्ता (ब्रह्म) की प्राप्ति है जिसमें सब प्राकृत देव अधिष्ठित हैं। जो उसे नहीं जानता है वह वेद से क्या लाभ उठाएगा ? जिसने उसे नहीं जाना उसे वेदाध्ययन से कोई लाभ नहीं। वेद उसी के लिए है, वेद का पढ़ना उसी के लिए सार्थक है जो ब्रह्म को प्राप्त करता है, ब्रह्म का साक्षात्कार करता है।

वेद साधना का विषय है, पाण्डित्य का नहीं। वेद सम्पूर्ण जीवन चाहता है, जीवन का कुछ समय नहीं।

सौम्यता और क्षमता का जहां संयोग होता है वहीं ब्रह्म और वेद की संसाधना होती है। असौम्य और अक्षम इनकी साधना नही कर पाते हैं।

ब्रह्म और वेद ही कल्याणकर तथा सधारक हैं। ब्रह्मोपासना तथा वेदानुशीलन से ही आत्मा का कल्याण और जीवन का समर्याद संधारण होता है।

ब्रह्म और वेद, दोनों ही उपसर्पण करते हैं, सर्वतः उपप्रेरणा करते हैं, सभी पार्श्वों में निकटतः संप्रेरणा करते हैं।

वेदवाणी अथवा सृष्टि की रचना का सम्यक् ज्ञान सम्पादन करना है तो ब्रह्म का आश्रय लेना होगा, ब्राह्मी स्थिति प्राप्त करनी होगी क्योंकि वेद या सृष्टि ब्रह्म की रचना है। जो इस रहस्य को नहीं जानता वह वेद या सृष्टि के यथार्थ विज्ञान

को प्राप्त नहीं हो सकता।

वेदार्थ और वेदव्याख्या अन्त:साधना का विषय है भाषाविज्ञान और शब्दकोशों का नहीं। संस्कृत तथा व्याकरण के विद्वानों को मैं प्रेरणा करूंगा कि वेदों के रहस्यों को समझने और उनके यथार्थ तात्पर्यों को जानने के लिए वे आध्यात्मिक साधना भी करें।

ऋक् ज्ञानवेद है। यजु. यज्ञवेद है। साम उपासनावेद है। अथर्व विज्ञानवेद है। ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान (साक्षात्कार) वेदचतुष्टय के साध्य हैं। ज्ञान, कर्म और उपासना का लक्ष्य विज्ञान (साक्षात्कार) है। चतुर्वेदवित् वही है जिस ने ज्ञान, कर्म और उपासना द्वारा विज्ञान की प्राप्ति की है।

विज्ञानविहीन चतुर्वेदपठित व्यक्ति भारवाहक है जो चारों वेदों के शब्दार्थभार का बोझा ढोता है। ऐसे ही वेदपठितों को 'गीता' ने 'वेदवादरताः' (वेदवादी) कहा है। वेदवित् धन्य है, वेदवादी निरर्थक है।

चिन्तन और संकल्प, ये दो अटूट और अचूक साधन हैं लोक और परलोक की अखिल साधों के। इन्हीं के आश्रय से सकल भौतिक रहस्यों के उद्घाटन करके असंख्य विद्वानों के आविष्कार किए जाते हैं। इन्हीं के आश्रय से आत्मसाक्षात्कार तथा तथा ब्रह्मदर्शन किया जाता है। भौतिक तथा आत्मिक, दोनों प्रकार की सम्पदायें चिन्तन और संकल्प के आश्रय से ससिद्ध की जा सकती हैं। वेद मन्त्रों में निहित रहस्यों का पता भी इन्हीं अविषयों की समाहिति द्वारा लगाया जाता है।

: ३ :

वेद के एक-एक मन्त्र में विशालकाय ग्रन्थ की रचना की सामग्री निहित है।

वेद के एक-एक मन्त्र में, एक-एक मन्त्र की एक एक सूक्ति में एक-एक विशालकाय ग्रन्थ की रचना की सामग्री सन्निहित है।

जब से वेदों का आविर्भाव हुआ है तभी से वेदाभिमानी यह बताते रहे हैं कि वेद ईश्वरीय ज्ञान के भण्डार हैं। अब यह भी बताया जाना चाहिए कि वेद जीवनग्रन्थ हैं, मानव-धर्मशास्त्र हैं। मनुष्यमात्र को यह भी बताया जाना चाहिए कि वेदों के आश्रय से वह जीवन की उच्चतम ऊंचाइयों पर चढ़ सकता है तथा परम आनन्द और शाश्वत शान्ति प्राप्त कर सकता है। वेद वे चाबियां हैं जिन से भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक संज्ञान के सकल तालों को खोला जा सकता है।

वेद एक जीवनपोषक ग्रन्थ है, जीवनविनाशक ग्रन्थ नहीं। वेद में ज्ञान भी है और विज्ञान भी। पर उसमें वह विज्ञान नहीं है जो आज मानवजीवन के लिए एक अभिशाप बना हुआ है। वेद वह मानव-धर्मशास्त्र है जो मानवों को पृथ्वी पर मानवों की तरह रहना सिखाता है, जो मानवजीवन की समस्त समस्याओं का समाधान करता है। जिस विद्वान् ने ऋग्वेद के प्रथम सूक्त से विनाशक बम बनाने की शिक्षा का प्रतिपादन किया है उसने वेद की भारी कुसेवा की है। वेद तो पृथ्वी को शान्तिधाम बनाने की सुपावन शिक्षाओं से ओत-प्रोत है।

वेदों में गृहसाधना, वैवाहिक जीवन, सन्तति विज्ञान तथा गृहस्थाश्रम के विषय में अथाह सामग्री भरी पड़ी है।

वेद विश्व के सब पदार्थों का नाम-घर है। वेद में प्रयुक्त गंगा, यमुना आदि शब्दों से लौकिक गंगा, यमुना आदि नदियों के नाम रखे गये हैं, न कि लौकिक नदियों का वेद में वर्णन है। 'शन् नो देवी:' वेद के शब्द हैं और इनको लेकर कतिपय देवियों के नाम 'शन्नोदेवी' रखे गए हैं। इसी प्रकार वेद के असंख्य सार्थक शब्दों से संसार के असंख्य पदार्थों

तैथा वस्तुओं के नाम रख लिए गए हैं।

वेद ने धन को निन्दा नहीं की। न कहीं वेद ने धनोपार्जन का निषेध किया है। वेद तो धनैश्वर्यों का स्वामी बनने को कहता है। वेद का कहना है, मनुष्य धन कमाए, अवश्य कमाए किन्तु नमस्कार-पूर्वक; ऋत, सत्य, सदाचार, न्याय, धर्म के मार्ग से।

वेद 'सूर्य-ध्वज' का विधान करता है। श्रुति का प्रमाण ही परम प्रमाण है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। अतः वेद का आदेश ईश्वर का आदेश है। चारों वेदों का पारायण कर जाइए, वेद में सिवाय सूर्य-ध्वज के और किसी ध्वज का विधान नहीं है।

वेद संसार के पुस्तकालय में सरलतम ग्रन्थ हैं, सर्व मानवों की मां की बोली है। उसे बहुत आसानी से संसार में व्यापा जा सकता है।

मैं साधिकार कहता हू कि वेद सत्य और सरल ग्रन्थ हैं और उनका बड़ी सरलता से अभ्यास किया जा सकता है। सरलतम होने के कारण ही वेद जन-जन की वस्तु थे और मैं पुनः उन्हें जन-जन की वस्तु बनाकर दिखाऊँगा।

आधुनिक विद्वान् वेदों को संसार की प्राचीन-तम पुस्तक बताते हैं। मेरी साक्षात्कृति यह है कि वेद शाश्वत हैं। सत्य शाश्वत है और वेद सत्य-विद्याओं के पुस्तक हैं।

मैं कहता हूं कि वेद संसार की सरलतम पुस्तक है। किसी भी सुपठित व्यक्ति को, जो अच्छी हिन्दी और सामान्य संस्कृत जानता हो, एक वर्ष में वेदों का अध्ययन कराया जा सकता है।

सत्य सरल और स्पष्ट होता है और असत्य होता है जटिल और क्लिष्ट।

वेदों में सत्य है। इसीलिए वेदों में जो कुछ है वह सब सरल और स्पष्ट है।

वेद जटिल और क्लिष्ट तो इसलिए प्रतीत होते हैं कि वे एक साधनाविहीन पाण्डित्य का विषय बना लिए गए हैं।

पाण्डित्य ने वेदों को इतना संकुचित कर दिया है कि आज अरबों मानवों में से एक सहस्र मानव भी उन्हें समझ नहीं पा रहे हैं।

पाण्डित्य ने वेदों को इतना क्लिष्ट सा कर दिया है कि जनसाधारण तो क्या, पण्डित भी उसे पकड़ते हुए घबराते हैं।

पाण्डित्य ने वेदों में वे ग्रंथियां लगा दी हैं जिन्हें खोलने में स्वयं पाण्डित्य भी झक मार रहा है।

योग, ध्यान, चिन्तन और मनन द्वारा वेद इतने सरल और स्पष्ट हो जायगे कि उन्हें हर कोई सहजतया पढ और समझ सकेगा। ऐसा होने पर ही वेदों की सार्वभौमिकता का दावा सही सिद्ध होगा।

सत्य सरल होता है, असत्य जटिल। वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है। अतएव वह सरलतम होना चाहिए। यदि वेद जटिल हैं तो वह सत्यविद्याओं का पुस्तक नहीं हो सकता। सत्य और जटिलता का कोई सम्बन्ध नहीं।

वास्तव में वेद सत्यसर्वस्व हैं और हैं इसीलिए अतिशय सरल। वेद के समान सरल संसार में अन्य कुछ नहीं है। वेद जो आज जटिल सा प्रतीत होता है उसका कारण यह है कि सहस्राब्दियों से वेद के विद्वान् वेद को जटिल बनाने में ही वेद का तथा अपना गौरव समझते चले आ रहे हैं। यह क्रम अब बदलना चाहिए और वेद का ऐसा सरली-करण किया जाना चाहिए कि वेद जन-जन की सहज स्वाभाविक वस्तु बन जाए।

'मननात् मन्त्र' मनन से मन्त्र। मनन करने की वस्तु होने से वेद के छन्द मन्त्र कहलाते हैं।

मनन करने से वैदिक पदों का रहस्य खुलता है। इसी से वे मन्त्र कहलाते हैं। वेद के सभी मन्त्रों का शब्दार्थ इतना सहज और सरल है कि उसके लिए किसी विशेष परिश्रम की अपेक्षा नहीं होती। हाँ, अभ्यास की अपेक्षा तो सहज और सरल कार्यों के लिए भी होती ही है।

वेद की वाणी नितान्त सरल और उस की शिक्षाएँ सर्वथा स्पष्ट हैं। सत्य सदा सरल और स्पष्ट होता है। असत्य सदा जटिल और क्लिष्ट होता है। सत्य और असत्य की यही पहचान है। जो जो सरल और स्पष्ट है वह वह सत्य है। जो जो जटिल और क्लिष्ट है वह वह असत्य है।

वेद विश्व के पुस्तकालय में सबसे सरल पुस्तक है। ऐसा क्यों न हो। वेद सत्यविद्याओं का पुस्तक जो है। सत्य सरल होता है। जटिल तो असत्य होता है। वेद मां की बोली है। मां की बोली तो मा की गोदी में अनायास ही सीखी जाती है। मानवजाति वेदमाता की गोदी से अलग हो गई। इसी तरह से वह मानवों के लिए एक सर्वथा अपरिचिता वस्तु बन गई और बहुत कठिन प्रतीत होने लगी। अन्यथा तो वेद मां की बोली को समझने के लिए न किसी विद्यालय की आवश्यकता होती न किसी कृत्रिम शिक्षाविधि की। वेदमाता ही वास्तव में 'वर-दा' है, वरदात्री है, अभीष्ट साधयित्री है। मानवजीवन के लिए जो कुछ वांछनीय है वह सब प्रदान करने की क्षमता केवल वेदमाता की है। अत सभी मानवों को चाहिए कि वे वेद पढ़े और पढाये, वेद सुने और सुनाये।

ऋषिवर ! तेरे अहसां को न भूलेगा जहां बरसों

ऋषिवर तेरे अहसां को न भूलेगा जहां बरसों।
तेरी रहमत के गीतों को ये गायेगी जुबां बरसों॥
तेरे कदमों को दुनिया आस्ताने पाक समझेगी।
झुकायेगा अदब से सर जमाना फिर यहाँ बरसों॥
तेरे आने से गुलशन मे बहारे लौट आयी हैं।
तेरे आदम से पहिले था चमन जेरे खिजाँ बरसों॥
तेरी सूरत तेरी सीरत तेरी आदत और फिदरत।
जहाँ को हम सुनायेंगे बनाकर दास्ता बरसों॥
अगर्चे लाख लोगों ने लिये थे इम्तिहाँ बरसो।
तेरे ढेलो व पत्थर से किये स्वागत जमाने ने॥
पिये हंस करके तूने जहर के प्याले यहाँ बरसो।
रहेंगे आफताबो-माह-धरती जब तलक कायम॥
तेरे औसाफ के चर्चे करेगा ये जहाँ बरसों।
तेरी हस्ती-ए लासानी का सानी मिल नहीं सकता॥
तेरी सूरत को तरसेंगे जमीनो आसमाँ बरसों।
तू सचमुच था पतित पावन कि तारे वो पतित तूने॥
जिन्हें रक्खा था साये तक से हमने दूर यों बरसो।

—ओमप्रकाश शास्त्री

महर्षि दयानन्द से वेद के संबंध में प्रश्नोत्तर

उदयपुर में पधारने के एक मास पश्चात्, मौलवी अब्दुर्रहमान ने स्वामी जी से प्रश्नोत्तर किए। वे प्रश्नोत्तर लिखे भी जाते थे। वे नीचे दिये जाते हैं—

प्रश्न—'ऐसा कौन सा धर्म है जिसकी धर्म-पुस्तक सब मनुष्यों की बोलचाल और प्राकृतिक नियमों को सिद्ध करने में प्रबल हो? जितने मत मिलते हैं वे भिन्न-भिन्न देशों की भाषाओं में, भिन्न-भिन्न नियमों से ऐसे बने हैं कि एक-दूसरे से मेल नहीं रखते। जहां जो मत उत्पन्न हुआ है उस के सारे गुण वहीं तक सीमाबद्ध हैं। मतों में एक-दूसरे से ऐसे भिन्न चिह्न पाए जाते हैं कि जिन्हें दूसरे देखना भी अच्छा नहीं समझते। ऐसी अवस्था में सच्चा धर्म कौन सा है?'

उत्तर—'मत सम्बन्धी सारी पुस्तकें हठधर्मी से भरी पड़ी हैं, इसलिए उनमें विश्वास के योग्य एक भी पुस्तक नहीं है। मेरी सम्मति में जो पुस्तक ज्ञान सम्बन्धी है, वही सत्य है। उसमें पक्षपात नहीं हो सकता। ऐसी पुस्तक का सृष्टि-क्रम के अनुकूल होना सम्भव है। मेरे आज तक के अन्वेषण में वेद ही ऐसी पुस्तक है। वह किसी एक देश की भाषा में नहीं है। वह ज्ञानमय है और उसकी भाषा भी ज्ञान-भाषा है। इसलिए वेद पर ही निश्चय लाना चाहिए।'

प्रश्न—'क्या वेद मत की पुस्तक नहीं है?'
उत्तर—'नहीं, वह ज्ञान की पुस्तक है।'

प्रश्न—'मत का आप क्या अर्थ करते हैं?'
उत्तर—'पक्षपातयुक्त मन्तव्यों के समुदाय को मत कहते हैं।'

प्रश्न—'हमारे पूछने के अभिप्राय का उत्तर आप ने वेद बताया है, सो क्या वेद में वे सब गुण पाये जाते हैं?'
उत्तर—'हां, पाये जाते हैं।'

प्रश्न—'आप ने कहा कि वेद किसी देश की भाषा में नहीं है। जो भाषा किसी भी देश की नहीं है वह सब भाषाओं पर कैसे प्रबल हो सकती है?'
उत्तर—'जो देश-विशेष की भाषा होती है वह व्यापक नहीं हो सकती।'

प्रश्न—'जब वह भाषा किसी देश की नहीं है तो वह सब पर प्रबल कैसे हो सकती है?'
उत्तर—जैसे आकाश किसी एक स्थान का नहीं है परन्तु सर्वत्र व्यापक है, ऐसे ही वेदों की भाषा देश-भाषा न होने से सब भाषाओं में व्यापक है।'

प्रश्न—'यह भाषा किसकी है?'
उत्तर—'ज्ञान की।'

प्रश्न—'इसका बोलने वाला कौन है?'
उत्तर—'इसका बोलने वाला सर्वदेशी परब्रह्म है।'

प्रश्न—'इसका सुनने वाला कौन है?'
उत्तर—'इसके सुनने वाले अग्नि आदि चार ऋषि सृष्टि के आदि में हुए हैं। उन्होंने परमात्मा से सुनकर सब मनुष्यों को सुनाया है।'

प्रश्न—'ईश्वर ने यह भाषा उन्हीं को क्यों सुनाई ? क्या वे इस बोली को जानते थे ?'

उत्तर—वे चारों सर्वोत्तम थे। ईश्वर ही ने इनको तत्काल भाषा का भी ज्ञान करा दिया था।'

प्रश्न—'आप इसमें क्या युक्ति देते हैं ?'

उत्तर—'कारण के बिना कार्य नहीं होता यही युक्ति है और ब्रह्मादि ऋषियों की साक्षी है।'

प्रश्न—'भूमंडल भर के सारे मनुष्य क्या एक ही कुल के हैं ?'

उत्तर—'भिन्न-भिन्न कुलों के हैं। आदि सृष्टि में उतने ही जीव मनुष्य शरीर धारण करते हैं, जितने गर्भ सृष्टि में शरीर धारण करने के योग्य होते हैं। वे जीव असंख्य होते हैं।'

प्रश्न—'इस पर कोई युक्ति दीजिये ?'

उत्तर—'अब भी सब अनेक मां-बाप की संतान हैं।'

प्रश्न—'जो आकृतियां मनुष्यों की हैं उनके तन क्या एक ही प्रकार के बने थे ?'

उत्तर—'आदि में मनुष्यों में रंग और लम्बाई-चौडाई आदि का भेद अवश्य था।'

प्रश्न—'सृष्टि की उत्पत्ति कब हुई ?'

उत्तर—'सृष्टि को उत्पन्न हुए एक अरब छियानवे करोड और कई लाख वर्ष बीत गए हैं।'

प्रश्न—'आप किसी मत के नियमों का पालन करते हैं कि नही ?'

उत्तर—'जो धर्म ईश्वर आज्ञानुकूल है मैं उस के सारे नियमों का पालन करता हूं।'

प्रश्न—'क्या उपादान कारण अनादि है? आप कितने पदार्थों को अनादि मानते हैं ?'

उत्तर—'उपादान कारण अनादि हैं। जीवात्मा परमात्मा और प्रकृति, ये तीन पदार्थ अनादि हैं। इनका परस्पर संयोग-वियोग, कर्म और कर्मों का फल-भोग प्रवाह से अनादि हैं।'

प्रश्न—'जो वस्तु हमारी बुद्धि की सीमा से बाहर है हम उसे अनादि कैसे मान लें ?'

उत्तर—'जो वस्तुएं नही हैं वे कभी भी नहीं हो सकती। जो हैं, वे पहले भी थीं और आगे को भी बनी रहेंगी।'

प्रश्न—'वेद यदि ईश्वर का बनाया हुआ होता तो सूर्यादि की भांति सारे संसार के सब मनुष्यों को इससे लाभ पहुंचता।'

उत्तर—'वेद पवित्र सूर्यादि पदार्थों की तरह ही सबको लाभ पहुंचाता है। सारे धर्मों के ग्रन्थों और विद्या की पुस्तकों का कारण वेद ही है। यह सबसे पहले है, इसलिए जितने शुभ विचार और ज्ञान की बात दूसरे ग्रन्थों में पाई जाती हैं वे सब वेद से ली गई हैं। हानिकारक कथाएं उन ग्रन्थों के कर्त्ताओं की अपनी मन-घडन्त हैं। वेद में किसी का खण्डन-मण्डन नहीं पाया जाता, इसलिए वह पक्षपातरहित है। जैसे सृष्टि विद्या वाले सूर्यादि से अधिक लाभ लेते हैं, ऐसे ही वेद का अनुशीलन करने वाले वेद से अधिकाधिक उपकार प्राप्त करते हैं।'

□

देश को स्वतन्त्रता एवम् उन्नति के प्रेरक : महर्षि दयानन्द

डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार
(सदस्य महानगर परिषद् दिल्ली)

डी० बेब्ले के अनुसार वर्तमान माडर्न स्वतन्त्र भारत की वास्तविक आधारशिला दयानन्द ने रखी थी। सन् १९०६ में दादा भाई नौरोजी ने कहा था—'मैंने स्वराज्य शब्द सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से सीखा।'

१८५७ की राष्ट्रीय क्रान्ति में

श्री पृथ्वीसिंह मेहता विद्यालंकार का 'हमारा राजस्थान' में अनुमान है कि १८५७ की क्रान्ति की तैयारियों से दयानन्द का निकटता से सम्बन्ध था। पं० जयचन्द्र विद्यालंकार का 'राष्ट्रीय इतिहास का अनुशीलन' में अनुमान है कि १८५७ की हलचल में स्वामी दयानन्द का किसी न किसी रूप में हाथ अवश्य रहा होगा। पं० जी ने बनारस के उदासी मठ के सत्यस्वरूप शास्त्री के कथन को उद्धृत किया है—साधु सम्प्रदाय में तो बराबर यह अनुश्रुति चली आती है कि दयानन्द ने १८५७ के संघर्ष में महत्वपूर्ण भाग लिया था। सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में १८५७ में अंग्रेजों द्वारा तोपों से मूर्तियों को उड़ा देने और इस सन्दर्भ में बाघेर लोगों की वीरता का उल्लेख और उनका कृष्ण जैसे किसी नेता होने की इच्छा आदि के वर्णन से भी जयचन्द्र जी का अनुमान है कि दयानन्द ने बाघेरों के संघर्ष को निकटता से देखा होगा।

सन् १८६६ में अजमेर में कर्नल ब्रुक्स की विदाई समारोह मे बोलते हुए दयानन्द ने कहा था—'आप लन्दन पहुंचकर महारानी विक्टोरिया को कह दें—यदि भारतीयों के धार्मिक जीवन में शासन इसी प्रकार हाथ डालता रहा और गाय जो भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ और सांस्कृतिक जीवन की प्रतीक है, उसका वध जारी रहा तो १८५७ की क्रान्ति भी दोहराई जा सकती है।' उन की यह वीर गर्जना भी इस बात का प्रमाण है कि १८५७ की क्रान्ति में उनका अवश्य योगदान रहा होगा। उन्होंने लक्ष्मीबाई, तांत्या टोपे और अन्य बहादुरों को इस क्रान्ति में कूच करने की प्रेरणा दी थी।

स्वामी विरजानन्द से देश की उन्नति की शिक्षा

पृथ्वीसिंह मेहता विद्यालंकार के अनुसार देश की दशा पर भी गुरु शिष्य का सवाद एकान्त में होता था जिसमें उन दोनों के सिवाय वहां तीसरा कोई व्यक्ति नहीं रहने पाता था। शिक्षा प्राप्त

करने के बाद गुरु ने दक्षिणा मांगते हुए कहा था—'वत्स ! भारत देश में दीन हीन जन हैं जो मतमतांतरों के संघर्ष में कष्ट पा रहे हैं, जाओ इनके दुःख निवारण करो।' उन से प्रेरणा पाकर दयानन्द क्रान्ति की मशाल लेकर निकल पड़ा। हरिद्वार में एक दिन उन्होंने कहा—'मेरी आंखें उस दिन को देखने को तरस रही हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तथा अटक से कटक तक आर्यों का एकछत्र राज्य स्थापित होगा।'

पराधीनता और दुर्दशा के कारण

दयानन्द ने कहा था—'जब से विदेशी इस देश में आकर राज्याधिकारी हुए तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है।' सन् १८७७ में एक पादरी के प्रश्न के उत्तर मे कहा था—'आर्य लोग वेदानुसार ब्रह्मचर्य, विद्या प्राप्ति, एक स्त्री से विवाह, दूर देश की यात्रा और स्वदेश प्रेम आदि शुभकर्मों का परित्याग कर बैठे हैं, इसलिए उनकी यह अधोगति हो रही है।'

देश की स्वतन्त्रता व उन्नति के प्रयत्न

(क) आर्यसमाज की स्थापना—देश की स्वतन्त्रता व उन्नति के लिए महर्षि दयानन्द ने १० अप्रेल १८७५ को बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज के प्रारम्भ में बनाये २८ नियमों में १७वां नियम था—इस समाज में स्वदेश के हितार्थ दो प्रकार की शुद्धि के लिए प्रयत्न किया जाएगा—एक परमार्थ दूसरा व्यवहार। इन दोनों का शोधन तथा समस्त संसार के हित की उन्नति की जाएगी। महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों के आधार पर इस नियम के उत्तरार्द्ध की व्याख्या होगी—वैदिक संस्कृति के विशाल मानवीय सस्कृति की ध्वनि सम्पूर्ण जगत् में प्रसारित की जाये। इन नियमों में ग्यारहवां नियम भी महत्वपूर्ण है। जिसके अनुसार आर्यसमाज में केवल सिद्धान्तों पर ही विचार न होगा, उसके व्यावहारिक प्रयोग भी विचार किया जाएगा आज हम आर्यसमाज की जन्म शताब्दी मना रहे हैं। आर्यसमाज के १०४ वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्यसमाज ने देश की स्वतन्त्रता में महान योगदान दिया। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, सरदार अजीतसिंह, श्री मदनलाल ढींगरा, श्री रामप्रसाद बिस्मिल, श्री गेंदालाल, ठा० रोशन सिंह जी, सरदार भगतसिंह, चौ० मुख्त्यारसिंह, श्री हरविलास शारदा तथा अन्य अनेक स्वतन्त्रता प्रेमियों ने महर्षि से प्रेरणा प्राप्त कर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने को बलिदान किया। मालाबार के मोपला विद्रोह, राजस्थान व बंगाल के अकाल, बिहार के भूकम्प, नोआखली, देश-विभाजन और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सन् १९५७ में पंजाब में हिन्दी रक्षा आन्दोलन आदि में भाग लेकर आर्यसमाज ने सदा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया।

(ख) राजनीतिक व धार्मिक शक्ति का संगठन—१ जनवरी १८७७ ई० को दिल्ली में महारानी विक्टोरिया के महारानी होने पर आयोजित दरबार में दयानन्द ने दिल्ली पहुंचकर एक ओर आर्यावर्त्त के समस्त राजाओं के हृदय में सच्चे आर्य धर्म को जगाकर देश प्रेम जगाने का प्रयत्न किया तथा साथ ही देश के भिन्न-भिन्न धार्मिक नेताओं को एकत्र करके ऐसा महानद ढूंढने का प्रयत्न किया जिसमें सब सम्प्रदाय रूपी नाले आकर मिल जायें। सभी प्रजा के सुधार का दावा करते हैं, पर सभी परस्पर झगड़ों में पड़े हुए हैं। स्वामी जी के निमंत्रण पर बा० केशवचन्द्र सेन, सर सय्यद अहमद खां, मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी, बा० नवीनचन्द्र राय, मुंशी इन्द्रमणि और बा० हरिश्चन्द्र चिन्तामणि आदि महानुभाव इकट्ठे हुए। इसमें बंगाल, बम्बई, उत्तर प्रदेश और पंजाब से आए इस्लाम, ब्राह्मसमाज, सनातन धर्म तथा आर्यसमाज के प्रतिनिधि विद्यमान थे। यह बात दूसरी है कि महर्षि दयानन्द का यह प्रयत्न कोई एकदम रंग नहीं ला

सका, पर ऐतिहासिक दृष्टि से इसके महत्व का आकलन किया जा सकता है।

(ग) स्वदेश प्रेम एव स्वराज्य की भावना—महर्षि दयानन्द ने स्वदेश प्रेम एव स्वराज्य की भावना जागृत करके भारत की जनता को विदेशी शासन से मुक्त होने का पाठ पढ़ाया था। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना करके उसमें अपने देश का गौरव गान किया तथा भारतवासियों के हृदय में अपने देश और धर्म के लिए स्वाभिमान उत्पन्न किया। उनके कुछ उद्धरण उल्लेखनीय हैं:

—यह आर्यावर्त देश ऐसा है कि जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूपी विदेशी छूते ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।

—जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है और आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।

—सृष्टि से लेकर पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देशों में माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे क्योंकि कौरव पाण्डव पर्यन्त यहां के राज्य और राज्य शासन में सब भूगोल के सब राजा और प्रजा चलाते थे। (एकादश समुल्लास) आदि अनेक वाक्यों द्वारा महर्षि ने राष्ट्र को यह अनुभव करा दिया कि हम भी कभी शक्ति सम्पन्न और स्वाधीन थे।

स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग

एक दिन का वर्णन है कि ठाकुर ऊधोसिंह छावली निवासी अपने पिता ठाकुर भूपालसिंह जी के साथ स्वामी जी के दर्शन करने के लिए अलीगढ़ में आए। उस दिन ऊधोसिंह जी के वस्त्र नये ढंग के थे और सबके सब विलायती कपड़े के बने थे। स्वामी जी ने अति प्यार से कहा, ऊधव! देखो तुम्हारे पिता कैसे मोटे, सादे और अपने देश के कपड़े के बने वस्त्र पहनते हैं। उनका समाज में कितना अधिक सम्मान है। क्या तुम इस विदेशी कपड़े से बने नये वेष से विभूषित होकर अपने पिता से अधिक संस्कृत हो गये हो? ऊधव अपने ही देश के वस्तु वेष को अपनाने में शोभा है।' स्वामी जी का यह उपदेश ऊधोसिंह जी के हृदय में घर कर गया। उन्होंने अपने डेरे मे जाकर वे वस्त्र उतार दिये और पुराने ढग के स्वदेशी वस्त्र धारण कर लिये। महात्मा गांधी के स्वदेशी आन्दोलन से बहुत पूर्व महर्षि दयानन्द ने देशवासियों मे स्वदेशी भावना भरी थी। पट्टाभि सीतारमय्या ने कहा है कि गांधी राष्ट्रपिता हैं तो दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं।

कर्मण्यता और परिश्रम से जीवन यापन

सन् १८७८ मे अमृतसर में स्वामी जी के एक व्याख्यान में बहुत से निर्मले आदि साधु आये और खड़े-खड़े ही भाषण सुनने लगे। दयानन्द ने उस समय कहा—सहस्रों भारतवासी पेट भर अन्न नही पाते, दाने दाने के लिए तरसते हैं। भूख के मारे बिल्ली कुत्ते की मृत्यु मरते जाते हैं। देश की ऐसी शोचनीय दशा मे धड़ाधड़ लोटेशाही और तूम्बे-शाही बनने की क्या आवश्यकता है। इस समय तो प्रत्येक को परिश्रम करके आजीविका चलानी चाहिए।' स्वावलम्बन का यह पाठ देश की स्वतन्त्रता में सहायक रहा।

पूर्ण स्वतन्त्रता की कल्पना

दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखा है—'आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है, जो कुछ है, सो भी विदेशियों के पदाक्रान्त हो रहा

है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।' पूर्ण स्वराज्य की इस से सुन्दर व्याख्या क्या हो सकती है। कांग्रेस ने स्वराज्य का नारा सन् १६२६ में दिया, पर महर्षि ने इसका बहुत पहले ही स्वप्न देख लिया था।

देशोन्नति के उपाय

(क) भावात्मक एकता—एक दिन पण्ड्या मोहनलाल विष्णुलाल जी ने पूछा—'भगवन् भारत का पूर्ण हित कब होगा ? यहां जातीय उन्नति कब होगी ?' दयानन्द ने उत्तर दिया—'एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर कार्य है। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहां भाषा, भाव और भावना में एकता आ जाये, वहां सागर में नदियों की भांति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लग जाते हैं। मैं चाहता हूं कि देश के राजे महाराजे अपने शासन में सुधार और संशोधन करें। अपने राज्य में धर्म, भाषा और भावों में एकता उत्पन्न कर दें। फिर भारत में आप ही आप सुधार हो जाएगा। धर्मगुरुओं और सामाजिक नेताओं की असावधानी, प्रमाद और आलस्य से भावना, भाव और भाषा आदि एकता के चिह्न बदल जाते हैं। जाति के आचार-विचार परिवर्तित हो जाते हैं। इसके पिछले प्रमाद के कारण करोड़ों मनुष्य मुसलमान बन गये। अब प्रतिदिन सैकड़ों ईसाई बनते जा रहे हैं। ऐसे समय तो अपने सधर्म बन्धुओं को कड़े हाथ से इनकी चोटियां पकड़कर भी जगाना होगा।'

(ख) निःस्वार्थ भावना से परहित—सन् १८७७ में मुलतान से महतोलाल जी को दयानन्द ने एक पत्र लिखा—'आर्यसमाज के ठीक नियमों को समझ कर आपको वेदाज्ञानुसार सबके हित में अवश्य लग जाना चाहिए—विशेषता से अपने आर्यावर्त देश के सुधारने में अत्यन्त श्रद्धा, प्रेम और भक्ति होनी चाहिए। सबको अपने समान जानकर उनके क्लेशों के काटने और सुखों के बढाने के लिए प्रयत्न और उपाय करना उचित है। सबका हित करना ही परम धर्म है। इसी के प्रचार की वेद में आज्ञा पाई जाती है

दयानन्द ने स्वराज्य के जिस स्वरूप का वर्णन किया उसे हम गणराज्य का नाम दे सकते हैं। राजा प्रजा द्वारा निर्वाचित हो। शासन मन्त्रियों की सभा द्वारा हो, पुरुषों और स्त्रियों के अधिकार समान हैं। सभी को समान वस्त्र, भोजन और आसन मिलना चाहिए चाहे वे राजकुमार हों या निर्धन की सन्तान। प्रयाग निवास के दिनों में जो उपदेश दिए, उनमें अन्य बातों के साथ यह भी कहा कि देश में बड़े-बड़े कारखाने खोलने चाहिएं ताकि आर्थिक उन्नति हो सके। राष्ट्र अत्यन्त शक्ति सम्पन्न हो।

महर्षि दयानन्द ने राजस्थान के राजाओं के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क रखकर उनको मनुस्मृति आदि के द्वारा राजधर्म की शिक्षा दी थी। यज्ञशाला से ब्राह्मतेज तथा क्षात्रशाला से क्षात्रतेज उत्पन्न करने की प्रेरणा दी। निष्पक्ष न्याय व्यवस्था के लिए उपदेश दिया। उनमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक आदि विचार अत्यन्त क्रान्तिकारी एवं व्यावहारिक कहे। उनके सिद्धान्तों का आधार सत्य, निष्पक्षता एवं मानवता की भावना है। देश के राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र हो जाने के बाद भी आज वे देशोन्नति के साधक हैं। देश के सम्मुख आज जो भयंकर

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

वेद और मानवता

डा० महेश विद्यालंकार

वेद भारत की महान उपलब्धि हैं। वेद सृष्टि की आचार-संहिता हैं। वेदों का प्रतिपाद्य है सृष्टि में कैसे जीना, और जीवन में कैसे सच्ची सुख-शांति एवं आनन्द प्राप्त करना है, जीवन कैसे उन्नति, कल्याण एवं मंगलमय बन सकता है आदि का विस्तार से विवेचन व विश्लेषण किया है। इसीलिए वेद देश, काल, सीमा, जाति, वर्ग आदि से ऊपर हैं। वेद-ज्ञान में पूर्णता, मौलिकता, नवीनता, वैज्ञानिकता, व्यावहारिकता, उपयोगिता, सार्थकता आदि गुण विद्यमान हैं। इसी से वेद आदि सृष्टि से पथ-प्रदर्शक रहे हैं। आद्यन्त मानवता का ही चिन्तन मनन एवं दर्शन मिलता है। वृष्टि और संकीर्णता को वेद में कोई स्थान नहीं मिला है। सम्पूर्ण मानव-जाति के कल्याण, उत्थान, निर्माण एवं सुख-शान्ति की विराट् कामना के ही दर्शन होते हैं—

आज का संसार औद्योगिक, भौतिक, वैज्ञानिक व सामाजिक संक्रान्तियों से गुजर रहा है। प्राचीन मूल बड़ी तेजी से तोड़े, छोड़े व गिराए जा रहे हैं। नये भौतिक मूल्यों के चमत्कार में संसार फसता जा रहा है। मात्र शारीरिक सुख-भोग-विलास के साधन ही जीवनोद्देश्य बनता जा रहा है। मानवीय मूल्य, जिन से सृष्टि-मानवता, मानव समाज, परिवार, राष्ट्र चलता है, जिन्हें परमात्मा ने मानव को दैवीय सपदा के रूप में प्रदान किया है। वे हैं-- दया, करुणा, ममत्व, स्नेह, प्रेम, आदर सेवा, उपकार आदि हैं। इनसे मानव और मानवता उठती है, समृद्ध और महान् बनती है। इन तत्वों के लोप होने से मानवता मर उठती है। आज सृष्टि में मानव भौतिक व शारीरिक दृष्टि से मानव भौतिक व शारीरिक दृष्टि से तो समृद्ध व भरा पूरा नजर आता है किन्तु मानवता की दृष्टि से मानव बहुत पीछे होता जा रहा है। परिणाम सामने हैं, हर तरह से समग्र धरती जल रही है। मानव तड़प रहा है। चारों ओर भय, हिंसा, सघर्ष, अशांति, कोलाहल, विद्रोह, युद्ध, झगड़े, अभाव, पीडा, तनाव, दुर्भिक्ष वृष्टि, अनावृष्टि आदि रोग तेजी से पृथ्वी के सौन्दर्य को नष्ट कर रहे हैं। चारों ओर त्राहि-त्राहि का करुण क्रन्दन सुनाई दे रहा है। मनुष्य तेजी से विनाश की ओर बढ रहा है। मानवता चीख रही है। कोई सुनने वाला नहीं है। ऐसी भयावह स्थिति में वेद की पवित्र कल्याणी वाणी ही मानवता को जीवित व सजीवनी-चेतना दे सकती है। मानव को दानव बनने से रोक सकती है। मानवता को विनाश से बचा सकती है। वेद में मानवता के उत्थान के महान् सूत्र, मन्त्र, तत्व एव भाव विद्यमान हैं। यदि उन्हें

आज के जीवन और व्यवहार में उतार लिया जाय तो निश्चय ही जीवन, परिवार समाज एवं राष्ट्र सभी प्रकार के दुःखों, रोगों से तथा आपदाओं से बच सकता है।

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्—वेद का उपदेश एवं सन्देश है कि मनुष्य तू मानवता के गुण धारण कर। तभी स्वयं और सृष्टि सुखी व मंगलमय हो सकती है। सच्चा मानव वही है जिसने अपने अन्दर से पशु-वृत्ति व संस्कारों को अभ्यास से निकाल दिया है। जो अपने सुख-दुःख को भूलकर दूसरों के लिए जीता है। अपने लिए ही जीना पशुता है। यदि यह मानवता का भाव आज के मनुष्य जीवन में आ जाय तो कहीं भी हिंसा, झगड़े, विद्रोह व दूसरे के हक को छीनने तथा मारने की बात पैदा ही नहीं होगी। मानवतावादी व्यक्ति दूसरे के कल्याण, उपकार व सेवा में ही अपने जीवन का श्रेय समझता है। सारा संसार मैत्री भाव से सुखी हो सकता है। मानवता की चेतना में प्रेम करुणा और दया की भावना रहती है।

परस्पर प्रेम करो—मानवता के लिए वेद प्रेरणा देता है। प्रेम से रहो, प्रेम से बोलो, प्रेम से सब से यथायोग्य व्यवहार करो। प्रेम में अपार शक्ति प्रभाव, चेतना है कि बुरे से बुरा मानव प्रेम से सन्मार्ग पर आ जाता है। आज की मानवता प्रेम और सहानुभूति की भूखी है। वेद का कथन है—हम एक दूसरे को ऐसे प्रेम करें जैसे गायें अपने सद्यः जात बछड़े के लिए रम्भाती हैं। बेचैन रहती हैं, जब ऐसी पवित्र भावना मानव-मानव के बीच आ जाय तो कटुता-शत्रुता विरोध कहाँ ठहर सकेंगे? सब प्राणियों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से जीवन और संसार सुखमय बन जायेगा। इसी से मानवता फलती-फूलती और बढ़ती है।

जीओ और जीने दो—की विराट् व उदात्त मानवतावादी भावना वेदों में सर्वत्र मिलती है। दूसरों के साथ व्यवहार आत्मवत् करो। जो हमें अच्छा नहीं लगता है, वैसा दूसरों के साथ मत करो। सृष्टि में सब को जीने का हक है। वह प्रभु ही सभी का भरण-पोषण व पालन कर रहा है। जब हम किसी जीव को जीवन दे नहीं सकते हैं तो मारने का भी हमें हक नहीं है। अपने स्वार्थ के लिए किसी को कष्ट देना, वेद विरुद्ध है। यदि यह मानवीय चेतना हम जीवन में उतार लें तो न जाने कितने निर्दोष, पशु-पक्षियों और मानवों की रक्षा हो सकती है। दया की भावना जागृत होते ही हिंसा का भाव लुप्त हो जायगा। तुलसी का यह कथन बड़ा सार्थक प्रतीत होता है—

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।

परस्पर बांट कर खाओ—संगठन सूत्र में पाठ करते हैं। "समानेन वो हविषा जुहोमि" प्रभु ने जो प्रकृत-पदार्थ जीवन-यात्रा के लिए दिए हैं उन्हें हम सब बांटकर, मिलकर उपभोग करें। तभी सृष्टि में शान्ति और खुशहाली हो सकती है। 'देहि मे ददामि ते' मनुष्य मैं तुझे दे रहा हूं तू भी दूसरों को बांट, यही यज्ञ है। अकेला खाना पाप है। परमेश्वर जल, वायु, प्रकाश, अग्नि, पृथ्वी, फल-फूल सब को समान रूप से दे रहा है फिर क्यों संग्रह? इससे विषमता बढ़ती है। पाप बढ़ते हैं। मानवता कराह उठती है। कवि ने मार्मिक शब्दों में आज के समाज का चित्र खींचा है—

"बाप बेटा बेचता है, भूख से बेहाल होकर।"

यदि हमारे मे मानवता आ जाय तो हम किसी प्राणी को भूखा नहीं मरते देखेंगे। हम किसी को नंगा नहीं देख सकेंगे।

त्यागपूर्वक जीओ—

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मागृधः कस्य स्विद्धनम्।

मानव तू संसार का उपभोग और प्रयोग त्यागपूर्वक कर, जितनी आवश्यकता है उतनी ही ले। किसी के धन पर लालच मत कर। यदि मनुष्य संसार का ज्ञानपूर्वक नियमपूर्वक और त्यागपूर्वक भोग करेगा, तो संसार को छोड़ते हुए कष्ट दुःख पीड़ा न होगी।। जरूरत से ज्यादा संग्रह करना पाप है। जरूरत से ज्यादा संग्रह वहां होता है जहां असंतोष होता है। सन्तोष होने पर तृप्ति, सन्तुष्टि एव पूर्णता आती है। वैराग्य भाव उत्पन्न होने लगता है। सांसारिक पदार्थों के प्रति राग की भावना धीरे-धीरे छूटने लगती है। वेद का सत्य है कि जिस राष्ट्र में शिक्षा, न्याय और चिकित्सा सभी को समान रूप से, बिना भेदभाव के, बिना धन के लेन-देन के, बिना पक्षपात के मिलती है। उस राष्ट्र में सभी प्रकार की खुशहाली, सुख-शान्ति और मानवता सदैव जीवित बनी रहती है। दुर्भाग्य है हमारे देश का यहा तीनो ही व्यावसायिक हो गए हैं। तीनों का मूलाधार पैसा है। जैसा, जितना, जहां पैसा दो, वैसी शिक्षा, न्याय एवं चिकित्सा ले लो। इससे सर्वत्र असमानता, विद्रोह, अन्य एवं अपात्रता बढ़ रही है। परिणाम सामने है—माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः—संसार में ऐसा आदर्श खोजने पर न मिल सकेगा। जिसमें कही भी कोई भी सीमा प्रान्त, बन्धन और सकीर्णता नहीं है। जब सारी धरती मां है। मां तो सबसे सुन्दर, सबसे प्यारी होती है। उसकी रक्षा, उसकी देख-रेख का दायित्व पुत्र पर है। जब ऐसी उदात्त एव मानवता की चेतना हमारे हृदयों मे आ जाय तो अनेक समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायगा।

संक्षेप में वेदों मे सर्वत्र मानवता के कल्याण, उत्थान, निर्माण एवं आदर्श के स्वर मुखरित हैं। मानवतावादी चेतना से ही सृष्टि पल्लवित, पुष्पित, और सुरभित होती है। हम मानवी तभी कहलाने के हकदार हैं जब हमारे में मानवीय मूल्य, आदर्श, एव भावना होगी। हम सच्चे मानव बनें यही वेद का अमर सन्देश व उपदेश है। □

(पृष्ठ ४३ का शेष)

समस्याएँ हैं, महर्षि दयानन्द का मार्ग उनका समाधान कर सकता है। इन सब पक्षों पर पृथक् रूप से विचार करने की अपेक्षा है। आर्यसमाज के जन्म शताब्दी वर्ष में आर्यसमाज और उसकी प्रेरणा से भारत सरकार को उनके मार्ग को अपनाने का निश्चय करना चाहिए।

हम इस लेख की समाप्ति २४ जुलाई १८८२ को दयानन्द द्वारा अपने प्रिय शिष्य रामानन्द को लिखे पत्र से करते हैं—'परमात्मा से सदा यही प्रार्थना करता हूं कि आप महाशय पुरुषों की बुद्धि को परोपकार के करने मे निरन्तर नियुक्त किया करे। जिस से पुन आर्यावर्त देश अपनी पूर्व दशा को सम्प्राप्त होकर अपने मनुष्यरूपी वृक्ष में धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूपी चतुष्टय फलों से सयुक्त होकर परमानन्द भोगे।'

महर्षि दयानन्द और महात्मा बुद्ध

—पं० रामानन्द शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती और भगवान् बुद्ध दोनों अपने धर्म को आर्य-धर्म कहा करते थे। स्वामी दयानन्द ने हमें सिखाया कि तुम अपने को आर्य कहो। तुम्हारा धर्म वैदिक सनातन धर्म है। उन्होंने नारा दिया 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् सारे संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ। आर्य शब्द का पर्यायवाची शब्द संसार की किसी भाषा में नहीं है, ऐसा योगी अरविन्द मानते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्य को देशगत नहीं मानते थे किन्तु गुणपरक मानते थे। उन्होंने सर्वप्रथम इस बात का खण्डन किया कि आर्य बाहर से आये अथवा आर्य या दस्यु अलग-अलग जाति हैं। ऋषि सत्यार्थप्रकाश मे लिखते है कि—

प्रश्न—कोई कहते हैं कि यह लोग ईरान से आये इसी से इन लोगों का नाम आर्य हुआ है। इन के पूर्व यहां जंगली लोग बसते थे, जिनको असुर और राक्षस कहते थे। आर्य लोग अपने को देवता बतलाते थे और उनका जब संग्राम हुआ उस का नाम देवासुर संग्राम कथाओं में ठहराया।

उत्तर—यह सर्वथा झूठ है, क्योंकि विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्। उत शूद्रे उतार्ये।

यह लिख चुके हैं कि आर्य नाम धार्मिक विद्वान् आप्त पुरुषों का और इन से विपरीत जनों का नाम दस्यु अर्थात् डाकू, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने धर्म को वैदिक अनादि और सनातन कहा तथा हमें आदेश दिया कि इसका प्रसार और प्रचार भूमण्डल में होना चाहिए। जैसा कि सत्यार्थप्रकाश के अन्तिम पृष्ठ पर वर्णित है।

सर्वशक्तिमान परमात्मा की कृपा सहाय और आप्त जनों की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जावे। जिससे सब लोग सहज से धर्मार्थ काम मोक्ष को सिद्ध करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें, यही मेरा मुख्य प्रयोजन है।

भगवान् बुद्ध भी अपने धर्म को आर्य धर्म कहा करते थे उन्होंने आर्य अष्टांगिक मार्ग एवं आर्य चतुष्टय का उपदेश किया। आर्य का अर्थ बुद्ध भी श्रेष्ठ ही मानते थे—

न तेन अरियो होति येन पाणानि हिंसति।
अहिंसा सब्बपाणनं अरियोति पवुच्चति।

धम्म पद

प्राणियों का हिंसा करने से कोई आदमी आर्य नहीं होता, जो किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करता, वही आर्य होता है। वृषलसूत में बुद्ध कहते हैं—

जन्म से वृषल नहीं होता, जन्म से कोई ब्राह्मण नहीं होता। कर्म से वृषल होता है कर्म से ब्राह्मण। हे ब्राह्मण ! इस इतिहास को जानो कि यह विश्रुत है कि चाण्डाल पुत्र (श्वपाक) मातंग ने परम यश को प्राप्त किया।

आश्वलायन सूत्र में भगवान् बुद्ध से आश्वलायन ब्राह्मण माणवक ने कहा कि हे गौतम ब्राह्मण ऐसा कहते हैं—ब्राह्मण ही ब्रह्मा के औरस पुत्र हैं, उनके मुख से उत्पन्न हुए हैं, आप इस विषय में क्या कहते हैं ?

बुद्ध ने उत्तर दिया—हे आश्वलायन ! क्या तुम ने सुना है कि यवन कम्बोज में और प्रत्यन्तिक जनपदों में दो वर्ण हैं—आर्य और दास। आर्य से दास होता है, दास से आर्य होता है।

बुद्ध आगे और कहते है—हे आश्वलायन मैं चारों वर्णों को शुद्ध मानता हूं। जातिवाद ठीक नहीं है।

सुन्दरिक-भारद्वाज सूत्र में भगवान् कहते हैं कि जाति मत पूछो, आचरण पूछो (मा जातिं प्रच्छ चरणं च प्रच्छ)।

वासेठ्ठसुत्तसुत में कहा गया है वसिष्ठ और भारद्वाज दो माणवक बुद्ध के समीप गए और पूछा कि जातिवाद के सम्बन्ध में विवाद है। भारद्वाज कहता है कि जन्म से ब्राह्मण होता है, वसिष्ठ कहता है कि कर्म से ब्राह्मण होता है। बताइए कि इसमें कौन सत्य है ? बुद्ध कहते हैं कि जिस प्रकार कीट पतंग, चतुष्पद, मत्स्य, पक्षी आदि जातियों में जातिमय पृथक् लिंग होता है, उसी प्रकार मनुष्यों में नहीं होता।

बुद्ध कर्मफल तथा मोक्ष पर विश्वास करते थे। उनकी शिक्षाएँ नैतिक थीं, उन्होंने इसी का प्रचार करने का आदेश अपने भिक्षुओं को दिया। बुद्ध ने कभी ईश्वर अथवा वेद का खण्डन नहीं किया। राजा कूतदत्त के यज्ञ में बकरे की बलि को रोकते हुए कहा कि पहले के ब्राह्मण घी, दूध, दही आदि से यज्ञ किया करते थे वे पशु नहीं मारते थे, किन्तु अब के ब्राह्मण उसके विपरीत आचरण करते हैं तथा पशु की हत्या करते हैं।

यह सत्य है कि बुद्ध को स्वामी विरजानन्द के समान गुरु नहीं मिला, नहीं तो बुद्ध भी स्वामी दयानन्द के समान कहते कि वेद में पशु हिंसा नहीं है, किन्तु जब घर से निकले तो उन्होंने कलाम गोत्र उत्पन्न आराड से सांख्य शास्त्र की शिक्षा ली थी। उस समय सांख्य की शिक्षा निरीश्वरवादी हो गयी थी, उसका प्रभाव बुद्ध पर भी पड़ा था।

बुद्ध ने कोई पुस्तक नहीं लिखी थी। उन की मृत्यु के बाद बौद्धों की संगति बैठी, उसी में उनके वचनों को 'धर्म ग्रन्थ' का रूप दिया गया। बुद्ध वाणी का विभिन्न अर्थ किया जाने लगा तथा उसी का प्रभाव है कि चार दार्शनिक सिद्धान्त निकले। सबका निष्कर्ष है कि यह संसार क्षणिक, विज्ञान-मय तथा दुःख ही दुःख है। इस विचार ने भारत को कमजोर कर दिया। भारत के भिक्षु देशदेशांतर गये, उन्होंने भारतीय संस्कृति का प्रचार विश्व के कोने-कोने में किया किन्तु "राष्ट्रवाद" की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। वे विश्व बन्धुत्व का प्रचार करते थे किन्तु उन्होंने यह नहीं विचारा कि भारत जो जगद्गुरु है, जहां से सारा ज्ञान और विज्ञान फैला है उसकी रक्षा होनी चाहिए। बुद्ध की शिक्षाओं ने भारत राष्ट्र को कमजोर कर दिया, भारतीय विचारधारा में महान् परिवर्तन हुआ, स्वामी शंकर पर भी बुद्ध विचारों का ही प्रभाव पडा, उन्होंने नागार्जुन के विज्ञानवाद को स्वीकार

किया किन्तु उसे क्षणिक की जगह नित्य कहा। अतः श्री रामानुजाचार्य ने शंकर को प्रच्छन्न बौद्ध कहा। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक मानवता के प्रचार के साथ भारतीय राष्ट्रवाद की घोषणा को तथा स्पष्ट शब्दों में चक्रवर्ती राज्य की स्थापना की चर्चा की। स्वामी जी के पहले भारतीय जनता का यह विश्वास था, भारत शासक नहीं अपितु शासित राष्ट्र था। स्वामी जी ने चक्रवर्ती राजाओं की सूची उपस्थित की तथा सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में स्पष्ट लिखा कि जितनी विद्याएँ भूगोल में फैली हैं उसका गुरु भारत ही है। ऋषि दयानन्द वेद के प्रचारक थे। वेद में युद्ध का वर्णन स्पष्ट है। अतः स्वामी जी क्षात्र धर्म के भी प्रचारक थे। बुद्ध ने भाषा पर कोई जोर नहीं दिया। संस्कृत की जगह उन्होंने प्राकृत-भाषा को प्रश्रय दिया जबकि स्वामी संस्कृत वाणी के पक्षपाती थे।

बुद्ध की शिक्षा से अनात्मवाद, क्षणिकवाद; मायावाद, अनीश्वरवाद, निराशावाद का सृजन होता है। वहां ऋषि दयानन्द की ओजस्विनी वाणी से आत्मवाद, ईश्वरवाद, कर्मवाद, राष्ट्रवाद, आशावाद का जन्म होता है।

स्वामी जी विश्वबन्धुत्व चाहते थे। सबके साथ उनका स्नेह था। प्राणिमात्र के प्रति करुणामय थे किन्तु साथ ही वे भारत राष्ट्र की सबल भारतीय संस्कृति को कल्याणमयी मानते थे। इनमें दृढ़ आस्था और विश्वास के साथ विश्वबन्धुत्व के पक्षपाती थे। □

आर्यसमाज : देश की उन्नति का कारण

"जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्य अनुसार आचरण स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करे। इसलिए जैसा 'आर्यसमाज' आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।"

—महर्षि दयानन्द

मेरी कामना

"मेरी अन्तःकरण से यही कामना है कि भारतवर्ष के एक अन्त से दूसरे अन्त तक आर्यसमाज स्थापित हो और देश में व्यापी हुई कुरीतियां उन्मूलित हो जायें।

—महर्षि दयानन्द

राजर्षि शाहू महाराज और आर्यसमाज

प्रा० कुशलदेव शंकरदेव कापसे
३६, रामानन्द नगर, नांदेड़ (महाराष्ट्र) ४३१६०२

□□□

कोल्हापुर नरेश छत्रपति शाहू महाराज (१८७४—१९२२) को आर्यसमाज से सुपरिचित कराने का श्रेय महाराजाधिराज कर्नल सर प्रताप सिंह को है। दि० १७ मई १९०२ को 'एस०एस० पेनिनशुलर' नामक जलयान से राजर्षि शाहू और ईडर (राजस्थान) नरेश प्रतापसिंह ने मुम्बई से प्रस्थान किया था और २ जून १९०२ को वे लंदन पहुंचे थे। लगभग इन पन्द्रह दिनों की अवधि में प्रतापसिंह ने जलयात्रा में ही शाहू महाराज को आर्यसमाज के सैद्धान्तिक पक्ष से अच्छी तरह परिचित करा दिया था। इसीलिए शाहू महाराज बड़े गौरव के साथ स्वयं को सर प्रतापसिंह महाराज का अनुयायी मानते थे (राजर्षि शाहू छत्रपति : धनंजय कीर : पृ० ३६५)।

छत्रपति शाहू महाराज ने अन्तःकरण पूर्वक कोल्हापुर रियासत को 'आर्यधर्मी राज्य' में परिणत करने का प्रयास किया था (तत्रैव पृ० ३६६)। वे अपने आपको हृदय से आर्यसमाजी तथा ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों का प्रेमी कहते थे (तत्रैव ३२०)। वैदिक धर्म को वे राष्ट्रीय धर्म मानते थे (तत्रैव पृ० ३२१)। आर्यसमाज के सामाजिक समता-विषयक तत्वों का प्रसार होने पर हिन्दुस्तान राजनैतिक प्रातिनिधिक संस्थाओं के योग्य होगा, ऐसा शाहू महाराज का विश्वास था (तत्रैव पृ० ३८१)। जातिभेद नष्ट कर राष्ट्रीय ऐक्य-भाव स्थापित करने के लिए आर्यसमाज को वे महत्वपूर्ण साधन मानते थे। १९१८ के जनवरी मास के अन्त में उन्होंने बड़ौदा के पं० आत्माराम के सहयोग से सर्वप्रथम कोल्हापुर में आर्यसमाज की स्थापना की थी (तत्रैव पृ० ३२३)। १५ जनवरी १९१९ को निकाली राजाज्ञा में उन्होंने शिक्षण-विभाग को यह सूचित किया था कि स्पृश्य-अस्पृश्य छात्रों से एक समान आचरण करना चाहिए और साथ ही विभिन्न शासकीय सेवाओं में कार्यरत व्यक्तियों को अस्पृश्यों के साथ करुणा और समता का व्यवहार करने का आदेश दिया है और जिसे यह आदेश मान्य नहीं है, उसे छ: महीने के अन्दर त्यागपत्र देने का निर्देश दिया है। त्यागपत्र देने वाले व्यक्तियों को राजाज्ञा द्वारा निवृत्ति-वेतन (पेन्शन) के अयोग्य घोषित किया है (तत्रैव पृ० ३७१)। कोल्हापुर की राजाराम शिक्षण-संस्था द्वारा संचालित विद्यालय-महाविद्यालय १ जून, १९१९) से ५ वर्ष के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त को राजर्षि शाहू ने संचालित करने के लिए सौंपे थे (करवीर गजट मार्च १९१९। भूतपूर्व रक्षा मन्त्री (स्वर्गीय) यशवन्तराव बलवंतराव चौहान इसी महाविद्यालय के छात्र रहे, इसी आधार पर वे स्वयं को आर्यसमाजी शिक्षण-संस्था का छात्र कहते थे। राजर्षि शाहू की ओर से पट-

वारियों को आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद द्वारा लिखित सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ पढ़ने का अनुरोध किया गया था। (करवीर गजट : १० अगस्त १९१८) यहां पर यह तथ्य ध्यान में रखना चाहिए कि किसी भी राजा का अनुरोध राजाज्ञा के समकक्ष ही होता है।

महाराष्ट्र का शासकीय और बौद्धिक क्षेत्र का एक बहुत बड़ा प्रतिष्ठित वर्ग शाहू महाराज को सत्य-शोधक समाज का अनुयायी सिद्ध करने के लिए प्रयत्नशील रहा है। सूर्य प्रकाश की तरह स्पष्ट शाहू महाराज के आर्यसमाजी व्यक्तित्व को यथोचित रूप से स्वीकार करने में उन्हें हिचकिचाहट होती रही है, पर मराठी के सुप्रसिद्ध चरित्रकार (स्वर्गीय) धनंजय कीर और संशोधक श्रीयुत यशवन्त दिनकर फडके ने सप्रमाण शाहू महाराज को प्रथमत: आर्यसमाजी सिद्ध किया है। शाहू महाराज के अन्त:करण में पहला स्थान आर्यसमाज के लिए था। हां, फिर भी इतनी बात अवश्य रही कि वे 'सत्य-शोधक समाजादि' समाज-सुधार में सक्रिय रुचि रखने वाली संस्थाओं को मन:पूर्वक सहयोग देते थे।

गोपाल हरि देशमुख लोकहितवादी जैसे शलाकापुरुष और शाहू महाराज जैसे राजर्षि आर्यसमाज को प्राप्त होने पर भी मूल महाराष्ट्र वासियों के अन्त:करण में आर्यसमाज की जड़ें यथोचित मात्रा में मजबूत नहीं हो पायीं—प्रस्तुत सन्दर्भ में गम्भीरता से विचार होना आवश्यक है। ●

दयानन्द अकेला था

थे न मठ मन्दिर, हवेली हाट ठाट बाट।
सोना चांदी कहां पास, पैसा था न धेला था॥

तन पे न थे सुवस्त्र हाथ थे न अस्त्र शस्त्र।
योगी न जमात, कोई चेली थी न चेला था॥

सत्य के सिरोहि से संहारे सब असत्य मत।
संकट विकट मरदानगी से झेला था॥

सारी दुनिया के लोग एक ओर थे 'प्रकाश'।
एक ओर निर्भय दयानन्द अकेला था॥

—प्रकाश कविरत्न

युग-विधाता दयानन्द

—स्वामी श्रद्धानन्द

एक यूरोपियन विचारक ने लिखा है—

"किसी युग का आदर्श मध्यस्थ संशोधक अपने समकालीन पुरुषों की अधिक संख्या की दृष्टि में अवश्यमेव पीछे की ओर ले जाने वाला प्रतीत होता है। इसके कई कारण हैं परन्तु मुख्य कारण एक ही होता है जो विविध दृष्टियों से देखा जाता है। सच्चा संशोधक वह मनुष्य नहीं है जिसमें समय की क्षणिक आवश्यकता को पूरी करने के लिए कोई नई बात गढने की मौलिकता हो। सच्चा संशोधक वह है, जो प्राचीन संशोधकों के काम के अन्दर घुसकर उनके विचारों के स्वाध्याय से, स्थिर मूल्य और महत्व के सिद्धान्तों को चुन लेता है।"*

भारत में यह सर्वमान्य सच्चाई है कि आत्म-ज्ञान के प्रसारक बाल-ब्रह्मचारी स्वामी शङ्कराचार्य के पश्चात् बालब्रह्मचारी दयानन्द ने ही सच्चे संशोधक का आसन ग्रहण किया था। वे अपने प्रधान ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के अन्त में लिखते हैं— "सर्वतन्त्र सिद्धांत अर्थात् साम्राज्य, सार्वजनिक धर्म जिसे सदा से सब मानते आए······वही सब को मन्तव्य··· 'अब जो वेदादि सत्य शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्तो के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं।···मैं अपना मन्तव्य उसको जानता हूं कि जो तीन काल में सब को एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है।"

ससार में ऐसे विरले ही लोग होते है। जो सर्वथा किसी नये सिद्धांत का प्रादुर्भाव करे। तत्व-वेत्ता वे नही कहाते जो किसी नये सिद्धांत का प्रादु-र्भाव करे क्योकि इन अर्थों में तत्ववेत्ताओं की संख्या छंटते-छटते शायद शून्य तक पहुंच जाये। तत्ववेत्ता वे कहाते हैं जो पहले से विद्यमान अनेक सिद्धांतों की परीक्षा कर एक नवीन रूप तथा अपेक्षतया सत्य के अधिक पास विद्यमान सिद्धांत का प्रकाश तथा व्याख्यान करे। तत्ववेत्ता का काम ठीक-ठीक चुनाव करना है, नई घडन्त करना नहीं। इस अनन्त जीर्णाङ्ग ससार मे भला नई घडन्त कैसे सम्भव है? उपस्थित सच्चाइयों मे से चुनाव किया जा सकता है, उनमे से किसी एक का विस्तार भी

---

* The typical central reformer of any age necessarily appears, to a large majority of his contemporaries, as a retrogade, for several reasons : which, however, are probably one, seen under several aspects. The true reformer is not the man who has sufficient originality to present something new, to meet some accidental need of the moment, but he who goes back to the work of ancient reformers, carrying to the study of their work sufficient genius to select out, among their data, those of permanent value and importance

किया जा सकता है किन्तु किसी नई सच्चाई का सर्वथा उद्भव करना असम्भव है। कपिल मुनि भारी दार्शनिक थे किन्तु उनका दर्शन "प्रजामेका लोहितशुक्लकृष्णां" इत्यादि उपनिषद् वाक्य का व्याख्यान मात्र था। यूरोप के विकासवादी डार्विन, हर्बर्टस्पेंसर और वीजमैन तत्ववेत्ता कहाते हैं, किन्तु वस्तुत: वे भी कपिलमुनि के परिणामवाद के व्याख्याता मात्र ही हैं। तत्ववेत्ता सच्चाई के उद्भावक नहीं होते किन्तु चुनने वाले और व्याख्या करने वाले होते हैं। चुनना तथा व्याख्या करना तत्ववेत्ताओं के सम्बन्ध में बहुत बडे महत्व को पा जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि तत्ववेत्ताओं का कार्य चुनाव तथा व्याख्यान का है। इस दृष्टि से ऋषि दयानन्द ने वेदादि सत्य शास्त्रों मे से जिन छिपे रत्नों को चुनकर जनता के सामने रखा उन्हें देख दयानन्द की बुद्धि का चमत्कार प्रतीत होता है।

युग की आवश्यकता

दयानन्द के कार्यक्षेत्र मे आने के समय यद्यपि भारत मे कई छोटे-बडे सम्प्रदाय काम कर रहे थे परन्तु सब के सब अपने पुराने आदर्शों से गिर चुके थे। विचार स्वातन्त्र्य का ऐसा तिरोभाव था मानो उसका कभी प्रादुर्भाव ही नही हुआ हो। धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक पराधीनता ने भारत-सन्तान को मुर्दा बना दिया था। किसी क्षेत्र में भी भारत-निवासियों को दासता की जंजीरें काटने का साहस नही होता था। ऋषि दयानन्द ने अन्य संशोधकों की तरह बाह्य कुरीतियों से जूझने का प्रयत्न ही नहीं किया प्रत्युत गिरावट के कारणों की तह में जाकर मुर्दा जाति मे प्राण डालने का साहस किया।

धार्मिक सशोधन के क्षेत्र मे मायावाद, प्रकृतिवाद और नैष्कर्म्यवाद तथा शून्यवाद के एकदेशीय जालों को छिन्न-भिन्न कर दयानन्द ने कर्मवाद तथा त्रयीवाद की स्थापना करके समकालीन सम्प्रदायों की सब कमियों को पूरा कर दिया। मूर्ति-पूजन, अद्वैतवाद, मृतकश्राद्ध, पाप की क्षमा, अवतारवाद और इसी तरह के बीसियों अन्धविश्वासों के जाल पर वार करने का उस समय किसे साहस होता था? दयानन्द ने दृढता से इन सब का मुकाबला किया। पण्डितों, मौलवियों और पादरियों की दासता से जनता को छुडाने के लिए तर्क के ऐसे बाण छोडे कि सारा जाल कट गया। उन्होंने दिव्यदृष्टि से देखा कि परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति तीनो प्राचीन हैं। उनके परस्पर सम्बन्ध का ज्ञान भी अनादि है। सारे ससार के सम्प्रदायों का स्रोत भी वही ज्ञान होना चाहिए। जब नवीन कुछ भी नही तो नवीन कल्पना से क्या प्रयोजन? जब सम्पूर्ण मतमतान्तर एक अनादि ज्ञान से ही निकले हैं तो उनमें पराया है ही क्या? जब सब अपने हैं तो उन सब मे पीछे से मिली हुई अविद्या को दूर करना भी अपना ही कर्त्तव्य है। इस उदार दृष्टि से दयानन्द ने किसी मत को भी पराया न समझते हुए, सब में धार्मिक संशोधन का ही प्रयत्न किया। इस सच्चाई को न समझकर साधारण मस्तिष्क वाले पुरुष ऋषि दयानन्द के खण्डनखड्ग की निन्दा करते हैं। परन्तु दीर्घदर्शी पुरुष जानते हैं कि दयानन्द ने जो खण्डनात्मक कार्य किया वह उस उदार आत्मा का कर्त्तव्य ही था। अल्पबुद्धि जन उसे समझ नहीं सकते।

सब से पहले वैदिक धर्म से निकले मतो को सीधा रास्ता दिखलाने के लिए वेदार्थ का सरल मार्ग ऋषि ने दिखलाया। पौराणिकों की बुद्धि चकित रह गई। मुसलमानों में सर सय्यद अहमद ने दयानन्द के महत्व को समझा और उनसे शिक्षा पाकर कुरान का बुद्धिपूर्वक भाष्य प्रारम्भ कर दिया। 'बहिश्त' के नये अर्थ किए और कुरानियों

को अन्धविश्वास से निकालने का यत्न किया। कादियानी मिरजा ने भी अपने मत को चलाने के लिए उसी स्रोत से शिक्षा लेकर भी कृतघ्नता से स्रोत पर लांछन लगाना आरम्भ किया। खालसा-बीरों ने भी अन्धविश्वास की दासता से निकलने का उसी समय पाठ पढ़ा। ईसाइयों में भी खलबली मच गई और उन्होंने भी उस समय से अपनी धर्म पुस्तक के नये-नये भाष्य करने आरम्भ किए।

सामाजिक क्षेत्र में वर्णाश्रम-व्यवस्था को क्रियात्मक स्वरूप देकर दयानन्द ने सारे युग को पलटा दे दिया। ब्रह्मचर्य और सन्यास का शुद्ध स्वरूप अपने जीवन मे दिखा, गृहस्थों को गुणकर्मानुसार, वर्णव्यवस्था की मर्यादा बतला, जहां एक ओर स्वच्छन्दतारूपी बोलशेविज्म से समाज को बचाया वहां दूसरी ओर प्राकृत नियमों के विरुद्ध स्थापित जाति-बन्धन की जंजीरों को तोड कर सामाजिक स्वतन्त्रता की बुनियाद डाली। शताब्दियों से अन्धविश्वास में जकडा हुआ हिन्दू समाज स्थिर सड़े हुए छप्पड़ (कच्चे तालाब) की तरह तामसवृत्ति में बेहोश पडा था, ऋषि ने तालाब को हिलाकर हिन्दुओं को जागृत किया। जो सडांद उठी उससे वह घबरा गए परन्तु जब सम्पूर्ण कीचड बाहर निकाल कर समाजरूपी जल को स्वच्छ कर दिया जाएगा तब हिन्दू जनता ऋषि के उपकार समझेगी।

दयानन्द धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में ही युग का विधाता नहीं हुआ। प्रत्युत—

राजनैतिक क्षेत्र मे भी उसने बडे परिवर्तन कर दिये। आज 'स्वदेश भक्ति' 'साम्राज्य' और प्रजातन्त्र राज्य' की चारों ओर धूम मच रही है, परन्तु ऋषि दयानन्द ने ४२ वर्ष पूर्व राजनतिक शास्त्र की स्पष्ट बुनियाद डाल दी थी। जिस आर्य शास्त्र को एक सत्तात्मक राज्य का गुलाम समझा जाता था उसी में से दयानन्द ने सिद्ध किया कि एक सत्तात्मक राज्य प्राकृतिक नियम के विरुद्ध है। सत्यार्थ-प्रकाश के छठे समुल्लास में तीन सभाओं (विद्यार्य-सभा, धर्मार्यसभा और राजार्यसभा) की बुनियाद डालकर शतपथ ब्राह्मण के प्रमाण से बतलाया कि एक सत्तात्मक राज्य कभी न होना चाहिए, उससे प्रजा का कभी कल्याण नही हो सकता। राजसभा के प्रधान और सभ्यों का परस्पर संबंध जतलाकर राज्य का सम्पूर्ण प्रबन्ध स्वदेशी अधिकारियों के ही आधीन करने पर बल दिया। फिर लक्ष ग्रामों की एक राजसभा के प्रबंध का वर्णन करके लिखा—

"लक्ष ग्रामो की राजसभा को (कर्मचारीगण) प्रतिदिन का वर्तमान जनाया करें और वे सब राजसभा, महाराज सभा अर्थात् सार्वभौम महाराज चक्रवर्ती राजसभा में, सब भूगोल का वर्तमान जनाया करे।" इस प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीय सभा की भी बुनियाद आर्य ग्रन्थ से दिखला दी।

राजनैतिक उन्नति के अभिमानी यूरोप का केन्द्र ब्रिटेन समझा जाता है। कहा जाता है कि इग्लैंड की भूमि पर पैर रखते ही गुलाम आजाद हो जाता है। ब्रिटेन प्रजातन्त्र राज्य का आदर्श समझा जाता था और उसका नाम राष्ट्रीय सभाओं की माता रखा हुआ था परन्तु अन्य देशस्थ मनुष्य-समाजों को दास बनाने मे उसे कोई सकोच नहीं होता और उस राष्ट्र की पार्लियामेंट में भी पहले-पहल यह भाव प्रधानामात्य सर हेनरी कैम्पबैल बैनरमैन ने ही प्रकट किया था कि 'प्रजातन्त्र शासन का स्थान उत्तम शासन भी नहीं ले सकता।" परन्तु उससे भी बीस वर्ष पहले सच्चे संशोधक दयानन्द ने लिखा था।—"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतांतर के आग्रहरहित अपने और पराये के पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी

विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।" इससे बढ़कर स्वराज्य की महिमा कोई क्या करेगा? परन्तु साथ ही दीर्घदर्शी ऋषि ने अयोग्य शीघ्रगामी राजनैतिकों को सावधान भी कर दिया। स्वराज्य प्राप्ति के लिए यत्न प्रत्येक देश-वासी का कर्त्तव्य है "परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग-अलग व्यवहार का विरोध छूटना अधिक दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। इसलिए जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था वा इतिहास लिखे हैं उसी का मान्य करना भद्र पुरुषों का काम है।"

यह बडी कठिन मंजिल है। इसके लिए वेद-शास्त्रों के सिद्धान्तों को समझकर उस पर अमल करना आवश्यक है। जहां धार्मिक और सामाजिक उन्नति क्षेत्र में भारत प्रजा को दयानन्द के पीछे चलकर ही कल्याण-मार्ग सूझा है वहां राजनैतिक क्षेत्र में भी ३१ करोड भारतवासियों को ऋषि दयानन्द के बतलायें मार्ग पर ही चलना पड़ेगा। यह सम्भव है कि झूठें अभिमान में फसकर भारत के वर्तमान नेता ऋषि दयानन्द का नाम लेने में अनाकानी करें परन्तु उन सब को वास्तविक सफलता के लिए चलना उसी के निर्दिष्ट मार्ग पर पडेगा।

आओ ! तत्ववेत्ता, सच्चे सशोधक, युग-विधाता, वर्तमान भारत के भाग्य-निर्माता ऋषि दयानन्द की शिक्षा का गहरी दृष्टि से स्वाध्याय करें।

□

महर्षि दयानन्द का ऋषित्व

विद्याभास्कर डा० कपिलदेव द्विवेदी

प्राचीन भारत में अनेक ऋषि हुए हैं, जिन्होंने अपने मनन, चिन्तन और आत्मदर्शन के द्वारा भारतीय वाङ्मय को समृद्ध किया है। इन ऋषियों के कार्यकलापों के द्वारा ही विश्व में भारत का स्थान गौरवास्पद रहा है। यदि मार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो ऋषि किसी देश विशेष से संबद्ध न होकर सार्वभौम व्यक्ति होता है। उसका मनन, चिन्तन और आध्यात्म-दर्शन सार्वभौम विषयों पर होता है। विश्वहित, विश्वबन्धुत्व और विश्वप्रेम को अपना आदर्श मानकर तदर्थ प्रयत्न करता है।

'ऋषिः दर्शनात्', 'ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः' ऋषि शब्द का अर्थ है—दर्शन। दर्शन का अभिप्राय है विश्व के गूढ तत्वों का आध्यात्मिक साधना आदि के द्वारा साक्षात्कार करना। अतः ऋषित्व पद की प्राप्ति के लिए अनिवार्य है कि वह अन्तर्दृष्टि होकर निगूढ तत्वों का चिन्तक हो। योग्यता और प्रतिभा के अन्तर के कारण यह चिन्तन उच्च या सम्मान्य स्तर का होता है। अतएव ऋषियों के कुछ काल्पनिक भेद किए गए हैं, जो स्वाभाविक न होकर व्यावहारिक कोटि में आते हैं। यथा—ऋषि, राजर्षि, महर्षि और ब्रह्मर्षि। ऋषित्व के लिए अन्तर्दृष्टि होकर चिन्तन करना आवश्यक है। जो अन्तर्दृष्टि होकर राजकीय सुविधाओं का उपयोग करते हुए देशहित और समाजहित का सम्पादन करता है, उसे राजर्षि कहते थे। जो अन्तर्दृष्टि के साथ-साथ आत्मिक शक्ति और मनोबल का उपयोग करते हुए विश्वहित, विश्वबन्धुत्व आदि का सम्पादन करता था, वह महर्षि की कोटि में आता था। जो अन्तर्दृष्टि के साथ अध्यात्म-चिन्तन में ही तल्लीन हो जाता था, उसे ब्रह्मर्षि की उपाधि से अलंकृत किया जाता था।

इस दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होता है कि स्वामी दयानद महर्षि की कोटि में आते हैं। उन्होंने अध्यात्म चितन के साथ ही विश्वहित, देशहित और समाजहित को कभी नही भुलाया। उन्होंने सृष्टि की उन्नति के लिए समष्टि की उन्नति और समष्टि की उन्नति के लिए व्यष्टि की उन्नति को अनिवार्य समझा। दूसरे शब्दों में इसको इस प्रकार रखा जा सकता है कि व्यक्ति की उन्नति के लिए समाज की उन्नति आवश्यक है और समाज की उन्नति के लिए व्यक्ति की उन्नति परमावश्यक है। दोनों का समन्वय अनिवार्य है। महर्षि ने इस समन्वय को स्थापना के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की और आर्यसमाज के नियमों में व्यक्तिगत उन्नति के साथ ही समाज की उन्नति को आवश्यक बताया है।

यदि हम महर्षि दयानन्द की प्राचीन ऋषियों से तुलना करते हैं तो कई दृष्टि से महर्षि दयानन्द का स्थान उनसे उच्चस्तरीय ज्ञात होता है। (१) प्राचीन ऋषि व्यक्तिगत उन्नति को प्रधानता देते थे और सामाजिक उन्नति की प्रायः या सर्वथा

उपेक्षा करते थे। यह श्रेय महर्षि दयानन्द को है कि उन्होंने वैयक्तिक और सामाजिक उन्नति का समन्वय किया। (२) उन्होंने केवल आदर्शवाद या उपदेश रूप मे ही वह शिक्षा नहीं दी, अपितु अपने व्यक्तिगत जीवन को भी उन्होंने इसके आदर्श के रूप मे प्रस्तुत किया। एक ओर वेद, शास्त्र और दर्शन आदि आर्षग्रथों का अध्ययन, मनन, चिन्तन और प्रवचन आदि किया और दूसरो ओर समाज सेवा और जनहित के व्रत का अक्षुण्ण पालन किया। (३) प्राचीन ऋषियों ने समाज की गति-विधि को सन्तुलित करने की ओर बहुत कम ध्यान दिया था, परन्तु महर्षि ने इस न्यूनता को गभीरता से अनुभव किया और समाज को सन्तुलित रखने के लिए सामाजिक त्रुटियों का निराकरण करना परम आवश्यक समझा। उन्होने सामाजिक त्रुटियो को दूर करने के लिए सभी सम्भव उपायों का अवलम्बन किया। उन्होंने अशिक्षा, सामाजिक असमानता आदि को दूर करने के लिए सभी प्रकार से आन्दोलन किए। (४) महर्षि ने सब से पहले यह अनुभव किया कि जब तक देश स्वतन्त्र नहीं होगा, तब तक न स्वाभिमान जागृत होगा, न मनोबल ऊचा होगा, न सामाजिक सगठन का स्तर उच्च होगा और न स्वदेशी भाषा, कला और सस्कृति का ही उद्धार होगा, अतः उन्होने देश की स्वाधीनता को प्रमुखता दी और सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों मे इस विषय को बार-बार दुहराया है। (५) स्वदेशी भाषा, और सस्कृति की ओर सर्वप्रथम उन्होने ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने सस्कृत भाषा की सार्वभौम उपयोगिता और ग्राह्यता के कारण ही प्रत्येक आर्य के लिए संस्कृत का ज्ञान अनिवार्य बनाया है। साथ ही उन्होने अनुभव किया कि राष्ट्रीय भाषा के रूप मे हिन्दी को ही राष्ट्रीय भाषा का पद प्रदान किया जा सकता है। उन्होंने हिंदी के लिये 'आर्यभाषा' शब्द को अधिक उचित और अनुपम समझा। स्वयं गुजराती होते हुए भी उन्होने अपने ग्रन्थ संस्कृत और आर्य भाषा में ही लिखे है। (६) समाजवादी सुधारकों में महर्षि का नाम अग्रगण्य है। उन्होंने समाज में प्रचलित सभी बुराइयों के उन्मूलन के लिए उनके विरुद्ध आन्दोलन किए। उन्होंने समाज-सुधार सबंधी अनेक ऐसे कार्य किए, जिनकी ओर उनसे पहले किसी भी ऋषि या सुधारक ने गम्भीरता से कार्य नहीं किया था। जैसे स्त्री-शिक्षा, स्त्रियों को समाज मे समानाधिकार, अस्पृश्योद्धार, अनाथालयों की स्थापना, विधवाओं की हितचिन्ता और विधवा-विवाह की प्रक्रिया प्रारम्भ करना, शुद्धि-आन्दोलन आदि।

यह सत्य है कि प्रत्येक युग के ऋषियों और महर्षियों के सम्मुख समस्याएँ पृथक् थीं। अत्यन्त प्राचीन काल में उपर्युक्त कतिपय समस्याएँ थी ही नहीं। अतः उनके निराकरण आदि का प्रश्न ही नहीं उठता। देश स्वाधीन था, सस्कृत और प्राकृत भाषाएँ ही यहां व्यवहृत होती थी। सामाजिक गतिविधि को सन्तुलित करने के लिए स्मृति ग्रन्थों ने अच्छा योग दिया है, तथापि प्राचीन ग्रथों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उस समय कुछ सामाजिक कुरीतियां और विषमताएँ थीं, परन्तु किसी भी स्मृतिकार आदि ने उन कुरीतियों और विषमताओं के विरुद्ध कोई कठोर प्रतिक्रिया घोषित नही की है। जैसे—यज्ञों में पशु बलि, स्त्रियों को समानाधिकार का अभाव, अस्पृश्यता आदि। महर्षि ने सर्वप्रथम इनके विरुद्ध अपनी प्रतिक्रिया घोषित की है।

इसी प्रकार वेदभाष्यों के सबध मे भी हम महर्षि के दृष्टिकोण को और वेदभाष्य की पद्धति को अधिक उचित और उपयोगी पाते हैं। प्राचीन भाष्यकारो ने श्रौत और गृह्यसूत्रों का आश्रय

(शेष पृष्ठ ६५ पर)

वे महिला जो मारीशस में रहने के बाद ऋषि से मिली थीं

ले०—श्री ग० गंगाराम, १४ शुकदेव विष्णुदयाल मार्ग, पोर्ट लुइस, मारीशस

स्वामी जी को न अमेरिका की यात्रा करनी पड़ी और न विलायत की। सन् १८७५ में जहां बम्बई में आर्यसमाज की नींव रखी गई वहां अमेरिका में थियोसोफ़िकल सोसाइटी ने जन्म ग्रहण किया। इसे जन्म देने वाले भारत पधारे और स्वामी जी से मिले।

आर्यसमाज के जन्मदाता ने कोई नया धर्म नहीं दिया है। जो भी महानुभाव उनसे मिलकर यह आग्रह करते थे कि आप मेरी सोसाइटी के समर्थक हों तो वे उसके समर्थक या सहायक बन जाते थे। जब उन्हें दिखाई देता था कि नये पंथ वाले पूरी तरह से वेदों को नहीं मानते हैं वे उनसे अलग हो जाया करते थे।

सोसाइटी वालों के भारत पधारने पर स्वामी जी के शिष्य श्याम जी श्री कृष्ण वर्मा ने उनका स्वागत सत्कार किया।

श्रीमती गार्डन

सोसाइटी के जन्मदाता कर्नल आलकाट ने लंका की भी यात्रा की जिसके गार्डन नामक राज्यपाल थे। श्रीमती गार्डन जब भारत आई हुई थीं तब वे महर्षि से मिलीं।

इस तथ्य से मारीशसीय अनभिज्ञ थे। श्रीमती गार्डन अपने पतिदेव के साथ मारीशस में रह चुकी थीं। पहले पहल गार्डन ने जो उस समय मारीशस के राज्यपाल थे अपनी पत्नी को मारीशस मे बुलाकर वहां उन्हें ठहरवाना न चाहा था। राज्यपाल पांच साल तक एक उपनिवेश में रहा करते थे। राज्यपाल गार्डन तो चार ही साल रहे।

वे विलायत के प्रधानमन्त्री के पुत्र थे। उन्हें मारीशस के सर्वश्रेष्ठ राज्यपाल बताने मे किसी को हिचकिचाहट नहीं है। उनका देहान्त दि० ३० जनवरी १९१२ को हुआ। इस कारण से एक ओर उन में और ऋषि में मारीशसीय सादृश्य पाते हैं जिनका निधन दिवाली की रात ता० ३० को ही हुआ, यद्यपि मास तो अक्टूबर था और दूसरी ओर उनमें और महात्मा गांधी में साम्य पाते हैं जिन का बलिदान ३० जनवरी को हुआ।

श्रीमती गार्डन कैसे अपने पतिदेव तथा श्वसुर या श्वसुर के अन्य सम्बन्धियों को न बताती कि मैं भारत के महापुरुष दयानन्द नाम के स्वामी से मिली हू।

स्वामी जी उन्नीसवी सदी मे चल बसे और बृहत्तर भारत में उस शताब्दी में कहीं पर भी आर्यसमाज की स्थापना हुई ही नही।

सबसे पहले अफ्रीका में आर्यसमाज का पदार्पण हुआ। भाई परमानन्द जी डी० ए० वी० कालेज में पढ़ाते थे जबकि वर्तमान शती के आरम्भ में वैसे

ही पंजाब को छोड़कर धर्मप्रचार करने सुदूर दक्षिण अफ्रीका पहुंचे। ठीक जिस तरह उसी कालेज के प्राध्यापक प॰ चारुदेव शास्त्री दक्षिण भारत में आर्यसमाज का सदेश देने के विचार से पधारे थे। इस सस्कृत के विद्वान का १९८७ में शरीरान्त हुआ जब कि वे ९० वर्ष की वय के थे।

ऐसी दशा में कोई भी प्रवासी कैसे १८८३ मे या उससे पहले भारत की यात्रा करके स्वामी जी के दर्शन करने को उत्सुक होता? प्रवासियों से परिचित होकर एक अभारतीय देवी को तो ऋषि के दर्शनो का लाभ हुआ।

राज्यपाल गार्डन का कार्यकाल १८७१ से १८७४ तक रहा। उसके एक हो साल बाद आर्यसमाज ने जन्म ग्रहण किया।

वे तत्पश्चात् लका के राज्यपाल हुए जब आल्काट उनसे और श्रीमती गार्डन से मिले। इस राज्यपाल मे इतनी उदारता थी कि उन्होने बौद्धों के द्वारा मनाये जाने वाले किसी त्यौहार के दिन छुट्टी देना आरम्भ किया। ब्रिटिश साम्राज्य में गैर ईसाइयों का ऐसा सम्मान किया नहीं गया था।

मारीशस में जब ऐसी छुट्टी मिलने लगी तब प्रवासी तत्व को जगाया गया, उसमें नवजीवन सचारित किया गया।

इस द्वीप की जनसख्या के चार तत्वों मे प्रवासी भारतीय तत्व का चौथा स्थान था। नवजागरण काल में यह मार्ग दर्शन करने लगा।

१९२२ में कलकत्ते की "माडर्न रिव्यू" मे एक चिट्ठी छपी जिसे पढकर क्या भारत क्या विशाल भारत मे लोग दुखी हुए। उसमें यही बताया गया था कि प्रवासी तत्व का मारीशस में क्षय हो रहा है।

INDIANS IN MAURITIUS

Indian business men will, while doing business, do their duty in helping a declining Indian population who by its perseverance has upheld the dignity of the Indians and raised him from the coolie status to that of a planter holding his own against all viccisitudes of life and the tyranny of the other Communities —R. Gajadhar

(The Modern Review for February 1932)

चिट्ठी के लेखक ने भारत के व्यापारियों से मदद देने की हृदय विदारक अपील की थी क्योंकि प्रवासी संकट से गुजर रहे थे और अप्रवासी उनके साथ दुर्व्यवहार करते थे।

सात-आठ वर्ष पश्चात् अर्थात् १९३९ में मदद न मिलने पर एक अपूर्व आन्दोलन खडा किया गया। उसने साक्षरता का प्रचार किया। गुजरात के सुपुत्र दयानन्द और गांधी हिन्दी के हिमायती हो गये थे। उनके पदचिह्नों पर चलकर उत्साही मारीशसियों ने इस द्वीप का उत्थान किया।

स्वामी विवेकानन्द ने भारत माता की सेवा की परन्तु हिन्दी का प्रयोग कर पाते तो समस्त भारत को जागृत कर छोड़ते। ऋषि ने बगाल में ही प्रेरणा पायी थी। ब्रह्मसमाज के नेता केशवचन्द्रसेन का प्रस्ताव था कि हिन्दी से काम लिया जाये। अपनी युवावस्था मे स्वामी विवेकानन्द इस समाज के सदस्य रहे। प्रथम हिन्दी पत्रों को ब्रह्मसमाज ने ही चलाया था। कम से कम जब वे अनेक बार अमरीका तथा योरुप की यात्रा करके भारत लौटे तो उन्हें सूझ जाना चाहिए था कि हिन्दी अपनानी चाहिए।

मारीशस ने हिन्दी मे अच्छी भूमिका निभायी। एक अमेरिकी विश्वविद्यालय के "आधुनिक मारीशस" नाम वाले प्रकाशन में हिन्दी के एक उत्साही

प्रचारक का रोचक चित्र खींचा गया है। ग्रन्थकार का कथन है कि उस हिन्दी के सेवक के पास दो शस्त्र थे, एक उसका धैर्य, और दूसरा उसका श्यामपट। ग्रन्थकार के अपने शब्द हैं—

'Armed with a black board and infinite patience he and his teachers prepared thousands of=

—"Modern Mauritius"

Indiana university Press, 1982

इस सेवक के दो हजार स्वयं-सेवक साथी थे जो मेलों मे इनके श्यामपट पर लिखे गये अक्षर अ, आ, इत्यादि बताते थे। स्त्री- पुरुष इस तरह हिन्दी को चन्द दिनो में सीख लिया करते थे।

अभी हाल में लोगों को ग्लानि हुई जब यह समाचार फैला कि प्रशान्त महासागर के फीजी द्वीप-समूह में सरकार का तख्ता पलटा गया। सैनिक क्रान्ति के होते ही हम विक्षुब्ध हुए।

वहा भी धर्म प्रचार हुआ, हिन्दी सिखाई गई, हिन्दी पुस्तके लिखी गईं। हिन्दी अपनाकर भी हजारों प्रवासियों ने धैर्य को त्याग दिया। श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी ने जो बृहद् ग्रन्थ फिजी के बारे में लिखा उसमे यह बताया गया है कि २५ हजार प्रवासियों ने फिजी को छोडा। उस देश की कुल आबादी सात लाख की है। पच्चीस हजार एक बडी संख्या है। वहां हिन्दी वह चमत्कार न कर सकी जो उसने मारीशस में किया। आज फीजी की स्थिति हमे चिन्ताग्रस्त कर रही है। भारतीय मूल के उस देश के निवासियों को बार-बार संघर्ष करना पडेगा। सघर्ष करने में ४८ और २५००० व्यक्तियों का सहयोग होता तो यह स्पष्ट हो जाता कि ४८ प्रतिशत नही, ५१ प्रतिशत के साथ अन्याय किया जा रहा है। शेष प्रवास को फिजी के प्रवासियों के साथ पूरी सहानुभूति है।

मारीशस में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना अपेक्षाकृत कठिन था। अंग्रेजों ने डेढ सौ साल शासन किया था और अंग्रेजी सब को पढनी पडी। उस से पूर्व यह देश फ्रेञ्च शासकों द्वारा शासित था फ्रेञ्च का बोलबाला इसीलिए हुआ।

अठारहवी और उन्नीसवीं सदी में फ्रेञ्च योरोपियों की राजनीतिक भाषा ही नहीं उनकी व्यापारिक भाषा थी।

प्रतिष्ठा प्राप्त दो भाषाओं का जिस देश में प्रभुत्व है उस मे हिन्दी ने अपना स्थान बना लिया। श्यामपट की सहायता से हिन्दी पढाने वाले ने लोगों से भोजपुरी बोलते रहने का आग्रह किया और कहा कि हिन्दी वह भाषा है जो अत्युत्तम है, यह न फ्रेंच से कम है न अंग्रेजो से। तीनो भाषाओं के शब्दों का उच्चारण करके उन्होंने यह प्रमाणित किया कि इन मे हिन्दी सर्वश्रेष्ठ है, इसमे प्रत्येक व्यजन का एक ही उच्चारण है, कोई हिन्दी मे कुछ पढे तो सुनने वाला बिना गलती लिखता रहेगा। अंग्रेजी भाषा में कई त्रुटियां न होती तो भारतीय 'जाकोल्यो' लिखते न कि 'जाकोल्यट' उनका दावा था कि हिन्दी पढने वाले सस्कृत ग्रन्थ पढ पावेंगे यद्यपि समझ न सकेंगे कि शब्दों के अर्थ क्या हैं।

पादरी तक इनके गृह पर आकर इनसे हिन्दी सीखने लगे। पादरी लोग ही तो प्रवासियो पर अपना धर्म अपनी सभ्यता थोपते रहे। पादरी सुनाया करते थे कि हिन्दी वह भाषा है जो नौकरों से बातचीत करने के लिए है, उस भाषा को साधु, पण्डित सिखाते हैं। जब अंग्रेजी और फ्रेञ्च पर अधिकार रखने वाले हिन्दी के पक्षधर हुए तो हिन्दुओं का ईसाईकरण करना टेढी खीर हो गई।

प्रवासी तत्त्व कुल आबादी का १९३२ में ६३ प्रतिशत भाग हो गया था। इसीलिए करुण क्रन्दन हुआ था। ६३ से ६८ प्रतिशत हो गया। देश खास कर के हिन्दी के अपूर्व ढग से किये गये प्रचार के

कारण १९६८ में स्वतन्त्र हो गया।

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं से परिचित वयस्क मतदाता बन गये। उन्होंने स्वराज्य की मांग की। फ्रेञ्च भाषी तथा अंग्रेजी भाषी चिल्लाते रहे। उनकी दाल न गली।

१८६८

१८६८ में एक दो घटनाएँ घट चुकी थीं जिनका सहसा स्मरण हुआ।

जन-जन को सुनाया गया कि ऋषि के गुरु दण्डी जी का देहावसान १८६८ में हुआ था। उन्होंने १८५७ में देशभक्तों को आशीर्वाद दिया था। उनके महान् शिष्य भारत को स्वतन्त्रता की ओर ले जा रहे थे जब उनका स्वर्गवास हो गया।

गुरु चिन्तित हो उठे थे। शिष्य ने १८६३ में मथुरा को छोडा था किन्तु उन्होंने कोई सस्था न बनाई थी और न ही ऐसा ग्रन्थ रचा था जिसमें भारतीय धर्म का प्रतिपादन किया गया हो। शिष्य ने मथुरा में पधारकर अपने गुरु को निश्चिन्त होने को कहा। कार्य ऐसा था जो जल्दी होने वाला न था।

फ्रास में तो एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित हो गई थी जिसमें प्रमाण देकर उसके लेखक ने बताया था कि वेद और विज्ञान में विरोध नहीं है, वैदिक काल में भारतीय नारियों का समादर किया जाता था, वेद का अवलोकन मानव धर्मशास्त्र के अवलोकन के साथ करना चाहिए। लेखक ने असख्य मनुस्मृति के श्लोक अपने ग्रन्थ में दिये थे। उन्होंने संस्कृत से व्युत्पन्न फ्रेन्च शब्दों की लम्बी सूची दी थी, भारत को गुरु का पद दिया था।

ग्रन्थ का नाम था "ला बिब्ल दाँ लेद" या "भारत में इजील" और ग्रन्थकार था लुई जाकोल्यो।

यह ग्रन्थ १८६८ के आरम्भ में मारीशस की राजधानी पोर्टलुई में बिकता था। कोई इसकी एक प्रति खरीदकर गुरुवर्य स्वामी विरजानन्द को भारत जाकर दे सकता था। इसमें जरा भी सदेह नहीं कि दण्डी जी प्रसन्न होकर कह उठते, यही तो वांछित पुस्तक है।

तीन सत्यार्थप्रकाश

यह और कुछ नहीं वह सत्यार्थप्रकाश है जो ऋषिकृत आदिम सत्यार्थप्रकाश तथा असली सत्यार्थप्रकाश से पहले संसार को मिला। इसे भारतीयों से पहले मारीशस के प्रवासियों ने देखा। ग्रन्थ सचमुच बढिया है। उसका १८६९ में अंग्रेजी मे रूपान्तर हुआ और उसके एक अश को ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास के आरम्भ में दे भी दिया।

जब ऋषि के प्रधान शिष्य पजाब केसरी लाला लाजपतराय ने अपने गुरु की जीवनी लिखी तो उन्हें यह कहना पडा—

"क्या विस्मय का स्थान है यदि फ्रांसीसी 'जाकोल्यो' आर्यावर्त्त को cradle land of faith अर्थात् वह भूमि जिसकी गोद मे ईमान और धर्म ने शिक्षा पाई, कहता है ?"

लाजपतराय की किताब उन्नीसवीं सदी के अन्त में छपी, ऋषि के दूसरे शिष्य महात्मा मुशीराम ने १९१६ मे लिखा—"भारतीय होने के कारण सन्देह हो सकता है कि अपने पूर्वजों की सम्मति समझ कर ही दयानन्द ने वेद को ससार में फैले हुए ज्ञान का स्रोत माना हो, परन्तु उनसे पहले भी निष्पक्ष विद्वान यह साक्षी देते रहे हैं। उदाहरण मात्र के लिए फ्रांस के प्रसिद्ध लेखक Louis Jacolliot की पुस्तक Bible in India में से कुछ उद्धरण दिये जाते हैं जिनसे सिद्ध होगा कि ऋषि दयानन्द का विश्वास निराधार नहीं है।

'प्रमाणता की दृष्टि से बहुत ही पुराने लेखपत्रों पर भी वेदो की प्राचीनता निर्विवाद है। यह पवित्र पुस्तकें, जो ब्राह्मणों के मतानुसार परमात्मा की विकसित वाणी है, भारतवर्ष में उस समय से बहुत सम्मानित थी जब कि अभी फारस, लघु एशिया, मिश्र, देश तथा योरुप में न अधिनिवेश हुआ और न बसाए गए थे।'

महात्मा मुशीराम ने जो अंतिम उद्धरण दिया, वह यह है—'हम देखेंगे कि मिश्र, जूडिया, यूनान, रोम सर्वप्राचीन देश अपने जातिभेद, अपनी कल्पनाओं, अपने धार्मिक विचारों में ब्राह्मण समाज का ही अनुकरण करते हैं और इसके ब्राह्मणों, इसके पुरोहितों, इसके याज्ञिकों को स्वीकार करते हैं जिस प्रकार की पहले से ही उस प्राचीन वैदिक समाज की भाषा, धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र को अंगीकार किया था जिस (वैदिक समाज) से उनके गुरु भूगोल में प्रारम्भिक ईश्वरीय ज्ञान के उच्च विचारों को फैलाने के लिए निकले थे।

युवा बैरिस्टर गांधी दक्षिण अफ्रीका पधारे हुए थे जब उन्हें एक खुली चिट्ठी लिख कर समझाना पड़ा कि उस देश मे जो भारतीय मजदूर विद्यमान थे, असभ्य न थे उनके साथ सद्व्यवहार करना आवश्यक है। प्रमाणस्वरूप उन्होने जोकोल्यो की उन्हीं पंक्तियो को उद्धृत किया था जो ऋषि ने उनसे पहले उतारी थी।

एक मारीशसीय जाकोल्यो के भतीजे से मिले

जब तक मारीशस मे आर्यसमाज का पदार्पण न हुआ प्रवासी भारतीयों ने जाकोल्यो की किताब को ही पढ़ने के लिए चुना था। एक अध्यापक ने भारत यात्रा की और वहां वे जाकोल्यो के भतीजे से मिले ठीक जिस तरह विगत शती में श्रीमती गार्डन ऋषि से मिली थीं। वे प्रवासी अन्ततः फ्रांस जाकर वही रहने लगे। उन्होने एक फ्रेन्च पत्रिका का सम्पादन करना शुरू किया। इतने में March of India पत्रिका में एक जाकोल्यो सम्बन्धी लेख प्रकाशित हुआ जिसे उन्होने पसन्द करके अपनी पत्रिका में उतारा, फ्रांस की पत्रिकाएँ मारीशस भेजी जाती ही हैं। यहां वह पत्रिका मिली। मारीशस के सबसे लोकप्रिय दैनिक पत्र ने समस्त लेख को उतारा। भारत मे इस लेख का संस्कृत में रूपान्तर किया गया और संस्कृतभवितव्यम् में वह छपा।

आर्यसमाज का पंजाब मे सिक्का खूब जमा, किन्तु जहाँ तक जाकोल्यो की किताब का सम्बन्ध है अन्यत्र भी उसका प्रभाव पडा। संवत् १९७० वि० मे स्व० सन्नूलाल गुप्त की पुस्तक "कृष्ण के क्राइस्ट" का बुलन्दशहर (यू० पी०) मे प्रकाशन हुआ। उस मे ये पंक्तियां पायी जाती हैं।

"जस्टिस जैकोलियट कहते हैं कि मैंने मनुस्मृति को समझने की कोशिश की जिसको ब्राह्मणों ने मन्दिरों मे बैठ बैठ कर उस जमाने के युगों पहले बनाया था जबकि इब्रानियों के कवायद की तख्तियां मेघों की गर्जन और बिजलियों में सिनाई पर्वत पर से उतारी गई थी। (I sought to understand those laws of Manu which were administered by Brahmans under the porches of pagodas ages and ages before the tables of Hebrew law had descended amidst thunders and lightnings from the heights of Sinai—Bible in India)"

भारत मे इंजील की चर्चा सर्वप्रथम १८६८ में फ्रांस और मारीशस मे हुई, तत्पश्चात् १८६९ में भारत में जब उसका अंग्रेजी में रूपान्तर किया गया, उन्नीसवी शती के अन्त में दक्षिण-अफ्रीका में जब उसके एक अंश का समावेश गांधी जी द्वारा लिखित याचिका मे हुआ, पंजाब में १९१९ में जब

लाला मुंशीराम ने अपने मित्र लाजपतराय के बाद इस अद्भुत ग्रन्थ की ओर लोगों का ध्यान खीचा तथा १९१३ में बुलन्दशहर में वहाँ के आर्यसमाज के एक सदस्य ने अपनी पुस्तक में भारत के विदेशी प्रशंसकों के नाम गिनाते हुए इस फ्रेन्च (मनीषी) का उल्लेख किया।

[1] जो पुस्तक १८६८ में प्रकाशित हुई उसकी चर्चा आज भी हो रही है। जाकोल्यो ने एक नही, १५ भारत सम्बन्धी पुस्तके लिखी जिनमे से एक है जिसका "कृष्ण और क्राइस्ट" शीर्षक है। कृष्ण से क्राइस्ट बनाया गया है यह जाकोल्यो का दावा है। बंगाल में "किष्टो" नाम देने की प्रथा है। जब भारतीय मारीशस में पहले-पहले आये थे तो बंगाल के बहुत निवासी पधारे थे। मारीशस फ्रांस का उपनिवेश था जब एक फ्रेन्च लेखक ने 'पॉल और विर्जिनी" नाम का उपन्यास लिखा था जिसमें बगाल की बार-बार चर्चा की गई है। अब भी कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा मारीशस में परीक्षाएँ होती हैं। हिन्दी भाषियो के बच्चे हिन्दी विषय लिया करते हैं। उक्त विश्वविद्यालय ने "पॉल और विर्जिनी" का हिन्दी अनुवाद पाठ्यक्रम मे रखा है।

जाकोल्यो बगाल मे ही सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे। वे फ्रेन्च भारत में जो चन्द्रनगर नाम से खास स्थान है, वहीं रहते थे। १८५६ में उक्त उपन्यास का बंगला मे उल्था हुआ था। उस के पाँच साल बाद कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म हुआ। उन्होंने अपनी किशोरावस्था में उसे पढा था।

इस उपन्यास मे भारत की इतनी प्रशंसा की गई है कि जब इसका अग्रेजी मे रूपान्तर किया गया, रूपान्तरकार ने अपनी ओर से "पॉल एण्ड वर्जीनिया" के साथ "एक भारतीय कथा" नाम जोडा।

जाकोल्यो की पुस्तक का हिन्दी अनुवाद

लाला मुंशीराम का लेख १९१६ मे छपा था। श्री सन्तराम बी० ए० ने समस्त "ला बिब्ल दाँ लेंद" को हिन्दी का जामा ५-६ साल बाद पहना दिया। जिस पजाब ने आर्यसमाज का स्वागत किया था, वह इस 'सत्यार्थप्रकाश' को कैसे न अपनाता ? उसकी भूमिका भाई परमानन्द ने लिखी।

पजाब की देखा-देखी मारीशस ने १९५६ मे इस किताब को उसके हिन्दी अनुवाद तथा अग्रेजी भाषान्तर के साथ प्रकाशित किया। जो भाई

---

१ अब यह बता देना चाहिए कि इस पुस्तक के प्रकाशन के ५ साल पहले फ्रास मे ही मिशले नाम के एक प्रसिद्ध लेखक वाल्मीकीय रामायण का फ्रेन्च भाषान्तर पढकर मन्त्रमुग्ध से हो गये थे। उन्होंने 'ला बिब्ल द लिमानिते' नाम की पुस्तक लिखी थी।

रामायण को क्षीर सागर कहा था, उनका मत था कि यही मानवमात्र की इजील है। पुस्तक के नाम का अनुवाद होगा, 'मानवो की बाइबल'।

रोमेरोला ने परमहस रामकृष्ण की जीवनी के आरम्भ मे ही, जिसमे ऋषि की सक्षिप्त जीवनी है, मिशले के रामायण विषयक मत को उतार रखा है। रोमेरोला ने अपने उपन्यास 'जा क्रिस्तोफ' में गोता की प्रशसा की है।

यह अनुमान गलत न होगा कि जाकोल्यो ने मिशले की किताब का नाम देखकर ही अपनी पुस्तक का नाम रखा—'भारत मे बाइबल।'

हमारे एक-एक ग्रन्थ का विदेशियो पर प्रभाव पडता रहा। वेद के उत्तम रूपान्तर के अभाव मे उन्होने रामायण को वेद का स्थान दिया और कहा कि यह मानव मात्र के लिए है।

परमानन्द ने भूमिका लिखी है, उसका एक अंश नीचे दिया जा रहा है—

"जाकोल्यो अपनी जाति के उच्चकोटि के विद्वानों में से थे। उन्होंने हिन्दू जाति के प्राचीन काल को उन्हीं आँखों से देखने का यत्न किया था जिनसे कि हिन्दू लोगो को उसे देखने का स्वभाव है।"

आजकल अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव के कारण हमारे नेत्रों मे ऐसी चकाचौंध हो रही है कि हम अपनी जाति के प्राचीन गौरव और महत्ता का अनुभव और सम्मान नहीं कर सकते। हमारे अनेक भाई वर्तमान पश्चिमी शिक्षा के मद से इतने उन्मत्त हो चुके हैं कि अपनी प्राचीन महत्ता की बाते उन्हें कपोल-कल्पित जान पडती हैं।

यद्यपि इंग्लैंड तथा फ्रांस के अन्य कई विद्वानों ने भी संस्कृत भाषा तथा सस्कृत-साहित्य का अध्ययन किया है, और उनका प्रथम भाव संस्कृत के गौरव तथा आर्यसभ्यता के पक्ष मे हो देख पडता है, परन्तु उन पर उनके स्वदेशी ईसाई पादरियों का प्रभाव इतना प्रबल सिद्ध हुआ कि वे अनुभव की हुई सच्चाई को स्वीकार करते हुए भी डरते हैं और जिस धर्म के वायु मंडल मे इनके जन्म-दिन से पालन-पोषण हुआ है जिसे इनके समाज ने ग्रहण किया है, उसे उच्च प्रकट करने के निमित्त वे इस सचाई के सामने प्रकट रूप से सिर नहीं झुका सकते। अध्यापक मेक्समूलर जैसा संस्कृत का विद्वान् सब कुछ देखता और जानता हुआ भी पादरियों से इतना डरता है कि वह बाइबिल को ही सबसे उत्तम और पवित्र पुस्तक कहता है। हमे श्रीयुत जाकोल्यो ही एक ऐसे व्यक्ति दीख पड़ते हैं, जिनके मन में न अपने देश के धर्म का पक्षपात है और न अपने समाज का ही कोई भय और जो मुक्तकंठ से एक सचाई को स्वीकार कर अपने देश बन्धुओं पर उसका प्रकाश करने का साहस करते हैं। इसलिए हम अपने हिन्दू भाइयों से यह अनुरोध करना आवश्यक समझते हैं कि वे इस अद्भुत पुस्तक को न केवल आप पढ़े, वरन् औरों के मध्य इसका प्रचार करे।"

अनुवादक का भी मत ज्ञातव्य है। सन्तराम बी० ए० लिखते हैं, कहे तो कह सकते हैं—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

मनु महाराज के इस कथन को प्रमाणित करने के लिए ही यह पुस्तक लिखी गई है।

जाकोल्यो ने मानव धर्मशास्त्र का ल्वाजलेर दे लोंशाँ की तरह फ्रेंच में अनुवाद किया है। जब इस द्वीप में कोई भारतीय धर्म, सस्कृति, भाषा का प्रचार करता है मारीशसीय पत्रकार उसे वर्तमान काल का जाकोल्यो बता दिया करते हैं। १९८६ में ऐसे ही एक व्यक्ति के बारे में एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमें कहा गया है कि जाकोल्यो के समान ही यह भारतीय ब्राह्मणों अर्थात् विद्वानों का शिष्य बन कर कुछ समय भारत में रहा इसे लाहौर में महात्मा हंसराज की छाया मे रहने का और डॉ० राधाकृष्णन से अपने देशवासियों के लिए एक सन्देश पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

Like the French sanskritists before him, Louis Jacolliot, he had received the message of the Vedas from the Brahmins (of Lahore) He was more lucky than the author of The Bible in India. He had the good fortune to receive the message of the Arya Samaj from the hands of Mahatma Hansraj himself. He had the darshan of the greatest Indian of modern India, Mahatma Gandhi. He had come with the message of Sarva-

palli Radhakrishnan.

–From Lee Mauricien of 19th March 1986

भारतीयता का प्रचार इतना हुआ कि "पॉल और विर्जिनी" सम्बन्धी अनेक डाक टिकट जारी किये गये महात्मा गाधी की जन्मशती के अवसर पर ६ स्मारक टिकट तथा ऋषि दयानन्द की निर्वाणशती के साल ५ दयानन्द टिकट जारी किये गये। 'हिन्दुस्तान' 'नवभारत टाइम्स' आदि ने यह शुभ समाचार दिया। दिल्ली की एक मासिक पत्रिका के सम्पादक को विश्वास न हो सका कि पांच डाक टिकट जारी किये गये। उन्होंने लिखा कि खुशी की बात है कि एक दयानन्द डाक टिकट मारीशस के डाक-विभाग द्वारा जारी किया गया।

यह लेख लिखा जा रहा था जब दैनिकपत्रों में एक सूचना छपी थी। छात्रो से आग्रह किया गया था कि वे एक लघु निबन्ध मे इन महानुभावो मे से एक की जीवनी लिखे: महर्षि दयानन्द स्वामी विवेकानन्द तथा महात्मा गांधी। इस देश की युवा पीढी को बहुत ही अच्छे ढग से वर्तमान भारत का परिचय दिया जा रहा है।

●

(पृष्ठ ५७ का शेष)

लेकर मन्त्रों का केवल यज्ञ-सम्बन्धी अर्थ ही किया है, परन्तु महर्षि ने प्राचीन काल में प्रचलित नैरुक्त प्रक्रिया को अपनाया है। मन्त्रों की केवल यज्ञ सबंधी व्याख्या ही न करके उनका आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक अर्थ भी किया है। वैदिक साहित्य के महत्व को विश्व में फैलाने का श्रेय महर्षि दयानन्द को ही है।

आर्यसमाज का परम कर्त्तव्य है कि वह महर्षि के आदर्शों और उपदेशों का आज भी पूर्ण कर्मठता के साथ पालन करे।

□

तेज बलधारी दयानन्द ब्रह्मचारी थे

सत्य-व्रतधारी, वेद धर्म के पुजारी प्रीत-
रीति व्यवहारी न्याय, नीति के प्रचारी थे
भ्रान्ति, भयहारी, भगवान-भक्त भारी, भद्र-
भावना - भंडारी, क्रान्ति पर बलिहारी थे
पातक - सहारी, ज्ञान - गगन बिहारी, दीन-
हीन - दुख - हारी, सहृदय सुखकारी थे
देश-उपकारी, आर्य-जाति हितकारी, तप-
तेज बलधारी, दयानन्द ब्रह्मचारी थे।

—प्रकाश कविरत्न

महर्षि दयानन्द और अन्य वेदभाष्यकार

—आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री

सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा ने महर्षि अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा की आत्माओं में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद का प्रकाश किया। उन्होंने महर्षि ब्रह्मा को उपदेश दिया। जिन्होंने अन्य ऋषियों को उनका उपदेश दिया। इस प्रकार सर्वप्रथम वेदभाष्यकार महर्षि ब्रह्मा हुए और तदुपरान्त उनके समान जिस-जिस ऋषि ने चारों वेदों का भाष्य कर प्रचार किया वह ब्रह्मा (चतुर्मुखी, चतुरानन) कहलाया।

कालान्तर में वेद का अर्थ समझने में मनुष्यों को कुछ असुविधा होने लगी। अतः मन्त्रों का विस्तृत अर्थ करने की आवश्यकता हुई। ऐसे अवसर पर जिन-जिन ऋषियों ने वेदमन्त्रों का अर्थ, व्याख्या, भाष्य और उन पर अन्वेषण, अनुसन्धान तथा परीक्षण किये। वे सभी ऋषि भाष्यकार कोटि में आते हैं और उनके नाम आदर के लिए मन्त्रद्रष्टा ऋषि (व्याख्याता) के रूप में उन-उन मन्त्रों के साथ स्मरण किए जाते हैं। ये नाम आज भी मुद्रित वेद संहिताओं में मन्त्रो के प्रारम्भ में लिखे मिलते हैं। साधारणतया वेद को पौरुषेय मानने वाले पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वान् इनको मन्त्रों का निर्माता समझ बैठते हैं किन्तु वस्तुतः ये वेदभाष्यकार ही हैं जिनके भाष्य तो उपलब्ध नहीं, केवल नाम ही स्मरणीय रह गए।

विद्वानों में इस विषय में मतभेद हैं कि वेद मन्त्रों के पद पृथक् पृथक् बोले तथा लिखे जाते थे अथवा संधि किए हुए संहिता रूप में। किन्तु यह निश्चित है कि जब वेदों का संहिता (परः सन्निकर्षः=अत्यन्त समीप मिलाकर लिखा) रूप हो गया तो जिन महर्षियों ने पदपाठ (पदच्छेद पूर्वक पाठ) प्रस्तुत किया वे महर्षि शाकल्य, आत्रेय, गार्ग्य आदि वेदभाष्यकार ही थे।

मूल वेदों को अपनी-अपनी शिष्य परम्परा में अर्थ समझाने के लिए जिन ऋषियों ने कहीं-कहीं पर शब्दों में तथा वाक्यों मे अन्तर करके ११२७ शाखाओं का निर्माण किया वे ११२७ महर्षि वेदों के भाष्यकार ही माने जायेंगे। शाखा का अर्थ एक प्रकार से भाष्य ही है। इनमे वाष्कल, कण्व, तित्तिरि, आत्रेय, कठ, कलापक, मोदक, पिप्पलाद, मैत्रायण, याज्ञवल्क्य आदि महर्षि प्रसिद्ध हैं।

त्रेतायुग का रामायणकालीन वेदभाष्यकार रावण हुआ जिसका भाष्य उपलब्ध नहीं है किन्तु साहित्यिक ऐतिहासिक परम्परा द्वारा यह बात विश्रुत चली आ रही है कि रावण ने वेदो का भाष्य किया था।

आधुनिक दृष्टि से श्री यास्काचार्य सर्वप्रथम वेद भाष्यकार हुए जिनका निघण्टु और निरुक्त रूप में आंशिक वेदभाष्य उपलब्ध है। महर्षि दयानन्द ने इनको प्रामाणिक माना है। मानते पौराणिक भी हैं, किन्तु जब यास्काचार्य की वेद मन्त्रों की व्याख्या को देखते हैं तो कह निकलते हैं कि

कहीं यास्काचार्य आर्यसमाज की स्थापना से पहले ही 'आर्यसमाजी' तो नहीं हो गए थे ?

यास्काचार्य के निरुक्त में उद्धृत शाकल्य, गार्ग्य, औपमन्यव आदि वेदभाष्यकार हुए किन्तु उनके भाष्य नहीं मिलते।

वेदभाष्यकार के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती और महर्षि यास्काचार्य मे निम्नलिखित सिद्धांतो की समानता है—यद्यपि वे दोनों विभिन्न युगों तथा परिस्थितियों में उत्पन्न हुए और यास्क की अपेक्षा दयानन्द के भाष्य की मात्रा तथा विशिष्टता कहीं अधिक उच्चकोटि की है—

(१) वेद अपौरुषेय और नित्य हैं।

(२) प्रत्येक मन्त्र के आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधियाज्ञिक—तीन प्रकार के अर्थ होते हैं।

(३) शब्दों का निर्वचन होना चाहिए।

(४) वैदिक शब्द यौगिक अर्थात् धातु+प्रत्यय से मिलकर बने हैं।

(५) धातुओं के अनेक अर्थ होते है। पाणिनि के धातु पाठ में बताए अर्थों के अतिरिक्त भी अर्थ हो सकते हैं।

(६) वेद में अनित्य इतिहास नहीं है। सृष्टि के नित्य नियम आख्यान के रूप में अलंकारिक शैली में कहीं-कहीं अवश्य वर्णित हैं।

(७) शब्दो का अर्थ मुख्य है। विभक्ति और स्वर उसके अनुगामी हैं। विभक्ति और स्वर का व्यत्यय हो सकता है अर्थात् लौकिक संस्कृत के आधार पर कारक तथा विभक्ति और स्वर के अनुसार शब्दों का अर्थ करना आवश्यक नही अपितु अर्थ के अनुसार कारक तथा विभक्ति एव स्वर को मान लेना चाहिए। भाव यह है कि किसी भी अर्थ में कोई भी विभक्ति हो सकती है। महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी में इसी बात को 'व्यत्ययो बहुलम्' 'बहुलम् छन्दसि' आदि सूत्रों के द्वारा प्रदर्शित किया है।

(८) पद पाठ भिन्न-भिन्न हो सकता है जैसे 'मासकृत्' का पदच्छेद 'मास+कृत्' तथा 'मा+सकृत्' दोनों हो सकते हैं। वस्तुतः यह सभङ्ग शब्द-श्लेष अलंकार है।

(९) मंत्रों के देवता से अभिप्राय उनके विषय (सब्जैक्ट मैटर से है चाहे उस देवता (विषय) का वर्णन उसी शब्द का प्रयोग करके किया गया हो, चाहे उसके अर्थ में प्रयुक्त अन्य शब्दों द्वारा किया गया हो।

(१०) मत्रों का विनियोग (कर्मकाण्ड में प्रयोग) उनके अर्थ के अनुसार होना चाहिए।

महर्षि यास्काचार्य के पश्चात् बहुत समय तक किसी वेदभाष्यकार का पता नहीं चलता, यद्यपि महर्षि पाणिनि, कात्यायन तथा पतंजलि ने व्याकरण शास्त्र के द्वारा तथा अन्य ऋषियों ने अन्य वेदांगों द्वारा वेदभाष्य में सहायता अवश्य की।

यास्काचार्य के अर्थों के आधार पर निम्नलिखित वेदभाष्यकारों के आंशिक भाष्य सायणाचार्य से पूर्व के उपलब्ध हैं—

(१) आचार्य स्कन्द स्वामी (सवत् ६८७ वि०)

(२) दुर्गाचार्य (निरुक्त टीका)

(३) उद्गीथ आचार्य (सं० ६८७)

(४) आचार्य हरिस्वामी (शतपथ ब्राह्मण का भाष्य)

(५) उव्वटाचार्य (यजुर्वेद भाष्य)

(६) वररुचि (निरुक्त समुच्चय)

(७) भट्ट भास्कर (तैत्तिरीय संहिता तथा तैत्तिरीय ब्राह्मण भाष्य)

(८) वेंकट माधव (ऋग्वेद भाष्य सं० ११०० से १२०० के मध्य)

(९) आत्मानन्द (अस्य वामीय सूक्त का भाष्य

सं० १२००-१३००)

(१०) आनन्द तीर्थ (१२५५-१३३० वि०) ऋग्वेद ४० सूक्तों का भाष्य जयतीर्थ टीका तथा नरसिंह यति की छलारी टीका सहित

(११) शत्रुघ्न (मन्त्रार्थ दीपिका में)
(१२) गुण विष्णु (छान्दोग्य, मन्त्र भाष्य)
(१३) माधव (सामवेद भाष्य) स० १३५०
(१४) भरतस्वामी („) „
(१५) देवपाल (लौगाक्षि गृह्यभाष्य में)
(१६) आनन्दबोध
(१७) अनन्ताचार्य
(१८) मुद्गल
(१९) वेङ्कटेश (तैत्तिरीय संहिता भाष्य)
(२०) यजुर्मंजरीकार

इनके पश्चात् विक्रम की चौदहवीं शताब्दी मे आधुनिक युग मे प्रसिद्ध वेद भाष्यकार सायणाचार्य हुए, जिन्होंने ऋग्, यजु (काण्व शाखा) साम तथा अथर्व चारों वेदों के भाष्य किये।

सायणाचार्य ने सम्पूर्ण भाष्य स्वय नहीं किया प्रत्युत स्वयं विजयनगर राज्य के प्रधानमन्त्री पद पर स्थित होकर अनेक विद्वानों की सहायता से भाष्यों का सम्पादन किया। उन्होंने केवल याज्ञिक प्रक्रिया (कर्मकाण्ड) परक भाष्य किया। उनके भाष्य की कुछ विशेषताएं निम्न प्रकार हैं—

(१) जन, नर आदि सामान्य शब्दों का भी यजमान आदि विशेष व्यक्तिवाचक अर्थ किया।

(२) ब्रह्मकाण्ड और यज्ञकाण्ड दो प्रकार का अर्थ मानकर भी केवल यज्ञकाण्ड सम्बन्धी अर्थ किया।

(३) अनित्य इतिहास का निषेध करके भी अनित्य इतिहास परक अर्थ किया।

(४) शतपथ ब्राह्मण को मन्त्रों का व्याख्यान मानकर भी वेद माना।

(५) वेदों में मांस तथा सुरापान के प्रतिपादक वचन मानकर यज्ञों में हिंसा स्वीकार की।

सायण भाष्यकार के अनुयायी भारतीय तथा पाश्चात्य अनेक भाष्यकार हुए। जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं—

(१) मैक्समूलर (ऋग्वेद भाष्य)
(२) ग्रिफिक(चारो वेदों का अंग्रेजी पद्यानुवाद)
(३) विलसन (ऋग्वेद का अंग्रेजी अनुवाद)
(४) लुड्विग (ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद)
(५) राथ और व्हिटनी (अथर्ववेद का अंग्रेजी अनुवाद
(६) बैनफी (सामवेद का जर्मन अनुवाद)

ऐसे समय में महान् महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का आविर्भाव हुआ जिन्होंने पूर्ण ब्रह्मचर्य, योगाभ्यास तथा विशिष्ट विद्या के बल पर सर्वप्रथम संकेत रूप में चारों वेदो का सक्षिप्त भाष्य तैयार किया पुन विस्तृत रूप मे पौन ऋग्वेद तथा पूर्ण यजुर्वेद का संस्कृत एव हिन्दी में भाष्य किया। यह भी सूत्ररूप में ही सम्पन्न हुआ समझना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के भाष्य की विशेषताएं सक्षेप में निम्न प्रकार हैं—

(१) वेदों को पूर्ण परमेश्वर का पूर्ण ज्ञान माना है।

(२) लौकिक और वैदिक शब्दों के अर्थों में अन्तर किया गया है।

(३) यास्क और पतञ्जलि के अनुसार वैदिक शब्दो को यौगिक अर्थात् धातु और प्रत्यय से बना माना है जिनके अर्थ प्रकरण के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।

(४) धातुओं को अनेकार्थक माना है, तदनुसार शब्द भी अनेकार्थक माने गये हैं। ऐसे स्थलों पर सर्वत्र श्लेष अलंकार समझना चाहिए।

(५) संस्कृत भाष्य में आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधियाज्ञिक तीनों प्रकार के अर्थ विभिन्न स्थानों पर मिलते है—कही तीनों, कही, दो और कही एक प्रकार का ही।

(६) वैदिक शब्दों के अर्थ अनेक स्थानो पर अन्य वेदमन्त्रों के आधार पर किये गये हैं।

(७) अग्नि, वायु, आदित्य, इन्द्र, यम, रुद्र आदि शब्दों के भौतिक तथा आध्यात्मिक एवं आधिदैविक तीनों प्रकार के अर्थ किये गये हैं। जैसे अग्नि का भौतिक अर्थ —आग, यज्ञाग्नि आदि। दैविक अर्थ—सूर्य, विद्युत्, जठराग्नि आदि। आध्यात्मिक अर्थ—परमेश्वर, विद्वान्, राजा आदि।

(८) कणाद मुनिकृत वैशेषिक दर्शन के 'बुद्धि-पूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे (६।१।१) के अनुसार वेद की प्रत्येक बात को बुद्धिपूर्वक माना है।

(९) पहले हुए ऋषियों के पद पाठो से भिन्न भी पदपाठ (शब्दों के पदच्छेद) पाणिनि आदि के नियमानुसार दर्शाये गये हैं।

(१०) श्लेष, उपमा आदि अलंकारो का प्रयोग दिखाकर वेद को वैज्ञानिक अमर काव्य सिद्ध किया गया है—"देवस्य पश्य काव्यम् न ममार न जीर्यति।"

(११) अनित्य इतिहास वेद मे नही माना है।

(१२) देवता को मन्त्र का प्रतिपाद्य विषय माना है।

(१३) वैदिक छन्द प्राचीन आर्ष पद्धति के मौलिक सिद्धान्तानुसार माने हैं।

(१४) 'व्यत्यय' के सिद्धान्त के अनुसार वेद को नित्य एवं सर्वज्ञानमय सिद्ध किया है।

(१५) मन्त्र के पदो को अन्वय में सम्बद्ध करके अर्थ किया है।

(१६) शतपथ ब्राह्मण के 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' (१।७।१।५) के अनुसार यज्ञ शब्द से समस्त श्रेष्ठ कर्मों का कला, कौशल, विज्ञान आदि का भी ग्रहण किया गया है।

(१७) प्रत्येक मन्त्र का षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पचम, धैवत, निषाद मे से एक स्वर भी नियत करके बताया गया है।

(१८) वेद को सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् सार्व-भौम नियमो का प्रतिपादक बताया है।

(१९) नैरुक्त शैली के अनुसार अनेक निर्वचन आश्चर्यजनक रूप मे किये गये हैं।

(२०) संस्कृत भाष्य मन्त्रगत पदों के क्रम से रखा गया है। उसमें जहां तहां उपर्युक्त तीनों प्रकार के अर्थों को ध्यान में रखकर निर्वचन तथा अर्थ दिखाया गया है। इस संस्कृत पदार्थ का एक अश अन्वय है जिसका हिन्दी अनुवाद किया गया है, जो पण्डितों द्वारा किये जाने के कारण कहीं अस्पष्ट रह गया है। संस्कृत जानने वाला ही महर्षि दयानन्द के भाष्य को पूर्णतया हृदयगम कर सकता है। हमें वेदो का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए महर्षि दयानन्द के भाष्य का पूर्ण अनुशीलन करना चाहिए।

बतायें तुम्हें हम दयानन्द क्या था

बताये तुम्हें हम दयानन्द क्या था,
ऋषि था फरिश्ता था या देवता था।
थे विद्या से भरपूर उसके खजाने,
शहंशाह था गो बजाहिर गदा था॥
रहा उम्र भर शेवये हक परस्ती,
वतन का था शैदा धर्म पर फिदा था।
था मखमूरो मसरूर पी जामे वहदत,
खुदा का था वह और उसका खुदा था॥
अन्धेरे मे जो ठोकरें खा रहे थे,
वह उन गुमराहों के लिए रहनुमा था।
जिसे हम ने गलती से समझा था दुश्मन था,
वही कशतिये कौम का नाखुदा था॥
उसी की थी हिम्मत बचाया वरना,
निशा हिन्दुओं का मिटा जा रहा था।
जवाँ मे थी योगी की तासीर ऐसी,
कि उसका सखुन नाव के वेखता था॥
किया जिसके झोंकों ने सरसब्ज गुलशन,
वह वादे बहारी था वादे सबा था।
घटाओं में चमकता था वह बर्क बनकर,
मुजस्सिम तजल्ली था नूरे खुदा था॥
गरज कोई माने न माने 'मुसाफिर'।
दयानन्द दर्दे वतन की दवा था॥

—कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर

आर्यसमाज के प्रवर्तक वेदोद्धारक-शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक—स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

मैंने इस लेख के प्रारम्भ में शीर्षक रूप में 'वेदोद्धारक-शिरोमणि' इस विशेषण का स्वनाम-धन्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम के साथ जानबूझकर किया हैं, क्योंकि कलियुग के सब सुप्रसिद्ध आचार्य श्री शङ्कराचार्य, श्री रामानुजाचार्य, श्री मध्वाचार्य (स्वा० आनन्दतीर्थ), श्री बल्लभाचार्य, सायणाचार्य आदिकृत ग्रन्थों का अनुशीलन करने पर मैं इस परिणाम पर पहुंचा हू कि महर्षि दयानन्द जी को ही वेदोद्धारक-शिरोमणि कहा जा सकता है, जिन्होंने वेदों का सच्चा स्वरूप जनता के सम्मुख रखकर चिरकाल से लुप्त सत्य सनातन वैदिक धर्म का शुद्ध रूप में पुनरुद्धार किया, अन्य किसी आचार्य को नहीं।

मैं कैसे इस परिणाम पर पहुंचा हू और महर्षि दयानन्द जी तथा अन्य आचार्यों की वेदविषयक मान्यताओं में क्या भेद है, जो मैं यह मानता हूँ कि महर्षि दयानन्द जी को वेदोद्धारक-शिरोमणि कहा जा सकता है, इन प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर मैं इस लेख द्वारा देने का यत्न करूंगा।

यह ठीक है कि श्री शङ्कराचार्य, रामानुजाचार्य आदि सभी प्रसिद्ध आचार्यों ने वेदों को परम प्रमाण माना है, किन्तु अपने सिद्धान्तों के समर्थन के लिए उन्होंने अधिकतर उपनिषद्, वेदान्तसूत्र और भगवद् गीता का आश्रय लिया है न कि मूल वेदसंहिताओं का। यह उनके ग्रन्थों के पढने वाले जानते हैं। श्रुति के नाम से भी इन आचार्यों ने प्राय: सर्वत्र उपनिषदों के वचन दिये हैं। हां, द्वैत मत के प्रबल प्रचारक श्री मध्वाचार्य (स्वा० आनद तीर्थ) ने वेदमन्त्रों के कई प्रमाण जीवेश्वरभेद आदि के समर्थन में दिये तथा ऋग्वेद के प्रथम ४० सूक्तों का श्लोकबद्ध संक्षिप्त भाष्य भी किया, तथापि पौराणिक संस्कार-विषयक इस भाष्य में भी विशुद्ध एकेश्वरवाद के स्थान से विष्णु, लक्ष्मी आदि देवी-देवताओं की पूजा का अनेक स्थलों में विधान पाया जाता है। वेदाधिकार भी प्राय: इन आचार्यों ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य कुलोत्पन्न पुरुषों तक ही सीमित कर दिया और शूद्रकुलोत्पन्न पुरुषों और समस्त स्त्रियों को उस अधिकार से न केवल वंचित ही कर दिया, अपितु यहाँ तक लिखा—

इतश्च न शूद्रस्याधिकार: । यदस्य स्मृते: श्रवणाध्ययनप्रतिषेधो भवति । वेदश्रवणप्रतिषेधो वेदाध्ययनार्थप्रतिषेधस्तदर्थज्ञानानुष्ठानयोश्च प्रतिषेध शूद्रस्य स्मर्यते। श्रवणप्रतिषेधस्तावत् 'अथास्य (शूद्रस्य) वेदमुपश्रृण्वतस्त्रपुजतुभ्यां श्रोत्रप्रतिपूरणमिति। भवति च वेदोच्चारणे जिह्वाच्छेद:। धारणे

शरीरभेदः।

(ब्रह्म० सूत्र० शाङ्करभाष्ये १।३।३८)

सारांश यह है कि शूद्र को वेद का अधिकार नही, क्योंकि स्मृति मे उसके लिए वेद के सुनने, पढने और अर्थज्ञान सम्पादन करने का सर्वथा निषेध है और यह कहा है कि यदि कोई शूद्र वेद को समीपता से श्रवण कर ले, तो उसके कानों को सीसे और लाख से भर देना चाहिए, वेद के मन्त्र का यदि वह उच्चारण कर ले, तो उसकी जिह्वा काट देनी चाहिए और यदि धारण वा याद कर ले, तो उसके शरीर के टुकडे-टुकड़े कर डालने चाहिए।

विशिष्टाद्वैत सम्प्रदाय के आचार्य श्री रामानुज स्वामी ने भी इसी बात को लिखा है कि—

शूद्रस्य वेदश्रवण-तदध्ययन-तदर्थानुष्ठानानि प्रतिषिध्यन्ते । पद्युह्वा एतत् श्मशान यच्छूद्र. तस्मात् शूद्रसमीपे नाध्येतव्यम्।

(ब्रह्मसूत्रस्य श्रीभाष्ये रामानुजाचार्यकृते पृ० ३२२)

अर्थात् शूद्र को वेद के सुनने, अध्ययन करने और उसके अर्थ को जानकर अनुष्ठान करने का निषेध है। शूद्र चलता फिरता श्मशान है। अतः उसके समीप वेद का अध्ययन न करना चाहिए।

ऐसा ही श्री मध्वाचार्य, श्री वल्लभाचार्य, श्री निम्बार्काचार्य, सायणाचार्य तथा अन्य मध्यकाल के प्रायः सभी सुप्रसिद्ध आचार्यों ने लिखा है। स्त्रियो के अधिकार के विषय मे भी श्री शङ्कराचार्य जी ने लिखा है कि—

दुहितुः पाण्डित्य गृहतन्त्रविषयमेव वेदेऽनधिकारात्।

(बृहदारण्यकोपनिषच्छांकरभाष्ये ६, ४, १९)

अर्थात् उपनिषद् में यह जो लिखा है कि "अथ इच्छेत् दुहिता मे पण्डिता जायेत" यहां कन्या के पाण्डित्य का अर्थ केवल गृहकार्यविषयक पाण्डित्य है, क्योंकि उसका वेद में अधिकार नही। ऐसा ही श्री रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, सायणाचार्य तथा अन्य प्रायः सभी मध्यकालीन सुप्रख्यात आचार्यों ने लिखा है।

आहुरप्युत्तमस्त्रीणाम् अधिकारन्तु वैदिके यथो-वंशी यमी चैव शच्याद्याश्च तथाऽपरा।

(ब्रह्मसूत्राणुव्याख्याने पृ० ८७)

अर्थात् उत्तम स्त्रियों का वैदिक शास्त्र के पढने में अधिकार विद्वान् लोग बतलाते हैं जैसे उर्वशी यमी, शची इत्यादि प्राचीन काल की ऋषिकाएं हुई हैं। एक अन्य स्थल पर भी श्री मध्वाचार्य ने लिखा है—

वेदा अप्युत्तमस्त्रीभिः कृष्णाद्याभिरिहाखिलाः।
उत्तमस्त्रीणा तु न शूद्रवत्।

(ब्रह्मसूत्राणुभाष्य)

अर्थात् उत्तम स्त्रियों को द्रोपदी आदि की तरह सब वेदों का अध्ययन करना चाहिए। उत्तम स्त्रियों को शूद्रों की तरह वेदाध्ययन का निषेध नही। इस प्रकार स्त्रियों के वेदाधिकार को उत्तम स्त्रियों के लिए स्वीकार करने की उदारता श्री मध्वाचार्य (स्वा० आनन्दतीर्थ) ने दिखाई, किन्तु शूद्रों के वेदाधिकार का उन्होंने भी अन्य आचार्यों की तरह निषेध किया।

वैदिक यज्ञो मे पशुहिंसा का भी इन सभी आचार्यों ने विधान "अशुद्धमिति चेन्न शब्दात्" इस वेदान्तसूत्र के भाष्य में तथा अन्यत्र माना। ऐसे ही इन आचार्यों की वेदविषयक कई अशुद्ध और सकुचित धारणाएं हैं जिनके कारण इन्हें आदर्श वेदोद्धारक नही माना जा सकता। मूल वेदों को इनमें से बहुतों ने केवल यज्ञयागादि-कर्मकाण्डपरक ही समझा। अध्यात्मविद्या तथा ब्रह्मविद्या के लिए उन्होंने उपनिषदों का आश्रय लिया। इसलिये मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती को वेदोद्धारक-शिरोमणि

मानता हूँ। ऐसे समय में जन्म लेकर जब देश-विदेश में सर्वत्र वेदविषयक अज्ञान फैला हुआ था, जब भारत के बड़े-बड़े विद्वान् भी वेदों के वास्तविक अर्थों से अनभिज्ञ होकर उनकी क्रियात्मक उपेक्षा कर रहे थे, जब वेदों को सहस्रों देवी-देवताओं की पूजा का प्रतिपादक तथा जातिभेद, अस्पृश्यता, बालविवाह और यज्ञों में पशुहिंसा आदि का समर्थक मानते थे, जब पवित्र वेदों का स्थान अधिकतर रामायण, महाभारत, भगवद् गीता, पुराणादि ने ले लिया था, महर्षि दयानन्द ने फिर 'वेदों की ओर चलो, वेद सब सत्यविद्याओं के पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है', का सिंहनाद करके जनता मे अद्भुत जागृति पैदा कर दी, पवित्र वेदमन्दिर के [illegible]र को—

यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
(यजु० २६।२)

इस वैदिक आदेशानुसार सब नर-नारियों के लिए खोलने की जो उदारता दिखाई, वेदों की सार्वभौमिक, सार्वकालिक, युक्ति-युक्त और वैज्ञानिक शिक्षाओं को जिस उत्तम रूप से जो जगत् के सम्मुख रखकर उस वेदभानु की ज्ञान-किरणों से समस्त अज्ञानान्धकार को छिन्न-भिन्न करने का अत्यन्त अभिनन्दनीय कार्य किया, उसका किन शब्दों में वर्णन किया जाये। वैदिक ज्ञानप्रसार-विषयक महर्षि दयानन्द के उपकार अत्यन्त महान् और अनुपम हैं, यदि ऐसा कहा जाए तो इसमें अणुमात्र भी अत्युक्ति न होगी। वेदों को केवल कर्मकाण्ड-परक और यज्ञों में पशुहिंसा-प्रतिपादक समझकर अच्छे-अच्छे विचारक उनसे विमुख हो रहे थे। महर्षि ने वेदों के सर्वशास्त्रसम्मत महत्व को बताकर उन्हें वेदाध्ययन में पुनः प्रवृत्त किया।

महर्षि दयानन्द के वेदविषयक मन्तव्य—

(१) महर्षि दयानन्द ने अत्यन्त प्रबल युक्तियों और प्रमाणों से मानवसृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता को सिद्ध करते हुए अनेक कसौटियों से प्रमाणित किया कि ईश्वरीय ज्ञान वेद ही है, जिसकी शिक्षाएँ सर्वथा पवित्र सार्वभौम युक्ति तथा तत्वज्ञान सम्मत हैं।

(२) वेद ईश्वरीय ज्ञान है और मानवसृष्टि के प्रारंभ में प्रकाशित होने के कारण नित्य है अतः उनमें अनित्य इतिहास नहीं हो सकता। वेदों में पाये जाने वाले वसिष्ठ, जमदग्नि, विश्वामित्र, अत्रि, कवि इत्यादि शब्द व्यक्तिविशेष-वाचक नहीं, किन्तु गुणविशिष्ट व्यक्ति तथा पदार्थसूचक हैं। जैसे कि 'प्राणो वै वसिष्ठ ऋषिः (शत० ८,१,१,६), प्रजापतिर्वै वसिष्ठ (कौषीतकी ब्रा० २५,२२६,१६), प्रजापतिर्वै जमदग्निः (शत० १३,२,२,१४), श्रोत्र वै विश्वामित्र ऋषिः (शत० ८,१०,२,६), मनो वै भरद्वाज ऋषिः (शत० ८,१,१,६), प्राणो वा अङ्गिराः (शत० ६,१,२,८), कण्व इति मेधाविनाम (निघ० ३,५) इत्यादि आर्ष वचनों से सिद्ध होता है।

(३) वेदों के शब्द यौगिक वा योगरूढ हैं, केवल रूढ नही जैसे कि—

'सर्वाणि नामान्याख्यातजानि इति नैरुक्तसमयः।'
(निरुक्त १,४,१२)

नाम च धातुजमाह निरुक्ते,
व्याकरणे शकटस्य च तोकम्।
(महाभाष्य ३,३,१)

इत्यादि में बताया गया है।

उन्हें लौकिक संस्कृत के अनुसार रूढ मानकर उनकी व्याख्या करना ठीक नही। यौगिक होने के कारण अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण, यम, मातरिश्वा, रुद्र, देव आदि शब्द आध्यात्मिक, आधिदैविक; आधिभौतिक दृष्टि से अनेकार्थक हैं।

(४) वेद विशुद्ध रूप से एकेश्वरवाद का प्रति-

पादन करने वाले हैं। अग्नि, मित्र, इन्द्र, वरुण आदि शब्द जैसे कि—

'इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहु :—
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति ॥
(ऋ. १,१६४, ४६)

इत्यादि मन्त्रों को उद्धृत करते हुए बताया गया है, प्रधानतया परमेश्वरवाचक हैं। आधिभौतिक क्षेत्र में वे ज्ञानी ब्राह्मण, ऐश्वर्य सम्पन्न राजा, जीव, पुरोहित, अज्ञानान्धकारनिवारक श्रेष्ठपुरुष इत्यादि के वाचक भी हैं। ८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य के वाचक भी हैं। ८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य (मास), इन्द्र (विद्युत्) और प्रजापति (यज्ञ) ये ३३ तत्त्व प्रकाशदायक तथा लाभकारी होने के कारण वेदादिशास्त्रों में देव कहे गये हैं, किन्तु उपास्य परमदेव एक परमेश्वर ही है।

(५) यज्ञ शब्द जिस यज् धातु से बनता है उसके देवपूजा, सङ्गतिकरण और दान ये तीन अर्थ हैं जो अपने से बड़ों, बराबर स्थिति वालों और हीनों (छोटों) के प्रति कर्त्तव्य के सूचक हैं। अतः अपने तथा जगत् के कल्याण के लिये किया गया प्रत्येक शुभकार्य यज्ञ कहलाता है। यज्ञों में पशुहिंसा सर्वथा वेदविरुद्ध है। यज्ञ के लिये वेदों में सैकड़ों स्थानों पर "अध्वर इति यज्ञनाम ध्वरति हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेध" (निरुक्त १,८) इत्यादि यास्काचार्यकृत निरुक्तानुसार हिंसारहित शुभकर्म है।

(६) वेदों में अध्यात्मविद्या के अतिरिक्त भौतिक विद्याओं का भी बीजरूप से उपदेश है। ज्योतिष, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, समाजशास्त्र, राजनीतिविद्या, विज्ञानादि का मूल वेदों में विद्यमान है। महर्षि दयानन्द द्वारा अभिमत ये मन्तव्य प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा सम्मत हैं और उनके समर्थन में सैकड़ों प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। पर लेखविस्तारभय से ऐसा करना यहाँ सम्भव नहीं।

महर्षि दयानन्द को वेदार्थविषयक शास्त्र तथा तर्कसम्मत इस क्रान्ति का देश-विदेश के निष्पक्षपात विद्वानों पर क्या प्रभाव पड़ा और किस प्रकार उनको अपने पुराने विचार बदलने को विवश होना पड़ा, यह मैंने 'ऋषि वेदभाष्यकार के रूप में' इस नाम के निबन्ध में विस्तार से बताया है, जिसके प्रकाशन की व्यवस्था की जा रही है। यहाँ तो इतना ही लिखना पर्याप्त है कि सुप्रसिद्ध जर्मन विद्वान् प्रो. मैक्समूलर, तथा नोबल पुरस्कार-विजेता और Great Secret (महान् रहस्य) नामक उत्तम ग्रंथ के लेखक मैटर्लिक—दोनों ने वेदों को ज्ञान का विशाल भण्डार बताया है, जिसे मानव-सृष्टि के प्रारम्भ में ऋषियों पर प्रकट किया गया।

Vast resevoir of the Wisdom that some where took shape simultaneously with the origin of man (Materlink in the 'Great Secret').

रूस के ऋषि तालस्ताय, अमेरिका के सुप्रसिद्ध विचारक थोरियो, आयर के जेम्स कजिन्स इत्यादि पाश्चात्य विद्वानों, जनविख्यात योगी श्री अरविन्द जी, महाविद्वान् और योगी श्री कपाली शास्त्री जी, श्री माधव पुण्डलीक पण्डित भी आदि भारतीय विद्वान् योगियों, पारसी विद्वान् श्री दादाचान जी, बी. ए., एल.-एल बी. तथा सर सय्यद अहमद खां, सर यामिनखान आदि मुसलमान विद्वानों पर महर्षि दयानन्द के वेदादिविषयक विचारों तथा उन के वेदभाष्यादि का अद्भुत प्रभाव पड़ा।

पण्डितराज, सारस्वतसार्वभौम, सामवेद तथा यजुर्वेद भाष्यकार स्वामी भगवदाचार्य जी, कनखल हरिद्वार के महामण्डलेश्वर चातुर्वर्ण्य भारतसमीक्षा, ऋग्यजुः-साम-अथर्वसंहितोपनिषच्छतकों के लेखक परमहंस परिव्राजक स्वा० महेश्वरानन्द जी गिरि, सनातनधर्म कालेज मुलतान के भू० आचार्य

विद्वच्चूड़ामणि श्रद्धेय पं. चूड़ामणि जी शास्त्री (स्व. विज्ञानभिक्षु जी सनातनधर्ममण्डल देहली के प्रधान पं. गङ्गाप्रसाद जी शास्त्री इत्यादि पर महर्षि दयानन्द के वेदविषयक इन मन्तव्यों का यह प्रभाव पड़ा कि उन्होंने स्त्रीशूद्रादि सब के वेदाधिकार के सिद्धान्त का अपने ग्रन्थों में खुले तौर पर समर्थन किया, गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था के सिद्धान्त का प्रबल समर्थन अनेक शास्त्रीय प्रमाणों से किया और महर्षि दयानन्द जी को कलियुग में 'आस्तिक-शिरोमणि' बताया (स्वा भगवदाचार्य जी साम-संस्कारभाष्य की भूमिका में)। महामण्डलेवर स्वा. महेश्वरानन्द जी गिरि ने—

बहूनामनुग्रहो न्याय्य, समाजराष्ट्ररक्षक.।
महर्षि-श्रीदयानन्दो दम्भपाखण्डमर्दकः ॥
वेदधर्मप्रचाराय, मर्दनाय विधर्मिणाम्।
आर्याणां संघशक्त्यर्थ. प्रयासो येन वै कृतः ॥
तस्य महानुभावस्य, सम्मतिश्चास्ति कृष्णवत्।
गुणकर्मानुसारेण, चातुर्वर्ण्यव्यवस्थितिः ॥

(चातुर्वर्ण्यभारतसमीक्षा, महामण्डलेश्वर स्वा० महेश्वरानन्द जी गिरिकृत द्वितीयखण्ड पृ० १५)

इन श्लोकों में स्वामी दयानन्द जी को महर्षि, समाजराष्ट्ररक्षक दम्भपाखण्ड-मर्दक, वेदधर्म-प्रचारक और आर्यों की सङ्घशक्ति का वर्धक कहा है और यह कहा है कि वर्णव्यवस्था के विषय में उनकी श्रीकृष्ण जी महाराज जैसी सम्मति है कि वर्णव्यवस्था गुणकर्मानुसार होती है।

स्व० श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति तथा अन्य आर्य विद्वानों ने जीवन भर शास्त्रार्थ करने वाले महामहोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी को भी लिखना पड़ा कि—

(वेद के वैज्ञानिक युग के व्याख्याकार श्री स्वामी दयानन्द जी हैं। उन्होंने वेद के गौरव की ओर आर्य जाति की दृष्टि बहुत कुछ आकृष्ट की हैं। इस कारण से उनका भी उपकार विशेष माननीय है। (वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति' पं० गिरधर शर्मा जी कृत, पृ० १८)

अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण आदि शब्दों से स्वा० भगवदाचार्य जी तथा स्वा० महेश्वरानन्द जी ने प्रधानतया ईश्वर का तथा 'देवाः' का अर्थ विद्वान् ग्रहण किया। यह सब महर्षि दयानन्द का सनातन-धर्माभिमानी विद्वानों पर अद्भुत प्रभाव सूचित करता है। ऐसे वेदोद्धारक-शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती को हमारा कोटिश: प्रणाम हो। इस लेख का उपसंहार मैं स्वनिर्मित निम्न श्लोकों द्वारा करना उचित समझता हूं।

१. निखिलनिगमवेत्ता, पापतापापनेता,
रिपुनिचयविजेता, सर्वपाखण्डभेत्ता।
प्रतिमहित-तपस्वी, सत्यवादी मनस्वी,
जयति स समदर्शी, वन्दनीयो महर्षिः ॥

२ प्रथितधवलकीर्तिः, शुद्धधर्मस्य मूर्तिः,
प्रसृतनिगमरीतिः, शत्रुवर्गेऽप्यभीतिः।
अनुसृतशुभनीतिः, वेदशास्त्रेष्वधीती,
विबुधगणवरेण्यो वन्दनीयो महर्षिः ॥

३. अधिकतम उदारो धर्मसंबोधकेषु,
श्रुतिविहितविचारो लोकसंरक्षकेषु।
विदितनिगमसारो ब्रह्मचार्यग्रगण्यो,
जयति स कमनीयो वन्दनीयो महर्षिः ॥ □